श्रीवीतरागाय नमः

श्री जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितया

प्रमेयद्योतिकाख्यया व्याख्यया समलङ्कृतम् ।

॥ श्रीजीवाभिगमसूत्रम् ॥

प्रथमा प्रतिपत्तिः

मङ्गलाचरणम्

वीरं प्रणम्य भावेन गौतमं गणनायकम् । जैनीं वाचमुपादाय, प्रयतेऽहं यथामति ॥१॥

जीवाभिगमसूत्रस्य टीका प्रमेयद्योतिका । घासीलालेन मुनिना तन्यते सुखबोधये ॥२॥

जीवाभिगमसूत्र का हिन्दी अनुवाद

प्रथमप्रतिपत्ति

मङ्गलाचरण

'वीरं प्रणम्य भावेन' इत्यादि

(अहम्) मैं (भावेन) भावपूर्वक (वीरम्) अन्तिम तीर्थंकर श्री महावीर प्रभु को और (गणनायकम्) गणधरो के नायक-नेता (गौतमम्) श्री गौतम को (प्रणम्य) प्रणाम करके-वन्दना नमस्कार करके (यथामति) मति के अनुसार (जैनीं वाचम् उपादाय) जिनेन्द्र देव की वाणी को हृदयंगम कर (प्रयते) इस शास्त्र की टीका-व्याख्या करने का प्रयत्न करता हूँ-अतः (सुखबोधये) इस शास्त्र में कथित विषय अच्छे प्रकार से समझा जा सके इसके लिये (घासीलालेन मुनिना) मुझ घासीलाल मुनि के द्वारा (जीवाभिगमसूत्रस्य प्रमेयद्योतिका

જીવાભિગમસૂત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ

પહેલી પ્રતિપત્તિ

મંગલાચરણ

"वीरं प्रणम्य भावेन" ઈત્યાદિ—૧-૨

(अहम्) હું (भावेन) ભાવપૂર્વક (वीरम्) અન્તિમ તીર્થંકર મહાવીર પ્રભુને અને (गणनायकम्) ગણધરોના નાયક (गौतमम्) ગૌતમને (प्रणम्य) પ્રણામ કરીને-વંદણા નમસ્કાર કરીને (यथामति) મારી મતિ અનુસાર (जैनीं वाचम् उपादाय) જિનેન્દ્ર દેવની વાણીને હૃદયંગમ કરીને (प्रयते) આ શાસ્ત્રનું વિવેચન કરવાનો પ્રયત્ન કરી રહ્યો છુ (सुखबोधये) આ શાસ્ત્રમાં પ્રતિપાદિત વિષયને સારી રીતે સમજી શકાય તે હેતુથી (घासीलालेन मुनिना) મારા દ્વારા-ઘાસીલાલ મુનિ દ્વારા-(जीवाभिगमसूत्रस्य प्रमेयद्योतिका टीका) આ જીવા-

इह खलु रागद्वेषाभिभूतेन सांसारिकजीवेन असह्यशारीरमानसदुःखसंपीडितेन तादृश दुःखप्रहरणाय हेयोपादेयपदार्थपरिज्ञानाय प्रयत्नः कर्तव्यः स च विशिष्टविवेकमन्तरेण न संभवति विशिष्टविवेकश्च प्राप्ताशेषातिशयकलाप्राप्तोपदेशमन्तरेण न संभवति आप्तश्च रागद्वेषादिदोषाणामात्यन्तिकक्षयादेव भवति, स च दोषाणामात्यन्तिकप्रक्षयोऽर्हत एव, अतः प्रारभ्यतेऽर्हद्वचनानुयोगः ।

तत्र यदस्ति तृतीयाङ्गस्य स्थाननाम्नः रागविषपरममन्त्रस्वरूपं द्वेषानलसलिलपूरनिभं तिमिरादित्यभूतं भवाब्धिपरमसेतुमहाप्रयत्नगम्यं मोक्षप्राप्यवन्ध्यशक्तिकं जीवाजीवाभिगम-नामकतृतीयमुपाङ्गं मन्दमतीनां सुखबोधाय आतन्यते । यद्यपि पूर्वाचार्यैः व्याख्यानं कृतं तथापि

टीका) यहां जीव शब्द से अजीव का भी ग्रहण हो जाता है अतः जीवाजीवाभिगमसूत्र की प्रमेयद्योतिका नामकी टीका (तन्यते) की जाती है ।

इस संसार में जितने भी जीव हैं वे सब रागद्वेष की परिणति से मलिन बने हुए हैं और इसी कारण वे रात दिन असह्य शारीरिक एवं मानसिक दुःखों से पीड़ित होते रहते हैं अतः ऐसे दुःखों को नष्ट करने के लिये एवं हेय और उपादेय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उन्हे प्रयत्न करना चाहिये । ऐसा यह प्रयत्न विना विशिष्टविवेक के हो नहीं सकता है. विशिष्टविवेक भी अशेष अतिशयों को जिन्होने प्राप्त कर लिया है ऐसे आप्त के–सर्वज्ञ के उपदेश के विना नहीं हो सकता है. आप्त, जब तक रागद्वेष आदि सर्वथा नष्ट नहीं हो जाते हैं–तब तक नहीं हो सकता है. रागद्वेष आदि दोषों का आत्यन्तिक क्षय अर्हन्त भगवन्त के ही होता है । अतः अर्हद्वचनानुयोग प्रारम्भ किया जाता है उसमें स्थानांग नाम का जो तृतीय अङ्ग है सो उस अङ्ग की व्याख्या के बाद मै इसके उपांगभूत इस जीवाजीवाभिगम

भिगम सूत्रनी प्रमेयद्योतिका नामनी टीकानी (तन्यते) रचना करवामां आवी छे. (अहीं जीव पद वडे अजीवनुं पण ग्रहण थई जाय छे)

आ संसारना सघळा जीवो रागद्वेषनी परिणति (वृत्ति)थी मलिन थयेलां छे; अने ते कारणे तेओ रातदिन असह्य शारीरिक अने मानसिक दुःखोथी पीडाया करे छे एवां दुःखोनो नाश करवाने माटे तथा हेय अने उपादेयनुं ज्ञान मेळववाने माटे तेमणे प्रयत्न करवो जोईए. विशिष्ट विवेक विना एवो प्रयत्न थई शकतो नथी; अने जेमणे अशेष अतिशयोनी प्राप्ति करी लीधेली छे एवा आप्तना (सर्वज्ञना) उपदेश विना विशिष्ट विवेकनी प्राप्ति थई शकती नथी. रागद्वेष आदि दोषोनो सर्वथा नाश न थाय त्यां सुधी मनुष्य आप्त (सर्वज्ञ) थई शकतो नथी रागद्वेष आदिनो आत्यन्तिक क्षय (संदतर नाश) तो अर्हंत भगवानोने ज थयेलो होय छे तेथी अर्हद्वचनानुयोगनो प्रारंभ करवामा आवी रह्यो छे. तेमां स्थानांग नामनुं जे त्रीजुं अंग छे तेनी टीका लखीने हवे तेना उपांग रूप आ जीवाभिगम नामना

तस्यातिगम्भीरतयाऽल्पाक्षरतया च मन्दमतीनां न तथा सुखबोधः, तत्र यद्वस्तु प्रयोजनादि-रहितं न तस्य प्रारम्भाय प्रेक्षावान् प्रवर्तते कण्टकशाखामर्दनवत्, तथैव जीवाजीवाभिगमा-ध्ययनप्रारम्भप्रयासोऽपि अयुक्तएव प्रयोजनादि रहितत्वादित्याशङ्कामपनेतुं प्रयोजनादिकं वक्त-व्यमेव, तदुक्तम्—

प्रेक्षावतां प्रवृत्यर्थं फलादि त्रितयं स्फुटम् ।
मङ्गलञ्चैव शास्त्रादौ, वाच्यमिष्टार्थसिद्धये ॥१॥ इति

नामक तीसरे उपांग का मन्दमतिवालों को इसका सुचारु रूप से बोध प्राप्त हो जाय इस अभिप्राय से व्याख्यान करता हूँ ।

यह उपांग रागरूप विष (जहर) के उतारने के लिये सर्वोत्कृष्ट मन्त्र जैसा है. द्वेष-रूप अग्नि के दाह की शांति करने के लिये सलिल के जैसा है. अज्ञान रूप गाढ अन्धकार को दूर करने के लिये आदित्य के समान है और संसारसमुद्र से पार उतारने के लिये उत्तम सेतु–पुल के समान है । यद्यपि इसका व्याख्यान पूर्वाचार्यों ने किया है, परन्तु फिर भी उनके द्वारा किया गया वह व्याख्यान बहुत ही गम्भीर है एवं अल्प अक्षरों वाला है. अतः मन्दमतिजन सम्यग् रूप से उसका अर्थ समझ नहीं सकते है । इसलिये इसका वास्तविक अर्थ मन्दमति वाले जन भी समझ जावें इस अभिप्राय के वशवर्ती होकर ही मै इसका यह नवीन व्याख्यान करता हूँ ।

शंका—"जो वस्तु कण्टक शाखा के मर्दन के जैसी प्रयोजनादि से रहित होती है बुद्धिमान् व्यक्ति उसके प्रारम्भ करने में प्रवृत्ति नहीं करते है" इस नियम के अनुसार यदि

ત્રીજા ઉપાંગનું, મંદ મતિવાળા જીવોને સારો બોધ પ્રાપ્ત કરાવવાના ઉદ્દેશથી, વિવેચન કરી રહ્યો છું.

રાગ રૂપ ઝેરને ઉતારવાને માટે આ ઉપાંગ સર્વોત્તમ મંત્ર સમાન છે, દ્વેષ રૂપ અગ્નિના દાહનું શમન કરવાને માટે આ ઉપાંગ શીતળ જળ સમાન છે, અજ્ઞાન રૂપી ગાઢ અંધ-કારને દૂર કરવાને માટે તે સૂર્ય સમાન છે, અને સંસાર સમુદ્રને પાર કરવાને માટે તે ઉત્તમ સેતુ (પુલ) સમાન છે. જો કે મારી પહેલાં થઈ ગયેલાં ઘણાં આચાર્યોએ તેનું વિવે-ચન કરેલું છે, પરંતુ તેમના દ્વારા કરાયેલું વિવેચન એટલું બધું ગંભીર અને અલ્પ અક્ષ-રોવાળું—સંક્ષિપ્ત—છે કે મંદ મતિવાળા લોકો તેનો અર્થ બરાબર સમજી શકતા નથી એવા લોકો પણ તેનો વાસ્તવિક અર્થ બરાબર સમજી શકે. એ હેતુથી પ્રેરાઈને હું તેનું નવીન વિવેચન કરવા તૈયાર થયો છું.

૧ શંકા—'જે વસ્તુ કંટક શાખાના મર્દનની જેમ પ્રયોજનાદિથી રહિત હોય છે તેનો પ્રારંભ કરવાને બુદ્ધિમાન માણુસ પ્રવૃત્ત થતો નથી," આ નિયમ અનુસાર આ જીવાજીવા-

तत्र प्रयोजनमनन्तरपरम्परभेदाद् द्विविधम् पुनस्तत्प्रयोजनमेकैकं द्विविधम्-कर्तृगतं श्रोतृगतश्च तत्र द्रव्यार्थिकनयमतविचारणया आगमस्य नित्यत्वात् कर्तुरभाव एव।

तदुक्तम्-'**एयं दुवालसंगं गणीपिडगं न कयावि नासी, न कया वि न भवइ न कयावि न भविस्सइ धुवं णिच्चं सासयं**' इति एतद् द्वादशाङ्गं गणिपिटकं न कदाचिन्नासीत् न कदाचिन्न भवति न कदाचिन्न भविष्यति ध्रुवं नित्यं शाश्वतम् इत्यादि। पर्यायार्थिकनयमतपर्या-

---

यह जीवाजीवाभिगमसूत्र भी यदि प्रयोजनादि से रहित है। तो उसके प्रारम्भ का प्रयास करना भी अयुक्त ही है-अनुचित ही है--अतः इसमें औचित्य प्रकट करने के लिये प्रयोजनादि का कथन सर्वप्रथम आपको करना चाहिये। ऐसी ही बात '**प्रेक्षावतां प्रवृत्यर्थं**' इत्यादि। इस श्लोक द्वारा पुष्ट की गई है।

उत्तर—शङ्काकार की ऐसी यह शङ्का उचित है। परन्तु यहां पर प्रयोजनादि से रहितता नहीं है। इसी बात का समर्थन करते हुए टीकाकार कहते है कि अनन्तर और परम्पर के भेद से प्रयोजन दो प्रकार का होता है। और ये अनन्तर प्रयोजन और परम्पर प्रयोजन भी दो दो प्रकार का होता है। एक कर्तृगत और दूसरा श्रोतृगत यद्यपि द्रव्यार्थिक नय के मतानुसार विचार किया जाय तो कर्तृगत प्रयोजन बनता नहीं है। क्योंकि इस नय की मान्यता से आगम नित्य है और इस नित्यता के सामने उसके कर्ता का अभाव होने से कर्तृगत प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है। कहा भी है—

'एयं दुवालसंगं गणिपिटगं न कयावि नासी, न कयावि न भवइ, न कयावि न भविस्सइ. धुवं णिच्चं सासयं'

भिगम सूत्र पण जो प्रयोजनादिथी रहित होय, तो तेनो प्रारंभ करवानो प्रयत्न पण अनुचित ज गणी शकाय, तेथी तेनुं औचित्य प्रकट करवाने माटे आपे सौथी पहेलां प्रयोजनादिनुं कथन करवुं जोईए. एज वात नीचेना श्लोक वडे पुष्ट करवामां आवी छे —"प्रेक्षावतां प्रवृत्यर्थं ईत्यादि—

ઉત્તર-શંકાકારની આ શંકા ઉચિત જ છે, પરંતુ અહીં પ્રયોજનાદિનું કથન કરવામાં ન આવ્યું હોય, એવી વાત નથી એજ વાતનું સમર્થન કરતાં ટીકાકાર કહે છે કે—પ્રયોજનના બે ભેદ છે (૧) અનન્તર પ્રયોજન અને (૨) પરમ્પર પ્રયોજન અનન્તર અને પરમ્પર પ્રયોજનના પણ નીચે પ્રમાણે બબ્બે ભેદો પડે છે-(૧) કર્તૃગત અને (૨) શ્રોતૃગત. જો કે દ્રવ્યાર્થિક નયના મત પ્રમાણે વિચાર કરવામાં આવે તો કર્તૃગત પ્રયોજન સંભવી શકતું નથી, કારણ કે આ નયની માન્યતા અનુસાર આગમ નિત્ય છે અને આ નિત્યતાની સામે તેના કર્તાનો અભાવ હોવાથી કર્તૃગતપ્રયોજન સિદ્ધ થતું નથી
કહ્યું પણ છે કે—

"एयं दुवालसंगं गणिपिटगं न कयावि नासी, न कयावि न भवइ, न कयावि न भविस्सइ, धुवं णिच्चं सासयं"

लोचनायां चागमस्यानित्यत्वाद् आवश्यकस्तस्य कर्त्ता कश्चित् तत्त्वपर्यालोचनायां चागमस्य सूत्रार्थोभयरूपत्वात् अर्थापेक्षया नित्यत्वात् सूत्रापेक्षया चानित्यत्वात् कथञ्चित् कर्ता सिद्ध्यति तत्र कर्तुरनन्तरप्रयोजन भूतानुग्रह. परम्पराप्रयोजनं मोक्षः । तदर्थप्रतिपादने तीर्थकरस्य कतरत् प्रयोजनम्, न किञ्चित् तीर्थकराणां कृतकृत्यत्वात् । तर्हि "प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि

इसका तात्पर्य यह है कि यह द्वादशाङ्गगणिपिटक पूर्वकाल में नहीं था यह बात नहीं है–पूर्वकाल में भी था, वर्तमान में भी वह है और भविष्यत् काल में भी वह रहेगा–क्योकि यह तो ध्रुव, नित्य शाश्वत है । इस प्रकार द्रव्यार्थिक नय के मतानुसार गणिपिटकरूप द्वादशांग आगम–एवं यह जीवाजीवाभिगमरूप सूत्र ध्रुव, नित्य शाश्वत होने से कर्ता के अभाव वाला प्रमाणित होता है और इससे यह कर्तृगत प्रयोजन से रहित हो जाता है । परन्तु फिर भी पर्यायार्थिक नय की मान्यतानुसार आगम में गणिपिटकरूप द्वादशांग में एवं जीवाजीवाभिगम सूत्र में–अनित्यता भी आती है । एकान्ततः ध्रुव, नित्य शाश्वतता नहीं । अतः अनित्यता के आने से यह आवश्यक हो जाता है कि इसका कर्त्ता कोई है । और इससे इसमें कर्तृगत प्रयोजनवत्ता भी सिद्ध हो जाती है ।

तत्त्वतः विचार करने पर आगमसूत्र, अर्थ और सूत्रार्थरूप होता है । अर्थ की अपेक्षा वह नित्य और सूत्र की अपेक्षा वह अनित्य माना गया है अतः कथञ्चित् वह सकर्तृक है ऐसा मानने में कोई आपत्ति नहीं है । अतः कर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन तो साक्षात् भूतानुग्रहरूप है और परम्परा प्रयोजन मोक्षरूप है ।

તેનો ભાવાર્થ એ છે કે–આ દ્વાદશાંગ ગણિપિટક પૂર્વકાળે ન હતું એવી કોઈ વાત નથી–પૂર્વકાળે પણ તે હતું વર્તમાન કાળે પણ તે છે અને ભવિષ્યમાં પણ તેનું અસ્તિત્વ રહેવાનું જ છે, કારણ કે તે તો ધ્રુવ, નિત્ય અને શાશ્વત છે. આ પ્રકારે દ્રવ્યાર્થિક નયની માન્યતા પ્રમાણે ગણિપિટક રૂપ દ્વાદશાંગ આગમ–અને આ જીવાજીવાભિગમ રૂપ સૂત્ર ધ્રુવ, નિત્ય અને શાશ્વત હોવાથી કર્તાના અભાવવાળું સિદ્ધ થાય છે, અને તે કારણે તે કર્તૃગત-પ્રયોજનથી રહિત થઈ જાય છે, પરંતુ પર્યાયાર્થિક નયની માન્યતા પ્રમાણે આગમમાં–ગણિપિટક રૂપ દ્વાદશાંગ અને જીવાજીવાભિગમ સૂત્રમાં અનિત્યતા પણ રહેલી છે, એકાન્તતઃ ધ્રુવતા, નિત્યતા અને શાશ્વતતા નથી આ પ્રકારે અનિત્યતા સ્વીકારવામાં આવે તો તેનો કોઈ કર્તા પણ માનવો જ પડે આ પ્રકારે તેમાં કર્તૃગત પ્રયોજન યુક્તતા પણ સિદ્ધ થઈ જાય છે,

તાત્ત્વિક દૃષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે તો આગમ સૂત્ર, અર્થ અને સૂત્રાર્થરૂપ હોય છે. અર્થની અપેક્ષાએ તેને નિત્ય માનવામાં આવે છે અને સૂત્રની અપેક્ષાએ અનિત્ય માનવામાં આવેલ છે. તેથી તેને અમુક દૃષ્ટિએ સકર્તૃક માનવામાં કોઈ વાંધો નથી. તેથી કર્તાનું અનન્તર પ્રયોજન તો સાક્ષાત્ ભૂતાનુગ્રહરૂપ છે અને પરમ્પરા પ્રયોજન મોક્ષરૂપ છે.

प्रवर्तते" इति न्यायात् प्रयोजनमन्तरेण अर्थप्रतिपादनाय प्रवृत्तिर्न स्यात् इति कथं तीर्थकरस्य तत्र प्रवृत्तिः । इति चेन्न अर्थप्रतिपादनस्य तीर्थकृन्नामकर्मविपाकोदयप्रभवत्वात्

तदुक्तम्—तं च कहं वेइज्जइ ? अगिलाए धम्मदेसणाए उ'

तच्च कथं वेद्यते अग्लान्या धर्मदेशनयैव । इति ।

तच्च तीर्थकरनामकर्म कथं वेद्यते ? इति प्रश्ने उत्तरमाह—अग्लानभावतो धर्मदेशनयैव तीर्थकरनामकर्मणो वेदनं भवतीत्यतस्तस्य तत्र स्वतः प्रवृत्तिर्भवतीत्येतदेवात्र प्रयोजनमवसेयम् ।

शंका—जब अर्थरूप से कर्त्ता तीर्थंकर माने जाते हैं तो फिर उनमें प्रयोजनवत्ता सिद्ध होती है । परन्तु वे कृतकृत्य होने से यह प्रयोजनवत्ता उनमे बनती नहीं है । और प्रयोजन के बिना कोई व्यक्ति काम करता नहीं है **"प्रयोजनमनुदिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते"** अतः तीर्थंकर को भी सप्रयोजन मानना पडेगा । नहीं तो अर्थ प्रतिपादन करने में उनकी प्रवृत्ति ही नहीं हो सकेगी । तात्पर्य इस शंका का ऐसा है कि जब तीर्थंकर अर्थरूप से आगम का प्रतिपादन करते है तो वे किसी प्रयोजन को लेकर ही करते है । परन्तु मोहनीय के अभाव से उनमें प्रयोजनवत्ता सिद्धान्तकारो ने मानी नहीं है । अतः प्रयोजनवत्ता के अभाव में उनमें अर्थप्रतिपादकता कैसे मानी जा सकती है ।

इस शंका का समाधान ऐसा है कि तीर्थंकर जो अर्थप्रतिपादन में प्रवृत्त होते हैं वह किसी प्रयोजन के वशवर्ती होकर नहीं होते है किन्तु तीर्थंकर नामकर्म की प्रकृति का ही यह विपाक है जिससे उन्हे अर्थ का प्रतिपादन करना पड़ता है । कहा भी है—

'**तं च कहं वेइज्जइ अगिलाए धम्मदेसणाए उ**" अर्थात् अग्लानभाव से धर्मदेशना द्वारा ही उनके तीर्थंकर नामकर्म का वेदन होता है । उनका यही प्रयोजन है ऐसा जानना चाहिये ।

શંકા-જો અર્થરૂપે તીર્થંકરને કર્તા માનવામા આવે તો આગમોમા પ્રયોજન યુક્તતા સિદ્ધ થાય છે, પરન્તુ તેઓ કૃતકૃત્ય (જેમના બધાં પ્રયોજનો સિદ્ધ થઈ ગયેલ છે એવાં) હોવાથી તેમનામાં પ્રયોજનયુક્તતા સંભવી શકતી નથી, અને પ્રયોજન વિના કોઇ વ્યક્તિ કામ કરતી નથી, 'प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते" આ કથન અનુસાર તીર્થંકરોને સપ્રયોજન માનવા પડશે જો એવું માનવામાં ન આવે તો અર્થપ્રતિપાદન કરવાની તેમની પ્રવૃત્તિ જ સંભવી શકે નહીં ! આ શંકાનું તાત્પર્ય એ છે કે જો તીર્થંકર અર્થરૂપે આગમનું પ્રતિપાદન કરતા હોય, તો તેઓ કોઈ પ્રયોજનને લીધે જ એમ કરતા હોય. પરંતુ મોહનીયના અભાવને કારણે સિદ્ધાન્તકારોએ તેમનામાં પ્રયોજન યુક્તતા માની નથી; તો પછી પ્રયોજનવત્તાના અભાવને લીધે તેમનામાં અર્થપ્રતિપાદકતા કેવી રીતે માની શકાય' આ શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે કરી શકાય—તીર્થંકરો અર્થપ્રતિપાદનની જે પ્રવૃત્તિ કરે છે તે કોઈ પ્રયોજનને અધીન રહીને કરતા નથી, પરંતુ તીર્થંકર નામકર્મની પ્રકૃતિનો જ આ વિપાક છે તેથી તેમને અર્થનુ પ્રતિપાદન કરવું પડે છે કહ્યું પણ છે કે—

"तं च कहं वेइज्जइ अगिलाए धम्मदेसणाए उ" એટલે કે અગ્લાન ભાવે ધર્મદેશના દ્વારા જ તેઓ તીર્થંકર નામકર્મનું વેદન કરે છે, તેમનું એજ પ્રયોજન છે એમ સમજવું

श्रोतुरनन्तरं प्रयोजनं विवक्षिताध्ययनार्थपरिज्ञानम् परम्परप्रयोजनन्तु मोक्षप्राप्तिः विवक्षिताध्ययनसम्यगर्थावगमात् संयमे प्रवृत्त्या सकलकर्मक्षयसंभवात् । तदेतत् सिद्धं भवति जीवाजीवाभिगमाध्ययनप्रारम्भप्रयासः प्रयोजनवानिति । अभिधेयमत्र जीवाजीवस्वरूपम् । सम्बन्धश्च द्विविधः उपायोपेयभावरूपः गुरुपर्वक्रमरूपश्च तत्र वचनस्वरूपं प्रकरणमुपायः, उपेयश्च तत्परिज्ञानम् । द्वितीयस्तु सम्बन्धः केवलश्रद्धानुसारिणं प्रति तथाहि–अर्थतो भगवता तीर्थकरेण जीवाजीवाभिगमः प्रोक्तः, सूत्रतो द्वादशाङ्गेषु गणधरैर्ग्रथितः । तदनन्तरं मन्दमतीनामनुग्रहाय अतिशयज्ञानिभिः चतुर्दशपूर्वधरैः स्थानाङ्गनामकतृतीयाङ्गादाकृष्य पृथगध्ययनत्वेन

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन विवक्षित अध्ययन के अर्थ का परिज्ञान होना है और परम्परा प्रयोजन मोक्ष की प्राप्ति होना है। क्योकि विवक्षित अध्ययन के सच्चे अर्थ के अवगम हो जाने पर संयम में प्रवृत्ति के बल से ज्ञाता को सकल कर्मों के क्षय होते ही मोक्ष प्राप्ति हो जाती है। अतः यह बात अच्छे प्रकार से इस उपर्युक्त पुष्ट प्रमाण से सिद्ध हो गई है कि जीवाजीवाभिगम अध्ययन के प्रारम्भ करने का जो यह प्रयास है वह प्रयोजनवाला है।

जीवाजीव स्वरूप का कथन यहां अभिधेय है। उपायोपेयभावरूप और गुरुपर्वक्रमरूप से सम्बन्ध दो प्रकार का होता है। इनमें वचनस्वरूप प्रकरण उपाय है और इस प्रकरण का जो ज्ञान है वह उपेय है। गुरुपर्वक्रमरूप सम्बन्ध केवल श्रद्धानुसारी के प्रति है-जैसे–अर्थ की अपेक्षा यह जीवाजीवाभिगम भगवान् तीर्थंकर ने कहा है और सूत्र की अपेक्षा द्वादशाङ्गो में गणधरों ने कहा है इसके बाद मन्दमतिवाले जनों के हित के लिए अतिशय ज्ञानवाले चतुर्दश पूर्वधरो ने स्थानांगनामक तृतीय अङ्ग से लेकर पृथक् अध्ययन के रूप में इस जीवाजीवाभिगम

વિવક્ષિત અધ્યયનના અર્થનું પરિજ્ઞાન થવું. એ શ્રોતાનું અનન્તર પ્રયોજન છે અને મોક્ષની પ્રાપ્તિ થવી તે પરમ્પરા પ્રયોજન છે, કારણકે વિવક્ષિત અધ્યયનના સાચા અર્થનું જ્ઞાન થઈ જાય ત્યારે સંયમમાં પ્રવૃત્ત થઈને જ્ઞાતા સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય કરીને મોક્ષ પ્રાપ્ત કરે છે તેથી ઉપર્યુક્ત પુષ્ટ પ્રમાણની મદદથી એ વાત સિદ્ધ થઇ જાય છે કે જીવાજીવાભિગમ અધ્યયનનો પ્રારંભ કરવાનો આ જે પ્રયાસ છે તે પ્રયોજનયુક્ત જ છે.

જીવ અને અજીવમાં સ્વરૂપનું કથન અહીં અભિધેય છે સંબંધ બે પ્રકારનો હોય છે —(૧) ઉપાયોપેયભાવ રૂપ અને (૨) ગુરુપર્વક્રમ રૂપ આ બન્નેમાં વચન સ્વરૂપ પ્રકરણ 'ઉપાય' છે અને આ પ્રકરણનું જે જ્ઞાન છે, તે 'ઉપેય' છે ગુરુપર્વક્રમ રૂપ સંબંધ માત્ર શ્રદ્ધાનુસારી સાથે છે. જેમ કે-અર્થની અપેક્ષાએ આ જીવાજીવાભિગમ તીર્થંકર ભગવાને કહ્યું છે અને સૂત્રની અપેક્ષાએ ગણધરોએ બાર અંગોમાં તેનુ કથન કર્યું છે. ત્યાર બાદ મંદ મતિવાળા જનોના હિતને માટે અતિશય જ્ઞાનવાળા-ચૌદ પૂર્વધરોએ સ્થાનાંગ નામના ત્રીજા અંગથી લઈને અલગ અધ્યયન રૂપે આ જીવાજીવાભિગમનું કથન કર્યું છે અને તેને

जीवाजीवाभिगम उक्तो व्यवस्थापितश्च अतस्तृतीयोपाङ्ग इति कथ्यते एतादृशमेव सम्बन्धमनुचिन्त्य स्थविरा भगवन्तः प्रज्ञापितवन्त इति कथयिष्यति ॥

इदञ्च जीवाजीवाभिगमाख्यमध्ययनं सम्यग् ज्ञानकारणत्वेन परम्परया सिद्धिपदप्रापकत्वात् श्रेयो भूतम् तत्र माभूत् कोऽपि विघ्नः इति सकलविघ्नोपशान्तये शिष्याणां मङ्गलबुद्धिपरिग्रहाय च वस्तुतो मङ्गलरूपेऽपि प्रकृतग्रन्थे मङ्गलं प्रदर्श्यते–तन्मङ्गलमादिमध्यावसानभेदेन त्रिविधम् तत्रादिमङ्गलम् **'इह खलु जिणमयं'** इत्यादि अत्र परमपावनजिननामकथनमेव मङ्गलम् मङ्गलं द्विविधं द्रव्यतो भावतश्च, तत्र द्रव्यमङ्गलं दध्यक्षतादिकं भावमंगलन्तु सूत्ररूपम् अत्र भावमङ्गलाधिकारः, अधिकन्तु भगवत्याः प्रमेयचन्द्रिकायां द्रष्टव्यमिति ॥

का कथन किया है और उसे व्यवस्थापित किया है। अतः यह तृतीय उपांगरूप से कहा गया है। ऐसे ही सम्बन्ध का विचार कर सूत्रकार ने प्रथम सूत्रपाठ में "थेरा भगवंतो" स्थविर भगवन्तों ने इस अध्ययन को कहा है" इस से भूतकालिक क्रिया का प्रयोग किया है।

यह जीवाजीवाभिगम नाम का अध्ययन सम्यग्ज्ञान का कारण होने से परम्परारूप से सिद्धिपद को प्राप्त कराने वाला है अतः यह कल्याण स्वरूप है। फिर भी इस में कोई भी विघ्न न आवे इस भाव से विघ्न की शान्ति के लिये और शिष्यों में मंगल बुद्धि का ग्रहण हो इसके लिये वस्तुतः यह मंगलस्वरूप होने पर भी इस प्रकृत शास्त्र में मंगलाचरण दिखलाया जाता है आदिमंगल, मध्यमंगल और अवसानमंगल के भेद से यह मंगल तीन प्रकार का कहा गया है **"इह खलु जिणमयं"** इत्यादि रूप से जो कथन है वह आदि मंगलरूप है। क्योंकि परमपावन जिननाम का कथन ही मंगलरूप होता है। द्रव्यमंगल और भावमंगल के भेद से मंगल में द्विविधता आती है। दधि अक्षत आदि ये सब द्रव्यमंगल है।

વ્યવસ્થિત કર્યું છે, તેથી તેને ત્રીજા ઉપાંગરૂપ ગણ્યું છે આ પ્રકારના સંબંધનો વિચાર કરીને સૂત્રકારે પ્રથમ સૂત્રપાઠમાં (**थेरा भगवंतो**) સ્થવિર ભગવંતોએ આ અધ્યયનનું કથન કર્યું છે," આ પ્રકારની ભૂતકાલિક ક્રિયાનો પ્રયોગ કર્યો છે.

આ જીવાજીવાભિગમ નામનું અધ્યયન સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી પરમ્પરા રૂપે સિદ્ધિ પદની પ્રાપ્તિ કરાવનારું છે. તેથી તે કલ્યાણ સ્વરૂપ જ છે. છતાં પણ તેમાં કોઈ પણ વિઘ્ન ન આવે એ હેતુથી, વિઘ્નની શાંતિ માટે અને શિષ્યોમાં મંગળબુદ્ધિ આવે તે હેતુથી—આ અધ્યયન પોતે જ મંગળરૂપ હોવા છતાં પણ આ શાસ્ત્રમાં મંગળાચરણ બતાવવામાં આવે છે આ મંગળના ત્રણ ભેદ છે (૧) આદિ મંગળ, (૨) મધ્યમંગળ અને (૩) અંત્ય મંગળ.

'**इह खलु जिणमयं**" ઈત્યાદિ જે કથન છે તે આદિ મંગળ રૂપ છે, કારણ કે પરમ પવિત્ર જિનનામનું, કથન જ મંગળરૂપ હોય છે. મંગળના બે પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે-(૧) દ્રવ્યમંગળ અને (૨) ભાવ મંગળ. દહી, અક્ષત આદિ દ્રવ્યમંગળ છે. સૂત્ર ભાવમંગળ

मध्यमङ्गलं द्वीपसमुद्रादिस्वरूपकथनम् द्वीपसमुद्रादिकानां निमित्तशास्त्रे परममगलतयोपन्यासात्। तदुक्तम्–'जो जं पसत्थमत्थं पुच्छइ तस्सऽत्थ संपत्ती' इत्यादि। यो यं प्रशस्तमर्थं पृच्छति तस्यार्थसप्राप्तिः।

अन्तिममङ्गलश्च–'दसविहा सव्वे जीवा' इत्यादि रूपम् एतस्य सर्वजीवपरिज्ञानकारणत्वेन माङ्गलिकत्वादिति। तदेव प्रयोजनादिकं मङ्गलञ्चोपदिश्यानुयोगः कथ्यते–कश्चासौ अनुयोगः? अनु सूत्रोपपादानन्तरं सूत्रस्य अर्थेन सह योगोऽनुयोगः। सूत्रादनन्तरं तदर्थकथनमितिभावः। अथवा अनुकूलोऽविरोधी सूत्रस्यार्थेन सह योगोऽनुयोग इति॥ एतद्विषये उपासकदशाङ्गस्यागारधर्मसंजीविनी टीका द्रष्टव्या, तत्रेदमादिमं सूत्रम्—

सूत्र भावमंगल है। यहां भावमंगल का अधिकार है। इस विषय में विशेष जिज्ञासुओ के लिये भगवती की प्रमेयचन्द्रिका टीका देखनी चाहिये।

द्वीप समुद्र आदि के स्वरूप का जो कथन है यह मध्यमंगल है। क्योंकि निमित्तशास्त्र में द्वीपादिकों को परममंगलरूप से कहा गया है। कहा भी है—

"जो जं पसत्थमत्थं पुच्छइ तस्सत्थ संपत्ती" इत्यादि।

अन्तिममंगल "दसविहा सव्वे जीवा" इत्यादि सूत्ररूप है। क्योकि सर्व जीवो के परिज्ञान का कारण होने से इसमें मांगलिकता है। इस प्रकार प्रयोजनादिक और मंगल का कथन करके अब अनुयोग का कथन करते हैं—सूत्रोपादान के बाद सूत्र का अर्थ के साथ जो योग है वह अनुयोग है ऐसी अनुयोग शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका निष्कर्षार्थ यही है कि सूत्र कथन के बाद जो उसके अर्थ का कथन है वह अनुयोग है। अथवा—अनुकूलतारूप से

છે. અહીં ભાવમંગળનો અધિકાર છે. આ વિષયમાં અધિક જાણવાની ઇચ્છાવાળા જિજ્ઞાસુઓને ભગવતીની પ્રમેયચન્દ્રિકા ટીકા વાંચી જવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે

દ્વીપ, સમુદ્ર આદિમાં સ્વરૂપનું જે કથન છે, તે મધ્યમંગળ છે, કારણ કે નિમિત્તશાસ્ત્રમાં દ્વીપાદિકોને પરમ મંગળરૂપ કહ્યા છે. કહ્યુ પણ છે કે—

"जो जं पसत्थमत्थं पुच्छइ तस्सत्थ संपत्ती" ઇત્યાદિ "दसविहा सव्वे जीवा" ઇત્યાદિ સૂત્ર અન્તિમ મંગળરૂપ છે, કારણ કે સમસ્ત જીવોના પરિજ્ઞાનમાં કારણભૂત હોવાથી તેમાં માંગલિકતા છે આ પ્રકારે પ્રયોજન, મંગળ વગેરેનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર અનુયોગનું કથન કરે છે. અનુયોગનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—સૂત્રોપાદાન (સૂત્રને ગ્રહણ કરવાની ક્રિયા) બાદ સૂત્રના અર્થની સાથે જે યોગ થાય છે, તેનું નામ અનુયોગ છે એટલે કે સૂત્રનું કથન કર્યા બાદ તેના અર્થનું જે કથન કરાય છે. તેનુ નામ અનુયોગ છે અથવા—અનુકૂળ

जीवाजीवाभिगम उक्तो व्यवस्थापितश्च अतस्तृतीयोपाङ्ग इति कथ्यते एतादृशमेव सम्बन्धमनुचिन्त्य स्थविरा भगवन्तः प्रज्ञापितवन्त इति कथयिष्यति ॥

इदञ्च जीवाजीवाभिगमाख्यमध्ययनं सम्यग् ज्ञानकारणत्वेन परम्परया सिद्धिपदप्रापकत्वात् श्रेयो भूतम् तत्र माभूत् कोऽपि विघ्नः इति सकलविघ्नोपशान्तये शिष्याणां मङ्गलबुद्धिपरिग्रहाय च वस्तुतो मङ्गलरूपेऽपि प्रकृतग्रन्थे मङ्गलं प्रदर्श्यते—तन्मङ्गलमादिमध्यावसानभेदेन त्रिविधम तत्रादिमङ्गलम् 'इह खलु जिणमयं' इत्यादि अत्र परमपावनजिननामकथन मेव मङ्गलम् मङ्गलं द्विविधं द्रव्यतो भावतश्च, तत्र द्रव्यमङ्गलं दध्यक्षतादिकं भावमंगलन्तु सूत्ररूपम् अत्र भावमङ्गलाधिकारः, अधिकन्तु भगवत्याः प्रमेयचन्द्रिकायां द्रष्टव्यमिति ॥

का कथन किया है और उसे व्यवस्थापित किया है। अतः यह तृतीय उपांगरूप से कहा गया है। ऐसे ही सम्बन्ध का विचार कर सूत्रकार ने प्रथम सूत्रपाठ में "थेरा भगवंतो" स्थविर भगवन्तों ने इस अध्ययन को कहा है" इस से भूतकालिक क्रिया का प्रयोग किया है।

यह जीवाजीवाभिगम नाम का अध्ययन सम्यग्ज्ञान का कारण होने से परम्परारूप से सिद्धिपद को प्राप्त कराने वाला है अतः यह कल्याण स्वरूप है। फिर भी इस में कोई भी विघ्न न आवे इस भाव से विघ्न की शान्ति के लिये और शिष्यो में मंगल बुद्धि का ग्रहण हो इसके लिये वस्तुतः यह मंगलस्वरूप होने पर भी इस प्रकृत शास्त्र में मंगलाचरण दिखलाया जाता है आदिमंगल, मध्यमंगल और अवसानमंगल के भेद से यह मंगल तीन प्रकार का कहा गया है "इह खलु जिणमयं" इत्यादि रूप से जो कथन है वह आदि मगलरूप है। क्योंकि परमपावन जिननाम का कथन ही मंगलरूप होता है। द्रव्यमंगल और भावमंगल के भेद से मंगल में द्विविधता आती है। दधि अक्षत आदि ये सब द्रव्यमंगल है।

વ્યવસ્થિત કર્યું છે, તેથી તેને ત્રીજા ઉપાંગરૂપ ગણ્યુ છે આ પ્રકારના સંબંધને વિચાર કરીને સૂત્રકારે પ્રથમ સૂત્રપાઠમાં (थेरा भगवतो) સ્થવિર ભગવંતોએ આ અધ્યયનનું કથન કર્યું છે," આ પ્રકારની ભૂતકાલિક ક્રિયાનો પ્રયોગ કર્યો છે.

આ જીવાજીવાભિગમ નામનું અધ્યયન સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી પરમ્પરા રૂપે સિદ્ધિ પદની પ્રાપ્તિ કરાવનારું છે. તેથી તે કલ્યાણ સ્વરૂપ જ છે. છતા પણ તેમાં કોઈ પણ વિઘ્ન ન આવે એ હેતુથી, વિઘ્નની શાંતિ માટે અને શિષ્યોમાં મંગળબુદ્ધિ આવે તે હેતુથી—આ અધ્યયન પોતે જ મંગળરૂપ હોવા છતાં પણ. આ શાસ્ત્રમાં મંગળાચરણ બતાવવામાં આવે છે. આ મગળના ત્રણ ભેદ છે (૧) આદિ મંગળ, (૨) મધ્યમંગળ અને (૩) અંત્ય મંગળ.

'इह खलु जिणमयं" ઈત્યાદિ જે કથન છે તે આદિ મંગળ રૂપ છે, કારણ કે પરમ પવિત્ર જિનનામનુ, કથન જ મગળરૂપ હોય છે. મંગળના બે પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે-(૧) દ્રવ્યમંગળ અને (૨) ભાવ મગળ. દહીં, અક્ષત આદિ દ્રવ્યમંગળ છે. સૂત્ર ભાવમગળ

मध्यमङ्गलं द्वीपसमुद्रादिस्वरूपकथनम् द्वीपसमुद्रादिकानां निमित्तशास्त्रे परममङ्गलतयोपन्यासात्। तदुक्तम्–'जो जं पसत्थमत्थं पुच्छइ तस्सऽत्थ संपत्ती' इत्यादि। यो यं प्रशस्तमर्थं पृच्छति तस्यार्थसम्प्राप्तिः।

अन्तिममङ्गलञ्च–'दसविहा सव्वे जीवा' इत्यादि रूपम् एतस्य सर्वजीवपरिज्ञानकारणत्वेन माङ्गलिकत्वादिति। तदेव प्रयोजनादिकं मङ्गलञ्चोपदिश्यानुयोगः कथ्यते–कश्चासौ अनुयोगः? अनु सूत्रोपपादानन्तरं सूत्रस्य अर्थेन सह योगोऽनुयोगः। सूत्रादनन्तरं तदर्थकथनमितिभावः। अथवा अनुकूलोऽविरोधी सूत्रस्यार्थेन सह योगोऽनुयोग इति॥ एतद्विषये उपासकदशाङ्गस्यागारधर्मसंजीविनी टीका द्रष्टव्या, तत्रेदमादिमं सूत्रम्—

सूत्र भावमंगल है। यहां भावमंगल का अधिकार है। इस विषय में विशेष जिज्ञासुओं के लिये भगवती की प्रमेयचन्द्रिका टीका देखनी चाहिये।

द्वीप समुद्र आदि के स्वरूप का जो कथन है यह मध्यमंगल है। क्योंकि निमित्तशास्त्र में द्वीपादिकों को परममंगलरूप से कहा गया है। कहा भी है—

"जो जं पसत्थमत्थं पुच्छइ तस्सत्थ संपत्ती" इत्यादि।

अन्तिममंगल "दसविहा सव्वे जीवा" इत्यादि सूत्ररूप है। क्योंकि सर्व जीवों के परिज्ञान का कारण होने से इसमें मांगलिकता है। इस प्रकार प्रयोजनादिक और मंगल का कथन करके अब अनुयोग का कथन करते हैं—सूत्रोपादान के बाद सूत्र का अर्थ के साथ जो योग है वह अनुयोग है ऐसी अनुयोग शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका निष्कर्षार्थ यही है कि सूत्र कथन के बाद जो उसके अर्थ का कथन है वह अनुयोग है। अथवा–अनुकूलतारूप से

છે. અહીં ભાવમંગળનો અધિકાર છે. આ વિષયમાં અધિક જાણવાની ઇચ્છાવાળા જિજ્ઞાસુઓને ભગવતીની પ્રમેયચન્દ્રિકા ટીકા વાંચી જવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે.

દ્વીપ, સમુદ્ર આદિમાં સ્વરૂપનું જે કથન છે, તે મધ્યમંગળ છે, કારણ કે નિમિત્તશાસ્ત્રમાં દ્વીપાદિકોને પરમ મંગળરૂપ કહ્યા છે. કહ્યુ પણ છે કે—

"जो जं पसत्थमत्थं पुच्छइ तस्सत्थ संपत्ती" ઇત્યાદિ "दसविहा सव्वे जीवा" ઇત્યાદિ સૂત્ર અન્તિમ મંગળરૂપ છે, કારણ કે સમસ્ત જીવોના પરિજ્ઞાનમાં કારણભૂત હોવાથી તેમાં માંગલિકતા છે આ પ્રકારે પ્રયોજન, મંગળ વગેરેનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર અનુયોગનું કથન કરે છે. અનુયોગનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—સૂત્રોપાદાન (સૂત્રને ગ્રહણ કરવાની ક્રિયા) બાદ સૂત્રના અર્થની સાથે જે યોગ થાય છે, તેનું નામ અનુયોગ છે એટલે કે સૂત્રનું કથન કર્યા બાદ તેના અર્થનું જે કથન કરાય છે. તેનું નામ અનુયોગ છે અથવા—અનુકૂ

मूलम्—इह खलु जिनमयं जिणाणुमयं जिणाणुलोमं जिणप्पणीयं जिणप्परूवियं जिणक्खायं जिणाणुचिन्नं जिणप्पण्णत्तं जिणदेसियं जिणपसत्थं अणुवीइय तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोयमाणा थेरा भगवंता जीवाजीवाभिगमणाममज्झयणं पण्णवंसु" ॥ सू० १ ॥

छाया—इह खलु जिनमतम्, जिनानुमतम्, जिनानुलोमम्, जिनप्रणीतम्, जिनप्ररूपितम्, जिनाख्यातम्, जिनानुचीर्णम्, जिनप्रज्ञप्तम्, जिनदेशितम्, जिनप्रशस्तम्, अनुविचिन्त्य तत् श्रद्धानाः तत् प्रतीयमानाः तद्रोचयन्त स्थविरा भगवन्तो जीवाजीवाभिगमनामकमध्ययनं प्राज्ञापयन् ॥ सू० १ ॥

'इह खलु' इह—एतस्मिन् प्रवचने खलु शब्दोऽवधारणे तथाच—एतस्मिन्नेव जिनप्रवचने नत्वस्मिन् शाक्यादिप्रवचने, अथवा इह—अस्मिन् मनुष्यलोके खलु शब्दो वाक्यालङ्कारे। 'जिण-

---

अविरोधरूप से सूत्र का जो अर्थ के साथ—योग—सम्बन्ध है वह अनुयोग है। इसके विषय में उपासकदशाङ्गसूत्र की अगारधर्मसजीवनी टीका देखनी चाहिये।

टीकार्थ—सूत्र में "खलु" यह शब्द अवधारण में या वाक्यालङ्कार में प्रयुक्त हुआ है। जब अवधारण में प्रयुक्त हुआ इसे माना जायगा—तब "इह खलु" का अर्थ होता है इसी जिनप्रवचन में, शाक्य आदि के प्रवचन में नहीं, क्योंकि जिनमत तो जिनप्रवचन में ही जिनानुमत आदि विशेषणों वाला होगा, अन्य शाक्य आदि प्रवचनों में नहीं। और जब इसे वाक्यालंकार के रूप में प्रयुक्त हुआ माना जायगा—तब "इह खलु' का अर्थ होता है इस मनुष्यलोक में। मनुष्यलोक मानुषोत्तर पर्वत के पहिले २ आधे पुष्कर द्वीपतक है अतः वहीं तक यह जिनमत जिनानुमत आदि विशेषणों वाला है। इसके बाहर जो असख्यात द्वीप और

રૂપે-અવિરોધ રૂપે-સૂત્રનો અર્થની સાથે જે યોગ (સબંધ) છે, તેનું નામ અનુયોગ છે આ વિષયના વધુ સ્પષ્ટીકરણ માટે ઉપાસક દશાંગસૂત્રની અગાર ધર્મ સંજીવની ટીકા વાંચી જવી.
"इह खलु जिणमयं जिणाणुमयं" ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ-સૂત્રમાં "खलु" આ પદ અવધારણમાં અથવા વાક્યાલંકારમાં વપરાયુ છે જો તેને અવધારણમાં વપરાયેલુ માનવામાં આવે, તો "इह खलु" આ પદનો અર્થ આ જિનપ્રવચનમાં "જ" માનવો પડશે, શાક્ય આદિ પ્રવચનોને અહીં ગ્રહણ કરવા જોઈએ નહીં, કારણ કે જિનમત તો જિનપ્રવચનમાં જ જિનાનુમત આદિ વિશેષણોવાળો હોઈ શકે —શાક્ય આદિ અન્ય પ્રવચનોમા નહીં અને જ્યારે તેને વાક્યાલકારમાં વપરાયેલું માનવામાં આવશે, ત્યારે તેનો અર્થ ("इह खलु" નો અર્થ) "આ મનુષ્ય લોકમાં થશે મનુષ્યલોક માનુષોત્તર પર્વતથી પુષ્કર દ્વીપ સુધી આવેલો છે, તેથી ત્યાં સુધી તે જિનમત, જિનાનુમત આદિ વિશેષણોવાળો છે, તેની બહાર જે અસંખ્યાત દ્વીપો અને સ્વયંભૂરમણ પર્ય-

मयं' जिनमतम् जिनस्य वर्द्धमानस्वामिनो मतमिति जिनमतम् रागादिशत्रून् जयतीति जिनः, यद्यपि छद्मस्थवीतरागोऽपि भवति जिनस्तथापि छद्मस्थवीतरागस्य तीर्थप्रवर्तकत्वं नास्ति, किन्तु समुत्पन्नकेवलज्ञानस्तीर्थकृत् एव जिनशब्देन व्यवह्रियते तत्रापि वर्द्धमानस्वामी एवात्र गृह्यते जिनपदेन, तस्य वर्द्धमानस्वामिनो वर्तमानतीर्थाधिपतित्वात् तस्य जिनस्य श्रीवर्द्धमानस्वामिनो मतम् अर्थतो वर्द्धमानस्वामिनैव प्रणीतत्वात् आचारादिदृष्टिवादपर्यन्तं द्वादशाङ्गं गणिपिटकमिति॥ कथंभूतं श्रीवर्द्धमानस्वामिजिनमतम्, तत्राह–'जिणाणुमयं' जिनानुमतम्, जिनानाविजितरागादिशत्रूणां तीर्थप्रवर्तकानाम् अतीतानागतवर्तमानानाम् ऋषभपद्मनाभसीमन्धरप्रभृ-

---

समुद्र स्वयंभूरमणतक है कि जहां तिर्यञ्चों का ही आवास है वहां यह नहीं है। विरोधियों पर विजय पाने वाला मनुष्य जैनसिद्धान्त की आध्यात्मिक दृष्टि में विजयी नहीं माना गया है। किन्तु रागादिक जो आत्मा के अन्तरङ्ग शत्रु हैं उनपर ही विजयपाने वाला मनुष्य विजयी—जिन—माना गया है। ऐसे जिन यहा वर्धमानस्वामी जो कि अन्तिम तीर्थंकर हुए हैं लिये गये है। यद्यपि जिन संज्ञा जो छद्मस्थ वीतराग होता है उसमें भी प्रचलित है परन्तु वह तीर्थ का प्रवर्त्तक नहीं होता है तीर्थ का प्रवर्त्तक तो केवल ज्ञानशाली आत्मा ही होता है-ऐसी आत्माएँ यहां २४ हुई है। परन्तु उनको यहां ग्रहण न करके केवल एक वर्धमानस्वामी का ही जो ग्रहण किया गया है उसका कारण वर्तमान में प्रचलित शासन का उनका अधिपति होना है। मत शब्द से आचाराग आदि से लेकर दृष्टिवादतक का जो समस्त द्वादशाङ्गरूप गणिपिटक है वह गृहीत हुआ है क्योंकि अर्थरूप से वर्धमान स्वामी द्वारा ही यह प्रणीत हुआ हैं। "जिनानुमतम्" आदि जो "जिनप्रशस्तं" तक के पद हैं वे सब इसी जिनमत के विशेषणरूप है। इनमें जिनानुमतपद जिनमत में ऐसी विशेषता प्रकट करता हैं कि यह जो

તના સમુદ્રો છે, તેમાં તિર્યંચોના જ આવાસો છે, ત્યાં તેનો સદ્ભાવ નથી. જૈન સિદ્ધાંતની આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિએ વિરોધીઓ પર વિજય પ્રાપ્ત કરનાર મનુષ્યને વિજયી માનવામાં આવતો નથી, પરંતુ આત્માના શત્રુઓ રૂપ રાગાદિક પર વિજય પ્રાપ્ત કરનાર મનુષ્યને જ વિજયી -જિન-માનવામાં આવે છે. વર્ધમાન સ્વામી કે જેઓ અન્તિમ તીર્થંકર થઈ ગયા તેમને જ અહીં એવા જિન માનવામાં આવ્યા છે જો કે છદ્મસ્થ વીતરાગમાં પણ જિનસંજ્ઞા પ્રચલિત છે, પરન્તુ તે તીર્થના પ્રવર્તક હોતા નથી, કેવળજ્ઞાની આત્મા જ તીર્થના પ્રવર્તક થઈ શકે છે એવાં ૨૪ તીર્થંકરો થઈ ગયા છે. પરંતુ તે બધાં તીર્થંકરોને અહીં ગ્રહણ કરવામાં આવેલ નથી, અહીં તો માત્ર વર્ધમાન સ્વામીને જ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે, કારણ કે વર્તમાન સમયમા પ્રચલિત શાસનના તેઓ અધિપતિ છે. "મત" પદ વડે આચારાંગથી લઈને દૃષ્ટિવાદ પર્યન્તનું સમસ્ત દ્વાદશાંગ રૂપ ગણિપિટક ગ્રહણ કરાયું છે, કારણ કે અર્થ રૂપે મહાવીર સ્વામી દ્વારા જ તે પ્રણીત થયું છે. "जिनानुमतम्" થી લઈને "जिनप्रशस्तं" સુધીનાં જે પદો છે, તે જિનમતમાં એવી વિશેષતા પ્રકટ કરે છે કે વર્ધમાન સ્વામીનો

तीनाम् अनुमतम्–आनुकूल्येन संमतम् वस्तुतत्वं मोक्षमार्गं प्रति चेपदपि विसंवादाभावादिति जिनानुमतम्। एतावता सर्वेषामेव तीर्थकराणां परस्परमविसंवादिवचनता अभिव्यञ्जितेति ॥ पुनः कथं भूतं जिनमतं तत्राह- 'जिणाणुलोमं' जिनानुलोमम्–जिनानाम्-अवध्यादिजिनानाम् अनुलोमम्–अनुकूलम् अनुगुणमिति भावः । जिनप्रतिपादितशास्त्राध्ययनादेव तेषाम् अवध्यादि जिनत्वप्राप्तिसंभवात् तथाहि-यथोक्तमिदं जिनमतम् आसेवमाना मुनयोऽवधिमनःपर्यवकेवलज्ञानं प्राप्नुवन्त्येवेति ॥ तथा–'जिणप्पणीयं' जिनप्रणीतम् जिनेन विजितरागादिशत्रुणा समवाप्तकेवल-

वर्धमानस्वामी का मत है वह समस्त जिनों की प्ररूपणा के ही अनुकूल है। उनकी प्ररूपणा से प्रतिकूलता की थोड़ी सी भी गन्ध इसमें नहीं है क्योंकि जितने भी जिन हुए है, होंगे और हैं वे सब सिद्धान्त की ऐसी ही प्ररूपणा करते हैं। अतः भूतकाल में ऋषभ आदि, अनागत काल में पद्मनाभ आदि और वर्तमान में विदेहक्षेत्रस्थ सीमंधर आदि जितने भी जिन हुए हैं, है और होगे उन सबको प्ररूपणा के ही अनुरूप यह जिनमत है। क्योकि मोक्षमार्ग की प्ररूपणा के प्रति किसी के भी–विसवाद–मतभेद नहीं है अतः इस विशेषण से समस्त तीर्थंकरों में परस्पर–अविसंवादि वचनता अभिव्यञ्जित हुई है। "जिनानुलोमम्" यह पद जिनमतरूप अपने विशेष्य में यह बात प्रकट करता है कि जितने भी अवधिज्ञानवाले आदि जिन हुए हैं उनके लिये यह जिनमत बहुत ही अधिक उपकारक हुआ है–क्योंकि इसी जिनप्रतिपादितशास्त्र के अध्ययन से ही उनमें अवधिजिन, मन· पर्यवजिन इत्यादि जिनपने की प्राप्ति सभवित हुई है। यह तो निश्चित बात है कि यथोक्त रूप से इस जिनमत का आसेवन करने वाले मुनिजन अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान प्राप्त कर लेते है। "जिनप्रणीतं" पद

આ જે મત છે તે સમસ્ત જિનોની પ્રરૂપણાને અનુકળ છે તેમની પ્રરૂપણા અને વર્ધમાન સ્વામીની પ્રરૂપણામા બિલકુલ પ્રતિકૂળતા (વિરોધાભાસ) નથી, કારણ કે જેટલા જિન થઇ ગયા છે, અને થવાના છે, તે સૌ સિદ્ધાંતની આ પ્રકારની પ્રરૂપણા જ કરતા હતા, કરે છે અને કરશે ભૂતકાળમાં ઋષભ આદિ જે તીર્થંકરો થયા છે, ભવિષ્યમાં પદ્મનાભ આદિ જે તીર્થંકરો થવાના છે અને વર્તમાન સમયે વિદેહ ક્ષેત્રમાં સીમંધર આદિ જે તીર્થંકરો બિરાજે છે, તે સૌની પ્રરૂપણાને અનુરૂપ જ આ જિનમત છે, કારણ કે મોક્ષમાર્ગની પ્રરૂપણાના વિષયમાં તેમની વચ્ચે કોઈ પણ પ્રકારનો વિસંવાદ મતભેદ નથી. આ વિશેષણના પ્રયોગ દ્વારા સમસ્ત તીર્થંકરોની પ્રરૂપણામાં અવિસંવાદિતા વ્યક્ત કરવામાં આવી છે, "जिनानुलोमम्" આ પદ જિનમત રૂપ પોતાના વિશેષ્યમાં એ વિશેષતા પ્રકટ કરે છે કે અવધિજ્ઞાન આદિથી યુક્ત જેટલા જિન થયા છે, તેમને માટે આ જિનમત ઘણો જ ઉપકારક નિવડયો છે, કારણ કે આ જિનપ્રતિપાદિત શાસ્ત્રના અધ્યયનને લીધે જ તેઓ અવધિજિન, મન પર્યવજિન આદિ જિનપણાની પ્રાપ્તિ કરી શકયા હતા એ વાત તો નિશ્ચિત જ છે કે શાસ્ત્રમાં કહ્યા અનુસાર જિનમતનું સેવન કરનાર મુનિજને અવધિ. અને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી શકે છે

ज्ञानेन भगवता श्रीवर्द्धमानस्वामिना प्रणीतं सकलार्थसंग्राहकमातृकापदत्रयप्रणयनात् जिन प्रणीतमिति कथ्यते–स खलु वर्द्धमानस्वामी केवलज्ञानप्राप्त्यनन्तरम् आदावेव बीजबुद्धित्वादिगुणपरिकलितान् गौतमादिगणधरान् प्रति एतन्मात्रिकापदत्रयं कथितवान् ॥ 'उप्पन्नेइ वा निगमेइ वा धुवेइ वा' एतत्पदत्रयं बीजरूपेण तीर्थंकरमुखात् आसाद्य विनयमूलद्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकस्कन्धपञ्चमहाव्रतशाखास्याद्वादप्रतिशाखा द्वादशभावनापत्रकेवलज्ञानपुष्पमोक्षफलसन्नद्धपादपमिव अमुं द्वादशाङ्गं विरचितवन्तो गौतमादयो गणधराः । ततो भवत्येवैतत् जिनमतं जिनप्रणीतमिति । जिनप्रणीतत्वकथनात् आगममात्रस्य सूत्ररूपेण पौरुषेयत्वमभिव्यञ्जितम् सूत्रस्याक्षरविन्यासरूपत्वेन वचनानाञ्च पुरुषव्यापारमन्तरेण उच्चारणासंभवात्, नहि पुरुषव्यापारमनादृत्य कुत्रापि शब्द उपलभ्यते । आगमानां सूत्ररूपतः पौरुषेयत्वप्रतिपादनेन आगमापौरुषेयवादिना मीमांसकानां मतं निरस्तं भवति इति । यथाऽस्माक-

---

यह प्रकट करता है कि रागादि शत्रुओं को जब श्रीवर्धमान स्वामी ने जीत लिया–तब केवलज्ञान की उन्हे प्राप्ति हुई और उससे उन्होने सकलार्थ संग्राहक तीन मातृकापदों का प्रणयन किया अर्थात् वर्द्धमान स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्ति के अनन्तर ही सर्वप्रथम बीजबुद्धि आदि रूप गुणों से युक्त गौतमादि गणधरो के प्रति इस तीन मातृकापदों का कथन किया–उप्पन्नेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा" इन तीन मातृकापदो को बीजरूप से तीर्थंकर के मुख से प्राप्त करके उनके गौतमादि गणधरो ने द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकनयरूप स्कन्धवाले, पांच महाव्रतरूप शाखाओ एवं स्याद्वादरूप प्रतिशाखाओ वाले, द्वादशभावनाओं रूप पत्रो वाले, केवलज्ञानरूप पुष्पवाले और मोक्षरूप पके हुए फल वाले वृक्ष के जैसे इस द्वादशाङ्ग की रचना की अतः यह जिनमत इस प्रकार से जिनप्रणीत विशेषण से विशिष्ट प्रकट किया गया है। इस कथन से जो आगमों को–वेदों को अपौरुषेय मानते हैं ऐसे मीमांसको की मान्यता का

"जिनप्रणीतं" આ વિશેષણ એ વાત પ્રકટ કરે છે કે-જ્યારે વર્ધમાન સ્વામીએ રાગાદિક શત્રુઓને જીતી લીધા, ત્યારે જ તેમને કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થઇ, અને ત્યારે જ તેમણે સકલાર્થ સંગ્રાહક ત્રણ માતૃકાપદોનુ કથન કર્યું. એટલે કે વર્ધમાન સ્વામીને કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થઈ, ત્યાર બાદ તેમણે ગૌતમાદિ ગણધરોની સમીપે બીજ બુદ્ધિ આદિ રૂપ ગુણોથી યુક્ત આ ત્રણ માતૃકાપદોનું કથન કર્યું "उप्पन्नेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा" આ ત્રણ માતૃકાપદોને બીજ રૂપે તીર્થંકરના મુખે શ્રવણ કરીને, ગૌતમાદિ ગણધરોએ તેમનો દ્રવ્યાર્થિક પર્યાયાર્થિક નય રૂપ સ્કન્ધ(થડ)વાળા, પાંચ મહાવ્રતરૂપ શાખાઓ અને સ્યાદ્વાદરૂપ ઉપશાખાઓ વાળા, બાર ભાવનાઓ રૂપ પર્ણો વાળા, કેવળજ્ઞાન રૂપ પુષ્પવાળા અને મોક્ષરૂપ પકવ ફળવાળા વૃક્ષ જેવા આ દ્વાદશાંગની રચના કરી, આ પ્રકારે આ જિનમતને જે જિનપ્રણીત વિશેષણ લગાડયુ છે. તે યોગ્ય જ છે. આગમોને-વેદોને જે મીમાંસકો અપૌરુષેય, માને છે, તેમની માન્યતાનુ પણ આ કથન

मेतत्प्रकरणम् अविज्ञातार्थकं तथैव तत्त्वतः साक्षात्सर्वज्ञादपि एतत्प्रकरणस्य श्रवणे सर्वज्ञविवक्षाया अप्रत्यक्षत्वेन ग्रहणाभावे विवक्षितशब्दार्थप्रत्ययाभावात् केवलं म्लेच्छवाग्वत् आचार्योक्तार्थस्य अनुवादमात्रमेवैतत्, तदुक्तम्–आचार्याभिप्रायमज्ञात्वा म्लेच्छवाग्योगतुल्यता । सर्वज्ञादपि हि श्रोतुस्तदन्यस्यार्थदर्शने" इतीमां शङ्कामपनेतुमाह–'जिणप्परूवियं' जिनप्ररूपितम् जिनेन भगवता श्रीवर्द्धमानस्वामिना श्रोतुः यथा तत्त्वार्थाधिगमो भवेत् तथा सम्यक्

निरसन हो जाता है। क्योंकि आगम मात्र सूत्ररूप होते हैं। इससे उनमें पौरुषेयता की ही अभिव्यक्ति होती है। अपौरुषेयता की नहीं, सूत्र अक्षर विन्यास रूप होता है और वचनों का पुरुषव्यापार के बिना उच्चारण होना असंभव है। पुरुषव्यापार की परवाह न करके कहीं पर भी भाषात्मक शब्द उपलब्ध नहीं होता है। इस प्रकार आगमों में सूत्ररूप होने के कारण पौरुषेयता ही आती है। यही प्रतिपादन जिन प्रणीतविशेषणद्वारा यहां समर्थित हुआ है। "जिणप्परूवियं" पद इस शंका का निरसन करता है जो किसी ने इस प्रकार से की है— "जिस प्रकार यह प्रकरण हमें अविज्ञात अर्थ वाला है उसी प्रकार साक्षात् सर्वज्ञ से भी इस प्रकार के" सुनने पर यह अविज्ञात अर्थ वाला ही बना रहेगा। क्योंकि अप्रत्यक्ष होने से सर्वज्ञ की विवक्षा का ग्रहण तो होता नहीं है। ऐसी स्थिति में उस विवक्षा के विषयभूत शब्द के अर्थ में प्रत्यय-विश्वास जमेगा नहीं अतः यह आचार्योक्त अर्थ का अनुवाद मात्र ही मानने में आवेगा, जिनप्ररूपित पद से इस शंका का निवारण हो जाता है क्योंकि श्री वर्द्धमानस्वामी ने इस प्रकरण को इस रूप से प्ररूपित किया है कि जिससे श्रोता को तत्त्वार्थ

દ્વારા ખંડન થઈ જાય છે, કારણકે આગમ માત્ર સૂત્રરૂપ જ હોય છે, તેથી તેમાં પૌરુષેયતાની જ અભિવ્યક્તિ થાય છે, અપૌરુષેયતાની નહીં. સૂત્ર અક્ષરવિન્યાસ રૂપ હોય છે અને પુરુષવ્યાપાર વિના વચનોનું ઉચ્ચારણ થવું તે અસંભવિત છે પુરુષવ્યાપાર વિના ભાષાત્મક શબ્દની ઉત્પત્તિ જ સંભવી શકતી નથી આ રીતે આગમો સૂત્રરૂપ હોવાને કારણે તેમનામાં પૌરુષેયતા જ રહેલી છે, એજ વાતનું જિનપ્રણીત વિશેષણ વડે પ્રતિપાદન થઈ જાય છે.

"जिणप्परूवियं" આ પદ નીચે દર્શાવેલી શંકાનું નિરાકરણ કરે છે–"જેમ આ પ્રકરણ આપણા માટે અવિજ્ઞાત અર્થવાળું છે, એજ પ્રમાણે સાક્ષાત્ સર્વજ્ઞની સમીપે સાંભળવા છતાં પણ તે અવિજ્ઞાત અર્થવાળું જ રહેશે, કારણ કે જે વસ્તુ અપ્રત્યક્ષ હોય છે. તેનું સર્વજ્ઞ દ્વારા વર્ણન કરવામાં આવે તો પણ ગ્રહણ થઈ શકતું નથી. એવી પરિસ્થિતિમાં તે વિવક્ષાના વિષય રૂપ શબ્દના અર્થમાં પ્રત્યય-વિશ્વાસ જ જામશે નહીં', તેથી તેને આચાર્યોક્ત અર્થનો માત્ર અનુવાદ જ માનવમાં આવશે" જિનપ્રરૂપિત વિશેષણના પ્રયોગ વડે આ શંકાનું નિવારણ થઈ જાય છે, કારણ કે શ્રી વર્ધમાન મહાવીર સ્વામીએ આ પ્રકરણની એવી રીતે પ્રરૂપણા કરી છે કે શ્રોતાઓને તત્ત્વાર્થનો બોધ ઘણી સારી રીતે થઈ જાય છે, આ કથનનો

प्रणयनक्रियानिर्वर्तनेन प्ररूपितं-प्ररूपणं कृतम् अयं भाव:—यद्यपि परकीयविवक्षाया अप्रत्यक्षत्वात् श्रोता भगवतो विवक्षां वस्तुतो न जानाति प्रत्यक्षतः, तथापि अनादिरयं शब्दो व्यवहारः साक्षाद्विवक्षाग्रहणमन्तरेणापि अनुमानादिना वक्तुर्विवक्षां ज्ञात्वा सङ्केतसहकारेण भवत्येव शब्दादर्थावग्रहः, बालादीनां शब्दादर्थावगमदर्शनात् अन्यथा-शाब्दव्यवहार एव समुच्छिद्येत अनेकार्थका अपि शब्दाः सैन्धवादिका भगवतैव सकेतिताः प्रकरणादिनाऽवधृततात्पर्याः तं त नियतमर्थं प्रतिपादयन्ति ततोऽनेकार्थशब्दश्रवणेऽपि भवत्येव यथावस्थितार्थावगमः, ततो गणधराणां साक्षात् तदितराणां चाचार्याणां तु परम्परया भवत्येव यथावस्थितार्थावगम इति नेदं

का अच्छे रूप से अधिगम हो जावे, तात्पर्य यह है--यद्यपि परकीय विवक्षा अप्रत्यक्ष होती है इससे श्रोता भगवान् की विवक्षा को वस्तुतः प्रत्यक्ष से नहीं जानता है फिर भी यह शाब्द व्यवहार अनादि है अतः साक्षात् विवक्षा के ग्रहण किये विना भी अनुमान आदि द्वारा वक्ता की विवक्षा जान ली जाती है। विवक्षा को जानकर फिर सङ्केत की सहायता से श्रोता को शब्द से अर्थ का अवगमहोही जाता है। यदि ऐसा न हो तो फिर शाब्द व्यवहार ही ध्वस्त हो जायगा परन्तु ऐसा तो नहीं है। बालको को भी शब्द से अर्थ का अवगम होता हुआ देखने में आता है। जहां सैन्धवादिक जैसे अनेक अर्थवाले शब्द प्रयुक्त होते है, वे भी भगवान् के द्वारा ही संकेतित होते हुए प्रकरण आदि के वश से अपने अर्थ को निश्चित कराने वाले होते है। इसीलिये वे नियत अर्थ का प्रतिपादन करते है। इस प्रकार अनेक अर्थवाले शब्द के सुनने पर भी श्रोता को यथावस्थित अर्थ का अवगम होता है। अत यह मानना चाहिये कि गणधरों को यथावस्थित अर्थ का अवगम साक्षात् होता है और इनसे भिन्न आचार्यों को परम्परा से यथावस्थित अर्थ का अवगम होता है। इसलिये यह प्रकरण अवि-

ભાવાર્થ એ છે કે—જો કે પરકીય વિવક્ષા અપ્રત્યક્ષ હોય છે અને તેથી શ્રોતા ભગવાન્‌ની વિવક્ષાનો વાસ્તવિક રૂપે પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાતો નથી, છતાં પણ આ શાબ્દ વ્યવહાર અનાદિ છે, તેથી સાક્ષાત્ વિવક્ષાને ગ્રહણ કર્યા વિના પણ અનુમાન આદિ, દ્વારા વક્તાની વિવક્ષા જાણી શકાય છે. વિવક્ષાને જાણીને સંકેતની સહાયતાથી શ્રોતાને શબ્દ દ્વારા અર્થનો બોધ થઈ જાય છે જો એવું બનતું ન હોય તો શાબ્દવ્યવહાર જ નષ્ટ થઈ જાય પરન્તુ એવું બનતુ નથી. બાલકોમાં પણ શબ્દ વડે અર્થનો બોધ થતો જોવામા આવે છે "સૈન્ધવ" આદિ અનેક અર્થવાળા શબ્દોનો પ્રયોગ જ્યાં કરવામાં આવ્યો હોય, ત્યાં પણ ભગવાન દ્વારા જ સંકેતિત થાય ત્યારે પ્રકરણ આદિને આધારે તે શબ્દોનો અર્થ પણ નિશ્ચિત થઈ જાય છે તેથી તેઓ નિયત અર્થનું પ્રતિપાદન કરે છે. આ રીતે અનેક અર્થવાળો શબ્દ સાંભળવા છતા પણ શ્રોતા તેના સાચા અર્થને સમજી જાય છે તેથી એ વાતનો સ્વીકાર કરવો પડશે કે ગણધરોને યથાવસ્થિત (સાચા, નિયત) અર્થનો સાક્ષાત્ અવગમ (બોધ) થાય છે, પણ તેમના કરતાં ભિન્ન એવા આચાર્યોને પરમ્પરા દ્વારા યથાવસ્થિત અર્થનો બોધ થાય છે. તેથી આ

प्रकरणमविज्ञातार्थकमिति । अन्येतु एवं कथयन्ति यत् तीर्थकरो हि भगवान् न प्रवचनार्थं प्रयासं करोति किन्तु तीर्थकृतां पुण्यप्रभावादेव श्रोतॄणां प्रतिभासो जायते यथा–भगवतेदं तत्त्वमित्थं प्रतिपादितमिति । तदुक्तम्—

तदाधिपत्यादाभासः, सत्वानामुपजायते
स्वयं तु यत्नरहित श्चिन्तामणिरिव स्थितः ॥१॥

एतन्मतनिरासार्थमाह–**'जिणक्खायं'** जिनाख्यातम् जिनेन भगवता वर्द्धमानस्वामिना प्रकृष्टतरपुण्यविपाकोदयत स्तथा व्यापारयोगेनाख्यातं कथितमिति जिनाख्यातम् । ततः सफलमेव इदं जिनाख्यातमित्यावेदयन्नाह **'जिणाणुचिण्णं'** जिनानुचीर्णम् अत्र जिनाः हिताप्रतिपातियोगमिद्धाः **'तओ जिणा पण्णत्ता, तं जहा–ओहिनाणजिणा–मणपज्जवनाण जिणा, केवलनाणजिणा'** इति स्थानाङ्गसूत्रवचनात् जिनशब्देनात्र *गणधरा गृहीताः* । तदय-

---

ज्ञात अर्थवाला नहीं है। कोई २ इस विषय में ऐसा कहते हैं–कि तीर्थंकर भगवान् प्रवचन के लिये प्रयास नहीं करते हैं, किन्तु तीर्थंकरो के पुण्यप्रभाव से ही श्रोताजनो को प्रतिभास होता है । तदुक्तम्—**'तदाधिपत्यादाभासः'** इत्यादि । सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है क्यों कि **"जिणक्खायं"** पद यह प्रकट करता हैं कि भगवान् वर्द्धमानस्वामी ने ही प्रकृष्टतर पुण्य विपाक के उदय से–तीर्थंकर नामकर्म की प्रकृति के उदय से–ही यह प्रकरण स्वयं अर्थतः कहा है ।

इस **'जिनाख्यात'** विशेषणको सफल प्रकट करनेके लिये सूत्रकारने **'जिणाणुचिण्णं'** यह विशेषण कहा है । जिन तीन प्रकार के कहे गये हैं जैसे–**'तओ जिणा पण्णत्ता तं जहा–ओहि नाणजिणा, मणपज्जवनाणजिणा, केवलनाणजिणा'** ऐसा स्थानांगसूत्र में कहा है । एक अवधिज्ञानीजिन, दूसरे मनः पर्ययज्ञानीजिन, और तीसरे केवलज्ञानीजिन, यहां जिन शब्द से केवल

પ્રકરણ અવિજ્ઞાત અર્થવાળુ નથી. કોઈ કોઈ શાસ્ત્રકારો આ વિષયમાં એવુ પણ કહે છે કે –તીર્થંકર ભગવાન્ પ્રવચનને માટે પ્રયાસ કરતા નથી, પરન્તુ તીર્થંકરોના પુણ્યપ્રભાવથી જ શ્રોતાઓને એવો પ્રતિભાસ થાય છે. કહ્યુ પણ છે કે—

"तदाधिपत्यादाभासः" ઈત્યાદિ–પરંતુ એ માન્યતા પણ ઉચિત નથી, કારણ કે– **"जिणक्खायं"** આ પદ એ વાત પ્રકટ કરે છે કે ભગવાન વર્ધમાન્ સ્વામીએ જ પ્રકૃષ્ટતર પુણ્યવિપાકના ઉદયથી–તીર્થંકર નામકર્મની પ્રકૃતિના ઉદયથી–જ આ પ્રકરણના અર્થનું જાતે જ પ્રતિપાદન કર્યું છે

આ "જિનાખ્યાત" વિશેષણની સાર્થકતા માટે સૂત્રકારે **"जिणाणुचिण्णं"** વિશેષણનો પ્રયોગ કર્યો છે જિન ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે સ્થાનાંગસૂત્રમાં પણ કહ્યુ છે કે—**"तओ जिणा पण्णत्ता–तंजहा–ओहिनाणजिणा, मणपज्जवनाणजिणा केवलनाणजिणा'**

જિન ત્રણ પ્રકારના છેઃ—

(૧) અવધિજ્ઞાની જિન, (૨) મનઃપર્યયજ્ઞાની જિન અને (૩) કેવળજ્ઞાની જિન અહીં જિન પદ દ્વારા માત્ર ગણધરોને જ ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે, કારણ કે ગણધરોમાં મનઃ પર્યય-

मर्थः-जिनैर्हिताप्रतिपातियोगसिद्धैर्गणधरैरनुचीर्णं सम्यक् तदर्थावगमेनाऽसंगशक्तिगर्भिता निवर्तक-समभावप्राप्त्या समाधिरूपेण परिणमितमिति जिनानुचीर्णम् ॥ अथवा-जिनानुचीर्णमिति, जिनै-रतीतकालिकैरनन्तैः सामान्यकेवल्यादिभिरनुचीर्णम्-आसेवितम् तदनुसेवनादेव तेषां जिनत्वप्राप्तेः ॥ अतएव तादृशसमाधिभावतः संप्राप्तातिशयविशेषप्रभावेण गणधराणां तादृशी सूत्रकरणशक्तिर्भवतीति दर्शयन्नाह-'जिणप्पण्णत्तं' जिनप्रज्ञप्तम्, जिनैर्हिताप्रतिपातियोगिभिर्गणधरैः प्रज्ञप्तम् स्वेतरजीवा-नुग्रहाय सूत्ररूपेण आचाराद्यङ्गोपाङ्गादिभेदेन रचितमिति जिनप्रज्ञप्तम् तदुक्तम्—

गणधरों का ही ग्रहण किया गया है। क्योंकि गणधरो के मनः पर्ययज्ञान होता है, अतः ये मनःपर्ययज्ञानी जिन कहलाते हैं। ये गणधर हित से अप्रतिपातियोग से सिद्ध होते है। अर्थात् ऐसे योग से ये सिद्ध होते है यो इन्हें हित से प्रतिपात कराने वाला-पीछे हटाने वाला-कोई नहीं होता है। उनके द्वारा यह जिनमत समाधिरूप से परिणमित हुआ है यह समाधि उन्हें समभाव की प्राप्ति से प्राप्त होती है। समभाव की प्राप्ति उन्हे जिनमत के यथार्थज्ञान से प्राप्त असंगशक्ति की प्राप्ति से होती है। अतः इससे वह समभाव उनकी आत्मा से फिर कभी छूटता नहीं है। अथवा-जिनानुचीर्ण शब्द का ऐसा भी अर्थ होता है कि अतीतकाल में जितने भी सामान्यकेवली आदि जिन हो चुके है उनके द्वारा यह जिनमत आसेवित हुआ है। क्योंकि इसी के अनुसेवन से ही उन्हें जिनत्व की प्राप्ति हुई है। अतएव ऐसे समाधिभाव से सप्राप्त अतिशय विशेष के प्रभाव द्वारा गणधरों में ऐसी सूत्र करने की शक्ति आ जाती है कि जिससे वे 'जिणप्प-ण्णत्तं' अपने से इतर जीवों के अनुग्रह के लिये सूत्ररूप से-आचार आदि अङ्गोपाङ्ग आदि के भेद से इस जिनमत की रचना करते हैं।

જ્ઞાનનો સદ્ભાવ હોય છે. આ ગણધરો એવા યોગથી સિદ્ધ થાય છે કે જે યોગ તેમને હિતના માર્ગમાં કદી પણ પાછો હઠાવતો નથી. આ પ્રકારના હિતના માર્ગમા જ દૃઢ રાખનારા યોગને અપ્રતિપાતિયોગ કહે છે. તેમના દ્વારા આ જિનમત સમાધિ રૂપે પરિણમિત થયો છે સમભાવની પ્રાપ્તિ થવાને લીધે આ સમાધિ તેમને પ્રાપ્ત થાય છે જિનમતના યથાર્થ જ્ઞાન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ અસંગશક્તિ દ્વારા તેમને આ સમભાવની પ્રાપ્તિ થાય છે. તેથી આ સમભાવ તેમના આત્મામાંથી કદી પણ નીકળી જતો નથી અથવા "જિનાનુચીર્ણ" પદનો આ પ્રકારનો અર્થ પણ થઈ શકે છે— ભૂતકાળમા જેટલા સામાન્ય કેવળી આદિ જિન થયા છે તેમના દ્વારા આ જિનમતનું સેવન થયું છે, અને તેના આસેવનને લીધે જ તેમણે જિનત્વની પ્રાપ્તિ કરેલી છે તેથી એવા સમાધિભાવથી સંપન્ન અતિશય વિશેષના પ્રભાવ દ્વારા ગણધ-રોમાં પણ સૂત્ર રચવાની એવી શક્તિ આવી જાય છે કે જેથી તેઓ "जिणप्पण्णत्तं" અન્ય જીવો પર અનુગ્રહ કરવાને માટે સૂત્ર રૂપે-આચારાંગ આદિ અંગોપાંગ રૂપે-જિનમત

'अत्थं भासइ अरिहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणा' इत्यादि, अर्थं भाषते अर्हन् सूत्रं ग्रथ्नन्ति गणधरा निपुणा इतिच्छाया। इदं च शास्त्रं हितप्रवृत्तादिरूपेभ्यो जिनेभ्य एव कथनीयं तेषामेव सम्यग् विनेययोगभावतो हिताप्रतिघातकरणात् एतदेव दर्शयन्नाह—

'जिणदेसियं' जिनदेशितम्, अत्र जिनाहितप्रवृत्तगोत्रविशुद्धोपायाभिमुखापायविमुखादयः शुश्रूषाश्रवणेच्छासपन्ना स्ते जम्बूस्वाम्यादयः परिगृह्यन्ते तेभ्यो जिनेभ्यो हितप्रवृत्तादिरूपेभ्यः श्रमणेच्छाशुश्रूषादिभिर्व्यक्तभावेभ्यो देशितं--कथितं गणधरैरिति जिनदेशितम्।

कहा भी है—'अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथति गणहरा निउणा' इत्यादि। 'जिनदेसियं' यह विशेषण इस जिनमत में यह विशेषता प्रकट करता है कि यह शास्त्र हित में प्रवृत्त हो चुके जियों के लिये-जम्बूस्वामी आदिकों के लिये—ही कथनीय—कहने योग्य है। क्योंकि उन्होंने ही अच्छे प्रकार से विनेययोग के भाव से हित के विघात करने वाले विवादो का—अनिष्टों का—निवारण किया है। अर्थात्—आत्महित करने में जितने भी बाधक थे उन सबका अपना हित करके उन्होंने निरसन किया है, अतः सच्चे रूप में जिनमत के प्रति विनेययोग ऐसे ही जिनरूप जीवो से साधित हुआ है अर्थात् गणधरो ने यह जिनमत उन्हीं जम्बूस्वामी आदि जिवो के लिये उपदिष्ट किया है कि जिनके भाव इसके सुनने की इच्छा से एवं गुरु आदिकों की शुश्रूषा से इसके प्रति व्यक्त थे और इसी कारण जो अपने हित करने आदि में लगे एवं वंश-परम्परा से विशुद्ध उपायों की ओर जो अभिमुख रहे और अपाय अनर्थरूप अनिष्टो से विमुख हुए।

પ્રદર્શક શાસ્ત્રોની રચના કરે છે. કહ્યું પણ છે કે—"अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणा" ઈત્યાદિ "जिणदेसियं" આ વિશેષણ જિનમતમાં એવી વિશેષતા પ્રકટ કરે છે કે-આ શાસ્ત્ર હિતમાં પ્રવૃત્તિ થઈ ચુકેલા જિનોને માટે જ-જમ્બૂસ્વામી આદિને માટે જ કહેવા યોગ્ય છે, કારણ કે તેમણે જ સારી રીતે, વિનેયયોગના ભાવ સહિત હિતનો વિઘાત કરનારા વિવાદોનું-અનિષ્ટોનું-નિવારણ કર્યું છે એટલે કે આત્મહિત કરવાની આડે જે જે વિઘાતક અનિષ્ટો હતાં, તેમનું નિવારણ કરીને તેમણે આત્મહિતની સાધના કરી હતી. એટલે કે એવાં જ જિનરૂપ જીવોએ જિનમત પ્રત્યે વિનેયયોગ સાચા અર્થમાં સાધ્યો હતો એટલે કે ગણધરોએ જંબૂસ્વામી આદિ એવી વ્યક્તિઓની પાસે આ જિન-મતનું કથન કર્યું હતું કે જેઓ ગુરુ આદિની શુશ્રૂષા કરતા થતા આ જિનમતનું શ્રવણ કરવાને અત્યંત ઉત્કટ ઈચ્છાથી યુક્ત હતા અને આ પ્રકારે પોતાનું આત્મહિત સાધવાને તત્પર થયેલા તેઓ સદા વિશુદ્ધ ઉપાયોમાં પ્રવૃત્ત રહેતા હતા અને અપાયોથી (અનર્થ રૂપ અનિષ્ટોથી) દૂર રહેતા હતા

ननु यदीदं प्रकरणं स्वभावत एवातिसुन्दरं तदा यथा जिनेभ्य उपदिश्यते तथा अजिनेभ्यः कथं नोपदिश्यते इति चेत् तत्राह—अजिनानां स्वतोऽभद्रतयाऽनर्थोपनिपातसंभवात्, दृश्यञ्च स्वतः सुन्दरमपि वस्तु पात्रासुन्दरतया असुन्दरं भवति यथा रविकिरणादुलूकादितामसजन्तूनाम् अनर्थायैव भवति तदुक्तम्—

पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ॥ इति ॥

एतस्यैवार्थस्य दर्शनायाह—'जिणप्पसत्थं' जिनप्रशस्तम्, जिनानां गोत्रविशुद्धोपायाभिमुखापायविमुखहितप्रवृत्तादिभेदभिन्नानां प्रशस्तम्—उचितसेवनया हितम् इति जिनप्रश-

शंका—जब यह प्रकरण स्वभाव से ही अतिसुन्दर है तो फिर यह जिनों के लिये क्यों उपदिष्ट हुआ है अजिनो के लिये क्यों नहीं ?

उत्तर—अजिनों के लिये यह इस कारण से उपदिष्ट नहीं हुआ है कि वे स्वतः अभद्र होते हैं इससे उनके द्वारा अनर्थों का उपपात होना यहा संभवित हो सकता है। देखो—जो वस्तु स्वतः सुन्दर होती है वही वस्तु पात्र के दोष से—उसकी असुन्दरता से—असुन्दर बन जाती है जैसे—उलूकादि तामस जन्तुओ को रविकिरण आदि—अनर्थ के लिये ही होती है। तदुक्तम्—'पयः पानं भुजंगानां' इत्यादि दूध जैसी सुन्दर वस्तु सांप के द्वारा पी ली जाने पर वह उसमें विषरूप से ही परिणत होती है। इसी प्रकार से दिया गया उपदेश भी मूर्खों में अनर्थरूप से प्रकोप आदि रूप से—परिणति का कारण बन जाता है। इसी प्रकार कान में गये हुए जल के जैसा गुर्वादिक का उपदेश अभद्र के लिये अशान्ति का कारण बन जाता है। इसी बात की पुष्टि के लिये 'जिणप्पसत्थं' यह

શંકા—આ પ્રકરણ સ્વાભાવિક રીતે જ અતિ સુંદર હોવા છતાં પણ શા માટે જિનોને ઉપદિષ્ટ કરાયું છે, અજિનોને શા માટે ઉપદિષ્ટ કરાયું નથી ?

ઉત્તર—અજિનોને અનુલક્ષીને આ પ્રકરણ ઉપદિષ્ટ કરાયું નથી કારણ કે તેઓ સ્વભાવતઃ અભદ્ર હોય છે, તેથી તેમના દ્વારા અહીં ઉપપાત થવાનો સંભવ રહે છે. એવું જોવામાં આવે છે કે સ્વાભાવિક રીતે જ સુંદર હોય એવી વસ્તુ પણ પાત્રના દોષથી-તેની અસુંદરતાથી અસુંદર બની જાય છે. જેમ કે ઘુવડ આદિ તામસ જંતુઓને સૂર્યના કિરણો લાભને બદલે હાનિ જ કરે છે

"પયઃ પાન ભુજઙ્ગાનાં" ઈત્યાદિ—દૂધ જેવી સુંદર વસ્તુ સાપને પિવડાવવામાં આવે તો તેને લીધે તેના વિષની જ વૃદ્ધિ થાય છે. આ રીતે અયોગ્ય પાત્ર દ્વારા સેવન થવાને કારણે દૂધ જેવી સુંદર વસ્તુનું પણ વિષમાં પરિણમન થઈ જાય છે. એજ પ્રમાણે અયોગ્ય પાત્રને-મૂર્ખ જનોને-જો ઉપદેશ દેવામાં આવે, તો તે અનર્થ રૂપે-પ્રકોપ આદિ રૂપે-પરિણમે છે. જેમ કાનમા પેસી ગયેલું જળ પીડાકારી થઈ પડે છે, એજ પ્રમાણે અભદ્રને માટે પણ ગુરુ આદિનો ઉપદેશ અશાન્તિનું કારણ બની જાય છે. એજ વાતના સમર્થન માટે

स्तम् । नीरूजपथ्यान्नवत् एतादृशजिनमतम् जिनप्रवचनम् 'अणुव्वीइय' अनुविचिन्त्य औत्पत्तिकी-पारिणामिक्यादिवुद्ध्या विचिन्त्य–पर्यालोच्य 'तं' तत् जिनमतम् 'सद्दहमाणा' श्रद्दधानाः–जिनमते श्रद्धां कुर्वन्तः । यद्यपि कालवैषम्यात् मेधादिगुणहीनाः प्राणिनः तथापि स्वल्पमपि अधिगतं माषपरिमितचिन्तामणिवत् कल्पवृक्षाङ्कुरवद्वा अनिष्टं विनाश्य स्वर्गापवर्गसुखप्राप्तये भवतीत्यार्द्रचित्ततया मन्यमाना इति भावः । तथा–'तं' तत् जिनमतमेव 'पत्तियमाणा' प्रीयमाणाः असङ्गप्रीत्या विश्वास कुर्वाणाः अथवा परमप्रीतिं जिनवचने कुर्वाणाः परमानुरागतया पश्यन्तः पथ्यौषधिवत् । तथा 'तं' तत् जिनमतमेव 'रोयमाणा' रोचयन्तः अमृतमिव स्वात्मरूपेणानुभवन्तः,

---

पद दिया गया है। यह शास्त्र जो गोत्र विशुद्ध उपाय में अभिमुख एवं अनर्थों से विमुख हुए आदि जिनों के–जम्बूस्वामी आदि जिनों के लिये यथाविधि सेवित किये जाने पर हितावह है। जैसा–नीरोग को–पथ्याहार भविष्य में आने वाले रोगो को रोकने वाला होने से हितावह होता है, ऐसा जो यह जिनमतरूप जिनप्रवचन हैं उसका 'अणुव्वीइय' औत्पत्तिकी पारिणामिकी आदि वुद्धि द्वारा परिशीलन करके 'तं सद्दहमाणा' उसे अपनी श्रद्धा का विषय बना करके–यह समझ करके कि यद्यपि काल की विषमता से प्राणी मेधादि-गुणों से हीन हो गये हैं परन्तु फिर भी उनके द्वारा अधिगत हुआ थोड़ा सा भी यह प्रवचन माषापरिमित चिन्तामणि के जैसा अथवा कल्पवृक्ष के अंकुर के जैसा अनिष्ट का विनाश कर उन्हें स्वर्ग एवं अपवर्ग के सुख की प्राप्ति के लिये होता है ऐसा विशुद्धभाव-रूप रस से आर्द्र (गीले) हुए चित्त से स्वीकार करके तथा–'तं पत्तियमाणा' उसे पूर्णरूप से विश्वास में लेकर के अथवा जिनप्रवचन पर पथ्योपधि के जैसा परम अनुराग रखकरके 'तं रोयमाणा' अमृत के जैसा उसे अपनी रग रग में परिणमा करके 'थेरा भगवंतो' धर्मपरिणति से

"जिणप्पसत्थं" પદનો પ્રયોગ કરાયો છે જેઓ ગોત્રવિશુદ્ધ ઉપાય (આત્મહિતનો માર્ગ) આચરી રહ્યા છે અને અનર્થોથી દૂર રહેવા પ્રયત્ન કરે છે એવા જમ્બૂસ્વામી આદિ જિનો દ્વારા વિધિ અનુસાર જેનું સેવન કરવામા આવેલું હતું અને જેના સેવન દ્વારા તેમનું હિત સધાયું હતું એવું આ શાસ્ત્ર પથ્યાહારની જેમ ભવિષ્યના દુઃખોથી રક્ષા કરનારું હોવાથી હિતાવહ છે એવું જે આ જિનમત રૂપ પ્રવચન છે તેનું "अणुव्वीइ य" ઔત્પત્તિકી પારિણામિકી આદિ બુદ્ધિ દ્વારા પરિશીલન કરીને "तं सद्दहमाणा" તેના પ્રત્યે શ્રદ્ધા રાખીને-એવું સમજીને કે કાળની વિષમતાને લીધે માણુસો મેધા (બુદ્ધિ) આદિ ગુણોથી રહિત થઈ ગયા છે, છતાં પણ જો તેમના દ્વારા આ પ્રવચનનો થોડો સરખો અંશ પણ ગ્રહણ કરવામા આવે, તે અડદના દાણા જેવડા ચિન્તામણિની જેમ અથવા કલ્પવૃક્ષના અંકુરની જેમઅનિષ્ટનો વિનાશ કરીને તેમને સ્વર્ગ અને મોક્ષની પ્રાપ્તિ કરાવે છે. એવા વિશુદ્ધ ભાવરૂપ રસથી આર્દ્ર થયેલા ચિત્ત વડે સ્વીકાર કરીને તથા તેના પ્રત્યે "पत्तिय-माणा" પૂર્ણ રૂપે વિશ્વાસ રાખીને અથવા જિનપ્રવચન પ્રત્યે પથ્ય ઓષધિના જેવો પરમ

इष्टभोजनवत्, के इत्थं भूता स्तत्राह–'थेरा' इति 'थेरा भगवंतो' स्थविराः भगवन्तः तत्र धर्मपरिणत्या परिनिष्ठितमतयः स्थविरा इव स्थविराः ज्ञानस्थविराः परिणतसाधुभावाः आचार्या इत्यर्थः श्रुतैश्वर्यादिसबन्धात् भगवन्तः 'जीवाजीवाभिगमणामं' जीवाजीवाभिगमनाम जीवानाम्–एकेन्द्रियादीनाम् अजीवानां धर्मास्तिकायादीनाम् अभिगमः–परिच्छेदो यस्मिन् तत् जीवाजीवाभिगमं नाम्ना ? किं तत् 'अज्झयणं' अध्ययनम् अधीयते–पठ्यते इति अध्ययनविशिष्टार्थध्वनिसमुदायात्मकम् 'पण्णवइंसु' प्राज्ञापयन् प्रज्ञापितवन्तः–प्ररूपितवन्तः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—'से किं तं जावाजीवाभिगमे, जीवाजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–जीवाभिगमे य अजीवाभिगमे य' ॥ सू० २ ॥

छाया—अथ कोऽसौ जीवाजीवाभिगमः, जीवाजीवाभिगमो द्विविधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–जीवाभिगमश्च अजीवाभिगमश्च ॥ सू० २ ॥

टीका—'से किं तं जीवाजीवाभिगमे' अथ कोऽसौ जीवाजीवाभिगमः, इदं च प्रश्न

परिनिष्ठित मतवाले स्थविर–स्थविरों की तरह स्थविरों ने-ज्ञानस्थविरो ने परिणत साधु भाववाले आचार्यों ने श्रुतिरूप ऐश्वर्य से सपन्न होने से भगवन्तों ने अर्थात् स्थविर भगवन्तो ने 'जीवाजीवाभिगमणामं' जीवाजीवामिगनामका 'अज्झयणं' अध्ययन 'पण्णवइंसु' प्ररूपित किया है। इसमें एकेन्द्रियादि जीवों का एवं धर्मास्तिकायादिक अजीवो का परिच्छेद–बोध है अतः इस प्रकरण को 'जीवाजीवाभिगमे' इम सार्थक नाम से विशिष्ट किया गया है तथा यह विशिष्ट अर्थध्वनि के समुदायरूप है इसलिये इसे 'अध्ययन' इस नाम से भी कहा गया है ॥ सू० १ ॥

'से किं तं जीवाजीवाभिगमे'—इत्यादि ।

टीकार्थ—हे भदन्त ! 'से किं तं जीवाजीवाभिगमे'–अथ कोऽसौ जीवाजीवाभिगम.'

અનુરાગ રાખીને "त रोयमाणा" અમૃતની જેમ તેને પોતાની રગે રગમાં ઉતારીને "थेरा भगवंतो" ધર્મપરિણતિ વડે પરિનિષ્ઠિત મતિવાળા સ્થવિરોએ-જ્ઞાન સ્થવિરોને, પરિણત સાધુભાવવાળા આચાર્યોએ-શ્રુતરૂપ ઐશ્વર્યથી સંપન્ન એવા સ્થવિર ભગવન્તોએ "जीवाजीवाभिगमणामं" જીવાજીવાભિગમ નામનું "अज्झयणं' અધ્યયન "पण्णवइंसु" પ્રરૂપિત કર્યું છે. તેમાં એકેન્દ્રિય આદિ જીવોનું અને ધર્માસ્તિકાયાદિ અજીવોનુ પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. તેથી આ પ્રકરણને 'જીવાજીવાભિગમ' આ સાર્થક નામ આપવામાં આવ્યું છે, તથા વિશિષ્ટ અર્થધ્વનિના સમુદાય રૂપ હોવાને કારણે આને "અધ્યયન" નામ પણ આપવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂ૦ ૧ ॥

"से किं तं जीवाजीवाभिगमे" ઈત્યાદિ–

ટીકાર્થ—"से किं तं जीवाजीवाभिगमे"—अथ कोऽसौ जीवाजीवाभिगमः ?"

सूत्रम्, एतत्सूत्रमादौ उपन्यस्यन्निदं सूचितं भवति प्रश्नं कुर्वतो मध्यस्थस्य बुद्धिमतः श्रीमदर्हदुपदिष्टस्यैव तत्त्वप्ररूपणा कर्तव्या नान्यस्येति । अत्र 'से' शब्दो मगधदेशप्रसिद्धो निपातोऽथ शब्दस्य अर्थे विद्यते अथ शब्दश्चाभिधेयपदार्थवाचकः, तदुक्तम्—अथ प्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु विद्यते इति । एतेषु अथ शब्दार्थेषु प्रकृते अथ शब्द उपन्यासे, किं शब्दश्च परप्रश्ने, तथा च अथ किं तज्जीवाजीवाभिगमः पर्यवसितः ।

अथवा—'से किं तं' इत्यस्य प्राकृतशैल्या अभिधेयवत् लिङ्गवचनानि भवन्तीति न्यायात् किं तत् इति कोऽसौ इत्यस्मिन्नर्थे द्रष्टव्यम् ततश्चायमर्थः सपद्यते कोऽसौ जीवाजीवाभिगम इति प्रश्नः, एवंप्रकारेण सामान्यतः केनचित् प्रश्ने कृते सति भगवान् गुरु शिष्यवचनानुरोधेन शिष्यस्यादरार्थं हे शिष्य ! इति सम्बोधनं प्रयुञ्ज्यार्याह—**'जीवाजीवाभिगमे'** इत्यादि, **'जीवाजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते'** **जीवाजीवभिगमः**-जीवाजीवविषयको बोधः द्विविधः द्विप्रकारकः प्रज्ञप्तः-कथितस्तीर्थकरगणधरैरिति । प्रकारभेदमेव दर्शयति—**'तं जहा'** इत्यादि **'तं जहा'** तद्यथा—स जीवाजीवाभिगमो यथा द्विप्रकारको भवति तथोपन्यस्यते इति भावः ।

'जीवाभिगमे य अजीवाभिगमे य' जीवाभिगमश्च अजीवाभिगमश्च अत्र विद्यमानौ च शब्दौ-

---

जीवाभिगम और अजीवाभिगम का क्या स्वरूप है ? यह प्रश्न सूत्र है, इसे आदि में रखने वाले सूत्रकार ने यह सूचित किया है कि जो प्रश्न करने वाला शिष्य बुद्धिमान् एवं मध्यस्थ होता है उसके प्रति ही श्रीमदर्हदुपदिष्ट तत्त्व की प्ररूपणा करनी चाहिये अन्य के लिये नहीं । यहां हे भगवन् यह जीवाजीवाभिगम क्या है' ऐसा प्रश्नार्थ हो जाता है, इस प्रकार सामान्य रूप से किसी शिष्य के द्वारा प्रश्न किये जाने पर भगवान् गुरु शिष्य के वचन के अनुसार उसके पूछने के अनुसार उसका आदर करते हुए 'हे शिष्य' इस प्रकार से सम्बोधन करके उससे कहते हैं—**'जीवाजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते'** जीवाजीवाभिगम दो प्रकार का कहा गया है । **तं जहा'** जैसे—**'जीवाभिगमे य अजीवाभिगमेय'** एक जीवाभिगम और दूसरा अजीवाभिगम । यहां जो दो 'च'

"હે ભગવન્ ! જીવાભિગમ અને અજીવાભિગમનું સ્વરૂપ કેવું છે ?" આ પ્રશ્ન સૂત્ર છે. પ્રારંભમાં થી આ પ્રશ્નસૂત્ર લખીને સૂત્રકારે એ સૂચિત કર્યું છે કે પ્રશ્ન પૂછનાર જે શિષ્ય બુદ્ધિશાળી અને મધ્યસ્થ હોય તેની સમક્ષ જ અર્હંત ભગવાન્ દ્વારા પ્રરૂપિત પ્રરૂપણા કરવી જોઈએ-અન્યની સમક્ષ કરવી જોઈએ નહીં. "હે ભગવન્ ! જીવાજીવાભિગમ શું છે ?" એવું પ્રશ્નસૂત્ર અહીં આપવામાં આવ્યું છે. આ પ્રકારે કોઈ શિષ્ય દ્વારા સામાન્ય રૂપે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવે છે, ત્યારે ગુરુ "હે શિષ્ય !" આ પ્રકારના સંબોધન દ્વારા તેનો આદર કરીને પ્રશ્નને અનુરૂપ જવાબ આપે છે. અહીં તે જવાબ નીચે પ્રમાણે આપવામાં આવ્યો છે—"जीवाजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते" જીવાજીવાભિગમ બે પ્રકારનો કહ્યો છે. "तंजहा" તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે-"जीवाभिगमे य, अजीवाभिगमे य" (૧) જીવાભિગમ અને (૨) અજીવાભિગમ. અહીં જે બે "च" નો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે, તે

वस्तुतत्त्वमङ्गीकृत्य द्वयोर्जीवाभिगमाजीवाभिगमयोः समानरूपतां दर्शयतः द्वावपि पदार्थौ प्रधानौ एव न तु एको मुख्योऽपरश्च गौण इति । न तु प्रश्नसूत्रे जीवाभिगमाजीवाभिगमः सम्बलित एवकथितस्तथैव उत्तरवाक्येऽपि मिलितयोरेव जीवाभिगमाजीवाभिगमयोरुच्चारणमुत्तरेऽपि आवश्यकम् असम्बलिते सम्बलितविधानस्य अयुक्तत्वादिति चेदत्रोच्यते-प्रश्नसूत्रेऽपि असम्बलितयोरेव-जीवाभिगमाजीवाभिगमयोरेव उपन्यासादिति प्रश्नसूत्रेऽपि कः जीवाभिगमः कश्चाजीवाभिगम-इत्येवं रूपेण पार्थक्येनैव प्रश्नः समर्थनीयः ॥ सू० २ ॥

यद्यपि यथोद्देशस्तथा निर्देश इति न्यायेन उद्देशसूत्रे जीवस्य प्राथम्यात् निर्देशसूत्रेऽपि जीवाभिगमस्यैव निर्देशो युक्त स्तथापि अजीवाभिगमे अल्पतरवक्तव्यत्वात् प्रथमतः जीवाभिगम कथयितुं

का पाठ आया है वह इस बात का प्रदर्शक है कि जीवाभिगम और अजीवाभिगम ये दोनो वास्तविक पदार्थ है। इसलिये ये दोनो ही प्रधान है। ऐसा नहीं है कि एक प्रधान है और दूसरा गौण है।

शंका—प्रश्नसूत्र में **'जीवाजीवाभिगमे'** ऐसा मिला हुआ ही पाठ कहा गया है और उत्तरवाक्य में भी **'जीवाजीवाभिगमे'** ऐसा ही मिला हुआ पाठ कहा है, परन्तु आपके उत्तर से तो यह प्रतीत होता है कि यह पाठ सबलित (मिला हुआ) नहीं है असंबलित-जुदाजुदा है, तो फिर असंबलित में सम्बलित का विधान करना उचित नहीं है ?

उत्तर—प्रश्न सूत्र में भी असंबलित जीवाभिगम और अजीवाभिगम का ही पाठ है ऐसा जानना चाहिये, अर्थात् जीवाभिगम क्या है ? और अजीवाभिगम क्या है ? ऐसा भिन्न भिन्न रूप से ही प्रश्न पूछा गया है, और उत्तर वाक्य में भी ऐसा ही उत्तर दिया गया है। अतः असंबलित में सम्बलित का विधान नहीं किया गया है, ऐसा ही जानना चाहिये ॥ सू० २ ॥

એ વાત પ્રકટ કરે છે કે જીવાભિગમ અને અજીવાભિગમ, આ બન્ને વાસ્તવિક પદાર્થો છે તેથી તે બન્ને પ્રધાન જ છે તે બન્નેમાં કોઈ એક પ્રધાન છે અને કોઈ એક ગૌણ છે, એવું નથી.

શંકા—પ્રશ્નસૂત્રમાં તો "જીવાજીવાજીવાભિગમે" સંમિલિત પાઠ જ છે ઉત્તરસૂત્રમાં પણ "જીવાજીવાભિગમે" એવો સંમિલિત પાઠ જ આપ્યો છે. પરંતુ આપના ઉત્તરથી તો અહીં એવું લાગે છે કે આ પાઠ અહીં સંમિલિત નથી, પણ અલગ અલગ છે. તો શું આ પ્રકારે સંમિલિતને બદલે અસંમિલિતનું વિધાન કરવું તે ઉચિત છે ખરુ ?

ઉત્તર—પ્રશ્નસૂત્રમાં પણ અસંમિલિત (અલગ અલગ) જીવાભિગમ અને અજીવાભિગમનો જ પાઠ છે, એમ સમજવું જોઈએ એટલે કે 'જીવાભિગમ શું છે? અને અજીવાભિગમ શું છે?, એવા ભિન્ન ભિન્ન પ્રશ્નો જ આપવામાં આવ્યા છે. તેથી અસંમિલિતમાં સંમિલિતનું વિધાન થયું નથી, એવું જ સમજવું જાઈએ. ॥ સૂ૦ ૨ ॥

सूचिकटाहन्यायेन अजीवाभिगमप्रश्नसूत्रमाह 'से किं तं अजीवाभिगमे' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं अजीवाभिगमे, अजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा रूविअजीवाभिगमे य अरूविअजीवाभिगमे य ॥ सू० ३ ॥ से किं तं अरूविअजीवाभिगमे ! अरूवि अजीवाभिगमे दसविहे पन्नत्ते तंजहा धम्मत्थिकाए एवं जहा पण्णवणाए जाव से तं अरूवि अजीवाभिगमे ॥ सू० ४ ॥ से किं तं रूवि अजीवाभिगमे रूवि अजीवाभिगमे चउव्विहे पन्नत्ते तं जहा—खंधा खंधदेसा खंधपएसा परमाणुपोग्गला, ते समासओ पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया एवं ते पंच जहा पण्णवणाए, से तं रूविअजीवाभिगमे से त्तं अजीवाभिगमे' ॥ सू० ५ ॥

छाया—अथ कोऽसौ अजीवाभिगमः, अजीवाभिगमो द्विविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा-रूपि अजीवाभिगमश्च अरूपि अजीवाभिगमश्च ॥ सू० ३ ॥ अथ कोऽसौ अरूपि अजीवाभिगमः ? अरूपि अजीवाभिगमो दशविधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-धर्मास्तिकाय एवं यथा प्रज्ञापनायां यावत् सोऽयमरूपि अजीवाभिगमः ॥ सू० ४ ॥ अथ कोऽसौ रूपि अजीवाभिगमः, रूपि अजीवाभिगमः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-स्कन्धाः स्कन्धदेशाः, स्कन्धप्रदेशाः, परमाणुपुद्गलाः, ते समासतः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-वर्णपरिणताः, गन्धपरिणताः, रसपरिणताः, स्पर्शपरिणताः संस्थानपरिणताः, एवं ते पञ्च यथा प्रज्ञापनायाम्, सोऽयं रूपि अजीवाभिगमः, सोऽयमजीवाभिगमः ॥ सू० ५ ॥

जहाँ जैसा उद्देश होता है वैसा ही निर्देश होता है ऐसा नियम है—अतः इस नियम के अनुसार तो इस सूत्र में भी जीवाभिगम का ही निर्देश पहिले करना चाहिये था परन्तु फिर भी अजीवाभिगम में अल्पवक्तव्यता होने से सूचिकटाहन्याय के अनुसार अजीवाभिगम को पहिले [illegible] अजीवाभिगम सम्बन्धी प्रश्नसूत्र का कथन करते हैं —

જેવો ઉદ્દેશ હોય છે, એવો જ નિર્દેશ હોવો જોઈએ, એવો નિયમ છે. આ નિયમ અનુસાર અહીં જીવાભિગમનો જ નિર્દેશ પહેલાં કરવો જોઈતો હતો, કારણ કે [illegible] પહેલાં કહ્યા છે પરન્તુ અજીવાભિગમમાં વક્તવ્યતા [illegible] સૂચિકટાહ ન્યાય અનુસાર અહીં અજીવાભિગમનું [illegible] અજીવાભિગમનું કથન પહેલાં કર્યું છે—

टीका—'से किं तं अजीवाभिगमे' अथ कोऽसौ अजीवाभिगमः के अरूपि अजीवा इति प्रश्नः उत्तरयति—'अजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते' अजीवाभिगमो द्विविधो-द्विप्रकारकः प्रज्ञप्तः कथितः प्रकारभेदमेव दर्शयति—तं जहा तद्यथा—'रूवि अजीवाभिगमे य अरूवि अजीवाभिगमे य' रूपि अजीवाभिगमश्च अरूपि अजीवाभिगमश्च रूपं कालनीलादिवर्णो विद्यते येषां ते रूपिणः अत्र रूपपदं गन्धरसस्पर्शानामपि उपलक्षकम् गन्धादीनामभावे रूपस्यासंभवात् अन्योऽन्यमिलिताः सर्वे सर्वत्र गामिनो भवन्ति प्रतिपरमाणुवर्णगन्धरसस्पर्शा भवन्त्येवेति तदुक्तम्—

कारणमेव तदन्त्यं सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः ।
एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शः कार्यलिंगश्च। इति ॥

'से किं तं अजीवाभिगमे'—इत्यादि ॥ सू० ३–५ ॥

टीकार्थ—'से किं तं अजीवाभिगमे' हे भदन्त ! अजीवाभिगम क्या है—अर्थात् अजीवाभिगम का क्या स्वरूप है ? उत्तर में प्रभु कहते है—'अजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते' हे गौतम ! अजीवाभिगम दो प्रकार का कहा गया है 'तं जहा'—जैसे—'रूविअजीवाभिगमे य अरूवि अजीवाभिगमे य' रूपि अजीवाभिगम और अरूपी अजीवाभिगम, जिनमें कृष्ण, नील आदि वर्ण रहते हैं—वे रूपी हैं यहां रूपपद गन्ध, रस, स्पर्श इनका भी उपलक्षक है। क्योकि गन्धादिक के अभाव में स्वतन्त्ररूप से रूप का सद्भाव कहीं भी नहीं पाया जाता है। परस्पर में ये सब मिलकर ही सर्वत्र जाने के स्वभाव वाले है। यहां तक कि हर एक परमाणु में वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं—कहा भी है—'कारणमेव तदन्त्यम्' इत्यादि ।

"से किं तं अजीवाभिगमे" ઇત્યાદિ સૂ. ૩..૫

ટીકાર્થ— પ્રશ્ન "से किं तं अजीवाभिगमे ?" હે ભગવન્ ! અજીવાભિગમનું સ્વરૂપ કેવું છે ? તેનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુ કહે છે કે—"अजीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा" હે ગૌતમ ! અજીવાભિગમના નીચે પ્રમાણે બે પ્રકાર કહ્યા છે—"रूवि अजीवाभिगमे य, अरूवि अजीवाभिगमे य" (૧) રૂપી અજીવાભિગમ અને (૨) અરૂપી અજીવાભિગમ. જેમાં કૃષ્ણ, નીલ આદિ વર્ણનો સદ્ભાવ હોય છે, તેઓ રૂપી છે. અહીં રૂપ પદ ગંધ, રસ, અને સ્પર્શનું પણ ઉપલક્ષક છે, કારણ કે ગંધાદિનો અભાવ હોય તો સ્વતંત્રરૂપે રૂપનો સદ્ભાવ કદી પણ સંભવી શકતો નથી ગંધ, રસ, સ્પર્શ અને વર્ણ આ ચારેનો પરસ્પરની સાથે સંયોગ થાય ત્યારે જ તે રૂપી પદાર્થમાં સર્વત્ર ગમન કરવાનું લક્ષણ સંભવી શકે છે. પ્રત્યેક પરમાણુમાં વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શનો સદ્ભાવ જ હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—"कारणमेव तदन्त्यम्" ઇત્યાદિ

एतावता भिन्ना एव रूपपरमाणवो भिन्नाश्च रसादिपरमाणवः, इति येषां कथनं तन्निराकृतं भवति प्रत्यक्षबाधात् तथाहि–यत्रैव घटादौ रूपपरमाणवः प्रतीयन्ते तेष्वेव सर्वेष्वपि स्पर्शोऽपि उपलभ्यते एव, एवं यत्रैव घृतादौ रसपरमाणवः कर्पूरादिगन्धपरमाणवो वा समुपलभ्यन्ते तेष्वेव घृतकर्पूरादिषु नैरन्तर्येण रूप स्पर्शश्च उपलब्धिविषयो भवत्येव, अन्यथा एकस्य सत्त्वेऽपरस्यासत्त्वे सान्तरास्ते प्रतीयेरन् न च सान्तरास्ते रूपादयः प्रतीयन्ते तस्मादपि अतिरेकः परस्परं रूपादीनामिति । रूपिणश्च ते अजीवाश्च इति रूप्यजीवा स्तेषामभिगमो रूप्यजीवाभिगमः पुद्गलरूपा जीवा इति भाव । पुद्गलानामेव रूपादिमत्तया उपलम्भादिति । रूपि-

एतावता–जो ऐसा कहते है 'कि रूप परमाणु से भिन्न हैं, रसादि परमाणु भिन्न हैं' सो यह उनका कथन निराकृत हो जाता है । क्योंकि इस प्रकार के कथन में प्रत्यक्ष प्रमाण से बाधा आती है । इसका स्पष्ट विवेचन इस प्रकार से है — जिस घटादि में रूपपरमाणु प्रतीत होते हैं उन्हीं समस्त परमाणुओ में स्पर्श भी उपलब्ध होता हैं, इसी प्रकार जिस घृत आदि पदार्थ में रस परमाणु अथवा कपूर आदि में गन्ध परमाणु पाये जाते है उन्ही परमाणुओ में वहां रूप और स्पर्श भी उपलब्धि का विषय होता है । जो ऐसा न माना जाय और ऐसा ही माना जाय कि एक के सद्भाव में ऊपर का असद्भाव रहता है तो उनकी प्रतीति सान्तर रूप से होनी चाहिये, परन्तु रूपादिको की सान्तर-रूप से प्रतीति तो होती नहीं है नैरन्तर्यरूप से ही प्रतीति होतीहै अतः ऐसा ही मानना चाहिये कि जहां एक का सद्भाव है वहां शेष तीन का भी सद्भाव है। रूपी जो अजीव हैं वे रूप्य जीव पदार्थ हैं। इनका जो अभिगम है वह रूप्यजीवाभिगम है। ऐसा यह रूप्य-

આ કથન દ્વારા "રૂપ પરમાણુ ભિન્ન છે, રસાદિ પરમાણુ ભિન્ન છે," આ પ્રકારની માન્યતા ધરાવનારા લોકોની માન્યતાનું ખંડન થઈ જાય છે, કારણ કે આ પ્રકારનું કથન સ્વીકારવામાં આવે, તો પ્રત્યક્ષ પ્રમાણમાં જ બાધા આવી જાય છે, તેનું સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે—જે ઘટાદિમાં રૂપ પરમાણુ વિદ્યમાન હોય છે, તે સઘળા પરમાણુઓમાં સ્પર્શનો પણ સદ્ભાવ હોય છે. એજ પ્રમાણે ઘી આદિ પદાર્થોમાં રસપરમાણુ વિદ્યમાન હોય છે. અને કપૂર આદિમાં ગંધપરમાણુ વિદ્યમાન હોય છે, તે પદાર્થોના એજ પરમાણુઓમા રૂપ અને સ્પર્શનો પણ સદ્ભાવ હોય છે. જો એવું ન માનવામાં આવે, અને એવું જ માનવામાં આવે કે કોઈ એકનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે અન્યનો અસદ્ભાવ હોય છે, તો તેમની પ્રતીતિ સાન્તર રૂપે થવી જોઈએ; પરન્તુ રૂપાદિકોની સાન્તરરૂપે પ્રતીતિ તો થતી નથી, નૈરન્તર્ય રૂપે જ પ્રતીતિ થાય છે. તેથી એવું જ માનવું પડશે કે જ્યાં એકનો સદ્ભાવ હોય ત્યાં બાકીના ત્રણેનો સદ્ભાવ જ હોય છે. રૂપી પદાર્થો કે જે અજીવ છે, તેમને રૂપ્યજીવ પદાર્થો કહે છે. તેમનો જે અભિગમ છે તેને રૂપ્યજીવાભિગમ કહે છે. એવો આ રૂપ્યજીવાભિગમ પુદ્ગલ અજીવ રૂપ હોય છે. એટલે કે પુદ્ગલ રૂપ અજીવ જ

भिन्ना अरूपिणो धर्मास्तिकायादयः ते च ते अजीवाश्चेति अरूप्यजीवा स्तेषामभिगमोऽरूप्य-जीवाभिगम इति । सू० ३ । अरूपिणोऽजीवा धर्मास्तिकायादयः केवलमागमप्रमाणसवेद्या स्तत्त्वत इति प्रथमतोऽरूप्यजीवाभिगमविषयकमेव प्रश्नसूत्रमाह–से किं तं' इत्यादि **'सेकिंतं अरूवि अजीवाभिगमे'** अथकोऽसौ अरूप्यजीवाभिगम इति प्रश्नः, उत्तरयति–**अरूवि अजीवा-भिगमे दसविहे पन्नत्ते'** अरूप्यजीवाभिगमो दशविधः दशप्रकारकः प्रज्ञप्तः–कथितः तमेव दशविध-भेदं दर्शयितुमाह–तं जहा' इत्यादि 'तंजहा' तद्यथा **'धम्मत्थिकाए'** धर्मास्तिकायः **'एवं जहा पण्णवणाए जाव सेत्तं अरूवि अजीवाभिगमे'**एव यथा प्रज्ञापनायां यावत् सोऽयमरूप्यजीवा-

---

जीवाभिगम पुद्गल अजीव रूप होता है। अर्थात् पुद्गलरूप अजीव ही रूप्यजीव है। क्योंकि रूप, रस, गन्ध और स्पर्श इन गुणो से युक्त पुद्गलों की ही उपलब्धि होती है। अन्य द्रव्यो की नहीं। पुद्गल से भिन्न जो अरूपी धर्मास्तिकाय आदि हैं, वे अरूपी अजीव है। इनका जो अभिगम है वह अरूप्यजीवाभिगम है ॥ सू० ३ ॥

ये अरूपी अजीव धर्मास्तिकायादिक केवल आगम प्रमाण से ही सवेद्य है–अतः सूत्रकार ने अरूप्यजीवाभिगम विपयक ही प्रश्नसूत्र सर्वप्रथम कहा है–इसमें प्रश्न कर्त्ता ने यही पूछा है **'से किंतं अरूवि अजीवाभिगमे'** हे भदन्त। अरूपी अजीवाभिगम क्या है ? अर्थात् अरूपी अजीवा-भिगम कितने प्रकार का है ? उत्तर में कहा गया है–**'अरूवि अजीवाभिगमे दसविहे पन्नत्ते'** अरूपी अजीवाभिगम दश प्रकार का है—तं जहा" जैसे **'धम्मत्थिकाए एवं जहा पण्णवणाए जाव से तं अरूवि अजीवाभिगमे'** धर्मास्तिकाय इत्यादि -इस दश प्रकार के अजीवाभिगमका कथन जिस रूप से प्रज्ञापना मे किया गया है ? उसी रूप से यहाँ पर भी यावत् **'से तं अरूवि अजीवा-**

રૂપ્યજીવ (રૂપીઅજીવ) છે, કારણ કે રૂપ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શ આ ગુણોથી યુક્ત પુદ્ગલોની જ ઉપલબ્ધિ થાય છે–અન્ય દ્રવ્યોની નહીં. પુદ્ગલથી ભિન્ન એવાં જે ધર્માસ્તિકાય આદિ અરૂપી પદાર્થો છે, તેમને અરૂપી અજીવ કહે છે. તેમનો જે અભિગમ છે તેને 'અરૂપી અજીવાભિગમ' કહે છે. ॥ સૂ૦ ૩ ॥

આ ધર્માસ્તિકાય આદિ અરૂપી અજીવોનો અનુગ મઆગમપ્રમાણ વડે જ થઈ શકે છે. તેથી સૂત્રકારે અરૂપી અજીવાભિગમ વિષયક પ્રશ્ન સૂત્રનું સૌથી પહેલાં પ્રતિપાદન કર્યું છે આ વિષયને અનુલક્ષીને એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે કે–**"से किं तं अरूवि अजीवाभिगमे ?"** હે ભગવન્! અરૂપી અજીવાભિગમનું સ્વરૂપ કેવું છે? એટલે કે તેનાં કેટલા પ્રકાર કહ્યા છે?

ઉત્તર—**"अरूवि अजीवाभिगमे दसविहे पन्नत्ते-तं जहा"** અરૂપી અજીવાભિગમ દસ પ્રકારનો કહ્યો છે જે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે–**"धम्मत्थिकाए, एवं जहा पण्णवणाए जाव से तं अरूवि अजीवाभिगमे"** ધર્માસ્તિકાય આદિ દસ પ્રકારના અરૂપી અજીવાભિગમનું પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન અહીં પણ **'से तं अरूवि**

भिगम इति एवम् उक्तप्रकारेण यथा येन रूपेण प्रज्ञापनायां कथितं तथा तेनैव रूपेण अत्रापि वक्तव्यं तावत्पर्यन्त यावत् 'सेत्तं' सोऽयम् अरूप्यजीवाभिगमः इति, प्रज्ञापनाप्रकरणं चैवम्- **'धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्स पएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पएसा, आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पएसा अद्धा समए'** धर्मास्तिकाय. धर्मास्तिकायस्य देश. धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः अधर्मास्तिकायः अधर्मास्तिकायस्य देशः अधर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देशः आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा. अद्धासमय इतिच्छाया तत्र जीवाना पुद्गलानां च स्वभावत एव गतिपरिणामपरिणतानां तत्स्वभावधारणात् पोषणात् गतिसाहाय्याद्वा धर्मः, अस्तय. प्रदेशा

भिगमे" प्रज्ञापना के इस पाठ तक कथन कर लेना चाहिये। प्रज्ञापना का प्रकरण इस प्रकार से है **'धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पएसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्सदेसे, अधम्मत्थिकायस्स पएसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए'** धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायदेश, धर्मास्तिकायप्रदेश, अधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायदेश अधर्मास्तिकायप्रदेश आकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकायदेश, आकाशास्तिकाय प्रदेश और अद्धासमय। स्वभावत जीव और पुद्गल ये जब गति क्रिया में परिणत होते हैं—अर्थात् छ द्रव्यो में जीव और पुद्गल ये दो द्रव्य ही ऐसे हैं जो गतिशील है—अत इनमें जब गतिक्रिया होती है, तब धर्मद्रव्य उस क्रिया में इन्हे सहायक होता है। तथा यह असंख्यात प्रदेशों वाला है इसीसे इसे धर्मास्तिकाय द्रव्य कहा गया है। यही बात **'तत्स्वभावधारणात् पोषणात् गतिसाहाय्याद्वा धर्मः'** इत्यादि पंक्तियों द्वारास्पष्ट की गई है। अस्ति नाम प्रदेशों का

अजीवाभिगमे" આ સૂત્રપાઠ પર્યંત કરવું જોઈએ પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં આ વિષયને અનુલક્ષીને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—**"धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पएसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पएसा, आगासत्थिकाए, आगसत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए'**

અરૂપી અજીવાભિગમના ૧૦ પ્રકાર નીચે પ્રમાણે છે-(૧) ધર્માસ્તિકાય, (૨) ધર્માસ્તિકાય દેશ, (૩) ધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ, (૪) અધર્માસ્તિકાય, (૫) અધર્માસ્તિકાય દેશ, (૬) અધર્માસ્તિકાય પ્રદેશ, (૭) આકાશાસ્તિકાય. (૮) આકાશાસ્તિકાયદેશ, (૯) આકાશાસ્તિકાય પ્રદેશ અને (૧૦) અદ્ધાસમય (કાળ)

છ દ્રવ્યોમાંથી જીવ અને પુદ્ગલ, આ બે દ્રવ્યો એવાં છે કે જે ગતિશીલ છે. આ બન્ને દ્રવ્યોની ગતિક્રિયામાં ધર્મદ્રવ્ય સહાયક થાય છે તે દ્રવ્ય અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળું હોવાને લીધે જ તેને ધર્માસ્તિકાય કહેવામાં આવ્યું છે એજ વાત **"तत्स्वभावधारणात् पोषणात् गतिसाहाय्याद्वा धर्मः"** ઈત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે અસ્તિ એટલે પ્રદેશો. આ પ્રદેશોના સમુદાયને અસ્તિકાય કહે છે. ધર્માસ્તિકાયના જે અવિભાજ્ય

स्तेषां कायः-संघातः समुदायः धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः प्रकृष्टा देशा इति प्रदेशाः निर्विभागा अंशा इत्यर्थः तेषां चासंख्यातलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्ते असंख्याताः । एवं धर्मास्तिकायस्य विपक्षोऽधर्मास्तिकायः स च जीवानां पुद्गलानां च स्थितिपरिणामपरिणतानां तदीयपरिणामस्योपष्टम्भकोऽमूर्त्तोऽसंख्यातप्रदेशात्मकः । एतस्यापि देशप्रदेशाः धर्मास्तिकायस्य देशप्रदेशवदेव चिन्तनीयाः । तथा आसमन्तात् सर्वाण्यपि द्रव्याणि जीवादीनि काशन्ते-दीप्यन्ते यत्रेत्याकाशः अस्तयः-प्रदेशाः तेषां कायः-समुदायः इत्यस्तिकाय. आकाशश्च अस्तिकायश्च इत्याकाशास्तिकायः आकाशास्तिकायस्य देशप्रदेशाः धर्मास्तिकायस्य देशप्रदेशवदेव विचारणीयाः किन्तु आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा अनन्ता भवन्ति अलोकाकाशस्यानन्तत्वादिति । तथा अद्धासमय इति अद्धेति कालस्य नाम अद्धाचासौ समयश्च इति अद्धासमयः अथवा अद्धायाः समयो निर्विभागो

है। इन प्रदेशों के संघात समुदाय का नाम अस्तिकाय है। धर्मास्तिकाय के जो प्रकृष्ट देश है-निर्विभाग अंश है वे धर्मास्तिकाय प्रदेश है । ऐसे प्रदेश इसमें असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण है अतः वे असंख्यात है। धर्मास्तिकाय का विपक्ष अधर्मास्तिकाय है। स्थितिरूप परिणाम से परिणत जब जीव और पुद्गल द्रव्य होते हैं-तब यह अधर्मद्रव्य उन्हे उस क्रिया में सहायक होता है यह अमूर्त हैं। तथा असंख्यात प्रदेशों वाला है। धर्मास्तिकाय के जैसा इसके भी देश प्रदेश होते है । समस्त जीवादिक द्रव्य जिसमें प्रकाशित होते है-रहते है-वह आकाश है यह आकाशद्रव्य भी अस्तिकाय कहा गया है क्योंकि यह भी प्रदेशों का समुदाय रूप एक द्रव्य है । इसके भी देश और प्रदेश धर्मास्तिकाय के जैसे ही होते है। इसके दो भेद कहे गये है—एक लोकाकाश,और दूसरा आलोकाकाश, जीवादिक छह द्रव्यो का निवास लोकाकाश में ही है आलोकाकाश मे नहीं । अतः लोकाकाश के असंख्यात प्रदेश कहे गये है और आलोकाकाश के अनन्त प्रदेश कहे गये हैं । क्योंकि अलोकाकाश अनन्त है । अद्धा नाम

અંશો છે તેમને ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશો કહે છે તેમાં એવા પ્રદેશો અસંખ્યાત લોકાકાશ પ્રદેશ પ્રમાણ છે, તેથી તેઓ અસંખ્યાત છે. ધર્માસ્તિકાયથી વિપરીત લક્ષણવાળું દ્રવ્ય અધર્માસ્તિકાય છે. જ્યારે જીવ અને પુદ્ગલ દ્રવ્ય સ્થિતિ રૂપ પરિણામમાં પરિણત થાય છે ત્યારે અધર્મદ્રવ્ય તેને તે ક્રિયામાં સહાયક બને છે. તે અમૂર્ત છે અને અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળું છે. ધર્માસ્તિકાયની જેમ તેને પણ દેશ અને પ્રદેશો હોય છે. સમસ્ત જીવાદિક દ્રવ્ય જેમાં રહે છે,' તે આકાશ છે. તે આકાશ દ્રવ્ય પણ પ્રદેશોના સમુદાયરૂપ એક દ્રવ્ય હોવાથી તેને પણ ધર્માસ્તિકાયની જેમ દેશ અને પ્રદેશો હોય છે તેના બે ભેદ કહ્યા છે: (૧) લોકાકાશ અને (૨) અલોકાકાશ જીવાદિક છ દ્રવ્યોનો નિવાસ લોકાકાશમાં જ હોય છે, આલોકાકાશમાં હોતો નથી. તેથી લોકાકાશના અસંખ્યાત પ્રદેશો કહ્યા છે અલોકાકાશના અનંત પ્રદેશો કહ્યા છે, કારણ કે અલોકાકાશ અનંત છે. 'અદ્ધા' નામ કાળનું વાચક છે. અદ્ધા

भाग इति कालासमयः । ननु यथा धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकाययोर्देशप्रदेशौ कथितौ तथा अद्धासमयस्य देशप्रदेशौ कथं नोक्तौ इति चेत् अत्रोच्यते एकस्यैव वर्तमानकालस्य परमार्थतः सत्त्वम्, अतीतानागतकालयोस्तु विनष्टानुत्पन्नत्वात् ततः कायत्वस्याभावेन देशप्रदेशकल्पना-ऽप्यस्य न भवति, इति ।

ननु कालाकाशौ लोकप्रसिद्धत्वात् स्वीकर्तव्यौ, धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायौ तु लोकप्रसिद्धच-रित्वात् कथं मन्तव्यौ इति चेत् सत्यम् धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकाययोरप्रत्यक्षतया प्रतीति-विषयत्वाऽभावेऽपि तदीयकार्यस्य गतिस्थितिरूपस्य सर्वसमतत्वेन तद्द्वारा तत्कारणयोर्धर्मास्ति-

---

रूप का है । अद्धारूप जो समय वह अद्धासमय है अथवा अद्धा का जो समय वह अद्धा समय है । समय निर्विभाग भाग रूप होता है ।

शंका— जिस प्रकार आपने धर्मास्तिकाय एवं अधर्मास्तिकाय के देश और प्रदेश कहे है उसीप्रकार से अद्धासमय के देश और प्रदेश क्यों नहीं कहे ?

उत्तर— परमार्थ से एक ही वर्तमान कालका सत्त्व है । वह वर्तमान काल एक समय रूप होता है । अतीत और अनागतकाल विनष्ट एवं अनुत्पन्न होने से सत्त्व रूप नहीं है । इसलिये कायत्व के अभाव में देश प्रदेश कल्पना काल के नहीं होती है ।

शंका— काल और आकाश ये तो लोक में प्रसिद्ध हैं–इसलिये ये तो माने जा सकते हैं-पर धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय ये लोक में प्रसिद्ध नहीं है । अतः लोक में इनकी प्रसिद्धि के अभावमें इन्हें कैसे माना जा सकता ?

उत्तर— आपका कहना सत्य है धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय यद्यपि प्रत्यक्ष से प्रतीति में नहीं आते हैं । परन्तु धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय के कार्य जो गतिस्थिति में हेतु होना

રૂપ જે સમય તેને અદ્ધાસમય કહે છે અથવા અદ્ધાનો જે સમય તે અદ્ધાસમય છે. સમય નિર્વિભાગ ભાગરૂપ હોય છે

શંકા—આપે જેમ ધર્માસ્તિકાય અને અધર્માસ્તિકાયના દેશ અને પ્રદેશો કહ્યા, એજ પ્રમાણે અદ્ધાસમયના દેશ અને પ્રદેશો કેમ કહ્યા નથી ?

ઉત્તર—માત્ર વર્તમાનકાળનું જ સત્વ (અસ્તિત્વ) છે. તે વર્તમાનકાળ એક સમય રૂપ હોય છે ભૂતકાળ અને ભવિષ્યકાળ વિનષ્ટ અને અનુત્પન્ન હોવાને કારણે સત્વરૂપ નથી. તેથી કાયત્વના અભાવને લીધે કાળના દેશ અને પ્રદેશ સંભવી શકતા નથી.

શંકા—કાળ અને આકાશ, આ બન્ને લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે, તેથી તેમના અસ્તિત્વનો સ્વીકાર કરી શકાય છે. પરન્તુ ધર્માસ્તિકાય અને અધર્માસ્તિકાય તો લોકમાં પ્રસિદ્ધ નથી. તો તેમનું અસ્તિત્વ કેવી રીતે માની શકાય ?

ઉત્તર— આપની વાત ખરી છે ધર્માસ્તિકાય અને અધર્માસ્તિકાયનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ થઇ શકતો નથી પરન્તુ ગતિ અને સ્થિતિમાં મદદ રૂપ થવાનું તેમનું કાર્ય તો સર્વ-

कायाधर्मास्तिकाययोरपि अनुमानेन ज्ञातुं शक्यत्वात् यथा चक्षुरादीन्द्रियाणामप्रत्यक्षत्वेऽपि रूपादि विज्ञानरूपकार्येण चक्षुरादीनां ज्ञानं भवति तथैव जीवानां पुद्गलानां च गतिस्थितिपरिणामपरिगतानां गतिस्थित्योः कारणतया धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकाययोरपि सिद्धिर्भवत्येवेति भावः।

अनेन क्रमेण अरूपि अजीवद्रव्याणि धर्माधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायदेशप्रदेशविशिष्ट कालाख्यानि निरूपितानि यथाशास्त्रम्। तदत्रोपसंहारवाक्यम् **'से तं अरूवि अजीवाभिगमे'** इति ॥

अरूप्यजीवं निरूप्य रूप्यजीवं निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह— **'से किं तं रूवि'** इत्यादि, **'से किं तं रूवि अजीवाभिगमे'** अथ कोऽसौ रूप्यजीवाभिगमः, इति प्रश्नः, उत्तरयति-'रूवि' इत्यादि **'रूवि अजीवाभिगमे चउव्विहे पण्णत्ते'** रूप्यजीवाभिगमश्चतुर्विधः चतुःप्रकारकः प्रज्ञप्तः-कथितः

रूप है वे सर्व संमत हैं। अतः इनके द्वारा उनका अनुमान प्रमाण द्वारा सत्त्व माना गया है। जिस प्रकार से चक्षु आदि इन्द्रियों का अप्रत्यक्ष होने पर भी रूपादि के ज्ञान होने रूप कार्य से सद्भाव माना जाता है। उसी प्रकार से धर्माधर्मादि द्रव्यों का गतिस्थिति स्वभाव वाले जीव और पुद्गलों की गति और स्थिति में हेतु होने रूप कार्य से अनुमानप्रमाण द्वारा सद्भाव माना गया है। इस क्रम से शास्त्रानुसार अरूपि अजीव द्रव्य का धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय का और इनके देश प्रदेश का एवं काल द्रव्य का कथन किया—अब उपसंहार करते हैं—**'से तं अरूवि अजीवाभिगमे'** स एष अरूप्यजीवाभिगमः, यह अरूपीअजीवाभिगम कहा गया है।

अरूपी अजीव द्रव्यका निरूपण करके अब रूपी अजीव द्रव्य का निरूपण किया जाता है—**'से किं तं रूवि अजीवाभिगमे'** हे भदन्त ! रूपी अजीव द्रव्य कितने प्रकार का है ?

उत्तर—**'रूवि अजीवाभिगमे चउव्विहे पन्नत्ते'** रूपी अजीवाभिगम चार प्रकार का है।

સંમત છે. તેથી આ તેમના કાર્યો દ્વારા અનુમાન પ્રમાણુથી તેમનું સત્ત્વ (અસ્તિત્વ) સ્વીકારવામાં આવ્યું છે જેમ ચક્ષુ આદિ ઈન્દ્રિયો અપ્રત્યક્ષ હોવા છતાં પણ રૂપાદિનું જ્ઞાન થવા રૂપ કાર્ય દ્વારા તેમનો સદ્‌ભાવ માનવામાં આવે છે, એજ પ્રમાણે ધર્મ અને અધર્મ દ્રવ્યોનો, ગતિસ્થિતિ સ્વભાવવાળા જીવો અને પુદ્‌ગલોની ગતિ અને સ્થિતિમાં કારણરૂપ હોવાથી કાર્ય ને લીધે અનુમાન પ્રમાણ દ્વારા સદ્ભાવ માનવામાં આવ્યો છે. આ પ્રકારે શાસ્ત્રાનુસાર અરૂપી અજીવ દ્રવ્યનું-ધર્માસ્તિકાયનું, અધર્માસ્તિકાયનું, આકાશાસ્તિકાયનું અને તેમના દેશ પ્રદેશોનું તથા કાળદ્રવ્યનું કથન કરવામાં આવ્યું. હવે સૂત્રકાર ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે—"से त्तं अरूवि अजीवाभिगमे" આ પ્રકારનું અરૂપી અજીવાભિગમનું સ્વરૂપ છે. એટલે કે તેના દસ પ્રકારોનું વર્ણન અહીં પૂરૂં થાય છે

અરૂપી અજીવ દ્રવ્યોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર રૂપી અજીવ દ્રવ્યોનું નિરૂપણ કરે છે—"से किं तं रूवि अजीवाभिगमे ?" હે ભગવન્! રૂપી અજીવ દ્રવ્યનું સ્વરૂપ કેવું છે ? તેનો ઉત્તર આ પ્રમાણે આપવામાં આવ્યો છે—"रूवि अजीवाभिमे चउव्विहे

रूप्यजीवानां चत्वारो भेदा भवन्तीति भावः । प्रकरणभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'खधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गल' स्कन्धाः अवयविनः स्थूलाः, स्कन्धदेशाः स्कन्धप्रदेशाः परमाणुपुद्गलाः अवयवरूपाः सूक्ष्माः स्कन्धा इत्यत्र बहुवचनं पुद्गलस्कन्धानामन्तरत्वं ज्ञापनाय ।

तदुक्तम्-'दव्वओ णं पुग्गलत्थिकाए अणंते' द्रव्यतो द्रव्यरूपेण खलु पुगद्लास्तिकायः अनन्तो भवतीतिच्छाया । स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममपरित्यजतां केवलबुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादि प्रदेशात्मका विभागास्ते एव स्कन्धदेशा इति कथ्यन्ते । इहापि बहुवचनमनन्तप्रदेशिक स्कन्धेषु स्कन्धदेशानामनन्तत्वज्ञापनायेति । स्कन्धप्रदेशाः, स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममत्यजतां ये प्रकृष्टा देशा निर्विभागा भागास्ते एव स्कन्धप्रदेशाः परमाणव इत्यर्थः, परमाणुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणवः इति ।

'ते समासओ पंचविहा पन्नत्ता' ते उपरिदर्शिताः स्कन्धस्कन्धदेशस्कन्धप्रदेशपरमाणवः

तं जहा''—जैसे-'खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला' स्कन्ध १ स्कन्धदेश २ स्कन्ध प्रदेश ३ और परमाणुपुद्गल ४ इन में जो स्थूल अवयवी है वे स्कन्ध हैं तथा अवयव रूप जो सूक्ष्म पुद्गल हैं वे परमाणु हैं । स्कन्धो में अनन्तता प्रकट करने के लिये स्कन्ध इस रूप से बहुवचन का प्रयोग किया है ।

कहा भी है—दव्वओ णं पुग्गलत्थिकाए आणंत्ते' स्कन्धरूप परिणाम का त्याग किये बिना ही केवल बुद्धि से परिकल्पित जो स्कन्धों के द्व्यादि प्रदेशात्मक विभाग हैं वे स्कन्धदेश हैं। ये स्कन्धदेश भी स्कन्धों में अनन्त होते है। स्कन्धरूप परिणाम का त्याग किये बिना ही जो स्कन्धों के निर्विभाग भाग है वे स्कन्धप्रदेश हैं—स्कन्धत्व परिणाम से रहित जो केवल परमाणुस्वरूप द्रव्य है । वह परमाणुपुद्गल हैं ।

पण्णत्ते" રૂપી અજીવાભિગમ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે. "तंजहा" તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે–(खंधा, खंधदेसा, खधप्पपसा, परमाणुपोग्गला" (૧) સ્કન્ધ, (૨) સ્કન્ધદેશ, (૩) સ્કન્ધપ્રદેશ અને (૪) પરમાણુ પુદ્ગલ જે સ્થૂલ અવયવી છે તેમને સ્કન્ધ કહે છે. અવયવ રૂપ જે સૂક્ષ્મ પુદ્ગલો છે તેમને પરમાણુ કહે છે. સ્કન્ધોમાં અનંતતા પ્રકટ કરવાને માટે "स्कन्धा" આ પ્રકારનો બહુવચનવાળો પ્રયોગ કરાયો છે. કહ્યું પણ છે કે–"दव्वओ णं पुग्गलत्थिकाए अणंते" સ્કન્ધ રૂપ પરિણામનો ત્યાગ કર્યા વિના માત્ર બુદ્ધિથી જ કલ્પવામાં આવેલા સ્કન્ધના બે, ત્રણ આદિ પ્રદેશોવાળા જે વિભાગ છે, તેમને સ્કન્ધદેશ કહે છે. સ્કન્ધોમાં તે સ્કન્ધદેશ પણ અનંત હોય છે સ્કન્ધ રૂપ પરિણામનો ત્યાગ કર્યા વિના જ સ્કન્ધોના જે નિર્વિભાગ ભાગો પડે છે, તેમને સ્કન્ધપ્રદેશો કહે છે. સ્કન્ધત્વ પરિણામથી રહિત એવું જે કેવળ પરમાણુ રૂપ દ્રવ્ય હોય છે, તેને પરમાણુપુદ્ગલ કહે છે. "ते समासओ पचविहा

समासतः–संक्षेपेण पञ्चविधाः–पञ्चप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः प्रकारभेदमेव दर्शयति–'तंजहा' तद्यथा 'वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया' वर्णपरिणताः, गन्धपरिणताः, रसपरिणताः, स्पर्शपरिणताः, संस्थानपरिणताः, 'एवं ते पंच जहा पण्णवणाए' एवं ते–उपरि दर्शिताः पञ्च यथा येन रूपेण प्रज्ञापनाया प्रथमपदे प्रदर्शिता स्तथैवात्रापि ज्ञातव्याः तथाहि 'तत्थ णं जे ते वण्णपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता' तत्र खलु ये वर्णपरिणताः स्कन्धादय स्ते पञ्चविधाः–पञ्चप्रकारका भवन्ति 'तं जहा' तद्यथा 'कालवन्नपरिणया १, नलवीन्नपरिणया २, लोहियवन्नपरिणया ३, हालिद्दवन्नपरिणय ४, सुक्किल्लवन्नपरिणया ५, कालवर्णपरिणताः नीलवर्णपरिणताः, रक्तवर्णपरिणताः, पीतवर्णपरिणताः शुक्लवर्णपरिणताः ५। मधुरादि पञ्चरस-परिणता, गन्धद्वयपरिणताः, कर्कशाद्यष्टविधस्पर्शपरिणता इत्यादीनां प्रज्ञापनाप्रकरणकथि-

---

'ते समासओ पंचविहा पन्नत्ता" ये स्कन्ध स्कन्ध देश स्कन्ध प्रदेश और परमाणु संक्षेप से पाँच प्रकार के कहे गये है–'तं जहा" जैसे 'वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फास-परिणया संठाणपरिणया' वर्ण परिणत गन्धपरिणत रस परिणत स्पर्श परिणतऔर संस्थान परिणत 'एवं ते पंच जहा पण्णवणाए" इस प्रकार जिस रूप से ये पाँच प्रज्ञापना में प्रकट किये गये हैं उसी रूप से यहाँ पर भी जानना चाहिये अर्थात् 'तत्थ णं जे वण्णपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता" इनमें जो वर्ण परितणत स्कन्ध आदि हैं। वे कृष्णवर्णपरिणत नीलवर्णपरिणत रक्तवर्णपरिणत, हरिद्वर्ण परिणत एवं शुक्लवर्णपरिणत के भेद से पाँच प्रकार के हैं। रस परिणतस्कन्ध आदि मधुररस परिणत आदि के भेद से पाँच प्रकार के हैं। गंध परिणत स्कन्ध दो प्रकार के हैं। स्पर्शपरिणत स्कन्ध आदि कर्कशस्पर्शादि के भेद से आठ प्रकार के है। इत्यादि सब प्रज्ञापना सूत्रका कथन यहाँ संगृहीत हुआ है। 'से तं रूवि अजीवाभिगमे'

पन्नत्ता" આ સ્કન્ધ, સ્કન્ધદેશ, સ્કન્ધપ્રદેશ અને પરમાણુના સંક્ષિપ્તમાં પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે. "तंजहा" જેવાં કે......"वण्णपरिणया, गंधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, संठाणपरिणया" (૧) વર્ણપરિણત, (૨) ગંધપરિણત, (૩) રસપરિણત, (૪) સ્પર્શપરિણત અને (૫) સંસ્થાનપરિણત "एवं ते पंच जहा पण्णवणाए" પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં આ પાંચેની જેવી પ્રરૂપણા કરવામાં આવી છે, એવી જ પ્રરૂપણા અહીં પણ કરવી જોઈએ. એટલે કે "तत्थ णं जे वण्णपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता" તેમાં જે વર્ણપરિણત સ્કંધ આદિ છે તેમના નીચે પ્રમાણે પાંચ ભેદ છે –(૧) કૃષ્ણવર્ણપરિણત, (૨) નીલવર્ણપરિણત, (૩) રક્ત-વર્ણપરિણત, (૪) શુક્લવર્ણપરિણત અને (૫) હરિતવર્ણપરિણત રસપરિણત સ્કન્ધ આદિના મધુરરસપરિણત આદિ પાંચ ભેદ છે. ગંધપરિણત સ્કન્ધ આદિના સુગંધપરિણત અને દુર્ગંધ-પરિણત રૂપ બે ભેદ છે સ્પર્શપરિણત સ્કંધ આદિના કર્કશસ્પર્શપરિણત આદિ આઠ ભેદ છે. આ પ્રકારનું પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનું કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઇએ. "से त्तं रूवि अजीवा-

'तानां संग्रहः कर्तव्य इति । इदानीं प्रकरणार्थम् उपसंहरन्नाह–"से त्तं रूवि अजीवाभिगमे' सोऽयं रूप्यजीवाभिगमः । 'से त्तं अजीवाभिगमे' सोऽयमजीवाभिगमः कथित इति ॥सू० ५॥

अजीवाभिगमं सक्षेपविस्ताराभ्यां निरूप्य सम्प्रति जीवाभिगमं निरूपयितुमाह–'से किंतं जीवाभिगमे' इत्यादि,

मूलम्—'से किं तं जीवाभिगमे, जीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा संसारसमावन्नग जीवाभिगमे य असंसारसमावन्नग जीवाभिगमे य। से किं तं असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे, असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–अणंतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे य, परंपरसिद्धा संसारसमावन्नगजीवाभिगमे य । से किं तं अणंतरसिद्धा संसारसमावन्नगजीवाभिगमे, अणंतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे पण्णरसविहे पन्नत्ते तं जहा तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा से तं अणंतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे से किं तं परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे, परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे अणेगविहे पन्नत्ते–तं जहा–पढमसमयसिद्धा० दुसमयसिद्धा० जाव अणंतसमयसिद्धा०, से त्तं परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे, से त्तं असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' ॥ सू० ६ ॥

छाया—अथ कोऽसौ जीवाभिगमः ? जीवाभिगमो द्विविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा–संसारसमापन्नकजीवाभिगमश्च असंसारसमापन्नकजीवाभिगमश्च, अथ कोऽसौ असंसारसमापन्नक जीवाभिगमः, असंसारसमापन्नकजीवाभिगमो द्विविधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमश्च, परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमश्च । अथ कोऽसौ अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमः अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नकजीवा-

---

इस प्रकार यह रूपी अजीवाभिगम है।" से त्तं अजीवाभिगमे" इस प्रकार से यहाँ तकअजीवाभिगम का कथन किया ॥ सू० ३–४–५ ॥

भिगमे" આ પ્રકારનું રૂપી અજીવાભિગમનું સ્વરૂપ છે. "से त्त अजीवाभिगमे ' આ પ્રકારે અહીં સુધી સૂત્રકારે અજીવાભિગમનું નિરૂપણ કર્યું છે ॥ સૂ૦ ૩-૪-૫ ॥

भिगमः पञ्चदशविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा-तीर्थसिद्धा यावत् अनेकसिद्धाः। सोऽयमनन्तरसिद्धा-संसारसमापन्नकजीवाभिगमः। अथ कोऽसौ परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमः, परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमोऽनेकविध- प्रज्ञप्तः तद्यथा-प्रथमसमयसिद्धा०, द्वितीयसमयसिद्धा० यावदनन्तसमयसिद्धा०, सोऽयं परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगम। सोऽयमसंसारसमापन्नकजीवाभिगमः॥ सू० ६॥

टीका—अजीवाभिगमं निरूप्य सम्प्रति जीवाभिगमं निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-'से किं तं' इत्यादि 'से किं तं जीवाभिगमे' अथ कोऽसौ जीवाभिगमः किं जीवस्य लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति-'जीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते' जीवाभिगमो द्विविधः प्रज्ञप्तः यस्य कस्यापि पदार्थस्य यावल्लक्षणं न क्रियते तावत्तद्विभागो न सम्भवति विभागं प्रति सामान्यधर्मज्ञानस्य कारणत्वादतः प्रथमतो जीवानां लक्षणं कर्त्तव्यम् लक्षणेन जीवस्वरूपेऽधिगते सति तदनन्तरं तदीयविभागविषयकजिज्ञासासम्भवात् तत्रोपयोगवत्त्वं जीवत्वम् इदं च लक्षणमेकेन्द्रियादारभ्य सिद्धपर्यन्त जीववृत्ति तादृशो जीवो द्विविधो द्विप्रकारकः प्रज्ञप्तः-कथित इति प्रकारभेदमेव दर्शयति तं जहा'

संक्षेप विस्तार से अजीवाभिगम का निरूपण करके अब जीवाभिगमका सूत्रकार वर्णन करते हैं। 'से किं तं जीवाभिगमे'—इत्यादि सूत्र ६

टीकार्थ—'से किं तं जीवाभिगमे' हे भदन्त! जीवाभिगम का क्या लक्षण है और कितने इसके भेद है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'जीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते' जीवाभिगम दो प्रकार का है। जब तक किसी भी पदार्थ का लक्षण नहीं किया जाता है तब तक उसका विभाग नहीं होता है, क्योंकि विभाग के प्रति सामान्य धर्मज्ञान कारण होता है। अतः सर्वप्रथम जीवों का लक्षण कहना चाहिये जब लक्षण से जीवस्वरूप अधिगत हो जाता है तभी उसके विभाग के सम्बन्ध की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। जो उपयोग वाला होता है वह जीव है। यह जीव का लक्षण है। यह लक्षण एकेन्द्रिय से लेकर सिद्ध तक के समस्त जीवों में पाया जाता

અજીવાભિગમનું સંક્ષિપ્તમાં નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર જીવાભિગમનું નિરૂપણ કરે છે—"से किं तं जीवाभिगमे" ઇત્યાદિ....સૂત્ર ૬

ટીકાર્થ—"से किं तं जीवाभिगमे ?" હે ભગવન્! જીવાભિગમનું લક્ષણ શું છે? અને તેના કેટલા ભેદ છે? મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—'जीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते' જીવાભિગમના બે પ્રકાર કહ્યા છે જ્યાં સુધી કોઈ પણ પદાર્થનું લક્ષણ જાણવામાં ન આવે, ત્યાં સુધી તેના વિભાગ પાડી શકાતા નથી કારણ કે સામાન્ય લક્ષણનું જ્ઞાન જ વિભાગ પાડવામાં મદદરૂપ બને છે. તેથી સૌથી પહેલાં જીવોના લક્ષણનું કથન થવું જોઈએ જ્યારે લક્ષણ દ્વારા જીવના સ્વરૂપને જાણી લેવામાં આવે છે, ત્યારે જ તેના વિભાગ વિષયક જિજ્ઞાસા ઉત્પન્ન થાય છે ઉપયોગ જીવનું લક્ષણ છે. આ લક્ષણ એકેન્દ્રિયથી લઈને સિદ્ધ પર્યન્તના સમસ્ત જીવોમાં જોવામાં આવે છે. આ પ્રકારે જીવનું લક્ષણ પ્રકટ કરીને સૂત્રકાર

इत्यादि तं जहा' तद्यथा 'संसारसमावन्नगजीवाभिगमे य असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' य ससारसमापन्नकजीवाभिगमश्च असमारसमापन्नकजीवाभिगमश्च ससारी असंसारी इति भेदेन जीवो द्विभेदस्तत्र संसरणं संसारः नारकतिर्यङ्मनुष्यामरभवभ्रमणलक्षणस्तादृशं ससार सम्यगेकीभावे नाप्ताः–प्राप्ता ये जीवास्ते संसारसमापन्नकाः ससारवर्त्तिन इत्यर्थः ससारसमापन्नकाश्च ते जीवा इति ससारसमापन्नकजीवास्तेषां ससारसमापन्नकजीवानामभिगम इति संसारसमापन्नकजीवाभिगमः । तथा न संसारोऽसंसारः ससारश्च नारकतिर्यग्नरामरभवभ्रमणलक्षणस्तद्विरोधी असंसारः अत्र ससारेण समस्य मानस्य न शब्दस्य विरोधोऽर्थः तथा च संसारप्रतिपक्षभूतोऽसंसारो मोक्ष इत्यर्थः तं मोक्षापरपर्यायम् असंसारं समापन्नकाः सम्यगेकीभावेन प्राप्ता इत्यसंसारसमापन्नकाः असंसारसमापन्नकाश्च ते जीवाश्चेत्यससारसमापन्नकजीवास्तेषां जीवानामभिगमोऽससारसमापन्नक जीवाभिगमः । अत्रोभयत्रापि विद्यमानं चकारद्वय संसारसमापन्नकासंसारसमापन्नकोभयेषामपि जीवानां जीवत्वरूपसामान्यधर्मं प्रति तुल्यत्वं दर्शयति–

है । जीवाभिगम के दो प्रकार ये हैं **'संसारसंमापन्नगजीवाभिगमे य असंसारसमापन्नग जीवाभिगमेय'** ससारसमापन्नक जीवाभिगम और असंमारसमापन्नक जीवाभिगम संसारी और असंसारी के भेद से जीव दो प्रकार का कहा गया है। इनमें जो नारक तिर्यञ्च मनुष्य और देव इस रूप ससार में अच्छी तरह प्राप्त है भ्रमण कर रहे हैं वे संसारी जीव हैं। इस संसारी जीवों का जो अभिगम है वह संसारसमापन्नकजीवाभिगम है। चतुर्गति रूप संसार से जो प्रतिपक्ष है वह असंसार है। यह असंसार मोक्ष रूप है। इस मोक्ष रूप असंसार में जो जीव प्राप्त है वे असंसारसमापन्नक हैं। इनका जो अभिगम है वह असंसारसमापन्नक जीवाभिगम हैं। यहाँ सूत्र में दो चकारो का पाठ आया है वह संसारसमापन्नक जीवों में और असंसारसमापन्नक जीवों में दोनों में जीवत्वरूप सामान्यधर्म के प्रति तुल्यता

જીવાભિગમના નીચે પ્રમાણે બે પ્રકાર બતાવે છે—"**संसारसमापन्नगजीवाभिगमे य, असंसारसमापन्नगजीवाभिगमे य**" (૧) સંસાર સમાપન્નક જીવાભિગમ અને (૨) અસંસાર સમાપન્નક જીવાભિગમ. એટલે કે સંસારી અને અસંસારીના ભેદથી બે પ્રકારના જીવો કહ્યા છે. નારક તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવ રૂપ સંસારમાં ભ્રમણ કરનારા જીવોને સંસારી જીવો કહે છે. આ સંસારી જીવોનો જે અભિગમ છે તેને સંસાર સમાપન્નક જીવાભિગમ કહે છે. ચાર ગતિરૂપ સંસારના પ્રતિપક્ષનું નામ અસંસાર છે આ અસંસાર મોક્ષરૂપ છે. આ મોક્ષરૂપ અસંસારમાં પહોંચી ચુકેલા જીવોને અસંસારસમાપન્નક કહે છે. તેમનો જે અભિગમ છે તેનુ નામ અસંસારસમાપન્નક જીવાભિગમ છે આ સૂત્રમાં બે વાર 'च' નો પ્રયોગ કરીને સૂત્રકારે સંસારસમાપન્નક જીવોમાં અને અસંસાર સમાપન્નક જીવોમાં-બન્નેમા-જીવત્વરૂપ સામાન્ય ધર્મની બાબતમાં તુલ્યતા પ્રકટ કરી છે.

अयं भावः उपयोगवत्त्वलक्षणजीवत्वं यथा-संसारिजीवेषु विद्यते तथा-मुक्तजीवेष्वपि वर्तते एवेति उपयोगवत्त्व लक्षणजीवत्वमुभयत्रापि समानरूपमेवेति। संसार्यससारिणोरुभयोरपि जीवयोरुपयोगवत्त्वात्मक जीवत्वस्य समानतया कथनेन बौद्धमतं न्यायमतं च प्रतिक्षिप्त भवति तथाहि- बौद्धोहि क्षणिकविज्ञानरूपं जीवमभ्युपगच्छति यावत्संसार क्षणिकविज्ञानधारासन्तानरूपेण प्रवहति तत्त्वज्ञानेन यदा सा धारा विच्छिद्यते तदा विज्ञानधारा समुच्छेदरूपा मुक्तिर्भवति मुक्तजीवे विज्ञानं न भवति इति तन्मतं निराकृतमाचार्येण उभयोरेकरूपत्वकथनेन यदा उपयोगमात्रं जीवस्य-स्वरूपम् तदा को हि बुद्धिमान् पुरुष स्ववधाय प्रयत्नं कुर्यात् सर्वोऽपि कर्मसंप्राप्तदुःखं निवर्तयितु यतते न तु स्वकीयस्वरूपविनाशाय क.प्रेक्षावान् स्वविच्छेदाय कुठारं व्यापारयति यदि मोक्षे स्व-

---

प्रकट करता है। अर्थात् उपयोग लक्षण युक्तता जीवत्व का सामान्य लक्षण है। यह लक्षण जिस प्रकार से ससारी जीवों में पाया जाता है उसी प्रकार से वह मुक्त जीवो में भी पाया जाता है। अत· लक्षण की तुल्यता दोनों में है। इस उपयोग लक्षण की तुल्यता के कथन से बौद्धमत और न्यायमत-नैयायिक मतका निरसन (खण्डन) हो जाता है-जैसे- बौद्ध ने "क्षणिक विज्ञान रूप जीव है" ऐसा माना है। जबतक ससार है-तब तक क्षणिक विज्ञान धारासन्तान रूप से चलती रहती है। तत्त्वज्ञान से वह धारा जब विच्छिन्न हो जाती है तब विज्ञान धारा के समुच्छेद होने रूप मुक्ति जीव की हो जाती है। मुक्ति में मुक्त जीव को ज्ञान नहीं रहता है। इस बौद्ध की मान्यता में असमीचीनता कहते हुए आचार्य कहते है कि जीव का लक्षण ही जब उपयोगरूप है तो कौन बुद्धिमान् पुरुष अपने ही वध के लिये प्रयत्न करेगा-समस्त जीव कर्मसंप्राप्त दुःख को दूर करने के लिये प्रयत्न करते है अपने स्वरूप को नष्ट करने के लिये प्रयत्न नहीं करते हैं। यदि मोक्ष में स्व-स्वरूप ही नष्ट हो जाता हो तो

એટલે કે ઉપયોગ લક્ષણુસંપન્નતા જીવત્વનું સામાન્ય લક્ષણ છે. આ લક્ષણનો જેમ સંસારી જીવોમાં સદ્‌ભાવ હોય છે, એજ પ્રમાણે મુક્તજીવોમાં પણ સદ્‌ભાવ હોય છે. આ રીતે બન્નેમાં લક્ષણની સમાનતા છે આ ઉપયોગલક્ષણની તુલ્યતાના કથન દ્વારા બૌદ્ધ-મત અને નૈયાયિકમતનું ખંડન થઈ જાય છે. બૌદ્ધો એવું માને છે કે "ક્ષણિક વિજ્ઞાન રૂપ જીવ છે." જ્યાં સુધી સંસાર છે ત્યાં સુધી ક્ષણિક વિજ્ઞાનધારા સન્તાનરૂપે ચાલુ રહે છે. તત્ત્વજ્ઞાન વડે જ્યારે તે ધારા વિચ્છિન્ન થઈ જાય છે, ત્યારે વિજ્ઞાનધારાના સમુચ્છેદરૂપ મુક્તિની જીવને પ્રાપ્તિ થાય છે. મુક્તિ પ્રાપ્ત કર્યા બાદ મુક્ત જીવમાં જ્ઞાન રહી શકતું નથી. બૌદ્ધોની આ માન્યતા બરાબર નથી એવું પ્રતિપાદન કરવા નિમિત્તે આચાર્ય કહે છે કે-જેમ જીવ ઉપયોગરૂપ લક્ષણવાળો છે, તો કયો બુદ્ધિમાન્ પુરુષ પોતાના જ વધને માટે પ્રયત્ન કરશે? સમસ્ત જીવો કર્મના ઉદયને લીધે જે દુ ખો આવી પડે છે. તેમને દૂર કરવાનો પ્રયત્ન કરે છે—કોઈ પણ જીવ પોતાના સ્વરૂપનો નાશ કરવાનો પ્રયત્ન કરતો નથી. જો મોક્ષમાં સ્વસ્વરૂપનો જ નાશ થઈ જતો હોય, તો તેની પ્રાપ્તિને માટે પ્રયત્ન

स्वरूपमेव नश्येत् तदा कथं केषामपि मोक्षाय प्रयत्नः स्यादिति । एवं नैयायिका अपि आत्मगुणानां नवानां बुद्धिसुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नधर्माधर्मसंस्काराणामत्यन्तोच्छेदार्थं कथं कोऽपि जीवः प्रयत्नं करिष्यति एवं क्रमेण उभयोरपि बौद्धनैयायिकयोर्मतम् आचार्येण समानरूपतया कथनेन खण्डितमिति एतद्विषये विशेषविचारस्तु अन्यत्र द्रष्टव्यः सूत्रव्याख्यानमात्रप्रवृत्तेन मया विशेषतो नात्र विचारः कृत इति अत्रसूत्रे केवलान् अजीवान् जीवांश्चानुचार्याभिगम-शब्दसंवलित प्रश्नोऽभिगममन्तरेण प्रतिपत्ते रसंभवात् जीवाजीवादीनामभिगमगम्यताधर्मज्ञापनाय

फिर क्यों उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्न किया जाय ?—जीव इसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते देखे जाते है—अतः यदि तुम्हारी मान्यतानुसार वहाँ स्व—आत्मा—का स्वरूप—विज्ञान नष्ट हो जाता हो तो फिर कौन बुद्धिमान् अपने स्वरूप के विनाश के लिये प्रयत्न करेगा ।

इसी प्रकार से नैयायिकों का भी ऐसा ही सिद्धान्त है कि बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्कार इन नौ आत्मगुणों के अत्यन्त उच्छेद होने पर मुक्ति प्राप्त होती है सो यह सिद्धान्त भी विचार संगत नहीं है । क्योंकि ज्ञानादि जीव के निज स्वरूप है—। भला, इसके उच्छेद के लिये क्यों कोई जीव प्रयत्न करेगा ? इस प्रकार जब संसारी जीव और मुक्त जीव में उपयोग रूप लक्षण से समानता है तो फिर बौद्ध एवं नैयायिक मत संमत मान्यता समीचीन नहीं हैं—यही बात प्रकट करने के लिये सूत्रकार ने सूत्र में दो चकारों का प्रयोग किया है । इस सम्बन्ध में किया गया विशेष विचार अन्यत्र है अतः वह वहीं से जान लेना चाहिये यहां तो मैंने केवल सूत्र के सम्बन्ध में ही व्याख्या रूप से विचार किया है । विशेष रूप से नहीं । इस सूत्र में केवल—अजीवों का और केवल जीवो का उच्चारण किये

જ શા માટે કરવામાં આવે? પરન્તુ તેની પ્રાપ્તિને માટે પ્રયત્ન કરતા જીવો જોવામાં આવે છે. તમારી માન્યતા અનુસાર જો ત્યાં સ્વ–આત્માના સ્વરૂપ–વિજ્ઞાનનો જ નાશ થઈ જતો હોય, તો કયો બુદ્ધિમાન માણસ પોતાના સ્વરૂપના વિનાશને માટે પ્રયત્ન કરશે?

એજ પ્રમાણે નૈયાયિકોની એવી માન્યતા છે કે બુદ્ધિ, સુખ, દુઃખ, ઈચ્છા, દ્વેષ, પ્રયત્ન, ધર્મ, અધર્મ, અને સંસ્કાર આ નવ આત્મગુણોનો સદંતર નાશ થવાથી મુક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે આ માન્યતા પણ સંગત લાગતી નથી, કારણ કે જ્ઞાનાદિ ગુણો જીવના નિજસ્વરૂપ છે શુ તેના ઉચ્છેદને માટે કોઈ પણ જીવ પ્રયત્ન કરે ખરો? આ પ્રકારે સંસારી જીવ અને મુક્તજીવમાં ઉપયોગરૂપ સામાન્ય લક્ષણની અપેક્ષાએ સમાનતા છે. તેથી બૌદ્ધ અને નૈયાયિકમતની ઉપર્યુક્ત માન્યતા બુદ્ધિગમ્ય નથી. એજ વાત પ્રકટ કરવાને માટે સૂત્રકારે સૂત્રમાં બે ચકારોનો પ્રયોગ કર્યો છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને વિસ્તૃત વિવેચન અન્ય શાસ્ત્રગ્રંથોમાં કરવામાં આવ્યું છે, તો જિજ્ઞાસુ વાચકોએ તે ત્યાંથી વાંચી લેવું અહીં તો મેં માત્ર સૂત્રની સાથે સંબંધ ધરાવતી વાતનું જ વિવેચન સંક્ષિપ્ત રૂપે કર્યું છે–અહીં વિશેષ વિવેચન કર્યું નથી. આ સૂત્રમાં જીવોનું અને માત્ર

कृतः। अयं भाव'-जीवाजीवयोर्ज्ञानविषयत्वज्ञापनाय उभयत्रापि अभिगमशब्दो योजितः एतावता जीवो ज्ञानविषयो न भवतीति अद्वैतवादिनां वेदान्तिनां मतं निराकृतं भवति यदि जीवो ज्ञेयो न भवेत् तदा तदीय स्वरूपस्याज्ञातत्वात् संसारनिवृत्तिनिरतिशयानन्दप्राप्त्यात्मकमोक्षं प्रति कस्यापि प्रवृत्तिरेव न स्यात् ततश्च मोक्षादि शास्त्रप्रणयन नैरर्थक्यमासादयेदिति, अतोऽभिगमशब्दो योजित' वस्तुतस्तु जीवस्य प्रकरणात् जीवाजीवभेद एव सर्वत्र ज्ञातव्यः, असंसार

विना ही उनके साथ अभिगम शब्द को युक्त करके जो प्रश्न किया गया है वह अभिगम के बिना उनकी प्रतिपत्ति नहीं हो सकती है इसी अभिप्राय से जीवाजीवादिकों में अभिगम गम्यता रूप धर्म के समझाने के लिये प्रश्न किया गया है ' तात्पर्य यह है- जीव और अजीव में ज्ञान विषयता समझाने के लिये दोनों में अभिगम शब्द योजित हुआ है। एतावता जीव ज्ञान का विषय नहीं होता है" ऐसा जो अद्वैतवादी का मत है-वेदान्तियो का कथन है-वह निराकृत हो जाता है। क्योंकि यदि जीव को ज्ञेय न माना जाय-ज्ञान का वह विषय होता है- ऐसा स्वीकार न किया जाय-तो उसका जो स्वरूप है वह ज्ञात नहीं हो सकता है। स्वरूप ज्ञात हुए विना संसार की निवृत्ति रूप एवं निरतिशयानन्द की प्राप्ति रूप जो मोक्ष है उसके प्रति किसी भी जीव की प्रवृत्ति ही नहीं हो सकेगी। फिर मोक्षादि की प्राप्ति के निमित्त जो शास्त्र की रचना करने में आई है वह निरर्थक हो जावेगी। अतः वह व्यर्थ न हो इसलिये जीव और अजीव के साथ अभिगम शब्द को योजितकर उन्हें ज्ञान का विषय भूत कहा गया है।

वस्तुतः—तो जीव का प्रकरण है। इसलिये सर्वत्र जीव और अजीव के भेद ही जानना चाहिये।

અજીવોનું ઉચ્ચારણ કર્યા વિના જ તેમની સાથે અભિગમ શબ્દને યુક્ત કરીને જે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ છે કે અભિગમ વિનાં તેમની પ્રતિપત્તિ (સાચું જ્ઞાન) થઈ શકતી નથી જીવ-અજીવાદિકોમાં અભિગમ્યતા રૂપ ધર્મને સમજાવવાને માટે તેમની સાથે અભિગમ શબ્દને પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે. આ કથનને ભાવાર્થ એ છે કે જીવ અને અજીવમાં જ્ઞાનવિષયતા સમજાવવાને માટે જ બન્નેની સાથે અભિગમ શબ્દ જોડવામાં આવ્યો છે. તેથી "જીવ જ્ઞાનને વિષય નથી," આ પ્રકારને અદ્વૈતવાદીઓ-વેદાન્તીઓનો જે મત છે તેનું ખંડન થઈ જાય છે. કારણ કે જો જીવને જ્ઞેય-જ્ઞાનના વિષય રૂપ ન માનવામાં આવે, તો તેનું જે સ્વરૂપ છે તે જાણી શકાય નહીં. અને તેના સ્વરૂપને જાણ્યા વિના સંસારની નિવૃત્તિ રૂપ અને નિરતિશયાનન્દની પ્રાપ્તિ રૂપ મોક્ષની પ્રાપ્તિ માટે કોઈ પણ જીવ પ્રવૃત્તિ જ ન કરે તો પછી મોક્ષાદિની પ્રાપ્તિને માટે જે શાસ્ત્રની રચના કરવામાં આવી છે, તે પણ નિરર્થક બની જાય. તે નિરર્થક ન બની જાય તે માટે જીવ અને અજીવની સાથે અભિગમ શબ્દને યોજિત કરીને તેમને જ્ઞાનના વિષયરૂપ પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. વસ્તુતઃ તો જીવનું જ આ પ્રકરણ છે, તેથી સર્વત્ર જીવ અને અજીવના ભેદ સમજવા જોઈએ.

समापन्नकजीवविषयेऽल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमोपस्थितमपि संसारसमापन्नकजीवाभिगमं सूत्रं परित्यज्य प्रथमतोऽसंसारसमापन्नकजीवाभिगमं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह–**'से किं तं असंसार'** इत्यादि **'से किं तं असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे'** अथ कोऽसौ असंसारसमापन्नकजीवाभिगमः असंसारसमापन्नका जीवाः कियन्तो भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति **'असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते'** असंसारसमापन्नकजीवाभिगमो द्विविधः–द्विप्रकारकः प्रज्ञप्तः–कथित इति द्वैविध्यमेव दर्शयति–'तंजहा' इत्यादि, **'तंजहा'** तद्यथा–**'अणंतरसिद्धा संसारसमान्नगजीवाभिगमे य' परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे य'** अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमश्च, परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमश्च, अनन्तरसमये सिद्धिम्–मोक्षं प्राप्ता ये ते अनन्तरसिद्धाः, तथा परम्परसिद्धा तथाच- अनन्तरसिद्धपरम्परसिद्धभेदेन असंसारसमापन्नका जीवा द्विप्रकारका भवन्तीति । तत्रानन्तरसिद्धाः कियन्त इति प्रश्नयन्नाह-**'से किं तं'** इत्यादि **'से किं तं**

सूत्र में **"संसारसमापन्नक जीवाभिगम और असंसारसमापन्नकजीवाभिगम"** इस रूप से ही भेद प्रदर्शित किये गये हैं। सो आगे की वक्तव्यता इसी क्रम से होनी चाहिये थी परन्तु संसारसमापन्नक जीवाभिगम सूत्र को छोड़कर जो मूत्रकारने पहिले असंसारसमापन्नक जीव के विषय में प्रश्न करवाने के हेतु से ऐसा कहा है कि–**"से किं त असंसारसमापन्न-जीवाभिगमे'** सो वह असंसार समापन्नक जीवके विषय में वक्तव्यता अल्प होने से ही कहा है—हे भदन्त ? असंसारसमापन्नक जीवाभिगम कितने प्रकार का होता है ? ऊत्तर में प्रभु कहते हैं–**'असंसारसमापन्नकजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते"** हे गौतम ? असंसारसमापन्नक जीवाभिगम दो प्रकार का होता है। **'तं जहा'** जैसे **'अणंतरसिद्धाऽभंसारसारसमावन्नगजीवाभिगमे य परंपर मिद्धाऽसंसार समावन्नगजीवाभिम य'** अनन्तरसिद्धअसंसार समापन्नक जीवाभिगम और परपरसिद्ध असंसार समापन्नक जीवाभिगम अनन्तर समय में जो

સૂત્રમાં—"સ સાર સમાપન્નક જીવાભિગમ અને અસ'સાર સમાપન્નક જીવાભિગમ' આ પ્રકારના ભેદો પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. તેથી પહેલા સ'સાર સમાપન્નક જીવોનું કથન થવું જોઈતુ હતું, છતાં પણ અહીં અસ સાર સમાપન્નક જીવોની પ્રરૂપણા પહેલાં કરવાનું કારણ એ છે કે સ'સાર સમાપન્નક જીવોની વક્તવ્યતા કરતાં અસ'સાર સમાપન્નક જીવોની વક્તવ્યતા ટૂકી છે

પ્રશ્ન—**"से किं तं असंसारसमापन्नकजीवाभिगमे ?"** હે ભગવન્! અસ'સાર સમાપન્નક જીવાભિગમનું સ્વરૂપ કેવુ છે ?–તેના કેટલા પ્રકાર છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—**"असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते"** હે ગૌતમ ! અસ સાર સમાપન્નક જીવાભિગમ બે પ્રકારનો કહ્યો છે "तजहा" તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે.—**"अणंतरसिद्धाऽसंसारसमावन्नगजीवाभिगमे य, परंपरसिद्धाऽसंसारसमावन्नगजीवाभिगमे य"** (१) અનન્તર સિદ્ધ અસ'સારસમાપન્નક જીવાભિગમ અને (२) પર'પર

'अणंतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' अथ कोऽसौ अनन्तरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिमग इति प्रश्न उत्तरयति 'अणंतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमें पन्नरसविहे पन्नत्ते' अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमः पञ्चदशविधः पञ्चदशप्रकारकः प्रज्ञप्त'-कथित इति। पञ्चदशभेदमेव दर्शयति-'तंजहा' इत्यादि, 'तंजहा' तद्यथा 'तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा' तीर्थसिद्धा यावदनेकसिद्धाः अत्र यावत्पदेन 'अतित्थसिद्धा तित्थगरसिद्धा अतित्थगरसिद्धा सयंबुद्धसिद्धा, पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्धबोहियसिद्धा इत्थिलिंगसिद्धा पुरिसलिंगसिद्धा, नपुसगलिंगसिद्धा, सलिंगसिद्धा, अन्नलिंगसिद्धा, गिहिलिंगसिद्धा, एगसिद्धा, अतीर्थसिद्धाः, तीर्थकरसिद्धाः अतीर्थकरसिद्धाः स्वयम्बुद्धसिद्धा. प्रत्येकबुद्धसिद्धा. बुद्धबोधिकसिद्धाः स्त्रीलिङ्गसिद्धाः पुरुषलिङ्गसिद्धाः नपुंसकलिङ्गसिद्धाः स्वलिङ्गसिद्धाः अन्यलिङ्गसिद्धाः गृहिलिङ्गसिद्धा' एकसिद्धाः एते अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नका जीवा भवन्ति तेषामभिगम इति। तत्र तीर्थकरशासने प्रवृत्ते सति ये सिद्धाः

मोक्ष को प्राप्त हो चुके है-वे अनन्तर सिद्ध है। और जो परम्परा से मोक्ष को प्राप्त हुए हैं वे परम्परसिद्ध हैं। "से किं तं अणंतरसिद्धा असंसारसमापन्नकजीवाभिगमे" हे भदन्त? अनन्तर सिद्ध असंसार समापन्नकजीवाभिगम कितने प्रकार का है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-"अणंतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे पन्नरसविहे पन्नत्ते" हे गौतम? अनन्तर सिद्ध असंसारसमापन्नक जीवाभिगम पन्द्रह प्रकार का कहा गया है-"तं जहा" जो इस प्रकार से है-"तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा" तीर्थ सिद्ध यावत् अनेक सिद्ध यहां यावत् शब्द से "अतित्थसिद्धा तित्थगरसिद्धा, अतित्थगरसिद्धा, सयंबुद्धसिद्धा, पत्तेयबुद्धसिद्धा, बुद्धबोहियसिद्धा, इत्थिलिंगसिद्धा, पुरिसलिंगसिद्धा नपुंसगलिंगसिद्धा, सलिंगसिद्धा, अन्नलिंग सिद्धा, गिहिलिंगसिद्धा एगसिद्धा" इस पाठ का संग्रह हुआ है। तीर्थंकर के शासन के प्रवृत्त

સિદ્ધ અસંસાર સમાપન્નક જીવાભિગમ-અનન્તર સમયમાં જેમણે મોક્ષની પ્રાપ્તિ કરી લીધી છે એવાં જીવોને અનન્તર સિદ્ધ કહે છે. અને પરમ્પરાથી જેમણે મોક્ષ પ્રાપ્ત કર્યો છે એવા જીવોને પરમ્પર સિદ્ધ કહે છે.

પ્રશ્ન—"से किं तं अणंतरसिद्धा असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे ? હે ભગવન્! અનન્તર સિદ્ધ અસંસારસમાપન્નક જીવાભિગમ કેટલા પ્રકારના છે ?

ઉત્તર—"अणतरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे पन्नरसविहे पन्नत्ते" હે ગૌતમ! અનન્તસિદ્ધ અસંસારસમાપન્નકજીવાભિગમ પંદર પ્રકારનો કહ્યો છે "तंजहा" તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—"तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा' તીર્થસિદ્ધથી લઈને અનેક સિદ્ધ પર્યંતના પંદર પ્રકારો અહીં ગ્રહણ કરવા જોઈએ. અહીં 'यावत् (પર્યન્ત)" પદ વડે નીચેનો સૂત્રપાઠ ગ્રહણ કરવો જોઈએ—"अतित्थसिद्धा २, तित्थगरसिद्धा ३. अतित्थगरसिद्धा ४, सयंबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा ७, इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरिसलिंगसिद्धा ९, नपुंसगलिंगसिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११, अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंगसिद्धा १३, एगसिद्धा १४"

सिद्धिं प्राप्ता भवन्ति ते तीर्थसिद्धाः कथ्यन्ते। अतीर्थसिद्धाः–तीर्थानुत्पन्ना ये सिद्धा जाताः ते अतीर्थसिद्धाः कथ्यन्ते। तीर्थङ्करसिद्धाः तीर्थङ्करपदप्राप्त्यनन्तरं ये सिद्धा भवन्ति ते तीर्थङ्करसिद्धाः कथ्यन्ते इति तृतीयः। अतीर्थकरसिद्धाः तीर्थकरपदमप्राप्यैव ये सिद्धा भवन्ति ते अतीर्थकरसिद्धाः कथ्यन्ते ते च केवलिनः। स्वयम्बुद्धसिद्धाः ये परोपदेशमन्तरेण स्वयमेव ज्ञानमवाप्य सिद्धा भवन्ति ते स्वयम्बुद्धसिद्धाः कथ्यन्ते। यथा तीर्थकर महावीरादय इति पञ्चमः। प्रत्येकबुद्धसिद्धाः–यस्य कस्यापि वस्तुविशेषस्य संयोगं प्राप्य अनित्यादि भावनया सिद्धा भवन्ति ते प्रत्येकबुद्धाः कथ्यन्ते इति षष्ठः। बुद्धबोधितसिद्धाः–ये गुरूपदेशादिना बोधं प्राप्य सिद्धा भवन्ति ते बुद्धबोधिताः सिद्धाः कथ्यन्ते इति सप्तमः। स्त्रीलिङ्गसिद्धाः–द्रव्यरूपेण स्त्रीलिङ्गे वर्तमाना ये जीवाः सिद्धिं प्राप्नुवन्ति ते स्त्रीलिङ्गसिद्धाः कथ्यन्ते यथा मल्लिनाथः इत्यष्टमः पुरुषलिङ्गसिद्धाः द्रव्यरूपेण पुरुषलिङ्गे वर्तमानाः बोधमवाप्य सिद्धा भवन्ति ते पुरुषलिङ्गसिद्धाः कथ्यन्ते इति नवमः।

होने पर जो सिद्धि को प्राप्त हो चुके हैं वे तीर्थसिद्ध हैं तीर्थ में उत्पन्न नहीं होकर जो सिद्ध हुए हैं वे अतीर्थ सिद्ध है। तीर्थकर पद की प्राप्ति के अनन्तर जो सिद्धि पद को प्राप्त हुए हैं तीर्थंकर सिद्ध हैं। जो तीर्थंकर पद को प्राप्त हुए विना ही सिद्ध हुए हैं वे अतीर्थंकर सिद्ध है–जैसे केवली भगवान्। जो दूसरों के उपदेश के विना स्वयं ही ज्ञान को प्राप्त कर सिद्ध होते हैं वे स्वयं बुद्ध सिद्ध है। जैसे–तीर्थंकर महावीर आदि जिस किसी वस्तु विशेष के संयोग को प्राप्तकर जो अनित्यादिकी भावना से सिद्ध होते हैं वे प्रत्येक बुद्ध सिद्ध है। जो गुरु के उपदेश आदि से प्रबुद्ध होकर सिद्ध होते हैं वे बुद्ध बोधित सिद्ध है। जो द्रव्य रूप से स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान जीव सिद्ध होते हैं वे स्त्रीलिङ्ग सिद्ध है। जैसे–मल्लिनाथ। द्रव्यरूप से पुरुषलिङ्ग में वर्तमान जो जीव सिद्ध होते हैं वे पुरुषलिङ्गसिद्ध है। नपुंसकलिङ्ग में वर्तमान जो जीव

---

(૧) તીર્થંકર—તીર્થંકરનું શાસન પ્રવૃત્ત થયા બાદ જેઓ સિદ્ધિ પામ્યા છે, તેમને તીર્થસિદ્ધ કહે છે (૨) અતીર્થસિદ્ધ—તીર્થમાં ઉત્પન્ન થયા વિના જેમણે સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી છે તેમને અતીર્થસિદ્ધ કહે છે (૩) તીર્થંકરસિદ્ધ—તીર્થંકર પદની પ્રાપ્તિ કર્યા બાદ જેઓ સિદ્ધિ પામ્યા છે તેમને તીર્થંકરસિદ્ધ કહે છે (૪) અતીર્થંકર સિદ્ધ—તીર્થંકર પદની પ્રાપ્તિ કર્યા વિના જ સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરનારને અતીર્થંકર સિદ્ધ કહે છે-જેમકે કેવલી ભગવાન્ (૫) સ્વયંબુદ્ધ સિદ્ધ-બીજાના ઉપદેશ વિના, પોતાની જાતે જ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને સિદ્ધિપદ મેળવનારને સ્વયબુદ્ધ સિદ્ધ કહે છે જેમ કે તીર્થંકર મહાવીર આદિ. (૬) પ્રત્યેક બુદ્ધ સિદ્ધ-કોઈ વસ્તુ વિશેષના સંયોગથી-અનિત્ય આદિ ભાવના વડે જેઓ સિદ્ધ થાય છે તેમને પ્રત્યેક બુદ્ધ સિદ્ધ કહે છે. (૭) બુદ્ધ બોધિત સિદ્ધ-જેઓ ગુરુના ઉપદેશ આદિથી સિદ્ધ થાય છે, તેમને બુદ્ધબોધિત સિદ્ધ કહે છે. (૮) સ્ત્રીલિંગસિદ્ધ-દ્રવ્યરૂપે સ્ત્રીલિંગમાં રહેલા જે જીવો સિદ્ધ થાય છે, તેમને સ્ત્રીલિંગસિદ્ધ કહે છે જેમકે મલ્લીનાથ (૯) પુરુષલિંગસિદ્ધ-દ્રવ્ય રૂપે પુરુષલિંગમા ઉત્પન્ન થઈને સિદ્ધિપદ પ્રાપ્ત કરનાર જીવને

नपुंसकलिङ्गसिद्धाः नपुंसकलिङ्गे बोधमवाप्य सिद्धा भवन्ति ते नपुंसकलिङ्गसिद्धाः कथ्यन्ते इति दशमः । स्वलिंगसिद्धाः-स्वस्य-साधोर्यत् सदोरकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिलिंगं तत्र वर्तमाना ये सिद्धा भवन्ति ते स्वलिङ्गसिद्धाः कथ्यन्ते इत्येकादशः । अन्यलिङ्गसिद्धाः-अन्यस्य साध्वतिरिक्तस्य परिव्राजकादेर्लिङ्गे वर्त्तमानाः सिद्धाः ये भवन्ति ते अन्यलिंगसिद्धाः कथ्यन्ते इति द्वादशः । गृहिलिंगसिद्धाः-गृहिणां लिङ्गे वर्तमाना ये सिद्धिमासादयन्ति ते गृहिलिङ्गसिद्धा कथ्यन्ते इति त्रयोदशः । एकसिद्धाः-एकस्मिन् समये एके एव ये सिद्धा भवन्ति ते एकसिद्धाः कथ्यन्ते इति चतुर्दशः । अनेकसिद्धाः--एकस्मिन् समये सहैव अनेके सिद्धाः ये भवन्ति ते अनेकसिद्धाः कथ्यन्ते इति पञ्चदशः । एतद्विषये विशेषविचारो नन्दीसूत्रटीकायां ज्ञानचन्द्रिकायां द्रष्टव्य इति ।

प्रकरणार्थमुपसंहरति-'सेत्तं' इत्यादि, **'सेत्तं अणंतरसिद्धा'** ते एते अनन्तरसिद्धा संसारसमापन्नकाः पञ्चदशभेदभिन्नाः कथिता इति ॥

'से किं तं परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' अथ कोऽसौ परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाभिगमः, परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवाः कियन्तः किं लक्षणाश्चेति प्रश्नः,

---

सिद्ध होते हैं वे नपुंसकलिङ्गसिद्ध है । जो जीव साधु के लिङ्ग में-सदोरकमुखवस्त्रिका, रजोहरण आदि लिङ्ग में-वर्तमान होकर सिद्ध होते हैं वे स्वलिङ्गसिद्ध है । साधुवेष से अतिरिक्त परिव्राजक आदि वेष में वर्तमान होकर जो जीव सिद्ध होते है वे अन्यलिङ्ग सिद्ध है । गृहस्थो के वेष में रहकर जो सिद्ध होते है वे गृहिलिंग सिद्ध है एकसमय में जो एक ही सिद्ध होते है वे एकसिद्ध है और जो एकसमय में साथ २ अनेक सिद्ध होते है वे अनेक सिद्ध है । इस विषय में विशेष विचार मेरी रची हुई नन्दीसूत्र की-ज्ञानचन्द्रिका नाम की टीका में-किया गया है अतः वहां से जानलेना चाहिये **'से तं अणंतरसिद्धा'** इस प्रकार से अनन्तरसिद्ध असंसारसमापन्नक जीव पन्द्रह प्रकार के कहे गये है ।

પુરુષલિંગ સિદ્ધ કહે છે (૧૦) નપુંસકલિંગમા ઉત્પન્ન થઈને જે જીવ સિદ્ધ થાય છે તેને નપુંસકલિંગ સિદ્ધ કહે છે. (૧૧) જે જીવો સાધુ પર્યાયમા રહીને સદોરક મુહપત્તી, રજોહરણ આદિ સાધુના ચિહ્ન ધારણ કરીને-સિદ્ધ પ્રાપ્ત કરે છે, તેમને સ્વલિંગસિદ્ધ કહે છે (૧૨) સાધુ વેષ સિવાયના પરિવ્રાજક આદિ વેષ ધારણ કરીને જે જીવો સિદ્ધિપદ પ્રાપ્ત કરે છે તેમને અન્યલિંગ સિદ્ધ કહે છે (૧૩) **'गिहिलिंगसिद्धा'** ગૃહસ્થ અવસ્થામાં જે સિદ્ધ થાય છે તે ગૃહિ લિંગ સિદ્ધ છે. (૧૪) એકસિદ્ધ-એક સમયમા જે એક જ સિદ્ધ થાય છે, એવાં સિદ્ધોને એક સિદ્ધ કહે છે. (૧૫) અનેક સિદ્ધ -એક સમયમાં એક સાથે જ અનેક જીવો સિદ્ધ થાય છે તેમને અનેક સિદ્ધ કહે છે. આ વિષયનું વિસ્તૃત વિવેચન મેં લખેલી નન્દીસૂત્રની જ્ઞાનચન્દ્રિકા નામની ટીકામાં કરવામા આવ્યું છે, તો ત્યાંથી તે વાચી લેવાની ભળામણ કરવામાં આવે છે **"से त्तं अणंतरसिद्धा"** આ પ્રકારે પંદર પ્રકારના અનંતર સિદ્ધ અસંસાર સમાપન્નક જીવોનું કથન અહીં પૂરું થાય છે.

उत्तरयति--'परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे अणेगविहे पन्नत्ते' परम्परसिद्धासंसार समापन्नकजीवाभिगमोऽनेकविधोऽनेकप्रकारक' प्रज्ञप्तः—कथितः। अनेकविधत्वमेव दर्शयन्नाह 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'पढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा जाव अणेगसमयसिद्धा प्रथमसमयसिद्धा द्वितीयसमयसिद्धा यावदनन्तसमयसिद्धा', यावत्पदेन त्रिचतुःपञ्चमपट्सप्तमाष्टम-नवमदशमसंख्यातासंख्यातसमयसिद्धानां संग्रहो भवति, तथा च प्रथमसमयसिद्धादारभ्य अनन्त समयसिद्धभेदेन परम्परसिद्धासंसारसमापन्नकजीवा अनेकप्रकारका भवन्तीतिभावः। परम्परजीव-मुपसंहरन्नाह–'से तं परम्परसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' सोऽयं परम्परसिद्धासंसार-समापन्नकजीवाभिगम इति। 'सेत्तं असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' सोऽयं संक्षेपविस्ताराभ्याम् असंसारसमापन्नकजीवाभिगम कथित इति भावः॥ सू० ६॥

"से किं तं परंपरसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे" हे भदन्त? परम्परसिद्ध असंसारसमापन्नकजीवाभिगम–परम्परसिद्ध असंसार समापन्नक जीव–कितने हैं और उनका क्या लक्षण है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'परम्परसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे अणेगविहे पण्णत्ते' हे गौतम? परम्परसिद्ध असंसारसमापन्नकजीवाभिगम अनेक प्रकार का कहा गया है "तं जहा" जैसे–'पढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा जाव अणंतसमयसिद्धा' प्रथम समय में सिद्ध दूसरे समय में सिद्ध यावत् अनन्त समय में सिद्ध यहाँ यावत्पद से त्रिसमय सिद्ध चतुः समय सिद्ध पंचम समय सिद्ध षष्ट समय सिद्ध, सप्तम समय सिद्ध अष्टम समय सिद्ध नवम समय सिद्ध दशम समय सिद्ध संख्यात समय सिद्ध असंख्यात समय सिद्ध इन सिद्धों का ग्रहण हुआ है। तथा च प्रथम समय सिद्ध से लेकर अनन्त समय सिद्धों तक के भेद से परम्परसिद्ध असंसार समापन्नक जीव अनेक प्रकार के होते हैं। "से तं परम्पर सिद्धा-ऽसंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' इस प्रकार से यह परम्परसिद्ध असंसार समापन्नक जीवाभि-

---

પ્રશ્ન—"से किं तं परम्परसिद्धा संसारसमावन्नगजीवाभिगमे ?"

હે ભગવન્! પરમ્પર સિદ્ધ સંસાર સમાપન્નક જીવાભિગમ–પરમ્પર સિદ્ધ અસંસારી જીવોના કેટલા પ્રકાર છે? અને તેમનું લક્ષણ કયુ છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર–"परम्परसिद्धासंसारसमावन्नगजीवाभिगमे अणेगविहे पण्णत्ते" હે ગૌતમ! પરમ્પર સિદ્ધ અસંસારસમાપન્નક જીવાભિગમ અનેક પ્રકારનો કહ્યો છે. "तंजहा" તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે–"पढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, जाव अणंतसमयसिद्धा". (૧) પ્રથમ સમયમાં સિદ્ધ (૨) દ્વિતીય સમયમાં સિદ્ધ, ઈત્યાદિ અનંત સમય સિદ્ધ પર્યંતના જીવો. અહીં "यावत् (પર્યંત) પદ વડે" ત્રિસમયસિદ્ધ, ચતુર્થ સમય સિદ્ધ, પંચમ સમય સિદ્ધ, ષષ્ઠ સમય સિદ્ધ, સપ્તમ સમય સિદ્ધ, અષ્ટમ સમય સિદ્ધ, નવમ સમય સિદ્ધ, દશમ સમય સિદ્ધ, સંખ્યાત સમય સિદ્ધ, અને અસંખ્યાત સમય સિદ્ધ" આટલા પ્રકારના સિદ્ધોનો સંગ્રહ થયો છે. આ રીતે પ્રથમ સમય સિદ્ધથી લઈને અનંત સમય સિદ્ધ સુધીના ભેદની અપેક્ષાએ પરમ્પર સિદ્ધ અસંસાર સમાપન્નક જીવો અનેક પ્રકારના હોય છે. "से त परंपरसिद्धाऽसंसारसमावन्नगजीवाभिगमे" આ પ્રકારનું પરમ્પરસિદ્ધ

सम्प्रति— संसारसमापन्नकजीवाभिगमं प्रतिपादयितुं प्रश्नयन्नाह- 'से किं तं संसारसमावन्नग' इत्यादि,

मूलम्—'से किं तं संसारसमावन्नगजीवाभिगमे, संसारसमावन्नएसु णं जीवेसु इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहिज्जंति, तं जहा—एगे एवमाहंसु दुविहा संसारसमावन्नगजीवा पन्नत्ता, एगे एवमाहंसु तिविहा संसारसमावन्नगजीवा पन्नत्ता, एगे एवमाहंसु चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, एगे एवमाहंसु पंचविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता' ॥ सू० ७ ॥

छाया—अथ कोऽसौ संसारसमापन्नकजीवाभिगमः, संसारसमापन्नकेषु खलु जीवेषु इमा नव प्रतिपत्तयः, एवमाख्यायन्ते, तद्यथा-एके एवमाहुः, द्विविधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः, एके एवमाहु, त्रिविधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः, एके एवमाहंसु-चतुर्विधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः, एके एवमाहुः, पञ्चविधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ता एतेनाभिलापेन यावद्दशविधाः संसारसमापन्नका जीवा प्रज्ञप्ता ॥ सू० ७ ॥

टीका—'से किं तं संसारसमावन्नगजीवाभिगमे' अथ कोऽसौ संसारसमापन्नक-जीवाभिगम इति प्रश्नः, उत्तरयति-'संसारसमावन्नएसु' इत्यादि, 'संसारसमावन्नए णं जीवेसु

गम है। 'सेत्तं असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे' यहा तक संक्षेप और विस्तार से असंसार समापन्नक जीवाभिगम कहा है॥ सू० ६ ॥

अब संसारसमापन्नक जीवाभिगम को प्रतिपादन करने के लिये कहते है—

'से किं तं संसारसमावन्नगजीवाभिगमे'—इत्यादि ॥ सू० ७ ॥

टीकार्थ—हे भदन्त ! 'से किं तं संसारसमावन्नगजीवाभिगमे' वह संसारसमापन्नक जीवाभिगम क्या है ? उत्तरमें प्रभु कहते है "संसारसमावन्नएसु णं जीवेसु इमाओ णव पडिव-

---

અસંસાર સમાપન્નક જીવાભિગનુ સ્વરૂપ છે. "से त्त असंसारसमावन्नगजीवाभिगमे" અહીં સુધીમાં અસંસારસમાપન્નકજીવાભિગમનું સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે ॥સૂ૦ ૬॥

હવે સૂત્રકાર સંસારસમાપન્નક જીવાભિગમના સ્વરૂપનું પ્રતિપાદન કરે છે—

से किं तं संसारसमावन्नगजीवाभिगमे" ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે-"से किं तं संसारसमावन्नगजीवाभिगमे ?" હે ભગવન્ ! સંસારસમાપન્નક જીવાભિગમનું સ્વરૂપ કેવું છે ?

इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहिज्जंति' संसारसमापन्नकेषु खलु जीवेषु इमा नव प्रतिपत्तयः-वक्ष्यमाणनवसङ्ख्याकप्रतिपत्तयः– द्विप्रत्यवतारमादौ कृत्वा ततो दशप्रत्यवतारं यावत् ये नव प्रत्यवताराः तद्रूपा इत्यर्थ', एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण आख्यायन्ते पूर्वाचार्य्यैरिति । अत्र नव प्रतिपत्तीति कथनेन प्रणालिकया अर्थाख्यानं द्रष्टव्यम्, प्रतिपत्तौ सत्यामेव शब्दार्थे प्रवृत्तिकरणादिति । प्रणालिकया अर्थाभिधानमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'**एगे एवमाहंसु दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**' एके आचार्याः एवमाख्यातवन्त', यत् द्विविधाः–द्विप्रकारकाः ससारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताःकथिता इति, ससारसमापन्नकजीवा द्विप्रकारका भवन्तीति कस्याप्याचार्यस्य मतम्, '**एगे एव माहंसु–तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**' एके आचार्याः एव माख्यातवन्तो यत् त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति । '**एगे एवमाहंसु चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**' एके आचार्या एवमाख्यातवन्तो यत् चतुर्विधाः–चतुःप्रकारकाः संसारसमापन्नकाः जीवाः प्रज्ञप्ता·

त्तीओ एव माहिज्जंति" हे गौतम ? ससारसमापन्नक जीवों में ये नौ प्रतिपत्तियां मान्यताएँ–द्विप्रत्यवतारको आदि में करके दश प्रत्यवतार तक पूर्वाचार्यों ने कही है जो इस प्रकार से हैं–'**एगे एवमाहंसु–दुविहा संसारसमावन्नगजीवा पन्नत्ता**' कोई–कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि संसारसमापन्नक जीव दो प्रकार के होते है—'**एगे एवमाहंसु तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**' कोई २ आचार्य ऐसा कहते हैं कि ससारसमापन्नक जीव तीन प्रकार के होते है। '**एगे एवमाहंसु चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**' कोई २ आचार्य ऐसा कहते है कि संसारसमापन्नक जीव–संसारीजीव चार प्रकार के होते है । '**एगे एवमाहंसु–पंचविहा संसारसमावन्नगाजीवा पण्णत्ता**' कोई २ आचार्य ऐसा

મહાવીર પ્રભુને ઉત્તર–' **संसारसमावन्नएसु णं जीवेसु इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहिज्जंति**" હે ગૌતમ ! સંસાર સમાપન્નક જીવોના પ્રકાર વિષે નવ માન્યતાઓ-(તેમના બે પ્રકારથી લઈને દસ પર્યંતના પ્રકાર હોવાની માન્યતાઓ પૂર્વાચાર્યોએ પ્રકટ કરી છે.) છે જે નવ માન્યતાઓ નીચે પ્રમાણે છે "**एगे एवामाहंसु दुविहे संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**" કોઈ કોઈ આચાર્ય એવું કહે છે કે સંસાર સમાપન્નક જીવો બે પ્રકારના હોય છે. "**एगे एवमाहंसु तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**" કોઈ કોઈ આચાર્ય એવું કહે છે કે સંસાર સમાપન્નક જીવો ત્રણ પ્રકારના હોય છે. "**एगे एवामाहंसु चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता**" કોઈ કોઈ આચાર્ય એવું કહે છે કે સંસાર સમાપન્નક જીવો ચાર પ્રકારના હોય છે. "**एगे एवमाहंसु पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता**" કોઈ કોઈ આચાર્ય એવુ કહે છે કે—સંસાર સમાપન્નક જીવો પાંચ પ્રકાર

कथिता इति, **'एगे एवमाहंसु पंचविहासंसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता'** एके आचार्याः एव माख्यातवन्तो यत् पञ्चविधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति, **'एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता'** एतेन अभिलापेन-प्रकारेण यावद् दशविधाः-दशप्रकारकाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, अत्र यावत्पदेन षड्विधाः प्रज्ञप्ताः, सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः, अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः, नवविधाः प्रज्ञप्ताः, एतेषामभिलापानां सङ्ग्रहो भवतीति। अत्र एके आचार्या इति न दर्शनान्तरीयाः पृथग्मतावलम्बिन इव केचिद ये आचार्याः किन्तु ये एव पूर्वं द्विप्रत्यवतारविवक्षायां वर्तमाना एवमुक्तवन्तो यथा द्विविधाः संसारसमापन्नका इति ते एव त्रिप्रत्यवतारविवक्षायामपि वर्तमाना नान्ये द्विप्रत्यवतारविवक्षापेक्षया त्रिप्रत्यवतारविवक्षायाः भिन्नत्वात् विविक्षावतां तु कथञ्चिद्भेदादन्यत्वं ज्ञातव्यम्। अतः प्रतिपत्तय इति परमार्थतोऽनुयोगद्वाराणि इति

कहते है कि संसारसमापन्नक जीव पांच प्रकारके होते है। **"एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा संसारसमावन्नगाजीवा पन्नत्ता'** इस अभिलापसे इस प्रकारसे दस प्रकार तक ससारसमापन्नक जीव कहे गये है। यहां यावत् शब्द से **'षड्विधाः प्रज्ञप्ताः सप्तविधाः प्रज्ञप्ता अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः, नवविधाः प्रज्ञप्ताः'** इन प्रकारों का संग्रह हुआ है। यहां **'एगे'** जो ऐसा कहा है सो उससे भिन्न मतावलम्बी आचार्यों का ग्रहण नहीं हुआ है किन्तु जैनमतावलम्बी ही आचार्यों का ग्रहण हुआ है। किन्तु इनकी मान्यताएँ पृथग् २ है इसलिये इन्हें पृथग् मतावलम्बी जैसा कहा गया जानना चाहिये। अतएव जो आचार्य-द्विप्रत्यवतार की विवक्षा में वर्तमान है और ऐसा कहते हैं कि संसारसमापन्नकजीव दो प्रकार के है उनसे भिन्न वे आचार्य है, जो संसारसमापन्नक जीव तीन प्रकार के है ऐसा कहते हैं। विवक्षा की भिन्नता से-द्विप्रत्यवतारविवक्षा की भिन्नता से त्रिप्रत्यवतारविवक्षा में भिन्नता आजाती है। इसलिये विवक्षावालों में भी कथंचित् भिन्नता आ जाती है 'प्रतिपत्ति यह परमार्थ से अनुयोगद्वार रूप

ના હોય છે **"एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता"** આ પ્રકારે સંસાર સમાપન્નક જીવોના દસ પર્યન્તના પ્રકારો સમજી લેવા. અહીં **'जाव'**-પર્યંત પદવડે **"षड्विधाः, प्रज्ञप्ताः, सप्तविधा, प्रज्ञप्ताः, अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः, नवविधाः प्रज्ञप्ताः"** આ સૂત્રપાઠ ગ્રહણ થયો છે એટલે કે કોઈ કોઈ આચાર્યે સંસાર સમાપન્નક જીવોના છ પ્રકાર કહ્યા છે, કોઈએ સાત કોઇએ આઠ, કોઈએ નવ અને કોઈએ દસ પ્રકાર કહ્યા છે. અહીં **"एगे"** આ પદ દ્વારા જૈનમતને માનનારા આચાર્યોનો મત જ પ્રકટ થયો છે, અન્ય મતવાદી આચાર્યોની આ માન્યતા નથી, એમ સમજવું. પરન્તુ જૈનમતાવલંબી આચાર્યોની માન્યતાઓ પણ જુદી જુદી છે, તેથી તેમને અહીં જુદા જુદા મતાવલંબી જેવાં કહ્યા છે તેથી જે આચાર્યો દ્વિપ્રત્યવતારમાં (જીવોના બે પ્રકારોમાં) માને છે તેઓ એવું કહે છે કે સંસારસમાપન્નક જીવો બે પ્રકારના છે. બીજા કોઈ કોઈ આચાર્યો એવી ભિન્ન માન્યતા ધરાવે છે કે સંસારસમાપન્નક જીવો ત્રણ પ્રકારના છે વિવક્ષાની ભિન્નતાને લીધે (માન્યતામાં ભેદ હોવાને કારણે)-દ્વિપ્રત્યવતાર (દ્વિવિધતા)ની વિવિક્ષા કરતાં ત્રિપ્રત્યવતારમાં ભિન્નતા હોવાને લીધે-વિવિક્ષાવાળાઓમાં (આ પ્રકારની માન્યતા ધરાવનારાઓમાં) પણ થોડી ભિન્નતા

ज्ञातव्यम् । अत्र ये एव द्विविधास्ते एव त्रिविधास्ते एव चतुर्विधा इति तेषां जीवानामनेकत्वभावतया तत् तत् धर्मभेदेन तथा तथाऽभिधानता संभवति नान्यथा, एकान्ततः तेषां जीवानामेव स्वभावत्वे वैचित्र्याभावात् द्वित्राद्यभिधानप्रवृत्तिरेव न स्यात् इति ॥ सू० ७ ॥

सम्प्रति- एता एव प्रतिपत्तीः क्रमेण कथयितुं प्रथमतः प्रथमां प्रतिपत्ति विभावयिषुरिदमाह- 'तत्थ णं' इत्यादि,

मूलम्—'तत्थ णं जे एव माहंसु-दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता ते एवमाहंसु तंजहा—तसाचेव थावरा चेव । से किं तं थावरा ? थावरा तिविहा पन्नत्ता तं जहा—पुढवीकाइया य १ आउक्काइया य २ वणस्सइक्काइया य ३ से किं तं पुढवीकाइया, पुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य । से किं तं सुहुमपुढवी काइया ? सुहुमपुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥ सू०८ ॥

छाया—तत्र खलु ये एवमाहु—द्विविधाः संसारसमापन्नकाः जीवाः प्रज्ञप्तास्ते एवमाहुः स्तद्यथा-त्रसा एव स्थावरा एव । अथ के ते स्थावराः, स्थावरास्त्रिविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा—पृथिवीकायिकाश्च १, अप्कायिकाश्च २, वनस्पतिकायिकाश्च ३। अथ के ते पृथिवीकायिकाः ? पृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा सूक्ष्म-

ही हैं जिन्हें एक आचार्य दो भेद रूप से कहता है उन्हें ही दूसरा कोई आचार्य तीन भेद रूप से कहता है—सो इसका कारण यह है कि जीवों के अनेक स्वभाव है- अतः उन उन स्वभावों के भेद को लेकर इस प्रकार की मान्यताएँ उनमें सभवित होती है । यदि एकान्त रूप से जीवो को एक स्वभाव वाला ही माना जावे तो इस मान्यता में भिन्नता आ ही नहीं सकती है—अतः द्विप्रकारता त्रिप्रकारता आदि के कथन में प्रवृत्ति हो नहीं वनती है ॥ सू० ७ ॥

આવી જાય છે. "प्रतिपत्ति" આ માન્યતા પરમાર્થની અપેક્ષાએ અનુયોગદ્વાર રૂપ જ છે, જેમને એક આચાર્ય બે ભેદ રૂપે પ્રકટ કરે છે અને બીજા કોઈ આચાર્ય તેમને જ ત્રણ ભેદ રૂપે પ્રકટ કરે છે આ પ્રકારે માન્યતામાં ભેદ પડવાનુ કારણ એ છે કે જીવોના અનેક સ્વભાવ (લક્ષણ) હોય છે, તેથી આ પ્રકારના સ્વભાવભેદોને લીધે આ પ્રકારની જુદી જુદી માન્યતાઓ સંભવી શકે છે. જો એકાન્તતઃ જીવોને એક સ્વભાવવાળા માનવામાં આવે, તો આ માન્યતામાં ભિન્નતા સંભવી શકે જ નહીં, અને દ્વિવિધતા, ત્રિવિધિતા આદિનું કથન જ થઈ શકે નહીં ।। સૂ૦ ૭ ।।

पृथिवीकायिकाश्च, बादरपृथ्वीकायिकाश्च, अथ के ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः सूक्ष्मपृथ्वीकायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च ॥ सू० ८ ॥

टीका—'तत्थ णं' तत्र खलु-तत्र-तेषु नवसु प्रतिपत्तिषु मध्ये 'जे एवमाहंसु-दुविहा संसारसमापन्नगा जीवा पन्नत्ता' ये द्विप्रत्यवतारविवक्षायां विद्यमानाः एवमाख्यातवन्तः द्विविधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ता इति, 'ते एवमाहंसु' ते एवम्-वक्ष्यमाणप्रकारेण द्विविधत्व भावनार्थम् आख्यातवन्तः, किमाख्यातवन्तस्तत्राह-'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा-'तसा-चेव थावरा चेव' त्रसाश्चैव स्थावराश्चैव तत्र त्रसन्ति-निदाघादि संतप्ताः स्वस्थानात् स्थानान्तरं छायादि सेवनार्थं गच्छन्तीति त्रसा सचरिष्णवो जीवाः, अनया व्युत्पत्त्या त्रसाः त्रसनामकर्मोदय-वर्त्तिनो जीवाः परिगृहीताः भवन्ति। अथवा त्रसन्ति-ऊर्ध्वमधस्तिर्यग् चलन्तीति त्रसाः-तेजो

अब सूत्रकार उन्हीं आचार्यों की जीव सम्बन्धी दो आदि मान्यताओं में से प्रथम जो द्विप्रत्यवतार सम्बन्धी प्रतिपत्ति है उसे प्रकट करने के लिये सूत्र कहते है—

"तत्थ णं जे एवमाहंसु दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता-इत्यादि ॥ सू० ८ ॥

टीकार्थ—'तत्थ णं' उन नौ प्रतिपत्तियो के बीच में 'जे एवमाहंसु' जो आचार्य ऐसा कहते है कि संसारसमापन्नकजीव दो प्रकार के हैं-'ते एवमाहंसु' वे इस दृष्टि को सामने रख कर वहाँ द्विविधता का कथन करते है-'तसाचेव थावराचेव' वह दृष्टि है त्रसजीव और स्थावरजीव सम्बन्धी अर्थात् त्रसजीव और स्थावरजीव के भेद से संसारसमापन्नकजीव दो प्रकार के है-जो अपनी इच्छा से चलते फिरते हैं। गर्मी आदि से सन्तप्त होकर एक स्थान से छाया आदि के सेवन करने के लिये दूसरे स्थान पर जाते हैं वे त्रसजीव हैं। इस प्रकार त्रसनामकर्म के उदयवाले जीव त्रसजीव कहे गये है। अथवा ऊँचे नीचे और तिरछे जो चलते है वे त्रसजीव है। इस प्रकार के कथन से तेज वायु और द्वीन्द्रियादिकजीव सब त्रसजीव

તે આચાર્યોની જીવના પ્રકારોને વિષે-બેથી લઈને દસ સુધીના પ્રકારો હોવા વિષે-જે માન્યતાઓ છે તેમાંથી જે દ્વિપ્રત્યવતાર સંબંધી પ્રતિપત્તિ છે (બે પ્રકાર હોવાની માન્યતા છે) તેનું સૂત્રકાર હવે પ્રતિપાદન કરે છે—

"तत्थ णं जे एवमाहंसु दुविहा संसारसमापन्नगा जीवा पण्णत्ता"-સૂ૦ ૮

ટીકાર્થ—'तत्थ णं' તે નવ પ્રતિપત્તિઓ (માન્યતાઓ) માંની, "जे एवमाहंसु" કેટલાક આચાર્યોની એવી જે માન્યતા છે કે સંસારસમાપન્નક જીવોના બે પ્રકાર છે, "ते एवमाहंसु" તેઓ આ પ્રકારની માન્યતાને લીધે જીવોના બે પ્રકારો કહે છે—"तसा चेव थावरा चेव" તેમની દૃષ્ટિએ સંસારસમાપન્નક જીવોના આ બે ભેદ પડે છે-(૧) ત્રસ અને (૨) સ્થાવર. જે જીવો પોતાની ઈચ્છાનુસાર હલનચલન કરી શકે છે-ગરમી આદિથી ત્રાસીને છાયા આદિનું સેવન કરવા માટે બીજે સ્થળે જઈ શકે છે, તેમને ત્રસ જીવો કહે છે. આ રીતે ત્રસ નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને ત્રસજીવો કહેવાય છે. અથવા-જે જીવો ઊંચે, નીચે અને

वायवो द्वीन्द्रियाश्चेति । स्थावरास्तु उष्णाद्यभितापेन अभितप्ता अपि स्वकीयं स्थानं परित्यज्य अन्यत्र गन्तुमसमर्थाः सन्तः स्वस्थाने एव तिष्ठन्तीत्येवं शीलाः ये ते पृथिव्यप्वनस्पतयः इति। **'तसा चेव थावरा चेव'** इत्यत्र उभयत्रापि च शब्दौ स्वगतानेकभेदसमुच्चयार्थौ, उभयत्रापि एवकारौ अवधारणार्थकौ, अतएव इमे संसारसमापन्नका जीवाः, एतदव्यतिरेकेण संसारिणोऽभावादिति । त्रसजीवापेक्षया स्थावरेषु अल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतः स्थावरजीवान् प्रतिपादयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि, **'से किं तं थावरा'** अथ के ते स्थावरजीवाः कियन्तश्चेति प्रश्नः, उत्तरयति–**'थावरा तिविहा पन्नत्ता'** स्थावरा जीवा त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः । त्रैविध्यमेव दर्शयति–तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–**'पुढवीकाइया आउक्काइया वणस्सइ-**

है । स्थावरजीव वे हैं जो उष्णता आदि से सन्तप्त होने पर भी अपने स्थान को छोड़कर अन्यत्र जाने में सर्वथा असमर्थ बने हुए हैं–और अपने ही स्थान पर ठहरे हुए हैं ऐसे जीव एकेन्द्रिय पृथिवीकायिक, अपकायिक वनस्पतिकायिकजीव है । **'तसा चेव थावरा चेव'** इस प्रकार से जो यहां दो चकारो का प्रयोग किया गया है वह अपने २ भेदो को समुच्चय करने के लिये किया गया है। तथा जो दोनों के साथ एवकार का प्रयोग किया गया है वह अवधारण के लिये किया गया है। अतः इनके सिवाय और भेद संसारी जीवों के नहीं है। ऐसा इन्हीं भेदों में समस्त ससारीजीव समाविष्ट हो जाते हैं । त्रसजीवो की अपेक्षा स्थावर जीवों में वक्तव्यता अल्प होने से पहिले अब स्थावर जीवो का प्रतिपादन करने के निमित्त सूत्रकार **'से किं तं थावरा'** ऐसा सूत्र कहते है–इससे ऐसा पूछा गया है कि स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं–उत्तर में कहा गया है **'थावरा तिविहा'** स्थावर जीव

તિરછાં ચાલે, તેમને ત્રસ કહે છે. આ કથનને આધારે તેજ, વાયુ અને દ્વીન્દ્રિયાદિક બધા જીવોને ત્રસજીવો કહે છે. ગરમી આદિથી દુ ખી થવા છતા પણ જે જીવો પોતાનું સ્થાન છોડીને બીજે સ્થાને જઈ શકવાને અસમર્થ છે, અને તે કારણે પોતાને સ્થાને જ પડયાં રહે છે એવાં જીવોને સ્થાવર જીવો કહે છે એકેન્દ્રિય પૃથ્વીકાયિક, અપ્કાયિક અને વનસ્પિતકાયિક જીવોને આ પ્રકારના સ્થાવર જીવો કહે છે **"तसा चेव थावरा चेव"** આ પ્રકારે અહીં જે બે 'च" કારનો પ્રયોગ કરવામા આવ્યો છે, તે પોતપોતાના ભેદોનો સમુચ્ચય કરવાને માટે કરવામાં આવ્યો છે. તથા બન્ને પદોની સાથે જે "एव" પદનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે, તે અવધારણને માટે કરાયો છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે, કે સંસારી જીવોના આ બે પ્રકાર સિવાય કોઈ પ્રકાર નથી સમસ્ત સંસારી જીવોનો આ બે પ્રકારમાં સમાવેશ થઇ જાય છે ત્રસ જીવો કરતાં સ્થાવર જીવોની વક્તવ્યતા ટૂંકી હોવાને કારણે સૂત્રકાર પહેલાં સ્થાવર જીવોનુ પ્રતિપાદન કરે છે પ્રશ્ન—**"से किं त थावरा ?"** હે ભગવન્! સ્થાવર જીવોનું સ્વરૂપ કેવું છે—તેમના કેટલા પ્રકાર છે ?

ઉત્તર—**"थावरा तिविहा-तंजहा"** સ્થાવર જીવોના નીચે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પડે છે-

काइया' पृथिवीकायिकाः अप्कायिकाः वनस्पतिकायिकाः । तत्र पृथिवीकायः–शरीरं येषां ते पृथिवीकायाः ते एव पृथिवीकायिकाः, आपो जलानि ता एव कायः–शरीर येषां ते अप्कायास्ते एवाप्कायिकाः, वनस्पतिर्लतादि स एव कायः–शरीरं येषां ते वनस्पतिकायास्ते एव वनस्पतिकायिका इति । सर्वत्र–पृथिवीकायादिषु बहुवचनं तत् तेषां जीवानां बहुत्वज्ञापनाय, अत्र सर्वभूतानामाधारः पृथिवीति प्रथमतः पृथिवीकायिकानां ग्रहणम् । तदनन्तरं पृथिवीप्रतिष्ठिताप्कायिकानां कथनं कृतम् । तदनन्तरम् 'जत्थ जलं तत्थ वणं' इति सैद्धान्तिकवस्तु प्रतिपादनार्थं वनस्पतिकायिकानामिति कथनं कृतम् ।

अत्र त्रिविधत्वं स्थावराणा तेजो वायूना लब्ध्वा स्थावराणामपि सतां गतित्रसेष्वन्तर्भावविवक्षणात्, तथा चान्यत्रापि कथितम्, "पृथिव्यम्बुवनस्पतयः, स्थावराः" तेजो वायुद्वी

तीन प्रकार के होते है–तं जहा' जैसे 'पुढवीकाइया आउक्काइया वणस्सइकाइया' पृथिवी कायिक अप्कायिक और वनस्पतिकायिक जिनजीवो का पृथिवी ही शरीर होता है वे पृथिवीकायिक है, जिन जीवोंका जल ही शरीर होता है वे अप्कायिक है। वनस्पति लता आदि रूप ही जिन जीवो का शरीर होता है वे वनस्पतिकायिकजीव है । इन प्रत्येक पदो में जो वहुवचन का निर्देश हुआ है वह उनमें प्रत्येक में वहुता के प्रकट करने के लिये हुआ है, समस्त भूतो का आधार पृथिवी है इसी बात को लेकर सबसे पहिले पृथिवीकायिको का ग्रहण किया गया है। इसके वाद पृथिवी प्रतिष्ठित अप्कायिकोका और फिर 'जत्थ जलं तत्थ वणं' जहां जल होता है वहाँ वन होता है इस सैद्धान्तिक वस्तु के प्रतिपादन के निमित्त वनस्पतिकायिकों का कथन किया गया है ।

यहा स्थावरो में जो त्रिविधता का कथन किया गया है वह तेजस्कायिक और वायुकायिकजीवों को गति की अपेक्षा त्रस मानकर किया गया है। अर्थात् तेजस्कायिक और

"पुढवीकाइया, आउक्काइया, वणस्सइकाइया" (१) પૃથ્વીકાયિક, (૨) અપ્કાયિક અને (૩) વનસ્પતિકાયિક. પૃથ્વી જ જેમનુ શરીર છે. એવાં જીવોને પૃથ્વીકાયિક કહે છે. જળ જ જેનુ શરીર છે, એવા જીવોને અપ્કાયિક કહે છે વનસ્પતિરૂપ જ જેમનુ શરીર હોય છે, એવાં જીવોને વનસ્પતિકાયિક કહે છે. આ પ્રત્યેક પદમાં બહુવચનનું રૂપ આપવાનુ કારણ એ છે કે આ પ્રત્યેક પ્રકારના જીવોની સંખ્યા ઘણી જ વધારે છે. સમસ્ત ભૂતોનો (જીવોનો) આધાર પૃથ્વી છે, તેથી જ સૌથી પહેલાં પૃથ્વીકાયિકોની વાત કરી છે, ત્યારબાદ પૃથ્વીપ્રતિષ્ઠિત અપ્કાયિકોની વાત કરી છે. "जत्थ जलं तत्थ वणं" જ્યા જળ હોય છે ત્યા વન હોય છે, આ સૈદ્ધાંતિક વસ્તુના પ્રતિપાદનને માટે અપ્કાયિકનુ કથન કર્યા બાદ વનસ્પતિકાયિકનું કથન કરવામાં આવ્યું છે અહીં સ્થાવરોમા જે ત્રિવિધ પણાનું કથન કરવામા આવ્યું છે તે તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક જીવોને ગતિની અપેક્ષાએ ત્રસ માનવામાં આવ્યા છે, તેથી જ અહીં ત્રસ જીવોના ત્રણ જ પ્રકાર બતાવવામાં આવ્યા છે આ કથનનો ભાવાર્થ એ

न्द्रियादयश्च त्रसाः इति।'

तत्र यथोद्दिष्टं निर्देश इति नियमात् त्रिपु पृथिवीकायिकादिपु प्रथमतः पृथिवीकायिकप्रतिपादनायाह–'से किं तं पुढवीकाइया' इत्यादि, 'से किं पुढवीकाइया' अथ के ते पृथिवीकायिका इति प्रश्नः, उत्तरयति–'पुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता' पृथिवीकायिका द्विविधा द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, द्वैविध्यमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य' सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च। तत्र सूक्ष्मनामकर्मोदयात् सूक्ष्मा इति कथ्यन्ते, तथा–बादरनामकर्मोदयात् बादरा इति कथ्यन्ते, सूक्ष्मत्वं बादरत्व च कर्मोदयजनितम्, न तु बदरामलकवत् आपेक्षिकं सूक्ष्मत्व-

---

वायुकायिक ये यद्यपि लब्धिकी अपेक्षा स्थावर हैं फिर भी इन्हे गतिकी–अपेक्षा त्रस माना गया है और उनमें ही उनके अन्तर्भाव होनेकी विवक्षा हुई है अन्यत्र भी ऐसा ही कहा गया है

'पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः तेजोवायुद्वीन्द्रियादयादयश्च त्रसाः'

जैसा उद्देश होता है वैसा ही निर्देश होता है इस नियम के अनुसार अब सूत्रकार सब से पहले तीन पृथिवी आदि को में से पृथिवीकायिक का प्रतिपादन करते हैं–'से किं तं पुढवी काइया' इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है कि–हे भदन्त? पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के होते है? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'पुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम? पृथिवीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं–'तंजहा' जो इस प्रकारसे है 'सुहुमपुढवीकाइया य बायर पुढवीकाइया य' सूक्ष्म पृथिवीकायिक और बादर पृथिवीकायिक सूक्ष्मनामकर्म के उदय से जीव-सूक्ष्म और बादर नामकर्म के उदय से जीव बादर कहलाता है। जीवों में सूक्ष्मता और बादरता

છે કે તેજસ્કાયિકો અને વનસ્પતિકાયિકો જો કે લબ્ધિની અપેક્ષાએ સ્થાવર છે, છતા પણ તેમને ગતિની અપેક્ષાએ ત્રસ માનવામાં આવ્યા છે. તેથી તેમનો સમાવેશ ત્રસજીવોમા કરવામાં આવ્યો છે અન્યત્ર પણ એવુ જ કહ્યું છે કે—

"पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः, तेजोवायुद्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः"

જેવો ઉદ્દેશ હોય છે એવો જ નિર્દેશ હોય છે, આ નિયમ અનુસાર હવે સૂત્રકાર સૌથી પહેલાં પૃથ્વીકાયિક આદિ ત્રણ પ્રકારના સ્થાવરોમાથી પૃથ્વીકાયિકોનું પ્રતિપાદન કરે છે—

પ્રશ્ન—"से किं तं पुढवीकाइया ?" હે ભગવન્! પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના છે? તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે–"पुढवीकाइया दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! પૃથ્વીકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહ્યા છે. 'त जहा" જે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે- "सुहुमपुढवीकाइया य बायरपुढवीकाइया य" (૧) સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક અને (૨) બાદર પૃથ્વીકાયિક. સૂક્ષ્મ નામકર્મના ઉદયથી જીવ સૂક્ષ્મ કહેવાય છે અને બાદર નામકર્મના ઉદયથી જીવ બાદર કહેવાય છે જીવોમાં સૂક્ષ્મતા અને બાદરતા કર્મોદયજનિત હોય છે.

बादरत्वम् सूक्ष्माश्च ते पृथिवीकायिकाश्चते इति सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः, बादराश्च ते पृथिवी कायिकाश्च इति बादरपृथिवीकायिका., उभयात्रापि च शब्दौ स्वगतानेकभेदसूचनाय निर्दिष्टौ, तत्र सूक्ष्माः सकललोकवर्त्तिनो भवन्ति बादरास्तु लोकैकदेशवर्त्तिनो भवन्तीति भावः। तत्र सूक्ष्म-पृथिवीकायिकान् दर्शयितुमाह-**'से किं तं'** इत्यादि **'से किं तं सुहुमपुढवीकाइया'** अथ के ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः इति प्रश्नः, उत्तरयति-**'सुहुमपुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता'** सूक्ष्म पृथिवीकायिका द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, द्वैविध्यमेव दर्शयति —**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा-**'पज्जत्तगा य अपज्जगा य'** पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च, तत्र पर्याप्तिता धर्मवि-शिष्टा पर्याप्ताः पर्याप्तिर्नाम आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुर्जीवस्य शक्तिविशेषः। स च शक्ति-

---

कर्मोदयजनित है। बदर-बेर और आंवले की सूक्ष्मता बादरता के जैसी वह आपेक्षिक नहीं है। तथा च सूक्ष्मनामकर्म के उदय वाले जो पृथिवीकायिक है वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक हैं और बादर नामकर्म के उदय वाले जो पृथिवीकायिक हैं वे बादर पृथिवीकायिक हैं। यहां जो दो चकारों का प्रयोग हुआ है वह स्वस्वगत अनेक भेदो को सूचित करने के लिये हुआ हैं। इनमें जो सूक्ष्मजीव है—वे तो सकललोकव्यापी होते हैं। और जो बादरजीव हैं वे लोक के एकदेशवर्ती होते है। **'से किं तं सुहुमपुढवी काइया'** सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के होते है? उत्तर में प्रभु कहते हैं **"सुहुमपुढवी काइया दुविहा पन्नत्ता"** सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव दो प्रकार के होते हैं-**"तंजहा"** वे इनके दो प्रकार ये है-**"पज्जत्तगा य अपज्जतगा य"** एक पर्यातकसूक्ष्म पृथिवी कायिक और दूसरे अपर्यातक सूक्ष्म पृथिवीकायिक, जो पर्याप्तिता धर्मविशिष्ट है-वे पर्याप्त है अहारादिपुद्गलो को ग्रहण करने की एवं उससे खल रस भोग रूपसे परिणमाने की जो जीव की शक्ति विशेष

બોર અને આમળાની સૂક્ષ્મતા બાદરતાની જેમ આપેક્ષિક નથી. આ પ્રકારે સૂક્ષ્મ નામકર્મના ઉદયવાળા જે પૃથ્વીકાયિકો છે, તેમને સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો કહે છે, અને બાદર નામકર્મના ઉદયવાળા જે પૃથ્વીકાયિકો છે, તેમને બાદર પૃથ્વીકાયિકો કહે છે. અહીં જે બે ચકારનો પ્રયોગ થયો છે તે પ્રત્યેકના અનેક ભેદો દર્શાવવાને માટે થયો છે જે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો છે, તેઓ તો સકળ લોકવ્યાપી હોય છે. જે બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો છે, તેઓ લોકના એકદેશવર્તી હોય છે,

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-**"से किं तं सुहुमपुढवीकाइया ?"** હે ભગવન્! સૂક્ષ્મ પૃથ્વી-કાયિકોના કેટલા પ્રકાર છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર--**"सुहुमपुढवीकाइया दुविहा पण्णत्ता-तंजहा"** હે ગૌતમ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોના નીચે પ્રમાણે બે પ્રકાર કહ્યા છે-**"पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य"** (૧) પર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક અને (૨) અપર્યાપ્તક સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક

આહારાદિ પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાની અને તેનુ ખલ રસ ભોગ રૂપે પરિણમન કરવાની

विशेष: पुद्गलानामुपचयाज्जायते, अयं भावः—उत्पत्तिदेशमागतेन जीवेन प्रथमतो ये पुद्गला गृहीता स्तेषां गृहीतपुद्गलानां तथा अन्येषामपि पुद्गलानां प्रतिसमयं गृह्यमाणानां जीवसंपर्कात्तद्रूपता जातानां यः शक्तिविशेष आहारादिपुद्गलखलरसरूपतापादनकारणं यथोदरान्तर्गतानां पुद्गलविशेषाणामाहारपुद्गलविशेषाणामाहारपुद्गलखलरसरूपतापरिणमनहेतुः सा पर्याप्ति. षट्प्रकारा भवति तद्यथा—आहारपर्याप्तिः १, शरीरपर्याप्तिः २, इन्द्रियपर्याप्तिः ३, प्राणापानपर्याप्तिः ४, भाषापर्याप्तिः ५, मनःपर्याप्तिः ६, तत्र यया शक्त्या बाह्यमाहारमादाय खलरसरूपतया परिणमयति साऽऽहारपर्याप्तिः प्रथमा १, यया शक्त्या रसीभूतमाहारं रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रलक्षणसप्तधातुस्वरूपतया परिणमयति सा शरीरपर्याप्तिर्द्वितीया २, यया धातुरूपतया परिणमितमाहारमिन्द्रियतया परिणमयति सा इन्द्रियपर्याप्तिस्तृतीया ३। यया पुनरुच्छ्वासप्रायोग्य-

---

है उसका नाम पर्याप्ति है। जीव के यह शक्ति विशेष पुद्गलों के उपचय से होता है। भाव यह है– कि उत्पत्ति स्थान में आये हुए जीव के द्वारा जो पहिले से पुद्गल गृहीत हुए होते तथा और जो पुद्गल प्रति समय गृहीत होते रहते है. एवं जीवके संपर्क से जो तत्तद्रूपमें परिणत हो चुके होते है उनमें से आहारादिपुद्गलों को जो खल रस भागरूप से परिणमाने की जीव की शक्ति विशेष है वही पर्याप्ति है। यह पर्याप्ति छह प्रकार की होती है–अहारपर्याप्ति १, शरीरपर्याप्ति २, इन्द्रियपर्याप्ति ३, प्राणापानपर्याप्ति ४, भाषापर्याप्ति ५, और मनः पर्याप्ति ६, जिस शक्ति विशेषके द्वारा बाह्य आहारको ग्रहण करके जीव उसे जो खल रस रूपसे परिणमाता है वह आहारपर्याप्ति है। जिस शक्तिसे रसीभूत आहारको जीव रस रूप-खून-मांस मेद,–चर्बी

જીવની જે વિશિષ્ટ શક્તિ છે, તે શક્તિનુ નામ પર્યાપ્તિ છે. આ પર્યાપ્તિના ધર્મવાળા જીવોને પર્યાપ્તક કહે છે પુદ્‌ગલોના ઉપચય વડે જીવમાં આ શક્તિવિશેષ ઉત્પન્ન થાય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે–ઉત્પત્તિ સ્થાનમા આવેલા જીવના દ્વારા જે પુદ્‌ગલો પહેલેથી ગ્રહણ કરાયેલાં હોય છે, તથા બીજા જે પુદ્‌ગલો પ્રતિસમય ગૃહીત થતાં રહે છે, તથા જીવના સંપર્કથી જે પુદ્‌ગલો તે તે રૂપે (રસ આદિ રૂપે) પરિણત થઈ ચુકેલાં હોય છે, તેમાંથી આહારાદિ પુદ્‌ગલોને જે ખલ રસ ભાગ રૂપે પરિણમાવવાની જે જીવની શક્તિવિશેષ છે, તેનું જ નામ પર્યાપ્તિ છે તે પર્યાપ્તિના નીચે પ્રમાણે છ પ્રકાર હોય છે–(૧) આહાર પર્યાપ્તિ, (૨) શરીર પર્યાપ્તિ, (૩) ઈન્દ્રિય પર્યાપ્તિ, (૪) પ્રાણાતિપાત, (૫) ભાષા પર્યાપ્તિ અને (૬) મનઃપર્યાપ્તિ

જે શક્તિવિશેષ વડે બાહ્ય આહારને ગ્રહણ કરીને જીવ તેને ખલ રસ રૂપે પરિણમાવે છે, તે શક્તિવિશેષનુ નામ આહારપર્યાપ્તિ છે. જે શક્તિ વડે રસીભૂત આહારને જીવ રસ રૂપે-લોહી, માંસ, મેદ ચર્બી, અસ્થિ મજ્જા અને શુક્ર રૂપ સાત ધાતુઓમાં પરિણમાવે છે, તે શક્તિને શરીર પર્યાપ્તિ કહે છે. જે શક્તિવિશેષ વડે જીવ ધાતુ રૂપે પરિણમિત

वर्गणापुद्गलान् आदाय उच्छ्वासस्वरूपतया परिणमय्य आलम्ब्य च मुञ्चति सा उच्छ्वासपर्याप्तिश्चतुर्थी ४। यया तु भाषाप्रयोग्यान् पुद्गलानादाय भाषात्वेन परिणमय्य आलम्ब्य च परित्यजति सा भाषापर्याप्तिः पञ्चमी ५। यया पुनर्मनःप्रयोग्यवर्गणादलिकमादाय मनस्त्वेन परिणमय्य आलम्ब्य च मुञ्चति सा मनःपर्याप्तिः षष्ठी ६। ता एताः पर्याप्त्यां यथाक्रमम् एकेन्द्रियाणां सञ्ज्ञिवर्जानां द्वीन्द्रियादीनां संज्ञिनां च चतुःपञ्च षट् सख्यका भवन्ति। उत्पत्तिप्रथमसमये एव च ता एताः पर्याप्तयो यथायथ सर्वा अपि युगपन्निष्पादयितुमारभ्यन्ते, परन्तु क्रमेण चेमाः पूर्णतां यान्ति—तथाहि—प्रथममाहारपर्याप्ति स्तदनन्तरं शरीरपर्याप्तिः, तदनन्तरमिन्द्रियपर्याप्तिः, तदनन्तरं प्राणापानपर्याप्तिः, तदनन्तरं भाषापर्याप्तिः, ततो मनःपर्याप्तिरिति। एतासु

अस्थि, मज्जा, और शुक्र रूप सातधातुओं में परिणमाता है वह शरीरपर्याप्ति है। २ जिस शक्ति विशेष से जीव धातु रूपसे परिणमित आहार को जो इन्द्रियरूप से परिणमाता है वह इन्द्रियपर्याप्ति है ३, जिस शक्ति विशेषसे उच्छ्वास प्रायोग्यवर्गणापुद्गलों को ग्रहण करके और उच्छ्वास रूपसे परिणमा करके उसे छोड़ता है वह उच्छ्वास पर्याप्ति है ४. जिस शक्ति के द्वारा जीव भाषायोग्यपुद्गलो को ग्रहण करके और भाषारूप से परिणमा करके जो उन्हें छोडता है वह भाषापर्याप्ति है ५. जिस शक्ति के द्वारा मनः प्रयोग्यमनोवर्गणा के दलिको को ग्रहण करके मनरूप से परिणमाकर के छोड़ता है वह मनःपर्याप्ति है ६. इन छह पर्याप्तियों में से एकेन्द्रिय जीव के चार पर्याप्तियां होती हैं दो इन्द्रियसे लेकर असंज्ञी पञ्चेन्द्रियके पांच पर्याप्तियां होती हैं। और संज्ञीजीवोके छह पर्याप्तियां होती है। इन पर्याप्तियों में से जिन जिन जीवों के जो २ पर्याप्तियां होती है वे जीव उन २, अपनी २ योग्य पर्याप्तियो का एक साथ ही निष्पादन करना प्रारम्भ करते हैं। परन्तु पूर्णता इनकी क्रम २ से ही होती है। जैसे—प्रथम आहार पर्याप्ति, बाद में शरीर पर्याप्ति, फिर इन्द्रिय पर्याप्ति, फिर श्वासोच्छ्वास

આહારને ઈન્દ્રિય રૂપે પરિણમાવે છે, તે શક્તિનુ નામ ઈન્દ્રિય પર્યાપ્ત છે. જે શક્તિવિશેષ વડે જીવ ઉચ્છ્વાસપ્રાયોગ્ય વર્ગણાપુદ્ગલોને ગ્રહણ કરીને અને ઉચ્છ્વાસ રૂપે પરિણમાવીને તેમને જે છોડે છે, તે શક્તિનું નામ ઉચ્છ્વાસ પર્યાપ્તિ છે જે શક્તિ વડે જીવ ભાષાયોગ્ય પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે અને તેમને ભાષારૂપે પરિણમાવીને તેમને છોડે છે, તે શક્તિને ભાષાપર્યાપ્તિ કહે છે જે શકિત વડે જીવ મનઃપ્રાયોગ્ય મનોવર્ગણાના દલિકોને ગ્રહણ કરીને તેમને મન રૂપે પરિણમાવીને છોડે છે, તે શકિતનું નામ મન પર્યાપ્તિ છે. આ ૭ પર્યાપ્તિઓમાંથી ચાર પર્યાપ્તિઓને એકેન્દ્રિય જીવોમાં સદ્ભાવ હોય છે, દ્વીન્દ્રિયથી લઈને અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પર્યન્તના જીવોમાં પાંચ પર્યાપ્તિઓને સદ્ભાવ હોય છે. અને સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય જીવોમાં ૭ પર્યાપ્તિઓને સદ્ભાવ હોય છે. આ પર્યાપ્તિઓમાંની જે જે પર્યાપ્તિઓને જે જે જીવોમાં સદ્ભાવ કહ્યો છે, તે જીવો પોત પોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિઓનું એક સાથે જ નિષ્પાદન કરવાનો પ્રારંભ કરે છે, પરંતુ ક્રમે ક્રમે તેમની પૂર્ણતાએ પહોંચે છે. જેમકે પહેલાં આહાર પર્યાપ્તિ, ત્યાર બાદ શરીર પર્યાપ્તિ, ત્યાર બાદ ઈન્દ્રિય પર્યાપ્તિ,

पर्याप्तिषु आहारपर्याप्तिः, प्रथम समय एव निष्पद्यते, एतदन्याः पर्याप्तयस्तु प्रत्येकमन्तर्मुहूर्त्तकालेन निष्पन्नाः भवन्तीति । आहारपर्याप्तिः प्रथमसमये एव निष्पद्यते इति ज्ञापनाय प्रज्ञापनायामाहारपदे द्वितीयोद्देशके इत्थं प्रतिपादितम् **'आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तएणं भंते ! किं अहारए अणाहारए, गोयमा ! नो अणाहारए आहारए'** इति, तत आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तो विग्रहगतावेव उपपद्यते नतूपमानक्षेत्रमागतोऽपि उपमानक्षेत्रे आगतस्य प्रथमसमये एव आहारकत्वात् तत एक सामयिकी आहारपर्याप्ति निर्वृत्तिरिति यदि पुनरुपपातक्षेत्रमागतोऽपि आहारपर्याप्त्या अपर्याप्त एव भवेत्तदा एवं सूत्रं पठेत् **'सिय आहारए सिय अणाहारए'** यथा शरीरादिपर्याप्तिषु **'सिय आहारए सिय अणाहारए'** इति ॥

पर्याप्ति, फिर भाषापर्याप्ति और इसके बाद मनः पर्याप्ति इस क्रम से ये पूर्ण होती है। इन पर्याप्तियों में से सर्वप्रथम प्रथम समय में ही आहारपर्याप्तिर्निष्पन्न होती है । इसके बाद शरीरादि पर्याप्तियों में से प्रत्येक पर्याप्ति एक २ अन्तर्मुहूर्त्त में निष्पन्न होती है । आहारपर्याप्ति प्रथम समय में ही निष्पन्न होती है । इस बात को समझाने के लिये प्रज्ञापना के आहार पद मे द्वितीय उद्देशक में इस प्रकार से कहा गया है—**"अहारपज्जत्तीए अपज्जत्तए णं भंते किं आहारए आणाहारए, गोयमा । णो अणाहारए आहारए"** आहार पर्याप्ति से अपर्याप्ति हुआ जीव जब विग्रह गति में ही उत्पन्न होता है । तब तो वह अनाहारक ही होता है । और जब वह उपापात क्षेत्र में आ जाता है तब उसके प्रथम समय में ही आहरकता रहती है इसलिये आहारपर्याप्ति की निर्वृत्ति एक समयकी होती है । यदि वह उपात क्षेत्र में आने पर भी आहारपर्याप्ति से अपर्याप्त ही होता है तब सूत्र या पाठ इस प्रकार से पढना चाहिये —**"सिय आहारए सिय अणाहारए"** ।

ત્યારબાદ શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાપ્તિ, ત્યારબાદ ભાષા પર્યાપ્તિ અને ત્યારબાદ મનઃપર્યાપ્તિ, આ ક્રમે તે પૂર્ણ થાય છે. આ પર્યાપ્તિઓમાંની સૌથી પહેલી પર્યાપ્તિનું-આહાર પર્યાપ્તિનું નિષ્પાદન પ્રથમ સમયમાં જ થાય છે ત્યારબાદ શરીરાદિ પ્રત્યેક પર્યાપ્તિનું નિષ્પાદન એક એક અન્તર્મુહૂર્તમાં થાય છે આહારપર્યાપ્તિનું નિષ્પાદન પ્રથમ સમયમાં જ થાય છે, આ વાતને સમજાવવા માટે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના દ્વિતીય ઉદ્દેશકના આહારપદમાં આ પ્રમાણે કહ્યું છે—**"आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तएणं भंते किं आहारए अणाहारए, गोयमा ! णो अणाहारए आहारए"** આહારપર્યાપ્તિની અપેક્ષાએ અપર્યાપ્ત દશાવાળો જીવ જ્યારે વિગ્રહગતિમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તો તે અનાહારક જ હોય છે, અને જ્યારે તે ઉપપાત ક્ષેત્રમાં આવી જાય છે ત્યારે તેના પ્રથમ સમયમાં જ આહારકતા રહે છે, તેથી આહારપર્યાપ્તિની નિવૃત્તિ એક સમયની હોય છે. જો તે ઉપપાતક્ષેત્રમાં આવવા છતાં પણ આહારપર્યાપ્તિની અપેક્ષાએ અપર્યાપ્ત જ રહેતો હોય, તો સૂત્રનો પાઠ આ પ્રકારે વાંચવો જોઈએ—**"सिय आहारए सिय अणाहारए"**

सर्वासामेव पर्याप्तीनां पर्याप्ति-समाप्तिकालोऽन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणक एव भवतीति । पर्याप्तयो विद्यन्ते येषां ते पर्याप्ताः पर्याप्ता एव पर्याप्तकाः । ये पुनः स्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तिविकलास्ते अपर्याप्ताः, अपर्याप्ताः एव अपर्याप्तकाः । ते अपर्याप्तका द्विधा भवन्ति लब्ध्या करणैश्च तत्र ये अपर्याप्तका एव म्रियन्ते ते लब्ध्या अपर्याप्तकाः. ये पुनः करणानि शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्त्तयन्ति तत्काले, किन्तु कालान्तरे अवश्यमेव निर्वर्त्तयिष्यन्ति ते करणपर्याप्ताः ।

सम्प्रति शेषवक्तव्यतासंग्रहार्थं गाथाद्वयं भवति

'सरीरो[१]गाहणं[२] संघयणं[३] संठाणं[४] कसायं[५] तह य हुंति सन्नाओ[६]
लेसिं[७]दिय[८]समुग्घाए[९] सन्नी[१०] वेए[११]य पज्जत्ती[१२] ॥१॥
दि[१३]ट्ठीदंसणं[१४]नाणे[१५] जोगुं[१६]वओगे[१७] तहा किमाहारे[१८] ।
उववायं[१९] [२०]ठिई समुग्घाएं[२१] चवणंगइरागई[२२] चेव ॥२॥

समस्त ही पर्याप्तियों का पर्याप्ति-समाप्तिकाल एक अन्तर्मुहूर्त का ही होता है । जिनके पर्याप्तियां होती हैं वे पर्याप्त है । पर्याप्त ही पर्याप्तक है । जिनके अपने २ योग्य पर्याप्तियों की पूर्णता नहीं होती है वे अपर्याप्त है । अपर्याप्त ही अपर्याप्तक हैं । ये अपर्याप्तक दो प्रकार के होते हैं--एक लब्धिसे अपर्याप्तक और दूसरे करण से अपर्याप्तक । जो अपार्याप्तक अवस्थामें ही मरजाते है वे लब्धि से अपर्याप्तक हैं । तथा जिनकी अभी तो कोई भी शरीर इन्द्रिय आदि पर्याप्तियां पूर्ण नहीं हुई हैं किन्तु भविष्यमें नियम से वे पूर्ण हो जावेंगी ऐसा जीव करण से अपार्याप्त है ।

अब शेष वक्तव्यता को संग्रह करनेवाली ये दो गाथाएं है-

"सरीरोगाहण संघयण संठाणकसाय तह य हुंति सन्नाओ ।
लेसिंदियसमुग्घाए सन्नी वेए य पज्जत्ती ॥१॥

સઘળી પર્યાપ્તિઓનો પર્યાપ્તિસમાપ્તિકાળ એક અાન્તર્મુહૂર્તનો જ હોય છે જે જીવોમાં પર્યાપ્તિઓ હોય છે, તેમને પર્યાપ્ત કહે છે. પર્યાપ્તને જ પર્યાપ્તક કહે છે. જે જીવોમાં પોત પોતાને યોગ્ય પર્યાપ્તિઓની પૂર્ણતા હોતી નથી, તે જીવો અપર્યાપ્ત ગણાય છે. અપર્યાપ્તને જ અપર્યાપ્તક કહે છે. તે અપર્યાપ્તક જીવો બે પ્રકારના હોય છે—(૧) લબ્ધિની અપેક્ષાએ અપર્યાપ્તક અને (૨) કરણની અપેક્ષાએ અપર્યાપ્તક. જે જીવો અપર્યાપ્તક અવસ્થામાં જ મરી જાય છે, તેમને લબ્ધિની અપેક્ષાએ અપર્યાપ્તક કહે છે, જે જીવોની શરીર ઇન્દ્રિય આદિ કોઈ પણ પર્યાપ્તિઓ પૂર્ણ થઈ ચુકેલી નથી, પણ ભવિષ્યમાં તે પર્યાપ્તિઓ અવશ્ય પૂર્ણ થવાની છે, એવા જીવને કરણની અપેક્ષાએ અપર્યાપ્તક કહે છે.

બાકીની વક્તવ્યતાનો સંગ્રહ કરનારી બે ગાથાઓ નીચે પ્રમાણે છે—

सरीरोगाहण संघयण संठाणकसाय तह य हुंति सन्नाओ ।
लेसिंदियसमुग्घाए सन्नी वेए य पज्जत्ती ॥१॥

अयमर्थ.—प्रथमतः सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां शरीराणि वक्तव्यानि[1] तदनन्तरमगाहनौ, ततः संहननम्[3] ततः संस्थानम्[4], कषाया[5], तदन्तरम्, कति सञ्ज्ञा[6], भवन्तीति वक्तव्यम् ततो लेश्याः[7], तदनन्तरम् इन्द्रियाणि वक्तव्यानि[8], समुद्घाताः[9], ततः किं सञ्ज्ञिनो वा असञ्ज्ञिन इति वक्तव्यम्[10]. ततो वेदो वक्तव्यः[11], ततः पर्याप्तयो वक्तव्याः, अपर्याप्तयश्च[12], । ततो दृष्टिः[13], ततो दर्शनम्[14], ततो ज्ञानम्[15], ततो योग.[16], तत उपयोगः[17], तथा-किमाहारयन्ति पृथिवीकायिकाः[18], इति वक्तव्यम्, तत उपपातो वक्तव्यः[19], ततः स्थितिः[20], ततः समुद्घातः[21], ततश्च्यवनम्[22], ततो गत्यागानी[23]. इति, सर्वाणि एतानि. त्रयोविंशति द्वाराणि भवन्ति ॥ सू० ८॥

दिट्ठीदंसणनाणे जोगुवओगे तहा किमाहारे ।
उववाय ठिई समुग्घाए चवणगइरागई चेव ॥२॥

अर्थ इसका ऐमा है-इम गाथाओं द्वारा यहां सूक्ष्मजीवों के तेईस द्वार कहे गये हैं—जो इम प्रकार से है सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों की शरीर सम्बन्धी वक्तव्यता १, इनकी अवगाहना की वक्तव्यता २ संहननकी वक्तव्यता ३, संस्थानकी वक्तव्यता ४, कषायो की वक्तव्यता ५, संज्ञा सम्बन्धी वक्तव्यता ६, लेश्या सम्बन्धी वक्तव्यता ७, इनकी इन्द्रिय सम्बन्धी वक्तव्यता ८, समुद्घात सम्बन्धी वक्तव्यता ९ संज्ञी असंज्ञी सम्बन्धी वक्तव्यता १०, वेद सम्बन्धी वक्तव्यता ११, पर्याप्तिकी वक्तव्यता, अपर्याप्तिकी वक्तव्यता १२, दृष्टिकी वक्तव्यता १३, दर्शनकी वक्तव्यता १४, ज्ञानकी वक्तव्यता १५, योगकी वक्तव्यता १६, उपयोगकी वक्तव्यता १७, पृथिवीकायिक, क्या आहार करते हैं ऐसी वक्तव्यता १८, उपपात की वक्तव्यता १९, स्थितिकी वक्तव्यता २० समुद्घात की वक्तव्यता २१, च्यवनकी वक्तव्यता २२, और गति आगति की वक्तव्यता २३ । सूत्र ॥८॥

दिट्ठी दंसणनाणे जोगुवओगे तहा किमाहारे ।
उववाय ठिई समुग्घाए चवणगइरागई चेव ॥२॥

આ ગાથાઓનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

આ ગાથાઓ દ્વારા સૂક્ષ્મ જીવોના ૨૩ દ્વાર અહીં પ્રકટ કરવામાં આવ્યાં છે, જે નીચે પ્રમાણે છે-(૧) સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીરની વક્તવ્યતા, (૨) તેમની અવગાહનાની વક્તવ્યતા, (૩) સંહનનની વક્તવ્યતા, (૪) સંસ્થાનની વક્તવ્યતા, (૫) કષાયોની વક્તવ્યતા, (૬) સંજ્ઞાવિષયક વક્તવ્યતા, (૭) લેશ્યા વિષયક વક્તવ્યતા, (૮) તેમની ઇન્દ્રિયો સંબંધી વક્તવ્યતા, (૯) સમુદ્ઘાત સંબંધી વક્તવ્યતા, (૧૦) સંજ્ઞી અસંજ્ઞી સંબંધી વક્તવ્યતા, (૧૧) વેદ સંબંધી વક્તવ્યતા (૧૨) પર્યાપ્તિક અપર્યાપ્તિક સંબંધી વક્તવ્યતા, (૧૩) દૃષ્ટિની વક્તવ્યતા, (૧૪) દર્શનની વક્તવ્યતા, (૧૫) જ્ઞાનની વક્તવ્યતા, (૧૬) યોગની વક્તવ્યતા, (૧૭) ઉપયોગની વક્તવ્યતા, (૧૮) પૃથ્વીકાયિકના આહાર સંબંધી વક્તવ્યતા, (૧૯) ઉપપાતની વક્તવ્યતા, (૨૦) સ્થિતિની વક્તવ્યતા, (૨૧) સમુદ્ઘાતની વક્તવ્યતા અને (૨૩) ગતિ આગતિની વક્તવ્યતા. ॥સૂત્ર ૮॥

तत्र प्रथमद्वारमधिकृत्याह-'तेसि णं भंते' इत्यादि,

मूलम्—'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरा पन्नत्ता, तं जहा-ओरालिए तेयए कम्मए ३। तेसि णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता, गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलासंखेज्जइभागं ! तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संघयणा पन्नत्ता गोयमा ! छेवट्टसंघयणा पन्नत्ता। तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! मसूरचंदसंठिया पन्नत्ता। तेसि णं भंते ! जीवाणं कई कसाया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता। तं जहा-कोहकसाए १, माणकसाए २, मायाकसाए ३, लोभकसाए ४। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सण्णा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सण्णा पन्नत्ता, तं जहा-आहारसन्ना १, जाव परिग्गहसन्ना ४। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! तिन्नि लेस्साओ पन्नत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा १ नीललेस्सा, २, काउलेस्सा ३, तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ इंदियाइं पन्नत्ताइं ? गोयमा ! एगे फासिंदिए पन्नत्ते। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ समुग्धाया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए १, कसायसमुग्घाए २, मारणंतियसमुग्घाए ३। ते णं भंते ! जीवा किं सन्नी असन्नी ? गोयमा ! नो सन्नी असन्नी। ते णं भंते ! जीवा किं इत्थियवेयगा पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा ? गोयमा ! नो इत्थियवेयगा नो पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ, तं जहा-आहारप-

ज्जत्ती १, सरीरपज्जत्ती २, इंदियपज्जत्ती ३, आणापाणुपज्जत्ती ४। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ तं जहा-आहारअपज्जत्ती १, जाव आणापाणु अपज्जत्ती ४ ॥ सू० ९ ॥

छाया—तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणम् । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कियन्महती शरीरावगाहना प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनांगुलासंख्येयभागम्, उत्कर्षेणापि अंगुलासंख्येयभागम्। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां शरीराणि किं संहननानि प्रज्ञप्तानि, गौतम ! सेवार्तसंहननानि प्रज्ञप्तानि। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां शरीराणि किं संस्थितानि प्रज्ञप्तानि, गौतम ! मसूरचन्द्रसंस्थितानि प्रज्ञप्तानि। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति कषायाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चत्वारः कषायाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-क्रोधकषायो मानकषायो मायाकषायो लोभकषायः ४। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति सञ्ज्ञाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चतस्रः सञ्ज्ञाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-आहारसंज्ञा यावत् परिग्रहसञ्ज्ञा। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति लेश्याः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! तिस्रो लेश्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या ३। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति इन्द्रियाणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! एकं स्पर्शनेन्द्रियं प्रज्ञप्तम्। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! त्रयः समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-वेदनासमुद्घातः कषायसमुद्घातो मारणान्तिकसमुद्घातः ३। ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सञ्ज्ञिनोऽसंज्ञिनः ? गौतम ! नो सञ्ज्ञिनोऽसञ्ज्ञिनः। ते खलु भदन्त ! जीवाः किं स्त्रीवेदकाः, पुरुषवेदकाः, नपुंसकवेदकाः ? गौतम ! नो स्त्रीवेदकाः नो पुरुषवेदकाः, नपुंसकवेदकाः। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति पर्याप्तयः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! चतस्रः पर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः ४, तद्यथा-आहारपर्याप्तिः, शरीरपर्याप्तिः इन्द्रियपर्याप्तिः, आनप्राणपर्याप्तिः ४। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति अपर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चतस्रः अपर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-आहारपर्याप्तयो यावत् आनप्राणपर्याप्तय ॥ सू० ९ ॥

टीका—(१) शरीरद्वारम्-'तेसि णं भंते ! जीवाणं' तेषां सूक्ष्मपृथ्वीकायिकानां 'णं' खलु वाक्यालङ्कारे जीवानां भदन्त ! परमकल्याणयोगिन्। 'कइ सरीरया पन्नत्ता' कति

---

(१) प्रथमद्वार कहते है—

'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरया पन्नत्ता'-इत्यादि। सू० ९

---

(१) હવે પ્રથમ દ્વારનું કથન કરવામાં આવે છે —

"तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरया पण्णत्ता" ઈત્યાદિ- સૂત્ર ૯

शरीराणि प्रज्ञप्तानि-कथितानि इति गौतमस्य प्रश्नः, उत्तरं च भगवतो महावीरस्येति निर्वचन-सूत्रात् प्रतीयते, यद्यपि चतुर्दशानां पूर्वविदां न किञ्चिदपि अविदितं भवति गौतमस्य तु विशेषतः सर्वाक्षरसन्निपातिनः सभिन्नश्रोतसः सर्वोत्कृष्टलब्धिसमन्वितस्य तत्कथमयं प्रश्नो गौतमस्येति कथ्यते तथापि शिष्यानुग्रहाय, तथाहि-जानन्नेव भगवान् गौतमः तीर्थकरेभ्यो ज्ञात्वा शिष्यान् बोधयति तीर्थकरेषु तस्यातिशयश्रद्धोत्पादनायेति। अथवा-सम्भवति गौतमस्य स्वल्पोऽनाभोगः छद्मस्थत्वादतो भगवन्तं पृच्छति-तदुक्तम्-

"नहि नामानाभोगश्छद्मस्थस्येह कस्यचिन्नास्ति,
ज्ञानावरणीयं हि ज्ञानावरणप्रकृतिकर्म" इति।

टीकार्थ—हे भदन्त! "तेसिं णं भंते! जीवाणं' उन सूक्ष्मकायिके जीवोके "कइ सरीरया पन्नत्ता" कितने शरीर होते है? ऐसा यह प्रश्न गौतम का है और उत्तर भगवान् महावीर का है ऐसा निर्वचन सूत्र से ज्ञात होता है।

यद्यपि चौदह पूर्वाधरोको कुछ भी अविदित नहीं होता है जो कि गौतम स्वामी विशेष-रूप से सर्वाक्षरसन्निपाती थे संभिन्नश्रोतोलब्धिवाले थे, सर्वोत्कृष्टलब्धि से समन्वित थे, तो फिर यह गौतम का प्रश्न है ऐसा आप कैसे कहते हो?

शंका ठीक है, परन्तु ऐसा हम इसलिये कहते है कि जानते हुए भी भगवान् गौतम ने तीर्थंकरों से जानकर शिष्यों को समझाने के लिये ऐसा पूछा है—इसका भी कारण यह है शिष्यों की तीर्थंकरों में अतिशय श्रद्धा उत्पन्न हो जावे। अथवा—गौतम में छद्मस्थ होने से थोड़ा सा भी अनाभोग संभवित हो सकता है। इसलिये उन्होने भगवान् से पूछा है। कहा भी है—

ટીકાર્થ—"तेसिं णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरा पण्णत्ता" હે ભગવન્! તે સૂક્ષ્મકાયિક જીવોને કેટલાં શરીર હોય છે?

ગૌતમ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન છે અને તેનો ઉત્તર આપનાર મહાવીર પ્રભુ છે, એવું પ્રત્યુત્તર દ્વારા જાણી શકાય છે.

શંકા—ચૌદ પૂર્વધરોને કોઈ પણ વાત અવિદિત હોતી નથી ગૌતમ સ્વામી ચૌદ પૂર્વધર હતા, તેઓ વિશેષ રૂપે સર્વાક્ષરસન્નિપાતી હતા, સંભિન્ન શ્રોતોલબ્ધિવાળા હતા, સર્વોત્કૃષ્ટ લબ્ધિથી સંપન્ન હતા છતાં ગૌતમ સ્વામી આ પ્રશ્ન પૂછે છે એવું આપ કેવી રીતે કહો છો?

સમાધાન—શંકા બરાબર છે. છતાં શંકાનો ખુલાસો આ પ્રમાણે સમજવો-પ્રશ્નમાં પૂછવામાં આવેલી વાતને ગૌતમ સ્વામી જાણતા હતા, છતાં પણ તીર્થંકર પાસેથી જ આ પ્રશ્નોના જવાબ મેળવીને શિષ્યોને સમજાવવા માટે આ પ્રશ્ન પૂછયો છે. શિષ્યોને તીર્થંકરોમાં અતિશય શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થઈ જાય, એવો પણ ઉદ્દેશ છે અથવા—ગૌતમસ્વામી છદ્મસ્થ હતા, તે કારણે તેમનાં જ્ઞાનમાં અપૂર્ણતા સંભવી શકે છે, તેથી તેમણે સર્વજ્ઞ તીર્થંકરને આ પ્રશ્ન પૂછયો છે.

भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तओ सरीरगा पन्नत्ता' त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि–कथितानि भेदमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'ओरालिए, तेयए, कम्मए' औदारिकं तैजस कार्मणम्। तत्रोदारं प्रधानम् प्राधान्यञ्चास्य तीर्थङ्करगणधरशरीराण्यधिकृत्य, ततोऽन्यस्यानुत्तरदेवशरीरस्यापि अनन्तगुणहीनत्वात् यद्वा उदारं सातिरेक योजनसहस्रप्रमाणत्वात्–इतरशरीरापेक्षया बृहत्प्रधानम् बृहत्वंचास्य वैक्रियं प्रति भवधारणीयसहज-

---

'नहि नामाऽनाभोगश्छद्मस्थस्येह कस्यचिन्नास्ति।
ज्ञानावरणीयं हि ज्ञानावरणप्रकृतिकर्म ॥१॥

अर्थात्–छद्मस्थ को आनभोग (अजानपना) न हो ऐसा नहीं है। क्योंकि छद्मस्थता के कारण कहीं कहीं विस्मृति हो ही सकती है कारण कि ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञानावरण प्रकृति जन्य होता है। "सूक्ष्मकायिको के कितने शरीर होते हैं ?" इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है—हे गौतम ! "तओ सरीरगा पन्नत्ता" सूक्ष्मकायिक जीवो के तीन शरीर होते है। 'तं जहा" जो इस प्रकार से है-ओरालिए,तेयए, कम्मए" औदारिक शरीर, तेजस शरीर और कार्मण शरीर उदार नाम प्रधान का है. प्रधान जो शरीर है वह औदारिक शरीर है. औदारिक शरीर में प्रधानता जो कही गई है वह तीर्थंकर और गणधरों के शरीर की अपेक्षा लेकर के कही गई है क्योंकि इनके औदारिक शरीर होता है। तथा अनुत्तर देवों का जो इस शरीर से भिन्न वैक्रियशरीर होता है वह इससे अनन्त गुण हीन होता है। यद्वा उदार शब्द का अर्थ सातिरेक है. औदारिक शरीर में जो सातिरेकता कही गई है वह इसके प्रमाण को लेकर कही गई है. क्योंकि इसमें सातिरेकता स्वयंभूरमणसमुद्र में रहे

કહ્યું પણ છે કે—"नहि नामाऽनाभोगश्छद्मस्थस्येह कस्यचिन्नास्ति।
ज्ञानावरणीय हि ज्ञानवरण प्रकृतिकर्म" ॥१॥

એટલે કે છદ્મસ્થમાં અનાભોગ (જ્ઞાનની અપૂર્ણતા) હોઈ શકે છે, કારણ કે છદ્મસ્થતાને કારણે ક્યારેક વિસ્મૃતિ પણ થઈ જાય છે, કારણ કે જ્ઞાનાવરણીય કર્મ જ્ઞાનાવરણ પ્રકૃતિજન્ય હોય છે "સૂક્ષ્મકાયિકોને કેટલા શરીર હોય છે ?" આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—'तओ सरीरगा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મકાયિક જીવોને ત્રણ શરીર હોય છે. "तंजहा" તે ત્રણ શરીરો નીચે પ્રમાણે સમજવા- 'ओरालिए, तेयए, कम्मए" (૧) ઔદારિક, શરીર (૨) તૈજસ શરીર અને (૩) કાર્મણશરીર. ઉદાર એટલે પ્રધાન (મુખ્ય) જે શરીર પ્રધાન હોય છે તેને ઔદારિક શરીર કહે છે. ઔદારિક શરીરમાં જે પ્રધાનતા કહી છે તે તીર્થંકર અને ગણધરોનાં શરીરની અપેક્ષાએ કહી છે, કારણ કે તેમને ઔદારિક શરીર હોય છે આ શરીર કરતા ભિન્ન એવુ જે અનુત્તર દેવોનું વૈક્રિયશરીર હોય છે, તે તેના કરતાં અનેક ગણું હીન હોય છે અથવા-ઉદાર શબ્દનો અર્થ સાતિરેક પણ થાય છે ઔદારિક શરીરમાં જે સાતિરેકતા કહી છે તે તેના પ્રમાણની અપેક્ષાએ કહી છે કારણ કે સ્વયંભૂરમણ સમુદ્રમાં રહેતા મહામત્સ્યના એક હજાર યોજન કરતાં પણ અધિક પ્રમાણ

शरीरापेक्षया अन्यथोत्तरवैक्रियशरीरं योजनलक्षप्रमाणमपि लभ्यते। उदारमेव औदारिकम् तादृशंच तच्छरीरं च इत्यौदारिकशरीरं प्रधानम्। तैजसं तेजःपुद्गलानां विकारस्तैजसम् तत उष्णतानुमेयञ्चिङ्ग-भुक्ताहारपरिणमनकारणम् ततश्च विशिष्टतपःसमुत्पन्नलब्धिविशेषस्य पुद्गलस्य तेजोलेश्याऽऽविर्भावोऽपि भवति, तदुक्तम्—

'सव्वस्स उम्हसिद्धं रसाइ आहारपाकजणगं च।
तेयगलद्धिनिमित्तं च तेयगं होइ नायव्वं ॥१॥
सर्वस्यौष्म्यसिद्धं रसाधाहारपाकजनकं च।
तेजोलब्धिनिमित्तं च तैजसं भवति ज्ञातव्यमितिच्छाया॥

तथा कर्मणा जातं शरीरं कार्मणम्, अयं भावः–कर्मपरमाणव एवात्मप्रदेशैः सह क्षीरनीर-

---

हुए महामत्स्य के कुछ अधिक एक हजार योजन के प्रमाणवाले औदारिक शरीर की अपेक्षा से हैं। अथवा–उदार शब्द का अर्थ बृहत् भी है. यह शरीर भवधारणीय वैक्रिय शरीर की अपेक्षा बृहत् है। उत्तरवैक्रियशरीर की अपेक्षा नहीं। क्योंकि उत्तरवैक्रिय शरीर का प्रमाण एक लाख योजन का है। औदारिक यह प्रथम शरीर है. तेजः पुद्गलो का जो विकार है वह तैजसशरीर है। यह शरीर में उष्णता से अनुमेय होता है, तथा भुक्त आहार के पचाने में कारण होता है. तथा विशिष्ट तपस्याके प्रभावसे जिस साधुके लब्धि विशेष उत्पन्न हो गया है. ऐसे साधुजन को इसी शरीर के प्रभाव से तेजोलेश्या भी प्रकट हो जाती है कहा भी है—

"सव्वस्स उम्हसिद्धं रसाइ आहारपाकजणगं च।
तेयगलद्धिनिमित्तं च तेयगं होइ नायव्वं ॥१॥

जो शरीर कर्म के द्वारा उत्पन्न होता है वह कार्मण शरीर है तात्पर्य इसका यह है कि क्षीर नीर के जैसा आत्मप्रदेशों के साथ परस्पर में सम्बद्ध हुए कर्म परमाणु ही शरीर

વાળા ઔદારિક શરીર કરતાં પણ અતિરેકતા રહેલી છે અથવા ઉદાર શબ્દનો અર્થ બૃહત્ (વિશાળ) પણ થાય છે. ઔદારિક શરીરમાં ભવધારણીય વૈક્રિય શરીરની અપેક્ષાએ વધારે વિશાળતા છે, ઉત્તરવૈક્રિય શરીરની અપેક્ષાએ વિશાળતા નથી, કારણ કે ઉત્તરવૈક્રિય શરી-રનું પ્રમાણ એક લાખ યોજનનું હોય છે. આ પ્રકારનું આ ઔદારિક શરીર નામનું પહેલું શરીર છે. તેજનાપુદ્ગલોનો જે વિકાર છે, તે તૈજસ શરીર છે. શરીરની ઉષ્ણતા વડે તેનો અનુભવ થાય છે, તથા જે આહાર ખાવામાં આવે છે તેના પાચનમાં તે મદદરૂપ થાય છે. તથા વિશિષ્ટ તપસ્યાનાં પ્રભાવથી જે સાધુમાં લબ્ધિ વિશેષની ઉત્પત્તિ થઈ ગઈ હોય છે, એવા સાધુમાં આ શરીરના જ પ્રભાવથી તેજોલેશ્યા પ્રકટ થઈ જાય છે. કહ્યું પણ છે કે—

"सव्वस्स उम्हसिद्धं रसाइ आहार पाकजणगं च।
तेयगलद्धि निमित्तं च तेयगं होइ नायव्वं ॥१॥

જે શરીર કર્મના દ્વારા ઉત્પન્ન થાય છે, તે શરીરનું નામ કાર્મણશરીર છે. એટલે કે ક્ષીર નીરની જેમ આત્મપ્રદેશોની સાથે પરસ્પર લાગેલા કર્મપરમાણુઓ જ શરીર રૂપે પરિ-

वद् अन्योन्यानुगताः सन्तः शरीररूपतया परिणताः कर्मजं कार्मणं शरीरं कथ्यते कर्मणो विकारः कार्मणमिति, तदुक्तम् —

'कम्मविकारो कम्मणमट्ठविह विचित्तकम्मनिप्फन्नं ।
सव्वेसिं सरीराणं कारणभूयं मुणेयव्वं' ॥१॥
कर्मविकारः कार्मण मष्टविधविचित्रकर्मनिष्पन्नम् ।
सर्वेषां शरीराणां कारणभूतं ज्ञातव्यमितिच्छाया ॥

(१) शरीराणि पञ्च भवन्ति औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणाख्यानि, एतेषां पञ्चानां शरीराणां मध्ये त्रीणि शरीराणि औदारिकतैजसकार्मणाख्यानि भवन्ति सूक्ष्मपृथिवीकायिकानाम् एतानि त्रीणि विविच्य दर्शितानि–वैक्रियाहारकेतु शरीरे सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां न संभवतः, भवस्वभावत एव सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां वैक्रियाहारकशरीरद्वयलब्धिरहितत्वादिति शरीरद्वारं समाप्तम् ।

(२) अथावगाहनाद्वारमाह—**'तेसि णं'** इत्यादि, **'तेसि णं भंते जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता'** तेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त ? जीवानां कियन्महती

रूप से जो परिणत हो जाते है. वे ही कार्मण शरीर कहलाते है । **"कर्मणो विकारः कार्मणम्"** अतः यह कार्मण शरीर कर्म का ही एक विकार है–कहा भी है—

कम्मविगारो कम्मणमट्ठविह विचित्तकम्मनिप्फन्नं,
सव्वेसि सरीराण कारणभूयं मुणेयव्वं ॥१॥

शरीर औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण के भेद से पांच होते है इनमें से सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों के औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर होते हैं। वैक्रिय आहारक ये दो शरीर इनके नहीं होते हैं-क्योंकि भवके स्वभाव को लेकर इनमें वैक्रिय और आहारक शरीर की लब्धि नहीं होती है । **शरीरद्वारसमाप्त ॥**

(२) **अवगाहना द्वार–"तेसि णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता** हे भदन्त ! इन सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी कही गई

બને છે, અને તેમને જ કાર્મણ શરીર કહે છે. 'कर्मणो विकारः कार्मणम्" આ કાર્મણ શરીર કર્મનો જ એક વિકાર છે કહ્યું પણ છે કે—

"कम्मविगारो कम्मणमट्ठविहचित्तकम्मनिप्फन्नं,
सव्वेसिं सरीराणं कारणभूयं मुणेयव्वं ॥१॥

ઔદારિક, વૈક્રિય, આહારક, તૈજસ અને કાર્મણ આ પાંચ પ્રકારનાં શરીરો હોય છે. સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોને ઔદારિક, તૈજસ અને કાર્મણ, આ ત્રણ શરીરો હોય છે. તેમને વૈક્રિય અને આહારક શરીરો હોતા નથી, કારણ કે ભવના એવા સ્વભાવને લીધે તેમનામાં વૈક્રિય અને આહારક શરીરની લબ્ધિ હોતી નથી. શરીરદ્વાર સમાપ્ત ॥૧॥

(૨) અવગાહના દ્વાર—"तेसि णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?" હે-ભગવન્ ! આ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીરની અવગાહન કેટલી મોટી કહી છે ?

शरीरावगाहना प्रज्ञप्ता-कथितेति प्रश्न', भगवानाह-'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलासंखेज्जइभागं**' जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागम् उत्कर्षेणापि अङ्गुलासंख्येयभागम्, जघन्योत्कृष्टाभ्यां शरीरावगाहनाङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणा भवतीति ।

(३) गतमवगाहनाद्वार सम्प्रति तृतीयं संहननद्वारमाह '**तेसि णं**' इत्यादि, '**तेसि णं भंते ? जीवाणं सरीरा किं संघयणा पन्नत्ता**' तेषां खलु भदन्त ? सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां शरीराणि किं संहननानि-कीदृशसंहननयुक्तानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः, भगवानाह-'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**छेवट्टसंघयणा पन्नत्ता**' सेवार्त्तसंहननानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि, संहननं नामास्थिनिचयरूपम् तत् षोढा, तद्यथा-वज्रऋषभनाराचम् ऋषभनाराचम् नाराचम् अर्द्धनाराचम् कीलिकासेवार्त्तंच वज्रऋषभनाराचादिसहननानां लक्षणंतु यथाशास्त्रमधिगन्तव्यम्, सेवार्त्तसंहननस्येदं लक्षणम्-सेवाम-अस्थिसंयोगमात्ररूपाम् आर्त्तं प्राप्तम्, यद्वा सेवया ऋतं व्याप्तं

है ? उत्तर-में प्रभु कहते है—"**गोयमा !**" हे गौतम ! "**जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलासंखेज्जइभागं**" सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों के शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट दोनो रूप से अगुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण कही गई है ।

अवगाहना द्वार समाप्त ।२।

संहननद्वार— "**तेसिं णं भंते ! जीवाणं सरीरा किं संघयणा पन्नत्ता**" हे भदन्त ! इन सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों के शरीर कैसे संहननवाले होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं— "**गोमया**" हे गौतम ! "**छेवट्टसंघयणा पण्णत्ता**" इनके शरीर सेवार्त्त संहननवाले होते हैं । हड्डियों का निचयरूप संहनन होता है। यह संहनन वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका और सेवार्त्त के भेद से छ प्रकार का होता है. इनका लक्षण शास्त्रो के अनुसार जानना चाहिये—इसका अर्थ-जो सेवा अर्थात् हड्डियो के सम्बन्ध रूप सेवा को

મહાવીર પ્રભુને ઉત્તર—"**गोयमा !**" હે ગૌતમ ! "**जहन्नेणं अङ्गुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलासंखेज्जइभागं**" સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીરની ઓછામાં ઓછી અવગાહના આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગપ્રમાણ કહી છે અને વધારેમાં વધારે અવગાહના પણ આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણ કહી છે. અવગાહનાદ્વાર સમાપ્ત ।૨।

(૩) સંહનનદ્વાર '**तेसि णं भते ! जीवाणं सरीरा किं संघयणा पण्णत्ता ?**" હે ભગવન્ ! આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીર કેવાં સંહનનવાળાં હોય છે ? તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—"**गोयमा !** " હે ગૌતમ ! "**छेवट्टसंघयणा पण्णत्ता**" તેમનાં શરીર સેવાર્ત્ત સંહનનવાળાં હોય છે ? હાડકાનાં નિચયરૂપ સંહનન હોય છે તે સંહનના નીચે પ્રમાણે છ પ્રકાર છે-(૧) વજ્ર ઋષભનારાચ, (૨) ઋષભનારાચ, (૩) નારાચ, (૪) અર્ધનારાચ, (૫) કીલિકા અને (૬) સેવાર્ત્ત આ સંહનના લક્ષણો અન્ય શાસ્ત્રોમાંથી વાંચી લેવા. સેવાર્ત્ત સંહનનું લક્ષણ આ પ્રમાણે છે—હાડકાઓના સંબંધરૂપ સેવાથી યુક્ત એવા

सेवार्त्तम्। अथवा 'छेवट्ट' इत्यस्य छेदवृत्तम् इतिच्छाया, प्राकृते दकारलोपदर्शनात्, तत्र छेदानाम्-अस्थिपर्यन्तभागानां वृत्तं परस्परं संबन्धघट्टनालक्षणं वर्त्तन वृत्तिर्यत्र तत् छेदवृत्तम्।

इदमित्थं स्वरूपकम्-यत्रास्थीनि परस्परं छेदेन वर्त्तन्ते न कीलिकामात्रेणापि तेषां बन्धो भवेत् तत् छेदवृत्तम्।

इदं षष्ठं सेवार्त्तसंहननं सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवशरीरस्य भवतीति। अयं भावः-यद्यपि सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामस्थ्यादिकं न भवति तथापि औदारिकशरीरवतामस्थ्यात्मकसहननेन यः शक्तिविशेष उपजायते स एव शक्तिविशेषएषामपि जायते ततोऽसौ उपचारात् सहननमिति कथ्यते, स च शक्तिविशेषोऽत्यन्तमल्पीयान् सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामपि अस्ति औदारिकशरीरित्वात्, जघन्यश्च शक्तिविशेषः सेवार्त्तसंहननविषय इति सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामपि सेवार्त्तसंहननं कथितमिति, गतं संहननद्वार तृतीयम् ३ इति॥

प्राप्त हो वह सेवार्त्त कहलाता है। अथवा 'छेवट्ट' शब्द की छेदवृत्त छाया भी होती है उसका अर्थ-छेदों का हड्डियो के पर्यन्त भागो का परस्पर संबन्ध रूप वर्त्तन जहां हो वह छेदवृत्त कहलाता है। इस संहननका स्वरूप इस प्रकार से है-जिस शरीर में हड्डियां आपस में छेद से युक्त होती है. कीलिकामात्र से भी वन्ध नहीं होता है वह छेदवृत्त संहनन है छह सहननो में से छठा सेवार्त्त-छेदवृत्त संहनन सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके होता है, तात्पर्य यह है-यद्यपि सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवो के अस्थि आदिक नहीं होते है किन्तु औदारिक शरीर वालों के अस्थ्यात्मक सहनन होने से जो शक्तिविशेष होता है वह शक्तिविशेष इनके भी होता है, अतः उपचार से सहनन कहा जाता है यह शक्तिविशेष अत्यन्त अल्प यहां होता

સંહનનનું નામ સેવાર્ત્ત સંહનન છે. અથવા "છેવટ્ટ" આ શબ્દની છાયા 'છેદવૃત્ત' થાય છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-છેદોનો—હાડકાની અંદરના ભાગોના પરસ્પરના સંબંધરૂપ વર્તન જ્યાં હોય છે તે સંહનનને છેદવૃત્ત અથવા સેવાર્ત્ત સંહનન કહેવાય છે.

આ સંહનનનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે– જે શરીરમાં હાડકામાં અરસ્પરસ છેદયુકતતા હોય છે,—કીલિકા (ખીલી) વડે પણ તે હાડકાંઓનો બંધ થતો નથી, તે પ્રકારના સંહનનને છેદવૃત્ત સહનન કહે છે. છ પ્રકારના સહનનોમાંથી છઠ્ઠું છેદવૃત્ત સંહનન સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોને હોય છે. જો કે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં હાડકાં આદિનો સદ્ભાવ હોતો નથી, પરંતુ ઔદારિક શરીરવાળા જીવોમાં અસ્થિયુક્ત સંહનન હોવાથી. જે શક્તિવિશેષનો સદ્ભાવ હોય છે, તે શક્તિવિશેષનો સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોમા પણ સદ્ભાવ હોય છે. તેથી ઔપચારિક રૂપે તેને અહીં સંહનન રૂપ કહેવામાં આવેલ છે. તે શક્તિ અહી અત્યંત અલ્પ પ્રમાણમાં હોય છે, પરંતુ તેમને પણ ઔદારિક શરીર તો હોય છે જ. તેથી સેવાર્ત્ત

(४) सम्प्रति–चतुर्थं संस्थानद्वारमाह–**'तेसि णं भंते !'** इत्यादि, **'तेसि णं भंते जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता'** तेषां खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां शरीराणि किं संस्थितानि–कीदृशसंस्थानयुक्तानि प्रज्ञप्तानि–कथितानि इति प्रश्नः, भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम। **'मसूरचंदसंठिया पन्नत्ता'** मसूरचन्द्रसंस्थितानि सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां शरीराणि प्रज्ञप्तानि, मसूराख्यस्य–धान्यविशेषस्य यत् चन्द्राकृतिदलं तद्वत् संस्थितानि मसूरदलचन्द्रवत् गोलाकारसंस्थानसंस्थितानीत्यर्थः।

अयं भावः–अत्र च जीवानां षट् संस्थानानि भवन्ति तानि च समचतुरस्रादीनि वक्ष्यमाणलक्षणानि, तेषामाद्यानि पञ्चसंस्थानानि मसूरचन्द्राकारे न संभवति। तल्लक्षणयोगाभावात्, तत इदं मसूरचन्द्राकारं संस्थानं हुण्डनामाख्य ज्ञातव्यम्। सर्वत्रासंस्थितत्वरूपं तल्लक्षणसद्भावात् तेषां जीवानां संस्थानान्तराभावाच्चेति संस्थानद्वारम्। गतं चतुर्थं संस्थानद्वारम्

है, क्योंकि इनके औदारिकशरीर होता कहा गया है। इसीलिये सेवार्त्तसंहनन विषयक जघन्य शक्तिविशेष इनके होता है अतः इनके भी सेवार्त्तसहनन कहा गया है,

सहननद्वारा समाप्त ॥३॥

(४) संस्थानद्वार––**"तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता"** हे भदन्त ! इन सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवो के कौनसा सस्थान कहा गया है ? उत्तर में प्रभु कहते है–– **"गोयमा ! मसूरचंदसंठिया पन्नत्ता"** हे गौतम ? इनका शरीर मसूर और चंद्र का जैसा आकार होता है वैसे ही आकार वाला होता है चन्द्र के आकार तथा मसूर की दाल का आकार गोल होता है उसीके आकार का इनके शरीर का संस्थान होता है,

तात्पर्य यह है-संस्थान समचतुरस्र आदिके भेद से छ प्रकार के होते है-इनका लक्षण सूत्रकार स्वयं कहने वाले है इनमें आदिके पांच संस्थान मसूरचन्द्राकार के नहीं होते है क्योंकि इनका

સંહનન વિષયક જઘન્ય શકિત વિશેષનો તેમનામાં પણ સદ્ભાવ હોય છે તેથી જ તેમને સેવાર્ત્ત સંહનનવાળા કહેવામા આવ્યા છે. સંહનનદ્વાર સમાપ્ત ॥૩॥

(૪) સંસ્થાનદ્વાર—**"तेसि ण भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता ?"** હે ભગવન્ ! આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો કેવા સંસ્થાન (આકાર)વાળા હોય છે ? મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—**'गोयमा !** હે ગૌતમ ! **"मसूरचंदसंठिया पण्णत्ता"** તેમના શરીરનો આકાર મસૂર અને ચન્દ્રના જેવો હોય છે. મસૂરનો આકાર ગોળ હોય છે, ચન્દ્રનો આકાર પણ મસૂર જેવો જ હોય છે. સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીરનો આકાર પણ તેમના જેવો જ ગોળ હોય છે

સંસ્થાનના છ પ્રકાર કહ્યા છે સમચતુરસ્ર, આદિ છ પ્રકારો અહીં સમજવા તેમનાં લક્ષણો સૂત્રકાર પોતે જ આગળ બતાવશે આ છ માંથી પહેલાં પાંચ સંસ્થાન મસૂર અને ચન્દ્રના જેવાં આકારના નથી, કારણ કે તેમનુ કોઈ ખાસ નિયત લક્ષણ નથી. સૂક્ષ્મ

(५) सम्प्रति-पञ्चमं कषायद्वारमाह-'तेसि णं भंते' इत्यादि । 'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ कसाया पन्नत्ता' तेषां खलु भदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां कति कषायाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, तत्र कषाया नाम कष्यन्ते-हिंस्यन्ते परस्परमस्मिन् जीवा इति कषः संसारः तादृशसंसारमयन्ते-गच्छन्ति एभिः प्राणिन इति कषायाः क्रोधादयो जीवानां परिणामविशेषास्तेषां कति भवन्तीतिप्रश्नः, 'भगवानाह-गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम। 'चत्तारि कसाया पन्नत्ता' चत्वारः-चतुःसंख्यकाः कषायाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः । चातुर्विध्यमेव कषायाणां दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा-'कोहकसाए माणकसाए माया कसाए लोभ कसाए' ४, क्रोधकषायो मानकषायो मायाकषायो लोभकषायः ४ । तत्र क्रोधः अप्रतीति

कोई खास नियत लक्षण नहीं है, अतः इनके शरीर का सस्थान मसूर चन्द्राकार जैसा हुंडसंस्थान होता है, हुण्डसंस्थान का कहीं भी कोई खास नियत लक्षण नहीं होता है, अनियत लक्षण होता है । उन जीवो के सेवार्तसंस्थान को छोडकर दूसरा सस्थान नहीं होता है ।

संस्थानद्वार समाप्त ॥४॥

(५) कषायद्वार-"तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ कसाया पन्नत्ता" हे भदन्त इन सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवों के कितनी कषायें होती कही गई है ? जो आत्मा के स्वभावका घात करती है वे कषायें है। अथवा जिसमें जीव आपसमें एक दूसरे की हिंसा करते हैं वह कष है, ऐसा कष संसार है, ऐसे संसार में जिनके द्वारा जीव प्राप्त होते है वे कषाय हैं। ये कषायें जीवों के क्रोधादिरूप परिणाम विशेष है । ये कषायें इन जीवों के चार होती है-जैसे-क्रोध कषाय, मानकषाय, मायाकषाय, और लोभकषाय यही बात-" गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता तं जहा-कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोहकसाए "

પૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીરનો આકાર (સંસ્થાન) મસૂર ચંદ્રાકાર જેવું 'હુંડસંસ્થાન' હોય છે. હુંડ સંસ્થાનનું ક્યાય પણ કોઈ નિયત લક્ષણ હોતું નથી-અનિયત લક્ષણ હોય છે. તે જીવોને સેવાર્ત સંસ્થાન સિવાયનુ કોઈ સંસ્થાન હોતું નથી. સંસ્થાન દ્વાર સમાપ્ત ॥૪॥

(૫) કષાયદ્વાર—"તેસિ ણં જીવાણં કઇ કસાયા પન્નત્તા" હે ભગવન્ ! આ સૂક્ષ્મ-પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં કેટલા કષાય છે ? કષાયનો અર્થ—જેઓ આત્માના સ્વભાવનો ઘાત કરે છે, તેમનુ નામ કષાય છે અથવા-જેમા જીવો અંદર એક બીજાની હિંસા કરે છે, તેનું નામ 'કષ' છે. એવો કષ આ સંસાર છે. એવા સંસારમાં જેના દ્વારા જીવનુ ભ્રમણ થાય છે, તે વસ્તુનુ નામ કષાય છે. જીવોના ક્રોધાદિ પરિણામ વિશેષો રૂપ આ કષાયો છે. આ જીવોમાં ક્રોધકષાય, માનકષાય, માયાકષાય અને લોભકષાય, આચારે કષાયો હોય છે એજ વાત સૂત્રકારે નીચેના સૂત્ર દ્વારા સમજાવી છે—"ગોયમા ! ચત્તારિ કસાયા પન્નત્તા—તંજહા-કોહકસાએ, માણકસાએ, માયાકસાએ, લોહકસાએ" અપ્રીતિ રૂપ પરિણામ

परिणामविशेषः, मानो गर्वपरिणामः, माया परवञ्चनात्मिका, लोभो गाद्ध्यलक्षणः । इमे च क्रोधादयश्चत्वार एतेषां मन्दपरिणामतया अनुपदर्शितबाह्यशरीरविकारा एवानाभोगतस्तथा तथा वैचित्र्येण भवन्तो ज्ञातव्याः । गतं पञ्चमं कषायद्वारम् ।

(६) अथ षष्ठं सञ्ज्ञाद्वारमाह—**'तेसि णं'** इत्यादि, **'तेसि णं भंते ? जीवाणं कइ सन्ना पन्नत्ता'** तेषां खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां कतिसंज्ञाः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम । **'चत्तारि सन्नाओ पन्नत्ताओ'** चतस्रः संज्ञाः प्रज्ञप्ताः—कथिता., चातुर्विध्यमेव दर्शयति **'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा-**'आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना'** आहारसंज्ञाः यावत् परिग्रहसंज्ञाः, यावत्पदेन भयमैथुनसञ्ज्ञयोः परिग्रहः । तत्र सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञा सा च द्विविधा—ज्ञानरूपा अनुभवरूपा च, तत्र ज्ञानरूपा सञ्ज्ञा

इस सूत्र पाठ द्वारा समझाई गई है । अप्रीति परिणाम विशेष का नाम क्रोध है गर्व परिणामका नाम मान है । पर को वञ्चन करने का जो परिणाम है—वह माया है । गृद्धता रूप जो परिणाम है वह लोभ है । ये कषायें इन जीवों में मन्द परिणामरूप में होती है अतः उनमें ये बाहर में शरीरादि विकार को प्रकट नहीं करती है । किन्तु अनाभोगरूप से ही ये वहां नानाकारी की विचित्रता रूप से होती रहती है । कषायद्वार समाप्त ।

(६) संज्ञाद्वार—**"तेसि णं भंते ! जीवाणं कई सन्नाओ पन्नत्ताओ"** हे भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों के कितनी सज्ञाएँ कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते है—**"गोयमा ! चत्तारि सन्नाओ पण्णत्ताओ**। हे गौतम ! चार सज्ञाएँ कही गई हैं। **"तं जहा"** जो इस प्रकार से है—**आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना "** आहारसज्ञा यावत् परिग्रहसज्ञा यहाँ यावत् पद से भयसंज्ञा और मैथुनसंज्ञा इन दो सज्ञाओ का ग्रहण हुआ है । सज्ञा दो प्रकार की होती है—एक ज्ञानरूप आर दूसरी अनुभव रूप, ज्ञानरूपसज्ञा, मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अव-

---

વિશેષનું નામ ક્રોધ છે, ગર્વ પરિણામને માન કહે છે. અન્યને છેતરવા રૂપ જે પરિણામ છે તેનું નામ માયા છે અને લાલસા રૂપ જે પરિણામ છે તેનું નામ લોભ છે. સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં આ ચારે કષાયો મંદ પરિણામ રૂપે હોય છે, તેથી તેમના આ કષાયો બાહ્ય શરીરાદિ વિકારોને પ્રકટ કરતા નથી, પરંતુ અનાભોગ રૂપે જ તેઓ ત્યાં વિવિધ પ્રકારની વિચિત્રતા રૂપે વિદ્યમાન રહે છે. ॥૫॥

(૬) સંજ્ઞાદ્વાર—**"तेसि णं भंते ! कइ सन्नाओ पन्नत्ताओ ?**, હે ભગવન્ ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં કેટલા પ્રકારની સંજ્ઞાઓ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—**"गोयमा !"** હે ગૌતમ ! **"चत्तारि सन्नाओ पण्णत्ताओ"** સંજ્ઞાઓ ચાર કહી છે. **"तंजहा'** તે નીચે પ્રમાણે છે—**"आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना"** (૧) આહાર સંજ્ઞા, (૨) ભય સંજ્ઞા, (૩) મૈથુન સંજ્ઞા અને (૪) પરિગ્રહ સંજ્ઞા, (અહીં 'યાવત્' પદથી ભય સંજ્ઞા અને મૈથુન સંજ્ઞા ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે). સંજ્ઞા બે પ્રકારની હોય છે-(૧) જ્ઞાન રૂપ અને (૨) અનુભવ રૂપ. જ્ઞાન રૂપ સંજ્ઞાના પાંચ ભેદ છે—મતિજ્ઞાન,

मतिश्रुतावधिमनःपर्यंयकेवलभेदात् पञ्चप्रकारा भवति, तत्र केवलसञ्ज्ञा क्षायिकी तदन्यास्तु क्षायोपशमिक्य । अनुभवसञ्ज्ञातु स्वकृतासातावेदनीयादिकर्मविपाकोदयजनिता इह प्रयोजनमनुभवसंज्ञया, ज्ञानसञ्ज्ञायास्तु प्रयोजनद्वारेणैव परिग्रहो भवतीति। चतसृषु सञ्ज्ञासु आहारसंज्ञा नाम आहारविषयिणी अभिलाषा क्षुद्वेदनीयप्रभवा आत्मपरिणामविशेषरूपा एषा हि आहारसञ्ज्ञा असातावेदनीयोदयादुपजायते । भयसञ्ज्ञा-भयमोहवेदनीयोदयजनित त्रासपरिणामरूपा । मैथुनसञ्ज्ञा वेदोदयप्रभवा मैथुनाभिलाषरूपा परिग्रहसञ्ज्ञा—लोभमोहनीयोदयजनितमूर्च्छापरिणामरूपा इति एता अपि सञ्ज्ञाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामव्यक्तरूपा एव प्रतिपत्तव्या इति षष्ठं सञ्ज्ञाद्वारम् ।

धिज्ञान, मनःपर्यंयज्ञान और केवलज्ञान के भेद से पांच प्रकार की होती है इनमें केवलज्ञान सज्ञा क्षायिकी है और बाकी चार संज्ञाएँ क्षायोपशमिकी है । अपने द्वारा किये गये आसातावेदनीय आदि कर्म के विपाकोदय से अनुभव संज्ञा उत्पन्न होती है यहाँ प्रयोजन अनुभव सज्ञा से होता है । तथा प्रयोजन द्वारा ही ज्ञान संज्ञाका परिग्रह होता है । आहार विषयक जो अभिलाषा है वह जो कि क्षुधावेदनीय कर्म के उदय से होती हैं और आत्मपरिणाम विशेषरूप होती है यह आहारसंज्ञा है । यह आहारसंज्ञा असातावेदनीय कर्म के उदय से होती है । भयसंज्ञा भय मोह वेदनीय के उदय से होती है और यह त्रास परिणामरूप होती है । मैथुनसज्ञा वेद के उदय से होती है और यह मैथुनसेवन करनेकी अभिलाषारूप होती है । परिग्रहसंज्ञा—लोभ मोहनीय के उदय से होती है और यह मूर्च्छापरिणामरूप होती है । ये संज्ञाएँ सूक्ष्मपृथिवी कायिक जीवों के अव्यक्त रूपमें ही होती है । संज्ञाद्वार समाप्त ।

શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મનઃપર્યયજ્ઞાન અને કેવળજ્ઞાન. આ પાંચમાંની કેવળજ્ઞાન સંજ્ઞા ક્ષાયિકી છે અને બાકીની ચાર સંજ્ઞાઓ ક્ષાયોપશમિકી છે પોતાના દ્વારા કરાયેલા અસાત.વેદનીય આદિ કર્મના વિપાકોદયને લીધે અનુભવ સંજ્ઞા ઉત્પન્ન થાય છે. અહીં પ્રયોજન અનુભવ સંજ્ઞા સાથે છે. તથા પ્રયોજન દ્વારા જ જ્ઞાન સંજ્ઞાનો પરિગ્રહ થાય છે

આહાર વિષયક અભિલાષા કે જે ક્ષુધાવેદનીય કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે અને જે આત્મપરિણામવિશેષ રૂપ હોય છે, તેનું નામ આહાર સંજ્ઞા છે. આ આહાર સંજ્ઞા અસાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે. ભય મોહવેદનીયના ઉદયથી ભયસંજ્ઞા થાય છે અને તે ત્રાસપરિણામ રૂપ હોય છે મૈથુન સંજ્ઞા વેદના ઉદયથી થાય છે અને તે મૈથુન સેવન કરવાની અભિલાષા રૂપ હોય છે. પરિગ્રહ સંજ્ઞા લોભમોહનીયના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે, અને તે મૂર્ચ્છા (લાલસા) પરિણામ રૂપ હોય છે. આ ચારે સંજ્ઞાઓ સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિક જીવોમાં અવ્યક્ત રૂપેજ રહેલી હોય છે

સંજ્ઞાદ્વાર સમાપ્ત ॥૬॥

(७) अथ सप्तमं लेश्याद्वारमाह-'तेसि णं' इत्यादि, 'तेसि णं भंते? जीवाणं कइ-लेस्साओ पन्नत्ताओ' तेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त । जीवानां कतिलेश्याः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि,'गोयमा' हे गौतम 'तिन्नि लेस्साओ पन्नत्ताओ' तिस्रो लेश्याः प्रज्ञप्ताः-कथिताः 'तं जहा' तद्यथा 'कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा' कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या, लिश्यति-श्लिष्यते कर्मणा सहात्मा अनया इति लेश्या कृष्णादि द्रव्यसाहाय्यादात्मनः शुभाशुभपरिणामात्मिका ।

तदुक्तम्—कृष्णादि द्रव्यसाचिव्यात् परिणामो य आत्मनः ।
स्फटिकस्येव तत्रायं लेश्याशब्दः प्रवर्तते ॥ इति ।

सा च लेश्या षट् प्रकारा भवति तद्यथा-कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या च ६। एतासां लेश्यानां स्वरूपं जम्बूफलभक्षकषट्पुरुषदृष्टान्तेन ज्ञातव्यम् ।

(७) लेश्याद्वार कथन-"तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ "हे भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों के कितनी लेश्याएँ कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! तिन्नि लेस्साओ पन्नत्ताओ "हे गौतम ! इन जीवों के आदि की तीन लेश्याएं होती हैं-"तंजहा" जो इस प्रकार से हैं-"कण्हलेस्सा, नीललेस्सा काउलेस्सा" कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या जिसके द्वारा आत्मा कर्म के साथ बन्धाया जाता है वह लेश्या है यह लेश्या आदि द्रव्य की सहायता से स्फटिक मणिकी तरह आत्माके शुभ अशुभ परिणामरूप होती है-कहा भी है-'कृष्णादि द्रव्यसाचिव्यात्' इत्यादि

यह लेश्या छ प्रकार की होती है-कृष्णलेश्या, नीललेश्या कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या । इन लेश्याओं का स्वरूप जामुनको खानेवाले छ पुरुषो के दृष्टान्तसे जाना

(७) લેશ્યાદ્વાર "तेसिं णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ ?" હે ભગવન્ ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી લેશ્યાઓ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—'गोयमा ! तिन्नि लेस्साओ पन्नत्ताओ-तंजहा-कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा' હે ગૌતમ ! તે જીવોમાં નીચે પ્રમાણેની ત્રણ લેશ્યાઓનો સદ્ભાવ હોય છે-(૧) કૃષ્ણલેશ્યા, (૨) નીલલેશ્યા, (૩) કાપોત લેશ્યા.

જેના દ્વારા આત્માનો કર્મની સાથે સબંધ થાય છે, તેને લેશ્યા કહે છે-તે લેશ્યા કૃષ્ણ આદિ દ્રવ્યની સહાયતાથી સ્ફટિક મણિની જેમ આત્માના શુભઅશુભ પરિણામ રૂપ હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—"कृष्णादि द्रव्यसाचिव्यात्" ઈત્યાદિ આ લેશ્યાના નીચે પ્રમાણે છ પ્રકારો છે (૧) કૃષ્ણલેશ્યા, (૨) નીલલેશ્યા, (૩) કાપોત લેશ્યા, (૪) તેજો લેશ્યા, (૫) પદ્મ લેશ્યા અને (૬) શુકલ લેશ્યા. આ લેશ્યાઓનું સ્વરૂપ જાંબુ ખાનારા છ પુરુષોના દૃષ્ટાંતથી જાણી શકાય છે તે દૃષ્ટાંત નીચે પ્રમાણે છે—

'पंथाओ परिभट्ठा छप्पुरिसा अडवीमज्झभागंमि ।
जंबूतरुस्स हेट्ठा परोप्परं ते विचिंते ति' ॥१॥
निम्मूलखंधसाला गोच्छे पक्केय पडिय पडियाइं ।
जह एएसिं भावा तह लेस्साओ वि नायव्वा ॥२॥
छाया—पथः परिभ्रष्टाः षट्पुरुषा अटवी मध्यभागे ।
जम्बूतरोरधस्तात् परस्परं ते विचिन्वन्ति ॥१॥

निर्मूलं स्कन्धं शखान् प्रशाखान् गुच्छान् (छित्वा) पक्वानि पतितशटितानि (भक्षयामः) यथैतेषां भावा स्तथालेश्या अपि ज्ञातव्या इच्छाया ।

एके वदन्ति समूलो वृक्षः छेत्तव्यः इति, अन्यः स्कन्धमात्र छेत्तव्यम्, तदन्यः—शाखा छेत्तव्या, गुच्छछेत्तव्यमिति तदन्यः पक्वं पतित भक्षणार्थमिति षष्ठो वदति एतदृष्टान्तेन लेश्या

जा सकता है जैसे—'पंथाओ परिब्भट्ठा छप्पुरिसा' इत्यादि ।

कोई छ पुरुष रास्ता भूलकर किसी एक जंगलमें आये । वहां पर वे एक जामुन के वृक्ष के नीचे बैठ गये और आपस में इस प्रकार से बात-चीत करने लगे जामुन फलो से लदा हुआ है—अतः एक कहने लगा—इस वृक्षको जड़मूल से उखाड देना चाहिये ताकि मनमाने जामुन खाये जा सके १, दूसरा कहने लगा पूरा वृक्ष उखाड़ने में क्या फायदा है—इसे स्कन्धभाग से ही काट देना चाहिये ताकि शाखाएं—प्रशाखाएं सब गिर जावेगी और उनमें लगे हुए जामुन यथेच्छ खाये जा सकेंगे २, तीसरा कहने लगा—स्कन्ध से काटने में अपने को कोई लाभ नहीं है—जिनशाखाओ में जामुन लगे हुए है उन्हें ही केवल काट लेना चाहिये इससे अपने मनोरथ की सिद्धि हो जावेगी ३। चौथा कहने लगा— शाखाएं व्यर्थ में क्यो काटी जावे केवल जामुन के जो गुच्छे लटक रहे है उन्हें ही काट लिया जावे और खूब जामुन खाया

"पंथाओ परिब्भट्ठा छप्पुरिसा" ઇત્યાદિ--

ભૂલા પડેલા કોઈ છ પુરુષો કોઈ એક જંગલમાં જઈ પહોંચ્યા. ત્યાં તેમણે એક જાંબુનું ઝાડ જોયું. તેઓ તે ઝાડની નીચે બેસીને આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા-જાંબુ પર ખૂબજ જાંબુ પાકયાં છે એકે કહ્યુ-આ ઝાડને જડમૂળમાંથી ઉખેડી નાખવું જોઈએ, તો જ આપણે તૃપ્તિ થાય એટલાં જાંબુ ખાઈ શકશું" બીજા પુરુષે કહ્યુ-"આ ઝાડને જડમૂળમાંથી ઉખેડવાની શી જરૂર છે? તેને થડમાંથી જ કાપી નાખવું જોઈએ. એમ કરવાથી તેની શાખાઓ અને પ્રશાખાઓ પડી જશે અને તેમની ઉપર લાગેલાં જાબું આપણે ઇચ્છા અનુસાર ખાઈ શકશું."

ત્રીજા પુરુષે કહ્યું--"થડને કાપવાની શી જરૂર છે? જે શાખાઓ પર જાબુ લાગ્યાં છે, તે શાખાઓને કાપી નાખવાથી આપણી અભિલાષા સિદ્ધ થશે"

ચોથા પુરુષે કહ્યું—"શાખાઓને કાપવાની શી જરૂર છે? જાંબુનાં જે ગુચ્છો ડાળીઓ પર લાગ્યાં છે, તેમને કાપી લેવાથી પણ આપણે તે જાંબુ ખાઈ શકીશું."

ज्ञातव्येति–एतेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामतिसंक्लिष्टपरिणामत्वाद् देवानां सूक्ष्मेषु अनुत्पादाच्चाद्या एव तिस्रो लेश्याः कृष्णनीलकापोताख्या भवन्तीति सप्तमं लेश्याद्वारम् ॥

गतं सप्तमं लेश्याद्वारम्, अथाष्टममिन्द्रियद्वारमाह—**'तेसि णं भंते'** जीवाण, मित्यादि ।

'तेसि णं भंते जीवाणं कइ इंदियाइं पन्नत्ताइं' तेषां खलु भदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां कतीन्द्रियाणि प्रज्ञप्तानि–कथितानीति, तत्रेन्द्रियं नाम इन्दनादिन्द्रः आत्मा सर्वोपलब्धिरूपपरमैश्वर्ययोगात् तस्य आत्मनो लिङ्गं चिन्हं बोधकमिति इन्द्रियम्, तदिन्द्रियं पञ्चप्रकारकम्

जावे । ४, पाँचवां कहने लगा–गुच्छे ही क्यो काटे जावे– उसमें जो पके हुए जामुन लगे हैं वे ही गिराकर खा लिये जावें ५, छठा कहने लगा पके हुए जामुनो को गिरानेसे तो कच्चे जामुन भी गिर जायेंगे अतः जो ये पके २ जामुन नीचे पड़े हुए हैं उन्हें ही उठाकर खा लेना चाहिये ६, इस दृष्टान्त से परिणामो का ज्ञान हो जाता है और इसी से लेश्याओ के स्वरूप (भाव) भी ज्ञात हो जाते है । ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव अतिसंक्लिष्ट परिणामवाले होते हैं । देवो की इनमें उत्पत्ति नहीं होती है । इसलिये यहाँ आदि की ये तीन–कृष्ण, नील, कापोत–लेश्याए होती हैं । लेश्याद्वार समाप्त ।

(८) इन्द्रियद्वार—**"तेसि णं भंते! जीवाणं कइ इंदियाइं पन्नत्ताइं"** हे भदन्त ! इन सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवो के कितनी इन्द्रियां होती हैं । इन्द्र नाम आत्मा का है–क्योंकि सर्वोपलब्धिरूप ऐश्वर्य का इसके योग है । इसलिये 'इन्दनात् इन्द्रः' ऐसी व्युत्पत्ति इसमें घटित होजाती है । उस आत्मा का जो लिङ्ग–चिह्न–है वह इन्द्रिय हैं यह इन्द्रिय पांच

'પાંચમા પુરુષે કહ્યું—'જાંબુના ગુચ્છાઓ કાપવાની શી જરૂર છે? ગુચ્છાઓમાંથી માત્ર પાકાં જાંબુને જ તોડી લેવા જોઈએ"

છઠ્ઠા પુરુષે કહ્યું -"પાકાં જાંબુને નીચે પાડવા જઈશું, તો કાચાં જાંબુ પણ નીચે તૂટી પડશે, તે કરતાં જમીન પર પડેલા પાકાં જાંબુ જ આપણે વીણીને ખાવાં જોઈએ."

આ દૃષ્ટાંત દ્વારા પરિણામોનું જ્ઞાન થઈ જાય છે અને તેના દ્વારા લેશ્યાઓનું સ્વરૂપ (ભાવ) પણ જાણી શકાય છે

આ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો અતિ સંકિલષ્ટ પરિણામવાળા હોય છે. દેવલોકમાંથી ચ્યવેલા જીવોની તેમાં ઉત્પત્તિ થતી નથી. તેથી આ જીવોમાં પહેલી ત્રણ-કૃષ્ણ, નીલ અને કાપોત-લેશ્યાઓનો જ સદ્ભાવ હોય છે લેશ્યા દ્વાર સમાપ્ત ॥૭॥

(૮) ઇન્દ્રિયદ્વાર—**तेसि णं भंते! जीवाणं कइ इंदियाइं पन्नत्ताइं ?"** હે ભગવાન્! આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોને કેટલી ઇન્દ્રિયો હોય છે? ઇન્દ્ર એટલે આત્મા, કારણ કે સર્વોપલબ્ધિરૂપ ઐશ્વર્યથી તે સંપન્ન છે તેથી 'इन्दनात् इन्द्रः'' આ પ્રકારની તેની વ્યુત્પત્તિ થાય છે. તે આત્માનું જે લિંગ-(ચિહ્ન) છે, તેનું નામ ઇન્દ્રિય છે. તે ઇન્દ્રિયના નીચે

श्रोत्रेन्द्रियं चक्षुरिन्द्रियं रसनेन्द्रियं घ्राणेन्द्रियं स्पर्शनेन्द्रियं च पुनरपि इन्द्रियमेकैकं द्विप्रकारकं द्रव्येन्द्रियं भावेन्द्रियं च द्रव्येन्द्रियमपि द्विप्रकारकं निर्वृत्तिरूपमुपकरणरूपं च तत्र निर्वृत्तिर्नाम प्रतिविशिष्टः संस्थानविशेषः। निर्वृत्तिरपि द्विधा बाह्याऽऽभ्यन्तरा च, तत्र बाह्या कर्णपर्पटिकादिरूपा सा च विचित्रा न प्रतिनियतरूपतया निर्देष्टुं शक्या तथाहि—मनुष्यस्य श्रोत्रे नेत्रयोरुभयपार्श्वभाविनी, भ्रुवौ चोपरितनश्रवण बन्धापेक्षया समे। वाजिनां श्रोत्रे नेत्रयो रुपरि तीक्ष्णाग्रभागयुक्ते भवतः इत्यादि, आभ्यन्तरा निर्वृत्तिस्तु सर्वेषामेकरूपैव, आभ्यन्तरां निर्वृत्तिमधिकृत्यैव एतानि सूत्राणि भवन्ति '**सोइंदिए णं भंते ! किं संठाणसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा। कलंबुया संठाणसंठिए पन्नत्ते, चक्खिदि-**

प्रकार की है—श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय। इनमें भी एक २ इन्द्रिय द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय के भेद से दो दो प्रकार की है। द्रव्येन्द्रिय भी निर्वृत्ति और उपकरण के भेद से दो प्रकार की हैं। प्रतिविशिष्ट संस्थान विशेष का नाम निर्वृत्ति है। निर्वृत्ति भी बाह्य निर्वृत्ति और आभ्यन्तर निर्वृत्ति के भेद से दो प्रकार की होती है। कान की झिल्ली आदि रूप बाह्य निर्वृत्ति होती है। यह बाह्य निर्वृत्ति नाना प्रकार की होती है। अतः प्रतिनियत रूप से यह कही नहीं जासकती है। जैसे—मनुष्य के श्रोत्र और उसके नेत्र की दोनों तरफ की भौहें ये दोनो कान के उपरितन बन्धकी अपेक्षा समान होती है। और घोड़ों के कान उनके दोनों नेत्रो के उपर तीक्ष्ण अग्रभागवाले होते हैं। इत्यादि आभ्यन्तर निर्वृत्ति सब जीवों की समान—एक रूप—ही होती है। ये सूत्र आभ्यन्तर निर्वृत्ति को लेकर ही कहे गये हैं—"**सोइंदिए णं भंते ! किं संठाणसंठिए पण्णत्ते**" हे भदन्त ! श्रोत्रेन्द्रिय का आकार कैसा कहा गया है ? "**गोयमा ! कलंबुया संठाणसंठिए पन्नत्ते**" हे गौतम ! कदम्बपुष्प के

પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર છે—(૧)શ્રોત્રેન્દ્રિય (૨) ચક્ષુરિન્દ્રિય, (૩) ઘ્રાણેન્દ્રિય, (૪) રસનેન્દ્રિય, (૫)સ્પર્શેન્દ્રિય. તે પ્રત્યેક ઇન્દ્રિયના દ્રવ્યેન્દ્રિય અને ભાવેન્દ્રિય નામના બબ્બે ભેદ પડે છે દ્રવ્યેન્દ્રિયના નીચે પ્રમાણે બે ભેદ કહ્યા છે-(૧) નિર્વૃત્તિ અને (૨) ઉપકરણ પ્રતિવિશિષ્ટ સંસ્થાવિશેષનું નામ નિર્વૃત્તિ છે. નિર્વૃત્તિના પણ નીચે પ્રમાણે બે ભેદ છે—(૧) બાહ્ય નિર્વૃત્તિ. (૨) આભ્યન્તર નિવૃત્તિના. કાનની ઝિલ્લી ( ) આદિ રૂપ બાહ્યનિર્વૃત્તિ હોય છે. તે બા ્યનિર્વૃત્તિ વિવિધ પ્રકારની હોય છે, તેથી તેને કોઇ ચોક્કસ રૂપે વર્ણવી શકાય તેમ નથી. જેમ કે માણસના કાન અને તેની આંખોની બન્ને તરફની ભમરો, આ બન્ને કાનના ઉપરિના બન્ધની અપેક્ષાએ સમાન હોય છે, અને ઘોડાના કાન તેની બન્ને આંખો ઉપર તીક્ષ્ણ અગ્રભાગવાળા હોય છે.

સઘળા જીવોની આભ્યતર નિવૃત્તિ એક સરખી જ હોય છે. આસૂત્રો આભ્યંતર નિર્વૃત્તિનું જ પ્રતિપાદન કરે છે.

ગૌતમસ્વામીનો પ્રશ્ન—"**सोइंदिए णं भंते ! किं संठाणसंठिए पण्णत्ते ?**" હે ભગવન્!

एणं भंते । किं संठाणसंठिए पन्नत्ते गोयमा मसूरचंदसंठाणसंठिए पन्नत्ते घाणिंदिए णं भंते किं संठाणसंठिए पन्नत्ते । गोयमा । अइमुत्तसंठाणसंठिए पन्नत्ते जिब्भिंदिए णं भंते किं संठाणसंठिए पन्नत्ते, गोयमा खुरप्पसंठाणसंठिए पन्नत्ते फासिंदिए णं भंते कि संठाणसंठिए पन्नत्ते गोयमा नाणासंठाणसंठिए पन्नत्ते' इति ॥ अत्र स्पर्शनेन्द्रियस्य बाह्याभ्यन्तरभेदो नास्ति । उपकरणं नाम खड्गस्थानीयायाः बाह्यनिर्वृत्तेर्या खड्गधारा स्थानीया स्वच्छतरपुद्गलसमुदायरूपा आभ्यन्तरनिर्वृत्तिस्तस्याः शक्तिविशेषः । इदं चोपकरणरूपं द्रव्येन्द्रियमान्तरनिर्वृत्तेः कथंचिद् भिन्नं शक्तिशक्तिमतोः कथञ्चिद् भेदात् कथञ्चिद् भेदस्तु इत्थम्—विद्यमानामपि तस्यामान्तरनिर्वृत्तौ द्रव्यादिनोपकरणस्योपघातदर्शनात्, तथाहि—विद्यमानायामपि कदम्बपुष्पाद्याकाररूपायामान्तरनिर्वृत्तौ कठोरतरघनगर्जनादिना शक्तिविनाशे शब्दपरिच्छेदादर्शनादिति । भावेन्द्रियमपि द्विधा—लब्धिः उपयोगश्च, तत्र लब्धिः श्रोत्रेन्द्रियादिविषयकः

समान श्रोत्रेन्द्रियका संस्थान कहा गया है। "चक्खिदिए णं भंते !इत्यादि । चक्षुरिन्द्रिय से लेकर स्पर्शे-न्द्रिय तकके सूत्रों का अर्थ स्पष्ट है। खड्गस्थानीय बाह्य निर्वृति की जो खड्गधारास्थानीय स्वच्छ तर पुद्गलरूप आभ्यन्तर निर्वृत्ति है । उसका जो शक्तिविशेष है । वह उपकरण द्रव्येन्द्रिय है। यह उपकरणरूप द्रव्येन्द्रिय आन्तर निर्वृत्ति से कथञ्चित् भिन्न होती है । क्योंकि शक्ति और शक्ति मान में कथञ्चित् भिन्नता होती ही है । उसमें कथञ्चित् भेद इस प्रकार से है—कदम्ब पुष्पादि के आकार रूप आन्तर निर्वृत्ति के होते हुए भी अत्यन्त कठोर घनगर्जनादि से श्रवण शक्ति का नाश हो जाने पर शब्दज्ञान का अभाव देखा जाता है । भावेन्द्रिय भी लब्धि और उपयोग के भेद से दो प्रकार की होती है । उनमें लब्धिभावेन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रियादिविषयक और तदावरण क्षयोपशमरूप होती है। और अपने अपने विषय में लब्धिके अनुसार आत्मा

શ્રોત્રેન્દ્રિયનો આકાર કેવો કહ્યો છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा ! कलंबुया संठाणसंठिए पण्णत्ते" હે ગૌતમ ! શ્રોત્રેન્દ્રિયનો આકાર કદંબ પુષ્પ સમાન કહ્યો છે.

પ્રશ્ન—'चक्खिदिएणं भंते !' ઈત્યાદિ ચક્ષુઇન્દ્રિયથી લઈ ને સ્પર્શેન્દ્રિય સુધીનાં સૂત્રોનો અર્થ સ્પષ્ટ છે

ખડ્ગસ્થાનીય બાહ્યનિર્વૃત્તિની જે ખડ્ગધારાસ્થાનીય સ્વચ્છતર પુદ્ગલ રૂપ આભ્યન્તર નિર્વૃત્તિ છે તેની જે શક્તિવિશેષ છે, તેનું નામ ઉપકરણ દ્રવ્યેન્દ્રિય છે. આ ઉપકરણ રૂપ દ્રવ્યેન્દ્રિય આન્તરનિર્વૃત્તિ કરતાં સહેજ ભિન્ન હોય છે, કારણ કે શક્તિ અને શક્તિમાનમાં સહેજ ભિન્નતા હોય છે. તેમાં સહેજ ભેદ આ પ્રમાણે છે-કદંબપુષ્પના આકારવાળી બાહ્ય-નિર્વૃત્તિનો સદ્ભાવ હોવા છતાં પણ અત્યંત કઠોર મેઘગર્જના આદિ વડે શ્રવણશક્તિનો નાશ થઈ જવાને લીધે શબ્દજ્ઞાનનો અભાવ થઈ જતો હોય છે ભાવેન્દ્રિય પણ લબ્ધિ અને ઉપયોગના ભેદથી બે પ્રકારની હોય છે તેમાંની લબ્ધિભાવેન્દ્રિય શ્રોત્રેન્દ્રિય આદિ વિષયક અને તદાવરણ ક્ષયોપશમ રૂપ હોય છે. પોત પોતાના વિષયમાં લબ્ધિ પ્રમાણે

तदावरणक्षयोपशमरूपः, उपयोगः स्वस्वविषये लब्ध्यनुसारेणात्मनः परिच्छेदव्यापारः। तत्र यद्यपि द्रव्यभावभेदेनेन्द्रियमनेकप्रकारकं भवति तथापि अत्र बाह्यनिर्वृत्तिरूपमिन्द्रियमेव प्रश्न विषयः तदेवाधिकृत्य व्यवहारप्रवृत्तिदर्शनात्, तथाहि—बकुलादयो वृक्षविशेषाः पञ्चेन्द्रिया इव भावेन्द्रियपञ्चकविज्ञानसमन्विता अनुमानतः प्रतीयन्ते, तथापि बकुलादीनां पञ्चेन्द्रियव्यवहारो न भवति बाह्येन्द्रिय पञ्चकाभावादिति ।

उक्तञ्च—'पंचिंदिओ उ बउलो, नरोव्व सव्वविसओवलंभाओ।
तहवि न भण्णइ पंचिंदियत्ति बज्झिंदिया भावा' ॥१॥

छाया—पञ्चेन्द्रियस्तु बकुलो नर इव सर्वविषयोपलम्भात्।
तथापि न भण्यते पञ्चेन्द्रिय इति बाह्येन्द्रियाभावात् ॥१॥

इति बाह्येन्द्रियविषयक एव प्रश्नः, द्रव्येन्द्रियमधिकृत्यैव उत्तरयति भगवान्—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम। **'एगे फासिंदिए पन्नत्ते,** एकं स्पर्शनेन्द्रियमेव सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां प्रज्ञप्तं कथितमिति अष्टममिन्द्रियद्वारम् ॥

का जो ज्ञानव्यापार है वह उपयोग भावेन्द्रिय हैं। उनमें यद्यपि द्रव्यरूप और भावरूप इसप्रकार इन्द्रिय अनेक प्रकार की होती है तो भी यहाँ बाह्यनिर्वृत्ति रूप इन्द्रिय विषय का ही प्रश्न है अतः उसीको अधिकृतकरके व्यवहार प्रवृत्ति देखी जाती है। जैसे बकुलादिवृक्ष विशेषों में पञ्चेन्द्रिय प्राणी मनुष्य की तरह पांचों भावेन्द्रियो का विज्ञान अनुमान से प्रतीत होने पर भी उनमें पांच बाह्येन्द्रियो का अभाव होने से पञ्चेन्द्रियत्व का व्यवहार नहीं होता है जैसे कहा है–**'पंचिंदिओ उ'** इत्यादि। इसलिये यहां बाह्येन्द्रिय विषयक ही प्रश्न है। द्रव्येन्द्रिय को ही अधिकृत करके भगवान् उत्तर देते है।–**"गोयमा"** इत्यादि। **'गोयमा'** हे गौतम! **'एगे फासिंदिए पण्णत्ते'** उन सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवो के केवल एक स्पर्शेन्द्रिय ही कही गई है।

यह इन्द्रियद्वार समाप्त हुआ।

આત્માને જે જ્ઞાન વ્યાપાર છે, તે ઉપયોગ ભાવેન્દ્રિય છે. જો કે દ્રવ્યરૂપ, ભાવરૂપ આદિ પ્રકારે ઈન્દ્રિયો અનેક પ્રકારની હોય છે, પરન્તુ અહીં તો બાહ્યનિર્વૃત્તિ રૂપ ઈન્દ્રિયના સંબંધમાં જ વાત ચાલી રહી છે, તેથી તેને જ અનુલક્ષીને વ્યવહાર પ્રવૃત્તિ જોવામાં આવે છે. જેમકે બકુલાદિ વૃક્ષ વિશેષોમા પંચેન્દ્રિય પ્રાણી મનુષ્યની જેમ પાંચે ભાવેન્દ્રિયોનું વિજ્ઞાન અનુમાન દ્વારા અનુભવી શકાતું હોવા છતાં પણ તેમનામાં પાંચ બાહ્યેન્દ્રિયોનો અભાવ હોવાથી પંચેન્દ્રિયત્વનો વ્યવહાર થતો નથી. કહ્યુ પણ છે કે— "પંચિંદિઓ ઉ" ઈત્યાદિ. તેથી અહીં બાહ્યઈન્દ્રિયવિષયક જ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, એમ સમજવું દ્રવ્યેન્દ્રિયને જ અનુલક્ષીને મહાવીર પ્રભુ ઉત્તર આપે છે કે–**"ગોયમા!"** ઈત્યાદિ **"ગોયમા!"** હે ગૌતમ! **'એગે ફાસિંદિએ પણ્ણત્તે"** આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોમાં માત્ર એક સ્પર્શેન્દ્રિયનો જ સદ્ભાવ હોય છે. ઈન્દ્રિયદ્વાર સમાપ્ત ॥૮॥

अथ नवमं समुद्घात द्वारमाह–'तेसि णं भंते जीवाणं' इत्यादि, 'तेसि णं भंते जीवाणं कइसमुग्घाया पन्नत्ता' तेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त । जीवानां 'कइ समुग्घाया पन्नत्ता, तेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त । कति–कियत्संख्यकाः समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः कथिताः, तत्र समुद्घाताः सप्त भवन्ति, तथाहि–वेदनासमुद्घातः १, कषायसमुद्घातः २, मारणान्तिकसमुद्घातः ३, वैक्रियसमुद्घातः ४, तैजससमुद्घातः ५, आहारकसमुद्घातः ६, केवलिसमुद्घातश्च ७ । तत्र वेदनायाः समुद्घातो वेदनासमुद्घातः सोऽयं समुद्घातोऽसाता वेदनीयकर्माश्रयः । कषायेण–कषायोदयेन समुद्घातःकषायसमुद्घातः स च कषायचारित्रमोहनीयकर्माश्रयः । मरणे भवो मारणः स चासौ समुद्घातश्च मारणसमुद्घातः । वैक्रिये प्रारभ्यमाणे समुद्घातो वैक्रियसमुद्घातः स च वैक्रिय शरीरनामकर्माश्रयः । तैजसेन कारणभूतेन समुद्घातः तैजस समुद्घातः तैजसशरीरनामकर्माश्रयः । आहारके प्रारभ्यमाणे समुद्घातः आहारकसमुद्घातः सचा-

---

(९) अब समुद्घातद्वार कहते है–"तेसि णं" इत्यादि । 'तेसि णं भंते जीवाण कइ समुद्घाया पण्णत्ता' हे भगवन् उन सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के कितने समुद्घात होते है ?।

समुद्घात सात होते है जैसे–वेदनासमुद्घात १, कषायसमुद्घात, २, मारणान्तिकसमुद्घात ३, वैक्रियसमुद्घात ४, तैजससमुद्घात ५, आहारकसमुद्घात ६, और केवलिसमुद्घात ७। उनमें वेदना का समुद्घात वेदनासमुद्घात कहा जाता है यह समुद्घात आशाता वेदनीय-कर्म के आश्रय वाला होता है १। कषाय के उदय से जो समुद्घात होता है वह कषायसमुद्घात है, वह कषाय चारित्रमोहनीय कर्म के आश्रय से होता है २। मरण समय में होनेवाला मारणान्तिकसमुद्घात है ३। वैक्रिय के प्रारंभ होने पर जो समुद्घात होता है वह वैक्रियसमुद्घात है, यह वैक्रिय शरीर नामकर्म के आश्रय से होता है ४। तैजस के कारण से जो समुद्घात होता है वह तैजससमुद्घात है, यह तैजस शरीर नामकर्म के आश्रय वाला होता है ५।

---

(૯) સમુદ્ઘાત દ્વાર—"तेसि णं" ઈત્યાદિ—

પ્રશ્ન—तेसिं णं भंते ! जीवाणं कइ समुद्घाया पण्णत्ता। હે ભગવન્ !" આ સૂક્ષ્મ-પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં કેટલા સમુદ્ઘાત હોય છે ?

સમુદ્ઘાત સાત પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) વેદના સમુદ્ઘાત, (૨) કષાય સમુદ્ઘાત, (૩) મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત, (૪) વૈક્રિય સમુદ્ઘાત, (૫) તૈજસ સમુદ્ઘાત, (૬) આહારા સમુદ્ઘાત અને (૭) કેવલિ સમુદ્ઘાત.

વેદના રૂપ જે સમુદ્ઘાત છે, તેને વેદના સમુદ્ઘાત કહે છે આ સમુદ્ઘાત અશાતા-વેદનીય કર્મને કારણે થાય છે કષાયના ઉદયથી જે સમુદ્ઘાંત થાય છે, તે કષાય સમુઘાત છે તે કષાયચારિત્ર મોહનીય કર્મને અધીન હોય છે મરણ સમયે થનારા સમુદ્ઘાતને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કહે છે વૈક્રિયનો પ્રારંભ થતાં જે સમુદ્ઘાત થાય છે તેને વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કહે છે, તે વૈક્રિય શરીર નામકર્મને અધીન હોય છે તૈજસને કારણે જે સમુદ્ઘાત થાય છે, તેને તૈજસ સમુદ્ઘાત કહે છે. તે તૈજસ શરીર નામકર્મને અધીન હોય છે.

हारकशरीरनामकर्माश्रयः। केवलिनि अन्तर्मुहूर्तभाविपरमपदे समुद्घातः केवलिसमुद्घातः। समिति एकीभावे उत् प्राबल्ये एकीभावेन प्राबल्येन घात इति समुदघातः, केन सह एकीभावगमनम् तत्रोच्यते वेदनादिभिः सह। यदा आत्मा वेदनादिसमुदघातगतो भवति तदा वेदनाद्यनुभवज्ञानपरिणत एव भवति नान्यज्ञानपरिणतः। प्राबल्येन घातः कथं भवति तत्रोच्यते—वेदनादिसमुद्घातपरिणत आत्मा बहून् वेदनीयादि कर्मपुद्गलान् कालान्तरानुभवयोग्यान् उदीरणाकरणेनादाय(आकृष्य) उदयावलिकायां निक्षिप्य अनुभूयानुभूय निर्जरयति आत्मप्रदेशेभ्यः शातयति। तत्र प्रथम वेदना समुद्घात गतो जीवो वेदनीयकर्मपरमाणुपरिशातं करोति, तथाहि—वेदनाकरालित आत्मा स्वप्रदे-

---

आहारक शरीर के प्रारंभ होने पर जो समुद्घात होता है वह आहारक समुद्घात है, यह आहार शरीर नामकर्म के आश्रय से होता है ६। अन्तर्मुहूर्त्त में प्राप्त होने वाले परमपद मोक्षके समय जो समुद्घात होता है वह केवलिसमुद्घात है ७। सम्—एकीभाव से उत्—प्रावल्य से जो घात है वह समुदघात कहलाता है। यह एकीभाव किसके साथ होता है, सो कहते है वेदना आदि के साथ होता है। अर्थात् आत्मा जब वेदना आदि समुद्घात को प्राप्त होता है तब वह एकीभाव से केवल वेदना आदि के अनुभव ज्ञान में ही परिणत होता है किन्तु उस समय वह आत्मा अन्य अनुभव ज्ञान में परिणत नहीं होता है। प्रावल्य से घात कैसे होता है? उसके उत्तर में कहते है—वेदना आदि समुद्घात परिणत आत्मा बहुतर वेदनीयादिकर्मपुद्गलो जो कि आगे कालान्तर में अनुभवनीय—अनुभव में आनेवाले हैं अभी नहीं उन वेदनीयादि कर्मपुद्गलो को उदीरणाद्वारा खींच कर उदयावलिका में लाकर अनुभव करके

આહારક શરીરનો પ્રારંભ થતા જે સમુદ્ઘાત થાય છે, તેનું નામ આહારક સમુદ્ઘાત છે, અને તે આહાર શરીર નામકર્મને અધીન હોય છે. અંતર્મુહૂર્તમાં પ્રાપ્ત થનાર પરમપદ મોક્ષને સમયે જે સમુદ્ઘાત થાય છે, તેને કેવલિ સમુદ્ઘાત કહે છે

"सम्" એકાગ્ર ભાવથી, "उत्" પ્રબળતા પૂર્વક જે ઘાત થાય છે, તેનું નામ સમુદ્ઘાત છે. આ એકાગ્રભાવ કોની સાથે થાય છે, તે પ્રકટ કરવામાં આવે છે—તે એકાગ્રભાવ વેદના આદિની સાથે થાય છે. એટલે કે આત્મા જ્યારે વેદના આદિ સમુદ્ઘાતથી યુક્ત થાય છે ત્યારે તે એકાગ્ર ભાવથી માત્ર. વેદના આદિના અનુભવ જ્ઞાનમાં જ પરિણુત થાય છે, એટલે કે ત્યારે તે આત્મા અન્ય અનુભવ જ્ઞાનમા પરિણુત થતો નથી.

પ્રબળતા પૂર્વક ઘાત કેવી રીતે થાય છે, તે હવે સમજાવવામાં આવે છે—

વેદના આદિ સમુદ્ઘાત પરિણુત આત્મા, કાળાન્તરે અનુભવનીય (હાલમાં જેનું વેદન કરવાનું નથી પણુ અમુક કાળ વ્યતીત થયા બાદ જેનું વેદન કરવાનું છે એવાં) વેદનીય આદિ કર્મપુદ્ગલોને ઉદીરણુા દ્વારા ખેંચીને ઉદયાવલિકામાં લાવીને તેમનું વેદન કરીને તેમનો ઘાત (નાશ) કરી નાખે છે-તેમને આત્મપ્રદેશોમાંથી અલગ કરી નાખે છે. તેનું નામ જ પ્રબળતા પૂર્વકનો ઘાત છે.

शानन्तानन्तकर्मपरमाणुपरिवेष्टितान् शरीराद्बहिरपि प्रक्षिपति तैश्च प्रदेशैर्वदनजघनादि छिद्राणि कर्णस्कन्धाद्यन्तरालानि च परिपूर्य्य आयामतो विस्तरतश्च शरीरमात्रं क्षेत्रमभिव्याप्य अन्तर्मुहूर्त्तं यावदवस्थितो भवति तस्मिन्नन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणकाले बहूनामसातावेदनीयकर्मपुद्गलानां परिशातं करोति । कषायसमुद्घातसमुद्घातः कषायाख्यचारित्रमोहनीयकर्मपुद्गलानां परिशातं करोति तथाहि-कषायोदयसमाकुल आत्मा स्वदेशान् वहिर्निक्षिप्य तैर्वदनोदरादिछिद्राणि कर्णस्कन्धाद्यन्तरालानि च प्रपूर्य्यायामतो विस्तरतश्च शरीरमात्रं क्षेत्रमभिव्याप्य तिष्ठति तथाभूतश्च प्रभूत

उनका घात–परिशातन कर देता है आत्मप्रदेशो से अलग कर देता है यही यहां प्राबल्य से घात करना है। अब वेदना आदि समुद्‌घातो का विवरण करते है–उनमें वेदनासमुद्घात में रहा जीव वेदनीय कर्मपुद्गलोका परिशातन करता है, जैसे–वेदना से करालित–व्याप्त आत्मा अनन्तानन्त कर्मपरमाणुओ से परिवेष्टित अपने प्रदेशो को शरीर से बाहर निकालता है और उन प्रदेशों से वदन जघन आदि के छिद्रो को कर्ण और स्कन्ध आदि के अन्तरालों को भर देता है। भर कर फिर वह आयाम और विस्तार से शरीर मात्र क्षेत्र को चारो ओर से व्याप्त करके एक अन्तर्मुहूर्त्त तक अवस्थित रहता है। उस अन्तर्मुहूर्त्त प्रमाण काल में वह बहुत ही असातावेदनीय कर्म पुद्गलोंकी निर्जरा कर देता है। कषायसमुद्घातसे समवहत हुआ जीव कषाय नामक चारित्र मोहनीय कर्मपुद्गलों की निर्जरा करता है। जब आत्मा कषायोदय से समाकुल हो जाता है तब वह अपने आत्मप्रदेशो को शरीर से बाहर निकालता है और उन प्रदेशो से वदन एवं उदर आदि के छिद्रों को एवं कर्ण स्कन्ध आदिके अन्तरालों को भर देता है। भर कर फिर वह आयाम और विस्तार की अपेक्षा शरीर प्रमाण क्षेत्र को चारों ओर से व्याप्तकर के

હવે સૂત્રકાર વેદના આદિ સમુદ્‌ઘાતોનું વર્ણન કરે છે—

વેદના સમુઘાતથી યુક્ત થયેલો જીવ વેદનીય કર્મપુદ્‌ગલોનું પરિશાટન કરે છે– તેમને આત્મપ્રદેશોમાંથી અલગ કરે છે આ ક્રિયા આ રીતે થાય છે–વેદનાથી વ્યાપ્ત થયેલો આત્મા અનંતાનંત કર્મપુગદ્લોથી વીંટળાયેલા પોતાના પ્રદેશોને શરીરમાંથી બહાર કાઢે છે અને તે પ્રદેશો વડે વદન, જાંઘ આદિનાં છિદ્રોને તથા કર્ણ, સ્કન્ધ આદિના અંતરાલોને ભરી દે છે. ત્યાર બાદ તે આયામ અને વિસ્તારની અપેક્ષાએ શરીર પ્રમાણ ક્ષેત્રને ચારે તરફથી વ્યાપ્ત કરીને એક અંતર્મુહૂર્ત પર્યન્ત અવસ્થિત રહે છે. તે અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણ કાળમાં તે આત્મા ઘણાં જ અસાતાવેદનીય કર્મપુગદ્લોની નિર્જરા કરી નાખે છે.

કષાય સમુદ્‌ઘાતથી યુક્ત થયેલો જીવ કષાય નામક ચારિત્ર મોહનીય કર્મપુદ્‌ગલોની નિર્જરા કરે છે. જ્યારે આત્મા કષાયના ઉદયથી વ્યાપ્ત થાય છે, ત્યારે તે પોતાના આત્મપ્રદેશોને શરીરમાંથી બહાર કાઢે છે અને તે પ્રદેશો વડે વદન, ઉદર આદિનાં છિદ્રોને તથા કર્ણ, સ્કન્ધ આદિના અન્તરાલોને ભરી દે છે. ભરી દઈને આયામ અને વિસ્તારની અપેક્ષાએ શરીર પ્રમાણ ક્ષેત્રને ચારે તરફ વ્યાપ્ત કરી દઈને તે ત્યાં અવસ્થિત થઈ જાય

कषायकर्मपुद्गलपरिशातं करोति । एवं मरणसमुदघातगतमायुःकर्मपुद्गलपरिशातं करोति। वैक्रियसमुद्घातगतो जीवः स्वप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्कास्य शरीरविष्कम्भबाहल्यमानमाया-मतः संख्येययोजनप्रमाणं दण्डं निसृजति, निसृज्य यथास्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् प्राग्बद्धान् शातयति । तैजसाहारकसमुदघातौ वैक्रियसमुदघातवदेव ज्ञातव्यौ । नवरं तैजससमुद्घातगतो जीवः तैजसशरीरनामकर्मपुद्गलानां परिशातं करोति आहारकसमुद्घात-गतस्तु जीवः आहारक शरीरनामकर्मपुद्गलानां निर्जरां करोति, केवलिसमुद्घातसमुद्घातस्तु केवली सदसद्वेदनीयशुभाशुभनामोच्चनीचैर्गोत्रकर्मपुद्गलानां परिशातं करोति । आद्याः-षट्समुद्घाताः प्रत्येकमात्रमौहूर्त्तिकाः, केवलिसमुदघातस्तु अष्टसामयिको भवति । तदुक्तं प्रज्ञापनायाम्-

---

वहाँ अवस्थित हो जाता है । इस स्थितिवाला बना हुआ वह जीव बहुत अधिक कषाय कर्मपुद्गलों की निर्जरा कर देता है । इसी प्रकार मरण समुद्घातगत जीव आयु कर्म पुद्गलों की निर्जरा करता है । वैक्रियसमुद्घात गत जीव अपने आत्मप्रदेशों को शरीर से बाहर निकालकर उन्हें शरीर की चौडाई और मोटाई प्रमाण बनाता है तथा लम्बाई में संख्यातयोजनप्रमाण दण्ड के रूप में बनाता है । बनाकर फिर वह प्राग्बद्ध यथास्थूल वैक्रियशरीरनामकर्म के पुद्गलों की निर्जरा करता है। तैजस और आहारक समुघाद्त वैक्रियसमुद्घात के जैसे ही होते हैं । परन्तु-तैजस समुद्घात से समवहत हुआ जीव तैजस शरीरनामकर्मके पुद्गलों का नाश करता है । और आहारक समुद्घात से समवहत हुआ जीव आहारक शरीरनामकर्म के पुद्गलो की निर्जरा करता है । तथा केवलिसमुद्घात से समवहत हुआ जीव-केवली-साता असाता वेदनीय के शुभाशुभ नामकर्म के उच्च नीच गोत्र कर्म के पुद्गलों का विनाश करता है । आदि के ६ समुद्घातों में से प्रत्येक समुद्घात का समय एक २, अन्तर्मुहूर्त्त का है । और केवलिसमुद्घात का समय आठ समय का

છે. આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં મુકાયેલો તે જીવ બહુ જ કષાય કર્મપુદ્‌ગલોની નિર્જરા કરી નાખે છે એ જ પ્રમાણે મારણાન્તિક સમુદઘાતથી યુક્ત થયેલો જીવ આયુકર્મપુદ્‌ગલોની નિર્જરા કરી નાખે છે વૈક્રિયસમુદ્‌ઘાત યુક્ત જીવ પોતાના આત્મપ્રદેશોને શરીરમાંથી બહાર કાઢીને તેમને શરીરની પહોળાઈ અને જાડાઈ પ્રમાણે બનાવે છે તથા લબાઈની અપેક્ષાએ સખ્યાત યોજનપ્રમાણુ દડરૂપ બનાવે છે. ત્યાર બાદ તે પૂર્વે ઉપાર્જિત કરેલાં યથા સ્થૂલ વૈક્રિયશરીર નામકર્મનાં પુદ્‌ગલોની નિર્જરા કરે છે. તૈજસ અને આહારક સમુદઘાત વૈક્રિય સમુદઘાતની જેમ જ થાય છે. પરંતુ વિશિષ્ટતા એટલી જ છે કે તૈજસ સમુદઘાતથી યુક્ત થયેલો જીવ તૈજસ શરીર નામકર્મનાં પુદ્‌ગલોનોનાશ કરે છે અને આહારક સમુદ્‌ઘાતથી યુક્ત થયેલો જીવ આહારક શરીર નામકર્મનાં પુદ્‌ગલોની નિર્જરા કરે છે. કેવલિ સમુદ્‌ઘાતથી યુક્ત થયેલો જીવ (કેવળી) સાતા અસાતા વેદનીયનાં શુભાશુભ નામકર્મનાં અને ઉચ્ચ નીચ ગોત્રકર્મનાં પુદ્‌ગલોનો વિનાશ કરે છે પહેલાં છ સમુદ્‌ઘાતોમાંના પ્રત્યેક સમુદઘાતનો સમય એક એક અન્તર્મુહૂર્તનો છે અને કેવલિસમુદઘાતનો સમય

'वेयणासमुग्घाए णं भंते ! कइ समइए पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्ते एवं जाव आहारगसमुग्घाए । केवलिसमुग्घाएणं भंते ! कइ समइए पन्नत्ते ? गोयमा ! अट्ठसमइए पन्नत्ते'—वेदनासमुद्घातः खलु भदन्त ! कतिसामयिकः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! असंख्येयसामयिकोऽन्तर्मुहूर्त्तः, एवं यावदाहारकसमुद्घातः । केवलिसमुद्घातः खलु भदन्त ! कतिसामयिकः प्रज्ञप्तः ! गौतम ! अष्टसामयिकः प्रज्ञप्तः इतिच्छाया ॥ एवमनेकप्रकारकसमुद्घातसंभवे सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां कतमः समुद्घात इत्याशयेन प्रश्नः कृतो गौतमेनेति पूर्वपक्षाशय इति

भगवानाह—'गोयमा ! इत्यादि 'गोयमा ! हे गौतम । 'तओ समुग्घाया पन्नत्ता' सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामाद्यास्त्रयः समुद्घाताः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, 'तं जहा' तद्यथा– 'वेयणा समुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए' वेदनासमुद्घातः कषायसमुद्घातो मारणान्तिकसमुद्घातश्चेत्येते त्रय एव समुद्घाता भवन्तीति नवमं समुद्घातद्वारम् ।

है । प्रज्ञापना में ऐसा ही कहा है—"वेयणासमुग्घाए णं भंते ! कइसमइए पन्नत्ते ! गोयमा ! असंखेज्जसमइए अंतो मुहुत्ते एवं जाव आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए णं भंते कइ समइए पन्नत्ते ? गोयमा अट्ठसमइए पन्नत्ते" इस प्रकार अनेक प्रकारवाले समुद्घात के संभव होने पर सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के कितने समुद्घात होते हैं ? ऐसे आशय को लेकर ही गौतम ने यह प्रश्न किया है । ऐसा पूर्व पक्ष का आशय है ।

इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु ने ऐसा कहा है कि 'गोयमा' हे गौतम ! "तओ समुग्घाया पन्नत्ता" सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के आदि के तीन समुद्घात होते हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए' वेदना समुद्घात कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात । समुद्घातद्वार समाप्त ।

આઠ સમયનો છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં આ પ્રમાણે કહ્યું છે—"वेयणासमुग्घाए णं भंते ! कइ समइए पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जसमइए अंतो मुहुत्ते एवं जाव आहारसमुग्घाए । केवलिसमुग्घाए णं भंते ! कइ समइए पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठसमइए पण्णत्ते"

આ પ્રકારે છ પ્રકારના જે સમુદ્ઘાતો છે, તેમાંથી સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં કેટલા સમુદ્ઘાતો હોય છે, તે જાણવા માટે ગૌતમ સ્વામીએ પૂછેલા પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता—तंजहा" હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં નીચે પ્રમાણે ત્રણ સમુદ્ઘાતોનો જ સદ્ભાવ કહ્યો છે–"वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए" (૧) વેદના સમુદ્ઘાત, (૨) કષાયસમુદ્ઘાત અને (૩) મારણાન્તિકસમુદ્ઘાત. સમુદ્ઘાતદ્વાર સમાપ્ત ॥૯॥

(१०) गतं नवमं समुद्घातद्वारम् । अथ दशमं संज्ञिद्वारमाह– 'तेणं इत्यादि 'ते णं भंते ! जीवा किं सन्नी असन्नी' ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः जीवाः खलु भदन्त । किं संज्ञिनोऽसंज्ञिनो वा, तत्र संज्ञानं संज्ञा अतीतानागतवर्तमानभावस्य पर्यालोचनं सा विद्यते येषां ते संज्ञिनः विशिष्टस्मरणादिरूपमनोविज्ञानवन्त इत्यर्थः । यथोक्तमनोविज्ञानविकला असंज्ञिन इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, गोयमा ! हे गौतम ! 'नो सन्नी असन्नी' नो संज्ञिन इमे जीवाः किन्तु असञ्ज्ञिनः विलक्षणमनोलब्धेरभावात्–हेतुवादोपदेशेनापि न संज्ञिनः अभिसन्धारणपूर्विकायाः करणशक्तेरभावात् । नो संज्ञिनः एतावन्मात्रकथनेनैव असंज्ञित्वसिद्धौ असंज्ञिन इति–कथन प्रतिषेधप्रधानो विधिरिति ज्ञापयितुम्, प्रतिपाद्यस्य सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्य स्वभावत एव सावद्यत्वादिति दशमं संज्ञिद्वारम्,

(१०) संज्ञिद्वार—'ते णं भंते ! जीवा किं सन्नी असन्नी' हे भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव क्या सज्ञी होते है या असज्ञी होते है ? अतीत अनागत और वर्तमान भाव की जो पर्यालोचना है उसका नाम संज्ञा है, यह संज्ञा जिनको होती है वे सज्ञी है । विशिष्ट स्मरणादिरूप जो मनोविज्ञान है उस मनोविज्ञानवाले जो जीव है वे संज्ञी हैं । और जो इस मनोविज्ञान से विकल हैं वे असंज्ञी हैं । इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा नो सन्नी असन्नी' हे गौतम । ये सज्ञी नहीं होते है किन्तु असज्ञी होते हैं । क्योंकि इनमें विलक्षण मनोलब्धि का अभाव रहता है । हेतुवाद के उपदेश से भी संज्ञावाले नहीं होते है क्योंकि अभिसन्धारण पूर्वक कारण शक्ति का इनमें अभाव रहता है । शंका–'नो संज्ञिनः' इतने मात्र कहने से ही इनमें असंज्ञित्व की सिद्धि हो जाती है फिर असंज्ञिनः ऐसा कथन क्यों किया ?

(१०) સંજ્ઞાદ્વાર—"तेणं भंते ! जीवा किं सन्नी असन्नी ?"

હે ભગવન્ ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો સંજ્ઞી હોય છે, કે અસંજ્ઞી હોય છે ?

અતીત, અનાગત અને વર્તમાન ભાવની જે પર્યાલોચના છે, તેનું નામ સંજ્ઞા છે. આ સંજ્ઞાનો જેમનામાં સદ્ભાવ હોય છે તેમને સંજ્ઞી કહે છે.

વિશિષ્ટ સ્મરણાદિરૂપ મનોવિજ્ઞાનવાળા જે જીવો છે, તેમને સંજ્ઞી કહે છે, અને આ મનોવિજ્ઞાનથી રહિત જે જીવો છે, તેમને અસંજ્ઞી કહે છે.

ગૌતમસ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! नो सन्नी असन्नी" હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો સંજ્ઞી હોતા નથી, પણ તેઓ અસંજ્ઞી જ હોય છે, કારણ કે તેમનામાં વિશિષ્ટ મનોલબ્ધિનો અભાવ હોય છે હેતુવાદના ઉપદેશ અનુસાર પણ તેમને સંજ્ઞાવાળા કહી શકાતા નથી, કારણ કે અભિસંધારણ પૂર્વક કરણ-શક્તિનો તેમનામાં અભાવ હોય છે

શંકા—"नो संज्ञिनः" "સંજ્ઞી હોતા નથી" આટલું જ કહેવાથી તેમનામાં અસંજ્ઞિત્વ સિદ્ધ થઈ જાય છે, છતાં પણ "असंज्ञिनः" "અસંજ્ઞી હોય છે", આ પ્રકારનું કથન શા માટે કર્યું છે ?

(११) गतं दशम सञ्ज्ञिद्वारम्। अथैकादशं वेदद्वारमाह-'ते णं भंते' इत्यादि, 'ते णं भंते! जीवा किं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा' ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त। जीवाः किं स्त्रीवेदकाः पुरुषवेदकाः नपुंसकवेदका वा, स्त्रिया वेदो येषांते स्त्री-वेदकाः एवं पुरुषवेदकाः नपुंसकवेदका अपि, तत्र स्त्रियाः पुरुषे अभिलाषः स्त्री वेदकः, पुरुषस्य स्त्रियामभिलाषः पुरुषवेदकः, उभयोरपि अभिलाषो नपुंसकवेदकः, इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम। नो इत्थिवेयगा नो पुरिसवेयगा नपुंसग वेयगा' नो स्त्रीवेदका नो पुरुषवेदकाः किन्तु नपुंसकवेदकाः संमूर्च्छिमजीवत्वात्, नारक संमूर्च्छिमा नपुंसकवेदका इति भगवद्वचनम् इति एकादशं वेदद्वारम् ॥११॥

उत्तर--ऐसा जो कथन किया है वह विधिप्रतिषेध प्रधान वाली बात होती है इस बात को समझाने के लिये किया है। यहाँ प्रतिपाद्य जो सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव है वह स्वभावतः ही सावद्ययोग वाला होता है। अतः-वह असंज्ञी ही होता है, संज्ञिद्वार समाप्त।

(११) वेदद्वार--'ते णं भंते जीवा किं इत्थीवेयगा पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा' हे भदन्त। वे-सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव-क्या स्त्रीवेदवाले होते हैं या पुरुष वेदवाले होते हैं? या नपुंसक वेदवाले होते है? जिस वेद के उदय से पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा होती है वह स्त्री वेद है और जिस वेद के उदय से स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा होती है वह पुरुष वेद है और जिस वेद के उदय में स्त्री और पुरुष दोनो के साथ रमण करने की इच्छा होती है वह नपुंसक वेद है इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है 'नो इत्थिवेयगा नो पुरिसवेयगा नपुंसकवेयगा' हे गौतम ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव न स्त्री वेदवाले होते है, न पुरुष वेदवाले

ઉત્તર—એવું જે કથન કરવામાંઆવ્યું છે તે વિધિ પ્રતિષેધ પ્રધાન વાળી વાત હોય છે, તે વાતને સમજાવવા માટે કરવામાં આવ્યું છે અહીં જે જીવોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો સ્વભાવતઃ જ સાવદ્યયોગવાળા હોય છે, તેથી તેઓ અસંજ્ઞી જ હોય છે, સંજ્ઞીદ્વાર સમાપ્ત [૧૦]

(૧૧) વેદદ્વાર—"ते णं भंते! जीवा किं इत्थीवेयगा, पुरिसवेयगा, नपुंसगवेयगा!" હે ભગવન્! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો સ્ત્રીવેદવાળા હોય છે, કે પુરુષવેદવાળા હોય છે, કે નપુંસક વેદવાળા હોય છે? જે વેદના ઉદયથી પુરુષની સાથે રમણ(સંભોગ) કરવાની ઈચ્છા થાય છે, તે વેદનું નામ સ્ત્રીવેદ છે જે વેદના ઉદયથી સ્ત્રીની સાથે રમણ કરવાની ઈચ્છા થાય છે, તે વેદનું નામ પુરુષવેદ છે જે વેદના ઉદયથી સ્ત્રી અને પુરુષ બન્નેની સાથે રમણ કરવાની ઈચ્છા થાય છે, તે વેદનુ નામ નપુંસકવેદ છે ગૌતમ સ્વામીના આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—"नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा, नपुंसकवेयगा" હે ગૌતમ! તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો સ્ત્રીવેદવાળા પણ હોતા નથી, પુરુષ વેદવાળા પણ હોતા નથી

(१२) गतमेकादशं वेदद्वारम् । अथ द्वादशं पर्याप्तिद्वारमाह–'**तेसि णं**' इत्यादि, '**तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**' तेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त । जीवानां कति पर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह–'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम । '**चत्तारि पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**' चतस्रः, पर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति, '**त जहा**' तद्यथा–'**आहारपज्जत्ती**' आहारपर्याप्तिः, '**सरीरपज्जत्ती**' शरीरपर्याप्तिः '**इंदियपज्जत्ती**' इन्द्रियपर्याप्तिः '**आणापाणुपज्जत्ती**' आनपानपर्याप्तिः ता एताश्चतस्रः पर्याप्तयो भवन्ति ।

अथ पर्याप्तिद्वारान्तर्गतां पर्याप्तिविरोधिनी मपर्याप्तिं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह–'**तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**' तेषां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त ।

होते हैं, किन्तु नपुंसक वेदवाले होते हैं। क्योंकि ये सम्मूर्च्छिम जीव है। नारकजीव और संमूर्च्छिम जन्मवाले–जीव नियम से नपुंसक वेद वाले ही होते हैं ऐसा भगवान् का आदेश है।

११ वां वेदद्वार समाप्त ।

(१२) पर्याप्तिद्वार–"**तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**" हे भदन्त इन सूक्ष्मपृथ्वीकायिकजीवों के कितनी पर्याप्तियां होती है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'**गोयमा !** गौतम ! '**चतारि पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**" इनके चार पर्याप्तियां होती है । '**तं जहा**" जो इस प्रकार से हैं—"**आहारपज्जत्ती**" आहारपर्याप्ति '**सरीरपज्जत्ती**' शरीर पर्याप्ति "**इंदियपज्जत्ती**" इन्द्रियपर्याप्ति "**आणपाणुपज्जत्ती**" आनपान–श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति । "**तेसि णं भते ! जीवाणं कइ अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**" हे भदन्त ! पर्याप्तिद्वार के अन्तर्गत जो पर्याप्ति विरोधिनी अपर्याप्तियां हैं वे यहां कितनी होती है ? उत्तर में

પરન્તુ નપુંસકવેદવાળા જ હોય છે, કારણ કે તેઓ સમ્મૂચ્છિંમ જીવો છે નારક જીવો અને સંમૂચ્છિંમ જન્મવાળા જીવો નિયમથી જ નપુંસકવેદવાળા હોય છે, એવો ભગવાનનો આદેશ છે.
૧૧ મું વેદદ્વાર સમાપ્ત

(૧૨) પર્યાપ્તિદ્વાર—"**तेसि णं भंते ! जीवाण कइ पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ !**" હે ભગવાન્ આ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોમાં કેટલી પર્યાપ્તિઓ હોય છે? ઉત્તર–"**गोयमा ! चत्तारि पज्जत्तीओ पन्नत्ताओ**" હે ગૌતમ ! તેમનામાં ચાર પર્યાપ્તિઓ હોય છે, "**तंजहा**", જે નીચે પ્રમાણે છે–"**आहारपज्जत्ती**" (૧) આહાર પર્યાપ્તિ, "**सरीरपज्जत्ती**" (૨) શરીર પર્યાપ્તિ "**इंदियपज्जत्ती**" (૩) ઈન્દ્રિય પર્યાપ્તિ અને "**आणपाणु पज्जत्ती**" (૪) આનપ્રાણ (શ્વાસોચ્છ્વાસ) પર્યાપ્તિ

પ્રશ્ન—"**तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ !** હે ભગવન્ ! પર્યાપ્તિદ્વારમાં જેમનો સમાવેશ થાય છે એવી પર્યાપ્તિ વિરોધિની અપર્યાપ્તિઓ, તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોમાં કેટલી હોય છે?

जीवानां कति अपर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः- कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, गोयमा ! हे गौतम। 'चत्तारि अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ' चतस्रोऽपर्याप्तयः प्रज्ञप्ताः-कथिताः 'तं जहा' तद्यथा-'आहारअपज्जत्ती जाव आणापाणु अपज्जत्ती' आहारापर्याप्ति यावत् आनपाना-पर्याप्तिः, यावत्पदेन शरीरापर्याप्तीन्द्रियापर्याप्त्योर्ग्रहणम्, तथाचैताश्चतस्रोऽपर्याप्त्यो, भवन्ति, इति द्वादशं पर्याप्तिद्वारम् ॥ १२ ॥ सू० ९ ॥

मूलम्—तेणं भंते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मा मिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी नो सम्मा मिच्छा दिट्ठी। ते णं भन्ते ? जीवा किं चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहि दंसणी केवलदंसणी ? गोयमा ! नो चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी नो ओही दंसणी नो केवलदंसणी। ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी नियमा दु अन्नाणी तं जहा-मइ अन्नाणी सुय अन्नाणी य। ते णं भंते ! जीवा किं मणयोगी वयजोगी काययोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी। ते णं भंते ! जीवा किं सागारावउत्ता अणागारावउत्ता ? गोयमा ! सागारावउत्ता वि अणागारावउत्ता वि। ते णं भंते ! जीवा किं आहारमाहरेंति ? गायमा ! दव्वओ अणंतपएसाइं खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं कालओ अन्नयरसमयट्ठिइयाइं भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं

प्रभु कहते हैं-हे 'गोयमा' हे गौतम ! "चत्तारि अपज्जत्तीओ पन्नत्ताओ" इनके चार अपर्याप्तियां होती है "तंजहा' जो इस प्रकार से है-"आहारअपज्जत्ती जाव आणापाणुअपज्जत्ती आहारापर्याप्ति यावत् आनपानापर्याप्ति, यहां यावत्पद से शरीरापर्याप्ति और इन्द्रिया-पर्याप्ति इन दो का ग्रहण हुआ है । १२ बारहवां पर्याप्तिद्वार समाप्त ।

ઉત્તર—"ગોયમા !" હે ગૌતમ' ચત્તારિ અપજ્જત્તીઓ પન્નત્તાઓ"તેમનામાં ચાર અપર્યાપ્તિઓ હોય છે, "તંજહા" જે નીચે પ્રમાણે છે—"આહારઅપજ્જત્તી જાવ આણાપાણુઅપજ્જત્તી" (૧) આહાર અપર્યાપ્તિ, (૨) શરીર અપર્યાપ્તિ, (૩) ઇન્દ્રિય અપર્યાપ્તિ અને (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ અપર્યાપ્તિ [બારમુ પર્યાપ્તિદ્વાર સમાપ્ત].

रसमंताइं फासमंताइं । जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एग वण्णाइं आहारेंति, दुवण्णाइं आहारेंति तीवण्णाइं आहारेंति चउ वण्णाइं आहारेंति पंच वण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एग वण्णाइं पि दु वण्णाइं पि तिवण्णाइं पि चउवण्णाइं पि पंच वण्णाइं पि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कालाइं पि आहारेंति जाव सुक्किलाइं पि आहारेंति । जाइं वण्णओ कालाइं आहारेंति ताइं किं एगगुण-कालाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं आहारेंति ? गोयमा ! एग-गुणकालाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति, एवं जाव सुक्किल्लिइं । जाइं भावओ गंधमंताइं आहारेंति ताइं किं एगगंधाइं आहारेंति दुगंधाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गं पडुच्च एगगंधाइं पि आहारेंति दुगंधाइं पि आहारेंति विहाणमग्गणं पडुच्च सुब्भिगं-धाइं पि आहारेंति दुब्भिगंधाइं पि आहारेंति । जाइं गंधओ सुब्भिगं-धाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइं जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणसुब्भिगंधाइं पि आहारेंति जाव अणं-तगुणसुब्भिगंधाइंपि आहारेंति। एवं दुब्भिगंधाइंपि। रसा जहा वण्णा॥ जाइं भावओ फासमंताइं आहारेंति ताइं किं एगफासाइं आहारेंति, जाव अट्ठफासाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च णा एगफासाइं आहारेंति नो दुफासाइं आहारेंति नो तिफासाइं आहारेंति चउ फासाइं आहारेंति पंच फासाइं पि जाव अट्ठ फासाइं पि आहारेंति, विहाण म-ग्गणं पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति जाव लुक्खाइं पि आहारेंति । जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खाडाइं पि आहारेंति, एवं जाव लुक्खा

णेयव्वा ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं आहारेंति अपुट्ठाइं आहारेंति ? गोयमा पुट्ठाइं आहारेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति। ताइं भंते ? किं ओगाढाइं आहारेंति अणोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइं आहारेंति। णो अणोगाढाइं आहारेंति ? ताइं भंते ! किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति परंपरोगाढाइं अहारेंति ? गोयमा ! अणंतरो गाढाइं आहारेंति नो परं परोगाढाइं आहरेंति। ताइं भंते किं अणूइं आहारेंति बायराइं आहारेंति ! गोयमा ! अणूइं पि अहारेंति बायराइं पि अहारेंति। ताइं भंते ! किं उड्ढ आहारेंति अहे आहारेंति तिरियं अहारेंति ? गोयमा ! उड्ढ पि आहारेंति अहे वि आहारेंति तिरियं पि अहारेंति । ताइं भंते किं आइं अहारेंति ! मज्झे अहारेंति पज्जवसाणे अहारेंति ? गोयमा आइं पि आहारेंति मज्झे वि आहारेंति पज्जवसाणे वि आहारेंति । ताइं भंते ! किं सविसए आहारेंति अविसए अहारेंति ? गाँयमा ! सवि सए आहारेंति नो अविसए आहारेंति। ताइं भंते ! किं आणु पुव्वि आहारेंति अणाणुपुव्वि आहारेंति ? गोयमा ! आणुपुव्वि आहारेंति नो अणाणुपुव्वि आहारेंति। ताइं भंते ! किं तिदिसि आहारेंति चउ दिसि आहारेंति पंच दिसि आहारेंति छद्दिसिं आहारेंति ? गोयमा ! निव्वघाएणं छद्दिसिं वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं। उस्सण्णं कारणं पडुच्च वण्णओ कालाइं नीलाइं जाव सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त जाव महुराइं, फासओ कक्खड मउय जाव निद्ध लुक्खाइं तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे वि परिणामित्ता परिपालइत्ता पडिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरओगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति ॥ सू० १० ॥

छाया—ते खलु भदन्त ! जीवाः किं सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयः गौतम ! नो सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयः नो सम्यग् मिथ्यादृष्टयः । ते खलु भदन्त ! जीवा किं चक्षुर्दर्शनिनोऽचक्षुर्दर्शनिनोऽवधिदर्शनिनः केवलदर्शनिनः ? गौतम ! नो चक्षुर्दर्शनिनः अचक्षुर्दर्शनिनः नो अवधिदर्शनिन नो केवलदर्शनिनः । ते खलु भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानिनोऽज्ञानिनः ? गौतम ! नो ज्ञानिन अज्ञानिनः, नियमाद्द्व्यज्ञानिनः तद्यथा—मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च । ते खलु भदन्त ! जीवाः किं मनोयोगिनो वचोयोगिनः काययोगिन ? गौतम ! नो मनोयोगिनो, नो वचोयोगिनः, काययोगिनः । ते खलु भदन्त जीवाः किं साकारोपयुक्ताः, अनाकारोपयुक्ताः ? गौतम ! साकारोपयुक्ता अपि अनाकारोपयुक्ता अपि । ते खलु भदन्त ! जीवाः किमाहारमाहरन्ति ? गौतम ! द्रव्यतोऽनन्तप्रदेशिकानि क्षेत्रतोऽसंख्येयप्रदेशावगाढानि कालतोऽन्यतरसमयस्थितिकानि भावतो वर्णवन्ति गन्धवन्ति रसवन्ति स्पर्शवन्ति । यदा भावतो वर्णवन्ति आहरन्ति तदा किम् एकवर्णानि आहरन्ति द्विवर्णानि आहरन्ति त्रिवर्णानि आहरन्ति चतुर्वर्णानि आहरन्ति पञ्चवर्णानि आहरन्ति ? गौतम ! स्थानमार्गणं प्रतीत्य एकवर्णान्यपि द्विवर्णान्यपि त्रिवर्णान्यपि चतुर्वर्णान्यपि पञ्चवर्णान्यपि आहरन्ति । विधानमार्गणं प्रतीत्य कालान्यपि आहरन्ति यावत् शुक्लान्यपि आहरन्ति । यदि वर्णतः कालानि आहरन्ति तदा किम् एकगुणकालानि आहरन्ति यावदनन्तगुणकालानि आहरन्ति ? गौतम ! एकगुणकालान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणकालान्यपि आहरन्ति एवं यावत् शुक्लान्यपि । यदि भावतो गन्धवन्ति आहरन्ति तदा किमेकगन्धानि आहरन्ति द्विगन्धानि आहरन्ति ? गौतम ! स्थानमार्गण प्रतीत्य एकगन्धान्यपि आहरन्ति द्विगन्धान्यपि आहरन्ति, विधानमार्गणं प्रतीत्य सुरभिगन्धान्यपि आहरन्ति दुरभिगन्धान्यपि आहरन्ति । यदि गन्धतः सुरभिगन्धानि आहरन्ति तदा किम् एकगुणसुरभिगन्धानि आहरन्ति यावदनन्तगुणसुरभिगन्धानि आहरन्ति ? गौतम ! एकगुणसुरभिगन्धानि आहरन्ति यावदनन्तगुणसुरभिगन्धानि आहरन्ति । एवं दुरभिगन्धान्यपि । रसा यथा वर्णाः यदा भावतः स्पर्शवन्ति आहरन्ति तदा किम् एक-स्पर्शानि आहरन्ति यावदष्टस्पर्शानि आहारन्ति ? गौतम ! स्थानमार्गणं प्रतीत्य नो एकस्पर्शानि आहरन्ति, नो द्विस्पर्शानि आहरन्ति नो त्रिस्पर्शानि आहरन्ति चतुःस्पर्शानि आहरन्ति पञ्चस्पर्शानि यावदष्टस्पर्शानि आहरन्ति । विधानमार्गणं प्रतीत्य कर्कशान्यपि आहरन्ति यावद्रूक्षाण्यपि आहरन्ति । यदा स्पर्शतः कर्कशानि आहरन्ति तदा किमेकगुणकर्कशानि आहरन्ति यावदनन्तगुणकर्कशानि आहरन्ति एवं यावद्रूक्षाणि नेतव्यानि । तानि भदन्त ! किं स्पृष्टानि आहरन्ति अस्पृष्टानि आहरन्ति ? गौतम ! स्पृष्टानि आहरन्ति नो अस्पृष्टानि आहरन्ति ? तानि भदन्त ! किम् अवगाढानि आहरन्ति अनवगाढानि आहरन्ति ? गौतम ! अवगाढानि आहरन्ति नो अनवगाढानि आहरन्ति । तानि भदन्त ! किम् अनन्तरावगाढानि आहरन्ति परम्परावगाढानि आहरन्ति गौतम ! अनन्तरावगाढानि आहरन्ति नो परम्परावगाढानि आहरन्ति तानि भदन्त ! किम् अणूनि आहरन्ति बादराणि आहरन्ति ? गौतम ! अणून्यपि आहरन्ति बादराण्यपि आहरन्ति तानि भदन्त ! किम् ऊर्ध्वमाहरन्ति, अध आहरन्ति, तिर्यगाहरन्ति ? गौतम ! ऊर्ध्वमपि आहरन्ति अधोऽपि आहरन्ति तिर्यगपि आहरन्ति । तानि भदन्त ! किमादौ आहरन्ति ,मध्ये आहरन्ति पर्यवसाने आहरन्ति ?

गौतम ! आदावपि आहरन्ति, मध्येऽपि आहरन्ति पर्यवसानेऽपि आहरन्ति। तानि भदन्त ! किं सविषयाणि आहरन्ति अविषयाणि आहरन्ति ? गौतम ! सविषयाणि आहरन्ति नो अविषयाणि आहरन्ति । तानि भदन्त ! किमानुपूर्व्या आहरन्ति अनानुपूर्व्या आहरन्ति? गौतम आनुपूर्व्या आहरन्ति नो अनानुपूर्व्या आहरन्ति । तानि भदन्त ! किं त्रिदिशि आहरन्ति चतुर्दिशि आहरन्ति पञ्चदिशि आहरन्ति षड्दिशि आहरन्ति ? गौतम ! निर्व्याघातेन षड्दिशि आहरन्ति, व्याघातं प्रतीत्य स्यात् त्रिदिशि स्यात् चतुर्दिशि स्यात् पञ्चदिशि । उत्सण्णं कारणं प्रतीत्य वर्णतः कालानि नीलानि यावत् शुक्लानि, गन्धतः सुरभिगन्धीनि, दुरभिगन्धीनि, रसतः तिक्त यावत्मधुराणि, स्पर्शतः कर्कशमृदुकस्निग्ध रूक्षाणि। तेषां पुराणान् वर्णगुणान् गन्धगुणान् रसगुणान् स्पर्शगुणान् विपरिणमय्य परिपाल्य परिशात्य परिविध्वस्य अन्यान् वर्णगुणान् गन्धगुणान् रसगुणान् स्पर्शगुणान् उत्पाद्य आत्मशरीरराव-गाढान् पुद्गलान् सर्वात्मतया अहारमाहरन्ति ॥सू० १०॥

टीका—अथ त्रयोदशं दृष्टिद्वारमाह–'ते णं भंते'। इत्यादि, 'ते णं भंते' ? जीवा किं 'सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी' ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त। जीवाः किं सम्यग्दृष्टयः, सम्यक्–समीचीना अविपरीता दृष्टिः सर्वज्ञप्रणीतवस्तुतत्त्वविषयिणी प्रतिपत्ति र्येषां ते सम्यग्दृष्टय. किम्, अथवा–मिथ्यादृष्टयः, मिथ्या–विपरीता विपर्यस्ता दृष्टिः–प्रतिपत्ति र्येषां ते मिथ्यादृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयो वा एकान्तसम्यग्रूपमिथ्या-रूपप्रतिपत्तिरहिता वा सूक्ष्मपृथिवीकायिका इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम। 'नो सम्मदिट्ठी' सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवाः सम्यग्दृष्टयो न भवन्ति किन्तु 'मिच्छादिट्ठी' मिथ्यादृष्टय इमे भवन्ति, एतेषा सास्वादनसम्यक्त्वस्यापि असंभवात् सम्य-

---

(१३) दृष्टिद्वार-'ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी, हे भदन्त ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव क्या सम्यग्दृष्टि होते है–समीचीन–अविपरीत है दृष्टिसर्वज्ञ प्रणीत वस्तुतत्वविषयक प्रत्तिपत्ति जिन्हो की ऐसे होते है ? या मिथ्यादृष्टि, विपरीत है दृष्टि प्रतिपत्ति जिन्हों की ऐसे होते हैं ? या मिश्रदृष्टि होते हैं ? एकान्त सम्यग् रूप और मिथ्यारूप प्रतिपत्ति से रहित होते है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है–"गोयमा नो सम्मदिट्ठी" हे गौतम ! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रियजीव सम्यग्दृष्टि नहीं होते है 'नो सम्मामिच्छादिट्ठी' मिश्र दृष्टि नहीं होते हैं किन्तु "मिच्छादिट्ठी . ये नियम से मिथ्यादृष्टि ही होते है ।

---

(૧૩) દષ્ટિદ્વાર–"ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी !" હે ભગવન્ ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો શું સમ્યગ્ દષ્ટિવાળા હોય છે, મિથ્યા દષ્ટિવાળા હોય છે, કે સમ્યગ્મિથ્યા દષ્ટિવાળા (મિશ્રદષ્ટિ હોય છે ! સર્વજ્ઞ પ્રરૂપિત વસ્તુતત્ત્વ વિષયક અવિપરીત સમજણુથી યુક્ત જીવોને મિથ્યાદષ્ટિ કહે છે જેઓ એકાન્તતઃ સમ્યગ્ રૂપ પ્રતિપત્તિથી–સમજણથી રહિત હોય છે, તેમને મિશ્રદષ્ટિ કહે છે.

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा !" હે ગૌતમ ! 'नो सम्मदिट्ठी' સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય જીવો સમ્યગ્ દષ્ટિ પણ હોતા નથી, "नो सम्मामिच्छादिट्ठी" તેઓ મિશ્રદષ્ટિ પણ હોતા નથી, પરન્તુ "मिच्छादिट्ठी" નિયમથી જ મિથ્યાદષ્ટિ હોય છે.

ग्दृष्टित्वस्य प्रतिषेधः। सास्वादनसम्यक्त्ववतां सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषूत्पादाभावात्। एते हि अतिसंक्लिष्टपरिणामवन्तो भवन्ति सास्वादनसम्यक्त्वपरिणामस्तु किञ्चित् शुभो भवतीति सूक्ष्मकायिकमध्ये सास्वादनसम्यक्त्ववतामुत्पादो न भवति। किमधिकेन। तेषां निरन्तरसंक्लिष्ट-परिणामसद्भावात् सम्यग्मिथ्यादृष्टित्वपरिणामोऽपि नोत्पद्यते नापि सम्यग्मिथ्यादृष्टि' सन् सूक्ष्मकायिकमध्ये समुत्पद्यते मिश्रदृष्ट्यवस्थायां जीवस्य कालासंभवात्, उक्तञ्च- **'न सम्म-मिच्छो कुणइ कालं'** इति, न सम्यग्मिथ्यादृष्टिः सन् जीवः कालं करोति, इत्यत आह-**'नो सम्म मिच्छादिट्ठि'** नो सम्यङ्मिथ्यादृष्टयो-मिश्रदृष्टयोऽपि एते न भवन्ति, इति दृष्टिद्वारम्॥

(१४) अथ चतुर्दशं दर्शनद्वारमाह-**'ते णं भंते'** इत्यादि, **'ते णं भंते ! जीवा किं चक्खुदंसणी—अचक्खुदंसणी-ओहिदंसणी केवलदंसणी'** ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका

तात्पर्य यह है-सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों को सास्वादनसम्यक्त्व की असंभावना होने से इनके सम्यक्त्व का निषेध किया गया है, क्योंकि सास्वादन सम्यक्त्ववाले जीवों की यहां उत्पत्ति ही नहीं होती है। ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव अति संक्लिष्ट परिणाम वाले होते हैं और सास्वादन सम्यक्त्व परिणाम कुछ शुभ होता है इसलिये सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों में सास्वादन सम्यक्त्व वालो की उत्पत्ति नहीं होती है। अधिक क्या कहा जाय-इनके निरन्तर संक्लिष्ट परिणामो का सद्भाव होने से सम्यङ्मिथ्यादृष्टिपनेका अर्थात् मिश्रदृष्टि पनेका परिणाम भी उत्पन्न नहीं होता है और न इन में पूर्वभव में सम्यङ् मिथ्यादृष्टि होता हुआ वहां से कालकर के उत्पन्न होता है। क्योकि मिश्रदृष्टि अवस्था में जीवकाल ही नहीं करता है जैसे-कहा है-**"नो सम्ममिच्छो कुणइ कालं"** इसलिये सूत्रकारने कहा हैं कि **'न सम्मामिच्छदिट्ठी'** सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव सम्यङ्मिथ्यादृष्टि भी नहीं होते है।

दृष्टिद्वार समाप्त (१३)

આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે-સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોને સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વની અસંભાવના હોવાને લીધે તેમનામાં સમ્યક્ત્વ સંભવી શકતું નથી તેનુ કારણ એ છે કે સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વવાળા જીવોની સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પત્તિ જ થતી નથી, સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો અતિ સંકિલષ્ટ પરિણામવાળા હોય છે, અને સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વ પરિણામ શુભ હોય છે, તેથી સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વવાળા જીવોની ઉત્પત્તિ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોમાં થતી નથી, આ બાબતમાં અધિક શું કહું ! તેમનામા નિરન્તર સંકિલષ્ટ પરિણામોનો સદ્‌ભાવ રહેતો હોવાથી, સમ્યગ્ મિથ્યાદષ્ટિત્વ-મિશ્રદષ્ટિત્વ પરિણામ પણ ઉત્પન્ન થતું નથી, અને પૂર્વભવમાં સમ્યગ્ મિથ્યાદષ્ટિ સંપન્ન હોય એવો જીવ પણ ત્યાં ઉત્પન્ન થતો નથી, કારણ કે મિશ્રદષ્ટિ અવસ્થામાં જીવ કાળ જ પામતો નથી કહ્યું પણ છે કે-'**नो सम्ममिच्छो कुणइ काल**" તેથી જ સુત્રકારે કહ્યું છે કે "**नो सम्मामिच्छादिट्ठी**" સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિક જીવ સમ્યગ્ મિથ્યાદષ્ટિ પણ હોતો નથી, ॥ દષ્ટિદ્વાર સમાપ્ત ૧૩ ॥

खलु भदन्त ! जीवाः किं चक्षुर्दर्शनिनः अथवा अचक्षुर्दर्शनिनः अवधिदर्शनिनो वा केवलदर्शनिनो वा ? दर्शनं नाम सामान्यविशेषोभयात्मके जीवादिपदार्थे सामान्यावबोधः तद्दर्शनं चतुःप्रकारकम्-चक्षुर्दर्शनम् अचक्षुर्दर्शनम् अवधिदर्शनं केवलदर्शनं च, तत्र सामान्यविशेषोभयात्मके वस्तुनि चक्षुषा दर्शनं रूपसामान्यपरिच्छेदश्चक्षुर्दर्शनम् । अचक्षुषा चक्षुर्वर्जशेषेन्द्रियमनोभिर्जनितं दर्शनमचक्षुर्दर्शनम्, अवधिरेव दर्शनम्-रूपिपदार्थविषयकं सामान्यग्रहणमवधिदर्शनम्, केवलमेव दर्शनम्—सकलजगद्भाविवस्तुसामान्यपरिच्छेदरूपं केवलदर्शनम्—तदत्र एतेषु दर्शनेषु मध्ये कतमद्दर्शनं सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—

(१४) दर्शनद्वार **"ते णं भंते। जीवा किं चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी"** हे भदन्त ! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव क्या चक्षुर्दर्शनवाले होते है ? या अचक्षुर्दर्शनवाले होते है ? या अवधिदर्शनवाले होते है ? या केवल दर्शनवाले होते है ? जीवादि पदार्थ सामान्य विशेष दोनों धर्मात्मक है सो इनका जो सामान्यात्मक बोध होता है वह दर्शन है यह दर्शन **'चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन'** के भेद से चार प्रकार का होता है सामान्यविशेषरूप उभयधर्मात्मक वस्तु में जो चक्षुद्वारा रूपसामान्य का ग्रहण होता है वह चक्षुर्दर्शन है चक्षु इन्द्रिय के सिवाय शेष इन्द्रियों द्वारा और मनद्वारा जो सामान्य बोध होता है वह अचक्षुर्दर्शन है। रूपी पदार्थ के विषय में जो अवधिज्ञान होने के पहिले सामान्य अवलोकन होता है वह अवधिदर्शन है। सम्पूर्ण जगत् की वस्तुओं का जो सामान्य रूप से ज्ञान होता है वह केवलदर्शन है। इन चार प्रकार के दर्शनों में कौन सा दर्शन सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों के होता है ऐसा यह प्रश्न है इसके

---

(૧૪) દર્શનદ્વાર **'ते णं भंते! जीवा किं चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी केवलदंसणी ?"** હે ભગવન્ ! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ ચક્ષુદર્શનવાળો હોય છે? કે અચક્ષુદર્શનવાળો હોય છે ? કે અવધિદર્શનવાળો હોય છે ? કે કેવળદર્શનવાળો હોય છે ? જીવાદિ પદાર્થમાં સામાન્ય અને વિશેષ, આ બન્ને ધર્મોનો સદ્ભાવ હોય છે. તેમના વિષે જ સામાન્ય બોધ થાય છે, તેનુ નામ દર્શન છે, તે દર્શનના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર છે-(૧) ચક્ષુદર્શન, (૨) અચક્ષુદર્શન, (૩) અવધિદર્શન, અને (૪) કેવલદર્શન. સામાન્ય વિશેષ રૂપ બન્ને ધર્મવાળી વસ્તુના સામાન્ય રૂપનું ચક્ષુ દ્વારા જે ગ્રહણ થાય છે, તેનું નામ ચક્ષુદર્શન છે. ચક્ષુઈન્દ્રિય સિવાયની ઈન્દ્રિયો દ્વારા અને મન દ્વારા જે સામાન્ય બોધ થાય છે, તેનું નામ અવધિદર્શન છે રૂપી પદાર્થોના વિષયમાં અવધિજ્ઞાન થયા પહેલાં જે સામાન્ય અવલોકન થાય છે, તેનું નામ અવધિદર્શન છે. આખા જગતની વસ્તુઓનું જે સામાન્ય રૂપે જ્ઞાન થાય છે તેનું નામ કેવળદર્શન છે. અહીં એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે કે આ ચારે પ્રકારનાં દર્શનોમાંથી કયાં કયાં દર્શનોનો સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં સદ્ભાવ હોય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતો મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा" હે ગૌતમ !

'गोयमा' इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम। **'नो चक्खुदंसणी'** नो चक्षुर्दर्शनिनः-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्चक्षुर्दर्शनवन्तो न भवन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावात्, किन्तु-**'अचक्खुदंसणी'** अचक्षुर्दर्शनिनः-अचक्षुर्दर्शनवन्तो भवन्ति सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः, अचक्षुर्दर्शनित्वमेतेषु स्पर्शनेन्द्रियापेक्षया भवतीति। **'नो ओहिदंसणी नो केवलदंसणी'** नो-न वा अवधिदर्शनिनो भवन्ति, नो--न वा केवलदर्शनिनो वा भवन्ति सूक्ष्मपृथिवीकायिकस्वभावत्वादेवेति गतं चतुर्दशं दर्शनद्वारमिति ॥१४॥

(१५) अथ पञ्चदशं ज्ञानद्वारमाह-ते णं भंते' इत्यादि, **'ते णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी'** ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवाः किं ज्ञानिनो भवन्ति अज्ञानिनो वा भवन्तीति प्रश्नः भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम। **'नो नाणी अन्नाणी'** सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः नो ज्ञानिनो भवन्ति किन्तु अज्ञानिन एव भवन्ति इति। अज्ञानित्वं चैतेषां मत्यज्ञानश्रुताज्ञानापेक्षया भवति, तदेव दर्शयति-**'नियमा दु अन्नाणी'** नियमात् द्व्यज्ञानिन-

---

उत्तर में प्रभु कहते हैं **"गोयमा! नो चक्खुदंसणी, नो ओहिदंसणी नो केवलदंसणी अचक्खुदंसणी"** हे गौतम! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव न चक्षुर्दर्शनवाले होते हैं, न अवधि दर्शनवाले होते हे और न केवलदर्शनवाले होते हैं किन्तु अचक्षुर्दर्शनवाले होते हैं। क्योंकि इनके केवल एक स्पर्शन इन्द्रिय ही होती है अतः इसी अपेक्षासे इनमें अचक्षुर्दर्शन का होना कहा गया है॥ दर्शनद्वारसमाप्त।

(१५) ज्ञानद्वार--**"ते णं भंते! जीवा किं नाणी, अन्नाणी"** भदन्त! ये सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव क्या ज्ञानी होते है ? या अज्ञानी होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है—**"गोयमा! नो णाणी अन्नाणी** "हे गौतम! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव ज्ञानी नहीं होते है किन्तु नियम से अज्ञानी ही होते है। इनमे अज्ञानिता मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान कि अपेक्षा से है। यही वात **"नियमा दुअन्नाणी, तं जहा मइअन्नाणी सुय अन्नाणी**

"नो चक्खुदंसणी, नो ओहिदंसणी, नो केवलदंसणी, अचक्खुदंसणी" સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો ચક્ષુદર્શનવાળા પણ હોતા નથી, અવધિ દર્શનવાળા પણ હોતા નથી કેવળ દર્શનવાળા પણ હોતા નથી પરન્તુ અચક્ષુર્દર્શનવાળા જ હોય છે. તેનું કારણ એ છે કે તે જીવોને માત્ર સ્પર્શેન્દ્રિયનો જ સદ્‌ભાવ હોય છે તે દૃષ્ટિએ જ તે જીવોમાં અચક્ષુદર્શનનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. ॥ ચૌદમું દર્શનદ્વાર સમાપ્ત ॥

(૧૫) જ્ઞાનદ્વાર **"ते ण भंते! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ?"** હે ભગવન્! સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો શું જ્ઞાની હોય છે ? કે અજ્ઞાની હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-**"गोयमा! नो णाणी, अन्नाणी"** હે ગૌતમ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો જ્ઞાની હોતા નથી, તેઓ નિયમથી જ અજ્ઞાની હોય છે તેમનામાં મત્યજ્ઞાન અને શ્રુતાજ્ઞાનની અપેક્ષાએ અજ્ઞાનતા હોય છે એજ વાત નીચેના સૂત્રપાઠ દ્વારા સમજાવવામાં આવી છે—**"नियमा दु अन्नाणी, तंजहा मइ अन्नाणी, सुयअन्नाणी"** અહીં મતિ-

एते भवन्ति, अज्ञानद्वयमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'मइ अन्नाणी' सुय अन्नाणी' मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च भवन्ति एतदपि मत्यज्ञानं श्रुताज्ञानं च शेष जीव-बादरादिराश्यपेक्षया अत्यन्तमल्पीय इति ज्ञातव्यम् । तदुक्तम्—

सर्वनिकृष्टो जीवस्य दृष्ट उपयोगो हि वीरेण ।
सूक्ष्मनिगोदा पर्याप्तानां स च भवति विज्ञेयः ॥१॥

तस्मात्प्रभृति ज्ञानविवृद्धि र्दृष्टा जिनेन जीवानाम् ।
लब्धिनिमित्तैः करणैः कायेन्द्रियवाग्मनो दृग्भिः ॥२॥ इति

गतं पञ्चदशं ज्ञानद्वारम् ॥१५॥

"इस सूत्रपाठद्वारा समझाई गई है। यहाँ मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान शेष जीव बादर आदि राशि की अपेक्षा से अत्यन्त अल्प होता है—कहा भी है—

"सर्वनिकृष्टो जीवस्य दृष्टउपयोगो हि वीरेण । इत्यादि । अर्थात् भगवान्ने सबसे जघन्य अल्प उपयोग सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त जीवो के देखा है, इसलिये उनसे लेकर आगे आगे के जीवों के क्रमश. ज्ञान की अभिवृद्धि भगवानने देखी है वह अभिवृद्धि लब्धिनिमित्तक-काय इन्द्रिय वाणी मन और दृष्टि इन करणों—साधनो को लेकर क्रमशः अधिक-अधिक होती है। जैसे —केवल कायलब्धि वालों को जितना उपयोग (सबसे अल्प) होता है उनसे कुछ अधिक अभिवृद्धि इन्द्रियलब्धिवालो को होती है। इन्द्रिय वाणी मन और दृष्टि लब्धि वालों के लिये भी क्रमशः अधिकाधिक अभिवृद्धि समझलेनी चाहिये ॥२॥

ज्ञानद्वार समाप्त ।

અજ્ઞાન અને શ્રુતઅજ્ઞાન સિવાયના જીવો બાદર આદિ રાશિની અપેક્ષાએ અત્યત અલ્પ હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—

"सर्वनिकृष्टो जीवस्य दृष्टउपयोगो हि वीरेण" ઇત્યાદિ

આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—સૂક્ષ્મ નિગોદ અપર્યાપ્ત જીવોમાં ભગવાને સૌથી અલ્પ પ્રમાણમાં ઉપયોગ લક્ષણનો સદ્‌ભાવ જોયો છે. ત્યાર બાદના-દ્વીન્દ્રિય આદિ-જીવોમાં ક્રમશઃ જ્ઞાનની અભિવૃદ્ધિ ભગવાને દેખી છે. તે અભિવૃદ્ધિ લબ્ધિનિમિત્તકકાય ઇન્દ્રિય, વાણી, મન, અને દૃષ્ટિ, આ કરણો (સાધનો)ની અપેક્ષાએ ક્રમશઃ અધિકને અધિક હોય છે જેમકે માત્ર કાયિકલબ્ધિવાળા જીવોમાં સૌથી અલ્પ માત્રમાં ઉપયોગ લક્ષણનો સદ્‌ભાવ હોય છે તેમના કરતાં અધિક અભિવૃદ્ધિ ઇન્દ્રિયલબ્ધિવાળામાં હોય છે, અને ઇન્દ્રિય, વાણી, મન અને દૃષ્ટિલબ્ધિવાળા જીવોમાં ક્રમશ વધારેને વધારે અભિવૃદ્ધિ સમજી લેવી ॥

પંદરમું જ્ઞાનદ્વાર સમાપ્ત ॥

(१६) अथ षोडशं योगद्वारमाह—**'ते णं भंते'** इत्यादि, **'ते णं भंते ? जीवा किं मणजोगी वयजोगी कायजोगी'** ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ? किं मनोयोगिनो भवन्ति अथवा वचोयोगिनो भवन्ति काययोगिनो वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि **'गोयमा'** हे गौतम । **'णो मणजोगी' 'नो वयजोगी कायजोगी'** नो मनोयोगिनः सूक्ष्मपृथिवीकायिका भवन्ति, नो—न वा वचोयोगिनो भवन्ति किन्तु काययोगिन एव केवलमेते भवन्ति, युज्यते जीवः कर्मफलोपभोगाय येन स योगः स च त्रिविधो मनोवाक्कायभेदात् तदेतेषु योगेषु मध्ये काययोगमात्रं सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां भवति न तु आद्यौ द्वौ योगौ इति, गतं षोडशं योगद्वारम् ॥१६॥

(१७) अथ सप्तदशमुपयोगद्वारमाह—**'ते णं भंते'** इत्यादि, **'ते णं भंते ? जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता'** ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त । जीवाः किं साका-

---

(१६) योगद्वार— **" ते ण भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी कायजोगी"** हे भदन्त ! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव क्या मनोयोग वाले होते हैं ? या वचोयोगवाले होते हैं ? या काययोगवाले होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है— **"गोयमा"** । हे गौतम ! वे **" नो मणजोगी , नो वयजोगी कायजोगी "** न मनोयोगवाले होते हैं न वचन योगवाले होते है किन्तु काययोगवाले ही होते हैं। कर्मफल के उपभोग करने के लिये जीव जिसके द्वारा युक्त होता है वह योग है अर्थात् मन वचन काय की जो क्रिया है उसका नाम योग है। यह योग तीन प्रकार का होता है। मनोयोग वचनयोग और काययोग। इनमें सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों को केवल काययोग ही होता है। आदि के दो योग नहीं होते। योगद्वार समाप्त।

(१७) उपयोगद्वार— **" ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता"** हे भदन्त ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव क्या साकारोपयोगवाले होते है ? या अनाकारोप-

---

(१६) યોગદ્વાર—**"ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ?"** હે ભગવન્ ! આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો શું મનોયોગવાળા હોય છે ? કે વચનયોગવાળા હોય ? કે કાયયોગવાળા હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉપયોગ—**"गोयमा !"** હે ગૌતમ ! **नो मणजोगी, नो वयजोगी, कायजोगी"** તેઓ મનોયોગવાળા પણ હોતા નથી, વચનયોગવાળા પણ હોતા નથી, પરંતુ કાયયોગવાળા જ હોય છે કર્મફળનો ઉપભોગ કરવાને માટે જીવ જેના દ્વારા યુક્ત હોય છે, તેનુ નામ યોગ છે. આ યોગ ત્રણ પ્રકારનો હોય છે—(૧) મનોયોગ, (૨) વચનયોગ અને (૩) કાયયોગ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં માત્ર કાયયોગનો જ સદ્ભાવ હોય છે, બાકીના બે યોગનો સદ્ભાવ હોતો નથી ।। સોળમું યોગદ્વાર સમાપ્ત ।।

(૧૭) ઉપયોગદ્વાર—**"ते ण भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ?"** હે ભગવન્ ! તે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો શું સાકારોપયોગવાળા હોય છે ? કે અનાકારો-

रोपयुक्ताः-साकारोपयोगवन्तो भवन्ति अथवा-अनाकारोपयुक्ताः-अनाकारोपयोगवन्तो भवन्ति, उपयुज्यते कर्मफलभोगाय आत्मा येन स उपयोगः स च द्विविधः साकारोऽनाकारश्च, तत्राकारः प्रतिवस्तु प्रतिनियतो ग्रहणपरिणामः **'आगारो उ विसेसो'** (आकारस्तु विशेषः) इति वचनात्, सह आकारो यस्य येन वा स साकारः-ज्ञानपञ्चकमज्ञानत्रिकम्, उक्ताकाररहितोऽनाकारः, स चक्षुर्दर्शनादिको दर्शनचतुष्टयात्मकः, तदुक्तम्—

ज्ञानाज्ञाने पञ्च त्रिविकल्पे सोऽष्टधा तु साकारः ।
चक्षुरचक्षुरवधिके वल दृग्विषयस्त्वनाकार इति ॥

तदेतयोरुपयोगयोर्मध्ये सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां क उपयोगो भवतीति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'सागारोवउत्ता वि अनागारोवउत्ता वि'** सूक्ष्म पृथिवीकायिकजीवाः साकारोपयुक्ताः-साकारोपयोगवन्तोऽपि भवन्ति, तथाऽनाकारोपयुक्ताः-

---

योग वाले होते है? आत्मा का चैतन्यानुविधायी जो परिणाम है उसका नाम उपयोग है। यह उपयोग साकारोपयोग और अनाकारोपयोग के भेद से दो प्रकार का होता है। प्रतिनियत वस्तु का जो ग्रहण करने रूप व्यापार है वह साकार उपयोग है क्योंकि **"आगारो उ विसेसो"** आकार ही विशेष है। ऐसा सिद्धान्त का वचन है। ज्ञानोपयोग आठ प्रकार का कहा गया है-- मतिज्ञान आदि पांच ज्ञान और तीन अज्ञान, कहा भी है — **"ज्ञानाज्ञाने पञ्चत्रिविकल्पे,** इत्यादि। दर्शनोपयोग चार प्रकार का है। चक्षुर्दर्शन अचक्षुर्दर्शन अवधिदर्शन और केवलदर्शन यही अभिप्राय —**" चक्षुरचक्षुरविधि"** इस श्लोकार्ध का है। इस प्रकार जब उपयोग दो प्रकार का होता है तो फिर इनके बीच में सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवोके कौनसा उपयोग होता है ऐसा यह प्रश्न है। इसके उत्तर में प्रभु कहते है **"गोयमा"! सागारोवउत्ता वि अनागारोवउत्ता वि"** हे

પયોગવાળા હોય છે ? આત્માનું ચૈતન્યાનુવિધાયી જે પરિણામ છે, તેનું નામ ઉપયોગ છે. તે ઉપયોગના નીચે પ્રમાણે બે પ્રકાર પડે છે—(૧) સાકાર ઉપયોગ અને (૨) અનાકાર-ઉપયોગ. પ્રતિનિયત વસ્તુનુ ગ્રહણ કરવા રૂપ જે વ્યાપાર (પ્રવૃત્તિ) છે, તેનું નામ સાકાર-ઉપયોગ છે, કારણ કે "आगारो उ विसेसो" "આકાર જ વિશેષ છે" એવું સિદ્ધાન્તનું કથન છે. જ્ઞાનોપયોગ આઠ પ્રકારના કહ્યો છે—મતિજ્ઞાન આદિ પાંચ જ્ઞાન રૂપ પાંચ પ્રકાર અને ત્રણ અજ્ઞાન રૂપ ત્રણ પ્રકાર કહ્યું પણ છે કે—"ज्ञानाज्ञाने पञ्चत्रिविकल्पे" ઇત્યાદિ

દર્શનોપયોગ ચાર પ્રકારના કહ્યો છે--(૧) ચક્ષુદર્શન, (૨) અચક્ષુદર્શન (૩) અવધિ-દર્શન અને (૪) કેવલદર્શન એજ વાત નીચેના શ્લોકાર્ધમાં પ્રકટ કરવામાં આવી છે-- "चक्षुरचक्षुरवधि" ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્નનું તાત્પર્ય એ છે કે બે પ્રકારના ઉપયોગમાથી સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોમાં કયા ઉપયોગના સદ્‌ભાવ હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુ તેનો ઉત્તર આપતા કહે છે કે-"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "सागारोवउत्ता वि अनागारोवउत्ता वि" સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો સાકારઉપયોગવાળા પણ હોય છે અને

अनाकारोपयोगवन्तोऽपि भवन्तीति तत्र साकारोपयुक्ताः मत्यज्ञानश्रुताज्ञानापेक्षया, अनाकारोपयुक्तास्तु अचक्षुर्दर्शनोपयोगापेक्षयेति गतं सप्तदशमुपयोगद्वारम् ॥१७॥

(१८) अथाष्टादशमाहारद्वारमाह-'**ते णं भंते**' इत्यादि, '**ते णं भंते? जीवा किं आहारमाहरेंति**' ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त । जीवाः किम् आहारम्-कीदृगमाहारमाहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम । '**दव्वओ अणंतपएसाइं**' द्रव्यतो-द्रव्यस्वरूपपर्यालोचनायाम् अनन्तप्रादेशिकानि द्रव्याणि आहरन्ति, अनन्तानामेव ग्रहणं भवति अन्यथा-ग्रहणासंभवात्, नहि सङ्ख्यातप्रदेशात्मका असङ्ख्यातप्रदेशात्मकाः स्कन्धा जीवस्य ग्रहणप्रायोग्या भवन्तीति । '**खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं**' क्षेत्रतोऽसङ्ख्यात-

---

गौतम ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव साकारोपयोगवाले भी होते है और अनाकारोपयोग वाले भी होते है। इन जीवों के मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान होते है यह बात पहले कही जा चुकी है। अतः इन्हीं दो अज्ञानो की अपेक्षा से उनमें साकारोपयोग का सद्भाव कहा गया है। तथा इनमें चक्षुर्दर्शन होता नहीं है- अचक्षुर्दर्शन होता है। अतः इस अपेक्षा से अनाकारोपयोगवाले भी होते है ॥ उपयोगद्वार समाप्त ॥

(१८) आहारद्वार—"**ते णं भंते ! किं आहारमाहरेंति**" हे भदन्त ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव कैसा आहार करते है ? उत्तर में प्रभु कहते है—"**गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसाइं दव्वाइं आहारेंति**" वे द्रव्य की अपेक्षा अनन्तप्रदेशोवाले द्रव्यों का आहार करते है इस कथन से वे संख्यात प्रदेशोवाले या असख्यात प्रदेशोवाले द्रव्यों का आहार नहीं करते है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जीव के ग्रहणप्रायोग्य संख्यातप्रदेशवाले स्कन्ध और असंख्यातप्रदेशवाले स्कन्ध होते है। "**खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं**"

અનાકાર ઉપયોગવાળા પણ હોય છે આ જીવોમા મત્યજ્ઞાન (મતિ અજ્ઞાન) અને શ્રુત-અજ્ઞાન હોય છે, આ વાત તો પહેલાં કહેવામાં આવી ચુકી છે તેથી આ બે અજ્ઞાનોની અપેક્ષાએ તેમનામાં સાકાર ઉપયોગનો સદ્ભાવ કહ્યો છે. તેમનામાં ચક્ષુર્દર્શન હોતુ નથી, પણ અચક્ષુર્દર્શન હોય છે તે કારણે તેમને અનાકાર ઉપયોગવાળા કહેવામાં આવ્યા છે.

॥ સત્તરમુ ઉપયોગદ્વાર સમાપ્ત ॥

(૧૮) આહાર દ્વાર—"**ते णं भंते ! जीवा किं आहरमाहरेंति ?**" હે ભગવન્ ! તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો કેવો આહાર કરે છે ? મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"**गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसाइं दव्वाइं आहरेंति**" હે ગૌતમ ! દ્રવ્યની અપેક્ષાએ તેઓ અનંત પ્રદેશોવાળા દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે આ કથન દ્વારા એ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તેઓ સંખ્યાત પ્રદેશોવાળા અથવા અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરતા નથી, કારણ કે જીવના દ્વારા ગ્રહણ કરવા યોગ્ય સંખ્યાત પ્રદેશવાળા સ્કન્ધ અને અસંખ્યાત પ્રદેશવાળા સ્કન્ધ હોય છે. "**खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं**" ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ તેઓ અસંખ્યાત પ્રદેશોમાં

प्रदेशावगाढानि द्रव्याणि आहरन्ति, **'कालओ अन्नयरसमयट्ठितियाइं'** कालतः-कालापेक्षया अन्यतरसमयस्थितिकानि-जघन्यस्थितिकानि मध्यमस्थितिकानि उत्कृष्टस्थितिकानि द्रव्याणि आहरन्ति, स्थितिरिति आहारयोग्यस्कन्धपरिणामत्वेऽवस्थानं ज्ञातव्य मिति । **'भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं'** भावतो वर्णवन्ति गन्धवन्ति रसवन्ति स्पर्शवन्ति द्रव्याणि आहरन्ति, प्रतिपरमाण्वेकैकवर्णगन्धरसद्विस्पर्शसद्भावादिति । **'जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति'** यानि द्रव्याणि भावतो वर्णवन्ति आहरन्ति **'ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति'** तानि किं एकवर्णानि आहरन्ति, अथवा-**'दुवण्णाइं आहारेंति'** द्विवर्णानि-द्विवर्णवन्ति द्रव्याणि आहरन्ति, अथवा-**'तिवण्णाइं आहारेंति'** त्रिवर्णानि-वर्णत्रयोपेतानि द्रव्याणि आहरन्ति, अथवा-**'चउवण्णाइं आहारेंति'** चतुर्वर्णानि-वर्णचतुष्कयुक्तानि द्रव्याणि आहरन्ति, किं वा **'पंचवण्णाइं आहारेंति'** पञ्चवर्णानि- वर्णपञ्चकोपेतानि द्रव्याणि आहरन्ति सूक्ष्मपृथिवीकायिका इति प्रश्नः, भग-

---

क्षेत्र की अपेक्षा असख्यात प्रदेशों में अवगाढ हुए द्रव्यों का वे आहार करते है **"कालओ अन्नयरसमयट्ठिइयाइं"** काल की अपेक्षा किसी एक समय की स्थितिवाले, या जघन्यस्थितिवाले, या मध्यमस्थितिवाले या उत्कृष्टस्थितिवाले द्रव्यों का वे आहार करते हैं। आहार के योग्य स्कन्धरूप परिणाम में जो अवस्थान है वह स्थिति है । **"भावओ वण्णमंताइं, गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं"** भाव की अपेक्षा वर्णवाले गन्धवाले, रसवाले और स्पर्शवाले द्रव्यों का वे आहार करते हैं क्योंकि हर एक परमाणु में एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्शों का सद्भाव रहा करता है **"जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति"** भावकी अपेक्षा जिन वर्णवाले द्रव्यो का वे आहार करते हे वे क्या एक वर्णवाले होते है **"दुवण्णाइं आहारेंति तिवण्णाइं आहारेंति"** या दो वर्णवाले होते हैं ? या तीन वर्णवाले होते है, या **"चउवण्णाइं"** चार वर्णवाले है ? या **"पंचवण्णाइं"** पांच वर्णवाले होते हैं । अर्थात् सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव भावकी

અવગાઢ (રહેલા) થયેલા દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે **"कालओ अन्नयरसमयट्ठितियाइं"** કાળની અપેક્ષાએ તેઓ કોઈ એક સમયની સ્થિતિવાળા, અથવા જઘન્ય સ્થિતિવાળાં, અથવા મધ્યમ સ્થિતિવાળા અથવા ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે આહારને યોગ્ય સ્કન્ધ રૂપ પરિણામમાં જે અવસ્થાન છે, તેનું નામ સ્થિતિ છે. **'भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं'** ભાવની અપેક્ષાએ તેઓ વર્ણવાળાં, ગંધવાળાં, રસવાળાં અને સ્પર્શવાળા દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, કારણ કે પ્રત્યેક પરમાણુમા એક વર્ણ, એક ગધ, એક રસ અને બે સ્પર્શોનો સદ્ભાવ રહે છે

પ્રશ્ન—**"जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति"** ભાવની અપેક્ષાએ જે વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે, તે શું એક વર્ણવાળાં હોય છે, **"दुवण्णाइं आहारेंति, तिवण्णाइं आहारेंति, चउवण्णाइं आहारेंति, पंचवण्णाइं आहारेंति ?"** કે બે વર્ણવાળા હોય છે ? કે ત્રણ વર્ણવાળાં હોય છે ? કે ચાર વર્ણવાળાં

वानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम। 'ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि' स्थान-मार्गणं प्रतीत्य एकवर्णान्यपि आहरन्ति, तिष्ठन्ति विशेपपर्यायलक्षणानि अस्मिन्नितिस्थानम्–सामान्यमेकवर्णं द्विवर्णमित्यादि, तस्य सामान्यात्मकस्थानस्य मार्गणम्–अन्वेषणमिति स्थान मार्गणम् तत्प्रतीत्य–तदाश्रित्य सामान्यचिन्तामाश्रित्येत्यर्थः। एकवर्णान्यपि–एकवर्णविशिष्टान्यपि द्रव्याणि आहरन्ति ते जीवा स्तथा 'दुवण्णाइंपि' द्विवर्णान्यपि–वर्णद्वयविशिष्टान्यपि आहरन्ति–आहारं कुर्वन्ति, तथा–'तिवण्णाइंपि' त्रिवर्णान्यपि–वर्णत्रयविशिष्टान्यपि द्रव्याणि आहरन्ति तथा–'चउवण्णाइं पि पंचवण्णाइंपि आहारेंति' चतुर्वर्णान्यपि पञ्चवर्णान्यपि द्रव्याणि स्थान-मार्गणमाश्रित्याहरन्ति इति। आह्रियमाणानामनन्तप्रादेशिकस्कन्धानामेकवर्णत्वं द्विवर्णत्व-मित्यादि कथन व्यवहारनयमतापेक्षया कथितम्, निश्चयमताऽपेक्षया अनन्तप्रादेशिकस्कन्धो-

---

अपेक्षा जिन वर्णवाले द्रव्यों का आहार करते हैं सो क्या वे एक वर्णवाले द्रव्यों का आहार करते है? या दो वर्णवाले द्रव्यों का अहार करते हैं या तीन वर्णवाले द्रव्यो का वे आहार करते हे? या चार वर्णवाले द्रव्यो का वे आहार करते हैं या पांच वर्णवाले द्रव्यो का वे आहार करते है? इसके उत्तर में प्रभु कहते है–"गोयमा! ठाण-मग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि" हे गौतम! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव सामान्य चिन्तन की अपेक्षा से एकवर्णविशिष्ट द्रव्यो का भी अहार करते हैं–तथा 'दुवण्णाइंपि' वर्णद्वयविशिष्ट द्रव्यों का भी वे आहार करते हैं "तिवण्णाइंपि" वर्णत्रयविशिष्टद्रव्यों का भी वे आहार करते है तथा "चउवण्णाइंपि पंचवण्णाइपि आहारेंति" चार वर्णविशिष्ट एवं पांच वर्ण विशिष्ट द्रव्यो का भी वे आहार करते है। यहां आह्रियमाण (हरण किये जानेवाले) जो अनन्त प्रदेशो वाले द्रव्य हैं वे एक वर्णवाले दो वर्णवाले तीन

હોય છે ? કે પાંચ વર્ણવાળાં હોય છે ? એટલે કે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો ભાવની અપેક્ષાએ જે વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે તે શું એક વર્ણવાળાં હોય છે–એટલે કે તેઓ શું એક વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? કે બે વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? કે ત્રણ વર્ણ-વાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? કે ચાર વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? કે પાંચ વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે–"गोयमा! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि" હે ગૌતમ ! સામાન્ય દૃષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે તો તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો એક વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, 'दुवण्णाइंपि' બે વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, "तिवण्णाइं पि, चउवण्णाइं पि, पंचवण्णाइ पि आहारेंति" ત્રણ વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, ચાર વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને પાંચ વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે. અહીં જે અનંત પ્રદેશો-વાળાં આહ્રિયમાણ (ગ્રહણ કરાતાં) દ્રવ્યો છે, તેઓ એક વર્ણવાળા, બે વર્ણવાળાં, ત્રણ વર્ણવાળાં, ચાર વર્ણવાળા અથવા પાંચ વર્ણવાળાં હોય છે, આ પ્રકારનું જે કથન છે તે

ऽल्पीयानपि पञ्चवर्ण एव भवतीति ज्ञातव्यमिति ॥ **'विहाणमग्गणं पडुच्च'** विधानमार्गणं प्रतीत्य वि-विविक्तम्-इतरव्यवच्छिन्नं धानं-पोषणं स्वरूपस्य यत् तद् विधानम्, तत्प्रतीत्य-तदाश्रित्य विशेषचिन्तामाश्रित्येत्यर्थः, कृष्णो नील इत्यादि प्रतिनियतो वर्णविशेष इति यावत् तस्य मार्गणम्-अन्वेषणं तत्प्रतीत्य-तदाश्रित्य कालवर्णान्यपि आहरन्तीत्यादिना अग्रिमतनेन सम्बन्धः, **'कालाइं पि आहारेंति जाव सुक्किल्लाइं पि आहारेंति'** कालवर्णान्यपि आहरन्ति यावच्छुक्लवर्णान्यपि द्रव्याणि आहरन्ति-अत्र यावत्पदेन नीलरक्तपीतानां संग्रहो भवतीति। कालवर्णान्यपि इत्यादि कथनं व्यवहारनयमतापेक्षया ज्ञातव्यम् निश्चयमतानुसारेण तु पञ्चवर्णान्येव तानि द्रव्याणि भवन्तीति भावः। गौतमः पृच्छति—**'जाइं वण्णओ कालाइं ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं आहारेंति** हे भदन्त। वर्णतो यानि कालानि-कृष्णानि आह-

---

वर्णवाले, चार वर्णवाले और पांच वर्णवाले होते हैं ऐसा जो कथन है वह व्यवहार नयकी अपेक्षा से है। निश्चय नयकी अपेक्षा से तो जो अनन्त प्रदेशोवाला स्कन्ध होता वह अतिशय अल्प भी होता है और पांचों वर्णवाला ही होता है ऐसा जानना चाहिये। **"विहाणमग्गणं पडुच्च"** तथा विधानमार्गण की विशेषचिन्तन की-अपेक्षा करके-कृष्ण' नील इत्यादि प्रतिनियति वर्ण विशेष की अपेक्षा करके-सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव काले वर्णवाले द्रव्यो का भी आहार करते है यावत् शुक्लवर्ण वाले द्रव्यों का भी आहार करते है। यहां यावत् शब्द से नील रक्त-लाल और पीत इनवर्णों का ग्रहण हुआ है। **"काले वर्णवाले द्रव्यों का आहार करते है।** इत्यादिरूप से जो कहा गया है वह व्यवहारनय के अनुसार कहा गया है। क्योंकि निश्चयनय के अनुसार तो पांचो ही वर्णों वाले वे द्रव्य होते है ऐसा जानना चाहिये। गौतम पूछते हैं **"जाइं वण्णओ कालाइं ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं आहारेंति"** यदि वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव

વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ કરવામા આવ્યું છે. નિશ્ચય નયની અપેક્ષાએ તો જે અનત પ્રદેશોવાળો સ્કન્ધ હોય છે, તે અતિશય અલ્પ પણ હોય છે અને પાચે વર્ણોવાળા જ હોય છે, એમ સમજવુ 'विहाणमग्गणं पडुच्च" તથા વિધાન માર્ગણુની અપેક્ષાએ—વિશેષ ચિંતનની અપેક્ષાએ-તો તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો કાળા વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, નીલ વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, લાલ વર્ણવાળા દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, પીળા વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને શુકલ વર્ણવાળા દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે. "કાળા વર્ણવાળા દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે", ઇત્યાદિ જે કથન કરવામા આવ્યું છે તે વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે, કારણુ કે નિશ્ચય નય અનુસાર તો તે દ્રવ્યો પાંચે વર્ણનાં હોય છે, એમ સમજવું જોઈએ

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"जाइं वण्णओ कालाइं ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं आहारेंति ?" હે ભગવન્! જો તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો વર્ણની

रन्ति तानि किमेकगुणकालानि आहरन्ति यावदनन्तगुणकालानि आहरन्ति, अत्र यावत्पदेन द्वित्र्याद्यारभ्यासंख्यातगुणकानीत्येतत्पर्यन्तग्रहणं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'एगगुणकालाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति'** एकगुणकालान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणकालान्यपि आहारन्ति अत्र यावत्पदेन द्विगुणकाला-दारभ्य असख्यातगुणकालान्तग्रहणं भवति इति। **'एवं जाव सुक्किल्लाइंपि'** एव यावत् शुक्ला-न्यपि एकगुणनीलान्यपि आहरन्ति, एवमनन्तगुणनीलान्यपि आहरन्ति, एकगुणरक्तान्यपि आहरन्ति, यावदनन्तगुणरक्तान्यपि आहरन्ति, एकगुणपीतान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणपीता-

---

वर्ण की अपेक्षा कृष्ण वर्ण वाले द्रव्य का आहार करते हैं तो क्या वे एक गुण वाले-एक गुने काल वर्ण विशिष्ट द्रव्यो का आहार करते है ? या यावत् अनन्तगुणित काल वर्ण विशिष्ट द्रव्यों का आहार करते हैं ? यहाँ यावत् पद से **'द्वित्रि आदि गुणित कृष्ण वर्ण वाले द्रव्यों से लेकर असंख्यात गुणित कृष्ण वर्ण वाले द्रव्यों का आहार करते हैं"** ऐसा पाठ गृहीत हुआ है। इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं ? **"गोयमा! एग गुणकालाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति"** हे गौतम॥ वे एक गुणवाले कृष्णवर्णविशिष्ट द्रव्यो का भी आहार करते हैं यावत् अनंत गुणित कृष्ण वर्ण विशिष्ट द्रव्यों का भी आहार ग्रहण करते हैं। यहाँ यावत् पद से **"द्विगुण काल से लेकर असंख्यात गुण काल विशिष्ट द्रव्यों का भी वे आहार ग्रहण करते हैं"** ऐसा पाठ समझाया गया है **"एवं जाव सुक्किल्लाइं"** इसी प्रकार से एक गुण नील से लेकर यावत् अनन्तगुण नील से युक्त द्रव्यो का भी आहार ग्रहण करते हैं एक गुणरक्त वर्ण से लेकर यावत् अनन्तगुण रक्त से युक्त द्रव्यों का भी वे आहार ग्रहण करते है एक गुण पीत से लेकर यावत् अनन्त गुण पीत से युक्त द्रव्यों का भी वे आहार करते हैं, और एक

અપેક્ષાએ કાળા વર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, તો શું તેઓ એક ગણી કાળાવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, કે બેથી લઈને દશ ગણા કાળાવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, સખ્યાત, અસંખ્યાત એને અનંતગણા કાળાવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—**"गोयमा ! एगगुणकालाइं पि आहारेंति, जाव अणंतगुण कालइं पि आहारेंति"** હે ગૌતમ ! તેઓ એક ગણા કાળવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, બેથી લઈને દસ ગણા, સંખ્યાત ગણા. અસંખ્યાત ગણા અને અનંત ગણા કાળાવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે આ રીતે અહીં એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે તેઓ ગમે તેટલા ગણા કાળાવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર ગ્રહણ કરે છે **"एवं जाव सुक्किल्लाइं"** એજ પ્રમાણે તેઓ એક ગણાંથી લઈને અનત ગણાં નીલ દ્રવ્યોનો પણ આહાર ગ્રહણ કરે છે, એજ પ્રમાણે એક ગણા રાતાવર્ણવાળા દ્રવ્યોથી લઈને અનંત ગણા રાતાવર્ણ-

न्यपि आहरन्ति, एकगुणशुक्लिमान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणशुक्लिमान्यपि आहरन्ति। **'जाइं भावओ गंधमंताइं आहारेंति ताइं किं एगगंधाइं आहारेंति-दुगंधाइं आहारेंति'** यानि द्रव्याणि भावतो गन्धवन्ति आहरन्ति तानि किमेकगन्धानि आहरन्ति अथवा-द्विगन्धानि-गन्धद्वयविशिष्टानि आहरन्तीति प्रश्न', भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम **'ठाणमग्गणं पडुच्च एगगंधाइंपि आहारेंति दुगंधाइं पि आहारेंति'** स्थानमार्गणं प्रतीत्य सामान्यचिन्तामाश्रित्य एकगन्धान्यपि आहरन्ति, द्विगन्धान्यपि-गन्धद्वयविशिष्टान्यपि आहरन्तीति। एतद्व्यवहारनयमतानुसारेण कथितम् निश्चयनयमतानुसारेण सर्वस्यापि द्रव्यस्य द्विविधगन्धवत्त्वादिति। **'विहारमग्गणं पडुच्च सुब्भिगंधाइं पि आहारेति दुब्भिगंधाइं पि आहारेंति'** विधानमार्गणं प्रतीत्य-विशेषचिन्तामाश्रित्य तु सुरभिगन्धान्यपि आहरन्ति, तथा-दुरभिगन्धा-

---

गुण शुक्ल से लेकर यावत् अनन्त गुण शुक्ल से युक्त द्रव्यों का भी वे आहार करते हैं। **"जइ भावओ गंधमंताइं दव्वाइं आहारेंति, ताइं किं एगगंधाइं आहारेति, दुगंधाइं आहारेंति,"** यदि भाव की अपेक्षा वे गंध युक्त द्रव्यो का आहार करते हैं तो क्या वे एक गंध से युक्त द्रव्यों का आहार करते हैं? अथवा दो गंध से युक्त द्रव्यो का आहार करते है। उत्तर में प्रभु कहते हैं **"गोयमा! ठाणमग्गणं पडुच्च एगगंधाइं पि आहारेंति, दुगधाइं पि आहारेंति"** हे गौतम! सामान्य विचार की अपेक्षा से वे एक गन्ध वाले द्रव्यों का भी आहार करते है और दो गन्ध वाले द्रव्यो का भी आहार करते हैं। यह कथन व्यवहारनय के मतके अनुसार है। निश्चयनय के मत के अनुसार तो समस्त ही द्रव्य दो प्रकार की गंध वाले होते है। **"विहाणमग्गणं पडुच्च सुब्भिगंधाइं पि आहारेंति, दुब्भिगंधाइं पि आहारेंति,"** "विशेष विचार की अपेक्षा से वे सुरभिगन्धयुक्तद्रव्यों का भी आहार करते है। और दुरभिगन्धयुक्त द्रव्यों का भी वे आहार करते हैं। "जइ

વાળા દ્રવ્યોને પણ આહાર ગ્રહણ કરે છે. એજ પ્રમાણે એક ગણાથી લઈને અનંત ગણા પીળાવર્ણવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર પણ તેઓ ગ્રહણ કરે છે, અને એક ગણાથી લઈ ને અનંત ગણા શુક્લતાવાળા દ્રવ્યોનો પણ આહાર ગ્રહણ કરે છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—'जइ भावओ गधमताइं दव्वाइं आहारेंति, ताइं किं एगगंधाइं आहारेंति, दुगधाइं आहारेंति ?' જો તેઓ ભાવની અપેક્ષાએ ગંધયુક્ત દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, તો શું તેઓ એક ગંધવાળા દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? કે બે ગંધ વાળા દ્રવ્યોને આહાર કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર -"गोयमा ! ठाणमग्गण पडुच्च एगगंधाइं पि आहारेंति, दुगंधाइं पि आहारेंति" હે ગૌતમ ! સામાન્ય દૃષ્ટિએ વિચારવામાં આવે તો તેઓ એક ગંધવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, અને બે ગંધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર પણ કરે છે. આ કથન વ્યવહાર નયના મત અનુસાર કરવામા આવ્યું છે. નિશ્ચય નયના મતાનુસાર તો બધા દ્રવ્યો બે પ્રકારના ગંધવાળાં હોય છે "विहाणमग्गणं पडुच्च सुब्भिगंधाइं पि आहारेंति, दुब्भिगंधाइं पि आहारेंति" વિશેષ વિચારની દૃષ્ટિએ તો તેઓ સુરભિ ગંધ વાળાં (સુગંધયુક્ત) દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, અને દુરભિગંધવાળાં (દુર્ગંધયુક્ત) દ્રવ્યોનો પણ

न्यपि द्रव्याणि आहरन्तीति 'जाइं गंधओ सुब्भिगंधाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति' यानि गन्धतः सुरभिगंधानि तानि किमेकगुणसुरभिगन्धानि आहरन्ति यावत् अनन्तगुणसुरभिगन्धानि आहरन्ति अत्र यावत्पदेन एकगुणसुरभिगन्धादारभ्य असख्यातगुणसुरभिगन्धपर्यन्तस्य सग्रहो भवति, इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा ! हे गौतम ? एगगुणसुब्भिगंधाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं पि आहारेंति' एगगुणसुरभिगन्धान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणसुरभिगन्धान्यपि द्रव्याणि आहरन्ति ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवाः, अत्र यावत्पदेन द्विगुणसुरभिगन्धादारभ्य असख्यातगुणसुरभिगन्धान्तस्य सग्रहो भवतीति । 'एवं दुरब्भिगंधाइं पि' एव सुरभिगन्धप्रकरणे यथा कथितं तथैव दुरभिगन्धमाश्रित्यापि वक्तव्यम्, तथाहि–यदि गन्धतो

गंधओ सुब्भिगंधाइं आहारेंति, ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइं आहारेति, जाव अणंगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति, " यदि वे गंध की अपेक्षा सुरभिगंध युक्त द्रव्यो का आहार करते हैं तो क्या वे एकगुण सुरभिगंध से युक्त द्रव्यों का आहार करते है या यावत् अनन्त गुण सुरभि गंध से युक्त द्रव्यो का आहार करते हैं ? यहाँ यावत्पद से एकगुण सुरभिगन्ध से लेकर असंख्यातगुण सुरभिगन्ध से युक्त द्रव्यों का आहार करते है । ऐसा पाठ गृहीत हुआ है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! एग गुणसुब्भिगंधाइ पि आहारेंति, जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं पि आहारेति," "हे गौतम ! वे एकगुण सुरभिगंध वाले द्रव्यों का भी आहार करते है और यावत् अनन्त गुण सुरभिगधवाले द्रव्यो का भी आहार ग्रहण करते है । यहाँ यावत्पद से "द्विगुण सुरभिगंध से लेकर असंख्यातगुण सुरभिगंध से युक्त द्रव्यों का आहार ग्रहण करते हैं ॥ ऐसा पाठ संगृहीत हुआ है " एवं दुब्भिगंधाइं पि " सुरभिगंध के प्रकरण

આહાર કરે છે, ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન "जइ गंधओ सुब्भिगधाइ आहारेंति, ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइ आहारेंति, जाव अणतगुणसुब्भिगधाइ आहारेंति" જો તેઓ ગંધની અપેક્ષાએ સુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે તો શું તેઓ એક ગણી ગંધવાળા સુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, કે બેથી લઈને દસ ગણી, સંખ્યાત ગણી, અસંખ્યાત ગણી, કે અનંત ગણી સુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा ! एगगुणसुब्भिगंधाइं पि आहारेंति, जाव अणंतगुण सुब्भिगधाइं पि आहारेंति" હે ગૌતમ! તેઓ એક ગણી સુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, બેથી લઈને દસ ગણી સુરભિગંધવાળા દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, સખ્યાત ગણી સુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, અસંખ્યાત ગણી સુરભિવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહારે કરે છે અને અનત ગણી સુરભિવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે. 'एवं दुब्भिगधाइ पि" એવું જ કથન દુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોના વિષે પણ સમજી લેવું એટલે કે

दुरभिगन्धान्यपि आहरन्ति तानि किमेकगुणदुरभिगन्धान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणदुरभिगन्धान्यपि आहरन्तीति भाव । 'रसा जहा वण्णा' रसा यथा वर्णा, वर्णवदेव रसेऽपि सर्वा वक्तव्यता भणितव्या । तथाहि–हे भदन्त ? यानि भावतो रमवन्ति आहरन्ति तानि किम् एक रसानि आहरन्ति यावत्पञ्चरसानि आहरन्ति, गौतम ? स्थानमार्गणं प्रतीत्य एक रसान्यपि द्विरसान्यपि यावत्पञ्चरसान्यपि आहरन्ति विधानमार्गण प्रतीत्य तिक्तान्यपि मधुरादीन्यपि आह-

मे जैसा कहा गया है वैसा ही कथन इस दुरभिगंध को आश्रित करके भी कहलेना चाहिये। यदि वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव गन्ध की अपेक्षा दुरभिगन्ध वाले द्रव्यो का ग्रहण करते है तो क्या वे एक गुण वाले दुरभिगन्ध से युक्त द्रव्यो का आहार करते है ? या यावत् अनन्तगुणवाले दुरभिगन्ध से युक्त द्रव्यो का आहार करते है ? तो इस सम्बन्ध में प्रभु कहते है हे गौतम ! वे एक गुण वाले दुरभिगंध से युक्त द्रव्यो का भी आहार करते है । यहां पर भी यावत् शब्द से "द्विगुण सुरभि गंध से लेकर असंख्यात गुण सुरभिगंध से युक्त द्रव्यों का वे आहार करते हैं,, ऐसा पाठ सगृहीत हुआ है "रसा जहा वण्णा" वर्ण के सवन्ध में जैसी वक्तव्यता कही गई है वैसी ही वक्तव्यता रस के सबन्ध में भी कहलेनी चाहिए जैसे हे भदन्त ! यदि वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव भाव की अपेक्षा रस विशिष्ट द्रव्यो का आहार करते हैं तो क्या वे एक रस वाले द्रव्यो का आहार करते है या यावत् पांच रस वाले द्रव्यों का आहार करते है ? उत्तर में प्रभु कहते है–हे गौतम ! सामान्यतया विचार करने की अपेक्षा से तो वे एक रस वाले द्रव्यो का भी आहार करते हैं और दो रस वाले द्रव्यो का भी आहार करते है तीन रस वाले द्रव्यो का भी आहार करते है,

જો તેઓ દુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર ગ્રહણ કરે છે, તો શુ એક ગણી દુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર ગ્રહણ કરે છે, કે બે થી લઈને અનંત પર્યંત દુરભિગધવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર ગ્રહણ કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—હે ગૌતમ ! તેઓ એક ગણી દુરભિગધવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, બેથી લઈને દસ ગણી દુરભિગંધવાળા દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, સંખ્યાત અસંખ્યાત, અને અનંત ગણી દુરભિગંધવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર ગ્રહણ કરે છે. 'रसा जहा वण्णा" વર્ણના સબધમાં જેવું કથન કરવામાં આવ્યુ છે, એવુ જ કથન રસના વિષયમાં પણ સમજી લેવુ રસના વિષયમાં આ પ્રકારના પ્રશ્નોત્તરો બનશે ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-હે ભગવાન્ ! જો તે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો ભાવની અપેક્ષાએ રસયુક્ત દ્રવ્યોનો આહાર કરતા હોય, તો શું તેઓ એક રસવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, કે બે રસવાળાં, કે ત્રણ રસવાળાં, કે ચાર રસવાળાં, કે પાંચ રસવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—હે ગૌતમ ! તેઓ સામાન્ય દૃષ્ટિએ વિચારવામા આવે, તો એક રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, બે રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, ત્રણ રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, ચાર રસવાળા દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને

रन्ति, हे भदन्त ? यानि तिक्तादीनि आहरन्ति तानि किम् एकगुणतिक्तादीनि यावदनन्तगुणतिक्तादीनि आदिपदेन कटुकषायाम्लमधुररसेष्वपि ज्ञातव्यम् इति । 'जाइं भावओ फासमंताइं आहारेंति ताइं किं एगफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं आहारेंति' हे भदन्त ? यदा सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवा', यानि भावतः स्पर्शवन्ति द्रव्याणि आहरन्ति तानि किम् एकस्पर्शानि आहरन्ति यावदष्टस्पर्शानि आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा !

चार रस वाले द्रव्यो का भी आहार करते हैं और पांच रस वाले द्रव्यों का भी आहार करते हैं। तथा—जब विशेष की अपेक्षा से विचार किया जाता है तो तिक्त रस वाले द्रव्यो का भी वे आहार करते है, कटु रस वाले कषाय रस वाले अम्ल-खट्टे रस वाले और मधुर रस वाले द्रव्यों का भी वे आहार करते है। हे भदन्त जिन तिक्तादि रस विशिष्ट द्रव्यों का वे आहार करते हैं वे द्रव्य क्या एक गुण तिक्तादि रस वाले होते हैं या यावत् अनन्त गुण तिक्त और रसवाले होते है ? तो इस सम्बन्ध में जैसा उत्तर एक गुण कृष्ण आदि वर्ण वाले आहार के प्रकरण में दिया गया है वैसा ही वह सब कथन यहां पर भी समझलेना चाहिए, इसी प्रकार प्रश्न और उत्तर एक गुण कटु रस आदिरसो वाले आहार के सम्बन्ध में जान लेना चाहिए। "जाइं भावओ फासमंताइं आहारेंति, ताइं किं एगफासाइं जाव अट्ठफासाइं" हे भदन्त! जब सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव भाव की अपेक्षा जिन स्पर्श वाले द्रव्यों का आहार ग्रहण करते है वे क्या एक स्पर्श वाले होते है या यावत् आठ स्पर्श वाले होते है। उत्तर में प्रभु कहते हैं— "गोयमा !

પાંચ રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે જો વિશેષની અપેક્ષાએ વિચાર કરવમા આવે, તો તેઓ તિકત (તીખા) રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, કટુ (કડવા) રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, કષાય (તુરા) રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, ખાટા રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને મધુર રસવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન હે ભગવન્ ! જે તિકતાદિ રસયુક્ત દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે, તે દ્રવ્યો શુ એક ગણાં તિકત આદિ રસયુક્ત હોય છે, કે બેથી લઈને અનંત ગણાં તિકતાદિ રસ યુકત હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુના ઉત્તર—એક ગણી કાળાશ આદિ વર્ણવાળા આહારના સંબધમાં જેવો ઉત્તર આપવામા આવ્યો છે, એવો જ ઉત્તર તિકતાદિ રસોના વિષયમાં પણ સમજી લેવો જોઈએ. એટલે કે તેઓ એક ગણીથી લઈને અનંત ગણી તિકતા, કટુતા, કષાયતા, ખટાશ અને મધુરતાવાળા દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન–'जाइं भावओ फासमंताइं आहारेंति, ताइं किं एगफासाइं जाव अट्ठ फासाइं !" હે ભગવન્ ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો ભાવની અપેક્ષાએ જે સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર ગ્રહણ કરે છે, તે દ્રવ્યો શું એક સ્પર્શવાળાં હોય છે, કે બેથી લઈને આઠ પર્યંતના સ્પર્શોવાળાં હોય છે ?

हे गौतम ! 'ठाणमग्गणं पडुच्च' स्थानमार्गणं प्रतीत्य–सामान्यचिन्तामाश्रित्य 'नो एगफासाइं आहारेंति नो दुफासाइं आहारेंति नो तिफासाइं आहारेंति' नो एकस्पर्शविशिष्टद्रव्याणि आहरन्ति, नो नवा द्विस्पर्शयुक्तद्रव्याणि आहरन्ति, न वा त्रिस्पर्शयुक्तद्रव्याणि आहरन्ति किन्तु 'चउफासाइं पि आहारेंति, पंचफासाइं पि आहारेंति जाव अट्ठफासाइं पि आहारेंति' चतुः स्पर्शान्यपि आहरन्ति, पञ्चस्पर्शयुक्तद्रव्याण्यपि आहरन्ति, यावदष्टस्पर्शयुक्तान्यपि आहरन्ति, अत्र यावत्पदेन षट्सप्तमयो र्ग्रहणं भवति, 'विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति' विधानमार्गणं प्रतीत्य तु कर्कशान्यपि आहरन्ति 'जाव लुक्खाइं पि आहारेंति' यावद् रूक्षाण्यपि आहरन्ति, अत्र यावत्पदेन मृदुगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धाना सग्रहो भवति, इति भावः।

ठाणमग्गणं पडुच्च', सामान्य विचार की अपेक्षा तो वे "नो एगफासाइं आहारेंति नो दुफासाइं आहारेंति, नो तिफासाइं आहारेंति" हे गौतम ! न एक स्पर्श वाले होते है न दो स्पर्श वाले होते हैं और न तीन स्पर्श वाले होते है अर्थात् वे न एक स्पर्श से युक्त द्रव्यों का आहार करते है न दो स्पर्शों से युक्त द्रव्यो का आहार करते है और न तीन स्पर्शों से युक्त द्रव्यो का आहार करते हैं, किन्तु "चउफासाइं पि अहारेंति पंच फासाइं पि आहारेंति जाव अट्ठफासाइं पि अहारेंति" वे चार स्पर्शों से युक्त द्रव्यो का आहार करते हैं पांच स्पर्शों से युक्त द्रव्यों का भी आहार करते है यावत् आठ स्पर्शो से युक्त द्रव्यो का भी आहार करते है। यहां यावत्पदसे "छह स्पर्शों से एवं सात स्पर्शों से युक्त द्रव्यों का आहार करते हैं" ऐसा कहा गया है। "विहाणमग्गण पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति' विधान मार्गणा को आश्रित करके कर्कशस्पर्श वाले पुद्गलों का भी वे आहार करते है "जाव लुक्खाइं पि आहारेंति" यावत् रूक्षस्पर्शवाले पुद्गलों का भी आहार करते हैं। यहां यावत्पद से मृदु गुरु लघु शीत, उष्ण और

મહાવીર પ્રભુને ઉત્તર–"गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च" સામાન્ય વિચારની અપેક્ષાએ તે તેઓ "नो एगफासाइं आहारेंति, नो दुफासाइं आहारेंति, नो तिफासाइं आहारेंति" એક સ્પર્શવાળાં પણ હોતાં નથી, બે સ્પર્શવાળાં પણ હોતાં નથી, ત્રણ સ્પર્શવાળાં પણ હોતાં નથી, એટલે કે તેઓ એક, બે અથવા ત્રણ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરતા નથી, પરંતુ "चउफासाइं पि आहारेंति, पंच फासाइं पि आहारेंति, जाव अट्ठ फासाइं पि आहारेंति" તેઓ ચાર સ્પર્શોવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, પાંચ સ્પર્શોવાળાં દ્રવ્યોનો પણ કરે છે, છ સ્પર્શોવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર પણ કરે છે, સાત સ્પર્શોવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને આઠ સ્પર્શોવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે "विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति" વિશેષ દૃષ્ટિએ વિચાર કરવામાં આવે, તો તેઓ કર્કશ સ્પર્શવાળાં પુદ્ગલોનો આહાર પણ કરે છે, "जाव लुक्खाइं पि आहारेंति" મૃદુ સ્પર્શવાળાં, ગુરુ સ્પર્શવાળાં, લઘુસ્પર્શવાળાં, શીત સ્પર્શવાળાં, ઉષ્ણ સ્પર્શવાળાં, સ્નિગ્ધ સ્પર્શવાળાં અને રૂક્ષ સ્પર્શવાળાં પુદ્ગલોનો આહાર પણ કરે છે.

'जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति' हे भदन्त ! यानि स्पर्शतः कर्कशानि आहरन्ति तानि किम् एकगुण कर्कशानि आहरन्ति यावदनन्तगुणकर्कशानि आहरन्ति, अत्र यावत्पदेन द्विगुणकर्कशादारभ्य असंख्यातगुणकर्कशपर्यन्तानां संग्रहो भवति इति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं पि आहारेंति'** एकगुणकर्कशान्यपि आहरन्ति यावदनन्तगुणकर्कशान्यपि आहरन्ति, अत्र यावत्पदेन द्विगुणकर्कशादारभ्यासंख्यातगुणकर्कशान्तानां संग्रहो भवतीत्युत्तरम्, **'एवं जाव लुक्खा नेयव्वा'** एवम्-कर्कशवदेव यावद्रूक्षाण्यपि ज्ञातव्यानि, अत्र यावत्पदेन मृदुगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धानां

स्निग्ध इन स्पर्शों का ग्रहण हुआ है । **जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति"** यदि वे स्पर्श की अपेक्षा कर्कश स्पर्श वाले द्रव्यों का आहार करते हैं तो क्या एक गुण कर्कश स्पर्श वाले द्रव्यों का आहार करते है या यावत् अनन्तगुण कर्कश स्पर्श वाले द्रव्यो का आहार करते हैं ? यावत् पद से द्विगुण कर्कश स्पर्श से लेकर असंख्यात गुणकर्कश स्पर्श तक का ग्रहण हुआ है । इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं । **"गोयमा एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइ पि आहारेंति'** हे गौतम ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव एक गुण कर्कश स्पर्श वाले द्रव्यों का भी आहार करते हैं यावत् अनन्त गुण कर्कश स्पर्श वाले द्रव्यों का भी आहार करते हैं । यहां यावत्पद से द्विगुण कर्कश स्पर्श से लेकर असंख्यात गुण कर्कश स्पर्श से युक्त द्रव्यों का ग्रहण हुआ है । **'एवं जाव लुक्खा नेयव्वा'** कर्कश स्पर्श के जैसे ही यावत् रूक्ष स्पर्श का भी कथन कर लेना चाहिये । यहां यावत्पद से मृदु गुरु लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध इन स्पर्शों का संग्रह हुआ है । स्पर्श की अपेक्षा

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-**'जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति, ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति, जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ?'** સ્પર્શની અપેક્ષાએ કર્કશ સ્પર્શવાળા જે દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે, તે દ્રવ્યો શું એક ગણા કર્કશ સ્પર્શવાળા હોય છે, કે બેથી લઈને અનંત ગણાં કર્કશ સ્પર્શવાળાં હોય છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-**"गोयमा ! एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति, जाव अणंतगुणकक्खडाइं पि आहारेंति"** હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો એક ગણા કર્કશ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, બેથી લઈને દસ ગણાં કર્કશ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, સંખ્યાત ગણાં કર્કશ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, અસંખ્યાત ગણાં કર્કશ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને અનંત ગણાં કર્કશ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે **"एवं जाव लुक्खा नेयव्वा"** કર્કશ સ્પર્શના જેવું જ કથન મૃદુ, ગુરુ લઘુ શીત, ઉષ્ણ, સ્નિગ્ધ અને રૂક્ષ સ્પર્શોના વિષયમાં પણ સમજી લેવું જેમ કે પ્રશ્ન-સ્પર્શની અપે·

संग्रहो भवति, हे भदन्त ? यानि स्पर्शतः मृदूनि आहरन्ति तानि किम् एकगुणमृदूनि यावदनन्तगुणमृदूनि आहरन्ति हे गौतम ! एकगुणमृदून्यपि आहरन्ति, यावदनन्तगुणमृदून्यपि आहरन्ति, एवं गुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षेष्वपि ज्ञातव्यमिति । **'ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं आहारेंति अपुट्ठाइं आहारेंति'** हे भदन्त ? यानि पूर्वोक्तानि एकगुणकर्कशादीनि यावत्-अनन्तगुणकर्कशादीनि आहरन्ति सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तानि किं स्पृष्टानि आत्मप्रदेशस्पर्शविषयाणि आहरन्ति अथवा अस्पृष्टानि आत्मप्रदेशस्पर्शाविषयाणि आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ? **'पुट्ठाइं आहारेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति'** स्पृष्टानि आत्मप्रदेशस्पर्शविषयाण्येव

जिन एक मृदु स्पर्श वाले द्रव्यों का वे आहार करते है तो क्या वे एक गुण मृदु स्पर्श वाले द्रव्यों का आहार करते हैं ? या यावत् अनन्त गुण मृदु स्पर्श वाले द्रव्यों का आहार करते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है-हे गौतम ! वे एक गुण मृदु स्पर्श वाले द्रव्यो का भी आहार करते हैं यावत् अनन्तगुणित मृदु स्पर्शवाले द्रव्यो का भी वे आहार करते हैं । इसी प्रकार गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्शों में भी ऐसा ही कथन जानना चाहिये । हे भदन्त ! यदि वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव पूर्वोक्त एक गुणित कर्कशादि स्पर्श वाले द्रव्यों को यावत् अनन्त गुणित कर्कशादि स्पर्श वाले द्रव्यों को आहार रूप से ग्रहण करते हैं-तो **"ताइं भंते किं पुट्ठाइं आहारेंति अपुट्ठाइं आहारेंति"** हे भदन्त ! पूर्वोक्त वे क्या उनके आत्मप्रदेशों से स्पृष्ट होते हैं तब वे उन्हें आहार रूप से ग्रहण करते है ? या वे उनके आत्मप्रदेशो से स्पृष्ट नहीं होते है तब उन्हे वे आहार रूप से ग्रहण करते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-**गोयमा ! पुट्ठाइं आहारेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति'** हे गौतम ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव जिन एक

ક્ષાએ જે એક મૃદુ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે, તે દ્રવ્યો શું એકગણુા મૃદુ સ્પર્શવાળાં હોય છે, કે એથી લઈને અનંત ગણાં મૃદુ સ્પર્શવાળાં હોય છે ? મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-હે ગૌતમ ! તેઓ એક ગણા મૃદુ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર પણ કરે છે, એથી લઈને દસ ગણાં મૃદુ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે અને અસંખ્યાત અને અનંત મૃદુ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે, એવું જે કથન ગુરૂ, લઘુ, શીત, ઉષ્ણુ સ્નિગ્ધ અને રૂક્ષ સ્પર્શોના વિષે પણ સમજી લેવું ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન-હે ભગવન્ ! જો તે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો એક ગણાથી લઈને અનંત ગણાં કર્કશાદિ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોને આહાર રૂપે ગ્રહણ કરે છે, તો "ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं आहारेंति, आपुट्ठाइं आहारेंति ?" શુ જ્યારે તે દ્રવ્યો તેમના આત્મપ્રદેશો સાથે સ્પૃષ્ટ હોય, ત્યારે તેઓ તેમને આહાર રૂપે ગ્રહણ કરે છે ? કે જ્યારે તે દ્રવ્યો તેમના આત્મપ્રદેશો સાથે સ્પૃષ્ટ ન હોય, ત્યારે તેમને આહાર રૂપે કરે છે ?

आहरन्ति नो अस्पृष्टानि आहरन्तीति। आत्मप्रदेशैः संस्पर्शनम् आत्मप्रदेशावगाढक्षेत्राद्बहिरपि संभवतीत्यतः पुनः प्रश्नयन्नाह-'ताइं भंते ? ओगाढाइं आहारेंति अणोगाढाइं आहारेंति' यानि भदन्त ? स्पृष्टानि आहरन्ति तानि किम् अवगाढानि-आत्मप्रदेशैः सहैकक्षेत्रावस्थायीनि अथवा अनवगाढानि आत्मप्रदेशक्षेत्राद बहिरवस्थितानि आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ? ओगाढाइं आहारेंति नो अणोगाढाइं आहारेंति' अवगाढानि आहरन्ति ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः नो-न तु अनवगाढानि आत्मप्रदेशावगाढक्षेत्राद् बहिरवस्थितानि आहरन्तीति। 'ताइं भंते ! किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति परंपरोगाढाइं आहारेंति' यानि भदन्त ? द्रव्याणि अवगाढानि आहरन्ति, तानि किम अनन्तरावगाढानि आह-

---

गुणित कर्कशादि स्पर्श वाले या यावत् अनन्तगुणित कर्कशादि स्पर्श वाले द्रव्यो का आहार करते हैं वे एक गुणित कर्कशादिस्पर्शवाले द्रव्य या यावत् अनन्त गुणित कर्कशादि स्पर्शवाले द्रव्य उनके आत्मप्रदेशों से स्पृष्ट होते हैं अस्पृष्ट नहीं होते हैं "ताइं भंते ओगाढाइं आहारेंति अणोगाढाइं आहरेंति' हे भदन्त ! जो आत्मप्रदेशों के साथ संस्पृष्ट होते है उनका रहना आत्मप्रदेशावगाढ क्षेत्र से बाहर भी संभवित हो सकता है अतः इस सूत्र द्वारा गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त ! जो कर्कशादिस्पर्शवाले द्रव्य स्पृष्ट होते है और उनका वे आहार करते हैं तो क्या वे द्रव्य आत्मप्रदेशों के साथ एक क्षेत्रावस्थायी रूप से अवगाढ होते हैं ? अथवा—आत्मप्रदेशावगाही क्षेत्र से बाहर अवस्थित होते है ? उत्तर में प्रभु कहते है 'गोयमा ओगाढाइं आहारेंति णो अणोगाढाइ आहारेंति" हे गौतम ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव पूर्वोक्त विशेषणवाले अवगाढ द्रव्यों का ही आहार करते हैं अनवगाढ द्रव्यों का आहार नहीं करते है। "ताइं किं

તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે 'गोयमा पुट्ठाइं आहारेंति, णो अपुट्ठाइं आहारेंति" હે ગૌતમ ! તે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો જે એક ગુણિત કર્કશાદિ સ્પર્શવાળાં અથવા ત્યાંથી લઈને અનંત ગુણિત કર્કશાદિ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, તે એક ગુણિતથી લઈને અનંત ગુણિત પર્યન્તના કર્કશાદિ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યો તેમના આત્મપ્રદેશોની સાથે સ્પૃષ્ટ હોય છે, અસ્પૃષ્ટ હોતાં નથી જે દ્રવ્યો આત્મપ્રદેશોની સાથે સંસ્પૃષ્ટ હોય છે, તેમનું રહેવાનું સ્થાન આત્મપ્રદેશાવગાઢ ક્ષેત્રની બહાર પણ સંભવી શકે છે. તેથી હવે ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"ताइं भंते ! ओगाढाइं आहारेंति" अणोगाढाइं आहरेंति' હે ભગવન્ ! જે કર્કશાદિ સ્પર્શવાળાં દ્રવ્યો સ્પૃષ્ટ હોય છે તેમનો તેઓ જે આહાર કરે છે, તો શું તે દ્રવ્યો આત્મપ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવસ્થાયી રૂપે અવગાઢ આત્મપ્રદેશાવગાહી ક્ષેત્રની બહાર અવસ્થિત (રહેલાં) હોય છે ?

તેનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा ! ओगाढाइ आहारेंति, णो अणोगाढाइ आहारेंति" હે ગૌતમ ! તે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળાં અવગાઢ દ્રવ્યોનો જ આહાર કરે છે, અનવગાઢ દ્રવ્યોનો આહાર કરતા નથી. ગૌતમ સ્વા-

रन्ति, परम्परावगाढानि आहारन्ति अयमर्थः-येषु आत्मप्रदेशेषु यानि द्रव्याणि अव्यवधानेनावगाढानि-स्थितानि तैरात्मप्रदेशै स्तान्येव द्रव्याणि आहरन्ति, अथवा-परम्परावगाढानि-एक द्वित्रात्मप्रदेशै र्व्यवहितान्यपि द्रव्याणि आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम 'अणंतरोगाढाइं आहारेंति नो परंपरोगाढाइं आहारेंति' अनन्तरावगाढानि आहरन्ति नो-नतु परम्परावगाढानि आहरन्तीति।

'ताइं भंते ! किं अणूइं आहारेंति बायराइं आहारेंति' यानि भदन्त ! अनन्तरावगाढानि आहरन्ति तानि भदन्त ! अनन्तप्रादेशिकानि द्रव्याणि किम् अणूनि-स्तोकानि आहरन्ति अथवा-बादराणि-प्रभूतप्रदेशोपचितानि आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा'

भंते ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति परंपरोगाढाइं आहारेंति" हे भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिक-जीव जिन अवगाढ हुए द्रव्यो का आहार करते है वे द्रव्य अनन्तरावगाढ होकर उनके आहार के विषय बनते है ? या परम्परावगाढ होकर उनके आहार के विषय बनते है ? तात्पर्य ऐसा है कि जिन आत्मप्रदेशो में जो आहरणीय द्रव्य अव्यवधान रूप से स्थित होते है उन्हीं आत्मप्रदेशों से व्यवहित होते है उनका भी जो आहरण करना है वह परंपरावगाढ आहरण है। इस प्रकार के इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु गौतम से कहते है-गोयमा ! अणंतरोगाढाइं आहरेंति नो परंपरोगाढाइं आहरेंति' हे गौतम ! जो द्रव्य अनंतरावगाढ होते है उन्हे ही वे आहार रूप से ग्रहण करते है परम्परावगाढ द्रव्यो को आहाररूप से वे ग्रहण नहीं करते है। "ताइं भंते कि अणूइंपि आहारेंति बायराइं आहारेंति" हे भदन्त ! जिन अनन्तरावगाढ द्रव्यों का वे आहार करते है वे अनन्त प्रदेशिक द्रव्य क्या अणु थोडे रूप में आहार रूप से उनके द्वारा गृहीत होते हैं ? या प्रभूत प्रदेशोपचित द्रव्य आहार रूप से गृहीत होते हैं ?

भीने। प्रश्न-"ताइं किं भंते ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति, परंपरोगाढाइं आहारेंति ?" हे ભગવન્ ! સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવો જે અવગાઢ થયેલાં દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે, તો શું અનન્તરાવગાઢ દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? કે પરમ્પરાવગાઢ દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ? અનન્તરાવગાઢ આહરણનો અર્થ નીચે પ્રમાણે છે-જે આત્મપ્રદેશોમા જે આહરણીય દ્રવ્ય (આહાર કરવા યોગ્ય દ્રવ્ય) અવ્યવધાન રૂપે રહેલું હોય છે, એજ આત્મપ્રદેશો દ્વારા એજ દ્રવ્યોનું જે આહરણ (ગ્રહણ) કરાય છે; તેનું નામ અનન્તરાવગાઢ આહરણ છે અને જે એક બે આદિ આત્મપ્રદેશો વડે વ્યવહિત હોય છે, તેમનુ જે આહરણ કરાય છે, તેનું નામ પરંપરાવગાઢ આહરણ છે, આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा ! अणंतरोगाढाइं आहरेंति, नो परंपरोगाढाइं आहरेंति" હે ગૌતમ ! જે દ્રવ્યો અનન્તરાવગાઢ હોય છે, તેમને જ તેઓ આહાર રૂપે ગ્રહણ કરે છે પરંપરાવગાઢ દ્રવ્યોને ગ્રહણ કરતા નથી

ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન-"ताइं भंते ! किं अणूइं आहारेंति, बायराइं आहारेंति ?" હે ભગવન્ ! જે અનન્તરાવગાઢ દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે, તે અનન્ત પ્રદેશિક દ્રવ્યો શું

हे गौतम ! 'अणूइंपि आहारेंति बायराइंपि आहारेंति' अणूनि-स्तोकान्यपि आहरन्ति अथवा-बादराणि—प्रभूतदेशोपचितान्यपि आहरन्ति, इहाणुत्वबादरत्वकथनं तेषामेवाहारयोग्यानां स्कन्धानां प्रदेशस्तोकबाहुल्यापेक्षयेति ज्ञातव्यमिति भावः ॥ 'ताइं भंते ! किं उड्ढं आहारेंति अहे आहारेंति तिरियं आहारेंति' यानि भदन्त ! अणून्यपि आहरन्ति बादराण्यपि आहरन्ति तानि भदन्त ! किमूर्ध्वम्—ऊर्ध्वप्रदेशस्थितानि आहरन्ति अथवा—अध'-अधःप्रदेशस्थितानि आहरन्तीति-अथवा तिर्यग्प्रदेशस्थितानि आहरन्ति, अत्रोर्ध्वाधस्तिर्यक्त्वं यावति क्षेत्रे सूक्ष्मपृथिवी-कायिकोऽवगाढस्तावत्येव क्षेत्रे तदपेक्षया ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्त्वं ज्ञातव्यमिति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'उड्ढंपि आहारेंति अहेवि आहारेंति, तिरियंपि

उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा ! अणूइंपि आहारेंति बायराइंपि आहारेंति" हे गौतम ! थोड़े रूप में भी वे द्रव्य उनके द्वारा गृहीत होते हैं और प्रभूत प्रदेशोपचित द्रव्य भी उनके द्वारा गृहीत होते हैं । यहां जो अणुत्व और बादरत्व का जो कथन किया गया है वह उन्हीं आहार योग्य स्कन्धों के प्रदेशों की स्तोकता और बाहुल्यता की अपेक्षा से कहा-गया है ऐसा जानना चाहिये "ताइं किं उड्ढं आहारेंति अहे आहारेंति तिरियं आहारेंति" हे भदन्त ! अणुरूप में और बादर रूपमें जिन द्रव्यों को वे आहार के रूप में ग्रहण करते है वे क्या ऊर्ध्व प्रदेश में स्थित होते हैं ? या अधः प्रदेश में स्थित होते हैं ? या तिर्यक् प्रदेश में स्थित होते हैं ? यहां ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्ता जितने क्षेत्र में सूक्ष्मपृथिवीकायिक अवगाढ हैं उतने ही क्षेत्र में उस अपेक्षा से जाननी चाहिये। इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा उड्ढंपि आहारेंति अहे त्रि आहारेंति तिरियंपि आहारेंति" हे गौतम !

અણુ રૂપે-થોડા જ પ્રમાણમાં તેમના દ્વારા આહાર રૂપે ગ્રહણ કરાય છે ? કે બાદર રૂપે-અધિક પ્રમાણમાં-તેમના દ્વારા આહાર રૂપે ગ્રહણ કરાય છે ? મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર-"गोयमा ! अणूइ पि आहारेंति, बायराइ पि आहारेंति" હે ગૌતમ ! તે દ્રવ્યો તેમના દ્વારા અલ્પ પ્રમાણમાં પણ ગ્રહણ કરાય છે અને પ્રભૂત પ્રદેશોપચિત દ્રવ્યો પણ તેમના દ્વારા ગ્રહણ કરાય છે અહીં જે અણુત્વ (અલ્પત્વ) અને બાદરત્વ (અધિકત્વ)નું કથન કરવામાં આવ્યું છે તે એજ આહાર યોગ્ય સ્કન્ધોના પ્રદેશોની અલ્પતા અને બહુતાની અપેક્ષાએ કરવામાં આવ્યું છે; એમ સમજવું જોઈએ.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—ताइ किं उड्ढं आहारेंति, अहे आहारेंति, तिरियं आहारेंति" હે ભદન્ત ! અલ્પ રૂપે અથવા અધિક રૂપે જે દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે, તે દ્રવ્યો ઊર્ધ્વ પ્રદેશમાં રહેલાં હોય છે ? કે અધઃ પ્રદેશમાં રહેલાં હોય છે ? કે તિર્યક્ પ્રદેશમા રહેલાં હોય છે ?

અહીં જેટલાં ક્ષેત્રમાં સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકો અવગાઢ છે, એટલા જ ક્ષેત્રમાં એ અપેક્ષાએ ઊર્ધ્વ અધઃ અને તિર્યકતા સમજવી જોઈએ

ગૌતમ સ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા મહાવીર પ્રભુ કહે છે કે—'गोयमा ! उड्ढंपि

आहारेंति' ऊर्ध्वमपि आहरन्ति उर्ध्वप्रदेशावगाढान्यपि आहरन्तीत्यर्थः, अधोऽपि आहरन्ति अधः प्रदेशावगाढान्यपि आहरन्तीत्यर्थः, तिर्यगपि आहरन्ति तिर्यक्प्रदेशावगाढान्यपि आहरन्तीति भावः ॥ **'ताइं भंते ! किं आइं आहारेंति मज्झे आहारेंति पज्जवसाणे आहारेंति'** यानि भदन्त ! ऊर्ध्वमपि आहरन्ति अधोऽपि आहरन्ति । तिर्यगपि आहरन्ति तानि खलु भदन्त ! आदौ आहरन्ति मध्ये आहरन्ति पर्यवसाने आहरन्ति, अयमर्थः सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवा अनन्तप्रादेशिकानि द्रव्याणि अन्त-र्मुहूर्त्तकालं यावदुपभोगोपचितानि गृह्णन्ति तत्र किमुपभोगोपचितकालस्यान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणस्य आदौ-प्रथमसमये आहरन्ति अथवा-मध्यमे-मध्यमसमये आहरन्ति-यद्वा पर्यवसाने-पर्यवसान-समये आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'आर्दिपि'**

वे अणुरूप में या बादर रूप में रहे हुए आहार योग्य द्रव्य ऊर्ध्वप्रदेश स्थित भी होते है अधः प्रदेश स्थित भी होते हैं और तिर्यक् प्रदेश स्थित भी होते है । अतः ऐसे ही उन द्रव्यों का वे आहार करते हैं । **"ताइं भंते ! किं आइं आहारेंति मज्झे आहारेंति पज्ज-वसाणे आहारेंति"** हे भदन्त ! जिन उर्ध्वप्रदेशावगाढ अधःप्रदेशावगाढ और तिर्यक् प्रदे-शावगाढ द्रव्यों का वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव आहार करते है सो क्या वे उनका आदि में आहार करते है ? या मध्य में आहार करते है ? या अन्त में आहार करते हैं ? तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि-सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव अनन्त प्रदेशों वाले द्रव्यों को एक अन्तर्मुहूर्त काल तक ग्रहण करते है । सो यह उपभोगोपचित द्रव्यों को ग्रहण करने का काल एक अन्तर्मुहूर्त प्रमाण का होता हैं--अतः उन द्रव्यो को वे उस काल के आदि में-प्रथम समय में-आहृत करते है अथवा मध्य में आहृत करते है या अन्त समय

आहारेंति, आहे वि आहारेंति, तिरियंपि आहारेंति" હે ગૌતમ ! તે અણુરૂપ અથવા બાદર રૂપે રહેલુ આહાર યોગ્ય દ્રવ્ય ઊર્ધ્વ પ્રદેશમાં પણ રહેલું હોય છે. અધઃ પ્રદેશમાં પણ રહેલું હોય છે અને તિર્યક્ પ્રદેશમાં પણ રહેલું હોય છે તેથી એવાં જ તે દ્રવ્યોનો તેઓ આહાર કરે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન -**"ताइं भंते ! किं आइ आहारेंति, मज्झे आहारेंति, पज्जव-साणे आहारेंति !"** હે ભગવન્ ! જે ઊર્ધ્વપ્રદેશાવગાઢ, અધઃ પ્રદેશાવગાઢ અને તિર્યક્ પ્રદેશાવગાઢ દ્રવ્યોનો તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકો આહાર કરે છે, તે આહાર શુ તેઓ આદિમાં (પ્રારંભે) કરે છે, કે મધ્યમાં આહાર કરે છે, કે અન્તે આહાર કરે છે ? આ પ્રશ્નનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે-સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો અનંત પ્રદેશોવાળાં દ્રવ્યોને એક અન્તર્મુહૂર્ત-કાળ સુધી ગ્રહણ કરે છે. એટલે કે તે આહાર યોગ્ય દ્રવ્યોને ગ્રહણ કરવાનો કાળ એક અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ હોય છે. તો અહીં એવો પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે કે તેઓ તે દ્રવ્યોને આ અન્તર્મુહૂર્ત-પ્રમાણ કાળની આદિમાં-પ્રથમ સમયમાં-ગ્રહણ કરે છે ? કે મધ્ય સમયમાં ગ્રહણ કરે છે ? કે અન્ત સમયમાં ગ્રહણ કરે છે ?

आहारेंति मज्झेवि आहारेंति पज्जवसाणे वि आहारेंति' आदावपि—उपभोगोपचितकालस्य—अन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणस्य आदावपि--समये आहरन्ति। मध्येऽपि मध्यसमयेऽपि आहरन्ति। पर्यवसानेऽपि-उपभोगोपचितकालस्यान्तर्मुहूर्त्त-प्रमाणस्यान्तिमसमयेऽपि आहरन्तीति भावः। 'ताइं भंते! किं सविसए आहारेंति अविसए आहारेंति' यानि भदन्त! आदावपि मध्येऽपि पर्यवसानेऽपि आहरन्ति, तानि भदन्त! किं स्वविषयाणि-स्वोचिताहारयोग्यानि आहरन्ति, अथवा अविषयाणि—स्वोचिताहारायोग्यानि आहरन्तीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सविसए आहारेंति नो अविसए आहारेंति' स्वविषयाणि- स्वोचिताहारयोग्यानि आहरन्ति, नो अविषयाणि-स्वोचिताहारायोग्यानि आहरन्तीति ॥ 'ताइं भंते! किं आणुपुव्विं आहारेंति अणाणुपुव्विं आहारेंति' यानि भदन्त! स्वविषयाणि आहरन्ति। तानि भदन्त! किम् आनुपूर्व्या आहरन्ति

में आहृत करते है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! आदिं पि आहारेंति मज्झे वि आहारेंति पज्जवसाणे वि आहारेंति' हे गौतम! वे उपभोगोचित द्रव्यों के ग्रहण करने के काल के—एक अन्तर्मुहूर्त के—प्रथम समय में भी मध्य के समय में भी और अन्त के समय में भी उन द्रव्यों का आहरण करते है। 'ताइं भंते! किं सविसए आहारेंति अविसए आहारेंति' हे भदन्त! जिन द्रव्यो का ये अन्तर्मुहूर्त के आदि-मध्य और अन्त में आहरण करते है वे द्रव्य क्या स्वोचित आहार के योग्य है इसलिए वे उनका आहरण करते है? या वे जो स्वोचित आहार—के योग्य नहीं है ऐसे भी द्रव्यो का आहरण करते है? उत्तर में प्रभु कहते है 'गोयमा! सविसए आहारेंति नो अविसए आहारेंति' हे गौतम! वे स्वोचित आहार के योग्य हुए ही द्रव्यों का आहरण करते हैं, स्वोचित आहार के अयोग्य हुए द्रव्यो का आहरण नहीं करते है। "ताइं भंते! किं आणुपुव्विं आहारेंति अणाणुपुव्विं आहारेंति" हे—भदन्त! वे उन स्वोचितआहार के योग्य हुए द्रव्यों,

---

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा! आदिंपि आहारेंति, मज्झे वि आहारेंति, पज्जवसाणे वि आहारेंति" હે ગૌતમ! તેઓ તે ઉપભોગોચિત દ્રવ્યોને ગ્રહણ કરવાના કાળના—એક અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ કાળના પ્રથમ સમયમાં પણ તે દ્રવ્યોને ગ્રહણ કરે છે. મધ્ય સમયમાં પણ ગ્રહણ કરે છે અને અન્તિમ સમયમાં પણ ગ્રહણ કરે છે.

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"ताइं भंते! किं सविसए आहारेंति, अविसए आहारेंति?" હે ભગવન્! જે દ્રવ્યોને તેઓ અન્તર્મુહૂર્તના આદિ મધ્ય અને અન્તિમ સમયમાં ગ્રહણ કરે છે, તે દ્રવ્યો શુ સ્વોચિત આહારને યોગ્ય હોવાને કારણે તેમના દ્વારા ગ્રહણ કરાય છે, કે સ્વોચિત આહારને યોગ્ય ન હોય એવા દ્રવ્યોને પણ તેઓ ગ્રહણ કરે છે?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"गोयमा! सविसए आहारेंति नो अविसए आहारेंति" હે ગૌતમ! તેઓ સ્વોચિત આહારને યોગ્ય દ્રવ્યોને જ ગ્રહણ કરે છે, સ્વોચિત આહરનો દ્રવ્યોને જ ગ્રહણ કરે છે, સ્વોચિત આહારને યોગ્ય ન હોય એવાં દ્રવ્યોને તેઓ ગ્રહણ કરતા નથી.

अथवा अनानुपूर्व्या आहरन्ति 'अणाणुपुव्विं' इति सूत्रे द्वितीया तृतीयाविभक्तेरर्थे ज्ञातव्या प्राकृतत्वादिति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा, हे गौतम ! 'आणुपुव्विं आहारेंति नो अणाणुपुव्विं आहारेंति' आनुपूर्व्या आहरन्ति नो-न तु अनानुपूर्व्या आहरन्ति ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकास्तानि द्रव्याणीति भगवत उत्तरम्, आनुपूर्व्या एवोर्ध्वतिर्यग् अधोदिशि वा यथासन्नमाहरन्ति नतु अनानुपूर्व्या ऊर्ध्वमधस्तिर्यग् वा दिशि आहरन्तीति भाव. ॥ 'ताइं भंते ! किं तिदिसिं आहारेंति चउदिसिं आहारेंति पंचदिसिं आहारेंति छद्दिसिं आहारेंति' यानि भदन्त ! आनुपूर्व्या आहरन्ति तानि भदन्त ! किं त्रिदिशि। तिस्रो दिशाः समाहृता इति त्रिदिक् तत्र व्यवस्थितानि द्रव्याणि आहरन्ति किम् ? अथवा चतुर्दिशि पंचदिशि षड्दिशि व्यव-

---

का जो आहरण करते हैं सो क्या वे उनका आनुपूर्वी-से आहरण करते हैं ? या अनानुपूर्वी से आहरण करते है ? । इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है—"आणुपुव्विं आहारेंति णो अणाणुपुव्विं आहारेंति" हे गौतम ! वे उन द्रव्यों का आहरण आनुपूर्वी से करते है अनानुपूर्वी से नहीं करते है । आनुपूर्वी-अर्थात् यथाऽऽसन्न-जैसा जैसा नजदीक हो वैसा-वैसा-क्रमशः पास-पास का आहरण करते है । तात्पर्य कहने का यह है कि वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव ऊर्ध्वप्रदेशस्थित अधः प्रदेशस्थित एवं तिर्यक् प्रदेशस्थित स्वोचित आहार के योग्य-द्रव्यों का आहरण आनुपूर्वी से ही करते है अनानुपूर्वी से नहीं करते हैं ।

"ताइं भंते किं तिदिसिं आहारेंति चउदिसिं आहारेंति-पंचदिसिं आहारेंति छद्दिसिं आहारेंति" हे भदन्त ! जिन द्रव्यो का वे आनुपूर्वी से आहरण करते है क्या वे द्रव्य तीन दिशाओ में व्यवस्थित होते हैं ? या चार दिशाओ में व्यवस्थित होते है ? या पांच

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"ताइं भंते ! किं आणुपुव्विं आहारेंति अणाणुपुव्विं आहारेंति ?" હે ભગવન્ ! તેઓ તે સ્વોચિત આહારને યોગ્ય દ્રવ્યોનું શું આનુપૂર્વીથી આહરણ (ગ્રહણ) કરે છે ? કે અનાનુપૂર્વીથી આહરણ કરે છે ?

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર 'आणुपुव्विं आहारेंति, णो अणाणुपुव्विं आहारेंति" હે ગૌતમ ! તેઓ આનુપૂર્વી અનુસાર જ તે દ્રવ્યોનુ આહરણ કરે છે, અનાનુપૂર્વી અનુસાર તેમનુ તેઓ આહરણ કરતાં નથી. આનુપૂર્વી અનુસાર ગ્રહણ કરવાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે— "यथाऽऽसन्नं" પહેલાં સૌથી પાસેનાં દ્રવ્યોનું, ત્યાર પછી તે દ્રવ્યોની પાસેના દ્રવ્યોનું, આ રીતે ક્રમશઃ પાસે પાસેનાં દ્રવ્યોનું આહરણ કરે છે-આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે સૂક્ષ્મ-પૃથ્વીકાયિક જીવો ઊર્ધ્વ, અધઃ અને તિર્યક્ પ્રદેશમા રહેલાં સ્વોચિત આહારને યોગ્ય દ્રવ્યોનું આહરણ આનુપૂર્વીથી જ કરે છે, અનાનુપૂર્વીથી કરતા નથી,

ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન—"ताइं भंते ! किं तिदिसिं आहरेंति चउदिसिं आहारेंति, पंचदिसिं आहारेंति, छद्दिसिं आहारेंति !" હે ભગવન્ ! જે દ્રવ્યોનું તેઓ આનુપૂર્વીથી આહરણ કરે છે, તે દ્રવ્યો શું ત્રણ દિશાઓમાં રહેલાં હોય છે ? કે ચાર દિશાઓમા રહેલાં

स्थितानि आहरन्ति किं ? इह लोकनिष्कुटपर्यन्ते जघन्यपदेऽपि जीवावगाहक्षेत्रं त्रिदिग् व्यवस्थितमेव प्राप्यते न तु द्विदिग् व्यवस्थितमेकदिग् व्यवस्थितं वा अतस्त्रिदिश्यारभ्यैव प्रश्नः कृत इति प्रश्नः, भगवानाह-'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**निव्वाघाएणं छद्दिसिं**' निर्व्याघातेन षड्दिशम्। व्याघातो नाम प्रतिबन्धः सचात्रालोकाकाशेन प्रतिस्खलनम्-व्याघातस्याभावो निर्व्याघातम् । निर्व्याघाते सति षड्दिशम्-व्याघाताभावे नियमात् षड्दिशि व्यवस्थितानि षड्भ्यो दिग्भ्यः समागतानि द्रव्याणि आहरन्ति '**वाघायं पडुच्च**' व्याघातं प्रतीत्य प्रतिबन्धे अलोकाकाशेन प्राप्ते तु-'**सिय तिदिसिं**' स्यात्-कदाचित् त्रिदिशि त्रिदिग्भ्य आगतानि द्रव्याणि आहरन्ति '**सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं**' स्यात् चतुर्दिशि स्यात् पञ्चदिशि । अत्रेयं भावना-अत्र खलु लोकनिष्कुटे पर्यन्ते अधस्य प्रतराग्नेयकोणा-

---

दिशाओं में व्यवस्थित होते हैं या छह दिशाओं में व्यवस्थित होते हैं ? जघन्य पद में भी जीवावगाह क्षेत्र तीन दिशाओ में व्यवस्थित हुआ ही प्राप्त होता है। दो दिशाओ में व्यवस्थित या एक दिशा में व्यवस्थित हुआ प्राप्त नहीं होता है इसलिये प्रश्नकारने तीन दिशा को लेकर ही ऐसा प्रश्न किया है। इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—"**गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं**" हे गौतम ! यदि प्रतिबन्ध का अभाव रहता है तो उस स्थिति में ये जीव तीन से छहों दिशाओं में स्थित द्रव्य को आहार रूप से ग्रहण करते हैं। "**वाघायं पडुच्च-सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं**" तथा व्याघात की अपेक्षा से ये कदाचित् तीन दिशाओं से कदाचित् चार दिशाओ से और कदाचित् पांच दिशाओं से आगत द्रव्यों को आहार रूप से ग्रहण करते हैं। यहां इस कथन की भावना इस प्रकार है !

कोई सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव लोक निष्कुट के पर्यन्तभाग अधस्तन में प्रतर की आग्नेय कोण में स्थित हैं । तब वहां उसके नीचे अलोकाकाश से व्याप्त होने से वहां अधो

હોય છે ? કે પાંચ દિશાઓમાં રહેલા હોય છે ? કે છ દિશાઓમાં રહેલાં હોય છે ? ઓછામાં ઓછું ત્રણ દિશાઓમાં જ જીવાવગાહ ક્ષેત્ર વ્યાપ્ત થયેલું જોવામાં આવે છે, તે એક દિશામાં અથવા બે દિશામાં વ્યાપ્ત થયેલું જોવામાં આવતું નથી, તેથી અહીં ત્રણ આદિ દિશાઓના સંબંધમાં જ પ્રશ્ન પૂછવામા આવેલ છે,

મહાવીર પ્રભુનો ઉત્તર—"**गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं**" હે ગૌતમ ! જો પ્રતિબંધનો અભાવ રહેતો હોય, તો તે સ્થિતિમાં જીવ છ એ દિશાઓમાં રહેલાં દ્રવ્યોને આહાર રૂપે ગ્રહણ કરે છે "**वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय, पंचदिसिं**" પણ વ્યાઘાતની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે, તો કયારેક ત્રણ દિશાઓમાંથી, કયારેક ચાર દિશાઓમાંથી, અને કયારેક પાચ દિશાઓમાંથી મળતાં દ્રવ્યોને આહાર રૂપે ગ્રહણ કરે છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

કોઈ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ લોક નિષ્કુટના પર્યન્ત ભાગમાં અધસ્તન પ્રતરના અગ્નિકોણમાં રહેલો છે ત્યારે તેની નીચેનો ભાગ અલોકાકાશથી વ્યાપ્ત હોવાને કારણે ત્યાં

वस्थितो यदा सूक्ष्मपृथिवीकायिको वर्तते तस्याधस्तात् अलोकेन व्याप्तत्वात् अधोदिक् पुद्गलानामभावः आग्नेयकोणावस्थितत्वात् पूर्वदिक् पुद्गलाभावो दक्षिणदिक् पुद्गलाभावश्च, एवमधःपूर्वदक्षिणरूपाणां तिसृणां दिशामलोकेन व्याप्तत्वात् ता दिशोऽपास्य याः परिशिष्टा ऊर्ध्वपश्चिमोत्तरारूपाः दिशस्तु अव्याहताः नालोकेन व्याप्ता इति, ताभ्य आगतान् पुद्गलान् आहरन्ति। यदा पुन' स एवं सूक्ष्मपृथिवीकायिको जीवः पश्चिमां दिशमनुसृत्य वर्तते तदा पूर्वदिशाऽपि अधिका जाता द्वे च दिशौ दक्षिणाधस्त्यरूपे अलोकेन व्याहते इति स चतुर्दिग्भ्य आगतान् पुद्गलानाहरन्ति। यदा पुनः स एव पृथिवीकायिको जीव ऊर्ध्वं द्वितीयादि प्रतरगतपश्चिमदिशमवलम्ब्य तिष्ठति तदा अधस्त्यापि दिग् अधिका प्राप्यते केवलं दक्षिणैवैका दिक् पर्यन्तवर्त्तिनी अलोकेन व्याहृ-

---

दिक् सम्बन्धी पुद्गलो का अभाव है। तथा आग्नेय कोण में अवस्थित होने से पूर्व दिशा के और दक्षिण दिशा से भी पुद्गलो का अभाव है। इस प्रकार अधो दिशा पूर्वदिशा और दक्षिणदिशा ये तीन दिशाएँ अलोक से व्याप्त होने के कारण इन तीनों को छोड़कर बाकी जो ऊर्ध्व पश्चिम और उत्तर दिशायें हैं वे अलोक से व्याप्त नहीं है। अतः इन तीन दिशाओ से आये हुए पुद्गलों का आहार करता हैं। और जब फिर वही सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव पश्चिम दिशा में वर्तमान होता है तब वहां उसके पूर्व दिशा और अधिक हो जाती है और दक्षिण दिशा और अधोदिशा ये दो दिशाएँ अलोकाकाश से व्याहत हो जाती है इसके कारण वह केवल चार दिशाओ से ऊर्ध्वदिशा, पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा और उत्तर दिशा इन चार दिशाओ से आहार पुद्गलो को ग्रहण करता है। तथा–जब फिर वह पृथिवीकायिक जीव ऊपर के द्वितीयादि प्रतर गत पश्चिम दिशा को आश्रय करके रहता है–तब उसके अधो-

---

અધોદિશા સંબંધી પુદ્ગલોનો અભાવ હોય છે તથા અગ્નિકોણમાં તે જીવ રહેલો હોવાને કારણે પૂર્વ દિશાના અને દક્ષિણ દિશામાં પુદ્ગલોનો પણ અભાવ રહે છે, આ રીતે અધોદિશા, પૂર્વદિશા અને દક્ષિણ દિશા, આ ત્રણ દિશાઓ અલોકથી વ્યાપ્ત હોવાને કારણે આ ત્રણે દિશાઓ સિવાયની જે દિશાઓ બાકી રહે છે તે દિશાઓ–ઊર્ધ્વ, પશ્ચિમ અને ઉત્તર દિશાઓ અલોકથી વ્યાપ્ત નથી, તેથી તેઓ તે ત્રણ દિશાઓમાંથી આવેલાં પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે, અને જ્યારે એજ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ પશ્ચિમ દિશામાં સ્થિત (રહેલો) હોય છે, ત્યારે તે ઉપરની ત્રણ દિશાઓ ઉપરાંત પશ્ચિમ દિશામાંથી આવેલાં પુદ્ગલોનો પણ આહાર કરે છે. તે સ્થિતિમાં દક્ષિણ દિશા અને અધોદિશા, આ બે દિશાઓ અલોકાકાશથી વ્યાપ્ત થઈ જાય છે, તેથી તે માત્ર ચાર દિશાઓમાંથી–ઊર્ધ્વ દિશા. પૂર્વદિશા, પશ્ચિમ દિશા અને ઉત્તર દિશામાંથી–આહારને યોગ્ય પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે તથા જ્યારે તે પૃથ્વીકાયિક જીવ ઉપરના દ્વિતીયાદિ પ્રતરગત પશ્ચિમ દિશાનો આશ્રય કરીનેરહે છે ત્યારે ઉપરની

तेति पञ्चदिगागतान् पुद्गलानाहरन्तीति ॥ 'उस्सण्णं कारणं पडुच्च' 'उसण्णं' इति देशीयः शब्दः ततः 'उस्सण्णं' इति प्रायेण कारणविशेषं प्रतीत्य–आश्रित्य 'वण्णओ कालाइं नीलाइं जाव सुक्किल्लाइं' वर्णतः–वर्णापेक्षया कालानि नीलानि यावच्छुक्लानि। कालादारम्य यावच्छुक्लवर्णविशिष्टानि द्रव्याणि । तथा-'गंधओ सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं' गन्धतः सुरभिगन्धीनि दुरभिगन्धीनि 'रसओ तित्त जाव महुराइं' रसतः तिक्त यावन्मधुराणि, तथा–"फासओ कक्खडमउय जाव निद्धलुक्खाइं' स्पर्शतः कर्कशमृदुक यावत् स्निग्धरूक्षाणि तथा– तेसिं' तेषामाहार्यमाणानां पुद्गलानाम् । 'पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे' पुराणान्–पूर्वस्थितान् वर्णगुणान्

दिशा एक अधिक हो जाती है, केवल एक पर्यन्तवर्तिनी दक्षिण दिशा ही अलोक से व्या रहती है अतः वह जीव ऐसी स्थिति में चार पहले की और पांचवीं अधोदिशा, इस प्रकार पांच दिशाओं से अर्थात् ऊर्ध्वदिशा से पूर्वदिशा से पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा से अधोदिशा से आये हुए पुद्गलों को ग्रहण करता है।

"उस्सण्णं कारणं पडुच्च" 'उस्सण्णं यह देशी शब्द प्रायः अर्थ में आया है इस लिये 'उस्सण्णं' प्राय करके कारण "विशेष को लेकर वे जीव' "वण्णओ" वर्ण से "कालाइं नीलाइं जाव सुक्किल्लाइं" कृष्ण, नील यावत् रक्त पीत शुक्ल वर्ण वाले पुद्गलों का आहार करते हैं। तथा "गंधओ" गंध–से "सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं" सुरभिगंध वाले एवं दुरभिगंध वाले पुद्गलो का आहार करते है। "रसओ तित्त जाव महुराइं" रस से– तिक्त यावत् कटुक, कषाय, अम्ल मधुर रस से युक्त पुद्गलों का–आहार करते हैं। "फासओ कक्खडमउय जाव निद्धलुक्खाइं" स्पर्श से कर्कश मृदुक यावत् गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श वाले पुद्गलो का आहार करते है। तथा–"तेसिं पोराणे वण्णगुणे"

ચાર દિશાઓ ઉપરાત અધોદિશામાંથી આવેલા પુદ્ગલોને પણ તે ગ્રહણ કરે છે આ સ્થિતિમાં તો માત્ર પર્યન્તવર્તિની દક્ષિણ દિશા જ અલોકથી વ્યાહત રહે છે, તેથી આ પરિસ્થિતિમાં તે જીવ ઊર્ધ્વ, પૂર્વ, પશ્ચિમ, ઉત્તર અને અધો દિશામાંથી આવેલાં પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે.

'उसण्णं कारणं पडुच्च" 'उस्सण्णं" આ દેશી ગામઠી શબ્દ પ્રાયઃ–ઘણુ કરીને એ અર્થમાં આવેલ છે, 'उस्सण्ण' ઘણુ કરીને કારણ વિશેષને લઈને તે જીવને 'वण्णओ' વર્ણથી 'कालाइं नीलाइं जाव सुक्किल्लाइं' ? કૃષ્ણ નીલ, યાવત્, લાલ પીળાં ધોળા વર્ણવાળા પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે તથા गंधओ' ગંધથી 'सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं' સુગંધવાળા અને દુર્ગંધવાળા પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે 'रसओ तित्त जाव मधुराइं રસથી તિકત યાવત કટુ કષાય અમ્લ, અને મધુર રસથી યુકત પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે फासओ कक्खडमउय जाव निद्धलुक्खाइं સ્પર્શથી કર્કશ, મૃદુ યાવત્ ગુરૂ લઘુ શીત, ઉષ્ણ સ્નિગ્ધ અને રૂક્ષસ્પર્શ વાળા પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે તથા 'तेसिं पोराणे वण्णगुणे' તેમના વર્ણ રૂપ ગુણોને,

गन्धगुणान् रसगुणान् स्पर्शगुणान् 'विपरिणामइत्ता परिपालइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धं-सइत्ता' परिणमय्य परिपाल्य परिशात्य परिविध्वस्य एतानि चत्वार्यपि पदानि एकार्थकानि विनाशार्थप्रतिपादकानि विभिन्नदेशजविनयानुग्रहार्थायोपात्तानि, एतान् वर्णादिगुणान् आह्रियमाणपुद्गले वर्तमानान् विनाश्य 'अन्ने अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे जाव फासगुणे उप्पाइत्ता अन्यान्–पूर्वावस्थितवर्णादिगुणभिन्नान् अपूर्वान्–विलक्षणान् वर्णगुणान् गन्धगुणान् रसगुणान् स्पर्शगुणान् उत्पाद्य 'आत्तसरीरोगाढा' आत्मशरीरावगाढान् स्वशरीरक्षेत्रावस्थितान् पुद्गलान् 'सव्वप्पणयाए' सर्वात्मतया सर्वैरेवात्मप्रदेशैः, 'आहारमाहारेंति' आहारम्–आहार-रूपान् पुद्गलानाहरन्ति ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका इति । गतमष्टादशमाहारद्वारम् ॥ सू० १० ॥

अथैकोनविंशतितममुत्पादद्वारमाह–'ते णं भंते ! जीवा इत्यादि ।

मूलम्—'ते णं भंते' जीवा कओहिंतो उववज्जंति, किं नेरइएहिंतो उववज्जंति । तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति । तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति । मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति । तिरिक्खजोणिय पज्जत्ता-

---

इनके वर्ण रूप गुणों को, गन्धरूप गुणों को रस रूप गुणों को और स्पर्श रूप गुणो को "विपरिणामइत्ता' परिपालइत्ता, परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता" विशेपरूप से परिणमा करके अर्थात् आह्रियमाण पुद्गलों में इन वर्तमान वर्णादि गुणों को नष्ट करके और "अन्ने अपुव्वे वण्णगुणे' गंधगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता" इन से भिन्न अन्य अपूर्व–विलक्षण–वर्ण गुणो को, गंध गुणो को रस गुणों को–एवं स्पर्श गुणो को उनमें उत्पन्न करके" "आत्तसरीरोगाढा" उन्हें स्वशरीर रूप से परिणमाने के लिए "सव्वपणयाए" समस्त आत्मप्रदेशों द्वारा 'आहारमाहारेंति" आहाररूप से ग्रहण करते है ।

१८ वां आहारद्वार समाप्त ॥

ગંધરૂપ ગુણોને રસ રૂપ ગુણોને અને સ્પર્શ રૂપ ગુણોને 'विपरिणामइत्ता, परिपालइत्ता, परिसाडइत्ता, परिविद्धंसइत्ता' વિશેષ રૂપે પરિણમાવીને અર્થાત્ આહ્રીય માણ પુદ્ગલોમાં આ વર્તમાન વર્ણાદિગુણોનો નાશ કરીને અને 'अन्ने अपुव्वे वण्ण गुणे गन्ध गुणे फासगुणे उप्पाइत्ता' તેનાથી જુદા બીજા અપૂર્વ-વિલક્ષણ-વર્ણગુણોને ગંધગુણોને રસગુણોને અને સ્પર્શ ગુણોને તેનામાં ઉત્પન્ન કરીને 'आत्तसरीरोगाढा' તેને સ્વશરીર પણાથી પરિણમાવવ માટે 'सव्व स्पण याण' સઘળા આત્મ પ્રદેશો દ્વારા 'आहारमाहारेंति' આહાર પણાથી ગૃહણ કરે છે,

અઢારમું આહાર દ્વાર સમાપ્ત

पज्जत्तेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति । मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमिगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति। वक्कंती उववाओ भाणियव्वो । तेसि णं भंते । जीवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता । गोयमा । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥ तेणं भंते । जावा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति । गोयमा । समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । ते णं भंते । जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति । मणुस्सेसु उववज्जंति देवेसु उववज्जंति। गोयमा । ना नेरइएसु उववज्जंति । तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति, नो देवेसु उववज्जंति । किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचेंदिएसु उववज्जंति। गोयमा ! एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति मणुस्सेसु अकम्मभूमिग अंतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति ॥ ते णं भंते ! जीवा कइगइया कइ आगइया पन्नत्ता । गोयमा । दुगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसा ! सेत्तं सुहुमपुढवीकाइया' ॥सू० ११॥

छाया — ते खलु भदन्त ! जीवा. कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उत्पद्यन्ते ! गौतम ! नो नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते, मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते । नो देवेभ्य उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकपर्याप्तापर्याप्तेभ्योऽसंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य उत्पद्यन्ते मनुष्येभ्योऽकर्मभूकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य उत्पद्यन्ते व्युत्क्रान्त्युपपातो भणितव्यः । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेणापि अन्तर्मुहूर्त्तम् । ते खलु भदन्त ! जीवाः मारणान्तिकसमुद्घातेन किं समवहता म्रियन्ते असमवहता म्रियन्ते ? गौतम ! समवहता अपि

म्रियन्ते । असमवहता अपि म्रियन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः अनन्तरमुद्वृत्य कुत्र गच्छन्ति कुत्रोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते मनुष्येषूत्पद्यन्ते देवेषूत्पद्यन्ते गौतम ! नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते मनुष्येषूत्पद्यन्ते नो देवेषूत्पद्यन्ते । किमेकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते यावत्पञ्चेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! एकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते, असंख्येयवर्षायुष्कवर्जेषु पर्याप्तापर्याप्तकेषूत्पद्यन्ते मनुष्येषु अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेषु पर्याप्तापर्याप्तकेषूत्पद्यन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवाः कतिगतिकाः कत्यागतिकाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विगतिकाः द्व्यागतिकाः परीता असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् ! ते एते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः ॥११॥

टीका — गतमष्टादशमाहाररूपम्, अधुना एकोनविंशतितममुपपातद्वारं दर्शयन्नाह— 'ते णं' इत्यादि, 'ते ण भंते' ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति' ते खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवाः कुत'—केभ्यो जीवेभ्य उद्धृत्य सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया उत्पद्यन्ते **'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति'** किं नैरयिकेभ्य उद्धृत्योत्पद्यन्ते अथवा तिर्यग्योनिकेभ्य उद्धृत्य मनुष्येभ्यो वा देवेभ्यो वा उद्धृत्य सूक्ष्मपृथिवीकायिकतया समुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'नो नेरइएहिंतो** उववज्जंति' नो नैरयिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते नारकाणां तत्रोत्पादाभावात्,

---

(१९) वां उत्पातद्वार—"तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति–इत्यादि सूत्र ११–

टीकार्थ — हे भदन्त ! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव सूक्ष्मपृथिवीकायिकरूप से कहां से मर करके उत्पन्न होते हैं ? **"किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति"** क्या नैरयिक जीव मरकर—सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकजीव मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं ? या मनुष्य मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं ? या देव मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते है — **"गोयमा !**

ओगणीसमुं उपपातद्वार

'ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति' ईत्यादि

टीकार्थ—हे भगवन् आ सूक्ष्मपृथ्वीकायिक जीवो सूक्ष्म—पृथ्वीकायिक पणामां कयांथी मरीने उत्पन्न थाय छे ? **'किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति'** शुं नैरयिक जीवो मरीने सूक्ष्मपृथ्वीकायिक पणाथी उत्पन्न थाय छे ? अथवा तिर्यग्योनिक जीव मरीने सूक्ष्म पृथ्वीकायिक पणाथी उत्पन्न थाय छे ? अथवा मनुष्य मरीने सूक्ष्म पृथ्वीकायिक पणाथी उत्पन्न थाय छे ? अथवा देव मरीने सूक्ष्मपृथ्वीकायिक पणाथी उत्पन्न थाय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभु कहे छे के—**"गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति"**

किन्तु 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो उववज्जंति' तिर्यग्योनिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते मनुष्येभ्यो वाऽऽगत्योत्पद्यन्ते 'नो देवेहिंतो उववज्जंति' नो देवेभ्य आगत्य सूक्ष्मपृथिवीकायिकरूपेणोत्पद्यन्ते इति देवानां तन्मध्ये उत्पादाभावात् इति, 'तिरिक्खजोणियपज्जत्तापज्जत्तेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति' यदा तिर्यग् योनिकेभ्य आगत्योत्पद्यन्ते तदा तिर्यग् योनिकपर्याप्तकापर्याप्तकेभ्योऽसङ्ख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य एवोत्पद्यन्ते यदा मनुष्येभ्यः सूक्ष्मपृथिवीकायिका उत्पद्यन्ते तदा 'मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमिगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति' मनुष्येभ्योऽकर्मभूमिकासङ्ख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य एव ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः समुत्पद्यन्ते 'वक्कंती उववाओ भाणियव्वो' व्युत्क्रान्त्यु

नो नेरइएहिंतो उववज्जंति" हे गौतम ! नैरयिक मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न नहीं होते है किन्तु "तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति" तिर्यग्योनिक जीव मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं और मनुष्य मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं किन्तु "नो देवेहिंतो उववज्जंति' देव च्यव कर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न नहीं होते है "तिरिक्खजोणियपज्जत्तापज्जत्तेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति" जब सूक्ष्मपृथिवीकायिकरूप से तिर्यञ्च योनक जीव मरकर उत्पन्न होते है तो उनमें जो असख्यातवर्ष की आयु वाले भोगभूमि के तिर्यञ्च है वे मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न नहीं होते हैं। किन्तु कर्मभूमिज तिर्यञ्च ही चाहे वे पर्याप्तक हों चाहें अपर्याप्तक हों मरकर सूक्ष्मपृथिवीकायिकरूप से उत्पन्न होते है। तथा —मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमियअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति" जब मनुष्यों में से मरकर जीव सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं—तब वहां पर भी अकर्मभूमि के अन्तर द्वीप के और असख्यात वर्ष आयु वाले

હે ગૌતમ નૈરયિક મરીને સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ "तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो उववज्जंति" તિર્યગ્યોનિકજીવ મરીને સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ 'नो देवेहिंतो उववज्जंति" દેવ ચ્યવીને સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થતા નથી "तिरिक्खजोणियपज्जत्तापज्जत्तेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति" જ્યારે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી તિર્યગ્યોનિકજીવ મરીને ઉત્પન્ન થાય છે, તો તેઓમાં જે અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્ય વાળા ભોગ-ભૂમિના તિર્યંચ છે, તેઓ મરીને સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ કર્મભૂમિ જ તિર્યંચો જ ચાહે તેઓ પર્યાપ્તક હોય ચાહે અપર્યાપ્તક હોય મરીને સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે તથા "मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमिय असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति" જ્યારે મનુષ્યોમાંથી મરીને જીવ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે ત્યાં પણ કર્મ ભૂમિના અંતરદ્વીપના અને અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા કર્મ ભૂમિના મનુષ્યોને

पपातो भणितव्यः, व्युत्क्रान्त्यां प्रज्ञापनासूत्रस्य षष्ठे व्युत्क्रान्तिपदे य उपपातः प्रोक्तः सोऽत्रापि भणितव्य' । प्रज्ञापनाप्रकरणस्यायं भावः–सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवाः असंख्यातवर्षायुष्कान् तिरश्चो वर्जयित्वा अन्येभ्यः पर्याप्तेभ्योऽपर्याप्तेभ्यो वा तिर्यग्भ्य आगत्य समुत्पद्यन्ते मनुष्येभ्य इति–अकर्मभूमिजान् अन्तरद्वीपजान् असंख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिजांश्च मनुष्यान् वर्जयित्वा शेषेभ्यः पर्याप्तेभ्योऽपर्याप्तेभ्यो वा मनुष्येभ्य आगत्य सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः समुत्पद्यन्ते इति ।

एकोनविंशतितममुपपातद्वारम् ॥१९॥

गतमेकोनविंशतितममुपपातद्वारम् , अधुना विंशतितमं स्थितिद्वारमाह–**'तेसि णं भंते ! जीवाणं'** इत्यादि, **'तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** तेषां खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता–कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ? **'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं'** जघन्येना-

---

कर्म भूमि के मनुष्यों को छोड़कर शेष पर्याप्तक हो चाहे अपर्याप्तक हो दोनो प्रकार के मनुष्यों से आकर सूक्ष्मपृथिवीकायरूप से उत्पन्न होते है अर्थात् अकर्मभूमि के और अन्तरद्वीप के तथा असंख्यात वर्ष आयु वाले कर्मभूमि के मनुष्य सूक्ष्मपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न नहीं होते है । **"वक्कंती उववाओ भाणियव्वो"** इस प्रकार से जैसे कि प्रज्ञापना सूत्र के व्युत्क्रान्ति पद से कहा गया हैं वैसा ही यहां पर भी कह लेना चाहिये ॥ १९ वां उपपातद्वार समाप्त ॥

(२०) वां स्थितिद्वार—**"तेसिं णं भते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"** हे भदन्त ! उन सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवों की स्थिति कितने काल की कही गयी है ? उत्तर में प्रभु कहते है –**"गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं त्रि अंतोमुहुत्तं"** हे गौतम ! इन जीवों की स्थिति जघन्य से भी एक अन्तर्मुहूर्त्त कही गई है और उत्कृष्ट

છોડીને બાકીના પર્યાપ્તક હોય અથવા અપર્યાપ્તક હોય બન્ને પ્રકારના મનુષ્યોમાંથી મરીને સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે અર્થાત્ અકર્મ ભૂમિના અને અંતર દ્વીપના તથા અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા કર્મભૂમિના મનુષ્ય સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થતા નથી. **'वक्कंतो उववाओ भाणियव्वो'** આ રીતે જેમકે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના ૬૭માં વ્યુત્ક્રાંતિ પદમાં કહેવામાં આવેલ છે. એ જ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવું જોઈએ

૧૯ મુ ઉપપાતદ્વાર સમાપ્ત સૂ. ૧૦

વીસ મું સ્થિતિ દ્વાર—

"तेसिं णं भते ! जोवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" ઈત્યાદિ

હે ભગવન્ તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—**"गायमा जहन्नेणं अतो मुहुत्त उक्कोसेण वि अंतो मुहुत्तं"** હે ગૌતમ ! આ જીવોની સ્થિતિ જઘન્યથી અને ઉત્કર્ષથી પણ એક અંતર્મુહૂર્તની

न्तर्मुहूर्तप्रमाणा स्थितिर्भवति सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानाम् तथोत्कर्षेणापि अन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणैवेति। यद्यपि उभयत्रापि अन्तर्मुहूर्त्त कथितम्, तथापि–जघन्यपदात् उत्कृष्टपदमधिकं ज्ञातव्यम् इति।

गतं विंशतितमं स्थितिद्वारम्। अथैकविंशतितमं समवहतद्वारं विचिन्तयितुमाह–'ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति' ते खलु भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिका' जीवाः किं मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता' सन्तः म्रियन्ते अथवा मारणान्तिकसमुद्घातेनासमवहता एव म्रियन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ? समोहयावि मरंति, असमोहया वि मरंति' समवहता अपि म्रियन्ते, ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तथा असमवहता अपि म्रियन्ते, एतेषामुभयथापि मरणसभवादित्येक-विंशतितम समुद्घातद्वारम् ॥

से भी एक अन्तमुहूर्त की कही गई है। इस प्रकार से जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की ही कही गयी है परन्तु फिर भी उस अन्तर्मुहूर्त्त में जघन्य पद से उत्कृष्ट पद अधिक जानना चाहिये।

(२०) वां स्थितिद्वार समाप्त।

(२१) वां समुद्घातद्वार–"ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति" हे भदन्त ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव क्या मारणातिकसमुद्घात से समवहत होकर मरते हैं–या विना मारणान्तिक समुद्घात किये मरते हैं ? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं "गोयमा ! समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति" हे गौतम ! वे मारणान्तिकसमु-द्घात करके भी मरते है और मारणान्तिकसमुद्घात किये विना भी मरते हैं। क्योंकि इन का मरण दोनों प्रकार से भी हो सकता हैं। २१ वां समुद्घातद्वार समाप्त।

કહેલી છે આ રીતે જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ એક અતર્મુહૂર્તની જ કહેવામાં આવી છે. તો પણ તે અંતર્મુહૂર્તમાં જઘન્ય પદથી ઉત્કૃષ્ટપદ અધિક સમજવું

॥૨૦ વીસમું સ્થિતિદ્વાર સમાપ્ત ॥

એકવીસ ૨૧ મું સમુદ્ઘાત દ્વાર

"ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति" હે ભગવન્ તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો શું મારણાંતિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઈને મરે છે ? કે મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કર્યા વિના મરે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति" હે ગૌતમ ! તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને પણ મરે છે, અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કર્યાવિના પણ મરે છે કેમકે—તેઓનું મરણ બન્ને પ્રકારે થઈ શકે છે.

॥૨૧ એકવીસમું સમુદ્ઘાત દ્વાર સમાપ્ત ॥

गतमेकविंशतमं समवहतद्वारम् ! अधुना द्वाविंशतितमं च्यवनद्वारमाह–**'ते णं भंते !** इत्यादि, **'ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति'** ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ? जीवा' अनन्तरमुद्वृत्य–निःसृत्य क गच्छन्ति–कां गतिं प्राप्नुवन्ति तथा क-कुत्राधिकरणे उत्पद्यन्ते, एतावता जीवस्य गमनधर्मकता पर्यायान्तरमाश्रित्योत्पत्तिधर्मकताच प्रतिपादिता, तेन ये जीवस्य व्यापकत्वमनुत्पत्तिधर्मकत्वञ्चैकान्तेन अभ्युपगच्छन्ति ते निराकृताभवन्ति, सर्वथा व्यापकत्वेऽनुत्पत्तिधर्मकत्वे च आत्मन एतादृशप्रश्नानां सम्भवादिति, **'किं नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु उववज्जंति, देवेसु उववज्जंति'** किं सूक्ष्मपृथिवीकायिकेभ्य उद्वृत्य नैरयिकेषूत्पद्यन्ते अथवा तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते, अथवा मनुष्येषूत्पद्यन्ते, यद्वा देवेषूत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ? **'नो नेरइएसु उववज्जंति'** ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवा स्तत उद्वृत्य नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते किन्तु **'तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति'** तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते तथा मनुष्येषूत्पद्यन्ते

---

(२२) वां च्यवनद्वार–**"ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति "** हे भदन्त ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्याय को छोड़ कर कहां उत्पन्न होते है अर्थात् किस गति को प्राप्त करते है ?

इस प्रकार के प्रश्नसे जीव की गमन धर्मकता रूप पर्यायान्तर को आश्रित करके एवं उत्पत्ति रूप धर्मकताका प्रतिपादन करने से जो जीवको एकान्तसे व्यापक और अनुत्पत्तिधर्मवाला मानते हैं वह उनकी मान्यता निराकृत हो जाती है क्योंकि सर्वथा व्यापकता में एवं अनुत्पत्ति धर्मकता में ऐसा प्रश्न आत्मा के सम्बन्ध में ऊठ ही नहीं सकता ।

क्या वे सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव **"नेरइएसु उववज्जंति"** नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? या **"तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति"** तिर्यग्योनिको में उत्पन्न होते है ? या–**"मणुस्सेसु उववज्जंति** मनुष्यों में उत्पन्न होते है ? या **"देवेसु उववज्जंति"** देवों में उत्पन्न होते है ?

બાવીસમું ૨૨ ચ્યવન દ્વાર

"ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति" હે ભગવન્ તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકજીવ–સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકપર્યાયને છોડીને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અર્થાત્ કઇ ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે ?

આ રીતના પ્રશ્નથી જીવના ગમન ધર્મક પણારૂપ પર્યાયાન્તરનો આશ્રય કરીને અને ઉત્પત્તિરૂપ ધર્મપણાનુ પ્રતિપાદન કરવાથી જેઓ જીવને એકાન્તરૂપથી વ્યાપક અને અનુત્પત્તિ —(ઉત્પન્ન ન થવું તે) રૂપ ધર્મવાળો માને છે, તે તેઓની માન્યતા પરાસ્ત થઈ જાય છે. કેમકે—સર્વથા વ્યાપક પણામાં અને અનુત્પત્તિ ધર્મપણામા આત્માના સંબંધમાં આવો પ્રશ્ન જ ઉઠી શકતો નથી.

શું તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો "नेरइएसु उववज्जंति" નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા 'तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति" તિર્યગ્યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા

'नो देवेसु उववज्जंति' नो देवेषूत्पद्यन्ते 'किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति' हे भदन्त ? ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तत उद्‌वृत्य यदि-तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते, तदा किमेकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते, यावत्पदेन द्वीन्द्रियादि चतुरिन्द्रियान्तानां सग्रहो भवति, इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ? 'एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति' ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवा स्तत उद्‌वृत्य एकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिय यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते कथभूतेषु यावत्पञ्चेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते तत्राह-'असंखेज्जवासाउय

इसके उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति" हे गौतम ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव मरकर नैरयिकों में उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु "तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति" तिर्यग्योनिको में उत्पन्न होते है। "मणुस्सेसु" मनुष्यो में उत्पन्न होते हैं ? "नो देवेसु उववज्जंति" वे सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव मर कर देवों में उत्पन्न नहीं होते हैं। "किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति" हे भदन्त ! यदि ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव मरकर तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते हैं तो क्या वे एकेन्द्रियतिर्यञ्चो में उत्पन्न होते है ? या दोइन्द्रियतिर्यञ्चो में उत्पन्न होते हैं ? या तेइन्द्रियतिर्यञ्चों में उत्पन्न होते है ? या चौइन्द्रियतिर्यञ्चो में उत्पन्न होते हैं ? या पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चों में उत्पन्न होते है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—हे गौतम ! वे सूक्ष्मपृथिवीकायिक-

---

"मणुस्सेसु उववज्जंति" મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા "देवेसु उववज्जंति" દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जं" હે ગૌતમ ! તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ "तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति" તિર્યંચ યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે "मणुस्सेसु" મનુષ્યોમા ઉત્પન્ન થાય છે. "नो देवेसु उववज्जंति" તથા તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકજીવો મરીને દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. "किं एगिंदिएसु उववज्जति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति" હે ભગવન્ જો આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને તિર્યંચ યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય તો, "मणुस्सेसु" મનુષ્યોમા ઉત્પન્ન થાય છે. "नो देवेसु उववज्जंति તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી "किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजणिएसु उववज्जति" હે ભગવન્ જો આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને તિર્યંચ યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો શું તેઓ એકેન્દ્રિય તિર્યંચોંમાં ઉત્પન્ન થાય છે? અથવા બે ઈન્દ્રિય તિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે તે ઈન્દ્રિય તિર્યંચોંમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? કે ચૌ ઈન્દ્રિય તિર્યંચોમા ઉત્પન્ન થાય છે અથવા પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! તે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને અસંખ્યાત

वज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति' असंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु पर्याप्तकापर्याप्तकेषु यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते, ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका एतत उद्वृत्येति । हे भदन्त ? यदि मनुष्येषूत्पद्यन्ते तदा-'मणुस्सेसु अकम्मभूमिगअंतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति' मनुष्येषु अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु पर्याप्तापर्याप्तकेषु समुत्पद्यन्ते इति गतं द्वाविंशतितमं च्यवनद्वारमिति ॥२२॥

(२३) त्रयोविंशतितमं गत्यागतिद्वारमाह—'ते णं भंते' इत्यादि,

'ते णं भंते ! जीवा कइ गइया कइ आगइया पन्नत्ता' ते खलु भदन्त ? सूक्ष्मपृथिवीकायिका जीवाः कति गतिकाः, कति गतयो येषां ते कति गतिकाः, तथा—कत्यागतगतिकाः, कतिभ्यो-

---

जीव मरकर असंख्यातवर्षायुष्क भोगभूमि के तिर्यञ्चो को छोड़कर पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों से लेकर पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते है। यदि सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव मरकर यदि मनुष्यों में उत्पन्न होते है तो "मणुस्सेसु अकम्मभूमिगअंतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्ता पज्जत्तएसु उववज्जंति" असंख्यात वर्ष की आयुवाले अकर्मभूमिज मनुष्यों को छोड़कर अकर्मभूमि के तथा— अन्तर द्वीपके और असख्यातवर्ष आयुवाले भोगभूमि के मनुष्यों को छोड़कर अन्य पर्याप्तक अपर्याप्तक मनुष्यो मे उत्पन्न होते हैं अर्थात् ये अकर्मभूमिजमनुष्यो में एवं अन्तर द्वीपज मनुष्यो में तथा असख्यात वर्षायुष्कभोगभूमिज मनुष्यो में उत्पन्न नहीं होते है किन्तु पर्याप्त अपर्याप्त सख्यातवर्ष आयुवाले कर्मभूमिज मनुष्यो में ही उत्पन्न होते है। २२वाँ च्यवनद्वार समाप्त ।

(२३) वां गत्यागति द्वार–"ते णं भंते ! जीवा कइगइया कइ आगइया पन्नत्ता" हे भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव कितनी गतिवाले और कितने आगति वाले होते है ? उत्तर में

વર્ષની આયુષ્ય વાળા ભોગભૂમિના તિર્યંચોને છોડીને પર્યાપ્ત અપર્યાપ્ત એક ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યંચયોનિકોથી લઈને પાચ ઈન્દ્રિયવાળા (પંચેન્દ્રિય) તિર્યંચ યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ફરીથી ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે—હે ભગવન્ જો સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવ મરીને જો મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો "मणुस्सेसु अकम्मभूमिग अंतरदीवग असखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जति" અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા અકર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થનારા મનુષ્યોને છોડિને અકર્મ ભૂમિના તથા અંતરદ્વીપના અને અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્ય વાળા ભોગભૂમિના મનુષ્યોને છોડીને બીજા પર્યાપ્તક અપર્યાપ્તક મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે અર્થાત્ તેઓ અકર્મ ભૂમિમા ઉત્પન્ન થવાવાળા મનુષ્યોમાં તથા અંતર દ્વીપમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા મનુષ્યોમાં તથા અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા ભોગભૂમિમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી, પરંતુ પર્યાપ્ત અપર્યાપ્ત સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા કર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા મનુષ્યોમાં તે ઉત્પન્ન થાય છે

॥ ૨૨ બાવીસમું ચ્યવન દ્વાર સમાપ્ત ॥

તેવીસ ૨૩મું ગત્યાગતિદ્વાર--

"ते णं भंते ! जीवा कइ गइया कइ आगइया पन्नत्ता" હે ભગવન્ તે સૂક્ષ્મપૃથ્વી-

गतिभ्य आगतिः–आगमनं येषां ते गत्यागतिकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह– **'गोयमा' !** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ? **'दु गइया दु आगइया पन्नत्ता'** द्विगतिका द्व्यागतिकाः प्रज्ञप्ता'–कथिता', तत्र द्विगतिका'–तिर्यङ्मनुष्यरूपगतिद्वयगमनशीलाः, तत उद्वृत्तानां नरकगतौ देवगतौ चोत्पादाभावादिति । द्व्यागतिका'–तिर्यङ्मनुष्यरूपगतिद्वयादागमनशीलाः नरकगते र्देवगतेश्चागतानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषूत्पत्तेरभावात् । **'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो' 'परित्ता'** प्रत्येकशरीरिणः असङ्ख्येया असंख्यातलोकाकाशप्रमाणत्वात् प्रज्ञप्ताः कथिताः, मया अन्यैश्चापि तीर्थकरैः, हे श्रमण ? हे आयुष्मन् ? गौतम ? **'सेत्तं सुहुमपुढवीकाइया'** ते एते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः कथिता इति ।

इति त्रयोविंशतितमं गत्यागतिद्वारम् ॥२३ सू० ११॥

प्रभु कहते हैं–**"गोयमा ! दु गइया दु आगइया पन्नत्ता '** हे गौतम ! ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव दो गति वाले होते हैं अर्थात् तिर्यञ्चगति और मनुष्य गति इन दो गति वाले होते है अर्थात् इन दो गतियो में जानेवाले होते है क्योकि नरकगति और देवगति में वहां से निकले हुए सूक्ष्मपृथिवीकायिको का उत्पाद नहीं होता है इसलिये वे द्विगतिक कहे गये है तथा सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीव का नरकगति और देवगति से आना होता नहीं है वे तिर्यञ्च और मनुष्य गति इन दो गतियो से ही आते है । इसलिये वे द्विआगतिक कहे गये है । **"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो"** हे श्रमण हे आयुष्मन् गौतम ! ये प्रत्येक शरीरवाले होते हैं । असख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण होने से असख्यात कहे गये है । **'से त्तं सुहुमपुढवीकाइया'** इस प्रकार के ये सूक्ष्मपृथिवीकायिक है । यह तेइसवां गत्यागतिद्वार समाप्त २३ यह सूक्ष्मपृथिवीकायिक का प्रकरण समाप्त ॥ सू० १० ॥

કાયિક જીવો કેટલી ગતિવાળા અને કેટલી આગતિવાળા હોય છે ? ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે--**"गोयमा ! दु गइया दु आगइया पन्नत्ता"** હે ગૌતમ આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો બે ગતિવાળા હોય છે અર્થાત્ તિર્યંચગતિ અને મનુષ્યગતિ આ બે ગતિવાળા હોય છે. એટલે કે આ બે ગતિઓમાં જનારા હોય છે. કેમ કે ત્યાંથી નીકળેલા સૂક્ષ્મકાયિકોનો ઉત્પાત (ઉત્પત્તિ) નરકગતિમા અને દેવ ગતિમાં થતો નથી તેથી તેઓ બે ગતિવાળા કહેવાય છે. તથા સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવનું નરક ગતિ અને દેવગતિથી આવવુ થતું નથી તેઓ તિર્યંચ અને મનુષ્ય ગતિ આ બેગતિયોમાંથીજ આવે છે તેથી તેઓ "દ્વિ આગતિ" વાળા કહેવાય છે. **"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो"** હે શ્રમણ હે આયુષ્મન્ ગૌતમ ! આ જીવો પ્રત્યેક શરીરવાળા હોય છે અસંખ્યાત લોકાકાશ પ્રદેશ પ્રમાણ વાળા હોવાથી અસંખ્યાત કહેલા છે **'से त्त सुहुमपुढवीकाइया"** આવા પ્રકારના આ સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાયિકો છે ॥સૂ ૧૦॥

આ તેવીસ ૨૩મું ગત્યાગતિદ્વાર સમાપ્ત

॥ આ રીતે આ સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોનું પ્રકરણ સમાપ્ત ॥

उक्ताः सूक्ष्मपृथिवीकायिका', अतः परं वादरपृथिवीकायिकान् दर्शयितुं प्रश्नयन् आह- 'से किं तं वायरपुढवीकाइया' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं वायरपुढवीकाइया, बायरपुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-सण्हबायरपुढवीकाइया य खरबायरपुढवीकाइया य । से किं तं सण्हबायरपुढवीकाइया ? सण्हबायरपुढवीकाइया सत्तविहा पन्नत्ता, तं जहा—कण्हमट्टिया-भेओ जहा-पण्णवणाए जाव ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता, तं जहा-ओरालिए तेयए कम्मए, तं चेव सव्वं, नवरं चत्तारि लेस्साओ अवसेसं जहा- सुहुमपुढवीकाइयाणं, आहारो जाव नियमा छद्दिसिं, उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेहिंतो, देवेहिं जाव सोहम्मेसाणेहिंतो, ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । ते णं भंते ! जीवा मरणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहया वि मरंति। ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइसु उववज्जंति ? पुच्छा, न। नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति नो देवेसु उववज्जंति तं चेव जाव असंखेज्जवासाउयवज्जेसु । ते णं भंते ! जीवा कइ गइया कइ आगइया पन्नत्ता ? गोयमा ! दु गइया ति आगइया परित्ता असंखेज्जा य समणाउसो ! सेत्तं बायरपुढवीकाइया । सेत्तं पुढवीकाइया ॥सू० १२॥

छाया—अथ के ते वादरपृथिवीकायिका', वादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा – श्लक्ष्णवादरपृथिवीकायिकाश्च खरबादरपृथिवीकायिकाश्च । अथ के ते

श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः, श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-कृष्णमृत्तिका भेदो यथा प्रज्ञापनायां यावत् ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणम्, तदेव सर्वम् । नवरं चतस्रो लेश्याः, अवशेषं यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकानाम् आहारो यावत् नियमात् षड्दिशि । उपपातस्तिर्यग्योनिकमनुष्य देवेभ्यःदेवेभ्यो यावत् सौधर्मेशानेभ्य. । स्थितिः जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि । ते खलु भदन्त ! जीवाः मारणान्तिकसमुद्घातेन किं समवहताः म्रियन्ते असमवहता म्रियन्ते ? गौतम ! समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते । ते खलु भदन्त ! जीवा अनन्तरमुद्वृत्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते ? पृच्छा, नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते मनुष्येषूत्पद्यन्ते नो देवेषूत्पद्यन्ते, तदेव यावत् असंख्येयवर्षायुष्कवर्जेषु । ते खलु भदन्त ! जीवाः कतिगतिकाः, कत्यागतिकाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विगतिकाः त्र्यागतिकाः परीता असंख्येयाश्च श्रमणायुष्मन् ! ते एते बादरपृथिवीकायिका ते एते पृथिवीकायिकाः । सू०१२॥

टीका:—'से किं तं बायरपुढवीकाइया' अथ के ते बादरपृथिवीकायिकाः बादरपृथिवीकायिकानां कियन्तो भेदा भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति–'बायरपुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता' बादरपृथिवीकाइका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, भेदद्वयमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'सण्हबायरपुढवीकाइया य खरबायरपुढवीकाइया य' श्लक्ष्णबायरपृथिवीकायिकाश्च खरबायरपृथिवीकाइकाश्च, तत्र श्लक्ष्णा चूर्णितलोष्टादिसमाना मृदुपृथिवीतत्स्व-

---

अब सूक्ष्मपृथिवीकायिकों का कथन करके सूत्रकार बादरपृथिवीकायिकों कथन करते है—'से किं तं बायरपुढवीकाइया'—इत्यादि । सूत्र ११ ॥

हे भदन्त ! बादरपृथिवीकायिकों के कितने भेद होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"बायरपुढवीकाइया दुविहा पण्णत्ता" हे गौतम ! बादरपृथिवीकायिक दो प्रकार के होते है— "तं जहा" जैसे—"सण्हबायरपुढवीकाइया य खर बायरपुढवीकाइया य" श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिक और खरबादरपृथिवीकायिक इन में जो चूर्णित लोष्टादि के समान मृदु पृथिवी तद्रूप जो जीव है वे श्लक्ष्ण बादरपृथिवीकायिक जीव है । यद्यपि चूर्णित

હવે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોનું કથન કરીને સૂત્રકાર બાદરપૃથ્વીકાયિકોનું કથન કરે છે-"से किं तं बायरपुढवीकाइया" ઈત્યાદિ.

હે ભગવન્ બાદર પૃથ્વીકાયિકોના કેટલા ભેદ હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—बायरपुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता ॥ હે ગૌતમ ! બાદરપૃથ્વીકાયિકો બે પ્રકારના હોય છે, तं जहा ॥ તે આ પ્રમાણે છે,—"सण्हबायरपुढवीकाइया य खरबायरपुढवीकाइया य" શ્લક્ષ્ણબાદરપૃથ્વીકાયિક અને ખરબાદરપૃથ્વીકાયિક આમાં જે દળેલા

रूपा जीवा अपि लक्षणया श्लक्ष्णा इति कथ्यन्ते, श्लक्ष्णाश्च ते बादरपृथिवीकायिकाश्चेति श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः, यद्वा श्लक्ष्णा चासौ बादरपृथिवी चेति श्लक्ष्णबादरपृथिवी, सा कायः—शरीरं येषां ते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायास्ते एव श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः। खरा नाम पृथिवीसंघातविशेषं काठिन्यविशेषं वा प्राप्ता, तदात्मकजीवा अपि लक्षणया खरा इति व्यपदिश्यन्ते, खराश्च ते बादरपृथिवीकायिकाश्चेति खरबादरपृथिवीकायिकाः। तदेवं भेदद्वयं भवति बादरपृथिवीकायिकानामिति। तत्र श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकानां भेदं ज्ञातुं प्रश्नयन्नाह—'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं सण्हबायरपुढवीकाइया' अथ के ते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः, तेषां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः, भगवानाह—'सत्तविहा पन्नत्ता' सप्तविधाः—सप्तप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः, 'तं जहा' तद्यथा—'कण्हमट्टिया' कृष्णमृत्तिका कृष्णरूपा मृत्तिका एवं नीलमृत्तिका एव लोहितहारिद्रशुक्लभेदा अपि वक्तव्याः। 'भेओ जहा पण्णवणाए' एतेषां जीवानां

लोष्टादि के जैसी मृदु पृथिवी होती है ऐसी पृथिवी जिन जीवों का काय होती है वे जीव भी लक्षणा से श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिक कह दिये गये हैं। जो संघातविशेष और काठिन्यविशेष को लिये हुए पृथिवी है वह खरपृथिवी है यह खरपृथिवी जिन जीवों का काय है वे खरबादरपृथिवीकायिक जीव है। यहां पर भी जो खर पृथिवीकाय वाले जीवो को खर बादरपृथिवीकायिक जीव कहा गया है वह भी लक्षणा से कहा गया है ऐसा जानना चाहिये। अब गौतम श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकों के भेदो को जानने के लिये प्रभु से ऐसा पूछते हैं —"से किं तं सण्हबायरपुढवीकाइया" हे भदन्त ! श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिक जीव कितने प्रकार के होते हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं "सत्तविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! ये सात प्रकार के होते हैं "तंजहा" जैसे—"कण्हमट्टिया" कृष्णमृत्तिका "भेओ

લોષ્ટ કહેતા પત્થર સરખા મૃદુ-કોમળ પૃથ્વી-તદ્રૂપ જે જીવ છે, તે શ્લક્ષ્ણબાદરપૃથ્વીકાયિક જીવ છે. જેકે દળેલા પત્થર વિગેરેના જેવી કોમળ પૃથ્વી હોય છે એવી પૃથ્વી જે જીવોની કાય-કાયા શરીર હોય છે, તે જીવો પણ લક્ષણાથી શ્લક્ષ્ણબાદરપૃથ્વીકાયિક કહ્યા છે જે સંઘાતવિશેષ અને કાઠિન્ય-કઠણ પણા વાળી પૃથ્વી છે તે ખર પૃથ્વી છે. આ ખર પૃથ્વી જે જીવોની કાયા-શરીર રૂપ છે તેઓ ખરબાદરપૃથ્વીકાયિક જીવ છે અહિંયાં પણ જે ખરપૃથ્વીકાયવાળા જીવોને ખર બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો એ પ્રમાણે કહ્યા છે, તે પણ લક્ષણાથી કહ્યા છે તેમ સમજવું

હવે ગૌતમ સ્વામી શ્લક્ષ્ણબાદરપૃથ્વીકાયિકોના ભેદોને જાણવા માટે પ્રભુ ને પૂછે છે કે—"से किं त सण्हवायरपुढवीकाइया" હે ભગવન્ શ્લક્ષ્ણ બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! શ્લક્ષ્ણ બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો સાત પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે, "तं जहा" તે આ પ્રમાણે સમજવા જેમકે—"कण्हमट्टिया" કૃષ્ણ મૃત્તિકા—

यथा प्रज्ञापनायां भेदः कथितः तथैव इहापि भेदो ज्ञातव्यः । कियत्पर्यन्तं प्रज्ञापनाप्रकरणं वक्तव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य' यावत्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च, एतदन्तं प्रज्ञापनाप्रकरणं वक्तव्यम्, प्रज्ञापनाप्रकरणं चेत्थम्-'किण्हमट्टिया नीलमट्टिया लोहियमट्टिया हालिद्दमट्टिया सुक्किल्लमट्टिया पंडुमट्टिया पणगमट्टिया सेत्तं सण्हबायरपुढवीकाइया । से किं तं खरबायरपुढवीकाइया ? खरबायरपुढवीकाइया अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा—

पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे ।
तंवा य तउय सीसय रुप्प सुवण्णे य वयरे य ॥१॥
हरियाले हिंगुलए, मनोसिला सासगंजणपवाले ।
अब्भपडलब्भवालुय बायरकाए मणिविहाणा ॥२॥
गोमेज्जए य रुयए, अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगय मसारगल्ले, भुजमोयगे इंदनीले य ॥३॥
चंदण गेरुय हंसे, पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे ।
चंदप्पभ वेरुलिए जलकंते सूरकंते य ॥४॥

जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य' ॥

कृष्णमृत्तिका नीलमृत्तिका लोहितमृत्तिका हारिद्रमृत्तिका शुक्लमृत्तिका पाण्डुमृत्तिका पनकमृत्तिका तदेते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका.। अथ के ते खरबादरपृथिवीकायिकाः ? खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा—

जहा पण्णवणाए" इनके भेद जैसे प्रज्ञापना में " जाव ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तंजहा पज्जतगा य अपज्जत्तगा य " यावत् वे सक्षेप से पर्याप्तक और अपर्याप्तक के भेद से दो प्रकार के हैं, इस सूत्र तक कहे गये है वैसे ही वे सब यहां पर भी सूत्र कह लेना चाहिये । वह प्रज्ञापनाप्रकरण इस प्रकार से है–" कण्हमट्टिया " इत्यादि टीका से समझ लेना चाहिये । इन सूत्रों की टीका प्रज्ञापना सूत्र से ही जान लेना चाहिये, तात्पर्य इस कथन का यही है कि श्लक्ष्ण

કાળી માટિવાળા વિગેરે "भेओ जहा पन्नवणाए" પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં આ શ્લક્ષ્ણ બાદર પૃથ્વી કાયિકોના ભેદો જે રીતે કહ્યા છે જેમકે—"जाव ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तं जहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य" યાવત્ તેઓ સંક્ષેપથી પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તકના ભેદથી બે પ્રકારના છે, આ સૂત્રપાઠ સુધી જે રીતે વર્ણવ્યા છે એજ પ્રમાણે તે બધાં ભેદો અહિયાં પણ સૂત્રરૂપે કહેવા જોઈએ તે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું પ્રકરણ આ નીચે પ્રમાણે છે–"कण्ह मट्टिया' इत्यादि" કથન ટીકાથી સમજી લેવું, આ સૂત્રોની ટીકા પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાંથીજ સમજી લેવી.

पृथिवी च शर्करा वालुका च उपलः शिला च लवणम् ऊपः ।
ताम्रश्च त्रपु सीसकं रूप्यं सुवर्णश्च वज्रश्च ॥१॥
हरितालो हिङ्गुलको मनःशिला सासकमंजनं प्रवालः ।
अभ्रपटलमभ्रवालुका बादरकाये मणिविधानानि ॥२॥
गोमेदकश्च रुचकोऽङ्कः स्फटिकश्च लोहिताक्षश्च ।
मरकतो मसारगल्लो भुजमोचक इन्द्रनीलश्च ॥३॥
चन्दनो गैरुको हंसः पुलकः सौगन्धिकश्च बोद्धव्यः ।
चन्द्रप्रभो वैडूर्यः जलकान्तः सूर्यकान्तश्च ॥४॥

ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा—पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्चेति छाया ।

प्रज्ञापनाप्रकरणस्थसूत्राणां टीका अत्र न कृता, पाठकै. प्रज्ञापना एव द्रष्टव्या । तदयमर्थः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः सप्तप्रकारका भवन्ति ते च कृष्णमृत्तिकाद्याः पनकमृत्तिकान्ताः ।

तत्र कृष्णादिमृत्तिकाः कृष्णादिमृत्तिकारूपाः पाण्डुमृत्तिका नाम देशविशेषे या धूलीरूपा सती पाण्डू इति प्रसिद्धा तदात्मका जीवा अपि अभेदोपचारात् पाण्डुमृत्तिका इत्युक्ताः। पनकमृत्तिका—पनको नाम नद्यादिपूरप्लाविते देशे नद्यादिपूरेऽपगते सति यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो जलमलोऽपरपर्याय. पङ्क' स इति । तदात्मका जीवा अपि उपचारात् तत्तद्रूपा इति । खरबादरपृथिवीकायिकाश्चानेकप्रकारा भवन्ति, ते च प्रज्ञापनासूत्रतो ज्ञातव्याः । एतदाशयेनैव कथितं भेदो यथा प्रज्ञापनायामिति ।

बादरपृथिवीकायिक जीव कृष्ण नील लोहित हारिद्र शुक्ल पाडु और पनकमृत्तिका के भेद से सात प्रकार के है और खर बादरपृथिवीकायिक जीव अनेक प्रकार के है । शर्करा वालुका आदि सूर्यकान्त मणि तक सूत्र में कहे गये है फिर भी इनके सिवाय इस प्रकार के दूसरे खरबादरपृथिवीकायिक हैं वे सब सक्षेप से पर्याप्त अपर्याप्त के भेद से दो प्रकर के होते हैं । प्रज्ञापना सूत्र में कहा गया है अतः इसी आशय से "भेदो यथा प्रज्ञापनायाम्" ऐसा सूत्रकार ने कहा है वह सब वहाँ से जान लेवे ।

આ કથનનું તાત્પર્ય એજ છે કે-શ્લક્ષ્ણ બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવો કૃષ્ણ, ૧ નીલ, ૨ લોહિત (લાલ)૩, હારિદ્ર (પીળા)૪, શુકલ (સફેદ)૫, પાંડુ ૬, અને પનકમૃત્તિકા ૭ ના ભેદથી સાત પ્રકારના થાય છે અને ખરબાદરપૃથ્વીકાયિક જીવો અનેક પ્રકારના છે, તે શર્કરા વાલુકા વિગેરે સૂર્યકાન્ત મણિ સુધી સૂત્રમાં કહ્યા છે તો પણ તે સિવાય આ રીતે બીજા પણ ખરબાદરપૃથ્વીકાયિકો છે, તે બધા સક્ષેપથી પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તકના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે તે બધા ભેદોનું કથન પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં સૂત્રકારે કહેલ છે તેથી જ "भेदो यथा प्रज्ञापनायाम्" આ પ્રમાણે અહિયાં સૂત્રકારે કહેલ છે. તેથી તે તમામ ભેદો જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી સમજી લેવા.

सम्प्रति- बादरपृथिवीकायिकानामवगाहनादिद्वाविंशतिद्वारकलापं दर्शयितुमाह— 'तेसि णं' इत्यादि, **'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता'** तेषां श्लक्ष्णखर-बादरपृथिवीकायिकानां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? इति प्रश्न', भगवानाह— **'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'तओ सरीरगा पन्नत्ता'** त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि—कथितानि, त्रैविध्यमेव दर्शयति—**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा—**ओरालिए तेयए कम्मए'** औदारिकम् तैजसं कार्मणमेतच्छरीरत्रयं भवति बादरपृथिवीकायिकाना-मिति । **'तं चेव सव्वं'** तदेव सर्वं सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां यदेवावगाहनादिकं यथा कथितं तथैव सर्वमवगाहनादिकं षष्ठसंज्ञिद्वारपर्यन्तं बादरपृथिवीकायिकानामपि ज्ञातव्यमिति । केवलं सूक्ष्मपृथिवीकायिकापेक्षया सप्तमे लेश्याद्वारे यद्वैलक्षण्यमस्ति बादरपृथिवीकायिकानां तद्दर्शयति— **'नवरं'** इत्यादिना, **'नवरं चत्तारि लेस्साओ'** नवरं केवलमत्र बादरपृथिवीकायिकानां चतस्रो-लेश्याः—कृष्णनीलकापोततेजोरूपा भवन्तीति ज्ञातव्याः ।

अब सूत्रकार बादर पृथिवीकायिकजीवों के अवगाहना आदि रूप इन सबका विवेचनरूप शेष बाईस द्वारों का कथन करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—**"तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरा पन्नता"** हे भदन्त ! उन श्लक्ष्ण एवं खर बादर पृथिवीकायिकजीवों के कितने शरीर कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है **"गोयमा ! तओ सरीरा पन्नत्ता"** हे गौतम ! उन श्लक्ष्ण एवं खर बादर पृथिवीकायिको के तीन शरीर कहे गये हैं । **"तं जहा"** जैसे—**"ओरालिए, तेयए, कम्मए"** औदारिक तैजस और कार्मण शरीर **"तंचेव सव्वं"** तथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिको का जो अवगाहना—आदि सज्ञाद्वार तक के छह द्वारो का वर्णन जैसा कहा है उसी प्रकार से वह सब अवगाहनादिक बादरपृथिवीकायिकों के भी जानलेना चाहिए । 'अब **सातवां लेश्याद्वार कहते हैं । 'नवरं चत्तारि लेस्साओ"** परन्तु विशेपता केवल ऐसी है कि बादरपृथिवीकायिकजीवो की चार लेश्याएँ—कृष्णलेश्या, नीललेश्या,

---

હવે સૂત્રકાર બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોની અવગાહના આદિ આ બધાના વિવેચનરૂપ બાકીના બાવીસ દ્વારોનું કથન કરે છે. આ સંબંધમા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે—**"तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरा पण्णत्ता"** હે ભગવન્ તે શ્લક્ષ્ણ અને ખર બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોના કેટલા શરીરો કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે— **"गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! તે શ્લક્ષ્ણ અને ખર બાદરપૃથ્વી-કાયિકોના ત્રણ પ્રકારના શરીર હોય છે **"तं जहा"** જેમકે—**"ओरालिए" तेयए, कम्मए'** ઔદારિક તૈજસ અને કાર્મણ શરીર **'तं चेव सव्वं'** તથા સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોની અવ-ગાહના વિગેરે સંજ્ઞા દ્વાર સુધીના છ દ્વારોનું વર્ણન જે રીતે કરેલ છે એજ પ્રમાણે તે અવ-ગાહના વિગેરે સઘળુ કથન બાદરપૃથ્વી કાયિકોનું પણ સમજવું.

હવે સાતમાં લેશ્યાદ્વારનું કથન કરવામાં આવે છે —**"नवर चत्तारि लेस्साओ"** પરંતુ વિશેષ કેવળ એટલુંજ છે કે—બાદરપૃથ્વીકાયિક જીવોને ચાર લેશ્યાઓ એટલે કે—

कथमत्र तेजोलेश्या भवतीति चेत् इत्थम्-व्यन्तरादय ईशानपर्यन्तदेवा भवनविमानादौ अतिमूर्च्छया स्वकीयरत्नकुण्डलादौ अपि समुत्पद्यन्ते ते च देवास्तेजोलेश्यावन्तो भवन्ति यादृशलेश्यायां जीवो म्रियते तादृशलेश्यावत्यग्रेऽपि उत्पद्यते 'जल्लेस्से मरइ तल्लेस्से उववज्जइ' इति वचनात्, रत्नकुण्डलादयश्च पृथिवीरूपाः, ततः कियत्कालपर्यन्तम् अपर्याप्तावस्थायां तेजोलेश्यावन्तोऽपि अवाप्यन्ते इति बादरपृथिवीकायिकानां चतस्रो लेश्या भवन्तीति कथितमिति ॥

'अवसेसं जहा सुहुमपुढवीकाइयाणं' अवशेषं लेश्यातिरिक्ताष्टमेन्द्रियद्वारादारभ्य सप्तदशोपयोगद्वारपर्यन्तं द्वारजातं यथासूक्ष्मपृथिवीकायिकानां कथितं तथैव सर्वमत्रापि ज्ञातव्यम्।

(१८) अष्टादशमाहारद्वारमाह-'आहारो जाव नियमा छद्दिसिं' आहारो यावत् नियमात् षड्दिशि बादरपृथिवीकायिकानां लोकमध्ये एवोपपातसंभवेन आहारो नियमतः

कापोतलेश्या और तेजोलेश्या-होती है। यहां तेजोलेश्या कैसे होती है? ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये क्योंकि व्यन्तरादिक देव तथा ईशान देवलोक तक के देव भवन विमान आदि में अतिमूर्च्छा के वश से च्यवकर अपने ही रत्नकुण्डल आदिको में भी उत्पन्न हो जाते हैं-जैसी लेश्या में जीव मरता है वैसी लेश्या वाले में वह आगे भी उत्पन्न होता है-"जल्लेस्से मरइ तल्लेस्से उववज्जइ" ऐसा सिद्धान्त का कथन है। रत्नकुण्डल आदि पृथिवीरूप है। इससे कुछकाल तक तेजोलेश्या वाले भी अपर्याप्तावस्था में पाये जाते है। इस प्रकार बादरपृथिवीकायिकों के चार लेश्याएँ होती है ऐसा कहा गया है।

"अवसेसं जहा सुहुमपुढवीकाइयाणं" इस लेश्याकथन से अतिरिक्त और सब-इन्द्रिय समुद्घात से लेकर उपयोग पर्यन्त सत्रह द्वारो का कथन सूक्ष्मपृथिवीकायिको के जैसा है वैसा जानना चाहिए। अठारहवां आहार द्वार है-जैसे-"आहारो जाव नियमा छद्दिसिं"

કૃષ્ણ, લેશ્યા ૧, નીલ લેશ્યા ૨, કાપોત લેશ્યા ૩, અને તેજો લેશ્યા ૪. આ ચાર લેશ્યાઓ હોય છે તો અહિયા તેજો લેશ્યા કેવી રીતે થાય છે? આ રીતની શંકા કરવી નહીં. કેમકે વ્યન્તર વિગેરે દેવો તથા ઈશાનદેવ લોક સુધીના દેવ, ભવન, વિમાન વિગેરેમાં-અતિમૂર્છા વશાત્ ચ્યવીને પોતાનાજ રત્નકુંડલ વિગેરેમાં પણ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે જેવી લેશ્યામાં જીવ મરે છે, એવી લેશ્યાવાળામાં તે ઉત્પન્ન થાય છે. "जल्लेस्से मरइ तल्लेस्से उववज्जइ' આ પ્રમાણે સિદ્ધાંતકારનું કથન છે. રત્નકુંડલ વિગેરે પૃથ્વીરૂપ છે તેથી કંઈક કાલસુધી અપર્યાપ્તાવસ્થામાં તેજોલેશ્યાવાળા પણ હોય છે. આ રીતે બાદર પૃથ્વીકાયિકોને ચારલેશ્યાઓ હોય છે, તેમ કહેવામાં આવ્યું છે.

"अवसेसं जहा सुहुमपुढवीकाइयाणं" આ લેશ્યા સંબંધી કથન સિવાયનું બાકીનું ઈન્દ્રિય સમુદ્ઘાતથી લઈને ઉપયોગના કથન સુધીના સત્તર ૧૭ દ્વારોનુ કથન સૂક્ષ્મપૃથ્વી કાયિકોની જેમ છે તેમ સમજવું અઠારમું આહારદ્વાર છે. જેમકે-"आहारो जाव नियमा

षड्दिग्भ्यः आगतानां पुद्गलानां भवति, सूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरणे किं स्पृष्टानि आहारन्ति अस्पृष्टानि आहरन्ति ? इत्यादिकं कथितं तत्सर्वं यावत्पदलभ्यमिहापि वक्तव्यमेव, तथाहि—स्पृष्टानि आहरन्ति नो अस्पृष्टानि आहरन्तीत्यादिकम् केवलमेतदेव वैलक्षण्यम् यत तत्र व्याघाताभावे सति षड्दिग्भ्य आगतानाम् पुद्गलानामाहारो भवति, व्याघाते सति त्रिदिशि चतुर्दिशि पञ्चदिशि आहरन्तीत्यादिकं, तत्र लोकचरमान्तेऽपि सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामुत्पादसंभवात् , अत्र तु तथा न वक्तव्यमिति ॥

(१९) एकोनविंशतितममुपपातद्वारम्—'उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेहिंतो' उपपातो बादरपृथिवीकायिकानां तिर्यग्योनिकमनुष्यदेवेभ्यो भवति, 'देवेहिंतो जाव सोहम्मे-

---

इनका आहार नियम से छह दिशाओ से आगत पुद्गल द्रव्यो का होता है । क्योंकि बादर पृथिवीकायिको का उपपात लोक के मध्य में होता है । अतः यहाँ व्याघात का सद्भाव नहीं हो सकता है । सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवों के प्रकरण में "वे स्पृष्ट पुद्गल द्रव्यों का आहार करते है ? या अस्पृष्ट पुद्गल द्रव्यों का आहार करते हैं ? इत्यादि सब कथन जैसा कहा गया है-वैसा ही वह सब यहाँ पर भी कर लेना चाहिये यही बात यहाँ यावत्पद से प्रकट की गई है तथा च-ये स्पृष्ट पुद्गल द्रव्यो का ही आहार करते है—अस्पृष्टों का नहीं सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवो का उत्पाद लोक के चरमान्त में भी संभवित होता हैं इसलिए वे व्याघात के अभाव में छह दिशाओ से भी आगत पुद्गलद्रव्यो का आहार करते है, तथा व्याघात के सद्भाव में कदाचित् तीन दिशाओ से कदाचित् चार दिशाओ से कदाचित् पांच दिशाओ से आहार करते है पर यहां पर यह बात नहीं है ।

उन्नीसवां उपपात द्वार—तिर्यग्योनि से मरे हुए जीव, मनुष्य योनि से मरे हुए जीव एवं देवयोनि से च्यवे हुए जीव बादरपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न हो सकते हैं—

छद्दिसिं" એમનો આહાર નિયમથી છ દિશાઓથી આવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો હોય છે કેમકે—બાદર પૃથ્વીકાયિકોનો ઉપપાત-ઉત્પત્તી લોકની મધ્યમાં હોય છે. તેથી અહિયાં વ્યાઘાતનો સંભવ હોઈ શકતો નથી. સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના પ્રકરણમાં તેઓ સ્પૃષ્ટ પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે ઇત્યાદિ સઘળું કથન ત્યાં જેવી રીતે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે તે સઘળુ કથન અહિયાં પણ કહી લેવું જોઈએ. એજ વાત અહિયાં યાવત્પદ થી પ્રગટ કરવામાં આવી છે, જેમકે-તેઓ સ્પૃષ્ટ પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો આહાર કરે છે અસ્પૃષ્ટોનો નહીં સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોનો ઉત્પાત-ઉત્પત્તિ લોકના ચરમાન્તમાં પણ સંભવિત હોય છે તેથી તેઓ વ્યાઘાતના અભાવમાં છ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો પણ આહાર કરે છે તથા વ્યાઘાત હોય ત્યારે કોઇ વાર ત્રણ દિશાઓમાંથી કોઈ વાર ચાર દિશાઓમાંથી કોઈ વાર પાંચ દિશાઓમાંથી આહાર કરે છે. પરંતુ અહિયાં આ વાત નથી.

ઓગણીસમું ઉપપાત-ઉત્પત્તિ દ્વાર-તિર્યગ્યોનિકોમાંથી મરેલા જીવો, મનુષ્યયોનિમાંથી મરેલા જીવો, અને દેવયોનિમાથી ચ્યવેલા જીવો બાદર પૃથ્વી કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન

साणेहिं' यदि देवेभ्यो बादरपृथिवीकायिकानामुपपातो भवति तदा व्यन्तरादारभ्य यावत् सौधर्मेशानपर्यन्तेभ्यो भवतीति वक्तव्यम् ॥ विंशतितमं स्थितिद्वारम्-'ठीई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' बादरपृथिवीकायिकानां जघन्या स्थितिरन्तर्मुहूर्तमात्रप्रमाणा भवति, 'उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं' उत्कर्षेण द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि द्वाविंशतिवर्षसहस्रप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिर्भवति बादरपृथिवीकायिकानाम्, सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां तु जघन्योत्कृष्टाभ्यां स्थितिरन्तर्मुहूर्तप्रमाणैव कथिता, इह तूत्कर्षपदे वैलक्षण्यमत उभयोः प्रकरणयोर्वैलक्षण्यमिति । एकविंशतितमं समुद्घातद्वारम्-'ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति' ते बादरपृथिवीकायिकाः खलु भदन्त ! जीवाः कि मारणान्तिकसमुद्घातेन किं समवहताः सन्तो म्रियन्ते, अथवा असमवहता एव म्रियन्ते ? इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति' ते बादरपृथिवीकायिका

देवो में भी सब देव नहीं किन्तु "जाव सोहम्मेसाणेहिंतो" व्यन्तर से लेकर साधर्म और ईशान तक के देव ही च्यव कर बादरपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न हो सकते हैं इसीलिये इनकी उत्पत्ति देवो से तिर्यञ्चो से और मनुष्यो से कही गई है। बीसवां स्थिति द्वार—"ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' स्थिति इनकी जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और "उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं" उत्कृष्ट से २२ हजार वर्ष की है। सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवो की तो उत्कृष्ट स्थिति एक ही अन्तर्मुहूर्त्त की कही है । और जघन्यस्थिति भी एक ही अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है। इक्कीसवां समुद्घातद्वार-'ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति, असमोहया मरंति' हे भदन्त ! ये बादर पृथिवीकायिकजीव क्या मारणान्तिकसमुद्घात से समवहत होकर मरते है अथवा मारणान्तिक समुद्घात से असमवहत होकर मरते हैं ? उत्तरमें प्रभु कहते है-'गोयमा ! समो-

---

થઈ શકે છે દેવોમાં પણ સઘળા દેવે નહીં પરંતુ "जाव सोहम्मेसाणेहिंतो" વ્યન્તર દેવથી લઈને સૌધર્મ અને ઈશાન દેવ સુધીના દેવજ ચ્યવીને બાદરપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થઈ શકે છે તેથીજ તેમની ઉત્પત્તિ દેવોમાંથી તિર્યંચોમાંથી અને મનુષ્યો માંથી કહેલી છે

વીસમું સ્થિતિ દ્વાર—"ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्त" તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને "उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं" ઉત્કૃષ્ટથી ૨૨ બાવીસ હજાર વર્ષની છે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકજીવોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તો એકજ અંતર્મુહૂર્તની કહી છે.

એકવીસમું સમુદ્ઘાત દ્વાર—'ते णं भंते जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति' હે ભગવન્ આ બાદરપૃથ્વીકાયિક જીવો શું મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઈને એટલે કે-સમુદ્ઘાત કરીને મરે છે ? અથવા મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી અસમવહત-અર્થાત્ સમુદ્ઘાત કર્યા વિના મરે છે ?

मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते उभाभ्यामपि तेषां मरणं भवति नात्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकाऽपेक्षया किमपि वैलक्षण्यमिति भावः ।

द्वाविंशतितमं च्यवनद्वारम्-'**ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति पुच्छा**' ते खलु भदन्त ! बादरपृथिवीकायिकजीवा अनन्तरमुद्वृत्य क गच्छन्ति कोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते यद्वा तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते यद्वा मनुष्येषूत्पद्यन्ते देवेषु वा समुत्पद्यन्ते ? इति पृच्छा सगृह्यते इति प्रश्नः, भगवानाह-'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**नो नेरइएसु उववज्जंति**' बादरपृथिवीकायिका इत उद्वृत्य नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते-नारकगतिं न प्राप्नुवन्तीत्यर्थः, किन्तु इत उद्वृत्ताः सन्तः '**तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति**' तिर्यग्योनिकेषु समुत्पद्यन्ते

इया वि मरंति, असमोहया वि मरंति' हे गौतम ! ये बादरपृथिवीकायिकजीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं और मारणान्तिकसमुद्घात से असमवहत होकर भी मरते हैं । इसी प्रकार से सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीव भी मरते हैं ।

बाईसवां च्यवनद्वार-- '**ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति**' हे भदन्त ! ये बादरपृथिवीकायिकजीव मरकर कहां जाते हैं ? कहाँ उत्पन्न होते है ! क्या ये नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? या तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते है ? या मनुष्यों में उत्पन्न होते है ? या देवों में उत्पन्न होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'**गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति**' हे गौतम ! ये बादर पृथिवीकायिकजीव मरकर नैरयिकों में उत्पन्न नहीं होते हैं, '**नो देवेसु उववज्जंति**' देवों में उत्पन्न नहीं होते है किन्तु-'**तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति**' तिर्यञ्चों में उत्पन्न होते है और मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं । '**तं चेव जाव**

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે--"**गोयमा ! समोहया वि मरंति असमोहयावि मरंति**" હે ગૌતમ ! આ બાદરપૃથ્વીકાયિક જીવ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત-સમુદ્ઘાત કરીને પણ મરે છે, અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કર્યા વિના પણ મરે છે, એજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવો પણ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને તથા કર્યા વિના એમ બન્ને પ્રકારથી મરે છે.

બાવીસમું ચ્યવનદ્વાર—"**ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति**" હે ભગવન્ આ બાદરપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને ક્યાં જાય છે ? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થાય છે ! શુ તેઓ નૈરયિકોમા ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યગ્યોનિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"**गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति**" હે ગૌતમ ! આ બાદરપૃથ્વીકાયિક જીવો મરીને નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. '**नो देवेसु उववज्जंति**" દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. પરંતુ "**तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति**" તિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. અને મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. "**तं चेव जाव असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं**

मनुष्येषु वा समुत्पद्यन्ते, 'नो देवेसु उववज्जंति' नो-न वा देवेषूत्पद्यन्ते बादरपृथिवीकायिका इत उद्वृत्य नारकगतिं देवगतिं वा न प्राप्नुवन्ति किन्तु तिर्यग्गतिं वा मनुष्यगतिं वा प्राप्नुवन्तीत्याशयः । 'तं चेव जाव असंखेज्जवासाउयवज्जेसु' तदेव यावत् असंख्येयवर्षायुष्क वर्जेषु 'तं चेव' इति तदेव यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरणे कथितं तद्वदेवात्रापि बोध्यम् ।

तत्प्रकरणं चेत्थम्-'जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति' किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति ॥ अयं भावः-यदि तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते तदा किमेकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियेषुवोत्पद्यन्ते गौतम ! एकेन्द्रियेषु द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते असंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु पर्याप्तकेषु अपर्याप्तकेषु समुत्पद्यन्ते यदि मनुष्येषूत्पद्यन्ते तदा अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु पर्याप्तापर्याप्तकेषु समुत्पद्यन्ते इति ।

त्रयोविंशतितमं गत्यागतिद्वारम्—'ते णं भंते ! जीवा कइ गइया कइ आगइया' ते खलु भदन्त ! बादरपृथिवीकायिका जीवाः कति गतिकाः कति आगतिकाः केषु केषु स्थानेषु एतेषां गमनं भवति, कस्मात् कस्मात् स्थानादेतेषामागमनं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा'

असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं तं चेव' यह उसी प्रकार है जैसा सूक्ष्मपृथिवीकायिक में कहा है जैसे-असंख्यात वर्ष आयुवाले भोग भूमिक मनुष्यो को छोड़कर अन्य पर्याप्त अपर्याप्त सब मनुष्यों में उत्पन्न होते है । तेईसवां गत्यागतिद्वार-"ते णं भंते ? जीवा कइ गइया कइ आगइया' हे भदन्त ? वे बादर पृथिवीकायिकजीव कतिगतिक मरकर कितनी गतियो में जाने वाले होते हैं और कति आगतिक कितनी गतियो से आनेवाले होते है अर्थात् मरकर किस २ गतिमें जाते है ? और किस २ गति से आकर यहाँ उत्पन्न होते है ? इसके उत्तर

तं चेव" જે પ્રમાણે સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણેનું કથન સમજવું અર્થાત્ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્ય વાળા ભોગ ભૂમિના મનુષ્યોને છોડીને બાકીના બીજા પર્યાપ્તક અથવા અપર્યાપ્તક બધા મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે.

તેવીસમું ગત્યાગતિદ્વાર—"ते णं भंते ! जीवा कइ गइया कइ आगइया" હે ભગવન્ તે બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવ મરીને કેટલી ગતિયોમાં જવાવાળા હોય છે ? અને કેટલી ગતિયોમાંથી આવવાવાળા હોય છે ? અર્થાત્ મરીને કઈ કઈ ગતિમાં જાય છે ? અને કઈ કઈ ગતિમાંથી આવીને અહિયાં ઉત્પન્ન થાય છે ?

इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुगइया' द्विगतिकाः द्वयोः स्थानयो गतिर्विद्यते येषां ते द्विगतिकाः, बादरपृथिवीकायिकत उद्वृत्य तिर्यङ्मनुष्येष्वेव गमनात् 'ति आगइया' त्र्यागतिकाः त्रिभ्यः स्थानेभ्य स्तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य आगमनात् त्र्यागतिकाः बादरपृथिवीकायिका भवन्तीति ॥ 'परित्ता असंखेज्जा य समणाउसो' हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! परीत्य–प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्येयाश्च–असंख्येयलोकाकाशप्रमाणत्वादिति । 'से त्तं बायरपुढवीकाइया' ते एते बादरपृथिवीकायिकाः सक्षेपविस्तराभ्यां कथिताः । 'से त्तं पुढवीकाइया' ते एते पृथिवीकायिकाः सूक्ष्मबादरपृथिवीकायिकाः प्रतिपादिता इति ॥सू० १२॥

कथिताः पृथिवीकायिकाः अतःपरम् अप्कायिकान् दर्शयितुमाह—'से किं तं आउक्काइया' इत्यादि,

मूलम्ः—'से किं तं आउकाइया, आउकाइया दुविहा पन्नत्ता' तंजहा-सुहुम आउकाइया य बायर आउक्काइया य सुहुम आउक्काइया

में प्रभु कहते है–'गोयमा ? दुगइया ति आगइया' हे गौतम ? ये बादरपृथिवीकायिकजीव मरकर तिर्यञ्चगति, और मनुष्यगति में जाते हैं–किन्तु नरक गति और देवगति में नहीं जाते है इसलिये ये द्विगति कहलाते हैं और तीन गतियो से मरकर जीव यहाँ–बादरपृथिवीकायिक रूप से उत्पन्न होते हैं–अर्थात् तिर्यंगति से, मनुष्यगति से और देवगति से मरकर जीव यहां जन्म लेते हैं इसलिये ये त्र्यागतिक–तीन आगतिवाले कहलाते हैं । 'परित्ता असंखेज्जा य समणाउसो' हे श्रवण ? आयुष्मन् ! प्रत्येक शरीर असंख्यात लोकाकाश प्रमाण होने से असंख्यात है । 'सेत्तं बायरपुढवीकाइया' इस प्रकार सक्षेप और विस्तार से बादर पृथिवी कायिकों का वर्णन किया, 'सेत्तं पुढवीकाइया' वे ये पृथिवीकायिकजीव है अर्थात् यह सूक्ष्म और बादर पृथिवीकायिक का वर्णन समाप्त हुआ । सूत्र ॥१२॥

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે––"गोयमा ! दु गइया ति आगइया" હે ગૌતમ આ બાદર પૃથ્વી કાયિક જીવ મરીને તિર્યંચ ગતિ અને મનુષ્યગતિમાં જાય છે પરંતુ નરકગતિ અને દેવગતિમાં જતા નથી તેથીજ તેઓ દ્વિગતિ અટલે કે બે ગતિવાળા કહેવાય છે. અને ત્રણ ગતિયોથી મરીને જીવ અહિયાં બાદરપૃથ્વીકાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. અર્થાત્ તિર્યગ્ગતિ, મનુષ્યગતિ અને દેવગતિથી મરીને જીવ અહિંયાં જન્મ લે છે. તેથી 'ત્ર્યાગતિક' ત્રણ પ્રકારની આ ગતિ-આવવાની ગતિવાળા કહેવાય છે "परित्ता असंखेज्जा य समणाउसो" હે શ્રમણ આયુષ્મન્ પ્રત્યેક શરીર વાળા જીવના પ્રદેશો અસંખ્યાત લોકાકાશ પ્રમાણ હોવાથી અસંખ્યાત કહ્યા છે "से त्तं बायरपुढवीकाइया" આ રીતે સંક્ષેપ અને વિસ્તારથી બાદરપૃથ્વીકાયિકોનુ વર્ણન કર્યું છે "से त्तं [illegible]" તે આ પૃથ્વીકાયિક જીવ છે અર્થાત્ આ સૂક્ષ્મ અને બાદરપૃથ્વીકાયિકનુ વ[illegible]સ થયુ. સૂ. ૧૧

दुविहा पन्नत्ता तंजहा-पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरया पन्नत्ता गोयमा ! तओ सरीरया पन्नत्ता तं जहा ओरालिए तेयए कम्मए जहेव सुहुमपुढवीकाइयाणं। नवरं थिबुगसंठिया पन्नत्ता सेसं तं चेव जाव दुगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता। सेत्तं सुहुम आउक्काइया। से किं तं बायर आउक्काइया, बायर आउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा-ओसाहिमे जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तंजहा- पज्जत्ता य अपज्जत्ता य तं चेव सव्वं, नवरं थिवुगसंठिया चत्तारि लेस्साओ आहारो नियमा छद्दिसिं, उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेहिं, ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं, सेसं तं चेव जहा बायरपुढवीकाइया जाव दुगइया ति आगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो ! सेत्तं बायर आउक्काइया। सेत्तं आउक्काइया' ॥ सू० १३॥

छाया—अथ के ते अप्कायिकाः, अप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सूक्ष्माप्कायिकाश्च बादराप्कायिकाश्च। सूक्ष्माप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि, ? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणं यथैव सूक्ष्मपृथिवीकायिकानाम्। नवरं स्तिवुकसंस्थिताः प्रज्ञप्ताः शेषं तदेव यावद् द्विगतिकाः द्व्यागतिकाः। परीता असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः, ते एते सूक्ष्माप्कायिकाः। अथ के ते बादराप्कायिकाः बादराप्कायिकाः अनेकविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अवस्याय· हिमं च ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च, तदेव सर्वम्। नवरं स्तिवुकसंस्थिताः, चतस्रो लेश्याः, आहारो नियमात् षड्दिशि, उपपात स्तिर्यग्योनिकमनुष्यदेवेभ्यः। स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण सप्तवर्षसहस्राणि शेषं तदेव यथा बादरपृथिवीकायिकाः यावद् द्विगतिकाः द्व्यागतिकाः परीता असंख्येया प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् ! ते एते बादराप्कायिकाः। ते एते अप्कायिकाः ॥ सू० १३ ॥

टीका—'से किं तं आउक्काइया' अथ के ते अप्कायिकाः जीवा इति प्रश्नः, भगवानाह-'आउक्काइया दुविहा पन्नत्ता' अप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, द्वैविध्यमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'सुहुम आउक्काइया य बायर आउक्काइया य' सूक्ष्माप्कायिकाश्च बादराप्कायिकाश्च तत्र सूक्ष्माप्कायिकाः सूक्ष्मनामकर्मोदयात् इमे च सर्वलोकव्यापिनः, बादराप्कायिकाः बादरनामकर्मोदयात् बादराः बादराप्कायिका घनोदध्यादि भाविनः, 'सुहुम आउक्काइया दुविहा पन्नत्ता' सूक्ष्माप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा-'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्च 'तेसि णं भंते ? कइ सरीरा पन्नत्ता' तेषां-सूक्ष्माप्कायिकानां खलु भदन्त ! कति-कियत्सख्यकानि शरीराणि प्रज्ञप्तानि—

पृथिवीकायिको का वर्णन करके अब अप्कायिको का वर्णन किया जाता है—

'से किं तं आउक्काइया—इत्यादि ॥ सू० १३ ॥

टीकार्थ—हे भदन्त ! अप्कायिक जीव कितने प्रकारके होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'आउक्काइया दुविहा पन्नत्ता' हे गौतम ? अप्कायिक जीव दो प्रकार के होते है, 'तं जहा' जैसे-"सुहुमआउक्काइया य बायरआउक्काइया य" सूक्ष्मअप्कायिक और बादर अप्कायिक, जिन अप्कायिक जीवो के सूक्ष्म नाम कर्म का उदय होता है वे सूक्ष्मअप्कायिक और जिन अप्कायिकजीवो के बादर नामकर्मका उदय होता है वे बादर अप्कायिक जीव कहलाते है। सूक्ष्मअप्कायिकजीव सर्वलोक व्यापी होते हैं और बादर अप्कायिकजीव घनोदधि आदिको में रहते हैं। इनमें 'सुहुम आउक्काइया दुविहा पन्नत्ता' सूक्ष्म अप्कायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है 'तं जहा' जैसे-सूक्ष्म पर्याप्त और सूक्ष्म अपर्याप्त 'तेसिणं भंते ! कइ सरीरा पन्नत्ता' हे भदन्त ? सूक्ष्म अप्कायिक जीवो के कितने शरीर कहे गये

પૃથ્વીકાયિકોનું વર્ણન કરીને હવે અપ્કાયિક જીવોનું વર્ણન કરવામાં આવે છે—"से किं तं आउक्काइया" ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—હે ભગવન્ અપ્કાયિક જીવ કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"आउक्काइया दुविहा पन्नत्ता" હે ગૌતમ અપ્કાયિક જીવ બે પ્રકારના હોય છે. 'तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે.—"सुहुमआउक्काइया य बायर आउक्काइया य" સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક અને બાદર અપ્કાયિક—એટલે કે-જે અપ્કાયિક જીવોના સૂક્ષ્મ નામ કર્મનો ઉદય હોય છે તેઓ સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકો છે અને જે અપ્કાયિક જીવોના બાદર નામકર્મનો ઉદય હોય છે, તેઓ બાદર અપ્કાયિક જીવ કહેવાય છે. સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવો સર્વ લોકમાં વ્યાપેલા હોય છે. અને બાદર અપ્કાયિક જીવો ઘનોદધિ વિગેરેમા રહે છે તઓમાં "सुहुमआउक्काइया दुविहा पन्नत्ता" સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવ બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. "तं जहा" જેમકે—

कथितानीति शरीरद्वारे प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तओ सरीरा पन्नत्ता' त्रीणि शरीराणि सूक्ष्माप्कायिकानां जीवानां प्रज्ञप्तानि कथितानि, त्रैविध्यमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'ओरालिए तेयए कम्मए' औदारिकं तैजसं कार्मणं चेति त्रिप्रकारकं शरीरं सूक्ष्माप्कायिकानां भवतीति। 'जहेव सुहुमपुढवीकाइयाणं' यथैव सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवानामवगाहनादिद्वाराणि कथितानि तथैव सूक्ष्माप्कायिकानामपि तानि द्वाराणि तेनैव रूपेण वक्तव्यानीति। सूक्ष्मपृथिवीकायिकापेक्षया यद्वैलक्षण्यं सूक्ष्माप्कायिकानां तद्दर्शयति–'नवरं' इत्यादिना, 'नवरं थिवुगसंठिया पन्नत्ता' नवरं स्तिवुकसंस्थिताः–बुद्बुदसंस्थानसंस्थिताः–सूक्ष्माप्कायिकाः–सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना मसूरचन्द्रसंस्थानं कथितमेतस्य सूक्ष्माप्कायिकस्य स्तिबुकसंस्थानमेतावानेवोभयो र्भेदः, 'सेसं तं चेव जाव दुगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता' 'सेसं तं चेव' शेषम्–एतदन्यत् शरीरावगाहना संहननकषायसंज्ञालेश्येन्द्रियसमुद्घात संज्ञिवेदपर्याप्तिदृष्टिदर्शनज्ञानयोगोपयोगाहारोपपातस्थिति-

---

है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'गोयमा ! तओ सरीरा पन्नत्ता' हे गौतम ! सूक्ष्म अप्कायिक जीवों के तीन शरीर कहे गये हैं–'तं जहा'–जैसे–'ओरालिए, तेयए, कम्मए' औदारिक तैजस और कार्मण 'जहेव सुहुमपुढवीकाइयाणं' सूक्ष्मपृथिवीकायिकजीवो के जैसे–अवगाहनादिद्वार कहे जा चुके हैं वैसे ही वे सूक्ष्म अप्कायिकजीवो के भी कहलेना चाहिये, "नवरं ठिवुगसंठिया पन्नत्ता' परन्तु उनकी अपेक्षा इनके संस्थान में अन्तर है वह इस प्रकार से है कि सूक्ष्म पृथिवीकायिको का संस्थान मसूर और चन्द्र के जैसा गोल कहा गया है परन्तु इस सूक्ष्म अप्कायिको का संस्थान–स्तिवुक–बुद्बुद–के जैसा कहा गया है। बाकी का और सब अवगाहना २, संहनन ३, कषाय ५, सञ्ज्ञा ६, लेश्या ७, इन्द्रिय ८, समुद्घात ९, संज्ञी १०, वेद ११, पर्याप्ति १२, दृष्टि १३, दर्शन १४, ज्ञान १५, योग

સૂક્ષ્મ પર્યાપ્ત અને સૂક્ષ્મ અપર્યાપ્ત "तेसिं णं भंते ! कइ सरीरा पन्नत्ता" હે ભગવન્ સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવોને કેટલા શરીરો કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-गोयमा ! तओ सरीरा पन्नत्ता" હે ગૌતમ ! સૂક્ષ્મ અપ્કાયિક જીવોના ત્રણ શરીરો કહેલા છે.

"तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. જેમકે–"ओरालिए, तेयए कम्मए" ઔદારિક તૈજસ અને કાર્મણ "जहेव सुहुमपुढवीकाइयाणं" સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવોના અવગાહનાદિ દ્વારો જે પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણેના અવગાહનાદિ અપ્કાયિક જીવોના પણ સમજવા. 'नवरं ठिवुगसंठिया पन्नत्ता" પરંતુ તેમના કરતાં આ અપ્કાયિક જીવોના સંસ્થાનદ્વારમાં અંતર પડે છે તે આપ્રમાણે છે. સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોનું સંસ્થાન મસૂર અને ચંદ્રના જેવું ગોળ કહેલ છે. પરંતુ આ સૂક્ષ્મ અપ્કાયિકોનું સંસ્થાન–સ્તિબુક–બુદ્બુદ એટલે કે પાણીના પરપોટા જેવું કહેલ છે બાકીના અવગાહના વિગેરે એટલે કે અવગાહના ૧, સંહનન ૨, કષાય ૩, સંજ્ઞા ૪, લેશ્યા ૫, ઇન્દ્રિય ૬, સમુદ્ઘાત ૭, સંજ્ઞી ૮, વેદ ૯ પર્યાપ્તિ ૧૦, દૃષ્ટિ ૧૧, દર્શન ૧૨, જ્ઞાન ૧૩, યોગ ૧૪, ઉપયોગ ૧૫, આહાર ૧૬, ઉપપાત ૧૭, સ્થિતિ

समवहतच्यवनगत्यागतिद्वारपर्यन्तं सर्वमपि तदेव-सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यम् । कियत्पर्यन्तं सूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरणं वक्तव्यं तत्राह—'जाव' इत्यादि, यावत् द्विगतिकाःद्व्यागतिकाः परीताः प्रत्येकशरीरिणोऽसङ्ख्याताः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति पर्यन्तम् । 'से त्तं सुहुम आउक्काइया' ते एते सूक्ष्माप्कायिकाः शरीरादि गत्यागतिद्वारान्तद्वारैर्विविच्य कथिता इति ॥

सूक्ष्माप्कायिकान्निरूप्य बादराप्कायिकान्निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह—'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं बायरआउक्काइया' अथ के ते बादराप्कायिका· बादरनामकर्मोदयात् बादरास्ते कियन्त इति प्रश्नः, उत्तरयति—'बायर आउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता' बादराप्कायिका

१६, उपयोग १७, आहार १८, उपपात १९, स्थिति २०, समवहत २१, च्यवन २२, गत्यागति, इन द्वारो सम्बन्धी कथन जैसा सूक्ष्म पृथिवीकायिको के प्रकरण में कहा गया है वैसा ही इनके सम्बन्ध में भी कहलेना चाहिये, यही बात "सेसं तं चेव जाव दुगइया दु आगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' इस सूत्र द्वारा प्रकट की गई है—कि सस्थान द्वार से अतिरिक्त और सब अवगाहनादि द्वारगत यहां सूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरण के जैसे ही है । ये भी द्विगतिक और द्विआगतिक होते है । प्रत्येक शरीरी असंख्यात होते है । 'सेत्तं सुहुम आउक्काइया' इस प्राकर से सूक्ष्म अप्कायिक जीवो का यह कथन समाप्त हुआ ।

सूक्ष्म अप्कायिक जीवो का निरूपण करके अब बादर अप्कायिक जीवो का निरूपण सूत्र कार करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—'से किं तं बादरआउक्काइया' हे भदन्त ? बादर नामकर्मोदयवाले वे बादर अप्कायिक जीव कितने प्रकार के हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है—'बायर आउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता' हे गौतम ? बादर अप्का-

---

१८, समवहत १९, च्यवन २० गत्यागति २१ आ द्वारो संबंधी कथन सूक्ष्मपृथ्वीकायिको ना प्रकरणमां जे प्रमाणे कहेल छे, एज प्रमाणेनुं कथन आ अप्कायिक सूक्ष्म जीवोना संबंधमां पण समजी लेवुं एज वात—'सेसं त चेव जाव दुगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" आ सूत्र पाठद्वारा कहेल छे. के-संस्थान द्वारना कथन सिवाय बाकीना अवगाहना विगेरे तमाम द्वार संबंधी कथन अहियां सूक्ष्मपृथ्वीकायिकोना प्रकरणमां कह्या अनुसार ज छे, आ सूक्ष्म अप्कायिक जीवपण बे गतिमांथी आववा वाळा होय छे प्रत्येक शरीरी असंख्यात होय छे. "से त्तं सुहुम आउक्काइया" आ प्रमाणे सूक्ष्म अप्कायिक जीवोनुं कथन छे.

सूक्ष्म अप्कायिक जीवोनुं निरूपण करीने हवे बादर अप्कायिक जीवोनुनिरूपण सूत्रकार करे छे-आमां गौतम स्वामीए प्रभुने एवुं पूछ्युं छे के—"से किं तं बादर आउक्काइया" हे भगवन् बादर नाम कर्मोदयवाळा ते बादर अप्कायिक जीवो केटला प्रकारना छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभु कहे छे के-"बायर आउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता" हे

अनेकविधाः–अनेकप्रकाराः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति। अनेकविधत्वमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादिना 'तं जहा' तद्यथा–**'ओसा हिमे जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** अवश्यायो हिमं यावद् येचान्ये तथाप्रकारास्ते समासतः–संक्षेपेण द्विविधाः–द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः–'तं जहा' तद्यथा—**'पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य'** पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। अत्र यावत्पदेन–**'महिया करगे हरतणु सुद्धोदए सीओदए खट्टोदए खारोदए अंबिलोदए लवणोदए वरुणोदए खीरोदए खोओदए रसोदए'** एतेषां संग्रहः कर्त्तव्यः, तत्र **'ओसा'** अवश्यायः **'हिमे'** हिमम्–(बरफ) इति लोक प्रसिद्धम्, **'महिया'** महिका पौषादि मेघगर्भमासेपु वाष्पवत्सूक्ष्मवर्षणम् **'करगे'** कटको घनोपलः (ओला) इति लोकप्रसिद्धः **'हरतणू'** हरतनुः यः खलु पृथिवीमुद्भिद्य शाल्याद्यङ्कुरतृणाग्रादिपु बद्धो विन्दु-

---

यिकजीव अनेक प्रकार के कहे गये है ? ॥ 'तं जहा' जैसे–**'ओसा हिमे जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** अवस्याय–ओस, हिम, यावत् इसी प्रकार के और भी जो है वे सब बादर अप्कायिकजीव हैं--ये बादर अप्कायिकजीव संक्षेप से दो प्रकार के हैं–'तं जहा'–जैसे **'पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय'** पर्याप्तक और अपर्याप्तक यहाँ 'ओसा-हिमे जाव' में जो यह यावत्पद आया है उससे **'महिया, करगे, हरतणू सुद्धोदए, सीओ-दए, खट्टोदए, खारोदए, अंबिलोदए, लवणोदए, खोरोदए, खोओदए, रसोदए'** इन सब अप्कायिको का संग्रह हुआ है, इनमें अवश्याय नाम ओसका है, हिमनाम बर्फ का है, मेघके पौषादि गर्भ मास में बाष्प–भाप के जैसी जो सूक्ष्मवर्षा होती है उसका नाम महिका (धूंअर) है ओले का नाम करक है जो पृथिवी को फोड़कर शाली आदि के अंकुर पर और तृणा-दिके अग्रभागपर जो विन्दु जैसा बंध जाता है उसका नाम हरतनु है, मेघ से वर्षा हुआ

ગૌતમ! બાદર અપ્કાયિક જીવો અનેક પ્રકારના કહેલા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે

"ओसा हिमे जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" અવશ્યાય—ઓસ, હિમ, યાવત્ એ પ્રમાણેના બીજા પણ જેઓ છે, તે બધા બાદર અપ્કાયિક જીવો છે. આ બાદર અપ્કાયિક જીવો સંક્ષેપથી બે પ્રકારના છે. "तं जहा', જેમકે **"पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय"** પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક અહિયાં **"ओसा हिमे जाव"** આ વાકયમાં જે આ યાવત્ પદ આવેલું છે. તેનાથી **"महिया, करगे, हरतणू, सुद्धोदए, सीओदए खट्टोदए, खारोदए, अंबिलोदए, लवणोदए, खीरोदए, खोओदए, रसोदए,"** આ તમામ અપ્કાયિકોનો સંગ્રહ થયો છે. તેમા અવશ્યાય એટલે ઓસ, હિમ એટલે બરફ થાય છે મેઘને પોષ વિગેરે ગર્ભમાસમાં બાષ્પ–બાફ વરાળના જેવો ધુમ્મલ જે સૂક્ષ્મ ઝીણો વર્ષાદ થાય છે ધુમ્મલા તેને મહિકા કહે છે, ઓલા–વર્ષાદ સાથે જે કરાઓ પડે છે તેને "કરકા કહે છે, શાલી વિગેરેના અકુંર, ઉપર અને તૃણ–ઘાસ વિગેરેના અગ્ર ભાગ પર જે પાણીના ટીંપા જેવું બની જાય

रिव उपजायते 'सुद्धोदए' शुद्धोदकं मेघविनिर्मुक्तं नद्यादि गतं वा। एतच्च रसस्पर्शादि भेदादनेकप्रकारकं भवति, तदेव अनेकभेदत्वं दर्शयति—'सीओदए' शीतोदकं यथा हिमालयादिपर्वतगतम्। 'खट्टोदए' खट्टोदकम् स्वभावत एव ईषदम्लोदकं यथा धात्रीफलादिगत जलम् 'खारोदए' क्षारोदकम् ईषल्लवणपरिणामं यथा क्वचित् कूपादौ 'अंबिलोदए' अम्लोदकम्। स्वभावत एव अतीवाम्लपरिणामम्—यथा जम्बीरादि जलम्। 'लवणोदए' लवणोदकं यथा लवणसमुद्रे। 'वरुणोदए' वरुणोदकम्—वारुणोदधि जलम् 'खीरोदए' क्षीरोदकं यथा क्षीरसमुद्रे 'खोओदए' क्षोदोदकमिक्षुरससमुद्रे। 'रसोदए' रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादिषु, ये चान्ये तथाप्रकाराः रसस्पर्शादिभेदात् घृतोदकादयो बादराप्कायिका स्ते सर्वेऽपि बादराप्कायिकतया ज्ञातव्याः ते च संक्षेपतो द्विप्रकारकाः पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च भवन्तीति ज्ञातव्यम्। 'तं चेव सव्वं' तदेव सर्वम्। बादराप्कायिकजीवानां खलु भदन्त! कति शरीराणीत्यादि

अथवा तालाव आदि में रहा हुआ जो जल है वह शुद्धोदक है, यह रस और स्पर्श आदि के भेद से अनेक प्रकार का होता है, जैसे—शीतोदक—हिमालय आदि पर्वत का जल, खट्टोदक—खट्टाजल—स्वभावतः कुछ—कुछ अम्लरस वाला जल जैसे आँवले आदि का रस रूप जल, खारोदक—खारापानी खारे कुआ आदि का जल, अम्लोदक स्वभावतः अतीव अम्लपरिणामवाला जल जैसे—जम्बीर आदिका रस रूप जल, लवणोदक—लवण समुद्र के जैसा खाराजल, वरुणोदक वारुणसमुद्रकाजल, क्षीरोदक—क्षीर समुद्र का जल, क्षोदोदक इक्षुरससमुद्र का जल, रसोदक—पुष्करवर समुद्र आदि का जल ये सब जल तथा इसी प्रकार के जो और भी रसस्पर्श आदि के भेद से घृतोदक आदि जल है वे सब बादर अप्कायिक हैं। ये बादर अप्कायिक भी सक्षेप से पर्याप्तक और अपर्याप्तक के भेद से दो प्रकार के कहे गये हैं। 'तं चेव सव्वं' इनका सब कथन बादरपृथिवीकायिक के जैसा ही जानना चाहिये—अर्थात् 'बादर अप्कायिक जीवों के कितने शरीर होते हैं' इत्यादि शरीर

છે, તેને હરતનુ કહે છે. મેઘમાંથી પડેલ વર્ષાદ અથવા તલાવ નદી વિગેરેમાં રહેલા પાણીને 'શુધ્ધોદક' કહે છે. આ પાણી રસ અને સ્પર્શના ભેદથી અનેક પ્રકારનુ હોય છે, જેમકે—શીતોદક—હિમાલય વિગેરે પર્વતમાંથી નીકળતું પાણી, ઠંડુ પાણી, ખટ્ટોદક-ખાટું પાણી-સ્વભાવથી જ કંઈક કંઈક ખટાશ રસ મિશ્રિત પાણી, જેમકે આંમળા વિગેરેના રસરૂપ પાણી ખારોદક—ખારૂં પાણી, ખારા કુવા વિગેરેનું પાણી, અમ્લોદક—સ્વભાવથી અત્યંત અમ્લ-ખટાશ વાળું પાણી. જેમકે-જંબીર લીંબૂ વિગેરેનાં રસરૂપ પાણી લવણોદક-લવણસમુદ્રના જેવું ખારૂં પાણી, વરૂણોદક વારૂણ સમુદ્રનું પાણી, ખીરોદક-ક્ષીરસમુદ્રના જેવું પાણી, ક્ષોદોદક-ઈક્ષુ (શેલડી) રસના જેવું મીઠું પાણી, રસોદક-પુષ્કર સમુદ્ર વિગેરેનું પાણી, આ બધા પ્રકારનું પાણી તથા આવા પ્રકારનું બીજું જે ઘૃતોદક વિગેરે પ્રકારનુ પાણી છે. તે બધુ બાદર અપ્કાયિક કહેવાય છે. આ બાદર અપ્કાયિક પણ સંક્ષેપથી પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તકના ભેદથી બે પ્રકારનું કહેલ છે "तं चेव सव्वं" આ સંબંધી સઘળું કથન બાદર પૃથ્વીકાયિકના સંબંધમાં જે કથન પહેલાં કર્યું છે, એ જ પ્રમાણે સમજવું. અર્થાત્ "બાદર અપ્કાયિક જીવોને કેટલા શરીર

शरीरादिद्वाराणां प्रस्तावे बादरपृथिवीकायिकानां यथा शरीरद्वारादारभ्य गत्यागतिद्वारपर्यन्त कथितं तथैव सर्वं द्वारजातमिहापि बादराप्कायिकेऽपि वक्तव्यम्, तथाहि–शरीराणि कतीति प्रश्नस्य त्रीणि औदारिकतैजसकार्मणानि, इत्युत्तरम्, ।

एवमवगाहनादिकमपि तथैव वक्तव्यमिति पूर्वापेक्षया यद्वैलक्षण्यं तद्दर्शयति–'**नवरं**' इत्यादि, नवरम्-केवलम्–संस्थानलेश्या–ऽऽहारो–पपातस्थितिषु वैलक्षण्यं वर्तते, तदेव दर्शयति– '**थिवुगसंठिया**' इत्यादि, '**थिवुगसंठिया**' स्तिवुकसंस्थानसंस्थितानि बादराप्कायिकानां शरीराणि, तत्र बादरपृथिवीकायिकानां मसूरचन्द्रसंस्थानम् इह तु स्तिवुकसंस्थानम् । '**चत्तारि लेस्साओ**' चतस्रः–कृष्णनीलकापोततैजसाख्या लेश्या भवन्ति बादराप्कायिकानामिति । आहारो नियमात् षड्दिशि षड्दिग्भ्य आगतान् पुद्गलान् आहरन्ति लोकमध्ये एव बादराप्का-

---

द्वारों के प्रस्ताव मे बादर पृथिवीकायिको के जैसा–जैसा शरीरद्वार से लेकर गत्यागति द्वार तक कहा गया है वैसा २ सब द्वारों का कथन बादर अप्कायिको के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये । जैसे शरीर इनके कितने होते हैं ? तो इस प्रश्न के उत्तर में ऐसा कहना चाहिये कि इनके औदारिक तैजस कार्मण ये तीन शरीर होते है । इसी प्रकार से अवगाहना आदि के सम्बन्ध में भी कथन कहा गया जानना चाहिये । परन्तु इन बादर अप्कायिको के कथन में जो भिन्नता है वह "**नवरं**" इस शब्द द्वारा दिखलाई जाती है अर्थात् बादर पृथिवीकायिकों की अपेक्षा इनमें संस्थान लेश्या आहार उपपात और स्थिति, इन द्वारो में भिन्नता है वही दिखलाया जाता है–"**ठिवुगसंठिया**" इनके शरीर का संस्थान पानी के बुल बुला के जैसा है । "**चत्तारि लेस्साओ**" इनके कृष्ण, नील कापोत और तैजस ये चार लेश्याएँ होती है "**आहारो नियमा छद्दिसिं**"

હોય છે ?" ઈત્યાદિ શરીર દ્વારના કથનમાં બાદર પૃથ્વીકાયિકોના કથન પ્રમાણે શરીર દ્વારથી લઈને ગત્યાગતિ દ્વાર સુધી કહેલ છે, એજ પ્રમાણે બીજા બધા જ દ્વારોનું કથન અપ કાયિકોના સંબંધમાં પણ સમજવુ જેમકે—બાદર અપ્કાયિકજીવોના શરીર કેટલા પ્રકારના છે ? તો આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા એવું કહેવું જોઈએ કે—તેને ઔદારિક તૈજસ, અને કાર્મણ એ રીતે ત્રણ પ્રકારના શરીરો હોય છે. એજ પ્રમાણે અવગાહના વિગેરેના સંબંધમાં પણ બાદર પૃથ્વીકાયિકના સંબંધમા કહ્યા પ્રમાણે બાદર અપ્કાયિકોનું કથન પણ સમજવું પરંતુ આ બાદર અપ્કાયિકોના કથનમાં જે જુદા પણું છે, તે "**નવર**" આ શબ્દ દ્વારા કહેવામાં આવેલ છે અર્થાત્ બાદર પૃથ્વિકાયિકો કરતાં આ બાદર અપ્કાયિકોમાં સંસ્થાન, લેશ્યા આહાર, ઉપપાત (ઉત્પત્તી) અને સ્થિતિ આ પાંચ દ્વારોના કથનમાં વિશેષ પણું છે, તે જ કહેવામા આવે છે—"**ઠિવુગસંઠિયા**" બાદર અપ્કાયિકોના શરીરનું સંસ્થાન પાણીના બુદ્ બુદ્ એટલે કે પરપોટા જેવુ છે, "**चत्तारी लेस्साओ**" બાદર અપ્કાયિક જીવોને કૃષ્ણ નીલ, કાપોત, અને તૈજસ આ ચાર લેશ્યાઓ હોય છે, "**आहारो नियमा छद्दिसिं**"

यिकानां स्थितेः । 'उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेहिंतो' उपपातः तिर्यग्योनिक मनुष्यदेवेभ्यः, त्रिगतिभ्य एतस्यागमन भवतीति । ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त-वाससहस्साइं' स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण सप्तवर्षसहस्राणि । 'सेसं तं चेव जहा बायरपुढवीकाइया' शेषम्–सस्थानलेश्याऽऽहारोपपातस्थितिव्यतिरिक्तं तदेव–यथा बादर-पृथिवीकायिकानां तथैव सर्वं ज्ञातव्यम् कियत्पर्यन्तम्, तत्राह–जाव दुगइया तिआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' यावद् द्विगतिका त्र्यागतिका' पगीता असख्येयाः प्रज्ञप्ताः, बादराप्का-

---

इनका आहार नियम से छ दिशाओं से आगत पुद्गलद्रव्यों का होता है । क्योंकि इनका सद्भाव लोक के मध्यमें ही कहा गया है । उववाओ तिरिक्खजोणियमणु-स्सदेवेहिंतों" इनका उत्पाद तिर्यग्गतिमनुष्यगति एवं देवगति इन तीन गतियो से होता है । अर्थात् इस तीन गतियो के जीव बादर अप्कायिक रूप से उत्पन्न होते हैं । "ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साई" इनकी जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त की होती है और उत्कृष्टस्थिति सात हजार वर्ष की होती है । इससे अति-रिक्त और सब कथन बादर पृथिवीकायिको के ही जैसा है । यही बात—"सेसं तं चेव जहा बायरपुढवीकाइया" इस सूत्र द्वारा प्रकट की गई है । इस प्रकार बादर पृथि-वीकायिकजीवो के कथन से इन बादर अप्कायिकजीवों के कथन में सस्थान लेश्या आहार उपपात और स्थिति को लेकर अन्तर है । बाकी के कथन में अन्तर नहीं हैं । ओर सब कथन बादर पृथिवीकायिको के जैसा ही है । कहां तक सो कहते है "जाव दुगइया ति आगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" यावत् ये बादर अप्कायिक जीव द्विगतिक और त्र्यागतिक होते हैं । ये प्रत्येक शरीरी असख्यात है । बादर अप्कायिक

તેમનો આહાર નિયમથી છ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્દલ દ્રવ્યોનો હોય છે કેમકે—તેમનો સદ્ભાવ-વિદ્યમાન પણું લોકની મધ્યમા જ કહેલ છે "उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्स देवेहिंतो" તેમનો ઉત્પાદ (ઉત્પત્તી,) તીર્યંચ ગતિ, મનુષ્યગતિ અને દેવગતિ આ ત્રણ ગતિ-યોમાંથી થાય છે અર્થાત્ આ ત્રણુગતિયો વાળા જીવો બાદર અપ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइं' તેઓની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ સાતહજાર વર્ષની હોય છે, આ કથન સિવાયનુ બાકીનુ બીજુ સઘળું કથન બાદર પૃથ્વીકાયિકોના કથન પ્રમાણે જ છે. એ જ વાત "सेसं तं चेव जहा बायरपुढवीकाइया" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. આ રીતે બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોના કથનથી આ બાદર અપ્કાયિક જીવોના કથનમાં સંસ્થાન, લેશ્યા, આહાર, ઉપપાત અને સ્થિતિના સબંધમાં ફેરફાર છે, બાકીના દ્વારોના કથનમાં કંઈ જ ફેરફાર નથી એટલે કે બાકીનુ સઘળુ કથન બાદર પૃથ્વીકાયિકોના કથન પ્રમાણે જ છે. કયા સુધિનુ કથન બાદર પૃથ્વીકાયિકોની બરાબર છે ? એ બાબતમાં સૂત્રકાર કહે છે કે—

यिकत उद्वृत्यतिर्यङ्मनुष्येष्वेव उत्पद्यन्ते अतो हि द्विगतिकाः तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य आगत्यात्रोत्पद्यन्तेऽतस्त्र्यागतिकाः प्रत्येकशरीरिणोऽसख्यातार्श्चैते प्रज्ञप्ताः 'समणाउसो' हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! 'सेत्तं बायर आउक्काइया' ते एते बादराप्कायिका कथिताः 'सेत्तं आउक्काइया' ते एते अप्कायिकाः ॥सू० १३॥

उक्ता अप्कायिकाः सम्प्रति वनस्पतिकायिकान् अभिधातुं प्रश्नयन्नाह 'से किं तं वणस्सइक्काइया' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं वणस्सइकाइया, वणस्सइक्काइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सुहुमवणस्सइक्काइया य, बायरवणस्सइक्काइया य । से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया सुहुमवणस्सइक्काइया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-पज्जत्तगा य-अपज्जत्तगा य, तहेव, नवरं अणित्थत्थसंठाणसंठिया, दुगइया दुआगइया अपरित्ता अणंता, अवसेसं जहा सुहुमपुढवीकाइयाणं, से तं सुहुमवणस्सइकाइया । से किं तं बायरवणस्सइकाइया ? बायरवणस्सइकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पत्तेयसरीरबायरवणस्सकाइया य साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया य । से किं तं पत्तेयसरीरबायर-

---

से मरकर जीव तिर्यञ्च और मनुष्यो में ही उत्पन्न होता है । इसलिये इन्हें द्विगतिक कहा गया है । तथा—तिर्यञ्च, मनुष्य और देव इन तीन से आकरके जीव इनमें उत्पन्न होता है अतः ये त्र्यागतिक कहे गये है । इस प्रकार हे-श्रमण ! आयुष्मन् ! यह बादर अप्कायिको के सम्बन्ध में कथन है । इस कथन से "से त्तं आउक्काइया" अप्कायिकजीवो के सम्बन्धका कथन समाप्त हो जाता है । ॥सूत्र १३॥

"जाव दुगइया ति आगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" યાવત્ આ બાદર અપ્કાયિક જીવ દ્વિગતિક—બે ગતિવાળા એટલે કે બે ગતિમાં જવાવાળા અને 'त्र्यागतिक' ત્રણ ગતિમાંથી આવવાવાળા હોય છે. આ પ્રત્યેક શરીરી અસંખ્યાત છે, બાદર અપ્કાયિક પણામાંથી મરીને જીવ તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાંજ ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેમને 'દ્વિગતિક' બે ગતિવાળા કહેલા છે તથા તિર્યંચ, મનુષ્ય, અને દેવ આ ત્રણ ગતિમાંથી આવીને જીવ બાદર અપ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેઓને "ત્ર્યાગતિક" ત્રણ ગતિથી આવવા વાળા કહેલા છે આ રીતે હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ! આ બાદર અપ્કાયિકોના સંબંધમાં કથન કર્યું છે. "सें त्तं आउक्काइया" આ પ્રમાણેના આ બાદર અપ્કાયિકોના સંબંધનું કથન જાણવું. ॥સૂ૦ ૧૩॥

वणस्सइकाइया ? पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा—रुक्खा गुच्छा गुम्मा लता य वल्ली य, पव्वगा चेव।

तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणा य बोद्धव्वा ॥१॥ से किं तं रुक्खा-रुक्खा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-एगट्ठिया य बहु-बीया य। से किं तं एगट्ठिया ? एगट्ठिया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा—निंबंब जंबु जाव पुण्णागणागरुक्खसीवण्णि तहा असोगे य। जे यावन्ने तहप्पगारा, एतेसि णं मूलावि असंखेज्जजीवया, एवं कंदा खंधा तया साला पवाला पत्ता पत्तेय जीवा, पुप्फाइं अणेगजीवाइं, फला एगट्ठिया, सेत्तं एगट्ठिया। से किं तं बहुबीया, बहुबीया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा अत्थियतेंदुयउंबरकविट्ठे आमलकफणसदाडिमणग्गोहकाउंबरी-तिलयलउयलोद्धे धवे, जे यावन्ने तहप्पगारा एतेसि णं मूलावि असंखेज्जजीवया जाव फला बहुबीयगा सेत्तं बहुबीयगा, सेत्तं रुक्खा। एवं जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वं। जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं कुहणा,

"नाणाविहसंठाणा, रुक्खाणं एगजीवया पत्ता।
खंधो वि एगजीवो, तालसरलनालीएरीणं" ॥१॥
जह सगलसरिसवाणं पत्तेयसरीरगाणं० गाहा ॥२॥
"जहवा तिलसक्कलिय"० गाहा ॥३॥
से तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया" ॥सू० १४॥

छाया—अथ के ते वनस्पतिकायिकाः ? वनस्पतिकायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः-तद्यथा सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाश्च बादरवनस्पतिकायिकाश्च। अथ के ते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः ? सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः द्विविधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च तथैव। नवरमनित्थंस्थसंस्थानसंस्थिताः, द्विगतिकाः द्व्यागतिकाः अपरीताः अनन्ताः, अवशेषं यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकानाम् ते एते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः॥

अथ के ते बादरवनस्पतिकायिकाः ? बादरवनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाश्च साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाश्च । अथ के ते प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः ? प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः द्वादशविधाः प्रज्ञप्ता· तद्यथा—

वृक्षा गुच्छा गुल्मा लताश्च वल्लयश्च, पर्वगाश्चैव । तृणवलयहरितौषधिजलरुहकुहणाश्च बोद्धव्याः ॥ अथ के ते वृक्षाः ? वृक्षाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-एकास्थिकाश्च बहुबीजाश्च । अथ के ते एकास्थिकाः, एकास्थिका अनेका अनेकविधा प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-निम्बाम्रजम्बु यावत् पुन्नागनागवृक्षाः श्रीपर्णी तथाऽशोकश्च, ये चान्ये तथाप्रकाराः एतेषां मूलान्यपि असंख्येयजीवकानि, एवं कन्दाः स्कन्धाः त्वच शालाः प्रवालाः पत्राणि प्रत्येकजीवाः, पुष्पाण्यनेकजीवानि, फलानि एकास्थिकानि, ते एते एकास्थिकाः । अथ के ते बहुबीजाः, बहुबीजा अनेकविधाः प्रज्ञप्ता· तद्यथा-आस्थिकतेन्दुक-उदुम्बरकपित्थामलकफनसदाडिमन्यग्रोधकाकोदुम्बरीतिलकलकुच लोध्रा धव, ये चान्ये तथाप्रकाराः, एतेषां खलु मूलान्यपि असंख्येयजीवकानि यावत् फलानि बहुबीजकानि, ते एते बहुबीजकाः ते एते वृक्षाः । एवं यथा प्रज्ञापनायां तथा भणितव्यम्, यावत् ये चान्ये तथाप्रकाराः । ते एते कुहणा नानाविधसंस्थाना वृक्षाणामेकजीवकानि पत्राणि । स्कन्धोऽपि एकजीव स्ताल सरलनारिकेलानाम् ॥१॥ यथा सकलसर्षपाणां प्रत्येकशरीरकाणां गाथा ॥२॥ यथा वा तिलशष्कुलिका० गाथा ॥३॥ ते एते प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका ॥ सू० १४ ॥

टीका—'से किं तं वणस्सइकाइया' अथ के ते वनस्पतिकायिकाः, वनस्पतिः—हरितकायः—तृणवृक्षगुच्छगुल्मलतादिः स एव कायः—शरीरं येषां ते वनस्पतिकाया स्ते एव वनस्पतिकायिका स्ते कीदृशाः कियद्भेदप्रभेदवन्तः ? इति प्रश्नः उत्तरमाह—'वणस्सइकाइया दुविहा'

अप्कायिकों का कथन कर अब सूत्रकार वनस्पतिकायिकों का कथन करते हैं—'से किं तं वणस्सइकाइया' इत्यादि । ॥सूत्र-१४॥

टीकार्थ---हरितकाय तृण, वृक्ष, गुच्छ, गुल्म, लता आदि का नाम वनस्पति है। यह वनस्पति ही जिन जीवों का शरीर होता है वे वनस्पतिकाय है। ये वनस्पतिकाय ही वनस्पतिकायिक हैं। ये वनस्पतिकायजीव कितने भेद प्रभेद वाले होते है ? ऐसा यह प्रश्न है।

અપ્કાયિકોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર વનસ્પતિકાયિકોનું કથન કરે છે-"से किं तं वणस्सइकाइया" ઈત્યાદિ.

ટીકાર્થ---હરિતકાય તૃણ, વૃક્ષ, ગુચ્છ, ગુલ્મ, લતા, વિગેરેનું નામ વનસ્પતિ છે. આ વનસ્પતીજ જે જીવો ના શરીર રૂપે હોય છે, તેનુ નામ વનસ્પતિકાય છે. આ વનસ્પતિકાય જ વનસ્પતિકાયિક કહેવાય છે. આ વનસ્પતિકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના ભેદ-પ્રભેદ વાળા હોય છે ? આ પ્રમાણેનો પ્રશ્ન ગૌતમ સ્વામીએ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુને પૂછવાથી તેના

पन्नत्ता' वनस्पतिकायिकजीवा द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ता—कथिता इति । द्वैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'सुहुमवणस्सइकाइया य बायरवणस्सइकाइया य' सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाश्च बादरवनस्पतिकायिकाश्च, सूक्ष्मत्वं सूक्ष्मनामकर्मोदयात् बादरत्वं बादरनामकर्मोदयात् न तु सूक्ष्मत्वमल्पत्व बादरत्वं च स्थूलत्वं बादरकपित्थयोरिवेति । 'से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया' अथ के ते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः, इति प्रश्नः, उत्तरयति—'सुहुमवणस्सइ काइया दुविहा पन्नत्ता' सूक्ष्मवनस्पतिकायिका' द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, 'तं जहा' तद्यथा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च 'तहेव' तथैव—अन्य-

---

इसके उत्तर में प्रभु कहते है—"वणस्सइकाइया दुविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! वनस्पतिकायिक-जीव दो प्रकार के कहे गये है—"तंजहा" जैसे "सुहुमवणस्सइकाइया य, बायरवणस्सइकाइया य" सूक्ष्मवनस्पतिकायिक और बादरवनस्पतिकायिक जिन वनस्पतिकायिक जीवों के सूक्ष्म नामकर्म का उदय होता है वे सूक्ष्मवनस्पतिकायिक है और जिनवनस्पतिकायिको के बादर नामकर्म का उदय होता है वे बादर वनस्पतिकायिक हैं। यह सूक्ष्मता अल्पत्व, और बादरता स्थूलता बदर और कपित्थ के जैसा सापेक्ष नहीं है। किन्तु सूक्ष्मत्व और बादरत्व नाम कर्म के अधीन है ।

'से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया" हे भदन्त ! सूक्ष्मवनस्पतिकायिकजीवों के कितने भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है—"सुहुमवणस्सइकाइया दुविहा पन्नत्ता" सूक्ष्मवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं। "तं जहा" जैसे-"पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य" पर्याप्तक और अपर्याप्तक "तहेव" इस सम्बन्ध मे शरीर आदि द्वारों का कथन सूक्ष्म पृथिवीकायिक के प्रकरण के जैसा ही जानना चाहिये । सूक्ष्म पृथिवीका-

---

ઉત્તરમા ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ કહે છે--वणस्सइकाइया, 'दुविहा पण्णत्ता'— હે ગૌતમ વનસ્પતિકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલા છે 'तं जहा તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે સમજવા—"सुहुमवणस्सइया य, बायरवणस्सइकाइया य" સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક અને બાદરવનસ્પતિકાયિક જે વનસ્પતિ કાયિક જીવોને સૂક્ષ્મ નામ કર્મનો ઉદય હોય છે. તેઓ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક કહેવાય છે અને જે વનસ્પતિકાયિક જીવોને બાદર નામ કર્મનો ઉદય થાય છે, તેઓ બાદર વનસ્પતિકાયિક કહેવાય છે આ સૂક્ષ્મપણુ, અલ્પપણુ અને બાદરપણુ-સ્થૂલપણુ બોર અને કપિત્થ-કોઠાની જેમ અપેક્ષા વાળુ હોતુ નથી પરંતુ સૂક્ષ્મત્વ અને બાદરત્વ નામકર્મને આધીન છે

"से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया" હે ભગવન્ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવોના કેટલા પ્રકારના ભેદો કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-सुहुमवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता' સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવ બે પ્રકારના કહેલા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે-"पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य" પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક"तहेव" આ સૂક્ષ્મવનસ્પતિક જીવના

त्सर्वं शरीरादिच्यवनपर्यन्तद्वारजातं तथैव–सूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरणवदेव बोध्यम्, केवलं सूक्ष्मपृथिवीकायिकापेक्षया सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां संस्थाने यद्वैलक्षण्यं तत्स्वयमेव दर्शयति सूत्रकारः–'**णवरं अणित्थत्थसंठाणसंठिया**' नवर केवलम् एषां शरीराणि अनित्थंस्थसंस्थानसंस्थितानि, इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं न इत्थंस्थमिति अनित्थंस्थम्, अनियताकारमित्यर्थः, तच्च-संस्थानमिति अनित्थंस्थसंस्थानं तेन युक्तानि–इति अनित्थंस्थसंस्थानसंस्थितानि तेषां शरीराणीति। संस्थानातिरिक्तं सर्वं द्वारजातं सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यमिति। '**दुगइया दुआगइया अपरित्ता अणंता**' द्विगतिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकतः उद्वृत्य तिर्यङ्मनुष्यगतौ एव गमनाद् द्विगतिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः, द्व्यागतिकाः–द्वाभ्यां तिर्यङ्मनुष्याभ्यामागतिः—आगमनं येषां ते द्व्यागतिकाः, तिर्यङ्मनुष्याभ्यामेवात्र सूक्ष्मवनस्पतिकायिकेष्वागमना-

---

यिक जीवो की अपेक्षा इनके संस्थान में केवल यही विशेषता है कि इनके शरीर का संस्थान अनित्थंस्थ होता है। अर्थात् इनके शरीर का नियत संस्थान नहीं होता है अनियत आकारवाले इनके शरीर होते है। क्योंकि जिसमें यह ऐसे ही आकार वाला है इस प्रकार नियत आकार वत्ता की प्रतीति होती है वह इत्थंस्थ संस्थान है। इससे विपरीत अनित्थंस्थ संस्थान है। इस संस्थान वाले सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवो के शरीर होते हैं। संस्थान के अतिरिक्त बाकी के सब द्वारों का कथन सूक्ष्मपृथिवीकायिक के प्रकरण में जैसा किया है वैसा ही है। "**दुगइया दुआगइया अपरित्ता अणंता**" सूक्ष्मवनस्पतिकायिक से मरकर जीव तिर्यञ्च और मनुष्य इन दो में ही उत्पन्न होते हैं। अतः ये द्विगतिक है। तथा इन सूक्ष्मवनस्पति कायिकों में तिर्यञ्च और मनुष्य गति से ही आये हुए जीवो का उत्पाद होता है अतः ये

સંબંધમા શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક જીવના સંબંધમાં કહ્યા પ્રમાણે જ સમજી લેવું સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાય વાળા જીવો કરતાં આ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયના સંસ્થાનદ્વારમાં કેવળ એજ વિશેષતા છે કે–આ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવોનું સંસ્થાન 'અનિત્થંસ્થ' હોય છે. અર્થાત્ આ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિ કાયિકોનું સંસ્થાન કોઈ નિયત-નિશ્ચિત હોતું નથી અનિયત આકાર વાળા તેમના શરીરો હોય છે. કેમકે જેમાં તે પ્રવેશે તેવા જ આકારવાળા તેઓ હોય છે આ પ્રકારે નિયત આકારની પ્રતીતિ –આવી થાય છે, તે 'ઇત્થંસ્થ' સંસ્થાન કહેવાય છે અને આનાથી ભિન્ન હોય તે 'અનિત્થંસ્થ સંસ્થાન હોય છે. સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોના શરીરો આ 'ઇત્થંસ્થ' સંસ્થાન વાળા હોય છે

સંસ્થાન દ્વારના કથન સિવાય બાકીના સઘળા દ્વારોનુ કથન સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકના સંબંધમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે. એજ પ્રમાણે છે. "**दुगइया दुआगइया अपरित्ता अणंता**" સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિક જીવ મરીને તિર્યંચ અને અને મનુષ્ય આ બે ગતિમાંજ ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તેઓને "**द्विगतिक**" બે ગતિમાં જવાવાળા કહ્યા છે તથા આ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોમાં તિર્યંચ અને મનુષ્ય ગતિમાંથી આવેલા જીવોનીજ ઉત્પત્તી થાય છે, તેથી તેઓ ને '**द्वयागतिक**'' બે ગતિમાંથી આવવા વાળા કહેલા છે. ',**अपरित्ता**'' આ સૂક્ષ્મ

दिति ॥ 'अपरित्ता' अप्रत्येकशरीरिणः अनन्तकायिका इत्यर्थः, अतएव 'अणंता' अनन्ताः प्रज्ञप्ताः हे श्रमण ! हे आयुष्मन् 'अवसेसं जहा पुढवीकाइयाणं' अवशेषं यथा पृथिवीकायिकानाम्, अवशेषम्--'नवरं' इत्यादिना यत् कथितं तदतिरिक्तं शरीरादिद्वारजातं तत् सर्वं यथा पृथिवीकायिकानां कथितं तथैव सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामपि । 'से त्तं सुहुमवणस्सइ-काइया' ते एते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः भेदैर्द्वारादिभिश्च निरूपिता इति ॥

'से किं तं बायरवणस्सइकाइया' अथ के ते बादरवनस्पतिकायिकाः बादरवनस्पतिकायिका किं रूपकाः कियद्भेदाश्चेति प्रश्नः, उत्तरयति 'बायरवणस्सइकाइया दुविहा पन्नत्ता' बादरवनस्पतिकायिकाः द्विविधाः–द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति । द्वैविध्यमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया य साधारणसरीरबायरवणस्सइ-

---

द्व्यागतिक–दो आगति वाले होते हैं "अपरित्ता' ये अप्रत्येक शरीरी है अतएव इन्हें अनन्त कहा गया है। हे श्रमण ! आयुष्मन् ! "अवसेसं जहा पुढवीकाइयाणं" जैसा सूक्ष्म-पृथिवीकायिक जीवो के सम्बन्ध में कहा गया है । वैसा ही बाकी के सब शरीरादि द्वारों का कथन इन सूक्ष्म वनस्पतिकायिको के सम्बन्ध में जानना चाहिये । 'संत्तं सुहुमवणस्सइ काइया" इस प्रकार से इन सूक्ष्म वनस्पतिकायिकों के भेदो को लेकर और द्वारो को लेकर कथन किया गया है ।

"से किं तं बायरवणस्सइकाइया" हे भदन्त ! बादरवनस्पतिकायिकों के कितने भेद होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"बायर वणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता" हे गौतम ! बादर वनस्पतिकायिक दो प्रकार के कहे गये हैं। "तं जहा" जैसे—"पत्तेय सरीरबायरवणस्सइकाइया य साहारणसरीरबायर वणस्सइकाइया य" प्रत्येक शरीर बादर

વનસ્પતિકાયિક જીવ –અપ્રત્યેક શરીરી હોય છે. પ્રત્યેક શરીરી હોતા નથી. અર્થાત્ આ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક જીવો અનંત કાયવાળા હોય છે તેથીજ તેઓને અનંત કહેલા છે હે શ્રમણ ! આયુષ્મન્ ! "अवसेसं जहा पुढवीकाइयाणं" સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિક જીવોના સંબંધમા જે પ્રમાણેનુ કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણે આ સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક જીવોના બાકીના શરીર વિગેરે સઘળા દ્વારોનુ કથન સમજવું. 'से त्तं सुहुमवणस्सइ-काइया" આ પ્રમાણે આ સૂક્ષ્મ વનસ્પતકાયિક જીવોના ભેદો સંબંધી અને દ્વારો સંબંધી કથન કર્યું છે.

"से किं तं बायरवणस्सइकाइया" ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ બાદર વનસ્પતિ કાયિકોના કેટલા ભેદો કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે–- 'बायरवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહેલા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે--पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया य साहारण-

काइया य। प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाश्च साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाश्च उभयत्रापि च--शब्दौ स्वगतानेकभेदबोधकौ, तत्र प्रत्येकशरीरास्ते येषां शरीरं विभिन्नम्, साधारणशरीराश्च ते येषामनेकेषामेकमेव शरीरं व्यवस्थितं भवेदिति। 'से किं तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया' अथ के ते प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका इति प्रश्नः, उत्तरयन्ति 'पत्तेयसरीरबायरवणस्सइ-काइया दुवालसविहा पन्नत्ता' प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः द्वादशविधाः–द्वादश-प्रकाराः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति, द्वादशभेदानेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—

रुक्खा गुच्छा गुम्मा, लता य वल्ली य पव्वगा चेव।
तणवलयहरियओसहि–जलरुहकुहणा य बोद्धव्वा ॥१॥

छाया—वृक्षा गुच्छा गुल्मानि लताश्च वल्लीयश्च पर्वकाश्चैव।
तृणवलयहरितोपधिजलरुहकुहणाश्च बोद्धव्याः ॥२॥

तत्र वृक्षा अन्तःसारवन्तः आम्रादयः, गुच्छाः–वृताकी प्रभृतयः गुल्मानि–नवमालिका प्रभृतीनि, लताः–चम्पकलतादयः, येषां स्कन्धप्रदेशे विवक्षितोर्ध्वशाखाव्यतिरेकेणान्यत् शाखान्तरं

वनस्पतिकायिक और साधारण शरीर बादर वनस्पतिकायिक। यहां सूत्र में जो दो चकारों का प्रयोग किया गया है वह स्वगत अनेक भेदो को प्रकट करने के लिये किया गया है। जिनके शरीर भिन्न २ होते हैं वे प्रत्येक शरीरी हैं। और जिनका एक ही शरीर होता है–अर्थात् अनेक जीवों का जो एक शरीर होता है ऐसे वे जीव साधारण शरीरी हैं। इनमें हे भदन्त! प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिक जीव कितने प्रकार के है? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया दुवालसविहा पन्नत्ता" हे गातम! प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिक बारह प्रकार के कहे गये हैं तं जहा" जैसे—

"रुक्खा गुच्छा, गुम्मा, लया य, इत्यादि। भीतर में जिनके सार होता है ऐसे

सरीरबायरवणस्सइकाइया य' प्रत्येक शरीर બાદર વનસ્પતિકાયિક અને સાધારણ શરીર બાદર વનસ્પતિકાયિક અહિંયાં સૂત્રમાં જે બે ચકારોનો પ્રયોગ કર્યો છે, તે તેઓના અનેક પ્રકારના ભેદો બતાવવા કરેલ છે. તેમ સમજવું જેઓના ભિન્ન ભિન્ન શરીરો હોય છે, તેઓ પ્રત્યેક શરીરી કહેવાય છે અને જેઓનું શરીર એકજ હોય છે—અર્થાત્ અનેક જીવોનુ જે એકજ શરીર હોય છે એવા તે જીવો સાધારણ શરીરી કહેવાય છે ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે—હે ભગવન્ આમાં પ્રત્યેક શરીરી બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવો કેટલા પ્રકારના કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે--'पत्तेयसरीरबायर-वणस्सइकाइया दुवालसविहा पन्नत्ता" હે ગૌતમ! પ્રત્યેક શરીર બાદર વનસ્પતિકાયિક ૧૨ બાર પ્રકારના કહ્યા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે સમજવા---"रुक्खा, गुच्छा, गुम्मा लया य," ઇત્યાદિ

જેની અંદર સાર રહેલ હોય એવા આંબા વિગેરેને 'વૃક્ષ' શબ્દથી ગ્રહણ કરેલ છે,

न निर्गच्छन्ति ता लता इति व्यवह्रियन्ते यथा चम्पकादयः, वल्ल्यः–कुष्माण्डप्रभृतयः, पर्वकाः—ईक्ष्वादयः, तृणानि–कुशकाशादीनि, वलयानि–कदल्यादीनि येषां त्वग् भवेत् लयाकारेण व्यवस्थितानि तानि वलयानि, हरितानि तन्दुलीयकवस्तुलप्रभृतीनि 'तांदलिया' बथुआ, इति लोकप्रसिद्धानि ओषधयः फलपाकान्ता. फलपाकेन ये शुष्यन्ति ते यथा–शालिगोधूमादयः, जले रुहन्तीति जलरुहा', उदकावकपनकादयः कमलजातीयाः प्रत्येकशरीरवनस्पतिविशेषाः न तु पनकेति नीलण-फूलणनाम्ना प्रसिद्धा वनस्पतिः, तस्याः साधारणशरीरवत्त्वात्, कुहणा भूमिस्फोटाभिधानाः

आम आदि वृक्ष शब्द से गृहीत हुए हैं। वृन्ताकी आदि जो वनस्पति है वे गुच्छ शब्दसे, नवमालिका आदि वनस्पति गुल्म शब्द से, चम्पकलता आदि वनस्पति लता शब्द से, जिनके स्कन्ध प्रदेश में विवक्षित उर्ध्वशाखा के सिवाय और शाखाएँ नहीं निकलती वे लताएँ हैं। कुष्माण्ड आदि वनस्पतियाँ वल्ली शब्दसे, ईक्षु आदि वनस्पति पर्वक शब्द से, कुश, काश आदि तृण शब्द से, कदली-केले आदि वनस्पति वलय शब्द से, जिनकी छाल वलय के आकार से व्यवस्थित होती है वे वलय है। तान्दलीया वथुआ की भाजी आदि वनस्पति हरित शब्द से, शालि गोधूम आदि ओषधि शब्द से, जलमें ऊगनेवाली वनस्पति जलरुह शब्द से और भूमि को फोड़कर जो स्वतः स्वभाव से उत्पन्न होने वाली वनस्पति है वे कुहण शब्द से ली गई है। इन में जलरुह का अर्थ उदक- अवक पनक किया गया है। ये सब कमल जाति के प्रत्येक शरीर वनस्पति विशेष है। पनक से जो नीलण फूलण ली जाती है वह अर्थ यहां नहीं लिया जायगा क्योंकि नीलण फूलण साधारण शरीर वनस्पति है वह प्रत्येक शरीर वनस्पति नहीं है। कुहणा का अर्थ भूमि-

---

વંતાકી-રીંગણી વિગેરે જે વનસ્પતિ છે તે 'ગુચ્છા' શબ્દથી ચંપકલતા વિગેરે વનસ્પતિ 'લતા' શબ્દથી જેના સ્કંધ પ્રદેશમાં એક ઉર્ધ્વ શાખા સિવાય બીજી શાખાઓ નીકળતી નથી તે લતાઓ કહેવાય છે 'કૂષ્માંડ (કોળું) વિગેરે વનસ્પતિયો વલ્લી શબ્દથી, ઇક્ષુ, (શેલડી) વિગેરે વનસ્પતિયો 'પર્વક શબ્દથી કુશ, કાશ વિગેરે વનસ્પતિ તૃણ શબ્દથી 'કદલી કેળ વિગેરે વનસ્પતિયો 'વલય' શબ્દથી જેની છાલ વલયના આકારથી વ્યવસ્થિત હોય છે તે 'વલય' કહેવાય છે. તાંદલીયા 'બથુવા' ની ભાજી વિગેરે વનસ્પતિ 'હરિત શબ્દથી શાલી (ડાંગર) ગોધૂમ (ઘહુ) વિગેરે 'ઓષધિ' શબ્દથી પાણીમાં ઉગવાવાળી વનસ્પતિ 'જલરૂહ' શબ્દથી અને જમીનને ફોડીને જે પોતાની મેળે જ ઉત્પન્ન થવાવાળી વનસ્પતિ છે, તે 'કુહણ' શબ્દથી ગ્રહણ કરેલ છે આમાં જલરૂહ' નો અર્થ-ઉદક, અવક અને પનક એ પ્રમાણે કરેલ છે, આ બધી કમલ જાતની પ્રત્યેક શરીરી વનસ્પતિ વિશેષ છે

પનક શબ્દથી જે 'નીલણ' ફૂલણ, લેવાય છે, તે અર્થ અહિયાં લેવામાં આવતો નથી કેમકે---નીલણ, ફૂલણ, સાધારણ શરીર વનસ્પતિ છે. તે પ્રત્યેક શરીર વનસ્પતિ નથી.

आयकायप्रभृतयः, न तु भूमिस्फोटशब्देन छत्राकम् (साँप का छत्र) गृह्यते तस्य साधारण-शरीरवत्वात् । **'से किं तं रुक्खा'** अथ के ते वृक्षाः केषामभिधानं वृक्ष इति कियद्भेदाश्च वृक्षा भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति–**'रुक्खा दुविहा पन्नत्ता'** वृक्षा द्विविधाः–द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः । भेदद्वयमेव दर्शयति–**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा–**'एगट्ठिया य बहुबीया य'** एकस्थिकाश्च बहुबीजाश्च, तत्र यस्य फलस्याभ्यन्तरे एकमेव बीजं भवेत् तस्यैकास्थिकं इति नाम भवति यथा निम्बादिः, यस्य च फलस्याभ्यन्तरे अनेकानि बीजानि भवन्ति तस्य बहुबीजक इति नाम भवति यथा–अस्थिकतिन्दुकप्रभृतयः–**'से किं तं एगट्ठिया'** अथ के ते एकास्थिकाः, उत्तरयति–**'एगट्ठिया अणेगविहा पन्नत्ता'** एकास्थिका वृक्षाः अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः अनेकविधभेदानेव दर्शयति–**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा–**निंबंबजंबु जाव पुण्णागरुक्खा, सीवण्णी तहा असोगे य ॥१॥**

स्फोट किया है अर्थात् भूमि को फोड़कर निकलनेवाला जो साप का छत्र कहलाता है वह अर्थ यहां नहीं लिया जायगा क्योंकि वह भी साधारण शरीर वनस्पति है। यह तो प्रत्येक शरीर वनस्पतिकाय है जो आयकाय आदि नाम से कहलाता है । **"रुक्खा "दुविहा पन्नत्ता"** वृक्ष दो प्रकार के कहे गये है–**"तं जहा"** जैसे–**"एगट्ठिया य बहुबीया य"** जिनके फल के भीतर केवल एक बीज होता है ऐसे फलवाले वृक्ष एकास्थिक है-जैसे–नीमका वृक्ष आदि तथा जिनके फलो के भीतर अनेक बीज होते है ऐसे फल वाले वृक्ष बहुबीज है–जैसे–**अस्थिक** तिन्दुक आदिके वृक्ष **"से किं तं एगट्ठिया"** हे भदन्त ! एकास्थिक वृक्ष कितने प्रकार के होते है ? उत्तर में प्रभु कहते है—**"एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता"** हे गौतम ! एकास्थिक वृक्ष अनेक प्रकार के होते हैं **"तं जहा,,** जैसे **'निंबंब जंबु जाव पुण्णागनागरुक्खा सीवण्णी तहा असोगे य"** नीमका वृक्ष, आमका

'ईडण' ने। अर्थ भूमिस्फोटन ओ प्रमाणे कर्यो छे. अर्थात् जमीनने फोडीनेनीकळवा वाळी वनस्पति के जे सापनुं छत्र ओ प्रमाणे कहेवाय छे, ते अर्थ अहियां लेवामां आवतो नथी केमके ते पण साधारण शरीर वनस्पति छे आ तो प्रत्येक शरीर वनस्पतिकायनुं कथन चाले छे. 'आयकाय' ओ नामथी कहेवाय छे

"रुक्खा दुविहा पन्नत्ता" वृक्षो बे प्रकारना कह्या छे **"तं जहा"** ते आ प्रमाणे समजवा–**"एगट्ठिया य बहुबीया य"** जेना फलनी अंदर केवळ ओकज बी होय तेवा फळवाळा वृक्षो ओकस्थिक छे. जेमके-लीमडाना वृक्षो विगेरे. तथा जेना फलोनी अंदर अनेक बी होय तेवा फळवाळा वृक्षोने बहु बीजक–बहु बीवाळा कहे छे जेवी रीते अस्थिक, तेंदुक विगेरे वृक्ष विशेषो.

"से किं तं एगट्ठिया" हे भगवन् ओकस्थिक वृक्षो केटला प्रकारना होय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभु कहे छे के—**"एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता"** हे गौतम ! ओकस्थिक वृक्षो अनेक प्रकारना होय छे. **"तं जहा"** जेमके—**"निंबंबजंबू जाव पुण्णागनागरुक्खा सिवंणि**

निम्बाम्रजम्बु यावत् पुन्नागवृक्षाः, श्रीपर्णी तथा अशोकश्च ॥१॥

तत्र निम्बवृक्षः प्रसिद्धः, आम्रवृक्षोऽपि प्रसिद्ध एव, जम्बुवृक्षः प्रसिद्धः, यावत्पदेन कोशाम्रादायः प्रज्ञापनोक्ता ग्राह्याः, पुन्नागः–पुष्पवृक्षविशेषः, नागवृक्षोऽपि पुष्पवृक्षविशेष एव, **'सीवण्णी'** श्रीपर्णी अयं वृक्षः 'तहा' तथा–असोगे य' अशोकश्च वृक्षविशेषः प्रसिद्ध एव, तदुक्तं गाथात्रयं प्रज्ञापनोक्तम्—

"निंबंब-जंबु–कोसंब-साल-अंकुल्ल-पीलू-सेलू य ।
सल्लइ–मोयइ–मालुय–बउल–पलासे–करजे य ॥१॥
पुत्तजीवयऽरिट्ठे, विहेलए हरिडए य भिल्लाए ।
उंबे–वरिया–खीरिणि–बोधव्वे भायइ–पियाले ॥२॥
पूइयनिंबकरंजे सुण्हा तह सीसवा य असणे य ।
पुन्नाग–नागरुक्खा सीवण्णी तहा असोगे य" ॥३॥ इति

आसामर्थः प्रज्ञापनायामेव द्रष्टव्यः । **'जे यावन्ने तहप्पगारा'** ये चान्ये तथाप्रकाराः निम्बादिवृक्षसदृशा स्तेऽपि एकास्थिकवृक्षरूपतया प्रत्येतव्याः । **'एएसि णं मूला वि असंखेज्ज जीवया'**, एतेषां निम्बादिवृक्षाणां मूलान्यपि असख्येयजीवकानि सख्येयजीवविशिष्टानि भवन्तीति । **'एवं कंदा खंधा तया साला पवाला'** एवं निम्बादिवृक्षाणां कन्दानि स्कन्धाः त्वक्–शाखाः

वृक्ष, जामुनका वृक्ष, यावत् पुन्नाग का वृक्ष, नागवृक्ष और अशोक वृक्ष ये सब वृक्ष पुष्प वृक्ष विशेष है । यहा यावत्पदसे–कोशाम्र से लेकर असन वृक्ष तक जो टीका में तीन गाथाओं में कहे गये है वे यहा गृहीत हुए हैं जो प्रज्ञापना सूत्र में कहे गये है तथा इसी प्रकार से **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** और भी इसी प्रकार के कि जिन वृक्षों के फलों में एक ही गुठली निकलती है ऐसे फल वाले वृक्ष भी एकास्थिक पद से गृहीत हो जाते है । **'एएसि णं मूला वि असंखेज्जजीवया"** इन नीम आदि वृक्षों के मूल–जड़े–असख्याते जीवों से विशिष्ट होते हैं । तथा **"एवं कंदा, खंदा, तथा साला, पवाला"** इन वृक्षों के कन्द स्कन्ध

तहा असोगे य" લીબડાનુ ઝાડ, આંબાનુ' ઝાડ, જાબુના ઝાડ યાવત્ પુન્નાગના ઝાડ, નાગવૃક્ષ, અને અશોક વૃક્ષ આ બધા પુષ્પ વૃક્ષ વિશેષ છે અહિયા યાવત્ પદથી 'કોશામ્ર થી લઈને અસન વૃક્ષ સુધીના ટીકામા ત્રણ ગાથાઓથી કહ્યા છે, તે બધા વૃક્ષો અહિયાં ગ્રહણ કરાયા છે તથા પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં જે કહેલા છે તે તથા **'जे यावन्ने तहप्पगारा"** બીજા પણ જે એવા પ્રકારના કે જે વૃક્ષોના ફળોમાં એકજ ગોઠલી નીકળે એવા ફળવાળા વૃક્ષો પણ એકાસ્થિક પદથી ગ્રહણ કરાયા છે

"एएसि णं मूला वि असंखेज्जजीवया" આ લીમડા વિગેરે ઝાડોના મૂળ પણ અસખ્યાત જીવોવાળા હોય છે તથા **"एवं कंदा, खंधा, साला पवाला,"** એજ પ્રમાણે આ

प्रवाला असंख्येयजीवाः 'पत्ता पत्तेयजीवा' पत्राणि च प्रत्येकजीवानि-एकैकजीवविशिष्टानि भवन्ति 'पुष्फाइं अणेगजीवाइं' पुष्पाणि अनेकजीवानि 'फला एगट्ठिया' निम्बाम्रादिवृक्षाणां फलानि एकास्थीनि भवन्ति, एतेषां फले एकमेव बीजं भवति इति। 'से त्तं एगट्ठिया' ते एते निम्बादयो वृक्षा एकास्थिका. कथिता इति।

'से किं तं बहुबीया' अथ के ते बहुबीजा-अनेकबीजवन्तो वृक्षाः के इति प्रश्नः, उत्तरयति-'बहुबीया अणेगविहा पन्नत्ता' बहुबीजाः-अनेकबीजवन्तो वृक्षाः अनेकविधाः-अनेकप्रकारा प्रज्ञप्ताः-कथिताः। 'तं जहा' तद्यथा 'अत्थिय तेंदुय उंबर कविट्ठे' अस्थिकः तेन्दुकः उदुम्बर. कपित्थः सर्वे एते वृक्षविशेषा. लोकप्रसिद्धाः 'आमलगफणसदाडिमणग्गोधकाउंबरीयतिलयलउयलोद्धे धवे' आमलकपनसदाडिमन्यग्रोधकाकोदुम्बरीयतिलकलकुचलोध्रा धव.. ते इमे बहुबीजवृक्षविशेषा 'लोकप्रसिद्धाः अत्र आमलकशब्देन 'आमला' इति लोक

त्वचा शाखा, प्रवाल (कोपल) ये सब असंख्यात जीवो वाले होते है। और 'पत्ता पत्ते य जीवा' इनके पत्ते प्रत्येक जीव वाले होते है अर्थात् इनके एक २ पत्र में अलग २ एक-एक जीव होता है ऐसे होते है। तथा-"पुप्फाइं अणेगजीवाइं" पुष्प अनेक जीवो से युक्त होते है। "फली एगट्टिया" इनके फलो में केवल एक गुठली होती है "सेत्तं एगट्टिया", इस प्रकार से निम्ब आदि वृक्ष एकास्थिक कहे गये है "से किं तं बहुवीया" हे भदन्त। बहुबीज वृक्ष कौन २ से है ? गौतम। "बहुवीया अणेगविहा पन्नत्ता" बहुवीज वृक्ष अनेक प्रकार के कहे गये है "तं जहा" जैसे-'अत्थिय तेंदुय अंबर कविट्ठे" अस्थिक, तेन्दु ऊंबर कैथ। ये वृक्ष अनेक है जिनके फलों-में अनेक बीज होते है। ऐसे इसी प्रकार से आमलक, पनस दाड़िम-अनार न्यग्रोध-वट का वृक्ष काकोदुम्बरीय, तिलक, लकुच और लोध्र ये सब वृक्ष भी बहुबीजक वृक्ष हैं। तथा

વૃક્ષોના કન્દ, સ્કંધ, (થડ) ત્વચા (છાલ) શાખા (ડાળ) પ્રવાળ (કુંપળ) આ બધા અસંખ્યાત જીવો વાળા હોય છે તેમજ "पत्ता पत्तेय जीवा" તેના પત્ર-પાન પ્રત્યેક જીવ વાળા હોય છે. અર્થાત્ તેના એક એક પાનમાં જૂદા જૂદા એક એક જીવો હોય છે તેવા હોય છે. "फली एगट्ठिया" તેના ફળોમાં કેવલ એકજ ગોઠલી-બી હોય છે. તથા 'पुप्फाइं अणेग जीवाइं" તેના પુષ્પો અનેક જીવો વાળા હોય છે "से त्तं एगट्ठिया" આ પ્રમાણે લીમડાના વૃક્ષ વિગેરેને એકસ્થિક કહ્યા છે.

"से किं तं वहुवीया" હે ભગવન્ બહુબીવાળા વૃક્ષો કયા કયા છે ? 'गोयमा હે ગૌતમ! वहुवीया अणेगविहा पन्नत्ता" બહુબીજવાળા વૃક્ષો અનેક પ્રકારના કહેલા છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે-"अत्थिय तेंदुय, उंबर कविट्ठे" અસ્થિક તિંદુક, ઉમરડો, કોઠા વિગેરે આ વૃક્ષો જેના ફળોમા અનેક બીજો હોય છે તેવા એટલે કે અનેક બીવાળા હોય છે. એ જ પ્રમાણે તેના જેવા બહુબીજવાળા આમલક, પનસ, (ફણસ) દાડમ, અનાર (દ્રાક્ષ) વડનુ ઝાડ કાકોદુમ્બરીય, (વૃક્ષવિશેષ) તિલક, લકુચ, અને લોધ્ર (રોદડો) આ બધા વૃક્ષો

प्रसिद्धवृक्षो न ग्राह्यः अस्य एकास्थिकत्वात् अतः आमलकशब्देन बहुबीजवृक्षविशेषस्तदन्यो गृह्यते (लकुच) (बडहल) इति प्रसिद्धो गृह्यते, अयमपि बहुबीजवृक्षविशेषः, **'जे यावन्ने तहप्पगारा'** ये चान्ये तथाप्रकारा. कपित्थादि सदृशा वृक्षा उपलभ्यन्ते तेऽपि बहुबीज-वृक्षतयैव प्रतिपत्तव्याः । **'एएसि णं मूलावि असंखेज्जजीविया जाव फला बहुबीयगा'** एतेषाम् अस्थिकतेन्दुकादीनां वृक्षाणां मूलान्यपि असंख्येयजीवाधिकरणानि भवन्ति यावत्पदेन कन्दादारम्य पुष्पपर्यन्ता. संगृह्यन्ते ते पूर्ववद् वाच्यानि, तथाहि–कन्दादयः प्रवालान्ता असंख्येयजीवा भवन्ति, पत्राणि प्रत्येकजीवानि **'से त्तं बहुबीयगा'** ते एते बहुबीजका वृक्षा. कथिताः । **'से त्तं रुक्खा'** ते एते वृक्षाः सामान्यतः कथिता इति । **'एवं जहा**

"धवे" धव नाम का वृक्ष विशेष भी बहुबीज वृक्ष है । यहां आमलक शब्द से लोक प्रसिद्ध आमले का वृक्ष नहीं लिया जाता है क्योंकि यह एकास्थिक–एक बीज वाला होता है । यह आमलक एक बहुबीज वृक्ष विशेष है । इसी प्रकार लकुच शब्द से लोकप्रसिद्ध (लीची) नाम के फल वाला वृक्ष नहीं लिया जाता है लकुच को बडहल कहते हैं अतः यहां बडहल नाम का वृक्ष लिया जाता है । इसी प्रकार **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** जो और भी इन्हीं वृक्षों के जैसे वृक्ष होते है वे सब भी बहुबीज वृक्षो में गिने गये हैं **"एएसिं मूला वि असखेज्जजीविया जाव फला बहुवीयगा"** इन बहुबीज वृक्षो के मूल असंख्यात जीवों से अधिष्ठित होते है यावत् इनके फल बहुत बीज वाले होते है । यहां यावत्पद से कन्द से लेकर प्रवाल पर्यन्त–कन्द, स्कन्धत्वक्, शाखा प्रवाल तक-के पद गृहीत हुए है । अतः ये सब असंख्यात जीव वाले होते हैं और पत्र एक जीव वाले होते हैं । **'सेत्तं बहुवीयगा"** इस प्रकार से ये बहुबीज वृक्ष कहे गये है । **'से त्तं रुक्खा,,** दोनो प्रकार के वृक्षों का भेद

બહુબીજવાળા હોવાથી બહુબીજક કહેવાય છે અહિયાં આમલક એ શબ્દથી લોક પ્રસિદ્ધ આમળાનું ઝાડ ગ્રહણ કરેલ નથી. કેમ કે તે એકાસ્થિક-એક બીજવાળા હોય છે આ આમલક તે એક બહુબીજવાળું વૃક્ષ વિશેષ છે એજ પ્રમાણે લકુચ શબ્દથી લોકપ્રસિદ્ધ 'લીચી' નામના ફલવાળાવૃક્ષને ગ્રહણ કરેલ નથી લકુચને 'બડહલ' કહે છે. તેથી અહિયાં 'લકુચ' શબ્દથી બડહલ નામનુ વૃક્ષ ગ્રહણ કરેલ છે એજ પ્રમાણે **"जे यावन्ने तहप्प-गारा"** આ ઉપર વર્ણવેલ વૃક્ષો સિવાયના બીજા જે આ વૃક્ષોના જેવા વૃક્ષો હોય છે તે બધા જ બહુબીજ વૃક્ષોમા ગણેલા છે **"एएसिं मूलावि असंखेज्जीजविया जाव फला बहुवीयगा"** આ બહુબીવાળા વૃક્ષોના મૂળ અસંખ્યાત જીવોથી વ્યાપ્ત હોય છે યાવત્ તેના ફલો બહુ બીજવાળા હોય છે અહિયાં યાવત્ પદથી કંદથી લઈને પ્રવાલ પર્યંત સ્કંધ, સ્કંધ, ત્વક્ (છાલ) શાખા (ડાલ) પ્રવાલ (કુંપળ) સુધીના પદો ગ્રહણ કરાયા છે. તેથી એ બધા અસંખ્યાત્ જીવવાળા હોય છે અને પાન એક જીવવાળા હોય છે **"सेत्तं बहुवीयगा"** આ રીતે આ બહુ બીજવાળા વૃક્ષનુ કથન કર્યું છે **"से त्तं रुक्खा"** આ રીતે એક બીજ, અને બહુબીજ બન્ને પ્રકારના વૃક્ષોના ભેદ સાથે અહિયાં કથન

पण्णवणाए तहा भाणियव्वं जाव जे यावन्ने तहप्पगारा से त्तं कुहणा' एवं यथा–येन रूपेण प्रज्ञापनायां भेदास्तथा भणितव्याः, कियत्पर्यन्तं तत्राह–'जाव' इत्यादि, **'जाव जे यावन्ने तहप्पगारा से त्तं कुहणा'** यावत्, अत्र यावत्पदेन गुच्छगुल्मलतावल्ली पर्वकतृणवलयहरितौषधिजलरुहाणां संग्रहो भवति एतेषां वृक्षगुच्छगुल्मादीनां सविस्तरं वर्णनं प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे विलोकनीयम्, ये चान्ये तथाप्रकाराः गुच्छगुल्मादिसदृशाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका भवेयु स्तेऽप्यत्र संग्राह्याः। **'सेत्तं कुहणा'** कुहणा प्रकरणान्तं वक्तव्यमिति। एषां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां कीदृशं संस्थानमिति प्रश्न, उत्तरयति गाथाभिः–**'णाणाविहसंठाणा'** इत्यादि **'णाणाविहसंठाणा रुक्खाणं'** नानाविधसंस्थानानि–अनेकप्रकारकाणि संस्थानानि भवन्ति वृक्षाणामिति, **'तालसरलनालिएरीणं'** तालसरलनारिकेलीनां वृक्षाणाम् **'एगजीवया पत्ता'** पत्राणि एकजीवानि पत्राणाम् एक एव जीवो भवतीत्यर्थः। **'खंधा वि एगजीवा'** स्कन्धा अपि एक जीवाः, केषामित्याह–**'तालसरलनालिएरीणं'** तालसरलनारिकेलानाम् एषां वृक्षे एकजीवस्तदीयस्कन्धोऽपि

सहित स्वरूप यहाँ तक प्रतिपादित हुआ है। **'एवं जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वं जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं कुहणा"** इस प्रकार इनके प्रज्ञापना सूत्र में सविस्तर भेद कहे गये है सो गुच्छ गुल्मलता वल्ली पर्वक तृणवलयहरित ओषधि जलरुह हणा कुप्रकरण तक के वे सब भेद यहां पर भी कह लेना चाहिए। इसी प्रकार इन्हीं वृक्षो के सदृश और भी जो वृक्ष हैं वे सब इन्हीं प्रत्येक शरीर वनस्पतिकायिक वृक्षों में गर्भित कर लेना चाहिए **"णाणाविहसंठाणा रुक्खा णं"** इन वृक्षजीवों के संस्थान अनेक प्रकार के होते हैं। **'एगजीविया पत्ता"** इन वृक्षों के पत्ते एक जीव वाले कहे गये है। अर्थात् हर एक वृक्ष का जुदा २ एक २ जीव होता है। **'खंधा वि एगजीवा"** स्कन्ध में भी एक जीव होता है किन वृक्षो का सो कहते हैं **"ताल सरलनालिएरीएणं"** ताल सरल नारिकेल। इन वृक्षों का

કહ્યું છે **"एवं जहा पन्नवणाए तहा भाणियव्वं जाव जे यावन्ने तहप्पगारा से त्तं कुहणा"** આ પ્રમાણે આ વૃક્ષોના ભેદો પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં સવિસ્તર રીતે કહેલ છે, તે ભેદો ગુચ્છ, ગુલ્મ, લતા, વલ્લી, પર્વક, તૃણવલય હરિત ઓષધી, જલરૂહ, કુહણા, ના પ્રકરણ સુધીના તે બધા જ ભેદો અહિયા પણ સમજી લેવા આજ રીતે આ વૃક્ષોની સરખા બીજા પણ જે વૃક્ષો હોય તે બધા આજ વૃક્ષોની તુલ્ય પ્રત્યેક શરીર વનસ્પતિકાય વૃક્ષોમાં સમાવેશ કરી લેવો. **'णाणाविहसंठाणा रुक्खाणं"** આ વૃક્ષરૂપી વનસ્પતિકાય જીવોનું સંસ્થાન અનેક પ્રકારનું હોય છે **"एगजीविया पन्नत्ता"** આ વૃક્ષોના પાન એક જીવવાળા કહ્યા છે. અર્થાત્ દરેક વૃક્ષોના પાનમાં જૂદા જૂદા એક એક જીવ હોય છે. **"खंधा वि एगजीवा'** સ્કધમાં પણ એક જીવ હોય છે. કયા વૃક્ષોના સ્કંધમાં એક જીવ હોય છે? એ

एकजीव इति । ननु यदि वृक्षादीनां मूलादयो यदि प्रत्येकमनेकप्रत्येकजीवाधिष्ठिता स्ततः कथमेकखण्डशरीराकाश उपलभ्यन्ते तत्राह–'जह' इत्यादि 'जह सगल सरिसवाणं० पत्तेय सरीराणं० गाहा० इयं गाथा सपूर्णा यथा–

'जह सगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साणं वट्टियावट्टी ।
पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया" ॥१॥
यथा सकलसर्षपाणां श्लेषमिश्राणां वलितावर्त्ती ।
प्रत्येकशरीराणां तथा भवन्ति शरीरसंघाताः ॥२॥

यथा श्लेषद्रव्यमिश्रितानां सकलसर्षपाणां वर्ती–एकरूपा–एकाकारा भवति तथैव–अनयैव उपमया प्रत्येकशरीरिणां जीवानां शरीरसघाताः पृथक् पृथक् स्वस्वावगाहनावन्तो

प्रत्येक का एक २ जीव होता है और इनके स्कन्ध का भी एक २ जीव होता है। शंका–यदि वृक्षादिको के मूलादिक प्रत्येक, अनेक प्रत्येक जीवों से युक्त है तो फिर ये एक अखण्ड-शरीराकार रूप से क्यों प्रतीत होते है? अनेक खण्ड शरीराकार रूप में प्रतीत होना चाहिए। उत्तर–में प्रभु दृष्टान्त कहते हैं 'जहसगलसरिसवाणं पत्तेयसरीराणं' यह गाथा इस प्रकार है–'जहसगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साणं वटियावट्टी। पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥१॥ जिस श्लेप द्रव्यसे मिश्रित हुए सर्षपों की गोली एक रूप–एक आकार वाली होती है उसी प्रकार से प्रत्येक शरीर जीवो के शरीरसंघात पृथक् पृथक् स्व–स्व अवगाहना वाले होते हैं। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार से अनेक सरसो के दाने स्निग्ध द्रव्य से जब मिलकर एक लड्डू आदि के रूप में हो जाते है–तब वे एकपिण्ड होकर भी अपनी २ अवगाहना में उसमें

સંબંધમા સૂત્રકાર કહે છે કે–'तालसरलनालिएरीणं" તાલસરલ, નારીકેળ-નારીએરી આ પ્રત્યેક વૃક્ષોમાં એક એક જીવ હોય છે અને તેના સ્કંધોમાં પણ એક એક જીવ હોય છે

શંકા–જો વૃક્ષાદિકોના મૂલ વિગેરે પ્રત્યેક અનેક પ્રત્યેક જીવોથી યુક્ત હોય છે તો પછી એક અખંડ શરીરાકાર પણાથી કેમ દેખાય છે? અનેક ખંડ શરીરાકાર પણાથી તે દેખાવા જોઈએ

ઉત્તર–આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુ દૃષ્ટાંત સાથે કહે છે કે–"जहसगलसरिसवाणं, पत्तेयसरीराणं" આ ગાથા આ નીચે પ્રમાણે છે

"जह सगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साणं वटिया वट्टी । पत्तेयसरीराणं, तहहोंति सरीरसंघाया" ॥१॥

જે શ્લેષ દ્રવ્ય પદાર્થથી મિશ્રિત થયેલ સર્ષવોનીગોળી એક રૂપ અને એક આકારવાળી હોય છે, એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક શરીરી જીવોના શરીરસંઘાત જૂદા જૂદા સ્વ સ્વ અવગાહના વાળા હોય છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે–જે રીતે અનેક સરસવોના દાણા સ્નિગ્ધ-ચિકણા પદાર્થમાં મળીને એક લાડુ, વિગેરે પ્રકારથી એક રૂપ બની જાય છે, ત્યારે તે એક પિંડ રૂપ હોવા છતાં પણ પોત પોતાની અવગાહનમાં તેમાં જૂદા જૂદા દેશવાળા થઈને રહે

भवन्ति, अयं भावः-यथा अनेकेऽपि सर्षपाः स्निग्धद्रव्येण मिश्रिता एकपिण्डवाच्या भवन्तोऽपि सर्वेऽपि सर्षपाः तस्मिन् पिण्डे भिन्न-भिन्नदेशे तिष्ठन्ति तथा-पिण्डात्मकैकवृक्षे रागद्वेषोपचितं तथाविधं स्वकर्मश्लेषद्रव्यस्थानीयम्, प्रत्येकशरीराः सकलसर्षपस्थानीयाः, पृथक् पृथक् वृक्ष-देशे स्कन्धमूलादौ तिष्ठन्ति तथा च अनेकत्र विद्यमाना अपि एकाकारेणाभान्ति, **'सगल सरिसवाणं'** इत्यत्र **सकलपदग्रहणं** विविक्तत्वप्रतिपत्त्या पृथक्-पृथक् स्वस्वावगाहवर्तां प्रत्येकशरीराणां विविक्तत्वप्रतिपत्त्यर्थमिति । अत्रैव दृष्टान्तमपि भवति **'जहवा तिलसक्कुलिया गाहा'** यथा वा तिलशष्कुलिका, तिलपर्पटिका, इत्यपि पाठः, यथा तिलप्रधाना पिष्टमयी अपूपिका 'तिलपापडी' इति प्रसिद्धा बहुभिस्तिलैः संहता संघातमापन्ना सती पृथक्-पृथक् स्व

भिन्न २ देश वाले होकर रहते हैं उसी प्रकार पिण्डात्मक एक वृक्ष में प्रत्येक शरीर वाले नाना जीव रागद्वेष से उपार्जित अपने २ कर्मरूप श्लेष द्रव्य से युक्त होकर पृथक् २ स्कन्ध मूलादिरूप वृक्ष देश में रहते है। इस प्रकार से यद्यपि वे अनेक जगह रहते हैं फिर भी एक आकार से प्रतीतिपथ में आते हैं। दूसरा दृष्टान्त भी इस प्रकार से है—**"जह वा तिलसक्कुलिया"** जैसे-तिल प्रधान पिष्टमयी अपूपिका-तिलपपड़ी अनेक तिलो से मिश्रित होती हुई भी एक कहलाती है परन्तु फिर भी उसमें तिल अलग २ अपनी २ अवगाहना मे रहे हुए है इसी प्रकार प्रत्येक शरीर जीवो के शरीर संघातभी कथञ्चित् एक रूप हो कर भी पृथक् २ अपनी २ अवगाहना में रहते है 'दुगइया ति आगइया" ये यहां से मर कर तिर्यञ्च और मनुष्य गति में ही जाते है इसलिए द्विगतिक-दो गति वाले कहे गये हैं तथा तिर्यञ्च मनुष्य और देव गति से निकलकर यहां उत्पन्न होते है इसलिये ये त्र्यागतिक-तीन आगति वाले कहे गये है, यहां पुष्पादि शुभ स्थानो में देवो की भी उत्पत्ति होती है। **"परित्ता असंखेज्जा,**

છે એજ પ્રમાણે પિંડરૂપ એક વૃક્ષમા પ્રત્યેક શરીરવાળા અનેક જીવો રાગદ્વેષથીઉપાર્જીત પોત પોતાના કર્મ રૂપ શ્લેષ-દ્રવ્ય-પદાર્થથી યુક્ત થઈને પૃથક્ પૃથક્ સ્કંધ મૂલ, વિગેરે રૂપે વૃક્ષદેશમાં રહે છે. એજ પ્રમાણે જો કે તેઓ અનેક સ્થળે રહે છે તો પણ એક આકારથી દૃષ્ટિગોચર થાય છે હવે આ સંબધમાં બીજું દૃષ્ટાંત બતાવતાં સૂત્રકાર કહે છેકે—**"जहा वा तिलसक्कुलिया"** જેવીરીતે તલ પ્રધાન લોટવાળી અપૂપિકા-તલપાપડી, તે જેમ અનેક તલ થી મળેલી હોય છે તો પણ એકજ કહેવાય છે છતાં પણ તેમાંના તલ જુદાજુદા પોત પોતાની અવગાહનામાં રહેલા છે એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક શરીરી જીવો ના શરીરસંઘાત પણ કથંચિત એક રૂપ થઈને પણ પૃથક્ પૃથક્ પોતપોતાની અવગાહનામાં રહે છે **"दुगइया ति आगइया"** તેઓ અહિંથી મરીને તિર્યંચ અને મનુષ્ય ગતિમા જ જાય છે, તેથી દ્વિગતિક-બે ગતિવાળા કહેલા છે. તથા તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવ એ ત્રણ ગતિમાથી નીકળી ને અહિયાં ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેઓને 'ત્ર્યાગતિક' ત્રણ આગતિ વાળા કહ્યા છે. અહિયા પુષ્પ વિગેરે શુભસ્થાનોમાં દેવોની પણ ઉત્પત્તી થાય છે. **"परित्ता**

स्वावगाहतिलात्मिका भवति, तिलपर्पटिका नाम्ना कथञ्चिदेकरूपा च, तथाऽनयैव उपमया प्रत्येक शरीरिणां जीवानां शरीरसंघाताः कथञ्चिदेकरूपा पृथक्-पृथक् स्वस्वावगाहनावन्तश्च भवन्तीति ॥सू० १४ ॥

प्रत्येकवनस्पतिकायिका जीवा निरूपिताः, सम्प्रति साधारणवनस्पतिकायिकजीवान् प्रतिपादयितुमाह,- 'से किं तं साहारण०' इत्यादि, ।

मूलम्—'से किं तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया ! साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा-आलुए मूलए सिंगवेरे हिरिलि सिरिलि सिस्सिरिलि किट्ठिया छिरिया छीरविरालिया कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे खल्लूडे किमिरासि भद्दमोत्था हरिद्दा लोहिणी णीहू (थीरहू) थिभुगा अस्सकण्णी सीहकण्णी सिउंढी मूसंढी जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तं जहा-पज्जत्तगा य। अपज्जत्तगा य। तेसि णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता। गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता, तं जहा ओरालिए तेयए कम्मए। तहेव जहा बायर पुढवीकाइयाणं, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं साइरेगजोयणसहस्सं, सरीरगा अणित्थंत्थसंठिया। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं जाव दुगइया तिआगइया परित्ता असंखेज्जा-अपरित्ता अणंता पन्नत्ता समणाउसो!। से त्तं साहारणबायरवणस्सइ काइया। से त्तं बायर वणस्सइकाइया। से त्तं थावरा' ॥ सू० १५॥

ये प्रत्येक शरीरीअसंख्यात होते है। "से त्त पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया" इस प्रकार से यहा तक ये प्रत्येक शरीर वाले बादर वनस्पतिकायिक जीव प्रतिपादित हुए है ॥ सूत्र१३॥

असंखेज्जा" આ પ્રત્યેક શરીરિ અસંખ્યાત્ હોય છે, "से त्तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइ काइया" આ પ્રમાણે અહિ સુધીના આ પ્રત્યેકશરીરવાળા બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોનુ પ્રતિપાદન કર્યું છે, ॥સૂત્ર ૧૩॥

छाया—अथ के ते साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः ? साधारणशरीरबादर-वनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-आलुकम् मूलकम् शृङ्गवेरं हिरिलिः सिरिलिः सिस्सिरिलिः, किट्टिकाक्षीरिका क्षीरविडालिका कृष्णकन्दम् वज्रकन्दम् सूरणकन्दम् खल्लटम् कृमिराशिः, भद्रमुस्ता हरिद्रा लोही, स्नुहिः, स्तिभुका, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सिउंढी, मुषढी ये चान्ये तथाप्रकारा ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्चा-पर्याप्तकाश्च । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकम् तैजसम् कार्मणम् तथैव यथा-बादरपृथिवी-कायिकानाम् । नवरं शरीरावगाहना जघन्येनांगुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण सातिरेक-योजनसहस्रम् । शरीराणि अनित्थंस्थसंस्थितानि । स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण दशवर्षसहस्राणि । यावद् द्विगतिकाः त्र्यागतिका परीता असंख्येयाः, अपरीता अनन्ताः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् ! ते एते साधारणबादरवनस्पतिकायिकाः ते एते बादर वनस्पति-कायिकाः । ते एते स्थावराः ॥ सू० १५ ॥

टीका—'से किं तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया' अथ के ते साधारण-शरीरबादरवनस्पतिकायिकाः, एतेषां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति—'साहा-रणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता' साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अने-कविधाः—अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, साधारणशरीरबादरवनस्पतिनामकर्मोदयात् साधा-

---

अब साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकजीवो की प्ररूपणा की जाती है इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है- "से किं तं साहारणसरीर०" इत्यादि ।

'से किं तं सहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया'—इत्यादि ।

टीकार्थ—"से किं तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया" हे भदन्त ! जो साधा-रण शरीर बादरवनस्पतिकायिक जीव हैं उनका क्या लक्षण है और कितने इनके भेद है ? उत्तर में प्रभु कहते है— "साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! साधारणशरीर बादरवनस्पतिकायिकजीव अनेक प्रकार के कहे

હવે સાધારણુ શરીર બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવો નું નિરૂપણુ કરવામાં આવે છે, આ સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે-"से किं तं साहारणसरीर" ઇત્યાદિ

"से किं तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से किं तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया" ॥ ઇત્યાદિ હે ભગવાન્ જે સાધારણુ શરીર બાદર વનસ્પતિ જીવ છે તેમના શું લક્ષણો છે ! અને તેના કેટલા ભેદો છે ? આ પ્રશ્ન ના ઉત્તર માં પ્રભુ કહે છે કે-"साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता" હે ગૌતમ ! સાધારણુશરીર બાદરવનસ્પતિકાયિક જીવ અનેક પ્રકારના

रणशरीरबादरवनस्पतिकायिका स्तेचानेकप्रकारका इत्युत्तरम् । अनेकप्रकारमेव दर्शयति–'**तं जहा**' इत्यादि, '**तं जहा**' तद्यथा–'**आलुए**' आलुकम् '**मूलए**' मूलकम '**सिंगवेरे**' शृङ्गवेरकम्, '**हिरिलि**' (अदरख) इति लोकप्रसिद्धम् कन्दम्, '**सिरिलि**' इत्यपि तथैव '**सिस्सिरिलि**' सिस्सिरिलिः, '**किट्टिया**' कीटिका, '**छिरिया**' क्षीरिका '**छिरियविरालिया**' क्षीरविडालिका '**कण्हकंदे**' कृष्णकन्दम् '**वज्जकंदे**' वज्रकन्दम् '**सूरणकंदे**' सूरणकन्दम्, '**खल्लूडे**' खल्लूटम् '**किमिरासी**' कृमिराशि. । '**भद्दमोत्था**' भद्रमुस्ता '**हरिद्दा**' हरिद्रा '**लोहिणी**' लौही '**णीहू**' स्नुहिः '**थिभु**' स्तिभु '**अस्सकण्णी**' अश्वकर्णी '**सीहकण्णी**' सिंहकर्णी, '**सिउंढी**' सिकुण्ठी '**मुसंढी**' मूषंढी, एतन्नामकाः साधारणवनस्पतिकायिकभेदाः केचन लोके प्रसिद्धाः केचन देशविशेषप्रसिद्धत्वात् स्वयमेव ज्ञातव्याः। '**जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता**' ये चान्ये–आलुकादिभिन्नाः तथाप्रकाराः–आलुकादिसदृशा स्तेऽपि साधारणशरीरबादरवन-

---

गये हैं । इन जीवो के साधारण शरीर बादरवनस्पतिनामकर्मका उदय होता है अतः ये साधारणशरीर बादरवनस्पतिकायिकजीव कहलाते है । "**तं जहा**" ये अनेक प्रकार के इस प्रकार से हैं– "**आलुए, मूलए,**" आलु, मूला, "**सिंगवेरे**" अदरख, "**हिरिलि**" हिरिली "**सिरिलि**" सिरिली "**सिस्सिरिलि**" सिरस्सिरिली "**किट्टिया**" किटिका "**छिरिया**" क्षीरिका, "**छिरविरालिया**" क्षीरविडालिका, "**कण्हकंदे**" कृष्णनन्द "**वज्जकंदे**" वज्रकन्द "**सूरणकंदे**" **सूरणकन्द** '**खल्लुडे**" खल्लुट "**किमिरासी**" **क्रिमिराशि भद्दमोत्था,** भद्रमोथा "**हलिद्दा**" "**हल्दी**" "**लोहिणी**" लोही. "**णीहू**" **स्नुहि–थुवर,** "**थिभु**" **स्तिभु,** "**अस्सकण्णी**" अश्वकर्णी, **सिंहकण्णी,** "**सिहकर्णी**" "**सिउंढी,** "**मूसंढी**" **मूषंढी,** ये सब साधारणवनस्पतिकायिक के भेद है–इनमें कितनेक तो लोक में प्रसिद्ध है और कितनेक भिन्न २ देशो में प्रसिद्ध हैं । "**जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता**" इसी प्रकार से जो और भी इन्हीं के समान हो वे भी ग्रहण कर लेना चाहिये ।

કહેલા છે, આ જીવોને સાધારણ શરીર બાદર વનસ્પતિ નામકર્મ નો ઉદય થાય છે, જેથી એ સાધારણ શરીર બાદર વનસ્પતિ કાયિક જીવો કહેવાય છે, '**तं जहा**' આ અનેક પ્રકારો આ પ્રમાણે સમજવા, જેમકે–"**आलुए, मूलए**' આલુ (બટાકા) મૂળા "**सिंगवेरे**" આદુ '**हिरिलि**' હિરિલી, '**सिरिलि**' સિરિલી, '**सिस्सिरिलि**' સિસ્સિરિલિ '**किट्टिया**' કિટિકા '**छिरिया**' ક્ષીરિકા '**छिरविरालिया**' ક્ષીરવિડાલિકા '**कण्हकंद**' કૃષ્ણકંદ '**वज्जकंदे**' વજ્રકંદ '**सूरणकंदे**' સૂરણકંદ '**खल्लुडे**' ખલ્લુટ '**किमिरासी**' કિમિરાશી, '**भद्दमोत्था**' ભદ્રમોથા '**हलिद्दा**' હલદર '**लोहारी**' લૌહી, '**णीहू**' સ્નુહિ થુવર '**थिभु**' સ્તિભુ '**अस्सकण्णी**' અશ્વકર્ણી '**सीहकण्णी**' સિંહકર્ણી '**सीउंढी सीउंढी मूसंढी**' મૂષંઢી આ બધા સાધારણ વનસ્પતિકાયિકના ભેદો છે, આમાં કેટલાક તો લોકમા પ્રસિદ્ધ છે, અને કેટલાક જૂદા જૂદા દેશોમાં પ્રસિદ્ધ છે, '**जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता**' એજ પ્રમાણે બીજા પણ જે આના જેવા

स्पतिकायिकतया ज्ञातव्याः । ते आलुकादयः सर्वेऽपि साधारणशरीरवनस्पतिकायिकाः समासतः संक्षेपेण द्विविधा द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः । प्रकारद्वयं दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य' पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च, तत्र पर्याप्तिविशिष्टाः पर्याप्ताः तद्रहिता अपर्याप्तका इति । साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां शरीरादिद्वारचिन्तनाय प्रश्नयन्नाह—'तेसि णं' इत्यादि, 'तेसि णं' भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता' तेषां साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानीति प्रश्न', भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तओ सरीरगा पन्नत्ता' त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि—कथितानि, त्रैविध्यमेव दर्शयति 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'ओरालिए तेयए कम्मए' औदारिकं तैजस कार्मणञ्च शरीरत्रितयं भवत्येषामिति । 'तहेव जहा बायरपुढवीकाइयाणं' तथैव यथा बादरपृथिवीकायिकानां शरीरादिद्वाराणि यथा बादरपृथिवीकायिकजीवानां कथितानि तथैव—तेनैव रूपेण बादरवनस्पतिकायिकानामपि तानि सर्वाणि

ये साधारण वनस्पतिकायिक सक्षेप से दो प्रकार के कहे गये है—''तं जहा'' जो ऐसे है ''पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य'' एक पर्याप्तक और दूसरे अपर्याप्तक जो पर्याप्ति से युक्त होते हैं वे पर्याप्तक और जो पर्याप्त नहीं होते है वे अपर्याप्तक हैं । 'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता हे भदन्त ! इन साधारण वनस्पतिकायिकों के कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं- 'गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता' हे गौतम ! इन साधारण वनस्पतिकायिकों के तीन शरीर कहे गये हैं- 'तं जहा' जो इस प्रकार से है- ओरालिए, तेयए, कम्मए. औदारिक, तैजस और कार्मण ''तहेव जाव बायरपुढवीकाइयाणं'' जिस प्रकार से शरीरादिद्वार बादर पृथिवीकायिकजीवो के प्रकरण में कहे गये है, उसी प्रकार से वे सब बादरवनस्पतिकायिको के भी कह लेना चाहिये यहां लेश्याद्वार में

હોય તેપણુ સાધારણુ વનસ્પતિકાયમાં ગ્રહણુ કરીલેવા, આ સાધારણુ વનસ્પતિકાયિક સક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલા છે, 'तं जहा' જેઆ પ્રમાણે છે–'पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य' એક પર્યાપ્તક અને બીજા અપર્યાપ્તક પર્યાપ્તિથી યુક્ત જે હોયતે પર્યાપ્તક અને જે પર્યાપ્ત ન હોય એટલે પૂરા પર્યાપ્ત ન હોય તે અપર્યાપ્તક ' तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता' હે ભગવન્ આ સાધારણુ વનસ્પતિકાયિકોને કેટલા શરીર હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-'गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता' હે ગૌતમ ? આ સાધારણુ વનસ્પતિકાયિકોના ત્રણુ પ્રકારના શરીરો કહેલા છે, 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે સમજવા, 'ओरालिए, तेयए, कम्मए' ઔદારિક, તૈજસ, અને કાર્મણુ 'तहेव जाव बायरपुढवीकाइयाणं' બાદર પૃથ્વીકાયિકોના પ્રકરણુમાં બાદરપૃથ્વીકાયિકોના શરીર વિગેરે દ્વારોનું જે પ્રમાણે કથનકર્યુ છે, એજ પ્રમાણે તે સઘળા દ્વારોનુ કથન આ બાદરવનસ્પતિકાયિકોના સંબંધમા પણુ સમજી લેવા તાત્પર્ય એ છે, કે–અહિયાં લેશ્યાદ્વારમાં સાધારણુ શરીર બાદર વનસ્પતિકાયિકોને

द्वाराणि ज्ञातव्यानीति । अत्र लेश्याद्वारे साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां लेश्यास्तिस्र एव भवन्ति, प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तावस्थायां तु लेश्यास्तिस्र एव भवन्ति किन्तु अपर्याप्तावस्थायां देवागमनसम्भवाच्चतस्रो लेश्या अपि भवन्तीति विवेकः । बादरपृथिवीकायिका-पेक्षया यद्वैलक्षण्यं तत्स्वयमेव दर्शयति–'णवरं' इत्यादि, 'णवरं' नवरं केवलम्, अवगाहना-संस्थानस्थितिषु विशेष –वैलक्षण्य वर्तते तदेव दर्शयति–**सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखे-ज्जइभागं उक्कोसेणं साइरेगजोयणसहस्सं**, बादरवनस्पतिकायिकानां शरीरावगाहना जघन्ये-नाङ्गुलस्यासंख्येयभागम् । उत्कर्षेण सातिरेकयोजनसहस्रम् । तच्च सातिरेकयोजनसहस्रमव-गाहनामानं प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकापेक्षया ज्ञातव्यम्, तच्च–एकस्य जीवस्य बाह्य-द्वीपेषु वल्ल्यादीना, समुद्रगोतीर्थेषु पद्मनालादीनां भवति । जघन्योत्कर्षाभ्यामङ्गुलासं-ख्येयभागप्रमाणा सातिरेकयोजनसहस्रप्रमाणा च शरीरावगाहना प्रत्येकशरीरबादरवनस्पति-कायिकानामेव भवति एषां साधारणशरीरवनस्पतिकायिकानां तु शरीरावगाहना जघन्यत उत्क-

---

साधारण शरीर बादरवनस्पतिकायिकों को तीन ही लेश्याएँ होती है प्रत्येक शरीर वन-स्पति को पर्याप्तावस्था में तो तीन ही लेश्याएँ होती हैं किन्तु उनके अपर्याप्तावस्था में देवों के आगमन की सभावना से चार लेश्याएँ होती हैं यह तात्पर्य है । 'णवरं' परन्तु **'सरीरोगाहणा-जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं साइरेगजोयणसहस्सं''** बादरपृथिवीकायिक-जीवों की अपेक्षा इनके कथन में यह विशेषता है कि बादरवनस्पतिकायिकों की शरीरावगाहना जघन्य से अङ्गुल के असख्यातवें भाग प्रमाण होती है और उत्कृष्ट से कुछ अधिक एक हजार योजन की होती है । यह उत्कृष्ट शरीरावगाहना प्रत्येक शरीर बादरवनस्पति कायिक की अपेक्षा से जानना चाहिये यह जो एक जीव की–कही है सो वह बाह्य द्वीपो के जो वल्ली आदि है उनकी अपेक्षा कही गई है तथा समुद्र गोतीर्थों में जो पद्मनालादिक है उनकी

ત્રણુજ લેશ્યાએ હોય છે પ્રત્યેકશરીર વનસ્પતિકાયિકોને અપર્યાપ્તાવસ્થામાં દેવોના આગ-મનની સંભાવનાથી ચાર લેશ્યાએ હોય છે,

'णवरं' બાદર પૃથ્વીકાયિકોનાં કરતા આ બાદર વનસ્પતિકાયિકોના કથનમાં જે વિશેષ પણું છે તે બતાવતાં સૂત્રકાર કહે છે કે **सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं साइरेगजोयणसहस्सं'** બાદર પૃથ્વીકાયિક જીવોના કથનકરતાં આ બાદર વન-સ્પતિકાયિક જીવોના કથનમાં એ વિશેષતા છે કે-બાદરવનસ્પતિકાયિકોના શરીરની અવગા-હના જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગપ્રમાણુની હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક વધારે એક હજાર યોજન હોય છે—આ ઊત્કૃષ્ટ શરીરની અવગાહના પ્રત્યેક શરીર બાદર વનસ્પતિકાયિકોની અપેક્ષાએ સમજવી, જે આ અવગાહના એક જીવની કહી છે, તે બાહ્યદ્વીપોની જે વલ્લી-વેલ વિગેરે છે, તેની અપેક્ષાથી કહી છે, તથા સમુદ્ર ગોતીર્થોમાં જે પદ્મનાલ વિગેરે છે, તેની અપેક્ષાઓથી કહે

र्षतश्चापि अङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमाणैव भवति नाधिकेति भावः। तथा-'सरीरगा अणित्थंत्थसंठिया' शरीराणि अनित्थंस्थसंस्थितानि-बादरवनस्पतिकायिकानां शरीराणि अनित्थंस्थसंस्थान युक्तानि भवन्तीत्यर्थः 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं' बादर वनस्पतिकायिकानां स्थितिः जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणा भवति-उत्कर्षेण तु दशवर्षसहस्रप्रमाणा भवतीति। इयं स्थितिरपि प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकापेक्षयैव ज्ञातव्या, साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां स्थितिर्जघन्योत्कृष्टाऽन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणैव भवतीति तात्पर्यार्थः। 'जाव दुगइया ति आगइया' यावद्द्विगतिका त्र्यागतिकाः बादरवनस्पतिकायिका ज्ञातव्याः, यावत्पदेन शरीरा-

---

अपेक्षा कही गई है ऐसा जानना चाहिये। बाकी साधारण शरीरवनस्पतिकायिकों की अवगाहना तो जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकार से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण ही होती है इससे अधिक नहीं होती है ऐसा भाव है "सरीगा अणित्थंत्थसंठिया" बादरवनस्पतिकायिक जीवों के शरीर हैं वे अनित्थंस्थ संस्थान वाला है-नियत संस्थान वाले नहीं हैं। "ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साईं" स्थिति इनकी जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से दस हजार वर्ष की है यह स्थिति भी प्रत्येक शरीर वनस्पतिकायकी अपेक्षा से ही जाननी चाहिये इस साधारण शरीर वनस्पतिकायकी स्थिति तो क्या जघन्य क्या उत्कृष्ट दोनों प्रकार से अन्तर्मुहूर्त्तप्रमाण ही होती है, यह तात्पर्य है "जाव दुगइया तिआगइया" ये तिर्यञ्च और मनुष्यो में उत्पन्न होते है अतः द्विगतिक तथा तिर्यञ्च मनुष्य और देवगति से आकर जीव इनमें उत्पन्न होते हैं इसलिये ये त्र्यागतिक तीन आगतिक वाले कहे गये हैं। क्योंकि पुष्पादि शुभस्थानों में देवो की उत्पत्ति होती है। यहां भी यह जो तीन गति से अनेक रूप

છે તેમ સમજવુ બાકી સાધારણ શરીર વનસ્પતિ કાયિકોની અવગાહના તો જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ બન્ને પ્રકારથી આંગળીના અસંખ્યાતમાં ભાગપ્રમાણુજ હોય છે. તેનાથી વધારે હોતી નથી. તેવો ભાવ સમજવો

"सरीरगा अणित्थंत्थ संठिया" બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોના જે શરીરો છે, તે અનિત્થંસ્થ સંસ્થાન વાળા છે એટલે કે નિયત સંસ્થાનવાળા હોતા નથી. "ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं" તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી દસ હજાર વર્ષની છે આ સ્થિતિ પણ પ્રત્યેક શરીર વનસ્પતિકાયિક જીવની અપેક્ષાથી જાણુવી. આ સાધારણુ શરીર વનસ્પતિકાયિકોની સ્થિતિ જઘન્ય અથવા ઉત્કૃષ્ટ એમ બન્ને પ્રકારની અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણુજ હોય છે આ કથનનું એજ તાત્પર્ય છે.

"जाव दुगइया ति आगइया" આ બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોની ઉત્પત્તી તીર્યંચ અને મનુષ્યોમાં થાય છે. તેથી તેને દ્વિગતિક એટલે કે બે ગતિવાળા કહેલા છે તેમજ તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવ ગતિમાંથી આવીને જીવો આ બાદર વનસ્પતિકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેને "ત્ર્યાગતિકા ત્રણુ ગતિથી આવવાવાળા કહ્યા છે. કેમકે પુષ્પ વિગેરે શુભ

अवगाहना–संस्थान–स्थिति द्वारातिरिक्तानि सर्वाण्यपि द्वाराणि संग्राह्याणि तानि बादरपृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यानि, गत्यागतिद्वारं तु स्वयमेव दर्शितम्, तत्र द्विगतिकाः तिर्यङ्मनुष्यगतौ गमनात्, त्र्यागतिकाः तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य आगमनात् पुष्पादिशुभवनस्पतिषु देवानामप्युत्पत्तिर्भवतीति। इदं त्र्यागतिकत्वं प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानधिकृत्यैव प्रोक्तम्, अन्यथा--साधारणशरीरवनस्पतिकायिकेषु देवानामागमनाभावाद् एते द्व्यागतिका एव भवन्ति तिर्यङ्मनुष्येति गतिद्वयादेवागत्यात्र समुत्पद्यन्ते। सूत्रे तु प्रत्येक- साधारणेति द्वयमधिकृत्य विवक्षितमिति भावः। **'परित्ता असंखेज्जा अपरित्ता अणंता पन्नत्ता समणाउसो'** परीताः प्रत्येक शरीरिणः असंख्येयाः अपरीता अप्रत्येकशरीरिणोऽनन्ताः प्रज्ञप्ताः हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! उपसंहरन्नाह--**'सेत्तं'** इत्यादि, **'से त्तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया'** ते एने साधारणशरीर बादर वनस्पति

कथन है वह भी प्रत्येकशरीरवनस्पति को लेकर ही कथन किया है अन्यथा साधारण शरीरवनस्पति में देव के आने का निषेध हैं इससे यह साधारण शरीर वनस्पतिकाय तिर्यञ्च मनुष्यरूप दो गति से आने वाले होने के कारण ये दो आगति वाले ही होते हैं। सूत्र में प्रत्येक शरीवनस्पतिकाय और साधारणशरीरवनस्पतिकाय इन दोनों को साथ लेकर विवक्षा की है। यहाँ यावत्पद से शरीर अवगाहना संस्थान और स्थितिद्वार के सिवाय सब द्वार संगृहीत होते हैं, वे सर्व द्वार बादरपृथिवीकायिक के प्रकरण में जिस रूप से कहे गये हैं वैसे ही यहाँ पर भी कहलेना चाहिये देवो की उत्पत्ति पुष्प आदि शुभवनस्पति में ही हो जाती है इस कारण उन्हें त्र्यागतिक प्रकट किया गया है। **"परित्ता असंखेज्जा- अपरित्ता अणंता पण्णत्ता"** ये प्रत्येक शरीर असंख्यात और अप्रत्येक शरीर अनंत कहे गये हैं। हे श्रमण। आयुष्मन्। **"से त्तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया"** इस प्रकार

સ્થાનોમાં દેવોની પણ ઉત્પત્તિ હોય છે. અહિયાં પણ જે આ ત્રણ ગતિથી અનેક પણાનું કથન છે, તે પણ પ્રત્યેક શરીર વનસ્પતિને લઈને જ કથન કરેલ છે અન્યથા સાધારણ શરીર વનસ્પતિમાં દેવોની ઉત્પત્તિ થતી નથી અને તેથીજ આ સાધારણ શરીર વનસ્પતિકાય તિર્યંચ અને મનુષ્ય બે ગતિથી આવનારા હોવાથી તેઓ બે આગતિવાળા જ હોય છે

સૂત્રમાં પ્રત્યેક શરીર વનસ્પતિકાય અને સાધારણ શરીર વનસ્પતિકાય આ બન્નેની એક સાથે વિવક્ષા કરી છે અહિયાં યાવત્પદથી શરીર, અવગાહના, સંસ્થાન, અને સ્થિતિ દ્વાર શિવાય બધા જ દ્વારોનો સંગ્રહ થયેલો છે. એ બધા દ્વારો બાદર પૃથ્વીકાયિકોના કથનમાં જે પ્રમાણે કહ્યા છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ કહેવા જોઈએ. દેવોની ઉત્પત્તિ પુષ્પ વિગેરે શુભ વનસ્પતિમાં થાય છે. તેથી તેઓને "ત્ર્યાગતિકત્રણ ગતિથી આવવાવાળા એ પ્રમાણે કહેલ છે **"परित्ता असंखेज्जा अपरित्ता अणंता पण्णत्ता"** આ પ્રત્યેકશરીર અસંખ્યાત અને અપ્રત્યેક શરીર અનંત કહેલા છે, હે શ્રમણ ! હે આયુષ્યમન્ **"से त्तं साहारणसरीर बायरवणस्सइ काइया"**

कायिका निरूपिता । 'सेत्तं वायरवणस्सइकाइया' ते एते बादरवनस्पतिकायिकाः कथिताः । 'से त्तं थावरा' ते एते स्थावरजीवाः निरूपिता इति ॥सू० १५॥

पृथिव्यब्वनस्पतिकायिकरूपान् स्थावरान् निरूप्य त्रसप्रतिपादनार्थं प्रश्नयन्नाह— 'से किं तं तसा' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं तसा ? तसा तिविहा पन्नत्ता तं जहा–तेउकाइया वाउकाइया ओराला तसा पाणा। से किं तं तेउक्काइया, तेउक्काइया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–सुहुमतेउक्काइया य बायरतेउक्काइया य। से किं तं सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया जहा सुहुमपुढविकाइया। नवरं सरीरगा सूईकलावसंठिया। एगगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता, सेसं तं चेव, सेत्तं सुहुमतेउक्काइया से किं तं बायरतेउक्काइया, बायरतेउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा–इंगाले जाले मुम्मुरे जाव सूरकंतमणिनिस्सिए, जे यावन्ने-तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता. तं जहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता, गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता, तं जहा–ओरालिए, तेयए कम्मए, सेसं तं चेव सरीरगा सूईकलावसंठिया, तिन्नि लेस्सा, ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं तिरियमणुस्सेहिंतो उववाओ सेसं तं चेव एगगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता. सेत्तं तेउक्काइया, ॥सू० १६॥

से यह साधारण शरीर बादर वनस्पतिकायिक का वर्णन हुआ 'से त्तं वायरवणस्सइकाइया' इस प्रकार बादरवनस्पतिकायिक भी निरूपित किये गये है। 'से त्तं थावरा' इनके निरूपित होने पर स्थावरों का निरूपण हो गया । ॥सू० १५॥

આ રીતે આ સાધારણ શરીર બાદરવનસ્પતિકાયિકોનું વર્ણન થયું, "से त्त वायरवणस्सइकाइया" આ રીતે બાદર વનસ્પતિકાયિક જીવોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે "से त्तं थावरा" અને એજ પ્રમાણે સ્થાવર વનસ્પતિકાયિક જીવોનું પણ નિરૂપણ સમજી લેવું. ॥ સૂ. ૧૫ ॥

छाया—अथ के ते त्रसाः, त्रसास्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-तेजस्कायिकाः वायुकायिका औदारिकास्त्रसाः प्राणाः। अथ के ते तेजस्कायिकाःतेजस्कायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सूक्ष्मतेजस्कायिकाश्च बादरतेजस्कायिकाश्च। अथ के ते सूक्ष्मतेजस्कायिकाः, ? सूक्ष्मतेजस्कायिका यथासूक्ष्मपृथिवीकायिकाः। नवरं शरीराणि सूचीकलापसंस्थितानि। एकगतिका द्वयागतिकाः परीता असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः, शेष तदेव। ते एते सूक्ष्मतेजस्कायिकाः। अथ के ते बादरतेजस्कायिकाः, बादरतेजस्कायिकाः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—अङ्गारो ज्वाला मुर्मुरो यावत् सूर्यकान्तमणिनिश्रितः ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणम् शेषं तदेव। शरीराणि सूचीकलापसंस्थितानि, तिस्रो लेश्याः। स्थितिः जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण त्रीणि रात्रिंदिवानि, तिर्यङ्मनुष्येभ्य उपपातः, शेषं तदेव, एकगतिका द्वयागतिकाः परीता असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः। ते एते तेजस्कायिकाः॥ सू० १६॥

टीका—'से किं तं तसा' अथ के ते त्रसाः, त्रसन्ति—अभिसन्धिपूर्वकं वा ऊर्ध्वमधस्तिर्यग् वा चलन्तीति त्रसाः—त्रसनामकर्मोदयवर्त्तिनो जीवास्ते कियन्त इति प्रश्नः, उत्तरयति—'तसा तिविहा पन्नत्ता' त्रसाः—त्रसनामकर्मोदयवर्त्तिनो जीवास्त्रिविधाः त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः। त्रैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'तेउक्काइया वाउकाइया ओराला तसा, तेजस्कायिकाः वायुकायिकाः, उदारा—औदारिकास्त्रसाः प्राणा, तेजः—अग्निरेव

पृथिवी अप् और वनस्पतिकायिक रूप स्थावरों का निरूपण करके अब त्रस जीवों का कथन करने के लिये गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—

'से किं तं तसा—इत्यादि।

टीकार्थः—"से किं तं तसा" हे भदन्त! वे त्रस जीव कितने प्रकार के हैं? तथा त्रस जीव किन्हे कहते हैं? उत्तर में प्रभु—कहते है—जो अपनी इच्छा के अनुसार अथवा विना इच्छाके ऊर्ध्व अधः तिर्यक् चलते है वे त्रस हैं ऐसे ये त्रस जीव "तिविहा पन्नत्ता" तीन प्रकार के कहे गये हैं। 'तं जहा' जैसे 'तेउक्काइया, वाउक्काइया ओराला तसा पाणा' तेजस्कायिक, वायुकायिक और औदारिक त्रस प्राणी जिन जीवों

પૃથ્વી, અપ્ અને વનસ્પતિકાયિક રૂપ સ્થાવરોનુ નિરૂપણુ કરીને હવે ત્રસજીવોનુ કથન કરવા માટે ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે—"से किं तं तसा" ઈત્યાદિ.

ટીકાર્થ—"से किं तं तसा" હે ભગવન્ ત્રસજીવો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—જેઓ પોતાની ઈચ્છા વિના જ ઉર્ધ્વ-ઉપર અધઃ-નીચે અને તિર્યગ્-વાંકાચુકા ચાલે છે, તે ત્રસજીવો કહેવાય છે. આવા આ ત્રસજીવો "तिविहा पण्णत्ता" ત્રણ પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે "तेउक्काइया, वाउक्काइया, ओराला तसा पाणा" તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને ઔદારિક ત્રસ પ્રાણી

शरीरं येषां ते तैजस्कायाः तेजस्काया एव तैजस्कायिकाः, एवं वायुरेव शरीर येषां ते वायुकायिकाः उदाराः—स्फाराः, उदारा एव औदारिकाः प्रत्यक्षत एव स्पष्टत्रसत्वनिबन्धनाभिसन्धिपूर्वकगतिलिङ्गतया समुपलभ्यमानत्वात्, त्रसाः, त्रसन्ति—उष्माद्यभितप्ताः सन्तो विवक्षितस्थानात् उद्विजन्ति गच्छन्ति च छायाद्यासेवनार्थं स्थानान्तरं ये ते त्रसाः, प्राणाः द्वीन्द्रियादयो जीवाः कथ्यन्ते ते त्रसा द्वीन्द्रियादयः औदारिकत्रसाः कथ्यन्ते । त्रिविधत्रसेषु प्रथमतः तेजस्कायिकप्रतिपादनायाऽऽह—'**से किं तं**' इत्यादि, '**से किं तं तेउक्काइया**' अथ के ते तेजस्कायिकाः, तेजस्कायिकानां किं लक्षण कियन्तश्च भेदा इति प्रश्न', उत्तरयति '**तेउक्काइया दुविहा पन्नत्ता**' तेजस्कायिका जीवा द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः । प्रकारद्वयमेव दर्शयति '**तं जहा**' इत्यादि, '**तं जहा**' तद्यथा—'**सुहुमतेउक्काइया य बायरतेउक्काइया य**' सूक्ष्मतेजस्कायिकाश्च बादरतेजस्कायिकाश्च, तत्र सूक्ष्मत्वं बादरत्वं च सूक्ष्मनामकर्मोदयात्

का शरीर तैजस रूप होता है वे तैजस्कायिक है इसी प्रकार से वायुकायिकों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये ये त्रस नामकर्म के उदयवर्त्ती होते है औदारिक त्रस प्रत्यक्ष से ही स्पष्ट रूप से त्रसत्व की कारणभूत जो अभिसधि पूर्वक गति रूप लिङ्ग है उससे प्रतीति कोटि में आते है । जो उष्मा आदि से दुःखित होकर जो विवक्षित स्थान से छाया आदि के सेवन करने के लिये दूसरे स्थान पर जाते है वे त्रस हैं । ये औदारिक त्रस प्राण द्वीन्द्रियादि जीव कहे जाते हैं । द्वीन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के समस्त जीव औदारिक त्रस प्राण कहे गये हैं । "**से किं तं तेउक्काइया**" हे भदन्त ! तैजस्कायिक का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है—"**तेउक्काइया दुविहा पन्नत्ता**" हे भदन्त ! तैजस्कायिक दो प्रकार कहे गये है—"**तं जहा**" जैसे—'**सुहुम तेउक्काइया य बायरतेउक्काइया य**" सूक्ष्म तैजस्कायिक और बादर तैजस्कायिक, इनमें सूक्ष्मनामकर्म

જે જીવોના શરીર તૈજસ રૂપ હોય છે, તેઓને તૈજસ્કાયિક કહ્યા છે. આ જીવો ત્રસનામ કર્મના ઉદયવર્તિ હોય છે. ઔદારિક ત્રસ પ્રત્યક્ષ થીજ-સ્પષ્ટ પણાથી ત્રસત્વના કારણભૂત જે અભિસંધિ પૂર્વકની ગતિરૂપ લિંગ (ચિહ્ન) છે તેનાથી પ્રતીત થાય છે. જેઓ ઉષ્મા—ગરમી વિગેરેથી દુઃખી થઈને વિવક્ષિત સ્થાનમાંથી છાયા વિગેરેનુ સેવન કરવા માટે બીજા સ્થાન પર જાય છે તે ત્રસજીવો કહેવાય છે. આ ઔદારિક ત્રસ પ્રાણ દ્વીન્દ્રિયાદિ જીવ કહેવાય છે એટલે કે બે ઇન્દ્રિય વિગેરે જીવો ત્રસ પ્રાણ કહેવાય છે. બે ઇન્દ્રીય વાળા જીવોને ઔદારિક ત્રસ પ્રાણ કહ્યા છે.

"**से किं तं तेउक्काइया**" હે ભગવન્ તેજસ્કાયિક જીવોનું શું લક્ષણ છે ? અને તેના કેટલા ભેદો કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે—"**तेउक्काइया दुविहा पन्नत्ता**" હે ગૌતમ ! તેજસ્કાયિક જીવો બે પ્રકારના કહ્યા છે "**तं जहा**" તે આ પ્રમાણે છે "**सुहुमतेउक्काइया य बायरतेउक्काइया य**" સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક અને બાદર તેજસ્કાયિક તેમાં સૂક્ષ્મ નામકર્મના ઉદયથી સૂક્ષ્મપણું, અને બાદર નામકર્મના ઉદયથી બાદરપણું

वादरनामकर्मोदयाच्च न तु सूक्ष्मत्वम्—अल्पत्वम्, बादरत्वं च स्थूलत्वं वदरामलकवत्। उभयत्रापि च—शब्दौ स्वगतानेकभेदसूचकाविति **'से किं तं सुहुमतेउक्काइया'** अथ के ते सूक्ष्मतेजस्कायिकाः इति प्रश्नः, उत्तरयति-पूर्वातिदेशेन—**'सुहुमतेउक्काइया जहा सुहुमपुढवीकाइया'** सूक्ष्मतेजस्कायिकाः यथा—येन रूपेण सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः कथितास्तेनैव रूपेण ज्ञातव्याः। सस्थानद्वारे सूक्ष्मपृथिवीकायिकापेक्षया यद् वैलक्षण्यं तत्स्वयमेव दर्शयति—**'नवरं'** इत्यादिना, **'नवरं सरीरगा सूईकलावसंठिया'** नवरं केवलं सूक्ष्मतेजस्कायिकानां शरीराणि सूचीकलापसस्थानसस्थितानि भवन्ति। एतदतिरिक्तं सर्वमपि सहननादिकं सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यम्। च्यवनद्वारे सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः अनन्तरमुदवृत्य तिर्यक्षु मनुष्येषु च उत्पद्यन्ते,

---

के उदय से सूक्ष्मता और बादरनामकर्म के उदय से बादरता है सूक्ष्मता-अल्पता और बादरता—स्थूलता, बदर और आमलक की जैसी इनमें नहीं है। यहाँ दो चकार अपने २ अनेक भेदो को सूचन करने के लिये प्रयुक्त हुए है। **'से किं तं सुहुमतेउक्काइया"** हे भदन्त! सूक्ष्म तैजस्कायिको का वर्णन—कैसा है? उत्तर में प्रभु कहते है—हे गौतम! **"सुहुमतेउक्काइया जहा पुढवीकाइया"** जिस रूप से सूक्ष्मपृथिवीकायिकों का निरूपण किया गया है उसी रूप से इनका भी निरूपण जानना चाहिये संस्थानद्वार में ही सूक्ष्मपृथिवीकायिकों की अपेक्षा ऐसी भिन्नता है कि **"नवरं सरीरगा सूइकलावसंठिया"** इनके शरीर सूचिकलाप (सूइयों का पिण्ड) के जैसे सस्थान वाले है। इस अन्तर के अतिरिक्त और सब सूक्ष्मपृथिवीकायिक के जैसा ही जानना चाहिये। च्यवनद्वार में सूक्ष्मपृथिवीकायिक वहाँ से उद्वर्तित होकर तिर्यञ्च और मनुष्यों में उत्पन्न होते है, ऐसा कहा है किन्तु इस प्रकरण

કહ્યુ છે. સૂક્ષ્મતા—અલ્પપણું અને બાદરતા—સ્થૂલ પણું, બોર અને આમળાની માફક આમાં નથી. સૂત્રમા બે ચકાર કહ્યા છે, તે પોત પોતાના અનેક ભેદોનું સૂચન કરવા માટે પ્રયુક્ત કર્યા છે

"से किं त सुहुमतेउक्काइया" હે ભગવન્ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોનું વર્ણન કેવું છે? અર્થાત્ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકના કેટલાભેદ કહ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"सुहुमतेउक्काइया जहा पुढवीकाइया" જે પ્રમાણે સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકોનું કથન કરવામાં આવ્યુ છે, એજ પ્રમાણે આ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવોનું પણ કથન સમજી લેવું કેવળ સસ્થાન દ્વારના કથનમાજ સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયિકજીવોના કથન કરતા વિશેષતા છે તે એવી રીતે કે—"नवरं सरीरगा सूइकलावसंठिया" તેમના શરીર સૂચિકલાપ (સોઈના ગુચ્છા) જેવા સસ્થાન વાળા છે. આ અંતર સિવાય બીજું બધુ જ કથન સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિકોના કથન પ્રમાણે જ સમજવું.

ચ્યવન દ્વારમાં—સૂક્ષ્મપૃથ્વીકાયિક ત્યાંથી ઉદ્વર્તિત થઈને એટલે કે—ત્યાંથી નીકળીને તિર્યંચ અને મનુષ્યોમા ઉત્પન્ન થાય છે. તેમ કહ્યુ છે. પરંતુ આ પ્રકરણમાં સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક કેવળ તિર્યંચ ગતિમાજ ઉત્પન્ન થાય છે કેમકે—તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક માંથી

इत्युक्तम् अत्र तिर्यग्गतावेव सूक्ष्मतेजस्कायिकाः समुत्पद्यन्ते न तु मनुष्येषु समुत्पद्यन्ते, ते जीवा- तेभ्यो निःसृतानां मनुष्यगतौ उत्पादनिषेधात् ।

तदुक्तम्—"सत्तमिमहिनेरइया तेऊ वाऊ अणंतरुव्वट्टा ।
नवि पावे माणुस्सं तहेव असंखाउया सव्वे" ॥१॥

छाया—सप्तमीमहीनैरयिकास्तेजो वायुरनन्तरोद्वृत्ताः ।
नैव प्राप्नुवन्ति मानुष्यं तथैवासंख्यायुष्काः सर्वे ।।इति छाया,

गत्यागतिद्वारं स्वयमेव दर्शयति–'**एगगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता**' एकगतिकाः द्व्यागतिकाः प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः । सूक्ष्मतेजस्कायिकाः मृत्वा तिर्यग्गतावेव उत्पद्यन्ते अत सूक्ष्मतेजस्कायिका एकगतिकाः कथ्यन्ते, एकैव तिर्यग्रूपैव गतिर्येषां ते एकगतिका.. द्व्यागतिकाः तिर्यङ्मनुष्येभ्य आगत्य सूक्ष्मतेजस्कायिकेपूत्पादात् '**सेसं तं** शेषम् **चेव**' संस्थानच्यवनातिरिक्तं सर्वं तदेव- सूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रकरणवदेव ज्ञातव्यमिति ।

में सूक्ष्मतेजस्कायिक केवल तिर्यग्गति मे ही उत्पन्न होते है क्योंकि तेज और वायु से निकले हुए जीवों का मनुष्य गति में जाने का निषेध है–कहा भी है–"**सत्तमि महि नेरइया**" इत्यादि अर्थात् सातवीं नरकभूमि से उद्वृत हुए नैरयिक तथा तैजस्कायिक आर वायुकायिक तथा असंख्यात वर्ष की आयुवाले मनुष्य ये सब मरकर मनुष्य पर्याय को प्राप्त नहीं करते है '**एगगइया, दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता**" ये सूक्ष्म तैजस्कायिक जीव एक गतिवाले ही होते है अर्थात् सूक्ष्मतैजस्कायिक से मरा हुआ जीव केवल एक तिर्यञ्च गति में ही उत्पन्न होते हैं इसलिए ये एक गतिक–एक ही गति में जाने वाले कहे गये है । तिर्यञ्च और मनुष्य इन दो गतियों में से आकर के जीव इन सूक्ष्मतैजस्कायिक रूप से उत्पन्न होते है । इसलिये इन्हे द्व्यागतिक–दो गतियो से आने वाला कहा गया है । "**सेसं तं चेव**" संस्थानच्यवन इन से व्यतिरिक्त और सब कथन सूक्ष्मपृथिवीकायिक के प्रकरण के जैसा ही है "**से त्तं सुहुमतेउक्काइया**" यह सब कथन सूक्ष्मतैजस्कायिकों के सम्बन्ध में कहा है ।

नीકળેલા જીવો મનુષ્ય ગતિમાં જતા નથી. તેમ નિષેધ કરેલો છે. કહ્યું પણ છે કે- '**सत्तमि महि नेरइया** ઇત્યાદિ અર્થાત્ સાતમી નરકભૂમી થી નીકળેલા નૈરયિકો તથા તેજસ્કાયિકો અને વાયુકાયિકો તથા અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્ય વાળા મનુષ્ય આ બધા મરીને મનુષ્ય પર્યાય પ્રાપ્ત કરતા નથી '**एगगइया, दु आगइया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता** આ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક જીવ એક ગતિવાળાજ હોય છે અર્થાત્ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકમાંથી જીવ કેવળ એક તિર્યંચ ગતિમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેઓ 'એક- ગતિક' એકજ ગતિમાં જવાવાળા એ પ્રમાણે કહેલ છે તિર્યંચ અને મનુષ્ય એ બે ગતિ- યોમાંથી આવીને જીવ આ સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેઓને દ્વયા ગતિક બે ગતિયોમાંથી આવવાવાળા એ પ્રમાણે કહેલ છે. "**सेसं तं चेव**" સંસ્થાનદ્વાર અને ચ્યવન દ્વાર, ના કથન સિવાયનું બીજું બધું જ કથન સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાયના પ્રકરણમાં જે

उपसंहरन्नाह–'से त्तं' इत्यादि, 'से त्तं' सुहुमतेउक्काइया' ते एते सूक्ष्मतेजस्कायिका निरूपिता इति भावः ॥

सूक्ष्मतेजस्कायिकान्निरूप्य बादरतेजस्कायिकान् निरूपयितुं प्रश्नयन् आह–'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं बायरतेउक्काइया' अथ के ते बादरतेजस्कायिका इति प्रश्नः, उत्तरयति–'बायरतेउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता' बादरतेजस्कायिका अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, अनेकविधत्वमेव दर्शयति 'तं जहा' इत्यादिना, 'तं जहा' तद्यथा -'इंगाले जालेमुम्मुरे जाव सूरकंत मणिनिस्सिते' इंगालः (अङ्गारो वा) ज्वाला मुर्मुरो यावत्सूर्यकान्तमणिनिश्रितः, अत्र यावत्पदेनैतेषां ग्रहणं तथाहि–'इंगाले जाले मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी निग्घाए संघरिससमुट्ठिए' अङ्गारो ज्वाला मुर्मुरोऽर्चिरलातं शुद्धाग्निरुल्का विद्युदशनिर्निर्घातः सङ्घर्षसमुत्थित' इतिच्छाया । तत्र अङ्गारो विगतधूमजालोऽतिशयेन जाज्वल्यमानः काष्ठादि·

सूक्ष्मतेजस्कायिकों का वर्णन करके अब बादरतेजस्कायिकों का वर्णन किया जाता है– "से किं तं बायरतेउक्काइया हे भदन्त ! बादरतेजस्कायिकों का क्या स्वरूप है और ये कितने प्रकार के है ?–उत्तर में प्रभु कहते है–"बायरतेउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता" हे गौतम बादरतेजस्कायिक–अनेक प्रकार के कहे गये है । "तं जहा" जैसे–"इंगाले, जाले, मुम्मुरे, जाव सूरकंतमणिनिस्सिए" अङ्गार, ज्वाला, मुर्मुरावस्थापन्न अग्नि, यावत् सूर्यकान्तमणि से निर्गत अग्नि यहाँ यावत् पद से इन बादर तेजस्कायिको का ग्रहण हुआ है "इंगाले जाले, मुम्मुरे, अच्ची अलाए, सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी निग्घाए संघरिससमुट्ठिए" इनमें जो अग्नि धूम से रहित होती हैं और बिलकुल जाज्वल्यमान होती है वही अंगार रूप से कही गयी है वह्नि की जो शिखा है वह अथवा दीप की जो शिखा

પ્રમાણે કહ્યુ છે તેજ પ્રમાણે સમજવું "से त्तं सुहुमतेउक्काइया' આ પ્રમાણે આ સઘળું કથન સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોનું કહ્યું છે.

સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોનું વર્ણન કરીને આ બાદર તેજસ્કાયિકોનું વર્ણન કરવામાં આવે છે.–"से किं तं बायरतेउक्काइया" હે ભદન્ત ! બાદર તેજસ્કાયિકો કેટલા પ્રકારના છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે–"बायरतेउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! બાદર તેજસ્કાયિક જીવો અનેક પ્રકારના કહ્યા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે સમજવા "इंगाले, जाले, मुम्मुरे, जाव सूरकंतमणिनिस्सिए" અંગાર, જવાલા, મુર્મુરાવસ્થાવાળો અગ્નિ યાવત્ સૂર્યકાન્ત મણિમાંથી નીકળેલ આગ્નિ અહિંયા યાવત્ પદથી આ નીચે જણાવવામાં આવેલ બાદર તેજસ્કાયિકો ગ્રહણ કરાયા છે, "इंगाले जाले, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए, सुद्धागणी, उक्का, विज्जू, असणी, निग्घाए, संघरिससमुट्ठिए," આમાં ધુમાડા વિનાની જે અગ્નિ હોય છે, અને એકદમ તેજસ્વી હોય છે તેને અંગાર રૂપથી કહી છે અગ્નિની જે શિખા છે, તે અથવા દિવાની જે શિખા છે, તે જવાલા કહે

'जाले' ज्वाला—वह्निसंबद्धशिखा दीपशिखा वा 'मुम्मुरे' मुर्मुरः—मलिनीभूतेऽग्नौ भस्मान्वितो वह्निकणः 'अच्ची' अर्चिः—वह्न्यसंबद्धा ज्वाला 'अलाए' अलातमुल्मुकम् ज्वलत्काष्ठमित्यर्थः। 'सुद्धागणी' शुद्धाग्निः, तापितायःपिण्डादौ। 'उक्का' उल्का—विलक्षणतृणपुञ्जगता एकदिशातो दिगन्तरं प्रति गच्छन्ती विलक्षणतेजोमाला वा। 'विज्जू' विद्युत्—अनिन्धना मेघादिजनिता। 'असणी' अशनिः—इन्द्रवज्र इति लोकरूढः। 'निग्घाए' निर्घातो वैक्रियाशनिपातः। 'संघरिससमुट्ठिए' संघर्षसमुत्थितः-अरण्यादिकाष्ठनिर्मथनजनितः। 'सूरकंतमणिनिस्सिए' सूर्यकान्तमणिनिश्रितः प्रखरसूर्यकरस्पर्शे सति सूर्यकान्तमणेः सकाशात् जायमानोऽग्निः सूर्यकान्तमणि—निःश्रित इति। 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये अङ्गाराद्यतिरिक्ताः तथाप्रकारा अङ्गारादिसदृशा—

है वह ज्वाला है भस्मयुक्त अग्नि के भीतर जो अग्निकण होता है वह मुर्मुरबादर अग्निकायिक है, जो ज्वाला वह्नि से संबद्ध नहीं होती है वह अर्चि है किसी काष्ठखण्ड में अग्निलगाकर जो उसे चारों तरफ फिराने पर गोल चक्कर सा प्रतीत होता है वह उल्मुक है तापित अयःपिण्ड आदि में प्रविष्ट अग्निशुद्धाग्नि है तृण पुञ्ज के भीतर सिलगती हुई जो अग्नि है वह अथवा एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर जाती हुई जो विलक्षण तेजोमाला है वह उल्का है विना इन्धन के मेघ आदि से जनित जो प्रकाशपुंज जैसी अग्नि है वह विद्युत है, इन्द्रवज्र का नाम अशनि है विक्रियाजन्य जो अशनिपात है वह निर्घात है। रगड़ से जो अग्नि उत्पन्न होती है—अरणि काष्ठ आदि की रगड़ से जो अग्नि जंगल आदि में उत्पन्न हो जाती है वह संघर्ष समुत्थित अग्नि है। प्रखर सूर्य की किरणों के स्पर्श होने पर जो सूर्यकान्तमणि से अग्नि निकलती है वह सूर्यकान्तमणिनिश्रित अग्नि है तथा—'जे यावन्ने-

---

વાય છે. ભસ્મવાળા અગ્નિની અંદર જે અગ્નિકણ હોય છે, તેને મુર્મુર બાદર અગ્નિકાયિક કહેલ છે. જે જવાલા અગ્નિના સંબંધ વાળી ન હોય તેને અર્ચિ કહેવાય છે. કોઈ લાકડાના ટુકડામાં અગ્નિ લગાવીને તેને ચારે તરફ ફેરવવાથી જે ગોળ - ચકકર જેવું દેખાય છે, તે ઉલ્મુક કહેવાય છે તપાવેલા લોખંડના પિંડ વિગેરેમાં પ્રવેશેલ અગ્નિ શુદ્ધાગ્નિ કહેવાય છે. ઘાસના ઢગલામાં સળગતી જે અગ્નિ છે, તે અથવા એક દિશામાંથી બીજી દિશામાં જતી એવી વિલક્ષણ જે તેજોમાળા છે, તેને ઉલ્કા કહેવાય છે બળતણ વિના મેઘ વિગેરેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલ પ્રકાશ સમૂહ જેવી જે અગ્નિ છે, તે વિદ્યુત (વીજળી) કહેવાય છે. ઈન્દ્રના વજ્રનું નામ 'અશની' છે વિક્રિયાથી જે અશનિપાત થાય છે. તે નિર્ઘાત કહેવાય છે, રગડવાથી એટલે કે વસ્તુના ઘસવાથી જે અગ્નિ ઉત્પન્ન થાય છે, જેમકે ચકમક અથવા અરણિના કાષ્ટને ઘસવાથી જંગલ વિગેરેમાં જે અગ્નિ ઉત્પન્ન થાય છે, તે સંઘર્ષથી થયેલ અગ્નિને 'સંઘર્ષ સમુત્થિત અગ્નિ કહેવાય છે. પ્રખર સૂર્યના કિરણોના સ્પર્શથી સૂર્યકાન્ત મણિ વિગેરમાંથી જે અગ્નિ નીકળે છે, તે સૂર્યકાન્ત મણિ નિશ્રિત અગ્નિ કહેવાય છે. તથા "जे यावन्ने तहप्पगारा" આ કહેલ અગ્નિના ભેદો સિવાય જે આવા પ્રકારની અગ્નિ

स्तेऽपि बादरतेजस्कायिकतया प्रतिपत्तव्याः । 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते उपर्युक्ता अङ्गारादयः तथा अङ्गारादिभिन्ना अङ्गारादिसदृशाश्च तेजस्कायिकास्ते सर्वे समासतः संक्षेपेण द्विविधा.-द्विप्रकारका. प्रज्ञप्ताः-कथिताः । प्रकारद्वयमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च, पर्याप्तधर्मविशिष्टा अपर्याप्तधर्म विशिष्टाश्चेत्यर्थः ।

बादरतेजस्कायिकानां शरीरादिद्वारजातं निरूपयितुं प्रश्नयन् आह-'तेसि णं' इत्यादि, 'तेसि णं भंते ! जीवाण कइ सरीरगा पन्नत्ता' तेषां बादरतेजस्कायिकानां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तओ सरीरगा पन्नत्ता' त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, त्रैविध्यमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा तद्यथा-ओरालिए तेयए कम्मए' औदारिकं तैजसं कार्मणं च 'सेसं तं चेव' शेषम्-शरीरद्वारातिरिक्तमवगाहनासंहननद्वारं तदेव पृथिवीकायिकप्रकरणवदेव ज्ञातव्यम् । पृथिवीकायिकापेक्षया यदंशे वैलक्षण्यं तत्स्वयमेव दर्शयति -'सरीरगा सूइकलावसंठिया'

तहप्पगारा" जो और भी इन से अतिरिक्त इसी प्रकार की अग्नियाँ है वे सब अग्नियाँ भी बादर तैजस्कायिक है ये बादर तेजस्कायिक "ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" संक्षेप से दो प्रकार के कहे गये है । ये बादर तेजस्कायिक, चाहे अंगारादिरूप हों-चाहे उनसे भिन्न प्रकार के हों ये सब प्रर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो भेदवाले कहे गये हैं-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइसरीरगा पन्नत्ता' हे भदन्त । इन बादरतेजस्कायिको के कितने शरीर होते हैं ?-
उत्तर में प्रभु कहते है-"गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता" इनके तीन शरीर कहे गये हैं--"तं जहा" जैसे-"ओरालिए, तेयए, कम्मए" औदारिक शरीर, तैजसशरीर, और कार्मणशरीर, "सेसं तं चेव" शरीरद्वार से अतिरिक्त अवगाहना और संहनन द्वार पृथिवी-कायिक के प्रकरण जैसे ही है, परन्तु इनका शरीर और संस्थान जुदा प्रकार का होता है

હોય તે તમામ અગ્નિયો પણ બાદર તેજસ્કાયિક અગ્નિ કહેવાય છે. આ બાદર તેજસ્કાયિક અગ્નિ "ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલ છે, આ બાદર તેજસ્કાયિક ચાહે અંગાર વિગેરે રૂપે હોય અથવા તેનાથી ભિન્ન પ્રકારના હોય તે સઘળા પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના કહ્યા છે "तेसिं णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता" હે ભગવન્ આ બાદર તેજસ્કાયિકોને કેટલા શરીરો હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! આ બાદર તેજસ્કાયિકોના ત્રણ પ્રકારના શરીરો કહ્યા છે "तंजहा" તે આ પ્રમાણે છે "ओरालिए, तेयए, कम्मए", ઔદારિક, શરીર, તૈજસ શરીર અને કાર્મણ શરીર, "सेसं तं चेव" શરીર દ્વારના કથન સિવાય અવગાહના દ્વાર અને સંહનનદ્વારનું કથન પૃથ્વીકાયિકોના પ્રકરણમાં-પ્રમાણે સમજવું. પરંતુ આ બાદર તેજસ્કાયિકોના શરીરદ્વાર અને સંસ્થાન દ્વાર પૃથ્વીકાયિ-

बादरतेजस्कायिकानां शरीराणि सूचीकलापसंस्थितानि, सूचीकलापः–सूचीपुञ्जः तद्वत् संस्थितानि –सूचीकलापसंस्थानयुक्तानि भवन्ति । 'तिन्नि लेस्सा' तिस्रो लेश्याः-कृष्णनील कापोताख्या भवन्ति बादरतेजस्कायिकानाम् । 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तन्नि राइं दि ।इ' बादरतेजस्कायिकानां स्थितिः–आयुष्यकालो जघन्येनान्तमुर्हूर्त्तं भवति उत्कर्षेण तु त्रीणि रात्रिंदिवानी, पृथिवीकायिकानां तु जघन्योत्कर्षाभ्यां स्थितिरन्तमुहूर्तप्रमाणैव कथिता अत्रतूत्कर्षांशे भेदो भवति, इति 'तिरियमणुस्सेहिंतो उववाओ' बादरतेजस्कायिकानामुपपातस्तिर्यङ् मनुष्येभ्यो भवति तिर्यङ्मनुष्याभ्यामुद्वृत्त्याऽत्र गच्छन्तीत्यर्थः । 'सेसं तं चेव' शेषम्–संस्थानस्थित्युपपाता-तिरिक्तं द्वारजातं सर्वमपि तदेव यथा बादरपृथिवीकायिकानां कथितं तेनैव रूपेण ज्ञातव्यम् 'एगगइया दुआगइया' एकगतिका द्व्यागतिका बादरतेजस्कायिका भवन्ति, इतउद्वृत्य केवलं तिर्यग्गतावेव गच्छन्ति मनुष्यगतौ गमनं न भवति । यत इतउद्वृत्यैकस्यामेव तिर्यग्गतौ गच्छन्ति

जैसे "सरीरगा सूईकलावसंठिया" बादरतेजस्कायिको के शरीर सूचिकलाप नामक संस्थान से युक्त होते है । फिर लेश्यास्थिति और उपपात में भी विलक्षणता है जैसे—"तिन्नि-लेस्साओ" इनमें कृष्ण, नील, कापोत ये तीन लेश्याएँ होती है "ठिई जहन्नेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं" इनकी स्थिति जघन्य एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और उत्कृष्ट से तीन रात दिन की होती है । सूक्ष्म पृथिवीकायिकजीवों की स्थिति तो जघन्य और उत्कृष्ट से केवल एक अन्तर्मुहूर्त्त की ही कही गई है । परन्तु यहाँ उत्कृष्ट अंश में भेद हैं । "तिरियमणुस्सेहिंतो उववाओ" बादर तेजस्कायिको का उत्पाद तिर्यञ्च और मनुष्य गति से मर कर आये हुए जीवो से ही होता है । "सेसं तं चेव" लेश्यास्थिति और उपपात से अतिरिक्त सब द्वार जैसे बादर पृथिवीकायिक के प्रकरण में प्रकट किये गये है वैसे ही यहाँ पर भी जानना चाहिये । ये "एगगइया दुआगइया" एकगतिक होते है

કોથી જુદા પ્રકારનું હોય છે. જેમકે- "सरीरगा सूई कलावसंठिया" બાદર તેજસ્કાયિકોનું શરીર સૂચિકલાપ-સોઈના ભારા–ગુચ્છા નામના સંસ્થાન વાળું હોય છે. આ સિવાય લેશ્યાદ્વાર, સ્થિતિદ્વાર, અને ઉપપાત (ઉત્પત્તી) દ્વારમા પણ ભિન્નતા છે જેમકે-"तिन्नि लेस्सा" આ બાદર તેજસ્કાયિકોને કૃષ્ણ, નીલ, અને કાપોત એ ત્રણજ લેશ્યાઓ હોય છે. "ठिई जहण्णेणंअंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं" તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતમુહૂર્તની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ રાત્રિ દિવસની હોય છે પરંતુ પૃથ્વીકાયિક જીવોની સ્થિતિ તો જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી કેવળ એક અંતર્મુહૂર્તની જ કહેલી છે પરંતુ અહિયાં ઉત્કૃષ્ટ અંશમા ભેદ છે "तिरिक्खमणुस्सेहिंतो उववाओ" બાદર તેજસ્કાયિકોનો ઉપપાત-ઉત્પત્તી તિર્યંચ અને મનુષ્ય ગતિથી મરીને આવેલા જીવોમાંથીજ હોય છે "सेसं तं चेव" લેશ્યા દ્વાર સ્થિતિદ્વારના કથન સિવાયનું બધાજદ્વારોનું કથન બાદર પૃથ્વીકાયિકોનું જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, તેજ પ્રમાણેનુ સમજવું આ "एगगइया दुआगइया" એક ગતિમાં જવા-વાળા એટલે કે તેઓ મરીને કેવળ એક તિર્યંચ ગતિમાં જવા વાળા હોય છે. મનુષ્ય

अत एकगतिका इमे कथ्यन्ते इति भावः। द्वयागतिकाः द्वाभ्यां तिर्यङ् मनुष्याभ्यामागच्छन्तीत्यतो द्वयागतिकाः, बादरतेजस्कायिकास्तिर्यङमनुष्यगतित इहा गच्छन्तीति। 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः कथिता इति। प्रकरणमुपसंहरन्नाह–'सेत्तं इत्यादि, 'सेत्तं' तेउक्काइया' ते एते बादरतेजस्कायिका' कथिता स्तथा समान्यतस्तेजस्कायिका निरूपिता इति ॥सू० १६॥

कथितास्तेजस्कायिका' सम्प्रति वायुकायिकानभिधातुमाह–'से किं तं' इत्यादि।

मूलम्—से किं तं वाउक्काइया ? वाउक्काइया दुविहा पन्नत्ता. तं जहा सुहुमवाउक्काइया य. बायरवाउक्काइया य। सुहुम वाउक्काइया जहा-तेउक्काइया. नवरं सरीरा पडागसंठिया. एगगइया दुआगइया. परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता। सेत्तं सुहुमवाउक्काइया। सेकिं तं बायरवाउकाइया ? बायरवाउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा पाईणवाए पडीणवाए, एवं जे यावन्ने तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता तं जहा–ओरालिए वउ-

---

अर्थात् ये मरकर केवल एक तिर्यञ्च गति में ही जाते हैं मनुष्य गति में नहीं क्योंकि–"सत्तमि महि नेरइया" इत्यादि, आगम का वचन पहले कहे गये हैं। अतः ये किसी ही एक तिर्यगति में जाते हैं इसलिये इन्हे एकगतिक कहा गया है। द्वयागतिक ये इसलिये कहे गये हैं कि ये इस रूप से तिर्यञ्च और मनुष्य गति से आये हुए जीवों में से उत्पन्न होते है। "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" प्रत्येक शरीरी असंख्यात कहे गये हैं। 'सेत्तं तेउक्काइया" इस प्रकार से बादर तेस्कायिको का निरूपण हुआ इस की समाप्ति होते ही सामान्य रूप से तेजस्कायिको का निरूपण समाप्त हुआ। सूत्र ॥१६॥

ગતિમા જતા નથી. કેમકે—"सत्तम्मि महि नेरइआ" ઇત્યાદિ આગમનુ વચન પહેલા કહ્યુ છે તેથી એ આગમવચન પ્રમાણે તેઓ કોઈપણ એક તિર્યંચ ગતિમાં જાય છે તેથી તેઓને 'એકગતિક કહેલા છે. દ્વયાગતિક-તેઓને બે ગતિથી આવનારા એ માટે કહ્યા છે કે—તેઓ તિર્યંચ અને મનુષ્ય આ બે ગતિમાંથી આવેલા જીવોમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે, "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" પ્રત્યેક શરીરી અસંખ્યાત કહ્યા છે. "से त्तं आउक्काइया" આ પ્રમાણે બાદર તેજસ્કાયિકોનુ' નિરૂપણ કર્યું છે આ બાદર તેજસ્કાયિકોના કથનની સમાપ્તિ થતાં જ સામાન્ય પણાથી તેજસ્કાયિકોનું કથન સમાપ્ત થયું. ॥સૂ૦ ૧૬॥

व्विए, तेयए, कम्मए, सरीरगा पडागसंठिया, चत्तारि समुग्घाया, वेयणासमुग्घाए। कसायसमुग्घाए मारणांतियसमुग्घाए वेउव्विय समुग्घाए। आहारो निव्वाघाएणं छद्दिसि, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसि सिय पंचदिसिं। उववाओ देवमणुयनेरइएसु नत्थि। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं-उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं, सेसं तं चेव, एगगइया दु आगइया, परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो ! सेत्तं बायर वाउक्काइया, सेत्तं वाउक्काइया" ॥सू० १७॥

छाया—अथ के ते वायुकायिकाः? वायुकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सूक्ष्मवायुकायिकाश्च बादरवायुकायिकाश्च। सूक्ष्मवायुकायिकाः यथा तेजस्कायिकाः। नवरं शरीराणि पताकासंस्थितानि एकगतिका द्वयागतिकाः प्रत्येके असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः। ते एते सूक्ष्मवायुकायिकाः। अथ के ते बादरवायुकायिकाः? बादरवायुकायिकाः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-प्राचीनवातः प्रतीचीनवातः, एवं ये चान्ये तथाप्रकाराः, ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि? गौतम! चत्वारि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकं वैक्रियं, तैजसं कार्मणं, शरीराणि पताकासंस्थितानि। चत्वारः समुद्घाताः, वेदनासमुद्घातः, कषायसमुद्घातो मारणान्तिकसमुद्घातो वैक्रियसमुद्घातः। आहारो निर्व्याघातेन षड्दिशि, व्याघातं प्रतीत्य स्यात् त्रिदिशि, स्यात् चतुर्दिशि, स्यात् पञ्चदिशि। उपपातो देवमनुजनैरयिकेषु नास्ति। स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रीणि वर्षसहस्राणि। शेषं तदेव। एकगतिका द्वयागतिकाः परीता असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। ते एते बादरवायुकायिकाः। ते एते वायुकायिकाः ॥ सू० १७ ॥

टीका:—'से किं तं वाउक्काइया' अथ के ते वायुकायिकाः, वायुकायिकानां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति-'वाउकाइया दुविहा पन्नत्ता' वायुकायिकजीवाः

तेजस्कायिकों को कह कर अब वायुकायिकों का निरूपण करते हैं—

"से किं तं वाउक्काइया-इत्यादि। सूत्र १६"

'से किं तं वाउक्काइया' हे भदन्त! वायुकायिकों का क्या लक्षण है और इनके कितने भेद हैं? उत्तर-में प्रभु कहते है-"वाउक्काइया दुविहा पन्नत्ता" हे गौतम! वायु-

---

તેજસ્કાયિકોનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર વાયુકાયિકોનું નિરૂપણ કરે છે—"से किं तं वाउक्काइया" ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—"से किं तं वाउक्काइया" હે ભગવન્ આ વાયુકાયિકોનું શું લક્ષણ છે? અને તેઓના કેટલા ભેદ હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે-

द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः, वायुरेव कायः शरीरं येषां ते वायुकायाः वायुकाया एव वायुकायिका स्ते च द्विप्रकारका भवन्तीत्युत्तरम् । द्वैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—सुहुमवाउक्काइया य बायरवाउक्काइया य' सूक्ष्मवायुकाश्च बादरवायुकायिकाश्च सूक्ष्मत्वं बादरत्वं च तादृशनामकर्मोदयात् । तत्र सूक्ष्मवायुकायिकान् दर्शयितुमाह—'सुहुम०' इत्यादि, 'सुहुमवाउक्काइया' जहा सुहुमतेउक्काइया' सूक्ष्मवायुकायिका यथा सूक्ष्मतेजस्कायिकाः, यथा सूक्ष्मतेजस्कायिकानां शरीरादि च्यवनान्तद्वाराणि कथितानि तथैव सूक्ष्मवायुकायिकानामपि तानि द्वाराणि तथैव वक्तव्यानि । केवलं यदंशे वैलक्षण्यं तद्दर्शयति—'णवरं' इत्यादि, 'णवरं सरीरा पडागसंठिया' नवरं केवलं सूक्ष्मवायुकायिकानां शरीराणि पताकासंस्थानयुक्तानि भवन्तीति ज्ञातव्यम् । अन्यत्सर्वं सूक्ष्मपृथिवीकायिकवदेव ज्ञातव्यम् । 'एगगइया दुआगइया' एकगतिका द्व्यागतिकाः, सूक्ष्मवायुकायिकात् उद्वृत्य तिर्यग् गतिमात्रे गमनादेकगतिकाः, तथा तिर्यङ्मनुष्यगतिभ्य उद्वृत्य सूक्ष्मवायुकायिके आगमनाद्द्व्यागतिकाः

कायिक दो प्रकार के कहे गये हैं—वायु ही जिन जीवों का शरीर होता है वे वायुकाय हैं और वायुकाय ही वायुकायिक हैं । ये इस प्रकार से दो प्रकार के हैं—"सुहुमवाउक्काइया य बायर वाउक्काइया य" सूक्ष्म वायुकायिक और बादर वायुकायिक यहां पर भी सूक्ष्मता और बादरता सूक्ष्म और बादर नामकर्म के अधीन है इनमें 'सुहुमवाउक्काइया जहा सुहुमतेउक्काइया" सूक्ष्मवायुकायिकों का वर्णन सूक्ष्म तेजस्कायिकों के जैसा ही है. अतः सूक्ष्मतेजस्कायिकों के जिस प्रकार से शरीरादि च्यवनान्त द्वार वर्णित हुए हैं. उसी प्रकार से इनके भी ये द्वार वर्णित कर लेना चाहिये। परन्तु "सरीरा पडागसंठिया" इनके शरीर पताका के जैसे आकार वाले होते हैं। बाकी का और सब कथन सूक्ष्मपृथिवीकायिकों के जैसे ही है। "एगगइया दुआगइया" ये जीव एक गतिक होते हैं, क्योंकि सूक्ष्मवायुकायिक से उद्वृत हुए जीव केवल एक तिर्यगगति में ही उत्पन्न होते हैं। तथा तिर्यञ्च और मनुष्य गति से

"वाउक्काइया दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ વાયુકાયિક જીવો બે પ્રકારના કહ્યા છે. "तं जहा" તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે "सुहुम वाउक्काइया य बायर वाउक्काइया य" સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક અને બાદર વાયુકાયિક અહિયાં પણ સૂક્ષ્મ પણું અને બાદર પણુ સૂક્ષ્મ અને બાદર નામકર્મ ને અધીન છે તેમ સમજવું. તેમાં "सुहुम वाउक्काइया जहा सुहुम तेउक्काइया" સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોનું વર્ણન સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોના કથન પ્રમાણે જ છે. તેથી સૂક્ષ્મ તેજસ્કાયિકોના શરીર દ્વારથી લઈને ચ્યવનદ્વાર સુધીનુ જે પ્રમાણે કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે આ સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોના તે બધાજ દ્વારોનું કથન સમજવું પરંતુ "सरीरा पडागसंठिया" તેઓનું શરીર પતાકા-ધ્વજાના આકાર જેવુ હોય છે તે આ કથન સિવાય બાકીનું સઘળું કથન સૂક્ષ્મ પૃથ્વીકાય જીવોના કથન પ્રમાણે છે તેઓ "एगगइया दुआगइया" આ જીવો એક ગતિવાળા હોય છે, કેમકે સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકો માંથી નીકળેલા જીવો કેવળ એક તિર્યંગ્ગતિમાં જ

सूक्ष्मवायुकायिकाः कथ्यन्ते इति । **'परित्ता असंखेज्जा'** प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः सूक्ष्मवायुकायिकाः प्रज्ञप्ताः । सूक्ष्मवायुकायिकानुपसंहरन्नाह—**'सेत्तं'** इत्यादि, **'सेत्तं सुहुमवाउकाइया'** ते एते सूक्ष्मवायुकायिकाः कथिता इति ॥

सूक्ष्मवायुकायिकान्निरूप्य बादरवायुकायिकान्निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह—**'से किं तं'** इत्यादि, **'से किं तं बायरवाउकाइया'** अथ के ते बादरवायुकायिकाः, बादरवायुकायिकानां किं लक्षणं कियन्तश्चभेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति—**'बायरवाउकाइया' अणेगविहा पन्नत्ता'** बादरवायुकायिकाः जीवा अनेकविधा—अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिता । अनेकविधत्वमेव दर्शयति—**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा—**'पाईणवाए पडीणवाए'** प्राचीनवातः प्रतीचीनवातः **'एवं जे यावन्ने तहप्पगारा'** एवम्—प्राचीनादिवातवदेव ये चान्ये—प्राचीनवातसदृशास्तथा प्राचीनवातभिन्ना ये वायवः ते सर्वेऽपि बादरवायुकायिकतया ज्ञातव्याः, यथा—दक्षिणवातः, उत्तरवात इत्यादि, **'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** ते पूर्वोक्ताः प्राचीनादिवाता समासतः—

उद्वृत्त हुए जोव ही इस अवस्था में आकर उत्पन्न होते है। इसलिये इन्हें द्व्यागतिक कहा गया है। **"परित्ता असंखेज्जा"** प्रत्येक शरीरी असंख्यात होते हैं। **"सेत्तं सुहुमवाउक्काइया** इसप्रकार से यह सूक्ष्म वायुकायिकों का निरूपण है।

बादर वायुकायिकों का निरूपण इस प्रकार से हैं—**"से किं तं बायरवाउक्काइया"** हे भदन्त ! बादरवायुकायिकों का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद है ! उत्तर में प्रभु कहते हैं— **"बायरवाउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता"** हे गौतम ! बादरवायुकायिक जीव अनेक प्रकार के कहे गये हैं। **"तं जहा"** जैसे **'पाईणवाए पडीणवाए"** प्राचीन वायु प्रतीचीन वायु इसी प्रकार **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** जो और भी प्राचीन आदि वायु के जैसे तथा प्राचीन आदि वायु से भिन्न वायु है वे सब बादर वायुकायिक रूप से ही माने गये हैं। जैसे —दक्षिण-वायु, उत्तर वायु इत्यादि. **"ते समासओ दुविहा पन्नत्ता"** ये सब वायु सक्षेप से दो प्रकार के

ઉત્પન્ન થાય છે, તથા તિર્યંચ અને મનુષ્ય ગતિમાથી નીકળેલા જીવોજ આ અવસ્થામા આવીને ઉત્પન્ન થાય તે, તેથી તેઓને 'દ્વયાગતિક' બે ગતિમાંથી આવવાવાળા કહેલા છે. **'परित्ता असंखेज्जा'** પ્રત્યેક શરીરી અસંખ્યાત હોય છે **"से त्तं सुहुम वाउक्काइया"** આ પ્રમાણે આ સૂક્ષ્મ વાયુકાયિક જીવોનું નિરૂપણ છે.

બાદર વાયુકાયિકોનું નિરૂપણ આ પ્રમાણે છે.— **'से किं तं बायरवाउक्काइया"** ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભગવન્ બાદર વાયુકાયિક જીવોનું શું લક્ષણ છે ? અને તેના કેટલા ભેદો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—**"बायर वाउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! બાદર વાયુકાયિક જીવો અનેક પ્રકારના કહેલા છે **"तं जहा"** તે આ પ્રમાણે છે **पाईणवाए पडीणवाए"** પ્રાચીન વાયુ પ્રતીચીન વાયુ વિગેરે **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** બીજા પણ જે પ્રાચીન વાયુ વિગેરેના જેવા

संक्षेपेण द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः- कथिताः । 'तं जहा' तद्यथा—'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्च पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विविधा भवन्तीत्यर्थः बादरवायुकायिकविषये प्रज्ञापनायामेवं कथितम् तथाहि—'से किं तं वायरवाउकाइया ? बायरवाउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा पाईणवाए पडीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उक्कावाए अहेवाए तिरियवाए विदिसिवाए वाउब्भामे वाउक्कलिया मंडलियावाए उक्कलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टगवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए जे यावन्ने तहप्पगारा' ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य इत्यादि, । एषां व्याख्या—'पाईणवाए' यो वायुः पूर्वदिश समागच्छति, स प्राचीनवातः, एवं पश्चिमदिशात आगच्छति यः स प्रतीचीनवातः, दक्षिणदिशातः आगच्छति यः स दक्षिणवातः, य उत्तरदिशात आगच्छति स उदीचीनवात', ऊर्ध्वमुद्गच्छन् यो वाति स ऊर्ध्ववात , एवमधोवाततवातावपि तिर्यग् वक्तव्यौ । विदिग्भ्यो

कहे गये हैं—"तं जहा" जैसे—"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" पर्याप्त वायुकायिक और अपर्याप्त वायुकायिक बादर वायुकायिक के सम्बन्ध में प्रज्ञापना सूत्र में ऐसा कहा गया है—"से किं तं वायरवाउक्काइया" वायरवाउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता "तं जहा—पाईणवाए, पडीणवाए, दाहिणवाए उदीणवाए, उड्ढवाए, अहेवाए, तिरियवाए' विदिसिवाए, वाउब्भामे, वाउक्कलिया, मंडलियावाए, उक्कलियावाए, गुंजावाए, झंझावाए' संवट्टगवाए, घणवाए, तणुवाए, सुद्धवाए, जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता—तं जहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगा य" जो वायु प्राची—पूर्व दिशा से आता है वह प्राचीन वायु है. इसी प्रकार जो वायु प्रतीची—पश्चिम दिशा से आता है वह प्रतीचीन वायु है । जो वायु दक्षिण दिशा से आता है वह दक्षिण वायु है, जो उत्तर दिशा से आता है वह उदीचीन वायु है । जो वायु ऊपर

પણુ પ્રાચીન વાયુથી બીજા પ્રકારના વાયુઓ છે. તે બધાને બાદર વાયુ કાયિક પણાથી જ માનેલા છે જેમકે દક્ષિણુ વાયુ, ઉત્તર વાયુ વિગેરે "ते समासओ दुविहा पण्णत्ता" આ બધા વાયુ સંક્ષેપ થી બે પ્રકારના કહ્યા છે "तं जहा" તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે સમજવા 'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" પર્યાપ્ત વાયુકાયિક અને અપર્યાપ્ત વાયુકાયિક બાદર વાયુકાયિક ના સંબંધમાં પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં એવું કહ્યુ છે કે—"से किं तं बायर वाउक्काइया, बायर वाउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता" तं जहा" पाईणवाए, पडीणवाए, दाहीणवाए, उदीणवाए, उड्ढवाए अहेवाए विदिसिवाए, वाउब्भामे, वाउक्कलिया, मंडलियावाए, उक्कलियावाए, गुंजावाए, झंझावाए, संवट्टगवाए, घणवाए तणुवाए, सुद्धवाए, जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता—'तं जहा' पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य" આમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—હે ભગવન્ બાદર વાયુ કાયિકોનું શું સ્વરૂપ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે. કે હે ગૌતમ ! બાદરવાયુકાયિકો અનેક પ્રકારના કહ્યા છે, તે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે જે વાયુ પ્રાચી કહેતા પૂર્વ દિશાઆથી આવે છે, તે પ્રાચીન વાયુ કહેવાય છે અને એજ પ્રમાણે જે વાયુ પ્રતીચી—પશ્ચિમ દિશાઆંથી આવે છે, તે વાયુ પ્રતીચીન વાયુ છે જે વાયુ દક્ષિણ દિશામાથી આવે છે તે વાયુ દક્ષિણવાયુ કહેવાય છે. જે વાયુ ઉત્તર

य आगच्छति स विदिग्वातः । 'वाउब्भामे' वातोद्भ्रामः, अनवस्थितो वातोद्भ्रामः, 'वाउक्कलिया' वातोत्कलिका यो नीचैर्गच्छति स वायुर्वातोत्कलिका कथ्यते, 'मंडलियावाए' मण्डलिकावातः—मूलत आरभ्य प्रचुरतराभिर्मण्डलिकाभिर्मिश्रितो मण्डलाकारो वातः, 'गुंजावाए' गुञ्जावातः यो गुञ्जन् शब्दं कुर्वन् वाति स० तथा, 'झंझावाए' झंझावातः, सवृष्टिको वातः अशुभनिष्ठुरो वा वातः, 'संवट्टगवाए' संवर्त्तकवातः तृणादिसंवर्त्तनस्वभावो वातः, युगान्तकालभावी वा वातः प्रलयकालभावीत्यर्थः 'जुगंत सरिसं संवट्टवायं विउव्विऊण' इति वचनात् 'घणवाए' घनवात—घनपरिणामो वातो रत्नप्रभा पृथिव्याद्यधोदेशे विद्यमानः । 'तणुवाए' तनुवातः विरलपरिणामः घनवातस्याधः स्थितः । 'सुद्धवाए' शुद्धवातो मन्दस्तिमितः 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये तथाप्रकाराः, ये वायवः उपरोक्तवायुभिन्नाः उपरोक्तवातसदृशाश्च ते

में बहता है वह ऊर्ध्व वायु है, जो वायु नीचे की ओर बहता है वह अधोवायु है। जो वायु तिरछा बहता है वह तिर्यग् वायु है। विदिशाओं से जो वायु आता है वह विदिग्वायु है। जो वायु अनवस्थित होता है वह वातोद्भ्रम वायु है नीचे की ओर जाता हुआ वायु उत्कलिकावात है प्रचुर मंडलिकाओं से मिश्रित होकर मण्डलाकार जो वायु है वह मण्डलिकावात है। शब्द करता हुआ जो वायु बहता है वह गुञ्जावात है। वृष्टि के समय जो वायु चलता है वह वृष्टि से मिश्रित वायु झंझावात है। युग के अन्त में प्रलयकाल में जो वायु चलता है वह संवर्त्तक वायु है—जैसे कहा है—'जुगंतसरिसं संवट्टवायं विउव्विऊणं' इति रत्नप्रभा पृथिवी आदि के अधोदेश में जो घनपरिणाम वाला वात है वह घनवात है। घनवात के अधोदेश में रहा हुआ जो वात है वह तनुवात है। मन्द स्तिमित वायु का नाम शुद्ध वात है। तथा इसी प्रकार के जो और भी

દિશાઓથી આવે છે, તે વાયુ ઉદીચીન વાયુ કહેવાય છે જે વાયુ ઉપર વાય તે ઉર્ધ્વવાયુ કહેવાય છે અને જે વાયુ નીચેની તરફ વાય છે, તે વાયુ અધો વાયુ કહેવાય છે જે વાયુ તિરછો (વાંકો ચુકો) વાય છે, તે તિર્યગ્ વાયુ કહેવાય છે. વિદિશાઓમાંથી જે વાયુ આવે છે તે વિદિગ્ વાયુ કહેવાય છે જે વાયુ અનવસ્થિત-અસ્થિર હોય છે તે વાયુ વાતોદ્ભ્રમવાયુ કહેવાય છે નીચેની તરફ જતો વાયુ ઉત્કાલિકા વાયુ કહેવાયછે. અનેક મંડલિકાઓથી મિશ્રિત થઈને મંડલાકાર જે વાયુ વાય છે, તેને મંડલિકા વાયુ કહેવાય છે. શબ્દ કરતો થતો જે વાયુ વહે છે, તે ગુંજાવાત કહેવાય છે વસાદ ના સમયે જે વાયુ ચાલે છે, તે વસાદથી મિશ્રિત થયેલો વાયુ ઝંઝાવાત કહેવાય છે. યુગના અંતમાં એટલે પ્રલયકાળમાં જે વાયુ ચાલે છે, તે સંવર્તક વાયુ કહેવાય છે. જેમકે કહ્યું છે કે—"जुगंत-सरिसं संवट्टवायं विउव्विऊणं" ઇતિ. રત્ન પ્રભા વિગેરે પૃથ્વીના અધો ભાગમાં ઘન પરિણામ વાળો જે વાયુ છે તે ઘનવાત કહેવાય છે. ઘનવાતના નીચેના પ્રદેશમાં રહેલો જે વાયુ છે, તે તનુવાત કહેવાય છે. મન્દ-સ્તિમિત વાયુનું નામ શુદ્ધ વાયુ કહેવાય છે.

सर्वे वायुकायिकतया प्रतिपत्तव्याः । 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य' ते उपरोक्ता वाताः समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्ताकाश्च ॥

सम्प्रति बादरवायुकायिकानां शरीरादि द्वारचिन्तनाय प्रश्नयन्नाह-'तेसि णं भंते ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि कथितानीति शरीरद्वारे प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता' चत्वारि शरीराणि प्रज्ञप्तानि-कथितानि 'तं जहा' तद्यथा-'ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए' औदारिकं वैक्रियं तैजसं कार्मणं च, एतच्छरीरचतुष्टयं बादरवायुकायिकानां वैक्रियशरीरस्याधिकस्यापि संभवादिति, । 'सरीरगा पडागसंठिया' शरीराणि बादरवायुकायिकानां पताका संस्थानसंस्थितानि भवन्ति । 'चत्तारि समुग्घाया, वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मरणांतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए'

वात है तथा इनसे भिन्न जो और भी वायु है वे सब वायुकायिक है । ये—वायुकायिक जीव पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के हैं ।

अब बादर वायुकायिकों के शरीरादि द्वारों के विषय में गौतम स्वामी प्रभु से ऐसा पूछते है—"ते सिणं भंते" ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता" हे भदन्त ! इन बादर वायुकायिकों के कितने शरीर होते हैं ' ऐसा यह शरीरद्वार में गौतम का प्रश्न हैं—इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता" हे गौतम ! बादर वायुकायिकों के चार शरीर होते हैं "तं जहा" जैसे-"ओरालिए वेउव्विए, तेयए, कम्मए" औदारिक, वैक्रिय, तैजस, और कार्मण यहां बादर वायुकायिक जीवों के एक वैक्रिय शरीर अधिक कहा गया है । क्योंकि उसकी यहां संभावना है । "सरीरगा पडागसंठिया": इन बादर वायुकायिक जीवों के शरीर संस्थान पताका के जैसा-होता है । "चत्तारि समुग्घाया" इनके चार समुद्घात होते हैं जिनके

આ કહેલ પ્રકારથી બીજા પણ જે વાયુઓ હોય છે ત બધા વાયુકાયિકો જ કહેવાય છે. આ વાયુ કાયિકજીવો, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના થાય છે

હવે બાદર વાયુકાયિકોના શરીર વિગેરે દ્વારોના સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—"तेसिं णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता" હે ભગવન્ આ બાદર વાયુકાયિકોના કેટલા શરીરો હોય છે ? આ પ્રમાણે આ શરીર દ્વારના સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામીનો પ્રશ્ન છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! બાદર વાયુકાયિકોને ચાર શરીર હોય છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. જેમકે—"ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए," ઔદારિક, વૈક્રિય, તૈજસ અને કાર્મણ. અહિયાં બાદર વાયુકાયિક જીવોને એક વૈક્રિય શરીર અધિક કહેલ છે. કેમકે અહિંયાં તેની સંભાવના છે. "सरीरगा पडागसंठिया" આ બાદર વાયુકાયિક જીવોને શરીરનું સંસ્થાન પતાકા-ધજાના જેવું હોય છે. "चत्तारि समुग्घाया" આ વાયુકાયિક જીવોને

बादरवायुकायिकानां चत्वारः समुद्घाता भवन्ति तद्यथा–वेदनासमुद्घातः प्रथमः १, कषायसमुद्घातो द्वितीयः २, मारणान्तिकसमुद्घात स्तृतीयः ३, वैक्रियसमुद्घातश्च चतुर्थः ४, । **'आहारो निव्वाघाएणं छद्दिसिं'** बादरवायुकायिकानामाहारो निर्व्याघातेन षड्दिशि लोकमध्ये स्थितत्वात् । **'वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं'** व्याघातं प्रतीत्य–व्याघातमपेक्ष्य तु स्यात्–कदाचित् त्रिदिशि, त्रिदिग्भ्यः आगतान् पुद्गलानाहरन्ति, स्यात्–कदाचित् चतुर्दिशि, स्यात्–कदाचित पञ्चदिशि व्याघातो लोकनिष्कुटरूपएव, बादरवायुकायिकानां लोकनिष्कुटादौ अपि सभवादिति । **उववाओ देवमणुयनेरइएसु णत्थि'** बादरवायुकायिकानामुपपातो देवमनुजनैरयिकेषु नास्ति न भवति, केवलं तिर्यग् गतावेवोपपातो भवतीति ॥ **'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं'** स्थितिः आयुष्कालो बादरवायुकायिकानां जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण त्रीणि वर्षसहस्राणि भवतीति । **'सेसं तं चेव'** शेषं

नाम ये हैं–वेदना समुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणातिकसमुद्घात और वैक्रिय समुद्घात **"आहारो निव्वाघाएणं छद्दिसिं"** इन बादर वायुकायिक जीवों का आहार व्याघात के अभाव में छहो दिशाओं में से आगत पुद्गल द्रव्यों का होता है । क्योंकि ये लोक के मध्य में स्थित होते हैं । **"वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं"** और जब व्याघात होता है उस समय इनका आहार कदाचित् तीन दिशाओं से कदाचित चार दिशाओं से, और कदाचित् पांच दिशाओ में से आगत पुद्गल द्रव्यों का होता है । वहां व्याघात लोक निष्कुट रूप ही है । क्योंकि बादरवायुकायिक लोकनिष्कुट आदि में भी पाये जाते हैं । **"उववाओ देवमणुयनेरइएसु नत्थि"** इनका उत्पाद देव, मनुष्य और नैरयिक इनमें नहीं होता है । केवल तिर्यग्गति में ही होता है । **"ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं"** इन बादर वायुकायिक जीवो की स्थिति जन्य से एक अन्तर्मुहूत्त की होती है और उत्कृष्ट से तीन हजार वर्ष की होती है । **"सेसं तं चेव"** शरीर, संस्थान, समुद्घात,

---

ચાર સમુદ્ઘાતો હોય છે, જેના નામો આ પ્રમાણે છે વેદના સમુદ્ઘાત ૧, કષાય સમુદ્ઘાત ૨, મારણાંતિક સમુદ્ઘાત ૩, અને વૈક્રિય સમુદ્ઘાત **"आहारो निव्वाघाएणं छद्दिसिं"** આ બા વાયુકાયિક જીવોનો આહાર વ્યાઘાતના અભાવમાં છ એ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો હોય છે. કેમકે–આ લોકની મધ્યમાં રહેલા છે **"वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं"** અને જ્યારે વ્યાઘાત થાય છે, તે વખતે એમનો આહાર કોઈ વાર ત્રણ દિશાઓથી અને કોઈ વાર ચાર દિશાઓમાંથી અને કોઈ વાર પાંચ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો હોય છે ત્યાં વ્યાઘાતના લોક નિષ્કુટ રૂપજ છે. કેમકે બાદર વાયુકાયિક લોક નિષ્કુટ વિગેરેમાં પણ મળી આવે છે. **'उववाओ देवमणुय नेरइएसु नत्थि"** તેઓનો ઉત્પાદ–ઉત્પત્તી દેવ, મનુષ્ય, અને નૈરયિકોમાં થતો નથી કેવળ તિર્યગ્ગતિમાંજ હોય છે **"ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं"** આ બાદર વાયુકાયિક જીવોની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ હજાર વર્ષની હોય છે. **"सेसं तं चेव"** શરીર, સંસ્થાન, સમુદ્ઘાત આહાર,

शरीरकषायसंस्थानाहारोपपातस्थितिव्यतिरिक्तानि सर्वाण्यपि द्वाराणि सूक्ष्मवायुकायिकवदेव ज्ञातव्यानि इति । **'एगगइया दुआगइया'** एकगतिका द्व्यागतिका बादरवायुकायिका भवन्ति, केवलं तिर्यग्गतावेव गच्छन्ति, आगच्छन्ति च तिर्यङ् मनुष्यगतिभ्योऽत एव एकगतिका द्व्यागतिका भवन्तीति । **'परित्ता असंखेज्जा समणाउसो'** प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्येयाः प्रज्ञप्ताः बादरवायुकायिकाः, हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! इति। सम्प्रति–प्रकरणार्थमुपसंहरन्नाह **'से त्तं'** इत्यादि, **'से त्तं बायरवाउक्काइया'** ते एते अनन्तरोक्ता बादरवायुकायिका जीवा निरूपिताः । **'से त्तं वाउक्काइया'** ते एते सामान्यतो वायुकायिका निरूपिता इति ।।सू० १७।।

॥ समाप्तं तेजस्कायिकवायुकायिकप्रकरणम् ॥

आहार उत्पाद और स्थिति, इनके सिवाय सब द्वारों का कथन यहां सूक्ष्म वायुकायिक के प्रकरण में कहे गये द्वारो के जैसा ही है । ये **"एग गइया, दुआगइया"** एक गतिक और द्व्यागतिक होते हैं । क्योंकि ये इस पर्याय से छूटने पर सीधे एक तिर्यञ्चगति मे ही जन्म लेते हैं । और वहां तिर्यञ्च और मनुष्य गति इन दो गतियो से सीधे आकर जन्म धारण करते हैं । **"परित्ता असंखेज्जा समणाउसो"** हे श्रमण ! आयुष्मन् ! प्रत्येक शरीरीबादर वायुकायिक असंख्यात है । अब इस प्रकरण का उपसहार करते हुए प्रभु कहते हैं—**"से त्तं बायरवाउक्काइया"** हे गौतम ! इस प्रकार से ये बादर वायुकायिक निरूपित हुए हैं । इसके निरूपित हो जाने पर **"से त्तं वाउक्काइया"** सामान्य रूप से वायुकायिक निरूपित हो जाते हैं ॥ सूत्र १६॥

॥ तेजस्कायिक और वायुकायिक का प्रकरण समाप्त ॥

ઉત્પાદ અને સ્થિતિ આટલા સિવાય બાકીના બીજા તમામદ્વારોનું કથન આ બાદર વાયુકાયિકોના સબંધમાં જે પ્રમાણે કહ્યુ છે તેજ પ્રમાણે સૂક્ષ્મ વાયુકાયિકોના સંબધમાં પણ સમજવુ આ બાદર વાયુકાયિક જીવો **"एगगइया, दुआगइया"** એક ગતિવાળા અને 'દ્વયાગતિક-એટલે કે એક ગતિમાં જનારા તથા બે ગતિમાંથી આવવા વાળા હોય છે કેમકે—તેઓ આ પર્યાયથી છૂટયા પછી સીધા એક' તિર્યંચ ગતિમાંજ જન્મલે છે. અને આ બાદર વાયુકાયિક પણામાં તિર્યંચ અને મનુષ્યગતિ આ બે ગતિયોમાંથી સીધા જ આવીને જન્મ ધારણ કરે છે **"परित्ता असंखेज्जा समणाउसो"** હે શ્રમણ ! આયુષ્મન્ પ્રત્યેક શરીરી બાદર વાયુકાયિક અસંખ્યાત છે

હવે આ પ્રકરણનો ઉપસંહાર કરતાં પ્રભુ કહે છે કે—**"से त्तं बायरवाउक्काइया"** હે ગૌતમ ! આ રીતે આ બાદર વાયુકાયિકોનું નિરૂપણ કર્યું છે આ નિરૂપણ થવાથી **"से त्तं वाउक्काइया"** આ સામાન્ય રૂપે વાયુકાયિકોનું નિરૂપણ સંપૂર્ણ થાય છે. ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

॥ તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિકનું પ્રકરણ સમાપ્ત ॥

निरूपिता वायुकायिकात्रसाः सम्प्रति औदारिकत्रसजीवानभिधातुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि।

मूलम्—'से किं तं ओराला तसा पाणा ? ओराला तसा पाणा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा–बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया। से किं तं बेंदिया ? बेंदिया अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा–पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा जे यावन्ने तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। 'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता तंजहा–ओरालिए तेयए कम्मए। तेसि णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेणं बारसजोयणाइं। छेवट्टसंघयणा। हुंडसंठिया। चत्तारि कसाया। चत्तारि सण्णाओ। तिन्नि लेस्साओ। दोइंदिया। तओसमुग्घाया। वेयणा कसाया मारणंतिया। नो सन्नी असन्नी। णपुंसगवेयगा। पंचपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ। सम्मदिट्ठी वि मिच्छा दिट्ठि वि। नोसम्मामिच्छा दिट्ठी। नो ओहिदंसणी णो चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी। णो केवलदंसणी। ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ? नाणी वि अन्नाणीवि जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, तंजहा–आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य। जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणि मइ अन्नाणी य सुय अन्नाणी य। णो मणजोगा वयजोगी कायजोगी, सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि। आहारो नियमा छद्दिसिं। उववाओ तिरियमणुस्सेसु नेरइयदेव असंखेज्जवासाउय वज्जेसु। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारससंवच्छराइं। समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति। कहिं गच्छंति नेरइय देव असंखे-

ज्ज वासाउयवज्जेसु। दुगइया दुआगइया। परित्ता असंखेज्जा सेत्तं बेंदिया' ॥सू० १८॥

छाया—अथ के ते उदारा स्त्रसाः प्राणाः ? उदारा स्त्रसाः प्राणाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-द्वीन्द्रियो त्रीन्द्रियाश्चतुरिन्द्रियाः पञ्चेन्द्रियाः। अथ के ते द्वीन्द्रियाः, द्वीन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्ता पुलाककृमिका यावत् समुद्रलिक्षाः। ये चान्ये तथाप्रकाराः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणम्। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कियन्महती शरीरावगाहना प्रज्ञप्ता ? गौतम! जघन्येनांगुलासंख्येयभागम् उत्कर्षेण द्वादशयोजनानि। सेवार्त्तसंहननानि, हुण्डसंस्थितानि, चत्वारः कषायाः, चतस्र संज्ञाः। तिस्रो लेश्याः। द्वे इन्द्रिये। त्रयः समुद्घाताः, वेदनाकषायमारणान्तिकाः। नो संज्ञिन, असंज्ञिनः, नपुंसकवेदकाः। पञ्चपर्याप्तयः पञ्चापर्याप्तयः। सम्यग्दृष्टयोऽपि मिथ्यादृष्टयोऽपि नो सम्यग्मिथ्यादृष्टयः। नो अवधिदर्शनिनः नो चक्षुर्दर्शनिनः अचक्षुर्दर्शनिनो नो केवलदर्शनिनः। ते खलु भदन्त! जीवाः किं ज्ञानिनोऽज्ञानिनः, गौतम! ज्ञानिनोऽपि अज्ञानिनोऽपि। ये ज्ञानिनस्ते नियमात् द्विज्ञानिनः तद्यथा-आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च। ये अज्ञानिनस्ते नियमात् द्व्यज्ञानिनः, मत्यज्ञानिनः, श्रुताज्ञानिनश्च। नो मनोयोगिनः वचोयोगिनः काययोगिनः। साकारोपयुक्ता अपि अनाकारोपयुक्ता अपि। आहारो नियमात् षड्दिशि। उपपातस्तिर्यग् मनुष्येषु नैरयिकदेवासंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु। स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण द्वादशसंवत्सरान्। समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते। क्व गच्छन्ति नैरयिकदेवासंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु गच्छन्ति। द्विगतिकाः द्व्यागतिकाः, परीता असंख्याता ते एते द्वीन्द्रियाः ॥सू० १८॥

टीका—'से किं तं ओराला तसा पाणा' अथ के ते औदारिकास्त्रसाः प्राणा-जीवाः, तत्रोदाराः, उदारा एवौदारिकाः त्रसाः प्राणाः, एतादृशनामकर्मोदयात् ते कियन्तः किं लक्षणं

वायुकायिकों का निरूपण करके अब औदारिक त्रस प्राणियों का निरूपण किया जाता है— इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"से किं तं ओराला तसा पाणा–इत्यादि ॥सू०१९॥

टीकार्थः—"से किं तं ओराला तसा पाणा" हे भदन्त! जो औदारिकशरीर नामकर्म के उदयवाले औदारिक त्रस जीव हैं वे कितने हैं और इनका क्या लक्षण

વાયુકાયિકોનું નિરૂપણ કરીને હવે ઔદારિક ત્રસ પ્રાણિયોનું નિરૂપણ કરવામા આવે છે. આ સંબંધમા ગૌતમસ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે–"से किं तं ओराला तसा पाणा" ઇત્યાદિ હે ભગવન્ જેઓ ઔદારિક શરીર, નામ કર્મના ઉદયવાળા એક ત્રસ જીવો છે તે કેટલા પ્રકારના છે ? અને તેના શું લક્ષણો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ

च तेषामिति प्रश्नः, उत्तरयति–'ओराला तसा पाणा चउव्विहा पन्नत्ता' औदारिका त्रसाः प्राणाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः। चातुर्विध्यमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया' पंचिंदिया' द्वीन्द्रियास्त्रसाः त्रीन्द्रियास्त्रसाः, चतुरिन्द्रिया त्रसाः, पञ्चेन्द्रियास्त्रसाः। तत्र द्वे स्पर्शनरसनरूपे इन्द्रिये येषां ते द्वीन्द्रियाः कृमिगण्डोलकादयः, त्रीणि–स्पर्शनरसनघ्राणरूपाणि इन्द्रियाणि येषां ते त्रीन्द्रियाः पिपीलिकादयः। चत्वारि–स्पर्शनरसन घ्राणचक्षू रूपाणि इन्द्रियाणि येषां ते चतुरिन्द्रियाः मशकमक्षिकादयः। पञ्च स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः श्रोत्ररूपाणि इन्द्रियाणि येषां ते पञ्चेन्द्रियाः मनुष्यपश्वादयः। तत्र द्वीन्द्रियान् विशेषतः प्रतिपादयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि 'से किं तं बेइंदिया' अथ के ते द्वीन्द्रियाः द्वीन्द्रियाणां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति–'बेइंदिया अणेगविहा पन्नत्ता' द्वीन्द्रियत्रसजीवा अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ता–कथिता इति। अनेकविधत्वमेव दर्शयति–'त

है' इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं–"ओराला तसा पाणा चउव्विहा पन्नत्ता" हे गौतम! औदारिकत्रस–जीव चार प्रकार के कहे गये हैं–"तं जहा" जैसे–"बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया" दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौइन्द्रिय, और पञ्चेन्द्रियत्रस, दोइन्द्रियजीवों के स्पर्शन और रसना ये दोइन्द्रियां होती है कृमि गण्डोलक आदि द्वीन्द्रियजीव हैं। स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ जिन जीवों को होती हैं वे तेइन्द्रियजीव है जैसे–चिउटी आदि स्पर्शन, रसना, घ्राण, और चक्षु ये चार इन्द्रियां जिन जीवों को होती हैं वे–चौइन्द्रियजीव हैं, जैसे–मच्छर, मक्खी आदि। स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पांच इन्द्रियाँ जिन जीवों को होती है वे पंचेन्द्रिय जाव हैं जैसे–मनुष्य पशु आदि "से किं त बेइंदिया" हे भदन्त! दो इन्द्रियजोवो का क्या लक्षण है और इनके कितने भेद हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता" हे गौतम! द्वीन्द्रियत्रसजीव अनेक प्रकार के होते

સ્વામીને કહે છે કે–"ओराला तसा पाणा चउव्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! ઔદારિક ત્રસજીવો ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે સમજવા "बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया" બે ઈંદ્રિય, તે ઇન્દ્રિય, ચૌ ઇન્દ્રિય અને પંચેદ્રિય ત્રસ, બે (દ્વિઇન્દ્રિય વાળા જીવોને સ્પર્શન અને રસના આ બે ઇન્દ્રિયો હોય છે, કૃમિ. ગંડોલક વિગેરે ઇન્દ્રિય જીવો કહેવાય છે, સ્પર્શન, રસના, અને ઘ્રાણ (નાક) આ ત્રણ ઇન્દ્રિયો જે જીવોને હોય છે. તેઓ ત્રણ ઇન્દ્રિય વાળા જીવો કહેવાય છે. જેમકે–કીડી વિગેરે સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ (નાક) અને નેત્ર આ ચાર ઇન્દ્રિયો જે જીવોને હોય છે, તેઓ ચૌ ઇન્દ્રિય જીવો કહેવાય છે જેમકે–મચ્છર. માખી, વગેરે તથા સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, નેત્ર અને કાન આ પાંચે ઇન્દ્રિયો જે જીવોને હોય છે, તેઓ પંચેન્દ્રિય જીવો કહેવાય છે જેમકે––માણુસ, પશુ વિગેરે "से किं तं बेइंदिया" હે ભગવન્ બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવોના શુ લક્ષણો છે? અને તેના કેટલા ભેદો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता"

जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'पुला किमिया जाव समुद्दलिक्खा' पुलाकृमिका यावत् समुद्र लिक्षाः, अत्र यावत्करणात् इत्थं परिपूर्णपाठो विज्ञेयः–'पुला किमिया कुच्छिकिमिया गंडूलगा गोलोमा नेउरा सोमगला वंसीमुहा सूइमुहा, गोजलोया जलोया जलाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्लागुलया खंधा वराडा सोत्तिया कल्लुया कसा एगतोवत्ता दुहतो वत्ता नंदियावत्ता संवुक्का माइवाहा सिप्पि संपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा' इति, तत्र 'पुलाकिमिया' पायुप्रदेशोद्भवाः कृमयः 'कुच्छिकिमिया' कुक्षौ समुत्पन्नाः लघुकृमयः 'गंडूलगा' गण्डोलकाः, तत्रैव समुत्पन्नाः किञ्चिद् बृहत्कायाः कृमय. 'गुडोला' इति प्रसिद्धाः 'गोलोमा' गवां लोम्नि सञ्जाता गोलोमकाः। 'नेउरा' इत्यत आरभ्य समुद्रलिक्षान्ता' सर्वेऽपि द्वीन्द्रिया यथाशास्त्रं विविच्य स्वयमेव विज्ञेया. । 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये तथाप्रकाराः, उपर्युक्तद्वीन्द्रिय

हैं—"तं जहा" जैसे–"पुला किमिया जाव समुद्दलिक्खा" पुला कृमिका यावत् समुद्रलिक्षा। यहाँ यावत्पद से ऐसा पूरा पाठ गृहीत हुआ जानना चाहिये—"पुलाकिमिया, कुच्छिकिमिया, गण्डूलगा, गोलोमा, नेउरा, सोमगला, वंसीमुहा, सुइमुहा, गोजलोया, जलोया, जलाउया, संखा, संखणगा, घुल्ला, खुल्ला, वराडा, सोत्तिया, मोत्तिया, कल्लुया, वासा, एगतोवत्ता, दुहतोवत्ता, नंदियावत्ता, संवुक्कामाइवाहासिप्पिसंपुडाचंदणा समुद्दलिक्खा" पायु प्रदेश में-गुदा प्रदेश में जो कृमि उत्पन्न होते है वे "पुलाकिमिय" शब्द से गृहीत हुए है। जो लघुकृमि उदर में उत्पन्न होते हैं वे कुच्छिकिमि" है। गण्डोलक उदर में ही उत्पन्न होनेवाले कुछ बडे कृमि जो-गंडोलानाम से प्रसिद्ध हैं। जो गायो के रोम में जीव उत्पन्न हो जाते हैं वे गोलोमक हैं। ये सब द्वीन्द्रियजीव हैं। "नेउर" से लेकर तथा "समुद्र लिक्षा" तक के समस्त जीव भी द्वीन्द्रिय है और इनका वर्णन शास्त्रानुसार जानलेना चाहिये। इसी प्रकार के जो और भी जीव हैं जो इन्हीं दो इन्द्रिय जीवों के जैसे होते हैं जैसे–मृतक

હે ગૌતમ! બે ઇન્દ્રિયએ વાત્રસ જીવો અનેક પ્રકારના હોય છે "तं जहा" જે આ પ્રમાણે છે – "पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा" પુલાકૃમિક યાવત્ સમુદ્ર લિક્ષ, અહિયાં યાવત્પદ આ નીચે પ્રમાણેનો સંપૂર્ણ પાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. તેમ સમજવું "पुलाकिमिया, कुच्छिकिमिया, कण्डूलगा गोलोमा, नेउरा, सोमगला, वंसीमुहा, सुइमुहा, गोजलोया, जलोया जलउया, संखा, संखणगा, घुल्ला, खुल्ला, वराडा, सोत्तिया, गोत्तिया, मोत्तिया, कल्लुया, वासा, एगतोवत्ता, दुहतोवत्ता, नंदियावत्ता, संपुक्कामाइवाहा, सिप्पि संपुडा चंदणा, समुद्दलिक्खा" વાયુ પ્રદેશમા-ગુદાપ્રદેશમાં જે કૃમિયો ઉત્પન્ન થાય છે, તેને "पुला मिकिया કહ્યા છે પેટમાં જે લઘુ કૃમિ ઉત્પન્ન થાય છે, તે 'कुच्छिकिमिइ" કહેવાય છે પેટમાં જ ઉત્પન્ન થવા વાળા અને ઘણુમા થવા વાળા કંઇક મોટા કૃમિને 'गंडोलक" નામથી કહે છે ગાયોના રોમમાં જે જીવો ઉત્પન્ન થાય છે, તેને "गोलोमक" કહેવાય છે આ બધા જ બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવો છે "नेउर" થી લઈને તથા 'समुद्रलिक्षा" સુધીના બધા જ જીવો દ્વીન્દ્રિય જીવો કહેવાય છે. અને તે બધાનું વર્ણન શાસ્ત્ર પ્રમાણે સમજી લેવું

समानाः मृतकशरीरसमुद्भूतकृम्यादयस्ते सर्वे द्वीन्द्रियतया ज्ञातव्या इति। **'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** ते-द्वीन्द्रियाः समासतः--सक्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, **'तं जहा'** तद्यथा-**'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य'** पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति।

सम्प्रति शरीरद्वारमधिकृत्याह-**'तेसिं णं'** इत्यादि, **'तेसिं णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता'** तेषां द्वीन्द्रियाणां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि इति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम! **'तओ सरीरगा पन्नत्ता'** त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि-कथितानि **'तं जहा'** तद्यथा-**'ओरालिए तेयए कम्मए'** औदारिकं तैजसं कार्मणम्। **'तेसिणं भंते! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता'** तेषां खलु भदन्त! द्वीन्द्रियजीवानां कियन्महती शरीरावगाहना प्रज्ञप्तेति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम! **'जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेणं बारसजोयणाइं'**जघन्येनां-

---

शरीर आदि में कृमि होते हैं वे सब भी दो इन्द्रियजीव हैं। ये द्वीन्द्रियजीव संक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं--**"पज्जत्तगा य अप्पज्जत्तगा य"** एक पर्याप्तकद्वीन्द्रियजीव और दूसरे अपर्याप्तक द्वीन्द्रिय जीव **"तेसि णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता"** हे भदन्त! इन द्वीन्द्रियजीवों के कितने शरीर कहे गये हैं? उत्तर में प्रभु कहतेहैं—**गोयमा! तओ सरीरगा पन्नत्ता"** हे गौतम! द्वीन्द्रियजीवों के तीन शरीर कहे गये हैं—**तं जहा"** जैसे-**"ओरालिए, तेयए, कम्मए"** औदारिक शरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर **"तेसि णं भंते! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता"** हे भदन्त। इन द्वीन्द्रियजीवों के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी कही गई है? **"गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं बारसजोयणाइं"** हे गौतम! इनके शरीर की अवगाहना जघन्य से

જોઈએ. આજ પ્રમાણે આવા પ્રકારના બીજા પણ જે જીવો હોય, કે જેઓ આવાજ બે ઇન્દ્રિય જીવોની જેવા હોય છે, જેમકે--મરેલા શરીર વિગેરેમાં કૃમિ હોય છે, તે બધા બે ઇન્દ્રિય જીવ કહેવાય છે આ બે ઇન્દ્રિય જીવો સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલા છે. તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. **"पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य"** એક પર્યાપ્તક દ્વીન્દ્રિય જીવો અને બીજા અપર્યાપ્તક દ્વીન્દ્રિય જીવો **'तेसिं णं भंतो जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता"** ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે-હે ભગવન્ આ દ્વીન્દ્રિય જીવોને કેટલા પ્રકારના શરીરો કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે--**"गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ! બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવોને ત્રણ શરીરો કહેલા છે. **"तं जहा"** જેમકે —**ओरालिए, तेयए कम्मए,"** ઔદારિક, શરીર, તૈજસ શરીર, અને કાર્મણ શરીર, **"तेसिं णं भंते! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता"** હે ભગવન્ આ દ્વીન્દ્રિય વાળા જીવોના શરીરની અવગાહના કેટલી મોટી કહી છે? **गोयमा! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं बारसजोयणाइ"** હે ગૌતમ! તેઓના શરીરની

गुलस्यासल्येयभागमुत्कर्षेण द्वादशयोजनानि एतत्प्रमाणा शरीरावगाहना भवति–द्वीन्द्रियाणामिति। **'छेवट्टसंघयणा'** तेषां द्वीन्द्रियजीवानां शरीराणि सवार्त्तसंहननयुक्तानि भवन्तीति। **'हुंडसंठिया'** तेषां द्वीन्द्रियजीवानां शरीराणि हुण्डसंस्थानसंस्थितानि भवन्तीति। हुण्डसम्स्थनंच अव्यवस्थिता ह्यावयवे प्रसिद्धम् **'चत्तारि कसाया'** चत्वारः कषायाः क्रोधमानमायालोभाख्या भवन्ति द्वीन्द्रिय जीवाना मिति। **'चत्तारिसन्नाओ'** तेषां द्वीन्द्रियजीवानां तिस्रः सज्ञाः–आहारभयमैथुन परिग्रहाख्या भवन्ति।

लेश्याद्वारे- **'तिन्नि लेस्साओ'** तेषां द्वीन्द्रियजीवाना तिस्रो लेश्याः कृष्ण नील कापोताख्या भवन्ति।

इन्द्रियद्वारे–**'दो इंदिया'** तेषां द्वीन्द्रियजीवानां द्वे स्पर्शनरसने इन्द्रिये भवत इति। समुद्घातद्वारे–**'तओ समुग्घाया वेयणा कसायमारणंतिया'** तेषां द्वीन्द्रियजीवानां त्रयः द्घद्घाताः वेदनाकषायमारणान्तिका भवन्तीति। सञ्ज्ञिद्वारे–**'नोसन्नी असन्नी'** ते द्वीन्द्रियजीवाः नो संज्ञिनो भवन्ति किन्तु असञ्ज्ञिनो भवन्तीति। वेदद्वारे–**'णपुंसगवेयगा'** ते द्वीन्द्रियजीवाः नो स्त्री वेदकाः

अङ्गुल के असख्यात वे भाग प्रमाण और उत्कृष्ट से बारह योजन प्रमाण कही गई है। **"छेवट्टसंघयणा"** इनका सहनन सेवार्त्त होता है। **"हुंडसंठिया"** ये द्वीन्द्रियजीव हुंडकसस्थानवाले होते हैं। जिनके अंगों के अवयव ठीक नहीं होते है उनको हुडसंस्थान वाले कहा जाता है **"चत्तारिकसाया"** इनके क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार कषायें होती है। **"चत्तारि सन्नाओ"** इनके चार संज्ञाए, आहार, भय, मैथुन और परिग्रह--ये चार सज्ञाएँ होती हैं। लेश्याद्वार में इनके **"तिन्नि लेस्साओ"** तीन लेश्याएँ होती है। दो इन्द्रियाँ होती हैं। **"तओ समुग्घाया"** वेदना कषाय और मारणान्तिक ये तीन समुद्घात होते हैं। **"णो सण्णी असण्णी"** ये दो इन्द्रियजीव सज्ञी नहीं होते हैं किन्तु असंज्ञी होते हैं। वेदद्वार में ये—**"णपुंसगवेयगा"** नपुंसकवेदवाले ही होते हैं। स्त्री वेदवाले और पुरुष वेद वाले नहीं

અવગાહના જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણની અને ઉત્કૃષ્ટથી બાર યોજન પ્રમાણની કહેલી છે **"छेवट्ट संघयणा"** તેમનું સંહનન સેવાર્ત હોય છે **"हुंडसंठिया"** આ દ્વીન્દ્રિય જીવો હુંડક સંસ્થાન વાળા હોય છે. જેમના શરીર અવયવો બરોબર ન હોય તે હુંડ સસ્થનાળા કહેવાય છે. **"चत्तारि कसाया"** તેઓને ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ આ ચાર કષાયો હોય છે **"चत्तारि सन्नाओ"** તેઓને આહાર, ભય, મૈથુન, અને પરિગ્રહ આ પ્રકારના ચાર સંજ્ઞાઓ હોય છે. લેશ્યાદ્વારમાં તેઓને **"तिन्नि लेस्साओ"** ત્રણ લેશ્યાઓ હોય છે બે ઈંદ્રિયો હોય છે. **"तओ समुग्घाया"** વેદના, કષાય, અને મારણાન્તિક આ ત્રણ સમુદ્ઘાત તેઓને હોય છે. **"णो सण्णी असण्णी"** આ બે ઈંદ્રિય વાળા જીવો સંજ્ઞી હોતા નથી પણ અસંજ્ઞી હોય છે.

વેદનાદ્વારમાં—**"णपुंसगवेयगा"** નપુંસકવેદ વાળા જ હોય છે. સ્ત્રીવેદવાળા અને

न वा पुरुषवेदका भवन्ति किन्तु केवलं नपुंसकवेदका एव भवन्तीति । पर्याप्तिद्वारे-**'पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ'** पञ्च पर्याप्तयः पञ्चापर्याप्तयो भवन्ति द्वीन्द्रियाणामिति ।

दृष्टिद्वारे-**'सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठि वि नो सम्मामिच्छादिट्ठी'**ते द्वीन्द्रियजीवाः सम्यग् दृष्टयोऽपि भवन्ति मिथ्यादृष्टयोऽपि भवन्ति न तु सम्यग् मिथ्यादृष्टयः (मिश्रदृष्टयः) भवन्तीति ।

अत्रैवं ज्ञातव्यम्-यथा घण्टायां वादितायां महान् शब्दः संजायते तत उत्तरकालं क्रमशो हीयमानोऽन्ते लालामात्रं भवति । एवं घण्टालालान्यायेन अवसाने किञ्चित्सास्वादनसम्यक्त्वमवशिष्टं भवेत् तादृशाः सन्तः केचित् द्वीन्द्रियेषु समुत्पद्यन्ते, तेषामपर्याप्तावस्थायां कियत्कालमास्वादनमात्र सास्वादनसम्यक्त्वं संभवेत् अतस्ते सम्यग्दृष्टय इत्युक्तम्, शेषकाले मिथ्यादृष्टिस्तेषा मतो मिथ्यादृष्टय इत्युक्तम् तथाभवस्वभावतया तादृशपरिणामायोगात् तेन सम्यग् .मिथ्या-

---

होते है । "पर्याप्तिद्वार में-"**पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ**" ये पांच पर्याप्तिवाले होते हैं और पांच अपर्याप्तिवाले होते है । दृष्टिद्वार में-"**सम्मदिट्ठी वि मिच्छादिट्ठी वि**" ये द्वीन्द्रियजीव सम्यग्दृष्टि भी होते हैं और मिथ्यादृष्टि भी होते हैं । पर "**नो सम्मामिच्छादिट्ठी**" ये मिश्रदृष्टि नहीं होते है । यहाँ ऐसा जानना चाहिये--जैसे घण्टा के बजने पर महान् शब्द होता है, वह उसके उत्तर काल में क्रम २ से हीयमान होता हुआ अन्त में वह शब्द घंटा की लाला-लटकण तक ही रह जाता है, इस प्रकार घंटा लालान्याय से अवसान में-मृत्यु समय में जीव के आस्वादन मात्र सास्वादन सम्यक्त्व अवशिष्ट रह जाता है, ऐसी अवस्था में मरकर कई एक जीव द्वीन्द्रिय में उत्पन्न हो जाते हैं अतः उनके अपर्याप्तावस्था में कुछ काल तक-सास्वादन सम्यक्त्व रहता है, इसलिये वे सम्यग्दृष्टि कहे गये है । शेषकाल में वे मिथ्यादृष्टि होते ही है अतः वे मिथ्यादृष्टि भी कहे गये हैं किन्तु उस प्रकार के भवस्वभाव से, तथाविध परिणामों का उनको योग नहीं होता है इस कारण से वे सम्यग्

પુરૂષવેદ વાળા હોતા નથી. પર્યાપ્તિદ્વારમાં **'पंचपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ'** તેઓ પાંચ પર્યાપ્તિયોવાળા હોય છે, અને પાંચ અપર્યાપ્તિયોવાળા હોય છે દૃષ્ટિદ્વારમાં—"**सम्मदिट्ठी वि मिच्छादिट्ठी वि**" આ બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે. અને મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે પરંતુ "**नो सम्मामिच्छादिट्ठी**" તેઓ મિશ્ર દૃષ્ટિવાળા હોતા નથી. અહિયા એવું સમજવું જોઈએકે—જેમ ઘંટ વાગતા પહેલાં મોટો અવાજ થાય છે તે તેના પછીના સમયમાં ક્રમ ક્રમથી ઘટતો ઘટતો છેવટે એ શબ્દ ઘંટની લાલા-લટકણ સુધી જ રહીજાય છે. આ રીતે 'ઘંટ લાલા" ન્યાયથી અવસાન સમયે એટલે કે મરણકાળે જીવના આસ્વાદન માત્ર સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વ બાકી રહે છે. એવી અવસ્થામાં મરીને કેટલાકજીવો બે ઇંદ્રિયોમાં ઉત્પન્નથઈ જાય છે તેથી તેઓની અપર્યાપ્તાવસ્થામાં કેટલાક કાળ સુધી સાસ્વાદન સમ્યક્ત્વ રહે છે. તેથી તેઓને સમ્યગ્દૃષ્ટિ કહેલા છે. શેષ પછીના કાળમાં મિથ્યાદૃષ્ટિ હોય છે. તેથી તેઓને મિથ્યાદૃષ્ટિ પણ કહેલા છે પરંતુ તેવા પ્રકારના ભવ-

दृष्टयः, इत्युक्तम्, सम्यग् मिथ्यादृष्टिः सन् जीवा न तत्रोत्पद्यन्ते तदवस्थायां जीवस्य मरणासंभवात्, तदुक्तम्–'न सम्ममिच्छो कुणइ कालं' इति वचनात्। दर्शनद्वारे–'नो ओहिदंसणी नो चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी नो केवलदंसणी' ते द्वीन्द्रियजीवा नो अवधिदर्शनिनो भवन्ति न वा चक्षुर्दर्शनिनो भवन्ति किन्तु अचक्षुर्दर्शनिनः स्पर्शनरसनेन्द्रियापेक्षया भवन्ति तथा नो केवलदर्शनिनो भवन्तीति। ज्ञानद्वारमाह–'ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी' ते द्वीन्द्रियजीवाः खलु भदन्त ! किं ज्ञानिनो भवन्ति अज्ञानिनो वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'णाणी वि अण्णाणी वि' ते द्वीन्द्रियजीवा ज्ञानिनोऽपि भवन्ति सास्वादनसम्यक्त्वापेक्षया तथा अज्ञानिनोऽपि भवन्तीति। 'जे णाणी ते नियमा दुण्णाणी' ये ज्ञानिनो भवन्ति ते नियमात् द्विज्ञानिनो भवन्ति, 'तं जहा' तद्यथा–'आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य' आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च। अपर्याप्तावस्थायां मति-

---

मिथ्यादृष्टि मिश्रदृष्टि होते हुए वहां उत्पन्न नहीं होते है, सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवस्था में जीव की मृत्यु ही नहीं होती है क्योंकि शास्त्र में उसका निषेध है जैसे—"न सम्ममिच्छो कुणइ-कालं" सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव काल नहीं करता है। दर्शनद्वार में ये "नो ओहिदंसणी नो चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी नो केवलदंसणी" न अवधिदर्शनी होते हैं, न चक्षु दर्शनी होते हैं, किन्तु अचक्षुदर्शनी होते हैं। इसी से ये केवलदर्शनी भी नहीं होते हैं इन्हें जो अचक्षुदर्शनी कहा है--वह स्पर्शन और रसना इन दो इन्द्रियो की अपेक्षा से कहा है। हे भदन्त ! ये ज्ञानद्वार में वे क्या "नाणी अन्नाणी" ज्ञानी होते है ? अथवा अज्ञानी होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"णाणी वि अण्णाणी वि" हे गौतम ! ये ज्ञानी भी होते हैं और अज्ञानी भी होते हैं ज्ञानी होते हैं तो वे नियम से दो ज्ञानवाले होते है—"तं जहा' जैसे–"आभिणिबोहियनाणी

સ્વભાવથી તથાવિધ પરિણામોનો એમને યોગ-થતો નથી. આ કારણથી તેઓ સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ—એટલેકે મિશ્રદૃષ્ટિ રૂપે ત્યાં ઉત્પન્ન થતાનથી. સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ અવસ્થામાં જીવનું મૃત્યું જ થતું નથી. કેમકે શાસ્ત્રમાં તેનો નિષેધ છે જેમ કે—"न सम्ममिच्छो कुणइ कालं" સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા જીવો કાળ કરતા નથી. અર્થાત્ મરણ પામતા નથી.

દર્શનદ્વારમાં—તેઓ "नो ओहिदंसणी नो चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी नो केवलदंसणी" અવધી દર્શન વાળા હોતા નથી તથા ચક્ષુદર્શનવાળા પણ હોતા નથી પરંતુ અચક્ષુદર્શની હોય છે. તથા તેઓ કેવળદર્શનવાળા પણ હોતા નથી. તેઓને જે 'અચક્ષુ દર્શની કહ્યા છે તે સ્પર્શન અને રસના આ બે ઇંદ્રિયોની અપેક્ષાથી કહેલા છે હવે ગૌતમ સ્વામી જ્ઞાનદ્વારના સંબંધમાં પ્રભુને પૂછે છે કે–"नाणी अन्नाणी" હે ભગવન્ તેઓ જ્ઞાની હોય છે ? કે અજ્ઞાની હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે— "णाणी वि अण्णाणि वि" હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ હોય છે અને અજ્ઞાની પણ હોય છે. "जे णाणी ते णियमा दुण्णाणी" જો તેઓ જ્ઞાની હોય તો તેઓ નિયમથી બે જ્ઞાનવાળા

श्रुतज्ञानद्वयमात्रस्यैव भावात् **'जे अन्नाणी ते नियमादुअन्नाणी'** ये तु द्वीन्द्रिया अज्ञानिन स्ते तु नियमात् द्व्यज्ञानिनो भवन्ति तद्यथा–**'मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य'** मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च भवन्ति मतिश्रुताख्या ज्ञानद्रव्यस्यैव भावात्। योगद्वारे–**'णो मणजोगी वय-जोगी कायजोगी'** ते द्वीन्द्रियजीवा नो मनोयोगिनो भवन्ति किन्तु वचोयोगिनः सुव्यक्तवचोयोग-सद्भावात् तथा काययोगिनश्च भवन्ति।

अथोपयोगद्वारे–**'सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि'** ते द्वीन्द्रियजीवाः साकारोपयोगवन्तोऽपि भवन्ति तथा अनाकारोपयुक्ता अपि–अनाकारोपयोगवन्तोऽपि भवन्तीति भावः आहारद्वारे–**'आहारो नियमा छद्दिसिं'** द्वीन्द्रियजीवानामाहारस्तु नियमात् षड्दिशि षड्भ्यो दिग्भ्य आगतान् पुद्गलानाहरन्ति त्रसनाड्या मध्ये एव द्वीन्द्रियाणां सद्भावादिति। उपपातद्वारे–

सुयनाणी य" आभिनिबोधिक ज्ञानी और श्रुतज्ञानी आभिनिबोधिक और श्रुत इन दो ज्ञानों से युक्त होते हैं। **'जे णाणी ते णियमा दुण्णाणी**। यदि ये ज्ञानी होते है तो वे नियम से दो ज्ञान वाले होते है–**"तं जहा"** जैसे **"आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य"** आभिनिबोधिक ज्ञानी और श्रुतज्ञानी आभिनिबोधिक और ुत इन दो ज्ञानों से युक्त होते है। सो ये दो ज्ञान इनके अपर्याप्तावस्था में होते है। **"जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी"** जो ये दो अज्ञानवाले होते हैं तो ये उस समय **"मइ अन्नाणी य सुय अन्नाणी य"** मत्यज्ञान और श्रुताज्ञानवाले होते है। योगद्वार में ये **"णो मणजोगी वयजोगी कायजोगी'** मनोयोगी नहीं होते हैं किन्तु वचनयोगी–इनके वचोयोग का अव्यक्तरूप से सद्भाव होता है और काययोगी होते हैं। उपयोगद्वार में ये—**सागारोपउत्ता वि अणा-गारोवउत्ता वि"** साकारोपयोगवाले भी होते हैं आर अनाकारोपयोगवाले भी होते है। आहारद्वार में ये—**'आहारो नियमा छद्दिसिं"** नियम से छह दिशाओ में से आगत पुद्गल द्रव्यों का आहार करते हैं। -क्योंकि द्वीन्द्रियो का सद्भाव त्रस नाओं के मध्यमें कहा गया है।

હોય છે **"तं जहा"** જેમકે **"आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य"** આભિનિબોધિક જ્ઞાની અને શ્રુતજ્ઞાની. અર્થાત્ તેઓ આભિનિબોધિક જ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાન આ બે જ્ઞાનવાળા હોય છે. આ બે જ્ઞાન તેઓની અપર્યાપ્તાવસ્થામાં હોય છે. **"जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी"** જો અજ્ઞાનવાળા હોય છે, તો તે બે અજ્ઞાનવાળા હોય છે. જેમકે–**"मइ अन्नाणी य सुय अन्नाणीय"** મતિ અજ્ઞાન અને શ્રુત અજ્ઞાન આ બે અજ્ઞાનવાળા હોય છે યોગદ્વારમાં **"णो मणजोगी वयजोगी कायजोगी"** તેઓ મનોયોગવાળા હોતા નથી. પરંતુ વચન યોગવાળા એટલે કે તેઓમાં વચન યોગનો અવ્યક્ત રૂપે સદ્ભાવ હોય છે, તથા કાયયોગવાળા હોય છે.

ઉપયોગદ્વારમાં તેઓ **"सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि"** સાકારોપયોગવાળા પણ હોય છે અને અનાકારોપયોગવાળા પણ હોય છે

આહારદ્વારમાં **"आहारो नियमा छद्दिसिं"** નિયમથી છએ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલદ્રવ્યો નો તેઓ આહાર કરે છે કેમ કે દ્વીન્દ્રિયોનો સદ્ભાવ ત્રસ જીવોમાં કહેલો છે.

'उववाओ तिरियमणुस्सेसु नेरइयदेवअसंखेज्जवासाउयवज्जेसु' द्वीन्द्रियजीवानामुपपात स्तिर्यङ्मनुष्येषु नैरयिकदेवासंख्यावर्षायुष्कवर्जेषु भवति तिर्यङ्मनुष्यगतावेव द्वीन्द्रिया उत्पद्यन्ते न तु नारकदेवासंख्यातवर्षायुष्केषु द्वीन्द्रियाणामुत्पत्तिर्भवतीति भावः। स्थितिद्वारे—**'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारससंवच्छराइं** स्थितिः—आयुष्यकालः द्वीन्द्रियजीवानां जघन्येन अन्तमुहूर्त्त-मात्रं भवति उत्कर्षेण तु द्वादशसंवत्सरपर्यन्तं भवतीति। समहतद्वारे—**'समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति'** ते द्वीन्द्रियजीवाः मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते तथा असमवहता अपि म्रियन्ते इति। च्यवनद्वारे—**'कहिं गच्छंति'** हे भदन्त! ते द्वीन्द्रियजीवाः द्वीन्द्रियगतितः अनन्तरमुद्वृत्य क—कस्मिन् स्थाने गच्छन्ति? उत्तरयति—**'नेरइय देव असंखेज्जवासाउय वज्जेसु गच्छंति'** नैरयिकदेवासंख्यातवर्षायुष्कवर्जेषु तिर्यङ्मनुष्येषु गच्छन्ति,

---

उपपातद्वार में **"उववाओ तिरियमणुस्सेसु नेरइयदेवअसंखेज्जवासाउयवज्जेसु"** इन दो इन्द्रियजीवोंका उपपात—जन्म—तिर्यञ्च और मनुष्यों में—इन दो ही गतियों में—होता है नारक और देव में नहीं होता है, मनुष्यों में भी असंख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्यों में इनका जन्म नहीं होता है **"स्थितिद्वार में—" ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइ"** इनकी स्थिति जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त की होती हैं और उत्कृष्ट से बारह वर्ष की होती हैं। **समवहतद्वार में—ये समवहता वि मरंति असमवहता वि मरंति"** मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते है और मारणान्तिकसमुद्घात से असमवहत होकर भी मरते है। **"च्यवनद्वार मे कहिं गच्छंति"** हे भदन्त! ये द्वीन्द्रियजीव द्वीन्द्रिय गति से उद्वृत्त होकर किस स्थान पर जाते हैं? उत्तर में प्रभु कहते है—हे गौतम! **"नेरइय देव असंखेज्जवासाउयवज्जेसु गच्छंति"** ये द्वीन्द्रियजीव द्वीन्द्रियगति से उद्वृत्त होकर नैरयिकोंमें देवों में और असंख्यात वर्ष की

ઉપપાતદ્વારમાં **"उववाओ तिरियमणुस्सेसु नेरइय देव असंखेज्जवासाउय वज्जेसु"** આબે ઇન્દ્રિય વાળાજીવોનો ઉપપાત—ઉત્પત્તી તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાં અર્થાત્ આ બે ગતિયોમા જ હોય છે નારક અને દેવોમાં તેમની ઉત્પત્તિ હોતી નથી તથા મનુષ્યોમાં પણ અસંખ્યાતવર્ષની આયુષ્ય વાળા મનુષ્યોમાં તેઓનો જન્મ થતો નથી.

સ્થિતિદ્વારમાં—"ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं बारससंवच्छराइं" તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી બારવર્ષની હોય છે.

સમવહતદ્વારમા—'समवहता वि मरंति असमवहतावि मरंति" તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કરીને-સમવહત થઈને પણ મરે છે, અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી અસમ-વહત્ એટલે કે મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત કર્યાવિના પણ મરે છે.

ચ્યવનદ્વારમાં—"कहिं गच्छंति" હેભગવન્ આ બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવો બે ઇન્દ્રિયપણાથી મરીને કયાસ્થાન પરજાય છે? આ પ્રશ્નના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે હે-'गोयमा! नेरइय देव असंखेज्जवासाउयवज्जेसु गच्छंति" આ બે ઇન્દ્રિય વાળા જીવો બે ઇન્દ્રિય

द्वीन्द्रियत उद्वृत्य द्वीन्द्रियजीवा स्तिर्यङ्मनुष्यगतिष्वेव उत्पद्यन्ते इति भावः। गत्यागतिद्वारे– **'दुगइया दुआगइया'** द्वीन्द्रियजीवाः द्विगतिकाः द्वयागतिकाश्च भवन्ति, द्वीन्द्रियतो मृत्वा तिर्यङ्-मनुष्यगतिषु गच्छन्ति अतो द्विगतिकाः, तथा–तिर्यङ्मनुष्येभ्यो मृत्वा द्वीन्द्रियेषु आगच्छन्ति अतो द्वयागतिका इति भाव. । **'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो'** प्रत्येक शरीरिणोऽसंख्याताः, घनीकृतलोकस्य या ऊर्ध्वाधः आगता एकप्रादेशिक्यः श्रेणयोऽसंख्येययोजनकोटिकोटी प्रमाणाकाशसूचीगतप्रदेशराशिप्रमाणाः तावत्प्रमाणत्वात् असंख्याता इत्युक्तमिति भावः । प्रज्ञप्ताः–कथिता. हेश्रमण ! हे आयुष्मन् ! प्रकरणार्थमुपसंहरन्नाह–**'से त्तं वेइंदिया'** ते एते द्वीन्द्रियजीवा निरूपिता इति ॥ सू० १८ ॥

आयु वाले मनुष्यो में जन्म नहीं लेते है किन्तु तिर्यञ्च गति और संख्यात वर्षवाली मनुष्यगति, इन दों गतियों में ही उत्पन्न होते है । गत्यागति द्वार में– ये दोइन्द्रियजीव **"दुगइया दुआगइया** द्विगतिक होते हैं अर्थात् द्वीन्द्रिय से उद्वृत्त होकर ये तिर्यञ्च और मनुष्य इन दो गतियों में ही जाते है और द्वयागतिक होते है अर्थात्–तिर्यञ्च और मनुष्य इन दो गतियो से आकर ही जीव इनमे उत्पन्न होता है । **"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो"** हे श्रमण ! आयुष्मन् ये प्रत्येक शरीरी असख्यात होते हैं । क्योंकि घनीकृत लोककी जो उर्ध्व अध आयत एक प्रदेशो वाली श्रेणियाँ है वे असख्यात योजन कोटाकोटी प्रमाण आकाश सूचिगत प्रदेशराशिप्रमाण है सो ये प्रत्येक शरीरी इतने प्रमाण है । इसलिये असख्यात कहे गये है, प्रकरणार्थ का उपसंहार–करते हुए अब सूत्रकार कहते हैं—**"से त्तं वेइंदिया"** इस प्रकार से हे गौतम ! द्वीन्द्रियजीव निरूपित हुए है ॥सूत्र १८॥

ગતિમાંથી નીકળી ને નૈરયિકોમાં દેવોમા અને અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યોમાં જન્મલેતા નથી. પરંતુ તિર્યંચ ગતિ અને સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યોમાં આ બે ગતિયોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે.

ગત્યાગતિદ્વારમાં—આ બે ઈન્દ્રિયવાળા જીવો "दुगइया दुआगइया" બે ગતિવાળા હોય છે. અર્થાત્ બે ઇન્દ્રિય પણાથી નીકળીને આ તિર્યંચ અને મનુષ્ય આ બે ગતિયોમાં જ જાય છે. અને દ્વયાગતિક હોય છે. અર્થાત્ તિર્યંચ અને મનુષ્ય આ બે ગતિયોમાંથી આવીને જ જીવ આ દ્વીન્દ્રિય પણામાં જન્મ લે છે "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो" હે શ્રમણ આયુષ્મન્ આ પ્રત્યેક શરીરી અસંખ્યાત હોય છે કેમ કે-ઘન રૂપે કરેલા લોકની જે ઉર્ધ્વ-ઉપરની અધ-નીચેની આયત પ્રદેશોવાળી શ્રેણીયો છે. તે બધી અસખ્યાત યોજન કોટાકોટી પ્રમાણ આકાશ સૂચિગત પ્રદેશ રાશિ પ્રમાણ છે. તો એ પ્રત્યેક **શરીરી** આટલા પ્રમાણવાળા છે તેથી તેઓને અસંખ્યાત કહ્યા છે.

પ્રકરણાર્થનો ઉપસંહાર કરતા હવે સૂત્રકાર કહે છે કે-**'से त्तं वेइंदिया'** આરીતે હે **ગૌતમ દ્વીન્દ્રિય** જીવો નુ નિરૂપણ કર્યું છે ॥સૂ૦ ૧૮॥

निरूपिता द्वीन्द्रियजीवाः, अथ त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियान् निरूपयितुमाह—'से किं तं तेइंदिया' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं तेइंदिया तेइंदिया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा-ओवइया रोहिणिया जाव हत्थिसोंडा, जे यावन्ने तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तहेव जहा बेइंदियाणं, नवरं सरीरोगाहणा, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं। तिन्नि इंदिया, ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगूण पण्ण राइंदिया, सेसं तहेव दुगइया दुआगइया, परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता, सेत्तं तेइंदिया॥

'से किं तं चउरिंदिया चउरिंदिया अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा—अंधिया पुत्तिया जाव गोमयकीडा जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तंजहा पज्जत्ता य यपज्जत्ता य। तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता तंचेव। णवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। इंदिया चत्तारि। चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी। ठिई उक्कोसेणं छम्मासा। सेसं जहा तेइंदियाणं जाव असंखेज्जा पन्नत्ता, सेत्तं चउरिंदिया" ॥सू० १९॥

छाया—अथ के ते त्रीन्द्रियाः, त्रीन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा ओपतिका रोहिणिका यावत् हस्तिशुण्डाः ये चान्ये तथाप्रकारा ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। तथैव यथा द्वीन्द्रियाणाम् नवरं शरीरावगाहना उत्कर्षेण तिस्रो गव्यूतयः। त्रीणि इन्द्रियाणि। स्थिति र्जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवम्। शेषं तथैव, द्विगतिका द्व्यागतिकाः, परीता असंख्येयाः प्रज्ञप्ताः। ते एते त्रीन्द्रियाः॥

अथ के ते चतुरिन्द्रियाः, चतुरिन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा—अन्धिकाः पुत्तिकाः यावद् गोमयकीटाः, ये चान्ये तथाप्रकारा एते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि तदेव। नवरं शरीरावगाहना उत्कर्षेण चतस्रो गव्यू-

तयः । इन्द्रियाणि चत्वारि । चक्षुर्दर्शनिनोऽचक्षुर्दर्शनिनः । स्थितिरुत्कर्षेण षण्मासान् । शेषं यथा त्रीन्द्रियाणां यावदसंख्येया प्रज्ञप्ताः । ते एते चतुरिन्द्रियाः ॥सू० १९॥

टीका—'से किं तं तेइंदिया' अथ के ते त्रीन्द्रियाः, त्रीन्द्रियाणां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरमाह—'तेइंदिया अणेगविहा पन्नत्ता' त्रीन्द्रियाः अनेकविधा—अनेक प्रकाराः प्रज्ञप्ताः—कथिताः । अनेकविधत्वमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'ओवइया रोहिणिया जाव हत्थिसोंडा' यावत्पदेन त्रीन्द्रियाणां प्रकारस्तु प्रज्ञापनायां द्रष्टव्यः तथाहि—'कुंथूपिवीलिया उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पाडा—तणाहारा कट्ठाहारा पत्ताहारा मालुया तणवेंटया पुप्फवेंटया फलवेंटया बीयवेंटया तेंबुरणमिंजिया तउसीमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिया बाहुया लहुया सुभगा सोवत्थिया, सुयवेंटा इंदकाइया इंदगोवया तुरुतुंबगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सयवाइया गम्ही हत्थिसोंडा । इति । एते च त्रीन्द्रियाः केचिद् अति प्रसिद्धाः केचिद्देशविशेषतो ज्ञातव्याः 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये तथाप्रकाराः—

अब सूत्रकार तेइन्द्रिय और चौइन्द्रियजीवों का निरूपण करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"से किं तं तेइंदिया—इत्यादि । सूत्र ॥१८॥

टीकार्थ—"से किं तं तेइंदिया" हे भदन्त ! तेइन्द्रिय जीवों का क्या लक्षण है ? और इनके कितने भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता" हे गौतम ! तेइन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के कहे गये हैं, "तं जहा" जैसे—"ओवइया, रोहिणिया, जाव हत्थिसोंडा" यहां यावत्पद से प्रज्ञापना सूत्र का पाठ इनके विषय में जान लेना चाहिये जो टीका में दिया गया है । "ओवइया, रोहिणिका" से लेकर हस्तिशुण्ड तक के जीव तेइन्द्रिय जीव हैं । इनमें कितनेक प्रसिद्ध हैं और कितनेक देशविशेष से जान लेने के है । "जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" तथा इनके ही जैसे और भी

હવેસૂત્રકાર તે ઇંદ્રિય અને ચૌઇંદ્રિય જીવો નુ નિરૂપણુ કરે છે.-આમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુ ને એવું પૂછે છે કે-"से किं तं ते इंदिया" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से किं तं तेइंदिया" હે ભગવાન તેઇન્દ્રિય જીવોનું શું લક્ષણુ છે ? અને તેના કેટલા ભેદોકહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વીમી ને કહે છે કે—"तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ તે ઇંદ્રિય જીવો અનેક પ્રકાર ના કહેલા છે, "तंजहा" તે આપ્રમાણે છે. "ओवइया, रोहिणिया, जाव हत्थिसोंडा" અહિયાં યાવત્પદથી આ વિષયનો પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનોપાઠ સમજીલેવો કે જે પાઠ આસૂત્રની ટીકામાં આપવામાં આવ્યો છે તે પાઠ "ओवइया, रोहिणिका" થી લઇ ને હસ્તિશુણ્ડના કથન સુધીના જીવ તેઇંદ્રિય જીવ છે અને તેમાં કેટલાક પ્રસિદ્ધ છે. અને કેટલાક દેશવિશેષ થી સમજી લેવા. "जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता" તથા આનાજ જેવા બીજા

एतत्सदृशा अन्येऽपि त्रीन्द्रियाः, 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते उपर्युक्ता त्रीन्द्रिया. सर्वेऽपि समासतः–संक्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहा' तद्यथा 'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च 'तहेव जहा बेंदियाणं' तथैव यथा द्वीन्द्रियाणाम् शरीरद्वारादारभ्य गत्यागतिद्वारपर्यन्तं तथैवात्रापि निरूपणीयम् यथा–द्वीन्द्रियजीवप्रकरणे निरूपितमिति । किन्तु द्वीन्द्रियप्रकरणापेक्षया त्रीन्द्रियप्रकरणे यद्वैलक्षण्यम् तद्दर्शयति–'नवरं' इत्यादिना 'नवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं' नवरं त्रीन्द्रियजीवानां शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागप्रमिता द्वीन्द्रियवदेव उत्कर्षेण तु तिस्रो गव्यूतयः । 'तिन्नि इंदिया' त्रीन्द्रियजीवानां स्पर्शनरसनघ्राणरूपाणि त्रीणीन्द्रियाणि भवन्तीति । ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगूणपण्णराइंदिया, त्रीन्द्रियजीवानां स्थितिः–आयुष्यकालो जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण तु एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवं भवतीति । 'सेसं तहेव' शेषम् अवगाहनेन्द्रियस्थि-

---

जो जीव हैं वे सब तेइन्द्रिय जीव संक्षेप से दो प्रकार के हैं, "तं जहा" जैसे–"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" पर्याप्तक और अपर्याप्तक "तहेव जहा बेंदियाणं" शरीरद्वार से लेकर गत्यागति द्वार तक का इनका वर्णन जैसा द्वीन्द्रिय के प्रकरण में किया गया है वैसा ही कर लेना चाहिए, परन्तु द्वीन्द्रिय के प्रकरण की अपेक्षा त्रीन्द्रिय के प्रकरण में जो विलक्षणता है वह प्रकट करते हैं––"नवरं" इत्यादि । "नवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं" द्वीन्द्रियजीवों की तरह इन तेइन्द्रियजीवों की जघन्य अवगाहना अङ्गुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट अवगाहना इनकी तीन कोशकी है । "तिन्नि इंदिया" इनके स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियां होती हैं । "ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगूणपण्णराइंदिया" इनकी स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और उत्कृष्ट से ४९ उनचास दिन रात की होती है । "सेसं तहेव" अवगाहना, इन्द्रिय और

પણ જે જીવો છે, તે સઘળા તેઇંદ્રિય જીવો સમજવા તેઇંદ્રિય જીવો સંક્ષેપ થી બે પ્રકારના છે. "तं जहा" તે બે પ્રકારો આપ્રમાણે છે. 'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક, "तहेव जहा बेइंदियाणं" શરીર દ્વારથી લઈને ગત્યાગતિક દ્વારસુધીનું તેઓનું વર્ણન જે પ્રમાણે દ્વીન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમા કર્યું છે. એજ પ્રમાણેનું સમજી લેવું પરંતુ બે ઇંદ્રિય જીવોની અપેક્ષાએ આ તેન્દ્રિય જીવોના પ્રકરણમાં જે વિલક્ષણપણું–જુદાઈ છે તે બતાવતા સૂત્રકાર કહે છે કે–नवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं" બે ઈંદ્રિય જીવોની જેમ આ ત્રણઈંદ્રિય વાળા જીવોની જઘન્ય અવગાહના આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગપ્રમાણની છે અને તેની ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના ત્રણકોસની છે

"तिन्नि इंदिया" તેઓને સ્પર્શ રસના, (જીભ) અને ઘ્રાણ (નાક) આ ત્રણ ઇંદ્રિયો હોય છે "ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं एगूणपण्णराइंदिया" તેમની સ્થિતિ

व्यतिरिक्तं सर्वं तथैव-द्वीन्द्रियप्रकरणवदेव ज्ञातव्यमिति । **'दुगइया दुआगइया'** त्रीन्द्रियजीवाः द्विगतिका द्व्यागतिका भवन्ति तिर्यङ्मनुष्यगतौ गच्छन्ति तथा तिर्यङ्मनुष्येभ्य एव आगच्छन्तीति **'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता'** प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः । त्रीन्द्रियप्रकरणमुपसंहरन्नाह-**'से त्तं तेइंदिया'** ते एते त्रीन्द्रिया जीवा निरूपिताः, इति ॥

निरूपितास्त्रीन्द्रियजीवाः, सम्प्रति चतुरिन्द्रियजीवान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-**'से किं तं'** इत्यादि, **'से किं तं चउरिंदिया'** अथ के ते चतुरिन्द्रियजीवा इति प्रश्नः, उत्तरयति-**'चउरिंदिया अणेगविहा पन्नत्ता'** चतुरिन्द्रियजीवा अनेकविधाः-अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति । अनेकविधत्वमेव दर्शयति-**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा-**अंधिया पुत्तिया**

स्थिति के अतिरिक्त और जो शरीर, संहनन आदि द्वार हैं वे सब द्वीन्द्रिय के प्रकरण के जैसे ही हैं । ये तेइन्द्रिय जीव **"दुगइया, दुआगइया"** द्विगतिक और द्व्यागतिक होते है । क्योंकि ये इस पर्याय से जब उद्वृत्त होते हैं तो तिर्यञ्च गति या मनुष्य गति इन दो ही गतियो में जाते है । तथा इनमें तिर्यञ्च गति और मनुष्य गति से आये हुए जीव ही उत्पन्न होते हैं इसलिये ये द्व्यागतिक होते है । **"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता"** ये प्रत्येक शरीरी असंख्यात होते हैं । इस प्रकार तेइन्द्रियजीवो का कथन करके अब सूत्रकार इस प्रकरण का उपसंहार करते हैं--**"से तं तेइंदिया"** इस प्रकार से तेइन्द्रियजीवों का यह निरूपण किया है ।

अब **चौइन्द्रियजीवों का निरूपण** किया जाता है-**"से किं तं चउरिंदिया"** हे भदन्त ! चौइन्द्रियजीवों का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-गौतम ! **"चउरिंदिया अणेगविहा पण्णत्ता"** चौइन्द्रियजीव अनेक प्रकार के कहे गये हैं-**"तं जहा"** जैसे-**"अंधिया पुत्तिया, जाव गोमयकीडा"** अन्धिका, पुत्रिका यावत, गोम-

---

જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ૪૯ ઓગણુ પચાસ રાતદિવસની હોય છે **'सेसं तहेव'"** અવગાહના ઇંદ્રિય. અને સ્થિતિદ્વારના કથન સિવાય બાકીના જે શરીર સંહનન. વિગેરે દ્વારો છે. તેબધા બે ઇંદ્રિયવાળા જીવોના કથન પ્રમાણેજ છે. આ તેઇન્દ્રિય જીવો **"दुगइया दुआगइया"** દ્વિગતિક અને દ્વયાગતિક હોય છે. કેમ કે-તેઓ આ પર્યાયમાંથી જ્યારે નીકળે છે, તોતિર્યંચગતિ અને મનુષ્યગતિ આ બેજ ગતિમાંથી આવેલ જીવ જ ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તેમને દ્વયાગતિક કહેલા છે.

"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" આ પ્રત્યેક શરીરી અસંખ્યાત હોય છે આપ્રમાણે તેઇંદ્રિય જીવોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર આપ્રકરણનો ઉપસંહાર કરે છે. **"सेत्तं ते इंदिया"** આ રીતે તેઇન્દ્રિય જીવોનું આ નિરૂપણ કર્યું છે.

હવે ચૌઇંદ્રિય જીવોનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે આ સંબંધમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુને પૂછે છેકે—**"से किं तं चउरिंदिया"** હે ભગવન્ ચૌઇંદ્રિય જીવોનું શું લક્ષણ છે ? અને તેના કેટલા ભેદો કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! **"चउरिंदिया अणेगविहा पण्णत्ता"** ચૌઇન્દ્રિય જીવો અનેક પ્રકારના કહ્યા છે.—**"तं जहा"** તે

जाव गोमयकीडा, अन्धिकाः पुत्रिका यावद् गोमयकीटाः, अत्र यावत्पदेन–प्रज्ञापनोक्ताः सर्वे ग्राह्याः, तथाहि–गाथा–'अंधियपुत्तियमच्छिय–मसगा कीडे तहा पयंगे य।

ढंकुणकुक्कडकुक्कुह, नंदावत्तेय सिंगिरडे ॥१॥

पत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किल्लपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा ओहंजलिया जलचरिया गम्भीरा णीलिया तंतवा अच्छिरोडा अच्छिपेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोट्टा विच्छुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पियंगाला कणगा' एतदन्तानां प्रज्ञापनोक्तानां संग्रहो भवति, तत्र 'मच्छिया' मक्षिकाः मशकाः कीटाः पतङ्गाः ढंकुणाः कुक्कुटाः कुक्कुटाः नन्दावर्त्ताः सिंगिरिटाः कृष्णपत्राः नीलपत्राः हारिद्रपत्राः शुक्लपत्राः चित्रपक्षा. विचित्रपक्षाः ओघाञ्जलिकाः जलचारिकाः गम्भीराः नीलिकाः तंतवाः अक्षिरोडाः अक्षिप्रेक्षाः सारंगाः, नूपुराः, दोलाः भ्रमराः भरिलयःजरुला' तोट्टाः वृश्चिकाः पत्रवृश्चिकाः गोमयवृश्चिकाः जलवृश्चिका' प्रियङ्गलाकनकाः, इति, यथादेशमवगन्तव्याः। 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये तथा प्रकारा'–अन्धिकादिजीवसदृशाः अन्धिकादिजीवभिन्नाश्च ते सर्वे चतुरिन्द्रिया ज्ञातव्या इति। 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते उपर्युक्ताश्चतुरिन्द्रियजीवाः समासतः–संक्षेपेण द्विविधाः द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता. 'तं जहा' तद्यथा–'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति।

सम्प्रति–शरीरादिद्वारमधिकृत्य प्रश्नयन्नाह–'तेसि णं भंते' इत्यादि, 'तेसि णं भंते? जीवाणं कइसरीरगा पन्नत्ता' तेषां चतुरिन्द्रियाणां खलु भदन्त? जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञ-

---

यकीट यहां यावत्पद से–प्रज्ञापना का पाठ जान लेना चाहिये जो टीका में दिया गया है–अन्धिका पुत्रिका मक्षिका–मशक आदि गोमयकीट पर्यन्त के जीव जो प्रज्ञापना में कहे गये हैं वे सब चौइन्द्रियजीव हैं। इनमें कितनेक नाम तो अति स्पष्ट है और कितनेक नाम देश विदेश से जानने योग्य हैं। तथा इसी प्रकार के जो ओर भी जीव है वे तथा जो इनसे भिन्न हे सब ही चौइन्द्रियजीव "समासओ दुविहा पन्नत्ता" सक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं। "तं जहा" जैसे -"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" प्रर्याप्त और अपर्याप्त "तेसि ण भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता" हे भदन्त! इन चौइन्द्रियजीवों के कितने शरीर

આ પ્રમાણે છે "अंधिया, पुत्तिया. जाव गोमयकीडा", અન્ધિકા, પુત્રિકા યાવત્ ગોમય કીડા અહિયાં યાવત્પદથી પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં આ વિષયમાં કહેલો પાઠ સમજી લેવો કે જે પાઠ સંસ્કૃત ટીકામાં આપવામાં આવેલ છે. અન્ધિકા, પુત્રિકા, મક્ષિકા (માખી) મશક–મચ્છર વિગેરે ગોમય કીટ સુધીના જીવો કે જે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહેલા છે, તે બધા ચૌઇંદ્રિય જીવો છે. તેમાં કેટલાક નામો તો ઘણાજ સ્પષ્ટ છે. અને કેટલાક નામો દેશ–વિદેશ થી સમજી લેવા. તથા આ પ્રમાણેના બીજા પણ જે જીવો છે, તે બધાજ ચૌઇન્દ્રિય જીવો છે બધા ચૌઇંન્દ્રિય જીવો–"समासओ दुविहा पण्णत्ता" સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલા છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે સમજવા "पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य" પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક "तेसिं

प्तानि–कथितानीति प्रश्नः, भगवानाह- **'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ? **'तओ सरीरगा पन्नत्ता'** चतुरिन्द्रियजीवानां त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि **'तं चेव'** तदेव–द्वीन्द्रियवदेव औदारिकं तैजसं कार्मणम् । अवगाहनादिद्वारे वैलक्षण्यं विद्यते तद्दर्शयति–**'नवरं'** इत्यादिना, **'नवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं'** नवरं केवलं शरीरावगाहना चतुरिन्द्रियजीवानां चतस्रो गव्यूतयः, जघन्या शरीरावगाहना तु अंगुलासंख्येयभागप्रमाणैवेति । **'इंदिया चत्तारि'** इन्द्रियाणि स्पर्शनरसनाघ्राणचक्षुरूपाणि चत्वारि भवन्ति चतुरिन्द्रियजीवानाम् अतएव एतेषां चतुरिन्द्रिय इति नाम भवति । दर्शनद्वारे–**'चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी'** चक्षुरिन्द्रियजीवा चक्षुर्दर्शनिनोऽपि भवन्ति अचक्षुर्दर्शनिनोऽपि भवन्तीति । स्थितिद्वारे–**'ठई उक्कोसेणं छम्मासा'** चतुरिन्द्रियजीवानां स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण तु षण्मासान् इति । **'सेसं जहा तेइंदियाणं जाव असंखेज्जा पन्नत्ता'** शेषम्–शरीरावगाहनेन्द्रियदर्शनस्थितिद्वारातिरिक्तं सर्वं संस्थानादिद्वारजातं यथा त्रीन्द्रियाणां कथितं तथैव चतुरिन्द्रियाणामपि ज्ञातव्यम् कियत्पर्यन्तं

होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है–हे गौतम ! इनके **"तओ सरीरगा पन्नत्ता"** तीन शरीर होते हैं **"तं चेव"** वे तीन शरीर औदारिक, तैजस और कार्मण हैं । अवगाहना द्वार में इनके शरीरकी अवगाहना जघन्य से तो अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और उत्कृष्ट से चार कोश प्रमाण होती है । **"इंदिया चत्तारि"** इनके इन्द्रियां–स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु इस प्रकार से चार होती है । इसी कारण इनका नाम चौइन्द्रियजीव ऐसा हुआ है । दर्शनद्वार में इनके दो दर्शन होते हैं–चक्षु दर्शन भी होता है और अचक्षु दर्शन भी होता है । स्थितिद्वार में **"ठिई उक्कोसेणं छम्मासा"** इनकी स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और उत्कृष्ट स्थिति इनकी छहमास की होती है । **"सेसं जहा तेइंदियाणं जाव असंखेज्जा पन्नत्ता'** इस प्रकार शरीर अवगाहना इन्द्रिय दर्शन स्थिति

णं भंते जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता" હે ભગવન્ આ ચૌઇંદ્રિય જીવોને કેટલા શરીરો હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–હે ગૌતમ ! તેઓને **"तओ सरीरगा पन्नत्ता"** ત્રણ શરીરો હોય છે **"तं चेव"** તે ત્રણ પ્રકાર–ઔદારિક શરીર, તૈજસ અને કાર્મણ એ પ્રમાણેના છે. અવગાહના દ્વારમાં તેઓના શરીરની અવગાહના જઘન્ય થી તો આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી ચાર કોસ પ્રમાણની છે

"इंदिया चत्तारि" તેઓની ઇંદ્રિયો સ્પર્શન રસના, ઘ્રાણ અને ચક્ષુ આ પ્રમાણે ચાર હોય છે. તેજ કારણથી તેઓનું નામ ચૌઇંદ્રિય જીવ એ પ્રમાણેનું છે.

દર્શનદ્વારમાં–તેઓને ચક્ષુદર્શન અને અચક્ષુદર્શન આ પ્રમાણેના બે દર્શનો હોય છે સ્થિતિદ્વારમાં **"ठिई उक्कोसेणं छम्मासा"** તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી તેઓની સ્થિતિ છમાસની હોય છે **'सेसं जहा तेइंदियाणं जाव असंखेज्जा पण्णत्ता"** આ પ્રમાણે શરીર, અવગાહના' ઇંદ્રિય, દર્શન સ્થિતિ આદ્વારો

त्रीन्द्रियवद् ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, यावद् असंख्याताः प्रज्ञप्ताः अत्र यावत्पदेन संहननादिद्वारजातस्य ग्रहणं भवतीति । त्रीन्द्रियवदेव एतानि सर्वाणि द्वाराणि विविच्य वक्तव्यानीति । प्रकरणार्थमुपसंहरन्नाह-'सेत्तं चउरिंदिया' ते एते चतुरिन्द्रियजीवा निरूपिता इति ॥ सू० १९ ॥

उक्ताश्चतुरिन्द्रियाः सम्प्रति पञ्चेन्द्रियान् प्रतिपादयितुमाह—

मूलम्—'से किं तं पंचिंदिया, पंचिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा । से किं तं नेरइया नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा—रयणप्पभापुढवी नेरइया जाव अहेसत्तमपुढवी नेरइया, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य । तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता? गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा—वेउव्विए तेयए कम्मए । तेसि णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा सरीरोगाहणा पन्नत्ता तंजहा-भव धारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जो भागो—उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइ भागं उक्कोसेणं धणुसहस्सं । तेसिणं भंते ! जीवाणं सरीरा किं संघयणी

इन द्वारों के सिवाय और जो संस्थान आदि द्वार है वे सब प्रत्येक शरीरी पर्यन्त तेइन्द्रियजीवों के प्रकरण में जिस रूप से प्रतिपादित किये गये है वैसे ही इस चौइन्द्रिय के प्रकरण में भी प्रतिपादित कर लेना चाहिये, ये प्रत्येक शरीरी असंख्यात होते हैं । अब प्रकरणार्थ का उपसंहारकरते है "से तं चउरिंदिया' इस प्रकार से ये चौइन्द्रियजीव निरूपित' हुए हैं । सूत्र ॥१९॥

ના કથન સિવાય બીજા જે સંસ્થાન વિગેરે દ્વારો છે, તે બધા પ્રત્યેક શરીરી પર્યંત તેઇંદ્રિય જીવોના પ્રકરણમા જે પ્રમાણે પ્રતિપાદન કર્યો છે, એજ પ્રમાણે આ ચૌઇંદ્રિયોના પ્રકરણમાં પણ પ્રતિપાદન કરીલેવું. આ પ્રત્યેક શરીરી જીવો અસંખ્યાત હોય છે

હવે સૂત્રકાર આ પ્રકરણનો ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે—"से त्तं चउरिंदिया" આ પ્રમાણે આ ચૌઇંદ્રિય જીવોનું નિરૂપણ કર્યું છે ॥સૂ૦ ૧૯॥

पन्नत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी णेवट्ठी, णेव छिरा णेव ण्हारु णेव संघयणमत्थि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुहा अमणुण्णा अमणामा ते.से संघातत्ताए परिणमंति। तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरा किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तंजहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य , तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया । तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पन्नत्ता । चत्तारि कसाया। चत्तारि सन्नाओ। तिन्नि लेस्साओ। पंचिंदिया । चत्तारि समुग्घाया आइल्ला। सन्नी वि असन्नी वि। णपुंसगवेयगा। छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ। तिविहा दिट्ठी। तिन्नि दंसणा। णाणी वि अन्नाणी वि, जे नाणी ते नियमा तिन्नाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी, अत्थेगइया तिअन्नाणी, जे य दु अण्णाणी ते नियमा मइ अन्नाणी सुय अन्नाणी य जे ति अन्नाणी ते नियमा मइ अन्नाणी य सुय अन्नाणीय विभंग नाणी य। तिविहे जोगे। दुविहे उवजोगे। छद्दिसिं आहारो ओसण्णं कारणं पडुच्च वण्णओ कालाइं जाव आहारमाहारेंति। उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो । ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । दुविहा मरंति। उव्वट्टणा भाणियव्वा जओ आगया, णवरं संमुच्छिमेसु पडिसेहो। दुगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो ? से त्तं नेरइया" ॥ सू० २० ॥

छाया—अथ के ते पञ्चेन्द्रियाः ? पञ्चेन्द्रियाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—नैरयिका स्तिर्यग्योनिका मनुष्या देवाः। अथ के ते नैरयिकाः ? नैरयिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः , तद्यथा-रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका यावत् अधःसप्तमपृथिवी नैरयिकाः, ते

समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-वैक्रियं तैजसं कार्मणम् तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कियन्महती शरीरावगाहना प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्विविधा शरीरावगाहना प्रज्ञप्ता, तद्यथा-भवधारणीया च उत्तरवैक्रियिकी च तत्र खलु या सा भवधारणीया सा जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येय भागम्, उत्कर्षेण पञ्चधनुःशतानि । तत्र खलु या सा उत्तरवैक्रियिकी सा जघन्येनाङ्गुलस्य संख्येयभागमुत्कर्षेण धनुःसहस्रम् । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां शरीराणि किं संहननानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! षण्णां संहननानामसंहननि नैवास्थीनि नैव शिराः नैव स्नायूनि नैव संहननमस्ति । ये पुद्गला अनिष्टा अकान्ता अप्रिया अशुभा अमनोज्ञा अमनोऽमाः,-तेषां शरीरसङ्घाततया परिणमन्ति । तेषां खलु भदन्त ! जीवानां शरीराणि किं संस्थितानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा भवधारणीयानि उत्तरवैक्रयिकाणि च, तत्र-खलु यानि तानि भवधारणीयानि तानि हुण्डसंस्थितानि, तत्र खलु यानि तानि उत्तरवैक्रयिकाणि तान्यपि हुण्डसंस्थितानि प्रज्ञप्तानि । चत्वारः कषायाः । चतस्रः संज्ञाः । तिस्रो-लेश्याः । पञ्चेन्द्रियाणि । चत्वारः समुद्घाता आदिमाः । संज्ञिनोऽपि असंज्ञिनोऽपि, नपुंसकवेदकाः, षट्पर्याप्तयः षड् अपर्याप्तयः । त्रिविधा दृष्टयः । त्रीणि दर्शनानि । ज्ञानिनोऽपि अज्ञानिनोऽपि, ये ज्ञानिन स्ते नियमात् त्रिज्ञानिनः, तद्यथा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिन अवधिज्ञानिनः । ये अज्ञानिन स्ते अस्त्येकके द्व्यज्ञानिनः, अस्त्येकके त्र्यज्ञानिनः ये च द्व्यज्ञानिनस्ते नियमान्मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च, ये त्र्यज्ञानिनस्ते नियमान्मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च विभङ्गज्ञानिनश्च । त्रिविधो योगः । द्विविध उपयोगः । षट् दिशि आहारः, 'ओसण्णं'-प्रायः कारणं प्रतीत्य वर्णत कालान् पुद्गलान् यावदाहारमाहारन्ति । उपपातस्तिर्यङ्‌ मनुष्येभ्य स्थितिर्जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेण त्रय स्त्रिंशत्सागारोपमाणि । द्विविधा म्रियन्ते । उद्वर्त्तना भणितव्या यत आगताः, नवरं संमूर्छिमेषु प्रतिषेधः । द्विगतिका द्व्यागतिकाः परीता असंख्याताः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् ! ते एते नैरयिकाः ॥सू० २०॥

टीका—'से किं तं पंचिंदिया' अथ के ते पञ्चेन्द्रियाः, पञ्चेन्द्रियाणां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति-'पंचिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता' पञ्चेन्द्रियाश्चतुर्विधाः

अब पञ्चेन्द्रिय जीवों का निरूपण किया जाता है--

"से किं तं पंचिंदिया, इत्यादि । सूत्र ॥२०॥

टीकार्थ—'से किं तं पंचिंदिया' हे भदन्त ? पञ्चेन्द्रियों का क्या लक्षण है और

હવે પંચેન્દ્રિય જીવોનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.—"से किं तं पंचिंदिया" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से किं तं पंचिंदिया" હે ભગવાન્ પંચેન્દ્રિય જીવોનું શું લક્ષણ છે ?

चतुःप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, पञ्च-स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रात्मकानि परिपूर्णानि इन्द्रियाणि येषां ते पञ्चेन्द्रियजीवाः कथ्यन्ते । तेषां चतुर्विधत्वमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा–'णेरइया' नैरयिकाः, तत्र अयति–प्राप्नोति इष्टफलं कर्म तत् निर्गतं येभ्यस्ते निरयाः–नरकावासाः तेषु नरकावासेषु भवा इति नैरयिकाः सर्वतः कष्टफलभोक्तारः । 'तिरिक्खजोणिया' तिर्यग्योनिकाः–तिर्यग् योनिसमुद्भवाः 'मणुस्सा' मनुष्याः 'देवा' देवाः दीव्यन्ति इति देवाः । तेषु नैरयिकान् प्रतिपादयितु प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि 'से किं तं नेरइया, अथ के ते नैरयिका इति प्रश्नः, उत्तरयति–'नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता' नैरयिकाः सप्तविधाः सप्तप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः । तं जहा तद्यथा–'रयणप्पभा पुढवी नेरइया जाव अहेसत्तम-

---

इनके कितने भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–हे गौतम ! "पंचिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता" पञ्चेन्द्रियजीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पांच इन्द्रियां होती हैं । इसी कारण ये पञ्चेन्द्रिय कहलाते है । इसके चार प्रकार ऐसे हैं–"णेरइया" नैरयिकजीव, "तिरिक्खजोणिया" तिर्यग्योनिक जीव, "मणुस्सा" मनुष्य जीव और "देवा" देव इनमें जो नरकावासों में रहते हैं वे नैरयिक है । जहां से इष्टफल संपादक कर्म निर्गत हो गया होता है अर्थात् सुखका लेश भी जहां होता नही हैं ऐसे स्थानका नाम निरयहै । इन नरकावास रूप निरयों में जो होते हैं–रहते हैं–वे नैरयिक जीव हैं । ये नैरयिक सब प्रकार से कष्टप्रद फलों के ही भोक्ता होते है । जो जीव तिर्यञ्चगति में जन्म धारण करते है वे तिर्यग्योनिक जीव है । मनुष्य और देव प्रसिद्ध है ।

इन में प्रथम नैरयिकों का निरूपण करते है–"से किं तं नेरइया" इत्यादि––"से किं तं नेरइया" हे भदन्त । नैरयिक जीव कितने प्रकार के है ? उत्तर में प्रभु कहते है–हे गौतम ! "नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता" नैरयिक सात प्रकार के है "तं जहा" जैसे–

અને તેના કેટલા ભેદો છે ? આ પ્રમાણેના ગૌતમસ્વામીના પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! "पंचिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता" પંચેન્દ્રિય જીવોને સ્પર્શન. રસના, ઘ્રાણ ચક્ષુ અને કાન આ પ્રમાણેની પાંચ ઇંદ્રિયો હોય છે, તેથીજ તેઓ પંચેન્દ્રિય કહેવાય છે તેના ચાર પ્રકારો આ પ્રમાણે છે—"णेरइया" નૈરયિક જીવો "तिरिक्खजोणिया" તિર્યગ્યોનિકજીવ, "मणुस्सा" મનુષ્ય જીવ અને 'देवा" દેવ તેમા જેઓ નરકાવાસોમાં રહે છે, તે નૈરયિક કહેવાય છે જયાંથી ઇષ્ટફલ સંપાદક કર્મ નિર્ગત થઈગયું હોય છે તેનું નામ નિરય છે, આ નરકાવાસ રૂપ નિરયોમાં જે હોય છે અર્થાત્ રહે છે, તે નૈરયિક જીવો છે. આ નૈરયિકો બધીરીતે કષ્ટપ્રદ ફલોનેજ ભોગવનારા હોય છે જે જીવો તિર્યંચ ગતિમાં જન્મધારણ કરે છે, તેઓ તિર્યંચ યોનિવાળા જીવો છે મનુષ્ય અને દેવો પ્રસિદ્ધ જ છે.

આમાં પહેલાં નૈરયિકોનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે—"से किं तं नेरइया" ઈત્યાદિ ગૌતમસ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભગવાન્ "से किं त नेरइया" નૈરયિક જીવો કેટલા પ્રકારના છે ? અને તેના શું ભેદો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—હે ગૌતમ ! "नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता" નૈરયિક જીવો સાતપ્રકારના કહેલા છે.—

पुढवी नेरइया' रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका यावत् अधःसप्तमपृथिवी नैरयिकाः, अत्र यावत्पदेन शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा पृथिवीनारकाणां सग्रहो भवतीति। 'ते **समासओ दुविहा पन्नत्ता,** ते सप्तापि नारकाः समासतःसंक्षेपेण द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः, **'तं जहा'** तद्यथा-**'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य'** पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति । नारकजीवानां द्वाराणि प्रदर्शयितुं प्रश्नयन्नाह-**'तेसि णं'** इत्यादि, **'तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता'** तेषां नारकाणां खलु भदन्त ! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानीति प्रथमशरीरद्वारे प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'तओ सरीरगा पन्नत्ता'** त्रीणि-त्रिप्रकारकाणि शरीराणि नारकजीवानां प्रज्ञप्तानीति । त्रैविध्यमेव दर्शयति-**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा-**'वेउव्विए तेयए कम्मए'** वैक्रियं तैजस कार्मणं चेत्येतच्छरीरत्रितयं भवतीति भवप्रत्ययादेव वैक्रियशरीर भवति नत्वौदारिकं भवति तैजसं कार्मणं तु सर्वजीवसाधारणं तदस्यापि भवत्येवेति प्रथमं शरीरद्वारम् ॥

'रयणप्पभापुढवी नेरइया जाव अहेसत्तमपुढवीनेरइया' रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक यावत् अधः सप्तम पृथिवी नैरयिक । यहां यावत् शब्द से शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा इन पृथिवियो के नारकों का सग्रह हुआ है। ये सातों ही नारक **"समासओ दुविहा पन्नत्ता"** सक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं-**"तं जहा"** जसे-**"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य"** पर्याप्त और अपर्याप्त **"तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता"** हे भदन्त ! इन नारक जीवों के कितने शरीर कहे गये हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-**"गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता"** हे गौतम ! इनके तीन शरीर कहे गये हैं--**'तं जहा"** वे तीन शरीर ये हैं-**"वेउव्विए, तेयए, कम्मए"** वैक्रिय शरीर, तैजसशरीर, और कार्मण शरीर। इनके भवप्रत्यय से वैक्रिय शरीर होता है। औदारिक आदि शरीर नहीं होते है। तथा तैजस और कर्मण ये दो शरीर सर्व जीव साधारण होते है इसलिये इनके भी होते हैं। अवगाहना

"तं जहा" ते सातप्रकारे। आ प्रमाणे छे.—**"रयणप्पभा पुढवी नेरइया जाव अहे सत्तम पुढवी नेरइया"** रत्नप्रभा पृथ्वी नैरयिक यावत् अध सप्तमी पृथ्वी नैरयिक अहियां यावत् शब्दथी शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा आ पृथ्वीयोना नारकोनो संग्रह थयो छे आ साते नारको—**"समासओ दुविहा पण्णत्ता"** संक्षेपथी बे प्रकारना कहेला छे **"तं जहा"** ते बे प्रकारो आ प्रमाणे छे **"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य"** पर्याप्तक अने अपर्याप्तक **"तेसिं णं भंते जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता"** हे भगवान् आ नारक जीवो ने केटला शरीरो कहेला छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभु कहे छे के -**"गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता"** हे गौतम ! तेओने त्रण शरीरो कहेला छे. **"तं जहा"** ते त्रण शरीरो आ प्रमाणे छे **"वेउव्विए, तेयए, कम्मए,** वैक्रिय शरीर, तैजस शरीर, अने कार्मण शरीर. तेओने भवप्रत्ययथी वैक्रिय शरीर होय छे. औदारिक विगेरे शरीर होता नथी तथा तैजस अने कार्मण आ बे शरीर सर्व जीव साधारण होय छे. तेथी ते तेमने पण होय छे.

अथ अवगाहनाद्वारमाह—'तेसि णं भंते ? जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता' तेषां नारकाणां खलु भदन्त ! जीवानां कियन्महती शरीरावगाहना प्रज्ञप्तेति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुविहा सरीरोगाहणा पन्नत्ता' द्विविधा—द्विप्रकारका शरीरावगाहना नारकजीवानां प्रज्ञप्ता कथिता, द्वैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य' भवधारणीया च उत्तरवैक्रयिकी च, तत्र भवो जन्म धार्यते यया अवगाहनया सा भवधारणीया भवप्रत्ययिकी उत्पादसमयभाविनीत्यर्थः अपरा तु-भवान्तरवैरिनारकप्रतिघातनार्थमुत्तरकाले या विचित्ररूपा वैक्रयिकी अवगाहना सा उत्तर-वैक्रयिकी। 'तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा' तत्र द्वयोर्मध्ये खलु या सा भवधारणीया शरीरावगाहना 'सा जहन्नेणं अगुलस्स असंखेज्जइभागो' सा जघन्येनांगुलस्यासख्येयभाग-

---

द्वार में-गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा हैं—"तेसि णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता" हे भदन्त ? इन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी होती है ? उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पन्नत्ता" हे गौतम ! शरीराव-गाहना दो प्रकार की,कही गई है "तं जहा" जैसे—'भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य' "एक भवधारिणीय शरीरावगाहना और दूसरी उत्तरवैक्रयिकी शरीरावगाहना। जिस—अव-गाहना के द्वारा जन्म धारण किया जाता है—वह भवधारणीय भव के प्रभाव से होने वाली अर्थात् उत्पाद समय में होने वाली अवगाहना है। और उत्तरवैक्रियकी अवगाहाना जोभवा-न्तर के वैरीभूत नारक को मारने के लिये उत्तरकाल में धारण की जाती है वह है। यह विचित्र रूपा होती है। "तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असं-खेज्जइभागो" भवधारणीय शरीरावगाहना—जघन्य से अङ्गुल के असख्यातवे भाग प्रमाण

અવગાહનાદ્વાર સંબંધમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—"तेसिं णं भंते ! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता" હે ભગવન્ આ જીવોને શરીરની અવગાહના કેટલી મોટી હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! તેમની શરીરાવગાહના બે પ્રકારની કહેલી છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણેના છે. "भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य" એક ભવ-ધારણીય શરીરાવગાહના અને બીજી ઉત્તરવૈક્રિય શરીરાવગાહના જે અવગાહના દ્વારા જન્મ ધારણ કરવામાં આવે છે. તે ભવધારણીય ભવના પ્રભાવથી થવાવાળી અર્થાત્ ઉત્પાદ-ઉત્પ-ત્તિના સમયે થવાવાળી અવગાહના છે. અને ઉત્તરવૈક્રિયની અવગાહના જે ભવાન્તરના વૈરી રૂપ નારકને મારવામાટે ઉત્તરકાળમાં ધારણ કરવામાં આવે છે તે છે. આ અવગાહના વિચિત્ર રૂપ હોય છે. "तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अगुलस्स असंखे-ज्जइ भागो" ભવધારણીય શરીરાવગાહના જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાત માં ભાગપ્રમાણ

प्रमाणा सा चोपपातकाले ज्ञातव्या तथा प्रयत्नभावात्, **'उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं'** उत्कर्षेण सा शरीरावगाहना पञ्चधनुःशतानि । इदञ्चोत्कर्षतः प्रमाणं सप्तमपृथिवीमधिकृत्य ज्ञातव्यम्, प्रतिपृथिव्युत्कृष्टाऽवगाहना प्रमाणं त्वेवं ज्ञातव्यम् (१) प्रथमपृथिव्यां षडङ्गुलाधिकानि पादोनाष्टधनूंषि (२) द्वितीयपृथिव्यां सार्द्धपञ्चदशधनूंषि । (३) तृतीयस्यां सपादैकत्रिंशद्धनूंषि । (४) चतुर्थ्यां सार्द्धद्वाषष्टिः धनूंषि । (५) पञ्चम्यां सपादशतधनूंषि । (६) षष्ठ्यां सार्द्धद्विशतधनूंषि । (७) सप्तम्यां पञ्चधनुःशतानीति सूत्रे प्रोक्तमेव ।

नैरयिकाणां भवधारणीयशरीरस्योत्कृष्टावगाहनाकोष्टकमिदम्—

पृथिवीसंख्या	१	२	३	४	५	६	७
धनु प्रमाणम्	७॥।६अं	१५॥१२अं.	३१।	६२॥	१२५	२५०	५००

'तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं' तत्र द्वयोरवगाहनयोर्मध्ये या सा उत्तरवैक्रियिकी द्वितीयावगाहना सा जघन्येनाङ्गुलस्य संख्येयभागप्रमाणा

होती है। और **"उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं"** उत्कृष्ट से पांच सौ धनुष प्रमाण होती है। जघन्य अवगाहना उपपातकाल में होती है। और उत्कृष्ट अवगाहना सप्तम पृथिवी में होती है। हरएक पृथिवीगत नैरयिक जीवों की भवधारणीय शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना का प्रमाण इस प्रकार है-प्रथमपृथिवी में नैरयिकों की उत्कृष्ट अवगाहना पौने आठ धनुष और छह अंगुल की होती है ।१। दूसरी पृथिवी में साढा पन्द्रह धनुष और बारह अंगुल की होती है २, तीसरी पृथिवी में सवाइकतीस धनुष की होती है ३, चौथी पृथिवी में साढाबासठ धनुष की होती है ४, पांचवीं पृथिवी में सवासौ धनुष की होती है ५, छठी पृथिवी में ढाई सौ धनुष की होती है ६, और सातवीं पृथिवी में पांचसौ धनुष की होती है जो सूत्र में ही कही गई ७, **"तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं"**

વાળી હોય છે. અને **"उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं"** ઉત્કૃષ્ટથી પાચસો ધનુષ પ્રમાણવાળી હોય છે જઘન્ય અવગાહના ઉપપાત કાળમાં હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના સાતમી પૃથ્વીમા હોય છે. દરેક પૃથ્વીમાં રહેલ નૈરયિક જીવોની ભવધારણીય શરીરની ઉત્કૃષ્ટ અવગાહનાનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે-પ્રથમ પૃથ્વીમાં નૈરયિકોની ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના પોણા આઠ ધનુષ અને છ આગળની હોય છે. ।૧। બીજી પૃથ્વીમા સાડા પંદર ધનુષ અને બાર આગળની હોય છે ।૨। ત્રીજી પૃથ્વીમાં સવા એકત્રીસ ધનુષની હોય છે. ।૩। ચોથી પૃથ્વીમાં સાડા બાસઠ ધનુષની હોય છે. ।૪। પાંચમી પૃથ્વીમા સવાસો ધનુષની હોય છે, ૫, છઠ્ઠી પૃથ્વીમાં અઢીસો ધનુષની હોય છે ।૬। અને સાતમી પૃથ્વીમા પાંચસો ધનુષની હોય છે. કે જે સૂત્રમાજ કહી છે. **'तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं"** ઉત્તરવૈક્રિયિકી શરીરાવગાહના જઘન્યથી આંગળના સંખ્યા-

नत्वसंख्येयभागप्रमिता तथास्वभावसद्भावात् । 'उक्कोसेणं धणुसहस्सं' उत्कर्षेण उत्तर-वैक्रयिकी शरीरावगाहना धनुःसहस्रप्रमाणा भवति, इयमपि सप्तमपृथिवीमधिकृत्य ज्ञातव्या । प्रतिपृथिव्या उत्कृष्टा उत्तरवैक्रयिकी शरीरावगाहनात्वेवं ज्ञातव्या-(१) प्रथमपृथिव्या द्वादशांगुलाधिकानि पञ्चदशधनूंषि । (२) द्वितीयपृथिव्यां सपादैकत्रिंशद्धनूंषि । (३) तृतीयस्यां सार्द्ध द्विषष्ठिधनूंषि । (४) चतुर्थ्यां सपादशतधनूंषि । (५) पञ्चम्यां सार्द्ध द्विशतधनूंषि । (६) षष्ठ्यां पञ्च धनुःशतानि । (७) सप्तम्यां धनुःसहस्रमिति सूत्रे प्रोक्तमेव ॥

नैरयिकाणामुत्तरवैक्रयिकशरीरस्योत्कृष्टावगाहना कोष्ठकमिदम्—

पृथिवीसंख्या	१	२	३	४	५	६	७
धनु.संख्या	१५॥१२अं.	३१।	६२॥	१२५	२५०	५००	१०००

अथ तृतीयं संहननद्वारमाह-'तेसि णं भंते ? जीवाणं सरीरा किं संघयणी पन्नत्ता' तेषां नारकाणां खलु भदन्त ! जीवानां शरीराणि किं संहननानि-कीदृशसंहननयुक्तानि प्रज्ञप्तानि इति प्रश्नः, भगवानाह- 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'छण्हं संघयणाणं असंघ-

---

उत्तर वैक्रियिकी, शरीरावगाहना जघन्य से अंगुल के संख्यातवें भाग प्रमाण होती है, असंख्यात भाग प्रमाण नहीं होती है। क्योंकि इस अवगाहना का ऐसा ही स्वभाव होता है। "उक्कोसेणं धणुसहस्सं" और उत्कृष्ट से सातवीं पृथिवी में यह एक हजार धनुष प्रमाण होती है। शेष पृथिवियो के नैरयिकों की उत्तर वैक्रयिकी उत्कृष्ट अवगाहना इस प्रकार है- प्रथम पृथिवी में साढा पन्द्रह धनुष और बारह अंगुल १, दूसरी में सवा इकतीस धनुष २, तीसरी में साढ़ा वासठ धनुष ३, चौथी में एकसौ पचीस धनुष ४, पांचवीं में ढाई सौ धनुष ५, छठी में पांच सौ धनुष ६, और सातवीं पृथिवी में एक हजार धनुष की नैरयिकों की उत्तर वैक्रियिक शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना होती है-वह सूत्र में ही कही गई है ७, "तेसिं णं भंते ! जीवाणं सरीरा किं संघयणी पण्णत्ता" हे भदन्त ? उन नारक जीवो के शरीर

तमां भागप्रमाणुनी होय छे. असंख्यातभागप्रमाणु वाळी होती नथी. "उक्कोसेणं धणुसहस्सं" अने उत्कृष्टथी सातमी पृथ्वीमां आ अवगाहना એક हजार धनुष प्रमाणुनी होय छे बाकीनी पृथ्वीयोना नैरयिकोनी उत्तर वैक्रियिक उत्कृष्ट अवगाहना आ प्रमाणे छे पहेली पृथ्वीमां साडा पंदर धनुष अने बार आंगळ बीजी पृथ्वीमां सवा एकत्रीस धनुष, त्रीजी पृथ्वीमा साडा बासठ धनुष ३ चोथी पृथ्वीमा एकसो पचीस धनुष ४, पांचमी पृथ्वीमा अढीसो धनुष, ५, छठ्ठीमां पांचसो धनुष, ६, अने सातमी पृथ्वीमां એક हजार धनुषनी नैरयिकोना उत्तर वैक्रिय शरीरनी उत्कृष्ट अवगाहना होय छे ए वात सूत्रमां ज कही छे. "तेसिं णं भंते ! जीवाण सरीरा किं संघयणी पण्णत्ता" हे भगवन् ते नारक जीवोना शरीर कया संहनन वाळा होय छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभु

यणी' षण्णां संहननानामन्यतमेनापि संहननेन नारकजीवाना शरीराणि असंहननानि-संहनन रहितानि तेषां शरीराणि भवन्तीत्यर्थः सूत्रे 'संघयणी' इत्यर्थः पुंस्त्वनिर्देशः प्राकृतत्वात् । कस्मात् संहननरहितानि तेषां शरीराणि भवन्तीति चेत्तत्राह-'णेवट्ठी' इत्यादि, तेषां नारकशरीराणाम् अस्थीनि नैव भवन्ति 'णेव छिरा' नैव शिराः-नाडयो न भवन्ति तदीयशरीरे 'णेव ण्हारु' नैव स्नायवः-अस्थिबन्धनी शिराः स्नायुः कथ्यते ता अपि न भवन्ति इति, 'णेव संघयणमत्थि' नैव संहननमस्ति,

अयं भावः-अस्थिनिचयात्मकमेव संहननम् अतोऽस्थ्याद्यभावात् संहननरहितानि नारकशरीराणि भवन्ति । मुख्यवृत्याऽस्थिनिचयात्मकमेव सहननं भवति किन्तु यदपि पूर्वमेकेन्द्रियजीवानां

किस संहनन वाले होते है-उत्तर में प्रभु कहते है-'गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी' हे गौतम ! नारक जीवों के शरीर छह संहननो में से किसी भी सहनन वाले नहीं होते है। अर्थात् इनके शरीर संहनन रहित होते है।

इनके शरीर संहनन रहित इसलिये होते है कि इनमें हड्डियाँ नहीं होती है यही बात "णेवट्ठी" सूत्रांश द्वारा प्रकट की गई है। "णेव छिरा" इनमें शिराएँ नाडियां भी नहीं होती है "णेव ण्हारू" इसमें स्नायुएँ-हड्डियों को बांधने वाली नाडियां भी नहीं होती हैं। इसीलिये "णेव संघयणमत्थि" उनके शरीर को संहनन विहीन कहा गया है। तात्पर्य ऐसा है- अस्थियों के समूह का नाम ही संहनन है। परन्तु यह सब नारक जीव को होता नहीं है। इसी कारण इन्हें असंहनन वाले कहा गया है। मुख्य वृत्ति से अस्थियों का निचय रूप ही सहनन होता है- परन्तु फिर जो पहिले एकेन्द्रिय जीवों को सेवार्त्त सहनन वाला कहा गया है वह औदारिक

કહે છે કે—"गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी" હે ગૌતમ ! નારક જીવોના શરીર છ સંહનનોમાંથી કોઈ પણ સંહનન વાળા હોતા નથી. અર્થાત્ તેઓના શરીર સહનન રહિત હોય છે.

તેઓના શરીર સંહનન વિનાના હોવાનું કારણ એછે કે તેઓમાં હાડકા હોતા નથી. એજ વાત "णेवट्ठी" આ સૂત્રાંશ દ્વારા પ્રગટ કરવામા આવી છે "णेव छिरा" તેઓમાં શિરાઓ અટલે કે નાડીયોપણ હોતી નથી, "णे वण्हारु" તેઓમાં સ્નાયુઓ-હાડકાને બાંધવાવાળી નાડીયોપણ હોતી નથી તેથી "णेव संघयणमत्थि" તેઓના શરીરો ને સહનન વિનાના કહેલ છે.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—અસ્થિયો-હાડકાના સમૂહનું નામજ સંહનન છે. પરંતુ તે બધા નારક જીવોને હોતા નથી. તેજ કારણથી તેઓને અસંહનન વાળા કહ્યા છે. મુખ્ય વૃત્તિથી અસ્થિયો-હાડકાના નિચય-સમૂહ રૂપજ સંહનન હોય છે. તેપણ પહેલાં એક ઈન્દ્રિય વાળા જીવોને સેવાર્ત સહનન વાળા જ કહ્યા છે, તે ઔદારિક શરીરના સંબંધના સદ્ભાવથી કહેલ છે. તેથી તેઓમા સહનનપણુ ઔપચારિક જ છે. વાસ્તવિક નથી તથા પ્રજ્ઞાપના

सेवार्त्तसंहननं कथितं तदपि औदारिकशरीरसम्बन्धमात्रमपेक्ष्यौपचारिकमेव । देवानामपि यत्प्रज्ञापनादौ वज्रसंहननवत्त्वं कथ्यते तदपि गौणवृत्त्यैव, तथाहि–अत्र खलु मनुष्यलोके चक्रवर्त्यादे र्विशिष्टवज्रऋषभनाराचसंहननवतः सकलशेषमनुष्यजनासाधारणा यादृशी शक्तिः ततोऽधिकतरा देवानां पर्वतोत्पाटनादिविषया शक्तिः श्रूयते न च तेषां शरीरसंक्लेश. । इत्येवं ते देवा अपि वज्रसंहननिसादृश्येन वज्रसंहननिनः कथिताः न पुन परमार्थतो देवास्ते सहननिनो भवन्ति, सूत्रे अस्थिनिचयात्मकमेव सहननमित्यभिधानात् इति, ततो नारकाणामस्थ्याद्यभावात् सहननाऽभाव एव भवति । यद्येवं तर्हि संहननानामभावे शरीरबन्धः कथमुपपद्यते ? उपभोगायतनत्वेन शरीरव्यवहारस्योपलम्भादिति ।

शरीर के सम्बन्ध के सद्भाव से कहा गया है अतः उनमें संहननवत्ता औपचारिक ही है–वास्तविक नहीं। तथा जो प्रज्ञापना आदि में देवों को वज्र–संहननवाला कहा गया है वह भी गौण. वृत्ति से ही कहा है । इसका कारण यह है कि इस मनुष्य लोक में वज्र ऋषभनाराच संहनन वाले चक्रवर्त्ती आदि की जो शक्ति होती है वह समस्त शेष मनुष्यो की अपेक्षा असाधारण होती है। परन्तु इनकी अपेक्षा भी पर्वतो को उखाड ने रूप अधिक शक्ति देवो की होती है ऐसा सुना जाता है तथापि उनको श्रम नहीं होता है । इसलिए वज्रसंहनन की सदृशता को लेकर देवों को वज्र संहननी कह दिया गया है, वास्तव में वे संहनन वाले नहीं होते है । क्योकि शास्त्र में अस्थिनिचय को ही संहनन कहा है। नारको के भी अस्थि आदि के अभाव से संहनन का अभाव ही होता है । यहां ऐसा कहना चाहिये कि सहनन के अभाव में शरीर वन्ध कैसे हो सकता है । क्योकि उपभोग का आयतन होने से ही शरीर का व्यवहार होता है । यहाँ उत्तर में कहते हैं-इसमे कोई दोष नहीं है । तथाविध–उस प्रकार

સૂત્ર વિગેરેમાં જે દેવોને આ સંહનન વાળા કહેલા છે, તેપણુ ગૌણુ વૃત્તિથીજ કહેલા છે. તેનું કારણુ એ છે કે—આ મનુષ્ય લોકમા વજ્ર ઋષભ, નારાચ સંહનન વાળા ચક્રવર્તિ વિગેરેની જે શક્તિ હોય છે. તે સઘળા શેષ મનુષ્યોની અપેક્ષાથી અસાધારણુ હોય છે. પરંતુ—તેઓની અપેક્ષાથી પણુ પર્વતોને ઉખાડવારૂપ અધિક શક્તિ દેવોની હોય છે. તેમ સાંભળવામા આવે છે તો પણુ તેઓને શ્રમ થતો નથી તેથી વજ્ર સહનનની સમાનતા ને લઈને દેવો ને વજ્ર સંહનની–વજ્ર સંહનન વાળા કહેલા છે. વાસ્તવિકરીતે તેઓ સંહનન વાળા હોતા નથી કેમ કે શાસ્ત્રમાં અસ્થિનિચય–હાડકાના સમૂહનેજ સંહનન કહેલ છે. નારકોને પણુ હાડકા વિગેરેના અભાવથી સહનનો અભાવજ હોય છે. અહિયા એવું કહેવું જોઈએ કે—સંહનન ના અભાવમા શરીર બધ કેવીરીતે થઈ શકે છે ? કેમ કે, ઉપભોગના આવવાથીજ શરીરનો વ્યવહાર થાય છે. આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા પ્રભુ કહે

अत्राह–न कश्चिद्दोष', तथाविधपुद्गलस्कन्धवत् शरीरबन्ध उपपद्यते एव अतएवाह–'**जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा अमणुण्णा अमणामा**' ये पुद्गला अनिष्टाः–मन स इच्छामतिक्रान्ताः तत्र किञ्चित् कमनीयमपि केषांचिदनिष्टं भवति अत आह–'**अकंता**' अकान्ताः न कान्ता इत्यकान्ताः–अकमनीयाः अत्यन्ताशुभवर्णयुक्तत्वात् । अतएव अप्रियास्ते पुद्गला दर्शनापातकालेऽपि न प्रियवुद्धिमुत्पादयन्तीति भावः । अशुभाः अशुभरसगन्धस्पर्शात्मकत्वात् । अमनोज्ञाः–मनस आह्लाददहेतवो न भवन्ति, विपाकतो दुःखोत्पादकत्वादिति । अमनोऽमाः, न कदाचिदपि ते उपभोग्यतया जावानां मनांसि प्राप्नुवन्तीत्यर्थः। '**तेसि णं संघायत्ताए परिणमंति**' ते इत्थंभूता अनिष्टत्वादिदुर्गुणोपेताः पुद्गलाः तेषां नारकजीवानां शरीरसंघाततया तथारूपशरीरपरिणतिभावेन परिणमन्ति–परिणाम प्राप्नुवन्तीति तेषां शरीरबन्धोपपत्तिर्भवतीति संहननद्वारम् ।

के पुद्गल स्कन्ध की तरह शरीर बंध हो ही जाता है, इसलिये सूत्रकार कहते हैं–"**जे पुग्गला अणिट्ठा, अकंता, अप्पिया, असुभा, अमणुण्णा, अमणामा**" जो पुद्गल अनिष्ट हैं–मनकी इच्छा के बाहर है, अकान्त है–सुहावने नहीं है, अकमनीय हैं–अत्यन्त अशुभवर्ण से युक्त हैं। एत एव अप्रिय है–दिखते ही जो प्रिय वुद्धि के उत्पादक नहीं है, अशुभ रस गंध स्पर्श वाले है, अमनोज्ञ है–मन को आनन्द दायक नहीं है किन्तु विपाक काल में दुःखोत्पादक है. अमनोऽम है–जन्तुओ को उपभोग के लिये जो कभी भी उनके मन को रुचिकर नहीं हैं ऐसे वे पुद्गल "**तेसि णं संघायत्ताए परिणमंति**' उन नारक जीवों के शरीर संघात रूप से-उस प्रकार के शरीर की परिणति के रूप से--परिणाम को प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रकार उनका शरीर बंध हो जाता है। सहननद्वार समाप्त,

---

છે કે-તેમાં કોઈ પણ દોષ નથી, તથાવિધ-તેવા પ્રકારના પુદ્ગલસ્કંધોની જેમ શરીરને બંધ થઈજ જાય છે. તેથી સૂત્રકાર કહે છે કે-"**जे पुग्गला, अणिट्ठा, अकंता, अप्पिया, असुभा, अमणुण्णा, अमणामा**" જે પુદ્ગલો અનિષ્ટ છે, એટલે કે મનની ઈચ્છાની બહાર છે અકાન્ત છે એટલેકે સોહામણા નથી, અકમનીય છે. એટલે કે અત્યંત અશુભ વર્ણ વાળા છે. અને તેથીજ અપ્રિય છે એટલે કે—દેખતાં જ જે પ્રિયબુદ્ધિ જનક નથી. અશુભરસ ગંધ સ્પર્શ વાળા છે મનોજ્ઞ છે મનને આનંદદાયક નથી પરંતુ વિપાક કાળમાં દુઃખ ઉત્પન્ન કરાવનારા છે. અમનોઽમ છે— એટલે કે—જંતુઓને ઉપભોગ માટે જેઓ કોઈ પણ વખતે તેઓના મનને રૂચિકર નથી. એવા તે પુદ્ગલો '**तेसिं णं संघायत्ताए परिणमंति**' એ નારક જીવોના શરીરના સંઘાતરૂપથી અર્થાત્ તેવા પ્રકારના શરીરની પરિણતિના રૂપમાં પરિણામને પ્રાપ્ત થઈ જાય છે. આરીતે તેઓનો શરીર બંધ થઇ જાય છે આ સંહનનદ્વાર સમાપ્ત

अथ चतुर्थं सस्थानद्वारमाह–'तेसि णं' इत्यादि, 'तेसि णं भंते ? जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता' तेषा नारकाणां खलु भदन्त ? जीवानां शरीराणि किं संस्थितानि–कीदृश-संस्थानयुक्तानि प्रज्ञप्तानि इति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' द्विविधानि शरीराणि प्रज्ञप्तानि 'तं जहा' तद्यथा–'भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य' भवधारणीयानि च शरीराणि उत्तर वैकुर्विकाणि च,'तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया' तत्र–तयोर्द्वयोः शरीरयोर्मध्ये खलु यानि तानि शरीराणि भवधारणीयानि तानि हुण्ड संस्थितानि–हुण्डसंस्थानयुक्तानि भवन्ति । तथाहि–भवधारणीयानि तेषां नारकाणां शरीराणि भवस्वभावत एव निर्मूलविलुप्तपक्षोत्पाटितसकलग्रीवादिरोमपक्षिशरीरकवदतिबीभत्सहुण्ड–

संस्थान द्वार कहते है "तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता हे भदन्त ! इन नारक जीवो के शरीर कैसे संस्थान से युक्त है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं— "गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, हे गौतम ? नारक जीवो के शरीर दो प्रकार के कहे है– "तं जहा जैसे–'भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य' एक भवधारणीय शरीर, और दूसरा उत्तर वैक्रियिक शरीर, इन में "जे ते भवधारणिज्जा" जो भवधारणीय शरीर है "ते हुंड संठिया" वे सब हुण्डक संस्थान वाले होते है। क्योंकि उन नारकों के ये भवधारणीय शरीर स्वभाव से ही उस पक्षी के शरीर की तरह होते है कि जिनकी दोनों पंख बिलकुल मूल से उखाड़ लिये गये हो और ग्रीवा रोम आदि जिसके शरीर से निकाल दिये गये हों ऐसा पक्षी जैसे देखने में अति बीभत्स लगता है इसी प्रकार से ये नारकी भी शरीर में ऐसे ही बीभत्स प्रतीत होते हैं। इनके शरीर की रचना इस सस्थान में बिल्कुल वेडोल होती है।

હવે સસ્થાનદ્વારનું કથન કરવામાં આવે છે—તેમા ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—"तेसि ण भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पन्नत्ता" હે ભગવન્ આ નારકજીવોના શરીર કેવા સંસ્થાન વાળા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! નારકજીવોના શરીર બે પ્રકારના કહેવામાં આવેલા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य" એક ભવધારણીય શરીર અને બીજું ઉત્તર વૈક્રિય શરીર તેમા જે "जे ते भवधारणिज्जा" જે ભવધારણીય શરીર છે, 'ते हुंडसंठिया" તે બધા હુંડક સંસ્થાન વાળા હોય છે કેમકે-તે નારકોનું આ ભવ ધારણીય શરીર સ્વભાવથી જ તે પક્ષીના શરીર જેવું હોય છે, કે જેની બન્ને પાંખો બિલ્કુલ મૂળમાંથી ઉખાડીલેવામા આવી હોય તેમજ ગ્રીવા રોમ વિગેરે જેના શરીરમાંથી કહાડીનાખવામાં આવેલા હોય એવા પક્ષિ જોવામાં જેમ અત્યન્ત બિભત્સ–ખરાબ બિહામણુ લાગે છે, તેજ પ્રમાણે આ નારકીયો પણ શરીરથી એવા જ બીહામણા દેખાય છે. તેઓના શરીરની રચના આ સંસ્થાનમાં બિલ્કુલ બેડોળ હોય છે. તથા જે "उत्तरवेउव्विया ते

सस्थान्वन्तीति । 'तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुण्डसंठिया पन्नत्ता' तत्र खलु यानि तानि उत्तरवैकुर्विकाणि तान्यपि हुण्डसंस्थितानि उत्तरवैकुर्विकाणि शरीराणि यद्यपि शुभान्येव वयं विकुर्विष्याम इत्यभिप्रायेण विकुर्वितुमारभन्ते तथापि तेषां तानि शरीराणि अत्यन्ताशुभ तथाविधनामकर्मोदयात् अतीव शुभतराण्येव भवन्तीत्यतरतान्यपि हुण्डसंस्थितान्येवेति गतं चतुर्थं संस्थानद्वारम् ॥

अथ पञ्चमं कषायद्वारमाह—'चत्तारि' इत्यादि, 'चत्तारि कसाया' नारकजीवानां क्रोधमानमायालोभाख्याश्चत्वारः कषाया भवन्तीति गतं पञ्चमं कषायद्वारम् ॥

अथ षष्ठ संज्ञाद्वारमाह—'चत्तारि सन्नाओ' नारकजीवानां चतस्रः आहारभयमैथुन-परिग्रहाख्याः संज्ञा भवन्तीति गतं संज्ञाद्वारम् ॥

तथा—जो 'उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पन्नत्ता' जो उत्तरवैक्रिय शरीर होता हैं वह भी हुंडक संस्थान वाला ही होता है यद्यपि उत्तरवैक्रियिक शरीर की जब ये विकुर्वणा करते है तब ये ऐसा ही विचार कहते है कि हम शुभ ही विक्रिया करेंगे परन्तु अत्यन्त तथाविध अशुभ नाम कर्म के उदय से इनके इस शरीर की अतीव अशुभतर ही विक्रिया होती है। अतः ये भी हुण्डक संस्थान वाले होते हैं। संस्थानद्वार समाप्त ।

पांचवां द्वार—'चत्तारि कसाया' नारक जीवों के क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाये होती हैं। कषायद्वारसमाप्त ।

छठा संज्ञा द्वार—'चत्तारि सन्नाओ' इन नारक जीवों के आहार भय मैथुन और परि-ग्रह ये चार सज्ञाएँ होती हैं। सज्ञाद्वार समाप्त ।

वि हुडसंठिया पन्नत्ता" ઉત્તરવૈક્રિય શરીરવાળા હોય છે, તે પણ હુંડક સંસ્થાનવાળા જ હોય છે. જો કે—ઉત્તર વૈક્રિય શરીરની જ્યારે તેઓ વિકુર્વણા કરે છે, ત્યારે તેઓ એવા જ વિચાર કરે છે કે—અમે શુભ વિક્રિયા જ કરીશું. પરંતુ અત્યંત તથાવિધ અશુભ નામ કર્મના ઉદયથી તેઓના આ શરીરની અત્યંત અશુભતર વિક્રિયા જ હોય છે. તેથી તેઓ પણ હુંડક સંસ્થાનવાળા હોય છે.

સંસ્થાનદ્વાર સમાપ્ત

પાંચમા કષાયદ્વારનું કથન કરતાં પ્રભુ કહે છે કે—"चत्तारि कसाया" નારકજીવોને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ આ ચાર કષાયો જ હોય છે. કષાયદ્વાર સમાપ્ત થયું સંજ્ઞાદ્વાર—"चत्तारि सन्नाओ" આ નારકજીવોને આહાર, ભય, મૈથુન અને પરિગ્રહ આ ચાર સંજ્ઞાઓ હોય છે સંજ્ઞાદ્વાર સમાપ્ત.

सप्तमं लेश्याद्वारमाह-'**तिन्नि लेस्साओ**' नारकजीवानां तिस्रो लेश्याः कृष्णनील-कापोताख्या भवन्तीति । तत्र आद्ययोर्द्वयोः रत्नप्रभाशर्कराप्रभापृथिव्योः कापोतलेश्या भवति, तृतीयायां नारकपृथिव्यां केषुचिन्नरकावासेषु कापोतलेश्या भवति केषुचिन्नरकावासेषु नीललेश्येति कापोतनीलेतिलेश्याद्वयं भवति, चतुर्थ्यां नारकपृथिव्यां नीललेश्या भवति, पञ्चम्यां नारक-पृथिव्यां केषुचिन्नरकावासेषु नीललेश्या भवति, केषुचिन्नरकावासेषु कृष्णलेश्येति नीलकृष्णेति लेश्याद्वयं भवति । षष्ठ्यां नारकपृथिव्यां तमाभिधानायां कृष्णलेश्या भवति । सप्तम्यां नारक-पृथिव्यां तु परमकृष्णलेश्या भवतीति तदुक्तं व्याख्याप्रज्ञप्तौ —

'काउय दोसु तइयाए मीसिया नीलिया चउत्थीए ।
पंचमियाए मीसा कण्हा तत्तो परमकण्हा' ॥१॥ इति ।

छाया--कापोती च द्वयोः तृतीयस्यां मिश्रा नीला च चतुर्थ्याम् ।
पञ्चम्यां मिश्राः कृष्णाः ततः परमकृष्णा इतिच्छाया

इति सप्तमं लेश्याद्वारम् ।

सातवा लेश्या द्वार-'**तिन्नि लेस्साओ**' नारक जीवों के कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएँ होती हैं । इनमें आदि की जो रत्नप्रभा और शर्कराप्रभा पृथिवी है वहां कापोत लेश्या होती है । तीसरी नारक पृथिवी में कितनेकनरकावासो में कापोत लेश्या होती हैं और कितनेक नरकावासो में नीललेश्या होती है । चतुर्थ नारक पृथिवी में नील लेश्या होती है । पांचवी पृथिवी में कितनेक नरकावासो में नीललेश्या होती है, और कितनेक नर-कावासो में कृष्णलेश्या होती है । छठी नारक पृथिवी तमा नाम की उस में कृष्ण लेश्या होती है और सातवीं नारक पृथिवी में परम कृष्णलेश्या होती है व्याख्याप्रज्ञप्ति में कहा है—

'काउय दोसु तइयाए मीसिया नीलिया चउत्थीए' इत्यादि । लेश्याद्वार समाप्त ।

સાતમુ' લેશ્યાદ્વાર—"**तिन्नि लेस्साओ**" નારકજીવોને કૃષ્ણ, નીલ અને કાપોત આ ત્રણ જ લેશ્યાઓ હોય છે. તેમાં આદિની જે રત્નપ્રભા અને શર્કરાપ્રભા પૃથિવીયો છે, ત્યાં કાપોતલેશ્યા હોય છે ત્રીજી નારક પૃથ્વીમાં કેટલાક નારકાવાસોમાં કાપોતલેશ્યા હોય છે અને કેટલાકમાં નીલલેશ્યા હોય છે. ચોથી નારક પૃથ્વીમાં નીલલેશ્યા હોય છે. પાંચમી પૃથ્વીમાં કેટલાક નરકાવાસોમાં નીલલેશ્યા હોય છે. અને કેટલાક નરકાવાસોમાં-કૃષ્ણલેશ્યા હોય છે છઠ્ઠી તમ નામની નારકપૃથ્વીમાં કૃષ્ણ લેશ્યા હોય છે અને સાતમી નારક પૃથ્વીમાં પરમ કૃષ્ણ લેશ્યા હોય છે

વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિમાં કહ્યું છે કે—"**काउय दोसु तइआए मीसिया नीलिया" चउत्थीए'** ઈત્યાદિ. 'લેશ્યાદ્વાર સમાપ્ત'

अष्टममिन्द्रियद्वारमाह—'**पंचिंदिया**' तेषां नारकजीवानां पञ्च—स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राख्यानि पञ्चेन्द्रियाणि भवन्तीति गतमिन्द्रियद्वारम् ।

नवमं समुद्घातद्वारमाह—'**चत्तारि समुग्घाया आदिल्ला**' चत्वारः समुद्घाताः आद्याः, वेदना कषायमारणान्तिकवैक्रियाख्याः—नारकजीवानां भवन्तीति समुद्घातद्वारम् ॥ दशमं सञ्ज्ञिद्वारमाह '**सन्नी वि असन्नी वि**' ते नारकजीवाः संज्ञिनोऽपि असंज्ञिनोऽपि, तत्र गर्भव्युत्क्रान्तिकेभ्यो ये समुत्पन्नास्ते संज्ञिनः, ये तु संमूर्च्छिमेभ्य आगत्योत्पन्नास्ते असंज्ञिनः । ते चासंज्ञिनः रत्नप्रभायामेव समुत्पद्यन्ते न तु परतो नरकान्तरे अनाशयाशुभक्रियाया दारुणाया अप्यनन्तरविपाकिन्या एतावन्मात्र फलकत्वात् अतएवोक्तम्—

आठवां इन्द्रियद्वार—'**पंचिंदिया**' इन नारक जीवो के स्पर्शन, रसना, घ्राण चक्षु और कर्ण ये पांच इन्द्रियां होती है । इन्द्रियद्वार समाप्त ।

समुद्घात द्वार—'**चत्तारि समुग्घाया आदिल्ला**' । नारक जीवों के आदि के चार समुद्घात होते हैं-उनके नाम ये हैं—वेदना, कषाय, मारणान्तिक, और वैक्रिय ।

समुद्घातद्वार समाप्त ।

दसवां संज्ञिद्वार—'**सन्नीवि असन्नी वि**' वे नारकजीव संज्ञीभी होते है और असज्ञी भी होते हैं, इनमें जो गर्भज जीवों से मरकर नारकी होते हैं वे सज्ञी होते है और जो सम्मूर्च्छन जीवों से आकार उत्पन्न होते हैं, वे असंज्ञी होते हैं । ये असंज्ञी रत्नप्रभा में ही उत्पन्न होते हैं । उसके आगे अन्य नरकों में नहीं । क्योंकि विना आशय के जो अशुभ दारुण क्रिया भी होती है उसका विपाक एतावन्मात्र फल वाला होता है, अर्थात् रत्नप्रभा तक ही ले जाने

આઠમું ઈન્દ્રિયદ્વાર—"**पंचिंदिया**" આ નારકજીવોને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ ચક્ષુ, અને કર્ણ આ પાંચ ઈન્દ્રિયો હોય છે ઈન્દ્રિયદ્વાર સમાપ્ત

समुद्घातद्वार—"**चत्तारि समुग्घाया आदिल्ला**" નારકજીવોને-આદિના ચાર સમુદ્ઘાતો હોય છે. તેના નામો આ પ્રમાણે છે. વેદના સમુદ્ઘાત ૧ કષાય સમુદ્ઘાત ૨ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતક અને વૈક્રિયસમુદ્ઘાત ૪, સમુદ્ઘાતદ્વાર સમાપ્ત.

દસમું સંજ્ઞિદ્વાર—"**सन्निवि असन्नि वि**" તે નારકજીવો સંજ્ઞી પણ હોય છે, અને અસંજ્ઞી પણ હોય છે. તેમાં જેઓ ગર્ભજ જીવોમાંથી મરીને નારકી થયેલ હોય છે, તેઓ સંજ્ઞી કહેવાય છે. અને જેઓ સમ્મૂર્ચ્છન જીવોથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓ અસંજ્ઞી કહેવાય છે. આ અસંજ્ઞીજીવો રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે તેની આગળના બીજા નરકોમાં ઉત્પન્નથતા નથી કેમકે આશય વિના જે અશુભ દારુણ ક્રિયા પણ હોય છે, તેનો વિપાક માત્ર એવા ફળવાળો જ હોય છે. અર્થાત્ રત્નપ્રભા પૃથ્વી પર્યંતજ લઈ

'असन्नी खलु पढमं दोच्चं व सरीसवा तइयं पक्खी ।
सीहा जंति चउत्थि उरगा पुण पंचमिं पुढविं ॥१॥
छट्ठिं य इत्थियाओ मच्छा मणुया य सत्तमिं पुढविं ।
एसो परमोववाओ बोद्धव्वो नरयपुढवीसु ॥२॥

छाया—असंज्ञिन खलु प्रथमां द्वितीयां च सरीसृपास्तृतीयां पक्षिणः ।
सिंहा यान्ति चतुर्थीं मुरगाः पुनः पञ्चमीं पृथिवीम् ॥१॥
षष्ठीं च स्त्रियः मत्स्याः मनुष्याश्च सप्तमीं पृथिवीम् ।
एष परम उत्पादो बोद्धव्यो नरकपृथिवीषु ॥२॥

इति सञ्ज्ञिद्वारम् ॥

एकादशं वेदद्वारमाह–'णपुंसगवेदा' नारकजीवा नपुंसकवेदा भवन्ति न तु पुरुषवेदाः स्त्रीवेदा वा भवन्तीति वेदद्वारम् ॥

द्वादशं पर्याप्तिद्वारमाह–'छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ' तेषां नारकजीवानां षट्पर्याप्तय षडपर्याप्तयश्च भवन्तीति पर्याप्तिद्वारम् ॥

त्रयोदशं दृष्टिद्वारमाह–'तिविहा दिट्ठी' ते नारकजीवा त्रिविधदृष्टयो भवन्ति तद्यथा–सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयश्चेति दृष्टिद्वारम् ।

वाला होता है–आगे नहीं । सो ही कहा है—"असन्नी खलु पढमं" इत्यादि ।

संज्ञिद्वार समाप्त ।

ग्यारहवाँ वेदद्वार–'णपुंसगवेदा' नारकजीव केवल नपुंसक वेदवाले ही होते है पुरुषवेद और स्त्री वेदवाले नहीं होते है । वेदद्वार समाप्त ।

बारहवाँ पर्याप्तिद्वार 'छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ' ये नारकजीव छह पर्याप्तिवाले और छह अपर्याप्ति वाले होते है । पर्याप्तिद्वार समाप्त ॥

तेरहवाँ दृष्टिद्वार— 'तिविहा दिट्ठी' इन नारकजीवो के तीन प्रकार की दृष्टियाँ होती हैं—जैसे-एक सम्यग्दृष्टि, दूसरी मिथ्यादृष्टि और तीसरी मिश्रदृष्टि । तात्पर्य कहने का

જવાવાળા હોય છે. તેનાથી આગળ નહીં' કહ્યું છે કે–' असन्नि खलु पढमं, इत्यादि

॥ સંજ્ઞીદ્વાર સમાપ્ત ॥

અગિયારમું વેદદ્વાર—"णपुंसगवेदा" નારકજીવો કેવળ નપુંસક વેદવાળા જ હોય છે. પુરૂષવેદ અને સ્ત્રીવેદવાળા હોતા નથી વેદદ્વાર સમાપ્ત !

બારમું પર્યાપ્તિદ્વાર—"छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ" આ નારકજીવો છ પર્યાપ્તિવાળા અને છ અપર્યાપ્તિવાળા હોય છે પર્યાપ્તિદ્વાર સમાપ્ત.

તેરમું દૃષ્ટિદ્વાર—"तिविहा दिट्ठी" આ નારક જીવો ને ત્રણ પ્રકારની દૃષ્ટિઓ હોય છે, જેમ કે-એક સમ્યગ્દૃષ્ટિ, બીજી મિથ્યાદૃષ્ટિ, અને ત્રીજી મિશ્રદૃષ્ટિ કહેવાનું તાત્પર્ય

अथ चतुर्दश दर्शनद्वारमाह–'तिन्नि दंसणा' तेषां नारकजीवानां त्रीणि दर्शनानि भवन्ति तद्यथा–चक्षुर्दर्शनम् अचक्षुर्दर्शनम् अवधिदर्शनम् चेति दर्शनद्वारम् ॥

पञ्चदशं ज्ञानद्वारमाह–'णाणी वि अन्नाणीवि' ते नारकजीवा ज्ञानिनोऽपि भवन्ति, अज्ञानिनोऽपि भवन्तीति । 'जे णाणी ते नियमा तिन्नाणी' तत्र ये नारका ज्ञानिनस्ते नियमात् त्रिज्ञानिनो भवन्ति । ज्ञानत्रयवत्त्वमेव दर्शयति 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'आभिणिबोहियनाणी' आभिनिबोधिकज्ञानिनः । 'सुयनाणी' श्रुतज्ञानिनः, 'ओहिनाणी' अवधिज्ञानिनश्चेति 'जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी' तत्र ये नारका अज्ञानिनश्च अस्त्येकके द्व्य ज्ञानिनोऽस्त्येकके त्र्यज्ञानिनः, 'जे य दुअन्नाणी ते नियमा मइ-

---

यह है कि ये नारकजीव सम्यग्दृष्टि भी होते है । मिथ्यादृष्टि भी होते है और मिश्रदृष्टि भी होते हैं । दृष्टिद्वार समाप्त ।

चौदहवा दर्शनद्वार—'तिन्नि दंसणा' उन नारकजीवों के तीन दर्शन होते है–जैसे– चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, और अवधिदर्शन, दर्शनद्वार समाप्त ।

पन्द्रहवाँ ज्ञानद्वार—'णाणी वि अन्नाणी वि' वे नारक जीव ज्ञानी भी होते हैं और अज्ञानी भी होते है 'जे नाणी ते नियमा तिन्नाणी' जो नारक ज्ञानी होते हैं उनके नियम से तीन ज्ञान होते है 'तं जहा'' जैसे–आभिणिबोहियनाणी' आभिनिबोधिक ज्ञान, 'सुयनाणी' श्रुतज्ञान 'ओहिनाणी' अवधिज्ञान–इस प्रकार इन तीन ज्ञानों से ये त्रिज्ञानी होते है । 'जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी, अत्थेगइया तिअन्नाणी'' जो ये अज्ञानी होते हैं तो कोई २ दो अज्ञानवाले होते हैं और कोई २ तीन अज्ञानवाले होते हैं ।

એ છે કે—નારક જીવો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે. મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે. અને મિશ્રદૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે દૃષ્ટિદ્વાર સમાપ્ત.

ચૌદમું દર્શનદ્વાર—"तिन्नि दंसणा" આ નારક જીવોને ત્રણ દર્શન હોય છે. તે ત્રણ દર્શનો આ પ્રમાણે છે ચક્ષુદર્શન ૧, અચક્ષુદર્શન ૨ અને અવધિદર્શન૩,

દર્શનદ્વાર સમાપ્ત.

પંદરમું જ્ઞાનદ્વાર—'णाणी वि अन्नाणी वि' તે નારક જીવો જ્ઞાની પણ હોય છે, અને અજ્ઞાની પણ હોય છે. 'जे नाणी ते नियमा तिन्नाणी' જે નારક જીવો જ્ઞાની હોય છે, તે નિયમથી ત્રણ જ્ઞાન વાળા હોય છે. 'तं जहा' તે આ પ્રમાણે છે. 'आभिनिबोहिय नाणी' આભિનિબોધિક જ્ઞાન ૧ 'सुयनाणी' શ્રુતજ્ઞાન 'ओहिनाणी' અવધિજ્ઞાન આરીતે આ નારકો ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે 'जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी' अत्थेगइया तिअन्नाणी' જે આમા અજ્ઞાની હોય છે તેમા કોઈ કોઈ બે અજ્ઞાનવાળા હોય છે, અને કોઈ કોઈ ત્રણ અજ્ઞાનવાળા હોય છે 'जे य दुअन्नाणी ते नियमा मइअन्नाणी

अन्नाणी सुयअन्नाणीय' तत्र ये च नारका असंज्ञिनस्तेऽपर्याप्तावस्थायां नियमाद्द्वयज्ञानिनः मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च भवन्ति । **'जे ति अन्नाणी ते नियमा मइअन्नाणी य सुयअन्नाणीय विभंगनाणीय'** तत्र येच नारकाः त्र्यज्ञानिनस्ते नियमान्मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च विभङ्गज्ञानिनश्च भवन्ति । अत्रायं भावः—ये नारका असंज्ञिनस्ते अपर्याप्तावस्थायां द्वयज्ञानिनः असञ्ज्ञिभ्यो हि उत्पद्यमानानां तेषां तथाविधबोधमान्द्याद् अपर्याप्तावस्थायामव्यक्तावधेरपि प्राप्त्यसद्भावात् । पर्याप्तावस्थायां तु त्र्यज्ञानिनः, सञ्ज्ञिनस्तूभयावस्थायामपि त्र्यज्ञानिन एवेति ज्ञानद्वारम् ॥

षोडशं योगद्वारमाह—**'तिविहे जोगे'** नारकजीवानां त्रिविधो योगो भवति, तद्यथा—मनोयोगो वाग् योगः काययोगश्चेति, योगद्वारम् ॥

"जे य दुअन्नाणी ते नियमा मइअन्नाणी सुयअन्नाणी य" जो नारक दो अज्ञानवाले होते हैं वे नियम से मत्यज्ञानवाले और श्रुतअज्ञानवाले होते हैं। और जो नरक तीन अज्ञानवाले होते हैं वे—वे नियम से मत्यज्ञानवाले, श्रुतअज्ञानवाले और विभंगज्ञानवाले होते हैं । तात्पर्य यह है कि जो नारक असज्ञी होते है वे अपर्याप्तावस्था में दो अज्ञानवाले होते है । क्योंकि असज्ञियो से आकर उत्पन्न होने वाले जो नारक होते हैं उनके तथाविधबोध की मन्दता से अपर्याप्तावस्था में अव्यक्त अवधि की भी प्राप्ति नहीं होती है इसलिये वे अपर्याप्तावस्था में दो अज्ञान वाले कहे गये है और पर्याप्तावस्था में असंज्ञी तीन अज्ञानवाले होते हैं । संज्ञी नारकी तो पर्याप्ताऽपर्याप्त दोनों अवस्थाओं में भी तीन अज्ञानवाले ही होते है । ज्ञानद्वार समाप्त ।

सोलहवां योगद्वार—**'तिविहे जोगे'** नारक जीवों को तीन प्रकार का योग होता जैसे—मनोयोग, वचनयोग और काययोग । योगद्वार समाप्त ।

सुयअन्नाणी य" જે નારકો બે પ્રકારના અજ્ઞાનવાળા હોય છે. તેઓ નિયમથી મતિ અજ્ઞાનવાળા અને શ્રુતાજ્ઞાનવાળા હોય છે. અને જે નારકો ત્રણ અજ્ઞાનવાળા હોય છે તેઓ નિયમથી મતિ અજ્ઞાનવાળા શ્રુત અજ્ઞાનવાળા અને વિભંગ જ્ઞાનવાળા હોય છે

કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે—જે નારકો અસંજ્ઞી હોય છે. તેઓ અપર્યાપ્તાવસ્થામાં બે અજ્ઞાનવાળા હોય છે. કેમ કે-અસંજ્ઞિયોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થવાવાળા જે નારકો હોય છે, તેઓને તથાવિધ બોધની મહત્તાથી અપર્યાપ્તાવસ્થામાં અવ્યક્ત અવધિની પણ પ્રાપ્તિ થતિ નથી તેથી તેઓ અપર્યાપ્તાવસ્થામાં બે અજ્ઞાનવાળા કહેલા છે અને પર્યાપ્તાવસ્થામાં અસંજ્ઞી ત્રણ અજ્ઞાનવાળા હોય છે, સંજ્ઞી નારકી તો પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત બન્ને અવસ્થામાં ત્રણ અજ્ઞાનવાળા જ હોય છે. જ્ઞાનદ્વાર સમાપ્ત.

સોળમું યોગદ્વાર—**'तिविहे जोगे'** નારક જીવોને ત્રણ પ્રકારને યોગ હોય છે. જેમ કે—મનોયોગ, વચનયોગ અને કાયયોગ. યોગદ્વાર સમાપ્ત.

सप्तदशमुपयोगद्वारमाह—'दुविहे उवजोगे' नारकजीवानां द्विविध उपयोगो भवति, तद्यथा—साकारोपयोगः अनाकारोपयोगश्चेत्युपयोगद्वारम् ॥

अष्टादशमाहारद्वारमाह—'छद्दिसिं आहारो' नारकजीवानां षड्दिशि आहारो भवति, लोकमध्ये नारकजीवानामवस्थानेन लोकनिष्कुटरूपप्रतिबन्धकाभावात् षड्दिग्भ्यः आगतान् पुद्गलानाहरन्ति नारका इति । 'ओसन्नं कारणं पडुच्च' ओसन्नं' इति प्रायोऽर्थे देशीशब्दस्तेन प्रायेण—सामान्येन कारणं प्रतीत्य--आश्रित्य 'वण्णओ कालाइं जाव आहारमाहारेंति' वर्णतः कालानि यावदाहारमाहरन्ति अत्र यावत्पदेन प्रज्ञापनासूत्रस्याष्टादशाहारपदप्रथमोद्देशकपाठो ग्राह्यः, स चेत्थम्—'नीलाइं' गंधओ दुब्भिगंधाइं, 'रसओ तित्तकडुयाइं' फासओ कक्खडगुरुयसीयलुक्खाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विपरिणामइत्ता परिपीलइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्व वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वपणया' इति संग्राह्यम् । अयं भावः—नारकाः सामान्येन कारणमाश्रित्य वर्णतः वर्णमा-

---

सत्रहवाँ उपयोग द्वार—"दुविहे उवजोगे' नारक जीवो के दो प्रकार का उपयोग होता है साकार उपयोग और अनाकार उपयोग। उपयोगद्वार समाप्त ।

अठारहवां आहारद्वार—'छद्दिसिं आहारो' नारक जीवों का आहार छह दिशाओं में से आगत पुद्गल द्रव्यों का होता है क्योंकि नारकजीवों का अवस्थान लोक के मध्य में होता है इससे लोकनिष्कुटरूप प्रतिबन्धक का अभाव रहता हैं—अतः वे छह दिशाओं से आगत पुद्गलों का आहार करते हैं। "ओसन्नं कारणं पडुच्च" प्रायः कारण को आश्रित करके वे 'वण्णओ कालाइं जीव आहारमाहारेंति' वर्ण से काले वर्णवाले पुद्गलों का आहार करते हैं यहां यावत् शब्द से यहाँ प्रज्ञापना के अठाइसवां आहार पदके पहले उद्देश का पाठ ग्रहण करना चाहिये जो टीका में दिया गया है उसका अर्थ—नारकजीव वर्ण से

સત્તરમું ઉપયોગદ્વાર—'दुविहे उवजोगे' નારક જીવોને સાકાર ઉપયોગ અને અનાકાર ઉપયોગ આ બે પ્રકારના ઉપયોગ હોય છે.

ઉપયોગદ્વાર સમાપ્ત.

અઢારમું આહારદ્વાર—"छद्दिसिं आहारो" નારક જીવોને આહાર છદિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યોને હોય છે. કેમકે નારક જીવોનું અવસ્થાન-રહેઠાણુ લોકની મધ્યમાં હોય છે. તેથી લોક નિષ્કુટરૂપ પ્રતિબંધકનો અભાવ રહે છે. તેથી તેઓ છ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલો નો આહાર કરે છે. 'ओसन्नं कारणं पडुच्च' પ્રાયઃ કારણ નો આશ્રય કરીને તેઓ 'वण्णओ कालाइं जाव आहारमाहारेंति' વર્ણથી કાળાવર્ણવાળા પુદ્ગલો નો આહાર કરે છે. અહિયા યાવત્ શબ્દથી પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના અઠયાવીસમાં આહાર પદના પહેલા ઉદ્દેશાનો પાઠ ગ્રહણ કરવો જોઈએ. કે જે પાઠ ટીકામાં આપવામાં આવેલ છે. તેનો અર્થ—નારક જીવ વર્ણથી કાળા અને નીલ વર્ણ એમ બે વર્ણવાળા આહારપુદ્ગલો

श्रित्यकालान् नीलान् पुद्गलान् । आहरन्ति । गन्धमाश्रित्य दुरभिगन्धान्, रसमाश्रित्य तिक्तकटुकान्, स्पर्शमाश्रित्य कर्कश–गुरुकशीत–रूक्षान् पुद्गलान् आहरन्ति । शेषोऽर्थः पूर्ववत् । इत्याहारद्वारम् ॥

एकोनविंशतितमसुपपातद्वारमाह––'उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो' नारकजीवानामुपपातः तिर्यङ् मनुष्येभ्यः तत्र पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्येभ्योऽसख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्य इति वक्तव्यमित्युपपातद्वारम् ॥

विंशतितमं स्थितिद्वारमाह–'ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं' नारकजीवानां स्थितिः

काले और नीले इन दो वर्ण वाले आहार पुद्गलो का ग्रहण करते हैं इसी प्रकार गन्ध की अपेक्षा दुरभि गन्धवाले रस की अपेक्षा तिक्त कटुक, स्पर्श की अपेक्षा कर्कश गुरु शीत और रूक्ष इन चार स्पर्शवाले आहार पुद्गलों का ग्रहण करते है उन गृहीत आहार पुद्गलों में पुराने वर्णगन्ध रस और स्पर्श के गुण होते हैं उनको अन्य परिणामवाले बनाकर दूर कर परिशटित कर और उनका विध्वंसकर–नाशकर उनमें अन्य अपूर्व, वर्ण गुण, गन्ध गुण, रस गुण, और स्पर्श गुणों को उत्पन्न करके अपने शरीर क्षेत्र में अवगाह ऐसे आहार पुद्गलों का सर्वात्मा से आहार करते हैं ॥ आहारद्वार समाप्त ।

उन्नीसवां उपपात द्वार—'उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो' नारक जीवो का उपपात तिर्यञ्चों से और मनुष्यों से होता है । अर्थात् पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यञ्च मनुष्यो से होता है । परन्तु असंख्यात वर्ष की आयुवाले तिर्यञ्च मनुष्यों में से नहीं होता है । उपपातद्वार समाप्त ।

ગ્રહણ કરે છે. એજ રીતે ગન્ધની અપેક્ષાથી દુરભીગંધ–એટલે કે દુર્ગંધવાળા, રસની અપેક્ષાથી તીખો, કડવો. સ્પર્શની અપેક્ષાથી કર્કશ, ગુરૂ શીત અને રૂક્ષ આ ચાર પ્રકારના સ્પર્શવાળા આહારપુદ્ગલો ગ્રહણ કરે છે. તે ગ્રહણ કરેલા આહાર પુદ્ગલોમાં જુના વર્ણ, ગંધ રસ અને સ્પર્શના ગુણ હોય છે તેમને બીજા પરિણામ વાળા બનાવીને એટલેકે દૂર કરીને પરિશટિક કરીને અને તેનો વિધ્વંસ નાશ કરીને તેમાં બીજા અપૂર્વ વર્ણગુણ, ગંધ ગુણ, રસગુણ, અને સ્પર્શગુણોને ઉત્પન્ન કરીને પોતાના શરીરમાં અવગાતએવા આહાર પુદ્ગલોનો સર્વપ્રકારથી આહાર કરે છે.

॥ આહારદ્વાર સમાપ્ત ॥

ઓગણીસમું ઉપપાતદ્વાર—'उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो' નારક જીવોનો ઉપપાત તિર્યંચોમાંથી અને મનુષ્યોમાંથી હોય છે અર્થાત પંચેન્દ્રિય પર્યાપ્ત તિર્યંચ મનુષ્યોમાંથી તો હોય છે પરંતુ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા, તિર્યંચ મનુષ્યોમાંથી થતો નથી

॥ ઉપપાત દ્વાર સમાપ્ત ॥

–आयुष्यकालः जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि ॥

एकविंशतितमं समवहतद्वारमाह––'दुविहा मरंति' द्विविधा म्रियन्ते इमे नारकजीवाः, मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते तथा–असमवहता अपि म्रियन्ते इति स्थितिद्वारम् ।

द्वाविंशतितमं च्यवनद्वारमाह—'उव्वट्टणा भाणियव्वा जओ आगया' उद्वर्तनेति च्यवनं सा भणितव्या यत आगताः प्रज्ञापनायाः षष्ठे व्युत्क्रान्तिपदे यथा नारकाणामुद्वर्तना कथिता तथैवात्रापि वक्तव्या, नरकादुद्वृत्य संज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्येष्वसंख्यातवर्षायुष्कवर्जितेषु

बीसवां स्थिति द्वार—'ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं' नारक जीवों की स्थिति जघन्य से दस हजार वर्ष की होती है और 'उक्कोसेणं' उत्कृष्ट से 'तेत्तीसं सागरोवमाइं' तेंतीस सागरोपम की होती है । स्थिति द्वारसमाप्त ।

इक्कीसवां समवहत द्वार—'दुविहा मरंति' ये नारक जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवतह होकर भी मरते है और असमवहत होकर भी मरते है । समवहतद्वार समाप्त ।

बाईसवां उद्वर्तना—(च्यवन) द्वार–'उव्वट्टणा भाणियव्वा' प्रज्ञापना के छठवें व्युत्क्रान्ति पद में जैसी–नारकों की उद्वर्त्तना कही गई है उसी प्रकार से वह यहां पर भी कह लेनी चाहिये । तात्पर्य यह है कि नारक पर्याय से निकल कर नारक जीव असंख्यात वर्षायुष्क तिर्यञ्च और मनुष्यों को छोड़कर संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्यों में ही उत्पन्न होते है । 'नवरं

वीसमुं स्थितिद्वार– "ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं" नारक જીવોની સ્થિતિ જઘન્યથી દસહજાર વર્ષની હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી "उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं" તેત્રીસ સાગરોપમની હોય છે

॥ સ્થિતિદ્વાર સમાપ્ત ॥

એકવીસમું સમવહતદ્વાર—'दुविहा मरंति' આ નારક જીવો મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત-થઈને પણ મરે છે અને અસમવહત થઈને પણ મરે છે. અર્થાત્ સમુદ્ઘાત કરીને પણ મરે છે અને સમુદ્ઘાત્ કર્યા વિનાપણ મરે છે.

બાવીસમું ઉદ્વર્તના (ચ્યવન) દ્વાર—'उव्वट्टणा भाणियव्वा' પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના છટ્ઠા વ્યુત્ક્રાંતિકપદમાં નારકોની ઉદ્વર્તના જે રીતે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે તે અહિયાં પણ સમજી લેવી. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે નારક પર્યાયથી નીકળી તે જીવ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા, તિર્યંચ અને મનુષ્યોને છોડીને સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાં

गच्छन्तीतिभावः । 'नवर संमुच्छिमेसु पडिसिद्धो' नवरं केवलं संमूर्च्छिमेषु प्रतिषेधो वक्तव्य इति (उद्वर्तना—च्यवनद्वारम्) ।

त्रयोविंशतितमं गत्यागतिद्वारमाह— 'दुगइया दुआगइया' द्विगतिकाः द्वयोस्तिर्यङ् मनुष्ययोर्नारकजीवानां गतिर्भवतीत्यतो द्विगतिकाः, द्व्यागतिकाः द्वाभ्यां तिर्यङ्मनुष्याभ्यां नरकगतौ आगमनं भवतीत्यतो द्व्यागतिकाः । 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो' प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः—प्रज्ञप्ताः हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! इति ! प्रकरणमुपसंहरन्नाह- 'सेत्तं' इत्यादि, 'सेत्तं नेरइया' ते एते नैरयिकाः शरीरादिद्वारैर्निरूपिता इति ॥ सू० २०॥

कथिता नारकाः संप्रति तिर्यक्पञ्चेन्द्रियान् वक्तुमाह—'से किं तं इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य गब्भवक्कंतिय पंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किं तं संमु-

---

सम्मुच्छिमेसु पडिसिद्धो' परन्तु संमूर्च्छिममनुष्यो में उत्पन्न होने का निषेध है अर्थात् संमूर्च्छिमों में नारक जीव उत्पन्न नहीं होते है । उद्वर्त्तना—च्यवनद्वार समाप्त ।

गत्यागतिद्वार—'दुगइया दुआगइया' तिर्यञ्च और मनुष्यों में ही नारक जीवों की उत्पत्ति होती है इसलिये ये द्विगति है, तथा ये नारक तिर्यञ्च और मनुष्यो में से ही आकर जन्म धारण करते है इसलिये ये द्व्यागतिक हैं । 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो' हे श्रमण ! आयुष्मन् ! प्रत्येक शरीर असंख्यात कहे गये हैं । अब प्रकरणार्थ का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते है कि 'से त्तं नेरइया' इस प्रकार से यह नारकों के सम्बन्ध में शरीरादि द्वारो को लेकर विवेचन किया गया है । सूत्र ॥ २० ॥

જ ઉત્પન્ન થાય છે. "नवरं संमुच्छिमेसु पडिसिद्धो" પરંતુ સમૂચ્છિંમ મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થવાનો નિષેધ છે અર્થાત્ સમૂચ્છિંમોમાં નારક જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી

॥ ઉદ્વર્તના—ચ્યવનદ્વાર સમાપ્ત ॥

ગત્યાગતિદ્વાર—"दुगइआ दुआगइया" તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાં જ નારક જીવોની ઉત્પત્તી થાય છે તેથી તેઓ દ્વિગતિક-બે ગતિવાળા કહેવાય છે તથા આ નારક જીવો તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાંથી જ આવીને જન્મ ધારણ કરે છે તેથી તેઓ દ્વયાગતિક—બે ગતિથી આવવાવાળા કહેવાય છે. "परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो" હે શ્રમણ ! આયુષ્મન્ ! પ્રત્યેક શરીર અસંખ્યાત કહેલા છે.

હવે પ્રકરણાર્થનો ઉપસંહાર કરતાં સૂત્રકાર કહે છે- "सेत्तं नेरइया" આ રીતે આ નારકોના સંબંધમાં શરીર વિગેરે દ્વારોના સંબંધમા વિવેચન કર્યું છે ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

च्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता तं जहा—जलयरा थलयरा खहयरा। से किं तं जलयरा? जलयरा पंचविहा पन्नत्ता तं जहा—मच्छगा कच्छभा मगरा गाहा सुंसुमारा। से किं तं मच्छा ? एवं जहा पण्णवणाए जाव सुंसुमारा एगागारा पन्नत्ता, जे यावन्ने तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। तेसि णं भंते ! जावाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पन्नत्ता तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए। सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। छेवट्टसंघयणी। हुडसंठिया। चत्तारि कसाया। सन्नाओ चत्तारि। लेस्साओ तिन्नि। इंदिया पंच। समुग्घाया तिन्नि। णो सन्नी असन्नी। णपुंसगवेयगा। पज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ य पंच। दो दिट्ठीओ। दो दंसणा। दो नाणा दो अन्नाणा। दुविहे जोए दुविहे उवजोए। आहारो छद्दिसिं। उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो नो देवेहिंतो नो नेरइएहिंतो तिरिएहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो अकम्मभूमग अंतरदीवगअसंखेज्ज वासाउयवज्जेहिंतो मणुस्सेहिंतो ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। मारणंतियसमुग्घाएणं दुविहा वि मरंति। अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं०, नेरइएसु वि तिरिक्खजोणिएसु वि मणुस्सेसु वि देवेसु वि। नेरइएसु रयणप्पभाए, सेसेसु पडिसेहो। तिरिएसु सव्वेसु उववज्जंति, संखेज्जवासाउएसु वि असंखेज्जवासाउएसु वि, चउप्पएसु पक्खीसु वि मणुस्सेसु सव्वेसु वि, कम्मभूमिएसु नो अकम्मभूमिएसु, अंतरदीवएसु-

वि संखेज्जवासाउएसु वि असंखेज्जवासाउएसु वि, देवेसु जाव वाणमंतरा। चउगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता। से तं जलयरसंमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खा॥ सू २१॥

छाया—अथ के ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च। अथ के ते संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका त्रिविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-जलचराः स्थलचराः खेचराः। अथ के ते जलचराः, जलचराः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-मत्स्याः कच्छपा मकराः ग्राहाः शिशुमाराः। अथ के ते मत्स्याः, एवं यथा प्रज्ञापनायां यावत् शिशुमारा एकाकाराः प्रज्ञप्ताः, ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि? गौतम! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणम्। शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागम्, उत्कर्षेण योजनसहस्रम्। सेवार्त्तसंहननिनः। हुण्डसंस्थिताः। चत्वारः कषायाः। संज्ञा अपि चतस्रः, लेश्या स्तिस्रः, इन्द्रियाणि पञ्च। समुद्घातास्त्रयः। नो संज्ञिनोऽसंज्ञिनः। नपुंसकवेदा। पर्याप्तयोऽपर्याप्तयश्च पञ्च। द्वे दृष्टी। द्वे दर्शने। द्वे ज्ञाने, द्वे अज्ञाने। द्विविधो योगः। द्विविध उपयोग। आहारः षड् दिशि। उपपातस्तिर्यङ्मनुष्येभ्यो नो देवेभ्यो नो नैरयिकेभ्यः, तिर्यग्भ्योऽसंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य। अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यो मनुष्येभ्यः। स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः। मारणान्तिकसमुद्घातेन द्विविधा अपि म्रियन्ते। अनन्तरमुद्वृत्य क०, नैरयिकेष्वपि तिर्यग्योनिकेष्वपि मनुष्येष्वपि देवेष्वपि। नैरयिकेषु रत्नप्रभायाम्, शेषेषु प्रतिषेधः। तिर्यक्षु सर्वेष्वपि उत्पद्यन्ते संख्येयवर्षायुष्केषु अपि असंख्येयवर्षायुष्केष्वपि चतुष्पदेषु पक्षिष्वपि मनुष्येषु सर्वेषु अपि कर्मभूमिकेषु नो अकर्मभूमिकेषु अन्तरद्वीपकेष्वपि संख्येयवर्षायुष्केष्वपि असंख्येयवर्षायुष्केष्वपि। देवेषु यावद्वानव्यन्तराः। चतुर्गतिका, द्व्यागतिकाः, परीताः असंख्याताः प्रज्ञप्ता। ते एते जलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चः॥ सू० २१॥

टीका—'से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया' अथ के ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका जीवा इति प्रश्नः, उत्तरयति– पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता' पञ्चे-

न्द्रियतिर्यग्योनिकाः द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिता इति, द्वैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य' संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च 'गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य' गर्भव्युत्क्रान्तिक पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च, तत्र समूर्च्छनं संमूर्च्छः—मातापितृसंयोगमन्तरेणैव यः प्राणिनामुत्पादस्तेन समुत्पन्ना इति संमूर्च्छिमाः, संमूर्च्छिमाश्च ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चेति संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः तथा मातापितृसंयोगादुत्पत्तिर्येषां ते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः, गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति । तत्र समूर्च्छिमपञ्चे-

---

नारकों का वर्णन करके अब पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के सम्बन्ध में कहते है--

"से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया" इत्यादि ।सू० २०

टीकार्थ—"से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया" हे भदन्त पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चों का क्या लक्षण है और इनके कितने भेद है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—**"पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता"** हे गौतम ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव दो प्रकार के कहे गये हैं **"तं जहा "**जैसे **"संमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणिया य गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य"** समूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक और गर्भव्युत्क्रान्तिक पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक माता पिता के संयोग के विना ही जो प्राणियों का उत्पाद है वह संमूर्च्छिम है इस संमूर्च्छन से जो उत्पन्न होते हैं वे संमूर्च्छिम हैं । ऐसे संमूर्च्छिम जो पञ्चेन्द्रिय-तिर्यग्योनिक हैं वे संमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक हैं तथा-माता पिता के संयोग से जिनकी उत्पत्तिहोती है वे गर्भव्युत्क्रान्तिक है गर्भव्युत्क्रान्तिक जो पञ्चेन्द्रितिर्यग्योनिक हैं वे गर्भव्युत्क्रा-

---

નારકોનું વર્ણન કરીને હવે સૂત્રકાર પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોના સંબંધમા કથન કરે છે—**"से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया"** ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—**"से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया"** હે ભગવન્ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોનું શું લક્ષણ છે. ? અને તેના કેટલા ભેદો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—**'पंचंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવ બે પ્રકારના કહેલા . છે **"तं जहा"** તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે—**' संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य, गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य"** સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિક અને ગર્ભવ્યુત્ક્રાન્તિક પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક માતા પિતાના સંયોગ વિનાજ જે પ્રાણિયોની ઉત્પત્તી થાય છે, તે સંમૂર્ચ્છિમ કહેવાય છે આ સંમૂર્ચ્છિમથી જે જીવ ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓ સંમૂર્ચ્છિમ કહેવાય છે. એવા સંમૂર્ચ્છિમ જે પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકો છે. તેઓ સંમૂર્ચ્છિમપંચેન્દ્રિયતિર્યંગ્યોનિક છે. તથા માતાપિતાના સયોગથી જેમની ઉત્પત્તિ થાય છે, તેઓ ગર્ભવ્યુત્ક્રાન્તિક કહેવાય છે જેઓ ગર્ભવ્યુત્ક્રાંતિક પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિક જીવો છે, તેઓ ગર્ભવ્યુત્ક્રાંતિક પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિક કહેવાય છે.

न्द्रियतिर्यग्योनिकानाह–'से किं तं संमुच्छिम०' इत्यादि, 'से किं तं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' अथ के ते संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति प्रश्नः, उत्तरयति–'संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता' संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः प्रज्ञताः- कथिता इति भेदत्रयमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'जलयरा' जलचराः, जले चरन्ति-गच्छन्ति ये ते जलचराः–मत्स्यादयः 'थलयरा' स्थलचराः–गोमहिष्यादयः 'खहयरा' खेचराः–कपोतादिपक्षिणः। जलचरान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं जलयरा' अथ के ते जलचराः, जलचरजीवानां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति–'जलयरा पंचविहा पन्नत्ता' जलचरजीवाः पञ्चविधाः–पञ्चप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति। 'तं जहा' तद्यथा 'मच्छगा कच्छभा मगरा गाहा सुंसुमारा' मत्स्यकाः कच्छपाः मकराः ग्राहाः शिशुमारकाः। 'से किं तं मच्छा' अथ पञ्चसु

न्तिक-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक हैं। "से किं तं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" हे भदन्त! संमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव कितने प्रकार के होते है? उत्तर में प्रभु कहते हैं "संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता" हे गौतम! संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव तीन प्रकार के होते है "तंजहा" जैसे "जलयरा, थलयरा, खहयरा" जलचर, थलचर और खेचर जो जल में चलते है वे जलचर है जैसे–मत्स्य आदि स्थल में जो चलते हैं वे स्थलचर है जैसे–गाय भैंस आदि आकाश में जो चलते है वे खेचर हैं जैसे कपोत आदि पक्षी "से किं तं जलयरा" हे भदन्त! जलचरजीवों का क्या लक्षण है और कितने उनके भेद हैं। उत्तर में प्रभु कहते है "जलयरा पंचविहा पन्नत्ता" हे गौतम! जलचर जीव पांच प्रकार के कहे गये हैं-"तंजहा" जैसे "मच्छगा कच्छभा मगरा गाहा सुंसुमारा"

"से किं तं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" હે ભગવન્ સંમૂચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ કેટલા પ્રકારના કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! સંમૂચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકજીવ ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે 'तं जहा' તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે,–'जलयरा, थलयरा, खहयरा" જલચર, થલચર, અને ખેચર, જે જીવો પાણીમાં ચાલે છે. તેઓ જલચર કહેવાય છે જેમ કે–માછલા વિગેરે સ્થલમાં એટલે કે જમીન પર જે જીવો ચાલે છે તેઓ સ્થલચર કહેવાય છે જેમ કે—ગાય, ભેસ વિગેરે, તથા આકાશમાં જે જીવો ચાલે છે. તેઓ ખેચર જીવો કહેવાય છે જેમ કે—કબૂતર વિગેરે પક્ષી

ગૌતમસ્વામી પૂછે છે કે—"से किं तं जलयरा" હે ભગવન્ જલચર જીવો નાં શું લક્ષણો છે? અને તેના ભેદો કેટલા કહેલા છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે— "जलयरा पंचविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! જલચર જીવો પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે. 'तं जहा' તે પાંચ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે "मच्छगा, कच्छभा, मगरा, गाहा सुंसुमारा"

जलचरेषु मध्ये के ते मत्स्याः, इति प्रश्नः, उत्तरयति प्रज्ञापनातिदेशेन–'एवं जहा' इत्यादि, 'एवं जहा पण्णवणाए जाव' एवम्–उक्तप्रकारेण मत्स्यादीनां शिशुमारपर्यन्तानां जलचराणां भेदो यथा प्रज्ञापनायां–प्रज्ञापनानामकसूत्रस्य प्रथमपदे कथितस्तथैव इहापि वक्तव्यः, कियत्पर्यन्तं प्रज्ञापनाप्रकरणं वक्तव्यं तत्राह–'जाव' इत्यादि, 'जाव' तावत् पर्यन्तं वक्तव्यं यावत् 'सुंसुमारा एगागारा पण्णत्ता से त्तं सुंसुमारा' इति पर्यन्तम, प्रज्ञापनाप्रकरणं चेत्थम्–'मच्छा अणेगविहा पण्णत्ता तं जहा–सण्हमच्छा खवल्लमच्छा जुंगमच्छा विज्झडियमच्छा हेलियमच्छा मगरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरागब्भया तिमी-तिमिंगिला णक्का तंदुलमच्छा कणिक्कमच्छा सलिसत्थिया मच्छा लंभणमच्छा पडागा पडागाइपडागा. जे यावन्ने तहप्पगारा से त्तं मच्छा। से किं तं कच्छभा? कच्छभा

मत्स्य कच्छप मगर ग्राह और शिशुमारक "से किं तं मच्छा" हे भदन्त पांच जलचरों के बीच में मत्स्यों के कितने भेद है? उत्तर में प्रभु कहते हैं "एवं जहा पण्णवणाए जाव से तं सुंसुमारा" प्रज्ञापना के प्रथम पद में जिस रूप से मत्स्य ,कच्छप, मगर, ग्राह शिशुमारों के भेद कहे गये है उसी रूप से उन पांचों जलचरों के भेद यहां पर भी कह लेना चाहिये 'जाव' यावत् 'से त्त सुंसुमारा' इस पद तक वह प्रज्ञापना प्रकरण पूरा टीका में दिया गया है–'मच्छा' उसका अर्थ इस प्रकार है–मत्स्य अनेक प्रकार के कहे गये है–जैसे स्निग्धमत्स्य, खवल्लमत्स्य, जुंगमत्स्य, विज्झडिक मत्स्य, हेलितमत्स्य, मगरीमत्स्य' रोहितमत्स्य, हलीसागर-मत्स्य, गागरा वडा, वटकरागब्भयमत्स्य, तिमि तथा तिमिंगलमत्स्य, णक्कमत्स्य, तन्दुलमत्स्य, कणिक्कमत्स्य, सालिस्वस्तिकमत्स्य, पताकामत्स्य, पताकातिपताकामत्स्य, इनका स्वरूप

મત્સ્ય, કચ્છપ (કાચબો) મકર-મઘર ગ્રાહ અને સિંસુમારક "से किं तं मच्छा" હે ભગવાન્ પાંચ પ્રકારના જલચરો પૈકી મત્સ્યોના કેટલા પ્રકાર ના ભેદો કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"एवं जहा पण्णवणाए जाव से त्तं सुंसुमारा" પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પહેલા પદમાં જે પ્રકારથી મત્સ્ય, માછલા, કચ્છપા-કાચબા, મઘર ગ્રાહ અને શિશુમારોના ભેદો કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે તે પાંચે પ્રકારના જલચરોના ભેદો અહિયાં કહેવા જોઈએ. 'जाव" યાવત 'से त्त सुंसुमारा" આ પદ સુધીના જલચરો ગ્રહણ કરવા તે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું પ્રકરણ સંસ્કૃત ટીકામા આપેલ છે.

"मच्छा" આ પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે. મત્સ્ય અનેક પ્રકારના કહેલા છે. જેમ કે—સ્નિગ્ધ મત્સ્ય-ખવલ્લ મત્સ્ય જુંગમત્સ્ય, વિજઝડિમમત્સ્ય, હેલિત મત્સ્ય, મગરી-મત્સ્ય, રોહિતમત્સ્ય, હલીસાગરમત્સ્ય, ગાગરા વટા, વટકરા ગબ્ભયમત્સ્ય, તિમિ તથા તિમિંગલમત્સ્ય, ણુક્કમત્સ્ય, તંદુલમત્સ્ય, કણિક્કમત્સ્ય સાલિસ્વસ્તિકમત્સ્ય પતાકામત્સ્ય પતાકાતિપતાકામત્સ્ય, આ બધા મત્સ્યોનું સ્વરૂપ અને નામો લોકવ્યવહારથી જ સમજી લેવા.

दुविहा पन्नत्ता तं जहा–अट्ठिकच्छभा य मंसलकच्छभा य, से त्तं कच्छभा। से किं तं गाहा ? गाहा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा, दिल्ली, वेढगा, मुद्धया, पुलया, सीमागारा सेत्तं गाहा,। से किं तं मगरा ? मगरा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–सोंडमगरा य मट्ठमगरा य, से त्तं मगरा। से किं तं सुंसुमारा ! सुंसुमारा एगागारा पण्णत्ता से त्तं सुंसुमारा' इति।

और नाम लोक से ही जानलेना चाहिये। 'जे यावन्ने तहप्पगारा' तथा जो इन मत्स्यों के जैसे हैं एवं इन मत्स्यों से भी जो भिन्न हैं वे सब भी मत्स्य ही हैं ऐसा जानना चाहिये। यह मत्स्यों का वर्णन हुआ। हे भगवन् कच्छप कितने प्रकार वे होते हैं–प्रभु कहते हैं–कच्छप, अस्थिकच्छप और मासलकच्छप ऐसे दो प्रकार के होते है यह कच्छपों का वर्णन हुआ। गौतम पूछते हैं, हे भगवान् ग्राह कितने प्रकार के होते है ! भगवान् कहते हैं–ग्राह दिल्ली,वेष्टक, मूर्द्धज, पुलक और सीमाकार ऐसे पाँच प्रकार के होते हैं। यह ग्राहों का वर्णन हुआ। फिर गौतम पूछते हैं, हे भगवान् मगर कितने प्रकार के होते है ? उत्तर में प्रभु कहते है मगर दो प्रकार के कहे गये है जैसे–सोंड (शुण्डा) मगर और मट्ठ (मृष्ट) मगर ! यह मगरों का वर्णन हुआ। अब गौतम सिंसुमारों के सम्बन्ध में पूछते हैं–हे भगवान् सिंसुमार कितने प्रकार के है ! उत्तर में प्रभु कहते हैं–हे गौतम सिंसुमार एकाकार–एक ही प्रकार के कहे

'जे यावन्ने तहप्पगारा" तथा બીજા પણ જે આ માછલાઓની જેવા હોય અગર આ મત્સ્યોથી જૂદા પ્રકારના હોય, તે બધાજ મત્સ્યોજ છે. તેમ સમજવું.

આ મત્સ્યોનુ વર્ણન પુરૂંથયુ

હવે ગૌતમસ્વામી કાચબાઓના ભેદો જાણવાની ઇચ્છાથી તેના સંબંધમાં પ્રભુને પૂછે છે કે—હે ભગવન્ કચ્છપ-કાચબા કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે- કાચબાઓ અસ્થિ કચ્છપ અને માંસકચ્છપ એરીતે બે પ્રકારના હોય છે,

આ કાચબાઓનું કથન પૂર્ણ થયુ

ફરીથી ગૌતમસ્વામી 'ગ્રાહ' ના સંબંધમાં પ્રભુને પૂછે છે, કે- હે ભગવન્ 'ગ્રાહ કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—ગ્રાહ, દિલીવેષ્ટક, મૂર્ધજ પુલક, અને સીમાકાર આ પ્રમાણે પાચ પ્રકારના હોય છે.

ગ્રાહોનું વર્ણન પુરૂં થયું.

ફરીથી ગૌતમસ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—મઘરો કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! મઘરો સોંડશુંડા મઘર અને મટ્ટ મઘર એ પ્રમાણેના બે ભેદવાળા હોય છે આ મઘરોનું વર્ણન થયુ

હવે ગૌતમસ્વામી સિસુમારોના સંબંધમાં પ્રભુ ને પૂછે છે કે—હે ભગવન્ સિંસુમાર કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! સિંસુમાર એકાકાર-એકજ પ્રકારના હોય છે. "આ સિંસુમારોનુ કથન થયું."

एतेषां व्याख्या प्रज्ञापनातोऽवगन्तव्या इति। 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये तथाप्रकाराः कथितसदृशाः जलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका भवन्ति 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते सर्वे समासतः-संक्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। 'तं जहा' तद्यथा-'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति। सम्प्रति-जलचरसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां शरीरादिद्वारमभिधातुमाह- 'तेसि ण' इत्यादि, 'तेसि णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता' तेषां जलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि, इति प्रश्न, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'तओ सरीरा पन्नत्ता' त्रीणि शरीराणि तेषां जलचराणां प्रज्ञप्तानि कथितानीति 'तं जहा' तद्यथा-'ओरालिए तेयए कम्मए' औदारिकं तैजसं कार्मणमिति शरीरत्रितयं भवति। 'सरीरोगाहणा'

गये हैं यह सिंसुमारों का कथन हुआ। इन सब जलकर संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों का वर्णन सविस्तर प्रज्ञापना सूत्र के प्रज्ञापना नामक प्रथम पद के इस प्रकरण की टीका में देख लेना चाहिये। "जे यावन्ने" जो इस प्रकार के दूसरे भी जलचर जीव है। "ते समासओ-दुविहा पन्नत्ता" ये सब मत्स्यादि जलचर संक्षेप से दो प्रकार के होते हैं-"तं जहा" जैसे-"पज्जत्ता य, अपज्जत्ता य' एक तो पर्याप्त और दूसरे अपर्याप्त।

अब जलचर समूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों के शरीरादिद्वारों का कथन करते हैं- "तेसिं णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पणत्ता" हे भदन्त! उन जलचर संमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों के कितने शरीर कहे गये हैं? उत्तर-में प्रभु कहते हैं-"गोयमा! तओ सरीरगा पणत्ता" हे गौतम! उन जलचरों के तीन शरीर कहे गये हैं-"तं जहा" जो इस प्रकार से हैं-"ओरालिए, तेयए, कम्मए। औदारिक, तैजस और कार्मण "सरीरो-

---

આ બધા જલચર સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક જીવોનું વર્ણન પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પ્રજ્ઞાપના નામના પહેલા પદમા સવિસ્તર આપેલ છે જે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનો પાઠ સંસ્કૃત ટીકામાં આપ્યો છે, તો તેમાંથી સમજી લેવું

"जे यावन्ने' આ પ્રકારના બીજા પણ જે જલચર જીવો છે, "ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' આ બધા મત્સ્ય વિગેરે જલચર સંક્ષેપથી બે પ્રકારના હોય છે 'त जहा' તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે--"पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य" એક પર્યાપ્તક અને બીજો અપર્યાપ્તક.

હવે જલચર સંમૂચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિકો ના શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન કરવામાં આવે છે—"तेसिं णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पणत्ता" હે ભગવન્ તે જલચર સંમૂચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક જીવોના કેટલા શરીરો કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'गोयमा! तओ सरीरा पणत्ता" હે ગૌતમ! જલચરોના ત્રણ શરીરો કહેલા છે 'तं जहा' જે આ પ્રમાણે છે. "ओरालिए, तेयए

तेषां जलचरजीवानां शरीरावगाहना 'जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' जघन्यनाङ्गुलस्याऽसंख्येयभागम्, 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण 'जोयणसहस्सं' योजनसहस्रम् सहस्रयोजनपरिमिता उत्कृष्टाऽवगाहना तेषां मत्स्यादिजलचराणामिति भावः। 'छेवट्टसंघयणी' सेवार्त्तसंहननिनः जलचरजीवानां शरीराणि सेवार्त्तसंहननयुक्तानि भवन्तीति भावः। 'हुंडसंठिया' हुण्डसंस्थितानि जलचराणां, शरीराणि हुण्डसंस्थानयुक्तानि भवन्तीति। 'चत्तारि कसाया' जलचराणां क्रोधमानमायालोभाख्या श्चत्वारः कषाया भवन्तीति। 'सण्णाओ चत्तारि' संज्ञा आहारभयमैथुनपरिग्रहाख्याश्चतस्रो भवन्तीति। 'लेस्साओ तिन्नि' लेश्यास्तिस्रः कृष्णनीलकापोताख्याः 'इंदिया पंच' इन्द्रियाणि स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रात्मकानि पञ्चापि भवन्तीति। 'समुग्घाया तिन्नि' समुद्घातास्त्रयः जलचरसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां वेदनाकषायमारणान्तिकाख्यास्त्रयः समुद्घाता भवन्तीति भावः। 'नो सन्नी असन्नी' एते संमूर्च्छिमजलचर

गाहणा' हे गौतम इन जलचर जीवों के शरीर की अवगाहना "जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' जघन्य से अंगुल के-असंख्यातवे भाग प्रमाण और 'उक्कोसेणं जोयणसहस्सं' उत्कृष्ट से एक हजार योजन प्रमाण होती है। 'छेवट्टसंघयणी" ये सेवार्त्त संहनन वाले होते हैं "हुंडसंठिया" इनके शरीर हुण्डक संस्थान वाले होते है "चत्तारि कसाया' इनके क्रोध, मान, माया और लोभ इनको चार कषायें होती हैं। "सण्णाओ चत्तारि' आहार भय मैथुन और परिग्रह ये चार संज्ञाएँ होती हैं। "लेस्साओ पंच' इनके कृष्ण नील कापोत तेज पद्म, ये पाँच लेश्यायें होती है। "इंदिया पंच' इन्द्रियाँ पांच होती हैं, स्पर्शन, रसना, घ्राण चक्षु और 'कर्ण' ये पाँचों ही इन्द्रियाँ होती है। 'समुग्घाया तिन्नि' इन जलचर समूच्छिम जीवों के वेदना, कषाय और मारणान्तिक ये तीन समुद्घात होते हैं। 'नो सन्नी'

कम्मए" ઔદારિક, તૈજસ, અને કાર્મણ "सरीरोगाहणा" આ જલચર જીવાના શરીરની અવગાહના "जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણની કહી છે અને "उक्कोसेणं जोयणसहस्सं" ઉત્કૃષ્ટથી એક હજાર યોજન પ્રમાણની હોય છે

"छेवट्टसंघयणी" તેઓ સેવાર્ત સંહનનવાળા હોય છે. 'हुंडसंठिया' તેઓના શરીર હુંડક સંસ્થાનવાળા હોય છે 'चत्तारि कसाया" તેઓને ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ એ ચાર કષાયો હોય છે. "सण्णाओ चत्तारि' તેઓને આહાર, ભય, મૈથુન. અને પરિગ્રહ એ ચાર સંજ્ઞાઓ હોય છે. 'लेस्साओ पंच" તેઓને કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત,તૈજસ, અને પદ્મ એ પાંચ પ્રકારની લેશ્યાઓ હોય છે.

'इंदिया पंच" તેઓને પાંચ ઈંદ્રિયો હોય છે સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ (નાક) નેત્ર, અને શ્રોત્ર. (કાન) એ પાંચજ ઈંદ્રિયો હોય છે. "समुग्घाया तिन्नि' આ જલચર સંમૂર્ચ્છિમ જીવોને વેદના, કષાય, અને મારણાન્તિક આ ત્રણ સમુદ્ઘાતો હોય

पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीवाः नोसंज्ञिनो भवन्ति संमूर्च्छिमतया समनस्कत्वाभावात् अपितु असंज्ञिनो भवन्ति। 'णपुंसगवेया' नपुंसकवेदा इमे भवन्ति, न तु स्त्रीपुरुषवेदा इति ॥ 'पज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ य पंच' एतेषां पर्याप्तयोऽपर्याप्तयश्च पञ्च, पञ्च भवन्ति मनः—पर्याप्तेरभावात्। 'दो दिट्ठीओ' द्वे दृष्टी, सम्यग्दृष्टयोऽपि भवन्ति मिथ्यादृष्टयोऽपि भवन्तीति भाव.। 'दो दसणा' द्वे दर्शने एते चक्षुर्दर्शनिनोऽचक्षुर्दर्शनिनश्च भवन्तीति भावः। 'दो नाणा' द्वे ज्ञाने भवतः मतिज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्चैते भवन्तीति भाव' 'दो अन्नाणा' द्वे अज्ञाने, ते मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च भवन्तीति भावः। 'दुविहे जोगे' द्विविधो योगः वाग्योग काययोगश्चैतेषां भवन्तीति भावः। 'दुविहे उवओगे' द्विविध उपयोगः, साकारोपयोगानाकारोपयोगद्वयवन्त ऐते भवन्तीति भाव 'आहारो छद्दिसिं' आहारः षड् दिशि

असन्नी' ये संज्ञी नहीं होने असज्ञी होते हैं असज्ञी होने के कारण इनका संमूर्च्छिम होना है। क्योंकि संमूर्च्छिम जीवों के मन नहीं होता है। 'णपुंसगवेया' ये सब नपुंसक वेद वाले ही होते है। स्त्री वेद वाले और पुरुष वेद वाले ये नहीं होते हैं। 'पज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ पंच' इन जलचर संमूर्च्छिम जीवों के पाँच पर्याप्तियाँ और पाच अपर्याप्तियां होती हैं। उनके मन.पर्याप्तिका अभाव रहता है "दो दिट्ठीओ' ये जलचर संमूर्च्छिम जीव सम्यग्दृष्टि भी होते है और मिथ्यादृष्टि भी होते है। "दो दंसणा' इनके चक्षुर्दर्शन और अचक्षुर्दर्शन ये दो दर्शन होते है। "दो नाणा' मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ऐसे दो ज्ञान इनके होते हैं। "दो अन्नाणा' दो अज्ञान मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान—ऐसे दो अज्ञान इनके होते हैं—"दुविहे जोगे' काय योग और वचन योग ऐसे दो योग इनके होते हैं। "दुविहे उवजोगे' ये साकार उपयोग और अनाकार उपयोग इन-दो उपयोगो वाले होते हैं। "आहारो छद्दिसिं" इनका आहार छह दिशाओं

છે 'नो सन्नी असन्नी" તેઓ સંજ્ઞી હોતા નથી પણ અસંજ્ઞી હોય છે. અસંજ્ઞી હોવાનાકારણે તેઓનું સંમૂચ્છિમ પણું છે કેમકે સંમૂચ્છિમ જીવોને મન હોતું નથી 'णपुंसगवेया' તેઓ બધા નપુંસક વેદવાળાજ હોય છે. તેઓ સ્ત્રીવેદવાળા અને પુરૂષ વેદવાળા હોતા નથી 'पज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ पंच' આ જલચર સમૂચ્છિમ જીવોને પાંચ પર્યાપ્તિયો અને પાંચ અપર્યાપ્તિયો હોય છે. તેઓને મનઃપર્યાપ્તિનો અભાવ હોય છે 'दो दिट्ठीओ' આ જલચર સમૂચ્છિમ જીવ સમ્યગ્દષ્ટિ વાળાપણ હોય છે અને મિથ્યાદષ્ટિવાળા પણ હોય છે 'दो दंसणा' તેઓને ચક્ષુદર્શન અને અચક્ષુદર્શન એ પ્રમાણેના બે દર્શનો હોય છે 'दो णाणा" મતિજ્ઞાન, અને શ્રુતજ્ઞાન એ પ્રમાણેના બે જ્ઞાન તેમને હોય છે 'दो अन्नाणा' તેમને મતિ અજ્ઞાન અને શ્રુતાજ્ઞાન એ રીતે બે અજ્ઞાન હોય છે 'दुविहे जोगे' તેમને કાયયોગ અને વચનયોગ એ પ્રમાણેના બે યોગો હોય છે. 'दुविहे उवजोगे' તેઓ સાકાર ઉપયોગ અને અનાકાર ઉપયોગ એ પ્રમાણે ના બે ઉપ-

लोकमध्ये एव एतेषामवस्थानात् षड्दिग्भ्य आगतान् पुद्गलानाहरन्तीति भावः। 'उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो' उपपातस्तिर्यङ्मनुष्येभ्य आगत्यात्र समुत्पद्यन्ते इति भाव. 'नो देवेहिंतो नो नेरइएहिंतो' नो देवेभ्यो नो नैरयिकेभ्यः, देवनारकाभ्यामुद्वृत्य अत्र नोत्पद्यन्ते इति भावः। 'तिरिएहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो' यदि तिर्यग्भ्य उपपातस्तदा असङ्ख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यस्तिर्यग्भ्य एवात्रोपपातो भवतीति। 'अकम्मभूमग-अंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो मणुस्सेहिंतो' अकर्मभूमिकान्तरद्वीपासङ्ख्येयवर्षायुष्केभ्यो मनुष्येभ्य', यदि संमूर्च्छिमजलचरजीवाना मनुष्येभ्य उपपातो भवति तदा अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यो मनुष्येभ्य उपपातो भवतीत्येव वक्तव्यमिति। 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जलचरसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियजीवानां स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्। 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्वकोटी। 'मारणंतियसमुग्घाएणं दुविहा-

से आगत पुद्गल द्रव्यो का होता है। क्योंकि ये लोक के मध्य में ही रहते है। "उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो" तिर्यञ्च और मनुष्यो में से आये हुए जीव इन जलचरों में उत्पन्न होते है। 'नो देवेहिंतो नो नेरइएहिंतो' इनमें देवों से और नैरयिको में से आये हुए जीव उत्पन्न नहीं होते हैं। 'तिरिएहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेसु' जो तिर्यञ्चों से आते है वे असंख्यात वर्षायुष्कतिर्यञ्चों से आये हुए जीव यहां उत्पन्न नहीं होते हैं। 'अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेजवासाउयवज्जेहिंतो मणुस्सेहिंतो' इसी प्रकार यदि मनुष्यो में से आये हुए जीवो से इनका उपपाद होता है तो इनमें अकर्म भूमिक अन्तरद्वीप के मनुष्य जो कि असंख्यात वर्ष की आयुवाले होते है उत्पन्न नहीं होते हैं। 'ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' इन जलचर संमूर्च्छिमजीवो की स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कृष्ट से एक पूर्वकोटिकी होती है। 'मारणं-

યોગવાળા હોય છે. 'आहारो छद्दिसिं' તેઓનો આહાર છદિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યો નો હોય છે. કેમ કે તેઓ લોકની મધ્યમાં રહે છે. 'उववाओ तिरियमणुस्सेहिंतो" તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાથી આવેલા જીવો આ જલચરોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. "नो देवेहिंतो नो नेरइएहिंतो" તેઓમા દેવોમાથી અને નૈરયિકોમાંથી આવેલા જીવો ઉત્પન્ન થતા નથી 'तिरिएहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेसु' જેઓ તિર્યંચોમાંથી આવે છે તેઓ અસંખ્યાતવર્ષાયુષ્ક તિર્યંચોમાંથી આવેલા જીવો અહિંયા ઉત્પન્ન થતા નથી. 'अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो मणुस्सेहिंतो' એજ પ્રમાણે જો મનુષ્યોમાં થી આવેલા જીવોમાથી તેઓનો ઉપપાત—ઉત્પત્તિ થાય તો તે અકર્મભૂમિજ અંતરદ્વીપના મનુષ્યો કે જેઓ અસંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળા હોય છે. તેમાંથી થતી નથી. 'ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्त' આ જલચર સંમૂચ્છિમ જીવોની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે. અને "उक्कोसेणं पुव्वकोडी' ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વ કોટિની

मरंति' मारणान्तिकसमुद्घातेन द्विविधा अपि म्रियन्ते—इमे जलचरसमूच्छिमा मारणान्तिक-समुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते इति भाव । च्यवनद्वारमाह—'अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं' अनन्तरमुद्वृत्य क० हे भदन्त ! इमे जलचरसंमूर्च्छिमाः इत उद्वृत्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषु तिर्यग्क्षु मनुष्येषु देवेषु वा गच्छन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति 'नेरइएसु वि' इत्यादि, 'नेरइएसु वि' हे गौतम ! जलचरसंमूर्च्छिमा इत उद्वृत्य नैरयिकेष्वपि गच्छन्ति तथा 'तिरिक्खजोणिएसु वि' तिर्यग्योनिकेष्वपि गच्छन्ति 'मणुस्सेसु वि' मनुष्येष्वपि गच्छन्ति, 'देवेसु वि' देवेष्वपि गच्छन्तीति भावः । 'नेरइएसु रयणप्पभाए' जलचरसमूर्च्छिमा इत उद्वृत्य यदि नरकेषु गच्छन्ति तदा रत्नप्रभानरके एव गच्छन्ति नान्यत्र नरके

तियसमुग्घाएणं दुविहा मरंति' ये जलचर संमूर्च्छिम जीव मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं और असमवहत होकर भी मरते है । 'अणंतरं उव्वट्टिता कहिं' ये जलचर संमूर्च्छिम जीव जलचर पर्याय को छोड़कर कहा उत्पन्न होते है ? क्या ये नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं ? अथवा तिर्यग्योनिकों में उत्पन्न होते है ? अथवा मनुष्यो में उत्पन्न होते है ? अथवा देवों में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—हे गौतम ! ये संमूर्च्छिम जलचर जीव मरकर "नेरइएसु वि" नैरयिकों में भी उत्पन्न होते हैं । "तिरिक्खजोणिएसु वि" तिर्यग्योनिकों में भी उत्पन्न होते हैं । "मणुस्सेसु वि" मनुष्यो मे भी उत्पन्न होते है । "देवेसु वि" और देवों में भी उत्पन्न होते हैं । ये समूर्च्छिम जलचर जीव जलचर की पर्याय को छोड़कर यदि नरको में उत्पन्न होते हैं तो "नेरइएसु रयणप्पभाए" वहा वे रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक में ही उत्पन्न होते है अन्य द्वितीयादि नरको में उत्पन्न नहीं होते हैं । अर्थात् असञ्ज्ञी—

હોય છે. "मारणंतियसमुग्घाएणं दुविहा मरंति' આ જલચર સંમૂચ્છિંમ જીવો મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત—અર્થાત્ સમુદ્ઘાત કરીને પણ મરે છે, અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી અસમવહુત આઘાત પ્રાપ્ત કર્યા વિનાપણ મરે છે. 'अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं" જલચર સંમૂચ્છિંમ જીવ જલચર પર્યાય ને છોડી ને કયા ઉત્પન્ન થાય છે ? શું તેઓ નૈરયિકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા તિર્યંગ્યોનિકોમા ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? અથવા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! આ સંમૂચ્છિંમ જલચર જીવ મરીને 'नेरइएसु वि' નૈરયિકોમા પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'तिरिक्खजोणिएसु वि' તિર્યંગ્યોનિકોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે. 'मणुस्सेसु वि' મનુષ્યોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે 'देवेसु वि" દેવોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે. આ સંમૂચ્છિંમ જલચર જીવો જલચરની પર્યાયને છોડીને જો નરકોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો 'नेरइएसु रयणप्पभाए' ત્યાં તેઓ રત્નપ્રભા નામના પહેલા નરકમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે. અન્ય બીજા વિગેરે નરકોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. અર્થાત્ અસંજ્ઞી જીવ પ્રથમ નરક

गच्छन्ति अत एवोच्यते **'सेसेसु पडिसेहो'** शेषेषु रत्नप्रभानरकातिरिक्तनरकेषु प्रतिषेधो वक्तव्यः, इत उद्वृत्य नरके गच्छति तदा रत्नप्रभायामेव केवल नान्यत्रेति भावः। **'तिरिएसु सव्वेसु उववज्जंति'** जलचरसंमूर्च्छिमा इत उद्वृत्य यदि तिर्यग्क्षु उत्पद्यन्ते तदा सर्वेष्वपि तिर्यग्क्षूत्पद्यन्ते न कुत्रापि प्रतिषेध इत्यर्थ । **'संखेज्जवासाउएसु वि'** संख्येयवर्षायुष्कतिर्यग्क्ष्वपि उत्पद्यन्ते **'असंखेज्जवासाउएसु वि'** असंख्यातवर्षायुष्वपि तिर्यग्क्षु जलचरसंमूर्च्छिमा समुत्पद्यन्ते इति । **'चउप्पएसु वि'** चतुष्पदेष्वपि उत्पद्यन्ते, **पक्खीसु वि'** पक्षिष्वपि इमे जलचर-संमूर्च्छिमाः इत समुद्वृत्ता सन्तः समुत्पद्यन्ते । **'मणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभूमिसु'** इमे जलचर-संमूर्च्छिमा इत उद्वृत्य यदि मनुष्येषु उत्पद्यन्ते तदा सर्वेष्वपि कर्मभूमिकमनुष्येषूत्पद्यन्ते **'नो अकम्मभूमिएसु'** न अकर्मभूमिकेषु मनुष्येषूत्पद्यते । **'अंतरदीवएसु वि'** अन्तरद्वीपेष्वपि

जीव प्रथम नरक तक ही जा सकते है। यही बात **"सेसेसु पडिसेहो"** इस सूत्र द्वारा प्रकट की गई है। इस प्रकार रत्नप्रभा से अतिरिक्त नरको में इसका उत्पाद नहीं होता है। **"तिरिएसु सव्वेसु वि उववज्जंति"** तिर्यञ्चों में सब प्रकारके तिर्यञ्चो में उत्पन्न होते हैं तिर्यञ्चों में कहीं पर भी उत्पन्न होने का प्रतिषेध नहीं है। अतः ये समस्त तिर्यञ्चो में उत्पन्न होते हैं। **"संखेज्जवासाउएसु वि"** सख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यञ्चो में भी उत्पन्न होते हैं। **"असंखेज्जवासाउएसु वि"** असंख्यात वर्ष की आयुवाले तिर्यञ्चो में भी उत्पन्न होते है। **"चउप्पएसु वि"** चतुष्पदो में भी उत्पन्न होते है **"पक्खीसु वि"** पक्षियो में भी उत्पन्न होते हैं **"मणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभूमिसु"** समस्तकर्मभूमि के मनुष्यो में उत्पन्न होते है। पर **"नो अकम्मभूमिएसु"** ये जलचर संमूर्च्छम जीव अकर्मभूमि के मनुष्यों में उत्पन्न नहीं होते हैं। **"अंतरदीवएसु वि"** अंतर द्वीपज मनुष्यो में ये उत्पन्न होते है। चाहे वे सख्यात वर्ष

સુધી જ જઈ શકે છે એજ વાત **'सेसेसु पडिसेहो'** આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કરી છે આ રીતે રત્નપ્રભા શિવાયના નરકોમાં તેઓને ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ થતો નથી **'तिरिएसु सव्वेसु वि उववज्जंति'** તિર્યગ્યોનિકોમાં બધાજ પ્રકારની તિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થાય છે તિર્યંચોમાં ક્યાંય પણ ઉત્પન્ન થવાનો નિષેધ કરેલ નથી. તેથી તેઓ સઘળા તિર્યંચોમાં ઉત્પન્ન થાય છે **'संखेज्जवासाउएसु वि'** સંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળા તિર્યંચોમા પણ ઉત્પન્ન થાય છે. **'असंखेज्जवासाउएसु वि'** અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા તિર્યંચોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે **'चउप्पएसु वि'** ચતુષ્પદોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે **"पक्खीसु वि"** પક્ષીયોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે **'मणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभूमिसु'** સઘળા કર્મભૂમિના મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે **'नो अकम्मभूमिएसु"** આ જલચર સમૂર્છિમ જીવ અકર્મભૂમિના મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી **"अंतरदीवएसु वि"** અંતરદ્વીપજ મનુષ્યોમાં તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે ચાહે તો તેઓ સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા હોય કે અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા હોય તેજ વાત બતાવતાં સૂત્રકાર કહે છે કે—**"संखिज्जवासा-**

मनुष्येषु उत्पद्यन्ते। **'संखिज्जवासाउएसु वि'** संख्यातवर्षायुष्केष्वपि मनुष्येषु समुत्पद्यन्ते। **'असंखिज्जवासाउएसु वि'** असंख्यातवर्षायुष्केष्वपि मनुष्येषु समुत्पद्यन्ते। यदि एतेषां मनुष्येषु भवति उपपातस्तदा केवलमकर्मभूमिकमनुष्यं परित्यज्य सर्वमनुष्येष्वेवोपपातो भवतीति भाव'॥ **देवेसु जाव वाणमंतरा'** यदि जलचरसंमूर्च्छिमजीवानां देवेषूत्पत्तिर्भवति तदा यावद् वानव्यन्तर-देवेष्वेवोत्पत्तिर्भवति यावत्पदमाहात्म्यात् भवनवासिषु वानव्यन्तरदेवेषूत्पत्तिर्भवतीति भावः। गत्यागतिद्वारे- **चउगइया'** चतुर्गतिका' नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेषु एते गन्तारो भवन्तीत्य-तश्चतुर्गतिका इति कथ्यन्ते। **'दुआगइया** द्व्यागतिकाः, तिर्यङ्मनुष्येभ्य एव केवलं जलचर गतौ आगमन भवति इत्यतो द्व्यागतिका इति कथ्यन्ते इति भाव। **'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता'**

की असख्यातवर्ष की आयु वाले हो इसी को कहते हैं- **'संखिज्जवासाउएसु वि"** सख्यात वर्ष की आयुवाले मनुष्यों में भी ये उत्पन्न होते है। **"असंखिज्जवासाउएसु वि"** असंख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्यों में भी ये उत्पन्न होते है। तात्पर्य कहने का यह है कि यदि मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं तो केवल ये अकर्मभूमि के मनुष्यों को छोड़कर सर्व मनुष्यो में ही उत्पन्न होते है। **"देवेसु जाव वाणमंतरा"** यदि ये जलचर संमूर्च्छिम जीव देवो में उत्पन्न होते हैं तो ये भवनवासियों में उत्पन्न होते हैं। और वानव्यन्तरो में उत्पन्न हो सकते हैं। इनके सिवाय ऊपर के देवों में नहीं जा सकते हैं क्योंकि वहां असंज्ञी आयु का अभाव है। गत्यागति द्वार में ये जलचर संमूर्च्छिमजीव ' **चतुर्गतिकाः"** चारो गतियो में जा सकते हैं। नरकगति में भी जा सकते है, तिर्यञ्च गति में भी जा सकते हैं', मनुष्यगति में भी जा सकते है और देवगति में भी जा सकते हैं। तथा -**'द्व्यागतिकाः"** इनका आगमन तिर्यञ्च और मनुष्य इन दो में से ही आकर के उत्पन्न होते हैं। इसलिये ये द्व्यागतिक कहलाते हैं। **"परित्ता असं-**

उएसु वि' સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યોમાં પણ તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે **"असंखेज्जवासाउएसु वि"** અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યોમાં પણ તેઓ ઉત્પન્ન થાય છે.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—જો મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો કેવળ તેઓ અકર્મ ભૂમિના મનુષ્યોને છોડીને બધાજ મનુષ્યોમાં ઉત્પન્ન થાય છે **'देवेसु जाव वाणमंतरा'** જો તેઓ જલચર સંમૂર્ચ્છિમ જીવ દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો તેઓ ભવનવાસી દેવોમાં અને વાનવ્યંતર દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે તે શિવાય ના બીજા દેવોમાં થઈ શકતા નથી કેમ કે—ત્યાં અસંજ્ઞી આયુનો અભાવ છે

ગત્યાગતિદ્વારમા આ જલચર સંમૂર્ચ્છિમ જીવ **चतुर्गतिकाः'** ચારે ગતિયોમાં જઈ શકે છે અર્થાત્ તિર્યગ્ગતિમાં જઈ શકે છે, નરકગતિમાં પણ જઈ શકે છે, મનુષ્ય ગતિમાં પણ જઈ શકે છે અને દેવગતિમાં પણ જઈ શકે છે તથા તેઓ **'द्व्यागतिका'** તેઓનું આગમન તિર્યંચ અને મનુષ્ય એ બેગતિ માથીજ હોય છે, અર્થાત્ એ બે માંથી આવીને જલચર સંમૂર્ચ્છિમ પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેઓ દ્વયાગતિક કહેવાય છે.

प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! 'से तं जलचरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खा' ते एते जलचरसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, भेदप्रभेदाभ्यां द्वारैश्च यथायथं निरूपिता ॥ सू० २१ ॥

संमूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः कथिताः सम्प्रति संमूर्च्छिमस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकान् प्रदर्शयितुमाह-'से किं तं' इत्यादि ।

मूलम्-'से किं तं थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया, थलयरसंमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता तं जहा-चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया, परिसप्पथलयरसंमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किं तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजाणिया ? थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजाणिया चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया जाव जे यावन्ने तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा-पज्जत्ता य अपज्जत्ता य । तओ सरीरगा ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं । ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीतिवाससहस्साइं, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता सेत्तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' ॥ सू० २२ ॥

खेज्जा पन्नत्ता'' यहा प्रत्येक शरीरी असंख्यात कहे गये हैं । हे श्रमण ! आयुष्मन् ! ''से तं जलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खा'' इस प्रकार से ये जलचर संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव भेद प्रभेद सहित शरीरादि द्वारोंको लेकर निरूपित किये गये हैं ॥ सू० २१ ॥

'परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता' અહિયાં પ્રત્યેક શરીરી-અસંખ્યાત કહ્યા છે. હે શ્રમણ આયુષ્મન્ 'से तं जलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खा' આ પ્રમાણે આ જલચર સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક જીવોના ભેદ પ્રભેદ સાથે શરીરાદિ દ્વારોનું નિરૂપણ કર્યું છે ॥સૂ૦ ૨૧॥

छाया—अथ के ते स्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका, स्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-चतुष्पदस्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च परिसर्पस्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च। अथ के ते स्थलचरचतुष्पदसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, स्थलचरचतुष्पदसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदाः सनखपदाः यावद् ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। त्रीणि शरीराणि, अवगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागमुत्कर्षेण गव्यूति पृथक्त्वम्। स्थितिर्जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम्-उत्कर्षेण चतुरशीतिवर्षसहस्राणि। शेषं यथा-जलचराणां यावत् चतुर्गतिकाः द्व्यागतिकाः प्रत्येकेऽसंख्याताः प्रज्ञप्ता। ते एते स्थलचरचतुष्पदसंमूर्च्छिमतिर्यग्योनिकाः ॥ सू० २२ ॥

टीका—'से किं तं थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' अथ के ते स्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति प्रश्न', उत्तरयति—'थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता' स्थलचरसंमुर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः द्विविधा'—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति 'द्वैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा—'चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' चतुष्पदस्थलचरसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियति-

---

अब सूत्रकार समूर्च्छिम स्थलचर पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों का कथन करते हैं—

"से किं तं थलयरसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" इत्यादि। ॥ सू० २१ ॥

टीकार्थ—"से किं तं थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" हे भदन्त! स्थलचर समूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव कितने प्रकार के है? उत्तर में प्रभु कहते है—"थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता" हे गौतम! स्थलचर समूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्योनिकजीव दो प्रकार के है? "तं जहा" जैसे—"चउप्पयथलयरसंमुच्छिपंचिंदियतिक्खजोणिया" चतुष्पदथलचरसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव,

---

હવે સૂત્રકાર સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચર પચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકોનું નિરૂપણ કરતા નીચે પ્રમાણેનું સૂત્ર કહે છે—'से किं तं थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'से किं तं थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' હે ભગવન્ સ્થલચર સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવો-કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-'थलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ! સ્થલચર સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ બે પ્રકારના કહેલા છે. 'तं जहा' તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે—'चउप्पयथलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख जोणिया' ચતુષ્પદ-સ્થલચર સંમૂર્ચ્છિમ પચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ અને 'परिसप्प थल-

र्यग्योनिकाः तथा-'परिसप्पथलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' परिसर्पस्थलचर-संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च, तथा च चतुष्पदपरिसर्पभेदात् स्थलचरा द्विविधा भवन्तीति भावः। 'से किं तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' अथ के ते स्थलचरचतुष्पदसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका इति चतुष्पदाः किं लक्षणाः कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति-'थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता' स्थलचरचतुष्पदसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः-चतुःप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, इति। चातुर्विध्यं दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया जाव' एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदाः सनखपदा यावत्। अत्र यावत्पदेन प्रज्ञापनाप्रकरणं संगृहीतं भवति, प्रज्ञपनासूत्रस्य प्रथमपदे चतुष्पदस्थल-चरस्य यथा भेदो वर्णितस्तथैव अत्रापि स भेदो वर्णयितव्य, तथाहि-'एगखुरा दुखुरा गंडीपया

और "परिसप्पथलयरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" परिसर्पस्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव, इस चतुष्पद और परिसर्प के भेद से स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव दो प्रकार के होते है। "से किं तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" हे भदन्त! ये स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिमपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव कितने भेद वाले होते हैं उत्तर में प्रभु कहते है—"थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता" हे गौतम! स्थलचर चतुष्पदसंमूर्च्छिमपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव चार प्रकार के कहे गये है। "तं जहा" वे इस प्रकार से है-"एगखुरा, दुखुरा, गण्डीपया, सणप्फया जाव" एक खुरवाले, दो खुरवाले, गण्डीपद, और सनखपद यहाँ यावत्पद से प्रज्ञापना का प्रकरण संगृहीत हुआ है। अतः प्रज्ञापनासूत्र के प्रथम पद में चतुष्पद स्थल-चर, के भेद जिस प्रकार से वर्णित हुए हैं उसी प्रकार से यहाँ पर ग्रहण कर लेना चाहिए। वह प्रज्ञापना का प्रकरण टीका में सग्रह किया गया है उनका अर्थ इस प्रकार से है—इनमें

यरसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' પરિસર્પ સ્થલચર સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ આ ચતુષ્પદ અને પરિસર્પ ના ભેદથી સ્થલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ બે પ્રકારના કહ્યા છે

'से किं तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' હે ભગવન્ આ સ્થલચર ચતુષ્પદ સંમૂર્ચ્છિમ પચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવો ના કેટલા ભેદો કહેલા છે ? આ પ્રશ્ન ના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે—'थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिया चउव्विहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ ! સ્થલચર ચતુષ્પદ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્ય-ગ્યોનિક જીવો ચાર પ્રકારના કહેલા છે. 'तं जहा' તે ચાર પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. 'एग-खुरा, दुखुरा, गंडिपया, सणप्फया जाव' એક ખરી વાળા, બે ખરીવાળા, ગંડીપદ અને સનખપદ, અહિયાં યાવત્ પદથી પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનો આ પ્રકરણ ને લગતો પાઠ સંગ્રહીત

सणप्फया, से किं तं एगखुरा एगखुरा अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा-अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्तगा जे यावन्ने तहप्पगारा से त्तं एगखुरा। से किं तं दुखुरा दुखुरा अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा उट्टा गोणा गवया रोज्झा, पसया महिसा मिया संवरा वराहा अया एलगरुरुसरभचमरकुरंगगोकण्णमाइ, जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं दुखुरा। से किं तं गंडीपया, गंडीपया अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा हत्थी हत्थिपूयणया, मंकुणहत्थी खग्गी गंडा जे यावन्ने तहप्पगारा, 'से त्तं गंडीपया।' से किं तं सणप्फया सणप्फया अणेगविहा पन्नत्ता, तं जहा, सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सियाला विडाला सुणगा कोलसुणगा कोकंतिया ससगा चित्तगा चिल्ललगा जे यावन्ने तहप्पगारा, से त्तं सणप्फया'एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदा. सनखपदा.। अथ के ते एकखुराः, एकखुरा अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अश्वा अश्वतरा घोटकाः गर्दभाः गोरक्षराः कन्दलकाः श्रीकन्दलका आवर्त्तकाः, ये चान्ये तथाप्रकाराः, ते एते एकखुराः। अथ के ते द्विखुराः, द्विखुरा अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-उष्ट्रा गोणा गवया वराहाः अजैलकरुरुशरभचमरकुरङ्गगोकर्णादयः ये चान्ये तथाप्रकाराः ते एते द्विखुराः। अथ के ते गण्डीपदाः, गण्डीपदा अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-हस्तिनो हस्तिपूतनकाः मत्कुणहस्तिनः खङ्गिन' गंडा (गेंडा) ये चान्ये तथाप्रकाराः, ते एते गण्डीपदाः। अथ के ते सनखपदाः, सनखपदा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा सिंहाः व्याघ्राः द्वीपिका अच्छास्तरक्षाः परासराः शृगालाः बिडाला शुनकाः, कोलशुनकाः कोकन्तिकाः शशकाः चित्रकाः चिल्ललकाः, ये चान्ये तथाप्रकाराः, ते एते सनखपदा', इतिच्छाया ॥ तत्र प्रतिपदमेक एव खुरो येषां ते एकखुरा अश्वादयो ज्ञातव्याः, एतेषामेकखुरत्वात्। प्रतिपदं द्वौ खुरौ येषां ते द्विखुराः यथा-उष्ट्र-गो-गवय-महिषादयः. एतेषां प्रत्येकपदं द्वौ द्वौ खुरौ भवतः गण्डीव--सुवर्णकारस्योपकरण-

---

जिनके एक खुर होते हैं वे एक खुरवाले जानवर अश्व आदि होते हैं। जिनके दो खुर होते हैं वे द्विखुरवाले जावनर ऊँट, गाय, रोझ महिष आदि हैं। जिनके पैर गंडी-सुवर्णकार के एरण जैसा-गोल आकार वाले होते हैं वे गण्डीपद जानवर हस्ति आदि हैं। जिनके लम्बे २ तीक्ष्ण

થયેલ છે તેથી પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પહેલા પદમાં ચતુષ્પદ સ્થલચર જીવો ના ભેદો જેરીતે વર્ણવવામાં આવેલા છે. એજ પ્રમાણે તે બધા ભેદો અહિયાં સમજી લેવા આ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું પ્રકરણ સંસ્કૃત ટીકામાં આપવામાં આવેલ છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે.-તેઓમાં જેને એક ખરી હોય છે, તેઓ એક ખરીવાળા જાનવર કહેવાય છે. જેમ કે ઘોડા વિગેરે એક ખરીવાળા હોય છે. જેઓને બે ખરી હોય છે તે બે ખરીયો વાળા જાનવર કહેવાય છે. જેમ કે—ગાય, ભેંસ, ઉંટ, વિગેરે જેઓના પગ ગંડી—એટલે કે સોની ની એરણ જેવા ગોળ આકારના હોય છે, તેઓ ગંડીપદ જાનવર કહેવાય છે. જેમ કે હાથી વિગેરે

विशेषः । (एरण) इति भाषाप्रसिद्धः तद्वत् गोलाकारपादौ येषां ते गण्डीपदाः. यथा हस्तिप्रभृतयः । सनखौ-दीर्घदीर्घतरतीक्ष्णनखयुक्तौ पादौ येषां ते सनखपदाः. यथा सिंहव्याघ्रादयः. सनखसूत्रे द्वीपकचित्रकादयः आरण्यकपशुविशेषा ज्ञातव्या. एतदन्ये लोकतो ज्ञातव्याः ॥ सूत्रस्थाः यावत्पदग्राह्यास्तथाप्रकारा अन्येऽपि च सर्वे निरूपिताः अतःपरं सूत्राक्षराण्येव विवृणुवः 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये- एकखुरादिभिन्ना एकखुरादिसदृशाश्च ते सर्वेऽपि एकखुरादिवदेव चतुष्पदत्वेन प्रत्येतव्याः । 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते एकखुरादयः सक्षेपेण द्विविधाः--द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः--कथिताः. 'तं जहा' तद्यथा 'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्च ॥

अथैतेषां शरीरादिद्वारविषये कथयति—'तओ सरीरगा' त्रीणि शरीराणि—औदारिक—तैजस—कार्मणाख्यानि 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' अवगाहना जघन्येन

नख युक्त पैर होते है वे सनखपद जानवर सिंह व्याघ्र आदि है । सनखपद सूत्र में द्वीपक चित्रक आदि जो जावनर कहे गये है ये है ये जगली जानवर हैं । तथा इनसे भिन्न जो और जानवर हैं वे लोक से जान लेना चाहिये तथा "जे यावन्ने तहप्पगारा" इसी प्रकार से जो और भी एक खुरवाले जानवर हों—जो कि इन परिगणित एक खुरवाले जानवरों के जैसे ही हों तथा इनसे भिन्न हो एक खुरादिवाले जैसे हो तो वे भी एक खुरादिवालों के जैसे ही चतुष्पद में ही अन्तर्भूत कर लेना चाहिये "ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" ये एक खुरादिक-चतुष्पद संक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं—"तं जहा" जैसे "पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" पर्याप्त और अपर्याप्त अब इनके शरीर आदि द्वारों का कथन करते हैं इनके "तओ सरीरगा' तीन शरीर होते हैं-जिनके नाम औदारिक, तैजस और कार्मण हैं "ओगाहणा जहन्नेणं

છે. તથા જેઓના પગ લાબા લાબા નખવાળા હોય છે. તેઓ સનખપદ જાનવર કહેવાય છે, જેમ કે—સિંહ, વાઘ વિગેરે. સૂત્રમાં સનખપદ જાનવરોમાં દ્વીપક—દીપડો ચિત્રક વિગેરે કહ્યા છે. આ બધા જંગલમાં રહેનારા જંગલી જાનવરો છે. તથા આ ઉપર કહ્યા શિવાયના જે બીજા જાનવરો છે તે લોક વ્યવહાર થી સમજી લેવા. તથા 'जे यावन्ने तहप्पगारा' આજ પ્રમાણે બીજા પણ જે એકખુરવાળા જાનવર હોય કે જેઓ આ ઉપર ગણાવેલા એકખુર જાનવરોની જેવાજ હોય તથા તેઓથી જૂદા પ્રકાર ના હોય પણ એક ખુરવાળા હોય તો તેઓ પણ એક ખુરવાળા જાનવરોની જેમજ ચતુષ્પદોમાંજ સમાવી લેવા જોઇએ 'ते समासओ दुविहा पण्णत्ता' આ એક ખુરાદિ પશુઓ સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલા છે 'तं जहा' તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે ના સમજવા —'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' એક પર્યાપ્તક અને બીજો અપર્યાપ્તક

હવે તેઓના શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે—'तओ सरीरगा' તેઓને ત્રણ પ્રકારના શરીરો હોય છે. તે ઔદારિક, તૈજસ, અને કાર્મણ એ

अङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमाणा, 'उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं' उत्कर्षेण गव्यूतपृथक्त्वम्-द्विकोशादारभ्य नवकोशपर्यन्तम्। 'ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' स्थितिर्जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तम् 'उक्कोसेणं चउरासीइवाससहस्साइं' उत्कर्षेण चतुरशीतिवर्षसहस्राणि। 'सेसं जहा जलयराणं' शेषम्-अवगाहनास्थितिव्यतिरिक्तं सर्वं द्वारजातं च्यवनद्वारपर्यन्तं यथा जलचराणां जलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकानां प्रकरणे यथा कथितं तथैवात्रापि ज्ञातव्यम्, कियत्पर्यन्तमित्याह-'जाव चउगइया दुआगइया' यावत् गत्यागत्यागतिद्वारम् चतुर्गतिका द्व्यागतिका एते स्थलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका भवन्तीति। तानि सर्वाणि द्वाराणि अत्र प्रदर्श्यन्ते'तओ सरीरगा' त्रीणि शरीराणि-औदारिकतैजसकार्मणानि संमूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचराणां भवन्तीति॥

अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' अवगाहना जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और 'उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं' उत्कर्ष से समूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरजीवों की अवगाहना गव्यूत पृथक्त्व अर्थात् दो गव्यूत-दो कोश से लेकर नौकोश प्रमाण की होती है। "ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं' इनकी स्थिति-आयुष्यकाल जघन्य से तो अन्तर्मुहूर्त्त की होती है किन्तु "उक्कोसेणं चउरासीइवाससहस्साइं' उत्कृष्टस्थिति चौरासी हजार वर्षों की होती है। 'सेसं जहा जलयराणं' शेष-बाकी के अवगाहना और स्थितिके सिवाय सब शरीर आदि द्वारसमूह च्यवनद्वारपर्यन्त जलचरसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों के प्रकरण में जैसा कहा है वैसा ही यहाँ पर भी समझलेना चाहिये ये 'चउगइया दुआगइया' चारगति वाले और दो आगतिवाले होते हैं, अब शरीरादि सब द्वार यहाँ प्रदर्शित किये जाते हैं इनके शरीर द्वार में औदा-

---

પ્રમાણેના ત્રણ શરીરો સમજવા. 'ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं' તેઓની અવગાહના જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણની હોય છે. અને 'उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं' ઉત્કર્ષથી સંમૂર્ચ્છિમ ચતુષ્પદ સ્થલચર જીવોની અવગાહના ગવ્યૂતિ પૃથક્ત્વ અર્થાત્ બે કોગાઉથી લઈને નવ ગાવસુધીની હોય છે. 'ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं' તેઓની સ્થિતિ (આયુષ્યકાળ) જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે, અને 'उक्कोसेणं चउरासीइवाससहस्साइं' ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ (આયુષ્ય કાળ) ચોર્યાસી હજારવર્ષ સુધીની હોય છે.

'सेसं जहा जलयराणं' આ કથન શિવાય એટલે કે અવગાહના અને સ્થિતિ દ્વારના કથન શિવાય બાકીના શરીર વિગેરે સઘળા દ્વારો તે ચ્યવન દ્વાર પર્યન્ત જલચર સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકોના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજી લેવા આ ચતુષ્પદો 'चउगइया दुआगइया' ચાર ગતિવાળા અને બે આગતિવાળા એટલે કે—ચાર ગતિયોમાંજવાવાળા અને બે ગતિથી આવવા વાળા હોય છે

હવે શરીર વિગેરે સઘળા દ્વારોનું કથન કરવામાં આવે છે.—શરીર દ્વારમાં—તેઓના શરીર ઔદારિક, તૈજસ, અને કાર્મણ આ ત્રણ પ્રકારના હોય છે. ૧; અવગાહના દ્વારમાં-

अवगाहनाद्वारे—जलचर प्रकरणाद् विशेषः स चेत्थम्—**ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं'** शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागं भवति संमूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचराणाम्, **'उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं'** उत्कर्षेण तु शरीरावगाहना चतुष्पदस्थलचराणां गव्यूतपृथक्त्वं द्विगव्यूतादारभ्य नवगव्यूत (क्रोश) पर्यन्तमिति ॥

संहननद्वारे—सेवार्त्तसंहननं भवति जलचरवत् ॥ संस्थानद्वारे—हुण्डसंस्थानसंस्थितानि चतुष्पदानां शरीराणि भवन्ति ॥ कषायद्वारे—चत्वारः क्रोधमानमायालोभाख्याः कषाया भवन्ति ॥ संज्ञाद्वारे--आहारभयमैथुनपरिग्रहाख्याश्चतस्रः संज्ञा भवन्ति ॥ लेश्याद्वारे--कृष्णनीलकापोताख्या–

रिक तैजस और कार्मण ये तीन शरीर होते है १ अवगाहनाद्वार में विलक्षणता है वह इस प्रकार संमूर्च्छिम इन चतुष्पदस्थलचरो की अवगाहना जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और उत्कृष्ट से गव्यूत पृथक्त्व- द्विगव्यूत (दो कोस) से लेकर नौ गव्यूत तक की होती है २ । सहनन द्वार में इनके सेवार्त्त सहनन होता है ३ । संस्थानद्वार में इनके शरीर हुण्ड संस्थानवाले होते हैं ४ । कषायद्वार में इनके क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषायें होती है ५ । संज्ञाद्वार में इन संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचरों को आहार, भय, मैथुन और परिग्रह ये चार संज्ञाएँ होती है ६ लेश्याद्वार में इनके कृष्ण, नील, कापोत ये तीन लेश्याएँ होती हैं ७। इन्द्रियद्वार में इनके स्पर्शन रसना, घ्राण चक्षु और कर्ण ये पांच इन्द्रियाँ होती हैं ८। समुद्घात द्वार में इन संमूर्च्छिम चतुष्पदो के वेदना, कषाय और मारणान्तिक ये तीन समुद्घात होते है ९ । संज्ञाद्वार में ये संज्ञी नहीं होते है किन्तु असंज्ञी होते हैं क्योंकि इनको मन नहीं होता है १० । वेदद्वार में—ये नियम से नपुंसक वेदवाले ही

વિલક્ષણ પણું હોય છે. તે આ પ્રમાણે છે. સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચર ચતુષ્પદોની અવગાહના જઘન્યથી આગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણ વાળી હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના ગવ્યૂત પૃથક્ત્વ અર્થાત્ દ્વિગવ્યૂત-બે ગાઉથી લઈને નવગવ્યૂત નવ ગાઉસુધીની હોય છે. ૨, સંહનન દ્વારમાં—તેઓને સેવાર્ત સંહનન હોય છે. ૩, સસ્થાનદ્વારમાં તેઓના શરીર હુંડ સંસ્થાન વાળા હોય છે. ૪, કષાય દ્વારમાં-તેઓને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ આ ચાર કષાયો હોય છે. ૫, સંજ્ઞાદ્વારમાં આ સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચરોને આહાર, ભય, મૈથુન અને પરિગ્રહ આ ચાર સંજ્ઞાઓ હોય છે ૬, લેશ્યાદ્વારમાં તેઓને કૃષ્ણ, નીલ કાપોત એ પ્રમાણેની ત્રણ લેશ્યાઓ હોય છે ૭, ઈંદ્રિયદ્વારમાં તેઓને સ્પર્શન, શ્રોત્ર-ચક્ષુ ઘ્રાણ રસના આ પાંચ પ્રકાર ની ઈંદ્રિયો હોય છે. ૮, સમુદ્ઘાત દ્વારમાં આ સંમૂર્ચ્છિમ ચતુષ્પદોને વેદના, કષાય, અને મારણાન્તિક એ ત્રણ સમુદ્ઘાતો હોય છે. ૯, સંજ્ઞાદ્વારમાં તેઓ સંજ્ઞી હોતા નથી. પરંતુ અસંજ્ઞી હોય છે. કેમ કે તેઓને મનહોતું નથી. ૧૦' વેદદ્વારમાં તેઓ નિયમથી નપું-

स्तिस्रो लेश्या भवन्ति । इन्द्रियद्वारे--पञ्च--स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रात्मकानि इन्द्रियाणि भवन्ति । समुद्घातद्वारे--वेदनाकषायमारणान्तिकास्त्रयः समुद्घाता भवन्ति संज्ञाद्वारे- नो संज्ञिनो भवन्ति संमूर्च्छिमचतुष्पदाः, अपितु असंज्ञिनो भवन्ति मनसोऽभावादिति ॥ वेदद्वारे–नपुंसकवेदा भवन्ति, इति । पर्याप्तिद्वारे- पञ्च पर्याप्तयः पञ्चापर्याप्तयश्च भवन्ति ॥

दृष्टिद्वारे- सम्यग्दृष्टयोऽपि भवन्ति मिथ्यादृष्टयोऽपि भवन्ति इति ॥ दर्शनद्वारे–द्वे दर्शने भवतः–चक्षुर्दर्शनिनोऽचक्षुर्दर्शनिनश्च भवन्ति संमूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरा इति ॥ ज्ञानद्वारे–द्वे ज्ञाने–द्वे अज्ञाने -मतिज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनस्तथा मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च भवन्ति । योगद्वारे द्विविधो योगो भवति वाग्योगिनः काययोगिनश्च भवन्ति ॥ उपयोगद्वारे–द्विविध उपयोगो भवति साकारोपयोगश्चानाकारोपयोगश्च ॥

आहारद्वारे–आहारो नियमात् षड् दिशि–षड्भ्यः दिग्भ्य आहृतान् पुद्गलान् आहरन्ति । इति ॥ उपपातद्वारे–चतुष्पदानामुपपातस्तिर्यङ्मनुष्येभ्यो नो देवेभ्यो न वा नैरयिकेभ्यः, तत्र यदि

होते हैं ११ । पर्याप्तिद्वार में ये पाँच पर्याप्तिवाले और पाँच अपर्याप्तिवाले होते है १२ । दृष्टिद्वार में ये चतुष्पद सम्यग्दृष्टि भी होते हैं और मिथ्यादृष्टि भी होते हैं १३ ।

दर्शनद्वार में–इनके चक्षुदर्शन और अचक्षुदर्शन ये दो दर्शन होते हैं–१४, ज्ञानद्वार में–इनके मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान होते हैं । अज्ञान में इनके मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान ये दो अज्ञान होते है–१५, योगद्वार में इनके वाग् योग और काययोग ये दो योग होते हैं–१६, उपयोगद्वार में इनके साकार उपयोग आर अनाकार उपयोग ये दो उपयोग होते है–१७, आहारद्वार में इनका आहार नियमतः छह दिशाओं से आगत पुद्गलद्रव्यों का होता है–१८, उपपातद्वार में इन चतुष्पदों का उपपात तिर्यञ्च और मनुष्यों में से होता है देवों में से और नैरयिकों में से नहीं होता हैं । यदि तिर्यञ्चों में से होता है तो

સક વેદવાળા જ હોય છે ૧૧, પર્યાપ્તિદ્વારમાં તેઓ પાંચ પર્યાપ્તિ વાળા અને પાંચ અપર્યાપ્તિ વાળા હોય છે. ૧૨. દૃષ્ટિદ્વારમાં આ ચતુષ્પદો સમ્યગ્દૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે અને મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે. ૧૩, દર્શનદ્વારમાં—તેઓને ચક્ષુદર્શન અને અચક્ષુદર્શન એમ બે દર્શન હોય છે ૧૪, જ્ઞાનદ્વારમાં—તેઓને મતિજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાન એ બે જ્ઞાન હોય છે. અને અજ્ઞાનમાં તેઓને મતિ અજ્ઞાન અને શ્રુત અજ્ઞાન એ બે અજ્ઞાન હોય છે ૧૫, યોગદ્વારમાં તેઓને વાક્યોગ અને કાય યોગ એ બે યોગ હોય છે ૧૬, ઉપયોગ દ્વારમા તેઓને સાકાર ઉપયોગ અને અનાકાર ઉપયોગ એ બે ઉપયોગ હોય છે. ૧૭, આહાર દ્વારમાં તેઓનો આહાર નિયમથી છ એ દિશાઓમાંથી અવેલા પુદ્ગલ દ્રવ્યોનો હોય છે ૧૮, ઉપપાત દ્વારમાં–આ ચતુષ્પદ જીવોનો ઉપપાત–ઉત્પત્તિ તિર્યંચ અને મનુષ્યો માથી હોય છે. દેવોમાંથી અને નૈરયિકોમાંથી હોતી નથી જો તિર્યંચોમાંથી

तिर्यग्भ्य स्तदा असंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः। यदि मनुष्येभ्य स्तदा अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकाऽसङ्ख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य आगतानां संमूर्च्छिमचतुष्पदानामुपपातो भवति, ॥

स्थितिद्वारे—जलचरापेक्षया वैलक्षण्यं स्वयमेव सूत्रकारेणैव प्रदर्शितम्, तथाहि—स्थिति-आयुष्यकालः, संमूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचराणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तमात्रम्, उत्कर्षेण स्थितिश्चतुरशीति वर्षसहस्राणि ॥

समवहतद्वारे—एते मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते। च्यवनद्वारे—इतः उद्वृत्य नैरयिकेषु तिर्यक्षु मनुष्येषु देवेष्वपि गच्छति। यदि नैरयिकेषु गच्छन्ति, तदा रत्नप्रभायामेव नान्यत्र द्वितीयादिपृथिवीषु अतएव जलचरप्रकरणे कथितम्—'सेसेसु पडिसेहो' इति। तिर्यक्षु सर्वत्र संख्येयासंख्येयवर्षायुष्केष्वपि, चतुष्पदेषु पक्षिष्वपि

असंख्यात वर्ष की आयुवाले तिर्यञ्चों में से नहीं होता है, बाकी के सब तिर्यञ्चो में से होता है यदि मनुष्यों में से होता है तो अकर्मभूमिक, अन्तरद्वीपक असंख्यातवर्षायुष्क मनुष्यो में से नहीं होता है। शेष मनुष्यों में से होता है-१९, स्थितिद्वार—में जलचर जीवों की अपेक्षा जो विलक्षणता है वह इस प्रकार है इनकी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की होती है और उत्कृष्ट स्थिति चौरासी हजार वर्ष की होती है—२०, च्यवनद्वार—में संमूर्च्छिम स्थलचरचतुष्पदपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीव मारणान्तिकसमुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं असमवहत होकर भी मरते हैं—२१, इनमें से उद्वृत्त हुए जीव नैरयिको में तिर्यञ्चों में मनुष्यों में और देवों में जाते हैं। यदि नरक में जाते हैं तो रत्नप्रभा नाम के प्रथम नरक में ही जाते हैं। अन्य द्वितीयादि नरकों में नहीं जाते हैं। यदि ये तिर्यञ्चो में जाते हैं तो समस्त तिर्यञ्चों में संख्यात असंख्यात वर्ष आयुवालो में दोनों में भी जाते हैं। और चतु

હોય છે. તો અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્ય વાળા તિર્યંચોમાંથી હોતી નથી. બાકીના સઘળા તિર્યંચોમાંથી થાય છે જો તેઓની ઉત્પત્તિ મનુષ્યોમાંથી હોય છે, તો અકર્મભૂમિજ, અંતરદ્વીપ જ અસંખ્યાત વર્ષાયુષ્ક મનુષ્યોમાંથી હોતી નથી. ૧૯ સ્થિતિદ્વારમાં—જલચર જીવોની અપેક્ષાએ જે વિલક્ષણપણું છે, તે આ પ્રમાણે છે.—તેમની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ચોર્યાશી હજાર વર્ષની હોય છે. ૨૦. ચ્યવનદ્વારમાં—સંમૂર્છિમ સ્થલચર ચતુષ્પદ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિકજીવ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઇને પણ મરે છે અને સમવહત—એટલે કે આઘાત પ્રાપ્ત કર્યા વિના પણ મરે છે. ૨૧. તેમાંથી ઉદ્વૃત (નીકળેલા) થયેલા જીવો નૈરયિકોમા, તિર્યંચોમા, મનુષ્યોમાં અને દેવોમાં જાય છે જો નરકમાં જાય તો તે રત્નપ્રભા નામના પહેલા નરકમાં જાય છે. તે સિવાયના બીજા, ત્રીજા, વિગેરે નરકોમાં જતા નથી. જો તેઓ તિર્યંચોમાં જાય છે, તો સઘળા તિર્યંચોમાં એટલે કે સંખ્યાત કે અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળામાં

समुत्पद्यन्ते, मनुष्येषु तदा कर्मभूमिकेषु सर्वेषु, नो अकर्मभूमिकेषु। अन्तरद्वीपेषु संख्येयवर्षायुष्केष्वपि असंख्येयवर्षायुष्केष्वपि समुत्पद्यन्ते। यदि देवेषूत्पद्यन्ते तदा भवनपतिवाणमन्तरेषु एव, ततःपरं नोत्पद्यन्ते भवनपतिवानव्यन्तरातिरिक्तेषु देवेषु असंज्ञायुष्कस्याभावात्। 'चउगइया' चतुर्गतिकाः स्थलचरचतुष्पदा भवन्ति इति, चतसृषु नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवगतिषु संमूर्च्छिमचतुष्पदाद् उद्वृत्य गमनात् चतुर्गतिका इति कथ्यन्ते। 'दुआगइया' द्व्यागतिकाः संमूर्छिमस्थलचरचतुष्पदाः, तिर्यङ्मनुष्येभ्य एव उद्वृत्य अत्र संमूर्छिमस्थलचरचतुष्पदयोनौ आगमनात् द्व्यागतिका इति कथ्यन्ते। **'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता'** प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति॥ **'से त्तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया,**

ष्पदों में तथा पक्षियो में भी जाते हैं। यदि ये मनुष्यो में जाते है तो ये कर्मभूमिक मनुष्यों में ही जाते हैं अकर्मभूमिक मनुष्यों में नहीं। अन्तरद्वीपों में भी संख्यातवर्ष की आयुवालों में भी और असख्यात वर्ष की आयुवालों में भी जाते हैं। यदि देवों में जाते हैं तो भवनवासी देवो में और वानव्यन्तरदेवों में ही जाते है, इनसे अतिरिक्त आगे के देवलोंकों में नहीं जाते हैं क्योंकि वहाँ असज्ञी आयुष्क का अभाव है—२२, गत्यागतिद्वार में—ये स्थलचरचतुष्पद जीव "चउगइया" ये यहाँ से निकलकर नारक तिर्यक् मनुष्य और देव, इन चारों गतियों में जाते हैं इसलिये, ये चतुर्गतिक कहलाते हैं। **"दुआगइया"** स्थलचर चतुष्पद द्व्यागतिक होते हैं—अर्थात् तिर्यञ्च और मनुष्यों में से उद्वृत्त होकर जीव यहाँ संमूर्च्छिम स्थलचर चतुष्पद योनि में आते हैं—२३, **"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता"** प्रत्येक शरीरी इनमें असख्यात कहे गये हैं। **"सेत्तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजो-**

એમ બન્નેમાં જાય છે. અને ચારપગાઓમાં અને પક્ષિયોમાં પણ જાય છે જો તેઓ મનુષ્યોમાં જાય તો તેઓ કર્મભૂમિવાળા મનુષ્યોમાં જ જાય છે અકર્મભૂમિક મનુષ્યોમાં નહિ. અંતરદ્વીપોમાં પણ સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાં પણ જાય છે, અને અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાં પણ જાય છે જો તેઓ દેવોમાં જાય છે, તો ભવનવાસી દેવોમાં અને વાનવ્યન્તર દેવોમાં જ જાય છે તે શિવાયના આગળના દેવલોકમાં જતા નથી, કેમકે—ત્યાં અસંજ્ઞી આયુષ્યનો અભાવ છે ૨૨ ગત્યાગતિદ્વારમાં—આ સ્થલચર ચતુષ્પદજીવો "चउगइया" તેઓ અહિંથી નીકળીને નરકગતિ, તિર્યંચગતિ, મનુષ્યગતિ અને દેવગતિ આ ચારે ગતિયોમાં જાય છે. તેથી તેઓ 'ચતુર્ગતિક કહેવાય છે. **"दु आगइया"** સ્થલચર ચતુષ્પદ જીવો દ્વયાગતિક-બે ગતિથી આવવાવાળા હોય છે અર્થાત્ તેઓ તિર્યંચો અને મનુષ્યોમાંથી ઉદ્વૃત્ત થઈને-નીકળીને અહિંયાં આ સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચર ચતુષ્પદયોનીમાં આવે છે. ૨૩

"परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" પ્રત્યેક શરીરી તેઓમાં અસંખ્યાત કહેલા છે. **'सेत्तं थलयरचउप्पयसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया"** આ રીતે આ સ્થલચર ચતુષ્પદ સંમૂ-

ते एते स्थलचरचतुष्पदसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदान्ताश्चत्वारः सर्वद्वारैर्निरूपिता इति ॥सू० २१॥

स्थलचरचतुष्पदसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकान् निरूप्य स्थलचरपरिसर्पसंमूर्च्छिम-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकान् निरूपयितुमाह—'से किं तं' इत्यादि ।

सूत्रम्—'से किं तं थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोणिया ? थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता. तं जहा—उरगपरिसप्पसंमुच्छिमा भुयगपरिसप्पसंमुच्छिमा य । से किं तं उरगपरिसप्पसंमुच्छिमा ? उरगपरिसप्पसंमुच्छिमा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा-अही, अयगरा, आसालिया, महोरगा । से किं तं अही ? अही दुविहा पन्नत्ता तंजहा दव्वीकरा मउलिणो य । से किं तं दव्वीकरा ? दव्वीकरा अणेगविहा पन्नत्ता-तं जहा-आसीविसा जाव से तं दव्वीकरा । से किं तं मउलिणो मउलिणो अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा दिव्वा गोणसा जाव से तं मउलिणो, से तं अही । से किं तं अयगरा ? अयगरा एगाकारा पन्नत्ता । से तं अयगरा । से किं तं आसालिया ? आसालिया जहा पण्णवणाए सेत्तं आसालिया । से किं तं महोरगा ? महोरगा जहा पण्णवणाए सेत्तं महोरगा । जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्ता य अप्पज्जत्ता य तंचेव । णवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणपुहुत्तं । ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं । सेसं जहा जलयराणं । जाव चउ-

णिया" इस प्रकार से ये स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक एक खुर से लेकर सनखपद तक चार प्रकार के सर्वद्वारो द्वारा निरूपित किये गये हैं ॥सू० २१॥

ચ્છિંમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક એક ખુરથી લઈને સનખપદ સુધીના ચારે પ્રકારના બધા દ્વારોથી નિરૂપિત કર્યા છે. ॥સૂ૦ ૨૧॥

गइया दुआगइया, परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता। सेत्तं उरगपरिसप्पा॥ से किं तं भुयगपरिसप्पसंमूच्छिमथलयरा? भुयगपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा—गोहा णउला जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तं जहा-पज्जत्ता य अपज्जात्ता य। सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं। ठिई उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं। सेसं जहा—जलयराणं जाव चउगइया दुआगइया। परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता, से त्तं भुयगपरिसप्पसंमुच्छिमा, से त्तं थलयरा॥ सेकिंतं खहयरा? खहयरा चउव्विहा पन्नत्ता तं जहा चम्मपक्खी, लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी। से किं तं चम्मपक्खी? चम्मपक्खी अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा वग्गुली जाव जे यावन्ने तहप्पगारा, सेत्तं चम्मपक्खी। से किं तं लोमपक्खी लोमपक्खीअणेगविहा पन्नत्ता। तं जहा—ढंका कंका जे यावन्ने तहप्पगारा, सेत्तं लोमपक्खी। से किं तं समुग्गपक्खी? समुग्गपक्खी एगागारा पन्नत्ता जहा पण्णवणाए। एवं विततपक्खी जाव जे यावन्ने तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। णाणत्तं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं। उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं। ठिई उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगइया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता। सेत्तं खहयरसंमुच्छिमतिरिक्खजोणिया। सेत्तं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया॥ सू० २२॥

छाया—अथ के ते स्थलचरपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः? स्थलचरपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा उरःपरिसर्प-

संमूर्च्छिमाः, भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः । अथ के ते उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः ? उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिमाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–अहयः, अजगराः, आसालिकाः, महोरगाः अथ के ते अहयः ? अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-दर्वीकराः मुकुलिनश्च । अथ के ते दर्वीकराः ? दर्वीकरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा आशीविषाः यावत् ते एते दर्वीकराः । अथ के ते मुकुलिनः ? मुकुलिनोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–दिव्या गोणसा यावत् ते एते मुकुलिनः । ते एते अहयः । अथ के ते अजगराः ? अजगरा एकाकाराः प्रज्ञप्ताः, ते एते अजगराः । अथ के ते आसालिकाः ? आसालिका यथा प्रज्ञापनायाम् । ते एते आसालिकाः ॥ अथ के ते महोरगाः ? महोरगा यथा प्रज्ञापनायाम् । ते एते महोरगाः । ये चान्ये तथाप्रकारा स्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च तदेव । नवरं शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागम्, उत्कर्षेण योजनपृथक्त्वम् । स्थिति जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि । शेषं यथा, जलचराणाम्, यावच्चतुर्गतिका द्व्यागतिकाः, परीता असंख्याताः प्रज्ञप्ताः, ते एते उरःपरिसर्पाः । अथ के ते भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचराः ? भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–गोधा नकुला यावद् येचान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च । शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागम् उत्र्षेण धनुःपृथक्त्वम् । स्थिति रुत्कर्षेण द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राणि । शेषं यथा जलचराणां यावच्चतुर्गतिका द्व्यागतिकाः। परीता असंख्याताः प्रज्ञप्ताः, ते एते भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः । ते एते स्थलचराः । अथ के ते खेचराः ? खेचराश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा चर्मपक्षिणाः, लोमपक्षिणः समुद्गकपक्षिणः विततपक्षिणः । अथ के ते चर्मपक्षिणः, चर्मपक्षिणोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-वग्गुलिनो यावद्येचान्ये तथाप्रकारा, ते एते चर्मपक्षिणः ॥ अथ के ते लोमपक्षिणः ? लोमपक्षिणोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ता. तद्यथा–ढङ्का कंकाः ये चान्ये तथाप्रकाराः ते एते लोमपक्षिणः । अथ के ते समुद्गकपक्षिणः ? समुद्गकपक्षिण एकाकाराः प्रज्ञप्ताः यथा प्रज्ञापनायाम् । एवं विततपक्षिणो यावद् ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा–पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च । नानात्वम् शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागम् उत्कर्षेण धनुःपृथक्त्वम् । स्थिति रुत्कर्षेण द्वासप्ततिवर्षसहस्राणि, शेषं यथा जलचराणाम् । यावद् चतुर्गतिका द्व्यागतिकाः परीता असंख्याताः प्रज्ञप्ताः । ते एते खेचरसंमूर्च्छिमतिर्यग्योनिकाः, ते एते संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ॥२२॥

टीका—'से किं तं थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमपंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया' अथ के ते स्थलचरपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–'थलयरपरिसप्प

संमुच्छिमा दुविहा पन्नत्ता' स्थलचरपरिसर्पसमूर्च्छिमजीवाः द्विविधाः–द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः, द्वैविध्यं दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'उरपरिसप्पसंमुच्छिमा' उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः, उरसा–वक्षस्थलेन परिसर्पन्ति–गच्छन्ति ये ते उरःपरिसर्पाः सर्पादयः। 'भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा' भुजपरिसर्पसमूर्च्छिमाः, भुजाभ्यां परिसर्पन्ति–गच्छन्तीति भुज-परिसर्पा स्तादृशाश्च ते समूर्च्छिमा इति भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः गोधादयः, तथा च–उरःपरि-सर्पभुजपरिसर्पभेदेन स्थलचरपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः द्विविधा भवन्तीति भावः। 'से किं तं उरगपरिसप्पसंमुच्छिमा' अथ के ते उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिमाः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–

स्थलचर चतुष्पदों का निरूपण करके अब समूर्च्छिमस्थलचरपरिसर्पों का निरूपण करते हैं—"से किं तं थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" इत्यादि ॥

टीकार्थ—"से किं तं थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" हे भदन्त! स्थलचर परिसर्प संमूर्च्छिमपंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव कितने प्रकार के कहे हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमा दुविहा पन्नत्ता" हे गौतम! स्थल-चर परिसर्प पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकजीव दो प्रकार के कहे गये हैं–"तं जहा" जो इस प्रकार से है, 'उरपरिसप्पसंमुच्छिमा भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा" एक उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय और दूसरे भुजपरिसर्प संमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय जो छाती से सरक कर चलते हैं—अर्थात् छाती के बल पर चलते है ऐसे वे उरःपरिसर्प संमूर्च्छिम तिर्यग्पंचेन्द्रिय जीव हैं। तथा जो हाथों के सहारे से चलते हैं वे भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमतिर्यग्पंचेन्द्रिय जीव हैं। "से किं तं उरपरिसप्पसंमुच्छिमा" हे भदन्त! वे उरःपरिसर्पसमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्यो-

---

સ્થલચર ચતુષ્પદોનું નિરૂપણ કરીને હવે સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચર પરિસર્પોનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે "से किं तं थलयरपरिसप्प संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—"से किं तं थलयरपरिसप्पसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" ઇત્યાદિ.

હે ભગવન્ સ્થલચર પરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિકજીવ કેટલા પ્રકારના છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"थलयरपरिसप्प-संमुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! સ્થલચર પરિસર્પ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિકજીવ બે પ્રકારના કહેલા છે. "तं जहा" તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "उर परिसप्पसंमुच्छिमा भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा" એક ઉરઃપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય અને બીજા ભુજ પરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય. જેઓ છાતીથી સરકીને ચાલે છે, અર્થાત્ છાતીના બળથી ચાલે છે તેવા જીવો ઉરઃ પરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ તિર્યંચપંચેન્દ્રિય જીવ છે. તથા જેઓ હાથોની સહાયથી ચાલે છે, તેઓ ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ તિર્યંચપંચેન્દ્રિય જીવ છે. "से किं तं उर-परिसप्पसंमुच्छिमा" હે ભગવન્ તે ઉરઃ પરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક જીવ કેટલા પ્રકારના હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે—उरगपरिसप्पसंमुच्छिमा चउ-

'उरपरिसप्पसंमुच्छिमा चउव्विहा पन्नत्ता' उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिमाश्चतुर्विधा श्चतुप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः । चतुर्भेदान् दर्शयति–**'तं जहा'** इत्यादि **'तं जहा'** तद्यथा–**'अही अयगरा आसालिया महोरगा'** अहयः–सर्पविशेषाः, अजगराः–स्थूलकायाः सर्पविशेषाः, आसालिकाः–सर्पविशेषा एव, महोरगा अपि सर्पविशेषा एवेति । अहेः स्वरूपं भेदं च ज्ञातुं प्रश्नयन्नाह–**'से किं तं'** इत्यादि, **'से किं तं अही'** अथ के ते अहयः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–**'अही दुविहा पन्नत्ता'** अहयो द्विविधाः–द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः -कथिताः, द्वैविध्यं दर्शयति–**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा **'दव्वीकरा मउलिणो य'** दर्वीकराः मुकुलिनश्च, तत्र दर्वी–फणा तत्करणशीला ये ते दर्वीकराः, तथा मुकुलम्–फणाविरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृतिः साविद्यते येषां ते मुकुलिनः फणाकरणशक्तिरहिता इत्यर्थः । **'से किं तं दव्वीकरा'** अथ के ते दर्वीकरा इति–प्रश्नः, उत्तरयति–**'दव्वीकरा अणेगविहा पन्नत्ता'** दर्वीकराः सर्पा अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, अनेकभेदं दर्शयति–**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा–**'आसीविसा जाव सेत्तं दव्वीकरा'** आशीविषा यावत् ते एते दर्वीकराः अत्र यावत्पदेन

निक जीव कितने प्रकार के होते है ? उत्तर–में प्रभु कहते हैं- **"उरपरिसप्पसमुच्छिमा-चउव्विहा पन्नत्ता"** हे गौतम ! उरःपरिसर्पसंमूर्च्छिमतिर्यग्योनिक जीव चार प्रकार के कहे गये हैं–**"तं जहा"** वे उनके चार प्रकार ये हैं–**"अही, अयगरा, आसालिया, महोरगा"** अहि–सर्पविशेष, अजगर–स्थूल शरीर वाले सर्प विशेष, आसालिक–सर्प विशेष और महोरग **"से किं तं अही"** हे भदन्त ! सर्पविशेष रूप जो अहि हैं वे कितने प्रकार के होते हैं ? **"अही दुविहा पन्नत्ता"** हे गौतम ! सर्पविशेष रूप अहि दो प्रकार के होते है । **"तं जहा"** जैसे **"दव्वीकरा मउलिणो य"** दर्वीकर और मुकुली इनमें जिनको फणा होती है वे दर्वीकर और जिनको फणा नहीं होती हैं वे मुकुली हैं । **"से किं तं दव्वी-करा"** हे भदन्त ! दर्वीकर सर्प के कितने भेद है ? **"दव्वीकरा अणेगविहा पन्नत्ता"** हे गौतम ! दर्वीकर के अनेक भेद है । **"तं जहा"** जैसे–**"आसीविसा जाव से त्तं दव्वी-**

व्विहा पण्णत्ता હે ગૌતમ ! ઉરઃપરિસર્પસંમૂર્ચ્છિમ તિર્યગ્યોનિક જીવો ચાર પ્રકારના હોય છે **"तं जहा"** તે ચાર પ્રકારો આ પ્રમાણે છે,–**"अही, अयगरा, आसालिया, महोरगा"** અહિ-સર્પવિશેષ અજગર, સ્થૂલ શરીરવાળો સર્પવિશેષ આસાલિક–સર્પવિશેષ. અને મહોરગ, **"से किं तं अही"** હે ભગવન્ સર્પવિશેષમાં જે અહિ નામના સર્પ છે, તે કેટલા પ્રકારના હોય છે ? **"अही दुविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! સર્પવિશેષરૂપ અહી બે પ્રકારના હોય છે **'तं जहा"** તે આ પ્રમાણે છે. **"दव्वीकरा, मउलीणाय"** એક દર્વીકર અને બીજા મુકુલી, તેમાં જેઓને ફણા હોય છે તેઓ દર્વીકર કહેવાય છે. અને જેમને ફણા હોતી નથી તેઓ મુકુલી કહેવાય છે. **"से किं तं दव्वीकरा"** હે ભગવન્ દર્વીકર સર્પના કેટલા ભેદો કહેલા છે ? **"दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! દર્વીકર અહિ અનેક પ્રકારના હોય છે. **"तं जहा"** તે આ પ્રમાણે છે, **'आसीविसा जाव सेत्तं दव्वीकरा"** આસીવિષ વિગેરે

प्रज्ञापनाया. प्रथमं जीवप्रज्ञापनाप्रकरणं द्रष्टव्यम्, तथाहि–'**आसीविसा**' **दिट्ठीविसा, उग्गविसा, भोगविसा, तयाविसा लालाविसा, निस्सासविसा, कण्हसप्पा, सेयसप्पा, कागोदरा दुब्भपुप्फा कोलाहा सेलेसया**'। आशीविषा दृष्टिविषा उग्रविषा भोगविषाः त्वग्विषाः लालाविषाः निःश्वासविषाः कृष्णसर्पाः श्वेतसर्पाः काकोदराः दुरभिपुष्पाः कोलाहाः शैलेशया इतिच्छाया। तत्र आशीविषा'–आश्यो दंष्ट्रा' तासु विषं गरलं येषां ते आशीविषाः, तदुक्तम्—

'**आसीदाढा तग्गयविसा आसीविसा मुणेयव्वा**' आशी दंष्ट्रा स्तद्गतं विषं येषां ते आशीविषा उन्नेतव्या'। शेषं सर्वं प्रज्ञापनातोऽवसेयम्। दर्वीकराः आशीविषादयः सर्पाः कथिता ॥ '**से किं तं मउलिणो**' अथ के ते मुकुलिनः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–'**मउलिणो**

करा" आसीविषआदि यहा यावत्पद से प्रज्ञापना का समस्त प्रकरण इस सम्बन्ध का ग्रहण हुआ है–वह टीका में दिया गया है उसका अर्थ इस प्रकार से हैं–आशीविष–जिनकी दाढ में विष होता है ऐसे सर्प आशीविष कहलाते हैं जैसे–कहा है–"**आसी दाढा तग्गयविसा आसीविसा मुणेयव्वा**" आशी नाम दाढा है उनमें जिनको विष होता है उन्हें आशीविष जानना चाहिये। दृष्टिविष–जिनकी दृष्टि में विष होता है वे सर्प। उग्रविष–जिनका विष बहुत अधिक उग्र–जहरीला–होता है ऐसे सर्प। भोगविष–जिनके शरीर में विष बहुत अधिक उग्र–जहरीला–होता है ऐसे सर्प, त्वग् विष–जिनकी चमड़ी में विष होता है वे सर्प, लाला विष–जिनकी लार में विष होता है ऐसे सर्प, निःश्वास विष जिनकी श्वास में विष होता है ऐसे सर्प तथा–कृष्णसर्प, श्वेतसर्प, काकोदर, दुरभिपुष्प, कोलाह और शैलेश्य ये सब दर्वीकर सर्प के भेद हैं। इन मेदों को लेकर दर्वीकर सर्प के अनेक भेद हो जाते हैं। "**से किं तं मउलिणो**" हे भदन्त मुकुलीसर्प

અહિયાં યાવત્ પદથી પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનો સઘળો પાઠ આ વિષયને લગતો ગ્રહણ કર્યો છે. અને તે પાઠ ટીકામાં બતાવવામાં આવ્યો છે. તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—આશીવિશ–જેની દાઢમાં વિપ હોય છે, તેવા સર્પો આશીવિષ કહેવાય છે. જેમકે—"**आसीदाढा तग्गयविसा, आसीविसा मुणेयव्वा**" આશીનામ દાઢ છે તે દાઢમાં જેઓને ઝેર હોય છે. તેઓ આશીવિષ કહવાય છે દૃષ્ટિવિપ-જેઓની દૃષ્ટિમાં વિપ હોય તેવા સર્પો, ઉગ્રવિષ એટલે કે જેમનું વિપ ઘણું વધારે હોય અને ઝેરીલું હોય એવા સર્પો, ભોગવિપ-જેઓના શરીરમાં ઘણું વધારે વિપ હોય એવા સર્પો ભોગ વિપ કહેવાય છે ત્વગ્વિષ—જેઓની ચામડીમાં વિપ હોય છે. એવા સર્પો ત્વગ્ વિષ કહેવાય છે લાલાવિપ-જેઓની લાળમાં વિપ હોય છે, એવા સર્પો લાલાવિપ કહેવાય છે 'નિઃશ્વાસ વિપ—જેઓના શ્વાસમાં વિપ હોય છે. એવા સર્પો નિ શ્વાસ કહેવાય છે. તથા કૃષ્ણસર્પ, શ્વેતસર્પ, કાકોદર, દુરભિપુષ્પ. કોલાહ અને શૈલેશ્ય આ બધા દર્વીકર સર્પના ભેદો છે આ ભેદોને લઈને દર્વીકર સર્પો અનેક પ્રકારના કહેવાય છે.

अणेगविहा पन्नत्ता' मुकुलिनः–सर्पविशेषा अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, **'तं जहा'** तद्यथा–**'दिव्वा गोणसा जाव सेत्तं मउलिणो'** दिव्या गोणसा यावत् ते एते मुकुलिनः कथिताः, अत्रापि यावत्पदेन प्रज्ञापनाप्रकरणमुन्नेयमिति **'से त्तं अही'** ते एते अहयः–सर्पविशेषाः कथिता इति ॥ अहेर्भेदान् निरूप्य अजगरभेदान् निरूपयितु प्रश्नयन्नाह–**'से किं तं'** इत्यादि, **'से किं तं अयगरा'** अथ केते अजगराः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–**'अयगरा एगागारा पन्नत्ता'** अजगरा एकाकारा एकप्रकारका एव प्रज्ञप्ताः–कथिता इति ते एते अजगरा निरूपिता इति । **'से किं तं आसालिया'** अथ के ते आसालिकाः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–**'आसालिया जहा पण्णवणाए'** आसालिका यथा प्रज्ञापनायां कथिता स्तथैव ज्ञातव्याः, तत्रहि–

कितने प्रकार के होते है ? **"मउलिणो अणेगविहा पन्नत्ता"** हे गौतम ! मुकुली सर्प अनेक प्रकार के होते हैं । **"तं जहा"** जैसे–**दिव्वा गोणसा जाव से त्तं मउलिणो"** दिव्य, गोनस आदि, यहाँ यावत्पद से प्रज्ञापना का प्रकरण इस सम्बन्ध में गृहीत हुआ है । **"से त्तं अही"** इस प्रकार से यहाँ तक का कथन सब **"अही"** के सम्बन्ध में कहा गया जानना चाहिये । अब सूत्रकार अजगर के भेदों को प्रकट करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-**"से किं तं अयगरा"** हे भदन्त ! अजगर कितने प्रकार के होते हैं ? **"अयगरा एगागारा, पन्नत्ता"** हे गौतम ! अजगर एक प्रकार के ही होते हैं । **"से किं तं आसालिया"** हे भदन्त ! आसालिक सर्प कितने प्रकार के होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–**"आसालिया जहा पण्णवणाए"** हे गौतम ! प्रज्ञापना प्रकरण में जैसा कहा गया है— वैसा ही यहाँ इन आसालिकों के सम्बन्ध में कह लेना चाहिये । उस प्रकरण का भाव ऐसा

"से किं तं मउलिणो" હે ભગવન્ મુકુલી સર્પ કેટલા પ્રકારના હોય છે ? **"मउलिणो अणेगविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! મુકુલીસર્પ અનેક પ્રકારના હોય છે. **"तं जहा"** તે આ પ્રમાણે છે–**'दिव्वा गोणसा जाव से त्तं मउलिणो"** દિવ્ય, ગોનસ, વિગેરે અહિયાં યાવત્પદથી પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનું આ સબંધને લગતું પ્રકરણ ગ્રહણ કરાયું છે.

"से तं अही" આ રીતે આટલા સુધીનું સઘળું કથન **'अही'** ના સંબંધમાં કહેલ છે. તેમ સમજવુ

હવે સૂત્રકાર 'અજગર' ના ભેદો પ્રકટ કરે છે-આ સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—**"से किं तं अयगरा'** હે ભગવન્ અજગર કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—**"अयगरा एगागारा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! અજગર એકજ પ્રકારના હોય છે. ફરીથી ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે—**"से किं तं आसालिया"** હે ભગવન્ આસાલિક સર્પ કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે **"आसालिया जहा पण्णवणाए"** હે ગૌતમ ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમા આ વિષયમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં આ આસાલિકોના સંબંધમાં સમજી લેવું તે પ્રકરણ નો

प्रज्ञापनाप्रकरणम् 'से किं तं आसालिया ? कहि णं भंते ! आसालिया संमुच्छंति' इत्यादि पाठः प्रज्ञापनातोऽवसेयः, तदर्थश्चेत्थम्—

एते आसालिकाः अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्द्धतृतीयेषु द्वीपेषु निर्व्याघातेन व्याघातहेतुकं सुषमादिरूपं दुष्षमदुष्षमादिरूपं च कालं वर्जयित्वा पञ्चदशसु कर्मभूमिषु, व्याघातं पूर्वोक्तरूपं प्रतीत्य व्याघातमाश्रित्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतावता त्रिंशत्सु अकर्मभूमिषु—हैमवत–हरिवर्ष–रम्यकवर्ष–हैरण्यवर्षोत्तरकुरुदेवकुरुरूपेषु एते आसालिका नोत्पद्यन्ते, इति विज्ञेयम् । तथा–चक्रवर्त्तिनः बलदेवाः वासुदेवाः माण्डलिकाः महामाण्डलिकाः, एतेषां स्कन्धावारेषु सैन्यशिविरेषु ग्रामनगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाकराश्रमराजधानीनां निवेशेषु ग्रामादीनां जनसमूहस्थानेषु एतेषां

है-हे भदन्त ! आसालिका का क्या स्वरूप है और वह कहाँ संमूर्च्छित होते है ? हे गौतम ! वे आसालिक ढाईद्वीप रूप मनुष्यक्षेत्र के भीतर संमूर्च्छित होते है—अर्थात् संमूर्च्छन जन्म से उत्पन्न होते हैं—निर्व्याघाताभाव को लेकर अर्थात् व्याघात सुषमसुषमादिरूप तथा दुष्षम दुष्षमादि रूप काल उसके अभाव में वे पन्द्रह कर्मभूमियों में संमूर्च्छित होते हैं। अर्थात् पाँच भरत पाँच ऐरवत और पांच विदेह इन पन्द्रह कर्मभूमियों में उत्पन्न होती है। एवं पूर्वोक्त रूप व्याघात को लेकर वे सुषमसुष्षम दुषमदुष्षम आदि काल रूप व्याघात की अपेक्षा से वे पांच महाविदेहों में तथा चक्रवर्ती के स्कन्धावारों में—कटकों में, बलदेव के स्कन्धावारों में, वासुदेव के स्कन्धावारो में माण्डलिक के स्कन्धावारों में, महामाण्डलिक के स्कन्धावारों में (सेनाकापडाव) ग्रामनिवेशों में—ग्राम के जनसमूह के पडाव में नगर में खेट में कर्बट में मडम्ब मे, द्रोणमुखमें, पत्तननिवेशों में, आकर-खानमें आश्रममें, राजधानी में और इन्हीं के निवेशों में,

---

ભાવ આ પ્રમાણે છે. ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે ને—કે ભગવન્ આસાલિકો ના કેટલા ભેદો છે ? અને તેઓ કયાં સંમૂર્ચ્છિત થાય છે ? આના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–હે ગૌતમ તે આસાલિકો ઢાઈ દ્વીપરૂપ મનુષ્ય ક્ષેત્રની અંદર સંમૂર્ચ્છિત થાય છે. અર્થાત્ સંમૂરર્છન પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે. નિર્વ્યાઘાત ભાવને લઈને અર્થાત્ વ્યાઘાત સુષમ સુષમાદિરૂપ તથા દુષ્ષમ દુષ્ષમાદિરૂપ કાલ ના અભાવમાં તેઓ પંદર કર્મભૂમિયોમાં સંમૂર્ચ્છિત થાય છે અર્થાત પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત, અને પાંચ વિદેહ આ પંદર કર્મભૂમિયોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તથા પહેલાં કહેલ વ્યાઘાત ને લઈને તેઓ સુષમ સુષ્ષમ દુષણ દુષ્ષમ વિગેરે કાળ રૂપ વ્યાઘાતની અપેક્ષાથી તેઓ પાંચ મહાવિદેહોમાં તથા ચક્રવર્તિના સ્કન્ધાવારોમાં એટલે કે કટકોમાં. તથા બલદેવના સ્કંધાવારોમાં, વાસુદેવના સ્કંધાવારોમાં માડલિકોના સ્કંધાવારોમાં ગ્રામનિવેશોમાં ગ્રામના જન સમૂહનાપડાવમાં નગર નિવેશોમાં ખેટ નિવેશોમાં કર્બટ નિવેશોમાં, મડમ્બ નિવેશોમાં, દ્રોણમુખ નિવેશોમાં. પત્તન નિવેશોમાં, આકર–ખાણના નિવેશોમાં આશ્રમ નિવેશોમાં, રાજધાનીના નિવેશોમાં,

खल्वेव विनाशेषु विनाशसमयेषु अत्र खलु आसालिकाः संमूर्च्छन्ति, ते जघन्येन अङ्गुलस्यासंख्येयभागमितयाऽवगाहनया इयमवगाहना, एषामुत्पत्तेः प्रथमसमयविषया ज्ञातव्या, उत्कर्षेण द्वादशयोजनप्रमितया अवगाहनया तदनुरूपं च खलु विष्कम्भबाहल्येन भूमिं दलित्वा तत्र संमूर्च्छन्ति, अत. असंज्ञिनो मिथ्यादृष्टयः, एतेषां सास्वादनसम्यक्त्वस्यापि अभावात् । अज्ञानिनः-मतिश्रुतादिज्ञानरहिताः, अन्तर्मुहूर्तायुष एव कालं कुर्वन्ति, एते आसालिकाः एतादृशस्वरूपाः कथिता इति । **'से त्तं आसालिया'** ते एते आसालिकाः सम्यग् निरूपिता इति प्रज्ञापनाप्रकरणार्थः ॥

आसालिकान् निरूप्य महोरगान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-**'से किं तं महोरगा'** अथ के ते महोरगाः ? इति महोरगविषयकः प्रश्नः, उत्तरयति-**'महोरगा जहा पण्णवणाए'** महोरगा यथा प्रज्ञापनायाम्, प्रज्ञापनायां यथा महोरगाणां भेदादि निरूपितं तथैवात्रापि मन्तव्यम्, प्रज्ञापनाप्रकरणं चेत्थम्--**'से किं तं महोरगा महोरगा अणेगविहा पन्नत्ता तं जहा-अत्थेगइया**

अर्थात् विनाश की उपस्थितिमें आसालिका संमूर्च्छित होते हैं, अर्थात् इन सब स्थानोमें आसालिक संमूर्च्छिन जन्म से उत्पन्न होता है। इसकी अवगाहना जघन्य से अङ्गुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है। यह अवगाहना इनके उत्पादन के प्रथम समय की है और उत्कृष्ट से बारह योजन की होती है। अपने अनुरूप ही विष्कम्भ और बाहल्य से-लम्बी चौडी भूमि को विदारक वहां वे संमूर्च्छित होते है ये असज्ञी होते हैं मिथ्यादृष्टि होते हैं। और अज्ञानी होते हैं वे एक अन्तर्मुहूर्त्त की आयु को लेकर संमूर्च्छित होते हैं ये आसालिका गर्भज नहीं होते हैं किन्तु संमूर्च्छन जन्मवाले ही होते हैं। मनुष्य क्षेत्र के भीतर ही ये संमूर्च्छित होते है। मनुष्यक्षेत्र के बाहर नहीं। मनुष्यक्षेत्र में भी यह सर्वत्र उत्पन्न नहीं होते किन्तु अढाईद्वीप में ही उत्पन्न होते है एतावता यह लवणसमुद्र में और कालोदधिसमुद्र में उत्पन्न नहीं होते हैं ऐसा जानना चाहिये।

અને તેનાજ વિનાશોમાં અર્થાત્ વિનાશની ઉપસ્થિતિમાં આસાલિકો સંમૂર્ચ્છિત થાય છે. અર્થાત્ આ સઘળા સ્થાનોમાં આસાલિક સમૂર્ચ્છન જન્મથી ઉત્પન્ન થાય છે તેની અવગાહના જઘન્યથી આગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણુની હોય છે આ અવગાહના તેમના ઉત્પાદ-ઉત્પત્તીના પ્રથમ સમયની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી તેઓની અવગાહના બાર યોજનની હોય છે પોતાને અનુરૂપ વિષ્કંભ અને બાહલ્યથી-વિશાળ ભૂમિને વિદારીને ત્યાંથી સંમૂર્ચ્છિત થાય છે. તેઓ અસંજ્ઞી હોય છે. મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા હોય છે અને અજ્ઞાની હોય છે તેઓ એક અંતર્મુહૂર્તની આયુષ્યને લઈને સંમૂર્ચ્છિત થાય છે આ આસાલિકો ગર્ભજ હોતા નથી. પરંતુ સમૂર્ચ્છન જન્મવાળા હોય છે. મનુષ્ય ક્ષેત્રની અંદર જ તેઓ સંમૂર્ચ્છિત થાય છે. મનુષ્ય ક્ષેત્રની બહાર નહીં. મનુષ્યક્ષેત્રમાં પણ તેઓ બધે જ ઉત્પન્ન થતા નથી પરંતુ અઢાઈ દ્વીપમા જ ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તેઓ લવણસમુદ્રમાં અને કાલોદધિ સમુદ્રમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. તેમ સમજવું.

अंगुलं पि अंगुलपुहुत्तया वि विहत्थिं पि–विहत्थिपुहुत्तया वि रयणिं पि–रयणिपुहुत्तया वि कुच्छिं पि कुच्छिपुहुत्तया वि धणुहं पि धणुहपुहुत्तया वि गाउयं पि गाउयपुहुत्तया वि 'जोयणं पि जोयणपुहुत्तया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहुत्तया वि ते णं थले जले जाया जले वि चरंति ते णत्थि इह' बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जे यावन्ने तहप्पगारा" अथ के ते महोरगा, महोरगा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–सन्त्येकके अङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वका अपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वका अपि रत्निरपि रत्निपृथक्त्वका अपि, कुक्षिरपि कुक्षिपृथक्त्वका अपि धनुरपि धनुःपृथक्त्वका अपि, गव्यूतमपि गव्यूतपृथक्त्वका अपि योजनमपि योजनपृथक्त्वका अपि, योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वका अपि, ते खलु स्थले जले जाताः जलेऽपि चरन्ति, ते न सन्तीह, बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति, ये चान्ये तथाप्रकाराः, ते एते महोरगा इतिच्छाया।

अथ व्याख्या 'से किं तं महोरगा' अथ के ते महोरगाः, उत्तरयति–'महोरगा अणेग विहा पन्नत्ता' महोरगाः–अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः– कथिताः, महान्तश्च ते उरगा इति महोरगाः, विशालकायसर्पा इत्यर्थः, तेषामनेकत्वं दर्शयति–'तं जहा' तद्यथा–'अत्थेगइया अंगुलं पि' अस्त्येकके अंगुलमपि केचन महोरगा इत्थंभूता ये अंगुलमपि अंगुलं यावदपि प्रमाणेन, अत्र 'अपि' शब्देन अंगुलप्रमाणात्–केचिन्न्यूना अपि भवन्तीति भावः, अंगुलप्रमाणा अपि इत्यर्थः, शरीरा-

---

अब महोरग का वर्णन करते हैं–"से किं तं महोरगा" इत्यादि। "से किं तं महोरगा" हे भदन्त! महोरग कितने प्रकार के कहे गये हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं?–"महोरगा जहा पण्णवणाए" हे गौतम! प्रज्ञापना में महोरगों का भेद द्वारा जैसा–निरूपण किया गया है वैसा ही वह यहा पर भी कर लेना चाहिये। प्रज्ञापना का वह प्रकरण टीका में दिया गया है उसका अर्थ इस प्रकार से है––गौतम ने जब प्रभु से ऐसा पूछा कि हे भदन्त! महोरग कितने प्रकार के हैं? तथा–इनका स्वरूप क्या है? उत्तर–में प्रभु कहते है– हे गौतम! महोरग अनेक प्रकार के हैं, बडे बडे जो सांप हैं उनका नाम महोरग हैं। इनका शरीर बहुत ही विशाल होता हैं। इनमें कितनेक महोरग ऐसे होते है जो एक अङ्गुल की अवगाहना वाले होते हैं। यहां

હવે સૂત્રકાર મહોરગ સર્પોનું વર્ણન કરે છે. તેમા ગૌતમસ્વામી પૂછે છે કે–"से किं तं महोरगा" હે ભગવન્ મહોરગ સર્પોના કેટલા ભેદો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–"महोरगा जहा पण्णवणाए" હે ગૌતમ! પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં મહોરગોના ભેદો બતાવતા જે પ્રમાણેનું નિરૂપણ કરેલ છે એ પ્રમાણે તે સઘળું નિરૂપણ અહિયાં સમજી લેવુ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું તે પ્રકરણ ટીકામાં આપવામાં આવેલ છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે–ગૌતમસ્વામી એ જ્યારે પ્રભુને એવું પૂછ્યું કે હે ભગવન્ મહોરગો કેટલા પ્રકારના છે? તથા તેનું શું સ્વરૂપ છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે હે ગૌતમ! મહોરગો અનેક પ્રકારના હોય છે. મોટામાં મોટા જે સર્પો હોય છે, તેને મહોરગો કહેવાય છે. તેઓના શરીરો ઘણા જ વિશાળ હોય છે. તે પૈકી કેટલાક મહોરગો એવા હોય

वगाहनया भवन्तीत्यर्थः। अत्राङ्गुलम् उच्छ्रायाङ्गुलं ज्ञातव्यम् शरीरप्रमाणस्याग्रे वक्ष्यमाणत्वात्। 'अंगुलपुहुत्तया वि' केचन महोरगा अङ्गुलपृथक्त्वका अपि द्वयङ्गुलादारम्य नवाङ्गुलपर्यन्त-प्रमाणे पृथक्त्वशब्द' पारिभाषिकः, अङ्गुलपृथक्त्वं शरीरावगाहना येषामस्ति इत्यङ्गुलपृथक्त्वकाः, केचिद् एकाङ्गुलादुपरि नवाङ्गुलप्रमाणावगाहनावन्तोऽपि भवन्तीति भावः, 'विहत्थिं पि' वितस्तिरपि वितस्तिं यावत् प्रमाणेन केचन महोरगा वितस्तिप्रमाणा अपि शरीरावगाहनया भवन्ति वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलप्रमाणा भवतीति। 'विहत्थिपुहुत्तया वि' केचन वितस्तिपृथक्त्वका अपि शरीरावगाहनया भवन्ति, 'रयणिं पि' रत्निमपि, केचन रत्निमपि रत्निप्रमाणा अपि शरीरा-वगाहनया भवन्ति, द्विवितस्तिप्रमाणा रत्निरिति। 'रयणिपुहुत्तया वि' रत्निपृथक्त्वका अपि केचन। 'कुच्छिं पि' कुक्षिमपि कुक्षिं यावत् प्रमाणेन, कुक्षिप्रमाणाः केचन महोरगाः शरीरा-

---

अङ्गुल से उच्छ्रायाङ्गुल जानना। क्योंकि शरीर का प्रमाण स्वयं सूत्रकार आगे कहने वाले हैं। कितनेक महोरग ऐसे होते है, जिनके शरीर की दो अङ्गुल से लेकर नौ अङ्गुल तक की अवगाहना होती है। पृथक्त्व शब्द पारिभाषिक है। यह दो अंगुल से लेकर नौ अङ्गुल तक की अव-गाहना का यहां बोधक है। कितनेक महोरग ऐसे होते है कि जिनकी शरीरावगाहना वितस्ति द्वादश अङ्गुल प्रमाण होती है। कितनेक महोरग ऐसे होते है कि जिनकी शरीरावगाहना वितस्ति पृथक्त्व दो वितस्ति से लेकर नौ वितस्ति तक की होती है–कितनेक महोरग ऐसे होते हैं कि जिनकी शरीरावगाहना एक रत्निप्रमाण होती है कितनेक महोरग ऐसे होते है कि जिनकी शरीरावगाहना दो रत्नि से लेकर नौ रत्नि तक की होती है। रत्नि दो वितस्ति २४ अङ्गुल की होती है अर्थात् एक हस्तप्रमाण का नाम रत्नि हैं। कितनेक महोरग ऐसे भी होते हैं जो शरीरावगाहना से कुक्षि प्रमाण–दो हाथ के होते हैं। कितनेक महोरग

છે કે—જેઓ એક આગળની અવગાહનાવાળા હોય છે. અહિયા આંગળથી ઉચ્છ્રાય આંગળ સમજવું કેમકે શરીરનું પ્રમાણ સૂત્રકાર પોતે જ આગળ કહેશે કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેઓના શરીરોની અવગાહના બે આગળથી લઈને નવ આંગળ સુધીની હોય છે. પૃથક્ત્વ શબ્દ પારિભાષિક છે આ પૃથક્ત્વ શબ્દ બે આંગળથી લઈને નવ આંગળ સુધીની અવગાહના નો અહિયાં બોધ કરાવે છે કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે, કે જેના શરીરની અવગાહના વિતસ્તિ એટલે કે બાર આંગળ પ્રમાણની હોય છે કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેઓના શરીરની અવગાહના વિતસ્તિ પૃથક્ત્વ એટલે કે બે વિતસ્તિથી લઈને નવ વિતસ્તિ સુધીની હોય છે કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેઓના શરીરની અવગાહના એક રત્નિ પ્રમાણ હોય છે. કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેમના શરીરની અવગાહના બે રત્નિથી લઈને નવ રત્નિ સુધીની હોય છે. રત્નિ બે વિતસ્તિ એટલે કે ચોવીસ આગળની હોય છે. અર્થાત્ એક હાથ જેટલા પ્રમાણનું નામ રત્નિ છે. કેટલાક મહોરગો એવા પણ હોય છે, જેઓના શરીરની અવગાહના કુક્ષિપ્રમાણ-એટલે કે બે

वगाहनया भवन्ति, कुक्षिर्द्विहस्तप्रमाणा भवति। 'कुच्छिपुहुत्तया वि' कुक्षिपृथक्त्वका अपि केचन महोरगा भवन्तीति, 'धणुहंपि' केचन महोरगा धनुरपि शरीरावगाहनया भवन्तीति, हस्तचतुष्टय-प्रमाणं धनुर्भवतीति। 'धणुहपुहुत्तया वि' धनुपृथक्त्वका अपि केचन महोरगाः। 'गाउंवि' गव्यूतमपि केचन महोरगाः शरीरावगाहनया भवन्ति, द्विधनुः सहस्रप्रमाणं गव्यूतम्। 'गाउय-पुहत्तया वि' गव्यूतपृथक्त्वका अपि केचन महोरगा भवन्तीति, 'जोयण पि' योजनमपि योजन-प्रमाणा अपि केचन महोरगाः शरीरावगाहनया भवन्ति, चत्वारि गव्यूतानि योजनं भवति। 'जोयणपुहत्तया वि' योजनपृथक्त्वका अपि केचन महोरगा भवन्तीति, 'जोयणसयंपि' योजन-शतमपि केचन महोरगा शरीरावगाहनया भवन्ति। 'जोयणसयपुहत्तया वि' योजनशतपृथक्त्वका

ऐसे होते हैं जो कुक्षिपृथक्त्व तक की अवगाहना वाले होते हैं। "धणुहंपि" कितनेक महोरग ऐसे होते है जो एक धनुष चार हस्त-के होते है। चार हाथ का एक धनुष होता है। "धणुहपुहत्तिया वि" कितनेक महोरग ऐसे होते हैं जो दो धनुष से लेकर नौ धनुष तक की अवगाहना वाले होते है। कितनेक महोरग ऐसे होते हैं जो 'गाउं वि' एक कोश की अवगाहना वाले होते है। दो हजार धनुष का एक कोश होता है कितनेक महोरग ऐसे होते है जो दो कोश की अवगाहना से लेकर नौ कोश तक की अवगाहना वाले होते हैं। कितनेक महोरग ऐसे होते है-जो एक योजन की अवगाहना वाले होते हैं। चार कोश का एक योजन होता है। कितनेक महोरग ऐसे भी होते हैं जो दो योजन की अवगाहना से लेकर नौ योजन तक की अवगाहना वाले होते हैं। कितने महोरग ऐसे भी होते है जो एकसो योजन की अवगाहनावाले होते है। एवं कितनेक महोरग ऐसे होते हैं जो दोसो योजनकी अवगाहना से लेकर नौ सो योजन

હાથના હોય છે. કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે, કે જેઓ કુક્ષિ પૃથક્ત્વ સુધીની અવ-ગાહનાવાળા હોય છે. "घणुहंपि" કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેઓના શરીરની અવગાહના એક ધનુષ અર્થાત્ ચાર હાથની હોય છે. ચાર હાથનુ એક ધનુષ પ્રમાણકહેલ છે. "घणुहपुहत्तिया वि" કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેઓ બે ધનુષથી લઈને નવ ધનુષ સુધીની અવગાહનાવાળા હોય છે કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે જેઓ "गाउंवि" એક કોસ-એક ગાઉની અવગાહનાવાળા હોય છે બે હજાર ધનુષ પ્રમાણનો એક કોસ થાય છે. કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે-જેઓ બે કોસની અવગાહનાથી લઈને નવ કોસ સુધીની અવગાહનાવાળા હોય છે. કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે જેઓ એક યોજનની અવગાહનાવાળા હોય છે ચાર કોસનો એક યોજન કહેવાય છે. કેટલાક મહોરગો એવા પણ હોય છે કે-જેઓ બે યોજનની અવગાહનથી લઈને નવયોજન

ऽपि केचन महोरगा भवन्तीति **'ते णं थले जाया'** ते-पूर्वोक्ताः खलु महोरगाः स्थले-पृथिव्यां जाता'- समुत्पन्नाः सन्तः **'जले वि चरंति'** जलेऽपि चरन्ति-गच्छन्ति **'थले वि चरंति'** स्थलेऽपि चरन्ति तथा स्वभावत्वादिति । यद्येवं विधास्ते महोरगा स्तदा कथमिह न दृश्यन्ते तत्राह- **'ते णत्थि इहं'** ते-पूर्वोक्ता महोरगा इह-मनुष्यक्षेत्रे न सन्ति-न विद्यन्ते किन्तु-**'बाहिरए दीवसमुद्देसु हवंति'** बाह्येषु-मनुष्यक्षेत्रादतिरिक्तेषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्त्यतोऽत्र न दृश्यन्ते-इति । **'जे यावन्ने तहप्पगारा'** ये चान्ये तथाप्रकाराः-एतदन्येऽपि-एतन्महोरग सदृशा भवेयु स्तेऽपि ग्राह्या' । **'से त्तं महोरगा'** ते एते महोरगा निरूपिता इति । **'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** ते उक्ता अह्यादयो महोरगान्ताः समासतः-सक्षेपेण द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ता'-कथिता'

पर्यन्त की अवगाहना वाले होते है। ये महोरग यद्यपि **"थले जाया वि'** स्थल में-पृथिवी में उत्पन्न होते है फिर भी ये **"जले वि चरंति"** जल में भी चलते है **'थले विचरंति"** और थल में भी चलते हैं। क्योंकि इन का ऐसा ही स्वभाव होता है । **"ते णत्थि इहं-बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति'** इस प्रकार के ये महोरग जो इस मनुष्य क्षेत्र में नहीं दिखते है उसका कारण उनका यहा पर नहीं होना है क्योकि ये तो मनुष्य-क्षेत्र से अतिरिक्त बाह्यद्वीप और समुद्रों में होते हैं यह प्रज्ञापना के पाठ का अर्थ हुआ ।

अब सूत्रस्थ पाठ कहा जाता है-**"से तं महोरगा"** इस प्रकार से यहां तक महोरगो के सम्बन्ध में यह कथन किया । इसी प्रकार से **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** जो और भी अहि आदि के जैसे सर्प हों वे भी अहि आदि रूप से ही जानना चाहिये । ये उक्त अहि आदि **"समासओ दुविहा"** संक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं-**"तं जहा"** जैसे-**पज्जत्ता य अपज्जत्ता**

સુધીના અવગાહનાવાળા હોય છે કેટલાક મહોરગો એવા હોય છે કે જેઓ એકસો યોજનની અવગાહનાવાળા હોય છે. તથા કેટલાક મહોરગો એવા પણ હોય છે કે જેઓ બસો યોજનથી લઈને નવસો યોજન પર્યન્તની અવગાહનાવાળા હોય છે આ મહોરગો જો કે **"थले जायावि"** સ્થલમાં-પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તો પણ તેઓ **"जले वि चरंति"** જલમાં પણ ચાલે છે. **"थले वि चरंति"** અને સ્થળમા પણ ચાલે છે કેમકે તેઓનો સ્વભાવ જ એવા પ્રકારના હોય છે. **"ते णत्थि इहं-बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति"** આવા પ્રકારના આ મહોરગો કે જેઓ આ મનુષ્ય ક્ષેત્રમાં દેખાતા નથી તેનું કારણ તેમનું ત્યાં અવિધમાન પણું છે કેમકે-આતો મનુષ્ય ક્ષેત્રથી બીજા બાહ્યદ્વીપ અને સમુદ્રોમાં હોય છે. આ પ્રમાણે આ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પાઠનો અર્થ છે

હવે સૂત્રસ્થ પાઠ કહેવામાં આવે છે —**" से त्तं महोरगा"** આ પ્રમાણે મહોરગોનું કથન કરેલ છે. એ જ રીતે **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** બીજાપણ જે અહિ વિગેરે ની જેવા સર્પો હોય તેઓપણ અહિ વિગેરે રૂપે સમજવા આ ઉપર કહેલ અહિ વિગેરે **"समासओ दुविहा पण्णत्ता"** સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલા છે **"तं जहा"** તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે **"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य"** એક પર્યાપ્તક અને બીજા અપર્યાપ્તક પર્યાપ્તક ગુણ વિશિષ્ટ અહિ

'तं जहा' तद्यथा-'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति । 'तं चेव' तदेव, यद् भेदादिकं यस्य कथितं तदतिरिक्तं शरीरादिद्वारजातं तदेव जलचरजीवानां येन रूपेण शरीरादि द्वारजात कथितं तत्सर्वं तथैव-उरःपरिसर्पसमूर्च्छिमस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणामपि ज्ञातव्यम् । जलचरापेक्षया यद्वैलक्षण्य तद्दर्शयति-'णवरं' इत्यादिना, 'णवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं' नवर केवलम् उर.परिसर्पस्थलचराणा शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासङ्ख्येयभागम् 'उक्कोसेणं जोयणपुहुत्तं' उत्कर्षेण शरीरावगाहना योजनपृथक्त्वम । द्वियोजनादारभ्य नवयोजनप्रमाणा शरीरावगाहना भवतीति भाव । 'ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' स्थिति-आयुष्काल एषामुरःपरिसर्पाणा जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेण तेवण्णं वाससहस्साइं' उत्कर्षेण त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि 'सेसं जहा जलयराणं' शेषं- शरीरावगाहना स्थितिभ्या मतिरिक्तं शरीरादिच्यवनद्वारपर्यन्त द्वारजात यथा जलचराणा कथितं तथैव सर्व मिहापि वक्त-

---

य" पर्याप्त और अपर्याप्त, पर्याप्त गुण विशिष्ट अहि आदिक, पर्याप्त और अपर्याप्तता गुण विशिष्ट अहि आदिक अपर्याप्त कहे जाते है "तं चेव णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणपुहुत्तं" जिस रूप से जलचर जीवों क प्रकरण में शरीरादि द्वारों का कथन किया गया है, उसी रूप से उर.परिसर्प सम्मूर्च्छिमस्थलचरपञ्चेन्द्रियो के सम्बन्ध में भी वह सब शरीरादि द्वारकथन कर लेना चाहिये, परन्तु जलचर प्रकरण की अपेक्षा जो इसमें भिन्नता है वह ऐसी है कि उरःपरिसर्प स्थलचर जीवों की शरीरावगाहना जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण और उत्कृष्ट से योजन पृथक्त्व-दो योजन से लेकर नौ योजन तक की होती है "ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं" स्थिति-आयुष्क काल-इनका-उर.परिसर्पों का-जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और 'उक्कोसेणं तेवण्णं वास-सहस्साइं" उत्कृष्ट से तेपन ५३ हजार वर्ष की है "सेसं जहा जलयराणं जाव चउगइया दुआगइया" इस प्रकार शरीरावगाहना और स्थिति से अतिरिक्त च्यवनद्वार पर्यन्त के सब

વિગેરે પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તક ગુણ વિશિષ્ટ અહિ વિગેરે અપર્યાપ્ત કહેવાય છે "तं चेव णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणपुहुत्तं" જલચર જીવોના પ્રકરણમા જે પ્રમાણે શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણે ઉરઃ પરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચર પંચેન્દ્રિયો નાસંબંધમાં પણ તે શરીર વિગેરે સઘળા દ્વારોનું કથન સમજીલેવું પરંતુ જલચરોના પ્રકરણકરતાં આમા જે ભિન્નપણું છે, તે એવી રીતનુ છે કે-ઉરઃપરિસર્પ સ્થલચર જીવોના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાતમાભાગ પ્રમાણની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી યોજન પૃથક્ત્વ અર્થાત્ બે યોજનથી લઈને નવયોજનસુધીની હોય છે, "ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" તેઓની સ્થિતિ-આયુષ્યકાળ ઉરઃ પરિસર્પોની જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને "उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं" ઉત્કૃષ્ટથી તેપન હજાર વર્ષની છે "सेसं जहा जलयराणं जाव चउगइया दुआगइया"

व्यम् । कियत्पर्यन्तं जलचरप्रकरणमत्र अनुसन्धेयं तत्राह–'जाव' इत्यादि, 'जाव चउगइया दुआगइया' यावच्चतुर्गतिका द्व्यागतिकाः, उरःपरिसर्पेभ्य उद्वृत्य चतसृष्वपि गतिषु नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेषु गमनाच्चतुर्गतिकाः, तथा–तिर्यङ्मनुष्येभ्य उद्वृत्य उर परिसर्पेषु आगमनाद् द्व्यागतिका इति । 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' परीताः प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः–कथिताः । 'से त्तं उरगपरिसप्पा' ते एते उरःपरिसर्पाः स्थलचराः समूर्च्छिमा निरूपिता इति ॥

उरःपरिसर्पसमूर्च्छिमस्थलचरान्निरूप्य भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचरान्निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं भुयपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा' अथ के ते भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचरा, भुजाभ्यां परिसर्पन्ति–गच्छन्ति ये ते भुजपरिसर्पाः ते किं लक्षणाः

द्वार जैसे जलचरो के कहे गये है वैसे ही वे सब यहां पर भी कह लेना चाहिये । "ये चार गतिक और दो आगतिक होते हैं–क्योकि उरः परिसर्पों से मरकर जीव चारों गतियो में नरक गति में तिर्यगगति में मनुष्य गति में और देवगति में जन्म धारण करसकते हैं तथा तिर्यञ्च और मनुष्यो में से मरकर आया हुआ जीव उरःपरिसर्पो में जन्म लेते हैं" इस गत्यागति द्वार तक कथित कर लेना चाहिये। "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" प्रत्येक शरीरी असंख्यात कहे गये हैं । 'से तं उरगपरिसप्पा' इस प्रकार से उरःपरिसर्प स्थलचर संमूर्च्छिमनिरूपित किये हैं' ।

अब सूत्रकार उर.परिसर्प संमूर्च्छिमस्थलचरों का निरूपण करके भुजपरिसर्प संमूर्च्छिमो का निरूपण करते है "से किं तं भुजगपरिसप्प" इत्यादि ।

"से किं तं भुजगपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा' हे भदन्त ! जो भुजाओं से सरकते हैं–चलते है- वे गोधानकुलादि भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचरजीव कितने प्रकार के हैं ? तथा

આ રીતે શરીરની અવગાહના અને સ્થિતિના કથનશિવાય ચ્યવનદ્વારસુધીના બધા જ દ્વારોનું કથન જલચરોના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણે તે તમામદ્વારો અહિયાંપણ સમજીલેવા. તેઓ ચાર ગતિક-એટલેકે ચાર ગતિમાં જવાવાળા અને બે આગતિક-બે ગતિથી આવવાવાળા હોય છે. કેમકે-ઉરઃપરિસર્પોથી મરીને જીવ નરકગતિમાં, તિર્યગ્ગતિમાં, મનુષ્યગતિમા, અને દેવ ગતિમાં એમ ચારે ગતિમાં જન્મ ધારણ કરી શકે છે. તથા તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાંથી મરીને આવેલાજીવ ઉર પરિસર્પોમાં જન્મ લે છે. આ ગત્યાગતિ કદ્વાર સુધી કથન સમજી લેવુંજોઈએ "परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता" પ્રત્યેક શરીરી અસંખ્યાત કહેલા છે. "से त्तं उरगपरिसप्पा" આ પ્રમાણે આ ઉર. પરિસર્પ સ્થલચર સંમૂર્છિમોનું નિરૂપણ કરેલ છે.

'હવે સૂત્રકાર ઉરઃ પરિસર્પ સમૂર્ચ્છિમ સ્થલચરોનું નિરૂપણ કરીને ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમોનું નિરૂપણ કરે છે — ' से किं तं भुजगपरिसप्प" ઈત્યાદિ ગૌતમસ્વામી ભુજપરિસર્પના સંબંધમાં પ્રભુને પૂછે છે કે -से किं तं भुजगपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा" હે ભગવન્ જેઓ ભુજાઓથી સરકે છે, એટલેકે ચાલે છે, તેવા ગોધા–ઘો નકુલ,–નોળિયા

कियद्भेदाश्चेति प्रश्नः, उत्तरयति–'भुजपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा अणेगविहा पन्नत्ता' भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचरा अनेकविधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः 'तं जहा' तद्यथा–'गोहा नउला जाव' गोधा नकुला यावत्। अत्र यावत्पदेन प्रज्ञापनाया ये भेदाः कथिताः 'सरडा' इत्यादय स्ते एवेहापि वक्तव्याः। अत्र गोधाख्यस्थलचरो जन्तुविशेषः (गोह) इति प्रसिद्ध नकुला प्रसिद्धाः, अन्ये सरटादयो लोकाद् देशविशेषाद्वा ज्ञातव्याः। 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ये चान्ये तथाप्रकाराः येऽपि गोधा नकुलादिभिन्नाः तत्सदृशाः

इनका क्या लक्षण है? उत्तर में प्रभु कहते है–"भुजपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा अणेगविहा पण्णत्ता" हे गौतम! भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचर जीव अनेक प्रकार के कहे गये है, "तं जहा" जैसे "गोहा नउला जाव" गोधा, नकुल आदि यहां यावत्पद से प्रज्ञापना में जो भेद कहे गये है वे ही सब यहां वक्तव्य हुए हैं। प्रज्ञापना के पाठ का भाव इस प्रकार से हैं–गोधा–गोह यह स्थलचर जन्तु विशेष हैं नकुल–नेवला यह प्रसिद्ध स्थलचर विशेष जीव है सर्प का और इसका आपस में जन्मजात वैर होता है यह सर्प को देखते ही उसे पकड़ लेता है और उसके टुकडे टुकडे कर देता है। सरट को हिन्दी में गिरधौला कहते हैं यह बैठे बैठे अपने मस्तक को हिलाया डुलाया करता है। यह पेड़ आदि पर चिपका रहता है–"घरोलिया" यह देशविशेष का प्रसिद्ध शब्द है, गुजरात में इसे खिसकोली कहते हैं और हिन्दी में इसे गिलहरी कहते है। "विषंभर" को हिन्दी में "विसभरा" कहते है। यह मकान में दीवाल पर चिपका रहता है। रात्रि में प्रकाश के पास आये हुए पतंगादिको का यह भक्षण करता हैं इनके अतिरिक्त और जो शब्द

વિગેરે ભુજપરિસર્પ સંમૂચ્છિમ સ્થલચર જીવ કેટલા પ્રકારના કહેલાછે? તથા તેના લક્ષણો શું છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"भुजपरिसप्पसंमुच्छिमथलयरा अणेगविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! ભુજપરિસર્પ સંમૂચ્છિમ સ્થલચર જીવો અનેક પ્રકારના કહેલાછે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "गोहा नउला जाव" ઘો, નોળિયા વિગેરે અહિંયાં યાવત્પદથી પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમા જે ભેદો કહેલાછે, તે તમામ ભેદો સમજી લેવાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પાઠનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—ગોધા–ઘો આ સ્થલચર જંતુવિશેષ છે. નકુલ-નોળીયા આ પણ પ્રસિદ્ધ સ્થલચર વિશેષજીવ છે. સર્પને અને આ નોળીયાને જન્મથીજ વેર હોય છે. સર્પને દેખીનેજ આ નોળીયો તેને પકડીલે છે. અને સર્પના ટુકડે ટુકડા કરીનાખે છે સરટ-કાચંડો. આ કાંચંડો બેઠા બેઠા માથું હલાવે છે, અને તે ઝાડ વિગેરે પર ચોંટી રહે છે. घरोलिया" આ દેશ વિશેષમાં પ્રસિદ્ધ શબ્દ છે, ગુજરાતમાં ખિસકોલી કહે છે, અને હિંદીમાં તેને 'ગિલહરી' કહે છે "विषंभर" ને હિંદીમાં "विषभरा" કહે છે અને તે મકાનની દિવાલો-ભીંતોમાં ચોંટિરહેછે જેને ગુજરાતીમાં 'ઘરોલી' કહે છે. તે રાત્રે પ્રકાશથી આવેલ પતંગો વિગેરેને ખાઈ જાય છે. આ શિવાયના બીજા જે

लोके उपलभ्यन्ते ते सर्वे भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकतया वेदितव्याः । **'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** ते गोधानकुलादयो भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः समासतः-संक्षेपेण द्विविधाः द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति । **'तं जहा'** तद्यथा-**'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य'** पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति । भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमस्थलचरजीवानां भेदोपभेदानुपदर्श्य शरीरादिद्वारकलापं दर्शयितुमाह-**'सरीरोगाहणा'** इत्यादि, गोधानकुलादिभुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमजीवानां **'सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं'** शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणा भवति **'उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं'** उत्कर्षेण गोधादिजीवानां शरीरावगाहना धनुःपृथक्त्वम् । द्विधनुषोरारम्य नवधनुःप्रमाणा शरीरावगाहना भवतीति । **'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं'** स्थितिः-आयुष्यकालः जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् **'उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं'** उत्कर्षेण स्थिति द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राणि भवन्तीति ।

है वे लोकभाषा से या देशविशेष से जाने जा सकते हैं । **"जे यावन्ने तहप्पगारा'** तथा-इनसे और भी जो जीव भिन्न हैं, पर वे नकुलादि जैसे हैं तो वे सब भी भुजपरिसर्प संमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक रूप से ही जानना चाहिये । **"ते समासओ दुविहा पन्नत्ता"** ये जो गोधा नकुल आदि भुजपरिसर्प संमुर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव हैं वे संक्षेप से दो प्रकार कहे गये हैं-**"तं जहा"** जैसे- **"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य"** एक पर्याप्त और दूसरे अपर्याप्त इस प्रकार से भुजपरिसर्प संमूर्च्छिमस्थलचरजीवों के भेदों को और उपभेदों को दिखला कर अब सूत्रकार इनके शरीरादि द्वारों को प्रकट करने के लिये कहते हैं-**"सरीरोगाहणा"** इत्यादि इनकी शरीरावगाहना-**जहन्नणं अंगुलासंखेज्जइभागं"** जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं और **'उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं'** उत्कर्ष से धनुष पृथक्त्व है-दो धनुष से लेकर नौ धनुष तक की है । **"ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं'**

શબ્દોહોય તે લોકભાષાથી અથવા દેશવિશેષથી સમજી લેવા **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** તથા આનાથી જે ભિન્નજીવો છે, પણ તે નકુલ-નોળીયા જેવા હોય તો તે બધા જ ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક પણાથી જ સમજવા. **"ते समासओ दुविहा पण्णत्ता"** જે આ ઘો, નોળીયા વિગેરે ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવ છે, તેઓ સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલા છે. **"तं जहा"** તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે સમજવા. **"पज्जत्ता य अपज्जात्ता य"** એક પર્યાપ્ત અને બીજા અપર્યાપ્ત આ રીતે ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચર જીવોના ભેદો અને ઉપભેદો બતાવીને હવે સૂત્રકાર તેઓના શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન કરતાં કહે છે કે-**"सरीरोगाहणा"** ઇત્યાદિ તેઓના શરીરની અવગાહના **"जहण्णेणं अगुलासंखेज्जइभागं"** જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણની છે. અને **"उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं"** ઉત્કૃષ્ટથી ધનુષ પૃથક્ત્વ છે. એટલેકે બે ધનુષથી લઈને નવ ધનુષ સુધીની છે **"ठिई जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं"** તેમની

'सेसं जहा जलयराणं' शेषम्-शरीरावगाहनास्थितिव्यतिरिक्तं सर्वं द्वारजातम्। यथा जलचराणाम्। जलचरसंमूर्च्छिमानां यथा कथितं तथैव भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमगोधानकुलादीनामपि ज्ञातव्यम्। कियत्पर्यन्तं जलचरवत् ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव चउगइया दुआगइया' यावच्चतुर्गतिका द्व्यागतिकाः, गत्यागतिद्वारपर्यन्तं जलचरवदेव भुजपरिसर्पस्थलचराणामपि ज्ञातव्यमिति। 'चउगइया' चतुर्गतिकाः, भुजपरिसर्पस्थलचरेभ्य उद्वृत्य नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवगतिषु गमनात्। 'दु आगइया' द्व्यागतिकाः तिर्यङ्मनुष्येभ्य उद्वृत्य भुजपरिसर्पेषु आगमनात्। 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' प्रत्येकशरीरिणो भुजपरिसर्प गोधानकुलादयोऽसंख्याताः

यहां स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से बयालीस हजार वर्ष की है। 'सेसं जहा जलयराणं' इस प्रकार शरीरावगाहना और स्थिति से अतिरिक्त शरीरादि द्वारों का कथन जलचर समूर्च्छिम जीवो के प्रकरण में जैसा कहा गया है वैसा ही इन भुजपरिसर्प संमूर्च्छिम गोधा नकुल आदिको के सम्बन्ध में भी है जलचर जीवों का प्रकरण यहां "जाव चउगइया, दु आगइया" इस सूत्र तक का ग्रहण करना चाहिये, अतः जलचर जीवों के गत्यागति द्वार पर्यन्त यह प्रकरण गृहीत हुआ है तो ये भुजपरिसर्प स्थलचर जीव अपनी इस पर्याय को छोड़ कर जब गत्यन्तर में जाते हैं तो ये सीधे चारो गतियों में जा सकते हैं-नरकगति में भी ये जा सकते हैं तिर्यञ्चगति में भी ये जा सकते हैं मनुष्यगति में भी ये जा सकते हैं और देव गति में भी ये जा सकते हैं इसलिए ये चतुर्गतिक कहलाते हैं तथा तिर्यञ्च और मनुष्यों में से उद्वृत्त हुआ जीव सीधा यहां दूसरा जन्म ले सकता है। इस प्रकार ये द्व्यागतिक भी कहे हैं। "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" प्रत्येक शरीरी जो गोधानकुल आदि भुजपरिसर्प स्थल-

---

સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી બેંતાલીસ હજાર વર્ષની છે. "सेसं-जहा जलयराणं" આ રીતે શરીરની અવગાહના અને સ્થિતિદ્વારના કથન શિવાય શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન જલચર સંમૂર્ચ્છિમ જીવો ના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે તેજ પ્રમાણે આ ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ ઘો, નોળિયા, વિગેરેના સંબંધમાં સમજી લેવું અને તે જલચર જીવોનું પ્રકરણ અહિંયાં "जाव चउगइया दु आगइया" આ સૂત્રપાઠ સુધી તે કથન ગ્રહણ કરવુ જેથી જલચર જીવોના ગત્યાગતિદ્વાર સુધી આ પ્રકરણ ગ્રહણ થલ છે તેમ સમજવુ આ ભુજપરિસર્પ સ્થલચર જીવ આ પર્યાયને છોડીને જ્યારે ગત્યન્તર-બીજીગતિમાં જાય છે. તો તેઓ સીધા ચારે ગતિયોમાં જઈ શકે છે મનુષ્યગતિમાં પણ જઈ શકે છે. અને દેવગતિમાં પણ જઈ શકે છે. તેથી તેઓ ચાર ગતિવાળા કહેવાય છે. તથા તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાંથી નીકળીને જીવ સીધા આ ભુજપરિસર્પોમાં જન્મ લે છે. આ રીતે આ દ્વયાગતિક-બે ગતિથી આવવાવાળા એ પ્રમાણે પણ કહેવાય છે. "परित्ता असंखेज्जा-पण्णत्ता" પ્રત્યેકશરીરી કે જે ઘો નોળીયા વિગેરે ભુજ

प्रज्ञप्ताः कथिता इति। संप्रति प्रकरणार्थमुपसंहरन्नाह—'से त्तं' इत्यादि, 'से त्तं भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा' ते एते भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः निरूपिता इति। 'से त्तं थलयरा' ते एते स्थलचरजीवा भुजपरिसर्पान्ता निरूपिता इति॥

अथ खेचरान्निरूपयितुमाह—'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं खहयरा' अथ के ते खेचरा जीवाः इति प्रश्नः, उत्तरयति—'खहयरा चउव्विहा पन्नत्ता' खेचरा जीवाश्चतुर्विधाः—चतुष्प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहा' तद्यथा—'चम्मपक्खी' चर्मपक्षिणः चर्ममयौ पक्षौ विद्येते येषां ते चर्मपक्षिणः 'लोमपक्खी' लोमपक्षिणः—लोमयुक्तौ पक्षौ इति लोमपक्षौ तौ विद्येते येषां ते लोम पक्षिणः—हंस मयूरादयः। 'समुद्गकपक्खी' समुद्गकपक्षिणः समुद्गवत् संपुटवत् पक्षौ येषां ते तथा गच्छतामपि पक्षौ सङ्कुचितौ एव तिष्ठतः तादृशपक्षवन्तः समुद्गपक्षिणः 'विततपक्खी'

चर जीव है वे असंख्यात कहे गये है। "से त्तं भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा" इस प्रकार से यह वर्णन भुजपरिसर्पसंमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको का कहा गया है। इस वर्णन के समाप्त होने पर 'से तं थलयरा' यह स्थलचर चतुष्पद और स्थलचर परिसर्प इन मुख्य दो भेदों द्वारा स्थलचरो का निरूपण हो गया।

जलचरों और स्थलचरो का वर्णन करके—अब सूत्रकार खेचरो का निरूपण करते है—

'से किं तं खहयरा' हे भदन्त ! खेचर जीव कितने प्रकार के होते है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—'खहयरा चउव्विहा पन्नत्ता' हे गौतम ! खेचर जीव चार प्रकार के होते हैं। 'तं जहा' जैसे-'चम्मपक्खी' चर्मपक्षी—जिनके पख चर्म रूप ही होते हैं वे चर्मपक्षी कहे गये हैं, 'लोम पक्खी' लोमपक्षी—जिनके पंख रोम युक्त होते हैं वे लोम पक्षी है। 'समुद्गपक्खी' उड़ते हुए भी जिन पक्षियो के दोनो पंख संकुचित रहते है ऐसे पक्षी समुद्गक पक्षी कहलाते है। 'वितत

પરિસર્પ સ્થલચર જીવ છે, તે અસંખ્યાત કહેલા છે. "से त्तं भुयपरिसप्पसंमुच्छिमा" આ રીતે આ ભુજપરિસર્પ સંમૂર્ચ્છિમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ યોનિકોનુ વર્ણન કરેલ છે. "से त्तं थलयरा" આ રીતે આ સ્થલચર ચતુષ્પદ અને સ્થલચર પરિસર્પ આ મુખ્ય બે ભેદોદ્વારા સ્થલચરોનું નિરૂપણ સમાપ્ત થયું !

જલચરો અને સ્થલચરોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ખેચર જીવોનું નિરૂપણ કરે છે.—ખેચર સંબંધી કથન જાણવાની ઈચ્છાથી ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—"से किं तं खहयरा" હે ભગવન્ ખેચર-આકાશગામી જીવો કેટલા પ્રકારના કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે-"खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! ખેચર જીવો ચાર પ્રકારના હોય છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "चम्मपक्खी" ચર્મ પક્ષી જેની પાંખ ચર્મ રૂપ જ હોય છે, તે ચર્મ પક્ષી કહેવાય છે. "लोमपक्खी" લોમ પક્ષી જેઓની પાંખો રૂંવાટા વાળી હોય છે તે લોમપક્ષી કહેવાય છે. "समुद्गपक्खी" ઉડતા ઉડતા પણ જે પક્ષિઓની બન્ને પાંખે, સંકુચીત રહે છે તેવા પક્ષીઓ સમુદ્ગ પક્ષી કહેવાય છે "विततपक्खी" જેમની બન્ને પાંખ હંમેશાં

विततपक्षिणः, विततौ–नित्यमसंकुचितौ पक्षौ विततपक्षौ तौ विद्येते येषां ते विततपक्षिणः सर्वदा प्रसारितपक्षवन्तः इत्यर्थ इति। तत्र सर्वप्रथमं चर्मपक्षिणो निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह– 'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं चम्मपक्खी' अथ के ते चर्मपक्षिण' इति प्रश्नः, उत्तरयति–'चम्मपक्खी' अणेगविहा पन्नत्ता' चर्मपक्षिणोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ता'–कथिता इति। 'तं जहा' तद्यथा–'वग्गुली जाव जे यावन्ने तहप्पगारा' वल्गुलिनो यावत् ये चान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वेऽपि चर्मपक्षिरूपतया प्रतिपत्तव्याः, अत्र यावत्पदेनात्रापि प्रज्ञापनाप्रकरणं पठित व्यम्, । एतेषा स्वरूपं लोकत एवावगन्तव्यमिति ॥ 'से तं चम्मपक्खी' ते एते उपरि दर्शिता वल्गुलिप्रभृति पक्षिणश्चर्मपक्षिरूपतया ज्ञातव्या इति ॥

अथ लोमपक्षिणो निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं लोमपक्खी' अथ के ते लोमपक्षिण इति प्रश्नः, उत्तरयति—'लोमपक्खी अणेगविहा पन्नत्ता' लोमपक्षिणोऽनेक-

---

पक्खी' तथा जिनके दोनों पंख हमेशा फैले हुए रहते हैं–कभी सकुचित नहीं होते हैं–वे विततपक्षी हैं इस प्रकार खेचर पक्षियों के सम्बन्ध में सामान्य रूप से जानकारी प्राप्त कर अब गौतम इसी विषय में विशेष रूप से जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रभु से ऐसा पूछते हैं–"से किं तं 'चम्मपक्खी' हे भदन्त ! वे चर्मपक्षी कितने प्रकार के होते हैं–उत्तर में प्रभु कहते हैं'चम्मपक्खी अणेगविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! चर्मपक्षी अनेक प्रकार के कहे गये हैं - "तं जहा' जैसे– 'वग्गुलीजाव जे यावन्ने तहप्पगारा' वल्गु–यावत् और भी इसी प्रकार के अनेक जीव हों, यहा यावत्पद से 'जलोया अडिल्ला' भारुंडपक्खी जीवजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खि विरालिया" इन प्रज्ञापना पठित खेचर जीवों का संग्रह हुआ है। इन सब का स्वरूप लोक से ही जानने के योग्य है 'से त्तं चम्मपक्खी" इस प्रकार का यह सब कथन चर्मपक्षियों के सम्बन्ध में कहा है। 'से किं तं लोमपक्खी' हे भदन्त ! लोमपक्षी कितने प्रकार है ? उत्तर में प्रभु

ફેલાવેલી રહે છે તેઓ વિતતપક્ષી કહેવાય છે. આ રીતે ખેચર–આકાશમાં ફરનારા પક્ષિયોના સંબંધમાં સામાન્ય પણાથી સમજણમેળવીને હવે ગૌતમ સ્વામી આ સંબંધમાં વિશેષ પણાથી સમજણમેળવવા માટે પ્રભુને એવું પૂછે છે કે–"से किं तं चम्मपक्खी" હે ભગવન્ તે ચર્મપક્ષીયો કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"चम्म पक्खी अणेगविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! ચર્મપક્ષી અનેક પ્રકારના કહેલા છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "वग्गूली जाव जे यावन्ने तहप्पगारा" વલ્ગુલી યાવત્ બીજા પણ આના જેવા અનેક જીવો હોય તે બધા સમજીલેવા અહિયાં યાવત્પદથી "जलोया, अडिल्ला, भारुंडपक्खी, जीवजीवा, समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिविरालिया" આ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહેલા પાઠ પ્રમાણે ખેચર–આકાશગામી જીવોનો સંગ્રહ થયો છે. આ તમામ પક્ષીયોનું સ્વરૂપ લોકવ્યવહારથી સમજી લેવું "से त्तं चम्मपक्खी" આ પ્રમાણેનું આ તમામ કથન ચર્મપક્ષીઓના સંબંધમાં કહ્યું છે હવે લોમપક્ષીના સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે–"से किं तं लोमपक्खि" હે ભગવન્ લોમપક્ષી કેટલા પ્રકારના કહેલા છે, ? આ પ્રશ્નના

विधाः–अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः, अत्र लोमयुक्तौ पक्षौ इति लोमपक्षौ तौ विद्येते येषां ते लोमपक्षिण इति। अनेकविधत्वं दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'ढङ्का कंका जे यावन्ने तहप्पगारा' ढङ्का कङ्काः ये चान्ये–ढङ्ककङ्कातिरिक्ता तथाप्रकाराः ढङ्कादिसदृशास्ते सर्वेऽपि लोमपक्षितया ज्ञातव्याः। लोमपक्षिविषयेऽपि प्रज्ञापनाप्रकरण-मनुस्मरणीयम्। 'से तं लोमपक्खी' ते एते ढङ्कादयो लोमपक्षिणो निरूपिता इति॥

कहते हैं–'लोम पक्खी अणेगविहा पण्णत्ता'' हे गौतम! लोमपक्षी अनेक प्रकार के कहे गये है। 'तं जहा' जैसे–''ढंका, कंका, जे यावन्ने तहप्पगारा' ढङ्क, कङ्क, गृद्ध पक्षी–तथा इसी प्रकार के और भी पक्षी ये सब लोमपक्षी रूप से जानना चाहिये। लोमपक्षियों के सम्बन्ध में प्रज्ञापना प्रकरण जो टीका में दिया गया उसका भाव इस प्रकार से है– ''ढङ्क, कङ्क–गीध, कुरर–पक्षिविशेष वायस कौवा चक्रवाक–चकवा हंस कलहंस-बतख राजहंस–पोतहंस आदि–बतककी जात, सोडी–बक–बगला–वारिप्लव–जलकाग बलागा-बगलेकी एक जाति क्रौञ्च–सारस. मसर–मसूर. मयूर सप्तहस्त. गहर पुण्डरीक काग-बडा कौवा कामिंजुय वंजुलक. तीतर वर्त्तक–बटेर लावक बटेर की एक जाति कपोत- कबूत्तर कपिञ्जल चातक पारावत--कबूतर विशेष. चित्रक चिशा. कुक्कुट--मुर्गा शुक-तोता. बर्ही- मयूर की जाति. मदन शालाका-मैनापक्षी कोकिल. और श्लक्ष्ण वरिल्लक आदि इनमें कितनेक लोम पक्षी तो प्रसिद्ध हैं और कितनेक देश विशेष से जानने के हैं। 'से तं लोमपक्खी' इससे यह सब कथन लोमपक्षी के सम्बन्ध में किया गया है।

ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–''लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता'' હે ગૌતમ! લોમપક્ષી અનેક પ્રકારના કહ્યા છે. 'तं जहा'' તે આ પ્રમાણે છે.–''ढंक कक जे यावण्णे तहप्पगारा'' ઢંગ કક–ગીધ પક્ષી. તથા આનાજેવા બીજા પક્ષીયો આબધા પક્ષીયો લોમ પક્ષી તરીકે સમજવા. લોમપક્ષિઓના સંબંધમાં પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનું જે પ્રકરણ ટીકામાં આપેલ છે. તેનો ભાવ આ પ્રમાણે છે. ढङ्क कङ्क–ગીધ પક્ષી. કુરર–પક્ષિવિશેષ વાયસ–કાગડો. ચકવાક, પક્ષિવિશેષ હંસ, કલહંસ, બતખ–બતક, રાજહંસ પોતહંસ,–આડબતકનીજાત, સોડી, બગલા, વારિપ્લવ–પાણીમાંરહેનાર કાગડો, બલાગા–બગલાની એકજાત કૌંચ, સારસ, મસર–મસૂર, મયૂર–મોર, સપ્તહસ્ત, ગહર પુંડરીક, કાગ–મોટો કાગડો, કાજિંજૂય, વંજુલક, તીતર–તેતર, વર્ત્તક–પક્ષિ–વિશેષ. લાપક–બટેરની એકજાત, કપોત–કબૂતર, કપિંજલ,–ચાતક, પારાવત-કબૂતરની એકજાત, ચિત્રક, વિશા, કુકકુટ–મરઘા, શુક–પોપટ, બર્હિ–મોરનીએકજાત, મદનશલાકા–મેના, કોકિલ-કોયલ અને શ્લક્ષ્ણ વરિલ્લક વિગેરે આમાં કેટલાક લોમપક્ષિતો પ્રસિદ્ધ જ છે. અને કેટલાક દેશવિશેષથી સમજીલેવા. ''सेत्तं लोमपक्खो'' આરીતે આ સઘળું કથન લોમપક્ષીના સંબંધમાં કરેલું છે

समुद्गपक्षिणां स्वरूपं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह–से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं समुग्ग पक्खी' अथ के ते समुद्गपक्षिण इति प्रश्न', उत्तरयति—'समुग्गपक्खी एगागारा पन्नत्ता जहा पण्णवणाए' समुद्गपक्षिणः एकाकारा–एकप्रकारका एव प्रज्ञप्ताः–कथिता यथा प्रज्ञापनायाम्। तथा च प्रज्ञापनाप्रकरणम्–'से किं तं समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पन्नत्ता। ते णं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति से त्तं समुग्गपक्खी' अथ के ते समुद्गपक्षिण' ? समुद्गपक्षिण एकाकारा' प्रज्ञप्ताः, ते खलु न सन्ति इह। बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु ते भवन्ति ते एते समुद्गपक्षिणो निरूपिता इति॥

विततपक्षिणो निरूपयितुमतिदिशति—'एवं' इत्यादि, 'एवं विततपक्खी जाव' एवं यथा समुद्गकपक्षिण' प्रज्ञापनाप्रकरणान्निरूपिता स्तथैव विततपक्षिणोऽपि निरूपयितव्या. प्रज्ञापनासूत्रपाठस्तु इत्थं तथाहि–'से किं तं विततपक्खी ? विततपक्खी एगागारा पन्नत्ता

समुद्रकपक्षी के सम्बन्ध में कथन इस प्रकार से है ? 'से किं तं समुग्गपक्खी' हे भदन्त ! समुद्रकपक्षी कितने प्रकार के हैं-उत्तर में प्रभु कहते है–हे गौतम ! 'समुग्गपक्खी–एगागारा पण्णत्ता जहा पण्णवणाए' समुद्गक पक्षी प्रज्ञापना के कथनानुसार एक ही प्रकार के कहे गये है–प्रज्ञापना का वह प्रकरण इस प्रकार से है–'से कि तं समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पन्नत्ता, ते णं नत्थि इहं वाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति' ये समुद्गक पंक्षी एक ही प्रकार के होते हैं। और ये यहां मनुष्य क्षेत्र में नहीं होते हैं–किन्तु बाहर के द्वीपसमुद्रो में होते है। इस प्रकार से समुद्गक पक्षिका कथन कर के अब सूत्रकार वितत पक्षियो का निरूपण करते हैं–'एवं विततपक्खी जाव' जिस प्रकार से प्रज्ञापना का प्रकरण को लेकर समुदगक पक्षिका निरूपण किया गया है–उसी प्रकार से विततपक्षियो का भी निरूपण करलेना चाहिये० प्रज्ञापना सूत्र का पाठ इस प्रकार से हैं-"से किं तं विततपक्खी ?

હવે સમુદ્ગક પક્ષીના સંબંધમાં કથન કરવામાં આવે છે આ સંબંધમા ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે–'से किं तं समुग्गपक्खी" હે ભગવન્ સમુદ્ગક પક્ષી કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામી ને કહે છે કે હે ગૌતમ ! "समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता ' जहा पण्णवणाए" સમુદ્ગપક્ષી પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે એકજ પ્રકારના કહેલા છે પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનું તે પ્રકરણ આ પ્રમાણે છે "से किं तं समुग्गपक्खी समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता" ते णं णत्थि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति" આ સમુદ્ગક પક્ષિયો એકજ પ્રકારના હોય છે અને તે અહિયા મનુષ્યક્ષેત્રમા હોતા નથી, પરંતુ બહારના દ્વીપસમુદ્રોમાં હોય છે આરીતે સમુદ્ગપક્ષિનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર વિતત પક્ષિયોનું નિરૂપણ કરે છે 'एवं विततपक्खि जाव" જે પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પ્રકરણમાં સમુદ્ગ પક્ષીનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે, એ જ પ્રમાણે વિતત પક્ષિયોનું નિરૂપણ પણ સમજી લેવુ. પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનો તે પાઠ આ પ્રમાણે છે.—"से किं तं वितत-

ते णं नत्थि इहं, बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति से तं विततपक्खी' अथ के ते विततपक्षिणः, वितत पक्षिणः एकाकाराः–एकप्रकाराः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, ते खलु विततपक्षिणो न सन्ति इह–मनुष्य-क्षेत्रे, किन्तु बाह्येषु–मनुष्यक्षेत्रातिरिक्तेषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ते एते विततपक्षिणः। **'जे यावन्ने तहप्पगारा'** ये चान्ये तथाप्रकारा स्तत्सदृशा स्ते सर्वेऽपि खेचराश्चर्मपक्ष्यादि रूपतया प्रतिपत्तव्याः। **'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** ते पूर्वोक्ता इमे सर्वे पक्षिणः समासतः-संक्षेपेण द्विविधा.—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति, **'तं जहा'** तद्यथा **'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य'** पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्चेति। चर्मपक्षिलोमपक्षिसमुद्गपक्षि विततपक्षिणां शरीरादि च्यवनान्त-द्वाराणि जलचरवदेव ज्ञातव्यानि, केवलं शरीरावगाहनास्थिति जलचरापेक्षया विलक्षणे ज्ञातव्ये

विततपक्खी एगागारा पन्नत्ता–ते णं नत्थि इहं, बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति, से तं विततपक्खी' इस का सारांश ऐसा है कि जब गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा कि–हे भदन्त। विततपक्षी कितने प्रकार के हैं–तब प्रभु ने उनसे ऐसा कहा कि हे गौतम! विततपक्षी एक ही प्रकार के हैं–और ये यहां मनुष्य क्षेत्र में नहीं होते हैं किन्तु बाहर के द्वीप और समुद्रों में ही होते हैं। तथा–**"जे यावन्ने तहप्पगारा"** इन्हीं के जैसे जो और भी पक्षी हो वे सब भी पक्षियों में ही परिगणित हो जाते हैं। **'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'** ये पूर्वोक्त समस्त पक्षी सक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं–**'तं जहा'** जैसे-**पज्जत्ता य अपज्जत्ता य'** पर्याप्त और अपर्याप्त ये चर्म पक्षी, लोम पक्षी समुद्गक पक्षी और वितत-पक्षी पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से दो प्रकार के होते हैं इनके शरीरद्वार से लेकर च्यवन द्वार तक का समस्त द्वारों का कथन जलचर जीवों के प्रकरण के जैसा ही है ऐसा जानना चाहिये। परन्तु जलचर जीवों के प्रकरण की अपेक्षा–इनके प्रकरण कथन में जो भिन्नता है वह इनकी शरीरावगाहना में और स्थिति में है जो इस प्रकार से है–**'णाणत्तं–सरीरोगाहणा**

पक्खी विततपक्खी एगागारा पण्णत्ता ते णं नत्थि इह, बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवति से तं विततपक्खी" આ પાઠનો સારાંશ આ પ્રમાણે છે જ્યારે ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું કે હે ભગવન્ વિતતપક્ષી કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે? ત્યારે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુએ ગૌતમસ્વામીને કહ્યું કે-હે ગૌતમ! વિતતપક્ષી એકજ પ્રકારના કહેલ છે અને તે અહિયાં મનુષ્યક્ષેત્રમાં હોતા નથી પરંતુ બહારના દ્વીપ અને સમુદ્રોમાં જ હોય છે. તથા **"जे यावन्ने तहप्पगारा"** આ વિતતપક્ષીના જેવા બીજા જે પક્ષિયો હોય તે સઘળા પક્ષિયોની ગણત્રીમા આવી જાય છે **"ते समासओ दुविहा पण्णत्ता"** આ પહેલા કહેલ સઘળા પક્ષિયો સંક્ષેપથી બે જ પ્રકારના કહેલા છે **"तं जहा"** તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે સમજવા **"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य"** પર્યાપ્તક અને અપર્યાપ્તક. આ ચર્મપક્ષી, લોમ-પક્ષી, સમુદ્ગકપક્ષી, અને વિતતપક્ષી, પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે. તેઓના શરીરદ્વારથી લઈને ચ્યવનદ્વાર સુધીના બધા જ દ્વારોનું કથન જલચરજીવોના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું. પરંતુ જલચરજીવો

तदेव दर्शयति–'णाणत्तं' इत्यादि, 'णाणत्तं' नानात्वं भेदः जलचरापेक्षया शरीरावगाहना स्थित्योः 'सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जभागं' शरीरावगाहना खेचराणां जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागम् 'उक्कोसेणं धणुपुहत्तं' उत्कर्षेण धनुःपृथक्त्वम्। द्विधनुरारभ्य नवधनुःपर्यन्तम्। 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' स्थितिः–आयुष्यकालो जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् 'ठिई उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं' खेचराणामुत्कर्षेण स्थितिः–आयुष्यकालः द्वासप्तति वर्षसहस्राणि। अवगाहनास्थित्यो विषये यथाक्रमं गाथाद्वयं दर्शयति—

'जोयण सहस्स गाउय, पुहत्त तत्तो य जोयणपुहत्तो।
दोण्हंपि धणुपुहत्तं संमुच्छिमवियपक्खी णं ॥१॥
संमुच्छपुव्वकोडी चउरासीई भवे सहस्साइं।
ते वण्णा बायाला बावत्तरि मेव पक्खी णं ॥२॥

व्याख्या—संमूर्च्छिमानां जलचराणा मुत्कृष्टा शरीरावगाहना योजनसहस्रप्रमाणा भवति संमूर्च्छिमानां चतुष्पदानां गव्यूतपृथक्त्वं भवति, तत उरःपरिसर्पाणामुत्कृष्टा शरीरावगाहना योजन-

---

जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं' यहां नानात्व–भेद इस प्रकार से है–शरीरावगाहना जघन्य से अंगुल के असख्यातवें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से धनुष पृथक्त्व है–दो धनुष से लेकर ९ नौ धनुष तक है 'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं' स्थिति इसकी जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से बहत्तर हजार वर्ष की है। इस विषय में- दो गाथाएँ—

'जोयणसहस्स' इत्यादि। 'संमुच्छ पुव्वकोडी' इत्यादि। इनकी व्याख्या–संमूर्च्छिम जलचर जीवों की उत्कृष्ट से शरीरावगाहना एक हजार योजन की होती है। संमूर्च्छिम चतुष्पदों की उत्कृ-

---

ના પ્રકરણ કરતાં આ પ્રકરણમાં જે ભિન્ન પણું છે, તે તેઓના શરીરદ્વાર અવગાહના દ્વારમા અને સ્થિતિ દ્વારમાં છે જે આ પ્રમાણે છે.—''णाणत्तं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं'' અહિયાં નાનાત્વ- જુદાપણું આ પ્રમાણે છે. આ પક્ષિયોના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી ધનુષ્પૃથક્ત્વ છે એટલે કે-બે ધનુષથી લઈને નવ ધનુષ સુધીની છે. ''ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण बावत्तरिं वाससहस्साइं'' તેમનીસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી બોંતેરહજાર વર્ષની છે. આ સંબંધમાં બે ગાથાઓ નીચે પ્રમાણેની કહેલ છે—''जोयणसहस्स'' ઇત્યાદિ ''संमुच्छपुव्वकोडी'' ઇત્યાદિ તેની વ્યાખ્યા આ પ્રમાણે છે.—સંમૂર્છિમ જલચરજીવોના શરીરનીઅવગાહના ઉત્કૃષ્ટથી એક હજાર યોજનની હોય છે સંમૂર્છિમ ચતુષ્પદોની અવગાહના ગવ્યૂત પૃથક્ત્વ હોય છે. ઉરઃ પરિસર્પોની

पृथक्त्वप्रमाणा भवति-'दोण्हपि' द्वयानां -संमूर्च्छिमभुजगपक्षिणां-संमूर्च्छिमभुजपरिसर्पपक्षिरूपाणां प्रत्येकं धनुः पृथक्त्वमुत्कृष्टा शरीरावगाहना भवतीति। तथा संमूर्च्छिमानां जलचराणामुत्कृष्टा स्थितिः पूर्वकोटिप्रमाणा भवति, सम्मूर्च्छिमानां चतुष्पदानां चतुरशीतिवर्षसहस्राणि, उरःपरिसर्पाणां त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि भुजपरिसर्पाणां द्वाचत्वारिंशद्वर्षसहस्राणि, पक्षिणां द्वासप्ततिर्वर्षसहस्राणि भवतीति। **'सेसं जहा जलयराणं'** शेषम् शरीरावगाहनास्थित्यतिरिक्तं सर्वं शरीरादिच्यवनान्तद्वारजातम्, खेचराणां जलचरवदेव ज्ञातव्यम्। कियत्पर्यन्तं जलचरवद् ज्ञातव्यं तत्राह-**'जाव'** इत्यादि, **'जाव'** यावत् **'चउगइया दुआगइया'** चतुर्गतिकाः द्व्यागतिकाः, एते खेचराः नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेषु गमनाच्चतुर्गतिकाः तिर्यङ्मनुष्येभ्य उद्धृत्य खेचरेष्वागमनाद् द्व्यागतिका इति।

ष्टावगाहना गव्यूत पृथक्त्व होती है। उरःपरिसर्पों की उत्कृष्ट से शरीरावगाहना योजन पृथक्त्व होती है। तथा संमूर्च्छिम-भुजपरिसर्पों की और खेचरों की उत्कृष्ट शरीरावगाहना प्रत्येक की धनुःपृथक्त्व होती है। संमूर्च्छिम जलचरो की उत्कृष्ट स्थिति पूर्वकोटि प्रमाण होती है। संमूर्च्छिम चतुष्पदों की चौरासी हजार वर्षों की होती है। उरःपरिसर्पों की तेपन हजार वर्षों की होती है। भुजपरिसर्पों की बयालीस हजार वर्षों की होती है और पक्षियों की बहत्तर हजार वर्षों की होती है।

'सेसं जहा जलयराणं' शरीरावगाहना और स्थिति से अतिरिक्त समस्त शरीरादिच्यवनान्तद्वार तक का कथन इन खेचरों के प्रकरण में जलचर जीवों के जैसा ही जानना चाहिये। **'जाव चउगइया दुआगइया'** यावत् चारगतिक और दो आगतिक होते है। खेचर जब अपनी पर्याय से छूटते है तो ये सीधे नरकगति में भी जा सकते है, तिर्यञ्चगति में भी जा सकते है, मनुष्यगति में भी जा सकते हैं और देवगति में भी जा सकते है। इसलिये चतुर्गतिक हैं। तथा-तिर्यञ्च और मनुष्यों में से मरा हुआ जीव सीधा खेचर जीवों में

ઉત્કૃષ્ટથી શરીરાવગાહના યોજન પૃથક્ત્વની હોય છે. તથા સંમૂર્ચ્છિમ ભુજપરિસર્પોની અને ખેચરોની ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના દરેકની ધનુષ્પૃથક્ત્વની હોય છે સંમૂર્ચ્છિમ જલચરોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પૂર્વકોટિ પ્રમાણ હોય છે. સંમૂર્ચ્છિમ ચતુષ્પદો ની ચોર્યાશીહજાર વર્ષોની હોય છે ઉરપરિસર્પોની તેપનહજાર વર્ષોની હોય ભુજપરિસર્પોની બેતાલીસહજાર વર્ષોની હોય છે અને પક્ષિયોની સ્થિતિ બાંતેર હજાર વર્ષોની હોય છે.

"सेसं जहा जलयराणं" શરીરાવગાહના અને સ્થિતિના કથન કરતાં સઘળા દ્વારો એટલેકે શરીરદ્વારથી લઈને ચ્યવનદ્વાર સુધીનું આ ખેચરો સંબંધી કથન જલચરજીવોના સંબંધમાં કહ્યા પ્રમાણેનું સમજવું. **"जाव चउगइया दुआगइया"** યાવત્ ચાર ગતિવાળા અને બે આગતિવાળા હોય છે ખેચરો જ્યારે પોતાની પર્યાયથી છૂટે છે. ત્યારે તેઓ સીધા નરકગતિ માં પણ જઈ શકે છે, તિર્યંચગતિમાં પણ જઈ શકે છે, મનુષ્યગતિમાં પણ જઈ શકે છે, અને દેવગતિમાં પણ જઈ શકે છે. તેથી તેઓ ચતુર્ગતિક કહેવાય છે તથા

ततश्च गत्यागतिपर्यन्तं सर्वमपि द्वारजातं जलचरवदेव खेचराणामपि ज्ञातव्यमिति । 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता, प्रत्येकशरीरधारिण इमे खेचरा असंख्याताः प्रज्ञप्ताः'–कथिता इति ॥ 'से त्तं खहयरसंमूच्छिमतिरिक्खजोणिया' ते एते खेचरसंमूर्च्छिमतिर्यग्योनिका निरूपिताः । 'से त्तं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' ते एते संमूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः भेदप्रभेदैः निरूपिता इति ॥ सू० २२ ॥

निरूपिताः समूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः सम्प्रति गर्भव्युत्क्रान्तिकान् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकान निरूपयितु प्रश्नयन्नाह–'से किं तं गब्भवक्कंतिय०' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता तं जहा–जलयरा, थलयरा, खहयरा । से किं तं जलयरा जलयरा पंचविहा पन्नत्ता तं जहा–मच्छा, कच्छभा, मगरा, गाहा, सुंसुमारा, सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा–पज्जत्ता य अपज्जत्ता य । तेसि णं भंते ? जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता तं जहा–ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । छव्विहसंघयणी पन्नत्ता तं जहा–वइरोसभनारायसंघयणी, उसभनारायसंघयणी, नारायसंघयणी, अद्धनारायसंघ-

---

उत्पन्न हो सकता है । इस प्रकार ये द्व्यागतिक कहे गये हैं । 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' प्रत्येक शरीरधारी ये खेचर असंख्यात कहे गये हैं । 'से त्तं खहयरसंमुच्छिमतिरिक्खजोणिया' इस प्रकार से खेचर समूर्च्छिम तिर्यग्योनिक जीवों का निरूपण किया है 'से त्तं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' इनके निरूपित हो जाने पर यह भेद प्रभेदों सहित संमूर्च्छिमपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक प्रकण समाप्त हुआ ॥सू० २२॥

તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાથી મરીને સીધા આ ખેચર જીવોમાં ઉત્પન્નથાય છે તેથી તેઓને દ્વયાગતિક કહેલા છે "परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता" પ્રત્યેક શરીરધારી આ ખેચરો અસંખ્યાત કહેલા છે "सेत्तं खहयरसंमुच्छिमतिरिक्खजोणिया" આ પ્રકારથી ખેચર સંમૂચ્છિમ તિર્યંચ્ચોનિક જીવોનું નિરૂપણ કહ્યું છે. "से त्तं संमुच्छिमपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया" આરીતે ભેદ પ્રભેદો સહિત સંમૂચ્છિંમ પંચેન્દ્રિય તિર્યંચયોનિક-જીવોનું નિરૂપણ થયું છે. ॥સૂ૦૨૨॥

यणी, कीलियासंघयणी सेवट्टसंघयणी। छव्विहसंठिया पन्नत्ता, तंजहा–समचउरंससंठिया णग्गोधपरिमंडल संठियासाइसंठिया खुज्जसंठिया वामणसंठिया हुंडसंठिया। चत्तारि कसाया, सण्णाओ चत्तारि छ लेस्साओ पंच इंदिया, पंच समुग्घाया आदिल्ला। सन्नी नो असन्नी, तिविहवेया छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दिट्ठी तिविहा वि तिण्णि दंसणा णाणी वि अन्नाणी वि जे नाणी ते अत्थेगइया दुण्णाणी अत्थेगइया तिन्नाणी, जे दुन्नाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य, जे तिन्नाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी। एवं अन्नाणी वि, जोगो तिविहो। उवओगे दुविहे। आहारो छद्दिसिं उववाओ नेरइएहिंतो जाव अहे सत्तमा, नेरइएहिंतो तिरिक्खजोणिएहिंतो सव्वेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमग अंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो देवेहिंतो जाव सहस्सारा। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी दुविहा वि मरंति। अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव अहेसत्तमा, तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारा। चउगइया चउआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता, से त्तं जलयरा" ॥ सू० २४ ॥

छाया—अथ के ते गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? गर्भव्युत्क्रान्तिक पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–जलचराः स्थलचराः खेचराः। अथ के ते जलचराः, जलचराः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा मत्स्याः कच्छपाः मकराः ग्राहाः शिशुमाराः, सर्वेषां भेदो भणितव्य स्तथैव यथा प्रज्ञापनायां यावत् ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। तेषां खलु भदन्त ! जीवानां कतिशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! चत्वारि शरीराणि प्रज्ञप्तानि तद्यथा–औदारिकं वैक्रियं तैजसं कार्मणम्। शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण योजनसहस्रम्। षड्विधसंहननिनः प्रज्ञप्ता तद्यथा-वज्रऋषभनाराचसंहनिनः, ऋषभनाराचसंहननिन. नाराचसंहननिनः, अर्द्धनाराचसंहननिनः, कीलिकासंहननिन, सेवार्त्तसंहननिन। षड्विध-

संस्थिताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा समचतुरस्रसंस्थिताः, न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थिताः, सादिसंस्थिता कुब्जसंस्थिता वामनसंस्थिताः, हुण्डसंस्थिताः । चत्वारः कषायाः, संज्ञाश्चतस्रः । लेश्याः षट् । पञ्चेन्द्रियाणि । पञ्च समुद्घाताः आद्याः, संज्ञिनो नो असंज्ञिनः, त्रिविधवेदाः, षट् पर्याप्तयः षडपर्याप्तयः दृष्टय स्त्रिविधा अपि, त्रीणि दर्शनानि, ज्ञानिनोऽपि अज्ञानिनोऽपि ये ज्ञानिन स्ते सन्त्येकके द्विज्ञानिनः, सन्त्येकके त्रिज्ञानिनः, ये द्विज्ञानिनस्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनश्च श्रुतज्ञानिनश्च । ये त्रिज्ञानिनस्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनः अवधिज्ञानिनः । एवमज्ञानिनोऽपि योगस्त्रिविधः, उपयोगो द्विविधः । आहारः षड्दिशि, उपपातो नैरयिकेभ्यो यावदधः सप्तमी, नैरयिकेभ्यः तिर्यग्योनिकेभ्यः सर्वेभ्यः असंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः मनुष्येभ्य अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः देवेभ्यो यावत् सहस्रारात् । स्थिति जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः, द्विविधा अपि म्रियन्ते अनन्तरमुद्वृत्य नैरयिकेषु यावदधःसप्तमी, तिर्यग्योनिकेषु मनुष्येषु सर्वेषु देवेषु यावत् सहस्रारात्, चतुर्गतिकाः चतुरागतिकाः परीता असंख्याता प्रज्ञप्ताः, ते एते जलचरा ॥ सू० २५ ॥

टीका—'से किं तं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' अथ के ते गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ! गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति—'गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता' गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः त्रिविधा त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः 'तं जहा' तद्यथा

संमूर्च्छिम पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों का निरूपण करके अब सूत्रकार गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकों का निरूपण करते हैं—

'से किं तं गब्भवक्कंतिय पंचिंदियतिरिक्खजोणिया—इत्यादि ॥सू० २३॥

टीकार्थ—"से किं तं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" हे भदन्त ! गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकों का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद हैं ! उत्तर में प्रभु कहते है—"गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! गर्भज पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव तीन प्रकार के कहे गये हैं—"तं जहा" जो इस प्रकार

સંમૂર્છિમ પંચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ગર્ભજ પંચેદ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવાનું નિરૂપણ કરે છે.—"से किं तं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से किं तं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" હે ભગવન્ ગર્ભવ્યુત્ક્રાંતિક પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકજીવોનું શું લક્ષણ છે? અને તેના ભેદો કેટલા કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ગર્ભજ પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકજીવો ત્રણ પ્રકારના કહેલા છે. तं जहा"

'जलयरा थलयरा खहयरा' जलचराः स्थलचराः खेचराः, तत्र जले चरन्ति-गच्छन्तीति जलचराः, एवं स्थलचराः खेचरा अपि ज्ञातव्याः 'से किं तं जलयरा' अथ के ते जलचराः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति-'जलयरा पंचविहा पन्नत्ता' जलचराः पञ्चविधाः पञ्चप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति । 'तं जहा' तद्यथा-'मच्छा' मत्स्याः 'कच्छभा' कच्छपाः कूर्माः 'मगरा' मकराः 'गाहा' ग्राहाः 'सुंसुमारा' शिशुमाराः ते एते पञ्च जलचराः ।

'सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए' सर्वेषां मत्स्यकच्छपमकरग्राहशिशुमाराणामवान्तरभेदो भणितव्य स्तथैव तेनैवप्रकारेण यथा प्रज्ञापनासूत्रे कथितः ।

एते मत्स्यादिभेदा अत्रैव संमूच्छिमजलचरप्रकरणाज्ज्ञातव्या इति ॥ कियत्पर्यन्तं प्रज्ञापनाप्रकरणमत्राध्येतव्यं तत्राह सूत्रकारः 'जाव' इत्यादि, 'जाव जे यावन्ने तहप्पगारा' यावद् ये चान्ये तथाप्रकाराः-कथित मत्स्यादि सदृशास्ते सर्वेऽपि मात्स्यादिजलचरतया प्रति-

---

से हैं-"जलयरा, थलयरा, खहयरा" जलचर, स्थलचर, और खेचर जो जल में रहते हैं वे जलचर, जो स्थल पर चलते है वे स्थलचर और जो आकाश में उड़ते हैं वे खेचर हैं । "से किं तं जलयरा" हे भदन्त ! जलचर कितने प्रकार के हैं ? "जलयरा पंचविहा पण्णत्ता" हे गौतम ! जलचर पांच प्रकार के है "तं जहा" जैसे-"मच्छा कच्छभा, मगरा, गाहा, सुंसुमारा" मच्छ, कच्छप, मकर, ग्राह और शिशुमार "सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा-पण्णवणाए" प्रज्ञापना में इन सबका-मत्स्य, कच्छप, मकर, ग्राह और शिशुमार के भेद का जैसा कथन किया गया है वैसा ही यहां पर भी कहलेना चाहिये । ये सब मत्स्यादिके भेद यहां पर संमूच्छिम जलचर प्रकरण से जान लेना चाहिये और प्रज्ञापनासूत्र का इस सम्बन्ध में प्रकरण "जाव जे यावन्ने तहप्पगारा" इस सूत्र तक का ही यहां ग्रहण करना चाहिये । मत्स्यादि जलचर रूप से माने गये गर्भज जीव ',समासओ

તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "जलयरा, थलयरा, खहयरा" જલચર, સ્થલચર, અને ખેચર. જે જલમાં રહે છે તેવા જીવો જલચર કહેવાય છે. સ્થળ કહેતા જમીનપર જે જીવો રહે છે, તે સ્થલચર કહેવાય છે અને જે જીવો આકાશમાં ઉડે છે, તેવા જીવો ખેચર કહેવાય છે. 'से किं तं जलयरा" હે ભગવન્ જીલચર જીવો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"जलयरा पंचविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! જલચર જીવો પાંચ પ્રકારના કહેલાછે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "मच्छा, कच्छभा, मगरा, गाहा सुंसुमारा," મચ્છ-માછલાં કચ્છપ-કાચબા, મકર-મઘર, ગ્રાહ અને સિંસુમાર "सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए" પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં આ મત્સ્ય, કચ્છપ, મકર, ગ્રાહ અને સિંસુમાર એબધાના જે પ્રમાણે ભેદો કહ્યા છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ તે તમામભેદો સમજીલેવાં આ મત્સ્ય વિગેરેનાભેદો અહિયાં સમૂચ્છિંમ જલચર પ્રકરણમાંથી સમજીલેવા. અને પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રનું આ સંબંધનું પ્રકરણ "जाव जे यावन्ने तहप्पगारा" કથન પર્યંત જ અહિયા ગ્રહણ કરવું. મત્સ્ય વિગેરે જલચર પણાથી માનેલા ગર્ભજ જીવો

पत्तन्या., 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते मत्स्यादयः समासतः—संक्षेपेण द्विविधा.—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ता'— कथिता । 'तं जहा' तद्यथा 'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्च ॥

गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरजीवाना शरीरादिद्वारजातं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह—'तेसि णं भंते' इत्यादि. 'तेसि णं भते ? जीवाणं' तेषां गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचराणां खलु भदन्त ! मत्स्यादिजीवानाम 'कइ सरीरगा पन्नत्ता' कति—कियत्संख्यकानि शरीराणि प्रज्ञप्तानि—इति प्रश्न ? भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता चत्वारि शरीराणि प्रज्ञप्तानि कथितानि, "तं जहा' तद्यथा—'ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए' औदारिकं वैक्रियं गर्भव्युत्क्रान्तिकानां वैक्रियशरीरस्यापि सभवात् , तैजस कार्मणं चेति चत्वारि शरीराणि भवन्तीति १ ।

दुविहा पन्नत्ता" संक्षेप से दो प्रकार के कहे गये है "तं जहा" जैसे—"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" पर्याप्तगर्भजजलचर और अपर्याप्त गर्भज जलचर । जिनके अपनी २ योग्य पर्याप्तियां पूर्ण हो जाती है वे पर्याप्त और जिनके कोई भी पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती है वे अपर्याप्त कहलाते है । इनके शरीरादि द्वारो को जानने के लिये गौतम प्रभु से पूछते हैं—"तेसि णं भंते जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता ?" हे भदन्त ! इन गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर जीवों के कितने शरीर होते हैं । भगवान् कहते हैं—"गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता" इन गर्भज जलचर जीवों के चार शरीर कहे गये हैं—"तं जहा" जैसे—"ओरालिए, वेउव्विए तेयए, कम्मए" औदारिक, वैक्रिय तेजस और कार्मण गर्भज स्थलचर जीवों के वैक्रिय शरीर भी सभवित हो सकता है। इसलिए यहा वैक्रिय शरीर को लेकर चार शरीर प्रकट

"समासओ दुविहा पण्णत्ता" सक्षेपथी બે પ્રકારના કહેલા છે. तं जहा" જે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" પર્યાપ્ત ગર્ભજ જલચર અને અપર્યાપ્ત ગર્ભજ જલચર જેવોને પોત પોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થઈ જાય છે તેઓ પર્યાપ્ત કહેવાય છે, અને જેઓને પર્યાપ્તિ પૂર્ણ હોતી નથી. તેઓ અપર્યાપ્ત કહેવાય છે. હવે તેના શરીર વિગેરે દ્વારોને જાણવા માટે ગૌતમસ્વામી પ્રભુ ને પૂછે છે કે—"तेसि णं भंते ! जीवाणं कइसरीरगा पण्णत्ता" હે ભગવન્ આ ગર્ભવ્યુત્ક્રાંતિક જલચર જીવોને કેટલા શરીરો હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता" આ ગર્ભજ જલચર જીવોને ચાર શરીરો કહ્યા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए," ઔદારિક, વૈક્રિય, તૈજસ, અને કાર્મણ, ગર્ભજ સ્થલચર જીવોને વૈક્રિયશરીર પણ સભવી શકે છે. તેથી અહિયાં વૈક્રિય શરીરને લઈને ચાર શરીરો

अवगाहनाद्वारे—'सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं' गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचरजीवानां शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागप्रमिता भवति 'उक्कोसेणं जोयण सहस्सं' उत्कर्षेण शरीरावगाहना योजनसहस्रपरिमिता भवति इति ²

संहननद्वारे—'छव्विह संघयणी पन्नत्ता' षड्विधसंहननिनः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा—'वइरोसभनारायसंघयणी' वज्रऋषभनाराचसंहननिनः १, 'उसभनारायसंघयणी' ऋषभनाराच-संहननिन २, 'नारायसंघयणी' नाराचसंहननिनः ३, 'अद्धनाराय संघयणी' अर्द्धनाराच संहननिनः ४, 'कीलियासंघयणी' कीलिका संहननिनः ५, 'सेवट्ट संघयणी' सेवार्त्त संहननिन ६, एवं षट् संहननिनः गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरा भवन्तीति ।६।

एतेषां षण्णां संस्थानानां नामस्वरूपप्रतिपादिके द्वे गाथे प्रोच्येते—

'वज्जरिसहनारायं १, पढमं बीयं च रिसहनारायं २ ।
नाराय ३, मद्धनारायं ४, कीलिया ५ तह य छेवट्टं ६, ॥१॥ इति ॥

किये गये है। अवगाहनाद्वार में इसके "सरीरोगाहणा" शरीर की अवगाहना "जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागा" जघन्य से अङ्गुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है। तथा—"उक्कोसेणं" उत्कृष्ट से "जोयणसहस्सं" एक हजार योजन प्रमाण होती है। संहनन द्वार में—"छव्विहा संघयणी पन्नत्ता" ये छह प्रकार के संहनन वाले होते हैं। "तं जहा"—जैसे—ये "वइरोसभनाराय संघयणी" वज्र ऋषभ नाराच संहनन वाले भी होते हैं। "उसभनारायसंघयणी" ऋषभनाराच सहनन वाले भी होते हैं "नाराय संघयणी" नाराच संहनन वाले भी होते हैं। "अद्धनाराय संघयणी" अर्द्धनाराच संहनन वाले भी होते हैं। "कीलिया संघयणी" कीलिका सहनन वाले भी होते हैं और "सेवट्ट संघयणी" सेवार्त संहनन वाले भी होते हैं। इस प्रकार से ये गर्भज जलचर जीव छह संहनन वाले होते हैं। इन संहननों के स्वरूप को कहने वाली ये दो गाथाएँ हैं—

કહ્યા છે. અવગાહના દ્વારમાં-તેઓને "सरीरोगाहणा" શરીરની અવગાહના "जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागा" જઘન્યથી આંગળના અસખ્યાતમાં ભાગપ્રમાણુની હોય છે. તથા "उक्कोसेणं" ઉત્કૃષ્ટથી 'जोयणसहस्सं" એક હજાર યોજન પ્રમાણુની હોય છે, સંહનનદ્વારમાં "छव्विहा संघयणी पण्णत्ता" તેઓ છ પ્રકારના સંહનનવાળા હોય છે. "तंजहा" તે છ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે.—"वइरोसभनारायसंघयणी" વજ્ર, ઋષભ નારાચ સંહનન-વાળા પણ હોય છે, "उसभनारायणसंघणी" ઋષભ નારાચ સહનનવાળા પણ હોય છે. "नारायसंघयणी" નારાચ સંહનનવાળા પણ હોય છે "अद्धनारायसंघयणी" અર્ધનારાચ સંહનનવાળા પણ હોય છે. "कीलियासंघयणी" કીલીકા સંહનનવાળા પણ હોય છે. અને "सेवट्टसंघयणी" સેવાર્ત સંહનનવાળા પણ હોય છે આ રીતે આ ગર્ભજ જલચર જીવો છ સંહનનવાળા હોય છે. આ સહનનોનુ સ્વરૂપ બતાવવાવાળી બે ગાથાઓ નીચે પ્રમાણેની

रिसहो य होइ पट्टो, वज्जं पुण कीलिया मुणेयव्वा ।
उभयो मक्कड वंधो, नारायं तं वियाणाहि' ॥२॥ इति ॥
छाया—वज्रऋषभनाराचं प्रथमं द्वितीयं च ऋषभनाराचम् ।
नाराचमर्द्धनाराचं, कीलिका तथा च सेवार्त्तम् ॥१॥
ऋषभश्च भवति पट्टो, वज्रं पुनः कीलिका ज्ञातव्या ।
उभयतो मर्कट बन्ध' नाराचं तद् विजानीहि ॥२॥ इति ॥

"वज्जरिसह०' इत्यादि, 'रिसहो य' इत्यादि ।

जिसके द्वारा शरीर पुद्गल दृढता को प्राप्त करते हैं उसका नाम संहनन है यह संहनन हड्डियों की रचना विशेष रूप होता है अथवा शक्ति विशेष रूप होता है । यह संहनन छह प्रकार का कहा गया है । उनके नाम इस प्रकार से हैं—पहला—१ वज्र ऋषभनाराच संहनन (१), इस संहनन में वज्रनाम की हड्डी कीलक के आकार की होती है और इसके ऊपर एक हड्डी ऐसी होती है जो परिवेष्टन पट्ट की आकृति के जैसी होती है, इसका नाम ऋषभ है। तथा दोनों तरफ जो मर्कट बन्ध होता है उसका नाम नाराच हैं, तथा च दोनों तरफ जो मर्कटबन्ध से बँधी हुई एवं पट्टकी आकृति जैसी तृतीय हड्डी से परिवेष्टित हुई ऐसी दो हड्डियों के ऊपर जो इन तीनो हड्डियों को बहुत अधिक दृढ करने के लिये कीले की जैसी गढी हुई हड्डी रहती है कि जिसका नाम वज्र अस्थि है ऐसी विशेष रचना जिस शरीर में होती है वह वज्रऋषभनाराच संहनन है । तात्पर्य इस कथन का केवल यही है कि जिस शरीर के वेष्टन

છે.—"वज्जरिसह" ઇત્યાદિ "रिसहो य" ઇત્યાદિ જેનાથી શરીર પુદ્ગલ દૃઢ બને તેનું નામ સંહનન છે આ સંહનન હાડકાના રચના વિશેષ રૂપ હોય છે. અથવા શક્તિ વિશેષ રૂપ હોય છે, આ સંહનના છ પ્રકાર કહેવાય છે. તેના નામો આ પ્રમાણે છે પહેલા સંહનનનું નામ વજ્ર-ઋષભનારાચ છે. બીજા સંહનનનું નામ ઋષભનારાચ છે ત્રીજા સંહનનનું નામ નારાચ છે. ચોથા સંહનનનુ નામ અર્ધનારાચ છે. પાંચમાં સંહનનનું નામ 'કીલકા' છે. અને છઠ્ઠા સંહનનનું નામ 'સેવાર્ત' સંહનન છે. આ છ સંહનનો છે. ॥૧॥ આ સંહનનોનો શબ્દાર્થ આ પ્રમાણે છે.—ઋષભ એ નામ પટ્ટનું છે, કીલિકા એ નામનું વજ્ર છે, અને જે બન્ને બાજુથી મર્કટ બંધવાળું હોય છે તેનું નામ 'નારાચ' છે. ॥૨॥ આ રીતે જે સંહનન હોય તે વજ્રઋષભનારાચ સંહનન છે તથા બન્ને બાજુ મર્કટના બંધથી બંધાયેલ અને પટ્ટની આકૃતી જે ત્રીજા હાડકાથી વીંટળાયેલ એવા બે હાડકાઉપર જે એ ત્રણે હાડકાને ઘણુ વધારે મજબૂત કરવા માટે ખીલાની જેમ લાગેલ રહે કે જેનુ નામ વજ્ર છે આ રીતની વિશેષ રચના જે શરીરમાં હોય તે વજ્રઋષભ નારાચસંહનન છે તાત્પર્ય આ કથનનું એ છે કે-જે શરીરનું વેષ્ટન ખીલા અને હાડકા વજ્ર મય હોય છે. એજ વજ્ર

संस्थानद्वारे—'छविहा संठिया पन्नत्ता' गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचराः षड्विधसंस्थिताः षड्विधेन–षड्विधसंस्थानेन संस्थिताः प्रज्ञप्ताः–कथिताः । षड्विधत्वमेव दर्शयति–'तं जहा'

कीलें और हड्डियाँ वज्रमय होती है वही वज्रऋषभनाराच संहनन है। व्यवहार में भी जिस–प्रकार दो काष्ठों के फलकों को जोड़ने के लिये पहिले तो लोहे की पंच से उन्हें जकड़ दिया जाता है और उस पंच के ऊपर विशेष मजबूती के लिये कीलें ठोक दी जाती है। इस प्रकार की रचना जिस शरीर में हड्डियों की होती है वही वज्रऋषभनाराच संहनन हैं।

दूसरा संहनन–ऋषभनाराच संहनन है–इस संहनन में वज्रनाम की अस्थि नहीं होती है। केवल ऋषभ और नाराच ही होते हैं–तृतीय संहनन नाराच है–इस संहनन में वज्र और ऋषभ ये दोनों नहीं होते है केवल नाराच–उभयतः मर्कटबन्ध–ही होता है। चतुर्थ–संहनन अर्धनाराच है–इस संहनन में एक तरफ तो नाराच होता है और दूसरी ओर वज्र रहता है। पांचवां–संहनन है कीलिका–इस संहनन में हड्डियां, वज्र नाम की कीलिका मात्र से बंधी हुई रहती है। छट्ठा–संहनन है सेवार्त–इस संहनन में हड्डियां एक दूसरी हड्डी के कोने से मिली जुली रहती हैं यह संहनन तेल लगाना, तैल से मालीस करना थकावट होने पर विश्राम करना आदि रूप परिशीलता की अपेक्षा रखता है। इस प्रकार से यह छह संहननों का वर्णन हैं।

संस्थानद्वार में–'छव्विहा संठिया पन्नत्ता'' गर्भज जलचर जीवो के छहों प्रकार के

ઋષભનારાચસંહનન કહેવાય છે વ્યવહારમાં પણ જેરીતે બેકાષ્ટ ખંડોને જોડવા માટે પહેલાં લોખંડના પંચથી તેને જકડી લેવામાં આવે છે અને તે પંચ ઉપર વધારે પ્રકારની મજબૂતી માટે ખીલા મારવામાં આવે છે. આવા રચના જે શરીરના હાડકાની હોય છે એજ વજ્રઋષભનારાચસંહનન કહેવાય છે. ૧

બીજું સંહનન ઋષભનારાચ છે આ સંહનનમાં વજ્ર નામનું હાડકું હોતું નથી કેવળ ઋષભ અને નારાચ જ હોય છે ત્રીજુ સંહનન નારાચ છે આ સંહનનમાં વજ્ર અને ઋષભ એ બન્ને હોતા નથી. કેવળ નારાચ—ઉભયત મર્કટ બંધજ હોય છે.

ચોથું સંહનન અર્ધનારાચ છે. આ સંહનનમાં એક–તરફ નારાચ હોય છે અને બીજી તરફ વજ્ર હોય છે. પાંચમાં સંહનનનું નામ કીલીકા છે. આ સંહનનમાં હાડકા વજ્ર નામના ખીલાથી બંધાઈ રહે છે છઠ્ઠુ સંહનન સેવાર્ત છે આ સંહનનમાં હાડકા એક બીજાના ખુણાથી મળીને રહે આ સંહનન તેલ લગાવવું તેલ માલીસ કરવી થાક લાગે ત્યારે આરામ કરવા રૂપ પરિશીલતાની અપેક્ષા રાખે છે આ રીતે આ છ સંહનનનું વર્ણન છે

સંસ્થાનદ્વારમાં ''छव्विहा संठिया पण्णत्ता'' ગર્ભજ જલચર જીવો છએ પ્રકારના

इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'**समचउरंससंठिया**' समचतुरस्रसंस्थिताः, समाः यथावस्थित-प्रमाणाऽविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयश्चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः चतुष्कोणशरीरावयवरूपाः यत्र तत् समचतुरस्रं संस्थानं प्रथमं तेन संस्थिताः। '**णग्गोधपरिमंडलसंठिया**' न्यग्रोधपरिमण्डल-संस्थिताः न्यग्रोधवत् परिमण्डलं यस्य तन्न्यग्रोधपरिमण्डलम्, यथा न्यग्रोधवृक्ष उपरि सम्पूर्ण-प्रमाणोऽधस्तु अल्पप्रमाणः, तथा यत् संस्थानं नाभेरुपरि संपूर्णं नाभेरधस्तु न संपूर्णं अपितु हीनं तत् न्यग्रोधपरिमण्डलं द्वितीयं संस्थानं तेन संस्थिताः। '**साइसंठिया**' सादिसंस्थिताः, आदिरु-त्सेधाख्यो नाभेरधस्तनो देहभागः, आदिना—नाभेरधस्तनदेहभागेन यथोक्तप्रमाणलक्षणेन सह वर्तते इति सादिः उत्सेधबहुलमित्यर्थः,

अत्र यद्यपि सर्वमेव शरीरमादिना सह वर्तते एव तथापि सादित्वविशेषणस्य सार्थक्या-न्यथाऽनुपपत्त्या विलक्षण एव कश्चित् प्रमाणलक्षणोपपन्नआदिरिह गृह्यते, अतएवोत्सेधबहुलमिति

संस्थान होते हैं। जैसे—"**समचउरंससंठिया**" समचतुस्र संस्थान वाले १, "**नग्गोधपरिमंडलसंठिया**" न्यग्रोध परिमण्डलसंस्थान वाले २, "**साइसंठिया**" सादि संस्थान वाले ३ "**खुज्जसंठिया**" कुब्ज संस्थान वाले ४ "**वामण संठिया**" वामन संस्थान वाले ५ "**और हुंड संठिया**" हुण्डक संस्थान वाले होते हैं, ६ जिस—संस्थान में शारीरिक अवयव चतुष्कोण यथावस्थित प्रमाण के अनुसार होते हैं वह समचतुरस्र संस्थान है।

जिस संस्थान में शरीर का आकार न्यग्रोध वट वृक्ष के जैसे ऊपर में तो सम्पूर्ण प्रमाणोपेत होता है और नीचे में हीन प्रमाण वाला होता है ऐसा वह संस्थान न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान है, इस संस्थान में नाभि से ऊपर तक तो अवयव सम्पूर्ण आकार वाले होते हैं और नीचे के अवयव तीन होते हैं।२। नाभि से नीचे का जो भाग है वह आदि है। इस नाभि से नीचे के देह भाग रूप आदि से जो शरीर का आकार युक्त होता है वह सादि संस्थान है। यद्यपि विचार किया जाय तो—समस्त शरीर ही आदि से युक्त है। अतः

સંસ્થાનવાળા હોય છે. જેમકે—"**समचउरंससंठिया**" સમચતુરસ્ર સંસ્થાનવાળા ૧, "**नग्गोधपरिमंडलसंठिया**" ન્યગ્રોધ પરિમંડલ સંસ્થાનવાળા ૨, "**साइसंठिया**" સાદિ સંસ્થાનવાળા ૩, "**खुज्जसंठिया**" કુબ્જ સંસ્થાનવાળા ૪, "**वामण संठिया**" વામન સંસ્થાનવાળા ૫, અને "**हुंडसंठिया**" હુંડ સંસ્થાનવાળા ૬, હોય છે. જે સંસ્થાનમાં શરીરના અવયવો ચતુષ્કોણ યથાવસ્થિત પ્રમાણ અનુસાર હોય છે, તે સમચતુરસ્ર સંસ્થાન કહેવાય છે ૧ જે સંસ્થાનમાં શરીરનો આકાર ન્યગ્રોધ કહેતાં વડના ઝાડના જેવો ઉપર તો સંપૂર્ણ પ્રમાણવાળો હોય અને નીચે હીન-ઓછા પ્રમાણવાળો હોય તેવા સંસ્થાનને "ન્યગ્રોધપરિમંડલ" સંસ્થાન કહેવાય છે. આ સંસ્થાનમાં ડુંટીથી ઉપર સુધીના અવયવોતો સંપૂર્ણ આકારવાળા હોય છે, અને નીચેના અવયવો હીન-ન્યૂન હોય છે. ૨ નાભીથી નીચેનો જે ભાગ છે, તે આદિ છે. આ નાભીથી નીચેના દેહ ભાગરૂપ આદિથી જે શરીરનો આકાર યુક્ત હોય છે, તે સાદિ સંસ્થાન છે, જો કે વિચાર કરવામાં આવે તો

कथ्यते, अयं भावः—यत् संस्थानं नाभेरधोदेशे प्रमाणोपपन्नमुपरि च हीनं तत् तृतीयं सादिसंस्थानं तेन संस्थिताः। 'खुज्जसंठिया' कुब्जसंस्थिताः, यत्र शिरो ग्रीवाहस्तपादादिकं च यथोक्तप्रमाणलक्षणोपेतं भवेत् उर उदरादिकं च मण्डलम्—अवनतोन्नतं भवेत् तत् कुब्जसंस्थानं चतुर्थं तेन संस्थिताः॥ 'वामणसंठिया' वामनसंस्थिताः यत्रोरः उदरादिकं प्रमाणलक्षणयुक्तं भवेत् हस्तपादादिकं तु हीन ह्रस्वं च भवति, तद् वामनं पञ्चमसंस्थानं तेन संस्थिताः। 'हुंडसंठिया' हुण्डसंस्थिताः, यत्र सर्वेऽपि शरीरावयवाः, स्वस्वलक्षणरहिता भवेयुस्तद् हुण्डसंस्थानं षष्ठं तेन संस्थिता इति, अत्र संस्थानानां नामलक्षणप्रतिपादकं गाथाद्वयं प्रोच्यते——

इस सादित्व विशेषण की सार्थकता की अन्यथा उपपत्ति न होने के कारण विलक्षण ही प्रमाण लक्षण वाला आदि यहां ग्रहण किया जाता है यहां ऐसा कथन जानना चाहिये कि जो संस्थान नाभि से अधो देश में तो प्रमाणोपेत होता है और नाभि से ऊपर में हीन अर्थात् न्यूनाधिक होता है ऐसा जो संस्थान होता है वह सादि संस्थान है, इस संस्थान में नाभि से नीचे के अवयव विस्तृत होते हैं और नाभि से ऊपर के अवयव संकुचित होते हैं।३। 'कुज्झसंठिया' इस संस्थान में शिर और ग्रीवा एवं हाथ पांव आदि अवयव तो यथोक्त प्रमाणोपेत होते है पर छाती और पेट आदि अवयव मण्डल रूप—यथोक्त प्रमाणोपेत नहीं—होते हैं। अर्थात् इस संस्थान में छाती या पीठ में कूबड़ निकल आती है। ऐसे सस्थान को कुब्ज संस्थान कहा गया है ४। जिस संस्थान में छाती और पेट आदि अवयव तो प्रमाणोपेत हों पर हाथ पैर आदि प्रमाणोपेत न हो—हीन—हो वह बामन सस्थान है ५। जिस संस्थान में शारीरिक समस्त अवयव अपने २ लक्षण से विहीन हों—वह हुण्डक

સંપૂર્ણ શરીર જ આદિથી યુક્ત છે, તેથી આ સાદિત્વ વિશેષણનું સાર્થક પણું અન્યથા ઉત્પન્ન ન થવાને કારણે અહિયાં વિલક્ષણ જ પ્રમાણ લક્ષણવાળું આદિ ગ્રહણ કરવામાં આવે છે અહિયાં એવું કથન સમજવું કે—જે સંસ્થાન નાભિના નીચેના ભાગમાં તો પ્રમાણોપેત હોય અને નાભીની ઉપર હીન-અર્થાત્ ન્યૂનાધિક હોય એવા સંસ્થાનને સાદિસંસ્થાન કહેવાય છે. આ સંસ્થાનમાં નાભીની નીચેના અવયવો વિસ્તૃત-વિસ્તારવાળા હોય છે અને નાભીની ઉપરના અવયવ સંકુચિત હોય છે. ૩,

"खुज्जसंठिया" કુબ્જ સંસ્થાનમાં માથુ અને ગળું તથા હાથ, પગ વિગેરે અવયવો તો બરોબર પ્રમાણયુક્ત હોય છે, પરંતુ છાતી અને પેટ વિગેરે અવયવો મંડલરૂપ-બરોબર પ્રમાણવાળા હોતા નથી, અર્થાત્ આ સંસ્થાનમાં છાતી અગર વાંસામાં કૂબડ-ખૂંધ નીકળી આવે છે, તેવા સંસ્થાનને 'કુબ્જ સંસ્થાન કહેવામાં આવે છે ૪, જે સંસ્થાનમાં છાતી અને પેટ વિગેરે અવયવો બરોબર પ્રમાણયુક્ત હોય, પરંતુ હાથ, પગ વિગેરે અવયવો બરોબર પ્રમાણયુક્ત ન હોય અર્થાત્ હીન-ન્યૂનાધિક હોય તેવા સંસ્થાનને 'વામન સંસ્થાન કહેવાય છે ૫. જે સંસ્થાનમાં શરીરના સઘળા અવયવો પોતપોતાના લક્ષણોથી હીન હોય

'समचउरंसं नग्गोहपडि मंडले साइखुज्जवामणए।
हुंडे वि य संठाणे जीवाणं छम्मुणेयव्वा' ॥१॥
तुल्लं वित्थडबहुलं, उस्सेहबहुं च मडह कोट्ठं च।
हेठिल्ल कायमडहं सव्वत्था संठियं हुंडं ॥२॥)

छाया—समचतुरस्रं न्यग्रोधपरिमण्डलं सादिकुब्जं वामनम्
हुण्डमपि च संस्थानं जीवानां षड् ज्ञातव्यानि ॥१॥
तुल्यं विस्तरबहुल मुत्सेधबहुलं च मडह कोष्ठं च।
अधस्तन कायमडहं सर्वत्रा संस्थितं हुण्डम् ॥२॥ इतिच्छाया

एतैः षड्भिरेव संस्थानैः संस्थिता गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरजीवा भवन्तीति संस्थानद्वारम् ॥४॥

कषायद्वारे—'चत्तारि कसाया' चत्वारः कषायाः क्रोधमानमायालोभाद्या भवन्तीति कषायद्वारम् ॥५॥

संज्ञाद्वारे—'सण्णाओ चत्तारि' संज्ञाश्चतस्र आहारभयमैथुनपरिग्रहाद्या भवन्तीति संज्ञाद्वारम् ॥६॥

लेश्याद्वारे—'छलेस्साओ' लेश्याः षट्-कृष्णनीलकापोततैजसपद्मशुक्लाद्या भवन्तीति लेश्याद्वारम् ॥७॥

संस्थान है ६। ये गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर जीव इन छहों संस्थान वाले होते है यहां संस्थानों के नाम और लक्षण को प्रतिपाद करने वाली दो गाथाएँ हैं—"समचउरंस" इत्यादि।

'तुल्लं वित्थड' इत्यादि। इनका अर्थ उपर आचुका है।

कषायद्वार में—चत्तारि कसाया" इन गर्भज जलचर जीवों को क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषायें होती हैं। सज्ञाद्वार में "सण्णाओ चत्तारि" इनको आहार, भय, मैथुन और परिग्रह ये चार सज्ञाएँ होती है। लेश्याद्वार मे—"छ लेस्साओ" इनको

તેવા સંસ્થાનને 'હુંડક' સંસ્થાન કહેવાય છે. ૬, આ ગર્ભજ વ્યુત્ક્રાંતિક જલચર જીવો આ છએ સંસ્થાનવાળા હોય છે. આ સંસ્થાનો અને તેના નામો બતાવનારી બે ગાથાઓ આ નીચે પ્રમાણેની છે.—"समचउरंस" ઈત્યાદિ "तुल्लं वित्थड' ઈત્યાદિ આ ગાથાઓનો અર્થ ઉપરના કથનમાં આવી જાય છે.

કષાયદ્વારમાં—"चत्तारि कसाया" આ ગર્ભજ જલચર જીવોને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ આ ચાર કષાયો હોય છે

સંજ્ઞાદ્વારમાં—"सण्णाओ चत्तारि" તેઓને આહાર, ભય, મૈથુન, અને પરિગ્રહ આ ચાર સંજ્ઞાઓ હોય છે. લેશ્યાદ્વારમાં—"छलेस्साओ" તેઓને કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત, તૈજસ,

इन्द्रियद्वारे--'पंच इंदिया' पञ्च-श्रोत्रचक्षुर्घ्राणरसनस्पर्शनाख्यानि इन्द्रियाणि भवन्तीति इन्द्रियद्वारम् ॥८॥

समुद्घातद्वारे--'पंच समुग्घाया आदिल्ला' समुद्घाताः पञ्च आद्या वेदनाकषाय-मारणान्तिकवैक्रियतैजसाख्या भवन्तीति समुद्घातद्वारम् ॥९।

संज्ञिद्वारे—'सण्णी नो असण्णी' गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरजीवाः संज्ञिनो भवन्ति नत्वसंज्ञिनो भवन्ति तेषां मनसः सद्भावात्, इति संज्ञाद्वारम् ॥१०॥ वेदद्वारे-'तिविहवेया' इमे जलचरजीवा स्त्रिविधवेदा स्त्रिप्रकारकवेदवन्त स्त्रीपुनपुंसकवेदा भवन्तीति वेदद्वारम् ॥११॥

पर्याप्तिद्वारे—'छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ' जलचरजीवानां षट् पर्याप्तयः षट् अपर्याप्तयश्च भवन्तीति पर्याप्तिद्वारम् ।१२। दृष्टिद्वारे-'दिट्ठी तिविहा वि' दृष्टयस्त्रिविधा अपि सम्यग्दृष्टिर्मिथ्यादृष्टिर्मिश्रदृष्टिश्चेति तिस्रोऽपि दृष्टयो भवन्तीति दृष्टिद्वारम् ॥१३॥ दर्शन-

---

कृष्ण, नील, कापोत, तैजस, पद्म और शुक्ल ये छहो लेश्याएँ होती हैं। इन्द्रिय द्वार में इनको "पंच इंदिया" कर्ण, चक्षु, घ्राण, रसन, स्पर्शन-ये पांच इन्द्रियां होती हैं। समुद्घात द्वार में "पंच समुग्घाया आदिल्ला" इनके आदि के वेदना, कषाय मारणान्तिक, वैक्रिय और तैजस ये पांच समुद्घात होते हैं। संज्ञिद्वार में ये 'सण्णी नो असण्णी' संज्ञी ही होते हैं असंज्ञी नहीं होते हैं। क्योंकि गर्भज जलचर जीवों को मन का सद्भाव होता है। वेदद्वार में "तिविहा वेदा" ये जलचर जीव तीनो वेद वाले होते है-स्त्री वेदवाले भी होते है, और पुरुष वेद वाले भी होते हैं, नपुंसक वेद वाले भी होते हैं। पर्याप्तिद्वार में-इनको "छ प्पज्जत्तीओ, छ अपज्जतीओ" छह पर्याप्तियां-होती है और छह अपर्याप्तियां होती हैं। अपनी अपनी योग्य पर्याप्तिकी ही पूर्णता नहीं होनी यही अपर्याप्तता है। दृष्टिद्वार में "दिट्ठी तिविहा वि" ये सम्यग्दृष्टि भी होते हैं, मिथ्यादृष्टि भी होते है और मिश्र

પદ્મ અને શુક્લ આ છએ લેશ્યાઓ હોય છે. ઇન્દ્રિયદ્વારમાં તેઓને "पंच इंदिया" કાન, ચક્ષુ, ઘ્રાણ-નાક, રસના, સ્પર્શન આ પાંચ ઇન્દ્રિયો હોય છે. સમુદ્ઘાતદ્વારમા—"पंच-समुग्घाया आदिल्ला" તેમને આદિના વેદના, કષાય, મારણાન્તિક, વૈક્રિય, અને તૈજસ આ પાંચ સમુદ્ઘાતો હોય છે સંજ્ઞિદ્વારમાં"सण्णी नो असण्णो" સંજ્ઞી જ હોય છે, અસંજ્ઞી હોતા નથી. કેમકે-ગર્ભજ જલચર જીવોને 'મન' હોય છે વેદદ્વારમાં—"तिविहा वेदा" આ જલચર જીવો ત્રણ વેદવાળા હોય છે એટલે કે-સ્ત્રીવેદવાળા પણ હોય છે,'પુરૂષ વેદ-વાળા પણ હોય છે અને નપુંસક વેદવાળા પણ હોય છે પર્યાપ્તિદ્વારમાં—તેઓને "छप-ज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ" છ પર્યાપ્તિયો હોય છે, અને છ અપર્યાપ્તિયો હોય છે, પોત પોતાને યોગ્ય પર્યાપ્તિ પૂર્ણ ન હોય તે અપર્યાપ્તિ કહેવાય છે. દૃષ્ટિદ્વારમાં—"दिट्ठी तिविहा वि" તેઓ સમ્યગ્ દૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે, મિથ્યા દૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે. અને સમ્યગ્મિથ્યા દૃષ્ટિવાળા પણ હોય છે. એટલે કે ત્રણે પ્રકારની દૃષ્ટિવાળા હોય છે.

द्वारे-'तिण्णि दंसणा' त्रीणि दर्शनानि-चक्षुरचक्षुरवध्याख्यानि भवन्तीति दर्शनद्वारम् ॥१४॥ ज्ञानद्वारे-'नाणी वि अन्नाणी वि' इमे जलचरजीवा ज्ञानिनोऽपि भवन्ति अज्ञानिनोऽपि भवन्ति, तत्र 'जे नाणी ते अत्थे गइया दुन्नाणी' ये जलचरजीवाः ज्ञानिनस्ते सन्त्येकके द्विज्ञानिनो भवन्ति, 'अत्थेगइया तिन्नाणी' सन्त्येकके त्रिज्ञानिनः अवधिज्ञानस्यापि केषाञ्चित्सद्भावात् । 'जे दुन्नाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य' तत्र ये द्विज्ञानिनस्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनश्च भवन्ति श्रुतज्ञानिनश्च भवन्तीति । 'जे तिन्नाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी' तत्र ये त्रिज्ञानिनस्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनः अवधिज्ञानिनश्च भवन्तीति। 'एवं अन्नाणी वि' एवमज्ञानिनोऽऽपि भवन्तीति, तत्र ये अज्ञानिनस्ते केचन द्व्यज्ञानिनो भवन्ति सन्त्येकके त्र्यज्ञानिनो भवन्ति केषाञ्चिद् विभङ्गस्यापि सम्भवात् तत्र ये ज्ञानिनस्ते नियमतो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिनश्च

दृष्टि भी होते हैं। दर्शनद्वार में "तिण्णि दंसणा" इसको चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन और अवधिदर्शन ये तीनो दर्शन होते हैं, ज्ञान द्वार में- नाणी वि अन्नाणी वि' ये ज्ञानी भी होते है और अज्ञानी भी होते हैं। "जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी" यदि ये ज्ञानी होते हैं तो इनमें कितनेक मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी ऐसे दो ज्ञान वाले होते हैं और कितनेक "तिन्नाणी" त्रिज्ञानी-मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी ऐसे तीन ज्ञानवाले होते हैं क्योंकि किन्हीं २ गर्भज जलचर जीवो को अवधिज्ञान का भी सद्भाव पाया जाता है। यही बात-"जे दुन्नाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य, जे तिन्नाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी ओहिनाणी" इन सूत्रपाठों द्वारा प्रकट की गई। "एवं अन्नाणी वि" इसी प्रकार से जो गर्भज जलचर जीव अज्ञान वाले होते हैं- तो इन में कितनेक दो अज्ञान वाले-मतिअज्ञानवाले और श्रुतअज्ञान वाले-होते हैं और कितनेक तीन अज्ञान वाले-मतिअज्ञान वाले, श्रुतअज्ञान वाले और विभंग ज्ञान वाले होते हैं।

દર્શનદ્વારમા—"तिन्नि दंसणा" તેઓને ચક્ષુદર્શન, અચક્ષુદર્શન, અને અવધિદર્શન એ ત્રણે દર્શન હોય છે. જ્ઞાનદ્વારમાં—"नाणी वि अन्नाणी वि" તેઓ જ્ઞાની પણ હોય છે, અને અજ્ઞાની પણ હોય છે "जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी अत्थेगइया तिन्नाणी" તેઓ જો જ્ઞાની હોય છે તો કેટલાક મતિજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાન એ બે જ્ઞાનવાળા હોય છે. અને કેટલાક મતિજ્ઞાનવાળા, શ્રુતજ્ઞાનવાળા અને અવધિજ્ઞાનવાળા એમ ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે, કેમકે-કોઈ કોઈ ગર્ભજ જલચર જીવોને અવધિજ્ઞાનનો સદ્ભાવ હોય છે એ જ વાત "जे दुन्नाणी ते नियमा आभिनिवोहियनाणी य सुयनाणी य, जे तिन्नाणी ते नियमा आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે."एवं अण्णाणी वि" આજ પ્રમાણે જે ગર્ભજ જલચર જીવ અજ્ઞાનવાળા હોય છે, તો તેમાં કેટલાક મતિ અજ્ઞાન, અને શ્રુતઅજ્ઞાન એ બે

भवन्तीति । अत्रावधिविभङ्गौ च सम्यग्दृष्टिमिथ्यादृष्टिभेदेन ज्ञातव्यौ सम्यग्दृष्टेरवधिः, मिथ्यादृष्टेश्च विभङ्ग इति विपरीतोऽवधिरेव विभङ्गः प्रोच्यते सम्यग् दृष्टे र्ज्ञानं मिथ्यादृष्टेर्विपर्यासः" इति ॥१५॥

योगद्वारे–'जोगे तिविहे' योगः–काययोगो वचनयोगो मनोयोगश्चेति त्रिविधोऽपि जलचराणां योगो भवतीति योगद्वारम् ।१६॥ उपयोगद्वारे–'उवजोगे दुविहे' उपयोगो द्विविधोऽपि साकारोपयोगश्च अनाकारोपयोगश्चेति उपयोगद्वारम् । ॥१७॥ आहारद्वारे–'आहारो छद्दिसिं' आहारः षड्दिशि जलचरजीवानां लोकमध्ये विद्यमानत्वेन षड्दिगम्य आगतान् आहारपुद्गलान् आहरन्तीति आहारद्वारम् ॥१८॥

उपपातद्वारे–'उववाओ नेरइएहिंतो जाव अहे सत्तमा' जलचरजीवानामुपपातो नैरयिकेभ्यो यावदधःसप्तमी पृथिवी वर्त्तते तावत्पर्यन्तेभ्यो नैरयिकेभ्यो भवति । अयं भावः–गर्भव्यु-

यहां जो सम्यग्दृष्टि होते हैं उनको अवधिज्ञान होता है और जो मिथ्यादृष्टि होते हैं उनको विभंग ज्ञान होता है जैसे–कहा है–सग्दृष्टे र्ज्ञानं मिथ्यादृष्टे र्विपर्यासः"–योगद्वार में 'जोगे तिविहे" गर्भज जलचर तिर्यञ्चों को मनोयोग, वचनयोग और काययोग यह तीनों प्रकार का योग होता है। उपयोगद्वार में–"उवजोगे दुविहे" दोनों प्रकार का उपयोग इनको होता है–साकार उपयोग भी होता है और अनाकार उपयोग भी होता है। आहार द्वार में–"आहारो छद्दिसिं" इनका आहार छह दिशाओं से आगत पुद्गलों का होता है। क्योंकि गर्भज जलचर जीव लोक के मध्य में ही विद्यमान होते हैं–इसलिये वे छहो दिशाओं में से आगत पुद्गलों का आहार करते हैं। उपपात द्वार में (उत्पन्न होना) पहली नरक से लेकर सातवीं नरक तक से उत्पन्न होते हैं, "उववाओ नेरइएहिंतो जाव अहे सत्तमाए" जलचर जीवों का उपपात नैरयिकों से लेकर यावत् सातवीं पृथिवी तक

અજ્ઞાનવાળા હોય છે, અને કેટલાક મતિ અજ્ઞાન, શ્રુતઅજ્ઞાન અને વિભંગ જ્ઞાન એમ ત્રણ પ્રકારના અજ્ઞાનવાળા હોય છે, તેઓને અવધિજ્ઞાન હોય છે. અને જેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળા હોય છે, તેઓને વિભંગજ્ઞાન હોય છે કહ્યું છે કે–"सम्यग्दृष्टेर्ज्ञानं मिथ्यादृष्टेर्विपर्यासः"

યોગદ્વારમાં—"जोगे तिविहे" ગર્ભજ જલચર તિર્યંચોને મનોયોગ, વચનયોગ અને કાયયોગ એમ ત્રણ પ્રકારનો યોગ હોય છે. ઉપયોગદ્વારમાં "उवजोगे दुविहे" તેઓને બન્ને પ્રકારના ઉપયોગ હોય છે. એટલે કે–સાકાર ઉપયોગ પણ હોય છે, અને અનાકાર ઉપયોગ પણ હોય છે

આહારદ્વારમાં—"आहारो छद्दिसिं" તેઓને આહાર છએ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલોનો હોય છે. કેમકે-ગર્ભજ જલચર જીવ લોકની મધ્યમાં જ વિદ્યમાન છે. તેથી તેઓ છએ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે. ઉપપાતદ્વારમાં—"उववाओ नेरइए हिंतो जाव अहेसत्तमाए" જલચર જીવોનો ઉપપાત-ઉત્પત્તિ નૈરયિકોથી લઈને એટલે કે પહેલા નરકથી લઈને યાવત્ સાતમા નરક સુધી કહેલ છે.

त्क्रान्तिकजलचरजीवाः सर्वगतिभ्य आगत्य अत्रोत्पद्यन्ते तत्र यदि नैरयिकेभ्य उपपातस्तदा रत्नप्रभात आरभ्य तमस्तमा पृथिवीपर्यन्तेभ्यः सप्तपृथिवीभ्योऽपि उपपातो भवतीति। **'तिरिक्खजोणिएहिंतो सव्वेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो'** तिर्यग्योनिकेभ्यः सर्वेभ्योऽसंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः, यदि तिर्यग्योनिकेभ्य उपपातो भवति तदा असंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः सर्वेभ्य एव तिर्यग्योनिकेभ्य उपपातो भवतीति। **'मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमग-अंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो'** मनुष्येभ्यः अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः, यदि जलचराणां मनुष्येभ्य उपपातो भवति तदा अकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्कवर्जितमनुष्येभ्य एवोपपातो भवतीति। **'देवेहिंतो जाव सहस्सारा'** देवेभ्यो यावत् सहस्राराः, यावत् सहस्रारदेवलोकदेवा वर्त्तन्ते तावत्पर्यन्तदेवेभ्य इत्यर्थः, यदि देवेभ्य उपपातो भवति तदा सौधर्मादारभ्य

से होता है। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है—गर्भज जलचर जीव सर्व गतियों में-से आकर के उत्पन्न होते हैं—यदि ये नैरयिकों में से आकरके उत्पन्न होते है तो रत्नप्रभा से लेकर तमस्तमा जो सातवीं पृथिवी है, वहां के नैरयिकों में से इनका उत्पाद होता है। यदि तिर्यग् योनिक जीवों में से इनका उत्पाद होता है तो **'तिरिक्खजोणिएहिंतो सव्वेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो'** असंख्यात वर्षायुष्कतिर्यग्योनिकों को छोड़ कर बाकी के समस्त कर्मभूमिज तिर्यञ्चों में इनका उत्पाद होता है। यदि मनुष्यों में से इनका उत्पाद होता है तो **"मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो'** अकर्मभूमि के एवं अन्तरद्वीपों के मनुष्यों में से इनका उत्पाद नहीं होता है क्योंकि ये सब असंख्यातवर्ष की आयुवाले होते हैं असंख्यातवर्ष की आयुवालों में से इनका उत्पाद होना निषिद्ध कहा गया है। अतः इनके सिवाय और सब मनुष्यों में से इनका उत्पाद होता है **"देवेहिंतो जाव सहस्सारा"** यदि देवों में से इनका उत्पाद होता है तो सौधर्म से लेकर सहस्रार तक

આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે - ગર્ભજ જલચર જીવ બધી જ ગતિયોમાંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, રત્નપ્રભા પૃથ્વીથી લઈને તમસ્તમા કે જે સાતમી પૃથ્વી છે, ત્યાંના નૈરયિકોમાંથી તેઓનો ઉત્પાત-ઉત્પત્તિ થાય છે જો તિર્યગ્યોનિકોમાંથી તેઓનો ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ હોય તો **"तिरिक्खजोणिएहिं तो, सव्वेहिंतो असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो"** અસંખ્યાત વર્ષાયુષ્ક તિર્યંચોને છોડીને બાકીના કર્મભૂમિના સઘળા તિર્યંચોમાં તેઓનો ઉત્પાત હોય છે. **"मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो"** અકર્મભૂમિના અને અંતરદ્વીપોનાં મનુષ્યોમાં તેમનો ઉત્પાત—ઉત્પત્તિ થતો નથી. કેમકે—આ બધા અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા હોય છે, અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્કવાળા ઓમાંથી તેમનો ઉત્પાત થવાનો નિષેધ કરેલ છે. તેથી તેના શિવાયના બાકીના સઘળા મનુષ્યોમાંથી તેમનો ઉત્પાત—ઉત્પત્તિ થાય છે. **"देवेहिंतो जाव सहस्सारा"** જો દેવોમાંથી

सहस्रारपर्यन्तेभ्यः सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकमहाशुक्रसहस्रारेत्यष्टभ्यो देवेभ्य आगतानां जीवानां गर्भव्युत्क्रान्तिजलचरेषु उपपातो भवति, ततः परमानतप्राणतादिदेवानामत्रोत्पातः, ततः परस्परदेवेषु प्रतिषेधो ज्ञातव्यः, इति उपपातद्वारम् ॥१९॥

स्थितिद्वारे–'ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं' जलचरजीवानां स्थितिः आयुष्यकालो जघन्येनान्तमुहूर्त्तं भवति। 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्वकोटिप्रमाणा भवतीति स्थितिद्वारम् ॥

समवहतद्वारे—'दुविहा वि मरंति' द्विविधा अपि म्रियन्ते जलचरजीवाः मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते इति समवहतद्वारम् ॥२१॥

च्यवनद्वारे—'अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव अहे सत्तमा' जलचरजीवा जलचरेभ्य उद्वृत्य चतसृष्वपि गतिषु गच्छन्ति तत्र यदि नैरयिकेषु गच्छन्ति तदा रत्नप्रभात आरभ्य यावदधः

अर्थात् सौधर्म १, ईशान २, सनत्कुमार ३, माहेन्द्र ४, ब्रह्म ५, लान्तक ६, महाशुक्र ७, और सहस्रार ८, इन आठ देवलोको के देवो में से इनका उत्पाद होता है आगे के आनत प्राणत आदि देवलोकों के देवों में से नहीं होता क्योंकि आगे के देवों से इनका उत्पाद होना निषिद्ध कहा गया है। स्थितिद्वार में–'ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं" इन जलचर जीवों की स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और "उक्कोसेणं पुव्वकोडी" उत्कृष्ट से एक पूर्वकोटि की होती है। ये "दुविहा वि मरंति" दोनों प्रकार से–मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी और नहीं समवहत होकर भी मरते हैं। च्यवन द्वार में–"अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव अहेसत्तमाए" ये गर्भज जलचर जीव जब जलचर जीव की पर्याय से उद्वृत होकर यदि ये नैरयिकों में जन्म लेते हैं तो प्रथम

તેમનો ઉત્પાત થાય છે, તો સૌધર્મ દેવલોકથી લઇને સહસ્રાર દેવલોકસુધી અર્થાત્ સૌધર્મ ૧ ઇશાન ૨, સનત્કુમાર ૩, માહેન્દ્ર ૪, બ્રહ્મ ૫, લાન્તક ૬, મહાશુક્ર ૭, અને સહસ્રાર ૮, આ આઠ દેવલોકના દેવોમાંથી તેમનો ઉત્પાત થાય છે તેથી આગળના એટલે કે આનત, પ્રાણુત વિગેરે દેવલોકમાંથી તેમનો ઉત્પાત થતો નથી કેમકે—ઉપર કહેલ સૌધર્મથી સહસ્રાર દેવલોકની આગળના દેવલોકમાંથી તેમની ઉત્પત્તિનો નિષેધ કરેલ છે. સ્થિતિદ્વારમાં—"ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" આ જલચર જીવોની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે અને "उक्कोसेणं पुव्वकोडी" ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વકોટીની હોય છે "दुविहा वि मरंति" તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઇને અને સમવહત. થયા વિના એમ બન્ને પ્રકારથી મરે છે. એટલે કે મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી આઘાત પ્રાપ્ત કરીને પણ મરે છે, અને આઘાત પ્રાપ્ત કર્યા વિના પણ મરે છે.

ચ્યવનદ્વારમાં—"अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव अहे सत्तमा" આ ગર્ભજ જલચર જીવ જ્યારે જલચર પર્યાયથી ઉદ્વૃત્ત થઇને એટલે કે તેમાંથી નીકળીને જો તેઓ નૈરયિકોમાં જન્મ ધારણ કરે છે, તો પહેલી પૃથ્વીથી લઇને સાતમી પૃથ્વી સુધીના નૈરયિકોમાં જન્મ

सप्तमी पृथिवीपर्यन्तनारकेषु गच्छन्तीति । 'तिरिक्खजोणिएसु' जलचरजीवाः यदि इत उद्वृत्य तिर्यग्योनिकेषु गच्छन्ति तदा सर्वेष्वपि तिर्यग् योनिकेषु गच्छन्तीति । 'मणुस्सेसु सव्वेसु' मनुष्येषु सर्वेषु जलचरजीवा इत उद्वृत्य गच्छन्तीति । 'देवेसु जाव सहस्सारे' देवेषु यावत् सहस्रारः, यदि जलचरजीवा इत उद्वृत्य देवगतिं गच्छन्ति तदा सौधर्मादारभ्य सहस्रारदेवपर्यन्तेषु अष्टविध-देवेष्वेव गच्छन्ति न ततःपरमानतप्राणतादिदेवेषु ॥ गत्यागतिद्वारे—'चउगइया चउआगइया' चतुर्गतिकाश्चतुरागतिकाः, इत उद्वृत्य चतुर्षु नारकतिर्यङ् मनुष्यदेवेषु गमनं भवतीति अतश्चतुर्गतिकाः, चतुर्भ्यो नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उद्वृत्यात्रागमनं भवतीत्यतश्चतुर्गतिकाः, चतुर्भ्यो नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उद्वृत्यात्रागमनं भवतीत्यतश्चतुरागतिकाः जलचराः कथ्यन्ते इति ॥ 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' परीत्ता असंख्याताः प्रज्ञप्ताः, प्रत्येकशरीरिण इमे असंख्याताः प्रज्ञप्ताः-कथिताः,

---

पृथिवी से लगाकर सातवीं पृथिवी तक के नैरयिकों में जन्म ले सकते हैं "तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु सव्वेसु" यदि तिर्यग्योनिक जीवों में ये जन्म लेते हैं तो समस्त तिर्यग्योनिक-जीवों में ये जन्म ले सकते है और यदि ये मनुष्यों में जन्म लेते हैं तो समस्त मनुष्यो में जन्म ले सकते है । तथा यदि ये देवों में जन्म लेते हैं तो "देवेसु जाव सहस्सारो" सौधर्म देवलोक से लेकर सहस्रार आठवे देव-लोक तक के-देवों में ये जन्म ले सकते हैं । इससे आगे के आनत प्राणत आदि देवलोकों में इनका जन्म निषिद्ध कहा गया है-क्योंकि सहस्रारदेवलोक से आगे इनका गमन नहीं होता है । "चउगइया चउआगइया" ये गर्भज जलचर जीव मरकर नारक तिर्यञ्च, मनुष्य और देव इन चारों गतियों में जा सकते है । तथा-चारो गतियों में से आये हुए जीवों का गर्भज जलचर जीव रूप से उत्पाद हो सकता है । इस प्रकार ये चतुर्गतिक और चतुरागतिक होते हैं । "परित्ता असंखेज्जा

ધારણ કરી શકે છે "तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु सव्वेसु" જો તિર્યગ્યોનિક જીવોમાં તેઓ જન્મ લે છે. તો સઘળા તિર્યગ્યોનિકોમા જન્મ ધારણ કરી શકે છે અને જો મનુષ્યોમાં જન્મ લે તો સઘળા મનુષ્યોમાં જન્મ લઇ શકે છે તથા જો તેઓ દેવોમાં જન્મ લે છે, તો 'देवेसु जाव सहस्सारो" સૌધર્મ દેવલોકથી લઇને સહસ્રાર એટલે કે આઠમા દેવલોક સુધીના દેવોમાં તેઓ જન્મ લે છે તેથી આગળના આનત, પ્રાણત, વિગેરે દેવલોકમાં તેઓનો જન્મ થવાનો નિષેધ કરેલ છે કેમકે સહસ્રાર દેવલોકથી આગળ તેઓનું ગમન થતું નથી "चउ गइया चउ आगइया" આ ગર્ભજ જલચર જીવો મરીને નારક, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવ આ ચારે ગતિયોમાં જઈ શકે છે તથા—ચારે ગતિયોમાંથી આવેલા જીવોનો ગર્ભજ જલચર જીવ પણાથી ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ—થઇ શકે છે. આ રીતે તેઓ ચતુર્ગતિક-અને ચતુરાગતિક કહેલા છે "परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता" અહિયાં પ્રત્યેક શરીરી

हे श्रमण ! हे आयुष्मन् ! इति । उपसंहारमाह-'से तं' इत्यादि, 'से तं जलचरा' ते एते गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरजीवाः लक्षणभेदाभ्यां निरूपिता इति भावः ॥सू०२३॥

गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरजीवान् सभेदान् निरूप्य संप्रति गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरजीवान् तथैव निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-'सेकिं तं' इत्यादि ।

मूलम्—'से किं तं थलयरा ? थलयरा दुविहा पन्नत्ता तंजहा—चउप्पया य परिसप्पा य। से किं तं चउप्पया? चउप्पया चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा एगखुरा सोचेव भेदो जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। चत्तारि सरीरा, ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं छगाउयाइं, ठिई उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । नवरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थपुढविं गच्छंति सेसं जहा जलयराणं जाव चउगाइया चउआगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता सेतं चउप्पया । से किं तं परिसप्पा ? परिसप्पा दुविहा पन्नत्ता तंजहा उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य। सेकिंतं उरपरिसप्पा? उरपरिसप्पा तहेव आसालियवज्जो भेदो भाणियव्वो तिन्नि सरीरा ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी। उवट्टित्ता नेरइएसु जाव पंचमं पुढविं ताव गच्छंति तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारा । सेसं जहा जलयराणं जाव चउ गइया चउ आगइया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता, सेतं उरपरिसप्पा। से किं तं भुयपरिसप्पा भेओ तहेव चत्तारि सरीरगा ओगाहणा जहन्ने-

---

पन्नत्ता'' प्रत्येक शरीर असंख्यात कहे गये है । इस प्रकार से हे श्रमण ! आयुष्मन् ! गर्भज जलचर जीवों का निरूपण उनके लक्षण और भेदों को लेकर के किया है ॥सू० २३॥

કહેવાય છે અને અસંખ્યાત કહ્યા છે આરીતે હે શ્રમણ આયુષ્મન્ ગર્ભજ જલચર જીવોનું નિરૂપણ તેના લક્ષણો અને ભેદો બતાવીને કરવામાં આવ્યું છે. ॥સૂ૦ ૨૩॥

णं अंगुलासंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं, ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्प, णवरं दोच्चं पुढविं गच्छंति, सेतं भुयपरिसप्पा पन्नत्ता सेतं थलयरा' ॥सू०२४॥

छाया—अथ के ते स्थलचराः ? स्थलचरा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा चतुष्पदाश्च परिसर्पाश्च। अथ के ते चतुष्पदाः, चतुष्पदाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-एकखुरा स एव भेदो यावद् ये चान्ये तथाप्रकारा ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्तश्च। चत्वारि शरीराणि अवगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येय भागम् उत्कर्षेण षड्गव्यूतानि, स्थितिः उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि, नवरमुद्वृत्य नैरयिकेषु चतुर्थी पृथिवीं गच्छन्ति शेषं यथा जलचराणां यावच्चतुर्गतिका चतुरागतिकाः परीता असंख्येया. प्रज्ञप्ताः, ते एते चतुष्पदाः। अथ के ते परिसर्पाः ? परिसर्पा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-उरःपरिसर्पाश्च भुजपरिसर्पाश्च। अथ के ते उरःपरिसर्पा ? उरःपरिसर्पास्तथैव, आसालिकवर्जो भेदो भणितव्यः। त्रीणि शरीराणि अवगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण योजनसहस्रम्। स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः, उद्वृत्य नैरयिकेषु यावद् पञ्चमीं पृथिवीं तावद् गच्छन्ति तिर्यग्क्षु मनुष्येषु सर्वेषु देवेषु यावत्सहस्रार., शेष यथा जलचराणां यावच्चतुर्गतिका चतुरागतिकाः परीता असंख्येया. प्रज्ञप्ता., ते एते उरः परिसर्पा.। अथ के ते भुजपरिसर्पाः ? भेदस्तथैव चत्वारि शरीराणि, अवगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागमुत्कर्षेण गव्यूतपृथक्त्वम्, स्थिति जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, उत्कर्षेण पूर्वकोटिः, शेषेषु स्थानेषु यथोरःपरिसर्पा., नवरं द्वितीयां पृथिवीं गच्छन्ति, ते एते भुजपरिसर्पा. प्रज्ञप्ताः, ते एते स्थलचराः ॥ सू २४ ॥

टीका—'से किं तं थलयरा' अथ के ते स्थलचरा गर्भव्युत्क्रान्तिका इति प्रश्नः, उत्तरयति-'थलयरा दुविहा पन्नत्ता' गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरजीवाः द्विविधा द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः।

सभेद गर्भज जलचर जीवों का निरूपण करके अब सूत्रकार गर्भज स्थलचर जीवों का निरूपण करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—

से किं तं थलयरा "इत्यादि। सूत्र" २४"

टीकार्थ—"से किं थलयरा" हे भदन्त ! गर्भजस्थलचरों का लक्षण क्या है और उनके भेद कितने हैं ? उत्तर में प्रभुकहते है—"थलयरा दुविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! गर्भज-

---

ભેદ સહિત ગર્ભજ જલચર જીવોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ગર્ભજ સ્થલચર જીવોનું નિરૂપણ કરે છે. તેમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—

"से किं तं थलयरा" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से किं तं थलयरा" હે ભગવન્ ! ગર્ભજ સ્થલચર જીવોના શું લક્ષણ છે ? અને તેના કેટલા ભેદો કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"थलयरा

भेदद्वयं दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'चउप्पया य परिसप्पा य' चतुष्पदाश्च परिसर्पाश्च, चत्वारः पादाः येषां ते चतुष्पदाः उरसा भुजाभ्यां परिसर्पन्ति ते परिसर्पाः 'से किं तं चउप्पया' अथ के ते चतुष्पदाः चतुष्पदानां किं लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति-'चउप्पया चउव्विहा पन्नत्ता' चतुष्पदाश्चतुर्विधाश्चतुष्प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः ॥ चातुर्विध्यं दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'एग खुरा' एकखुराः एक एव खुरो येषां ते एकखुरा अश्वाश्वतरादयः 'सो चेव भेदो' स एव भेदः प्रकारो ज्ञातव्यः, यो हि संमूर्च्छिमस्थलचराणां कथितः। संमूर्च्छिमस्थलचरप्रकरणं सर्वं मत्र वाच्यमिति भावः।

कियत्पर्यन्तं संमूर्च्छिमस्थलचरचतुष्पदप्रकरणमत्र ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव-जे यावन्ने तहप्पगारा' यावद् ये चान्ये तथाप्रकारास्ते सर्वेऽपि चतुष्पदतया प्रतिपत्तव्याः, एतत्पर्यन्तं संमूर्च्छिमस्थलचरचतुष्पदप्रकरणमिह ज्ञातव्यमिति। 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता'

स्थलचर जीव दो प्रकार के कहे गये है "तं जहा-" जैसे-"चउप्पया य परिसप्पा य" चतुष्पद और परिसर्प जिनके चारपाद होते है वे चतुष्पद है। और जो छाती से या दोनो भुजाओं से चलते है वे परिसर्प हैं। "से किं तं चउप्पया" हे-भदन्त! चतुष्पदो का क्या लक्षण है और इनके कितने भेद है? उत्तर में प्रभु कहते है-"चउप्पया चउव्विहा पन्नत्ता" हे-गौतम! चतुष्पद चार प्रकार के कहे गये है। तं जहा" जैसे-"एक खुरा, सो चेव भेदो" एक खुरवाले जैसा भेद कथन समूर्च्छिम स्थलचरों का किया जा चुका है वैसा ही भेद कथन यहां पर भी करलेना चाहिये कहां तक कथन करना चाहिये? उसपर कहते हैं-"जाव" इत्यादि यावत् यहां तक कि-"जे यावन्ने तहप्पगारा" इन से भिन्न इस

दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! ગર્ભજ સ્થલચર જીવો બે પ્રકારના કહેલા છે "तं जहा" તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે—"चउप्पया य परिसप्पा य" એક ચતુષ્પદ અને બીજા પરિસર્પ જેઓને ચાર પગ હોય છે તેઓ ચતુષ્પદ કહેવાય છે. અને જેઓ છાતીના બળથી અથવા બન્ને ભુજાઓથી ચાલે છે, તેઓ પરિસર્પ કહેવાય છે. "से किं तं चउप्पया" હે ભગવન્ ચતુષ્પદ જીવોના શું લક્ષણો છે? અને તેના કેટલા ભેદો કહેલા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"चउप्पया चउव्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! ચતુષ્પદ જીવો ચાર પ્રકારના કહેલા છે. "तं जहा" તે ચાર પ્રકારો આ પ્રમાણે છે— "एगखुरा सो चेव भेदो" એક ખરીવાળા વિગેરે ભેદોનુ જે પ્રમાણે સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચરોના પ્રકરણમાં કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણેના ભેદો અહિંયાંપણુ સમજી લેવા. તે સંમૂર્ચ્છિમ સ્થલચરોનું કથન ક્યા સુધી ગ્રહણ કરવું જોઈએ તે માટે કહે છે કે—"जाव" ઈત્યાદિ યાવત ત્યાં સુધી કે "जे यावन्ने तहप्पगारा" આનાથી જુદા પણ આવા પ્રકારના

ते इमे पूर्वोक्ताः सभेदा श्चतुष्पदाः समासत'—संक्षेपेण द्विविधाः—द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति । समासतो द्वैविध्यं दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्चेति ॥

सम्प्रति—गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरचतुष्पदजीवाना शरीरादिद्वारजातं दर्शयन्नाह—'चत्तारि सरीरा' इत्यादि, 'चत्तारि सरीरा' गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरजीवानां चत्वारि औदारिकवैक्रिय—तैजसकार्मणाख्यानि शरीराणि भवन्तीति शरीरद्वारम् ।

अवगाहनाद्वारे—'ओगाहणा जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं' गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरचतुष्पदजीवानां शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागम् 'उक्कोसेणं छ गाउयाइं'

प्रकार के दूसरे भी स्थलचर चतुष्पद जीव हैं वे भी इन्हीं में जानलेना चाहिये "ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" वे स्थलचर चतुष्पद जीव सक्षेप से दो प्रकार के प्रतिपादित हुए हैं "तं जहा"—जैसे—"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" पर्याप्त और अपर्याप्त पर्याप्तिनामकर्म के उदयवाले जीव पर्याप्त और अपर्याप्ति नाम कर्म के उदय वाले जीव अपर्याप्त कहेगये हैं ।

अब सूत्रकार गर्भव्युत्क्रान्तिक स्थलचर चतुष्पद जीवों के शरीरादि द्वारका निरूपण करते हैं इसमें गौतम ने प्रभुसे ऐसा पूछा है कि हे भगवन्! इन गर्भव्युत्क्रान्तिक स्थलचर चतुष्पदजीवों को कितने शरीर होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—'चत्तारि सरीरा' इत्यादि । औदारिक—वैक्रिय—तैजस—और कार्मण के भेदसे चार प्रकार के शरीर इनको कहे गए हैं । यह शरीरद्वार है ।

'ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' शरीरावगाहना इनकी जघन्य

બીજા પણ સ્થલચર ચતુષ્પદ જીવો હોય, તેઓ પણ આના જેવાજ સમજી લેવા જોઈએ "ते समासओ दुविहा पण्णत्ता" તે સ્થલચર ચતુષ્પદ જીવો સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહેલા છે, "तं जहा" તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે સમજવા. "पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત પર્યાપ્તિ નામકર્મના ઉદયવાળા જીવો પર્યાપ્ત કહેવાય છે, અને અપર્યાપ્તિ નામકર્મ ના ઉદય વાળા જીવો અપર્યાપ્ત કહેવાય છે

હવે સૂત્રકાર ગર્ભવ્યુત્ક્રાન્તિક સ્થલચર ચતુષ્પદ જીવોના શરીર વિગેરે દ્વારોનું નિરૂપણ કરે છે તેમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—હે ભગવન્! આ ગર્ભવ્યુત્ક્રાન્તિક સ્થલચર ચતુષ્પદ જીવોને કેટલા શરીરો હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'चत्तारि सरीरा' ઇત્યાદિ ઔદારિક વૈક્રિય તૈજસ ને કાર્મણ ના ભેદથી તેઓને ચાર પ્રકારના શરીરો કહેલા છે.આ રીતે આ શરીરદ્વારનું કથન સમાપ્ત થયું છે.

અવગાહનાદ્વાર—'ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' તેઓના શરીરની અવગાહના જઘન્ય થી એક આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણની હોય છે. તથા

उत्कर्षेण शरीरावगाहना षड्गव्यूतप्रमाणा भवतीत्यवगाहनाद्वारम् इति ॥ स्थितिद्वारे–**'ठिई उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं'** स्थलचर चतुष्पदजीवानां स्थितिः–आयुष्कालो जघन्येनान्तमुहूर्तम्

उत्कर्षेण तु त्रीणि पल्योपमानि भवतीति स्थितिद्वारम् ॥

'नवरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थपुढविं गच्छंति' नवरं जलचरापेक्षया स्थलचराणामेतद्वैलक्षण्यं यत् इत उद्वृत्य नरकेषु गच्छन्ति तदा चतुर्थपृथिवीपर्यन्तमेव गच्छन्ति, न ततः परतः । **'सेसं जहा जलयराणं'** शेषं शरीरावगाहनास्थित्युद्वर्तनातिरिक्तं समवहतपर्यन्तं द्वारजातं यथा गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरजीवानां कथितं तथैव स्थलचराणामपि ज्ञातव्यम् । कियत्पर्यन्तं जलचरप्रकरणमिह ज्ञातव्यं

से एक अङ्गुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण होती है, तथा–**'उक्कोसेणं छ गाउयाइं'** उत्कर्ष से इनकी शरीरावगाहना छहगव्यून प्रमाण होती है, यह अवगाहनाद्वार है ।

ठिइ उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' इनकी स्थिति–आयुष्काल जघन्यसे अन्त र्मुहूर्त प्रमाण की होती है, उत्कर्षसे तो तीन पल्योपमकी होती है, यह स्थिति द्वार है । **'नवरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थपुढविं गच्छंति'** जलचर की अपेक्षा स्थलचरों में यही विलक्षणता है कि ये यहाँ से निकल कर नरकोंमें जाते है तो चतुर्थ पृथिवी तक ही जाते हैं, किन्तु उनसे आगे नहीं जाते हैं ।

'सेसं जहा जलयराणं' शेष–शरीरद्वार–अवगाहना द्वार–स्थिति द्वार–उद्वर्त्तना–निकलना द्वार के अतिरिक्त और सब द्वारों का कथन गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचरजीवों के जैसा स्थलचरोंको भी समान समझना चाहिए ।

'उक्कोसेणं छ गाउयाइं' ઉત્કૃષ્ટથી તેઓના શરીર ની અવગાહના છગવ્યૂત પ્રમાણની હોય છે.

આ રીતે અવગાહનાદ્વારનું કથન છે.

સ્થિતિદ્વાર—**'ठिई उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं'** તેઓની સ્થિતિ–આયુષ્કાળ જઘન્ય થી અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણની હોય છે ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની હોય છે.

આ રીતે સ્થિતિદ્વાર કહેલ છે.

ઉદ્વર્તના દ્વાર **'नवरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थपुढविं गच्छंति'** જલચર જીવોની અપેક્ષાએ સ્થલચર જીવોમાં એજ વિલક્ષણપણુ–જુદાઈ છે કે આ સ્થલચરો અહિંથી નીકળી ને નારકોમાં જાય તો ચોથી પૃથ્વી સુધી જ જાય છે પરંતુ તેનાથી આગળ જતા નથી **'सेसं जहा जलयराणं'** શેષ–શરીરદ્વાર અવગાહનાદ્વાર સ્થિતિદ્વાર ઉદ્વર્ત્તનાદ્વાર શિવાયના બીજા બધા જ દ્વારોનું કથન ગર્ભવ્યુત્ક્રાંતિક જલચર જીવોના કથન પ્રમાણે આ સ્થલચર જીવો પણ સમજવા.

तत्राह–'जाव' इत्यादि, जाव चउगइया चउआगइया' यावच्चतुर्गतिकाश्चतुरागतिका इति गत्या-गतिद्वारपर्यन्तमिह ज्ञातव्यमिति। 'चउगइया चउआगइया' चतुर्गतिकाः स्थलचरजीवा स्तथा चतुरागतिकाश्चेति नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेषु गमनात् चतुर्गतिका', तथा नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उद्वृत्यात्रागमनात् चतुरागतिका भवन्तीति। 'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' प्रत्येकशरीरिणोऽसं-ख्याताः प्रज्ञप्ता'–कथिता इति। चतुष्पदप्रकरणमुपसंहरन्नाह–'से तं' इत्यादि, 'से तं चउप्पया' ते एते चतुष्पदा भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति।

स्थलचराणां प्रथमभेदं चतुष्पदं निरूप्य द्वितीयभेदं परिसर्पं निरूपयितुं प्रश्नयन् आह–'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं परिसप्पा' अथ के ते परिसर्पाः? इति प्रश्न, उत्तरयति–'परि-

---

कियत्पर्यन्त जलचर प्रकरण यहाँ लेनाचाहिए, वही बात कहते हैं 'जाव' इत्यादि। 'जाव चउगइया चउआगइया' यहां तक–गत्यागतिद्वारपर्यन्त जलचर प्रकरण समझना चाहिए। 'चउगइया चउआगइया' ये स्थलचर जीव, नारक तिर्यङ् मनुष्य देव इन चारों लोकमें गमन करने के कारण चतुर्गतिक कहलाते हैं। तथा–नारक तिर्यङ् मनुष्य देव इन चारों लोक से निकल कर यहां आते है इसलिए चतुरागतिक कहलाते हैं।

'परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता' ये स्थलचर प्रत्येक शरीरी जीव, असंख्यात कहेगये हैं। चतुष्पद प्रकरण का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं 'से तं चउप्पया' ये चतुष्पद जीव, भेद प्रभेदों से निरूपित किए।

अब सूत्रकार स्थलचरों के प्रथम भेद रूप चतुष्पद का निरूपण करके द्वितीय भेद जो परि-सर्प है इसका निरूपण करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है "से किं तं परिसप्पा" हे भदन्त! परिसर्पों का लक्षण क्या है और कितने इनके भेद हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"परिसप्पा

એ જલચર પ્રકરણ ક્યાં સુધીનું અહિં ગ્રહણ કરવું જોઈએ? એ પ્રશ્ન ના ઉત્તરમાં સૂત્રકાર 'जाव' ઈત્યાદિ સૂત્રનું કથન કરે છે તે આ પ્રમાણે છે. 'जाव चउगइया चउआ-गइया' આ સ્થલચરજીવો નારક, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવ આ ચારગતિમાં જવા વાળા હોવાથી'ચતુર્ગતિક કહેવાય છે તથા નારક તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવ આ ચાર ગતિ થી નીકળીને અહીંયાં આવવા વાળા હોવાથી 'ચતુરાગતિક' કહેવાય છે 'परित्ता असंखेज्जा पण्ण-त्ता' આ સ્થલચર જીવો પ્રત્યેક શરીરી અસખ્યાત કહ્યા છે. હવે ચતુષ્પદ પ્રકરણ નો ઉપ-સહાર કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે—'से तं चउप्पया' આ રીતે ભેદ પ્રભેદથી ચતુષ્પદ જીવોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે.

હવે સૂત્રકાર સ્થલચરોના પહેલા ભેદ રૂપ ચતુષ્પદ જીવોનું નિરૂપણ કરીને તેનો બીજો ભેદ જે પરિસર્પ છે. તેનું નિરૂપણ કરે છે. તેમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે—"से किं तं परिसप्पा"હે ભગવન્ પરિસર્પોના શું લક્ષણો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં

सप्पा दुविहा पन्नत्ता' परिसर्पाः द्विविधाः द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति । भेदद्वयमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–उरपरिसप्पा य भुजपरिसप्पा य' उरः परिसर्पाश्च भुजपरिसर्पाश्च तत्र-उरसा–उरो हृदयबलेन ये परिसर्पन्ति–गच्छन्ति ते उरःपरिसर्पाः तथा भुजाभ्यां परिसर्पन्ति ये ते भुजपरिसर्पाः । तत्र प्रथमम् उरःपरिसर्पं विशेषतो निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं' उरपरिसप्पा' अथ के ते ऊरःपरिसर्पाः इति प्रश्न, ऊत्तरयति–'संमूर्च्छिमोरःपरिसर्पातिदेशेन–'उरपरिसप्पा तहेव' ऊरःपरिसर्पास्तथैव–तेनैव रूपेण निरूपणीयाः यथा–संमूर्च्छिमोरःपरिसर्पप्रकरणे निरूपिताः । समूर्च्छिमप्रकरणात् यद् वैलक्षण्यं तद्दर्शयति -आसालियवज्जो भेदो भाणियव्वो' आसालिकवर्जो भेदो भणितव्यः, तत्रोरःपरिसर्पाणाम् आसालिकोऽपि कथितः, अत्र तु आसालिकमेदो न वर्णयितव्यः,

---

दुविहा पन्नत्ता हे गौतम ! परिसर्प दो प्रकार के कहे गये हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार से है "उरपरिसप्पा य भुजपरिसप्पा य" एक उरःपरिसर्प और दूसरे भुजपरिसर्प इन में जो छाती के बल से चलते हैं वे उरःपरिसर्प हैं और जो भुजों के बल से चलतेहै वें भुजपरिसर्प हैं हे भदन्त ! "से किं तं उरपरिसप्पा" उरःपरिसर्प का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद हैं ? संमूर्च्छिम उरःपरिसर्प के अतिदेश द्वारा उनके भेद कहते है–"उरपरिसप्पा तहेव" हे गौतम ! संमूर्च्छिम उरःपरिसर्प प्रकरण में जिस रूप से उरःपरिसर्प निरूपित हुए हैं उसी रूप से यहां पर भी इन गर्भज उरःपरिसर्पो का निरूपण करलेना चाहिये परन्तु "आसालियवज्जो भेदो भाणियव्वो" उस प्रकरण से इस प्रकरण में जो विशेषता है वह ऐसी है कि यहां पर आसालिक का वर्णन नहीं करना क्योंकि आसालिक–समूर्च्छिम ही होते है । गर्भज नहीं होतें आसालिक यह उरःपरिसर्पो का एक भेद है इसी कारण उसे यहां वर्जित कहा गया है ।

પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! પરિસર્પ બે પ્રકારના કહેલા છે, "तं जहा" તે બે પ્રકાર આ પ્રમાણે છે. "उरपरिसप्पा य भुजपरिसप्पा य" એક ઉરઃપરિસર્પ અને બીજા ભુજપરિસર્પ, તેમાં જેઓ છાતીના બળથી ચાલે છે, તેઓ ઉરઃપરિસર્પ છે, અને જેઓ હાથના બળથી ચાલે છે, તેઓ ભુજપરિસર્પો છે. હે ભગવન્ "से किं तं उरपरिसप्पा" ઉરઃપરિસર્પના શું લક્ષણો છે ? અને તેના કેટલા ભેદો કહેલા છે ? સંમૂર્છિમ ઉરઃપરિસર્પ ના અતિદેશ દ્વારા પ્રભુ કહે છે કે—"उरपरिसप्पा तहेव" હે ગૌતમ ! સંમૂર્છિમ ઉરઃપરિસર્પ ના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે ઉરઃપરિસર્પોનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ આ ગર્ભજ ઉરઃપરિસર્પોનું નિરૂપણ સમજી લેવું પરંતુ "आसालियवज्जो भेदो भाणियव्वो" તે પ્રકરણના કથન કરતાં આ પ્રકરણમાં જે વિશેષ પણું છે તે એટલુ જ છે કે—અહિયાં આસાલિકનું વર્ણન કરવાનું નથી કેમ કે—આસાલિકો સંમૂર્છિમ જ હોય છે ગર્ભજ હોતા નથી આસાલિક એ ઉર પસરિસર્પોનો એક ભેદ છે તેજ કારણથી તેને અહિ વર્જીત કહેલ છે.

यत आसालिकः संमूर्च्छिम एव भवति न तु कदाचिदपि आसालिको गर्भजो भवतीति। संमूर्च्छिमोरःपरिसर्पप्रकरणाद् यद् वैलक्षण्यं तद्दर्शयति—'चत्तारि सरीरगा' इत्यादि, गर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पाणाम् 'चत्तारि सरीरगा' चत्वारि औदारिकवैक्रिय तैजसकार्मणानि शरीराणि भवन्तीति शरीरद्वारम्।

अवगाहनाद्वारे—'अवगाहना जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' गर्भजोरःपरिसर्पाणां शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागं भवति तथा—'उक्कोसेणं जोयणसहस्सं' उत्कर्षेण योजनसहस्रं भवतीत्यवगाहनाद्वारम् ॥

स्थितिद्वारे—'ठिइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' गर्भजोरःपरिसर्पाणां स्थितिः—आयुष्यकालो जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तं भवतीति। 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्वकोटि, गर्भजोरःपरिसर्पाणामायुष्यकालः उत्कर्षेण पूर्वकोटी परिमितो भवतीति स्थितिद्वारम् ॥ उद्वर्तनाद्वारेऽपि जलचरापेक्षया वैलक्षण्यं दर्शयति—'उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव पंचमिं पुढविं गच्छंति' इमे गर्भजस्थलचरोरःपरिसर्पा इत उद्वृत्य नैरयिकेषु यदा गच्छन्ति तदा रत्नप्रभाख्य प्रथमपृथिवीत आरभ्य यावत्पञ्चमीं पृथिवीं धूमप्रभानाम्नीं तावत्पर्यन्तं गच्छन्ति। 'तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वेसु'

अब इनके शरीरादि द्वारों का कथन करते है—"चत्तारि सरीरगा" गर्भज उरःपरिसर्पो के औदारिक वैक्रिय तैजस और कार्मण ये चार शरीर होते हैं "ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं" अवगाहना इनकी जघन्य से एक अङ्गुल के असख्यातवें भाग प्रमाण होती है तथा "उक्कोसेणं जोयणसहस्सं" उत्कर्ष—उत्कृष्ट से एक हजार योजन की होती है 'ठिई जहन्नेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी" इनकी स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से एक पूर्व कोटिकी होती है उद्वर्त्तना द्वारमें भी जलचरों की अपेक्षा विलक्षणता ऐसी है कि ये "उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव पंचमिं पुढविं ताव गच्छंति" ये स्थलचर उरःपरिसर्प अपनी इस पर्याय को जब छोड़ते हैं और जब नैरयिकों में जाते हैं तो यह प्रथम पृथिवी से लेकर पांचवीं पृथ्वी तक के नैरयिको में जाते हैं

હવે તેઓના શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન કરવામાં આવે છે. "चत्तारि सरीरगा" ગર્ભજ ઉરઃપરિસર્પોને—ઔદારિક, વૈક્રિય, તૈજસ, અને કાર્મણ આ ચાર શરીરો હોય છે. "ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग" તેઓની અવગાહના જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણની હોય છે. તથા "उक्कोसेणं जोयणसहस्सं" ઉત્કૃષ્ટથી એક હજાર યોજનની હોય છે "ठिई जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी" તેમની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વકોટીની હોય છે. ઉદ્વર્તનાદ્વારમાં પણ જલચર જીવોના કરતાં એવું ભિન્નપણું—જુદાઈ છે કે—"उव्वट्टित्ता नेरइएसु जाव पंचमिं पुढविं ताव गच्छंति" આ સ્થલચર ઉરઃ પરિસર્પ જ્યારે પોતાના આ પર્યાયને છોડે છે, અને જ્યારે નૈરયિકોમાં જાય છે, તો તેઓ પહેલી પૃથ્વી થી લઈને પાંચમી પૃથ્વી સુધીના નૈરયિકોમાં જાય છે. તે પછીના નરકોમાં જતા નથી. "तिरिक्ख-

इमे जीवा गर्भजोरःपरिसर्पा इत उद्वृत्य यदि तिर्यग्गतिषु मनुष्यगतिषु च गच्छन्ति तदा सर्वेषु तिर्यक्षु सर्वेषु च मनुष्येषु गच्छन्ति न कुत्रापि प्रतिषेधः । **'देवेसु जाव सहस्सारा'** देवेषु यावत् सहस्रारा', इमे गर्भजस्थलचरोरःपरिसर्पा इत उद्वृत्य यदि देवेषु गच्छन्ति तदा सहस्रारदेवपर्यन्तदेवेष्वेव गच्छन्ति न-ततः परत आनतप्राणतादिषु गमनं भवतीति । **'सेसं जहा जलयराणं'** शेषम्—शरीरद्वारावगाहनाद्वारस्थितिद्वारोद्वर्तनाद्वारातिरिक्तं सर्वं द्वारजातं गर्भजजलचरजीववदेव ज्ञातव्यमिति ॥ कियत्पर्यन्तं जलचरप्रकरणवदत्र ज्ञातव्यं तत्राह- **'जाव चउगइया'** इत्यादि । **'जाव चउगइया चउ आगइया'** यावच्चतुर्गतिकाश्चतुरागतिका- एते उरःपरिसर्पा इत उद्वृत्या नैरयिक तिर्यङ् मनुष्य देवगतिषु गच्छन्तीत्यतश्चतुर्गतिकाः, तथा नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उद्वृत्यात्र आगच्छन्तीत्यतश्चतुरागतिका. कथ्यन्ते इति । **'परित्ता**

आगे के नरको में नहीं जाते है । **'तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वेसु'** और ये सव तिर्यग्योनिको में जाते है तो समस्त तिर्यग्योनिकों में जाते है, और जब ये मनुष्यों में जाते है तो समस्त मनुष्यों में जाते हैं यहां कहीं पर भी इनके जाने में प्रतिबन्ध—निषेध नहीं है । **"देवेसु जाव सहस्सारा"** और जब ये देवों में जाते हैं तो प्रथम देवलोक से लेकर सहस्रार तक के अर्थात् आठवें देवलोक तक के देवों में जाते है आगे के देवों में नहीं जाते । **"सेसं जहा जलयराणं"** इस प्रकार शरीरद्वार अवगाहनाद्वार, स्थितिद्वार और उद्वर्त्तना (निकलना) द्वार के अतिरिक्त और सब द्वारो का कथन यहां गर्भज जलचर जीव के प्रकरण में जैसा इनका कथन किया गया है वैसा ही जानना चाहिये **'जाव'** यावत् **"चउ गइया चउ आगइया"** ये चतुर्गतिक, और चतुरागतिक होते हैं । ये उरःपरिसर्प यहां से उद्वृत्त होकर नैरयिको में भी जा सकते हैं, तिर्यग्योनिको में भी जा सकते हैं, मनुष्यों में भी जा सकते हैं और देवो में भी जा सकते हैं ।

मणुस्सेसु सव्वेसु" અને જ્યારે તેઓ તિર્યગ્યોનિકોમાં જાય છે, તો સઘળા તિર્યગ્યોનિકોમાં જઈ શકે છે અને જ્યારે તેઓ મનુષ્યોમાં જાય છે, તો સઘળા મનુષ્યોમાં જાય છે. અહિયાં ક્યાંય પણ તેમને જવાનો પ્રતિબંધ-નિષેધ થયેલ નથી. **"દેવેસુ जाव सहस्सारा"** અને જ્યારે તેઓ દેવોમાં જાય છે, તો પહેલાદેવલોકથી લઈને સહસ્રાર સુધીના અર્થાત્ આઠમા દેવલોક સુધીના દેવોમાં જાય છે તેથી આગળના દેવોમાં જતા નથી, **"सेसं जहा जलयराणं"** આ રીતે શરીરદ્વાર, અવગાહનાદ્વાર, સ્થિતિદ્વાર અને ઉદ્વર્તના દ્વારના કથન શિવાયના બાકીના બધા દ્વારોનું કથન ગર્ભજ જલચર જીવોના પ્રકરણમા જે પ્રમાણે કહેલ છે, એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં સમજી લેવું.

"जाव" યાવત્ **"चउगइया चउआगइया"** આ ચારગતિ વાળા અને ચાર આગતિવાળા હોય છે. આ ઉરઃ પરિસર્પો અહિંથી એટલેકે ઉરઃ પરિસર્પ પણાથી ઉદ્વૃતથઈતને-નીકળીને નૈરયિકોમાં પણ જાય છે, તિર્યગ્યોનિકોમાં પણ જાય છે, મનુષ્યોમાં પણ જાય છે, અને દેવોમાં પણ જઈ શકે છે. આ રીતે ચારે ગતિયોમાના જીવો અહિંયા આવી શકે છે.

असंखेज्जा पन्नत्ता' प्रत्येकशरीरिण इमेऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति ।

सम्प्रति गर्भजस्थलचरोरःपरिसर्पप्रकरणमुपसंहरन्नाह-'से तं उरपरिसप्पा' ते एते गर्भ-व्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पा' लक्षणभेदाभ्यां निरूपिता इति भावः ॥

उरःपरिसर्पान् निरूप्य भुजपरिसर्पान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं भुयपरिसप्पा' अथ के ते भुजपरिसर्पाः भुजाभ्यां परिसर्पणशीला ये ते भुजपरिसर्पास्ते कियन्तः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति-संमूर्च्छिमभुजसर्पातिदेशेन-'भेदो तहेव' इति, भेदस्तथैव यथा संमूर्च्छिमभुजपरिसर्पाणां भेदः कथित स्तेनैव रूपेण गर्भजस्थलचरभुजपरिसर्पाणामपि भेदो ज्ञातव्य इति, ॥

सम्प्रति- भुजपरिसर्पाणां शरीरादिद्वाराणि दर्शयति-'चत्तारि' इत्यादि, तत्र प्रथमतः प्रथमं शरीरद्वारमाह-'चत्तारि सरीरगा' चत्वारि शरीराणि गर्भजस्थलचरभुजपरिसर्पाणां चत्वारि औदारिकवैक्रियतैजसकार्मणशरीराणि भवन्तीति शरीरद्वारम् ॥

इसी प्रकार से चारो गतियों के जीव यहां आ सकते हैं । "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" यहाँ प्रत्येक शरीरी असंख्यात कहे गये है। "से तं उरपरिसप्पा" इस प्रकार से यहां तक का यह प्रकरण गर्भज उरःपरिसर्पो का निरूपित हुआ है ।

उरः परिसर्पों का निरूपण करके अब सूत्रकार भुजपरिसर्पों की प्ररूपणा करते हैं इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है "से किं तं भुयपरिसप्पा" हे भदन्त ! भुजपरिसर्पों का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद हैं ? उत्तर में सूत्रकार कहते हैं-"भेदो तहेव" जिस रूप से संमूर्च्छिम भुजपरिसर्पों का भेद कहा है उसी रूप से गर्भजस्थलचर भुजपरिसर्पों का भी भेद जानलेना चाहिये ।

अब भुजपरिसर्पों के शरीरादि द्वारों का निरूपण किया जाता है "चत्तारि सरीरगा" इन भुजपरिसर्पों के शरीरद्वार में चार शरीर होते कहे गये है-औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर,

---

"परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता" આ પ્રત્યેક અસંખ્યાત શરીરવાળા કહેલા છે. "से तं उरपरिसप्पा" આ રીતે અહિં સુધીનુ આ કથન ગર્ભજ ઉર. પરિસર્પોના સંબંધમાં કહેલ છે.

ઉર.પરિસર્પોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ભુજપરિસર્પોનુ નિરૂપણ કરે છે.--આ ભુજપરિસર્પોના સંબંધમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે-"से किं तं भुयपरिसप्पा" હે ભગવન્ ભુજપરિસર્પોનું શું લક્ષણ છે ? અને તેના કેટલા ભેદો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે "भेदो तहेव" જે પ્રમાણે સંમૂચ્છિમ ભુજપરિસર્પોના ભેદોનું કથન કર્યું છે, એજ પ્રમાણે ગર્ભજ સ્થલચર ભુજપરિસર્પોનુ કથન પણ સમજી લેવું

હવે ભુજપરિસર્પોના શરીર વિગેરે દ્વારોનુ નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.—"चत्तारि सरीरगा" આ ભુજપરિસર્પોના શરીરદ્વારમાં તેઓને ચાર શરીરો હોય છે. તે આ પ્રમાણે સમજવા. ઔદારિક શરીર ૧, વૈક્રિય શરીર ૨, તૈજસ શરીર ૩, અને કાર્મણ શરીર ૪,

अवगाहनाद्वारमाह–'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं' गर्भजभुजपरिसर्पजीवानां शरीरावगाहना जघन्येनांगुलासंख्येयभागप्रमाणा भवतीति । 'उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं' उत्कर्षेण शरीरावगाहनागव्यूत पृथक्त्वं द्विगव्यूतादारभ्य नवगव्यूतपर्यन्तं भवतीति अवगाहनाद्वारम् ॥

स्थितिद्वारमाह–'ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' स्थितिः–आयुष्यकालो भुजपरिसर्पाणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवतीति स्थितिद्वारम् । शरीरशरीरावगाहनास्थितिद्वारातिरिक्तद्वारेषु गर्भजभुजपरिसर्पाणां गर्भजोर.परिसर्पवदेव ज्ञातव्य मित्याशयेनाह–'सेसेसु' इत्यादि, 'सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा' शेषेषु–शरीरशरीरावगाहनास्थितिद्वारातिरिक्तस्थानेषु गत्यागतिपर्यन्तेषु यथोर.परिसर्पाः येन प्रकारेणोरःपरिसर्पाणामेतानि द्वाराणि कथितानि तथैव भुजपरिसर्पाणामपि तानि द्वाराणि ज्ञातव्यानीति ॥ केवलं भुजपरिसर्पाणाम् उरःपरिसर्पापेक्षया यद् उद्वर्त्तनाद्वारे वैलक्षण्यं भवति तत् स्वयमेव दर्शयति–'नवर' इत्यादि, 'णवरं दोच्चं पुढविं गच्छंति' नवरं गर्भजभुजपरिसर्पा इत

तैजस शरीर और कार्मण शरीर अवगाहनाद्वार में इनकी "ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागं" शरीरावगाहना जघन्य से तो अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और उत्कृष्ट से "गाउय पुहत्तं" गव्यूत पृथक्त्व होती है–दो कोश से लेकर नौ कोश तक की होती है। स्थितिद्वार में इनकी स्थिति "जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं" जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की होती है और "उक्कोसेणं पुव्वकोडी" उत्कृष्ट से एक पूर्व कोटिकी होती है । 'सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा' इस प्रकार शरीर, शरीरावगाहना एव स्थिति, इन द्वारो के सिवाय सब द्वारो का कथन जैसा गर्भज उरः परिसर्प के प्रकरण में किया गया हैं–वैसा ही यहाँ पर भी–इन गर्भज भुज परिसर्पों के सम्बन्ध में कर लेना चाहिये उरः परिसर्पों की अपेक्षा जो इन भुज परिसर्पो के उद्वर्त्तना (निकलना) द्वार में भिन्नता है वह इस प्रकार "नवरं दोच्चं पुढविं गच्छंति" भुजपरिसर्प अपनी

અવગાહનાદ્વારમાં—"ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलासंखेज्जइभागं" તેઓના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી એક આંગળનાં અસંખ્યાતમાં ભાગની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી "गाउयपुहुत्तं" ગવ્યૂત પૃથક્ત્વની હોય છે એટલે કે એક ગવ્યૂતથી લઈને નવ ગવ્યૂત સુધીની હોય છે સ્થિતિદ્વારમાં-તેઓની સ્થિતિ "जहन्नेणं अतो मुहुत्तं" જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે, અને "उक्कोसेण पुव्वकोडी" ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વ કોટીની હોય છે. "सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा" આ રીતે શરીર, શરીરાવગાહના અને સ્થિતિ આ દ્વારોના કથન શિવાય બધા જ દ્વારોનું કથન અહિયાં જે રીતે ગર્ભજ ઉર.પરિસર્પના પ્રકરણમાં કરવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ-આ ગર્ભજ ભુજપરિસર્પોના સંબંધમાં સમજી લેવું ઉરઃપરિસર્પો કરતાં આ ભુજપરિસર્પોના ઉદ્વર્તનાદ્વારના કથનમા જે જુદાઈ છે, તે આ પ્રમાણેની છે.-"नवरं दोच्चं पुढविं गच्छंति" ભુજપરિપો જ્યારે પોતાની પર્યાય

उद्वृत्य द्वितीयां शर्कराप्रभापृथिवीं गच्छन्ति, उरः परिसर्पाः नरके पञ्चमीं पृथिवीं गच्छन्ति, भुजपरिसर्पास्तु नरके द्वितीयामेव पृथिवीं गच्छन्ति इत्यनयो भेंदः । अन्यत्सर्वं भुजपरिसर्पाणामुरःपरिसर्पवदेव भवतीति । भुजपरिसर्पप्रकरणमुपसंहरन्नाह–'सेत्तं भुयपरिसप्पा पन्नत्ता' ते एते भुजपरिसर्पाः भेदप्रभेदाभ्यां प्रज्ञप्ताः–प्ररूपिता इति । स्थलचरमुपसंहरन्नाह–'से तं थलयरा' ते एते स्थलचरा' भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति ॥सू० २४॥

गर्भव्युत्क्रान्तिकान् जलचरान् स्थलचरांश्च निरूप्य सम्प्रति–गर्भव्युत्क्रान्तिकान् खेचरान् निरूपयितु प्रश्नयन्नाह–'से किं तं खहयरा' इत्यादि,

मूलम्—'से किं तं खहयरा ? खहयरा चउव्विहा पन्नत्ता तं जहा– चम्मपक्खी, तहेव भेदो, ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहत्तं । ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्त-उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ! सेसं जहा जलयराणं । नवरं जाव तच्चं पुढविं गच्छंति जाव से तं खहयरा गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से त्तं तिरिक्खजोणिया ॥सू० २५॥

पर्याय को जब छोडते हैं और जब नरकों में जाते हैं तो ये द्वितीय जो शर्करा पृथिवी है वहीं तक जाते हैं आगे नहीं जाते हैं । उरः परिसर्पतो पञ्चमी पृथिवी तक जाते हैं । इस प्रकार इन दोनों में केवल नरक गति में जाने की अपेक्षा–भिन्नता है और सब प्रकरण उरःपरिसर्पों के जैसा ही है इस प्रकार से "से त्तं भुयपरिसप्पा पन्नत्ता" यहां तक का यह प्रकरण भुज परिसर्पो का उनके भेद प्रभेदों को लेकर कहा है । "से तं थलयरा" इस प्रकरण की समाप्ति होते ही स्थलचर जीवों का उनके भेद प्रभेदों सहित वह प्रकरण समाप्त हो जाता है ॥सू०२४॥

છોડે છે, અને જ્યારે નારકોમાં જાય છે, તો તેઓ બીજી જે શર્કરા પૃથ્વી છે, ત્યાંના નારકોમાં જાય છે, તેથી આગળ જતા નથી ઉરઃપરિસર્પો તો પાચમી પૃથ્વી સુધી જાય છે આ રીતે આ બન્નેના કથનમા કેવળ નરકગતિમાં જવાની બાબતમાં જુદા પણું કહેલ છે બાકીનુ તમામ કથન ઉરઃપરિસર્પોના કથન પ્રમાણે જ છે. આ રીતે "से त्तं भुयपरिसप्पा पण्णत्ता" આ કથન સુધીનુ આ પ્રકરણ ભુજપરિસર્પોના ભેદ પ્રભેદો સહિત કહેલ છે. "सेत्तं थलयरा" આ પ્રમાણે સ્થલચર જીવોના ભેદો અને પ્રભેદો સહિતનું તેમના સંબંધનું આ પ્રકરણ સમાપ્ત થયું. ॥સૂ૦ ૨૪॥

छाया—अथ के ते खेचरा ? खेचराश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्तास्त था चर्मपक्षिण स्तथैव भेदः । अवगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण धनुः पृथक्त्वम् । स्थिति- र्जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागः । शेषं यथा जलचराणाम् । नवरं यावत् तृतीयां पृथिवीं गच्छन्ति, यावत्ते एते खेचरगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्- योनिका । ते एते तिर्यग्योनिकाः ॥सू० २५॥

टीका—'से किं तं खहयरा' अथ के ते खेचराः ? गर्भव्युत्क्रान्तिकखेचराणां किं- लक्षणं कियन्तश्च भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति—'खहयरा चउव्विहा पन्नत्ता' खेचरजीवाश्चतुर्विधाः चतुःप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति । चतुर्विधभेदमेव दर्शयति—संमूर्च्छिमखेचरातिदेशेन 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'चम्मपक्खी तहेव भेदो' चर्मपक्षिण स्तथैव भेद', यथा संमूर्च्छिमखेचराणां चत्वारः—चर्मपक्षि—लोमपक्षि—समुद्गपक्षिविततपक्षिरूपा भेदाः प्रदर्शिता स्तथैव गर्भव्युत्क्रान्तिकखेचराणामपि चत्वारो भेदा ज्ञातव्याः । गर्भव्युत्क्रान्तिकखेचरजीवानां शरीरादिद्वारनिरूपणं गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरवदेव ज्ञातव्यम् । गर्भजजलचरापेक्षया यदंशे वैलक्षण्यं

गर्भज जलचरों एवं स्थलचरो का निरूपण करके अब सूत्रकार गर्भज खेचरों का निरूपण करते हैं—इस में गौतमने प्रभु से पूछा है—"से किं तं खहयरा" इत्यादि । सूत्र ॥२५॥

टीकार्थ—"से किं तं खहयरा" हे भदन्त ! गर्भज खेचरो का क्या लक्षण है और कितने इनके भेद हैं ? संमूर्च्छिम खेचरों के अतिदेश से सूत्रकार कहते हैं—"खहयरा चउव्विहा पन्नत्ता" हे गौतम ! खेचर जीव चार प्रकार के कहे गये है—"तं जहा" जैसे—"चम्मपक्खी तहेव भेदो" चर्मपक्षी आदि पहिले संमूर्च्छिम खेचरों के चार प्रकार और उनके भेद प्रकट किये जा चुके है उसी प्रकार से गर्भज खेचरों के भी वे ही चार प्रकारके भेद होते हैं ऐसा जानना चाहिये ।

अब इन गर्भज खेचर जीवों के शरीरादि द्वारों का वर्णन, गर्भजजलचरजीवो के प्रक-

---

ગર્ભજ જલચરો અને સ્થલચરોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ગર્ભજ ખેચરોનું નિરૂપણ કરે છે.—આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—

"से किं तं खहयरा" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से किं तं खहयरा" હે ભગવન્ ગર્ભજ ખેચરોના શું લક્ષણો છે ? અને તેના ભેદો કેટલા કહેલા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં સંમૂર્ચ્છિમ ખેચર જીવોના અતિદેશથી પ્રભુ કહે છે કે—"खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! ખેચરજીવો ચાર પ્રકારના કહેલા છે.—"तं जहा" જેમકે—"चम्मपक्खी तहेव भेदो" ચર્મપક્ષી વિ પહેલાં સંમૂર્ચ્છિમ ખેચ- રોના ચાર પ્રકારો અને તેના ભેદો પ્રગટ કર્યા છે, એજ પ્રમાણે ગર્ભજ ખેચરોના પણ ચાર પ્રકારના ભેદો હોય છે તેમ સમજવું.

આ ગર્ભજ ખેચર જીવોના શરીર વિગેરે દ્વારોનું વર્ણન, ગર્ભજ જલચર જીવોના

तावन्मात्रं दर्शयति-'ओगाहणा' इत्यादि, 'ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' गर्भव्युत्क्रान्तिकखेचराणां शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासङ्ख्येयभागप्रमाणा भवति । 'उक्कोसेणं धणुपुहत्तं' उत्कर्षेण धनुःपृथक्त्वम्, द्विधनुरारभ्य नवधनु पर्यन्ता उत्कृष्टावगाहना भवतीति शरीरावगाहनद्वारम् ॥ स्थितिद्वारे-'ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' स्थितिर्जघन्येन गर्भजखेचराणां भवति अन्तर्मुहूर्त्तम्, 'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो' उत्कर्षेण पल्योपमस्यासङ्ख्येयभागप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिः-आयुष्यकालो भवतीति ।

अवगाहना स्थित्योर्विषये इमे द्वे गाथे भवतः—

'जोयणसहस्स छग्गाउयाइ तत्तोय जोयणसहस्सं ।
गाउयपुहत्तभुयगे धणुयपुहुत्त च पक्खीसु ॥१॥
गब्भंमि पुव्वकोडी तिन्निय पलिओवमाइं परमाउं ।
उरभुयग पुव्वकोडी पलिय असंखेज्जभागो य' ॥२॥

रण में जैसा इन द्वारों का वर्णन किया गया है वैसा ही जानना चाहिये परन्तु गर्भज जलचरों की अपेक्षा जितने अंश में भिन्नता है वह "ओगाहणा" आदि सूत्र द्वारा यहां प्रदर्शित की गई है-जैसे-"ओगाहणा" इत्यादि ।

"ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं" अवगाहना यहां जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और "उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं" उत्कृष्ट से धनुष पृथक्त्व होती है अर्थात् दो धनुष से लेकर नौ धनुष तक होती है. स्थितिद्वार में-ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो" यहां स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है ।

પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે શરીર વિગેરે દ્વારોનું કથન કરેલ છે, એજ પ્રમાણે સમજવું. પરંતુ ગર્ભજ જલચરોના કરતાં જેટલા અંશમાં જુદા પણું છે, તે "ओगाहणा" વિગેરે સૂત્રાંશ દ્વારા અહિયા બતાવવામાં આવેલ છે, તે નીચે પ્રમાણે છે

ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं" અવગાહના અહિયાં જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણની હોય છે. અને "उक्कोसेणं धणुपुहुत्त" ઉત્કૃષ્ટથી ધનુષ પૃથકત્વની હોય છે. એટલે કે બે ધનુષથી લઇને નવ ધનુષ સુધીની હોય છે. સ્થિતિદ્વારમાં-"ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्त" उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो" સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણુની હોય છે. અવગાહના અને સ્થિતિદ્વારના સંબંધમાં અહિયાં આ નીચે પ્રમાણેની બે ગાથાઓ કહી છે.

योजनसहस्रं षड्गव्यूतानि, ततश्च योजनसहस्रम् ।
गव्यूतपृथक्त्वं भुजगे धनुःपृथक्त्वं च पक्षिषु ॥१॥
गर्भे पूर्वकोटिः त्रीणि च पल्योपमानि परमायुः ।
उरो भुजगपूर्वकोटिः पल्योपमासंख्येयभागाश्च ॥२॥ इतिच्छाया,

गाथयोरयमर्थो बोध्यः–गर्भव्युत्क्रान्तिकानामेव जलचराणामुत्कृष्टावगाहना योजनसहस्रम् चतुष्पदानां षड्गव्यूतानि, उरः परिसर्पाणां योजनसहस्रम्, भुजपरिसर्पाणां गव्यूतपृथक्त्वम्, पक्षिणां धनुःपृथक्त्वम्। तथा गर्भव्युत्क्रान्तिकानां जलचराणामुत्कृष्टा स्थितिः पूर्वकोटिः, चतुष्पदानां त्रीणि पल्योपमानि उरगाणां भुजगानां च पूर्वकोटिः, पक्षिणां पल्योपमासंख्येयभागमिति ॥ 'सेसं जहा जलयराणं' शेषम्–अवगाहनास्थित्यतिरिक्तं शरीरसंहननादिद्वारजातं यथा गर्भजजलचराणां कथितं तथैव सर्वमिहापि ज्ञातव्यम् । 'नवर जाव तच्चं पुढविं गच्छंति' नवरं–केवलं यावत्

अवगाहना और स्थिति के विषय में यहां ये दो गाथाएं हैं––

"जोयणसहस्स" इत्यादि । 'गब्भंमि' इत्यादि ।

इन दो गाथाओं का अर्थ इस प्रकार से है–गर्भजजलचरों की उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार योजन की होती है. चतुष्पदों की छह गव्यूति प्रमाण होती है उरःपरिसर्पों की एक हजार योजन की होती है भुजपरिसर्पों की गव्यूत पृथक्त्व होती है. पक्षियों की धनुः पृथक्त्व होती है। तथा गर्भज जलचरों की उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटि की होती है. चतुष्पदों की तीन पल्योपम की होती है. उरः परिसर्पो की एवं भुजपरिसर्पों की पूर्वकोटिकी होती है और पक्षियों की पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है. "सेसं जहा जलयराणं" इस प्रकार अवगाहना और स्थिति के अतिरिक्त शरीर संहनन आदि द्वारों की प्ररूपणा यहां गर्भज जलचरों के जैसी ही कर लेना चाहिये "नवरं जाव" विशेषता यह है कि गर्भजजल-

"जोयणसहस्स" ઇત્યાદિ 'गब्भंमि" ઇત્યાદિ.

આ બે ગાથાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે.–ગર્ભજ જલચરોની ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના એક હજાર યોજનની હોય છે ચતુષ્પદવાળા જીવોની અવગાહના છ ગવ્યૂતિ પ્રમાણની હોય છે. ઉર પરિસર્પોની અવગાહના એક હજાર યોજનની હોય છે. ભુજપરિસર્પોની અવગાહના ગવ્યૂત પૃથક્ત્વની હોય છે. પક્ષિઓની અવગાહના ધનુષ્પૃથક્ત્વની હોય છે. તથા ગર્ભજ જલચરોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક પૂર્વકોટિની હોય છે ચતુષ્પદોની અવગાહના ત્રણ પલ્યો-પમની હોય છે. ઉર પરિસર્પોની અને ભુજપરિસર્પોની અવગાહના એક પૂર્વકોટિની હોય છે. અને પક્ષિયોની અવગાહના પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણુની હોય છે. "सेसं जहा जलयराणं" આ રીતે અવગાહના અને સ્થિતિદ્વારના કથન શિવાય શરીરદ્વાર-સંહનન-દ્વાર વિગેરે સઘળા દ્વારોનું કથન અહિયાં ગર્ભજ જલચર જીવોના કથન પ્રમાણેનું સમજવું. "नवरं जाव" વિશેષતા કેવળ એટલી જ છે કે–ગર્ભજ જલચરજીવો અહિથી ઉદ્વૃત્ત

तृतीयां पृथिवीं गच्छन्ति। अयं भावः—एतेषामुद्वर्तना तृतीयपृथिव्या आरभ्य महस्रारदेवपर्यन्तम् भवति एतन्मध्ये सर्वेषु जीवस्थानेषु समुत्पादो भवतीति । नरकेपूत्पादविषये गाथाद्वयम्, तथाहि—

'असण्णी खलु पढमं दोच्चं च सरीसवा तइयं पक्खी ।
सीहा जंति चउत्थिं, उरगा पुण पंचमिं पुढविं' ॥१॥
छट्ठिं च इत्थियाउ, मच्छा मणुया य सत्तमिं पुढविं ॥
एसो परमुववाओ, बोद्धव्वो नरयपुढवीसु" ॥२॥
असंज्ञिनः खलु प्रथमां द्वितीयां च सरीसृपा स्तृतीयां पक्षिणः ।
सिंहा यान्ति चतुर्थीं भुजगाः पुनः पञ्चमीं पृथिवीम् ॥१॥
षष्ठीं च स्त्रियः मत्स्या मनुजाश्च सप्तमीं पृथिवीम् ।
एषः परमोपपातो बोद्धव्यो नरकपृथिवीषु ॥ इतिच्छाया ॥ अर्थश्छायागम्यः ॥

'जाव' यावत् अत्र यावत्पदेन गत्यागतिद्वारपर्यन्तस्य सग्रहः । तच्च गत्यागतिद्वारम्

चर यहां से उद्वृत होकर नरक में प्रथम पृथिवी से लेकर सातवीं पृथिवी तक जाते हैं और ये "तच्चं पुढविं गच्छंति" थलचर उद्वृत्त होकर प्रथम पृथिवी से लेकर तृतीय पृथिवी तक ही जाते हैं आगे नहीं जाते हैं। नरको में उत्पादके विषय में ये दो गाथाएं हैं—

"असण्णी" इत्यादि। 'छट्ठिं च' इत्यादि ।

इन दो गाथाओ का अर्थ इस प्रकार से है—असज्ञी जीव प्रथम नरक तक जाते हैं. सरीसृप द्वितीय नरक तक जाते हैं पक्षी तृतीय नरक तक जाते हैं सिंह चतुर्थ नरक तक जाते हैं। भुजग पांचवें नरक तक जाते है—स्त्री छटवें नरक तक जाती है. मत्स्य तन्दुलमत्स्य—और मनुष्य सातवें नरक तक जाते है ।

"जाव" यावत् यहां यावत्पद से गत्यागति द्वार तक का सग्रह हुआ है. यह गत्या-

---

થઈને એટલે કે—ગર્ભજ જલચર પણામાંથી નીકળીને પહેલી પૃથ્વીથી લઈને સાતમી પૃથ્વી સુધીના નરકમાં જાય છે અને આ સ્થલચર 'तच्चं पुढविं गच्छंति" સ્થલચર પણામાંથી નીકળીને પહેલી પૃથ્વીથી લઈને ત્રીજી પૃથ્વી સુધી જ જાય છે. તેથી આગળ જતા નથી.

નરકોમાં ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ થવાના સંબંધમાં આ નીચે જણાવેલ બે ગાથાઓ કહી છે-' असण्णी" ઇત્યાદિ "छट्ठिं च" ઇત્યાદિ.

આ બન્ને ગાથાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-અસંજ્ઞીજીવ પહેલા નરક સુધી જાય છે. સરિસૃપ-સર્પ બીજા નરક સુધી જાય છે પક્ષી ત્રીજા નરક સુધી જાય છે. સિંહ ચોથા નરક સુધી જાય છે ભુજગ પાંચમાં નરક સુધી જાય છે. સ્ત્રી છઠ્ઠા નરક સુધી જાય છે. મત્સ્ય-તન્દુલમત્સ્ય અને મનુષ્ય એ સાતમા નરક સુધી જાય છે

' जाव" यावत् અહિં યાવત્પદથી ગત્યાગતિદ્વારનો સંગ્રહ થયેલ છે. આ ગત્યાગતિ-

जलचरवदेव भावनीयम्, चतुर्गतिकाः चतुरागतिकाः 'से त्तं खहयरगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया' यावत् ते एते खेचरगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः निरूपिताः प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्याताः प्रज्ञप्ताः प्रकरणार्थमुपसंहरति-'से त्तं तिरिक्खजोणिया' ते एते-तिर्यग्योनिकाः भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति ॥ सू० २६ ॥

पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीवा निरूपिताः, सम्प्रति मनुजप्रतिपादनाय-आह-'से किं तं मणुस्सा' इत्यादि,

मूलम्—'से किं तं मणुस्सा? मणुस्सा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-संमुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। कहि णं भंते? संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति गोयमा! अंतो मणुस्सखेत्ते जाव करेंति। तेसि णं भंते! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता? गोयमा! तिन्नि सरीरगा पन्नत्ता। तं जहा-ओरालिए तेयए कम्मए, सेत्तं संमुच्छिममणुस्सा। से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा? गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पन्नत्ता। तं जहा कम्मभूमया, अकम्मभूमया, अंतरदीवया। एवं मणुस्स भेदा भाणियव्वो जहा पण्णवणाए तहा णिरवसेसं भाणियव्वं जाव छउमत्था य केवली य ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा पज्जत्ता य

गतिद्वार भी यहां जलचर जीवों के जैसा ही भावित करना चाहिये. इस प्रकार ये गर्भज खेचर जीव चतुर्गतिक और चतुरागतिक होते है। "से तं खहयरगब्भवक्कंतिय पंचिंदियतिरिक्खजोणिया" इस प्रकार से ये खेचर गर्भज तिर्यग्पंचेन्द्रिय निरूपित किये गये हैं, यहां प्रत्येक शरीरी असख्यात कहे गये हैं। "से तं तिरिक्खजोणिया" इस प्रकार से ये तिर्यग्योनिक जीव भेद और प्रभेदो से यहां तक निरूपित किये गये है। सूत्र ॥२५॥

દ્વાર પણ અહિયાં જલચરજીવોના કથન પ્રમાણે સમજી લેવું આ રીતે આ ગર્ભજ ખેચર જીવો. ચાર ગતિમાં જનારા અને ચાર ગતિથી આવવાવાળા હોય છે. "से त्तं खहयरगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया" આ રીતે ખેચર ગર્ભજ તિર્યંચ પંચેન્દ્રિય જીવોનું નિરૂપણ થયું છે. અહિયાં પ્રત્યેક શરીરધારી અસંખ્યાત કહેલા છે "से त्तं तिरिक्खजोणिया" આ પ્રમાણે અહિં પર્યન્ત ભેદ પ્રભેદો સાથે તિર્યગ્યોનિક જીવોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે. ાસૂ૦ ૨૫ા

अपज्जत्ता य तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पन्नत्ता । तं जहा—ओरालिए जाव कम्मए । सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्जइभागे, उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं । छच्च वि संघयणा । छ संठाणा । ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई जाव लोभकसाई अकसाई ? गोयमा ! सव्वे वि । ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव लोभसन्नोवउत्ता नोसन्नोवउत्ता गोयमा ! सव्वे वि । ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा य जाव अलेस्सा ? गोयमा ! सव्वे वि । सोइंदियोवउत्ता जाव नो इंदियोवउत्ता विं, सत्त समुग्घाया, तं जहा—वेयणासमुग्घाए जाव केवलिसमुग्घाए । सन्नी वि नो सन्नी नो असन्नी वि, इत्थियवेया वि जाव अवेया वि, पंच पज्जत्ती, तिविहा वि दिट्ठी, चत्तारि दंसणा, णाणी वि अन्नाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगइया दुण्णाणी, अत्थेगइया तिन्नाणी, अत्थेगइया चउण्णाणी, अत्थेगइया एग णाणी, जे दुण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी य अहवा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी मणपज्जवनाणी य, ये चउण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहि नाणी मणपज्जवनाणी य, जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी एवं अन्नाणी वि दुअन्नाणी ति अन्नाणी । मणजोगी वि वइ जोगीवि कायजोगी वि, अजोगी वि, दुविहे उवओगे । आहारो छद्दिसिं उववाओ नेरइएहिं अहे सत्तम वज्जेहिं तिरिक्ख जोणिएहिं उववाओ असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो मणुएहिंतो अकम्मभूमगअंतरदीवगअसं-

खेज्जवासाउ य वज्जेहिंतो देवेहिंतो ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कासेणं तिन्नि पलिओवमाइं, दुविहा वि मरंति, उव्वट्टित्ता नेरइयादिसु जाव अणुत्तरोववाइएसु, अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति। ते णं भंते! जीवा कइ गइया कइ आगइया पन्नत्ता? गोयमा! पंच गइया चउ आगइया। परित्ता संखेज्जा पन्नत्ता से त्तं मणुस्सा ॥सू० २७॥

छाया—अथ के ते मनुष्याः? मनुष्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-संमूर्च्छिममनुष्याश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याश्च। कुत्र खलु भदन्त! संमूर्च्छिममनुष्याः संमूर्च्छन्ति? गौतम! अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे यावत्कुर्वन्ति। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि? गौतम! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि। तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणं च। ते एते संमूर्च्छिममनुष्याः। अथ के ते गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः? गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यास्त्रिविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कर्मभूमका अकर्मभूमका अन्तरद्वीपजाः। एवं मनुष्यभेदो भणितव्यो यथा प्रज्ञापनायां तथा निरवशेषं भणितव्यं यावत् छद्मस्थाश्च केवलिनश्च। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च। तेषां खलु भदन्त! जीवानां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि? गौतम! पञ्च शरीराणि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-औदारिकं यावत्कार्मणम्। शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागम् उत्कर्षेण त्रीणि गव्यूतानि। षडपि संहननानि, षड् संस्थानानि। ते खलु भदन्त! जीवाः किं क्रोधकषायिनो यावल्लोभकषायिनोऽकषायिनः? गौतम! सर्वेऽपि। ते खलु भदन्त! जीवाः किमाहारसंज्ञोपयुक्ता यावत् लोभसंज्ञोपयुक्ताः नो संज्ञोपयुक्ताः, गौतम! सर्वेऽपि। ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्याश्च यावदलेश्याः।? गौतम! सर्वेऽपि। श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ता यावन्नो इन्द्रियोपयुक्ता अपि। सप्त समुद्घाताः तद्यथा-वेदनासमुद्घातो यावत्केवलिसमुद्घातः। संज्ञिनोऽपि नो संज्ञिनोअसंज्ञिनोऽपि। स्त्रीवेदका अपि यावदवेदका अपि, पञ्च पर्याप्तयः। त्रिविधा अपि दृष्टयः। चत्वारि दर्शनानि। ज्ञानिनोऽपि अज्ञानिनोऽपि, ये ज्ञानिनस्ते अस्त्येकके द्विज्ञानिनः, अस्त्येकके त्रिज्ञानिनः, अस्त्येकके चतुर्ज्ञानिनः, अस्त्येकके एकज्ञानिनः। ये द्विज्ञानिन स्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च। ये त्रिज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनः अवधिज्ञानिनश्च। अथवा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो मनःपर्यवज्ञानिनश्च। ये चतुर्ज्ञानिनस्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनो मनःपर्यवज्ञानिनश्च। ये एकज्ञानिनस्ते नियमात् केवलज्ञानिनः। एवमज्ञानिनोऽपि। द्व्यज्ञा-

निन स्त्र्यज्ञानिनः । मनो योगिनोऽपि वचो योगिनोऽपि काययोगिनोऽपि । अयोगिनोऽपि । द्विविध उपयोग. । आहारः षड् दिशि । उपपातो नैरयिकेभ्योऽधः सप्तमवर्जेभ्यः, तिर्यग्योनिकेभ्य उपपातोऽसंख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः' मनुष्येभ्योऽकर्मभूमिकान्तरद्वीपका संख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्यः, देवेभ्यः सर्वेभ्य । स्थिति जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । द्विविधा अपि म्रियन्ते । उद्वृत्य नैरयिकादिषु यावदनुत्तरोपपातिकेषु, अस्त्येकके सिध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति । ते खलु भदन्त ! जीवाः कतिगतिकाः कत्या गतिकाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चगतिकाश्चतुरागतिकाः परीताः संख्याताः प्रज्ञप्ताः, ते एते मनुष्याः ॥सू० २७॥

टीका—'**से किं तं मणुस्सा**' अथ के ते मनुष्याः कति प्रकारकाः मनुष्या भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति–'**मणुस्सा दुविहा पन्नत्ता**' मनुष्या द्विविधाः–द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति । द्वैविध्यं दर्शयति–'**तं जहा**' इत्यादि, '**तं जहा**' तद्यथा–'**संमुच्छिममणुस्सा य**' सम्मूर्च्छिममनुष्याश्च '**गब्भवक्कंतियमणुस्सा य**' गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याश्च, तथा च–सम्मूर्च्छिमगर्भजभेदेन मनुष्या द्विविधा भवन्तीत्यर्थः । सम्मूर्च्छिममनुष्याणामुत्पत्तिविषये प्रश्नयन्नाह–'**कहि णं भंते** ! इत्यादि, '**कहि णं भंते**' क–कुत्र–कस्मिन् स्थाने खलु भदन्त ! '**संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति**' सम्मूर्च्छिममनुष्याः समूर्च्छन्ति–समुत्पद्यन्ते इति प्रश्नः, भगवानाह–'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**अंतो मणुस्सखेत्ते जाव करेंति**' अन्तर्मनुष्य-

---

पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो का निरूपण समाप्त करके अब सूत्रकार मनुष्यों का निरूपण करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–"**से किं तं मणुस्सा**–इत्यादि ।सूत्र ॥२६॥

टीकार्थ—"**से किं तं मणुस्सा**" हे भदन्त ! मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"**मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता**" हे गौतम ! मनुष्य दो प्रकार के होते हे. "**तं जहा**" जैसे–"**संमुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य**" एक सम्मूर्च्छिम मनुष्य और दूसरे गर्भज मनुष्य "**कहिं णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति**" हे भदन्त ! सम्मूर्च्छिम मनुष्य कहां पर संमूर्च्छित–उत्पन्न होते है ? उत्तर मे प्रभु कहते हैं–"**अंतो मणुस्स-**

પચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક જીવોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર મનુષ્યોનુ નિરૂપણ કરે છે. આ સ બ ધમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું કે–"से किं तं मणुस्सा" ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ–"से किं तं मणुस्सा" હે ભગવન્ મનુષ્યો કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! મનુષ્યો બે પ્રકારના હોય છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે 'संमूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य" એક સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્ય અને બીજા ગર્ભજ મનુષ્ય "कहिं णं भंते ! संमूच्छिममणुस्सा' संमुच्छंति હે ભગવન્ સંમુચ્છિમ મનુષ્ય કયા સંમૂચ્છિત–ઉત્પન્ન થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"अंतोमणुस्सखेत्ते जाव करेंति" અહિયાં યાવત્પદથી સંપૂર્ણ

क्षेत्रे यावत्कुर्वन्ति अत्र यावत्पदेन-इत्थं संपूर्णः पाठो ज्ञातव्यः, 'अंतो मणुस्सखेत्ते पणलीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्म भूमिसु' तीसाए अकम्मभूमिसु' छप्पणाए' अंतरदीवेसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसु वा पित्तेसु वा सोणिएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु वा ववगयजीवकलेवरेसु वा इत्थीपुरिस संजोगेसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव असुइट्ठाणेसु' एत्थ णं संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए ओगाहणाए असन्नी मिच्छद्दिट्ठी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करेंति इति, ॥

(अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशति योजनशतसहस्रेषु अर्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्च दशसु कर्मभूमिषु त्रिशत्यकर्मभूमिषु षट् पञ्चाशति अन्तरद्वीपेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणामेवोच्चारेषु वा प्रस्रवणेषु वा खेलेषु वा सिंघाणकेषु वान्तेषु वा पित्तेषु वा शोणितेषु वा-शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिशाटेषु वा कुगतजीवकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगर-नालिकासु वा सर्वेष्वेवाशुचिस्थानेषु अत्र खलु संमूर्च्छिममनुष्याः संमूर्च्छन्ति अङ्गुलस्या

खेत्ते जाव करेंति'' यहां यावत्पद से सपूर्ण पाठ गृहीत हुआ हैं—वह पाठ टीका में सग्रह किया गया है उसका अर्थ इस प्रकार है-पैतालीस लाख योजन प्रमाण यह मनुष्य लोक है. इसमें अढाई द्वीप समुद्र प्रमाण जो यह मनुष्य क्षेत्र हैं उसमें ही ये समूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं जैसे पन्द्रह कर्मभूमियों में तीस अकर्मभूमियो छप्पन्न अन्तर द्वीपो में ये संमूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं। ये गर्भज के उच्चार १ मल में प्रस्रवण २ पेशाव में, खेल—कफ में ३ सिंघाण—नाक के मैल में, ४ वमन में, ५ पित्त में, ६ शोणित—खून में, ७ शुक्र—वीर्य में, ८ शुक्र पुद्गलो, के परिसटन ९ में, १० मरे हुए जीव के कलेवरो में, ११ स्त्री पुरुष के सयोग में, १२ नगर की नालियो में, १३ एवं समस्त अशुचिस्थानो में, १४ ये संमूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न

પાઠ ગ્રહણ થયેલ છે. તે પાઠ ટીકામાં આપેલ છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે.-પિસ્તાળીસ લાખ યોજન પ્રમાણ આ મનુષ્ય લોક એટલે કે મધ્યલોક છે તેમાં અઢાઈ દ્વીપ સમુદ્ર પ્રમાણ જે આ મનુષ્યક્ષેત્ર છે, તેમા જ આ સંમૂર્છિમ મનુષ્ય ઉત્પન્ન થાય છે. જેમકેપંદર કર્મભૂમિયોમા ત્રીસ અકર્મભૂમિયોમાં, છપ્પન અંતર્દ્વીપોમાં આ સંમૂર્છિમ મનુષ્યો ઉત્પન્ન થાય છે. આ ગર્ભજના ઉચ્ચાર-મળમાં, પ્રસવણ-પેસાબમાં ૨, ખેલ-કફમાં ૩, સિંઘાણ-નાકના મેલમાં ૪ વમન-ઉલ્ટીમાં ૫, પિત્તમાં ૬, શોણિતમાં ૭, શુક્ર-વીર્યમા ૮, શુક્રપુદ્ગલોનાં પરિશટનમાં ૯, પંચેન્દ્રિય મરેલ જીવોના કલેવરોમા ૧૦, સ્ત્રીપુરુષના સયોગમાં ૧૧, નગરની નળીયોમાં ૧૨, અને બધા જ અશુચિ-અપવિત્ર સ્થાનોમા ૧૩, આ સંમૂર્છિમ

संख्येयभागतया शरीरावगाहनया असंज्ञिनो मिथ्यादृष्टयः सर्वाभि' पर्याप्तिभिरपर्याप्तका अन्तर्मुहूर्त्तायुष्का एव कालं कुर्वन्तीतिच्छाया) ॥

तेषां संमूर्च्छिममनुष्याणां शरीरादिद्वारजातं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह–**'तेसि णं भंते'** इत्यादि, **'तेसि णं भंते'** तेषां सम्मूर्च्छिमानां खलु भदन्त ? **'जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता'** जीवानां मनुष्याणां कति–कियत्संख्यकानि शरीराणि प्रज्ञप्तानि–कथितानीति शरीरद्वारे प्रश्न', भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ? **'तिन्नि सरीरगा पन्नत्ता'** त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, त्रैविध्यमेव दर्शयति–**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा–**'ओरालिए तेयए कम्मए'** औदारिक तैजसं कार्मणम् , एतच्छरीरत्रयमेव भवति संमूर्च्छिममनुष्याणां संमूर्च्छिमत्वादेवेति शरीरद्वारम् । शरीरावगाहना जघन्योत्कर्षाभ्यामङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणा ।

होते हैं । उनकी शरीरावगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती हैं. ये असंज्ञी–मन रहित–होते हैं मिथ्यादृष्टि होते हैं छ पर्याप्तियो में से कोई भी पर्याप्ति इनकी पूर्ण नहीं होती हैं अतः ये अपर्याप्त ही होते हैं इनकी आयु एक अन्तर्मुहूर्त्त की ही होती है इसके बाद ये मर जाते हैं । इन्हें लब्ध्यपर्याप्तक कहा गया है ।

इन संमूर्च्छिम मनुष्यो के शरीरादिद्वार इस प्रकार से है **"तेसिं णं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पन्नत्ता"** हे भदन्त ! इन संमूर्च्छिम मनुष्यों के कितने शरीर होते हैं ! तब प्रभु ने गौतम से कहा–**"गोयमा ! तिन्नि सरीरगा पन्नत्ता"** हे गौतम ! इन समूर्च्छिम मनुष्यों को तीन शरीर होते है **"तं जहा"** जैसे–**"ओरालिए, तेयए, कम्मए"** औदारिक तैजस और कार्मण इनकी शरीरावगाहना जघन्य और उत्कृष्ट से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है संहनन संस्थान कषाय, लेश्या, ये द्वार यहां द्वीन्द्रिय प्रकरण में जैसे ये प्रतिपादित

મનુષ્યો ઉત્પન્ન થાય છે તેઓના શરીરની અવગાહના એક આંગળના અસંખ્યાત ભાગ પ્રમાણની હોય છે. તેઓ અસંજ્ઞી મન વિનાના હોય છે. મિથ્યા દૃષ્ટિવા હોય છે. તેઓને છ પર્યાપ્તિયો પૈકી એક પણ પર્યાપ્તિ પૂર્ણ હોતી નથી તેથી તેઓ અપર્યાપ્ત જ હોય છે. તેનું આયુષ્ય એક અંતર્મુહૂર્તનું જ હોય છે, તે પછી તેઓ મરી જાય છે તેઓને લબ્ધ્ય પર્યાપ્તક કહેલા છે. એટલે કે લબ્ધિ–અપર્યાપ્તક કહ્યા છે.

આ સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યોના શરીર વિગેરે દ્વારો આ પ્રમાણે છે—**"તેસિં ણ ભંતે ! જીવાણં કઇ સરીરગા પણ્ણત્તા'"** હે ભગવન્ ! આ સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યોને કેટલા શરીરો હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—**"ગોયમા ! તિન્નિ સરીરગા પન્નત્તા"** હે ગૌતમ ! આ સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યોને ત્રણ શરીરો હોય છે. **"તં જહા"** તે આ પ્રમાણે છે—**"ઓરાલિપ, તેયપ, કમ્મપ"** ઔદારિક, તૈજસ અને કાર્મણ, તેઓના શરીરની અવગાહના જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી એક આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણની હોય છે સંહનન, સંસ્થાન, કષાય, લેશ્યા, આ દ્વારોનું કથન જે પ્રમાણે બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના પ્રકરણમાં કહ્યું છે. એજ પ્રમાણેનું અહિયાં પણ સમજી લેવું.

संहननसंस्थानकषायलेश्याद्वाराणि यथा द्वीन्द्रियाणाम् । इन्द्रियद्वारे पञ्चेन्द्रियाणि । संज्ञिद्वारं वेदद्वारं च द्वीन्द्रियवदेव ।

पर्याप्तिद्वारे—पञ्चापर्याप्तयः । दृष्टिदर्शनज्ञानयोगोपयोगद्वाराणि यथा पृथिवीकायिकानाम् । आहारो यथा—द्वीन्द्रियाणाम् । उपपातो नैरयिकदेव तेजोवाय्वसंख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्यः । स्थितिर्जघन्योत्कर्षाभ्यामन्तर्मुहूर्त्तमात्रप्रमाणा नवरं जघन्यपदादुत्कृष्टमधिकं ज्ञातव्यम् । मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते । अनन्तरमुद्वृत्य नैरयिकदेवासंख्येयवर्षायुष्कवर्जेषु शेषेषु स्थानेषु उत्पद्यन्ते, गत्यागतिद्वारे—द्व्याग-

हुए हैं वैसे ही जानना चाहिये । इन्द्रियद्वार में इनके पांचो इन्द्रियां होती हैं । संज्ञिद्वार और वेदद्वार द्वीन्द्रिय प्रकरण में कहे अनुसार यहां जानना चाहिये । पर्याप्तिद्वार—में पांच अपर्याप्ति वाले होते हैं । दृष्टिद्वार, दर्शनद्वार ज्ञानद्वार, योगद्वार, और उपयोगद्वार ये सब द्वार पृथिवीकायिक जीवों के प्रकरण में कहे गये अनुसार यहां जानना चाहिये आहारद्वार में इनका आहार द्वीन्द्रिय जीवो के जैसा होता है । उपपात इनका नैरयिक, देव, तेज, वायु और असंख्यात वर्षायुष्क इनको छोडकर शेष जीवों से होता है स्थिति—इनकी जघन्य और उत्कृष्ट से एक अन्तर्मुहूर्त्त की ही होती है परन्तु जघन्य के अन्तर्मुहूर्त्त की अपेक्षा उत्कृष्ट का अन्त मुहूर्त्त अधिक है । ये मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं और उससे नहीं समवहत होकर भी मरते हैं । ये अपनी पर्याय छोड़कर नैरयिक, देव और असंख्यात वर्ष की आयु वाले स्थानों को छोड़कर शेष स्थानो में उत्पन्न होते हैं । गत्यागति द्वार में—ये तिर्यञ्च

ઇન્દ્રિયદ્વારમાં-તેઓને પાંચે ઇન્દ્રિયો હોય છે. સંજ્ઞિદ્વાર અને વેદદ્વારનું કથન બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું. અર્થાત્ અસંજ્ઞી હોય છે. અને વેદમાં નપુંસક વેદવાળા હોય છે. પર્યાપ્તિકદ્વારમાં-તેઓ પાંચ અપર્યાપ્તિવાળા હોય છે. દૃષ્ટિદ્વાર, દર્શનદ્વાર, જ્ઞાનદ્વાર યોગદ્વાર, અને ઉપયોગદ્વાર આ દ્વારોનું કથન પૃથ્વીકાયિક જીવના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે અહિયાં સમજી લેવું. આહારદ્વારમાં—તેઓનો આહાર બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવોના જેવો હોય છે. તેઓનો ઉપપાત-ઉત્પત્તિ નૈરયિક, દેવ, તેજ, વાયુ, અને અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્ય વાળા એટલાને છોડીને બાકીના જીવમાંથી થાય છે. તેમની સ્થિતિ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્તનીજ હોય છે પરંતુ જઘન્ય અંતર્મુહૂર્તની અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટ અંતર્મુહૂર્ત અધિક છે. તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઈને એટલે કે આઘાત પ્રાપ્ત કરીને પણ મરે છે, અને સમવહત થયા વિના એટલે કે આઘાત પ્રાપ્ત કર્યા વિના પણ મરે છે તેઓ પોતાની પર્યાયને છોડીને નૈરયિક, દેવ, અને અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા સ્થાનોને છોડીને બાકીના સ્થાનોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, ગત્યા-

तिका द्विगतिकास्तिर्यङ्मनुष्यगत्यपेक्षया । प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्येयाः प्रज्ञप्ता इति ! उपसंहरन्नाह–'से त्तं संमुच्छिममणुस्सा' ते एते संमूर्च्छिममनुष्याः भेदैर्द्वारैश्च प्ररूपिता इति संमूर्च्छिम मनुष्यप्रकरणम् ।

संमूर्च्छिममनुष्यान् निरूप्य गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा' अथ के ते गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः गर्भजमनुष्याः कीदृशाः कियन्तश्च भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति–'गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पन्नत्ता' गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः- कथिता इति । त्रैविध्यं दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'कम्मभूमया' कर्मभूमकाः–कर्म भूमौ समुत्पद्यमानाः कर्मभूमका इति तत्र कर्म–कृषि वाणिज्यादि, यद्वा कर्म मोक्षानुष्ठानम् । कर्म प्रधाना भूमिर्येषां ते कर्मभूमाः

एवं मनुष्य इन दो गति और दो ही आगति की अपेक्षा से द्विगतिक और दो आगतिक होते हैं। यहां प्रत्येक शरीरी असख्यात कहे गये हैं। "सेत्तं संमुच्छिममणुस्सा" इस प्रकार से संमूर्च्छिम मनुष्यो का द्वारों को लेकर निरूपण किया है। संमूर्च्छिम मनुष्य प्रकरण समाप्त

अब सूत्रकार गर्भज मनुष्यों का निरूपण करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–"से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा" हे भदन्त ! गर्भज मनुष्य कैसे और कितने होते हैं ! उत्तर में प्रभु कहते हैं––"गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! गर्भज मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं–"तं जहा" जैसे––'कम्मभूमया अकम्मभूमया, अंतरदीवजा" कर्म भूमिक, अकर्मभूमिक, और अन्तर द्वीपज जो मनुष्य कर्मभूमि में उत्पन्न हुए हैं वे कर्मभूमिक मनुष्य है। कृषि वाणिज्यादि का नाम कर्म है। अथवा मोक्ष की प्राप्ति का जो अनुष्ठान है वह

ગતિદ્વારમાં-તેઓ તિર્યંચ અને મનુષ્ય આ બે ગતિ અને બેજ આગતિની અપેક્ષાથી બે ગતિક એટલે કે બે ગતિમાં જનારા અને દ્વયાગતિક એટલે બે ગતિથી આવવાવાળા હોય છે આ પ્રત્યેક અસંખ્યાત શરીરી કહેલા છે, "से त्तं संमुच्छिममणुस्सा" આ રીતે સમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યો સંબંધી કથન દ્વારો સહિત કહ્યું છે.

સંમૂર્ચ્છિમ પ્રકરણ સમાપ્ત

હવે સૂત્રકાર ગર્ભજ મનુષ્યોનું નિરૂપણ કરે છે,—આમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે—"से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा" હે ભગવન્ ગર્ભજ મનુષ્યો કેટલા અને કેવા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! ગર્ભજ મનુષ્યો ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે. "तं जहा" તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "कम्मभूमया, अकम्मभूमया, अंतरदीवजा" કર્મભૂમિક, અકર્મભૂમિક, અને અંતરદ્વીપજ જે મનુષ્ય કર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયા છે, તે કર્મ ભૂમિજ મનુષ્ય કહેવાય છે કૃષિ–ખેતિ, વાણિજ્ય,-વ્યાપાર વિગેરેનુ નામ કર્મ છે. અથવા

ते एव कर्मभूमकाः 'अकम्मभूमया' अकर्मभूमकाः अकर्मभूम्यां जाता इत्यर्थः, एवं कर्म-कृषिवाणिज्यादि, मोक्षानुष्ठानं वा तादृश कर्मविकला भूमि र्विद्यते येषां ते अकर्म भूमास्ते एव अकर्मभूमकाः। 'अंतरदीवजा' अन्तरद्वीपजाः, अत्र अन्तरशब्दो मध्यवाची तथा चान्तरे-लवणसमुद्रस्य मध्ये येद्वीपा स्तेऽन्तरद्वीपाः अन्तरं द्वीपे जाताः-समुत्पन्नाः ये ते अन्तरद्वीपजा मनुष्या इति ते एते त्रिप्रकारका गर्भजमनुष्याः। 'एवं मणुस्स भेदो भाणियव्वो' एवमुक्तप्रकारेण मनुष्याणां गर्भजानां भेदः-प्रकारः भणितव्यो वक्तव्यः, अत्र कुत्रत्यो मनुष्यभेदोऽत्र भणितव्यः ? तत्राह-'जहा पण्णवणाए तहा निरवसेसं भाणियव्वं' यथा प्रज्ञापनायां गर्भजमनुष्यभेदाः कथितास्तथैव तेनैव रूपेण निरवशेषं यथा भवेत् तथा भणितव्यं वक्तव्यमिति। कियत्पर्यन्तं प्रज्ञापनाप्रकरणं वक्तव्यम्। तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव छउमत्था य केवली य' यावत् छद्मस्थाश्च केवलिनश्चैतत्पर्यन्तं प्रज्ञापनाप्रकरणं वक्तव्यमिति। प्रज्ञापनाप्रकरणं च गर्भजमनुष्यसम्बन्धिकं प्रज्ञापनायामेव द्रष्टव्यम्। विस्तृतत्वान्नात्र विलि-

---

कर्म हैं जिन जीवों की ऐसे कर्मों की प्रधानतावाली भूमि है वे कर्मभूमिक मनुष्य है। कर्मभूमि के सिवाय जो अकर्म भूमि में उत्पन्न हुए है वे जीव अकर्म भूमक है अकर्म भूमि में कृषि वाणिज्यादि रूप कर्म अथवा मुक्ति प्राप्ति के योग्य कर्म नहीं होता है। अन्तर शब्द मध्यवाची है तथा च अन्तर में-लवणसमुद्र के मध्य में जो द्वीप हैं वे अन्तरद्वीप हैं इन अन्तरद्वीपों में जो मनुष्य उत्पन्न हुए हैं वे अन्तरद्वीपज है। इस प्रकार से गर्भज मनुष्य ३ तीन प्रकार के होते हैं "एवं मणुस्स भेदो-भाणियव्वो" इस प्रकार से गर्भज मनुष्यों के भेद "जहा पण्णवणाए तहा निरवसेसं भाणियव्वं" जैसे कि वे प्रज्ञापनासूत्र में कहे गये है वैसे ही यहां संपूर्ण रूप से कह लेना चाहिए यावत् "छउमत्था य केवली य" यावत् वे छद्मस्थ और केवली होते हैं इस प्रज्ञापना सूत्र के प्रकरण तक प्रज्ञापना सूत्र का गर्भजमनुष्य संबन्धी प्रकरण वहीं प्रज्ञापना

મોક્ષ પ્રાપ્તિ માટે જે અનુષ્ઠાન-આરાધના છે તે કર્મ છે. આવા કર્મોની પ્રધાનતાવાળી જે જીવોની ભૂમિ છે, તે કર્મ ભૂમિજ મનુષ્ય છે. કર્મભૂમિના શિવાય જેઓ અકર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયા છે. તે જીવો અકર્મભૂમિજ કહેવાય છે. અકર્મભૂમિમાં કૃષિ-વાણિજ્ય રૂપ કર્મ, અથવા મુક્તિ પ્રાપ્ત કરવાને યોગ્ય કર્મનો અભાવ હોય છે. અંતર શબ્દ મધ્ય વાચક છે. અંતરમાં એટલે કે-લવણસમુદ્રની મધ્યમાં જે દ્વીપો છે, તે અંતરદ્વીપ કહેવાય છે, આવા અંતરદ્વીપોમાં જે મનુષ્યો ઉત્પન્ન થાય છે. તે અંતરદ્વીપજ કહેવાય છે, આ રીતે ગર્ભજ મનુષ્યો ત્રણ પ્રકારના હોય છે. "एवं मणुस्स भेदो भाणियव्वो" આ પ્રમાણે ગર્ભજ મનુષ્યોના ભેદો "जहा पण्णवणाए तहा निरवसेसं भाणियव्वं" જે પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમા કહેલ છે, એજ પ્રમાણે સંપૂર્ણ રીતનુ કથન અહિયા પણ સમજી લેવું', યાવત્ "छउमत्था य केवली य" તેઓ છદ્મસ્થ અને કેવલી હોય છે. પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના આ કથન પર્યંત પ્રજ્ઞાપના સૂત્રનું ગર્ભજ મનુષ્ય સંબંધી પ્રકરણ ત્યાં પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં જોઈ લેવું.

तिका द्विगतिकास्तिर्यङ्मनुष्यगत्यपेक्षया । प्रत्येकशरीरिणोऽसंख्येयाः प्रज्ञप्ता इति ! उपसंहरन्नाह–'से त्तं संमुच्छिममणुस्सा' ते एते संमूर्च्छिममनुष्याः भेदैर्द्वारैश्च प्ररूपिता इति संमूर्च्छिम मनुष्यप्रकरणम् ।

समूर्च्छिममनुष्यान् निरूप्य गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा' अथ के ते गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः गर्भजमनुष्याः कीदृशाः कियन्तश्च भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति–'गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पन्नत्ता' गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिता इति । त्रैविध्यं दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा–'कम्मभूमया' कर्मभूमकाः–कर्म भूमौ समुत्पद्यमानाः कर्मभूमका इति तत्र कर्म–कृषि वाणिज्यादि, यद्वा कर्म मोक्षानुष्ठानम् । कर्म प्रधाना भूमिर्येषां ते कर्मभूमाः

एवं मनुष्य इन दो गति और दो ही आगति की अपेक्षा से द्विगतिक और दो आगतिक होते हैं। यहां प्रत्येक शरीरी असख्यात कहे गये हैं। "सेत्तं संमुच्छिममणुस्सा" इस प्रकार से संमूर्च्छिम मनुष्यो का द्वारों को लेकर निरूपण किया है। संमूर्च्छिम मनुष्य प्रकरण समाप्त

अब सूत्रकार गर्भज मनुष्यो का निरूपण करते हैं–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–"से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा" हे भदन्त ! गर्भज मनुष्य कैसे और कितने होते हैं ! उत्तर में प्रभु कहते हैं––"गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! गर्भज मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं–"तं जहा" जैसे––'कम्मभूमया अकम्मभूमया, अंतरदीवजा" कर्म भूमिक, अकर्मभूमिक, और अन्तर द्वीपज जो मनुष्य कर्मभूमि में उत्पन्न हुए हैं वे कर्मभूमिक मनुष्य है। कृषि वाणिज्यादि का नाम कर्म हैं। अथवा मोक्ष की प्राप्ति का जो अनुष्ठान है वह

ગતિદ્વારમાં–તેઓ તિર્યંચ અને મનુષ્ય આ બે ગતિ અને બેજ આગતિની અપેક્ષાથી બે ગતિક એટલે કે બે ગતિમાં જનારા અને દ્વયાગતિક એટલે બે ગતિથી આવવાવાળા હોય છે આ પ્રત્યેક અસંખ્યાત શરીરી કહેલા છે, "से त्तं संमुच्छिममणुस्सा" આ રીતે સમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યો સંબંધી કથન દ્વારો સહિત કહ્યું છે.

સંમૂર્ચ્છિમ પ્રકરણ સમાપ્ત

હવે સૂત્રકાર ગર્ભજ મનુષ્યોનું નિરૂપણ કરે છે,—આમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે—"से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा" હે ભગવન્ ગર્ભજ મનુષ્યો કેટલા અને કેવા હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! ગર્ભજ મનુષ્યો ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે. "तं जहा" તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "कम्मभूमया, अकम्मभूमया, अंतरदीवजा" કર્મભૂમિક, અકર્મભૂમિક, અને અંતરદ્વીપજ જે મનુષ્ય કર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયા છે, તે કર્મભૂમિજ મનુષ્ય કહેવાય છે કૃષિ–ખેતિ, વાણિજ્ય,–વ્યાપાર વિગેરેનું નામ કર્મ છે. અથવા

अवगाहनाद्वारे—'ओगाहणा जहन्नेणं अङ्गुलस्स असंखेज्जइभागं' गर्भजमनुष्याणां शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमाणा भवति 'उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं' उत्कर्षेण त्रीणि गव्यूतानि गर्भजमनुष्याणां शरीरावगाहनोत्कर्षेण त्रिगव्यूतप्रमाणा भवतीत्यर्थः ।

संहननद्वारे—'छच्चेव संघयणा' षडेव वज्रऋषभादि संहननानि भवन्तीति ॥ संस्थानद्वारे 'छस्संठाणा' षट् संस्थानानि समचतुरस्रन्यग्रोधादीनि भवन्ति ।

कषायद्वारे—'ते णं भंते !' इत्यादि, 'ते णं भंते ! जीवा' ते खलु भदन्त ! गर्भज मनुष्यजीवाः 'किं कोहकसाई जाव लोहकसाई अकसाई' किं क्रोधकषायिणो यावत्

तैजसशरीर और कार्मण शरीर ये पांच शरीर होते हैं। क्योंकि मनुष्यों में सर्वभावो के होने की सम्भावना रहती है। अवगाहना द्वार में—"ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं" इन गर्भज मनुष्यों की शरीरावगाहना जघन्य से अङ्गुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है और "उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं" उत्कृष्ट से तीन कोश तक की होती है। संहनन द्वार में—छच्चेव संघयणा" इनके वज्रऋषभ आदि छहों संहनन होते हैं। संस्थान द्वार में—"छ संठाणा" समचतुरस्र आदि छहों संस्थान होते हैं। कषाय द्वार में इन गर्भज मनुष्य के क्रोध कषाय भी होता है, मान कषाय भी होता है माया कषाय भी होता है, और लोभ कषाय भी होता हैं। यही बात यहां पर "ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई 'जाव लोभ कसाई अकासाई" इस सूत्रपाठ द्वारा इस प्रकार से पूछी गई है कि हे भदन्त ! वे गर्भ मनुष्य क्या क्रोध कषाय वाले होते है ? यावत् लोभ कषाय वाले होते है ? या कषाय से रहित

ત્રણે શરીરો ગ્રહણ કરાયા છે. આ રીતે ગર્ભજ મનુષ્યોના ઔદારિક શરીર, વૈક્રિય શરીર, આહારક શરીર, તૈજસ શરીર, અને કાર્મણ શરીર આ પાંચ શરીરો હોય છે કેમકે— મનુષ્યોમાં સર્વભાવો હોવાની સંભાવના હોય છે. અવગાહનાદ્વારમાં "ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं" આ ગર્ભજ મનુષ્યના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી એક આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણની હોય છે. અને "उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं" ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ ગાઉ સુધીની હોય છે. સંહનનદ્વારમાં—"छच्चेव संघयणा" તે ઓને વજ્ર ઋષભ, વિગેરે છએ સંહનન હોય છે,

'સંસ્થાનદ્વારમાં—"छ संठाणा" સમચતુરસ્ર વિગેરે છએ સંસ્થાનો હોય છે. કષાયદ્વારમાં–આ ગર્ભજ મનુષ્યોને ક્રોધ કષાય પણ હોય છે, માન કષાય પણ હોય છે. માયા કષાય પણ હોય છે, અને લોભકષાય પણ હોય છે એજ વાત અહિયાં "ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई जाव लोभकसाई, अकसाई" આ સૂત્રપાઠદ્વારા આ પ્રમાણે પૂછવામાં આવેલ છે.—હે ભગવન્ તે ગર્ભજ મનુષ્યો શું ક્રોધ કષાયવાળા હોય છે ? યાવત્ લોભ કષાયવાળા હોય છે ? અથવા કષાય વિનાના હોય છે ? અહિયાં યાવત્પદથી માન

मानमायालोभकषायिणोऽकषायिणो वा भवन्ति ? भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि. 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वे वि' सर्वेऽपि–एते सर्वकषायवन्तो भवन्ति, अयं भाव.–गर्भजमनुष्याः क्रोधकषायवन्तोऽपि भवन्ति यावत् लोभकषायवन्तोऽपि भवन्ति तथा–अकषायिणोऽपि वीतराग-मनुष्याणामकषायित्वादिति कषायद्वारम् ॥

संज्ञाद्वारे—'ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव लोभसन्नोवउत्ता नोसन्नोवउत्ता' ते खलु भदन्त ! जीवाः किमाहारसंज्ञोपयुक्ता यावद् लोभसंज्ञोपयुक्ता नो संज्ञोपयुक्ताः हे भदन्त ! गर्भजमनुष्याः किमाहारसंज्ञोपयुक्ता भवन्ति किं वा भयमैथुनपरिग्रह-क्रोधमानमायालोभसंज्ञोपयुक्ता भवन्ति । नो सज्ञोपयुक्ता भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वे वि' सर्वेऽपि ते गर्भजमनुष्या आहारसंज्ञोपयुक्ता अपि भवन्ति यावत् लोभसंज्ञोपयुक्ता अपि भवन्ति । तथा नो संज्ञोपयुक्ता अपि भवन्तीति । तत्र नो संज्ञोपयुक्ताश्च निश्चयतया वीतरागमनुष्याः व्यवहारतस्तु सर्वे एव चारित्रधारिणः, लोकोत्तरचित्त-

होते हैं ? यहां यावत्पद से मान, माया इन दो कषायों का ग्रहण हुआ हैं उत्तर में प्रभु ने कहा है "गोयमा ! सव्वेवि" हे–गौतम ! गर्भज मनुष्य क्रोधकषायवाले भी होते है, यावत्–लोभ कषायवाले भी होते हैं–तथा कषाय से रहित भी होते हैं–क्योंकि वीतराग मनुष्यों के कषाय का अभाव हो जाता है । संज्ञाद्वार में–"ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव लोभसन्नोवउत्ता नोसन्नोवउत्ता" गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! ये गर्भजमनुष्य क्या आहारसज्ञोपयुक्त होते हैं ? यावत् लोभसंज्ञोपयुक्त होते है ? प्रभु ने इस विषय में ऐसा उत्तर दिया है—"गोयमा ! सव्वे वि" ये गर्भज मनुष्य जब संज्ञा वाले होते हैं आहार सज्ञोपयुक्त भी होते हैं, भय सज्ञोपयुक्त भी होते है मैथुन संज्ञोपयुक्त भी होते हैं। और क्रोधमान माया लोभ संज्ञोपयुक्त भी होते हैं । निश्चयनय से जो वीतराग मनुष्य हैं

અને માયા આ બે કષાયો ગ્રહણ કરાયેલ છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે— "गोयमा ! सव्वेवि" હે ગૌતમ ! ગર્ભજ મનુષ્ય ક્રોધ કષાયવાળા પણ હોય છે, યાવત્ લોભ કષાયવાળા પણ હોય છે. અને કષાય વિનાના પણ હોય છે. કેમ કે–વીતરાગ મનુષ્યોને કષાયનો અભાવ હોય છે. સંજ્ઞાદ્વારમાં-"ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव लोभसन्नोवउत्ता नो सन्नोवउत्ता" આ વિષયમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે–હે ભગવન્ આ ગર્ભજ મનુષ્યો શું આહારસંજ્ઞોપયુક્ત હોય છે ? યાવત્ લોભ સંજ્ઞોપયુક્ત હોય છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુ કહે છે કે—'गोयमा ! सव्वेवि' આ ગર્ભજ મનુષ્યો જ્યારે સંજ્ઞાવાળા હોય છે, ત્યારે આહાર સંજ્ઞાવાળા પણ હોય છે, ભય સંજ્ઞા વાળા પણ હોય ને, મૈથુન સંજ્ઞાવાળા પણ હોય છે. અને ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ સંજ્ઞાવાળા પણ હોય છે. નિશ્ચય નયથી જેઓ વીતરાગ મનુષ્યો છે, તેઓ

लाभात् ते ओघलोकेति संज्ञाद्वयं चाश्रित्य दशभिः संज्ञाभिरपि विप्रमुक्ता भवन्तीति विप्रमुक्तत्वात् इति।

तदुक्तम्—'निर्वाणसाधकं सर्वं ज्ञेयं लोकोत्तराश्रयम्।

संज्ञाः लोकाश्रयाः सर्वा भवाङ्कुरजलं परम् ॥१॥ इति।

लेश्याद्वारे—'ते णं भंते!' इत्यादि, 'ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा य जाव अलेस्सा' ते खलु भदन्त! जीवाः किं कृष्णलेश्याश्च यावद् अलेश्याः, अत्र यावत्पदेन नील कापोततेजःपद्मशुक्ललेश्यानां संग्रहस्तथा च–हे भदन्त! इमे मनुष्याः किं कृष्णलेश्या भवन्ति, नील लेश्या वा, कापोतलेश्या वा, तैजसलेश्या वा, पद्मलेश्या वा, शुक्ल-

---

नहीं होते हैं। तथा–व्यवहार की अपेक्षा से जितने भी चारित्रधारी हैं वे संज्ञोपयुक्तनहीं होते हैं। क्योंकि इन्हें लोकोत्तर–अलौकिक–चित्त–ज्ञान का लाभ हो जाता है–ये चारित्रधारी ओघसंज्ञा और लोभ संज्ञा को मिलाकर दश १०, प्रकार की भी संज्ञा से विप्रमुक्त–सर्वथा रहित–होते हैं। तदुक्तम्–

"निर्वाणसाधकं सर्वं ज्ञेयं लोकोत्तराश्रयम्,

संज्ञा लोकाश्रयाः सर्वा भवाङ्कुरजलं परम् ॥१॥"

जितने भी निर्वाणसाधक अनुष्ठान है वह सब अलौकिक होता है और संज्ञाएँ लोकाश्रित होती है अतः चारित्रधारी व्यवहार से संज्ञोपयुक्त नहीं माने गये है। लेश्याद्वारमें–प्रभु से गौतम ने ऐसा पूछा है–"ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा य जाव अलेस्सा" हे भदन्त! वे गर्भज मनुष्य क्या कृष्णलेश्या वाले होते हैं या यावत् अलेश्या वाले होते हैं? यहां यावत्पद से नील कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल इन लेश्याओं का ग्रहण हुआ है–तथा च हे भदन्त! ये गर्भज मनुष्य क्या कृष्णलेश्या वाले

સંજ્ઞોપયુક્ત હોતા નથી તથા વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ જે કોઈ ચારિત્રધારી છે. તેઓ સંજ્ઞોપયુક્ત હોતા નથી. કેમ કે–તેઓને લોકોત્તર–અલૌકિક ચિત્ત–જ્ઞાનનો લાભ થઈ જાય છે. આ ચારિત્રધારી ઓઘસંજ્ઞા, અને લોભ સંજ્ઞા એ બે સંજ્ઞાઓ મેળવીને દશે પ્રકારની સંજ્ઞાઓથી વિપ્રમુક્ત એટલે કે સર્વથા રહિત હોય છે.

"तदुक्त— मृनिर्वाणसाधकं सर्वं ज्ञेयं लोकोतराश्रयम्

संज्ञो लोकाश्रयाः सर्वा, भवाङ्कुर जलं परम् ॥१॥

નિર્વાણ કહેતાં મોક્ષ સાધક જે કોઈ અનુષ્ઠાનો છે, તે બધા અલૌકિક હોય છે, અને સંજ્ઞાઓ લોકાશ્રિત હોય છે. અતઃ ચારિત્ર ધારીને વ્યવહારથી સંજ્ઞોપયુક્ત માનવામાં આવ્યા નથી. લેશ્યાદ્વારમાં–ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યુ છે કે—"ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा य जाव अलेस्सा" હે ભગવન્ તે ગર્ભજ મનુષ્યો શું કૃષ્ણલેશ્યા વાળા હોય છે? અથવા યાવત્ અલેશ્યાવાળા હોય છે? અહિયાં યાવત્પદથી નીલ, કાપોત, તેજ, પદ્મ અને શુકલ આ લેશ્યાઓ ગ્રહણ થયેલ છે. એટલે કે—ગૌતમસ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્

लेश्या वा । लेश्यारहिता वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वे वि' सर्वेऽपि–सर्वलेश्यावन्तोऽपि मनुष्याः कृष्णलेश्यावन्तोऽपि भवन्ति । नीललेश्यावन्तोऽपि भवन्ति कापोतलेश्यावन्तोऽपि भवन्ति । तेजोलेश्यावन्तोऽपि भवन्ति । पद्मलेश्यावन्तोऽपि भवन्ति । शुक्ललेश्यावन्तोऽपि भवन्ति । अलेश्याः–लेश्यारहिता अपि भवन्ति । तत्रालेश्याः सिद्धाः परमशुक्लध्यायिनोऽयोगिकेवलिन इति लेश्याद्वारम् ॥

इन्द्रियद्वारे—'सोइंदिओवउत्ता जाव नो इंदिओवउत्ता वि' मनुष्या श्रोत्रेन्द्रियोपयुक्ता यावत् नो इन्द्रियोपयुक्ता अपि यावत्पदेन-रसनघ्राणचक्षुःस्पर्शनेन्द्रियाणां संग्रहः तथा च पञ्चेन्द्रिययुक्ता अपि भवन्ति । नो इन्द्रिययुक्ता अपि भवन्ति । तत्र नो इन्द्रियोप-

---

होते है ? या नीललेश्या वाले होते हैं ? या कापोतलेश्या वाले होते हैं ? या तेजसलेश्या वाले होते है ? या पद्मलेश्या वाले होते हैं ? या शुक्ललेश्या वाले होते हैं । या लेश्यारहित होते हैं उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! सव्वे वि" ये समस्त गर्भज मनुष्य कृष्णलेश्या वाले भी होते हैं नीललेश्या वाले भी होते हैं, कापोतलेश्या वाले भी होते हैं तेजो लेश्या वाले भी होते हैं पद्मलेश्या वाले भी होते है, शुक्ललेश्या वाले भी होते है और लेश्यारहित भी होते हैं । इनमें अलेश्यावाले सिद्ध होते है, और परमशुक्ल ध्यानवाले अयोगि केवली भी अलेश्य होते हैं । इन्द्रिय द्वार में-ये गर्भज मनुष्य—"सोइंदिओवउत्ता जाव नोइंदियोवउत्तावि" श्रोत्रेन्द्रियों से युक्त भी है यावत् नोइन्द्रिय से युक्त भी होते है यहां यावत्पद से "रसन–घ्राण–चक्षु–स्पर्शन–इन चार इन्द्रियों का ग्रहण हुआ है तथा च ये गर्भज मनुष्य पांचों इन्द्रियों से युक्त भी होते हैं और नो इन्द्रिय से युक्त भी होते हैं । इनमें नो इन्द्रियो-

---

આ ગર્ભજ મનુષ્યો શું કૃષ્ણલેશ્યાવાળા હોય છે ? કે નીલ લેશ્યાવાળા હોય છે અથવા કાપોતિક લેશ્યાવાળા હોય છે કે તૈજસ લેશ્યાવાળા હોય છે ? અથવા પદ્મલેશ્યાવાળા હોય છે ? અથવા શુકલ લેશ્યાવાળા હોય છે ? કે લેશ્યાવિનાના એટલે કે અલેશ્ય હોય ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"ગોયમા ! સવ્વેવિ" હે ગૌતમ આધળા ગર્ભજ મનુષ્યો કૃષ્ણલેશ્યાવાળા પણ હોય છે નીલલેશ્યાવાળા પણ હોય છે. કાપોતલેશ્યાવાળા પણ હોય છે તેજો લેશ્યાવાળા પણ હોય છે પદ્મલેશ્યાવાળા હોય છે. શુકલલેશ્યાવાળા પણ હોય છે. અને લેશ્યાવિનાનાપણ હોય છે તેઓમાં સિદ્ધ પુરૂષો અલેશ્ય-એટલે કે લેશ્યા વિનના હોય છે અને પરમ શુકલધ્યાનવાળા અયોગી કેવલીયોપણ લેશ્યાવિનાના હોય છે. ઈન્દ્રિયદ્વારમાં—આ ગર્ભજ મનુષ્યો "સોઇંદિયોવઉત્તા જાવ નોઇંદિયોવઉત્તા વિ" શ્રોત્રેન્દ્રિયવાળા પણ હોય છે, યાવત્ નોઈન્દ્રિયવાળા પણ હોય છે અહિયાં યાવત્ પદથી રસના-જીભ, ઘ્રાણ-નાક, ચક્ષુ, સ્પર્શન આ ચાર ઈન્દ્રિયો ગ્રહણ કરાઈ છે. આ ગર્ભજ મનુષ્ય પાંચેઈન્દ્રિયવાળા, પણ હોય છે, અને નોઈંદ્રિયવાળા પણ હોય છે. આ ગર્ભજ

युक्ताः केवलिनः, यद्यपि केवलिनामपि सिद्धेः पूर्वमिन्द्रियाणि भवन्त्येव तथापि तदुपयोगाभावेन ते केवलिनो नो इन्द्रियोपयुक्ता एव भवन्तीति इन्द्रियद्वारम् ॥

समुद्घातद्वारे—**'सत्त समुग्घाया'** सप्त समुद्घाता भवन्ति **'तं जहा'** तद्यथा-**'वेयणा समुग्घाए जाव केवलिसमुग्घाए'** वेदनासमुद्घातो यावत् केवलिसमुद्घातः, अत्र—यावत्पदेन कषायमारणान्तिकवैक्रियाहारकतैजससमुद्घातानां संग्रहो भवतीति । समुद्घातसंग्राहिका चेयं गाथा—

'वेयणकसायमारणंतिए य वेउव्विए य आहारे ।
तेयकेवलि य समुग्घाए, सत्तसमुग्घाया इमे भणिया' ॥१॥
वेद्नाकषायोमारणान्तिकश्च । वैक्रियकश्चाहारकः ।
तैजसः केवलिनः समुद्घातः, सप्त समुद्घाता इमे भणिताः इतिच्छाया ॥

इति समुद्घातद्वारम् ॥

संज्ञिद्वारे—**'सन्नी वि नो सन्नी नो असन्नी वि'** मनुष्याः संज्ञिनोऽपि भवन्ति नो

पयुक्त केवली होते है। यद्यपि केवलियों के भी सिद्धि प्रज्ञप्ति से पहिले इन्द्रियां तो होती ही हैं फिर भी वे इनका कुछ भी उपयोग नहीं करते हैं अतः इन्हें नोइन्द्रियोपयुक्त कहा गया है। समुद्घातद्वारमें सत्त समुग्घाया "समुद्घात सात होते है-**"वेयणासमुग्घाए जाव केवलिसमुग्घाए"** वेदना समुद्घात यावत् केवलिसमुद्घात यहां यावत्पद से कषाय, मारणान्तिक, वैक्रिय आहारक, तैजस इन समुद्घातों का ग्रहण हुआ है। समुद्घात को कहनेवाली यह गाथा है—" **'वेयणकसायमारणतिए य'** इत्यादि

अर्थात् समुद्घात सात इस प्रकार से हैं-वेदनासमुद्घात १, कषायसमुद्घात २, मारणान्तिकसमुद्घात ३, वैक्रियसमुद्घात ४, आहारकसमुद्घात ५, तैजससमुद्घात ६, और केवलिसमुद्घात७, संज्ञी द्वार में-**"सन्नी वि नो सन्नी नो असन्नी वि"** ये गर्भज मनुष्य संज्ञी

મનુષ્યોમાં કેવલીયો નોઇંદ્રિયવાળા હોય છે જોકે કેવલીયોને પણ સિદ્ધિ પ્રાપ્તિની પહેલાં ઇન્દ્રિયો તો હોય છે, તો પણ તેઓ તેનો કંઇ પણ ઉપયોગ કરતા નથી તેથી તેઓને નોઇંન્દ્રિયવાળા કહ્યા છે સમુદ્ઘાતદ્વારમાં—**"सत्त समुग्घाया"** તેઓને સાત સમુદ્ઘાતો હોય છે **"वेयणासमुग्घाप जाव केवलिसमुग्घाप"** વેદના સમુદ્ઘાત યાવત્ કેવલિ સમુદ્ઘાત અહિયાં યાવત્પદથી કષાય, મારણાન્તિક વૈક્રિય, આહારક, તૈજસ આ સમુદ્ઘાતો ગ્રહણ કરાયા છે. અહિંયા સમુદ્ઘાતના સંબંધમાં સમુદ્ઘાતોનો કહેવાવાળી આગાથા છે —' **वेयणकसायमारणंतिपय**" ઇત્યાદિ. અર્થાત્ સાત સમુદ્ઘાતો આ પ્રમાણે છે.—વેદના સમુદ્ઘાત ૧ કષાય સમુદ્ઘાત ૨, મારણાન્તિક સમુદ્ઘાત ૩ વૈક્રિય સમુદ્ઘાત ૪. આહારક સમુદ્ઘાત ૫. તૈજસ સમુદ્ઘાત ૬, અને કેવલિસમુદ્ઘાત ૭, સંજ્ઞીદ્વારમા—**"सन्नी वि नो सन्नो नो असन्ना**

संज्ञिनो नो असज्ञिनोऽपि भवन्ति तत्र नो सज्ञिनो असंज्ञिनः केवलिन इति संज्ञिद्वारम् ॥

वेदद्वारे— 'इत्थिवेयावि जाव अवेया वि' स्त्री वेदा अपि यावत् पुरुषवेदा अपि नपुंसकवेदा अपि अवेदका अपि भवन्तीति । तत्र अवेदाः सूक्ष्मसंपरायादि गुणस्थानवर्त्तिन इति वेदद्वारम् ॥ पर्याप्तिद्वारे–'पंच पज्जत्ती' पञ्चपर्याप्तयो भवन्ति मनुष्याणां तथा पञ्चापर्याप्तयोऽपि भवन्ति, भाषामन पर्याप्त्योरेकत्वेन विवक्षणादिति पर्याप्तिद्वारम् ॥

दृष्टिद्वारे— 'तिविहा वि दिट्टी' त्रिविधा अपि दृष्टयो भवन्ति तद्यथा–केचित् सम्यग् दृष्टयः केचिन्मिथ्यादृष्टय' केचित् सम्यक्मिथ्यादृष्टय इति दृष्टिद्वारम् ॥

भी होते हैं और नोसज्ञी नोअसज्ञी भी होते हैं। नो संज्ञी नो असंज्ञी ऐसा जो कहा गया है वह केवलियों की अपेक्षा से कहा गया है। वेदद्वार में ये गर्भज मनुष्य "इत्थिवेया वि-जाव अवेयावि" स्त्री वेदवाले भी होते है, पुरुषवेदवाले भी होते हैं और नपुंसक वेदवाले भी होते है तथा विना वेद के भी होते हैं। वेद का उदय नौवे गुणस्थान तक रहता है दसवें सूक्ष्म संपराय आदि गुणस्थानो में वेद का उदय नहीं रहता है इसलिये यहां अवेदक भी होते हैं ऐसा कहा गया है "पर्याप्तिद्वार में ये गर्भज मनुष्य 'पंच पज्जत्ती'' पांच पर्याप्तिवाले होते है तथा पांच अपर्याप्ति वाले भी होते हैं। पर्याप्तियां यद्यपि छह प्रकार की होती है, पर यहां जो पांच पर्याप्तियों वाले होते है–ऐसा जो कहा गया है वह भाषा और मनपर्याप्ति में एक साथ बांधनेमें एकता है इस विवक्षा से कहा गया है। दृष्टिद्वार में ये गर्भज मनुष्य "तिविहा वि दिट्ठी" तीनो प्रकार के दृष्टि वाले होते हैं जैसे कोई २ सम्यग्दृष्टि भी होते हैं कोई २ मिथ्यादृष्टि भी होते हैं और कोई २ मिश्रदृष्टि भी होते

वि" આ ગર્ભજ મનુષ્ય સંજ્ઞી પણ હોય છે, નો સંજ્ઞી પણ હોય છે અને નો અસંજ્ઞી પણ હોય છે. નો સંજ્ઞી અને નોઅસંજ્ઞી એવું જે કથન કર્યું છે, તે કેવલિયોની અપેક્ષાએ કહેલ છે વેદદ્વારમાં—આ ગર્ભજ મનુષ્ય "इत्थिवेया वि जाव अवेया वि" સ્ત્રીવેદવાળા પણ હોય છે. પુરૂષવેદવાળા પણ હોય છે અને નપુંસક વેદવાળા પણ હોય છે તથા વેદ વિનાના પણ હોય છે. વેદનો ઉદય નવમા ગુણસ્થાન સુધી રહે છે. દસમા સૂક્ષ્મસંપરાય વિગેરે ગુણસ્થાનોમાં વેદનો ઉદય રહેતો નથી, તેથી અહિયાં અવેદક પણ હોય છે. એવું કહેવામાં આવેલ છે.

પર્યાપ્તિદ્વારમાં આ ગર્ભજ મનુષ્ય "पंच पज्जत्ती" પાંચ પર્યાપ્તિવાળા હોય છે. અને પાંચ અપર્યાપ્તિવાળા પણ હોય છે જો કે પર્યાપ્તિયો છ પ્રકારની હોય છે, પરંતુ અહિયા પાંચ પર્યાપ્તિયોવાળા હોય છે આમ જે કહેવામાં આવ્યું છે તે ભાષાપર્યાપ્તિ અને મન· પર્યાપ્તિમાં અભેદની વિવક્ષાથી તેમ કહેલ છે

દૃષ્ટિદ્વારમા આ ગર્ભજ મનુષ્ય "तिविहा वि दिट्ठी" સમ્યક્દૃષ્ટિ, મિથ્યાદૃષ્ટિ, અને સમ્યક્મિથ્યાદૃષ્ટિ એમ ત્રણે પ્રકારની દૃષ્ટિવાળા હોય છે

दर्शनद्वारे—'चत्तारि दंसणा' मनुष्याणां चत्वारि दर्शनानि भवन्ति तद्यथा–चक्षुर्दर्शनिनः, अचक्षुर्दर्शनिनः, अवधिदर्शनिनः, केवलदर्शनिनस्ते भवन्तीति दर्शनद्वारम् ॥

ज्ञानद्वारे—'णाणी वि अन्नाणी वि' मनुष्या ज्ञानिनोऽपि भवन्ति अज्ञानिनोऽपि भवन्तीति । 'जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी' तत्र ये मनुष्या ज्ञानिनस्ते अस्त्येकके द्विज्ञानिनः, 'अत्थेगइया तिण्णाणी' अस्त्येकके त्रिज्ञानिनः, 'अत्थेगइया चउण्णाणी' अस्त्येकके चतुर्ज्ञानिनः, 'अत्थेगइया एगणाणी' अस्त्येकके एकज्ञानिनः । 'जे दुण्णाणी' तत्र खलु ये द्विज्ञानिनः 'ते नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य' ये द्विज्ञानिनो मनुष्यास्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च भवन्तीति 'जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी तत्र खलु ये मनुष्या स्त्रिज्ञानिनो ज्ञानत्रयवन्तस्ते नियमतः आभिनिबोधिकज्ञानिनः, श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनश्च भवन्ति, 'अहवा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी मणपज्जवनाणी य' अथवा

हैं । दर्शनद्वार में ये गर्भज मनुष्य–"चत्तारि दंसणा" चार दर्शन चक्षुदर्शनवाले भी होते हैं अचक्षुदर्शनवाले भी होते है, अवधिदर्शनवाले भी होते हैं । और केवलदर्शनवाले भी होते हैं । ज्ञानद्वार में ये गर्भज मनुष्य "णाणी वि अन्नाणी वि" ज्ञानी भी होते है, और अज्ञानी भी होते हैं । "जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी" यदि ये ज्ञानी होते हैं । तो इनमें कितनेक दो ज्ञानवाले होते है कितनेक "तिण्णाणी" तीन ज्ञानवाले होते है "अत्थेगइया चउणाणी" कितनेक चार ज्ञानवाले होते है "अत्थेगइया एगणाणी" और कितनेक एक ज्ञानवाले होते हैं । इनमें जो "दुण्णाणी" दो ज्ञानवाले होते है वे नियम से आभिनिबोधिक ज्ञानी और श्रुतज्ञानी होते हैं "जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी ओहिनाणी" जो तीन ज्ञान वाले होते हैं वे आभिनिबोधिक ज्ञानवाले श्रुतज्ञानवाले और अवधिज्ञानवाले होते है । 'अहवा–'आभिणिबोहियनाणी. सुयणाणी. मणपज्जवनाणी' अथवा आभेनिबोधिक ज्ञानवाले

દર્શનદ્વારમાં આ ગર્ભજ મનુષ્ય–"चत्तारि दंसणा" ચક્ષુદર્શનવાળા પણ હોય છે, અચક્ષુદર્શનવાળા પણ હોય છે, અને અવધિદર્શનવાળા પણ હોય છે જ્ઞાનદ્વારમાં આ ગર્ભજ મનુષ્યો–"णाणी वि अन्नाणी वि" જ્ઞાની પણ હોય છે, અને અજ્ઞાની પણ હોય છે 'जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी' તેઓમાં જે જ્ઞાની હોય છે તેમાં કેટલાક બે જ્ઞાનવાળા અને કેટલાક "तिन्नाणी" ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે "अत्थेगइया चउनाणी" તથા કેટલાક ચાર જ્ઞાનવાળા હોય છે. અને "अत्थेगइया एगनाणी' કેટલાક એક જ્ઞાનવાળા હોય છે. અને તેઓમાં જેઓ "दुण्णाणी" બે જ્ઞાનવાળા હોય છે, તેઓ નિયમથી આભિનિબોધિક જ્ઞાનવાળા અને શ્રુતજ્ઞાનવાળા હોય છે, "जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी" જેઓ ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે તેઓ આભિનિબોધિક જ્ઞાનવાળા, શ્રુતજ્ઞાનવાળા, અને અવધિ જ્ઞાનવાળા હોય છે "अहवा–आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी" અથવા આભિનિબોધિક જ્ઞાનવાળા શ્રુતજ્ઞાનવાળા અને મનઃપર્ય-

ये मनुष्या स्त्रिज्ञानिनस्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो मन.पर्यवज्ञानिनश्च भवन्तीति, अवधिज्ञानमन्तरेणापि मनःपर्यवज्ञानस्य सभवादिति । 'जे चउण्णाणी ते णियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी य' ये तु मनुष्याः चतुर्ज्ञानिनस्ते नियमात् आभिनिबोधिकज्ञानिनो भवन्ति श्रुतज्ञानिनो भवन्ति अवधिज्ञानिनो भवन्ति तथा मनःपर्यवज्ञानिनश्च भवन्तीति । 'जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी' ये मनुष्या एकज्ञानिनस्ते नियमतः केवलज्ञानिन एव भवन्ति केवलज्ञानसद्भावे तदितरज्ञानापगमात् केवलालोकप्रादुर्भावे तदितरक्षुद्रालोकानां मत्यादीनामभाव एव भवतीति, अत एक ज्ञानवानेव स भवतीति, । ननु केवलज्ञानोत्पत्तौ कथं मत्यादिज्ञानान्तराणामभाव' यावता यानि मत्यादिज्ञानानि स्वीयस्वीयावरणक्षयोपशमेन

श्रुतज्ञानवाले और मनःपर्ययज्ञानवाले होते हैं । क्योंकि अवधिज्ञान के बिना भी मनः पर्ययज्ञान हो जाता है । " जे चउ णाणी ते णियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिणाणी मणपज्जवनाणी य" जो गर्भज मनुष्य चार ज्ञानवाले होते हैं वे नियम से आभिनिबोधिक ज्ञानवाले होते है, श्रुत ज्ञानवाले होते हैं, अवधिज्ञानवाले होते है, और मनःपर्यय ज्ञानवाले होते हैं । "जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी" जो एक ज्ञानवाले होते है वे नियम से एक केवल ज्ञानवाले ही होते हैं । क्योकि केवल ज्ञानवाले के सद्भाव में दूसरे ज्ञानो का सद्भाव नहीं रहता है वे विलीन हो जाते हैं । उसी प्रकार केवलालोक के प्रादुर्भाव होने पर उससे भिन्न क्षुद्रालोकवाले मतिज्ञान आदि ज्ञानों का अभाव ही हो जाता है इसलिये केवली केवल एक केवल ज्ञानवाला ही होता है ।

शंका— केवलज्ञान की उत्पति होने पर मत्यादि रूप दूसरे ज्ञानों का अभाव कैसे हो सकता है क्योकि जो मत्यादि ज्ञान अपने २ आवरण के क्षयोपशम से उत्पन्न होते है वे मत्या-

---

વજ્ઞાનવાળા હોય છે. કેમકે-અવધિજ્ઞાન પ્રાપ્તજ્ઞાન વિના પણ મન પર્યવજ્ઞાન થઈ જાય છે. 'जे चउनाणी ते णियमा आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी य" જે ગર્ભજમનુષ્યો ચારજ્ઞાનવાળ હોય છે, તેઓ નિયમથી આભિનિબોધિક જ્ઞાનવાળા હોય છે શ્રુતજ્ઞાનવાળા હોય છે અવધિ જ્ઞાનવાળા હોય છે અને મન·પર્યય જ્ઞાનવાળા પણ હોય છે એ રીતે ચાર જ્ઞાનવાળા હોય છે. "जे पगनाणी ते नियमा केवलनाणी" જે એ એક જ્ઞાન વાળા હોય છે, તેઓ નિયમથી એક કેવળ જ્ઞાનવાળા જ હોય છે. કેમકે કેવળજ્ઞાન ના અસ્તિત્વ પણામાં બીજા જ્ઞાનોનું અસ્તિત્વ પણું રહેતું નથી અર્થાત્ તે તેમાં વિલીન થઈ જાય છે એજ પ્રમાણે કેવલાલોક નો પ્રાદુર્ભાવ થાય ત્યારે તેનાથી જુદા ક્ષુદ્રાલોકવાળા મતિજ્ઞાન આદિ જ્ઞાનોનો અભાવ જ થઈ જાય છે તેથી કેવલીઓ કેવળ એક કેવળ જ્ઞાનવાળા જ હોય છે.

શંકા—કેવળ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય ત્યારે મતિજ્ઞાન વિગેરે બીજા જ્ઞાનોનો અભાવ કેવીરીતે થઈ જાય છે? કેમ કે જે મત્યાદિજ્ઞાન પોતપોતાના આવરણુના ક્ષયોપશમથી ઉત્પન્ન

प्रादुर्भवन्ति तानि मतिश्रुतादीनि स्वस्व समस्तावरणविलये सुतरामेव प्रादुर्भवेयुश्चारित्रपरिणामवत्, तदुक्तम्—'आवरणदेसविगमे, जाइं विज्जंति मइसुयाईणि ।
आवरणसव्वविगमे कह ताइं न होंति जीवस्स' ॥१॥
आवणदेशविगमे यदि तानि भवन्ति मतिश्रुतादीनि ।
सर्वावरणविगमे कथं तानि न भवन्ति जीवस्येतिच्छाया ॥

इति चेद् अत्रोच्यते-यथा जात्यस्य मरकतादिमणे र्मलोपेतस्य यावत्पर्यन्तं समूलमलापगमो न भवति तावत्पर्यन्तं यथा यथा देशतो मलापगम स्तथा तथा देशतस्तस्य मणे रभिव्यक्ति र्जायते सा चाभिव्यक्तिः क्वचित्कदाचित् कथञ्चिद् भवतीत्यनेकप्रकारा भवति तथैव

दिज्ञान अपने अपने समस्त आवरणों के विलय हो जाने पर अपने आप ही चारित्र परिणाम के जैसे प्रकट होंगे ही जैसे कहा है-"आवरणदेसविगमे" इत्यादि । अर्थात् देशतः ज्ञानावरण के विगम होने पर जब मत्यादि ज्ञान प्रकट होते हैं तो फिर जब पूर्ण रूप से अपने अपने आवरणो का विगम हो जावेगा तो फिर वे क्यों नही जीव के रहेंगे अवश्य रहेंगे,

उत्तर-ऐसी यह आशंका ठीक नहीं है-क्योंकि जिस प्रकार स्वभावतः शुद्ध भी मरकत आदि मणि मलादि पर्याय से युक्त हुआ अशुद्ध अवस्थावाला रहता है और कालान्तर में जैसा २ उसका मैल अंशतः दूर होता जाता है वैसे २ वह अपनी आंशिक २ निर्मलता में आता रहता है और जब वह मलादि पर्याय से सर्वथा रहित हो जाता है तो वह अपनी पूर्ण निर्मलता में जो कि उसकी स्वभाव रूप है आ जाता है। यहां जो आंशिक निर्मलता अभिव्यक्ति है वह एक प्रकार की नहीं है किन्तु अनेक प्रकार की है परन्तु स्वभाविक जो निर्मलता

થાય છે, તેમ ત્યાદિજ્ઞાનો પોતપોતાના સઘળા આવરણો નો વિલય થઈ જાય ત્યારે પોતે પોતાની મેળેજ ચારિત્ર પરિણામની જેમ પ્રગટ થશે જ. જેમ કહ્યુ છે કે-"आवरणदेसविगमे" ઈત્યાદિ અર્થાત્ દેશતઃ જ્ઞાનાવરણની સમાપ્તિ થતાં જ્યારે મતિજ્ઞાનવિગેરે પ્રગટ થાય છે, તો પછી પૂર્ણરીતે પોતાપોતાના આવરણની સમાપ્તિ થઈ જશે તો પછી તેઓ જીવને કેમ નહીં રહે ? અર્થાત્ અવશ્ય રહેશે.

ઉત્તર—આ ઉપર પ્રમાણેની શંકા યોગ્ય નથી કેમકે—જેમ સ્વભાવથી શુદ્ધ એવા મરકત વિગેરે મણિયો મલ વિગેરે પર્યાયવાળા થતાં અશુદ્ધ અવસ્થા વાળા બને છે. અને કાલાન્તરે જેમ જેમ અંશતઃ તે મેલ દૂર થતો જાય છે, તેમ તેમ તે પોતાની આંશિક આંશિક નિર્મળ પણામાં આવતા રહે છે. અને જ્યારે તે મલાદિ પર્યાયથી બિલ્કુલ છૂટિ જાય છે ત્યારે તે પોતાના પૂર્ણ નિર્મલપણામાં કે જે તેના સ્વભાવ સિદ્ધ છે, તેમાં આવી જાય છે અર્થાત્ મેલ દૂર થતાં તે સ્વાભાવિક શુદ્ધ રીતે સ્પષ્ટ દેખાઇ છે. અહિંયાં જે આંશિક નિર્મળતા કહી છે તે એક પ્રકારની નથી પરંતુ અનેક પ્રકારની હોય છે. પરંતુ

जीवस्यापि सकलकालकलाकलापावलम्बि सकलपदार्थसार्थपरिच्छेदकरणैकपारमार्थिकस्वरूपस्यापि कर्मावरणमलपटलतिरोहितस्य यावत्पर्यन्तं न सकलकर्मात्मकमलविनाशस्तावत्पर्यन्तं यथा यथा देशतः कर्ममलापगमो भवति तथा तथा तस्य जीवस्य पदार्थविज्ञप्तिरुद्भवति, सा च कदाचित् कथञ्चिद् अनेकप्रकारा भवति ।

तदुक्तम्—'मलविद्धमणे र्व्यक्ति र्यथाऽनेकप्रकारतः ।
कर्मविद्धात्मविज्ञप्ति स्तथाऽनेकप्रकारतः ॥१॥

साचानेकप्रकारता मतिश्रुतादिभेदरूपाऽवसेया, ततश्च यथा मरकतादिमणेः सकल मलापगमे सकलास्पष्टदेशव्यक्तिव्यवच्छेदेन परिस्फुटरूपा एकाभिव्यक्तिः समुपजायते, एवमेव जीवस्यापि

है वह एक ही प्रकार की है इसी प्रकार जीव का भी ससार भर के समस्त पदार्थो को हस्तामलकवत् युगपत् जानने का स्वभाव है यही उसकी परमार्थिक शुद्धता है परन्तु शुद्धता रूप स्वभाव कर्मावरण रूप मल से तिरोहित हो रहा है—मलिन हो रहा है—सो जब तक सकल कर्मरूप मलका विनाश नही हो जाता है तब तक यह समस्त पदार्थों का युगपत् हस्तामलकवत् ज्ञान नहीं बन पाता है अतः जिस किसी निमित्तादि के वश से जैसे २ उस कर्मरूप आवरण का मलका—अंशतः २ विगम होता रहता है वैसा २, इस जीव को अंशतः अंशतः पदार्थ प्रकाशक विज्ञप्ति उत्पन्न होती रहती है यह विज्ञप्ति एक प्रकार की नही होती है अनेक प्रकार की होती है कभी यह विज्ञप्ति उसको मतिज्ञान रूप कहलाती है कभी श्रुतज्ञानादिरूप कहलाती है जैसे-कहा है—"मलविद्धमणे र्व्यक्ति" इत्यादि ।

अतः यह मानना चाहिये कि—जिस प्रकार से मलोपेत मणिकी अंशतः मलापगम में अंशतः अभिव्यक्ति होती है और पूर्णरूप से मलापगम में पूर्ण अभिव्यक्ति होती है उसी प्रकार

સ્વાભાવિક જે નિર્મલતા છે, તે એકજ પ્રકારની છે એજ પ્રમાણે સંસાર ભરના સઘળા પદાર્થો ને હસ્તામલકવત્ એકી સાથે જાણીલેવાનો જીવનોપણ સ્વભાવ છે એજ તેની પારમાર્થિક શુદ્ધતા છે પરંતુ શુદ્ધતારૂપ સ્વભાવ કર્માવરણ રૂપ મળથી ઢંકાઈ જાય છે અર્થાત્ મલીન થઈ જાય છે તે જ્યા સુધી સકલકર્મરૂપ મલનો વિનાશ થતો નથી, ત્યા સુધી આ સઘળા પદાર્થોનો એકી સાથે હસ્તામલકવત્ જાણી શકાતા નથી. તેથી કોઇપણ નિમિત્ત વશાત્ જેમ જેમ એ કર્મરૂપ આવરણનો—મલનો અંશત નાશથતો જાય છે તેમ તેમ આ જીવને અંશત અંશતઃ પદાર્થને પ્રકાશ કરનાર વિજ્ઞપ્તિ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થતી રહે છે. આ વિજ્ઞપ્તિ એક પ્રકારની હોતી નથી પણ અનેક પ્રકારની હોય છે કોઇ વખત આ વિજ્ઞપ્તિ તેના મતિજ્ઞાનરૂપે કહેવાય છે કોઇવાર શ્રુતજ્ઞાનાદિરૂપ કહેવાય છે જેમ કહ્યું છે કે—"मलविद्धमणेर्व्यक्ति" ઇત્યાદિ તેથી એ માનવું જોઇએ કે—જેમ મલવાળા મણિના અંશત મલ દૂરથવાથી અંશતઃ સ્પષ્ટતા થાય છે, અને સંપૂર્ણ પણાથી મલ દૂર થવાથી સંપૂર્ણ શુદ્ધતા

ज्ञानदर्शनचारित्रप्रभावेण निःशेषावरणप्रणाशाच्शेषदेशज्ञानव्यवच्छेदरूपाऽपि परिस्फुटा सकलवस्तुपर्यायप्रपञ्चस्य हस्तामलकवत् साक्षात्कारिणी विज्ञप्तिरुद्भवति ।

अति परिस्फुटैकरूपाभिव्यक्तित्वेनैव-(एकज्ञानिनः) इत्युक्तम् ।

तदुक्तम्—'यथा जात्यस्य रत्नस्य निःशेषमलहानितः ।

स्फुटैकरूपाऽभिव्यक्ति विज्ञप्ति स्तद्वदात्मनः ॥१॥ इति ॥

'एवं अन्नाणी' एवं ज्ञानिवदेव अज्ञानिनोऽपि 'दु अन्नाणी ति अन्नाणी' द्व्यज्ञानिन स्त्र्यज्ञानिन', तत्र ये द्व्यज्ञानिन स्ते नियमतो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च भवन्ति ये तु त्र्य ज्ञानिनस्ते मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिनश्च भवन्तीति ॥

योगद्वारे—'मणजोगी वि वयजोगी वि कायजोगी वि अजोगी वि' इमे मनुष्या

से ज्ञानदर्शन चारित्र और तप रूप रत्न चतुष्टय के प्रभाव से जब सम्पूर्ण आवरण का विनाश हो जाता है तब बाकी के पदार्थ के एकदेश को जानने वाले मत्यादि ज्ञानो का व्यवच्छेद विलीनीकरण-हो जाता है-इससे अति परिस्फुट और सकलवस्तु पर्याय प्रकाशक विज्ञप्ति-ज्ञान-कैवल्य-उद्भूत हो जाती है। जैसे कहा है—"यथा जात्यस्य रत्नस्य" इत्यादि ।

"एवं अन्नाणी" गर्भज मनुष्य जिस प्रकार ज्ञानी होते कहे गये हैं उसी प्रकार वे अज्ञानी भी होते हैं। "दु अन्नाणी ति अन्नाणी" ये दो अज्ञानवाले भी होते हैं और तीन अज्ञानवाले भी होते हैं। जो दो अज्ञानवाले होते हैं वे नियम से मति अज्ञानवाले और श्रुतअज्ञान वाले होते है और जो तीन अज्ञानवाले होते हैं वे मति अज्ञानवाले, श्रुत अज्ञानवाले और विभंगज्ञानवाले होते है। योगद्वारमें-ये गर्भज मनुष्य "मणजोगी वि, वयजोगी वि, काय जोगी वि, अजोगी वि" मनोयोगी भी होते हैं, वचन योगी भी होते है और काय योगी भी होते हैं तथा

થાય છે. એજ પ્રમાણે જ્ઞાનદર્શન ચારિત્ર અને તપરૂપ રત્નચતુષ્ટયના પ્રભાવથી જ્યારે સંપૂર્ણ આવરણનો નાશ થઇ જાય છે, ત્યારે બાકીના પદાર્થના એક દેશને જાણનારા મત્યાદિ જ્ઞાનોનો વ્યવચ્છેદ-વિલીનીકરણ થઈ જાય છે. તેથી અત્યંત શુદ્ધ અને સકલવસ્તુ પર્યાયને પ્રકાશકરનાર વિજ્ઞપ્તિ-જ્ઞાન અર્થાત કેવળજ્ઞાન ઉત્પન્ન થઇ જાય છે જેમ કહેલ છે કે-"यथा जातस्य रत्नस्य" ઇત્યાદિ

"एवं अन्नाणी" જે પ્રમાણે ગર્ભજ મનુષ્યને જ્ઞાની હોવાનું કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે તેઓ અજ્ઞાનીપણુ હોય છે "दुअन्नाणी त्ति अन्नाणी" તેઓ બે અજ્ઞાનવાળા પણુ હોય છે, અને ત્રણુ અજ્ઞાનવાળા પણુ હોય છે જેઓ બે અજ્ઞાનવાળા હોય છે, તેઓ નિયમથી મતિ-અજ્ઞાનવાળા અને શ્રુત અજ્ઞાનવાળા હોય છે અને જેઓ ત્રણુ અજ્ઞાનવાળા હોય છે. તેઓ મતિ અજ્ઞાન, શ્રુત અજ્ઞાન, અને વિભંગ જ્ઞાનવાળા હોય છે

યોગદ્વારમા—આ ગર્ભજ મનુષ્ય "मणजोगी वि वयजोगी वि, कायजोगी वि अजोगी वि" મનોયોગવાળા પણુ હોય છે, વચનયોગવાળા પણુ હોય છે અને કાયયોગવાળા પણુ

मनोयोगिनोऽपि भवन्ति तथा वचोयोगिनोऽपि भवन्ति काययोगिनोऽपि भवन्ति। केचन अयोगिनोऽपि भवन्तीति।

तत्र ये चायोगिनस्ते शैलेशीमवस्था प्रतिपन्ना ज्ञातव्या इति योगद्वारम्॥

उपयोगद्वारे—'दुविहो उवजोगे' द्विविधो उपयोगः मनुष्याणां गर्भजानां साकारोपयोगोऽपि भवति अनाकारोपयोगोऽपि भवतीति, उपयोगद्वारम्॥

आहारद्वारे—'आहारो छद्दिसिं' आहारः षड्दिशि, गर्भजमनुष्याणां लोकमध्ये एवावस्थानेन लोकनिष्कुटरूपाहारप्रतिबन्धकाभावात् नियमतः षड्भ्यो दिग्भ्य आगताहारपुद्गलानां ग्रहणं भवतीति भावः। उपपातद्वारे—'उववाओ नेरइएहिं अहे सत्तमवज्जेहिं' उपपातो नैरयिकेभ्योऽधःसप्तमवर्जेभ्यः, मनुष्याणामुपपातश्चतुर्गतिभ्य एव भवति। तत्र यदि

कोई २ अयोगी भी होते हैं—अयोगी वे ही होते हैं जो शैलेशी अवस्था को प्राप्त करते हैं। उपयोगद्वारमें—"दुविहे उवजोगे" इन गर्भज मनुष्यो में साकार उपयोग भी होता है और अनाकार उपयोग भी होता है आहारद्वारमें इन गर्भज मनुष्यों का आहार छह दिशाओ में से आगत पुद्गलद्रव्यों का होता है क्योंकि ये गर्भज मनुष्य लोक के बीच में ही होते हैं इसलिये इन्हें आहार की प्राप्ति में किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध—अलोक का प्रतिबन्ध—नहीं होता है उसका अभाव रहता है। इसलिये नियमतः छहों दिशाओं से आगत आहारपुद्गलों का इनके ग्रहण होता रहता है। उपपातद्वारमें "उववाओ नेरइएहिं अहे सत्तमवज्जेहिं" इन गर्भज मनुष्यों के उत्पाद सातवी पृथिवीं के नैरयिकों को छोड़कर शेष छ नरकों के नारकियो में से होता है तात्पर्य कहने का यह है कि मनुष्यों का उत्पाद चतुर्गति के जीवों में से होता है जब यह नैरयिको में से होता है तो सातवीं नरक के नैरयिकों से

હોય છે તથા કોઇ કોઇ અયોગી પણ હોય છે અયોગી તેઓ જ હોય છે કે-જેઓ શીલેશી અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરે છે

ઉપયોગદ્વારમાં—"दुविहो उवजोगो" આ ગર્ભજ મનુષ્યો માં સાકાર ઉપયોગ પણ હોય છે, અને અનાકાર ઉપયોગ પણ હોય છે. આહારદ્વારમાં—આ ગર્ભજ મનુષ્યો નો આહાર છએ દિશાઓમાંથી આવેલા પુદ્ગલદ્રવ્યો નો હોય છે. કેમકે આ ગર્ભજ મનુષ્ય લોક ની મધ્યમાં જ હોય છે. તેથી તેઓને આહાર પ્રાપ્ત કરવામાં કોઇ પણ પ્રકારનો પ્રતિબંધ-અટલેકે-અલોક સંબંધી પ્રતિબંધ-રૂકાવટ થતો નથી. તેનો અભાવ રહે છે તેથી નિયમતઃ છએ દિશાઓમાંથી આવેલા આહાર પુદ્ગલો તેઓને ગ્રહણ થતા રહે છે. ઉપપાતદ્વારમાં—"उववाओ नेरइएहि अहे सत्तमवज्जेहिं" આ ગર્ભજ મનુષ્યોનો ઉત્પાદ (ઉત્પત્તિ) સાતમી પૃથ્વીના નૈરયિકોને છોડીને બાકીના છએ નરકોના નારકિયો માંથી થાય છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે-મનુષ્યોનો ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ ચારગતિવાળા જીવોમાંથી થાય છે જ્યારે નૈરયિકોમાથી ઉત્પાદ થાય છે, ત્યારે સાતમી નરકના નૈરયિકોને છોડીને બાકી ના છએ નર-

नैरयिकेभ्य उपपातो भवति तदा सप्तमनरकवर्जेभ्य एव भवति, तदुक्तम्—

'सत्तममहिनेरइया, तेऊवाऊअणंतरुव्वट्टा।
नवि पावे माणुस्सं तहेव असंखेज्जावासाउया सव्वे'॥
सप्तममहीनैरयिकाः तेजस्कायिका वायुकायिका अनन्तरदवृत्ता।
नैव प्राप्नुवन्ति मानुष्यं तथैवासख्येयवर्षायुष्का सर्वे ॥ इतिच्छाया

यदि मनुष्याणामुपपातस्तिर्यग्योनिकेभ्यो भवति 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववाओ' तिर्यग्योनिकेभ्यो मनुष्याणामुपपातस्तदा–'असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं' असख्येयवर्षायुष्कवर्जेभ्य एव तिर्यग्योनिकेभ्यो भवतीति। 'मणुस्सेहिं अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेज्जवासाउयवज्जेहिं' यदि मनुष्येभ्य एव उपपातो भवति मनुष्याणां तदा–अकर्मभूम कान्तर-

इनका उत्पाद नहीं होता है—क्योंकि सातवीं नरक का नारकी मरकर नियम से तिर्यञ्च की पर्याय में जन्म लेता है सोही कहा—"सत्तममहिनेरइया" इत्यादि।

सातवीं नरक का नारकी तथा तेजस्कायिक एवं वायुकायिक मरकर मनुष्य नहीं होता है तथा असंख्यातवर्ष की आयुवाले मनुष्य एवं तिर्यञ्च भी मनुष्य गति में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि "तिरिक्खजोणिएहिंतो उववाओ" मनुष्यो का उत्पाद तिर्यग्योनिक जीवो में से होता है तो "असंखेज्जवासाऊयवज्जेहिं" असख्यात वर्ष की आयुवाले भोग भूमिया तिर्यग् जीवों में से नहीं होता है क्योंकि ये जीव सब मरकर देव गति में ही जन्म लेते हैं बाकी के तिर्यग्योनिकजीवों में से इनका उत्पाद होता है 'मणुस्सेहिं" यदि मनुष्यो में से इनका उत्पाद होता है तो असंख्यात वर्ष का आयुवाले अकर्मभूमि भोग भूमि के मनुष्यों में से एवं अन्तर द्वीपज मनुष्यों में से इनका उत्पाद नहीं होता है केवल कर्मभूमिज मनुष्यों में से

કોના નૈરયિકોમાંથી થાય છે. એટલેકે સાતમી નરકના નૈરયિકો માંથી તેઓની ઉત્પત્તિ મનુષ્યોમાં થતી નથી. કેમકે-સાતમી નરકના નારકીયો મરીને નિયમથી તિર્યંચ નીપર્યાય માં જન્મ લે છે. એજ કહ્યું છે કે-"सत्तममहिनेरइया" ઇત્યાદિ

સાતમા નરકના નારકી તથા તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક એ ત્રણ મરીને મનુષ્ય થતા નથી. તથા અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્ય અને તિર્યંચ પણ મનુષ્ય ગતિમાં ઉત્પન્ન થતા નથી જો "तिरिक्खजोणिएहिंतो उववाओ" મનુષ્યોની ઉત્પત્તિ તિર્યગ્યો નિવાળા જીવોમાંથી થાય તો "असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं" અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા ભોગભૂમિયા તિર્યગ્ જીવોમાંથી થતી નથી કેમકે-એ જીવોમરીને દેવગતિમાં જ જન્મ લે છે. એટલે કે-તેશિવાયના બાકીના તિર્યંગ્યોનિવાળા જીવોમાંથી તેમની ઉત્પત્તિ થાય છે "मणुस्सेहिं" જો મનુષ્યો માંથી તેમનો ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ થાય તો અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા અકર્મભૂમિ ભોગભૂમિના મનુષ્યોમાથી તથા અંતરદ્વીપજ મનુષ્યોમાંથી તેમનો ઉત્પાદ-ઉત્પત્તિ થતો નથી કેવળ કર્મભૂમિવાળા મનુષ્યોમાથી તેઓ ની ઉત્પત્તિ થાય છે,

द्वीपकासंख्यातवर्षायुष्कवर्जेभ्यो मनुष्येभ्य एव भवतीति । 'देवेहिं सव्वेहिं' देवेभ्यः सर्वेभ्य', यदि देवेभ्य उपपातो भवति मनुष्याणां तदा सर्वदेवेभ्योऽनुत्तरोपपातिकदेवपर्यन्तेभ्यो भवतीत्युपपातद्वारम् ॥

स्थितिद्वारे—'ठिई जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' मनुष्याणां स्थितिः-आयुष्यकालो जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणा भवति, 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाई' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि-त्रिपल्योपमप्रमाणा स्थिति र्भवतीति स्थितिद्वारम् ॥ 'दुविहा वि मरंति' समुद्घातमधिकृत्य मरणचिन्तायां मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि म्रियन्ते असमवहता अपि म्रियन्ते।

उद्वर्त्तनाद्वारे—'उव्वट्टित्ता नेरइयादिसु जाव अणुत्तरोववाइएसु' अनन्तरमुद्वृत्य नैरयिकादिषु, यावदनुत्तरोपपातिकेषु । इत उद्वृत्य सर्वेषु नैरयिकेषु सर्वेषु तिर्यग् योनिकेषु सर्वेषु मनुष्येषु सर्वेषु देवेषु अनुत्तरोपपातिकपर्यवसानेषु गच्छन्तीत्यर्थः, 'अत्थेगइया

इनका उत्पाद होता है। "देवेहिं सव्वेहिं" यदि देवों में से इनका उत्पाद होता है तो समस्त देवों में से इनका उत्पाद होता है स्थितिद्वार में-इन गर्भज मनुष्यों की स्थिति "जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं" जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की है समवहत द्वार से ये गर्भज मनुष्य "दुविहा वि मरंति" मारणान्तिक समुद्घात से समवहत होकर भी मरते हैं, और मारणान्तिक समुद्घात से नहीं समवहत होकर भी मरते हैं । उद्वर्त्तन निकलना द्वार में-ये गर्भज मनुष्य "उव्वट्टित्ता नेरइयादिसु जाव अणुत्तरोववाइएसु" जब अपनी पर्याय को छोड़कर परगति में जन्म धारण करते है तो ये नरकों में भी जन्म धारण कर सकते हैं समस्त तिर्यग्योनिकों में भी जन्म धारण कर सकते हैं, सर्व मनुष्यो में भी जन्म धारण कर सकते हैं और अनुत्तरोपपात्तिक के समस्तदेवो में भी जन्म धारण

'देवेहिं सव्वेहिं" જો તેમની ઉત્પત્તિ દેવોમાથી થાય છે, તો સઘળા દેવોમાંથી તેઓની ઉત્પત્તિ થાય છે.

સ્થિતિદ્વારમાં— આ ગર્ભજ મનુષ્યની સ્થિતિ "जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइ" જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની છે સમવહતદ્વારમાં—આ ગર્ભજ મનુષ્ય "दुविहा वि मरंति" મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઈને એટલેકે આઘાત પ્રાપ્ત કરીને પણ મરે છે. અને મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહતથયાવિના એટલેકે આઘાત પ્રાપ્ત કર્યાવિના પણ મરે છે. ઉદ્વર્તનદ્વારમાં—આ ગર્ભજ મનુષ્ય "उवट्टित्ता नेरइएसु जाव अणुत्तरोववाइएसु" જ્યારે પોતાની પર્યાયને છોડીને અન્ય ગતિમાં જન્મધારણ કરે છે, તો તેઓ નારકોમાં પણ જન્મધારણ કરે છે, સઘળા તિર્યગ્યોનિકોમાં પણ જન્મધારણ કરી શકે છે. સર્વ મનુષ્યોમાં પણ જન્મ ધારણ કરી શકે છે.

सिज्झंति जाव अंतं करेंति' अस्त्येकके सिध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति, अत्र यावत्पदेन 'बुज्झंति-मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं' बुध्यन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामित्यन्तस्य ग्रहणं भवति, तथा च अस्त्येकके सिद्धयन्ति-परिनिष्ठितार्था भवन्ति सिद्धिं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः बुध्यन्ते-निरावरणत्वेन समस्तपदार्थजातबोधयुक्ता भवन्ति, मुच्यन्ते-अष्टविधकर्मभिर्मुक्ता भवन्ति। परिनिर्वान्ति-कर्मसन्तापापगमेन शीतलीभूता भवन्ति, अतएव सर्वदु.खानां शारीरमानसभेदानामन्तं-विनाशं कुर्वन्ति इति।

गत्यागतिद्वारे—'ते णं भंते! जीवा' ते खलु भदन्त! जीवाः—गर्भजमनुष्याः 'कइ गइया कइ आगइया पन्नत्ता' कतिगतिकाः कत्यागतिकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'पंच गइया चउरागइया' इमे मनुष्याः

कर सकते हैं। "अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंत करेंति" कितनेक मनुष्य ऐसे भी होते हैं जो उसी भव से सिद्ध होजाते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त कर देते हैं यहां यावत्पद से "बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं" इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों का अर्थ ऐसा है कि कितनेक गर्भज मनुष्य ऐसे होते हैं कि जो उसी भव से "सिज्झंति" सिद्धिको प्राप्त करलेते हैं अर्थात् कृत-कृत्य हो जाते है "बुद्धयन्ते" निरावरण होनेसे केवलालोक से समस्त पदार्थों को जानलेते हैं ',मुच्यन्ते" ज्ञानावरणीयादिसमस्त कर्मों से छूट जाते हैं "परिनिर्वान्ति" कर्माग्नि के संताप से रहित होकर शीतलीभूत हो जाते हैं। अतएव ये शारीरिक एवं मानसिक समस्त दुःखों का अन्त-विनाश कर देते हैं। गत्यागतिद्वार में-ये गर्भज मनुव्य कैसे होते है-इस बात को गौतम ने प्रभु से "ते णं भंते"! जीवा कइगइया कइ आगइया पन्नत्ता" इस सूत्र द्वारा-पूछा है-हे भदन्त! ये गर्भज मनुष्य कति

"अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति' કેટલાક મનુષ્યો' એવા પણ હોય છે કે જેઓ એજ ભવમાં સિદ્ધ થઈ જાય છે. યાવત્ સમસ્ત દુઃખોનો અંત-નાશ કરીદે છે. અહિયાં યાવત્પદથી "बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं" આપદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોનો અર્થ એવો છે કે--કેટલાક મનુષ્યો એવા હોય છે કે—જેઓ આજ ભવમાં सिज्झंति સિદ્ધિને પ્રાપ્ત કરી લે છે અર્થાત્ કૃતકૃત્ય થઈ જાય છે. "बुध्यन्ते" નિરાવરણ હોવાથી કેવલાલોકથી સઘળા પદાર્થને જાણીલે છે, "मुच्यन्ते" જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે સઘળા કર્મોથી છૂટિજાય છે. "परिनिर्वान्ति" કર્મરૂપી અગ્નિના સંતાપથી રહિતથઇને શીતલીભૂત થઇ જાય છે અતએવ શારીરિક અને માનસિક સમસ્તદુ ખોનો અંત-નાશ કરી દે છે.

ગત્યાદિદ્વારમાં—આ ગર્ભજ મનુષ્ય કેવા હોય છે? એ વાત ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને "ते णं भंते जीवा कइगइया कइ आगइया पन्नत्ता" આ સૂત્રદ્વારા પૂછેલછે. ગૌતમસ્વામી પૂછે છે કે-હે ભગવન્ આ ગર્ભજ મનુષ્ય 'કતિગતિક' એટલે કે કેટલી ગતિમાં જવાવાળા અને 'કતિ આગતિક એટલે કે કેટલી ગતિમાંથી આવવાવાળા હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ

पञ्चगतिकाः मनुष्येभ्य उद्वृत्य नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवसिद्धिरूपासु पञ्चसु गतिषु गमनात्। तथा-चतुर्भ्यो नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उद्वृत्य मनुष्येषु आगमनात् पञ्चगतिकाश्चतुरागतिकाः कथ्यन्ते। '**परित्ता संखेज्जा पन्नत्ता**' प्रत्येकशरीरिणः संख्याताः-संख्यातकोटि प्रमाणत्वात् प्रज्ञप्ताः-कथिता इति।

सम्प्रति— गर्भजमनुष्यप्रकरणमुपसंहरन्नाह-'**से त्तं मणुस्सा**' ते-उपर्युक्ताः गर्भजमनुष्याः शरीरादि गत्यागतिद्वारैर्निरूपिता इति ॥सू० २७॥

गर्भजमनुष्यान् निरूप्य देवान् निरूपयितुमाह--'**से किं तं देवा**' इत्यादि।

मूलम्—'से किं तं देवा? देवा चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा-भवणवासी। वाणमंतरा-जोइसिया। वेमाणिया। से किं तं भवणवासी? भवणवासी दसविहा पन्नत्ता। तं जहा-असुरा जाव थणिया। से तं भवणवासी। से किं तं वाणमंतरा? वाणमंतरा देवभेदो सव्वो भाणियव्वो जाव ते सामसओ दुविहा पन्नत्ता। तं जहा-पज्जत्ता य अपज्जत्ता य।

गतिक और कतिआगतिक होते है' उत्तर में प्रभुने कहा है-"**गोयमा! पंच गइया चउरागइया**" ये गर्भज मनुष्य पाचगतियों में जाने वाले होते हैं और चार गतियों से आये हुए होते हैं "**पांच गतियों में जाने वाले होते हैं**" इसका भाव ऐसा है कि ये नारकतिर्यञ्च, मनुष्य देव और सिद्धिगति में जाते हैं। और यहां ये नारकतिर्यञ्च, मनुष्य और देव गतिरूप चार गतियो से आकर जन्मलेते हैं इसलिए चतुरागतिक होते हैं। "**परित्ता संखेज्जा पन्नत्ता**" प्रत्येक शरीरी संख्यात कोटि प्रमाण होने से सख्यात कहेगये हैं। "**सेत्तं मणुस्सा**" इस प्रकार से शरीरादि से लेकर गत्यागति द्वारों तक कहा गया यह मनुष्यों का प्रकरण समाप्त हुआ। सू० २६॥

કહે છે કે "**ગોયમા! પંચ ગઇયા ચઉરાગઇયા**" આ ગર્ભજ મનુષ્ય પાંચ ગતિયોમા જવા વાળા હોય છે, અને ચાર ગતિયોમાંથી આવવાવાળા હોય છે 'પાંચ ગતિયોમાં જવાવાળા હોય છે' એનો ભાવ એ છે કે તેઓ નારકગતિ, તિર્યંચગતિ, મનુષ્યગતિ, દેવગતિ અને સિદ્ધિગતિમાં જાય છે. અને નારક, તિર્યંચ મનુષ્ય અને દેવગતિરૂપ ચાર ગતિયોમાથી આવીને આ ગર્ભજ મનુષ્યોમાં જન્મ લે છે. તેથી તેઓને ચતુરાગતિક કહ્યા છે. '**परित्ता संखेज्जा पन्नत्ता**" પ્રત્યેક શરીરી સંખ્યાત કોટિ પ્રમાણુવાળા હોવાથી સંખ્યાત કહેલા છે. "**से त्तं मणुस्सा**" આ પ્રમાણે શરીરદ્વાર વિગેરે દ્વારોથી લઇને ગત્યાગતિદ્વાર સુધી કહેલ આ મનુષ્ય સંબંધી પ્રકરણ સંપૂર્ણ થયું ॥સૂ૦ ૨૬॥

तओ सरीरा, वेउव्विए तेयए कम्मए। ओगाहणा दुविहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। उक्कोसेणं सत्त रयणीओ। उत्तरवेउव्विया जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं। सरीरगा छण्हं संघयणाणं असंघयणी। णेवट्ठी णेव छिरा। णेव ण्हारू णेव संघयणमत्थि। जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव तेसिं संघायत्ताए परिणमंति। किं संठिया? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता। तं जहा–भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा। ते णं समचउरंससंठिया पन्नत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते णं नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता। चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णा, छलेस्साओ, पंचइंदिया, पंचसमुग्घाया, सन्नी वि असन्नी वि। इत्थिवेया वि। पुरिसवेया वि। णो णपुंसगवेया। अपज्जत्ती पज्जत्तीओ पंच। दिट्ठी तिन्नि, तिन्नि दंसणा, णाणी वि। अन्नाणी वि। जे नाणी ते नियमा, तिण्णाणी अन्नाणी भयणाए। तिविहे जोगे, दुविहे उवओगे, आहारो नियमा छद्दिसिं, ओसन्नं कारणं पडुच्च वण्णओ हालिद्दसुक्किल्लाइं जाव आहारमहारेंति। उववाओ तिरियमणुस्सेहिं। ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। दुविहा वि मरंति। उव्वट्टित्ता नो नेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहासंभवं, नो देवेसु गच्छंति। दुगइया दुआगइया। परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता। से तं देवा, से तं पंचेंदिया। से तं ओराला तसा पाणा॥सू० २८॥

छाया—अथ के ते देवाः ? देवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-भवनवासिनः वानव्यन्तरा ज्योतिष्काः वैमानिकाः । अथ के ते भवनवासिनः, भवनवासिनो दशविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-असुरा यावत्स्तनिताः । ते एते भवनवासिनः । अथ के ते वानव्यन्तराः, वानव्यन्तरादिदेवभेदस्सर्वोऽपि भणितव्यो यावत् ते समासतो द्विविधा. प्रज्ञप्ता. तद्यथा-पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च । त्रीणि शरीराणि-वैकुर्विकं तैजसं कार्मणम् । अवगाहना द्विविधा भवधारणीया च उत्तरवैक्रियिकी च । तत्र खलु या सा भवधारणीया सा जघन्येन अङ्गुलस्यासंख्येयभागम्, उत्कर्षेण सप्त रत्नयः । उत्तरवैक्रियिकी जघन्येन अङ्गुलासंख्येय भागम्, उत्कर्षेण योजनशतसहस्रम् । शरीराणि षण्णां संहननानामसंहननानि, नैवास्थीनि नैव शिराः नैव स्नायवः, नैव संहननमस्ति । ये पुद्गला इष्टा. कान्ताः यावत्तेषां संघाततया परिणमन्ति । किं संस्थितानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-भवधारणीयानि च उत्तर वैक्रियिकाणि च । तत्र खलु यानि तानि भवधारणीयानि तानि खलु समचतुरस्रसंस्थितानि प्रज्ञप्तानि । तत्र खलु यानि तानि उत्तरवैक्रियिकाणि खलु तानि नानासंस्थानसंस्थितानि प्रज्ञप्तानि । चत्वारः कषायाः, चतस्रः संज्ञाः, षड्लेश्याः, पञ्चेन्द्रियाणि, पञ्च समुद्घाता, संज्ञिनोऽपि, असंज्ञिनोऽपि । स्त्रीवेदा अपि पुरुषवेदा अपि । नो नपुंसकवेदाः । पर्याप्तयोऽपर्याप्तयः पञ्च । दृष्टयस्तिस्रः । त्रीणि दर्शनानि, ज्ञानिनोऽपि, अज्ञानिनोऽपि, ये ज्ञानिनस्ते नियमात् त्रिज्ञानिनः, अज्ञानिनो भजनया । त्रिविधो योगः, द्विविध उपयोगः, आहारो नियमात् षड्दिशि । अवसन्नं कारणं प्रतीत्य वर्णतो हारिद्रशुक्लिमानि यावदाहारमाहरन्ति । उपपातस्तिर्यङ्मनुष्येभ्यः स्थितिर्जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि । द्विविधा अपि म्रियन्ते, उद्वृत्य नो नैरयिकेषु गच्छन्ति तिर्यङ्मनुष्येषु यथासम्भवम्, नो देवेषु गच्छन्ति । द्विगतिकाः द्व्यागतिका । परीता असंख्याताः प्रज्ञप्ताः ते एते देवाः । ते एते पञ्चेन्द्रियाः, ते एते औदारिका स्त्रसाः प्राणाः ॥सू० २८॥

टीका—'से किं तं देवा' अथ के ते देवाः ? देवानां कियन्तो भेदा इति प्रश्न, उत्तरयति-'देवा चउव्विहा पन्नत्ता' देवाश्चतुर्विधाः-चतुष्प्रकारकाः प्रज्ञप्ता, द्योतनात् विलक्षण-

---

गर्भज मनुष्यों का निरूपण करके अब सूत्रकार देवों का निरूण करते हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"से किं तं देवा" इत्यादि । सूत्र ॥२७॥

टीकार्थः—"से किं त देवा" हे भदन्त ! देवो के कितने भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है-"देवा चउव्विहा पन्नत्ता" हे गौतम ! देवो के चार भेद कहे गये है । जिनका

ગર્ભજ મનુષ્યોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર દેવોનું નિરૂપણ કરે છે. તેમા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—'से किं तं देवा" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"से कि तं देवा' હે ભગવન્ ! દેવોના કેટલા ભેદો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-"देवा चउव्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! દેવોના ચાર ભેદો કહેલા છે

प्रकाशवत्त्वात् शोभमाना ये भवन्ति ते देवाः, ते च देवाश्चत्वार इति, भेद चतुष्टयमेव दर्शयति 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया' भवनवासिनः वानव्यन्तराः ज्योतिष्काः वैमानिकाः, तथा च भवनवासिवानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकभेदेन देवाश्चतुर्विधा भवन्तीति। तत्र प्रथमोद्दिष्टभवनवासिभेदज्ञानाय प्रश्नयन्नाह-'से किं तं' इत्यादि 'से किं तं भवनवासी' अथ के ते भवनवासिनो देवाः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति-'भवणवासी दसविहा पन्नत्ता' भवनवासिनो देवाः दशविधाः-दशप्रकारका प्रज्ञप्ताः-कथिता इति। तद्दशविधत्वं दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'असुरा जाव थणिया' असुराः-असुरकुमाराः १ यावत् स्तनिताः स्तनितकुमाराः १०, यावत्पदेन नागकुमारा.२, सुवर्णकुमारा.३, विद्युत्कुमाराः ४, अग्निकुमाराः ५, द्वीपकुमाराः ६, उदधिकुमाराः ७, दिक्कुमाराः ८, वायुकुमाराः ९, एतेषां द्वितीयादारम्य नवमपर्यन्तानामसुरकुमाराणां संग्रहो भवतीति।

भवनवासिनमुपसहरन् आह-'से तं भवनवासी' ते एते असुरकुमारादयो भवनवासिदेवा निरूपिता इति। वानव्यन्तरादिकत्रिविधदेवभेदान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-'से किं तं'

शरीर विलक्षण प्रकाशवाला होता हैं और कान्ति युक्त होने से जो सुन्दर लगते हैं वे देव हैं। इन देवों के "तं जहा" वे चार भेद इस प्रकार से है-"भवणवासी वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया" भवनवासी १, वानव्यन्तर २, ज्योतिष्क ३, और वैमानिक ४, "से किं तं भवणवासी" हे भदन्त ! भवनवासी देवों के कितने भेद हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं— "भवणवासी, दसविहा पण्णत्ता।" हे गौतम ! भवनवासी दश प्रकार के कहे गये हैं- "तं जहा" जैसे-"असुरा जाव थणिया" असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार यहाँ यावत्पद से नागकुमार २, सुपर्णकुमार ३, विद्युत्कुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार ६, उदधिकुमार ७, दिक्कुमार ८, वायुकुमार ९, इन का ग्रहण हुआ है। इसप्रकार से "से त्तं भवणवासी" भवनवासी देवों का यह निरूपण है ? से किं तं वाणमंतरा"

જેમનું શરીર વિલક્ષણ પ્રકાશવાળું હોય છે, અને કાંતિ યુક્ત હોવાથી જે સુંદર લાગે છે, તેઓ દેવ કહેવાય છે તે દેવો ચાર પ્રકારના છે. "तं जहा" તે ચાર ભેદો આ પ્રમાણે છે. "भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया" ભવનવાસી ૧' વાનવ્યંતર ૨, જ્યોતિષ્ક ૩ અને વૈમાનિક ૪, "से किं तं भवणवासी" હે ભગવન્ ભવનવાસી દેવોના કેટલા ભેદો કહ્યા છે, ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-"भवणवासी दसविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! ભવનવાસી દસ પ્રકારના કહ્યા છે. "त जहा" તે આ પ્રમાણે છે.-"असुरा जाव थणिया" અસુરકુમાર યાવત્ સ્તનિતકુમાર અહિયાં યાવત્પદથી નાગકુમાર ૨, સુપર્ણકુમાર ૩, વિદ્યુત્કુમાર ૪, અગ્નિકુમાર ૫, દ્વીપકુમાર ૬, ઉદધિકુમાર ૭, દિશાકુમાર ૮, વાયુકુમાર ૯, આટલા ગ્રહણ કરાયા છે "से त्तं भवणवासी" આ રીતે ભવનવાસી દેવોનું નિરૂપણ કર્યું છે "से किं

इत्यादि, 'से किं तं वाणमंतरा' अथ के ते वानव्यन्तराः वने भवा वानाः वानाश्च ते व्यन्तराश्चेति वानव्यन्तरास्ते कियन्त इति प्रश्नः, उत्तरयति–'देवभेदो सव्वो भाणियव्वो' देवभेदः सर्वोऽपि भणितव्यो यथा प्रज्ञापनासूत्रे कथित स्तथैव अत्रापि वक्तव्यः, कियत्पर्यन्तं प्रज्ञापना प्रकरणं वक्तव्यम्। तत्राह–'जाव' इत्यादि. 'जाव' यावत्–यावत् पर्यन्तं वानव्यन्तरादारभ्य वैमानिकप्रकरणं परिपूर्णं पठ्यते तावत्पर्यन्तमित्यर्थः वानव्यन्तराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचभेदेनाष्टविधाः, । एवं ज्योतिष्का. पञ्चविधाः चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्र–तारा रूपाः। वैमानिका. द्विविधाः कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च। तत्र कल्पोपपन्नाः सौधर्माद्यच्युतान्तदेवलोकसम्बन्धिनो द्वादशविधाः। कल्पातीता द्विविधाः ग्रैवेयका अनुत्तरोपपातिकाश्च। ग्रैवेयका अधस्तनाधस्तनादिभेदभिन्ना नवविधाः । अनुत्तरोपपातिका विजयवैजयन्तजयन्ता-पराजितसर्वार्थसिद्धभेदात् पञ्चविधा इति। 'ते समासओ दुविहा पन्नत्ता' ते समासतो द्वि

हे भदन्त! वानव्यन्तर देव कितने प्रकार के है? हे गौतम! "वाणमंतरादिभेदो सव्वो भाणियव्वो" वानव्यन्तर से लेकर वैमानिक देव पर्यन्त के भेद समस्त जैसा प्रज्ञापना सूत्र में कहा गया है वैसा ही यहाँ पर भी कहना चाहिये।

जैसे– पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गन्धर्व ८, इस प्रकार आठ प्रकार के होते है।।२। ज्योतिषिक देव चन्द्र १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारारूप ५, इस प्रकार पांच प्रकार के होते हैं। वैमानिक देव कल्पोपपन्न और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते हैं, उनमें कल्पोपन्न देव सौधर्म से लेकर अच्युत पर्यन्त बारह प्रकार के होते हैं। कल्पातीत देव ग्रैवेयक और अनुत्तरौपपातिक के भेद से दो प्रकार के होते हैं। उन में ग्रैवेयक देव अधस्तनाधस्तन आदिके भेद से नौ प्रकार के होते हैं। और अनुत्तरौपपातिक देव–विजय वैजयन्त–जयन्त अपराजित और सर्वार्थसिद्ध के भेद से पांच .प्रकारके होते हैं ४। इस प्रकार भवन-

---

तं वाणमंतरा" હે ભગવન્ વાનવ્યન્તરદેવ કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે? હે ગૌતમ! "वाणमंतरादि भेदो सव्वो भाणियव्वो" વાનવ્યન્તરથી લઈને વૈમાનિક દેવ પર્યન્તના સમસ્ત ભેદો કે જે પ્રમાણે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહેલ છે એજ પ્રમાણે અહિંયાં પણ કહેવા જોઈએ. જેમકે–કિન્નર ૧, કિંપુરૂષ ૨, મહોરગ ૩, ગંધર્વ ૪, યક્ષ ૫, રાક્ષસ ૬, ભૂત ૭, અને પિશાચ ૮. આ પ્રમાણે વાનવ્યંતર દેવો આ આઠ પ્રકારના હોય છે.

જ્યોતિષિકદેવ-ચંદ્ર ૧, સૂર્ય ૨, ગ્રહ ૩, નક્ષત્ર ૪, તારા ૫, આ રીતે પાંચ પ્રકારના હોય છે। વૈમાનિકદેવ કલ્પોપપન્નક અને કલ્પાતીતના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે. તેમાં કલ્પોપપન્નકદેવ સૌધર્મકલ્પથી લઈને અચ્યુતકલ્પ પર્યન્તના બાર પ્રકારના હોય છે કલ્પાતીત દેવ ગ્રૈવેયક અને અનુત્તરોપપાતિકના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે. તેમાં ગ્રૈવેયકદેવ અધસ્તનાધસ્તન વિગેરેના ભેદથી નવ પ્રકારના હોય છે. અને અનુત્તરોપપાતિકદેવ વિજયવૈજ-

विधाः प्रज्ञप्ता, ते भवनवासित आरभ्य वैमानिकपर्यन्ता देवाः समासतः-संक्षेपेण द्विविधाः-द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः द्वैविध्यं दर्शयति- 'तं जहा' इत्यादि, 'तंजहा' तद्यथा-'पज्जत्ता य अपज्जत्ता य' पर्याप्ताश्च अपर्याप्ताश्चेति। देवानामपर्याप्तत्वमुत्पत्तिकाले एव ज्ञातव्यं न तु अपर्याप्तिनामकर्मोदयात्, तदुक्तम्—

'नारयदेवातिरिय मणुयगब्भजा जे असंखेज्जवासाउ।
एए उ अपज्जत्ता, उववाए चेव बोद्धव्वा' ॥१॥ इति,
नारका देवा स्तिर्यङ्मनुजा गर्भजा ये असङ्ख्येयवर्षायुष्काः।
एते त्वपर्याप्ता उपपाते एव बोद्धव्याः, इतिच्छाया ॥

सम्प्रति—तेषां देवानां शरीरादिद्वाराणि निरूपयितुं प्रथमं शरीरद्वारमाह—'तओ सरीरा' इत्यादि, 'तओ सरीरा' त्रीणि शरीराणि तेषां भवनवासिप्रभृतिवैमानिकान्तदेवानां त्रीणि

पति आदिके भेद से चार प्रकार के देवों का प्रज्ञापनोक्त वर्णन समझ लेना चाहिये कहां तक! इसके लिये सूत्रकार कहते हैं-"जाव" इत्यादि, "जाव" यावत् यहां तक अर्थात् चार प्रकार के देवो के वर्णन पर्यन्त कहना चाहिये। अब सूत्रकार इन देवों के भेद के विषय में कहते हैं-"ते समासओ दुविहा पन्नत्ता" भवनवासी आदि देव जो संक्षेप से दो प्रकार के कहे गये हैं-"तं जहा" वे इस प्रकार से हैं-"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" पर्याप्त और अपर्याप्त देवों में अपर्याप्तता उत्पत्तिकाल में ही जाननी चाहिये किन्तु अपर्याप्तिनामकर्म के उदय से नहीं जैसे कहा है-"नारयदेवातिरिय" इत्यादि।

नारक, देव, तिर्यञ्च, मनुष्य गर्भज और असख्यात वर्ष की आयुवाले अकर्मभूमिके मनुष्य ये सब उपपात काल में ही अपर्याप्त जानना चाहिये ॥१॥

अब सूत्रकार इन देवों के शरीरादि द्वारों का वर्णन करते हैं-इन देवों के "तओ

यन्त-જયન્ત અપરાજીત અને સર્વાર્થ સિદ્ધના ભેદથી પાંચ પ્રકારના હોય છે. ૪ આ રીતે ભવનપતિ વિગેરેના ભેદથી ચાર પ્રકારના દેવોનુ વર્ણન પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણેનુ સમજી લેવુ. તે કથન ક્યાં સુધીનુ ગ્રહણ કરવુ ? તે માટે સૂત્રકાર કહે છે કે-"जाव" ઇત્યાદિ "जाव" યાવત્ આ કથન સુધી અર્થાત્ ચાર પ્રકારના દેવોના વર્ણન પર્યન્ત સમજી લેવુ.

હવે સૂત્રકાર આ દેવોના ભેદોના સંબંધમાં કહે છે કે-'ते समासओ दुविहा पण्णत्ता" ભવનપતિ આદિદેવ સંક્ષેપથી બે પ્રકારના કહ્યા છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે.-"पज्जत्ता य अपज्जत्ता य" પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત દેવોમાં અપર્યાપ્ત પણું ઉત્પત્તિ કાળમાં જ સમજવું પરંતુ અપર્યાપ્તિ નામકર્મના ઉદયથી નથી જેમ કહ્યુ છે કે-"नारयदेवातिरिय" ઇત્યાદિ નારક, દેવ, તિર્યંચ, મનુષ્ય, ગર્ભજ અને અસખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળા અકર્મભૂમિના મનુષ્ય આ બધા ઉત્પત્તિ કાળમાં અપર્યાપ્ત સમજવા. ॥૧॥

હવે સૂત્રકાર આ દેવોના શરીર વિગેરે દ્વારોનુ વર્ણન કરે છે.-આ દેવોને "तओ

त्रीण्येव शरीराणि भवन्तीति । कानि त्रीणि शरीराणि तत्राह–'वेउव्विए' इत्यादि, 'वेउव्विए तेयए कम्मए' वैक्रियिकम्–लब्ध्यादिविक्रियाजनितमेकं शरीरम्, तैजसम्, कार्मणम् तथा च–वैक्रियतैजसकार्मणभेदात् त्रिविधं शरीरं देवानां भवतीति शरीरद्वारम् ॥ अवगाहनाद्वारे–'ओगाहणा दुविहा' अवगाहना शरीरावगाहना देवानां द्विविधा–द्विप्रकारका प्रज्ञप्ता कथिता तद्यथा–'भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य' भवधारणीया प्रथमाऽवगाहना, द्वितीया उत्तरवैक्रियिकी च । 'तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा' तत्र–तयो रवगाहनयोर्मध्ये खलु या सा–भवधारणीया शरीरावगाहना, 'सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं' सा जघन्येनाङ्गुलस्यासंख्येयभागम् अंगुलासंख्येयभागप्रमाणेत्यर्थः । 'उक्कोसेणं सत्तरयणीओ' उत्कर्षेण सप्तहस्तप्रमाणा भवतीत्यर्थः । उत्तरवेउव्विया जहन्नेणं अंगुल संखेज्जइभागं' उत्तर वैक्रियिकी शरीरावगाहना जघन्येनाङ्गुलसंख्येयभागप्रमाणा भवति । 'उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं'

सरीरा" तीनही शरीर होते हैं । "वेउव्विए तेयए, कम्मए" वैक्रिय, तैजस और कार्मण लब्ध्यादि विक्रिया से उत्पन्न जो शरीर है वह वैक्रिय शरीर है । अवगाहनाद्वार में—इन देवों की शरीरावगाहना "ओगाहणा दुविहा" के अनुसार दो प्रकार की होती है । "भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य" एक भवधारणीय शरीरावगाहना और दूसरी उत्तर वैक्रियिकी शरीरावगाहना "तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा" इनमें जो भवधारणीय शरीरावगाहना है वह 'जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग" जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है । और "उक्कोसेणं" "उत्कृष्ट से 'सत्त रयणीओ' सात हाथ प्रमाण होती है । "उत्तरवेउव्विया जहन्नेणं अंगुल संखेज्जइभागं" उत्तर वैक्रियिकी जो शरीरावगाहना है वह जघन्य से अंगुल के सख्यातवें भाग प्रमाण है । और "उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं" उत्कृष्ट से एक लाख योजन प्रमाण है । "संहननद्वार में–"सरीरगा छण्हं

सरीरा" त्रणु प्रकारना शरीरो होय छे "वेउव्विए तेयए, कम्मए," वैक्रिय, तैजस, अने कार्मणु लब्धी विगेरे विक्रियाथी उत्पन्न थयेल जे शरीर छे, ते वैक्रिय शरीर कहेवाय छे.

अवगाहनाद्वारमां—आ देवोना शरीरनी अवगाहना "ओगाहणा दुविहा" आ कथन प्रमाणे बे प्रकारनी होय छे ते बे प्रकारो आ प्रमाणे समजवा "भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य" ओक भवधारिणीय शरीरावगाहना अने बीजी उत्तरवैक्रिय शरीरावगाहना "तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा" तेमां जे भवधारणीय शरीरावगाहना छे ते "जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं" जघन्यथी आंगळना असंख्यातमां भागप्रमाणुनी होय छे अने "उक्कोसेणं" उत्कृष्टथी "सत्त रयणीओ" सात हाथ प्रमाणु होय छे. "उत्तरवेउव्विया जहण्णेणं अंगुल संखेज्जइभाग" उत्तरवैक्रियिकी जे शरीरावगाहना छे, ते जघन्यथी आंगळना संख्यात भाग प्रमाणुवाळी छे. अने "उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं" उत्कृष्टथी

उत्कर्षेण योजनशतसहस्रम्, उत्तरवैक्रियिकी शरीरावगाहना उत्कर्षतो लक्षयोजनप्रमाणा भवतीति अवगाहना द्वारम् ॥

संहननद्वारे—'**सरीरगा छण्हं संघयणाणं असंघयणी**' देवानां शरीराणि षण्णं संहननानां मध्येऽसंहननानि—संहननरहितानि भवन्तीत्यर्थः। कुतो देवानां शरीराणि संहननरहितानि भवन्ति तत्राह—'**णेवट्ठी**' इत्यादि, '**णेवट्ठी**' नैवास्थीनि '**णेव छिरा**' नैव शिराः '**णेव ण्हारू**' नैव स्नायवः, अतस्तेषाम् '**णेव संघयणमत्थि**' नैव संहननमस्ति, यतो देवानां शरीरेषु न विद्यन्तेऽस्थीनि नैव विद्यन्ते शिराः, नापि स्नायवः संहननमस्थिनिचयात्मकमेवातोऽस्थ्यादीनामभावात् न देवशरीरे सहननानि भवन्तीति भावः। ननु अस्थ्यादिविलक्षणसमुदायस्यैव शरीरमिति सज्ञा भवति तदत्रास्थ्याद्यभावात् कथं देवानां शरीरमिति व्यपदेशः तत्राह—'**जे पोग्गला**' इत्यादि, '**जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव ते तेसिं संघायत्ताए परिणमंति**' ये पुद्गला इष्टाःमनस इच्छामापन्नाः, तत्रा

संघयणाणं असंघयणी" देवों के शरीर छह संहननो से ही रहित होते है। इसलिये असहननी कहे गये है। इनके शरीर संहननों से रहित इसलिये होते हैं कि ये "**णेवट्ठी**" हड्डी से विहीन होते है। "**णेव छिरा**" इन में शिराएँ नहीं होती है' '**णेव ण्हारू**" इनमें स्नायुएँ नही होती है। इसलिये "**णेव संघयणमत्थि**" इनमें अस्थियो के निचय रूप जो संहनन है वह नहीं है।

शंका—जों अस्थि आदिकों का विलक्षण समुदाय रूप होता है उसी को शरीर ऐसी संज्ञा होती है। तो फिर जब देवों के अस्थि हड्डी—आदि का समूह ही नहीं होता फिर उनके शरीर है ऐसा व्यपदेश कैसे हो सकता है।

तो इस शंका को दूर करने के लिये सूत्रकार कहते है—"**जे पोग्गला, इट्ठा, कंता जाव ते तेसिं संघायत्ताए परिणमंति**" जो पुद्गल इष्ट—मनकी इच्छा को रुचते है—अर्थात्

એકલાખ યોજન પ્રમાણુની છે. આ એક લાખ યોજન અવગાહનાવાળા આભિયોગ્ય જાતિનાદેવ જ્યારે ઐરાવત હાથીનું રૂપ ધારણ કરે છે. ત્યારની અપેક્ષાથી કહેલ છે.

સંહનનદ્વારમાં | "**सरीरगा छण्हं संघयणाणं असंघयणी**" દેવોના શરીર છ સંહનો વિનાના જ હોય છે. તેથી તેઓને અસંહનની કહ્યા છે. તેઓના શરીર સંહનનો વિનાના એટલા માટે કહેલ છે કે–તેમને '**णेवट्ठी**" હાડકા હોતા નથી. "**णेव छिरा**" તેઓમા શિરાઓ એટલે કે નાડીયો હોતી નથી. "**णेव ण्हारू**" તેઓને સ્નાયુઓ હોતા નથી. તેથી "**णेव संघयणमत्थि**" તેઓમાં અસ્થિ કહેતાં હાડકના સમૂહરૂપ જે સંહનન હોય છે, તે હોતું નથી.

શંકા—હાડકા વિગેરેના વિલક્ષણ સમુદાય રૂપ જે હોય છે, તેને શરીર એવી સંજ્ઞા કહેલ છે. તો પછી તેઓને શરીર છે, એવો વ્યપદેશ કેવી રીતે થઈ શકે છે?

આ શંકાના સમાધાન માટે સૂત્રકાર કહે છે કે–'**जो पोग्गला, इट्ठा, कंता, जाव ते तेसिं संघायत्ताप परिणमंति**" જે પુદ્ગલો ઈષ્ટ, મનની ઈચ્છાને રૂચે છે, અર્થાત્ ઈચ્છાના

कान्तमपि केषांचिदिष्टं भवति तत्राह—कान्ताः पुद्गलाः, कान्ताः—कमनीयाः शुभवर्णोपेतत्वात् यावत्पदेन—'पिया मणुन्ना मणामा' प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा एतेषां संग्रहो भवति, तत्र यत एव कान्तास्ते पुद्गला अत एव प्रियाः सदैवात्मनि प्रियबुद्धिमुत्पादयन्ति तथा शुभास्ते पुद्गलाः शुभरसगन्धस्पर्शात्मकत्वात् मनोज्ञा विपाकेऽपि सुखजनकतया मनःप्रह्लाददेतुत्वात् मनोऽमाः सदैव भोजतया जन्तूनां मनांसि अमन्ति—आप्नुवन्तीति इत्थभूतास्ते पुद्गलास्तेषां देवानां संघाततया शरीररूपेण परिणमन्ति, अयं भावः—यद्यपि अस्थ्यादीनां शरीरकारणानामभावात् न शरीरोत्पादसंभावना तथापि देवशरीरावच्छेदेन कर्मोपस्थापितभोगान्यथानुपपत्त्या इष्टत्वादिगुणान्विताः पुद्गलाः देवशरीराकारतया परिणता भवन्तीति ॥

इच्छा के विषयभूत होते हैं एवं शुभवर्णोपेत होने से जो कमनीय होते हैं, यावत् जो प्रिय होते है मनोज्ञ होते है, और मनोम होते है ऐसे पुद्गल उन देवों के शरीर रूप से परिणमते हैं। वे पुद्गल जिस कारण से कान्त होते है इसी कारण से वे प्रिय—सदा आत्मा में प्रिय बुद्धिके उत्पादक होते हैं, तथा शुभ गन्ध, शुभ रस, और शुभ स्पर्शात्मक होने से वे पुद्गल शुभ होते हैं। मनोज्ञ ये इसलिये होते हैं—कि विपाक के समय में भी ये सुखजनक होने से मन को आनन्द दायक होते है। मनोऽम ये इसलिये होते हैं कि ये सदैव भोग्य होने से देवो के मन को रुचिकर होते हैं। यह है—शरीर के कारणभूत अस्थि आदिकों का देवो के शरीर में यद्यपि अभाव हैं अतः वहां शरीर के उत्पाद की संभावना नहीं हो सकती है। परन्तु फिर भी देव शरीर के द्वारा वहां कर्मोपस्थापित भोगों की अन्यथानुपपत्ति द्वारा अर्थात् कर्मोपस्थापित भागों की उपपत्ति अन्यथा न हो इससे माना जाता है कि इष्टत्वादिगुणोपेत पुद्गल ही देवों के शरीर रूप से परिणत होते हैं—देव अपनी २, पर्याय में शुभाशुभ कर्म के अनुसार भोगों को भोगते है और यह भोगों का भोगना बिना शरीर

વિષયભૂત હોય છે, અને શુભ વર્ણોથી યુક્ત હોવાથી જે કમનીય અર્થાત્ સુંદર હોય છે, યાવત્ જે પ્રિય હોય છે, મનોજ્ઞ હોય છે, અને મનોમ હોય છ, એવા પુદ્ગલો તે દેવોના શરીરરૂપે પરિણમે છે. તે પુદ્ગલો જે કારણથી કાન્ત હોય છે એજ કારણથી તે પ્રિય સદા આત્મામાં પ્રિય બુદ્ધિને ઉત્પન્ન કરનાર હોય છ તથા શુભ ગંધ શુભ રસ, અને શુભ સ્પર્શાત્મક હોવાથી તે પુદ્ગલો શુભ હોય છે તે મનોજ્ઞ એ માટે હોય છે કે—વિપાકના સમયે પણ આ સુખ જનક હોવાથી મનને આનંદ દેનાર હોય છે તે મનોમ એ માટે હોય છે કે—તે હમેશાં ભોગ્ય હોવાથી દેવોના મનને રુચિકર હોય છે શરીરના કારણભૂત હાડકા વિગેરેનો દેવોના શરીરમાં જોકે અભાવ છે, તેથી ત્યાં શરીરના ઉત્પન્ન થવાની સંભાવના થઈ શકતી નથી પરંતુ દેવશરીરદ્વારા અર્થાત્ કર્મોપસ્થાપિત ભાગોની ઉપપત્તિ અન્યથા ન થાય તેથી માનવામાં આવે છે કે-ઇષ્ટ તત્વ વિગેરે ગુણોવાળા પુદ્ગલો જ દેવોના શરીરરૂપે પરિણમે છે દેવ પોતપોતાની પર્યાયમાં શુભાશુભ કર્માનુસાર ભોગોને

संस्थानद्वारे—'किं संठिया' किं संस्थितानि हे भदन्त ! देवानां शरीराणि कीदृशसंस्थान-संस्थितानीति प्रश्नः, भगवानाह -'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'दुविहा पन्नत्ता' द्विविधानि शरीराणि प्रज्ञप्तानि। शरीरद्वैविध्यमेव दर्शयति–'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य' भव धारणीयानि चोत्तरवैक्रियिकाणि च। "तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा' तत्र-तयोर्द्वयोः शरीरयोर्मध्ये खलु यानि तानि शरीराणि भवधारणीयानि 'ते णं समचउरंससंठिया पन्नत्ता' तानि खलु भवधारणीयानि शरीराणि समचतुरस्रसंस्थानसंस्थितानि–समचतुरस्रनामकसंस्थानेन युक्तानि भवन्तीति। 'तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया' तत्र खलु यानि तानि शरीराणि उत्तरवैक्रियिकाणि 'ते णं नाणा संठाणसंठिया पन्नत्ता' तानि खलु शरीराणि नाना संस्थानसस्थितानि अनेकप्रकारकसंस्थानयुक्तानि प्रज्ञप्तानि–कथितानि देवानाम् इच्छावशत एवानेकप्रकारकशरीरप्रादुर्भावादिति सस्थानद्वारम् ॥

के होता नहीं है अतः यह मानना चाहिये कि वहां शरीर के कारणभूत अस्थ्यादिको के अभाव में भी इष्टत्वादि गुणान्वित पुद्गल संघात ही उनके शरीर रूप से परिणत होते है।

संस्थानद्वार में—"किं संठिया" हे भदन्त ! देवों के शरीर किस संस्थान वाले होते हैं ? हे गौतम ! देवों के शरीर "दुविहा पन्नत्ता" दो प्रकार के कहे गये हैं 'तं जहा" जैसे–"भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य" भवधारणीय शरीर और उत्तरवैक्रिय शरीर "तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा" इन में जो भवधारणीय शरीर हैं वे तो "समचउरंससंठिया पन्नत्ता" समचतुरस्रसंस्थान वाले कहे गये है और जो "उत्तरवेउव्विया य" उत्तर वैक्रिय शरीर है "ते णं णाणासंठिया" वे अनेक प्रकार के संस्थानवाले हैं। क्योंकि देवों की इच्छा के वश से ही अनेक प्रकार के शरीरों का प्रादुर्भाव हो जाया करता है। इसलिये इनका नियत संस्थान नहीं होता है।

ભોગવે છે અને આ ભોગોનુ ભોગવવુ' તે શરીર વિના બનતુ' નથી. તેથી જ એમ માનવુ' જોઈએ કે–ત્યાં શરીરના કારણભૂત હાડકા વિગેરેના અભાવમાં પણ ઈષ્ટત્વાદિ ગુણોથી યુકત પુદ્ગલ સઘાત જ તેમના શરીરરૂપે પરિણમે છે.

સ'સ્થાનદ્વારમાં—"किं संठिया" હે ભગવન્ દેવોના શરીરો કયા સ'સ્થાનવાળા હોય છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–હે ગૌતમ ! દેવોના શરીરો "दुविहा पन्नत्ता" બે પ્રકારના કહ્યા છે. "तं जहा" તે બે પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य" ભવધારણીય શરીર અને ઉત્તર વૈક્રિય શરીર, 'तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा" તેમાં જે ભવ-ધારણીય શરીર છે, તે તો "समचउरंससंठिया पन्नत्ता"સમચતુરસ્ર સ'સ્થાનવાળા કહેલ છે. અને જે उत्तरवेउव्विया य" ઉત્તર વૈક્રિય શરીર છે, "ते णं णाणासंठिया" તે અનેક પ્રકારના સ'સ્થાનવાળા છે કેમકે દેવોની ઇચ્છાને વશથઈને જ અનેક પ્રકારના શરીરોનો પ્રાદુર્ભાવ થઈ જાય છે. તેથી તેઓનુ' નિયત સ'સ્થાન હોતુ નથી

कषायद्वारे-'चत्तारि कसाया' चत्वारः क्रोधमानमायालोभाख्याः कषाया देवानां भवन्तीति कषायद्वारम् ॥

संज्ञाद्वारे—'चत्तारि सन्ना' चतस्रः—आहारभयमैथुनपरिग्रहाख्याः संज्ञा देवानां भवन्तीति सज्ञाद्वारम् ।। लेश्याद्वारे—छलेस्सा षट्—कृष्णनीलकापोततैजसपद्मशुक्लाख्या लेश्या भवन्ति देवानामिति लेश्याद्वारम् ।। इन्द्रियद्वारे—'पंच इंदिया' पञ्च—स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः श्रोत्रात्मकानीन्द्रियाणि भवन्ति देवानामितीन्द्रियद्वारम् ॥ समुद्घातद्वारे—'पंच समुग्घाया' पञ्च समुद्घाताः देवानां वेदनाकषायमारणान्तिकवैक्रियतैजससमुद्घातसभवादिति समुद्घातद्वारम् ॥

संज्ञिद्वारे—'सन्नी वि असन्नी वि' ते देवाः संज्ञिनोऽपि भवन्ति अथ चासज्ञिनोऽपि नैरयिकवद् भवन्तीति सञ्ज्ञिद्वारम् ॥

वेदद्वारे—'इत्थिवेया वि पुरिसवेया वि नो नपुंसकवेया' ते देवाः स्त्रीवेदका अपि भवन्ति पुरुषवेदका अपि भवन्ति नो नपुंसक वेदका भवन्तीति, वेदद्वारम् ।। पर्याप्तिद्वारे—'पज्जत्ती

कषाय द्वार में—"चत्तारि कसाया" इन देवों के चारों क्रोध, मान, माया और लोभ कषायें होती हैं। संज्ञाद्वार में "चत्तारि सन्ना" इनके आहार, भय, मैथुन और परिग्रह ये चारो ही संज्ञाएँ होती हैं। लेश्याद्वार में—"छलेस्सा" इनके कृष्ण, नील, कापोत, तैजस, पद्म, और शुक्ल ये छह लेश्याएँ होती हैं। इन्द्रियद्वार में—इनके "पंच इंदिया" कर्ण—चक्षु—घ्राण—रसना—स्पर्श ये पांचों इन्द्रियां होती है। समुद्घातद्वार में—इनके "पंच समुग्घाया" पांच—वेदना, कषाय, मारणान्तिक, वैक्रिय, तैजस—समुद्घात होते हैं। संज्ञिद्वार में ये "सन्नी वि असन्नी वि" सज्ञी भी होते है और असंज्ञी भी होते है अर्थात् कितनेक उत्पत्तिकाल में असज्ञी होते हैं। वेदद्वार में—ये "इत्थियवेया वि पुरिसवेया वि नो नपुंसकवेया" स्त्री वेद वाले भी होते हैं, पुरुष वेद वाले भी होते हैं, पर नपुसक वेदवाले नहीं होते हैं

કષાયદ્વારમા—"चत्तारि कसाया" તે દેવોને ક્રોધ કષાય ૧, માનકષાય ૨, માયાકષાય ૩, અને લોભકષાય ૪, આ ચારે કષાયો હોય છે. સંજ્ઞાદ્વારમાં—"चत्तारि सन्ना" તેઓને આહાર સંજ્ઞા, ભયસંજ્ઞા, મૈથુનસંજ્ઞા, અને પરિગ્રહસંજ્ઞા આ ચારે સંજ્ઞાઓ હોય છે લેશ્યાદ્વારમા—"छलेस्सा" તેઓને કૃષ્ણલેશ્યા, નીલલેશ્યા, કાપોતલેશ્યા, તૈજસલેશ્યા પદ્મલેશ્યા. અને શુકલલેશ્યા આ છ લેશ્યાઓ હોય છે. ઇન્દ્રિયદ્વારમા તેઓને "पंच इंदिया" કર્ણ-કાન, ચક્ષુ, ઘ્રાણ-નાક, રસના-જીભ અને સ્પર્શ આ પાંચ ઇન્દ્રિયો હોય છે સમુદ્દઘાતદ્વારમાં—पंच "समुग्घाया" વેદના સમુદ્દઘાત, કષાય સમુદ્દઘાત, મારણાન્તિક સમુદ્દઘાત, વૈક્રિય સમુદ્દઘાત, અને તૈજસ સમુદ્દઘાત આ પાંચ સમુદ્દઘાતો તેઓને હોય છે. સંજ્ઞિદ્વારમા—તેઓ "सन्नी वि असन्नी वि" સંજ્ઞી પણ હોય છે, અને અસંજ્ઞી પણ હોય છે વેદદ્વારમાં—તેઓ "इत्थियवेगा वि पुरिसवेया वि नो नपुसगवेया" સ્ત્રીવેદવાળા પણ હોય છે. પુરૂષવેદવાળા પણ હોય છે. પરંતુ નપુંસકવેદવાળા હોતા નથી.

अपज्जत्तीओ पंच' देवाना पञ्च पर्याप्तयो भवन्ति पञ्च चापर्याप्तयो भवन्तीति पर्याप्तिद्वारम् ॥

दृष्टिद्वारे—'दिट्ठी तिन्नि' दृष्टयस्त्रिस्रः, केचन देवाः सम्यग्दृष्टयो भवन्ति. केचन मिथ्यादृष्टयो भवन्ति केचन सम्यग्मिथ्यादृष्टयो भवन्तीति दृष्टिद्वारम् ॥ दर्शनद्वारे–' तिन्नि दंसणा'-त्रीणि दर्शनानि चक्षुर्दर्शनानि अचक्षुर्दर्शनानि अवधिदर्शनानि च देवानां भवन्तीति दर्शनद्वारम् ॥

ज्ञानद्वारे—'णाणी वि अन्नाणी वि' ते देवा ज्ञानिनोऽपि भवन्ति, अज्ञानिनोऽपि भवन्तीति। अयं विकल्पोऽसंज्ञिमध्यविषयो भवति। 'जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी अण्णाणी भयणया' तत्र ये ज्ञानिनः ते नियमात् त्रिज्ञानिनः, अज्ञानिनश्च भजनया, अयं भावः–ये ज्ञनिनस्ते नियमात् त्रिज्ञानिन स्तद्यथा–अभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनश्च। तथा तत्र ये अज्ञानिनस्ते अस्त्येकके द्व्यज्ञानिन. अस्त्येकके त्र्यज्ञनिनः तत्र ये द्व्यज्ञानिनस्ते नियमान्मत्यज्ञानिनः, श्रुताज्ञानिनश्च ये त्र्यज्ञानिनस्ते नियमात् मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिनश्च,

---

पर्याप्तिद्वार में–"पज्जत्ती अपज्जत्तीओ पंच" ये पांच पर्याप्ति वाले और पांच अपर्याप्ति वाले होते हैं। यहां भाषा और मनःपर्याप्ति में अभेद की विवक्षा की गई है। इसलिये "पांच पर्याप्ति" ऐसा कहा है। दृष्टिद्वार में–"दिट्ठी तिन्नी" कितनेक देव सम्यग्दृष्टि होते हैं, कितनेक देव मिथ्यादृष्टि होते है, कितनेक देव मिश्रदृष्टि होते हैं। दर्शनद्वार में–"तिन्नि दंसणा" इनके चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन और अवधिदर्शन ये तीन दर्शन होते हैं। ज्ञानद्वार में–"णाणी वि अन्नाणी वि" ये ज्ञानी भी होते हैं और अज्ञानी भी होते हैं। "जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी अण्णाणी भयणया" इनमें जो ज्ञानी होते हैं तो वे नियम से तीन ज्ञानवाले होते हैं। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान इनको होते हैं। और जो इनमें भजना से अज्ञानी होते हैं

પર્યાપ્તિદ્વારમાં 'पज्जत्ती अपज्जत्तीओ पंच" તેઓ પાંચ પર્યાપ્તિવાળા અને પાંચ અપર્યાપ્તિવાળા હોય છે. અહિયાં ભાષા અને મન પર્યાપ્તિમાં અભેદની વિવક્ષા કહી છે તેથી જ 'પાંચ પર્યાપ્તિ' તેમ કહેલ છે. દૃષ્ટિદ્વારમાં—"दिट्ठी तिन्नी" કેટલાક દેવો સમ્યક્ દૃષ્ટિવાળા હોય છે, કેટલાક દેવો મિથ્યાદૃષ્ટિ વાળા હોય છે, અને કેટલાક દેવો મિશ્ર દૃષ્ટિવાળા હોય છે

દર્શનદ્વારમાં— "तिन्नि दंसणा" તેઓને ચક્ષુ દર્શન અચક્ષુદર્શન અને અવધિદર્શન આ ત્રણ દર્શનો હોય છે. જ્ઞાનદ્વારમાં 'णाणी वि अण्णाणी वि" તેઓ જ્ઞાની પણ હોય છે, અને અજ્ઞાની પણ હોય છે. "जे णाणी ते नियमा तिण्णाणी अण्णाणी भयणया" તેમાં જેઓ જ્ઞાની હોય છે, તેઓ નિયમથી મતિ જ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાન, એ ત્રણ જ્ઞાન વાળા હોય છે. અને જેઓ અજ્ઞાની હોય છે તેઓમાં ભજનથી કેટલાક અજ્ઞાન વાળા હોય છે, અને કેટલાક બે અજ્ઞાન વાળા હોય છે. જેઓ બે અજ્ઞાન વાળા

अयं च द्वयज्ञानिनश्च त्र्यज्ञानिनश्चेति विकल्पः असञ्ज्ञिमध्याद् ये देवा उत्पद्यन्ते तान् आश्रित्य ज्ञातव्यम् इति ज्ञानद्वारम् ॥ योगद्वारे—'तिविहे जोगे' त्रिविधो योगः देवानां मनोवचन-कायात्मकस्त्रिप्रकारकोऽपि योगो भवतीति योगद्वारम् ॥ उपयोगद्वारे–'दुविहे उपजोगे' द्विविध उपयोगः, देवानां साकारोपयोगश्च भवति तथाऽनाकारोपयोगश्चापि भवतीत्युपयोगद्वारम् ॥ आहारद्वारे–'आहारो णियमा छद्दिसिं' देवानामाहारो नियमात् षड्दिशि, लोकमध्येऽवस्था-नात् । 'ओसन्नं कारणं पडुच्च वण्णओ हालिद्दसुक्किल्लाइं जाव आहारमाहरेति' ओसन्नं प्रायः कारणं प्रतीत्य–प्रायशः कारणमाश्रित्य वर्णतो हारिद्रशुक्लान् आहारपुद्गलान् यावदा-हारमाहरन्ति देवाः,यावत्पदेन–गंधओ सुब्भिगंधाइं, रसओ अंबिलमहुराइं. फासओ मउय

इनमें कितनेक दो अज्ञानवाले और कितनेक तीन अज्ञान वाले होते है । इनमें जो दो अज्ञानवाले हैं वे नियम से मत्यज्ञान श्रुतज्ञान वाले होते हैं । और जो तीन अज्ञान वाले होते हैं वे नियम से मत्यज्ञान वाले श्रुत अज्ञान वाले और विभंगज्ञान वाले हाते हैं। ऐसा यह जो अज्ञानी होने का दो प्रकार का विकल्प है वह जो देव असंज्ञियों में से आकर के उत्पन्न होते हैं उनकी अपेक्षा से हैं । योग द्वार में–"तिविहे जोगे" इनके मनोयोग वचनयोग और काययोग ऐसे तीनों योग होते हैं । उपयोग द्वार में–"दुविहे उवजोगे" इनको दोनो प्रकार का उपयोग होता है । साकार उपयोग भी होता है और अनाकार उप-योग भी होता है आहार द्वार में—"आहारो नियमा छद्दिसिं" इनका आहार नियम से लोक के मध्य में इन्हें स्थित होने के कारण छहो दिशाओ में से आगत पुद्गलो का होता है । "ओसन्नं कारणं पडुच्च वण्णओं हालिद्दसुक्किल्लाइं जाव आहारमाहरेंति प्रायः कारण को लेकर ये वर्णकी अपेक्षा हारिद्रवर्ण वाले शुक्ल वर्ण वाले पुद्गलों का

હોય છે તેઓ મતિ અજ્ઞાન અને શ્રુત અજ્ઞાન વાળા હોય છે, અને જેઓ ત્રણ અજ્ઞાનવાળા હોય છે, તેઓ મતિ અજ્ઞાનવાળા શ્રુત અજ્ઞાન વાળા અને વિભંગ જ્ઞાન વાળા હોય છે એવી રીતે અજ્ઞાની હોવાના સંબંધમાં જે આ બે પ્રકારોનો વિકલ્પ છે, તે જે દેવ અસંજ્ઞિયો-માંથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, તેઓની અપેક્ષાથી કહેલ છે યોગદ્વારમા—"તિવિહે જોગે" તેઓને મનોયોગ, વચનયોગ, અને કાય યોગ, એવા ત્રણે યોગ હોય છે. ઉપયોગદ્વારમાં–"દુવિહે ઉવજોગે" તેઓમાં સાકાર ઉપયોગ અને અનાકાર ઉપયોગ એમ બે પ્રકારના ઉપ-યોગ હોય છે આહારદ્વારમાં—"આહારો નિયમા છદ્દિસિં" તેઓનો આહાર નિયમથી લોકની મધ્યમાં તેઓ રહેલા હોવાથી છ એ દિશાઓમાથી આવેલા પુદ્ગલોનો હોય છે. "ઓસન્નં કારણં પડુચ્ચ વણ્ણઓ હાલિદ્દસુક્કિલ્લાઇં જાવ આહારમાહરેંતિ" પ્રાયઃ કારણને લઈને તેઓ વર્ણની અપેક્ષા હાલિદ્ર–કહેતા પીળા વર્ણવાળા, શુકલ વર્ણવાળા પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે. અહિયાં યાવત્પદથી જે પાઠનો સંગ્રહ થાય છે, તે પાઠ ટીકામાં બતાવ્યો

लहुय-निद्धुण्हाइं पोग्गलाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामइत्ता परिपीडइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसईत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए' इत्येषः पाठ. सग्राह्यः।

अयं भावः—गन्धतः सुरभिगन्धान्, रसतोऽम्लमधुरान्, स्पर्शतो मृदुक-लघुक-स्निग्धोष्णान् पुग्दलान् तेषां पुराणान् वर्णगुणान्, गन्धगुणान् रसगुणान् स्पर्शगुणान् विपरिणमय्य परिपीडय्य परिशात्य परिविध्वस्य अन्यान् अपूर्वान् वर्णगुणान् गन्धगुणान् रसगुणान् स्पर्शगुणान् उत्पाद्य आत्मशरीरक्षेत्रावगाढान् पुग्दलान् सर्वात्मतया आहारमाहरन्ति, इति आहारद्वारम्॥

उपपातद्वारे—'उववाओ तिरियमणुस्सेहिं' उपपातो देवानां तिर्यङ्मनुष्येभ्यो देवानामुपपात. संज्ञ्यसज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यग् गर्भजमनुष्येभ्य एव भवति न तु शेषस्थानेभ्य इत्यर्थ इत्युपपातद्वारम्॥

आहार करते हैं। यहाँ यावत्पद से सग्रह किया जाने वाले पाठ का टीका में सग्रह किया गया है उसका तात्पर्य यह है कि—देव वर्ण की अपेक्षा हरिद्वर्ण और शुक्ल वर्ण वाले आहार पुद्गलों का ग्रहण करते हैं एवं गंध की अपेक्षा सुरभि गंधवाले, रस की अपेक्षा खट्टे और मधुर रस वाले, स्पर्श की अपेक्षा मृदु लघु स्निग्ध और उष्ण स्पर्श वाले आहारपुद्गलो का ग्रहण करते हैं, फिर वे देव उनके पहले वाले वर्ण गंध रस और स्पर्श के गुणो का विपरिणमन परिपीडन परिशाटन और परिविध्वंसन करके अर्थात् पहले के वर्णादि को विनष्ट करके अन्य वर्ण गन्ध रस स्पर्श के गुणों को उत्पन्न करके अपने शरीर के क्षेत्र में अवगाढ-रहे हुए पुद्गलो का सर्वात्मपने से आहार करते हैं। उपपात द्वार में इनका उपपात "तिरियमणुस्से" संज्ञी, पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्चो में से और गर्भज मनुष्यों में से ही होता है बाकी के स्थानों से नहीं होता।

છે, તેનો અર્થ એવો છે કે—દેવ, વર્ણની અપેક્ષાથી હરિદ્રા-પીળા વર્ણવાળા, અને શુક્લવર્ણવાળા આહાર પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે. અને ગંધની અપેક્ષાથી સુરભિ એટલે કે સુગંધ વાળા, રસની અપેક્ષાથી ખાટા અને મધુર રસ વાળા, સ્પર્શની અપેક્ષાએ મૃદુ, લઘુ સ્નિગ્ધ અને ઉષ્ણ સ્પર્શવાળા આહાર પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે પછી તે દેવ તેમના પહેલાના વર્ણ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શના ગુણોનું વિપરિણમન, પરિપીડન, પરિશાટન અને પરિવિધ્વંસન કરીને અર્થાત્ પહેલાના વર્ણ વિગેરેનો વિનાશ કરીને અન્ય વર્ણ, ગંધ રસ અને સ્પર્શના ગુણોને ઉત્પન્ન કરીને પોતાના શરીરના ક્ષેત્રમાં અવગાઢ-રહેલા પુદ્ગલોને ઉત્પન્ન કરીને પોતાના શરીરના ક્ષેત્રમાં અવગાઢ—રહેલા પુદ્ગલોનો સર્વાત્મપણાથી એટલે કે સર્વપ્રકારથી આહાર કરે છે.

ઉપપાતદ્વારમાં—તેઓનો ઉપપાત-'तिरियमणुस्से" સંજ્ઞી, અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોમાંથી અને ગર્ભજ મનુષ્યો માંથીજ થાય છે બાકીના સ્થાનોમાંથી થતો નથી સ્થિતિ-

स्थितिद्वारे—'ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं' देवानां स्थितिः-आयुष्यकालो जघन्येन दशवर्षसहस्राणि 'उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि जघन्योत्कर्षाभ्यां स्थितिर्दशवर्षसहस्रप्रमाणा त्रयस्त्रिंशत्सागरप्रमाणा चेत्यर्थः, इति स्थितिद्वारम् ॥

समवहतद्वारे 'दुविहा वि मरंति' द्विविधा अपि म्रियन्ते मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता अपि असमवहता अपि इति भावः ॥

इति समवहतद्वारम् ॥

उद्वर्तनाद्वारे—'उव्वट्टित्ता नो नेरइएसु गच्छंति' इमे देवाः देवेभ्य उद्वृत्य नो नैरयिकेषु गच्छन्ति, किन्तु 'तिरियमणुस्सेसु जहासंभवं' तिर्यङ्मनुष्येषु यथासभवं गच्छन्ति देवाः, 'नो देवेसु गच्छंति' नो—न वा देवेषु गच्छन्ति, अयं भावः—देवा देवेभ्य उद्वृत्य यथासंभवं तिर्यक्षु मनुष्येष्वेव गच्छन्ति न तु नैरयिकेषु वेति, देवेषु वेति उद्वर्तनाद्वारम् ॥

गत्यागतिद्वारे—'दुगइया दुआगइया' द्विगतिका द्व्यागतिकाः तिर्यङ्मनुष्येष्वेव गमनात् द्विगतिकाः, तिर्यग्भ्यो मनुष्येभ्यश्चागमनात् द्व्यागतिका' भवन्ति देवाः। 'परित्ता असं-

---

स्थितिद्वार में—"ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइं" इनकी स्थिति जघन्य से दश हजार वर्ष की होती है और "उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं" उत्कृष्ट से तेतीस सागरोपम की होती है। समवहतद्वार में—"दुविहा वि मरंति" ये मारणान्तिक समुद्घात से समवहत-होकर भी मरते हैं, समवहत नहीं होकर भी मरते है, "उव्वट्टित्ता नो नेरइएसु गच्छंति" उद्वर्त्तनाद्वार में ये देव, देव पर्यायसे उद्वृत्त होकर नैरयिकों में नहीं जाते है किन्तु "तिरियमणुस्सेसु जहासंभवं" किन्तु यथासभव तिर्यञ्च और मनुष्यों में जाते हैं। "नो देवेसु गच्छंति" देव मरकर देवों में उत्पन्न नहीं होते हैं। तात्पर्य यह है कि—देव मरकर यथासभव मनुष्य और तिर्यञ्चों में ही उत्पन्न होते है नैरयिक एवं देवों में उत्पन्न नहीं होते हैं। गत्यागतिद्वार में ये देव "दुगइया दुआगइया" द्विगतिक होते हैं और द्व्यागतिक होते है अर्थात् दो गति से आते हैं और

દ્વારમાં "ठिई जहण्णेण दसवाससहस्साइं" તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી દસ હજાર વર્ષની હોય છે અને "उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ" ઉત્કૃષ્ટથી તેત્રીસ ૩૩ સાગરોપમની હોય છે સમવહત દ્વારમાં—"दुविहा वि मरंति" તેઓ મારણાન્તિક સમુદ્ઘાતથી સમવહત થઈને પણ મરે છે, અને સમવહત થયા વિના પણ મરે છે. "उव्वट्टित्ता नो नेरइसु गच्छंति" ઉદ્વર્તના દ્વારમા એ દેવ, દેવપર્યાયથી ઉદ્વૃત્ત થઈને એટલે કે દેવપણામાંથી નીકળીને નૈરયિકોમાં જતા નથી. પરંતુ "तिरियमणुस्सेसु जहासंभवं" યથાસંભવ તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાં જાય છે. "नो देवेसु गच्छंति" દેવ મરીને દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—દેવ મરીને યથાસંભવ મનુષ્યો અને તિર્યંચોમાં

खेज्जा पन्नत्ता' प्रत्येकशरीरिणो देवा असंख्याताः प्रज्ञप्ताः कथिता इति ॥ देवानुपसंहरन्नाह– 'से त्तं देवा' ते एते भेदप्रभेदभिन्ना देवा निरूपिता इति। पञ्चेन्द्रियानुपसहरन्नाह 'से त्तं पंचिंदिया' ते एते पञ्चेन्द्रियनैरयिकतिर्यङ्मनुष्यरूपचतुष्टयभेदयुक्ता निरूपिता इति। 'से त्तं ओराला तसा पाणा' ते एते औदारिका स्त्रसाः प्राणा निरूपिता इति ॥सू० २७

सम्प्रति–स्थावरभावस्य त्रसभावस्य च भवस्थितिकालमानप्रतिपादनार्थमाह—'थावरस्स णं भंते' इत्यादि,।

मूलम्—'थावरस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता। तसस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। थावरे णं भंते थावरत्ति कालओ केवच्चिरं होइ, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ उसप्पिणीओसप्पिणीओ, कालओ, खेत्तओ,

---

दो गति में जाते हैं तिर्यञ्च और मनुष्य की पर्याय में ही देव च्यव कर जाते हैं तिर्यञ्च और मनुष्यों में से आये हुए जीव ही यहाँ देव की पर्याय से उत्पन्न होते हैं इसलिए द्विगतिक और द्व्यागतिक कहे गये है। "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" यहाँ प्रत्येक शरीरी देव असख्यात होते हैं। "से त्तं देवा" इस प्रकार यहाँ तक भेद प्रभेद सहित देवों का निरूपण किया गया है "से तं पंचिंदिया" इस निरूपण समाप्त होते ही पञ्चेन्द्रिय जीवों का निरूपण भी पूरा हो जाता हैं। "से तं ओराला तसा पाणा" इस प्रकार से ये औदारिक त्रस जीव कहे गये हैं। सूत्र" २७

જ ઉત્પન્ન થાય છે નૈરયિક અને દેવોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી ગત્યાગતિદ્વારમાં આ દેવો "दुगइया दु आगइया" દ્વિગતિક હોય છે, અને દ્વયાગતિક હોય છે. અર્થાત્ બે ગતિમાંથી આવે છે. અને બે ગતિમાં જાય છે દેવ ચ્યવીને તિર્યંચ અને મનુષ્યની પર્યાય માંજ જાય છે. અને તિર્યંચ અને મનુષ્યોમાથી આવેલા જીવોજ આ દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે. છે તેથી દ્વિગતિક અને દ્વયાગતિક કહ્યા છે. "परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता" આ પ્રત્યેક દેવ અસંખ્યાત શરીરવાળા હોય છે. "से तं देवा" આ રીતે અહિં સુધી ભેદ પ્રભેદ સાથે દેવોનું નિરૂપણ કર્યું છે. "से त्तं पंचिंदिया" આ નિરૂપણ સમાપ્ત થતા પંચેન્દ્રિય જીવોનું નિરૂપણ પુરૂં થાય છે. "से त्तं ओराला तसा पाणा" આ રીતે ઔદારિક ત્રસ જીવોનું કથન કરવામા આવ્યું છે ॥ સૂ૦ ૨૭॥

अणंता लोया, असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा, ते णं पुग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो। तसे णं भंते ! तसत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ असंखेज्जा लोया। थावरस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? जहा तससंचिट्ठणाए। तसस्स णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो। एएसि णं भंते ! तसाणं थावराण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा, थावरा अणंतगुणा, सेत्तं दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पन्नत्ता। दुविहपडिवत्ती समत्ता ॥सू० २८॥

छाया—स्थावरस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, उत्कर्षेण द्वाविंशतिर्वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ त्रसस्य खलु भदन्त ? कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ? जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्। उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता। स्थावरः खलु भदन्त ? स्थावर इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ? जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेणानन्तं कालम्। अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः, क्षेत्रतोऽनन्ता लोका असंख्याता पुद्गलपरावर्त्ताः। ते खलु पुद्गलपरावर्त्ता आवलिकाया असंख्येयभागः। त्रसः खलु भदन्त ? त्रस इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्। उत्कर्षेणासंख्येयं कालम्। असंख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः, कालतः, क्षेत्रतोऽसंख्यता लोकाः ॥ स्थावरस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? यथा त्रससंस्थितौ त्रसस्य खलु भदन्त? कियन्तं कालमन्तर भवति ? गौतम ? जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण वनस्पतिकालः। एतेषां खलु भदन्त ? त्रसानां स्थावराणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा वहुका वा, तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका स्त्रसाः स्थावरा अनन्तगुणाः। ते एते द्विविधाः संसारसमापन्नकाः जीवाः प्रज्ञप्ताः। द्विविधप्रतिपत्तिः समाप्ता ।सू० २८॥

टीका—'थावरस्स णं भंते !' स्थावरस्य—स्थावरनामकर्मोदयापन्नस्य जीवस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं काल स्थिति—आयुष्यकाल', प्रज्ञप्ता—कथि-

---

अब सूत्रकार स्थावर भावको और त्रस भाव की भवस्थितिरूप कालमानका प्रति

હવે સૂત્રકાર સ્થાવર ભાવની અને ત્રસભાવની સ્થિતિરૂપ કાલમાનનું પ્રતિપાદન

तेति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् 'उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता' उत्कर्षेण द्वाविंशति वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता कथिता, स्थितेर्द्वाविंशतिवर्षसहस्रकथनं तु पृथिवीकायिकमधिकृत्य ज्ञातव्यम्, अप्कायिकादेः स्थावरकायस्योत्कर्षेत. एतावत्या भवस्थितेरभावादिति ॥ 'तसस्स णं भंते' त्रसस्य खलु भदन्त ! त्रसस्य–त्रसनामकर्मोदययुक्तस्य जीवस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः–भवस्थितिः प्रज्ञप्ता–कथितेति प्रश्न', भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' ! हे गौतम ! 'जहन्नेण अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता–कथिता, एतच्च स्थितिकालकथनं देवनारकापेक्षया ज्ञातव्यम्, अन्यस्य त्रसकाय-

---

पादन करने के लिये सूत्रकार कहते है—'थावरस्स णं भंते' इत्यादि ।

थावरस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता० इत्यादि ॥सू० २८॥

टीकार्थ—गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है–"थावरस्स णं" भंते !, स्थावर" नाम कर्म के उदयवाले स्थावर जीव की "केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता" कितने काल की स्थिति कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा" हे गौतम ! "जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं" स्थावर जीव की स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और "उक्कोसेणं" उत्कृष्ट से "बावीसं वाससहस्साइं" बाइस हजार वर्ष की कही गई है, यह उत्कृष्ट स्थिति पृथिवींकायिक को लक्ष्य करके कही गई है, क्योंकि अप्कायिक आदि स्थावर जीवो की उत्कृष्ट स्थिति इतनी नहीं है "तसस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! त्रस जीव की त्रस नाम कर्म के उदय वाले जीव की–भवस्थिति कितनी कही गई है ? "गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं" हे गौतम ! त्रसनाम कर्म के उदयवाले त्रस जीव की भवस्थिति जघन्य

કરવા માટે સૂત્ર કહે છે. 'थावरस्स णं भंते !" ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું કે— "थावरस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" સ્થાવર નામકર્મના ઉદયવાળા સ્થાવર જીવોની કેટલા કાળની સ્થિતિ કહી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે— "गोयमा" હે ગૌતમ "जहण्णेण अंतोमुहुत्तं" સ્થાવર જીવોની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને "उक्कोसेणं" ઉત્કૃષ્ટથી 'बावीसं वाससहस्साइं" બાવીસ હજાર વર્ષની કહી છે. આ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પૃથ્વીકાયિક ને ઉદ્દેશીને કહેવામાં આવી છે. કેમકે—અપ્કાયિક વિગેરે સ્થાવર જીવોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એટલી નથી. "तसस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ ત્રસ જીવની–ત્રસ નામ કર્મના ઉદયવાળા જીવની ભવ સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે? "गोयमा जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं" હે ગૌતમ ! ત્રસ નામ કર્મના ઉદયવાળા જીવની ભવસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તેત્રીસ સાગરોપમની કહે-

त्कर्षेण, तनावत्प्रमाणकभवस्थितेरसंभवादिति । अतः परं स्थावरत्रसजीवयोरेव कायस्थितिकालमाह–'थावरेण भंते' इत्यादि, 'थावरेणं भंते' स्थावरजीव खलु भदन्त ! 'थावरत्ति कालओ केवच्चिरं होति' स्थावर इति–स्थावर इत्यनेन रूपेण स्थावरत्वेनेति भावः कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमात्रं स्थावरत्वेन रूपेण स्थावरो भवतीति । 'उक्कोसेणं अणंतं कालं' उत्कर्षेणोऽनन्त कालम् । अमुमनन्तं कालं कालक्षेत्राभ्यां निरूपयति–'अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ' अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः, 'खेत्तओ अणंता लोया' क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः, अयं भावः–यथा कल्पनया अनन्त लोकेषु यावन्त आकाशप्रदेशा-

---

से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की कही गई है। इतनी बड़ी स्थिति का देवभव और नारकभव की अपेक्षा से कथन किया गया है। मनुष्यभव और तिर्यञ्च भव की अपेक्षा से नहीं क्योंकि वहां इतनी बड़ी स्थिति उत्कृष्ट मनुष्यतिर्यञ्च की नहीं होती है. वहां तो उत्कृष्ट से स्थिति केवल तीन ही पल्योपम की होती है। स्थावर एवं त्रस जीव की कायस्थिति का कथन करते हैं–"थावरे णं भंते ! थावरत्ति कालओ केवच्चिरं होई" हे भदन्त! यह जीव स्थावर है इस रूप से कितने काल तक रहता है ? "गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं अणंत कालं" गौतम ! जघन्य से तो यह जीव स्थावर रूप से एक अन्तर्मुहूर्त तक रहता है और उत्कृष्ट से अनन्त काल तक रहता है। यह वनस्पतिकायिक की कायस्थिति की अपेक्षा से कथन है. इस उत्कृष्ट कायस्थिति में 'अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ" अनन्त उत्सर्पिणी काल और अनन्त अवसर्पिणी काल व्यतीत हो जाते हैं। "खेत्तओ अणंता लोया" तथा क्षेत्र की अपेक्षा अनन्त लोक समाप्त हो जाते हैं। तात्पर्य कहने का यह है कि स्थावर जीव स्थावरकाय में इतने काल तक रह सकता है. क्षेत्र की अपेक्षा

વામાં આવી છે આટલી મોટી સ્થિતિનું કથન દેવભવ અને નારક ભવની અપેક્ષાથી કરેલ છે, મનુષ્યભવની અને તિર્યંચ ભવની અપેક્ષાથી કરેલ નથી. કેમકે—ત્યાં એટલી મોટી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ મનુષ્ય અને તિર્યંચની હોતી નથી. ત્યાં તો ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કેવળ ત્રણ પલ્યોપમની જ હોય છે "थावरेणं भंते ! थावरत्ति कालओ केवच्चिरं होइ" હે ભગવન્ આ જીવ સ્થાવર છે, એ રીતે કેટલા કાળ સુધી રહે છે ? "गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं" હે ગૌતમ ! જઘન્યથી તો આ જીવ સ્થાવર પણાથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી રહે છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંત કાળ સુધી રહે છે. આ કથન વનસ્પતિ કાયિકની કાયસ્થિતિની અપેક્ષાથી કરેલ છે આ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિમાં "अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ" અનંત ઉત્સર્પિણી કાળ અને અનંત અવસર્પિણી કાળ વીતી જાય છે.

"खेत्तओ अणंता लोया" તથા ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી અનંતલોક સમાપ્ત થઈ જાય છે.

स्तेषां प्रतिसमयमेकैकापहारेण यावत्योऽनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यो भवन्ति तावत्य इति । एतासामेव पुद्गलपरावर्ततो मानमाह-'असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा' असंख्याताः पुग्दल-परावर्त्ता. असंख्येयेषु पुद्गलपरावर्त्तेषु क्षेत्रत इति पदसान्निध्यात् क्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तेषु यावत्यः संभवन्ति अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः तावत्य इति भावः । इह असंख्येयम् असंख्येयभेदात्मकम् अतः पुद्गलपरावर्त्तगतमसंख्येयत्वं निर्धारयति—'ते णं' इत्यादि, 'ते णं पुग्गलपरियट्टा आव-लियाए असंखेज्जइ भागो' ते खलु पुद्गलपरावर्त्ताः आवलिकाया असंख्येयो भागः, आवलि-

अनन्त लोक समाप्त हो जाते हैं इसका भाव यह है कि अनन्त लोको में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उन प्रदेशों का एक एक समय में आहार करने पर जितनी अनन्त उत्सर्पिणियाँ और अनन्त अवसर्पिणियाँ होती हैं उतनी अनन्त उत्सर्पिणियो अवसर्पिणियों तक यह जीव स्थावरकाय में रहता है । इन अनन्त उत्सर्पिणियों में और अवसर्पिणियों में "असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा" असंख्यात पुग्दल परावर्त हो जाते हैं. यहां क्षेत्र की अपेक्षा पुग्दल परावर्त गृहीत हुए है । इस प्रकार क्षेत्र पुद्गल परावर्तों में जितनी अनन्त उत्सर्पिणियां और अवसर्पिणियाँ सभवित होती है उतनी अनन्त उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियों तक स्थावर जीव स्थावरकाय में रह सकता है। "असंख्यात पुद्गल परावर्त हो जाते है' इसका तात्पर्य ऐसा हैं कि 'ते णं पुग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो' आवलिका के असंख्यातवें भाग में जितने समय होते है इतने पुद्गल परावर्त उन अनन्त उत्सर्पिणियों में और अवसर्पिणियो में होते है। यह कथन वनस्पति

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે—સ્થાવર જીવ સ્થાવરકાયમાં એટલા કાળ સુધી રહી શકે છે. ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ અનંતલોક સમાપ્ત થઈ જાય છે ! એમ કહેવાને હેતુ એ છે કે— અનત લોકોમાં જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે. તે પ્રદેશોનો એક એક સમયમાં અપહાર કરવામાં આવે તો જેટલી અનંત ઉત્સર્પિણિયો અને અનંત અવસર્પિણિયો હોય છે, તેટલી અનંત ઉત્સર્પિણિયો અપસર્પિણિયો સુધી આ જીવ સ્થાવર કાયમાં રહે છે. આ અનંત ઉત્સર્પિણિયોમાં અને અવસર્પિણિયોમાં "असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा" અસખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત ગ્રહણ થયેલ છે અહિયાં ક્ષેત્રની અપેક્ષા પુદ્ગલ પરાવર્ત ગ્રહણ થયેલ છે આ રીતે પુદ્ગલ પરાવતોમાં જેટલી અનંત ઉત્સર્પિણિયો અને અસર્પિણિયો સંભવિત હોય છે, તેટલી અનંત ઉત્સર્પિણીયો અને અવસર્પિણિયો સુધી સ્થાવર જીવ સ્થાવર કાયમાં રહી શકે છે. 'અસંખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત થઇ જાય છે, તેમ કહેવાનું તાત્પર્ય એવું છે "ते णं पुग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो' આવલિકાના અસંખ્યાતમા ભાગમાં જેટલા સમયો હોય છે, તેટલા પુદ્ગલ પરાવર્ત તે અનંત ઉત્સર્પિણિયોમાં અને અવસર્પિણિયોમાં હોય છે. આ કથન વનસ્પતિ જીવની કાય-

काया असंख्येयतमे भागे यावन्तः समयाः तावत्प्रमाणा इत्यर्थः । एतच्च कथनं वनस्पतिकायस्थितिमङ्गीकृत्य ज्ञातव्यम् न तु पृथिव्यप्कायस्थितिमपेक्ष्य, पृथिव्यप्कायिकयोः कायस्थितेः उत्कर्षेणापि असंख्येयोत्सर्पिण्यवसर्पिणीप्रमाणत्वात् । तथाचोक्तं प्रज्ञापनायाम्–'पुढवीकाइएणं भंते ! पुढवीकाइयत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोया एवं आउक्काइए(पृथिवीकायिकः खलु भदन्त ! पृथिवीकायिक इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेणासंख्येयं कालम् असंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः, क्षेत्रतः असंख्येया लोकाः । एवमप्कायिकेऽपि इतिच्छाया) अत्र–जीवाभिगमे वनस्पतिकायस्य या कायस्थिति कथिता तदनुरूपैव कायस्थिति प्रज्ञापनायामपि कथिता ॥

उक्तं च तत्र—'वणस्सइकाइएणं भंते ! वणस्सइकायत्ति कालओ कियच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंत कालं, अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखिज्जा पुग्गलपरियट्टा आवलियाए, असंखे-

---

जीव की कायस्थिति की अपेक्षा से जानने का हैं. पृथिवीकायिक और अप्कायिक जीव की स्थिति-की अपेक्षा से नहीं। क्योंकि पृथिवीकायिक और अप्कायिक जीवोकी कायस्थिति उत्कृष्ट से भी असख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी प्रमाण कही गई है. प्रज्ञापना सूत्र में ऐसा ही कहा गया है–"पुढवीकाइएणं भंते" इत्यादि हे भदन्त ! पृथिवीकायिकजीव पृथिवीकायिक-रूप से कितने कालतक रहता है ? उत्तर में प्रभु ने कहा है कि हे गौतम ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक रूप से जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त तक रहता है और उत्कृष्ट से असख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल तक रहता है। तथा क्षेत्र की अपेक्षा असख्यात लोक तक रहता है इसी प्रकार का कथन अप्कायिक में भी जानना चाहिये । यहा जीवाभिगम में वनस्पतिकायिकों की जो कायस्थिति कही गई है। इसीके अनुरूप कायस्थिति प्रज्ञापना में भी कही गई है. जैसे–"वणस्सइकाइएणं भंते" इत्यादि अर्थ पूर्वोक्त ही है जो यह वनस्पति-

---

સ્થિતિની અપેક્ષાથી સમજવાનુ' છે. પૃથ્વીકાયિક અને અપ્કાયિક જીવની સ્થિતિની અપેક્ષાથી સમજવાનુ' નથી કેમકે પૃથ્વીકાયિક અને અપ્કાયિક જીવોની કાયસ્થિતિ ઉત્કૃષ્ટથી પણ અસ'ખ્યાત ઉત્સર્પિ'ણી અને અવસર્પિ'ણી પ્રમાણની કહેલ છે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં એજ પ્રમાણે કહેલ છે "पुढवीकाइयाणं भंते" ઇત્યાદિ હે ભગવન્ પૃથ્વીકાયિક જીવ પૃથ્વીકાયિક પણાથી કેટલા કાળ સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! પૃથ્વીકાયિકજીવ પૃથ્વીકાયપણાથી જઘન્યથી તો એક અતર્મુ'હૂર્ત સુધી રહે છે અને ઉત્કૃષ્ટથી અસ'ખ્યાત ઉત્સર્પિ'ણી અને અસ'ખ્યાત અવસર્પિ'ણી કાળ સુધી રહે છે તથા ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ અસ'ખ્યાત લોક સુધી રહે છે આજ પ્રમાણેનુ' કથન અપ્કાયિકના સ'બ'ધમાં પણ સમજવુ' અહિયાં આ જીવાભિગમમાં વનસ્પતિકાયિક જીવોની જે કાયસ્થિતિ કહી છે, એજ પ્રમાણેની કાયસ્થિતિ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં પણ કહેલ છે. જેમકે–"वणस्सइकाइ-

ज्जइ भागो) इति च्छायास्पष्टैव। योऽयं वनस्पतिकायस्य कायस्थितिकालः कथितः स सांव्यवहारिकजीवानधिकृत्य ज्ञातव्यः, असांव्यवहारिकजीवानां तु कायस्थितिरनादिरेव ज्ञातव्या तथा—

चोक्तम्— 'अत्थि अणंता जीवा जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ।
ते वि अणंताणंता निगोयवासं अणुवसंति' ॥
सन्त्यनन्ता जीवा यैर्न प्राप्तस्त्रसादि परिणामः ।
तेऽप्यनन्तानन्ता निगोदवासमनुवसन्ति ॥ इतिच्छाया

सा पि तेषां सांव्यवहारिकराशिजीवानामनादिः कायस्थितिः केषाञ्चिदनादिरनन्ता ये जीवाः कदाचिदपि असांव्यवहारिकजीवराशौ न निपतिष्यन्ति । केषांचिदियं कायस्थितिः अनादिः सान्ता, ये जीवाः असांव्यवहारिकजीवराशे रुद्वृत्य सांव्यवहारिकजीवराशौ समागमिष्यन्तीति ॥

कायिकों का कायस्थिति काल कहा है वह सांव्यवहारिक जीवो को लेकर कहा गया है। ऐसा जानना चाहिये क्योंकि असांव्यवहारिक जीवों की तो कायस्थिति अनादिरूप ही होती है तथाचोक्तम्-"अत्थि अणता जीवा" इत्यादि । ऐसे भी अनन्तानन्तजीव अभीतक है कि जिन्होंने त्रसादि पर्याय को प्राप्त नहीं किया है अर्थात् नित्यनिगोद से जो अभी तक व्यवहार-राशि में नहीं आये हैं, ऐसे जीव ही यहां असांव्यवहारिक पदसे प्रकट किये गये है। इनकी अनादिरूप कायस्थिति है। पर यह अनादिरूप कायस्थिति कितनेक जीवों की ऐसी होती है कि जिनकी अनादि अनन्तरूप होती है और कितनेकजीवों की ऐसी होती हैं कि जिनकी यह अनादि सान्तरूप होती है अनादि अनन्तरूप स्थिति जिनकी होती है ऐसे वे जीव तो कभी भी उस असांव्यवहारिक जीवराशि से निकलकर व्यावहारिक जीवराशि में नहीं आवेंगे। तथा जिनकी अनादि सान्तरूप स्थिति होती है वे नित्य निगोद से असांव्यवहारिक जीवराशि से—निकलकर नियम से व्यावहारिक जीव राशि में आवेंगे ।

याणं भंते !" ઇત્યાદિ આનો અર્થ પહેલા કહ્યા પ્રમાણેજ છે. આ વનસ્પતિ કાયિક જીવોનો જે કાયસ્થિતિનો કાળ કહ્યો છે, તે સાંવ્યવહારિક જીવોને લઈને કહેલ છે. તેમ સમજવું. કેમકે—અસાંવ્યવહારિક જીવોની કાયસ્થિતિ તો અનાદિરૂપજ હોય છે, तथाचोक्तम्— "अत्थि अणता जीवा" ઇત્યાદિ એવા પણ અનંતાનંત જીવો અત્યાર સુધી છે, કે જેઓએ ત્રસાદિ પર્યાય પ્રાપ્ત કરેલ નથી અર્થાત્ નિત્ય નિગોદથી જેઓ અત્યાર સુધી વ્યવહાર રશિમાં આવ્યા નથી, એવા જીવોજ 'અસંવ્યાવહારિક' પદથી પ્રગટ કર્યા છે. તેઓની કાય-સ્થિતિ અનાદિરૂપ છે. પરંતુ આ અનાદિરૂપ કાયસ્થિતિ કેટલાક જીવોની એવી હોય છે, કે જેની અનાદિ અનંતરૂપ હોય છે. અને કેટલાક જીવો એવા હોય છે, જેની આ કાય-સ્થિતિ અનાદિ સાંતરૂપ હોય છે. જેની સ્થિતિ અનાદિ અનંતરૂપ હોય છે એવા તે જીવો કોઈ પણ અસાંવ્યાવહારિક જીવરાશિમાંથી નીકળીને વ્યાવહરિક જીવરાશિમાં આવશે નહીં તથા જેની સ્થિતિ અનાદિ સાંતરૂપ હોય છે, તેઓ નિત્ય નિગોદથી અસાં-વ્યાવહારિક જીવરાશિમાંથી નીકળીને નિયમથી વ્યવહારિક જીવરાશિમાં આવશે.

सम्प्रति—त्रसकायस्य जीवस्य कायस्थितिमाह—'तसे णं भंते' इत्यादि, 'तसे णं भंते ! तसत्ति कालओ केवच्चिरं होइ' त्रसः खलु भदन्त ! त्रसइति—त्रसइत्येवं रूपेण कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं' उत्कर्षेणाऽसंख्येयं कालम् 'असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणी कालओ' असंख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः 'खेत्तओ असंखेज्जा लोगा' क्षेत्रतोऽसंख्येया लोकाः, असंख्येयेषु लोकेषु यावन्त आकाशप्रदेशा विद्यन्ते तेषां प्रतिसमयमेकैकापहारे यावत्योऽसंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यो भवन्ति तावत्य इति भावः। एतावत्प्रमाणा कायस्थितिर्गतित्रसं तेजस्कायिकं वायुकायिकं चाधिकृत्य ज्ञातव्या,।

उक्तञ्च प्रज्ञापनासूत्रे-'तेउक्काइए णं भंते? तेउक्काइएत्ति कालओ केवच्चिरं

अब त्रसकायिक जीवकी कायस्थिति प्रकट की जाती हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"तसे णंभंते ! तसत्ति कालओ केवच्चिरं होइ" हे भदन्त ! त्रसजीव त्रसकाय में कितने कालतक रहता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—',गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं" हे गौतम ! जीव त्रसकाय में कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त्त तक और अधिक से अधिक असंख्यात कालतक रहते हैं इसमें "असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ" असंख्यात उत्सर्पिणियां और अवसर्पिणियां समाप्त हो जाती हैं। तथा क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात लोको में जितने प्रदेश होते हैं उन्हें एक एक समय में एक एक निकालने पर जितनी असंख्यात उत्सर्पिणियां और अवसर्पिणियां होती है उतने कालतक यह जीव त्रसकाय में रह सकता है। इतनी यह कायस्थिति गतित्रस तेजस्कायिक और वायुकायिक को लक्ष्यकरके कही गई है। ऐसा जानना चाहिये जैसे—प्रज्ञापना सूत्र में कहा है—"तेउक्काइए णं भंते ! इत्यादि

હવે ત્રસકાયિક જીવોની કાયસ્થિતિ પ્રગટ કરવામાં આવે છે. આ સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—"तसे णं भंते ! तसत्ति कालओ केवच्चिरं होइ" હે ભગવન્ ત્રસજીવ ત્રસકાય પણામાં કેટલા કાળ સુધી રહે છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं" હે ગૌતમ જીવ ત્રસકાયપણામાં ઓછામાં ઓછું એક અંતર્મુહૂર્ત પર્યંત અને વધારેમાં વધારે અસખ્યાત કાળ પર્યંત રહે છે. તેમાં "असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ" અસંખ્યાત ઉત્સર્પિણીયો અને અપસર્પિણીયો સમાપ્ત થઈ જાય છે તથા ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી અસંખ્યાત લોકોમાં જેટલા પ્રદેશો હોય છે, તેને એક એક સમયમાં એક એક બહાર કહાડવામાં આવે ત્યારે જેટલી અસંખ્યાત ઉત્સર્પિણિયો અને અવસર્પિણિયો હોય છે, એટલા કાળ સુધી આ જીવ ત્રસકાય પણામાં રહી શકે છે. આટલી આ કાયસ્થિતિ ગતિત્રસ તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક જીવને ઉદ્દેશીને કહેવામાં આવેલ છે તેમ સમજવું. જેમ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહ્યું છે કે—"तेउक्काइए णं भंते" ! ઇત્યાદિ આનો અર્થ પહેલાં

होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा । एवं वाउक्काइयावि' अर्थः पूर्ववदेव, किन्तु न लब्धित्रसमधिकृत्य; लब्धित्रसजीवस्य कायस्थितेरुत्कर्षतोऽपि सातिरेकसागरोपमसहस्रद्वयप्रमाणत्वात् ।

तदुक्तं प्रज्ञापनासूत्रे लब्धित्रसविषये–'तसकाए णं भंते ? तसकायत्ति कालओ कियच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं' (त्रसकायः खलु भदन्त ! त्रसकाय इति कालतः कियच्चिरं भवति, गौतम ? जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण सागरोपमसहस्रद्वयं संख्येयवर्षाभ्यधिकम्) इति ॥

सम्प्रति—स्थावरत्वस्याऽन्तरमाह–'थावरस्स णं भंते ! इत्यादि, 'थावरस्स णं भंते !' स्थावरजीवस्य खलु भदन्त ? पुनः स्थावरभवग्रहणे 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालमन्तरं–व्यवधानं भवतीति प्रश्नः, उत्तरयति–'जहा' इत्यादि, 'जहा तससंचिट्ठणाए' यथा त्रससंस्थितौ, जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति उत्कर्षेण कालतोऽसंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः, क्षेत्र-

---

अर्थ पहले आचुका है। किन्तु लब्धित्रस को लक्ष्य करके नहीं कही गई हैं। क्योंकि लब्धित्रसजीव की कायस्थितिका उत्कृष्टकाल सातिरेक–कुछ अधिक दो हजार सागरोपम का कहा गया है जैसे प्रज्ञापना सूत्र में कहा है–"तसकाए णं भंते ! तसकायत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? इत्यादि । इसका अर्थ पूर्व में आचुका है ।

अब सूत्रकार स्थावरजीवका अन्तर–विरह–काल प्रकट करते हैं–"थावरस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है–स्थावर जीव के फिर स्थावरत्वकी प्राप्ति में कितने काल का अन्तर होता है ? उत्तर में प्रभु कहते है–"जहा तससंचिट्ठणाए" हे गौतम ! जैसा त्रस की संस्थिति में जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर होता है और उत्कृष्ट से काल की अपेक्षा असंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी का अन्तर होता है तथा क्षेत्र की अपेक्षा

કહેવામાં આવી ગયેલ છે. પરંતુ લબ્ધિ ત્રસને ઉદ્દેશીને કહેલ નથી કેમકે—લબ્ધિ ત્રસ જીવની કાયસ્થિતિનો ઉત્કૃષ્ટ કાળ સાતિરેક—એટલે કે—કંઈક અધિક બે હજાર સાગરોપમનો કહેવામાં આવેલ છે. જેમ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમાં કહ્યું છે કે— "तसकाए णं भंते ! तसकायत्ति कालओ कियच्चिरं होइ" ઇત્યાદિ આનો અર્થ પહેલા કહેવામાં આવી ગયેલ છે.

હવે સ્થાવર જીવના અંતર—વિરહ-કાળ સંબંધી કથન કરવામા આવે છે. આમા ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે—'थावरस्स णं भंते केवइय काल अतर होई" સ્થાવર જીવનો પુનઃ સ્થાવરપણાની પ્રાપ્તિમાં કેટલા કાળનું અંતર હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે—"जहा तससंचिट्ठणाए" હે ગૌતમ ! જેમ ત્રસની સંસ્થિતિમાં જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી કાળની અપેક્ષાથી અસંખ્યાત ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીનું અંતર હોય છે, તથા ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી અસં-

लोऽसङ्ख्येया लोकाः, इत्येतावत्प्रमाणमन्तरं तेजस्कायिकवायुकायिकमध्यगमनेनावसातव्यम् अन्यत्र गतावेतावत्प्रमाणस्यान्तरस्यासंभवादिति ॥ 'तसस्स णं भंते ! त्रसस्य खलु भदन्त ! जीवस्य पुनस्त्रसभवग्रहणे 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालमन्तर भवतीति प्रश्नः, उत्तरयति–'जहन्नेणं अंतो मुहुत्त' त्रसस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो, उत्कर्षेण वनस्पतिकालो वक्तव्य, स चैवम्–'उक्कोसेणं अणंतमणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो ।

(उत्कर्षेणानन्तानन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्य. कालतः, क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः असङ्ख्येयाः पुद्गल-

---

असंख्यात लोकों में जितने प्रदेश होते हैं उन्हें एक २ समय में निकालने पर जितनी असंख्यात उत्सर्पिणियां और अवसर्पिणियां होती है उतने काल का अन्तर होती है इतना अधिक जो अन्तर यहां प्रकट किया गया है वह तेजस्कायिक और वायुकायिक के बीच में इनके जाने से कहा गया है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि इनके दूसरी जगह जाने पर इतने अधिक प्रमाणवाला अन्तरकाल असंभवित है । "तसस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" हे भदन्त ! त्रसजीवका कितने काल का अन्तर होता है ? अर्थात् त्रसपर्याय को छोड़कर पुनः उस त्रस पर्याय की प्राप्ति में कितने काल का समय लगता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो" हे गौतम ! यहां जघन्य से अन्तर एक अन्तर्मुहूर्त का होता है और उत्कृष्ट से अन्तर वनस्पति काल प्रमाण होता है वह इस प्रकार से–"उक्कोसेणं अणंतमणंताओ" इत्यादि । उत्कर्ष से अनन्तानन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीयां काल की अपेक्षा हो जाती है, और क्षेत्र की अपेक्षा अनन्त लोक प्रमाण उनमें असं-

---

ખ્યાત લોકોમાં જેટલા પ્રદેશો હોય છે. તેને એક એક સમયમાં બહાર કહાડવામાં જેટલી અસંખ્યાત ઉત્સર્પિણિયો અને અવસર્પિણિયો થાય છે. એટલા કાળનું અંતર હોય છે. આટલું અધિક અંતર અહિયાં બતાવ્યું છે, તે તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિકની વચમાં તેઓના જવાથી કહેલ છે. તેમ સમજવું. કેમકે–તેઓ બીજે સ્થળે જાય તો આટલા અધિક પ્રમાણ વાળું અંતરકાળ અસંભવિત છે. "તસસ્સ णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" હે ભગવન્ ત્રસ જીવોને કેટલા કાળનું અંતર હોય છે ? અર્થાત્ ત્રસપર્યાયને છોડીને ફરીથી તે ત્રસપર્યાય પ્રાપ્ત કરવામાં કેટલા કાળનો સમય લાગે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो" હે ગૌતમ ! અહિયાં જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી અંતર વનસ્પતિ કાળ પ્રમાણ હોય છે તે આ પ્રમાણે સમજવું.–"उक्कोसेणं अणंतमणंताओ" ઇત્યાદિ અર્થાત્ ઉત્કૃષ્ટથી અનન્તાનન્ત ઉત્સર્પિણિયો અવસર્પિણિયો કાળની અપેક્ષાથી થઈ જાય છે, અને ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી અનન્તલોક પ્રમાણ હોય છે જેમાં અસંખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત થઈ જાય છે. તે

परावर्ताः । ते खलु पुद्गलपरावर्ता आवलिकायाः असंख्येयभाग इति ॥ एतावत्प्रमाणञ्चान्तरं वनस्पतिकायमध्यगमनेन ज्ञातव्यम् । अन्यत्र गतवेतावतोऽन्तरस्यालभ्यमानत्वादिति ॥

सम्प्रति—एतेषामल्पबहुत्वमाह—**'एएसि णं'** इत्यादि, **'एएसि णं भंते'** एतेषां खलु भदन्त **'तसाणं थावराण य'** त्रसानां त्रसनामकर्मोदयापन्नानां स्थावराणां स्थावरनामकर्मोदयापन्नानां च **'कयरे कयरेहिंतो'** कतरे कतरेभ्यः **'अप्पा वा बहुया वा'** अल्पा वा बहुका वा **'तुल्ला वा विसेसाहिया वा'** तुल्या वा विशेषाधिका वा एतयो स्त्रसस्थावरजीवयोर्मध्ये कस्यापेक्षया कस्याल्पाधिकत्वमिति प्रश्नः, भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'सव्वत्थोवा तसा'** सर्वस्तोकाः त्रसाः-त्रसजीवाः सर्वापेक्षया अल्पाः । असंख्यातत्वमात्रप्रमाणत्वात् त्रसानामिति

ख्यात पुद्गलपरावर्त्त हो जाते हैं वे पुद्गलपरावर्त्त आवलिका के असंख्यातवें भागमें जितने समय होते है उतने प्रमाण के होते हैं यह वनस्पति काल के प्रकरण में स्पष्टकर दिया गया है। इतने प्रमाण काल का यह अन्तर उसे वनस्पतिकायिक जीवकी पर्याय प्राप्ति करलेने से हो जाता है। क्योंकि और दूसरी पर्यायि की प्राप्ति में इतना अधिक अन्तर अलभ्य होता है-नहीं आता है।

अब सूत्रकार इनके अल्प बहुत्वका कथन करते है-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-**"एएसि णं भंते ! तसाणं थावराण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा"** हे भदन्त ! इन त्रस और स्थावर जीवो के बीच में कौन जीव किनकी अपेक्षा अल्प है ? कौन किनकी अपेक्षा बहुत हैं ! कौन किनकी अपेक्षा तुल्य बराबर हैं ? और कौन किनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-**"गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा** हे गौतम ! सबसे कम तो त्रस जीव हैं। क्योंकि त्रसजीवों का प्रमाण केवल असंख्यात

પુદ્ગલ પરાવર્ત આવલિકાના અસંખ્યાતમાં ભાગમાં જેટલો સમય હોય છે, એટલા પ્રમાણનું હોય છે. આ વનસ્પતિકાળના પ્રકરણમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલ છે. એટલા પ્રમાણ કાળનું આ અંતર તેને વનસ્પતિકાયિક જીવની પર્યાય પ્રાપ્ત કરી લેવાથી થઈ જાય છે કેમકે—બીજી કોઈ પર્યાયની પ્રાપ્તિમાં આટલું અધિક અંતર અલભ્ય હોય છે --અર્થાત્ આટલુ અંતર આવતું નથી,

હવે સૂત્રકાર તેઓના અલ્પ બહુત્વ પણાનું કથન કરે છે. તેમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને એવુ પૂછે છે કે-**"एएसि णं भंते ! तसाणं थावराण य कयरे कयरेहिंतो ! अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा"** હે ભગવન્ આ ત્રસ અને સ્થાવર જીવોની વચમાં કયા જીવો કયા જીવોની અપેક્ષથી અલ્પ છે ? કયા જીવોની અપેક્ષાથી વધારે છે ? કયા જીવો કયા જીવોની અપેક્ષાથી તુલ્ય-બરાબર છે ? અને કયા જીવો કયા જીવોની અપેક્ષાથી વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थो वा तसा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા ત્રસજીવો છે. કેમકે--ત્રસજીવોનું પ્રમાણ કેવળ અસં-

भावः । 'थावरा अनंतगुणा' स्थावरजीवा अनन्तगुणाः, त्रसापेक्षया स्थावरजीवा अनन्तगुणा अधिका भवन्तीत्यर्थः । अजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तसङ्ख्यापरिमाणत्वादिति ॥ सम्प्रति प्रकरणमुपसंहरन्नाह-'सेत्तं' इत्यादि, 'सेत्तं दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता' ते एते द्विविधाः द्विप्रकारकाः स्थावरत्रसभेदभिन्नाः संसारसमापन्नकाः संसारित्वधर्मयुक्ताः जीवाः प्रज्ञप्ताः-निरूपिता इति ॥सू० २८॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललितकलालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक शाहुच्छत्रपति कोल्हापुरराजप्रदत्तजैनशास्त्राचार्य, पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु बालब्रह्मचारी-जैनशास्त्राचार्य-जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालव्रतिविरचितजीवाभिगमसूत्रस्य प्रमेयद्योतिकाख्यायां व्याख्यायां द्विविधा नाम प्रथमा प्रतिपत्ति. समाप्ता ॥१॥

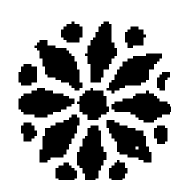
ही कहा गया है । इनकी अपेक्षा "थावरा अनंतगुणा" स्थावर जीव अनन्त गुणे अधिक हैं । क्योंकि ये अजघन्योत्कृष्ट रूप से अनन्तानन्त संख्यावाले कहे गये हैं । अब प्रकरण का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं-"सेत्तं दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता" इस प्रकार पूर्वोक्त कथन के अनुसार संसारसमापन्नक जीव ससारी जीव-त्रस और स्थावर के भेद से दो प्रकार के कहे गये है इन्हीं का प्रथम प्रतिपत्ति में स्पष्ट रूप से निरूपण किया है । इस प्रकार से जीवाजीवाभिगमसूत्र की यह दो प्रकार की प्रतिपत्ति समाप्त हुई ।

श्रीजैन शास्त्राचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज विरचित 'जीवाभिगमा सूत्र की प्रमेयद्योतिका व्याख्या में 'द्विविधा नामकी प्रथम प्रतिपत्ति समाप्त ॥१॥

ખ્યાત જ કહેલ છે તેના કરતાં "थावरा अनंतगुणा" સ્થાવર જીવ અનંતગણા અધિક છે કેમકે—એ અજઘન્યોત્કૃષ્ટ પણાથી અનંતાનંત સંખ્યાવાળા કહ્યા છે.

હવે પ્રકરણનો ઉપસંહાર કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે—"से त्त दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता" આ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત કથન અનુસાર સંસાર સમાપન્નક જીવ-એટલે કે—સંસારીજીવ-ત્રસ અને સ્થાવરના ભેદથી બે પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે પ્રથમ પ્રતિપત્તિમાં આ બધાનુંજ સ્પષ્ટ પણે નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણે જીવાજીવાભિગમ સૂત્રની આ બે પ્રકારની પ્રતિપત્તી સમાપ્ત થઈ

શ્રી જૈન શાસ્ત્રાચાર્ય-જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ વિરચિત 'જીવાભિગમ' સૂત્રની પ્રમેય દ્યોતિકા નામની વ્યાખ્યા માં 'દ્વિવિધા' નામની પ્રથમ પ્રતિપત્તિ સમાપ્ત ॥૧॥



॥ अथ त्रिविधाख्या द्वितीया प्रतिपत्तिः ।

द्विविधा प्रतिपत्ति निरूपिता, सम्प्रति त्रिविधा प्रतिपत्तिरारभ्यते, तत्र चैदमादिमं सूत्रम्- तत्थं जे ते एवमाहंसु' इत्यादि ।

मूलम्—'तत्थ जे ते एवमाहंसु तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पन्नत्ता, ते एव माहंसु-तं जहा-इत्थी पुरिसा णपुंसगा से किं तं इत्थीओ ? इत्थीओ तिधाओ पन्नत्ता, तं जहा-तिरिक्खजोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ ! से किं तं तिरिक्ख जोणित्थीओ ? तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ता तं जहा-जलयरीओ थलयरीओ खहयरीओ । से किं तं जलयरीओ ? जलयरीओ पंचविहाओ पन्नत्ताओ तं जहा मच्छीओ जाव सुंसुमारीओ से किं तं थलयरीओ । थलयरीओ दुविहाओ पन्नत्ताओ तं जहा चउप्पदीओ य परिसप्पिणीओ य से किं तं चउप्पदीओ ? चउप्पदीओ चउव्विहाओ पन्नत्ताओ, तं जहा एगखुरीओ जाव सणप्फईओ । से किं तं परिसप्पिणीओ परिसप्पिणीओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा-उरपरिसप्पिणीओ य भुयपरिसप्पिणीओ य । से किं तं उरपरिसप्पिणीओ ? उरपरिसप्पिणीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-अहीओ अयगरीओ महोरगीओ, सेत्तं उर-परिसप्पिणीओ । से किं तं भुयपरिसप्पिणीओ ? भुयपरिसप्पिणीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ तं जहा-गोहीओ णउलीओ सेधाओ सेलीओ सरडीओ सेरंधीओ ससाओ खाराओ पंचलोइयाओ चउप्पइयाओ मूसियाओ मुगुंसियाओ घरोलियाओ गोल्हियाओ जान्हियाओ विरचिरालियाओ सेत्तं भुयपरिसप्पिणीओ । से किं तं खहयरीओ ?

खहयरीओ चउव्विहाओ पन्नत्ताओ, तं जहा चम्मपक्खिणीओ जाव वियययपक्खिणीओ से त्तं खहयरीओ। से त्तं तिरिक्खजोणित्थीओ। से किं तं मणुस्सित्थीओ मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ता तं जहा–कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ अंतरदीवियाओ :। से किं तं अंतरदीवियाओ ? अंतरदीवियाओ अट्ठावीसइविहाओ पन्नत्ताओ तं जहा–एगूरूपाओ आभासियाओ जाव सुद्धदंतीओ से त्तं अंतरदीवियाओ । से किं तं अकम्मभूमियाओ ? अकम्मभूमियाओ तीसविहाओ पन्नत्ताओ तं जहा– पंचसु हेमवएसु पंचसु एरण्णवएसु पंचसु हरिवासेसु पंचसु रम्मगवासेसु पंचसु देवकुरासु पंचसु उत्तरकुमारासु। से त्तं अकम्मभूमियाओ। से किं तं कम्मभूमियाओ ? कम्मभूमियाओ पण्णरसविहाओ पन्नत्ताओ तं जहा–पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु। से त्तं कम्मभूमगमणुस्सित्थीअ। सेत्तं मणुस्सित्थीओ। से किं तं देवित्थीओ, देवित्थीओ चउव्विहा पन्नत्ता तं जहा भवणवासिदेवित्थीओ वाणमंतरदेवित्थीओ, जोइसिय–देवित्थीओ वेमाणियदेवित्थीओ। से किं तं भवणवासिदेवित्थीओ ? भवणवासि देवित्थीआ दसविहा पन्नत्ता तं जहा असुरकुमारभव–णवासिदेवित्थीओ जाव थणियकुमारभवणवासिदेवीत्थीओ। सेत्तं भवणवासिदेवित्थीओ। से किं तं वाणमंतरदेवित्थीओ ? वाणमं–तरदेवित्थीओ अट्ठ विहाओ पन्नत्ताओ तं जहा–पिसायवाणमंतर-देवित्थीओ जाव गंधव्ववाणमंतरदेवित्थीओ से त्तं वाणमंतर

देवित्थीओ। से किं तं जोइसियदेवित्थीओ ? जोइसिय देवित्थीओ पंच-विहाओ पण्णत्ता तं जहा चंदविमाणजोइसियदेवित्थीओ सूर०गह०-नक्खत्त०ताराविमाणजोइसियदेवित्थीओ । से त्तं जोइसियदेवित्थीओ से किं तं वेमाणियदेवित्थीओ ? वेमाणियदेवित्थीओ दुविहाओ पन्नत्ता तं जहा-सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थीओ ईसाण कप्प वेमाणिय देवित्थी-ओ सेत्तं वेमाणियदेवित्थीओ ॥सू० १॥

छाया—तत्र ये ते एवमाहुस्त्रिधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्तास्ते एवमाहुस्तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाः । अथ कास्ताः स्त्रियः ? स्त्रिय स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-तिर्यग्योनिकस्त्रियः मनुष्यस्त्रियो देवस्त्रियः । अथ कास्ता स्तिर्यग्योनिक-स्त्रियः ? तिर्यग्योनिकस्त्रियः त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-जलचर्यः स्थलचर्यः खेचर्यः । अथ कास्ता जलचर्यः ? जलचर्यः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-मत्स्यो यावत् शिशु-मार्यः । अथ कास्ताः स्थलचर्यः ? स्थलचर्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-चतुष्पद्यश्च परि-सर्पिण्यश्च । अथ काश्चतुष्पद्य ? चतुष्पद्यश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता, तद्यथा एकखुर्य यावत् सनखपद्य । अथ कास्ताः परिसर्पिण्य ? परिसर्पिण्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-उरः-परिसर्पिण्यश्च भुजपरिसर्पिण्यश्च । अथ कास्ता उरःपरिसर्पिण्य ? उरःपरिसर्पिण्य स्त्रि-विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-अह्य अजगर्यो महोरग्य, ता एता उरःपरिसर्पिण्य अथ कास्ता भुजपरिसर्पिण्य ? भुजपरिसर्पिण्योऽनेकविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-गोधिका नकुल्यः सेधा शैलस्य सरट्य सैरन्ध्र्यः शशा खारा पञ्चलौकिकाश्चतुष्पदिका मूषिकाः मुगुंसिका गृहगोधिका गोल्हिका योधिका विरचिरालिका, ता एता भुजपरिसर्पिण्य । अथ कास्ता खेचर्यः ? खेचर्यश्चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा चर्मपक्षिण्यो यावत् वितपक्षिण्य स्ता एताः खेचर्यः ता एता स्तिर्यग्योनिका । अथ कास्ता मनुष्यस्त्रिय ? मनुष्यस्त्रिय स्त्रिविधा प्रज्ञप्ता कर्मभूमिका अकर्मभूमिका अन्तरद्वीपिकाः अथ कास्ता अन्तरद्वी-पिका ? अन्तरद्वीपिका अष्टाविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः एकोरुकिका आभासिका यावत् शुद्धदन्तिका ता एता अन्तरद्वीपिका । अथ कास्ता अकर्मभूमिकाः ? अकर्मभूमिका स्त्रिंशद्विधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा पञ्चसु हैमवतेषु, पञ्चसु हैरण्यवतेषु पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चसु रम्यकवर्षेषु, पञ्चसु देवकुरुषु, पञ्चसूत्तरकुरुषु ता एता अकर्मभूमिकाः । अथ कास्ताः कर्मभूमिकाः ? कर्मभूमिका पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पञ्चसु भरतेषु, पञ्चसु ऐरवतेषु पञ्चसु महाविदेहेषु । ता एताः कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः । ता एता

मनुष्यस्त्रिय । अथ कास्ता देवस्त्रियः ? देवस्त्रियश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-भवनवासिदेवस्त्रियः वानव्यन्तरदेवस्त्रियः, ज्योतिष्कदेवस्त्रियो वैमानिकदेवस्त्रियः। अथ कास्ता भवनवासिदेवस्त्रियः ? भवनवासिदेवस्त्रियो दशविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-असुरकुमारभवनवासिदेवस्त्रियो यावत् स्तनितकुमारभवनवासिदेवस्त्रियः । ता एता भवनवासिदेवस्त्रियः । अथ कास्ता वानव्यन्तरदेवस्त्रियः ? वानव्यन्तरदेवस्त्रियोऽष्टविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पिशाचवानव्यन्तरदेवस्त्रियो यावत् गन्धर्ववानव्यन्तरदेवस्त्रियः ता एता वानव्यन्तरदेवस्त्रियः । अथ कास्ता ज्योतिष्कदेवस्त्रियः ? ज्योतिष्कदेवस्त्रियः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-चन्द्रविमानज्योतिष्कदेवस्त्रिय सूर्य० ग्रह० नक्षत्र० ताराविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियः । ता एता ज्योतिष्कदेवस्त्रियः अथ कास्ता वैमानिकदेवस्त्रियः ? वैमानिकदेवस्त्रियो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सौधर्म-कल्प वैमानिकदेवस्त्रियः, ईशानकल्पवैमानिकदेवस्त्रियः, ता एता वैमानिकदेवस्त्रिय इति ॥सू० १॥

टीका—'तत्थ जे ते एवमाहंसु' तत्र तेषु—नवसु प्रतिपत्तिषु ये ते आचार्याः, एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण आहुः कथयन्ति । किं कथयन्ति ? तत्राह-'तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता' त्रिविधाः त्रिप्रकारकाः संसारसमापन्नकाः—संसारिणो जीवाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः । 'ते एवं आहंसु' ते आचार्याः एवमाहुः—कथयन्ति 'तं जहा' तद्यथा-'इत्थी पुरिसा णपुंसगा' स्त्रिय.

त्रिविध नामकी द्वितीय प्रतिपत्ति

त्रस और स्थावर के भेद से दो प्रकारवाली प्रथम प्रतिपत्ति का कथन करके अब सूत्रकार तीन प्रकारवाली द्वितीय प्रतिपत्ति को प्रारम्भ करते हैं—

"तत्थ णं जे ते एवमाहंसु" इत्यादि । सूत्र ॥१॥

टीकार्थ—"तत्थ णं जे ते एवमाहंसु" नौ प्रतिपत्तियों में जिन आचार्यों ने जो ऐसा कहा है कि "तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता" संसारी जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं "ते एवमाहंसु" सो उन्होंने इस विषय में ऐसा अपना अभिप्राय प्रकट किया है कि "इत्थीपुरिसा णपुंसगा" स्त्री पुरुष और नपुंसक के भेद से संसारी जीव तीन

त्रिविध नामनी बीजी प्रतिपत्ति

त्रस अने स्थावरना भेदथी बे प्रकारनी पहेली प्रतिपत्तिनुं कथन करीने हवे सूत्रकार त्रण प्रकारनी बीजी प्रतिपत्तिनो प्रारंभ करे छे. "तत्थ णं जे ते एवमाहंसु" इत्यादि.

टीकार्थ—"तत्थ णं जे ते एवमाहंसु" नव प्रतिपत्तिओमां जे आचार्योए एवुं कह्युं छे के "तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता" संसारी जीवो त्रण प्रकारना कहेवामां आव्या छे "ते एवमाहंसु" तेओए आ संबंधमां एवो पोतानो अभिप्राय प्रगट कर्यो छे के—"इत्थीपुरिसा णपुंसगा" स्त्री, पुरुष, अने नपुंसकना भेदथी आ संसारी जीवो,

पुरुषा नपुंसकाः, स्त्रीरूपः प्रथमो भेदः, पुरुषरूपो द्वितीयो भेदः, नपुंसकरूपश्च तृतीयो भेदः। तत्र या स्त्रीवेदोदययुक्ता स्तनादि स्त्रीचिह्नपरिकलिता स्त्री। पुरुषवेदोदययुक्तः श्मश्रुप्रभृति-चिह्नोपेतः पुरुषः। स्त्रीपुरुषोभयचिन्हभावाभावयुक्तं नपुंसकम्। तत्र यथोद्देशं निर्देश इतिन्यायात् प्रथमतः स्त्रीवक्तव्यतामाह—'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं इत्थीओ' अथ कास्ताः स्त्रियः, स्त्रीणां कियन्तो भेदा भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति—'इत्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ' स्त्रियस्त्रि-विधाः—त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः 'तं जहा' तद्यथा—'तिरिक्खजोणित्थीओ' तिर्यग्योनिकस्त्रियः 'मणुस्सित्थीओ' मनुष्यस्त्रियः 'देवित्थीयो' देवस्त्रियः, तथा च तिर्यङ् मनुष्य देवस्त्रीभेदात् स्त्रियः त्रिप्रकारिका भवन्तीति॥ 'से किं तं तिरिक्खजोणित्थीओ' अथ कास्ता स्तिर्यग्योनिकस्त्रियः तिर्यग्योनिकस्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति—'तिरिक्ख

प्रकार के हैं। इनमें जिसके स्त्रीवेद का उदय होता है और इसी से जो स्तनादि स्त्री चिह्नों से युक्त होती है वे स्त्री है पुरुष वेद के उदय से जिनके श्मश्रु—दाढी—आदि चिह्न होते हैं वह पुरुष है जो स्त्री और पुरुष इन दोनों के चिन्हो से रहित हो स्तन आदि तथा श्मश्रु-दाढी आदि चिन्हों के सत्ता असत्ता से युक्त होता है वह नपुंसक है।

उद्देशके अनुसार निर्देश होता है इस नियम के अनुसार सूत्रकार अब स्त्री के सम्बन्ध में अपनी वक्तव्यता प्रकट करते हैं—इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है—"से किं तं इत्थीओ हे भदन्त! स्त्रियां कितने प्रकार की कही गई हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"इत्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ" हे गौतम! स्त्रियां तीन प्रकार की कही गई हैं "तं जहा" जैसे "तिरिक्खजोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ" तिर्यग्योनिकस्त्री, मनुष्यस्त्री, और देवस्त्री इस प्रकार तिर्यञ्च मनुष्य और देव की स्त्रियों केभेद से स्त्रियां तीन प्रकार की कही हैं। "से किं

ત્રણ પ્રકારના છે તેમાં જેઓને સ્ત્રી વેદનો ઉદય થાય છે અને તેથી જ જેઓ સ્ત્રી ચિહ્નોથી યુક્ત હોય છે, તે સ્ત્રી કહેવાય છે પુરૂષવેદના ઉદયથી જેઓને દાઢી વગેરે ચિહ્નો હોય છે, તે પુરૂષ કહેવાય છે જેઓ સ્ત્રી અને પુરૂષ એ બન્નેના દાઢી વિગેરે ચિહ્નોના ભાવાભાવ-સત્તા અસત્તાથી યુક્ત હોય છે તે નપુંસક છે

"ઉદ્દેશાઓ પ્રમાણે નિર્દેશ કરવામાં આવે છે" આ નિયમઅનુસાર સૂત્રકાર હવે સ્ત્રીના સબંધમા પોતાનું કથન પ્રગટ કરે છે તેમા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યુ છે કે—"से किं तं इत्थीओ" હે ભગવન્ સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની કહેવામાં આવેલ છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"इत्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ! સ્ત્રિયો ત્રણ પ્રકારની કહેવામા આવેલ છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે—'तिरिक्खजोणित्थीओ, मणुस्सित्थीओ, देवित्थीओ' તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રી, મનુષ્ય સ્ત્રી, અને દેવસ્ત્રી આ રીતે તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવની સ્ત્રિયોના ભેદથી સ્ત્રિયો ત્રણ પ્રકારની કહી છે. "से किं तं तिरिक्खजोणित्थीओ" હે ભગવન્ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની છે? "गोयमा

जोणिइत्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ' तिर्यग् योनिकस्त्रिय त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः। 'तं जहा' तद्यथा–'जलयरीओ' जलचर्यः जले चरन्ति–गच्छन्ति भवन्ति वा यास्ता जलचर्यः, 'थलयरीओ' स्थलचर्यः स्थले चरन्ति भवन्ति वा यास्ता. स्थलचर्य.। 'खहयरीओ' खेचर्यः खे–आकाशे चरन्ति परिभ्रमन्ति यास्ताः खेचर्य.। 'से किं तं जलयरीओ' अथ कास्ताः जलचर्य., जलचरीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्न, उत्तरयति 'जलयरीओ पंचविहाओ पन्नत्ताओ' जलचर्यः जलचरस्त्रियः पञ्चविधाः–पञ्चप्रकारिकाः प्रज्ञप्ताः -कथिता.। तं जहा' तद्यथा–'मच्छीओ जाव सुंसुमारीओ' मत्स्यो यावत शिशुमार्यः, मत्स्यस्य स्त्री मत्स ङीप्प्रत्यये य लोपे सिद्ध्यति, तस्याः प्रथमाबहुवचने मत्स्य इति रूपम्। अथ यावत्पदेन कच्छपमकरग्राहस्त्रीणा संग्रहो भवति, तथा च–मत्स्यकच्छपमकरग्राहशिशुमारस्त्रीभेदात पञ्चप्रकारका जलचरस्त्रियो भवन्तीति॥ 'से किं तं थलयरीओ' अथ कास्ता स्थलचर्यः स्थलचरीणा कियन्तो भेदा इति प्रश्न', उत्तरयति–

तं 'तिरिक्खजोणित्थीओ" हे भदन्त! तिर्यग्योनिक स्त्रिया कितन प्रकार की हैं? "तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ" हे गौतम तिर्यग्योनिकस्त्रिया तीन प्रकारकी कही गई हैं–"तं जहा" जैसे–"जलयरीओ, थलयरीओ, खहयरीओ" जलचरी, थलचरी और खेचरी, जो जल में चलती है या होती है वे जलचरी हैं, जो स्थल में चलती हैं या होती हैं वे स्थलचरी है जो आकाश में चलती हैं–उड़ती हैं–वे खेचरी है। "से किं तं जलयरीओ" हे भदन्त! जलचर स्त्रियो के कितने प्रकार भेद हैं? गौतम! 'जलयरिओ पंच विहाओ पन्नत्ताओ" जलचर स्त्रियो के पांच भेद हैं–"तंजहा" जैसे–"मच्छिओ जाव सुंसुमारिओ स्त्रिलिङ्गवाली मछली यावत् सुसमारी यहाँ यावत्पद से कच्छपी मकरस्त्री, ग्राहस्त्री इन तीन जलचरस्त्रियों का सग्रह हुआ है इस प्रकार मत्स्यस्त्री, कूर्मस्त्री, मकरस्त्री ग्राहस्त्री और शिशुमारस्त्री के भेद से पांच प्रकार की जलचरस्त्रियां होती हैं। "से किं तं थलयरिओ" थलचरस्त्रियां हे भदन्त! कितने प्रकार की होती है? गौतम! "थलचरिओ दुविहाओ

तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ! તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો ત્રણ પ્રકારની કહેવામા આવેલ છે "तं जहा" તે પ્રમાણે છે "जलयरीओ, थलयरीओ, खहयरीओ" જલચરી, સ્થલચરી અને ખેચરી જે જળમાં ચાલે છે, અગર જળમાં રહે છે, તે જળચરી કહેવાય છે જે સ્થલમાં ચાલે છે, અગર રહે છે, તે સ્થલચરી કહેવાય છે જે આકાશમા ચાલે છે–ઉડે છે તે ખેચરી કહેવાય છે "से किं त जलयरीओ" હે ભગવન્ જળચર સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહ્યા છે? "गोयमा! जलचरीओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ! જલચર સ્ત્રિયોના પાંચ ભેદો કહેલા છે. "त जहा" તે આ પ્રમાણે છે "मच्छीओ जाव सुंसुमारीओ" સ્ત્રી ચિન્હ વાલી માછલીઓ, કાચબીઓ, મગરી, ગ્રાહસ્ત્રી અર્થાત્ ગ્રાહી, અને સુસુમારી એટલે કે મત્સ્ય સ્ત્રી, કૂર્મ સ્ત્રી, મકર સ્ત્રી, ગ્રાહ સ્ત્રી, અને સિંસુમાર સ્ત્રી, આ રીતેના ભેદથી પાંચ પ્રકારની જલચર સ્ત્રિયો હોય છે "से किं तं थलयरिओ" હે ભગવન્ સ્થલચરસ્ત્રિયો એટલે કે પૃથ્વી પર ચલવા વાળી સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહેલા છે? "गोयमा! थलयरीओ

'थलयरीओ दुविहाओ पन्नत्ताओ' स्थलचर्यो द्विविधाः- द्विप्रकारिकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, 'तं जहा तद्यथा 'चउप्पदीओ य परिसप्पिणीओ य' चतुष्पद्यश्च परिसर्पिण्यश्च । 'से किं तं चउप्पदीओ' अथ कास्ताश्चतुष्पद्यः, चतुष्पदस्त्रीणां कियन्तो भेदा भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति- "चउप्पईओ चउव्विहाओ पन्नत्ताओ' चतुष्पद्य.-चतुष्पदस्त्रियः चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति । 'तं जहा' तद्यथा-'एगखुरीओ जाव सणप्फईओ' एकखुर्यो यावत् सनखपद्यः, अत्र यावत्पदेन द्विखुरगण्डी पदस्त्रीयोर्ग्रहणं भवति, तथा च-एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदस्त्रीभेदात् चतुष्पदस्त्रियश्चतुष्प्रकारा भवन्तीति । 'से किं तं परिसप्पिणीओ' अथ कास्ताः परिसर्पिण्य इति प्रश्न, उत्तरयति-'परिसप्पिणीओ दुविहा पन्नत्ता' परिसर्पिण्यो द्विविधाः-द्विप्रकारिका प्रज्ञप्ता.-कथिताः 'तं जहा' तद्यथा-'उरपरिसप्पिणीओ य भुयपरिसप्पिणीओ य' उर परिसर्पिण्यश्च भुजपरिसर्पिण्यश्च

पन्नत्ताओ" स्थलचरस्त्रियाँ दो प्रकार की होती हैं "तं जहा" जैसे "चउप्पदीओ य परिसप्पिणीओ य" चतुष्पदी स्त्रियाँ और परिसर्पिणी स्त्रियाँ "से किं तं चउप्पदीओ" हे भदन्त ! चतुष्पदास्त्रियों के कितने भेद हैं ? गौतम ! "चउप्पदीओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ" चतुष्पदीस्त्रियाँ चार प्रकार की कही गई है "तं जहा" जैसे-"एगखुरीओ जाव सणप्फईओ" एक खुर वाली स्त्रियां यावत् सनखपदवाली स्त्रियाँ यहां यावत्पद से दो खुर वाली स्त्रियां और गण्डी पद स्त्रियां इन दो का संग्रह हुआ है अतः एक खुरी द्विखुरी गण्डीपदी और सनखपदी के भेद से चतुष्पदस्त्रियाँ चार प्रकार की हो जाती है। "से किं तं परिसप्पिणीओ" हे भदन्त ! परिसर्पिणी स्त्रियां कितने प्रकार की होती है ? गौतम ! "परिसप्पिणीओ दुविहा पन्नत्ताओ" परिसर्पिणीस्त्रियां दो प्रकार की होती है "तं जहा" जैसे-"उरपरिसप्पिणीओ य भुयपरिसप्पिणीओ य" उर परिसर्पिणी जो छाती के बल से चलती हैं, भुजपरिसर्पिणी जो भुजाओ से

दुविहाओ पन्नत्ताओ" स्थलचर स्त्रियो બે પ્રકારની હોય છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે "चउप्पदीओ य परिसप्पिणीओ य" ચતુષ્પદી સ્ત્રિયો, અને પરિસર્પિણી સ્ત્રિયો "से किं तं चउप्पदीओ" હે ભગવન્ ચતુષ્પદા સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહેલા છે. "गोयमा ! चउप्पदीओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ ! ચતુષ્પદી સ્ત્રિયો ચાર પ્રકારની કહેવામા આવેલ છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "एगखुरीओ जाव सणप्फईओ" એક ખરી વાળી યાવત્ સનખપદવાળી સ્ત્રિયો અહિયાં યાવત્પદથી બે ખરી વાળી સ્ત્રિયો, અને ગંડીપદવાળી સ્ત્રિયોનો સંગ્રહ થયેલ છે એટલે કે—એક ખરી વાળી, બે ખરી વાળી, ગંડીપદી અને સનખપદી એ ભેદથી ચતુષ્પદ સ્ત્રિયો ચાર પ્રકારની થાય છે. "से किं तं परिसप्पिणीओ" હે ભગવન્ પરિસર્પિણી સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની કહેલી છે ? "गोयमा ! परिसप्पिणीओ दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! પરિસર્પિણી સ્ત્રિયો બે પ્રકારની થાય છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે 'उरपरिसप्पिणीओ य भुयपरिसप्पिणीओ य" ઉર પરિસર્પિણી એટલે જેઓ છાતીના બળથી ચાલે છે તે તથા ભુજ પરિ-

उरसा हृदयेन परिसर्पन्ति—चलन्ति यास्तास्तथा। भुजपरिसर्पिण्यश्च भुजाभ्यां याः परिसर्पन्ति—चलन्ति तास्तथा। 'से किं तं उरपरिसप्पिणीओ' अथ कास्ता उरःपरिसर्पिण्यः? भगवानाह—उरपरिसप्पिणीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ' उरः परिसर्पिण्यस्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा—'अहीओ' अह्यः—अहिस्त्रियः 'अयगरीओ अजगर्यः—अजगरस्त्रियः 'महोरगाओ' महोरग्यो महोरगस्त्रियः। 'से तं उरपरिसप्पिणीओ' ता एता अहिस्त्र्यादय उरःपरिसर्पिण्यो निरूपिता इति॥ 'से किं तं भुयपरिसप्पिणीओ' अथ कास्ता भुजपरिसर्पिण्य इति प्रश्नः, उत्तरयति—भुयपरिसप्पिणीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ' भुजपरिसर्पिण्योऽनेकविधाः—अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, 'तं जहा' तद्यथा—'गोहीओ' गोधिकाः 'णउलीओ' नकुल्यः 'सेधाओ' सेधा. 'सेलीओ' शैल्यका. 'सरडीओ' सरटच. 'सेरिंधीओ' सैरिन्ध्यः 'ससाओ' शशाः 'खाराओ' खाराः 'पंचलोइयाओ' पञ्चलौकिकाः 'चउप्पयाइओ' चतुष्पदिका. 'मूसियाओ' मूषिकाः मुगुंसीओ मुगुंसिका. दीर्घरोम

चलती है। इनमें 'से किं तं उरपरिसप्पिणीओ' उर परिसर्पिणी कितने प्रकार की होती है इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं "गोयमा" हे गौतम! 'उरपरिसप्पिणीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ' उर परिसर्पिणी तीन प्रकार की होती है 'तं जहा' जैसे—"अहीओ अयगरीओ, महोरगीओ" अहिस्त्री सामान्य सर्पस्त्री, अजगरस्त्री, और महोरगस्त्री 'से तं परिसप्पिणीओ" इस प्रकार से ये परिसर्पिणीयों स्त्रियां कही हैं "से किं तं भुयपरिसप्पिणीओ" हे भदन्त! भुजपरिसर्पिणियों के कितने भेद होते हैं? गौतम! "भुयपरिसप्पिणीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ" भुजपरिसर्पिणियों के अनेक भेद होते हैं "तं जहा" जैसे—"गोहीओ" गोधिका "णउलीओ" नकुली 'सेधाओ,' सेधा "सेलाओ" सेला "सरडीओ"—सरटी—गिरगिटली "ससाओ" शशकी—खरगोसस्त्री "खाराओ" खारा 'पंचलोईयाओ' पंचलौकिक—भुजपरिसर्प की एक जाति

सर्पिणी એટલે કે-જેઓ ભુજાઓ--હાથના બળથી ચાલે છે તે આ પ્રમાણે પરિસર્પિણી સ્ત્રિયોના બે ભેદો કહેલા છે. 'से किं तं उरपरिसप्पिणीओ" હે ભગવન્ ઉર પરિસર્પિણી કેટલા પ્રકારની હોય છે? "गोयमा' હે ગૌતમ! "उरपरिसप्पिणीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ" ઉરઃ પરિસર્પિણી સ્ત્રિયો ત્રણ પ્રકારની હોય છે "तं जहा" તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. "अहीओ अयगरीओ, महोरगीओ" અહિસ્ત્રી—એટલે કે સામાન્ય સર્પની સ્ત્રી, અજગર સ્ત્રી, અને મહોરગસ્ત્રી, "से त्तं परिसप्पिणीओ" આ પ્રમાણે આ પરિસર્પિણી સ્ત્રિયોના ભેદો કહ્યા છે "से किं तं भुयपरिसप्पिणीओ" હે ભગવન્ ભુજ પરિસર્પિણી સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહેવા છે? "गोयमा! भुयपरिसप्पिणीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ! ભુજ પરિસર્પિણીઓના અનેક ભેદો થાય છે. 'तं जहा" હે આ પ્રમાણે છે "गोहाओ" ગોધિકા—ઘો "णउलीओ" નકુલી—નોળીયાની સ્ત્રી "सेधाओ" સેધા શાવડી જેના શરીરમાં કાંટા હોય છે "सेलाओ" સેલા 'सरडीओ" કાચંડી "ससाओ" સસલી

बहुलपुच्छा भुजपरिसर्पजातीयाः 'टाळी' इति भाषा प्रसिद्धा', तेषां स्त्रियः । 'घरोल्यिा'गृहगोधिकाः 'छियकली' विसंभरी इति भाषा प्रसिद्धा. । 'गोल्हियाओ जोहियाओ विरचिरालियाओ' गोल्हिकाः योधिका. विरच्चिरालिकाः, एते देशतो लोकतश्च विज्ञेयाः 'से तं भुयपरिसप्पिणीओ' ता एता भुजपरिसर्पिण्यो निरूपिता इति । 'से किं तं खहयरीओ' अथ कास्ताः खेचर्य खेचर स्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति-'खहयरीओ चउव्विहाओ पन्नत्ताओ' खेचर्यश्चतुर्विधा'-चतुष्प्रकारिका' प्रज्ञप्ता.-कथिता. चतुर्विधत्वमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि. 'तं जहा' तद्यथा 'चम्मपक्खिणीओ जाव वियपक्खिणीओ से त्तं खहयरीओ' चर्मपक्षिण्यो यावद् विततपक्षिण्य', ता एताः खेचर्यः, अत्र यावत्पदेन-लोमपक्षिणी समुद्गपक्षिणीनां संग्रह. ।

सम्प्रति-तिर्यग्योनिकस्त्रीस्व रुपसंहरन्नाह-'से तं' इत्यादि, 'से त्तं तिरिक्खजोणित्थीओ' ता एता स्तिर्यग्योनिकाः स्त्रियो भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति ॥

"चउप्पयाइओ" चतुष्पदिका, "मूसियाओ" मूषिका-चुहिया "मुगुंसीओ घरोलियाओ, गोल्हियाओ जोल्हियाओ विरचिरालियाओ" मुगुसिया, घरोलिया आदि ये सब स्त्रीलिङ्ग भुजपरिसर्पिणियां देश से और लोकसे—देशकी भिन्न २ भाषा से और लोक के भिन्न व्यवहार से-जाने जा सकते हैं । "से किं तं खहयरीओ" हे भदन्त । खेचर स्त्रियों के कितने भेद हैं ? गौतम । "खहयरीओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ" खेचरस्त्रियों के चार भेद है । "तं जहा" जैसे-"चम्मपक्खिणीओ जाव वियपक्खिणीओ सेत्तं खहयरीओ" चर्म पक्षी स्त्रियां वागुली, चमगादर आदि यावत् वितत पक्षिणियां यावत्पद से लोमपक्षी स्त्रिया और समुद्रक पक्षी स्त्रियां इनका संग्रह हुआ है । "से त्तं तिरिक्खजोणिओ" इस प्रकार से तिर्यग्योनिकस्त्रियों का यह भेद प्रभेद सहित कथन किया है ।

"खाराओ" ખારા" पंचलोईयाओ" પંચલૌકિક-ભુજપરિસર્પની એકજાત "चउप्पयाइओ" ચતુષ્પદિકા 'मूसियाओ" મૂષિકા-ઉંદરડી "मुगुंसीओ" घरोलियाओ, जोल्हियाओ विरचिरालियाओ" મુગુસિયા—નોળીયાની એક જાતી સ્ત્રિવિશેષ, ઘરોળી વિગેરે આ તમામ ભુજપરિસર્પિણીયો દેશ ભેદથી તથા લોકભેદથી—એટલે કે દેશની જૂદી જૂદી ભાષાથી અને લોકના જૂદા જૂદા વ્યવહારથી સમજી શકાય છે. "से किं तं खहयरीओ" હે ભગવન્ ખેચર સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહ્યા છે ? "गोयमा ! खहयरीओ, चउव्विहाओ पण्णत्ताओ" હે ગૌતમ ! ખેચર સ્ત્રિયો ચાર પ્રકારની કહેવામાં આવેલ છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે.—"चम्मपक्खीणीओ जाव वियपक्खिणीओ से त्तं खहयरीओ" ચર્મ પક્ષિની સ્ત્રીની જાતો—એટલે કે વાગોળ-ચામાચીડિયાં વિગેરે યાવત્ વિતત પક્ષિણીયો. અહિંયા યાવત્પદથી લોમ પક્ષીની સ્ત્રી એટલે કે રૂંવાટા વાળા પક્ષીના સ્ત્રિઓ અને સમુદ્ગક પક્ષિની સ્ત્રી જાતોનો સંગ્રહ થયો છે, "से त्तं तिरिक्खजोणीओ" આ રીતે તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોનું આ ભેદ પ્રભેદ સહિત કર્યું કથન છે

सम्प्रति-मनुष्यस्त्रीः निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह-'से किं तं' इत्यादि से किं तं मणुस्सित्थीओ अथ कास्ता मनुष्यस्त्रियः, मनुष्यस्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति-मणुस्सित्थीओ' तिविहाओ' पण्णत्ताओ मनुष्यस्त्रियः त्रिविधाः-त्रिप्रकारिका प्रज्ञप्ताः- कथिताः। त्रैविध्यमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'कम्मभूमियाओ' कर्मभूमिकाः- कर्मभूमिसंजात मनुष्यस्त्रियः 'अकम्मभूमियाओ' अकर्मभूमिकाः—अकर्मभूमिसंजातमनुष्यस्त्रियः 'अंतरदीवियाओ' अन्तरद्वीपिकाः—अन्तरद्वीपसंजातमनुष्यस्त्रियः, तथा च—कर्मभूमिकाऽकर्मभूमिकाऽन्तरद्वीपिकाभेदेन मनुष्यस्त्रियः—त्रिविधा भवन्तीति भावः अन्तरद्वीपिकाः स्त्रीः निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह 'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं अतरदीवियाओ' अथ कास्ता अन्तरद्वीपिकाः, अन्तरद्वीपजातमनुष्यस्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति —'अंतरदीवियाओ अट्ठावीसइविहाओ पन्नत्ताओ' अन्तरद्वीपिकाः—अन्तरद्वीपजमनुष्यस्त्रियः अष्टाविंशतिविधाः-अष्टाविंशतिप्रकाराः प्रज्ञप्ताः—कथिताः। तादृशभेदमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा तद्यथा—'एगोरूवियाओ' एकोरूकिकाः एकोरूक नामकद्वीपस्त्रियः। 'आभासियाओ' आभासिकाः—आभासद्वीपजमनुष्यस्त्रियः 'जाव सुद्धदंतीओ' यावत् शुद्धदन्तिकाः शुद्धदन्तद्वीपजमनुष्यः, अत्र यावत्पदग्राह्याः सर्वा अपि अन्तरद्वीपजा मनुष्याः प्रज्ञापनायाः प्रथमे जीवगाम

इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है-'से किं तं मणुस्सित्थीओ'' हे भदन्त! मनुष्यस्त्रियों के कितने भेद हैं? गौतम! 'मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ' मनुष्य स्त्रियों के तीन भेद है। ''तं जहा'' जैसे—'कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ अंतरदीवियाओ'। कर्मभूमिज स्त्रियाँ १ अकर्मभूमिकस्त्रिया २, एवं अन्तरद्वीपजस्त्रिया ३, ''से किं तं अंतरदीवियाओ'' हे भदन्त! अन्तरद्वीपज स्त्रियों के कितने भेद है? गौतम! 'अंतरदीवियाओ अट्ठावीसइविहाओ पन्नत्ताओ'' अन्तर द्वीपज स्त्रियोके अट्ठाइस भेद हैं। ''तं जहा'' वो इस प्रकार से हैं—''एगोरुगियाओ, आभासियाओ, जाव सुद्धदंतीओ'' एकोरुक नामक द्वीपकी मनुष्य स्त्रियां, आभाष नामक द्वीपकी मनुष्य स्त्रियां, यावत् शुद्ध दन्तनामक द्वीपकी मनुष्य स्त्रिया,

---

હવે મનુષ્ય સ્ત્રિયોનુ કથન કરવામા આવે છે—આમા ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવુ પૂછ્યુ છે કે—''से किं तं मणुस्सित्थीओ'' હે ભગવન્ મનુષ્ય સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહ્યા છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે. કે—''गोयमा! मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ'' મનુષ્ય સ્ત્રીયોના ત્રણ ભેદો કહ્યા છે, ''तं जहा'' તે ત્રણ ભેદો આ પ્રમાણે છે ''कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ, अंतरदीवियाओ'' કર્મભૂમિજ સ્ત્રિયો ૧ અકર્મભૂમિજ સ્ત્રિયો ૨, અને અંતરદ્વીપજ સ્ત્રિયો ૩ ''से किं तं अंतरदीवियाओ'' હે ભગવન અંતરદ્વીપજ સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહ્યા છે ''गोयमा! अंतर दीवियाओ अट्ठावीसइविहाओ पण्णत्ताओ'' હે ગૌતમ! અંતરદ્વીપજ સ્ત્રિ અઠયાવીસ પ્રકારની કહી છે 'तं जहा' તે અઠયાવીસ પ્રકારના ભેદો આ પ્રમાણે છે ''एगोरुगियाओ आभासियाओ, जाव सुद्धदंतीओ'' એકોરુકનામના દ્વીપની મનુષ્યસ્ત્રિયો, આભાષક નામના દ્વીપની મનુષ્યસ્ત્રિયો યાવત્ શુદ્ધ દંત નામના દ્વીપની મનુષ્યસ્ત્રિયો અહિંયા યાવ-

प्रज्ञापनापदे द्रष्टव्याः, तेषां स्त्रियः अन्तरद्वीपिकाः अन्तरद्वीपजमनुष्यस्त्रियोऽष्टाविंशति,विधा विज्ञेया इति। **'से त्तं अंतरदीवियाओ'** ता एता एकोरुकद्वीपिकाद्याः स्त्रियोऽन्तरद्वीपजा निरूपिता इति। अन्तरद्वीपिकाः स्त्रीः निरूप्याकर्मभूमिकाः निरूपयितुं प्रश्नयन् आह—**'से किं तं'** इत्यादि. **'से किं तं अकम्मभूमियाओ'** अथ कास्ता. अकर्मभूमिकाः, अकर्मभूमिक स्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्न, उत्तरयति–**'अकर्मभूमिया तीसविहाओ पन्नत्ताओ'** अकर्मभूमिका स्त्रिशद्विधाः-त्रिशत्प्रकारकाः प्रज्ञप्ता इति। त्रिशद्भेदमेव दर्शयति **'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा-**'पंचसु हेमवएसु'** पञ्चसु हेमवतेषु **'पंचसु एरण्ण वएसु'** पञ्चसु ऐरण्यवतेषु **'पंचसु हरिवासेसु'** पञ्चसु हरिवर्षेषु **'पंचसु रम्मगवासेसु'** पञ्चसु रम्यकवर्षेषु **'पंचसु देवकुरासु'** पञ्चसु देवकुरुषु **पंचसु उत्तरकुरासु'** पञ्चसु उत्तरकुरुषु, एतेषु हैमतवादिषु त्रिशत्सु अकर्मभूमिवर्षेषु समुत्पन्नानामकर्मभूमिजानां मनुष्याणा स्त्रियोऽकर्मभूमिका स्त्रिशद्विधा भवन्तीति भावः। **'सेत्तं अकम्मभूमियाओ'** ता एता स्त्रिशद् अकर्मभूमिका. स्त्रियः निरू-

---

यहाँ यावत्पद से प्रज्ञापना सूत्र में कथित समस्त अन्तरद्वीपज स्त्रियों का सग्रह हुआ है। अतः वह पाठ वहीं से देखलेना चाहिये **"से त्तं अंतरदीवियाओ"** इस प्रकार से निरूपित ये एकोरूक नामक द्वीप आदिकी स्त्रियां अन्तरद्वीपज स्त्रियाँ हैं। **'से किं तं अकम्मभूमियाओ"** हे भदन्त ! अकर्मभूमिजस्त्रियो के कितने भेद होते है ? **गोयमा ! "अकम्मभूमियाओ तीसविहाओ पन्नत्ताओ"** हे गौतम ! अकर्मभूमिज स्त्रियो के तीस भेद होते है। "तं जहा" जैसे– **'पंचसु हेमवएसु"** पांच हैमवत क्षेत्रोमे उत्पन्न हुई **"पंचसु एरण्णवएसु"** पांच ऐरण्यवत क्षेत्रों में उत्पन्न हुई, **'पंचसु हरिवासेसु'** पाँच हरिवर्ष क्षेत्रो में उत्पन्न हुई **"पंचरम्मगवासेसु'** पांच रम्यक वर्ष क्षेत्र में, उत्पन्न हुई **'पंचदेवकुरासु"** पांच देव कुरुओं में उत्पन्न हुई, **"पंचसु उत्तरकुरासु"** एवं पाच उत्तर कुरुओं में उत्पन्न हुई इस प्रकार से ये **"अकम्मभूमियाओ"** तीस अकर्म भूमिजस्त्रियां हैं। **"से किं तं कम्मभूमियाओ"** हे भदन्त ! कर्मभूमिज स्त्रियाँ

त्पदथी प्रज्ञापना सूत्रमा कहेल अंतरद्वीपनी सघळी स्त्रियोनो संग्रह थयो छे. तेथी ते पाठ त्यांथी जोईने समजी लेवो. **"से त्तं अंतरदीवियाओ"** आ प्रमाणे आ एकोइक नामना द्वीपनी स्त्रियो, अने अतरद्वीपज स्त्रियोनु निरूपणु करेल छे **"से किं तं अकम्मभूमियाओ'** हे भगवन् अकर्मभूमिज स्त्रियोना केटला भेदो कह्या छे? **"गोयमा ! अकम्मभूमिया तीसविहाओ पण्णत्ताओ"** हे गौतम ! अकर्मभूमिज स्त्रियोना त्रीस भेदो कह्या छे. **'तं जहा"** ते त्रीस भेदो आ प्रमाणे छे —**'पंचसु हेमवएसु"** पांच हेमवत क्षेत्रोमा उत्पन्न थयेली स्त्रियो, **"पंचसु एरण्णवएसु'** पांच ऐरण्यवत क्षेत्रमां उत्पन्न थयेली स्त्रियो **"पंचसु हरिवासेसु"** पांच हरिवर्ष क्षेत्रमां उत्पन्न थयेल स्त्रियो, **"पंच रम्मगवासेसु"** पांच रम्यक क्षेत्रमां उत्पन्न थयेली स्त्रियो, **"पंच देवकुरासु"** पाच देवकुराओमां उत्पन्न थयेली स्त्रियो **"पंचसु उत्तरकुरासु"** तथा पांच उत्तर कुराओमां उत्पन्न थयेल स्त्रियो आ

पिता इति । 'से किं तं कम्मभूमिया' अथ कास्ताः कर्मभूमिकाः स्त्रियः कर्मभूमिकाः स्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति 'कम्मभूमिया पण्णरसविहाओ पन्नत्ताओ' कर्मभूमिकाः स्त्रियः पञ्चदशविधाः–पञ्चदशप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः–कथिताः । 'तं जहा' तद्यथा 'पंचसु भरहेसु' पञ्चसु भरतक्षेत्रेषु 'पंचसु एरवएसु' पञ्चसु ऐरवतेपु पंचसु महाविदेहसु' पञ्चसु महाविदेहेपु, एतेपु पञ्च पञ्चसु भरतैरवतमहाविदेहाख्येपु कर्मभूमिक्षेत्रेपु समुत्पन्नानां मनुष्याणां स्त्रियः कर्मभूमिकाः पञ्चदशप्रकारका भवन्तीति भावः । 'से त्तं कम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ' ता एताः कर्मभूमिका मनुष्यस्त्रियः इति । मनुष्यस्त्रीरुपसंहरन्नाह–'से त्तं मणुस्सित्थीओ' ता एता मनुष्यस्त्रियो निरूपिता इति ॥

क्रमप्राप्ताः देवस्त्रीः निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि 'से किं तं देवित्थियाओ' अथ कास्ता देवस्त्रियः–देवस्त्रीणां कियन्तो भेदा भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति–'देवित्थीओ चउव्विहा पन्नत्ता' देवस्त्रीयश्चतुर्विधाश्चतुष्प्रकारका प्रज्ञप्ता–कथिता इति प्रकारभेदमेव दर्श-

---

कितने प्रकार की कही गई है ? 'गोयमा' हे गौतम ! "कम्मभूमिया पन्नरसविहाओ पन्नत्ताओ" कर्मभूमिजस्त्रियां पन्द्रह प्रकार की कही गई है "तं जहा" जैसे–"पंचसु भरहेसु" पांच भरत क्षेत्रों की, "पंचसु एरवएसु" पांच ऐरवत क्षेत्रो की "पचसु महाविदेहेसु" पाँच महा विदेहों की ऐसे पन्द्रह क्षेत्रों की स्त्रियां पन्द्रह प्रकारकी होती है, 'से तं कम्मभूमगमणुस्सित्थी ओ' इस प्रकार से ये पन्द्रर स्त्रियाँ कर्मभूमिज स्त्रियाँ कही गई हैं। 'से तं मणुस्सित्थीओ' मनुष्यस्त्रियां का यह प्रकरण समाप्त हुआ ।

अब सूत्रकार क्रमप्राप्त देवस्त्रियों का निरूपण करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"से किं तं देवित्थीओ" हे भदन्त ! देवस्त्रियों के कितने भेद हैं ? गौतम ! "देवित्थीओ चउव्विहा पन्नत्ता" देवस्त्रियों के चार भेद हैं । "तं जहा" जो इस प्रकार से हैं—"भवणवासि देवित्थीओ वाणमंतरदेवित्थीओ, जोइसियदेवित्थीओ, वेमाणिय-

---

રીતે આ ત્રીસ પ્રકારની "अकम्मभूमियाओ" અકર્મ ભૂમિજ સ્ત્રિયો છે. "से किं तं कम्मभूमियाओ" હે ભગવાન્ કર્મભૂમિજ સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની કહેલી છે ? "गोयमा ! कम्मभूमिया-पन्नरसविहाओ पन्नत्ताओ" હે ગૌતમ ! કર્મભૂમિજ સ્ત્રિયો પંદર પ્રકારની કહેલ છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "पंचसु भरहेसु" પાચ ભરત ક્ષેત્રોમાં ઉત્પન્ન થયેલી સ્ત્રિયો, "पंच एरवएसु" પાંચ એરવત ક્ષેત્રોમાં ઉત્પન્ન થયેલી સ્ત્રિયો, "पंचसु महाविदेहेसु" પાંચ મહા વિદેહોમાં ઉત્પન્ન થયેલી સ્ત્રિયો આ પ્રમાણે પંદર ક્ષેત્રોમાં પંદર પ્રકારની સ્ત્રિયો થાય છે. "से त्त कम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ" આ પ્રમાણે આ પંદર પ્રકારની સ્ત્રિયોને કર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રિયો કહેવામાં આવેલ છે. "से त्तं मणुस्सित्थीओ" આ પ્રમાણે મનુષ્ય સ્ત્રિયોના ભેદો કહ્યા છે

હવે સૂત્રકાર ક્રમાગત દેવની સ્ત્રિયોનું નિરૂપણ કરે છે આમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે—"से किं त देवित्थीओ" હે ભગવન્ દેવ સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહેલા

यति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'भवणवासिदेवित्थीओ' भवनवासिदेवस्त्रियः 'वाणमंतरदेवित्थीयो' वानव्यन्तरदेवस्त्रियः, 'जोइसियदेवित्थीओ' ज्योतिष्कदेवस्त्रियः, 'वेमाणियदेवित्थीओ' वैमानिकदेवस्त्रियः तथा च भवनवासिन्यो वानव्यन्तर्यो ज्योतिष्क्यो वैमानिक्यश्चतस्रो देवस्त्रियो भवन्तीति। तत्र प्रथमोपात्ताः भवनवासिदेवस्त्रीः निरूपयितुमाह- 'स किं तं भवणवासिदेवित्थीओ' अथ कास्ताः भवनवासिदेवस्त्रियः भवनासिदेवस्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति-'भवणवासिदेवित्थीओ दसविहा पन्नत्ता' भवनवासिदेवस्त्रियः दशविधाः दशप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'असुरकुमार भवणवासिदेवित्थीओ जाव थणियकुमारभवणवासिदेवित्थीओ' असुरकुमारभवनवासिदेवस्त्रियो यावत्स्तनितकुमारभवनवासिदेवस्त्रियः, अत्र यावत्पदेन नागकुमारादीनां संग्रहः तथा च भवनवासिदेवानां दशविधत्वात् ते एते दशविधाः-असुर नाग सुवर्ण-विद्युदग्नि-

---

देवित्थीओ" भवनवासी देवस्त्रियां, वानव्यन्तर देवस्त्रियां, ज्योतिष्क देवस्त्रियां और वैमानिक देवस्त्रियां। "से किं तं भवणवासिदेवित्थीओ" हे भदन्त! भवनवासी देवस्त्रियों के कितने भेद है। गौतम! "भवणवासिदेवित्थीओ दसविहा पण्णत्ता" भवनवासि देवों के १० भेद होने से उनकी स्त्रियो के भी दशभेद है। "तं जहा" जो इस प्रकार से है। "असुरकुमारभवणवासिदेवित्थीओ जाव थणियकुमारभवणवासिदेवित्थीओ" असुरकुमार भवनवासि देवस्त्रियां यावत् स्तनितकुमार भवनवासि देवस्त्रियां। यहाँ यावत्पद से अन्य समस्त भवनवासी देवों के भेद दस है जो इस प्रकार से है-भवनवासी देवों की स्त्रियों का संग्रह हुआ है। जैसे-के असुरकुमार तो मूल में ही कह दिये गये हैं, और दसवां स्तनितकुमार भी सूत्रपाठ में कह दिये हैं बाकी के आठ नाम इस प्रकार से हैं-नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार,

---

છે? "गोयमा! देवित्थीओ चउव्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! દેવની સ્ત્રિયો ચાર પ્રકારની કહી છે, "तं जहा" તે ચાર પ્રકારો આ પ્રમાણે છે.— "भवणवासिदेवित्थीओ, वाणमन्तरदेवित्थीओ, जोइसियदेवित्थीओ वेमाणियदेवित्थीओ" ભવનવાસી દેવની સ્ત્રિયો વાનવ્યન્તર દેવની સ્ત્રિયો, જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો અને વૈમાનિક દેવોની સ્ત્રિયો "से किं त भवणवासिदेवित्थीओ" હે ભગવન્ ભવનવાસી દેવની સ્ત્રિયોના કેટલા ભેદો કહેલા છે? "गोयमा! भवणवासिदेवित्थीओ दसविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! ભવનવાસી દેવો દસ પ્રકારના હોવાથી તેઓની સ્ત્રિયોના પણ દસ ભેદો કહ્યા છે त जहा' તે આ પ્રમાણે છે "असुरकुमारभवणवासिदेवित्थीओ जाव थणियकुमारभवणवासिदेवित्थीओ" અસુરકુમાર ભવનવાસિ દેવની સ્ત્રિયો યાવત્ સ્તનિતકુમાર ભવનવાસી દેવની સ્ત્રિયો. અહિં યાવત્પદથી બાકીના સઘળા ભવનવાસી દેવોની સ્ત્રિયોનો સંગ્રહ થયો છે ભવનવાસી દેવો દસ પ્રકારના છે જે આ પ્રમાણે છે.—અસુર કે જે મૂલમાંજ કહેલ છે. અને દસમાં સ્તનિ-

द्वीपो-दधि-दिशा-वायु-स्तनितकुमारा स्तेषां स्त्रियोऽपि दशविधा भवन्तीति ॥ **'से त्तं भवणवासि देविरित्थियाओ'** ता एता दशप्रकारा भवनवासिदेवस्त्रियो निरूपिता इति ॥ **'से किं तं वाण-मंतरदेवित्थीओ'** अथ कास्ता वानव्यन्तरदेवस्त्रियः, वानव्यन्तरदेवस्त्रीणां कियन्तो भेदाः, इति प्रश्नः, उत्तरयति—**'वाणमंतरदेवित्थीओ अट्ठविहाओ पन्नत्ताओ'** वानव्यन्तरदेवस्त्रियोऽष्टविधाः अष्ट प्रकारकाः प्रज्ञप्ता'—कथिता', तदेवाह—**'तं जहा'** तद्यथा—**'पिसायवाणमंतरदेवित्थीओ जाव गंधव्ववाणमंतरदेवित्थीओ'** पिशाचवानव्यन्तरदेवस्त्रियो यावद्गन्धर्ववानव्यन्तरदेव-स्त्रियः, अत्र यावत्पदेन भूत-यक्ष-राक्षस-किन्नर-किंपुरुष-महोरगव्यन्तरदेवस्त्रीणा संग्रहः' **'से त्तं वाणमंतरदेवित्थीओ'** ता एता वानव्यन्तरदेवस्त्रियः **'से किं तं जोइसियदेवित्थीओ'**

अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार। भवनवासी दश प्रकार के होने के कारण इनकी स्त्रिया भी दस प्रकार की कही गई है। **"से त्तं भवणवासिदेवित्थीओ** इस प्रकार से यह भवनवासि देवस्त्रियों का कथन समाप्त हुआ **"से किं तं वाणमंतरदेवित्थीओ**, हे भदन्त! वानव्यन्तरदेवस्त्रियां कितने प्रकार की होती है? हे गौतम! **"वाणमंतरदेवित्थीओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ"** वानव्यन्तर देवस्त्रियां वानव्यन्तरों के आठ प्रकार होने के कारण आठ प्रकार की होती है। वानव्यन्तरों के आठ प्रकार ऐसे होते हैं-पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, कि पुरुष, महोरग और गन्धर्व यही बात **'पिसायवाणमंतरदेवित्थीओ जाव गंधव्व वाण मतरदावित्थीओ'** इस सूत्रपाठ द्वारा स्पष्ट की गई है अतः पिशाचस्त्रियां भूतस्त्रियां यक्ष-स्त्रियां राक्षसस्त्रियां किन्नरस्त्रियां किंपुरुषस्त्रियां और गन्धर्वस्त्रियां यावत् पद से इन आठ पिशाच आदिकों का स्त्रियों का ग्रहण हुआ है। **"से किं तं जोइसियदेवित्थीओ"** हे भदन्त!

તકુમાર પણ સૂત્રપાઠમાં કહેલજ છે, બાકીના આઠ નામ આ પ્રમાણે છે—નાગકુમાર સુવર્ણકુમાર વિદ્યુત્કુમાર અગ્નિકુમાર દ્વીપકુમાર ઉદધિકુમાર, દિશાકુમાર અને વાયુકુમાર આ રીતે ભવનવાસી દેવો દશ પ્રકારના હોવાથી તેઓની સ્ત્રિયો પણ દસ પ્રકારનીજ કહેલ છે **"से त्तं भवणवासिदेवित्थीओ"** આ પ્રમાણે આ ભવનવાસી દેવોની સ્ત્રિયોનું નિરૂપણ કરેલ છે **'से किं त वाणमंतरदेवित्थीओ"** હે ભગવન્! વાનવ્યંતર દેવોની સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની હોય છે? **"गोयमा! वाणमंतरदेवित्थीओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ"** હે ગૌતમ! વાનવ્યન્તર દેવની સ્ત્રિયો, વાનવ્યન્તર દેવો આઠ પ્રકારની હોવાથી આઠ પ્રકારની હોય છે, વાનવ્યન્તરોના આઠ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે પિશાચ, ભૂત, યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર કિંપુરૂષ, મહોરગ, અને ગંધર્વ એજ વાત **"पिसाय वाण मंतरदेवित्थीओ जाव गधव्ववाणमंतरदेवित्थीओ"** આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સ્પષ્ટ કરેલ છે તેથી પિશાચ સ્ત્રિયો, ભૂત સ્ત્રિયો, યક્ષસ્ત્રિયો, રાક્ષસસ્ત્રિયો, કિંનર સ્ત્રિયો, કિંપુરૂષસ્ત્રિયો અને ગંધર્વ સ્ત્રિયો યાવત્ પદની આ આઠ પિશાચ સ્ત્રિયો ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. **"से किं तं जोइसियदेवित्थीओ"** હે ભગવન્ જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની

अथ कास्ताः ज्योतिष्कदेवस्त्रियः ? ज्योतिष्कदेवस्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति-'जोइसियदेवित्थीओ पंचविहाओ पन्नत्ताओ' ज्योतिष्कदेवस्त्रियः पञ्चविधाः-पञ्चप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिता. प्रकारभेदमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'चंदविमाणजोइसिय देवित्थीओ' चन्द्रविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियः 'सूर०' सूर्यविमानज्योतिष्कदेवस्त्रिय· 'गह०' ग्रहविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियः 'नक्खत्त०' नक्षत्रविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियः, 'ताराविमाणजोइसियदेवित्थीओ' ताराविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियः, तथा च चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराविमान स्त्री भेदात् पञ्चप्रकारका ज्योतिष्कदेवस्त्रियो भवन्तीति भाव । 'से त्तं जोइसियदेवित्थीओ' ता एता· पञ्चप्रकारा· ज्योतिष्कदेवस्त्रियो निरूपिता इति । 'से किं तं वेमाणियदेवित्थीओ' अथ कास्ता वैमानिकदेवस्त्रिय·, वैमानिकदेवस्त्रीणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः उत्तरयति 'वेमाणियदेवित्थीओ दुविहा पन्नत्ता' वैमानिकदेवस्त्रियो द्विविधा -द्विप्रकारकाः प्रज्ञप्ता· कथिता

ज्योतिष्क देव स्त्रियां कितने प्रकार की होती है ? हे गौतम ! "जोइसियदेवित्थीओ पंचविहाओ" ज्योतिष्कदेवस्त्रियां पांच प्रकार की कही गई है-क्योकि ज्योतिष्क देव पाँच प्रकार के होते हैं । इनकी स्त्रियो के नाम इस प्रकार से हैं-"चंदविमाणजोइसियदेवित्थीओ" चन्द्र विमान ज्योतिष्क देवस्त्रियां, "सूर०" सूर्य विमानज्योतिष्कदेवस्त्रियां "गह०" ग्रहविमान ज्योतिष्क देवस्त्रियां "नक्खत्त० नक्षत्र विमानज्योतिष्क देवस्त्रिया "ताराविमाणजोइसिय देवित्थीओ" तारा विमान ज्योतिष्क देवस्त्रियां तथा-चन्द्र,सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा विमान क भेद से ज्योतिष्क देव पांच प्रकार के होते हैं—अतः इनकी स्त्रियां भो पाँच प्रकार की कही गय हैं 'सेत्तं जोइसियदेवित्थीओ' इस प्रकार से ये ज्योतिष्क देवस्त्रिया निरूपित हुई । "से किं तं वेमाणियदेवित्थीओ" हे भदन्त ! वैमानिक देवस्त्रियां कितने प्रकार की होती है ? हे गौतम "वेमाणियदेवित्थीओ दुविहा पन्नत्ता" वैमानिक देवस्त्रियां दो प्रकार की होती हैं ।

કહેલી છે ? "गोयमा ! जोइसियदेवित्थीओ पंचविहाओ पन्नत्ताओ" જ્યોતિષ્ક દેવોની સ્ત્રિયો પાચ પ્રકારની કહી છે કેમકે જ્યોતિષ્ક દેવો પાંચ પ્રકારના છે તેમની સ્ત્રિયોના નામો આ પ્રમાણે છે—"चन्द्रविमाणजोइसियदेवित्थीओ" ચંદ્ર વિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો "सूर०" સૂર્ય વિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો, "गह०" ગ્રહવિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો "नक्खत्त०" નક્ષત્ર વિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો "ताराविमाणजोइसियदेवित्थीओ" તારા વિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયો આ પ્રમાણે ચંદ્ર, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર અને તારાવિમાનના ભેદથી જ્યોતિષ્ક દેવ પાંચ પ્રકારના થાય છે તેથી તેઓની સ્ત્રિયો પણ પાંચ પ્રકારની કહી છે. "से त्तं जोइसियदेवित्थीओ" આ પ્રમાણે આ જ્યોતિષ્ક દેવોની સ્ત્રિયોનુ નિરૂપણ કરેલ છે "से किं त वेमाणियदेवित्थीओ" હે ભગવન્ વૈમાનિક દેવોની સ્ત્રિયો કેટલા પ્રકારની કહી છે ? "गोयमा ! वेमाणियदेवित्थीओ दुविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! વૈમાનિક દેવોની

इति 'तं जहा' तद्यथा–'सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थीओ' सौधर्मकल्पवैमानिकदेवस्त्रियः 'ईसाण कप्पवेमाणियदेवत्थीओ ईशानकल्पवैमानिकदेवस्त्रियः, ततः परं देवीनामुत्पत्तेरभावात्। उपसंहरति–'से त्तं वेमाणियदेवित्थीओ' ता एता वैमानिकदेवस्त्रियो निरूपिता इति ॥सू० १॥

सम्प्रति स्त्रीणां भवस्थितिमानप्रतिपादनायाह–'इत्थीणं' इत्यादि,

मूलम्—इत्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! एगेणं आएसेणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं, एगेणं आएसेणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं णवपलिओवमाइं, एगेणं आएसेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं, एगेणं आएसेणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं ॥ तिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। जलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी। चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? जहा तिरिक्खजोणित्थीणं ! गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी। एवं भुयपरिसप्पतिरिक्ख-

---

"तं जहा" जो इस प्रकार से है–'सोहम्मकप्पवेमाणियदेवीत्थीओ ईसाणकप्पवेमाणिय देवित्थीओ' सौधर्म कल्प वैमानिक देवस्त्रियां, और ईशान कल्प वैमानिक देवस्त्रियां इनसे आगेके देवलोकों में देवियों की उत्पत्ति नहीं होती है। "से त्तं वेमाणियदेवित्थीओ" इस प्रकार से ये दो प्रकार की वैमानिक देवस्त्रियां कही है ॥सू० १॥

સ્ત્રિયો બે પ્રકારની કહેલ છે. "तं जहा" તે બે પ્રકારે આ પ્રમાણે છે. 'सोहम्मकप्पवेमाणिय देवित्थीओ ईसाणकप्पवेमाणियदेवित्थीओ'' સૌધર્મ કલ્પ વૈમાનિક દેવની સ્ત્રિયો અને ઈશાન કલ્પ વૈમાનિક દેવની સ્ત્રિયો આનાથી આગળના દેવલોકોમાં દેવિયોની ઉત્પત્તિ થતી નથી. 'से त्तं वेमाणियदेवित्थीओ'' આ પ્રમાણે આ બે પ્રકારની વૈમાનિક દેવોની સ્ત્રિયોનુ' નિરૂપણુ કર્યુ' છે. ॥સૂ૦ ૧॥

जोणित्थीणं। एवं खहयरतिरिक्ख जोणित्थीणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो। मणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। कम्मभूमिय मणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा? खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं, अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। पुव्वविदेहअवरविदेह कम्मभूमिग मणुस्सित्थीणं भंते? केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतामुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते? केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता! गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पूव्वकोडी। हेमवयएरण्णवए जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगं, उक्कोसेण पलिओवमं, संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। हरिवासरम्मगवास अकम्म-

भूमिग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणगाइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं । संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी । देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयाइं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी । अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणयं उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं । संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी" ॥सू० २॥

छाया—स्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम एकेनादेशेन जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तम्, उत्कर्षेण पञ्चाशत्पल्योपमानि । एकेनादेशेन जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण नव पल्योपमानि, एकेनादेशेन जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण सप्त पल्योपमानि एकेनादेशेन जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण पञ्चाशत्पल्योपमानि ॥ तिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिम् । चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां यथा भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? यथा तिर्यग्योनिकस्त्रीणाम् गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । उरःपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कियन्तं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिम् एवं भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकस्त्रीणामपि । एवं खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागः । मनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं

कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि. धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः ॥ भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त । कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि, धर्मचरण प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः । धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोनं पल्योपमं पल्योपमस्यासंख्येयभागम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटि । हैमवतैरण्यवतयोर्जन्मप्रतीत्य जघन्येन देशोन पल्योपमं पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनकम् उत्कर्षेण पल्योपमम् । संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । हरिवर्षरम्यकवर्षाऽकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्त कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोने द्वे पल्योपमे पल्योपमस्यासंख्येयभागेन उने, उत्कर्षेण द्वे पल्योपमे । संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्त कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोनानि त्रीणि पल्योपमानि पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनकानि, उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिक मनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोनं पल्योपमस्यासंख्येयभाग पल्योपमस्यासंख्येयभागेन ऊनकम् । उत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागम् , संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः ॥सू०२॥

टीका—'इत्थीणं भंते !' स्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः—आयुष्यकालः प्रज्ञप्ता—कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा !' इत्यादि,

---

स्त्रियों की भवस्थिति का कथन करते हैं —"इत्थी णं भंते । इत्यादि ॥सू० २॥

टीकार्थ—गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ? "इत्थी णं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" स्त्रियों की भवस्थिति कितने काल की कही गई है ? "गोयमा ! 'एगेणं आदे-

---

હવે સૂત્રકાર સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિનું કથન કરે છે 'इत्थी णं भंते ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—હે ભગવન્ "इत्थी णं भंते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" સ્ત્રિયોની ભવાસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેલ છે ? આ પ્રશ્નના

'गोयमा' हे गौतम ! 'एगेणं आदेसेणं' एकेनादेशेन–अत्रादेशशब्दः प्रकारवाची 'आदेसोत्ति पगारो' इति वचनात्, तथा चैकेन प्रकारेण एक प्रकारमधिकृत्य–एकापेक्षयेत्यर्थः। 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् जघन्येनान्तर्मुहूर्तप्रमाणा स्थिति रित्यर्थः, एतच्च तिर्यङ्मनुष्यस्त्र्यपेक्षया कथितम् अन्यत्रैतावत्प्रमाणस्य जघन्यस्थितेरसंभवात् इति। 'उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं' उत्कर्षेण पञ्चाशत्पल्योपमानि एतच्च इशानकल्पापरिगृहीतदेव्यपेक्षया कथितमिति। 'एगेणं आदेसेणं' तथा एकेनादेशेन–एकेन प्रकारेण एकं प्रकारमधिकृत्य इत्यर्थः। 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तं स्त्रीणां स्थितिः, एतत्तथैव तिर्यङ्मनुष्यस्त्र्यपेक्षया, कथितम् 'उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं' उत्कर्षेण नवपल्योपमानि स्त्रीणां स्थितिरिति, एतत् इशानकल्पपरिगृहीतदेव्यपेक्षया कथितमिति। 'एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' तथा एकेनादेशेन–एकेन प्रकारेण तु जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, प्रागवत्, 'उक्कोसेणं सत्त

सेणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं' एक प्रकार से अर्थात् एक–अपेक्षा से स्त्रियों की भवस्थिति जघन्य तो एक अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है और उत्कृष्ट पचपन पल्योपमकी कही गई है। यहां जो जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है वह तिर्यञ्च स्त्री और मनुष्य स्त्री की अपेक्षा लेकर कही गई है क्योंकि और जगह इतनी कम जघन्य स्थिति स्त्रियों की नहीं बनती है। और जो पचपन पल्योपम की उत्कृष्ट स्थिति कही गई है वह ईशानकल्प की अपरिगृहीत देवियों की अपेक्षा से कही गई है। "एगेणं आदेसेणं–जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं" एक दूसरी अपेक्षा से–स्त्रियों की भवस्थिति जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से नौ पल्योपम की है यह कथन ईशान कल्प में परिगृहीत देवियों की अपेक्षा से किया गया हैं 'एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण पणपन्नपलिओवमाइं' એક પ્રકારથી અર્થાત્ એક અપેક્ષાથી સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તની કહેવામાં આવે છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ૫૫ પંચાપન પલ્યોપમની કહેલ છે અહિંયાં જે જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની કહી છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પંચાવન પલ્યોપમની કહી છે તે તિર્યંચ સ્ત્રી અને મનુષ્ય સ્ત્રીની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. કેમકે—અન્ય સ્થળે સ્ત્રિયોની જઘન્ય સ્થિતિ આટલી ઓછી બનતી નથી અને ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમની જે ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કહેલ છે, તે ઈશાન કલ્પની અપરિગ્રહ દેવીયોની અપેક્ષાથી કહેલ છે "एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण णवपलिओवमाइं" બીજી એક અપેક્ષાથી સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી નવ પલ્યોપમની છે. આ કથન ઈશાન કલ્પમાં ગ્રહણ કરેલ દેવિયોની અપેક્ષાથી કરવામાં આવેલ છે. 'एगेणं' બીજી અપેક્ષાથી ઉત્કૃષ્ટથી નવ પલ્યોપમ "एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्को-

पलिओवमाइं' उत्कर्षेण सप्त पल्योपमानि, एतत् सौधर्मकल्पपरिगृहीतदेवीरधिकृत्य कथितमिति। तथा 'एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' एकेनादेशेन–एकेन प्रकारेण जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, 'उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं' उत्कर्षेण पञ्चाशत् पल्योपमानि, एतत्तु सौधर्मकल्पाऽपरिगृहीतदेव्यपेक्षया कथितमिति। तदुक्तम्—

सपरिग्गहेयराणं सोहम्मीसाण पलिय–साहीयं।
उक्कोससत्तपन्ना नवपणपन्ना य देवीणं ॥१॥
सपरिग्रहेतराणां सौधर्मेशानानां पल्योपमं साधिकम्।
उत्कृष्टतः सप्तपञ्चाशन्नव पञ्चपञ्चाशच्च पल्योपमानि देवीनामिति॥

एवम्–उक्तप्रकारेण समुच्चयतः स्त्रीणां जघन्यत उत्कर्षतश्च स्थितिमानं कथितम् सम्प्रति तिर्यक् स्त्र्यादि भेदानाश्रित्य स्थितिमानं कथयितुं प्रश्नयन्नाह–'तिरिक्खजोणित्थीणं

सत्त पलिओवमाइं'' एक तीसरे प्रकार को अपेक्षा से स्त्रियों की भवस्थिति जघन्य से तो अन्तर्मुहूर्त्त की है–और उत्कृष्ट से सात पल्योपम की हैं। यह सौधर्मकल्प में परिगृहीत देवियो की अपेक्षा से कथन किया गया हैं ''एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं'' तथा–एक चतुर्थ प्रकार की अपेक्षा से जघन्यस्थिति तो स्त्रियों कि एकअन्तर्मुहूर्त्त की हैं और उत्कृष्ट स्थिति पचास पल्योपम की हैं यह कथन सौधर्मकल्प में अपरिगृहीत देवियो की अपेक्षा से किया गया है।

तदुक्तम्—''सपरिग्गहेयराणं सोहम्मीसाण पलियसाहीयं। उक्कोससत्तपन्ना नव पणपन्ना य देवीणं'' पूर्वोक्त जो उत्कृष्ट स्थिति में अन्तर कहा गया हैं उसी के सम्बन्ध में यह गाथा प्रकाश डालने के लिये कही गई है इस प्रकार सामान्यतः स्त्रियों की जघन्य और उत्कृष्ट से भवस्थिति का प्रमाण कहकर अब सूत्रकार तिर्यक्स्त्री आदि के भेद को आश्रित कर

सेणं सत्त पलिओवमाइ'' ત્રીજી એક પ્રકારની અપેક્ષાથી સ્ત્રિયોની ભવ સ્થિતિ જઘન્ય થીતો અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી સાત પલ્યોપમની છે. આ કથન સૌધર્મ કલ્પમાં પરિગૃહીત–રહેલ દેવીયોની અપેક્ષાથી કરવામાં આવેલ છે. ''एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइ'' તથા એક ચોથા પ્રકારની અપેક્ષાથી જઘન્ય સ્થિતિ તો સ્ત્રિયોની એક અન્તર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પચાસ પલ્યોપમની છે. આ કથન સૌધર્મ કલ્પમાં અપરિગૃહીત દેવિયોની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. तदुक्तम् ''सपरिग्गहेयराणं सोहम्मीसाण पलियसाहियं उक्कोससत्तपन्ना नवपणपण्णा य देवीणं'' પૂર્વોક્ત જે ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિમાં અંતર કહેવામાં આવેલ છે, તેનાજ સંબંધમાં પ્રકાશ કરવા માટે આ ગાથા કહેવામાં આવેલ છે આ રીતે સામાન્યત. સ્ત્રિયોની જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી ભવસ્થિતિનું પ્રમાણ કહીને હવે સૂત્રકાર તિર્યંસ્ત્રીવિગેરેના ભેદનો આશ્રય કરીને ભવસ્થિતિનું પ્રમાણ કહે છે—આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને પૂછ્યું છે કે–तिरिक्खजोणि-

भंते' तिर्यग्योनिस्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता-कथितेति प्रश्नः भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि जघन्योत्कर्षाभ्यामन्तर्मुहूर्तं पल्योपमत्रयं च स्थितिकालः तिर्यग्योनिकस्त्रीणा भवतीति । उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि, इति कथनं तु देवकुर्वादिषु चतुष्पदस्त्रीरधिकृत्य कथितमिति । सामान्यतस्तिर्यग् योनिकस्त्रीणा स्थितिकालं निरूप्य विशेषतस्तिर्यग्योनिकास्त्रीणा स्थितिकालं कथयति-"जलयर' इत्यादि, 'जलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते' जलचर तिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं काल स्थितिः-आयुष्यकाल. प्रज्ञप्ता-कथितेति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्त' जघन्येन जलचरीणां स्थिति रन्तर्मुहूर्तम् अन्तर्मुहूर्तप्रमाणा भवतीत्यर्थः 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्व-

---

के भवस्थिति का प्रमाण कहते हैं-इसमें गौतम ! ने प्रभु से ऐसा पूछा है-"तिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं-ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! तिर्यग्योनिस्त्रियों की भवस्थिति कितने कालकी कही गई हैं ? "गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' तिर्यग्योनिक स्त्रियों की भवस्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की कही गई हैं। यहां जो यह तीन पल्योपम की उत्कृष्ट स्थिति का कथन किया गया हैं वह देवकुरू आदि में चतुष्पदस्त्रियो की अपेक्षा लेकर किया गया हैं । इस प्रकार सामान्यतः तिर्यग्योनिकस्त्रियो की स्थिति का काल कहकर अब सूत्रकार विशेपरूप से तिर्यग्योनिक स्त्रियों की स्थिति का काल कहते हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-"जलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता" हे भदन्त ! जलचर तिर्यग्योनिकस्त्रियों की भवस्थिति कितने काल की कही गइ है ? उत्तर में प्रभु कहते है-गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

त्थीणं भंते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता' હે ભગવન્ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવેલ છે ? ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે-"गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओपमाइं" તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જઘન્યથીએક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની કહેવામાં આવેલ છે અહિંયાં આ ત્રણ પલ્યોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કહી છે, તે દેવકુરૂ વિગેરેમાં ચતુષ્પદ સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. આ રીતે સામાન્યતઃ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોનો સ્થિતિકાળ કહીને હવે સૂત્રકાર વિશેષ પ્રકારથી તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોના સ્થિતિકાળનું કથન કરે છે આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવુ પૂછ્યુ છે કે— "जलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ જલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે— "गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्व-

कोटिप्रमाणोत्कर्षतः स्थितिर्भवति जलचरीणामिति । **'चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते'** चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ! **'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता–कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जहा तिरिक्खजोणित्थीओ'** यथा तिर्यग्योनिकस्त्रीणां स्थिति स्तेनैव रूपेण चतुष्पदस्थलचरीणामपि स्थिति र्ज्ञातव्या जघन्येनान्तर्मुहूर्तप्रमाणा उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानीत्यर्थः । **'उरःपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते !'** उरःपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ! **'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्तः–कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् **'उक्कोसेणं पुव्वकोडी'** उत्कर्षेण पूर्वकोटिः, पूर्वकोटिप्रमाणा उत्कर्षतः स्थिति र्भवति उरःपरिसर्पस्थलचरीणामित्यर्थः । **'एवं भुयपरिसप्प०'** एवम् उरःपरिसर्पस्थलचरीणामिव

पुव्वकोडी हे गौतम ! जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से एक पूर्वकोटि की इनकी भवस्थिति कही गई हैं । **"चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते !"** हे भदन्त ! चतुष्पद स्थलचर तिर्यग्योनिक स्त्रियो की भवस्थिति कितने काल की कही गई हैं ! **'गोयमा ! जहा तिरिक्खजोणित्थीओ'** हे गौतम ! जैसी भवस्थिति समुच्चय तिर्यग्योनिकस्त्रियों की जघन्य से अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की कही गई हैं–वही भवस्थिति चतुष्पद स्थलचर तिर्यग्योनिकस्त्रियों की होती है ऐसा जानना चाहिये **"उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** हे भदन्त ! उरःपरिसर्प स्थलचर तिर्यग्योनिकस्त्रियो की कितने काल की भवस्थिति कही गई हैं ? **'गोयमा जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी'** गौतम ! जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से एक पूर्वकोटि की इनकी भवस्थिति कही गई है । **'एवं भुयपरिसप्प०'** उरःपरिसर्पस्थलचर स्त्रियों की भवस्थिति जैसी कही गई हैं

કોડી" હે ગૌતમ ! જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વકોટિ આ પ્રમાણેની ભવસ્થિતિ કહેવામાં આવી છે **"चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणित्थीण भंते!"** હે ભગવન્ ચતુષ્પદ સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેલ છે **'गोयमा ! जहा तिरिक्खजोणित्थीओ"** હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણેની ભવસ્થિતિ સમુચ્ચય તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોની જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની કહી છે, એજ પ્રમાણેની ભવસ્થિતિ ચતુષ્પદ સ્થલચર તિર્યગ્યોનિકસ્ત્રિયોની છે. તેમ સમજવું. **"उरपरिसप्प थलयर तिरिक्ख जोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** હે ભગવન્ ! ઉરઃ પરિસર્પ સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવેલ છે ? **'गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी"** હે ગૌતમ ! જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વ કોટિની તેઓની ભવસ્થિતિ કહેવામાં આવી છે. **'एवं भुयपरि**

भुजपरिसर्पस्थलचरीणामपि स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षतः पूर्वकोटिप्रमाणा भवतीति भावः। **'एवं खहयरतिरिक्खजोणित्थीणं'** एवं खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणाम् **'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मूहूर्तम् **'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग'** उत्कर्षेण पल्योपमस्य असंख्येयभागः, पल्योपमस्यासंख्येयभागप्रमाणा स्थितिर्भवति खेचरीणामिति ॥ **'मणुस्सित्थीणं भंते'** मनुष्यस्त्रीणां भदन्त! **'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्तेति प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम! **'खेत्तं पडुच्च'** क्षेत्रं प्रतीत्य क्षेत्राश्रयणेनेत्यर्थ. **'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्त्ता स्थितिर्भवति **'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं'** उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि मनुष्यस्त्रीणां देवकुर्वादिषु भरतादिष्वपि एकान्तसुषमादिकाले युगलिकापेक्षया पल्योपमप्रमाणा स्थितिर्भवतीति । **'धम्मचरणं**

वैसे ही भुजपरिसर्पस्थलचरस्त्रियों की भी भवस्थिति जाननी चाहिये **"एवं खहयरतिरिक्खजोणित्थीण-जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो"** खेचर-तिर्यग्योनिकस्त्रियों की भवस्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है-और उत्कृष्ट से पल्योपमके असख्यातवें भाग प्रमाण है। **"मणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"** हे भदन्त! मनुष्यस्त्रियों की भवस्थिति कितने काल की कही गई है? **"गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं"** क्षेत्रकी अपेक्षा लेकर जघन्य स्थिति तो इनकी एक अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपमकी कही गई है "क्षेत्र की अपेक्षा लेकर" ऐसा जो कहा गया है उसका तात्पर्य ऐसा है कि जब भरतादि क्षेत्रों में उत्कृष्ट भोग भूमि का समय होता है तब युगलियों की अपेक्षा से और देवकुरु आदि कों की स्त्रियोंकी अपेक्षासे क्योंकि यहाँ पर उत्कृष्ट भोगभूमि होने से एकान्ततः सुषमसुषमा काल का सद्भाव

रूप" ઉર: પરિસર્પ સ્થલચર સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જે પ્રમાણે કહી છે એજ પ્રમાણે ભુજ પરિસર્પ સ્થલચર સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ પણ સમજી લેવી, **"एवं खहयरतिरिक्ख जोणित्थीणं-जहण्णेणं-अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागो"** ખેચર તિર્યંગ્યોનિક સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યતમા ભાગ પ્રમાણ છે **"मणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** હે ભગવન્ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે? **'गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं"** ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી તેમની જઘન્ય સ્થિતિ તો એક અંતર્મુહૂર્તની કહેવામાં આવેલ છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની કહી છે 'ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી' એ પ્રમાણે જે કહેવામાં આવ્યું છે, તેનું તાત્પર્ય એવું છે કે—જ્યારે ભરતાદિ ક્ષેત્રોમાં ઉત્કૃષ્ટ ભોગભૂમિનો સમય હોય છે, ત્યારે યુગલિયોની અપેક્ષાથી, અને દેવકુરૂ વિગેરેની સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી.—કેમકે—અહિંયાં ઉત્કૃષ્ટ ભોગભૂમિ હોવાથી એકાન્તતઃ સુષમ સુષ માકાળનું અસ્તિત્વ

पडुच्च' धर्मचरणं प्रतीत्य–चारित्रधर्मसेवनमाश्रित्य 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम्, एतच्च तद्भवस्थितताया एव परिणामवशात् प्रतिपातापेक्षया ज्ञातव्यम्, चरणधर्मस्य मरणमन्तरेणापि तद्भवे सर्वस्तोकतयाऽप्येतावन्मात्रकालावस्थानभावात, तथाहि–काचित् स्त्री तथाविधक्षयोपशमभावतः सर्वविरतिं प्रतिपद्य तावन्मात्र क्षयोपशमभावादन्तर्मुहूर्तानन्तरं भूयोऽपि अविरतसम्यग्दृष्टित्वं मिथ्यात्वं वा प्रतिपद्यते। अथवा चारित्रस्वीकारानन्तरं मरणेऽपि अप्रमत्तसंयतगुणस्थाने एतावत्प्रमाणः कालस्तु सभवत्येवेति। 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः स्थितिर्भवति, मनुष्यस्त्रीणां चरणधर्मसेवनापेक्षया उत्कर्षतो देशोन

रहता है और इस काल में उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की होती है—इसलिये यहां इनकी इतनी उत्कृष्टस्थिति कही गई है तथा "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" चारित्र धर्म के सेवन को आश्रित करके जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से कुछ कम एक पूर्व कोटि की इनकी स्थिति कही गई है इसका तात्पर्य ऐसा है कि किसी स्त्री ने तथाविध क्षयोपशम भाव से–चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से सर्व विरतिरूप चारित्र धर्म को स्वीकार कर लिया तब उसी भव में कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त्त के बाद वह फिर परिणाम वश से प्रति पतित होकर अविरत सम्यग्दृष्टि अवस्था वाली बन गई या मिथ्यात्व गुणस्थान वाली बनगई तो इस चारित्र धर्म का उसने एक अन्तर्मुहूर्त्तकाल तक ही पालन किया अतः इस अपेक्षा उसकी स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है अथवा चारित्र स्वीकार करने के बाद मृत्यु भी हो जाय तो भी अप्रमत्त संयम गुणस्थान में अन्तर्मुहूर्त्त कालकी संभावना है ही। "उत्कृष्ट से इनकी स्थिति देशऊन कुछकम एक पूर्वकोटि की होती है" ऐसा

રહે છે, અને આ કાળમાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની હોય છે. તેથી અહિંયાં તેઓની આટલી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કહેવામાં આવી છે તથા "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडी" ચારિત્ર ધર્મના સેવનનો આશ્રય કરીને જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછી એક પૂર્વ કોટિની તેઓની સ્થિતિ કહેલ છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે–કોઈ સ્ત્રિએ તથાવિધ ક્ષયોપશમ ભાવથી–ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી સર્વવિરતિ રૂપ ચારિત્ર ધર્મનો સ્વીકાર કરી લીધો હોય, તો એજ ભવમાં કમથી કમ એક અંતર્મુહૂર્ત બાદ તે પાછા પરિણામ વશથી પ્રતિપતિત થઈને અવિરત સમ્યગ્દૃષ્ટિ અવસ્થાવાળી બની ગઈ કે મિથ્યાત્વગુણ સ્થાન વાળી બની ગઈ, તો આ ચારિત્ર ધર્મનું તેણે એક અંતર્મુહૂર્ત કાલ સુધીજ પાલન કર્યું તેથી આ અપેક્ષાથી તેની સ્થિતિ જઘન્ય એક અંતમુહૂર્તની કહેવામાં આવી છે, અથવા ચારિત્રનો સ્વીકાર કર્યા પછી મૃત્યુ પણ થઈ જાય તો પણ અપ્રમત્ત સંયમ ગુણસ્થાનમાં અંતર્મુહૂર્ત કાલની સંભાવના છેજ. "ઉત્કૃષ્ટથી તેઓની સ્થિતિ દેશોન કઇક ઓછી એક પૂર્વ કોટિના હોય છે." એવું જે કહે-

पूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवति, अष्टवार्षिकचाश्चरणधर्मप्राप्तेस्ततःपरं चरमान्तर्मुहूर्तपर्यन्तमप्रतिपतितपरिणामसद्भावादिति । पूर्वपरिमाणं चेदम्—

पुव्वस्स उ परिमाणं, सयरिं खलु होंति कोडिलक्खाओ ।
छप्पण्णसहस्सा, बोद्धव्वा वासकोडीणं ॥१॥

छाया—पूर्वस्य तु परिमाणं सप्तति. खलु भवन्ति कोटिलक्षाणि ।
षट् पञ्चाशच्च सहस्राणि बोद्धव्यानि वर्षकोटीनाम् ॥

(७०,५६०००,०००००००) एतावत्प्रमाणमेकं पूर्वं भवति । एतावत्प्रमाणमेकं पूर्वमाश्रित्य पूर्वाणां कोटिः पूर्वकोटिरुच्यते, सा च देशोना देशेन किञ्चिद्भागेन- अष्टवर्षरूपेण ऊना भवस्थिति मनुष्यस्त्रीणां चरणधर्ममाश्रित्य प्रोक्तेति भावः । 'कम्मभूमियमणुस्सित्थी णं भंते'

जो कहा गया है सो उस का तात्पर्य ऐसा है कि मनुष्य स्त्रियाँ चारित्र धर्म का पालन अधिक से अधिक देशोन पूर्वकोटिकाल तक कर सकती है। पूर्वकोटि में जो देश—ऊन कहा गया है उसका तात्पर्य यह है कि कोई स्त्री आठवर्ष की अवस्था में चारित्र स्वीकार करे क्योंकि आठ वर्ष की अवस्था के पहले चारित्र धर्म ग्रहण करने का निषेध है, फिर तदनन्तर उसके आयु के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त तक अप्रतिपतित परिणामों का सद्भाव रहने से चारित्रग्रहण के आठवर्षों की ऊनता रह जाती है इसलिये देशऊन कहा गया है। पूर्व का परिमाण इस प्रकार है "पुव्वस्स उ परिमाणं" इत्यादि। सत्तर (७०) लाख करोड़ और छप्पन हजार करोड़ (७०,५६०००,००००००० सत्तर छप्पन और दश शून्य) वर्षों का एक पूर्व होता है। इतने प्रणाम के एक पूर्व को आश्रय करके ऐसे देश ऊन करोड़ पूर्व की चारित्र धर्मकी अपेक्षा से स्त्रियों की स्थिति होती है। "कम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई

વામાં આવેલ છે, તેનુ તાત્પર્ય એવુ છે કે—મનુષ્ય સ્ત્રિયો ચારિત્ર ધર્મનું પાલન વધારેમાં વધારે દેશોન પૂર્વકોટિ કાલ સુધી કરી શકે છે. પૂર્વકોટિમાં જે દેશ-ઉન કહેવામાં આવેલ છે, તેનું તાત્પર્ય એ છે કે-કોઇ સ્ત્રી આઠ વર્ષની અવસ્થામાં ચારિત્રનો સ્વીકાર કરે—કેમકે-"આઠવર્ષની અવસ્થાની પહેલાં ચારિત્રધર્મનો અંગીકાર કરવાનો નિષેધ છે. તે પછી તેના આયુષ્યના છેલ્લા અંતર્મુહૂર્ત સુધી અપ્રતિપતિત પરિણામોનો સદ્દભાવ રહેવાથી ચારિત્ર ગ્રહણ કરવામાં આઠ વર્ષની ન્યૂનતા રહી જાય છે. તેથી દેશ ઉન કહેવામા આવેલ છે. પહેલાનું પરિણામ આ પ્રમાણે છે. "पुव्वस्स उ परिमाणं" ઇત્યાદિ સિત્તેર (૭૦) લાખ કરોડ અને છપ્પન હજાર કરોડ (૭૦, ૫૬૦૦૦,૦૦૦૦૦૦૦ સત્તર છપ્પન અને દસ શૂન્ય) વર્ષોનો એક પૂર્વ કહેવાય છે. આટલા પ્રમાણવાળા એક પૂર્વનો આશ્રય એવા દેશ ઉન કરોડ પૂર્વના ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી સ્ત્રિયોની સ્થિતિ હોય છે.

"कम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ કર્મભૂમિજ

कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' क्रियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता-कथितेति प्रश्न, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' क्षेत्रं प्रतीत्य आश्रित्य कर्मभूमिज. सामान्यलक्षणमधिकृत्येत्यर्थः, जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि, कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां क्षेत्र-माश्रित्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तम्, उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि, एषां स्थितिर्भरतैरवतेषु सुषमसुषमा-लक्षणे आरके ज्ञातव्येति भावः। 'धम्मचरणं पडुच्च' धर्मचरणं-चरणधर्मं प्रतीत्य-आश्रित्य चरणधर्माश्रयणेनेत्यर्थ 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्ता स्थिति 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः देशोनपूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिरित्यर्थः। भरहेरवयकम्म-भूमिगमणुस्सित्थीणं भंते' भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्त कालं स्थिति. प्रज्ञप्ता-कथितेति प्रश्न, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम

पण्णत्ता" हे भदन्त ! कर्मभूमि मनुष्यस्त्रियों की भवस्थिति कितने काल की कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-"गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं" हे गौतम ! क्षेत्र का आश्रय करके सामान्य से कर्मभूमि रूप क्षेत्र की अपेक्षा लेकर कर्मभूमि मनुष्यस्त्रियों की भवस्थिति जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त की कही गई है और 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' उत्कर्ष से तीन पल्योपम की कही गई है यह तीन पल्योपम की स्थिति भरत और ऐरवत क्षेत्र में जब सुषमसुषमा नामका आरक होता है तब होता है। तथा-"धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" चारित्र धर्म को अंगीकार करने की अपेक्षा से इन कर्मभूमिक स्त्रियों की जघन्य स्थिति तो एक अन्तर्मुहूर्त की होती है और उत्कृष्ट स्थिति देशोन कुछ कम एक पूर्व कोटिकी होती है। "भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता" हे भदन्त ! भरत एवं ऐरवत क्षेत्ररूप कर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियों

મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—'गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' હે ગૌતમ ! ક્ષેત્ર સામાન્યથી કર્મભૂમિરૂપ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી કર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તની કહી છે. અને "उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ" ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની કહેવામાં આવેલ છે, આ ત્રણ પલ્યોપમની સ્થિતિ ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રમાં જ્યારે સુષમ સુષમા નામનો આરો થાય છે ત્યારે થાય છે. તથા-"धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूणां पुव्वकोडी" ચારિત્ર ધર્મ અંગીકાર કરવાની અપેક્ષાથી આ કર્મભૂમિની સ્ત્રિયોની જઘન્ય સ્થિતિ તો એક અંતર્મુહૂર્તની હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દેશોન-કંઈક ઓછી એક પૂર્વકોટિની હોય છે. "भरहेरवय कम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રરૂપ કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવેલ છે?

'खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' क्षेत्रं प्रतीत्य–आश्रित्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तां स्थितिः, उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि स्थितिर्भवतीति। 'धम्मचरणं पडुच्च' धर्मचरणं चरणधर्मं प्रतीत्य आश्रित्य तु 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवतीति। 'पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते' पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त। 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता–कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम। 'खेत्तं पडुच्च' क्षेत्रं प्रतीत्य आश्रित्य 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः, 'धम्मचरणं पडुच्च' धर्मचरणंप्रतीत्य आश्रित्य 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तं 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी'

की भवस्थिति कितने काल की कही गई है? "गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं०" हे गौतम! क्षेत्र की अपेक्षा लेकर तो इनकी जघन्य स्थिति एक अन्तर्मूहूर्त की कही गई हैं और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योमकी कही गई है "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" धर्म चारित्र धर्मस्वीकार करनेकी अपेक्षा जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से कुछकम एक पूर्वकोटि की इनकी भवस्थिति कही गई है। 'पुव्वविदेह अवर विदेह कम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त! पूर्वविदेह और अपरविदेह रूप कर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियो की भवस्थिति कितने काल की कही गई है! उत्तर में प्रभु कहते हैं–"खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी" हे गौतम! क्षेत्र की अपेक्षा लेकर इनकी जघन्य स्थिति तो एक अन्तमुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटी की है क्योंकि यहाँ पर उत्कृष्ट स्थिथि इतनी ही कही गई है तथा "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं-

---

"गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" हे गौतम! क्षेत्रनी अपेक्षाथी तो तेमनी जघन्य स्थिति એક અંતર્મુહૂર્તની કહેવામાં આવી છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની સ્થિતિ કહેલ છે "धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" ધર્મચારિત્ર–ધર્મ સ્વીકાર કરવાની અપેક્ષા એ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછી એક પૂર્વકોટિની તેઓની ભવસ્થિતિ કહેવામાં આવેલ છે. 'पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थीण भंते! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ પૂર્વ વિદેહ અને અપર વિદેહ રૂપ કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલાકાળની કહેવામાં આવી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–'खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी" હે ગૌતમ! ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી તેઓની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વ કોટિની કેમકે–અહિંયાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એટલીજ કહેલ છે. તથા "धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी"

उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः पूर्वापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां क्षेत्रधर्मचरणाश्रयणेन जघन्योत्कर्षाभ्यामन्तर्मुहूर्तपूर्वकोटि–देशोनपूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवतीति भाव । विशेषचिन्ताचेत्थम्–भरतरवतेषु त्रीणि पल्योपमानि सुषमसुषमायाम्, पूर्वविदेहेषु क्षेत्रतः पूर्वकोटिः, तत्र तथा क्षेत्रस्वाभाव्यात्तत ऊर्ध्वमायुषोऽसंभवात् इति।। कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां स्थितिं निरूप्य अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां स्थितिं निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'अकम्मभूमिग' इत्यादि, **'अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते'** अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त । **'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता–कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम **'जम्मणं**

देसूणा पुव्वकोडी" धर्म धारण करने की अपेक्षा लेकर इनकी जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्तकी है और उत्कृष्ट स्थिति कुछ कम एक पूर्वकोटि की है भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र की कर्मभूमिज मनुष्य स्त्रियोंकी भवस्थिति सुषमसुषमा नामके प्रथम आरे में क्षेत्र की अपेक्षा से उत्कृष्ट रूप में तीन पल्योपम की होती है पूर्वविदेह में क्षेत्र की अपेक्षा से एक पूर्वकोटि की होती है क्योंकि भरत ऐरवत और पूर्वविदेह के क्षेत्र का तथाविध स्वभाव के कारण भरत ऐरवत के सुषमसुषमा काल में तीन पल्योपम से अधिक तथा पूर्व विदेह में क्षेत्र की अपेक्षा पूर्वकोटि से अधिक आयुका संभव नहीं है

कर्मभूमिक स्त्रियों की स्थिति का निरूपण करके अब अकर्मभूमिक स्त्रियों की स्थिति का निरूपण करते हैं–

इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–**"अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** हे भदन्त ! अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियों की स्थिति कितने

ધર્માચરણ કરવાની અપેક્ષાથી તેમની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કંઈક ઓછી એક પૂર્વકોટિની છે ભરતક્ષેત્ર અને એરવત ક્ષેત્રની કર્મભૂમિજ મનુષ્યસ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ સુષમ સુષમા નામના પહેલા આરામાં ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી ઉત્કૃષ્ટ રૂપથી ત્રણ પલ્યોપમની થાય છે. પૂર્વવિદેહમાં ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી એક પૂર્વકોટિની હોય છે કેમકે–ભરત, ઐરવત અને પૂર્વ વિદેહના ક્ષેત્રનો તથાવિધ સ્વભાવના કારણે ભરત અને ઐરવતના સુષમ સુષમાકાળમાં ત્રણ પલ્યોપમથી વધારે તથા પૂર્વ વિદેહમાં ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ પૂર્વકોટિથી વધારે આયુનો સંભવ નથી

"કર્મભૂમિક સ્ત્રિયોની સ્થિતિનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર અકર્મભૂમિ સ્ત્રિયોની સ્થિતિનું નિરૂપણ કરે છે

આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયુ છે કે–**"अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** હે ભગવન્ અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે?" આ પ્રશ્નનાં ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે–

पडुच्च' जन्म प्रतीत्य—अकर्मभूमिजन्माश्रयणेन 'जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं' जघन्यतो देशोनं पल्योपमम्—तच्चाष्टभागादन्यूनमपि देशोनं भवति, ततो विशेषद्योतनायाह—'पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागऊणगं' पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनम् एतच्च हैमवतहैरण्यवतक्षेत्रापेक्षया द्रष्टव्यम्, तत्र जघन्यत. स्थिते रेतावत्प्रमाणायाः संभवात् । 'उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं' उत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमानि स्थितिर्भवतीति, एषा त्रिपल्योपमप्रमाणा स्थिति र्देवकुरूत्तरकुरुक्षेत्रापेक्षया ज्ञातव्येति 'संहरणं पडुच्च' संहरणं प्रतीत्य, सहरणं नाम कर्मभूमिजाया स्त्रियोऽकर्मभूमिषु नयन तत्प्रतीत्य तदाश्रित्य 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तम 'उक्कोसेणं देसूणा

काल की कही गई है "गोयमा जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग ऊणगं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ" हे गौतम ! अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियों की स्थिति जन्म की अपेक्षा लेकर के जघन्य से देश ऊन कुछ कम एक पल्योपम की कही गई है, पल्यापम में दशोनता तो आठवें भाग आदि से न्यून होने पर भी आजाती है परन्तु ऐसा ऊनता यहा विवक्षित नहीं हुई है इसी बात को प्रकट करने के लिये कहते हैं—"पलिओवमस्स असंखेज्जइभागऊणगं" वह ऊनता यहां पल्योपम के असख्यातवें भाग रूप समझना चाहिये, यह कथन हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र की अपेक्षा से जानना चाहिये । क्योंकि यहां पर इतने ही प्रमाण की जघन्य स्थिति का समव है। "उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ' तथा अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियों की स्थिति उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की कहीं गई है । यह स्थिति देवकुरू और उत्तरकुरु क्षेत्र की अपेक्षा से कही गई जाननी चाहिये । "संहरणं पडुच्च" सहरण—कर्मभूमिकी स्त्री को हरकर अकर्म भूमिमें लेजाने—की अपेक्षा अकर्म भूमिक मनुष्य स्त्रियोंकी भवस्थिति "जहन्नेण अंतोमुहुत्तं" जघन्य

"गोयमा ! जम्मणं पडुच्च देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असखेज्जइभागऊणगं उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं" હે ગૌતમ ! અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જન્મની અપેક્ષાએ જઘન્યથી દેશ ઉન-કંઈક ઓછી એક પલ્યોપમની કહેલ છે પલ્યોપમમાં દેશોનપણું તો આઠમા ભાગ આદિથી ન્યૂન થાય ત્યારે પણ આવી જાય છે. પરંતુ એવું ન્યૂન પણું અહિયાં વિવક્ષિત થયલે નથી. એજ વાત ને પ્રગટ કરવા માટે કહે છે કે—"पलिओवमस्स असंखेज्जइभागऊणग" તે ન્યૂન પણું અહિંયા પલ્યોપમના અસંખ્યાત મા ભાગરૂપ સમજવું. આ કથન હૈમવતઅને હૈરણ્યવત ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી સમજવું. કેમકે—અહિયાં એટલા પ્રમાણુની જ જઘન્ય સ્થિતિનો સભવ છે. "उक्कोसेणं तितन्नि पलिओवमाइं,, તથા અકર્મ ભૂમિક મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની કહી છે. આ સ્થિતિ દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી કહેલ છે. તેમ સમજવુ 'संहरणं पडुच्च' સહરણુ-કર્મભૂમિની સ્ત્રીને હરીને અકર્મભૂમિમા લઈ જવાની—અપેક્ષાથી અકર્મભૂમિ જ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ "जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને

पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः, अयं भावः—इह कर्मभूमिकापि स्त्री अकर्मभूमिषु संहृता अकर्मभूमिकेति व्यवह्रियते अकर्मभूमिकक्षेत्रसम्बन्धात् यथा लोके कश्चिन्मगधादिदेशात् सौराष्ट्रं प्रति प्रस्थितो गिरिनगरादिषु निवासं कल्पयितुकामः सुराष्ट्रपर्यन्तग्रामप्राप्तः सन् समुत्पद्यमानेषु तथाविधप्रयोजनेषु सौराष्ट्र इति व्यवह्रियते तद्वत् कर्मभूमिजाऽपि स्त्री अकर्मभूमिकेति कथ्यते तत्र च संहृता सती काचिदन्तर्मुहूर्त्तं जीवति, तथा काचित् जीविता सती ततोऽपि वा भूयोऽपि संह्रियते तदा व्रतग्रहणाष्टवार्षिककालन्यूनपूर्वकोटचायुष्का सा यावज्जीवमपि तत्रावतिष्ठते, ततो जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तं प्रोक्तम् उत्कृष्टतो देशोना पूर्वकोटिरिति। ननु भरतैरवतान्यपि क्षेत्राणि कर्मभूमौ वर्तन्ते तत्र चैकान्तसुषमादिकाले त्रीण्यपि पल्योपमानि स्थितिरस्या भवति संह-

---

से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और "उक्कोसेणं" उत्कृष्ट से 'देसूणा पुव्वकोडी" देशोन पूर्वकोटि की है। तात्पर्य यह है कि कर्मभूमिक स्त्री भी जब अकर्म भूमि में हरण करके ले आई जाती है तब वह अकर्मभूमिक क्षेत्र के सम्बन्ध से अकर्मभूमिका रूप से व्यवहृत होने लगती है। लोकव्यवहार में भी ऐसा ही देखा जाता है—जब कोई मनुष्य मगधादिदेश से सौराष्ट्र में जाकर रहने लगता है—तो लोग उसे सौराष्ट्र का नागरिक कहने लग जाते हैं। कर्मभूमि से हरण कर अकर्मभूमि में लाई गई कोई २ स्त्री तो एक अन्तर्मुहूर्त्त तक ही जीवित रहती हैं फिर वह वहां से वापिस कर्मभूमि में ले आई जाती है फिर वह वहां से पुनः वापिस संहृत करके ले आईजाती है तो एक कोटि पूर्वकी आयु वाली वह भी एक कोटि पूर्व तक वहां जीवित रहती है। इस प्रकार जघन्य से अकर्मभूमिक स्त्री की आयु संहरण की अपेक्षा एक अन्तर मुहूर्त्तकी और उत्कृष्टसे देशोन एक कोटि पूर्व की कही गई जाननी चाहिये,

शंका—भरत और ऐरवत क्षेत्र भी कर्मभूमि में है यहां जब एकान्त सुषमादिकाल होता है

"उक्कोसेणं" ઉત્કૃષ્ટથી 'देसूणा पुव्वकोडी" દેશોન પૂર્વ કોટિની છે કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે—કર્મભૂમિ જ સ્ત્રીપણ જ્યારે અકર્મભૂમિમાં હરણ કરીને લાવવામાં આવે છે. ત્યારે આ અકર્મભૂમિક ક્ષેત્રના સંબંધમાં અકર્મભૂમિક રૂપથી વ્યવહાર થવા લાગે છે. લોક વ્યવહારમાં પણ એવુ જ જોવામાં આવે છે કે-જ્યારે કોઈ મનુષ્ય મગધવિગેરે દેશમાંથી સૌરાષ્ટ્રમાં જઈને રહેવા લાગે છે. તો લોકો તેને સૌરાષ્ટ્રનો નાગરિક કહેવા લાગે છે કર્મભૂમિમાંથી હરણ કરીને અકર્મભૂમિમા લાવવામાં આવેલ કોઈ કોઈ સ્ત્રી તો એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી જ જીવતી રહે છે તે પછી તે ત્યાંથી કર્મભૂમિમાં લઈ આવવામાં આવે છે પછી તે ત્યાથી ફરીથી પાછી સંહરણ કરીને લઇ આવવામા આવે છે તો એક કોટિપૂર્વની આયુષ્યવાળી તે પણ એક કોટિપૂર્વ સુધી ત્યા જીવતી રહે છે. આરીતે જઘન્યથી અકર્મભૂમિક સ્ત્રીની આયુ સંહરણની અપેક્ષાથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન એક કોટિપૂર્વની કહેવામાં આવી છે. તેમ સમજવું

रणं चापि संभवति, तत्कथं देशोना पूर्वकोटि रिति कथ्यते इति चेत् अत्रोच्यते- कर्मभूमिकाल विवक्षयैतत् कथनं ज्ञातव्यम्, तस्य च कर्मभूमिकालस्यैतावन्मात्रत्वात् इति ॥

'हेमवय एरण्णवए जम्मणं पडुच्च' हैमवतैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां जन्म प्रतीत्य जन्माश्रयणेन 'जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगं' जघन्येन देशोनं पल्योपमं पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनम् 'उक्कोसेणं पलिओवमं' उत्कर्षतः परिपूर्णं पल्योपममिति 'संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः स्थितिरासां भवति, भावना पूर्ववदिति 'हरिवासरम्मयवास अकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते' हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्य-

---

तब तीन पल्योपम तक की स्थिति भी स्त्रियों की हो जाती है, और इस स्थिति में उनका संहरण भी हो सकता है, तो फिर संहरणकी अपेक्षा देशोन पूर्व कोटिस्थिति इनकी कैसे कही गई है ? तो इसका उत्तर ऐसा है कि ऐसी लम्बी जो यहां इनकी स्थिति कही गई है वह कर्मभूमि काल की विवक्षा से कही गई है, वह कर्मभूमि काल इतने प्रमाण का होता है ।

"हेमवय एरण्णवए जम्मणं पडुच्च" हैमवत ऐरण्यवत अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियों की भवस्थिति जन्मकी अपेक्षा 'जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं,' जघन्य से पल्योपम के असख्यातवें भाग से हीन एक पल्योपम की है और "उक्कोसेणं पलिओवम', उत्कृष्ट से पूर्ण एक पल्योपम की है "सहरण पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" सहरण की अपेक्षा से इनकी भवस्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से कुछ कम एक पूर्वकोटि की है । "हरिवासरम्म-

---

શંકા—ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્ર પણ કર્મભૂમિમા છે અહિંયાં જ્યારે એકાન્ત સુષમા વિગેરે કાઈ હોય છે, ત્યારે ત્રણ પલ્યોપમ સુધી સંહરણ પણ થઇ શકે છે.-તો પછી સંહરણની અપેક્ષાએ દેશોનપૂર્વકોટિની સ્થિતિ તેઓની કેવીરીતે કહેવામાં આવેલ છે ? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર એવો છે કે—એવી લાંબી સ્થિતિ કર્મભૂમિકાળ એટલા પ્રમાણનો હોય છે. તેથી અહિયાં કહેવામાં આવી છે,

"हेमवय एरणवए जम्मण पडुच्च" હૈમવત, ઐરણ્યવત અકર્મભૂમિ જ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ જન્મની અપેક્ષાથી 'जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेणं ऊणगं,, જઘન્યથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી ઓછી એક પલ્યોપમની છે. અને જ "उक्कोसेणं पलिओवमं,' ઉત્કૃષ્ટથી પૂરા એક પલ્યોપમની તે "संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, સંહરણની અપેક્ષાથી તેમની ભવસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઇક ઓછી એક પૂર્વકોટિની છે. 'हरिवासरम्मयवास अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्ण ?" હે ભગવન્!

स्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जम्मणं पडुच्च' जन्म प्रतीत्य जन्माश्रणे नेत्यर्थः 'जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणाइं' जघन्येन देशोने द्वे पल्योपमे पल्योपमस्यासंख्येभागोने 'उक्कोसेण दो पलिओवमाइ' उत्कर्षेण परिपूर्णे द्वे पल्योपमे स्थितिरासां भवतीति । 'संहरणं पडुच्च' संहरणं प्रतीत्य–संहरण माश्रित्य 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिर्हरिवर्षरम्यकवर्षकाकर्मभूमिकस्त्रीणां स्थितिर्भवतीति । "देवकुरु उत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते' देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त !केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्नः भगवानाह–'गोयमा इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम 'जम्मणं पडुच्च' जन्म प्रतीत्य–जन्माश्रित्य–'जहन्नेणं देसूणाइं

गवास अकम्मभूमिग मणुस्सित्थीणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! हरिवर्ष और रम्यक वर्ष रूप अकर्म भूमि की मनुष्य स्त्रियों की भवस्थिति कितने काल की है ? "गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणाइं" हे गौतम ! जन्म की अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यकवर्ष की मनुष्य स्त्रियों की स्थिति कुछ कम पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन दो पल्योपम की है और 'उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं" उत्कृष्ट से परिपूर्ण दो पल्योपम की है "संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" संहरण की अपेक्षा जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से कुछ कम एक पूर्वकोटि की इनकी स्थिति है "देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! देवकुरु उत्तरकुरु रूप अकर्म भूमि की मनुष्य स्त्रियों की स्थिति कितने काल की है ? "गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं

હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષરૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની ભવસ્થિતિ કેટલા કાળની છે. 'गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणाइं,' હે ગૌતમ ! જન્મની અપેક્ષાએ હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કંઈક ઓછી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગથી ઓછી બે પલ્યોપમની છે, અને "उक्कोसेणं दो पलिओवमाइ,' ઉત્કૃષ્ટથી સંપૂર્ણ બે પલ્યોપમની છે "संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" સંહરણની અપેક્ષાએ જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્તનો અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછી એક પૂર્વકોટિની તેઓની સ્થિતિ છે. 'देवकुरु उत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पणत्ता,' હે ભગવન્ દેવકુરૂ ઉત્તરકુરૂ, રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે "गोयमा ! जम्मणं पडुच्च, जहण्णेणं देसूणाइं

तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणाइं' जघन्येन देशोनानि—देशतो हीनानि त्रीणि पल्योपमानि पल्योपमस्य असंख्येयभागेनोनानि स्थितिर्भवतीति । **'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं'** उत्कर्षेण परिपूर्णानि त्रीणि पल्योपमानि स्थितिरासां भवतीति । **'संहरणं पडुच्च'** संहरण प्रतीत्य—संहरणमाश्रित्य **'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी'** जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः स्थिति भवतीति । **'अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते'** अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! **'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** कियन्तं कालं स्थिति' प्रज्ञप्ता—कथितेति प्रश्नः, भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जम्मणं पडुच्च'** जन्म प्रतीत्य—जन्माश्रित्य **'जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं'** जघन्येन देशोनं पल्योपमस्यासंख्येयभागः यावत् स च देशोन—पल्योपमासंख्येय भागः **'पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगं'** पल्योपमस्यासंख्यातभागेन ऊनो हीन इति । अत्रोनता हेतु' पल्योपमस्यासंख्येयो भागोऽतीव स्तोको विज्ञेय इति ।

तिन्नि पलिओवमाइ पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणाइं "हे गौतम ! जन्म की अपेक्षा से देवकुरु उत्तरकुरु की मनुष्य स्त्रियों की स्थिति जघन्य से पल्योपम की है और "**उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं**" उत्कृष्ट से परिपूर्ण तीन पल्योपम की है । '**संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी** "संहरण की अपेक्षा से इनकी स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से कुछ कम एक पूर्वकोटि की है ।

"**अंतरदीवग अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते**" हे भदन्त ! अन्तर द्वीप रूप अकर्म भूमि की स्त्रियो की स्थिति कितने काल की है ? "**गोयमा जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं**" हे गौतम जन्म की अपेक्षा लेकर तो जघन्य से कुछ कम पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण है, और **'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असं-**

तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणाइं" હે ગૌતમ ! જન્મની અપેક્ષાથી દેવકુરૂની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી કંઈક ઓછી ત્રણ પલ્યોપમની છે. અને "**उक्कोसेणं तिन्न पलिओवमाइं**" ઉત્કૃષ્ટથી સંપૂર્ણ ત્રણ પલ્યોપમની છે. "**संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी**" સંહરણની અપેક્ષાથી તેઓની સ્થિતિ એક અંતમુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછી એક પૂર્વકોટિની છે. "**अंतरदीवग अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते !** હે ભગવન્ અંતરદ્વીપરૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે? "**गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेण देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं**" હે ગૌતમ ! જન્મની અપેક્ષા લઈને જઘન્યથી કંઈક કમ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણની છે અને '**उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जभागं**' ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણની છે. તથા '**संहरण पडुच्च** સંહરણની અપેક્ષાએ '**जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा-**

'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं' उत्कर्षेण परिपूर्णं पल्योपमस्यासंख्येयभागं यावत् पल्योपमस्य परिपूर्णाऽसंख्येयभागप्रमिता स्थिति र्भवतीति । 'संहरणं पडुच्च' संहरणं प्रतीत्य संहरणापेक्षया तु 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' जघन्येन अन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः स्थितिर्भवतीति ॥सू०२॥

कर्माकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां स्थितिमानं प्रदर्श्य देवस्त्रीणां स्थितिमानं प्रदर्शयितुं प्रश्नयन्नाह--'देवित्थीणं भंते' इत्यादि ,

मूलम्—'देवित्थीणं भंते ? केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं ! भवणवासिदेवित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं । एवं असुरकुमारभवणवासिदेवित्थीए नागकुमारभवणवासिदेवित्थीए, जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं, एवं सेसाण वि जाव थणियकुमाराणं । वाणमंतरीणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं । जोइसियदेवित्थीणं भंते ? केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अट्ठभागं-उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं । चंदविमाणजोइसियदेवित्थीए जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं तं चेव । सूरविमाणजोइसियदेवित्थीए जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिमब्भहियं । गहविमाणजोइसियदेवित्थीणं जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं । 'णक्खत्तविमाणजोइसियदेवित्थीणं जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउभागपलि-

---

खेज्जइभाग" उत्कृष्ट से पल्योपम के असख्यातवें भाग प्रमाण है तथा "संहरणं पडुच्च" संहरण की अपेक्षा लेकर "जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" जघन्यसे इनकी स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त की है और उत्कृष्टसे कुछ कम एक पूर्वकोटिकी है । सूत्र ॥२॥

पुव्वकोडी" જઘન્યથી તેઓની સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછી એકપૂર્વ કોટિની છે. ।

ओवमं साइरेगं। नागविमाण जोइसियदेवित्थीए जहन्नेणं अट्ठभाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं। वेमाणियदेवित्थीए जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं। सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं। ईसाणदेवित्थीणं जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं णवपलिओवमाइं॥ सू० ३॥

छाया—देवस्त्रीणां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षेण पञ्चपञ्चाशत् पल्योपमानि। भवनवासिदेवस्त्रीणां भदन्त कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेणार्द्ध-पञ्चमानि पल्योपमानि। एवमसुरकुमारभवनवासिदेवस्त्रियाः नागकुमारभवनवासि-देवस्त्रिया जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेण देशोनं पल्योपमम्' एवं शेषाणामपि यावत्स्तनितकुमाराणाम्। वानव्यन्तरीणां जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षेणार्द्धं पल्योपमम्। ज्योतिष्कदेवस्त्रीणां भदन्त? कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन पल्योपमाष्टभागम् उत्कर्षेणार्द्धपल्योपमं पञ्चाशता वर्षसहस्रैरभ्यधिकम्। चन्द्रविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियाः जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम् उत्कर्षेण तदेव। सूर्यविमानज्योतिष्कदेवस्त्रिया जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम् उत्कर्षेणार्द्धपल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरभ्यधिकम्। ग्रहविमानज्योतिष्कदेवस्त्रीणां जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम्, उत्कर्षेणार्द्धपल्योपमम्। नक्षत्रविमानज्योतिष्कदेवस्त्रीणां जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षेण चतुर्भागपल्योपमं सातिरेकम्। ताराविमानज्योतिष्कदेवस्त्रिया जघन्येनाष्टभागपल्योपमम् उत्कर्षेण सातिरेकमष्टभागपल्योपमम्। वैमानिकदेवस्त्रिया जघन्येन पल्योपममुत्कर्षेण पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि। सौधर्मकल्पवैमानिकदेवस्त्रीणां भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येन पल्योपमम् उत्कर्षेण सप्त पल्योपमानि। ईशानदेवस्त्रीणां जघन्येन सातिरेकं पल्योपमम् उत्कर्षेण नव पल्योपमानि॥सू० ३॥

टीका—'देवित्थी णं भंते' देवस्त्रिया भदन्त! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं

अब सूत्रकार [illegible] देवस्त्रियोंके स्थिति-[illegible] को दिखाने के लिये कहते हैं "देवित्थीणं भंते! इत्यादि। सूत्र॥ ३॥

टीकार्थ – गौतमने प्रभुसे ऐसा पूछा है - 'देवित्थी णं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"

[illegible] હવે સૂત્રકાર દેવસ્ત્રિયોના સ્થિતિમાન [illegible] — 'દેવિત્થી ણં ભંતે! ઇત્યાદિ"

ટીકાર્થ—ગૌતમ [illegible] પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે 'દેવિત્થી ણં ભંતે! કેવઇયં કાલં

कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता-कथितेति सामान्यतो देवस्त्रीणां स्थितिविषये प्रश्नः, भगवानाह-**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जहन्नेणं दसवाससहस्साइं'** जघन्येन दशवर्षसहस्राणि देवस्त्रीणां स्थितिकालो भवतीति, तानि च भवनपतिस्त्रीः व्यन्तरस्त्रीरधिकृत्य ज्ञातव्यानीति । **'उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं'** उत्कर्षेण पञ्च पञ्चाशत् पल्योपमानि स्थितिर्भवति देवस्त्रीणामिति, एतानि चेशानदेवीरधिकृत्य ज्ञातव्यानीति । तदेवं सामान्यतो देवस्त्रीणां स्थितिं प्रदर्श्य विशेषतो देवस्त्रीणां स्थितिं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह-**'भवणवासिदेवित्थीणं'** इत्यादि, **'भवणवासिदेवित्थीणं भंते'** भवनवासिदेवस्त्रीणां भदन्त ! **'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता'** कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्तेति प्रश्नः, भगवानाह— **'गोयमा'** इत्यादि **'गोयमा'** हे गौतम ! **जहन्नेणं दसवाससहस्साइं'** जघन्येन दशवर्षसहस्राणि स्थितिर्भवति भवनवासिदेवस्त्रीणाम्, **'उक्को-**

हे भदन्त ! देवस्त्रियो की स्थिति कितने काल की कही गई है ? ऐसा यह प्रश्न सामान्य से देवस्त्रियों की स्थिति के विषय में है-उत्तर में प्रभु कहते हैं-**"गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं"** हे गौतम ! जघन्य से इन की स्थिति तो दश हजार वर्ष की है और उत्कृष्ट से पचपन पल्योपम की है । जघन्य से दस हजार वर्ष की स्थिति का कथन भवनपति और व्यन्तर देवस्त्रियों की अपेक्षा से कहा गया जानना चाहिये । तथा पचपन पल्योपम की उत्कृष्ट स्थिति का कथन ईशान देवस्त्रियों की अपेक्षा से कहा गया जानना चाहिये । इस प्रकार सामान्य से देवस्त्रियों की स्थिति का काल प्रकट करके अब सूत्रकार विशेष रूप से भिन्न भिन्न देवस्त्रियो की स्थितिकाल प्रकट करते हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा हैं **"भवणवासिदेवित्थीणं भंते केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"** हे भदन्त ! भवनवासी देवस्त्रियों की स्थिति का काल कितना कहा गया है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-**"गोयमा ! जहन्नेणं**

ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ દેવાંગનાની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે ? આ પ્રમાણે નો આ પ્રશ્ન સામાન્ય પણાથી દેવાંગનાની સ્થિતિના સંબંધમાં પૂછેલ છે આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—**"गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं"** હે ગૌતમ ! જઘન્યથી તેઓની સ્થિતિ દશ હજાર વર્ષની કહેવામાં આવી છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમની કહેલ છે. જઘન્યથી દશ હજાર વર્ષની સ્થિતિનું કથન ભવનપતિ અને વ્યન્તરદેવ સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. તેમ સમજવું તથા ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિનું કથન ઈશાન દેવસ્ત્રિયોની અપક્ષાથી કહેવામાં આવ્યું છે તેમ સમજવું. આરીતે સામાન્ય પણાથી દેવાંગનાનો સ્થિતિકાળ બતાવીને હવે સૂત્રકાર વિશેષ પણાથી જૂદી જૂદી દેવસ્ત્રિયોના સ્થિતિ કાલને બતાવે છે. આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—**'भवणवासिदेवित्थीणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** હે ભગવન્ ભવનવાસીદેવીયોની સ્થિતિકાળ કેટલો કહેવામાં આવેલ છે ? આ

सेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं' उत्कर्षेण अर्द्धपञ्चमानि–सार्द्धानि चत्वारि पल्योपमानि स्थिति भवति भवनवासिदेवस्त्रीणाम् इदञ्च भवनवासिविशेषासुरकुमारस्त्रीरधिकृत्य ज्ञातव्यमिति 'एवं असुरकुमारभवनवासिदेवित्थीए' एवम् सामान्यतो भवनवासिदेवस्त्रीवदेव असुरकुमार भवनवासिदेवस्त्रियाअपि जघन्येन दशवर्षसहस्राणि स्थिति उत्कर्षतः सार्द्धचत्वारि पल्योपमानि स्थिति भवतीति भावः। 'नागकुमारभवणवासिदेवित्थीए जहन्नेणं दसवाससहस्साइं' नागकुमारभवनवासिदेवस्त्रियाः स्थितिर्जघन्येन दशवर्षसहस्राणि भवति, 'उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं' उत्कर्षेण देशोनं देशतो हीन पल्योपमप्रमाणा स्थितिर्भवतीति। 'एवं सेसाण वि जाव थणियकुमाराणं' एवं शेषाणामपि यावत् स्तनितकुमाराणाम्, नागकुमारभवनवासि देवस्त्रीवदेव शेषाणाम्, सुवर्णविद्यु–दग्नि–द्वीपो–दधि-दिग्-वायु-स्तनितकुमारभवनवासिदेवस्त्रीणामपि जघन्येन दशवर्षसहस्राणि स्थितिर्भवति, उत्कर्षतो देशोनपल्योपमप्रमाणा स्थिति भवतीति भावः॥ "वाणमंतरीणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं' वानव्यन्तरीणां–वानव्यन्तरदेव

दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं" हे गौतम! भवनवासी देव स्त्रियोंकी स्थितिका काल जघन्यसे तो दस हजार वर्षका कहा गया है और उत्कृष्टसे साढा चार पल्योपम का कहा गया है। यह स्थितिकाल भवनपति के भेद जो असुर कुमार है सो उनकी स्त्रियों को लेकर कहा गया है। "नागकुमार भवणवासिदेवित्थीणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं" नागकुमार भवनवासी देवों की स्त्रियों की भी स्थिति जघन्य से दस हजार वर्ष की हैं और उत्कृष्ट से देशोन कुछ कम एक पल्योपम की है "एवं सेसाण वि जाव थणियकुमाराणं" इसी प्रकार से सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिक्कुमार वायुकुमार और स्तनितकुमार, इन भवनवासी देवों के स्त्रियों की स्थिति जघन्य से दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट से कुछ कम

પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं" હે ગૌતમ! ભવનવાસી દેવસ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી તો દશ હજાર વર્ષની કહેલ છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી સાડાચાર પલ્યોપમની કહી છે. આ સ્થિતિકાળ ભવનપતિના ભેદમાં જે અસુરકુમાર ભવનપતિ છે, તેઓની સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. "नागकुमारभवणवासिदेवित्थीणं जहन्नेणं दसवाससस्साइं उक्कोसेण देसूणं पलिओवमाइं" નાગકુમાર ભવનવાસી દેવોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિપણ જઘન્યથી દશહજાર વર્ષની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન—કંઈક ઓછી એક પલ્યોપમની છે ""एवं सेसाण वि जाव थणियकुमाराणं" એજ પ્રમાણે સુવર્ણકુમાર, વિદ્યુત્કુમાર, અગ્નિકુમાર, દ્વીપકુમાર, ઉદધિકુમાર, દિશાકુમાર, વાયુકુમાર અને સ્તનિતકુમાર આટલા ભવનવાસી દેવોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી દસ હજાર વર્ષની અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછી એક પલ્યોપમની છે.

स्त्रीणां जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि स्थिति र्भवति 'उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं' उत्कर्षेणार्द्ध पल्योपमप्रमाणा स्थिति र्भवति सामन्यव्यन्तरदेवस्त्रीवदेव विशेषव्यन्तरविशेषपिशाचादिदेव स्त्रीणामपि जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमप्रमाणा स्थितिः वेदितव्येति । 'जोइसियदेवित्थीणं भंते !' ज्योतिष्कदेवस्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता—कथितेति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! जहन्नेणं पलिओवमअट्ठभागं' जघन्येन पल्योपममष्टभागम् एकस्य पल्योपमस्याष्टम—भागपरिमिता स्थितिर्भवतीति भावः, 'उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं' उत्कर्षेणार्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम्, स्थिति र्भवति ज्योतिष्कदेव स्त्रीणामिति ॥ तदेवं सामान्यतः ज्योतिष्कदेवस्त्रीणां स्थितिं प्रदर्श्य विशेषतो ज्योतिष्कदेव

एक पल्योपम की है "वाणमंतरीणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं" वानव्यन्तर देवों की जो देवियां है उनकी स्थिति जघन्य से दस हजार वर्ष की है और उत्कृष्ट से आधे पल्योपम की हैं जिस प्रकार से यह सामान्य रूप से व्यन्तर देवियों की स्थिति कही कई है उसी प्रकार से व्यन्तर देवों के भेद रूप पिशाच देवो के देवियो की भी यही स्थिति है ऐसा जानना चाहिये । अर्थात् पिशाच आदि व्यन्तर देवों के देवियों को सब की स्थिति जघन्य से दस हजार वर्ष को है और उत्कृष्ट से आधे पल्योपम की है । "जोइसियदेवित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! ज्योतिषिक देवो के देवियों की स्थिति कितने काल की कही गई है ? "गोयमा ? जहन्नेणं पलिओवम-अट्ठभागं उक्कोसेणं अद्ध पलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं" हे गौतम ! ज्योतिष्क देवों के देवियों की जघन्य स्थिति एक पल्य के आठवें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट स्थिति आधे पल्योपम की है इसमें—उत्कृष्ट स्थिति में—पचास हजार वर्ष और अधिक हैं । इस

"वाणमंतरीण जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं" વાનવ્યંતર-દેવોની જે દેવિયો છે, તેમની સ્થિતિ જઘન્યથી દસહજાર વર્ષની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી અધોપલ્યોમની છે. જે પ્રમાણે આ સામાન્ય પણાથી વ્યંતરદેવિયોની સ્થિતિ કહી છે. એજ પ્રમાણે વ્યંતરદેવોના ભેદરૂપ પિશાચદેવોનો દેવિયોની સ્થિતિપણ એજ પ્રમાણેની છે તેમ સમજવું અર્થાત્—પિશાચ વિગેરે વ્યતર દેવોની બધીજ દેવિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી દસ હજાર વર્ષની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી અધો પલ્યોપમની છે. "जोइसियदेवित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ ! જ્યોતિષ્ક દેવોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામાં આવી છે ? "गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमअट्ठभागं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं" હે ગૌતમ ! જ્યોતિષ્ક દેવોની દેવીયોની જઘન્ય સ્થિતિ એક પલ્યોપમના આઠમાભાગ પ્રમાણની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ અધો પલ્યોપમની છે. આમાં—ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિમાં—બીજા પચાસ હજાર વર્ષ વધારે છે. આ રીતે પચાસ હજાર વર્ષ

स्त्रीणां स्थितिं दर्शयितुमाह-'चंदविमाण' इत्यादि, 'चंदविमाणजोइसियदेवित्थीए' चन्द्र-विमानज्योतिष्कदेवस्त्रियाः 'जहन्नेणं चउभागपलिओवमं' जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम्, पल्योपमस्य चतुर्थभागप्रमाणा स्थितिरित्यर्थः, 'उक्कोसेणं तं चेव' उत्कर्षेण तदेव चन्द्रविमान-ज्योतिष्कदेवस्त्रीणामुत्कर्षेण स्थितिः अर्द्धपल्योपमं पञ्चाशता वर्षसहस्रैरभ्यधिकमिति ॥ 'सूर-विमाणजोइसियदेवित्थीए' सूर्यविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियाः 'जहन्नेणं चउभागपलिओ-वमं' जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम् सूर्यदेवस्त्रीणां जघन्या स्थितिः पल्योपमस्य चतुर्भागपरि-मिता भवति. तथा 'उक्कोसेणं अद्धपलिओवम पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं' उत्कर्षेणार्द्ध पल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरभ्यधिकम् पञ्चशताधिकार्द्धपल्योपमप्रमाणोत्कृष्टा स्थिति र्भवति सूर्य-विमानज्योतिष्कदेवीनामिति । 'गहविमानजोइसियदेवित्थीणं' ग्रहविमानज्योतिष्क-देवस्त्रीणाम् जहन्नेणं चउभागपलिओवमं' जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम् 'उक्कोसेणं

प्रकार पचास हजार वर्ष अधिक आधे पल्योपम की उत्कृष्ट स्थिति ज्योतिष्क देवो की देवियो की है ऐसा जानना चाहिये। इस प्रकार का यह कथन सामान्य रूपसे ज्योतिष्क देवोंकी देवियों के सम्बन्ध में कहा गया है। अब जो ज्योतिष्क देवों के भेद चन्द्र आदि है उनकी देवियों की क्या क्या स्थिति है-यह प्रकट किया जाता है। "चंदविमाणजोइसियदेवित्थीए" चन्द्र विमान ज्योतिष्क देव स्त्रियों की "जहन्नेणं चउभागपलिओवमं" स्थिति जघन्य से एक पल्योपम का चौथा भाग और "उक्कोसेणं तं चेव" उत्कृष्ट से पचास हजार वर्ष अधिक आधे पल्योपम की है "सूरविमानजोइसियदेवित्थीए जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिमब्भहियं" सूर्यविमान ज्योतिष्क देवस्त्रियों की स्थिति जघन्यसे पल्योपमके चौथे भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से पांचसौ वर्ष अधिक आधे पल्योपमकी है। "गहविमाणजोइ सियदेवित्थीणं जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसे

અધિક અધાપલ્યોપમની ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ જ્યોતિષ્ક દેવોની સ્ત્રિયોની છે. તેમ સમજવું. આ રીતે આ ઉપરોક્ત કથન સામાન્યપણાથી જ્યોતિષ્ક દેવોની દેવિયોના સંબંધમાં કહેવામાં આવેલ છે હવે જ્યોતિષ્ક દેવોના ભેદોમાં ચંદ્ર વિગેરે છે, તેમની દેવિયોની કઇ કઇ સ્થિતિ છે. તે બતાવવા સૂત્રકાર કહે છે

"चंदविमाणजोइसियदेवित्थीए" ચંદ્રવિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ "जहण्णेणं चउभागपलिओवमं" જઘન્યથી એક પલ્યોપમના ચોથા ભાગની અને "उक्कोसेणं तं चेव" ઉત્કૃષ્ટથી પચાસહજાર વર્ષ અધિક અધાપલ્યોભની છે "सूरविमाण जोइसिय देवित्थीए जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिमब्भहियं" સૂર્ય વિમાન જ્યોતિષ્ક સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી પલ્યોપમના ચોથા ભાગ પ્રમાણની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પાંચસો વર્ષ વધારે અધાપલ્યોપમની છે. 'गहविमाणजोइसियदेवित्थीणं

अद्धपलिओवमं' उत्कर्षेणार्द्धपल्योपमम्, भौमादि ग्रह ज्योतिष्क देवीनां जघन्या स्थितिः पल्योपमस्य चतुर्थभागप्रमाणा भवति तथोत्कृष्टा स्थितिरर्द्धपल्योपमप्रमाणा भवतीति भावः। 'णक्खत्त-विमाणजोइसियदेवित्थीणं' नक्षत्रविमानज्योतिष्कदेवस्त्रीणाम् 'जहन्नेणं चउभागपलिओवमं' जघन्येन चतुर्भागपल्योपमम् पल्योपमस्य चतुर्थभागप्रमिता स्थितिरित्यर्थः। 'उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं साइरेगं' उत्कर्षेण चतुर्भागपल्योपमं सातिरेकम् सातिरेकपल्योपम-चतुर्थभागप्रमिता स्थितिरित्यर्थः। 'ताराविमाणजोइसियदेवित्थीए' ताराविमानज्योतिष्कदेवस्त्रियाः 'जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं' अष्टभागपल्योपमं पल्योपमस्याष्टमभाग प्रमिता स्थितिरित्यर्थः 'उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवमं' उत्कर्षेण सातिरेकाष्टभाग पल्योपमम्, सातिरेकपल्योपमाष्टमभाग प्रमाणोत्कृष्टा स्थितिस्ताराविमानदेवीनामिति।

णं अद्धपलिओवमं" ग्रहविमानज्योतिष्क देवस्त्रियों की स्थिति जघन्य से पल्योपम के चतुर्थ भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से आधे पल्योपम की है मंगलआदि ग्रह ज्योतिष्क देवस्त्रियों की स्थिति जघन्य से पल्योपम के चतुर्थ भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से आधे पल्योपम प्रमाण है। "णक्खत्तविमाणजोइसियदेवित्थीणं" नक्षत्र विमान ज्योतिष्क देवस्त्रियों की स्थिति "जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं साइरेगं" जघन्य से एक पल्य के चतुर्थ भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से कुछ अधिक पल्योपमके चतुर्थभाग प्रमाण है, "ताराविमाणजोइसियदेवित्थीए जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं" ताराविमानज्योतिष्क देवस्त्रियों की स्थिति जघन्य से पल्योपम के आठवें भाग प्रमाण है और उत्कृष्टसे कुछ अधिक पल्योपमके आठवे भाग प्रमाण है। इस प्रकार सामान्य और विशेष रूपसे ज्योतिष्क देवियोंकी स्थिति प्रकट कर अब सूत्रकार सामान्य रूपसे पहले

जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं" ગ્રહવિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી પલ્યોપમના ચોથા ભાગ પ્રમાણની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી અર્ધાપલ્યોપમની છે. જ્યોતિષ્ક દેવોમાં મંગળ વિગેરે ગ્રહોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી પલ્યોપમના ચોથાભાગ પ્રમાણની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી અર્ધાપલ્યોપમ પ્રમાણની છે "णक्खत्तविमाण जोइसियदेवत्थीणं"નક્ષત્ર વિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ "जहण्णेणं चउभाग-पलिओवमं उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं साइरेगं" જઘન્ય એક પલ્યના ચોથાભાગ પ્રમાણ છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઇક વધારે પલ્યોપમના ચોથાભાગ પ્રમાણની છે. "ताराविमाणजोइसियदेवित्थीए जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं" તારા વિમાન જ્યોતિષ્ક દેવની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી પલ્યોપમના આઠમાભાગ પ્રમાણની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઇક વધારે પલ્યોપમના આઠમા ભાગ પ્રમાણની છે.

ज्योतिष्कदेवस्त्रीणां सामान्यतो विशेपतश्च स्थितिं प्रदर्श्य सामान्यतो वैमानिकदेवस्त्रीणां स्थितिं दर्शयितुमाह–'वेमाणियदेवित्थीए' वैमानिकदेवस्त्रियाः 'जहन्नेणं पलिओवमं' जघन्येन पल्योपमं स्थितिः, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं उत्कर्षेण पञ्चपञ्चाशत पल्योपमानि सामान्यतो वैमानिकदेवीनां जघन्यतः पल्योपमप्रमाणोत्कृष्टतः पञ्चपञ्चाशत् पल्योप प्रमाणा स्थिति र्भवतीति भावः। 'सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थीणं भंते !' सौधर्म कल्प वैमानिकदेवस्त्रीणां भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता–कथितेति प्रश्नः, 'भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं पलिओवमं' जघन्येन पल्योपमम् 'उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं' उत्कर्षेण सप्तपल्योपमानि जघन्योत्कर्षाभ्यामेकपल्योपम सप्तपल्योपमप्रमाणा सौधर्मकल्पदेवीनां स्थिति र्भवतीति। अत्रेयं स्थितिः परिगृहीतदेव्यपेक्षया प्रोक्ता। अपरिगृहीतदेवीनां तु स्थिति र्जघन्येन पल्योपमप्रमाणा, उत्कर्षेण पञ्चाशत्पल्योपम–प्रमाणेति। 'ईसाणदेवित्थीणं जहन्नेणं साइरेगं पलिओपमं' ईशान कल्पवैमानिकदेवस्त्रीणां जघन्येन सातिरेकपल्योपमम्। 'उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं' उत्कर्षेण नव पल्योपमानि स्थिति

वैमानिक देवियोंकी स्थिति प्रकट करते है। "वेमाणियदेवित्थीए जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं" वैमानि देवियोंकी स्थिति जघन्यसे तो एक पल्योपमकी है और उत्कृष्टसे पचपन पल्योपमकी है। "सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! सौधर्मकल्प वैमानिक स्त्रियो की स्थिति कितने काल की होती है "गोयमा जहन्नेणं पलिओवम उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइ" हे गौतम ! सौधर्म कल्पवैमानिक स्त्रियों की स्थिति" जघन्य से तो एक पल्योपम की होती है और उत्कृष्ट से सात पल्योपम की होती "इसान देविस्थिणं जहन्नेणं साईरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं' ईशान कल्प वैमानिक देवों की स्त्रियो की स्थिति जघन्य से तो

આ રીતે સામાન્ય અને વિશેષ પણાથી જ્યોતિષ્કદેવિયોની સ્થિતિ પ્રગટ કરીને હવે સૂત્રકાર સામાન્ય પણાથી વૈમાનિક દેવિયોની સ્થિતિ પ્રગટ કરે છે—"वेमाणियदेविस्थीए जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइ" વૈમાનિક દેવિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી તો એક પલ્યોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમની છે "सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थीण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ સૌધર્મકલ્પના વૈમાનિક દેવોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ કેટલાકાળની હોય છે? "गोयमा जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेण सत्त पलिओवमाइं" હે ગૌતમ સૌધર્મકલ્પના વૈમાનિક દેવોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી તો એક પલ્યોપમની હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી સાત પલ્યોપમમા હોય છે. "ईसाणदेवित्थीणं जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं" ઈશાન કલ્પના વૈમાનિક દેવોની સ્ત્રિયોની સ્થિતિ જઘન્યથી તો કંઈક

भवतीति। अत्रेयं स्थिति 'परिगृहीतदेवीनां ज्ञातव्या, अपरिगृहीतदेवीनां तु जघन्यतः सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत् पल्योपमानीति ॥सू० ३॥

स्त्रीणां स्थितिं प्रदर्श्य सम्प्रति स्त्री, नैरन्तर्येण स्त्री भावमपरित्यजन्ती कियन्तं कालमवतिष्ठते इति जिज्ञासायां सूत्रकारस्तत्कालापेक्षया ये पञ्चादेशाः प्रवर्तन्ते तान् दर्शयितुमाह—'इत्थी णं भंते' इत्यादि,

मूलम्—'इत्थी णं भंते! इत्थित्तिकालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! एक्केणं आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं। एक्केणं आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं २। एक्केणं आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउद्दसपलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइं ३। एक्केणं आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ४। एक्केणं आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियं ५। तिरिक्खजोणित्थी णं भंते! तिरिक्खजोणित्थीत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं। जलयरीए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहुत्तं। चउप्पय थलयरतिरिक्खजोणित्थीए जहा ओहि

कुछ अधिक एक पल्योपम कीं होती है और उत्कृष्ट से नौ पल्योपम की होती हैं। यह स्थिति को परिमाण परिगृहीतदेवियों का कहा जारहा है। नहीं तो जो अपरिगृहीत देवियां हैं उनकी स्थिति जघन्य से कुछ अधिक एक पल्योपम की और उत्कृष्ट से पचपन पल्योपम की कही गई है ॥सूत्र ३॥

વધારે એક પલ્યોપમની હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી નવ પલ્યોપમની હોય છે. આ સ્થિતિનું પરિમાણુ-પ્રમાણુ-માપ પરિગ્રહીત-દેવિયો છે, તેઓના સંબંધમાં કહેલ છે. નહીં તો જેઓ અપરિગૃહીત-દેવિયો છે, તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી કંઈક વધારે એક પલ્યોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમની કહેલ છે. ॥સૂ૦ ૩॥

याए तिरिक्खजोणित्थीए। उरपरिसप्पिभुय परिसप्पित्थीणं जहा जलयरोणं खहयरतिरिक्खजोणित्थीणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियं। मणुस्सित्थीणं भंते! मणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेण एक्कं समयं उक्कासेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं कम्मभूमियावि, भरहेरवयावि, णवरं खेत्तं पडुच्च जहन्नेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूण पुव्वकाडी अब्भहियाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी। पुव्वविदेह अवरविदेहित्थीणं खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी पुहुत्तं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। अकम्म भूमिग मणुस्सित्थीणं भंते! अकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं। 'हेमवयएरण्णवय अकम्मभूकिग मणुस्सित्थीणं भंते! हेमवयएरण्णवय अकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगं उक्कोसेणं पलिओवमं। संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमं देसूणाए

पुव्वकोडीए अब्भहियं । हरिवासरम्मयवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! हरिवासरम्मयवासअकम्मभूमिगणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणगं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं । सहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणपुव्वकोडीमब्भहियाइं । देवकुरूत्तरकुरूणं, जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेणं ऊणगाइं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं । अंतरदीवगाकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! अंतरदीवगाकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं । संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं देवित्थीणं भंते ! देवित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जच्चेव भवट्ठिई सच्चेव संचिट्ठणा भाणियव्वा ॥सू० ४ ॥

छाया—स्त्री खलु भदन्त ! स्त्रीति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! एकेनाऽऽदेशेन जघन्येनैक समयमुत्कर्षेण दशोत्तर पल्योपमशतं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकम् १। एकेनादेशेन जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेणाष्टादशपल्योपमानि पूर्वकोटि-पृथक्त्वाभ्यधिकानि २। एकेनादेशेन जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण चतुर्दश पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधितानि ३। एकेनाऽऽदेशान जघन्यैकं समयम् उत्कर्षेण पल्योपमशत पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकम् ४। एकेनाऽऽदेशेन जघन्येनैकं समयम्

उत्कर्षेण पल्योपमपृथक्त्वं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकम् ५। तिर्यग्योनिकस्त्रीणां भदन्त ? तिर्यग्योनिस्त्रीति कालत कियच्चिर भवति ? गौतम ? जघन्येनान्त-र्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण त्रीनि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि । जलचर्याः जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वम् । चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रिया यथा औधिक्या स्तिर्यग्योनिकःस्त्रिया । उरःपरिसर्पभुजपरिसर्पस्त्रीणां यथा जलचरीणाम् । खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकम् । मनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! मनुष्यस्त्रीति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्यो-पमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येन एकं समयमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । एव कर्मभूमिका अपि भरतैरवतयोऽपि, नवर क्षेत्रं प्रतीत्य जघ-न्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि देशोनपूर्वकोट्यभ्यधिकानि, धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येन एकं समयम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । पूर्वविदेहापरविदेह स्त्रीणां क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वम् । धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटि. ॥ अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीति कालतः कियच्चिरं भवति गौतम । जन्म ! प्रतीत्य जघन्येन देशोनं पल्योपम ल्योपस्यासंख्येयभागेनोनम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधिकानि । हैमवतैरण्यवताऽकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! हैम-वतैरण्यवताऽकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोन पल्योपमं पल्योपमस्याऽसंख्येयभागेनोनम्, उत्कर्षेण पल्योपमम् । संहरण प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पल्योपमं देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधि-कम् । हरिवर्षरम्यकवर्षाऽकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! हरिवर्षरम्यकवर्षाऽकर्म-भूमिकमनुष्यस्त्रीति कालतः कियच्चिर भवति ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोने द्वे पल्योपमे पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोने उत्कर्षेण द्वे पल्योप मम् । सहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण द्वे पल्योपमे देशोनपूर्वकोटयभ्यधिके । देवकुरूत्तरकुरूणां, जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोनानि त्रीणि पल्योपमानि पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनानि । उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि । सहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि देशोनया पूर्वकोटया अभ्यधिकानि । अन्तरद्विपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! अन्तरद्वीपकाऽकर्मभूमिकस्त्रीति कालतः कियच्चिर भवति ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोनं पल्योपमस्यासंख्येयभाग पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनम्

उत्कर्षेणं पल्योपमस्यासंख्येयभागम् । संहरण प्रतीत्य जघन्येनाऽन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागम् देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधिकम् देवस्त्रीणां भदन्त! देवस्त्रीति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! यैव भवस्थितिः सैव संस्थितिः भणितव्या ॥सू०४॥

टीका—इत्थी णं भंते !' स्त्री खलु भदन्त ! 'इत्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ' स्त्रीति स्त्री इत्येवं रूपेण कालतः कियच्चिरं भवति, हे भदन्त ! इयं स्त्री स्त्रीरूपेण कियत्कालपर्यन्तं स्त्री भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'एक्केणं आदेसेणं' इत्यादि, अयं भावः-स्त्रियाः स्त्रीरूपेणावस्थाने सति पञ्च आदेशा अपेक्षारूपाः सन्ति, प्रत्यादेशं विभिन्नकालपर्यन्तं स्त्रीरूपेणावस्थानं भवतीति दर्शयिष्यते तत्र प्रथमादेशमधिकृत्य भगवानाह 'एक्केणं आदेसेणं' इत्यादि, एक्केणं आदेसेणं' एकेन आदेशेन एकयाऽपेक्षया 'जहन्नेणं एक्कं समयं' जघन्येनैकं समयं स्त्री भवति 'उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं' उत्कर्षतो दशोत्तरपल्योपमशतं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकम् । तत्र

इस प्रकार से स्त्रियों की स्थिति प्रकट करके अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि स्त्री स्त्रीपर्याय को नहीं छोड़ती हुई लगातार स्त्रीपर्याय में कितने काल पर्यन्त रहती है । ऐसी जिज्ञासा होने पर उसकाल की अपेक्षा से इस कथन में जो पांच आदेश—अपेक्षाएँ हैं—उन्हें पहिले सूत्रकार कहते हैं —" इत्थी णं भंते" इत्यादि ।

टीकार्थ—गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है कि—हे भदन्त ! "इत्थी णं भंते ! इत्थीत्ति कालओ केवच्चिरं होइ" स्त्री स्त्रीपर्याय में कितने काल पर्यन्त रहती है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा एक्केण आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ,, हे गौतम ! स्त्रियों को स्त्रीरूप से होने में पांच आदेश—अपेक्षाएँ —सूत्रकारों ने कहे हैं—उनमें से एक आदेश- अपेक्षा—ऐसा—है- कि यदि स्त्री स्त्रीरूप से लगातार

આ પ્રમાણે સ્ત્રિયોની સ્થિતિ પ્રગટ કરીને હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે—સ્ત્રી, સ્ત્રીપર્યાયને છોડયા વિના લાગઠ સ્ત્રીપર્યાયમાં કેટલાકાળ સુધી રહે છે આ રીતે જીજ્ઞાસા થવાથી તે કાળની અપેક્ષાથી આ કથનમાં જે પાંચ આદેશ—અપેક્ષાઓ છે, તે સૂત્રકાર પહેલા કહે છે' 'इत्थी णं भंते ! इत्थित्ति" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયુ' છે કે—હે ભગવન્ "इत्थी णं इत्थित्ति कालओ केवच्चिरं होई" સ્ત્રી, સ્ત્રીપર્યાયમાં કેટલા કાળ સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે–"गोयमा! एक्केण आदेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं" હે ગૌતમ ! સ્ત્રિયો સ્ત્રી પણામાં રહેવામાં પાંચ આદેશ—અપેક્ષાઓ સૂત્રકારોએ કહેલ છે તેમાથી એક આદેશ-અપેક્ષા એવો છે કે—

स्त्रीणामेकसमयमवस्थानं केन रूपेण भवतीति तत्रोच्यते काचित् स्त्री उपशमश्रेण्यां वेदत्रयोपशमनात् अवेदकत्वमनुभूय तत उपशमश्रेणीतः प्रतिपतन्ती स्त्रीवेदोदयमेकं समयमनुभवति ततो द्वितीयसमये कालं कृत्वा देवेषूत्पद्यते तत्र च तस्याः पुरुषत्वमेव भवति न तु स्त्रीत्वं भवतीत्यतो जघन्यतः स्त्रीत्वं समयमात्रं भवतीति। पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकदशोत्तरपल्योपमशतं यावदवस्थानं स्त्रीरूपेण कथं भवतीति तत्रोच्यते कश्चिज्जीवः मनुष्यस्त्रीषु तिर्यक्स्त्रीषु वा पूर्वकोटयायुष्कासु पञ्चषड् वा भवाननुभूय तदनन्तरमीशानकल्पे पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमप्रमाणोत्कृष्टायुष्कास्वपरिगृहीतदेवीषु मध्ये देवीत्वेनोत्पद्यते ततः स्वायुषः क्षये तस्मात् स्थानात् पुनरपि मनुष्यस्त्रीषु तिर्यक्स्त्रीषु वा पूर्वकोटयायुष्कः पुनरपि समुत्पन्नः ततो भूयो द्वितीयवारम् ईशानदेवलोके-पञ्च पञ्चाशत् पल्योपमप्रमाणोत्कृष्टायुष्कासु अपरिगृहीतदेवीषु मध्ये देवीत्वेनोत्पन्नस्ततः परम-

---

होती रहे तो वह कम से कम एक समय तक और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक एक सौ दस ११० पल्योपम तक होती रहे. इस कथन का तात्पर्य ऐसा है कि कोई स्त्री उपशम श्रेणी पर आरूढ हुई वहाँ उसने वेदत्रय का उपशमन कर देने से अवेदकता का अनुभवन किया, बाद में वह वहाँ से पतित हो गई तो एक समय तक वह स्त्रीवेद में रही और द्वीतीय समय में काल कर वह देवपर्याय से उत्पन्न हो गई वहां उसका स्त्रीत्व रूप न रहकर पुरुषत्व रूप हो जाता है, इस प्रकार से जघन्य से स्त्रीत्व का काल एक समयमात्र कहा गया है। तथा उत्कृष्ट से जो स्त्रीरूप से अवस्थान होने का काल कहा गया है। वह इस प्रकार से कहा गया है, कि कोई जीव पूर्व कोटि की आयुवाली मनुष्य स्त्रियों में अथवा तिर्यग् स्त्रियों में उत्पन्न हो जाय और वह वहाँ पांच अथवा छह बार उत्पन्न होकर ईशानकल्प की अपरिगृहीत देवियों के बीच में कि जिनकी स्थिति उत्कृष्ट पचपन पल्योपम की है देवीरूप से उत्पन्न

જો સ્ત્રી સ્ત્રીપણાથી લાગઠ રહ્યા કરે તો તે કમથી કમ એક સમય સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક એકસો દસ ૧૧૦ પલ્યોપમ સુધી થતી રહે આ કથનનું તાત્પર્ય એવું છે કે—કોઇ સ્ત્રી ઉપશમ શ્રેણી પર આરૂઢ થઈને ત્યાં તેણે વેદત્રયનો ઉપશમ કરી દેવાથી અવેદકપણાનો અનુભવ કર્યો તે પછી તે ત્યાંથી પતિત થઇ જાય તો એક સમય સુધી તે સ્ત્રી વેદમાં રહી અને બીજા સમયમાં કાલ કરીને તે દેવપર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ જાય ત્યાં તેના સ્ત્રીપણા રૂપે ન રહીને પુરુષપણા રૂપે થઇ જાય છે. આ રીતે જઘન્યથી સ્ત્રીપણાનો કાળ એક સમય માત્ર કહેલ છે તથા ઉત્કૃષ્ટથી સ્ત્રીપણાથી રહેવાનો કાળ જે કહેલ છે, તે આ પ્રમાણે છે. કે—કોઇ જીવ પૂર્વકોટિની આયુષ્યવાળી મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં અથવા તિર્યક્સ્ત્રિયોમાં ઉત્પન્ન થઇ જાય અને તે ત્યાં પાંચ અથવા છ, વાર, ઉત્પન્ન થઈને ઈશાન કલ્પની અપરિગૃહીત દેવિયોની મધ્યમાં કે જેઓની સ્થિતિ ઉત્કૃષ્ટથી ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમની છે, દેવીરૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય અને તે પછી આયુષ્યનો ક્ષય થઈ જાય ત્યારે

वश्यवेदान्तरमवगच्छति–एवं रीत्या दशोत्तरं पल्योपमशतं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकमवस्थानं स्त्रियः स्त्रीरूपेण लभ्यते, अत्र कोऽपि शङ्कते–अत्र पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकदशोत्तरपल्योपमशत प्रमाणोत्कृष्टा स्थितिः स्त्रियाः स्त्रीरूपेण किमिति प्रोक्ता वस्तुतोऽधिकाया अपि स्थितेः समुपलभ्यमानत्वात्, तथाहि–यदि स्त्री देवकुरूत्तरकुर्वादिषु पल्योपमत्रयस्थितिकासु स्त्रीषु मध्ये जन्म गृह्णाति तदा ततोऽधिकाऽपि स्त्रीवेदस्यावस्थिति र्भवितुमर्हति ? अयुक्तमेतत् कथनम्, अभिप्रायापरिज्ञानात्, तथाहि–न तावत् देवीभ्यश्च्युता सती असङ्ख्येयवर्षायुष्कासु स्त्रीषु मध्ये स्त्री भूत्वा समुत्पद्यते,

हो जावे, फिर द्वितीय बार भी वह ईशान देवलोक में पचपन पल्योपम प्रमाण आयुवाली अपरिगृहीत देवियों में देवीरूप से उत्पन्न हो जावे, वहां से आयुक्षय के बाद जब यह च्यवता है तो फिर वह अवश्य ही वेदान्तर पुरुषादि कोई वेद को प्राप्त कर लेता है । इस प्रकार से एक सौ दस ११० पल्योपम जो कि पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक कहा गया है सम्पन्न हो हो जाता है अतः जीव उत्कृष्ट रूप से अर्थात् पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक(११०) पल्योपम तक स्त्रीपना को प्राप्त करती रहती है । इतने काल तक इस प्रकार से स्त्रीरूप से लगातार हो सकता है । यहाँ पर कोई ऐसी शंका करता है कि स्त्री का स्त्रीरूप से अवस्थान जो पूर्व कोटि पृथक्त्व अधिक एकसौ दस पल्योपम का कहा गया है सो इतना ही क्यों कहा ? इससे अधिक भी तो मिलता हैं जैसे कोई जीव देवकुरु उत्तरकुरु आदि क्षेत्रो में तीन पल्योपम आयुवाली स्त्रीरूप से जन्म लें, तब इससे अधिक भी स्त्री वेद का अवस्थान हो सकता है ? उत्तर में कहते हैं कि यह तुम्हारा कहना अयुक्त हैं क्योंकि आपने इसका अभिप्राय ठीक से नहीं जाना है, देखो–प्रथम तो देवी के भव से च्यवित देवी का जीव असख्यात वर्षायु-

તે સ્થાનથી ચ્યવીને તે ફરીથી પૂર્વકોટિની આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્ત્રિયોમાં અથવા તિર્યગ્સ્ત્રિયોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય, પછી બીજી વાર પણ તે ઇશાનદેવ લોકમાં ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમ પ્રમાણ આયુષ્યવાળી અપરિગૃહીત દેવીયોમાં દેવીપણાથી ઉત્પન્ન થઇ જાય અને ત્યાંથી આયુષ્યનો ક્ષય થયા પછી જ્યારે તે ચવે છે, ત્યારે તે અવશ્યજ વેદાન્તર એટલે કે સ્ત્રી વેદનો ત્યાગ કરીને પુરૂષ વિગેરે કોઈ વેદ પ્રાપ્ત કરી લે છે. આ પ્રમાણે ૧૧૦ એકસો દસ પલ્યોપમ કે જે પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ વધારે કહેવામાં આવેલ છે, તેનાથી યુક્ત બની જાય છે તેથી જીવ ઉત્કુષ્ટપણાથી અર્થાત્ પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ૧૧૦ એકસો દસ પલ્યોપમ સુધી આ પ્રકારથી સ્ત્રીપણાથી લાગઠ થઇ શકે છે અહિયાં કોઇ એવી શંકા કરે કે— સ્ત્રીનું સ્ત્રીપણાથી અવસ્થાન—રહેવું જે પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક એકસોદસ પલ્યોપમનું કહ્યું છે, તો તે એટલુંજ કેમ કહ્યું ? તેનાથી અધિક પણ મલે છે જેમ કોઇ જીવ દેવકુરૂ ઉત્તરકુરૂ વિગેરે ક્ષેત્રોમાં ત્રણ પલ્યોપમ આયુષ્યવાળી સ્ત્રીપણાથી જન્મ લે ત્યારે આનાથી વધારે પણ સ્ત્રીવેદનું રહેવું સંભવે છે? આ શંકાના સમાધાન નિમિત્તે કહે છે કે—આ પ્રમાણે તમારું કહેવું યોગ્ય નથી. કેમકે—આપ આનો અભિપ્રાય સમજ્યા નથી તેમ

देवभवाच्च्युतानामसंख्येयवर्षायुष्केषु मध्ये उत्पादस्य प्रतिषेधात्, नापिचासंख्येयवर्षायुष्का सती उत्कृष्टायुष्कासु देवीषु समुत्पद्यते, उक्तञ्च—'जतो असंखेज्जवासाउया उक्कोसियं ठिइं न पावेइ' इति, यतोऽसंख्येयवर्षायुष्का उत्कर्षिकां स्थितिं न प्राप्नोति, इतिच्छाया। तस्मात् कारणात् पूर्वोक्तप्रमाणैव स्त्री वेदस्योत्कृष्टाऽवस्थिति र्लभ्यते इति कृतं प्रसङ्गेनेति, इति प्रथमादेशः ॥१॥

द्वितीयादेशेन स्त्री वेदावस्थितिं दर्शयति—'एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं' एकेनादेशेन जघन्येनैकं समयमवस्थानं भवति 'उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं' उत्कर्षेणाष्टादशपल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि स्त्रीणां स्त्रीरूपेणावस्थानं भवति। जघन्यतामाश्रित्य समयभावना पूर्ववदेव। उत्कृष्टावस्थानभावनात्वेवम्—कश्चिज्जीवो मनुष्यस्त्रीषु तिर्यक्स्त्रीषु वा पूर्व कोटिप्रमाणायुष्कासु मध्ये पञ्चषड् भवाननुभूय ततः पूर्वोक्तप्रका-

वाली स्त्रियों में स्त्री होकर उत्पन्न नहीं होती है और न वह असंख्यात वर्षायुवाली स्त्री उत्कृष्ट आयु वाली देवियों में जन्म ले सकती हैं। इस विषय में अन्यत्र कहा है—'जतो असंखेज्जवासाउय उकोसियं ठिइं न पावेइ', अर्थात् असख्यात वर्षायुवाली स्त्री उत्कृष्ट स्थिति को नहीं पा सकती है तो फिर पूर्वोक्त अवस्थान परिमाण से अधिक अवस्थान प्रमाण कैसे हो सकता है? इसलिये पूर्वोक्त प्रमाण ही स्त्री वेद का उत्कृष्ट अवस्थान ठीक से बैठता है।

यह प्रथम आदेश–विवक्षा है।१।

द्वितीय आदेश इस प्रकार से है—'एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं' इसकी अपेक्षा स्त्री रूप से एक जीव का अवस्थान कम से कम एक समय तक और ज्यादा से ज्यादा पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक

લાગે છે જુઓ–પહેલાં તો દેવીપણાથી ચ્યવતી દેવીનો જીવ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળી સ્ત્રિયોમાં સ્ત્રી થઈને ઉત્પન્ન થતી નથી. અને તે અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળી સ્ત્રી ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્યવાળી દેવીયોમાં જન્મ લઈ શકતી નથી આ સંબંધમાં અન્યત્ર કહ્યું છે કે–"जतो असंखेज्जवासाउय उक्कोसियं ठिइं न पावेइ" અર્થાત્ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળી સ્ત્રી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિને પામી શકતી નથી તો પછી પૂર્વોક્ત અવસ્થાન ના પરિમાણથી અધિક અવસ્થાન પ્રમાણ કેવી રીતે થઈ શકે? તેથી પૂર્વોક્ત પ્રમાણજ સ્ત્રીવેદનું ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન ઠીક જણાય છે.

આ પહેલો આદેશ–વિવક્ષા છે. ॥૧॥

બીજો આદેશ આ પ્રમાણે છે.—"एक्केणादेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं" આ અપેક્ષાથી સ્ત્રીપણાથી એક જીવનું અવસ્થાન કમથી કમ એક સમય સુધી અને વધારેમાં વધારે પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક અઢાર પલ્યોપમ સુધી રહે છે

रेण ईशान देवलोके वारद्वयमुत्कृष्टस्थितिकासु देवीषु मध्ये समुत्पद्यमानो नियमतः परिगृहीतासु एव उत्पद्यते नापरिगृहीतासु तत एवं द्वितीयादेशवादिमतेन स्त्रीवेदस्योत्कृष्टमवस्थानं पूर्वकोटि पृथक्त्वाभ्यधिकाष्टादशपल्योपमप्रमाणं भवतीति द्वितीयादेशः ॥२॥

अथ तृतीयादेशं दर्शयति-**एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं'** एकेनादेशेन तृतीयादेशवादिमतेनेत्यर्थः, जघन्येनैकं समयमवस्थानं भवति इति, **'उक्कोसेणं चउद्दसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं'** उत्कर्षेण चतुर्दशपल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि स्त्रीरूपेणावस्थानं भवति इति! कथमिति चेदित्थम्-कश्चिद्देवो मनुष्यस्त्रीषु तिर्यक्स्त्रीषु पूर्वकोटि-प्रमाणायुष्कासु मध्ये पञ्चषड् वा भवाननुभूय पूर्वप्रकारेण सौधर्मदेवलोके परिगृहीतदेवीषु

अठारह पल्योपम तक रहता है। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि जीव पूर्वकोटि प्रमाण की आयुवाली मनुष्य स्त्रियों में या तिर्यग् स्त्रियों में पांच या छह बार उत्पन्न हो जाता है और फिर वहाँ से वह ईशान देवलोक में दो बार उत्कृष्ट स्थितिवाली परिगृहीत देवियो में उत्पन्न हो जाता है-अपरिगृहीत देवियों में नहीं। इस प्रकार से स्त्रीवेद का उत्कृष्ट अवस्थान पूर्व-कोटि पृथक्त्व से अधिक अठारह पल्योपम का सिद्ध हो जाता है। यह दूसरा आदेश है।२।

तृतीय आदेश ऐसा है-" **एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउद्दस-पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं"** इसमें जघन्य से स्त्रीवेद का अवस्थान एक समय का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक चौदह पल्योपम का हैं—यह इस-प्रकार से हैं-कोई जीव पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाली मनुष्य स्त्रियों में या तिर्यग् स्त्रियो में पांच या छ बार उत्पन्न हो जावे, इसके बाद वह सौधर्म देवलोक में सात पल्योपम

કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે—જીવ પૂર્વકોટિ પ્રમાણની આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્રીયોમાં અથવા તિર્યગ્સ્રિયોમાં પાંચ અથવા છ, બાર, ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. અને તે પછી ત્યાંથી તે ઇશાનદેવલોકમાં બેવાર ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિવાળી પરિગ્રહીત દેવીયોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.-અપરિગૃહીત દેવીયોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. આ પ્રમાણે સ્રીવેદનુ ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન પૂર્વ-કોટિ પૃથક્ત્વથી વધારે અઢાર પલ્યોપમનુ સિદ્ધ થઈ જાય છે.

આ બીજો આદેશ છે. ॥૨॥

ત્રીજો આદેશ આ પ્રમાણે છે —**"एक्केणादेसेणं जहन्नेण एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं'** આમાં જઘન્યથી સ્રીવેદનું અવસ્થાન એક સમયનું છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ વધારે ચૌદ પલ્યોપમનુ છે—તે આ પ્રકારે થાય છે — કોઇ જીવ પૂર્વકોટિ પ્રમાણની આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્રિયોમાં અથવા તિર્યગ્ સ્રિયોમાં પાંચ અથવા છ, અથવા બાર ઉત્પન્ન થઇ જાય અને તે પછી તે સૌધર્મદેવ

देवभवाच्च्युतानामसंख्येयवर्षायुष्केषु मध्ये उत्पादस्य प्रतिषेधात्, नापिचासंख्येयवर्षायुष्का सती उत्कृष्टायुष्कासु देवीषु समुत्पद्यते, उक्तञ्च–'जतो असंखेज्जवासाउया उक्कोसियं ठिइं न पावेइ' इति, यतोऽसंख्येयवर्षायुष्का उत्कर्षिकां स्थितिं न प्राप्नोति, इतिच्छाया। तस्मात् कारणात् पूर्वोक्तप्रमाणैव स्त्री वेदस्योत्कृष्टाऽवस्थिति र्लभ्यते इति कृतं प्रसङ्गेनेति, इति प्रथमादेशः ॥१॥

द्वितीयादेशेन स्त्री वेदावस्थितिं दर्शयति–'एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं' एकेना देशेन जघन्येनैकं समयमवस्थानं भवति 'उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं' उत्कर्षेणाष्टादशपल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि स्त्रिया स्त्रीरूपेणावस्थानं भवति। जघन्यतामाश्रित्य समयभावना पूर्ववदेव। उत्कृष्टावस्थानभावनात्वेवम्–कश्चिज्जीवो मनुष्यस्त्रीषु तिर्यक्स्त्रीषु वा पूर्वकोटिप्रमाणायुष्कासु मध्ये पञ्चषड् भवाननुभूय ततः पूर्वोक्तप्रका-

---

वाली स्त्रियों में स्त्री होकर उत्पन्न नहीं होती है और न वह असंख्यात वर्षायुवाली स्त्री उत्कृष्ट आयु वाली देवियों में जन्म ले सकती हैं। इस विषय में अन्यत्र कहा है–'जतो असंखेज्जवासाउय उकोसियं ठिइं न पावेइ', अर्थात् असख्यात वर्षायुवाली स्त्री उत्कृष्ट स्थिति को नहीं पा सकती है तो फिर पूर्वोक्त अवस्थान परिमाण से अधिक अवस्थान प्रमाण कैसे हो सकता है? इसलिये पूर्वोक्त प्रमाण ही स्त्री वेद का उत्कृष्ट अवस्थान ठीक से बैठता है।

यह प्रथम आदेश–विवक्षा है ।१।

द्वितीय आदेश इस प्रकार से है–'एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं' इसकी अपेक्षा स्त्री रूप से एक जीव का अवस्थान कम से कम एक समय तक और ज्यादा से ज्यादा पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक

લાગે છે જુઓ–પહેલાં તો દેવીપણાથી ચ્યવતી દેવીનો જીવ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળી સ્ત્રિયોમાં સ્ત્રી થઈને ઉત્પન્ન થતી નથી. અને તે અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળી સ્ત્રી ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્યવાળી દેવીયોમાં જન્મ લઈ શકતી નથી આ સંબંધમાં અન્યત્ર કહ્યું છે કે–"जतो असंखेज्जवासाउय उक्कोसियं ठिइं न पावेइ" અર્થાત્ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળી સ્ત્રી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિને પામી શકતી નથી. તો પછી પૂર્વોક્ત અવસ્થાન ના પરિમાણથી અધિક અવસ્થાન પ્રમાણુ કેવી રીતે થઈ શકે? તેથી પૂર્વોક્ત પ્રમાણુજ સ્ત્રીવેદનું ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન ઠીક જણાય છે.

આ પહેલો આદેશ–વિવિક્ષા છે. ॥૧॥

બીજો આદેશ આ પ્રમાણે છે.—"एक्केणादेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं" આ અપેક્ષાથી સ્ત્રીપણાથી એક જીવનું અવસ્થાન કમથી કમ એક સમય સુધી અને વધારેમાં વધારે પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક અઢાર પલ્યોપમ સુધી રહે છે

रेण ईशान देवलोके वारद्वयमुत्कृष्टस्थितिकासु देवीषु मध्ये समुत्पद्यमानो नियमतः परिगृहीतासु एव उत्पद्यते नापरिगृहीतासु तत एवं द्वितीयादेशवादिमतेन स्त्रीवेदस्योत्कृष्टमवस्थानं पूर्वकोटि पृथक्त्वाभ्यधिकाष्टादशपल्योपमप्रमाणं भवतीति द्वितीयादेशः ॥२॥

अथ तृतीयादेशं दर्शयति-**एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं**' एकेनादेशेन तृतीयादेशवादिमतेनेत्यर्थः, जघन्येनैकं समयमवस्थानं भवति इति, '**उक्कोसेणं चउद्दसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं**' उत्कर्षेण चतुर्दशपल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि स्त्रीरूपेणावस्थानं भवति इति । कथमिति चेदित्थम्–कश्चिद्देवो मनुष्यस्त्रीषु तिर्यक्स्त्रीषु पूर्वकोटि–प्रमाणायुष्कासु मध्ये पञ्चषड् वा भवाननुभूय पूर्वप्रकारेण सौधर्मदेवलोके परिगृहीतदेवीषु

अठारह पल्योपम तक रहता है । तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि जीव पूर्वकोटि प्रमाण की आयुवाली मनुष्य स्त्रियों में या तिर्यग् स्त्रियों में पांच या छह बार उत्पन्न हो जाता है और फिर वहाँ से वह ईशान देवलोक में दो बार उत्कृष्ट स्थितिवाली परिगृहीत देवियो में उत्पन्न हो जाता है–अपरिगृहीत देवियों में नहीं । इस प्रकार से स्त्रीवेद का उत्कृष्ट अवस्थान पूर्वकोटि पृथक्त्व से अधिक अठारह पल्योपम का सिद्ध हो जाता है । यह दूसरा आदेश है ।२।

तृतीय आदेश ऐसा है–"**एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउद्दसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं**" इसमें जघन्य से स्त्रीवेद का अवस्थान एक समय का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक चौदह पल्योपम का है—यह इस–प्रकार से है–कोई जीव पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाली मनुष्य स्त्रियों में या तिर्यग् स्त्रियो में पांच या छ बार उत्पन्न हो जावे, इसके बाद वह सौधर्म देवलोक में सात पल्योपम

કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે—જીવ પૂર્વકોટિ પ્રમાણની આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્ત્રીયોમાં અથવા તિર્યગ્સ્ત્રિયોમાં પાંચ અથવા છ, બાર, ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અને તે પછી ત્યાંથી તે ઇશાનદેવલોકમાં બેવાર ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિવાળી પરિગ્રહીત દેવીયોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.–અપરિગૃહીત દેવીયોમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. આ પ્રમાણે સ્ત્રીવેદનુ ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વથી વધારે અઢાર પલ્યોપમનું સિદ્ધ થઈ જાય છે.

આ બીજો આદેશ છે ॥૨॥

ત્રીજો આદેશ આ પ્રમાણે છે—"**एक्केणादेसेणं जहन्नेण एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं**" આમાં જઘન્યથી સ્ત્રીવેદનું અવસ્થાન એક સમયનું છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ વધારે ચૌદ પલ્યોપમનું છે—તે આ પ્રકારે થાય છે.— કોઇ જીવ પૂર્વકોટિ પ્રમાણની આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્ત્રિયોમાં અથવા તિર્યગ્ સ્ત્રિયોમાં પાંચ અથવા છ, અથવા બાર ઉત્પન્ન થઇ જાય અને તે પછી તે સૌધર્મદેવ

सप्तपल्योपप्रमाणोत्कृष्टायुष्कासु मध्ये वारद्वयं समुत्पद्यते तत एवं तृतीयादेशवादिमतेन स्त्री वेद-स्योत्कृष्टमवस्थानं चतुर्दशपल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वं च भवतीति तृतीयादेशः ॥३॥

अथ चतुर्थादेशं दर्शयति—**'एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं'** एकेनादेशेन चतुर्थादेशवादिमतेन जघन्येनैकं समयं स्त्रीत्वेनावस्थानं भवति **'उक्कोसेणं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं'** उत्कर्षेण पल्योपमशत पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकं कालं यावत् स्त्रीत्वेनावस्थानं भवतीति। कथमेवं भवतीति चेत्तत्रोच्यते मनुष्यस्त्रीषु तिरश्चीषु वा पूर्वकोटयायुष्कासु पञ्चषड्भवाननुभूय वारद्वयं सौधर्मदेवलोके पञ्चशत्पल्योपमप्रमाणोत्कृष्टायुष्कासु अपरिगृहीतदेवीषु मध्ये देवीत्वेनोत्पद्यते ततः एवं चतुर्थादेशवादिमतेन पल्योपमशतं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिक भवतीति चतुर्थादेशः ॥४॥

प्रमाण की आयुवाली परिगृहीत देवियों के बीच में देवीरूप से दो वार उत्पन्न हो जावे, इस प्रकार इस विवक्षा में स्त्रीवेद का उत्कृष्ट अवस्थान निकल आता है।

यह तीसरा आदेश है ॥३॥

चतुर्थ आदेश ऐसा है—"**एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहिय**,, इसमें स्त्रीवेद का अवस्थान जघन्य से एक समय का और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक सौ पल्योपम का कहा गया है, जो इस प्रकार से समझना चाहिये—कोई जीव पूर्वकोटिप्रमाण आयुवाली मनुष्य स्त्रियों में या तिर्यग् स्त्रियों में पांच अथवा छह बार उत्पन्न हो जावे और दो वार पचास पल्योपम प्रमाण की उत्कृष्ट आयुवाली सौधर्मस्वर्ग की अपरिगृहीत देवियों में देवीरूप से उत्पन्न हो जावे, तो इस चतुर्थादेश से कथित काल निकल जाता है।४।

લોકમાં સાત પલ્યોપમ પ્રમાણુની આયુષ્યવાળી અપરિગૃહ દેવિયોમાં દેવીપણાથી બેવાર ઉત્પન્ન થઇ જાય આ રીતે આ વિવક્ષામાં સ્રીવેદનું ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન મળી આવે છે.

આ રીતે આ ત્રીજો આદેશ છે ॥૩॥

ચોથો આદેશ આ પ્રમાણે છે.—"**पक्केणादेसेण जहण्णेण पक्कं समयं उक्कोसेण पलिओवमसय पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहिय**" આમાં સ્રીવેદનું અવસ્થાન જઘન્યથી એક સમયનું અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથક્ત્વ અધિક એકસો પલ્યોપમનું કહેલ છે તે આ પ્રમાણે સમજવું—કોઇ જીવ પૂર્વકોટિ પ્રમાણુ આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્રિયોમાં અથવા તિર્યગ્સ્રિયોમાં પાંચ, અથવા છ, અથવા બાર ઉત્પન્ન થઈ જાય અને બે વાર પચાસ પલ્યોપમ પ્રમાણુની ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્યવાળી સૌધર્મ સ્વર્ગની અપરિગૃહીત દેવીયોમાં દેવીપણાથી ઉત્પન્ન થઈ જાય તો તે આ ચોથા આદેશથી કહેલ કાળ આવી જાય છે ॥૪॥

अथ पञ्चमादेशं दर्शयति–'**एक्केण आदेसेणं**' इत्यादि '**एक्केण आदेसेणं**' एकेन आदेशेन पञ्चमादेशेनेत्यर्थ '**जहन्नेणं एक्कं समयं**' जघन्येनैकं स्त्रीत्वेनावस्थानं भवति '**उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं**' उत्कर्षेण पल्योपमपृथक्त्वं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकमवस्थानं भवति, तथाहि–मनुष्यस्त्रीषु तिरश्चीषु वा पूर्वकोटयायुष्कासु मध्ये सप्तभवाननुभूयाष्टमे भवे देवकुर्वादिषु त्रिपल्योपमस्थितिकासु स्त्रीषु मध्ये स्त्रीत्वेन समुत्पद्यते, ततो मृत्वा सौधर्मदेवलोके जघन्यस्थितिकासु देवीषु मध्ये देवीत्वेनोपजायते तदनन्तरमवश्यं वेदान्तरमधिगच्छति ततः पञ्चमादेशवादिमतेन स्त्रीवेदस्यावस्थानं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकं पल्योपम पृथक्त्वं भवतीति पञ्चमादेशः। स्वस्वापेक्षागम्या एते पञ्चापि आदेशाः समीचीना एवेति भावः। तदेवं सामान्यतः स्त्री स्त्रीभावं नैरन्तर्येणापरित्यजन्ती यावत्कालं तिष्ठति तावत्कालप्रमाणं पञ्चभिरादेशैः कथितम्, सम्प्रति–तिर्यक्स्त्रियाः तिर्यक्स्त्रीत्वमपरित्यजन्त्याः कालमानं दर्शयितु-

पंचम आदेश इस प्रकार से हैं–"**एक्केण आदेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवम पुहुत्तं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं**,, इसमें स्त्रीवेद का अवस्थान स्त्रीवेद रूप से रहना–कम से कम एकसमय का और उत्कृष्ट से पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक पल्योमपपृथत्व का कहा गया है। यह इस प्रकार से समझना चाहिये–जैसे कोई जीव पूर्वकोटि की आयु वाली मनुष्य स्त्रियों में या तिर्यग्योनिक स्त्रियो में सात भव करके आठवें भव में तीन पल्य की उत्कृष्ट स्थितिवाली देवकुरु आदिकोंकी स्त्रियो में स्त्रीरूप से उत्पन्न हो जावे। फिर वहां से मरकर वह जघन्य स्थितिवाली देवियों के बीच में सौधर्म देवलोक में देवीरूप से उत्पन्न हो जावे तो इस प्रकार से यह कथित आदेश बन जाता है, क्योंकि इसके बाद वह वेदान्तर को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार सामान्य रूप से स्त्री स्त्रीभाव का निरन्तररूप से अपरित्याग करती हुई जितने कालतक स्त्रीवेद में रहती हैं उतने काल की अपनी अपनी

પાંચમો આદેશ આ પ્રમાણે છે.—"**एक्केण आदेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तमब्भहियं**" આમાં સ્રીવેદનું અવસ્થાન–એટલેકે સ્ત્રીવેદ પણાથી રહેવું તે ઓછામાં ઓછું એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથકત્વ અધિક પલ્યોપમ પૃથક્ત્વ કહેવામાં આવેલ છે. તે આ પ્રમાણે સમજવું જેમકે—કોઈ જીવ પૂર્વકોટિના આયુષ્યવાળી મનુષ્યસ્ત્રિયોમાં અથવા તિર્યગ્સ્ત્રિયોમા સાત ભવ કરીને આઠમા ભવમાં ત્રણ પલ્યોપમની ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિવાળી દેવકુરૂ વિગેરેન સ્રિયોમાં સ્ત્રીપણાથી ઉત્પન્ન થઈ જાય તે પછી ત્યાંથી મરીને તે જઘન્યસ્થિતિવાળી દેવીયોનિ વચમાં સૌધર્મ દેવલોકમાં દેવીપણાથી ઉત્પન્ન થઇ જાય તો આ રીતે આ કહેલ સઘળો આદેશ બની જાય છે કેમકે— તે પછી તે અન્ય વેદને પ્રાપ્ત કરી લે છે. આ રીતે સામાન્યપણાથી સ્ત્રી, સ્ત્રીભાવનો નિરંતરપણાથી ત્યાગ ન કરતી થકી જેટલા કાળ સુધી સ્રીવેદમાં એટલા કાળની પોતપોતાની અપેક્ષાથી આ

माह-'तिरिक्खजोणित्थी णं' इत्यादि, 'तिरिक्खजोणित्थी णं भंते !' तिर्यग्योनिकस्त्री खलु भदन्त! 'तिरिक्खजोणित्थित्ति' तिर्यग्योनिक स्त्री इति 'कालओ केवच्चिरं होइ' कालतः कियच्चिरं भवति क्रियत्कालपर्यन्तं तिर्यक्स्त्री तिर्यक्स्त्रीरूपेण तिष्ठतीति प्रश्नः, भगवानाह- 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं' उत्कर्षेणस्त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि, एतावत्कालपर्यन्तं तिर्यक्स्त्री तिर्यक्स्त्रीरूपेणावतिष्ठते इति । तत्रान्तर्मुहूर्त्तं कस्याश्चित् एतावत्प्रमाणायुष्कतया तदनन्तरं मृत्वा वेदान्तरोदयाद् विलक्षणमनुष्यभवान्तराधिगमा-

---

अपेक्षा से इन पांच आदेशो द्वारा सूत्रकार ने कथन किया है । इसलिये ये पांचो ही आदेश अपनी अपनी अपेक्षा से युक्त है। यह पाचवां आदेश है ।५।

यह सामान्य से स्त्री स्त्रीभाव का त्याग नहीं करती हुई निरन्तर स्त्री भाव में कितने काल तक रहती है इस बात को पांच आदेशों से प्रकट किया । अब तिर्यग् स्त्री रूप-से कितने काल तक उसको त्याग नहीं करती हुई रहती है इस बात को सूत्रकार प्रकट करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-"तिरिक्खजोणित्थी णं भंते ! तिरिक्ख जोणित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ" हे भदन्त ! तिर्यग् योनिक स्त्री तिर्यक् स्त्री रूप से काल की अपेक्षा कितने काल तक होती रहती है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-"गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं" हे गौतम तिर्यक् स्त्री तिर्यग्स्त्रीरूप से कम से कम तो एक अन्तर्मुहूर्त्त तक रहती है और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम प्रमाण काल तक रहती है । वह इस प्रकार से कोई जीव तिर्यक् स्त्री रूप से कम से

પાંચ આદેશે દ્વારા સૂત્રકારે કથન કર્યું છે તેથી આ પાંચે આદેશ પોતપોતાની અપેક્ષાથી યુકત છે આ પ્રમાણેનો આ પાંચમો આદેશ છે ।।૫।।

તે સ્ત્રી સામાન્યપણાથી સ્ત્રીભાવનો ત્યાગ કર્યા વિના નિરંતર સ્ત્રીપણામાં કેટલા કાળ સુધી રહે છે ? તે વાત ઉપર્યુકત પાંચ આદેશો દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે. હવે તિર્યગ્સ્ત્રીપણાથી કેટલા કાળ સુધી તેને ત્યાગ કર્યા વિના રહે છે તે વાત સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે---આમાં ગૌતમ સ્વામી પ્રભુને એવુ પૂછે છે કે—"तिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होई" હે ભગવન્ ! તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રી સ્ત્રીપણાથી કાળની અપેક્ષાથી કેટલા કાળ સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं" હે ગૌતમ ! તિર્યગ્સ્ત્રી તિર્યગ્સ્ત્રીપણ થી ઓછામા ઓછા એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી રહે છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી રહે છે. તે આ પ્રમાણે સમજવું.—

કોઈ જીવ તિર્યગ્સ્ત્રીપણાથી ઓછામાં ઓછા એક અંતર્મુહૂર્ત કાળ સુધી રહીને તે પછી મરીને બીજા વેદના ઉદયના વિલક્ષણપણાથી મનુષ્યભવાન્તરની તે પ્રાપ્તિ કરી લે છે. તેથી

द्वेति । उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाधिकानीत्थम्—अत्र खेचराणां तिर्यग्योनिकानाञ्चोत्कर्षतोऽष्टौ भवा भवन्ति नाधिकाः 'नरतिरियाणं सत्तट्ठभवा' इति वचनात् , तत्र सप्तभवाः सङ्ख्येयवर्षायुष्काः, अष्टमस्तु असंख्येयवर्षायुष्क एव, तथाहि—पर्याप्तमनुष्याः पर्याप्तसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो वा निरन्तर यथासंख्यं सप्तपर्याप्तमनुष्यभवान् सप्तपर्याप्तसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यग् भवान् वासमनुभूय यद्यष्टमे भवे पुनरपि मनुष्यः पर्याप्तसंज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो वा समुत्पद्यन्ते ततो नियमात् असंख्येयवर्षायुष एव न संख्येयवर्षायुषो भवन्ति, असंख्येयवर्षायुषश्च मृत्वा नियमतो देवलोकेषु समुत्पद्यन्ते, ततो नवमोऽपि मनुष्यभवः संज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यग्भवो वा निन्तर न लभ्यते ।

कम एक अन्तर्मुहूर्त्त काल तक रहकर बाद में मर कर वेदान्तर के उदय से विलक्षण मनुष्य भवान्तर की वह प्राप्ति कर लेता है इसलिये जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त काल कहा है उत्कृष्ट से पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक जो तीन पल्योपम का काल कहा है वह इस प्रकार से है—यहां तिर्यग्योनिक खेचरों के उत्कृष्ट से आठ भव से अधिक भव नहीं होते हैं क्योंकि "**नरतिरियाणं सत्तट्ठभवा**" ऐसा शास्त्र का कथन है, इन में सात भव तो संख्यात वर्ष की आयु वाले होते है और आठवां भव असंख्यात वर्ष की आयुवाला होता है । इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से से है—पर्याप्त मनुष्य अथवा पर्याप्त संज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च निरन्तर रूपसे यथासंख्य सात पर्याप्तमनुष्यों के भवों को अथवा सात पर्याप्तसंज्ञि पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च के भवों को भोगकर यदि आठवें भव में पुनः पर्याप्त मनुष्य रूप से या पर्याप्त संज्ञि पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च रूप से उत्पन्न होते है तो वे नियम से असंख्यात वर्ष की आयुवाले ही उत्पन्न होते हैं संख्यात वर्ष आयुवाले होकर उत्पन्न नहीं होते हैं और जब ये असंख्यात वर्षकी आयु वाले आठवें भवमें मरते हैं, तो नियमसे देवलोकमें उत्पन्न होते हैं,तब नौवां भी मनुष्य-

જઘન્યથી અન્તર્મુહૂર્તકાળ કહેલ છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથકત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમકાળ જે કહેલ છે, તે આ પ્રમાણે છે.—અહિયાં તિર્યગ્યોનિક ખેચરોને ઉત્કૃષ્ટથી આઠ ભવથી વધારેભવ હોતા નથી. કેમકે—"**નરતિરિયાણં સત્તટ્ઠભવા**" મનુષ્ય અને તિર્યંચોને સાત આઠ ભવો હોય છે. આ પ્રમાણેનું શાસ્ત્રવચન છે તેમાં સાત જીવતો સંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાને હોય છે અને આઠમો ભવ અસંખ્યાત વર્ષની આયુષ્યવાળાને હોય છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-પર્યાપ્ત મનુષ્ય અથવા પર્યાપ્ત સંજ્ઞિપંચેન્દ્રિય તિર્યંચ નિરંતરપણાથી યથાસંખ્ય-ક્રમથી સાતપર્યાપ્ત મનુષ્યોના ભવોને અથવા સાત સંજ્ઞી પંચેંદ્રિય તિર્યંચના ભવોને ભોગવીને જો આઠમા ભવમાં ફરીથી તે પર્યાપ્ત મનુષ્યપણાથી અથવા પર્યાપ્ત સંજ્ઞિપંચેદ્રિય તિર્યંચપણાથી ઉત્પન્ન થઇ જાય તો તેઓ નિયમથી અસંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળાઓમાંજ ઉત્પન્ન થાય છે. સંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળાઓમા ઉત્પન્નથતા નથી અને જ્યારે આ અસંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળા આઠમા ભવમાં મરે છે, તો નિયમથી દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે નવમો મનુષ્યભવ અથવા સંજ્ઞિપંચેંદ્રિય

अतएभ पाश्चात्याः सप्तभवा निरन्तरं भवन्तः सङ्ख्येयवर्षायुषः एवोत्पद्यन्ते नैकोऽपि असंख्येय-वर्षायुः असंख्येयवर्षायुर्भवान्तरं भूयो मनुष्यभवस्य तिर्यग्भवस्य वा असंभवात्, तत्र यदा उत्कर्षतस्तिर्यक्स्त्रीवेदसहिताः पाश्चात्याः सप्तापि भवाः पूर्वकोटयायुषो लभ्यन्ते, अष्टमस्तु भवो देवकुर्वादिषु भवति तदा उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमाणि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि तिर्यक्स्त्रीत्व स्यावस्थानं जायते ॥

समुच्चयतिर्यक्स्त्रीभवस्थितिमानं प्रदर्श्य सम्प्रति–तिर्यग्विशेषाणां भवस्थितिमानं दर्शयितुमाह–'जलयरीए' इत्यादि 'जलयरीए जहन्नेणं–अंतोमुहुत्तं' जलचर्याः जघन्येनान्त-र्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं' उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वम्, द्विपूर्वकोटित आरभ्य नव-

---

भव अथवा संज्ञिपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च का भव इन्हें प्राप्त ही हो जाय ऐसा कोई नियम नही है। क्योंकि निरन्तर रूप से उसकी प्राप्ति होना असम्भव हैं। इस प्रकार इनके जो पहले के सात भव है वे निरन्तर रूप से होते हुए सख्यात वर्ष की आयुवाले हीं होकर उत्पन्न होते हैं, इनमें से एक भी असख्यात वर्ष की आयुवाला नहीं होता है। और जो असख्यातवर्ष की आयुवाला आठवां भव होता है इसके बाद पुनः मनुष्यभव या तिर्यग्भव प्राप्त नहीं होता है। इनमें से जब उत्कृष्ट से तिर्यक्स्त्री वेदसहित पिछले सातों भव पूर्वकोटि की आयुवाले ही होते हैं और आठवां भव देवकुरु आदि में होता है तब उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम तक तिर्यक्स्त्री का स्त्रीरूपसे लगातार अवस्थान होता है। क्योंकि देवकुरु में उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की आयु है इसलिये।

अब सूत्रकार तिर्यग्विशेषों की जो स्त्रियाँ है, उनकी भवस्थिति का प्रमाण प्रकट करते है–''जलयरीए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं' जलचरी जो

તિર્યગ્ભવ પણ તેઓને પ્રાપ્તજ થઈ જાય છે. એવો કોઈ નિયમ નથી કેમકે–નિરંતરપણાથી તેની પ્રાપ્તિ થવી અસભવિત છે આ રીતે તેઓના પહેલાના જે સાત ભવો છે, તે નિરંતરપણાથી થઈને સંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળા જ થઈને ઉત્પન્ન થાય છે. તેમાં એકપણ અસંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળા હોતા નથી અને અસંખ્યાતવર્ષની આયુષ્યવાળો જે આઠમો ભવ છે, તે પછી ફરીથી મનુષ્યભવ અથવા તિર્યગ્ભવ પ્રાપ્ત થતો નથી તેમાં જ્યારે ઉત્કૃષ્ટથી તિર્યગ્સ્રીના વેદ સહિત પાછળા સાતેભવ પૂર્વકોટિની આયુષ્યવાળા જ હોય છે, અને આઠમોભવ દેવકુરૂ વિગેરેમાં થાય છે. ત્યારે ઉત્કૃષ્ટ પણાથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક પલ્યોપમ સુધી તિર્યક્સ્રી તિર્યગ્સ્રીપણાથી લાગઠ રહે છે. કેમકે–દેવકુરૂમાં ઉત્કૃષ્ટ પણાથી ત્રણ પલ્યોપમનું આયુષ્ય છે તેથી તેમ કહેલ છે

હવે સૂત્રકાર તિર્યગ્વિશેષોની જે સ્રિયો છે, તેઓની ભવસ્થિતિનું પ્રમાણ પ્રગટ કરે છે "जलयरीए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं" જલચરીપણાથી જે

पूर्वकोटिपर्यन्तम् । जलचरस्त्रियाः जलचरस्त्रीत्वेन निरन्तरं भवन्त्याः जघन्यतोऽवस्थानमन्तर्मुहूर्तमात्र मुत्कर्षतस्तु पूर्वकोटिपृथक्त्वम्, यतः पूर्वकोटयायुष्कान् सप्तभवाननुभूयानन्तरं जलचरस्त्रीणामवश्यं जलचरस्त्रीत्वतश्च्युतिर्भवतीति भावः । **'चउप्पदथलयरतिरिक्खजोणित्थीए जहा ओहियाए तिरिक्खजोणित्थीए'** चतुष्पदस्थलचरस्त्रियाः यथा औधिक्या स्तिर्यक् स्त्रिया भवस्थानं कथितम् तथैव ज्ञातव्यम् तथाहि–जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तं तदनन्तरं स्थलचरस्त्रीभावस्य परित्यागसंभवात् । उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि इति ॥ **'उरगपरिसप्पि भुयपरिसप्पित्थीणं जहा जलयरीणं'** उरःपरिसर्पिभुजपरिसर्पिस्त्रीणां यथा जलचरस्त्रीणा–मवस्थानं कथितं तथैव ज्ञातव्यम् जघन्यतः स्त्रीरूपेणान्तर्मुहूर्तमवस्थानम्, उत्कर्षतः पूर्वकोटि-

---

तिर्यक् स्त्रियां हैं उनकी भवस्थिति का काल जघन्य से तो एक अन्तमुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व है–दो पूर्वकोटि से लेकर नौ पूर्वकोटि तक का है–तात्पर्य यह है कि जलचर स्त्रियां यदि निरन्तररूप से जलचर स्त्रियों के रूपसे होती है तो वे कम से कम अन्तर्मुहूर्त्त तक होती हैं और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व तक होती हैं पूर्वकोटि आयुवाले सात भवों के बाद वे जलचर स्त्रियों के भव से अवश्य ही छूट जाती हैं। **"चउप्पद थलयरतिरिक्खजोणित्थीए जहा ओहियाए तिरिक्खजोणित्थीए,,** चतुष्पद स्थलचर स्त्री का भवस्थिति का प्रमाण जैसा औधिक तिर्यक् स्त्री की भवस्थिति का प्रमाण कहा गया है वैसा ही जानना चाहिये जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का होता है क्योंकि उसके बाद उसका स्थलचर स्त्रीभव छूट जाता है। और उत्कृष्ठ से पूर्वकोटि पृथक्त्व तीन पल्योपम का है। **"उरगपरिसप्पभूयपरिसप्पित्थीणं जहा जलयरीणं"** उरःपरिसर्पिस्त्रियो का और भुजपरिसर्पिस्त्रियों का अवस्थान- भवस्थिति का प्रमाण– जलचर स्त्रियों के जैसा

તિર્યંગ્સ્ત્રિયો છે, તેઓની ભવસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તનો છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ છે–એટલે કે બે પૂર્વકોટિથી લઈને નવ પૂર્વકોટિ સુધીનો છે. તાત્પર્ય એ છે કે—જલચરસ્ત્રિયો ઓછામાં ઓછા એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ સુધી હોય છે. પૂર્વકોટિ આયુષ્યવાળા સાતભવોની પછી તે જલચર સ્ત્રિયોના ભવથી અવશ્યજ છૂટિ જાય છે. **"चउप्पदथलयरतिरिक्खजोणित्थीए जहा ओहियाए तिरिक्खजोणित्थीए"** ચતુષ્પદસ્થલચર સ્ત્રીઓની ભવસ્થિતિનુ પ્રમાણ જે પ્રમાણે ઔધિક તિર્યંગ્સ્ત્રીની ભવસ્થિતિનું પ્રમાણ કહેવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે સમજવું એટલે કે-જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું હોય છે કેમકે—તે પછી તેનો સ્થલચર સ્ત્રીભવ છૂટિ જાય છે અને ઉત્કૃષ્ટપણાથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ ત્રણ પલ્યોપમનો છે. **"उरगपरिसप्पि–भुयपरिसप्पित्थीणं जहा जलयरीणं"** ઉર પરિસર્પની સ્ત્રિયોનો અને ભુજ પરિસર્પની સ્ત્રિયોનું ભવસ્થિતિનું પ્રમાણ જલચરની સ્ત્રિયોની જેમ સમજવું. જેમકે-જઘન્યથી એક

पृथक्त्वपर्यन्तमवस्थानम्, कथमिति पूर्ववद् भावनीयम्। 'खहयरित्थीण जहन्नेणं अंतो-मुहुत्तं' खेचरस्त्रीणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् अवस्थानम् 'उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं' उत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयभागं पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकं स्त्रीरूपेणावस्थानं ततः परं स्त्रीभावस्य परित्यागसंभात् इति तिर्यक्स्त्रीणामवस्थानकथनमिति ॥

तदेव कथितं तिर्यक्स्त्रीणां सामान्यतो विशेषतश्चावस्थानमानम्, सम्प्रति मनुष्यस्त्रिया अवस्थानमानं दर्शयितुमाह—'मणुस्सित्थी णं' इत्यादि, 'मणुस्सित्थी णं भंते' मनुष्यस्त्रियः खलु भदन्त! 'कालओ केवच्चिरं होइ' कालतः कियच्चिरं भवति हे भदन्तः मनुष्यस्त्रिया मनुष्यस्त्री इत्येवं रूपेण कियत्कालपर्यन्तं स्त्री रूपेणावस्थानं भवतीति प्रश्नः भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'खेत्तं पडुच्चं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' 'क्षेत्र प्रतीत्य क्षेत्राश्रयणेन तु जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमात्रमवस्थानं भवति, 'उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं'

है। जैसे—जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व है। कैसे? सो इसकी भावना पहले जैसी ही समझ लेनी चाहिए। "खहयरित्थीणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं' खेचर स्त्रियों का स्त्रीरूप से रहने का प्रमाण—काल—जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम के असंख्यातवें भागप्रमाण है। इसके बाद वह स्त्रीभव का परित्याग कर देती है।

इस प्रकार सामान्य और विशेष रूपसे तिर्यक् स्त्रियों का अवस्थान काल कहा अब मनुष्य स्त्रियों का अवस्थान काल सूत्रकार प्रकट करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है कि—"मणुस्सित्थीणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ" हे भदन्त! मनुष्य का स्त्री-रूप से रहने का कितना काल है। उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं" हे गौतम!

અંતમુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથક્ત્વ છે કેવી રીતે? તે બાબત પહેલાં કહ્યા પ્રમાણેની સમજી લેવી. "खहयरित्थीण जहण्णेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियं" ખેચર સ્ત્રિયોનું સ્ત્રીપણાથી રહેવાનો પ્રમાણકાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથક્ત્વ અધિક પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણ તે પછી તે સ્ત્રીભવનો ત્યાગ કરી દે છે.

આ પ્રમાણે સામાન્ય અને વિશેષપણાથી તિર્યગ્સ્ત્રિયોનો અવસ્થાનકાળ કહ્યો હવે મનુષ્યસ્ત્રિયોનું અવસ્થાનકાળ સૂત્રકારપ્રગટ કરે છે—આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—"मणुस्सित्थीणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ" હે ભગવન્ મનુષ્યસ્ત્રીને મનુષ્યસ્ત્રીપણાથી રહેવાનો કેટલોકાળ કહ્યો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं" पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं' હે ગૌતમ ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ તો જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તકાળ છે.

उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि, क्षेत्रापेक्षयाऽवस्थानं भवति मनुष्यस्त्रीणामिति । एतावत्परिमाणं कथं भवेदिति भावना तु जघन्योत्कृष्टतामाश्रित्य सामान्यतिर्यक् स्त्रिया इव कर्त्तव्येति । 'धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' धर्मचरणं-चरणधर्मं प्रतीत्य-आश्रित्य जघन्येनैकं समयमवस्थानम्, उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः ॥ 'एवं कम्मभूमियावि एवम्-अनेनैव प्रकारेण कर्मभूमिका अपि कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियोऽपि ज्ञातव्याः, तथाहि-कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः क्षेत्रं प्रतीत्य सामान्यतः कर्मक्षेत्रमधिकृत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तं तदनन्तरं स्त्रीभावपरित्यागसंभवात् । उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि तत्र सप्तभवा महाविदेहेषु, अष्टमो भवो भरतैरवतेषु, एकान्तसुषमादौ त्रिपल्योपमप्रमाण इति । धर्मचरणं प्रतीत्य-चारित्रसेवनमाश्रित्य जघन्येनैकं समयं, सर्वविरतिपरिणामस्य तदावरणकर्मक्षयो

क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम का है यह कैसे सो इसकी भावना सामान्य तिर्यक् स्त्री में जिस प्रकार से बताया है उसी प्रकार से यहां भी समझ लेना चाहिये, तथा—'धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' धर्मचरण की अपेक्षा-चारित्र धर्म की अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्ट से कुछ कम एक पूर्वकोटी 'एवं कम्मभूमिया वि'' इसी प्रकार कर्मभूमिक मनुष्य स्त्री के विषय में भी जान लेना चाहिये । जैसे-क्षेत्र की अपेक्षा लेकर सामान्य से जघन्य तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम का है इन में सात भव महाविदेहो में होते हैं और आठवां भव भरत या ऐरवत क्षेत्र में एकान्त सुषमादिकाल में तीन पल्योपमका होता है ऐसा जानना चाहिये । इस प्रकार से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्य उत्कृष्ट से कहे गये है ।

અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથકત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમકાળ છે. આ કેવી રીતે ? તેના સમવધાન માટે કહે છે કે— મનુષ્યસ્ત્રીની ભાવના સામાન્ય તિર્યગ્સ્ત્રીમાં જે રીતે બતાવી છે. એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજી લેવું તથા "धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समय उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" ધર્માચરણની અપેક્ષાથી-એટલે કે ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક ઓછા એક પૂર્વકોટિ છે "एवं कम्मभूमिया वि" એજ પ્રમાણે કર્મભૂમિક મનુષ્યસ્ત્રીના સંબંધમાં પણ સમજી લેવું. જેમકે-ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ સામાન્યપણાથી જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથકત્વ અધિક ત્રણપલ્યોપમનો છે. તેમાં સાતભવ મહાવિદેહોમા હોય છે અને આઠમોભવ ભરત અથવા ઐરાવત ક્ષેત્રમાં એકાંત સુષમાદિકાલમાં ત્રણ પલ્યોપમનો હોય છે. તેમ સમજવું. આ રીતે પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમ ઉત્કૃષ્ટથી કહેલ છે.

पशमवैचित्र्यत एकस्यैव समयस्य संभवात् ततः मरणेन प्रतिपातसंभवात्, उत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः, समग्रचारित्रकालस्योत्कर्षतोऽपि एतावन्मात्रप्रमाणत्वात् । भरतैरवत्यः स्त्रियोऽपि एवमेव, भरतैरवतक्षेत्रस्त्रियामपि अवस्थानमानमेवमेव ज्ञातव्यम्, किन्तु सामान्यकर्मभूमिक-मनुष्यस्त्र्यपेक्षया एतासां यद्वैलक्षण्यं तत् 'णवरं' इत्यादिना प्रदर्शयति—'णवरं खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' नवर विशेषस्त्वयम्, यत् क्षेत्रं प्रतीत्य भरतादि क्षेत्रमेवाश्रित्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमवस्थानं स्त्रीरूपेण, 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणं पुव्वकोडी अब्भ-

चारित्रधर्म लेकर जघन्य से एक समय का स्त्री रूप से अवस्थान कहा है क्योंकि सर्वविरति परिणाम का तदावरण कर्म के क्षयोपशम की विचित्रता से एक समयमात्र काल का ही संभव है, तदन्तर मरण हो जाने से सर्वविरति परिणाम का प्रतिपात हो जाता है । और उत्कृष्ट से देशोन पूर्व कोटी कहा है उसका कारण यह है कि संपूर्ण चारित्र काल का उत्कृष्ट प्रमाण इतनाही होता है, आठ वर्ष रूप देश से न्यून होने से देशोन कहा हैं, चरम श्वासोच्छ्वास पर्यन्त चारित्र पालने के कारण पूर्वकोटि कहा है । "भरहेरवया वि" सामान्य मनुष्यस्त्री का जो अवस्थान काल प्रमाण कहा गया है वैसे ही अवस्थान काल का प्रमाण भरत और ऐरवत स्थित कर्मभूमिक स्त्री का भी जानना चाहिये, परन्तु सामान्य मनुष्य स्त्री के अवस्थान काल की अपेक्षा इसके अवस्थान काल में जो अन्तर है वह "णवरं" इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया गया है, नवरं विशेष यह है कि "खेत्तं पडुच्च" भरतादि क्षेत्र की अपेक्षा इसके अव-स्थानकाल का प्रमाण 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और 'उक्को-सेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणं पुव्वकोडीअब्भहियाइं' उत्कृष्ट से इसके अवस्थान काल का

ચારિત્ર ધર્મને લઈને જઘન્યથી એક સમયનું સ્ત્રી પણાથી અવસ્થાન—સ્ત્રીપણામાં રહેવાનું કહ્યું છે. કેમકે—સર્વવિરતિ પરિણામનું તદાવરણ કર્મના ક્ષયોપશમની વિચિત્રતાથી એક સમય માત્ર કાળજ સંભવે છે તે પછી મરણ થઈ જવાથી સર્વવિરતિ પરિણામનું આગમન થઇ જ જાય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વકોટિ કહેલ છે. તેનું કારણ એ છે કે-સંપૂર્ણ ચારિત્ર કાલનું ઉત્કૃષ્ટ પ્રમાણ એટલુંજ હોય છે. આઠ વર્ષની અવસ્થામાં ચારિત્ર લેવામાં આવે છે. તેથી તે આઠવર્ષ રૂપ દેશથી ન્યૂન હોવાથી દેશોન કહેલ છે "भरहेरवयावि" સામાન્ય મનુષ્ય સ્ત્રીનો જે અવસ્થાન કાળ કહેલ છે એજ પ્રમાણેના અવસ્થાનકાળનું પ્રમાણ ભરત અને ઐરવતમાં રહેલ કર્મભૂમિની સ્ત્રીનું પણ સમજવું પરંતુ સામાન્ય મનુષ્ય સ્ત્રીના અવસ્થાન કાળની અપેક્ષાથી આના અવસ્થાન કાળમાં જે અંતર છે, તે "णवरं" આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવેલ છે. 'नवरं" વિશેષ એ છે કે— "खेत्तं पडुच्च" ભરતાદિ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી આના અવસ્થાનકાળનું પ્રમાણ "जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને "उक्कोसेणं तिन्नि पलिओव-

हियाइ' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि देशोनपूर्वकोटयभ्यधिकानि, कथमिति चेदित्थम् पूर्व-विदेहमनुष्यस्त्री अपरविदेहमनुष्यस्त्री वा पूर्वकोटयायुष्का केनापि देवेन विद्याधरेण वा भरतादौ एकान्तसुषमादौ संहृता, सा च यद्यपि महाविदेहक्षेत्रोत्पन्ना तथापि पूर्वोक्तमगधदेशपुरुषदृष्टान्तेन अत्रानयनात् सा भारतीया ऐरवतीयावेति व्यपदिश्यते, ततः सा भारत्यादिव्यपदेशं प्राप्य पूर्वकोटिपर्यन्तं जीवित्वा स्वायुःक्षये तत्रैव भरतादौ एकान्तसुषमाप्रारम्भे समुत्पन्ना, तत– एवं देशोनपूर्वकोटयभ्यधिकं पल्योपमत्रयमवस्थानं स्त्रीरूपेण भवतीति। **'धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी'** धर्मचरणं–चारित्रधर्मं प्रतीत्य–आश्रित्य जघन्येनं एकं समयमवस्थानम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिपर्यन्तं मनुष्यस्त्रिया मनुष्यस्त्रीरूपेणावस्था-

---

प्रमाण देशोन पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम का है, इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार हैं— एक पूर्वकोटि की आयु वाली पूर्वविदेह की मनुष्य स्त्री हो और वह किसी के द्वारा भरतादि क्षेत्र में एकांत सुषमादिकाल के सद्भाव के समय में अपहृत कर आई गई हो तो ऐसी स्थिति में वह यद्यपि महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न हुई है तब भी वह भरतादि क्षेत्र में ले आने के कारण भरत क्षेत्र की है या ऐरवत क्षेत्र की है इस प्रकार से कही जाने लगेगी अब वहाँ वह एक कोटी पूर्व की आयु तक जीवित रहकर अपनी आयु के क्षय से मरी और उसी भरतादि क्षेत्र में एकान्त सुषमादि काल के प्रारम्भ में वह मनुष्य स्त्री रूप से रहने का काल देशोनपूर्व कोटि से अधिक तीन पल्योपम का आजाता है **"धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी"** चारित्र धर्म को लेकर इसके अवस्थान काल का प्रमाण जघन्य से तो एक समय का है और

माइं देसूणं पुव्वकोडी अब्भहियाइ" ઉત્કૃષ્ટથી આના અવસ્થાનકાળનું પ્રમાણ દેશોન-પૂર્વકોટિ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનું છે. આ કથનનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે—એક પૂર્વકોટિના આયુવાલી પૂર્વવિદેહની અથવા અપરવિદેહની મનુષ્ય સ્ત્રી હોય અને તે કોઇની માર્ફત ભરત વિગેરેમાં એકાંત સુષમાદિકાલના સદ્ભાવના સમયમાં અપહૃત–હરણ કરીને લઇ આવવામાં આવી હોય તો એવી સ્થિતિમાં તે જોકે–મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થઇ હોય તો પણ તે ભરત વિગેરે ક્ષેત્રમાં લઇ આવવાના કારણે ભરત ક્ષેત્રની છે અથવા ઐરવત ક્ષેત્રની છે. તેમ કહેવામાં આવશે: હવે ત્યાં એક કોટિપૂર્વની આયુષ્ય સુધી જીવતી રહીને પોતાના આયુષ્યના ક્ષયથી મરે અને એજ ભરત વિગેરે ક્ષેત્રમાં એકાંત સુષમાદિ કાળના પ્રારંભમાં તે મનુષ્ય સ્ત્રીપણાથી ઉત્પન્ન થઇ જાય તો આ પરિસ્થિતિમાં તેનું મનુષ્ય સ્ત્રીપણાથી રહેવાનો કાળ દેશોનપૂર્વકોટિથી અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો આવી જાય છે. **"धम्म चरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी"** ચારિત્ર ધર્મને લઇને તેના અવસ્થાનકાળનું પ્રમાણ જઘન્યથી તો એક સમયનું છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વ-

नं भवति भावना तु कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रिया इव कर्तव्येति। '**पुव्वविदेहअवरविदेहित्थीणं खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं**' पूर्वविदेहापरविदेहस्त्रीणां क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वमवस्थानं भवतीति '**धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी**' धर्मचरणं प्रतीत्य आश्रित्य जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः, एतावत्कालपर्यन्तमवस्थानं स्त्रीरूपेण भवतीति ॥

सामान्यतो विशेषतश्च कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीवक्तव्यतामभिधाय साम्प्रतमकर्मभूमिकमनुष्य स्त्रीवक्तव्यतां चिकीर्षुः प्रथमतः समान्येन तावदाह—'**अकम्मभूमिग**' इत्यादि, '**अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते**' अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्री खलु भदन्त। '**अकम्मभूमिग मणुस्सित्थि त्ति कालओ केवच्चिरं होइ**' अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीइत्येव रूपेण कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—

उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि का है इसका कारण कर्मभूमिज मनुष्य स्त्री के जैसा समझ लेना चाहिये "**पुव्वविदेहअवरविदेहित्थीणं खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं**" पूर्वविदेह और अपर विदेह की मनुष्य स्त्रियों का क्षेत्र की अपेक्षा करके जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक अवस्थानकाल होता है और उत्कृष्ट से पूर्व कोटि पृथक्त्व तक अवस्थान रहता है "**धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी**" चारित्र धर्म की अपेक्षा करके जघन्य से एक समय तक और उत्कृष्ट से देशोन पूर्व कोटि तक अवस्थान रहता है,

इस प्रकार सामान्य और विशेष से कर्मभूमिक मनुष्य स्त्री के सम्बन्ध में वक्तव्यता का कथन करके अब **सूत्रकार** सामान्य रूप से अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्री की वक्तव्यता का कथन करते हैं—इसमें गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है— "**अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते!**" **अकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ** "हे भदन्त! काल की अपेक्षा से अकर्म

કોટિનું છે. તેનું કારણ કર્મભૂમિજ મનુષ્યસ્ત્રીના કથન પ્રમાણેનુ સમજી લેવું "**पुव्वविदेह अवरविदेहित्थीणं खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी पुहुत्त**" પૂર્વ વિદેહ અને અપરવિદેહના સ્ત્રિયોનું અવસ્થાન ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધીનું હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથકત્વ સુધીનું હોય છે. "**धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी**" ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક સમય સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિ સુધીનું અવસ્થાન રહે છે.

આ પ્રમાણે સામાન્ય અને વિશેષ પ્રકારથી કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રીના સંબંધમાં કથન કરીને હવે સૂત્રકાર સામાન્યપણાથી અકર્મભૂમિક મનુષ્યસ્ત્રીના સંબંધમાં કથન કરે છે.—આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે—"**अकम्मभूमिग मणुस्सित्थीणं भंते! अकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ**" હે ભગવન્! કાળની અપેક્ષાથી

'गोयमा'इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जम्मणं पडुच्च' जन्मप्रतीत्य तत्रैवोत्पत्तिलक्षणजन्मापेक्षयेत्यर्थः 'जहन्नेण देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणं' जघन्येन देशोनं पल्योपमं पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनम्–हीनम्, 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां स्त्रीरूपेणावस्थानं भवतीति । 'संहरणं पडुच्च' संहरणं प्रतीत्य संहरणाश्रयेण तु 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तकालं यावदवस्थानम्, अन्तर्मुहूर्त्तायुः शेषकाले संहरणाभावत् 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधिकानि–देशोनपूर्वकोटयभ्यधिकपल्योपमं यावत् अकर्मभूमिकस्त्रीणामुत्कर्षतस्तादृशमनुष्यस्त्रीत्वेनावस्थानं भवतीति भावः ।

भूमिक मनुष्य स्त्री'' यह अकर्म भूमिक मनुष्य स्त्री है ''इस रूप से कितनेसमय तक रहती है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं––''गोयमा ! जम्मणं पडुच्च'' हे गौतम ! जन्म की अपेक्षा से तो वह ''जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं'' जघन्य से देशोन कुछ कम एक पल्योपम तक रहती है वह देशोन ''पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊण' पल्योपमके असंख्यातवें भाग से न्यून होता हैं । ''उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइ'' उत्कृष्ट से तीन पल्योपम तक वह रहती है, उत्कृष्ट भोगभूमि देवकुरु आदिकों में रहने की अपेक्षा से कहा गया है । 'संहरणं पडुच्च'' संहरण की अपेक्षा से ''जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' अकर्म भूमिक मनुष्य स्त्रियोंका स्त्रीरूप से रहने का काल एक अन्तर्मुहूर्त्त का है यह अन्तर्मुहूर्त्त आयु के शेष रहते उसका संहरण होने की अपेक्षा से कहा है । और ''उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं'' उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि से अधिक तीन पल्योपम तक का है । अवस्थान का काल प्रमाण कैसे होता है सो प्रकट करते है–जैसे कोई पूर्वविदेह

અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રી, આ અકર્મભૂમિજ મનુષ્યસ્ત્રી છે. એવા પ્રકારથી કેટલા સમય સુધી રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે––'गोयमा ! जम्मणं पडुच्च'' હે ગૌતમ ! જન્મની અપેક્ષાથી તો તે ''जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं'' જઘન્યથી દેશોન કંઇક-કમ એક પલ્યોપમ સુધી રહે છે. તે દેશોન ''पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणं'' પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી ન્યૂન હોય છે. ''उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं'' ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણપલ્યોપમ સુધી રહે છે. તે ઉત્કૃષ્ટભોગભૂમિ દેવકુરૂ વિગેરેમાં રહેવાની અપેક્ષાથી કહેલ છે. ''संहरणं पडुच्च'' સંહરણની અપેક્ષાથી 'जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं'' અકર્મભૂમિક-મનુષ્ય સ્ત્રિયોનો સ્ત્રીપણાથી રહેવાનો કાળ એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. આ અંતર્મુહૂર્ત આયુબાકી રહે ત્યારે તેનું સંહરણથવાની અપેક્ષાથી કહેલ છે અને ''उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणपपुव्वकोडीए अब्भहियाइं'' ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વકોટિથી વધારે ત્રણપલ્યોપમ સુધી કહેલ છે આ અવસ્થાનકાળ પ્રમાણ કેવીરીતે થાય છે ? તે હવે બતાવવામાં આવે છે––જેમ કોઇ

कथमेतदित्याह—काचित् पूर्वविदेहमनुष्यस्त्री अपरविदेहमनुष्यस्त्री वा देशोनपूर्वकोटयायु समन्विता देवकुर्वादौ संह्रियते, संहृता च सा पूर्वोक्तदृष्टान्तेन देवकुर्वादिव्यपदेशवर्त्ती जाता, ततः सा देशोनपूर्वकोटिं यावत् जीवित्वा तदनन्तरं मृता सती तत्रैव त्रिपल्योपमायुष्का जन्मगृहीतवती, तत एवं देशोनपूर्वकोटयधिकानि त्रीणि पल्योपमानीति। अनेन संहरणमाश्रित्य जघन्योत्कृष्टावस्थानकालमानप्रदर्शनेन न्यूनान्तर्मुहूर्त्तायुःशेषाया गर्भस्थितस्त्रिया वा संहरणं न भवतीति प्रतिपादितम् अन्यथा जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तता, उत्कर्षतः पूर्वकोटया देशोनता चापि न स्यादिति।

पूर्वं समुच्चयाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणामवस्थानं प्रदर्शितम्, साम्प्रतं क्षेत्रविशेषचिन्तामाश्रित्य अकर्मभूमिगतहैमवतादिक्षेत्रस्थितानां मनुष्यस्त्रीणां क्रमेणावस्थानं प्रदर्शयिष्यते, तत्र

मनुष्यस्त्री हो अथवा अपर (पश्चिम) विदेह मनुष्य स्त्री हो देशोन पूर्वकोटि आयुवाले देव कुरू आदि में उसका संहरण होजावे, संहृत हुई स्त्री पूर्वोक्त मागधदृष्टान्त से देवकुरू आदि की स्त्री कहलाने लगती है, फिर वह वहाँ देशोन पूर्वकोटि तक जीवित रहकर फिर मरकर वहीं तीन पल्योपम की आयु वाली होकर ग्रहण कर लेवे। इस प्रकार देशोनपूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम का काल सिद्ध हो जाता है।

संहरण को लेकर इस जघन्य और उत्कृष्ट अवस्थान कालमान प्रमाणदर्शित करने से कुछ न्यून अन्तर्मुहूर्त आयु शेष वाली स्त्री का तथा गर्भस्थ स्त्री का संहरण नहीं होता है ऐसा प्रति पादित किया गया है अन्यथा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि की देशोनता ही सिद्ध नहीं हो सकती है।

यह समुच्चय से अकमभूमिक मनुष्यस्त्रियों का अवस्थान काल कहा, अब विशेष रूप से क्षेत्र की चिन्ता को लेकर अकर्म भूमिगत जो हैमवत ऐरण्यवत आदि क्षेत्र हैं उनमें रही हुई

પૂર્વવિદેહની મનુષ્ય સ્ત્રી હોય અથવા અપર (પશ્ચિમ) વિદેહની મનુષ્ય સ્ત્રી હોય અને દેશોન-પૂર્વકોટિ ના આયુષ્યવાળા દેવકુરૂ વિગેરેમાં તેનું સંહરણ થઈ જાય. સંહરણ થયેલી તે સ્ત્રી પહેલા કહેલ મગધના દૃષ્ટાંત થી દેવકુરૂ વિગેરેની સ્ત્રી કહેવાય છે. તે પછી તે ત્યાં દેશોનપૂર્વ કોટિસુધી જીવતી રહીને તે પછી મરીને ત્યાં જ ત્રણ પલ્યોપમના આયુષ્યવાળામાં થઈને જન્મ ધારણ કરીલે એ રીતે દેશોન પૂર્વકોટિ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો કાળ સિદ્ધ થઈ જાય છે.

સંહરણ ને લઈને આ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન કાળમાન પ્રમાણ દેખાડવાથી કંઈક ન્યૂન અંતર્મુહૂર્ત આયુષ્ય જેનુ બાકી રહ્યું હોય તેવીસ્ત્રીનુ તથા ગર્ભજ સ્ત્રીનું સંહરણ હોતું નથી એ પ્રમાણે પ્રતિપાદન કરવામાં આવેલ છે નહીંતો જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વ કોટિનું દેશોન પણું જ સિદ્ધ થઈ શકતું નથી

આ સમુચ્ચયથી અકર્મભૂમિક મનુષ્ય સ્ત્રિયોનો અવસ્થાન કાળ કહ્યો હવે વિશેષપણાથી ક્ષેત્રની ચિંતાને લઈને અકર્મભૂમિમાં રહેલ જે હૈમવત, ઐરણ્યવત, હરિવર્ષ રમ્યકવર્ષ,

हैमवतैरण्यवत-हरिवर्षरम्यकवर्ष-देवकुरूत्तरकुर्वन्तरद्वीपकमनुष्यस्त्रीणां सर्वासां जन्मापेक्षया या यस्याः स्थिति स्तत्परिमितं तस्याः स्त्रीत्वेनावस्थानं कथनीयम्, संहरणापेक्षया जघन्यतोऽन्त मुहूर्त्तमवस्थानं वाच्यम् उत्कर्षतो यत्प्रमाणा यस्या उत्कृष्टा स्थितिस्तत् प्रमाणं देशोनया पूर्वकोटया-ऽभ्यधिकं कृत्वा तस्या अवस्थानं वाच्यमिति संक्षपत इति भावः। अथ तदेव एकैकं कृत्वा क्रमेण दर्शयितुकामः सूत्रकारः प्रथमं हैमवतैरण्यवतक्षेत्रमनुष्यस्त्रीणामवस्थानं दर्शयति-'हेमवयएरण्ण-वय' इत्यादि, **'हेमवयएरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते !'** हेमवतैरण्यवताकर्म भूमिक मनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! **'हेमवयएरण्णवयअकम्मभूमिग मणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ'** हैमवतैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यस्त्री इति कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः,

मनुष्य स्त्रियों का क्रम से अवस्थान काल दिखलाया जायेगा वह संक्षेप से इस प्रकार हैं-जैसे हैमवत ऐरण्यवत, हरिवर्ष रम्यक वर्ष देवकुरू उत्तरकुरू और अन्तरद्वीप क्षेत्रों की समस्त-मनुष्य स्त्रियो के जन्म की अपेक्षा से जिस स्त्री की जितने कालकी स्थिति होती है उस स्त्री का अवस्थान काल भी उतने ही कालका समझना चाहिये। और संहरण की अपेक्षा जघन्य से अन्त-र्मुहूर्त्त का अवस्थान कहना चाहिए तथा उत्कृष्ट से जिस स्त्री का जितना उत्कृष्ट स्थिति का जो काल प्रमाण है उस कालप्रमाण को देशोन पूर्वकोटि से अधिक करके उस स्त्री का उतना अव-स्थान काल समझ लेना चाहिये यह संक्षेप से इसका भाव हैं, अब सूत्र कार इसी विषय को क्रमसे एक एक करके दिखलाते हुए प्रथम हैमवत ऐरण्यवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियों का अवस्थान काल दिखलाते हैं "हेमवयएरण्यवय०" इत्यादि। **"हेमवयएरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! हेमवयएरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ"** हे भदन्त! जो हैमवत और ऐरण्यवत अकर्मभूमिकी मनुष्य स्त्रियां है उनका अकर्मभूमिक मनुष्य

દેવકુરૂ, ઉત્તરકુરૂ અને અંતરદ્વીપ આ ક્ષેત્રોની સઘળી મનુષ્ય સ્ત્રિયોના જન્મની અપેક્ષાથી જે સ્ત્રીની જેટલા કાળ ની સ્થિતિ હોય છે. તે સ્ત્રિનો અવસ્થાનકાળ પણ એટલા જ કાળ નો સમજવો જોઈએ અને સંહરણની અપેક્ષાએ જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્તનું અવસ્થાન કહેવુ. જોઈએ. તથા ઉત્કૃષ્ટથી જે સ્ત્રીનું જેટલુ ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિનુ કાળ પ્રમાળ છે, તે પ્રમાણુને દેશોન પૂર્વકોટિથી અધિક કરીને તે સ્ત્રીનો તેટલો અવસ્થાનકાળ સમજવો જોઈએ. આ સંક્ષે-પથી ભાવ કહ્યો છે.

હવે સૂત્રકાર આજ વિષયને ક્રમથી એક એક કરી ને બતાવતાથકા પહેલાં હૈમવત, ઐરણ્યવત ક્ષેત્રની મનુષ્ય સ્ત્રિયોનો અવસ્થાનકાળ બતાવે છે. 'हेमवय एरण्णवय" ઇત્યાદિ **"हेमवयएरण्ण-वय अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! हेमवयएरण्णवय अकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ"** હે ભગવન્! જે હૈમવત અને ઐરણ્યત અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો છે, તેઓનું અકર્મભૂમિના સ્ત્રી પણાથી રહેવાનો કાળ કેટલો કહ્યો છે? ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ

(महिला) भगवानाह– **गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम! **'जम्मणं पडुच्च'** तत्रैव हैमवतैरण्यवतयोः जन्मप्रतीत्य–जन्माश्रयणेन **'जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं'** जघन्येन देशोन पल्योपमं पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनम् पल्योपमस्य असंख्येय भागात्मकदेशेन ऊनं पल्योपमं यावत् हैमवताद्यकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां तादृशमनुष्यस्त्रीरूपेणाव स्थानं भवतीति भावः। **'उक्कोसेणं पलिओवमं'** उत्कर्षेण संपूर्णं पल्योपमं यावदवस्थानमिति **'संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं'** सहरणं प्रतीत्य–सहरणापेक्षया तु जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् अन्तर्मुहूर्त्तायुः शेषे एव तस्याः संहरणभावात **'उक्कोसेणं पलिओवमं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं'** उत्कर्षेण देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधिकमेकं पल्योपमं यावदवस्थानं भवति तच्चावस्थानमान देशोनपूर्वकोटयायुष्कायास्तत्र सहरणे तत्रैव च मृत्वोत्पन्नाया ज्ञातव्यम्। **'हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थी णं भंते ! हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थित्ति कालओ कियच्चिरं भवइ'** हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकम नुष्यस्त्रीणा भदन्त ! हरिवर्षर-

स्त्रियों के रूप में रहने का काल कितना है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"गोयमा ! **जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं**" हे **गौतम!** इनका अवस्थान काल जघन्य से तो देशोन पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन एक पल्योपम का है **और** **'उक्कोसेणं पलिओवमं'** उत्कृष्ट से पूरा एक पल्योपम का है अधिक से अधिक इतने समय तक हैमवत और ऐरण्यवत की मनुष्य स्त्री मनुष्य स्त्री रूप से अवस्थित रह सकती हैं। **"संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्को सेणं पलिओवमं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं"** संहरण की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त्त प्रमाण आयु के शेष रहते उसका संहरण हो जाने के कारण जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि से अधिक एक पल्योपम तक रहती है यह प्रमाण देशोन पूर्वकोटि आयु की स्त्री का संहवणहोने पर वह वहीं मरकर वहीं उत्पन्न होने वाली स्त्री की अपेक्षा से समझना चाहिये। **"हरिवास रम्मग वास अकम्म भूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ।"** हे भदन्त ! जो हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की अकर्म

સ્વામીને કહે છે કે–**"ગોયમા ! જમ્મણં પડુચ્ચ જહણ્ણેણં દેસૂણં પાલઓવમં પલિઓવમસ્સ અસંખેજ્જઇભાગેણં ઊણગં"** હે ગૌતમ ! તેઓનો અવસ્થાવ કાળ જઘન્યથી દેશોન પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથીહીન એક પલ્યોપમ નો છે અને **"ઉક્કોસેણં પલિઓવમં"** ઉત્કૃષ્ટથી પૂરો એક પલ્યોપમનો છે વધારેમાં વધારે આટલાકાળ સુધી હૈમવત અને ઐરણ્યવતની મનુષ્ય સ્ત્રી મનુષ્ય સ્ત્રી પણાથી રહી શકે છે **"સંહરણં પડુચ્ચ જહણ્ણેણ અંતોમુહુત્તં ઉક્કોસેણં પલિઓવમં દેસૂણાએ પુવ્વકોડીએ અબ્ભહિયં"** સંહરણની અપેક્ષાથી અંતર્મુહૂર્ત પ્રમાણનું આયુષ્ય બાકી રહે ત્યારે તેનું સહરણ થઈ જવાના કારણથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિ થી વધારે પલ્યોપમ સુધી રહે છે. આ પ્રમાણે દેશોન પૂર્વકોટિની આયુષ્યવાળી સ્ત્રીનું સંહરણ થાય ત્યારે તે ત્યાં જ મરીને ત્યાં જ ઉત્પન્નથવા વાળી સ્ત્રીની અપેક્ષાથી સમજવુ જોઈએ. **"હરિવાસરમ્મગવાસ અકમ્મભૂમિગમણુસ્સિત્થી ણં ભંતે !**

म्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीरूपेण कियत्कालमवस्थानं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह–'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम! '**जम्मणं पडुच्च**' जन्म प्रतीत्य **जहन्नेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगाइं**' जघन्येन देशोने द्वे पल्योपमे पल्योपमस्यासंख्येयभागेन ऊनके, '**उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं**' उत्कर्षेण संपूर्णे द्वे पल्योपमे यावदवस्थानं तादृशस्त्रीरूपेण भवतीति। '**संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं**' संहरणं प्रतीत्य–संहरणापेक्षया जघन्येनान्तर्मुहूर्तमात्रम् '**उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं**' उत्कर्षेण द्वे पल्योपमे देशोनया पूर्वकोटया अभ्यधिके यावदवस्थानं भवति तादृशस्त्रियाः स्त्रीरूपेण भावना प्राग्वदेवेति। '**देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिए**' देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकस्त्रीणामेतादृशस्त्रीरूपेण कियत्कालमवस्थानं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह–'**गोयमा**' हे गौतम! '**जम्मणं पडुच्च**' जन्म प्रतीत्य—जन्मापेक्षया '**जहन्नेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखे-**

भूमिकी मनुष्य स्त्रियां हैं उनका वहां उस रूप से–मनुष्य स्त्री रूप से रहनेका काल कितना है? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"**गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणाइं**" हे गौतम! जघन्य की अपेक्षा लेकर तो जघन्य काल पल्योपम के असंख्यातवें भाग रूप देश से न्यून दो पल्योपमका है और "**उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं**, उत्कृष्ट से पूरा दो पल्योपम का है इस प्रकार हरिवर्ष और रम्यक वर्षकी अकर्मभूमिक की मनुष्यस्त्रियाँ वे मनुष्य स्त्री रूप से रहती है। "**संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं**" संहरण की अपेक्षा से जघन्य काल एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट काल देशोनपूर्वकोटि से अधिक दो पल्योपम का है। भावना पूर्व की जैसी समझलेवें। "**देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिए०**" हे भदन्त! देवकुरु और उत्तरकुरु की मनुष्यस्त्रियो का वहाँ की मनुष्यस्त्री रूप से रहने का काल कितना है? उत्तर में प्रभु कहते हैं–'**गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओव-**

હે ભગવન્ જેહરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષની અકર્મભૂમિના મનુષ્ય સ્ત્રિયો છે, તેઓનો ત્યાં તે મનુષ્ય સ્ત્રી પણાથી રહેવાનો કાળ કેટલો કહ્યો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'**गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइं दो पलिओपमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणाइं**" હે ગૌતમ! જઘન્યની અપેક્ષાથી જઘન્ય કાળ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગરૂપ દેશથી ન્યૂન બેપલ્યોપમનો છે અને "**उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं**" ઉત્કૃષ્ટથી પૂરા બે પલ્યોપમનો છે આ રીતે હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષની અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો મનુષ્ય સ્ત્રી પણાથી રહે છે. "**संहरणं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं**" સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્યકાળ એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટકાળ દેશોન પૂર્વકોટિથી વધારે બે પલ્યોપમનો છે.

તેની ભાવના—એટલે કે પ્રકાર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજીલેવી '**देवकुरूत्तरकुरुअकम्म भूमिए०**" હે ભગવન્ દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂની મનુષ્ય સ્ત્રિયોનું ત્યાંની મનુષ્ય સ્ત્રી પણાથી રહેવાનો કાળ કેટલો કહ્યો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"**गोयमा! जम्मणं पडुच्च**

ज्जइभागेणं ऊणगाइं' जघन्येन देशोनानि त्रीणि पल्योपमनि पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनकानि पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनकानि त्रीणि पल्योपमानि यावत् अवस्थानं जन्मापेक्षया जघन्यतो भवतीति भावः। 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' उत्कर्षेण परिपूर्णानि त्रीणि पल्योपमानि तासां स्त्रीणामवस्थानं भवतीति। 'संहरणं पडुच्च' संहरणं प्रतीत्य 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तं यावदवस्थानं भवतीति। 'उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि देशोनया पूर्वकोटया अभ्यधिकानि संहरणापेक्षयोत्कर्षतोऽवस्थानं तादृशमनुष्यस्त्रिया इति। 'अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते' अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त! अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीरूपेण कियत्कालपर्यन्तमवस्थानं भवतीति प्रश्नः। भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'जम्मणं पडुच्च' जन्म प्रतीत्य, अन्तरद्वीपक्षेत्रमधिकृत्यैव 'जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणं' जघन्येन देशोनम्—

मस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगाइं' हे गौतम! उत्तर कुरुएव देवकुरु की मनुष्य स्त्रियों का वहां की मनुष्य स्त्रियों के रूप से रहने का काल जन्म की अपेक्षाजघन्य से पल्योपम के असंख्यातवें भाग से कम तीन पल्योपम का है तथा——"उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं' उत्कर्ष से पूरे तीन पल्योपम का अवस्थान होता है।

'संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं' संहरण की अपेक्षा से देवकुरु एवं उत्तरकुरुकी मनुष्यस्त्रियों के रूप से रहनेका काल जघन्य से अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्व कोटि अधिक तीनपल्योपम का है "अंतर दीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते!' हे भदन्त! अन्तर द्वीपक अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियोंका वहां की मनुष्यस्त्रियों के रूप से रहने का काल कितना है? उत्तर में प्रभु कहते हैं——'गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पलिओवमस्स असंखे-

---

जहण्णेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगाइं" हे गौतम! उत्तरकुरुनी स्त्रियोनुं त्यांनी मनुष्य स्त्रीपणामां रहेवानो काळ जन्मनी अपेक्षाथी जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमां भागथी कम त्रणपल्योपमनोकहेल छे तथा "उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं" उत्कृष्टथी पूरा त्रण पल्योपमनुं अवस्थान रहे छे.

"संहरणं पडुच्च-जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं" संहरणनी अपेक्षाथी देवकुरु अने उत्तरकुरुनी मनुष्य स्त्री पणाथी रहेवानोकाळ जघन्यथी अंतर्मुहूर्तनो छे. अने उत्कृष्टथी देशोन पूर्वकोटि अधिक त्रण पल्योपमनो छे. "अंतरदीवग अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते!" हे भगवन् अंतरद्वीपक अकर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रियोनो त्यां मनुष्य स्त्री पणामां रहेवानोकाळ केटलो कह्यो छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभु गौतम स्वामीने कहे छे के—"गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णे

देशतो न्यूनं पल्योपमस्यासंख्येयभागम् तदपि पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनं हीनमित्यर्थः ततश्च पल्योपमासंख्येयभागहीनत्वमेव देशोनत्वमित्यर्थः, **'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं'** उत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागं यावदन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियास्तादृशमनुष्यस्त्रीरूपेणावस्थानं भवतीतिभावः। जन्मापेक्षया जघन्यत उत्कर्षतश्च तत्र मनुष्याणामेतावत्प्रमाणस्यायुषः संभवात्, यतस्ते मरणानन्तरं देवगतावुत्पद्यन्ते इति। **'संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं'** संहरणं प्रतीत्य संहरणापेक्षया तु जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् **'उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं'** उत्कर्षेण पल्योपमस्यासंख्येयभागं देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधिकं यावदवस्थानमन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियास्तादृशमनुष्यस्त्रीरूपेण भवतीति भावः, भावना पूर्ववदिति। सामान्यतो विशेषतश्च मनुष्यस्त्रीवक्तव्यता कथिता, सम्प्रति देवस्त्रीवक्तव्यतामाह—**'देवित्थीणं'** इत्यादि, **देवित्थीणं भंते!** देवस्त्री खलु भदन्त! **'देवित्थित्ति**

इभागेण ऊणं" हे गौतम! जन्म की अपेक्षा लेकर तो अन्तर द्वीपक अकर्मभूमिक मनुष्यस्त्रियों का वहां की मनुष्य स्त्रियों के रूप में रहने का काल जघन्य से कुछ कम पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण है और **"उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं"** उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण है वहां जघन्य से तथा उत्कृष्ट से मनुष्यों की इतने ही काल की आयु का संवभ हैं क्योंकि वहां से मरने बाद वे देवयोनि में उत्पन होते हैं। **'सहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं-देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं"** तथा संहरण की अपेक्षा लेकर जघन्य से उनका उस रूप से रहने का काल एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि से अधिक पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं भावना पूर्ववत् समझ लेवे। इस प्रकार सामान्य और विशेष रूप से मनुष्यस्त्री के सम्बन्ध में वक्तव्यता प्रकट की गई है।

णं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणं" હે ગૌતમ જન્મની અપેક્ષાથી તો અંતર દ્વીપજ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોનો ત્યાંની મનુષ્ય સ્ત્રી પણાથી રહેવાનો કાળ જઘન્યથી કંઈક ઓછો પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી ઓછો પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણનો છે અને **"उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागं"** ઉત્કૃષ્ટથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણનો છે. ત્યાં જઘન્યથી અને ઉત્કૃષ્ટથી મનુષ્યોની એટલાજ કાળની આયુ નો સંભવ છે. કેમકે—ત્યાંથી મર્યાપછી તેઓ દેવયોનિમાં ઉત્પન્ન થાય છે. **"संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियं"** તથા સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્યથી તેનો તેવા રૂપે રહેવાનો કાળ એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વ કોટિથી વધારે પલ્યોપના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણનો છે. તેની રીતે પહેલા પ્રમાણે સમજી લેવી.

कालओ केवच्चिरं होइ' देवस्त्री इति इत्येवं रूपेण कालतः कियच्चिरमवस्थानं भवतीति प्रश्नः, देवस्त्रीणां तथाभवस्वभावतया कायस्थितेरसंभवादाह–'जच्चेव भवट्ठिई सच्चेव संचिट्टणा भाणियव्वा' यैव भवस्थितिः सैव संस्थितिर्भणितव्या, यैव पूर्वं सामान्यतो विशेषतश्च भवस्थितिः कथिता तदेवावस्थान वक्तव्यम्। सामान्यतो देवीनां स्थितिः जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत् पल्योपमानि विशेषतो देवीनां स्थितिस्तु--स्थितिद्वारे प्रत्येकं यासां यासां देवीनां यावती भवस्थिति रुक्ता तत्तत्प्रमाणेन तासा तासां देवीनां देवीत्वावस्थानं भावनीयमिति ॥सू० ४॥

अब देवस्त्री के सम्बन्ध में जो वक्तव्यता है उसे सूत्रकार प्रकट करते हैं—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–"देवित्थीणं भंते ? देवित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होइ" हे भदन्त ! देवियों का देवस्त्री रूप से रहने का अवस्थान काल कितना है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं– "जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा भाणियव्वा" हे गौतम ! तथाभवस्वभाव होने के कारण देवियों में कायस्थिति नहीं होती है, इसलिये जो पूर्व में सामान्य और विशेष को लेकर भवस्थिति कही गई है वही इन का अवस्थान काल जानना चाहिए, इस प्रकार जघन्य से दश हजार वर्षका और उत्कृष्ट से पचपन पल्योपमका इनका सामान्य से अवस्थान काल है ऐसा जानना चाहिए तथा विशेष रूप से देवियों की स्थिति कितनी है ? यह जानना हो तो इसस्थिति द्वार से जानना चाहिये अर्थात्–जिन देवियो में प्रत्येक देवी की जितनी भवस्थिति कही गई है उस उस प्रमाण से उन उन देवियों का अवस्थान काल समझना चाहिए। सूत्र ॥ ४ ॥

આ રીતે સામાન્ય અને વિશેષપણાથી મનુષ્ય સ્ત્રીના સંબંધમા કથન કરવામાં આવ્યું છે હવે દેવીઓના સંબંધમાં જે વકતવ્યતા છે તેને સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—'देवित्थी णं भंते ! देवित्थित्ति कालओ केवच्चिरं होई" હે ભગવન્ દેવિયોનું દેવની સ્ત્રી પણાથી રહેવાનો અવસ્થાનકાળ કેટલો કહેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"जच्चेव भवट्ठिई सच्चेव संचिट्ठणा भाणियव्वा" હે ગૌતમ ! તેવા પ્રકારનો ભવ સ્વભાવ હોવાના કારણે દેવિયોમાં કાય સ્થિતિ હોતીનથી. તેથી પહેલાં જે સામાન્ય અને વિશેષ પ્રકારથી ભવસ્થિતિ કહી છે, એજ તેમનો અવસ્થાનકાળ સમજવો. આ રીતે જઘન્યથી દશ હજારવર્ષનો અને ઉત્કૃષ્ટથી ૫૫ પંચાવન પલ્યોપમનો તેમનો સામાન્ય અવસ્થાનકાળ છે, તેમ સમજીલેવું તથા વિશેષરૂપથી દેવિયોની સ્થિતિ કેટલી છે ? તે સમજવું હોય તો તે સ્થિતિદ્વારથી સમજી લેવું. અર્થાત્—જે જે દેવિયોના કથનમાં દરેક દેવીની જેટલી ભવસ્થિતિ કહી છે, તે તે પ્રમાણથી તે તે દેવિયોનો અવસ્થાન કાળ સમજી લેવો. ॥સૂ૦૪॥

सामान्यतो विशेषतश्च स्त्रीत्वस्यावस्थानकालमानं कथितं सम्प्रति—स्त्रीत्वस्यान्तरद्वार-माह—'इत्थीणं भंते !' इत्यादि,

मूलम्—'इत्थीणं भंते ! केवइयं कालमंतरं होइ, गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो, एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीणं । मणुस्सित्थीए खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं, एवं जाव पुव्वविदेह-अवरविदेहियाओ । अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं वणस्सइकालो; संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो, एवं जाव अंतरदीवियाओ । देवित्थीणं सव्वासिं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ सू० ५ ॥

छाया—स्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त-मुत्कर्षेणानन्तं कालं वनस्पतिकालः । एवं सर्वासां तिर्यक्स्त्रीणाम् । मनुष्यस्त्रिया क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण वनस्पतिकालः, धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येन एकं समय-मुत्कर्षेणानन्तं कालं यावद् अपार्द्धपुद्गलपरावर्तं देशोनम् । एवं यावद् पूर्वविदेहापरविदेहाः । अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येन दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्ताभ्यधिकानि उत्कर्षेण वनस्पतिकालः, संहरणं प्रतीत्य जघन्येन अन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः, एवं यावदन्तरद्वीपिकाः । देवस्त्रीणां सर्वासां जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः ॥सू०५॥

समान्य विशेष रूप से स्त्रीत्व के अवस्थान काल प्रमाण प्रकट करके अब इनके अन्तरद्वार का सूत्रकार कथन करते है—'इत्थीणं भंते ! केवइयं कालमंतरं होई ?' इत्यादि ।

સામાન્ય અને વિશેષ પ્રકારથી સ્ત્રી પણાના અવસ્થાનકાળનું પ્રમાણ બતાવીને હવે સૂત્રકાર તેઓના અંતરદ્વારનું કથન કરે છે. "इत्थीणं भंते ! केवइयं कालमंतरं होई" ઈત્યાદિ

टीका—'इत्थीणं भंते !' स्त्रीणां भदन्त । 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालम् अन्तरं भवति कालतः कियच्चिरमन्तरं भवति स्त्री च—मरणेन स्त्रीत्वं त्यक्त्वा पुनः कियता कालेन स्त्री भवतीत्यर्थः, ' भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, स्त्रीणामन्तरं भवतीति, कथं जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तं भवतीतिचेदुच्यते अत्र कदाचित् स्त्री मृत्वा भवान्तरे पुरुषवेदं नपुंसकवेदं वा अन्तर्मुहूर्तमात्रमनुभूय पुनरपि स्त्रीत्वे-नोत्पद्यते ततो जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवतीति । 'उक्कोसेणं अणंतं कालं' उत्कर्षतोऽनन्तं कालं भवति अनन्तकालमेव विशदयति–'वणस्सइकालो' वनस्पतिकालः, सचासंख्येयपुद्गलपरावर्ताख्यो वक्तव्य', तावता कालेन स्त्रीत्वस्यामुक्तौ सत्यां ततः परं नियमतः स्त्रीत्वयोगात,

टीकार्थः— गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है 'इत्थीणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" हे भदन्त ! स्त्री की पुनः स्त्री होने में कितने काल का अन्तर–व्यवधान होता है ' अर्थात् स्त्री जब स्त्री पर्याय से मुक्त हो जाती हैं तो पुनः उसे स्त्री पर्याय में आने के लिए कितने काल का विरह होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं– "गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइ कालो" हे गौतम ! स्त्री पर्याय को छोड़ने के बाद पुनः स्त्रीपर्याय से होने के लिये कम से कम समय एक अन्तमुहूर्त का है और अधिक से अधिक वनस्पतिकाल रूप अनन्तकाल का है । इतने काल के बाद स्त्री पुनः स्त्री की पर्याय से उत्पन्न होजाती है । इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से है –कोई स्त्री ने मरकर परभव से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक पुरुषवेद या नपुंसक वेद का अनुभवन किया–बादमें वह वहां से मरकर पुनः स्त्री पर्याय में आगई तो इस प्रकार से जघन्य अन्तर एक अन्तर्मुहूर्त्त का घटित होता है तथा उत्कृष्ट से जो अनन्त काल

टीकार्थ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે—"इत्थीणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" હે ભગવન્ સ્ત્રીને ફરીથી સ્ત્રી પણામાં આવવામાં કેટલાકાળનું અંતર-વ્યવધાન હોય છે? અર્થાત્ સ્ત્રી જ્યારે સ્ત્રીપર્યાયથી છૂટીજાય છે, તો ફરીથી તેને સ્ત્રીપર્યાયમાં આવવા માટે કેટલા કાળનો વિરહ હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो" હે ગૌતમ ! સ્ત્રીપર્યાયને છોડયાપછી ફરી થી પાછી સ્ત્રીપર્યાયમાં આવવામાટે કમથીકમ એક અંતર્મુહૂર્તના સમયનું અંતર કહ્યું છે અને વધારેમાં વધારે વનસ્પતિકાલની અપેક્ષાથી અનંતકાળનું અંતર છે કારણ કે-વનસ્પતિમાં ના જીવો અનંતકાળ સુધી રહે છે. આટલાકાળ પછી સ્ત્રી ફરી થી સ્ત્રીના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. આ કથનનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે. કોઈ સ્ત્રીએ મરીને પરભવમાં એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી પુરૂષવેદ અથવા નપુંસકવેદનો અનુભવ કર્યો તે પછી તે ત્યાંથી મરીને ફરીથી સ્ત્રીપર્યાયમા આવી જાય તો આ પ્રકારથી જઘન્ય અંતર એક અંતર્મુહૂર્તનું થઈ જાય છે. તથા ઉત્કૃષ્ટથી અનંતકાળ નું જે વ્યવધાન કહેલ છે, તે

स च वनस्पतिकालः' एवं वक्तव्यस्तथाहि 'अणंताओ उस्सप्पिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइ भागो' अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः असंख्येयाः पुद्गल-परिवर्ताः, ते खलु पुद्गलपरिवर्ताः आवलिकाया असंख्येयभाग इति एतावान् कालो वनस्पति-कालशब्देन कथ्यते, एतावत्कालपर्यन्तं पुरुषवेदनपुंसकवेदसद्भावाद् उत्कर्षतः स्त्रियाः स्त्री त्वस्यान्तरं भवति ततः परं स्त्रीत्वस्यावश्यंभावात्। 'एवं सव्वासिं तिरिक्खत्थीणं' एवम् औघिकस्त्रीवदेव सर्वासां जलचरस्थलचरखेचरतिर्यक्स्त्रीणां तथा-औघिकमनुष्यस्त्रीणां च

का व्यवधान कहा गया है वह अनन्त काल कितने प्रमाण का होता है इस पर कहते हैं— 'वणस्सइ कालो' वनस्पति काल की अपेक्षा से कहा गया हैं और यह वनस्पतिकाल असंख्यात पुद्गल परावर्तन रूप होता है, इसके बाद पुनः नियम से स्त्रीत्व पर्याय की उसे प्राप्ति हो जाती है। इस वनस्पति काल रूप अनन्त काल में 'अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा" कालकी अपेक्षा से अनन्त उत्सर्पिणियां और अवसर्पिणियां समाप्त हो जाती हैं, क्षत्र की अपेक्षा अनन्त लोक आजाते है और असंख्यात पुद्गल परावर्त भी हो जाते हैं। और ये असंख्यात पुद्गल परावर्त्त आवलिका के असंख्यातवें भाग रूप होते हैं ऐसा यह इतना काल वनस्पति शब्द से कहा गया है। इतने अधिक काल तक स्त्रीत्व का अन्तर व्यवच्छेद हो जाता हैं, और इसके व्यतीत होने पर पुनः स्त्री स्त्री रूप से उत्पन्न हो जाती है "एवं सव्वासिं तिरिक्खत्थीणं" इसी प्रकार से सामान्य रूप से कहे गये स्त्रीत्व के विरह काल के अनुसार ही समस्त जलचरस्थलचरखेचर तिर्यग् स्त्रियों का और औघिक

તે અનંતકાળ કેટલા પ્રમાણુ ને હોય છે? તેને માટે કહે છે કે—"वणस्सइकालो" વનસ્પતિકાળની અપેક્ષાથી કહેવામાં આવેલ છે. અને તે વનસ્પતિકાળ અસંખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્તરૂપ હોય છે. તે પછી પુનઃ નિયમથી સ્ત્રીપણાના પર્યાયની તેને પ્રાપ્તિ થઈ જાય છે. આ વનસ્પતિ કાલરૂપ અનંતકાળમાં "अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोगा असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा" કાળની અપેક્ષાથી અનંત ઉત્સર્પિણીયો અને અનંત અવસર્પિણીયો સમાપ્ત થઈ જાય છે ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી અનંતલોક આવીજાય છે. અને અસખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્તપણુ થઈ જાય છે. અને આ અસંખ્યાત પુદ્ગલપરા-વર્ત આવલિકાના અસંખ્યાતમાં ભાગરૂપ હોય છે. આ રીતનો આટલોકાળ 'વનસ્પતિકાળ' એશબ્દથી કહેવામાં આવેલ છે આટલા અધિકકાળ સુધી સ્ત્રી પણાનું અંતર-વ્યવછેદ થઈ જાય છે

અને તે વ્યતીત થઈ જાય ત્યારે ફરીથી સ્ત્રી સ્ત્રીપણાથી ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. "एवं सव्वासिं तिरिक्खत्थीणं" એજ પ્રમાણે સામાન્ય રીતે કહેવામાં આવેલ સ્ત્રીપણાના વિરહ કાલ અનુસારજ સઘળા જલચર, સ્થલચર ખેચર તિર્યંગ્ સ્ત્રિયોનું અને ઔઘિક સામાન્ય

स्त्रीत्वस्यान्तरं जघन्यत उत्कर्षतश्च ज्ञातव्यम् तत्र जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षतो वनस्पतिकालं यावदन्तरं स्त्रीत्वस्य ज्ञातव्यम् इति। कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणामन्तरमाह—'**मणुस्सित्थीए खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**' मनुष्यस्त्रियाः क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालो वनस्पतिकालं यावदन्तरं स्त्रीत्वस्य भवतीति। '**धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं**' धर्मचरणं चरणधर्मं प्रतीत्य जघन्येनैकं समयम् "**उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं**' उत्कर्षेणानन्तं कालं यावदपार्धपुद्गलपरावर्तं देशोनम्। अयं भावः— कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियाः कर्मभूमिकक्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽनन्तकालवनस्पतिकालप्रमाणम् धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येन समयैकं सर्वजघ-

---

सामान्य मनुष्य स्त्रियोंका पुनः स्त्रीत्व की प्राप्ति का विरह काल जघन्य और उत्कृष्ट से जान लेना चाहिए जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का और उत्कृष्ट से वनस्पति काल प्रमाण वह विरह काल है ऐसा जानना चाहिए,

अब कर्मभूमिक मनुष्यस्त्रियों के विषय में कहते हैं—'**मणुस्सित्थीए खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सईकालो**" इसी प्रकार से क्षेत्रकी अपेक्षा लेकर कर्मभूमिक मनुष्य स्त्री मनुष्य स्त्री की पर्याय को छोड़कर पुनः उसी पर्याय की प्राप्ति कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त्त के व्यतीत हो जाने के बाद और उत्कृष्ट से वनस्पति काल के व्यतीत हो जाने के बाद प्राप्त करती है "**धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं**" धर्माचरण—चारित्र धर्मको लेकर जघन्य से अन्तर एकसमय का और उत्कृष्ट से अन्तर अनन्त काल तक का यावत् देशोन अपार्ध पुद्गल परावर्त तक का है अर्थात् प्राप्त की गई चरणलब्धि इतने समय

મનુષ્ય સ્ત્રિયોનો ફરીથી સ્ત્રીપણાની પ્રાપ્તિનો વિરહકાળ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાલ પ્રમાણ કહેલ છે. તેમ સમજવું.

હવે કર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રિયોના સંબંધમાં સૂત્રકાર કથન કરે છે. "**मणुस्सित्थीए खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**" એજ પ્રમાણે ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી કર્મભૂમિજ મનુષ્યસ્ત્રી, મનુષ્યસ્ત્રીની પર્યાયને છોડીને ફરીથી મનુષ્ય સ્ત્રીના પર્યાયની પ્રાપ્તિ ઓછામાં ઓછા એક અંતર્મુહૂર્ત વીત્યાપછી અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળ વીતી ગયા પછી કરે છે "**धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं**" ધર્માચરણ—ચારિત્રનેલઈને જઘન્યથી એકસમયનું અંતર અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંતકાલસુધીનું અંતર યાવત્ દેશોન અપાર્ધ પુદ્ગલપરાવર્ત સુધીનું છે.

न्यस्य समयमात्रप्रमाणत्वात् उत्कर्षेणानन्तं कालं देशोनम् अपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं यावदन्तरं भवति ततः परमवश्य चरणधर्मस्य प्रतिपातसंभवः, यत इतो नाधिकश्चरणलब्धिप्रतिपातकालः, सम्पूर्णस्यापि अपार्धपुग्दलपरावर्तरूपस्य दर्शनलब्धिप्रतिपातकस्य तत्र तत्र प्रदेशे प्रतिषेधादिति **'एवं जाव पुव्वविदेहअवरविदेहियाओ'** एवं यावत् पूर्ववैदेह्यपरवैदेह्यः. यावत्पदेन-भरतैरवतमनुष्यस्त्रियाः संग्रहो भवति, तथा च भरतैरवतमनुष्यस्त्रियाः पूर्वापरविदेहस्त्रियाश्च क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण वनस्पतिकाल यावदन्तरं भवति धर्मचरणं प्रतीत्य तु जघन्यत एकं समयम् उत्कर्षेण देशोनमपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं यावदन्तरं भवतीति ।

कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रिया अन्तरं प्रदर्श्य अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियाः अन्तरं दर्शयितुमाह **'अकम्मभूमिग'** इत्यादि, **'अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते'** अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां

पर्यन्त रह सकती है इसके बाद तो वह नियत प्रतिपतित हो जाती है क्योंकि संपूर्ण अपार्धं पुद्गल परावर्त दर्शनलब्धि के प्रतिपात का काल उस उस प्रदेश में नही माना गया है, इसी कारण यहां देशोन अपार्ध पुद्गलपरावर्त्त तक का अन्तर कहा गया है **"एवं पुव्वविदेहअवरविदेहियाओ"**, इसी प्रकार से भरत क्षेत्र एवं ऐरवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियां में एवं पूर्वविदेह और अपर विदेह की मनुष्यस्त्रियों में पुनः स्त्रीत्व होने का अन्तर क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से वनस्पति काल प्रमाण है तथा चारित्रधर्म को लेकर जघन्य से एक समय का हैं और उत्कृष्ट से देशोनअपार्ध (अर्ध) पुद्गलपरावर्त्त का है।

इस प्रकार से कर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियों में पुनः स्त्रीत्व रूप से होने में अन्तर का कथन करके अब सूत्रकार अकर्म भूमिक मनुष्य स्त्रियों के अन्तर को दिखाते हैं-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-**"अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते? केवइयं काल अंतरं होइ"** हे भदन्त! अकर्मभू

અર્થાત્ પ્રાપ્તકરવામા આવેલ ચરણલબ્ધિ એટલા સમયસુધી રહીશકે છે. તે પછી તે નિયત પ્રતિપતિત થઈ જાય છે. કેમકે—સંપૂર્ણ અપાર્ધપુદ્ગલ પરાવર્ત દર્શનલબ્ધિના પ્રતિપાત નોકાળ તે પ્રદેશમાં માનવામાં આવેલ નથી. એજ કારણે અહિયાં દેશોન અપાર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત સુધીનુ અતર કહેલ છે, "एवं जाव पुव्वविदेहअवरविदेहियाओ" આજ રીતે ભરત ક્ષેત્ર અને ઐરવતક્ષેત્રની મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં ફરીથી સ્ત્રીપણું પ્રાપ્ત થવાનુ અંતર ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથીતો એક અંતર્મુહૂર્તનું છે અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાલ પ્રમાણુ છે તથા ચારિત્રધર્મ ને લઇને જઘન્યથી અંતર એક સમયનું છે. અને ઉત્કૃષ્ટ દેશોન અપાર્ધ-દેશોન પુદ્ગલ પરાવર્તનું છે.

આ રીતે કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં ફરીથી સ્ત્રીપણાની પ્રાપ્તિથવામાં અંતરનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોનું અંતર બતાવે છે—આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયુ છે કે—"अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं भंते! केवइयं कालं अंतर होइ" હે

भदन्त ! **'केवइयं कालं अंतरं होइ'** कियन्तं कालमन्तरं भवति अकर्मभूमिकस्त्री मृत्वा तावत् स्त्रीत्वात् भ्रष्टा सती पुनः कियता कालेनाकर्मभूमिकस्त्री भवतीति प्रश्नः, भगवानाह— **'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं'** जन्म प्रतीत्य—जन्मापेक्षया जघन्येन दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि तादृशस्त्रीत्वस्यान्तरं भवतीति अन्तर्मुहूर्त्ताधिकदशवर्षसहस्रपर्यन्तमन्तरं केन प्रकारेण भवतीति चेदत्रोच्यते इह काचिदकर्मभूमिका स्त्री मृत्वा जघन्यस्थितिकदेवेषु समुत्पन्ना, तत्र देवेषु दशवर्ष—सहस्राणि आयुः परिपाल्य तादृशायुषः क्षये देवभवात् च्युत्वा कर्मभूमिषु मनुष्यपुरुषत्वेन मनुष्य-स्त्रीत्वेन वोत्पद्यते देवेभ्योऽनन्तरमकर्मभूमिषूत्पादासंभवात्, तत्रान्तर्मुहूर्तेन मृत्वा पुनरपि अकर्म-

---

मिक मनुष्य स्त्री अपनी अकर्म भूमिक स्त्री पर्याय को छोड़कर यदि पुनः वह अकर्मभूमिक मनुष्य-स्त्री की पर्यायवाली होवे तो इसमें कितने कालका अन्तर होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं— **"गोयमा ? जम्मण पडुच्च जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं"** हे गौतम ! जन्म की अपेक्षा लेकर वह जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दश हजार वर्ष का है बाद पुनः वहीं की स्त्री हो सकती है और **"उक्कोसेणं वणस्सइकालो"** उत्कृष्ट से वनस्पति काल का है उसके बाद पुनः वहां की वह स्त्री हो सकती है जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार-वर्ष का अन्तर इस प्रकार से आता है जैसे—कोई अकर्म भूमिक स्त्री मरी और मरकर वह जघन्य से दस हजार वर्ष की स्थिति वाले देवों में उत्पन्न हो गई वहां वह दस हजार वर्ष की आयु को भोगकर वहां से च्यवकर और जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति वाले कर्मभूमिके मनुष्य पुरुष में अथवा मनुष्य स्त्री में वह उत्पन्न हो गई क्योंकि देवगति से च्यव कर जीव सीधा अकर्म भूमि में उत्पन्न नहीं होता है वहां वह अन्तर्मुहूर्त्त की आयु भोगकर फिर वह अकर्मभूमि भोग-

---

ભગવન્ અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રી પોતાના સ્ત્રી પર્યાયને છોડીને જો ફરીથી તે અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રીના પર્યાયને પ્રાપ્ત કરે તો તેમાં કેટલાકાળનું અંતર કહ્યું છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે— **"गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं"** હે ગૌતમ ! જન્મની અપેક્ષાથી તે જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત અધિક દસ હજાર વર્ષનુ છે તે પછી ફરીથી ત્યાંનીજ સ્ત્રી થઈ શકે છે. અને **"उक्कोसेणं वणस्सइकालो"** ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાલ કહેલ છે. તે પછી ફરીથી તે સ્ત્રી ત્યાંની સ્ત્રી બની જાય છે જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત અધિક દસ હજાર વર્ષનું અંતર આ રીતે આવે છે.—જેમ કે કોઈ અકર્મભૂમિની સ્ત્રી મરીહોય અને મરીને તે જઘન્યથી દસહજાર વર્ષની સ્થિતિવાળા દેવોમા ઉત્પન્નથઈ જાય ત્યાં તે દસહજાર વર્ષના આયુષ્યને ભોગવી ને ત્યાંથી ચવીને જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની સ્થિતિ વાળા કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષમાં અથવા મનુષ્ય સ્ત્રી માં તે ઉત્પન્નથઈ જાય, કેમકે-દેવગતિથી ચવીને જીવ સીધો અકર્મભૂમિમાં ઉત્પન્નથતો નથી. ત્યાં તે અંતર્મુહૂર્તનું આયુષ્ય ભોગવીને તે પછી તે અકર્મભૂમિ-ભોગભૂમિમાં સ્ત્રી

भूमिज स्त्रीत्वेनोत्पद्यते इति, भवति जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्ताऽभ्यधिकदशवर्षसहस्रप्रमाणमन्तरमकर्मभूमिक-स्त्रियाः पुनरकर्मभूमिकस्त्रीत्वे इति । 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालं याव-दन्तरं भवत्यकर्मभूमिकस्त्रिया इति । 'संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' संहरणं प्रतीत्य संहरणापेक्षया जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् अकर्मभूमिकस्त्रिया अन्तरमकर्मभूमिकस्त्रीत्वस्य भवति अकर्मभू-मिकस्त्रियाः कर्मभूमिषु संहृत्य अन्तर्मुहूर्तकालेन तथाविधबुद्धिवैपरीत्येन पुनरपि अकर्मभूमावेव नयनाद् अन्तर्मुहूर्त्तप्रमाण एव कालोऽन्तरं भवतीति । 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालोऽन्तरं भवति तावता कालेन कर्मभूमिषु उत्पत्तिवत् संहरणस्यापि नियमतो भावात् तथाहि—काचिदकर्मभूमिका स्त्री कर्मभूमौ संहृता, सा च स्वायुःक्षयानन्तरमनन्तकालं वनस्पत्यादिषु परिभ्रम्य पुनरपि अकर्मभूमौ समुत्पन्ना ततः केनापि संहृतेति भवति यथोक्तसंहरणस्योत्कृष्टकाल-

---

भूमि में स्त्री रूप से उत्पन्न हो गई—तो ऐसी स्थिति में यहां पुनः अकर्मभूमि की मनुष्यस्त्री होने का अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार वर्ष का कहा गया है । 'संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं" संहरण की अपेक्षा लेकर जघन्य से अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त का है और "उक्कोसेणं वणस्सइ कालो" उत्कृष्ट से अन्तर वनस्पति काल प्रमाण है क्योंकि कर्मभूमि में उत्पत्ति की जैसा संहरण का भी नियम से इतने ही काल का सद्भाव होता है सहरण की अपेक्षा जघन्य एक अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर इस प्रकार से आता है कि कोई अकर्म भूमिक स्त्री संहृत होकर कर्मभूमि में लाई जावे और यहां एक अन्तर्मुहूर्त्त तक के काल में फिर विचार धारा के परिवर्तन हो जाने से वह वहीं ले जाई जावे, इस अपेक्षा से जघन्य एक अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर कहा गया है संह-रण की अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर वनस्पति कालका इस प्रकार से आता है कि कोई अकर्मभूमिकी स्त्री कर्मभूमि में संहृत होकर आजावे और अपनी आयु के क्षय होने के बाद फिर वह अनन्त काल

પણાથી ઉત્પન્નથઈ જાય, તો આ સ્થિતિમાં અહિયાં ફરીથી અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્રી થવાનું અંતર એક અંતર્મુહૂર્ત અધિક દસહજાર વર્ષનું કહ્યું છે "संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર છે. અને "उक्कोसेणं वणस्सइकालो" ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળ સુધીનુ અંતર કહ્યું છે. કેમકે—અકર્મભૂમિમાં ઉત્પત્તિની જેમ સંહરણ નો સદ્ભાવ પણ નિયમથી એટલા જ કાળનો કહેલ છે. સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર આ પ્રમાણે થાય છે— કોઇ અકર્મભૂમિની સ્રી સંહૃતથઇને એટલેકે હરણ થઇને કર્મભૂમિમાં લઇઆવવામાં આવે અને ત્યાં એક અંતર્મુહૂર્ત સુધીના કાળમાં ફરી વિચારધારાનું પરિવર્તન થઈ જવાથી તે ત્યાં જ પાછી લઇ-જવામાં આવે આ અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર કહેવામાં આવેલ છે. સંહરણની અપેક્ષાથી ઉત્કૃષ્ટ અંતર વનસ્પતિકાળનું આવીરીતે આવે છે—કોઈ અકર્મભૂમિની સ્રી કર્મભૂમિમાં સંહૃતથઈને આવીજાય અને પોતાનું આયુષ્ય ક્ષયથયા પછી તે અંતરકાલ સુધી વનસ્પતિ વિગેરેમાં પરિભ્રમણ કરીને તે પછી ત્યાથી કોઇના-

मानमिति, 'एवं जाव अंतरदीवियाओ' एवम् सामान्यतो यथा अकर्मभूमिकस्त्रियाः स्त्रीत्व-स्यान्तरकालः कथितः स्तथैव-तेनैव रूपेण यावदन्तरद्वीपिकाः स्त्रिय इति, अत्र यावत्पदेन-हैमवतैरण्यवत-हरिवर्षरम्यकवर्ष-देवकुरूत्तरकुरुस्त्रीणां ग्रहणं भवति, तेन हैमवतक्षेत्रजमनुष्यस्त्रीत-आरभ्यान्तरद्वीपजमनुष्यस्त्रीणां ग्रहणं भवति। ततः पूर्वोक्तहैमवतादिक्षेत्रस्त्रियाः स्त्रीत्वस्यान्तरकालमानं जन्मापेक्षया जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्ताभ्यधिकदशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो वनस्पतिकालः संहरणापेक्षया जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकाल एवेति।

सम्प्रति-देवस्त्रीणामन्तरप्रतिपादनार्थमाह-'देवित्थीणं' इत्यादि, 'देवित्थीणं सव्वासिं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो' देवस्त्रीणां सर्वासां जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्क-

---

तक वनस्पति आदिकों में परिभ्रमण करके फिर वहां से किसी द्वारा संहृत होजावे अकर्मभूमिमें स्त्री के पर्याय से उत्पन्न हुई वह इस प्रकार से वह पुनः अकर्म भूमिक मनुष्य स्त्री होने में वनस्पति काल के प्रमाण काल से अन्तर वाली होती है। "एवं जाव अंतर दीवियाओ" जिस प्रकार से सामान्य अकर्म भूमिक स्त्री का पुनः वहीं पर स्त्री रूप से होने का अन्तर काल कहा गया है उसी प्रकार से यावत्पद से गृहीत हैमवत मनुष्य स्त्रीका हैरण्यवत मनुष्यस्त्री का हरिवर्ष मनुष्यस्त्री का रम्यक वर्ष मनुष्य स्त्री का देवकुरुमनुष्यस्त्री का और उत्तर कुरुमनुष्यस्त्री का तथा अन्तर द्वीप की मनुष्यस्त्री का पुनः वहीं पर मनुष्यस्त्री होने का अन्तर काल जन्मकी अपेक्षा लेकर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष का और उत्कृष्ट वनस्पति-काल प्रमाण काल का है ऐसा जानना चाहिये तथा संहरण की अपेक्षा से जघन्य अन्तर-काल एक अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट काल वनस्पति काल प्रमाण अनन्त काल का है।

अब सूत्रकार देवस्त्रियों के अन्तर काल का प्रतिपादन करते है-इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"देवित्थीणं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ" हे भदन्त! देवस्त्रियों का

દ્વારા સંહૃતથઈ જાય તો અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રી થવામાં વનસ્પતિ કાલના પ્રમાણ કાલથી અંતર વાળી હોય છે 'एवं जाव अंतरदीवियाओ', જે પ્રમાણે સામાન્ય અકર્મભૂમિની સ્ત્રીનુ ફરી થી ત્યાંનીજ સ્ત્રી થવાનોઅંતરકાળ કહેલ છે, એજ પ્રમાણે યાવત્પદથી ગ્રહણકરાયેલ હૈમવત મનુષ્ય સ્ત્રી નો હૈરણ્યવત મનુષ્યસ્ત્રીનો હરિવર્ષ મનુષ્યસ્ત્રીનો રમ્યકવર્ષની મનુષ્ય સ્ત્રીનો. દેવકુરૂની મનુષ્યસ્ત્રીનો અને ઉત્તરકુરૂની મનુષ્યસ્ત્રીનો તથા અંતરદ્વીપની મનુષ્ય સ્ત્રીનો ફરીથી ત્યાં જ મનુષ્ય સ્ત્રી થવાનો અંતરકાલ જન્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત અધિક દસહજાર વર્ષનો અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાલ પ્રમાણકાલનો છે તેમ સમજવુ તથા સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્ય અંતરકાલ એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટકાલ વનસ્પતિકાલ પ્રમાણ અંતરકાલનુ છે

હવે સૂત્રકાર દેવિયોના અંતરકાલનું પ્રતિપાદન કરે છે આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવુ પૂછયું છે કે— "देवित्थीणं भंते! केवइयं कालं अंतरं होई" હે ભગવન્ દેવિયોનો

र्षेण वनस्पतिकालः, आलापप्रकारस्तु इत्थम्-'**देवित्थीणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ! 'गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**' देवस्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? भगवानाह—हे गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकाल इतिच्छाया । कस्याश्चिद्देवस्त्रिया देवीभवाच्च्युताया गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु उत्पद्य पर्याप्तिपरिसमाप्तिसमनन्तरं तथाध्यवसायमरणेन पुनर्देवत्वेनोत्पत्तिसंभवात् जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमेवान्तरं भवतीति । उत्कर्षतो वनस्पतिकालं यावदन्तरं भवतीति । एव सामान्यतो देवस्त्रीवदेव सर्वासामित्यनेन असुरकुमार देव्या आरभ्य यावदीशानदेवस्त्रीणां जघन्यमुत्कृष्टं चान्तरमेतावदेव वक्तव्यमिति ॥सू०५॥

सम्प्रति-सर्वासां तिर्यग्योनिकादिस्त्रीणामल्पबहुत्व प्रस्तौति तानि चाल्पबहुत्वानि पञ्च. तत्र प्रथमं सामान्यतस्तिर्यङ्मनुष्यदेवस्त्रीणामल्पबहुत्वम्१, विशेषचिन्तायां द्वितीयं जलचरस्थलचरखेचरेति त्रिविधतिर्यक्स्त्रीणामल्पबहुत्वम्२; तृतीयं कर्मभुम्यकर्मभुम्यन्तरद्वीपेति त्रिविधमनुष्यस्त्रीणामल्पबहुत्वम्३, चतुर्थं भवनवासिवानव्यन्तर-ज्योतिष्कवैमानिकेति चतुर्विधदेवस्त्रीणामल्पबहुत्वम्४, पञ्चमं स्वस्वभेदयुक्तं समस्तमिश्रस्त्रीणामल्पबहुत्वम् ॥ तत्र प्रथम मल्पबहुत्व-

---

अन्तर काल कितना है ? उत्तर में प्रभुने कहा है '**गोयमा**' हे गौतम ! "**देवित्थीणं सव्वासिं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**" समस्त देवस्त्रियों का अन्तर काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल के प्रमाणका अनन्त काल का है जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त इस प्रकार से होता है कोई देवी देवीभाव से च्यव कर गर्भज मनुष्यों में उत्पन्न हुई—वहां वह पर्याप्ति की पूर्णता के अनन्तर ही तथाविध अध्यवसाय से मृत्यु को प्राप्त हो गई और मरकर वहपुनः देवी की पर्याय से उत्पन्न हो गई—इस प्रकार से देवी की पर्याय छोड़कर पुनः देवी रूप से उत्पन्न होने में कम से कम अन्तरकाल एक अन्तर्मुहूर्त्त काही आता है उत्कर्षसे वनस्पति काल प्रसिद्ध ही है । देवीस्त्री के इस सामान्य रूप से कथित जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर काल के जैसा ही अन्तरकाल असुरकुमार देवी से लेकर यावत् ईशान देवी तक जानना चाहिये । सूत्र॥५।

અંતર કાલ કેટલો કહ્યો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે--"**गोयमा ! अंतो मुहुत्तं देवित्थीणं सव्वासिं जहण्णेणं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**" સઘળી દેવીયોને અંતરકાલ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તને છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાલના પ્રમાણનું અનંતકાળનું છે. જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્ત આ પ્રમાણેનું હોય છે કોઇ દેવી દેવીભવથી ચ્યવીને ગર્ભજ મનુષ્યોમાં ઉત્પન્નથઇ હોય અને ત્યાં તે પર્યાપ્તિની પૂર્ણતાપછીજ તેવા પ્રકારના અધ્યવસાયથી મરીજાય અને મરીને તે ફરીથી દેવીના પર્યાયથી ઉત્પન્નથઇજાય તો આવીરીતે દેવીના પર્યાયને છોડીને ફરીથી દેવી પણાથી ઉત્પન્નથવામાં ઓછામાં ઓછો અંતરકાળ એક અંતર્મુહૂર્તને જ આવે છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળ પ્રમાણે આવે છે દેવીયોના આ સામાન્ય અને વિશેષ પ્રકારથી કહેલ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ અંતરકાળ ની જેમજ અસુરકુમાર દેવીયોથી લઇને યાવત્ ઈશાન દેવીયો સુધીનો અંતરકાલ સમજવો. ॥ સૂ૦ ૫ ॥

प्रतिपादनार्थमाह- 'एयासिणं' इत्यादि; ।

मूलम्—'एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं मणुस्सित्थीणं देवित्थीणं कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा, ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सिथीओ, तिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणाओ, देवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ । एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीण य कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा, विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ, थलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ, जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जागुणाओ ॥ एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाण य कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हरिवासरम्मयवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवयएरण्णवयवास अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ । एयासिणं भंते ! देवित्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीण य कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणियदेवित्थीओ भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ, वाण-

मंतरदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ, जोइसियदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ। एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं मणुसित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं, देवित्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणिणीण य कयराओ कयराहितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ, देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्ज गुणाओ, हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखिज्जगुणाओ, हेमवयएरण्णवयवासअकम्मभूमिगमणुसित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, भरहेरवयवासकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेहवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, वेमाणियदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ, भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ, खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणाओ, थलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ, जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ, वाणमंतदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ, जोइसियदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ ॥ सू० ६ ॥

छाया—एतासां खलु भदन्त ! तिर्यग्योनिकस्त्रीणां मनुष्यस्त्रीणां देवस्त्रीणां कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका मनुष्यस्त्रियः, तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः, देवस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः। एतासां खलु भदन्त ! तिर्यग् योनिकस्त्रीणां जलचरीणां स्थलचरीणां खेचरीणां च कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः, स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रिय संख्येयगुणाः, जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः। एतासां खलु

भदन्त ! मनुष्यस्त्रीणां कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपिकानां च कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः, देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिक मनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे । एतासां खलु भदन्त ! देवस्त्रीणां भवनवासिनीनां वानव्यन्तरीणां ज्योतिष्कीणां वैमानिकीनां च कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका वैमानिकस्त्रियः, भवनवासिदेवस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः, वानव्यन्तरदेवस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः ज्योतिष्कदेवस्त्रियः संख्येयगुणा । एतासां खलु भदन्त ! तिर्यग्योनिकस्त्रीणां जलचरीणां स्थलचरीणां खेचरीणां मनुष्यस्त्रीणां कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपिकानां देवस्त्रीणां भवनवासिनीना वानव्यन्तरीणां ज्योतिष्कीणां वैमानिकीनां च कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ? सर्वस्तोका अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः, देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, पूर्वविदेहापरविदेहवर्षकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियौ द्वे अपि तुल्ये संख्येयगुणे, वैमानिकदेवस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः, भवनवासिदेवस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः, खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः, स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणा, जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः, वानव्यन्तरदेवस्त्रियः संख्येयगुणा, ज्योतिष्कदेवस्त्रियः संख्येयगुणाः ॥सू०६॥

अब सूत्रकार समस्त तिर्यग्योनिकादि स्त्रियों का अल्प बहुत्व प्रकट करते हैं इनमें प्रथम अल्प बहुत्व का कथन सामान्य से तिर्यक् मनुष्य देवी स्त्रियों की अपेक्षा से किया है १ द्वितीय अल्प बहुत्व का कथन तीन प्रकार की तिर्यग् स्त्रियों की अपेक्षा से किया है २, तृतीय अल्प बहुत्वका कथन तीन प्रकार की मनुष्यस्त्रियो की अपेक्षा से किया गया है ३, और चतुर्थ अल्प

હવે સૂત્રકાર સઘળી તિર્યગ્યોનિક વિગેરેની સ્ત્રિયોનું અલ્પ, બહુપણું પ્રગટ કરે છે. તે પાંચ પ્રકારનું હોય છે. તેમાં પહેલા અલ્પ, બહુપણાનું કથન સામાન્યપણાથી તિર્યગ્ મનુષ્ય સ્ત્રી તથા દેવીયોની અપેક્ષાથી કરેલ છે ૧, બીજા અલ્પ, બહુપણા નું કથન ત્રણ પ્રકારની તિર્યગ્ સ્ત્રીયોની અપેક્ષાથી કરેલ છે. ૨, ત્રીજા અલ્પ બહુપણા નું કથન ત્રણ પ્રકારની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી કરવામાં આવેલ છે ૩, અને ચોથા અલ્પ, બહુપણાનું કથન

टीका—'एयासि णं भंते' एतासां सामान्यस्त्रीणां खलु भदन्त ? 'तिरिक्खजोणित्थीणं' तिर्यग्योनिकस्त्रीणाम् 'मणुस्सित्थीणं' मनुष्यस्त्रीणाम्, 'देवित्थीणं' देवस्त्रीणाम् 'कयरा कयरा हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिकावेति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ? 'सव्वत्थोवा मणुस्सित्थीओ' सर्वस्तोकाः सर्वेभ्यः स्त्रीभ्योऽपेक्षया मनुष्यस्त्रियोऽल्पा भवन्ति, तासां मनुष्यस्त्रीणां संख्यातकोटिकोटिप्रमाणत्वात् इति। 'तिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणाओ' मनुष्यस्त्रीभ्य स्तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽसंख्यातगुणा अधिका भवन्ति, प्रतिद्वीपं प्रतिसमुद्रं तिर्यग्योनिकस्त्रीणामतिबहुतया संभवात् द्वीपसमुद्राणां चासख्येयत्वात्तदाश्रितानां

बहुत्व चार प्रकार की देवस्त्रियों की अपेक्षा से किया गया है ४, पचम अल्प बहुत्व अपने अपने भेद युक्त स्त्रियो को मिलाकर किया गया है ५।

इन में प्रथम प्रकार का जो अल्प बहुत्व है उसके सम्बन्ध में गौतम प्रभु से ऐसा पूछते है "एतासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं मणुस्सित्थीणं देवीत्थीणं कयरा कयरा हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा" हे भदन्त ! इन तिर्यक् स्त्रियो में और देवस्त्रियों में कौन स्त्रियां किन स्त्रियों की अपेक्षा अल्प है ? कौन स्त्रियां किन स्त्रियो की अपेक्षा बहुत है कौन स्त्रियां किन स्त्रियो की अपेक्षा बराबर है और कौन स्त्रियां किन स्त्रियो की अपेक्षा विशेषाधिक है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु गौतम से कहते हैं—"गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सित्थीओ" हे गौतम ! सबसे कम मनुष्य स्त्रियां है क्योंकि इनकी संख्यात संख्या कोटि कोटि प्रमाण ही कही गई है। 'तिरिक्खजोणित्थीओअसंखेज्जगुणाओ' इनकी अपेक्षा तिर्यग्योनिक स्त्रियां असख्यात गुणित अधिक कही गई हैं क्योंकि हर एक द्वीप में हर एक समुद्र

ચાર પ્રકારની દેવિયોની અપેક્ષાથી કરેલ છે. ૪, પાચમા અલ્પ બહુપણાનું કથન પોતપોતાના ભેદ વાળી સ્ત્રિયો મેળવીને કહેલ છે.

આ પાંચ પ્રકારના અલ્પ, બહુપણામાં પહેલા પ્રકારનું જે અલ્પ, બહુપણું છે, તેના વિષયમાં ગૌતમસ્વામી પ્રભુને પૂછે છે કે—"एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं मणुस्सित्थीण, देवित्थीणं कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा,, હે ભગવન્ આ તિર્યંચ સ્ત્રિયોમા અને દેવિયોમાં કઈ સ્ત્રિયો કઈસ્ત્રિયો કરતા અલ્પ છે ? કઈસ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયો કરતાં વધારે છે ? અને કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયોની બરાબર છે ? અને કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયોથી વિશેષ અધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सित्थीओ,, હે ગૌતમ ! સૌથીઓછી મનુષ્યની સ્ત્રિયો છે કેમકે તેઓની સખ્યા, સંખ્યાત કોટી કોટિ પ્રમાણની જ કહી છે "तिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणाओ,, તેના કરતાં તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો અસંખ્યાતગણી વધારે કહેલ છે. કેમકે દરેક દ્વીપમા, દરેક સમુદ્રમાં, તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોનુ

तिर्यक्स्त्रीणामपि मनुष्यस्त्र्यपेक्षया आधिक्यस्य सुतरामेव सिद्धत्वादिति । **'देवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** तिर्यक्स्त्रीभ्योऽपि देवस्त्रियोऽसंख्यातगुणा अधिका भवन्ति, भवनवासिवानव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवस्त्रीणां प्रत्येकमसंख्येयश्रेण्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति भवन्ति देवस्त्रियः सर्वाभ्यः स्त्रीभ्योऽसंख्यातगुणा अधिका इति ॥१॥

द्वितीयमल्पबहुत्वमाह—**'एयासि णं'** इत्यादि, **'एयासि णं भंते'** एतासां खलु भदन्त ? स्त्रीणाम् **'तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीण य'** तिर्यग्योनिकस्त्रीणां जलचरीणां थलचरीणां खेचरीणा च **'कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा'** कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वेति प्रश्न', भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि,

---

में तिर्यग्योनिक स्त्रियो की अति बहुलता है और द्वीप समुद्र भी असंख्यात कहे गये हैं अतः इनके आश्रित रही हुई तिर्यक् स्त्रियो में मनुष्य स्त्रियों की अपेक्षा असंख्यातता अपने आप ही सिद्धहोजाती है **"देवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ"** तिर्यक् स्त्रियोंकी अपेक्षा देवस्त्रियां असंख्यात गुणित अधिक कही गई हैं। क्योंकि भवनवासी वानव्यन्तर ज्योतिष्क सौधर्म और ईशान इन देवों में प्रत्येक देव की स्त्रियां असंख्यात श्रेण्याकाश की प्रदेश राशि प्रमाण कही गई है। इसलिए इन में समस्त स्त्रियो की अपेक्षा से असंख्यात गुणता कही गई है।

द्वितीय अल्पबहुत्व का कथन इस प्रकार से है **"एयासि णं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीण खहयरीण य कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा, विसेसाहिया वा"** हेभदन्त!ये जो जलचरी, थलचरी, खेचरी, तिर्यक्स्त्रियां हैं—सो इनमें कौन स्त्रियां किन स्त्रियोसे अल्प हैं! कौन स्त्रियां किन स्त्रियोंसे बहुत है? कौन स्त्रियां किन स्त्रियों के बराबर है ? और कौन स्त्रियां किनस्त्रियों से विशेषाधिक है ?

પ્રમાણ અતિવિશાળ છે અને દ્વીપ સમુદ્રપણ અસંખ્યાત કહેલ છે તેથી તેના આશ્રયથી રહેલ તિર્યંચસ્ત્રિયોમાં મનુષ્યસ્ત્રિયો કરતાં અસંખ્યાત પણુ પોતાની મેળેજ સિદ્ધ થઇ જાય છે **"देवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ,**, તિર્યંચ સ્ત્રિયોના કરતાં દેવિયો અસંખ્યાત ગણી કહી છે. કેમકે-ભવનવાસી, વાનવ્યંત જ્યોતિષ્ક સૌધર્મ અનેઇશાન-આ દેવોમાં દરેક દેવની સ્ત્રિયો અસંખ્યાત શ્રેણ્યાકાશની પ્રદેશરાશિપ્રમાણુની કહી છે તેથી તેઓમાં સઘળી સ્ત્રિયો કરતાં અસંખ્યાત ગણું કહ્યું છે.

બીજા અલ્પ બહુત્વનું કથન આ પ્રમાણે છે—**"एया सिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीण थलयरीणं खहयरीण य कयरा कयराहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्लावा, विसेसाहिया वा"** હે ભગવન્ જે આ જલચરી, સ્થલચરી, ખેચરી, તિર્યંગ્ યોનિક સ્ત્રિયો છે, તેઓમાં કઇ સ્ત્રિયો કઇ સ્ત્રિયો કરતાં અલ્પ નામ ઓછી છે ? કઇ સ્ત્રિયો કઇ સ્ત્રિયો કરતાં વધારે છે ? કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયોની બરોબર છે ? અને કઈ સ્ત્રિયો કઇ સ્ત્રિયો કરતાં વિશેષાધિક છે ?

गोयमा हे गौतम ! 'सव्वत्थोवाओ खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ' आसु तिर्यग् जलचर स्थलचरखेचरस्त्रीषु सर्वापेक्षया सर्वस्तोकाः खेचरस्त्रियो भवन्ति, 'थलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ' खेचरीभ्यः स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति, खेचरीभ्यः स्थलचरीणां स्वभावतएव प्राचूर्येण संभवादिति, 'जलयरतिरिक्ख जोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ' स्थलचरीभ्यो जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति, लवणे कालोदे स्वयंभूरमणे च समुद्रे मत्स्यानामतिप्राचूर्येण भावात्, स्वयंभूरमणसमुद्रस्य च शेषसमस्तसमुद्रापेक्षयाऽतिविशालत्वादतः स्थलचरस्त्र्यपेक्षया जलचर्यः संख्यातगुणा अधिका भवन्तीति भावः ॥२॥

कथितं द्वितीयमल्पबहुत्वं सम्प्रति—तृतीयमल्पबहुत्वमाह—'एयासि णं' इत्यादि, 'एयासि णं भंते' एतासां खलु भदन्त ! 'मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतर-

---

इसके उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा!सव्वत्थोवाओ खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ" हे गौतम ! सब से कम खेचर तिर्यक स्त्रिया हैं। इनकी अपेक्षा "थलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ" स्थलचर तिर्यगयोनिकस्त्रियां संख्यात गुणीत है क्योंकि खेचर स्त्रियों की अपेक्षा स्थलचर स्त्रियां स्वभावतः प्रचुरमात्रा में होती है "जलचर तिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ" स्थलचर तिर्यग् त्रियों की अपेक्षा जलचर तिर्यग्योनिकस्त्रियां सख्यात गुणी अधिक हैं। क्योंकि लवणसमुद्र मे, कालोदधि समुद्र में और स्वयंभूरमण समुद्र में मछलियो का सद्भाव बहुत ही अधिक प्रचुरमात्रा मे पाया जाता है अन्य सब समुद्रोंकी अपेक्षा स्वयंभूरमण समुद्र बहुत विस्तार वाला है अतः स्थलचर स्त्रियों की अपेक्षा जलचर स्त्रियां संख्यात गुणी अधिक कही गई है।२।

अब तृतीय प्रकार का जो अल्पबहुत्व है—सूत्रकार उसे प्रकट करते हैं "एया सि णं भंते मणुस्सित्थीणं। कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाण य वा कयरा कयराहिंतो

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે - "गोयमा! सव्वत्थोवाओ खहयर तिरिक्खजोणित्थीओ" હે ગૌતમ! સૌથી ઓછી ખેચર તિર્યગ્યોનિકસ્ત્રિયો છે, તેના કરતાં 'थलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ" સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાત ગણી છે કેમ કે— ખેચર સ્ત્રિયો કરતાં સ્થલચરસ્ત્રિયો સ્વભાવથી જ વધારે પ્રમાણમાં હોય છે "जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्ज गुणाओ" સ્થલચર સ્ત્રિયોના કરતાં જલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે કેમ કે-લવણ સમુદ્રમા, કાલોદધિ સમુદ્રમાં અને સ્વયંભૂરમણ સમુદ્રમાં માછલીયોનો સદ્ભાવ મોટા પ્રમાણમા હોય છે બીજા બધા સમુદ્રો કરતાં સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર ઘણાવિસ્તાર વાળો છે. તેથી સ્થલચર સ્ત્રિયોકરતાં જલચરસ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે. ।૨।

હવે ત્રીજા પ્રકારનું જે અલ્પ બહુ પણું છે, તેને પ્રગટ કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે— "पयासि णं भंते! मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अंतरदीवियाण य कयरा कयराहितो!

दीवियाण य कयरा कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' मनुष्यस्त्रीणां कर्मभूमिकानाम् अकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपिकानां च कतराः कतराभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा भवन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीयाओ' सर्वस्तोकाः सर्वासां मध्ये कर्मभूमिकाकर्मभूमिकान्तरद्वीपकस्त्रीणां मध्ये स्तोकाः—अल्पाः अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकस्त्रियो भवन्तिक्षेत्रस्याल्पत्वात् तत्र स्थिता अपि अल्पा एव भवन्तीति। 'देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिक मनुष्यस्त्रीरपेक्ष्य देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्य स्त्रियः द्वयोऽपि तुल्याः सत्य. संख्येयगुणा अधिका भवन्ति क्षेत्रस्य सख्येयगुणाधिकत्वात् । स्वस्थाने द्वयोनामपि परस्परं प्रति तुल्यत्वमेव समानप्रमाणक्षेत्रत्वात् । 'हरिवासरम्मयवासअकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वयोऽपि

अप्पावा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहियावा' हे भदन्त ! ये जो कर्मभूमिक मनुष्य स्त्रिया अकर्मभूमिक मनुष्यस्त्रिया तथा- अन्तरद्वीपक मनुष्य स्त्रियां है इन में कौन स्त्रियां किनस्त्रियों का अपेक्षा अल्प है ? कौन किनसे अधिक है ; कौन किन के बराबर है ? और कौन किनसे विशेषाधिक है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीयाओ" हे गौतम कर्मभूमि अकर्मभूमि, अन्तरद्वीप इन तीनों क्षेत्रों की स्त्रियों में सब से कम अन्तर द्वीप अकर्मभूमि गत मनुष्य स्त्रियां हैं । क्यों की अन्तरद्वीप क्षेत्र बहुत अल्प है इसलिये उनमें रहने वाली स्त्रिया भी बहुत अल्प है "देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" अन्तरद्वीप गत मनुष्य स्त्रियों की अपक्षा देवकुरु और उत्तर कुरुकी जो मनुष्य स्त्रिया है वे परस्पर में तुल्य हैं किन्तु अन्तर द्वीप स्त्रियों की अपेक्षा संख्यात गुणित अधिक हैं ।"हरिवासरम्म-

---

अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा," હે ભગવન્ જે આ કર્મભૂમીની મનુષ્ય સ્ત્રિયો, અકર્મભૂમિની મનુષ્યસ્ત્રિયો, તથા અંતરદ્વીપની મનુષ્ય સ્ત્રિયો છે, તેઓમાં કઈ સ્ત્રિયો, કઈ સ્ત્રિયો કરતા અલ્પ-ઓછી છે ? કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયો કરતાં બધારે છે ? કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયો ની બરાબર છે. અને કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયો કરતાં વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीयाओ" હે ગૌતમ કર્મભૂમિ, અકર્મભૂમિ, અંતરદ્વીપ આત્રણે ક્ષેત્રોની સ્ત્રિયોમા સૌથી ઓછી અંતરદ્વીપ અકર્મભૂમમા રહેલ મનુષ્યની સ્ત્રિયો છે કેમકે—અંતરદ્વીપ ક્ષેત્ર બહુઅલ્પ-નામ નાનું છે. તેથી તેમાં રહેવાવાળી સ્ત્રિયો પણ ઘણી અલ્પ છે "देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" અંતરદ્વીપમા રહેલ મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતા દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ ની જે મનુષ્યસ્ત્રિયો છે, તેઓ પરસ્પરમાં તુલ્ય છે. પરંતુ તે અંતર દ્વીપ ની સ્ત્રિયો કરતા સંખ્યાત ગણી વધારે છે "हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगम-

तुल्याः सङ्ख्येयगुणाधिका', देवकुरूत्तरकुरुमनुष्यस्त्र्यपेक्षया हरिवर्षरम्यकवर्षमनुष्यस्त्रियः सङ्ख्येय-गुणाः अधिका भवन्ति देवकुरूत्तरकुरुक्षेत्रापेक्षया हरिवर्षरम्यकक्षेत्रस्यातिप्रचुरत्वात् । स्वस्थाने तु द्वयीनामपि परस्परं तुल्यत्वम्, क्षेत्रस्य समानत्वात् **'हेमवयएरण्णवयवासअकम्मभिभूग मणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ'** हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्य-स्त्रियो द्वय्योऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः, हरिवर्षकरम्यकवर्ष मनुष्यस्त्रीणामपेक्षया हैमवतैरण्यवतवर्षा कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति यद्यपि हरिवर्षरम्यकवर्ष क्षेत्रापेक्षया हैमवतैरण्यवत-क्षेत्रस्याल्पत्वं तथापि अल्पस्थितिकतया बहूनां तासां तत्र संभवात् । स्वस्थाने द्वयीनामपि परस्परं तुल्यतैवेति । **'भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगु-**

गवास अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ-संखेज्जगुणाओ"दोनों क्षेत्र समान प्रमाण वाले होनेसे हरिवर्ष और रम्यक वर्ष इन दोनो अकर्मभूमि क्षेत्रो को स्त्रियां परस्पर में तुल्य है परन्तु देवकुरु और उत्तरकुरु की मनुष्यस्त्रियों की अपेक्षा संख्यात गुणित अधिक हैं । क्योंकी देवकुरु और उत्तरकुरुक्षेत्रों की अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यकवर्ष क्षेत्र अति वि-स्तृत है । स्वस्थान में जो दोनों में तुल्यता प्रकटकी गई है वह क्षेत्रकी समानता को लेकर की गई है **"हेमवयएरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ सखेज्ज-गुणाओ"** हैमवत और ऐरण्यवत क्षेत्र की जो मनुष्य स्त्रियां हैं वे आपस में तुल्य हैं– परन्तु हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की स्त्रियों की अपेक्षा संख्यात गुणित अधिक हैं । यद्यपि ह-रिवर्ष और रम्यकवर्ष क्षेत्रों की अपेक्षा हैमवत क्षेत्र और ऐरण्यवत ये दोनों क्षेत्रविस्तार में कम है परन्तु यहा पर रहने वाली स्त्रियों की स्थिति अल्प होती है–अतः ऐसी स्त्रियां यहां अधिक होती हैं । **"भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ**

णुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ-संखेज्जगुणाओ" બન્ને ક્ષેત્રો સરખા પ્રમાણ વાળ હોવાથી હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ આ બન્ને અકર્મભૂમિ ક્ષેત્રોની સ્ત્રિયો પરસ્પર સમાન છે—પરંતુ દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ ની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી સંખ્યાત ગણી વધારે છે. કેમકે— દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ કરતાં હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ ક્ષેત્ર અત્યંત વિસ્તાર વાળું છે. સ્વસ્થા-નમાં જે બન્નેમાં સમાનપણું પ્રગટ કર્યું છે, તે ક્ષેત્રના સમાનપણા ને લઈને કહે વામાં-આવેલ છે. **"हेमवयपरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओसंखेज्जगुणाओ'** હૈમવત અને ઐરણ્યવત ક્ષેત્રની જે મનુષ્ય સ્ત્રિયો છે, તેઓ પરસ્પરમા તુલ્ય એટલે કે સમાન પ્રમાણવાળી છે. પરતું હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ ની સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી સખ્યાતગણી વધારે છે જો કે હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ ક્ષેત્રોની અપેક્ષા થી હૈમવત ક્ષેત્ર અને ઐરણ્યવત ક્ષેત્ર આ બન્ને ક્ષેત્રો વિસ્તારમાં ઓછા છે. પરંતુ અહિયાં રહેવાવાળી સ્ત્રિયોની સ્થિતિ અલ્પ હોય છે તેથી એવી સ્ત્રિયો ત્યાં વધારે હોય છે **'भरहेरवयवा-सकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ"** ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવત ક્ષેત્ર

णाओ' भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः, हैमवतैरण्यवत वर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्र्यपेक्षया भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति, कर्मभूमिकतया स्वभावत एव तत्र प्राचुर्येण संभवात्, स्वस्थाने तु द्वय्योऽपि परस्परं तुल्या भवन्तीति भाव । **'पुव्वविदेहअवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ'** भरतैरवतमनुष्यस्त्रीभ्यः पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति क्षेत्रबाहुल्यादजितस्वामिकाल इव स्वभावत एव तत्र प्राचुर्येण भावात् स्वस्थाने तु द्वयीनामपि परस्परं तुल्यतेति तृतीयमल्पबहुत्वमिति ॥३ ।

अथ चतुर्थमल्पबहुत्वमाह—**'एयासि णं'** इत्यादि, **'एयासि णं भंते'** एतासा खलु भदन्त **देवित्थीणं भवणवासिणोणं वाणमंतरीणं'** देवस्त्रीणां भवनवासिनीनां वानव्यन्तरीणाम् **'जोइसिणीण वेमाणिणीण य'** ज्योतिष्कीनां वैमानिकीनां च **'कयरा कयराहिंतो अप्पा वा, बहुया वा,**

संखेज्जगुणाओ'' भरत क्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र ये कर्मभूमिके क्षेत्र हैं अतः यहांकी मनुष्य स्त्रिया हैमवत एवं ऐरण्यवत क्षेत्र की अपेक्षा संख्यात गुणित अधिक हैं—परन्तु फिर भी ये परस्पर में तुल्यहैं।

कर्म भूमिके क्षेत्र होने से यहा स्वाभाविक रूप से स्त्रियों की अधिक उत्पत्ति होती है। **पुव्वविदेहअवरविदेहअकम्म भूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ ''** पूर्वविदेह और पश्चिमविदेह इन दो कर्म भूमि के क्षेत्रों की मनुष्य स्त्रियां परस्पर में समान हैं परन्तु फिर भी भरत क्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र को मनुष्य स्त्रियों की अपेक्षा ये संख्यात गुणो अधिक हैं।क्योंकि क्षेत्र की बहुलता है। अतः अजित स्वामी के काल के जैसा स्वभावतः इन की यहां प्रचुरता है।

चतुर्थ प्रकार का अल्प बहुत्व इस प्रकार से हैं–**''एयासि णं भंते। देवित्थीणं भवण वासिणीणं वाणमंतरीण जोइसिणीणं वेमाणिणीण य''** हे भदन्त ! इन भवनवासिनी वान व्यन्तर-

---

આ કર્મભૂમિના ક્ષેત્રો છે તેથી અહિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો હૈમવત અને ઐરણ્યવત ક્ષેત્રોની અપેક્ષાથી સંખ્યાત ગણી વધારે છે પરતુ પરસ્પમાં તેઓ સરખી છે કર્મભૂમિનુ ક્ષેત્ર હોવાથી અહિયાં સ્વાભાવિક પણાથી સ્ત્રિયોની ઉત્પત્તિ વધારે હોય છે **"पुव्वविदेह अवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ"** પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમવિદેહ આ બે કર્મભૂમિના ક્ષેત્રોની મનુષ્ય સ્ત્રિયો પરસ્પરમા સરખી છે પરંતુ ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવત ક્ષેત્રની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની અપેક્ષાથી તેઓ સંખ્યાત ગણી વધારે છે. કેમ કે—ક્ષેત્રનું વિશાળ પણું છે તેથી અજીત સ્વામીના કાળની જેમ સ્વભાવ થી જ તેમનું અહિયા વિશેષ પણું છે આ ત્રીજા પ્રકારનું અલ્પ બહુ પણુ છે

ચોથા પ્રકારનું અલ્પ બહુ પણું આ પ્રમાણે છે—**''एयासि णं भंते ! देवित्थी णं भवणवासिणीणं वाणमंतराणं जोइसिणीणं वेमाणिणो य''** હે ભગવન્ આ ભવનવાસી દેવની દેવિયો,

तुल्लावा विसेसाहिया वा' कतराः कतराभ्योऽल्पावा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वेति प्रश्नः भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **सव्वत्थोवाओ वेमाणियदेवित्थीओ'** सर्वस्तोका वैमानिकदेवस्त्रियः अंगुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेर्यद् द्वितीयं वर्गमूलं तस्मिन् तृतीयेन वर्गमूलेन गुणने कृते यावान् प्रदेशराशिस्तावत् प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणीषु यावन्तो नभःप्रदेशाः द्वात्रिंशत्तमभागहीनाः तावत्प्रमाणत्वात् प्रत्येकसौधर्मेशानदेवस्त्रीणामिति **'भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** वैमानिकदेवस्त्रीभ्यो भवनवासि देवस्त्रियोऽसंख्येयगुणा अधिका भवन्ति अंगुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेर्यत् प्रथमं वर्गमूलं तस्मिन् द्वितीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि स्तावत्प्रमाणासु श्रेणीषु यावान् प्रदेशराशि द्वात्रिंशत्तमभागहीनस्ताव-

---

ज्योतिष्की और वैमानिकी देवस्त्रियों में "**कयरा**" कौन देवस्त्रियां "**कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा**" किन देवस्त्रियां से कौन अल्प हैं ? कौन किनसे बहुत हैं ? कौन किन के तुल्य है ? कौन किन से विशेषाधिक है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं— **गोयमा सव्वत्थोवाओ वेमाणियदेवत्थीओ"** सब देवस्त्रियो में सब से कम वैमानिक-देवस्त्रियां हैं इसका भाव ऐसा है अंगुल मात्र प्रदेश राशि का जो द्वितीय वर्गमूल है उसे तृतीय वर्गमूल से गुणित करने पर जितनी प्रदेशराशि आती है उतने प्रमाण वाली घनी कृतलोक की ही एकदेशवाली श्रेणियों में जितने प्रदेश हो उन प्रदेशो को बत्तीसवें भाग हीन कर दो फिर जो प्रमाण बचे सो उतना प्रमाण सौधर्म और ईशान की देवस्त्रियों का है। "**भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ**" वैमानिकदेवस्त्रियों की अपेक्षा भवनवासि देव-स्त्रियां असख्यात गुणी अधिक है–तात्पर्य इसका यह हैं कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशि का जो प्रथम वर्गमूल है उसे द्वितीय वर्गमूल से गुणित करने पर जितनो प्रदेशराशि हों

વાનવ્યન્તર દેવની દેવિયો, જ્યોતિષ્ક દેવની દેવિયો, અને વૈમાનિકી દેવની દેવિયોમાં "**कयरा**" કઈ દેવિયો "**कयराहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा**" કઈ દેવિયોથી કઈ દેવીયો અલ્પ છે ? કોનાથી કઈદેવિયો વધારે છે ? કોણુ કોની બરોબર છે ? કોણુ કોનાથી વિશેષા-ધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે–**गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणिय-देवत्थीओ"** સઘળીદેવિયોમાં સૌથી ઓછી વૈમાનિક દેવની દેવિયો છે, કહેવાનો હેતુ એ છે કે— આંગળમાત્ર પ્રદેશ રાશિનો જે બીજો વર્ગમૂળ છે, તેને ત્રીજાવર્ગ મૂળ થી ગુણવાથી જેટલી પ્રદે-શરાશિ આવે છે, એટલા પ્રમાણુવાળી ઘનીકૃતલોકનીજ એકદેશવાળી શ્રેણીયોમા જેટલા પ્રદેશો હોય તે પ્રદેશો ને બત્રીસમાભાગથી ઓછા કરવાથી જે પ્રમાણ બચે તેટલું પ્રમાણ સૌધર્મ અને ઇશાન દેવલોકની દેવિયોનું છે. '**भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ**" વૈમાનિક દેવિયો કરતા ભવનવાસિ દેવિયો અસંખ્યાતગણી વધારે છે. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે— આંગળમાત્ર ક્ષેત્રની પ્રદેશરાશિનુ જે પહેલું વર્ગમૂળ છે, તેને બીજા વર્ગમૂળથી ગુણવાથી

त्प्रमाणत्वात् भवनवासिदेवस्त्रीणाम्, अतो वैमानिकदेव्यपेक्षया भवणवासिन्य' असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीत्युक्तम् । 'वाणमंतरदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ' वानव्यन्तरदेवस्त्रियो भवनवासिदेवस्त्र्यपेक्षया असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति, संख्येययोजनप्रमाणैकप्रादेशिक श्रेणिमात्राणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तेभ्योऽपि द्वात्रिंशत्तमे भागेऽपनीते यच्छेषमवतिष्ठते तावत्प्रमाणत्वात् वानव्यन्तरीणामिति । 'जोइसियदेवित्थीओ असंखेज्ज-गुणाओ' ज्योतिष्कदेवस्त्रियो वानव्यन्तरदेव्यपेक्षया असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति, षट्पञ्चाशदधिक शतद्वयाङ्गुलप्रमाणैव प्रादेशिकश्रेणिमात्राणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन प्रतरे भवन्ति तेभ्यो द्वात्रिंशत्तमे भागेऽपसारिते यावान् प्रदेशराशि र्भवति तावत्प्रमाणत्वाज्ज्योतिष्कदेवीनाम् अतो वानव्यन्तरदेव्यपेक्षया ज्योतिष्कदेव्योऽसंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति चतुर्थमल्प-बहुत्वमिति ॥

उतने प्रमाण वाली श्रेणियो में जितनी प्रदेशराशिहो उस प्रदेशराशि को बत्तीसवें भाग करदो फिर जो प्रमाण बचे सो उतना प्रमाण भवनवासि देवस्त्रियों का है इस प्रकार करने से यह ज्ञात हो जाता है कि वैमानिक देवों की स्त्रियों की अपेक्षा भवनवासि देवस्त्रियों का प्रमाण असंख्यात गुणा अधिक हैं । "वाणमंतरदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ" वानव्यन्तर देवियां भवन-वासि देवियोंकी अपेक्षा असंख्यात गुणी अधिक हैं । इसे यों समझना चाहिए—एक प्रतर में संख्यात योजन प्रमाण वाले एक प्रदेशों की श्रेणि प्रमाण जितने खण्ड हों उनमें से बत्तीसवां भाग कम करो—ऐसा—करने पर जो बाकी रहे उतने प्रमाणवाली वानव्यन्तर देवियां हैं । "जोइसियदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ" ज्योतिष्क देवों की स्त्रियो का प्रमाण वानव्यन्तर देवियों के प्रमाण से असंख्यात गुणा अधिक है । अर्थात् दोसौ छप्पन (२५६) अंगुल प्रमाण के जितने खण्ड एक प्रतर में होते हों उनमें से बत्तीसवा भाग कम करने पर जितने

જેટલી પ્રદેશ રાશી હોય એટલા પ્રમાણ વાળી શ્રેણિયોમાં જેટલી પ્રદેશ રાશી હોય એ પ્રદેશ રાશિનો બત્રીસમોભાગ કરવાથી જે પ્રમાણ બચે એટલુ પ્રમાણ ભવન-વાસી દેવિયોનું છે આ રીતે કરવાથી એ સમજાવવામાં આવે છે કે—વૈમાનિક દેવોની દેવિયો કરતા ભવનવાસિ દેવિયોનુ પ્રમાણ અસંખ્યાત ગણું વધારે છે "वाणमंतर-देवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ" વાનવ્યંતર દેવિયો ભવનવાસી દેવિયો કરતા અસંખ્યાતગણી વધારે છે તે આવીરીતે સમજવું —એક પ્રતરમાં સંખ્યાતયોજન પ્રતર પ્રમાણ વાળા એક પ્રદેશોની શ્રેણી પ્રમાણના જેટલા ખડ હોય, તેમાંથી બત્રીસમો ભાગ ઓછો કરતાં જે બાકી રહે એટલા પ્રમાણવાલી વાનવ્યન્તર દેવિયો છે "जोइसियदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ" જ્યોતિષ્ક દેવોની દેવીયોનું પ્રમાણ વાનવ્યન્તર દેવિયોના પ્રમાણથી અસંખ્યાતગણું વધારે છે. અર્થાત ૨૫૬ બસોછપ્પન આંગળ પ્રમાણના જેટલા ખડ એક પ્રતરમાં થતાહોય, તેમાંથી બત્રીસમોભાગ ઓછો કરવાથી જેટલી પ્રદેશ રાશિયો બાકી બચે એટલા પ્રમાણ-

समाप्तं चतुर्थमल्पबहुत्वम् इदानीं समस्तस्त्रीविषयं पञ्चममल्पवहुत्वमाह-'एयासि णं' इत्यादि, 'एयासि णं भंते' एतासां खलु भदन्त ? 'तिरिक्खजोणित्थीणं' तिर्यग् योनिकस्त्रीणाम् 'जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं' जलचरीणां स्थलचरीणां खेचरीणाम् 'मणुस्सित्थीणं' मनुष्यस्त्रीणाम् 'कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं' कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकाना मन्तरद्वीपिकानाम् 'देवित्थीणं' देवस्त्रीणाम् 'भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणिणीण य' भवनवामिनीनां वानव्यन्तरीणां ज्योतिष्कीनां वैमानिकीनां स्त्रीणाञ्च 'कयराओ कयराहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा' कतरा· कतराभ्योऽल्पा वा तुल्या

प्रदेश राशि बाकी बची रहे उतने प्रमाणवाली ज्योतिष्क देवियां हैं। इस प्रकार से वानव्यन्तर-देवियों की अपेक्षा ज्योतिष्क देवियों का प्रमाण असंख्यात गुणा अधिक आता है।४।

अब पांचवां अल्प बहुत्व समस्तस्त्रियों को लेकर कहते हैं- "एयासि णं भंते ? तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं, खहयरीणं मणुस्सित्थीणं, कम्मभूमियाणं, अकम्म· भूमियाणं. अंतरदीवियाणं देवित्थीणं, भवणवासिणीणं, वाणमंतरीणं जोइसिणीणं, वेमाणिणीण य" इसमें भिन्न २ स्त्रियों के अल्प बहुत्व के सम्बन्ध में ऐसा पूछा गया है-कि हे भदन्त ! इन तिर्यग्योनिक स्त्रीरूप जलचर स्त्रियों में, थलचरियों में और खेचरियोमे मनुष्य स्त्री रूप कर्मभूमिको स्त्रियों में अकर्मभूमिकी स्त्रियोमे और अन्तरद्वीप की स्त्रियो में, और देवस्त्रियों में एवं भवनवासि देवस्त्रियो में वानव्यन्तर देवस्त्रियों में, ज्योतिष्क देवस्त्रियो में और वैमानिकदेवस्त्रियों में "कयराओ कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा" कौन स्त्रियां किन स्त्रियों की अपेक्षा अल्प हैं ? कौन स्त्रियां किन स्त्रियों से अधिक हैं ? कौन स्त्रियां किन स्त्रियों के बराबर है। तथा कौन स्त्रियां किन स्त्रियों से विशेषाधिक हैं ?

વાળી જ્યોતિષ્ક દેવિયો છે. આ રીતે વાનવ્યન્તર દેવિયો કરતા જ્યોતિષ્ક દેવોની દેવિયોનું પ્રમાણ અસંખ્યાત ગણુ વધારે છે ॥૪॥

હવે પાચમુ અલ્પ બહુ પણું સઘળી સ્ત્રિયો ને લઈને કહે છે.—"एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं, खहयरीणं मणुस्सित्थीण, कम्मभूमियाणं, अकम्मभूमियाण, अंतरदीवियाणं, देवित्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणी य" તેમાં જૂદી જૂદી સ્ત્રિયોના અલ્પ બહુપણાના સંબંધમાં એવું પૂછવામાં આવ્યુ છે કે— હે ભગવન્ આ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રી રૂપ જલચર સ્ત્રિયોમાં સ્થલચરિયોમાં, અને ખેચરિઓમાં મનુષ્ય સ્ત્રી રૂપ કર્મભૂમિની સ્ત્રિયોમાં, અકર્મભૂમિની સ્ત્રિયોમા અને અંતર દ્વીપની સ્ત્રીયોમાં અને દેવસ્ત્રિયોમા અનેભવનવાસી દેવોની દેવિયોમાં વાનવ્યંતર દેવિયોમાં જ્યોતિષ્કદેવિયોમાં અને વૈમાનિક દેવિયોમાં "कयराओ कयराहिंतो अप्पा वा बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा" કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયો કરતા અલ્પ છે ? કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયોકરતાં વધારે છે ? કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયોની બરોબર છે ? તથા કઈ સ્ત્રિયો કઈ સ્ત્રિયો કરતાં વિશેષાધિક છે ?

वा विशेषाधिका वेति प्रश्नः, भगवानाह—'गोमया' इत्यादि, 'गोमया' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ' सर्वाभ्यः स्त्रीभ्यः स्तोका अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीयो भवन्ति 'देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि तुल्याः, अन्तरद्वीपकस्त्र्यपेक्षया सख्यातगुणा अधिका भवन्ति, तथा—'हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि तुल्याः पूर्वापेक्षया सख्येयगुणा अधिका भवन्ति 'हेमवयएरण्णवयवासअकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ दो वि सखेज्जगुणाओ' हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि हरिवर्षरम्यकवर्षकस्त्र्यपेक्षया सख्येयगुणा अधिका भवन्तीति 'भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो

इस प्रश्न के उत्तरमें प्रभु गौतम से कहते हैं—"गोमया? सव्वत्थोवा अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ" सव से कम अन्तरद्वीप रूप अकर्मभूमिकी मनुष्य स्त्रियां है "देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' देवकुरु और उत्तर कुरुरूप अकर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियां अन्तरद्वीप की मनुष्य स्त्रियों की अपेक्षा संख्यात गुणी अधिक है। स्वक्षेत्र की अपेक्षा दोनों तुल्य है "हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" हरिवर्ष और रम्यक वर्ष रूप अकर्म भूमिकी मनुष्य स्त्रीयां देवकुरु और उत्तरकुरु की मनुष्य स्त्रियों की अपेक्षा परस्पर में तुल्य होती हुई सख्यात गुणी अधिक है। "हेमवयएरण्णवयवासअकम्मभूमिमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' हैमवत और ऐरण्यवत रूप अकर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियाँ परस्पर दोनों समान हैं किन्तु हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की मनुष्यस्त्रियों से सख्यात गुणी अधिक हैं। "भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थोवा अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ" સૌથી ઓછી અંતરદ્વીપ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્યસ્ત્રિયો છે "देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" દેવકુરૂ અને ઉત્તર કુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અંતરદ્વીપની મનુષ્ય સ્ત્રિયોકરતાં સંખ્યાતગણી વધારે છે પોતાના ક્ષેત્રની અપેક્ષા એ બન્ને સમાન છે. "हरीवासरम्मगवास-अकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂની મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતાં પરસ્પર સમાન છે અને સંખ્યાતગણી વધારે છે 'हेमवयएरण्णवयवास अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" હૈમવત અને ઐરણ્યવતરૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો પરસ્પર બન્ને સમાન છે. પરંતુ હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષની મનુષ્ય સ્ત્રિયોથી સંખ્યાત ગણી વધારે છે. "भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ" પૂર્વ-

द्वय्योऽपि परस्परं तुल्या एव भवन्ति तथा हैमवतैरण्यवतदेव्यपेक्षया सङ्ख्यातगुणा अधिका इति । **'पुव्वविदेहअवरविदेहवास कम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्ज गुणाओ'** पूर्वविदेहापरविदेहवर्ष कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि भरतैरवतस्त्र्यपेक्षया संख्यात-गुणा अधिका भवन्तीति । **'वेमाणियदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** वैमानिकदेवस्त्रियो-मनुष्यस्त्र्यपेक्षया असंख्यातगुणा अधिका भवन्ति, असंख्येयश्रेण्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् तासामिति । **'भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** भवनवासिदेवस्त्रियो वैमानिक देव्यपेक्षया असंख्यातगुणा अधिका भवन्ति, अत्र युक्तिः पूर्वोक्तैवेति । **'खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** भवनवासिदेव्यपेक्षया खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियोऽसंख्येयगुणा अधिका भवन्ति, प्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणीगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् खेचरस्त्री-णामिति **'थलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ'** खेचरस्त्र्यपेक्षया स्थलचरतिर्य-

---

वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ' भरतक्षेत्र एवं ऐरवत क्षेत्ररूप कर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियां परस्पर में तुल्य होकर हैमवत और ऐरण्यवत क्षेत्र की मनुष्यस्त्रियों से संख्यात गुणी अधिक हैं । **"पुव्वविदेहअवरविदेहवासकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्लाओ संखेज्ज-गुणाओ"** पूर्वविदेह और अपरविदेहरूप कर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियां परस्पर में तुल्य और भरत क्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र की मनुष्यस्त्रियों से संख्यात गुणी अधिक है । **'वेमाणियदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** वैमानिक देवस्त्रियां पूर्वविदेह अपरविदेह मनुष्य स्त्रियों की अपेक्षा असंख्यात गुणी अधिक हैं । अर्थात् असंख्यात श्रेण्याकाशके जितने प्रदेश होते हैं उतने प्रमाणवाली हैं **"भवणवासि देवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ'** भवनवासि देवस्त्रियां वैमानिकदेव-स्त्रियों की अपेक्षा असंख्यात गुणी अधिक हैं **"खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्ज-गुणाओ'** भवनवासी देवस्त्रियो की अपेक्षा खेचर तिर्यग् योनिक स्त्रियां असंख्यात गुणी अधिक हैं । क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग में रहे हुए असंख्यात श्रेणीगत आकाश के प्रदेशों की जितनी राशि होती है उतनी राशि प्रमाण खेचर स्त्रियां है । **"थलयर तिरिक्खजोणित्थी-**

વિદેહ અને અપરવિદેહ રૂપ કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો પરસ્પરમાં તુલ્ય છે, અને ભરતક્ષેત્ર તથા ઐરવતક્ષેત્રની મનુષ્ય સ્ત્રિયોથી સંખ્યાતગણી વધારે છે. **"वेमाणियदेवित्थीओ असं-खेज्जगुणाओ"** વૈમાનિક દેવિયો પૂર્વવિદેહ તથા અપરવિદેહ ની મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતાં અસંખ્યાત ગણી વધારે છે અર્થાત્ અસંખ્યાત શ્રેણ્યાકાશ ના જેટલા પ્રદેશો હોય છે, તેટલા પ્રમાણવાળી છે. **"भवणवासिदेवित्थीओ असंखेज्जगुणाओ"** ભવનવાસી દેવની દેવિયો વૈમાનિક દેવની દેવિયોકરતાં અસંખ્યાતગણી વધારે છે **"खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ असं खेज्जगुणाओ"** ભવનવાસી દેવની દેવિયો કરતાં ખેચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો અસંખ્યાતગણી વધારે છે કેમકે પ્રતરના અસખ્યાતમા ભાગમાં રહેલ અસંખ્યાત શ્રેણી ગત આકાશના પ્રદેશોની જેટલી રાશિ હોય છે, એટલી રાશિપ્રમાણ ખેચર સ્ત્રિયો છે **थलयरतिरिक्ख-**

ग्योनिकाः स्त्रियः सङ्ख्येयगुणा अधिका भवन्ति बृहत्तरप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् स्थलचरीणामिति । **'जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ'** स्थलचर्यपेक्षया जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः सङ्ख्येयगुणा अधिका भवन्ति बृहत्तमप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् जलचरीणामिति । **'वाणमंतरदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ'** वानव्यन्तरदेवस्त्रियो जलचर्यपेक्षया संख्येयगुणा अधिका भवन्ति, सङ्ख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणैकप्रादेशिकश्रेणिमात्राणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवन्ति तेभ्यो द्वात्रिंशत्तमे भागे अपहृते यावान् राशिरवतिष्ठते तावत्प्रमाणत्वात् व्यन्तरीणामिति । **'जोइसियदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ'** वानव्यन्तरदेव्यपेक्षया ज्योतिष्कदेवस्त्रियः

ओ संखेज्जगुणाओ'' खेचर स्त्रियों की अपेक्षा स्थलचर तिर्यग् योनिक स्त्रियां सख्यात गुणी अधिक हैं। क्योंकि स्थलचर स्त्रियों का प्रमाण बृहत्तर जो प्रतर का असंख्यातवां भाग है उस असंख्यातवें भाग में रही हुई जो असंख्यात श्रेणिगत अकाश प्रदेश राशि है तत्प्रमाण है। **'जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ'** स्थलचर स्त्रियों की अपेक्षा जलचरतिर्यग्योनिक जो स्त्रियां हैं वे संख्यात गुणी अधिक हैं। क्योंकि इनका प्रमाण बृहत्तम अत्यन्तवड़े प्रतर के असंख्यातवें भाग में स्थित जो असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि है उतना कहा गया है **'वाणमंतरदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ'** जलचर स्त्रियों की अपेक्षा वानव्यन्तर देवस्त्रियां संख्यात गुणी अधिक हैं। क्योंकि व्यन्तर स्त्रियों का प्रमाण—सख्यात कोटा कोटी योजन प्रमाण एक प्रदेशो की श्रेणि के जितने खण्ड एक प्रतर में होते हैं उनमें से बत्तीसवें भाग को कम करने पर जो राशि बचती है उतनी कहा गया है **"जोइसियदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ"** वानव्यन्तरदेवस्त्रियों की अपेक्षा ज्योतिष्क देवस्त्रियां संख्यात गुणी हैं—कैसे अधिक

जोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ" ખેચર સ્ત્રિયો કરતાં સ્થલચર તિર્યક યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે. કેમકે—સ્થલચર સ્ત્રિયોનું પ્રમાણ બૃહત્તર કે જે પ્રતરનો અસંખ્યાતમો ભાગ છે તે અસંખ્યાતમાં ભાગમાં રહેલી અસંખ્યાત શ્રેણીમાં રહેલ આકાશ પ્રદેશરાશિ છે તેટલુ છે **"जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ"** સ્થલચર સ્ત્રિયો કરતાં જલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે કેમકે—તેનું પ્રમાણ બૃહત્તમ—અત્યંત મોટા પ્રતર ના અસંખ્યાતમા ભાગમાં રહેલ જે અસંખ્યાતશ્રેણિમાં રહેલ આકાશ પ્રદેશ રાશિ છે, એટલુ કહેલ છે **"वाणमंतरदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ"** જલચર સ્ત્રિયો કરતા વાનવ્યંતર દેવોનિ દેવિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે કેમ કે—વ્યંતર સ્ત્રિયોનુ પ્રમાણ–સંખ્યાત કોટા કોટિ યોજન પ્રમાણ એટલે કે એક પ્રદેશોની શ્રેણીના જેટલા ખંડ એક પ્રતરમાં હોય છે, તેમાંથી બત્રીસમાભાગને કમ કરવાથી જે રાશિ શેષ રહે એટલુ કહેલ છે **"जोइसियदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ"** વાનવ્યન્તર દેવોની-દેવિયો કરતાં જ્યોતિષ્ક દેવોની દેવિયો સંખ્યાતગણી છે. તે કેનીરીતે—તે ભાવના–પ્રકાર

सङ्ख्येयगुणा अधिका भवन्ति, इति पञ्चमं समस्तस्त्रीणामल्पबहुत्वं प्रतिपादितमिति, समाप्तमल्प बहुत्वमिति ॥सू० ६॥

इह स्त्रीत्वानुभावः स्त्रीवेदकर्मोदय इति स्त्रीवेदकर्मणो जघन्यत उत्कर्षतश्च स्थितिमान-माह–'इत्थिवेयस्स णं भंते' इत्यादि,

मूलम्— इत्थिवेयस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधठिई पन्नत्ता, गोयमा! जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्तभागो पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणो, उक्कोसेणं पण्णरससागरोवमकोडाकोडीओ पण्णरसवाससयाइं अबाहा–अबाहूणिया कम्मठिई कम्मणिसेओ, इत्थि वेदेणं भंते! किं पगारे पण्णत्ते? गोयमा! फुंफुअग्गिसमाणे पण्णत्ते। सेत्तं इत्थीओ ॥सू० ॥७॥

छाया— स्त्रीवेदस्य खलु भदन्त ! कर्मणः कियन्तं कालं बन्धस्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम! जघन्येन सागरोपमस्य द्व्यर्द्धः सप्तभागः पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनः, उत्कर्षेण पञ्चदशसागरोपमकोटीकोटयः, पञ्चदशवर्षशतानि अबाधा, अबाधोनिका कर्मस्थितिः कर्मनिषेक । स्त्रीवेदः खलु भदन्त! किंप्रकारः प्रज्ञप्त? गौतम ! फुम्फुकाग्निसमानः प्रज्ञप्तः, ता एताः स्त्रियः ॥सू०७॥

टीका—'इत्थिवेयस्स णं भंते !' स्त्रीवेदस्य खलु भदन्त ! 'कम्मस्स' कर्मणः 'केवइयं

है वह भावना पहले कह दी गई है। इस प्रकार से यह पांचवां समस्त स्त्रियों का अल्प बहुत्व कहा है । सूत्र ॥६॥

जीव को स्त्रीवेद की प्राप्ति स्त्रीवेदनामकर्मके उदय से होती है, अतः अब सूत्रकार स्त्रीवेदनामकर्म की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति का प्रमाण प्रकट करते है—

"इत्थिवेयस्स णं भंते !० इत्यादि ।

टीकार्थ— गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-"इत्थिवेयस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं

પહેલાં કહેવામા આવેલ છે આ રીતે આ પાંચમું સઘળી સ્ત્રિયોનુ અલ્પ બહુ પણુ કહ્યું છે. ॥સૂ૦૬॥

જીવને સ્ત્રીવેદ ની પ્રાપ્તિ સ્ત્રીવેદન નામકર્મના ઉદયથી થાય છે તેથી હવે સૂત્રકાર સ્ત્રીવેદ નામકર્મની જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિનું પ્રમાણ બતાવે છે.—

"इत्थिवेयस्स णं भंते ! ॥ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયુ છે કે—"इत्थिवेयस्स णं भंते ! कम्मस्स

कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं बन्धस्थितिः प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्तभागो पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणो' जघन्येन सागरोपमस्य द्व्यर्द्धः सप्तभागः द्वितीयः अर्द्धोयत्र स द्व्यर्द्ध' अर्धेन सह एकः (१॥) एतादृशः सप्तभाग इत्यर्थः, स च पल्योपमस्यासंख्येयभागेनोनो हीनः, कथमित्याह–इह स्त्रीवेदादीनां कर्मणां स्वस्य स्वस्य उत्कृष्टस्थितिबन्धस्य मिथ्यात्वसत्कया उत्कृष्टया स्थित्या सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणया भागे हृते यल्लभ्यते तत्पल्योपमासंख्येयभागन्यून जघन्यस्थिति' प्रतिभातीति । एवं सर्वेषां ज्ञानावरणीयादि कर्मणां जघन्यबन्धस्थितिः परिभावनीया, तथाहि- अत्रेय करणगाथा—

'वग्गुक्कोसठिईणं, मिच्छत्तुक्कोसगेण जं लद्धं ।
सेसाणं तु जहण्णं, पलियासंखेज्जगेणूणं' ॥१॥

काल वंधठिई पण्णत्ता' हे भदन्त ! स्त्री वेद कर्म की बन्धस्थिति कितने काल तक की है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं । "गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्तभागो पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणो' हे गौतम । जघन्य से स्त्री वेद कर्मकी बन्धस्थिति तो पल्योपम के असंख्यातवे भाग से हीन सागरोपम के डेढ़ सातिया भाग $\frac{१॥}{७}$ पमाणहै यहां जो पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन सागरोपम के डेढ़ सातिया भाग प्रमाण कहा गया है–उसका कारण ऐसा है कि स्त्री वेद आदि कर्मों का जो अपनी२ उत्कृष्ट स्थिति बन्ध है उसको मिथ्यात्व कर्म की जो सत्तर ७० कोडाकोडी सागरोपम की स्थिति है उससे भाग देने पर जो वचता हैं वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग से न्यून जघन्यस्थिति का प्रमाण आता है. इसी प्रकार ज्ञानावरणीयादि सब कर्मों की जघन्य बन्धस्थिति की भावना करलेनी चाहिए जैसे–यहा इसके विषय में एक करण गाथा कहीं गई है– वग्गुक्कोसठिईणं इत्यादि । अर्थात्

केवइयं काल वंधठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ સ્ત્રીવેદ કર્મની બંધસ્થિતિ કેટલા કાળ સુધીની કહી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામી ને કહે છે કે—"गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्तभागो पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणो"—હે ગૌતમ ! જઘન્યથી સ્ત્રીવેદ કર્મના બંધ સ્થિતિ તો પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી હીન સાગરોપમના દોઢ સાતિયાભાગ $\frac{૧॥}{૭}$ પ્રમાણ છે અહિયાં જે પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગથી હીન સાગરોપમ ના દોઢ સાતિયાભાગ પ્રમાણ કહેલ છે, તેનું કારણ એવુ છે કે—સ્ત્રીવેદ વિગેરે કર્મોનો જે પોતપોતાનો ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિબંધ છે તેને મિથ્યાત્વ કર્મની જે સિત્તેર ૭૦ કોડા કોડી સાગરોપમની સ્થિતિ છે, તેનાથી ભાગવાથી જે શેષ રહે તે પલ્યોપમ ના અસંખ્યાતમા ભાગથી ન્યૂન જઘન્ય સ્થિતિનું પ્રમાણ છે એજ પ્રમાણે જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે સઘળા કર્મોની જઘન્ય બન્ધસ્થિતિની ભાવના કરીલેવી જોઈએ જેમકે—અહિયાં તેના સંબંધમા એક કરણ ગાથા કહેવામાં આવી છે—"वग्गुक्कोसठिईणं" ઇત્યાદિ અર્થાત્ જે જે

वर्गोत्कर्षस्थितीनां मिथ्यात्वोत्कर्षकेण यल्लब्धम् ।
शेषाणां तु जघन्यं पल्यासंख्येयभागेनोनम् ॥१॥ इतिच्छाया ।

यस्य यस्य कर्मणः यो यः प्रकृतिसमुदायः स स तस्य वर्ग उच्यते, यथा ज्ञानावरणीयकर्मप्रकृतिसमुदायो ज्ञानावरणीयवर्ग इत्युच्यते । एव शेषं सर्वकर्मप्रकृतिसमुदायेऽपि विज्ञेयम् । एवं कर्मणः स्वस्ववर्गाणां या स्वकीया स्वकीया उत्कृष्टा स्थिति स्त्रिंशत्सागरोपम-कोटिकोटयाधिका, तस्या. मिथ्यात्वसम्बन्धिन्या उत्कृष्टया सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणया स्थित्या भागे हृते यल्लभ्यते तत्पल्योपमासंख्येयभागेन हीनं क्रियते तदा तत्तत्कर्मणो जघन्या स्थिति रायाति । अत्र प्रस्तुतप्रकरणे स्त्रीवेदकर्मणो जघन्या बन्धस्थितिर्ज्ञातव्या, वर्तते तत. स्त्रीवेदस्य उत्कृष्टा स्थितिः पञ्चदशसागरोपमकोटिकोटिप्रमिता, तस्याः मिथ्यात्वस्योत्कृष्टया स्थित्या सप्ततिसागरोपमकोटिकोटिप्रमितया भागो ह्रियते तत्र शून्यानि शून्यैः

जिस जिस कर्म का जो प्रकृति समुदाय है वह वह उसका वर्ग कहलाता हैं, जैसे ज्ञानावरणीय कर्म का प्रकृति समुदाय ज्ञानावरणीय वर्ग कहा जाता है, इसी प्रकार शेष सब कर्मों के प्रकृति समुदाय में भी समझ लेना चाहिए ऐसे कर्म के अपने अपने कर्म की जो अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति जैसे ज्ञानावरणीय कर्म को तीस कोडाकोडी सागरोपम की इत्यादि उत्कृष्ट स्थिति को मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति जो सत्तर ७० सागरोपम कोडा कोडी की है उससे भाग देने पर जो शेष बचे उस को पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन करने पर जो प्रमाण होता है वह उस कर्म की जघन्य स्थिति है । यहां स्त्रीवेद की जघन्य स्थिति निकालना है तो स्त्री वेद की उत्कृष्ट स्थिति पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण की होती है उस पन्द्रह कोडाकोडी का मिथ्यात्व की स्थिति सत्तर ७० कोडाकोडी सागरोपम की है, अतः इस सत्तर ७० कोडाकोडी से भाग हरण किया जावे तो शून्यों का शून्यों से

કર્મ નો જે જે કર્મ પ્રકૃતિ સમુદાય છે, તે તે તેનો વર્ગ કહેવાય છે. જેમકે—જ્ઞાનાવરણીય કર્મને પ્રકૃતિ સમુદાય જ્ઞાનાવરણીય વર્ગ કહેવામાં આવે છે એજ પ્રમાણે બાકીના બધા કર્મોના પ્રકૃતિ સમુદાયના સંબંધમાં પણ સમજીલેવું. એવા કર્મોના પોતપોતાના વર્ગની જે પોત પોતાની ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ-જેમકે-જ્ઞાનાવરણીય કર્મની ત્રીસ કોડાકોડી સાગરોપમની છે" ઈત્યાદિ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ને મિથ્યાત્વની ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ જે ૭૦ સિત્તેર સાગરોપમ કોડા-કોડિની છે, તેનાથી ભાગવાથી જે શેષ વધે તેને પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી હીન કરતાં જે પ્રમાણ હોય છે તે તેકર્મની જઘન્ય સ્થિતિ આવી જાય છે અહિયાં સ્ત્રી વેદની જઘન્યસ્થિતિ બતાવવી છે તો સ્ત્રી વેદની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પંદર ૧૫ કોડા કોડી સાગરોપમ પ્રમાણની છે, તે પંદર ૧૫ કોડાકોડીની મિથ્યાત્વની સ્થિતિ ૭૦ સિત્તેર કોડાકોડી સાગરોપમની છે તેથી આ ૭૦ સિત્તેર કોડાકોડીથી ભાગવામા આવે, તો શૂન્યો

पाल्यन्ते, स्थिताः शेषा एकतः पञ्चदश (१५) अपरतः सप्ततिश्च (७०) इत्येतत् संख्याद्वयमुपर्यधश्च स्थापनीयं तत उपरि पञ्चदश, अधस्ताच्च सप्ततिः (१५/७०)। अनयोश्छेद्यछेदकराश्योर्दशभिरपवर्त्तना क्रियते, पूर्वोक्तं सख्याद्वयं दशभिर्भागं हृत्वा न्यूनं क्रियते इत्यर्थः कृतायां चापवर्तनायां जात उपरि द्व्यर्द्धः–अर्द्धेन सहित एकः, अधस्ताच्च सप्त (१॥/७)। तत आगत एकसागरोपमस्य द्व्यर्द्ध सप्तभाग इति। अस्मिंश्च पल्योपमासंख्येयभागेन हीने कृते लभ्यते यथोक्ता स्त्रीवेदकमर्णो जघन्या बन्धस्थिति रिति। 'उक्कोसेणं पण्णरससागरोवमकोडाकोडीओ' उत्कर्षेण पञ्चदशसागरोपमकोटीकोटच 'पण्णरसवाससयाइं अबाधा' पञ्चदशवर्षशतानि

पात किया तब रह गये ऊपर पन्द्रह और निचे सत्तर (१५/७०)इन छेद्य छेदक राशि की दस से अपवर्त्तना की जाय अर्थात् इन दोनों राशियों को दश का भाग देकर परिवर्तित किया जाय तब रहजाते हैं, ऊपर डेढ और निचे सात (१॥/७) इसका अर्थ यह हुआ कि–सातिया डेढ़ भाग अर्थात् एक सागरोपम के सात भाग किये जायँ उनमें से एक सातिया भाग पूरा और दूसरे सातिया भाग में से आधा लिया जाय इसमें से फिर पल्योपम का असंख्यातवां भाग हीन करने पर जो संख्या का परिमाण होता है उतने काल की स्त्रीवेद कर्म की जघन्य से बन्ध स्थिति कही गई है। और स्त्री वेद की उत्कृष्ट बन्धस्थिति का प्रमाण "पण्णरससागरोवमकोडाकोडीओ" पन्द्रह सागरोपम कोटी कोटी है प्रत्येक कर्म का उदय अबाधाकाल के बाद होता है वह अबाधा काल जिस कर्म के जितने कोडाकोडि प्रमाण की स्थिति होती है उतने ही हजार वर्षों का होता है जैसे स्त्रीवेदकर्म की उत्कृष्ट स्थिति पन्द्रह कोडाकोडि सागरोपमकी होती है उसका अबाधाकाल पन्द्रह हजार वर्षों का होता है यही सूत्रकार कहते हैं— "पण्णरसवाससयाइं अबाधा" पन्द्रहसौ वर्ष की अबाधा पडती हैं।

ના શૂન્યોથી છેદ કર્યો ત્યારે ઉપર $\frac{૧૫}{૭૦}$ પંદર અને નીચે સિત્તેર બચ્યા આ છેદ્ય છેદક રાશીને દસથી અપવર્તના કરવામાં આવે અર્થાત્ આ બન્ને રાશિયો ને દશથી ભાગીને પરિવર્તન કરવામાં આવે ત્યારે ઉપર $\frac{૧॥}{૭}$ દોઢ અને નીચે સાત રહે છે તેનો અર્થ એ થયો કે—સાતિયા દોઢ ભાગ અર્થાત્ એક સાગરોપમના સાતભાગ કરવામા આવે તેમાંથી એક સાતિયાભાગ પૂરો અને બીજા સાતિયાભાગમાંથી અર્ધો લેવામાં આવે, તેમાંથી પાછો પલ્યોપમનો અસંખ્યાતમો ભાગ હીન કરવાથી જે સંખ્યાનુ પરિણામ હોય છે, તેટલા કાળની સ્ત્રી વેદકર્મની જઘન્યથી બંધસ્થિતિ કહેવામાં આવી છે અને સ્ત્રીવેદની ઉત્કૃષ્ટ બંધસ્થિતિનું પ્રમાણ "पण्णरससागरोवमकोडाकोडीओ" પંદર સાગરોપમની કોટાકોટિ છે દરેક કર્મનો ઉદય અબાધા કાળ પછી થાય છે તે અબાધાકાળ જે કર્મની જેટલા કોડાકોડી પ્રમાણની સ્થિતિ હોય છે એટલા જ હજાર વર્ષોનો હોય છે. જેમકે—સ્ત્રીવેદ કર્મની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પંદરકોડા કોડી સાગરોપમની હોય છે. તેનો અબાધાકાળ પંદર હજાર વર્ષોનો હોય છે. એજ વાત સૂત્રકાર કહે છે—"पण्णरसवाससयाइं अबाधा" પંદરસો વર્ષની અબાધા

अबाधाः, 'अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मणिसेओ' अबाधोना-अबाधा काल परिहीनो कर्मस्थितिः कर्मनिषेकः । अयं भावः-इह स्थितिर्द्विविधा कर्मरूपतावस्थानलक्षणा अनुभवयोग्या च, तत्रो-त्कृष्टा स्थितिः पञ्चदशसागरोपमकोटीकोटिप्रमितेतीयं कर्मरूपतयाऽवस्थानलक्षणाऽत्र ज्ञातव्या, अनुभवयोग्या तु कर्मस्थितिः पुनरबाधाहीना भवति, सा तु येषां कर्मणां यावत्यः सागरो-पमकोटीकोटयस्तेषां तावन्ति वर्षशतानि अबाधेति नियमात् स्त्रीवेदस्याधिकृतस्योत्कृष्टा स्थितिः पञ्चदशसागरोपमकोटीकोटयस्ततः पञ्चदशवर्षशतानि अबाधातया ऊना कर्मस्थितिर्भवति अतएव कथितं मूले-'अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ' इति एतदुक्तं भवति, स्त्रीवेदकर्म-उत्कृष्टस्थितिकं बद्धं सत् स्वरूपेण पञ्चदश वर्षशतानि यावज्जीवस्य स्वविपाकोदयं नासादयति

अतः पन्द्रह सागरोपम कोटी कोटी में से इस अबाधा काल को कम करदेने पर कर्म स्थिति का प्रमाण आ जाता है। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि स्थिति दो प्रकार की होती है एक तो कर्मरूपतावस्थानरूप और दूसरी अनुभव योग्य स्त्रीवेद कर्म की जो प्रन्द्रह सागरोपम कोटी कोटी प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति कही गई है वह कर्मरूपतावस्थान रूप स्थिति है. तथा इसमें जो अबाधाकाल को घटाकर स्थिति का प्रमाण रहता है वह अनुभव योग्य स्थिति है जिन कर्मों की जितने कोटि कोटि सागरोपम की स्थिति होती है उसमें उतने २ ही सौ वर्ष की अबाधा पड़ती है यहां अधिकृतस्त्रीवेद की उत्कृष्टस्थिति प्रन्द्रह सागरोपम कोटिकोटि की कही गई है अतः यहां पर प्रन्द्रहसौ वर्ष की अबाधा पडेगी, इस अबाधाकाल से हीन कर्म स्थिति होती है इतने अबाधा काल के बाद ही स्त्रीवेद कर्म अपना उदय वाला होगा इसके पहिले नहीं, इसीलिये मूलमें सूत्रकार ने ऐसा कहा है कि 'अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मणिसेओ' इससे उत्कृष्ट स्थिति वाला स्त्रीवेद कर्म बन्ध को प्राप्त हुआ स्वरूप से पन्द्रह सौ वर्ष तक स्वविपाकोदय को प्राप्त

પડે છે. તેથી પંદર સાગરોપમ કોડાકોડી માથી આ અબાધાકાળને કમ કરવાથી કર્મ સ્થિતિનું પ્રમાણ આવી જાય છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એવું છે કે—સ્થિતિ બે પ્રકારની હોય છે, એક કર્મરૂપતા અવસ્થાન રૂપ અને બીજી અનુભવયોગ્ય સ્ત્રીવેદ કર્મની જે પંદર સાગરોપમ કોટા કોટિ પ્રમાણ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કહેવામાં આવી છે, તે કર્મરૂપતાવસ્થાન રૂપ સ્થિતિ છે તથા તેમાં જે અબાધા કાળને ઘટાડીને સ્થિતિનું પ્રમાણ રહે છે, તે અનુભવ યોગ્ય સ્થિતિ છે. જે કર્મોની એટલા કોટિ કોટિ સાગરોપમની સ્થિતિ હોય છે, તેમાં એટલા એટલાજ સો સો વર્ષોની અબાધા પડે છે અહિયાં અધિકૃત સ્ત્રી વેદની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પંદર સાગરો પમ કોટી કોટીની કહેલ છે તેથી અહિયાં પંદરસોવર્ષની અબાધા પડશે. આ અબાધા કાળથી હીન કર્મસ્થિતિ હોય છે. આટલા અબાધાકાળ પછી જ સ્ત્રીવેદ કર્મ પોતાના ઉદયવાળો થશે. તેનાથી પહેલા નહીં. તેથીજ મૂળમાં સૂત્રકારે એવું કહ્યું છે કે—"અબાહૂ-ણિયાકમ્મટ્ઠિઇં કમ્મણિસેઓ" તેનાથી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ વાળા સ્ત્રીવેદ કર્મબંધને પ્રાપ્ત કરીને

तत्कालमध्ये दलिकनिषेकस्याभावादिति। तथाचाह–अबाहूणिया' इत्यादि, अबाधोना–अबाधाकालपरिहीना कर्मस्थितिः–अनुभवयोग्येति गम्यते, यतः अबाधोनः–अबाधाकालपरिहीनः कर्मनिषेकः–कर्मदलिकरचनेति॥

सम्प्रति—स्त्रीवेदकर्मोदयजनितो यः स्त्रीवेदः स किं स्वरूप इति दर्शयितुमाह–'इत्थिवेएणं भंते' इत्यादि, 'इत्थिवेए णं भंते' स्त्रीवेदः खलु भदन्त! 'किं पगारे पन्नत्ते' किं प्रकारः किं स्वरूपः प्रज्ञप्तः–कथितः, हे भदन्त! स्त्रीवेदकर्मोदयजनितस्य स्त्रीवेदस्य कीदृश स्वरूपमिति प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'फुंफुअग्गिसमाणे पन्नत्ते' फुंफुकाग्निसमान. करीषाग्निसदृशः प्रज्ञप्तः, स्त्रीप्रकारमुपसंहरन्नाह–'से त्तं' इत्यादि, 'से त्तं इत्थीओ' ता एताः–पूर्वोक्ताः स्त्रियः भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति॥सू० ७॥

तदेवम्–उक्तप्रकारेण सामान्यतो विशेषतश्च स्त्रियो निरूपिताः सम्प्रति–पुरुषप्रतिपादनाय–आह–से किं तं पुरिसा' इत्यादि,

मूलम्—'से किं तं पुरिसा? पुरिसा तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा। से किं तं तिरिक्खजोणिय-

---

नहीं करता है–क्योंकि–इतने काल तक वहां कर्मनिषेक अर्थात् कर्मदलिकोके रचना का अभाव रहता है अबाधाकाल से हिन जो कर्म स्थिति है वह अनुभव योग्य कहलाती है. अतः वह कर्म निषेक कर्मदलिक रचना अबाधाकाल से ही कहा गया है।

अब सूत्रकार स्त्रीवेद कर्मोदय से जनित जो स्त्रीवेद है वह किस स्वरूपवाला है इस बात को प्रकट करते हैं– "इत्थीवेए णं भंते! किं पगारे पण्णत्ते" हे भदन्त! स्त्रीवेद कर्मके उदय से जनित स्त्री वेद का कैसा स्वरूप है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा! फुंफुअग्गिसमाणे पन्नत्ते" हे गौतम! स्त्रीवेद फुंफुक अग्नि-करीषाग्नि के (वनकण्डेकी अग्नि) समान होता है "सेत्तं इत्थीओ" इस प्रकार भेद प्रभेदों द्वारा स्त्रियों का यह निरूपण समाप्त हुआ। सूत्र॥७॥

સ્વરૂપથી ૫ હસોવર્ષ સુધી સ્વવિપાકોદયને પ્રાપ્ત કરતા નથી. કેમકે—આટલા કાળ સુધી ત્યાં કર્મનિષેક અર્થાત્ કર્મદલિકોની રચનાનો અભાવ રહે છે. અબાધા કાળથી હીન જે કર્મસ્થિતિ છે, તે અનુભવયોગ્ય કહેવાય છે. તેથી તે કર્મનિષેક–કર્મદલિક રચના અબાધા કાળથી જ કહેલ છે

હવે સૂત્રકાર સ્ત્રી વેદ કર્મોદયથી થવાવાળો જે સ્ત્રી વેદ છે, તે કેવા સ્વરૂપવાળો છે, તે વાત પ્રગટ કરે છે. "इत्थिवेए णं भंते! किं पगारे पण्णत्ते", હે ભગવન્ સ્ત્રી વેદકર્મના ઉદયથી થવાવાળો સ્ત્રીવેદ કેવા પ્રકારનો છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે—"गोयमा! फुंफु अग्गिसमाणे पण्णत्ते" હે ગૌતમ! સ્ત્રીવેદ ફુંફુક અગ્નિ અર્થાત્ કરીષાગ્નિ સમાન હોય છે. "से त्तं इत्थीओ" આ પ્રમાણે ભેદ અને પ્રભેદો દ્વારા સ્ત્રિયોનું નિરૂપણ કર્યું છે. ॥સૂ૦૭॥

पुरिसा? तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पन्नत्ता' तंजहा-जलयरा थलयरा खहयरा, इत्थिभेओ भाणियव्वो जाव सेत्तं खहयरा, सेत्तं तिरिक्खजोणिया पुरिसा। से किं तं मणुस्सपुरिसा? मणुस्सपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तंजहा-कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा, सेत्तं मणुस्सपुरिसा। से किं तं देवपुरिसा? देवपुरिसा चउव्विहा पन्नत्ता, इत्थी भेदो भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धा ॥८

छाया--अथ के ते पुरुषाः? पुरुषा स्त्रिविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा तिर्यग्योनिकपुरुषाः मनुष्यपुरुषाः देवपुरुषाः। अथ के ते तिर्यग्योनिकपुरुषाः? तिर्यग्योनिकपुरुषा स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-जलचराः स्थलचराः खेचराः स्त्रीभेदो भणितव्यो यावत् ते एते खेचराः, ते एते तिर्यग्योनिकपुरुषाः। अथ के ते मनुष्यपुरुषाः? मनुष्यपुरुषास्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--कर्मभूमिका अकर्मभूमिका अन्तरद्वीपिकाः, ते एते मनुष्यपुरुषाः। अथ के ते देवपुरुषा देवपुरुषा श्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः स्त्रीभेदो भणितव्यः यावत् सर्वार्थसिद्धाः ॥सू०८॥

टीका--'से किं तं पुरिसा' अथ के ते पुरुषाः, पुरुषाः कियत्प्रकारका भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति-'पुरिसा तिविहा पन्नत्ता' पुरुषास्त्रिविधाः-त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः। त्रैविध्यमेव दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'तिरिक्खजोणियपुरिसा' तिर्यग्योनिकपुरुषाः, 'मणुस्सपुरिसा' मनुष्यपुरुषाः, 'देवपुरिसा' देवपुरुषाः, तदेवं तिर्यङ्-

---

सामान्य और विशेष रूप से स्त्री सम्बन्धी निरूपण समाप्त करके अब सूत्रकार पुरुष सम्बन्धी निरूपण प्रारम्भ करते है-- "से किं तं पुरिसा०-इत्यादि।

टीकार्थ--गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त! पुरुष कितने प्रकार के होते है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-"पुरिसा तिविहा पन्नत्ता" हे गौतम! पुरुष तीन प्रकार के होते "तं जहा" जैसे-"तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा" तिर्यग्योनिक

સામાન્ય અને વિશેષ પ્રકારથી સ્ત્રી સંબંધી નિરૂપણ પૂર્ણ કરીને હવે સૂત્રકાર પુરૂષ સંબંધી નિરૂપણ કરવાનો પ્રારંભ કરે છે--"से किं तं पुरिसा' ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ--ગૌતમસ્વામી એ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે--હે ભગવન્ પુરૂષો કેટલા પ્રકારના હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે--"पुरिसा तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! પુરૂષો ત્રણ પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. "तं जहा" તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે.--"तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा" તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ ૧, મનુષ્ય

मनुष्यदेवभेदेन त्रयः पुरुषा भवन्तीति ॥ **'से किं तं तिरिक्खजोणियपुरिसा'** अथ के ते तिर्यग् योनिकपुरुषाः, तिर्यग्योनिकपुरुषाणां कियन्तो भेदा भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति— **'तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पन्नत्ता'** तिर्यग्योनिकपुरुषास्त्रिविधाः—त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, त्रैविध्यमेव दर्शयति—**'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा'** तद्यथा—**'जलयरा थलयरा खहयरा'** जलचराः स्थलचराः खेचराश्चेति । **'इत्थिभेदो भाणियव्वो'** स्त्रीभेदो भणितव्यः, यथातिर्यग्योनिकस्त्रीणां भेदोपभेदाः कथिता स्तथैवात्रापि तिर्यक् पुरुषाणां ते भेदा भणितव्याः **'जाव से त्तं खहयरा'** यावत् ते एते खेचराः, अत्र यावत्पदेन—**'जलचराः स्थलचराः'** इति पदद्वयं ग्राह्यम् । **'से त्तं तिरिक्खजोणियपुरिसा'** ते एते तिर्यग्योनिकपुरुषाः कथिता इति ॥

पुरुष १, मनुष्य पुरुष २, और देव पुरुष ३, **"से किं तं तिरिक्खजोणियपुरिसा"** हे भदन्त ! तिर्यग्योनिक पुरुष कितने प्रकार के होते हैं ? **"तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पन्नत्ता"** गौतम ! तिर्यग्योनिक पुरुष तीन प्रकार के होते हैं, **"तं जहा"** जैसे— **"जलयरा, थलयरा खहयरा"** जलचर तिर्यग्योनिक पुरुष, स्थलचर तिर्यग्योनिक पुरुष और खेचर तिर्यग्योनिक पुरुष **"इत्थि भेदो भाणियव्वो"** जिस प्रकार से तिर्यग्योनिक स्त्रियों के भेद और उपभेद कहे गये हैं उसी प्रकार से यहां पर तिर्यग्योनिक पुरुषों के भेद कहलेना चाहिये—

इस प्रकार से भेद और उपभेद **"जाव सेत्तं खहयरा"** इस सूत्रपाठ तक जैसे कहे गये हैं—वैसे ही जानना चाहिये, यहां तक अर्थात् जल चर स्थलचर खेचर तिर्यक् पुरुष सम्बन्धी भेदोपभेद प्रकरण जब समाप्त हो जाता है । इसकी समाप्ति होते ही **"से त्तं तिरिक्खजोणियपुरिसा"** तिर्यग्योनिक पुरुष प्रकरण समाप्त हो जाता है । **"से किं तं**

પુરૂષ ૨ અને દેવ પુરૂષ ૩, **"से किं तं तिरिक्खजोणिय पुरिसा"** હે ભગવન્ તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ કેટલા પ્રકારના હોય છે ? **"तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ ત્રણ પ્રકારના હોય છે. **"तं जहा"** તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે.— **"जलयरा थलयरा खहयरा"** જલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ, સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ, અને ખેચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ **"इत्थिभेदो भाणियव्वो"** જે પ્રમાણે તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોના ભેદો અને ઉપ ભેદો કહેવામાં આવ્યા છે. એજ પ્રમાણે અહિયા તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોના ભેદો કહેવા જોઇએ. આ રીતે ભેદો અને ઉપભેદો **"जाव सेत्त खहयरा"** આ સૂત્રપાઠ પર્યન્ત અર્થાત્ જલચર, સ્થલચર, અને ખેચર તિર્યગ્ પુરૂષ સંબંધી ભેદો અને ઉપભેદો નું પ્રકરણ જ્યારે સમાપ્ત થાય છે. ત્યા સુધીનું તે પ્રકરણ ગ્રહણ કરવું. તે પ્રકરણ સમાપ્ત થતાં જ **"से त्तं तिरिक्खजोणिय पुरिसा"** તિર્યગ્યોનિક પુરુષનું પ્રકરણ સમાપ્ત થઈ જાય છે.

अथ मनुष्यपुरुषान् निरूपयितुमाह—'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं मणुस्स-
पुरिसा' अथ के ते मनुष्यपुरुषाः मनुष्यपुरुषाणां कियन्तो भेदा इति प्रश्नः, उत्तरयति—
'मणुस्सपुरिसा तिविहा पन्नत्ता' मनुष्यपुरुषास्त्रिविधा त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिता
इति । त्रैविध्यं दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'कम्मभूमिगा अकम्मभू-
मिगा अंतरदीवगा' कर्मभूमिकाः—कर्मभूमिजाः, पञ्चभरत—पञ्चैरवत—पञ्चमहाविदेहेति पञ्च-
दशविधकर्मभूम्यां जाताः, अकर्मभूम्यां हैमवत—हैरण्यवत—हरिवर्ष—रम्यकवर्ष—देवकुरूत्तर—कुरुरू-
पायां जाताः अकर्मभूमिजाः, अन्तरद्वीपकाः अन्तरद्वीपेषु—षट्पञ्चाशद्विधेषु समुद्भवा इति । 'से
तं मणुस्सपुरिसा' ते एते मनुष्यपुरुषाः सप्रभेदाः कथिता इति ॥ देवपुरुषान् निरूपयि-
तुमाह—'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं देवपुरिसा' अथ के ते देवपुरुषाः ? देवपुरुषाः
कियन्तो भवन्तीति प्रश्नः, उत्तरयति—'देवपुरिसा चउव्विहा पन्नत्ता' देवपुरुषाश्चतुर्विधा श्चतुः
प्रकारकाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, 'इत्थिभेदो भाणियव्वो' स्त्रीभेदो भणितव्य', यथा देवस्त्रीणां
भेदाः कथिताः तथैव देवपुरुषाणामपि भेदा भणितव्याः, कियत्पर्यन्तं देवस्त्रीप्रकरणमत्र

मणुस्सपुरिसा" हे भदन्त ! मनुष्य पुरुष कितने प्रकार के हैं—उत्तर में प्रभु कहते हैं—
"मणुस्सपुरिसा तिविहा पन्नत्ता" हे गौतम ! मनुष्य पुरुष तीन प्रकार के हैं—"तं
जहा" जैसे—"कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा" पांच भरत पांच ऐरवत
पांच महाविदेह क्षेत्र के भेद से प्रन्द्रहप्रकार के कर्मभमिज मनुष्य पुरुष हैमवत हैरण्यवत हरि
वर्ष रम्यक वर्ष देवकुरु उत्तरकुरु रूप अकर्मभूमिज मनुष्य पुरुष और छप्पन अन्तरद्वीप
के अन्तरद्वीपज मनुष्य पुरुष "से त्तं मणुस्सपुरिसा" इस प्रकार से मनुष्य पुरुष तीन
प्रकार के कहे गये है । "से किं तं देवपुरिसा" हे भदन्त ! देवपुरुष कितने प्रकार के
होते हैं ? उत्तर में प्रभु कहते है—"देवपुरिसा चउव्विहा पन्नत्ता" हे गौतम ! देवपुरुष
चार प्रकार के कहे गये हैं । "इत्थि भेदो भाणियव्वो" यहां जिस प्रकार से देवस्त्रियो के
भेद कहे गये हैं उसी प्रकार से देव पुरुषों के भी भेद कहलेना चाहिये । और यह देव
पुरुष सम्बन्धी प्रकरण सर्वार्थ सिद्ध देवपुरुष प्रकरण तक कहना चाहिये । जैसे—देवपुरुष

"से किं तं मणुस्सपुरिसा" હે ભગવન્ મનુષ્ય પુરુષ કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ
પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે — "मणुस्सपुरिसा तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! મનુષ્ય
પુરુષ ત્રણ પ્રકારના કહ્યાં છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदी
वगा" પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત, અને પાંચ મહાવિદેહ ક્ષેત્રના ભેદથી પંદર પ્રકારના કર્મભૂમિજ
મનુષ્ય પુરુષ છે હૈમવત, ઐરણ્યવત હરિવર્ષ રમ્યક વર્ષ દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિના
મનુષ્ય પુરૂષ, અને છપ્પન અંતરદ્વીપના અંતરદ્વીપજ મનુષ્ય પુરૂષ, "से तं मणुस्सपुरिसा"
આ રીતે મનુષ્ય પુરૂષો ત્રણ પ્રકારના કહેલા છે. "से किं तं देवपुरिसा" હે ભગવન્ દેવ-
પુરૂષો કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે — "देव पुरिसा चउ-
व्विहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ ! દેવ પુરૂષો ચાર પ્રકારના કહ્યાં છે. "इत्थिभेदो भाणियव्वो"
જે પ્રમાણે દેવિયોના ભેદો કહ્યાં છે. એજ પ્રમાણેના દેવપુરુષોના ભેદો પણ કહી લેવા જોઈએ

ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव सव्वट्ठसिद्धा' यावत्सर्वार्थसिद्धाः सर्वार्थसिद्धदेवपुरुष पर्यन्त ज्ञातव्यमिति। तथाहि-देवपुरुषाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-भवनवासिनो वानव्यन्तरा ज्योतिष्का वैमानिकाश्च। तत्र भवनवासिनोऽसुरकुमारादिस्तनितकुमारान्त भेदेन दशविधा-भवन्तीति। वानव्यन्तराः पिशाचभूत-यक्ष-गन्धर्व-राक्षस-किन्नर-किंपुरुष-महोरगभेदेन अष्टप्रकारका भवन्ति। ज्योतिष्काश्चन्द्र-सूर्य-ग्रहनक्षत्र-ताराविमान-भेदेन पञ्चप्रकारका भवन्ति। वैमानिकाः कल्पोपन्नकल्पातीतभेदेन द्विविधाः, तत्र कल्पोपपन्नकाः सौधर्मादिभेदेन द्वादशविधा भवन्ति, कल्पातीतास्तु ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिकभेदेन द्विविधा भवन्ति। एतदाशयेनैव कथितम् 'जाव सव्वट्ठसिद्धा' इति ॥सू० ८॥

चार प्रकार के कहे गये है-भवनवासी देवपुरुष, वानव्यन्तर देवपुरुष, ज्योतिष्क देव पुरुष और वैमानिक देव पुरुष इनमें भवनवासी देवपुरुष असुर, नाग, सुपर्ण, विद्युत, अग्नि, द्वीप, उदधि दिशा, वायु और स्तनितकुमारदेवपुरुष ऐसे दस प्रकार के होते हैं। वानव्यन्तर देव पुरुष-पिशाच देवपुरुष १, भूत देवपुरुष २, यक्ष देवपुरुष ३, राक्षस देव पुरुष, ४, किंनर देवपुरुष. ५, किंपुरुष देवपुरुष ६, महोरग देवपुरुष ७, गन्धर्व देव पुरुष ८, इस प्रकार से आठ प्रकार के होते है। ज्योतिष्क देवपुरुष चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा विमान के भेद से पाँच प्रकार के होते हैं। वैमानिक देव पुरुष—कल्पोपपन्न और कल्पातील के भेद से दो प्रकार के होते हैं। इनमें कल्पोपपन्न देवपुरुष सौधर्मादि देव पुरुष के भेद से बारह प्रकार के है। कल्पातीत देव पुरुष ग्रैवेयक और अनुत्तरोपपातिक के भेद से दो प्रकार के है। इसी आशय को लेकर सूत्रकार ने "जाव सव्वट्ठसिद्धा" सर्वार्थ सिद्ध देव पुरुष पर्यन्त ऐसा पाठ कहा है ॥सूत्र ८॥

અને આ દેવપુરુષ સંબંધી પ્રકરણ સર્વાર્થસિદ્ધ દેવપુરુષના પ્રકરણ સુધી કહેવું જોઈએ. જેમકે— દેવપુરુષ ચાર પ્રકારના કહ્યા છે, ભવનવાસી દેવપુરુષ વાનવ્યંતર દેવ પુરૂષ, જ્યોતિષ્ક દેવ પુરુષ, અને વૈમાનિક દેવપુરુષ, આમાં ભવનવાસી દેવપુરુષ, અસુર, નાગ, સુપર્ણ, વિદ્યુત, અગ્નિ, દ્વીપ, ઉદધિ, દિશા, વાયુ અને સ્તનિત કુમાર દેવપુરુષ આ રીતે દસ પ્રકારના હોય છે વાનવ્યંતર દેવપુરુષ — પિશાચ દેવ પુરૂષ,[1] ભૂતદેવપુરૂષ,[2] યક્ષ-દેવપુરૂષ,[3] રાક્ષસ દેવપુરૂષ,[4] કિંનર દેવ પુરૂષ,[5] કિંપુરૂષ દેવપુરૂષ,[6] મહોરગ દેવપુરૂષ[7] ગંધર્વ દેવપુરૂષ[8] આ પ્રમાણે આઠ પ્રકારના હોય છે. જ્યોતિષ્ક દેવપુરૂષ — ચંદ્ર, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર. અને તારા વિમાનના ભેદથી પાંચ પ્રકારના હોય છે વૈમાનિક દેવપુરૂષ કલ્પોપપન્ન અને કલ્પાતીત એ ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે. તેમાં કલ્પોપપન્ન દેવપુરૂષ સૌધર્માદિ દેવ પુરૂષના ભેદથી બાર પ્રકારના હોય છે. તથા કલ્પાતીત દેવપુરૂષ — ગ્રૈવેયક અને અનુત્તરો-પપાતિક ના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે આજ અભિપ્રાય ને લઈને સૂત્રકારે "જાવ સવ્વ ટ્ઠસિદ્ધા" સર્વાર્થ સિદ્ધ દેવપુરૂષ પર્યંત આ પ્રમાણેનો પાઠ કહેલ છે. ॥ સૂ ૮ ॥

देवपुरुषाणां संक्षेप विस्ताराभ्यां भेदः कथित सम्प्रतिपुरूषाणां स्थितिं प्रतिपादयितु-माह—'पुरिसस्स णं' इत्यादि।

मूलम्—'पुरिसस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं मणुस्साणं जावेव इत्थीणं ठिई सा चेव भाणियव्वा। देवपुरिसाण वि जाव सव्वट्ठसिद्धाणं ति ताव ठिई जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा। पुरिसे णं भंते! पुरिसे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं तिरिक्ख-जोणियपुरिसे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ? जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भ-हियाइं, एवं चेव। संचिट्ठणा जहा इत्थीणं जाव खहयरतिरिक्ख-जोणियपुरिसस्स संचिट्ठणा। मणुस्सपुरिसा णं भंते! कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, एवं सव्वत्थ जाव पुव्वविदेह-अवरविदेहअकम्मभूमिग-मणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं, देवाणं जच्चेव ठिइ सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्व-ट्ठसिद्धगाणं" ॥सू०१॥

छाया- पुरुषस्य खलु भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येनान्त-मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि। तिर्यग्योनिकपुरुषाणां मनुष्याणां यैव स्त्रीणां स्थितिः सैव भणितव्या। देवपुरुषाणामपि यावत् सर्वार्थसिद्धानामिति॥ तावत् स्थितिर्यथा प्रज्ञापनायाः स्थितिपदे तथा-भणितव्या॥ पुरुषः खलु भदन्त! पुरुष इति कालतः कियच्चिरं भवति? गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वं मसातिरेक।

ज्ञातव्यं तत्राह-'जाव' इत्यादि, 'जाव सव्वट्ठसिद्धा' यावत्सर्वार्थसिद्धाः सर्वार्थसिद्धदेवपुरुष पर्यन्तं ज्ञातव्यमिति। तथाहि-देवपुरुषाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-भवनवासिनो वानव्यन्तरा ज्योतिष्का वैमानिकाश्च। तत्र भवनवासिनोऽसुरकुमारादिस्तनितकुमारान्त भेदेन दशविधा-भवन्तीति। वानव्यन्तराः पिशाचभूत-यक्ष-गन्धर्व-राक्षस-किन्नर-किंपुरुष-महोरगभेदेन अष्टप्रकारका भवन्ति। ज्योतिष्काश्चन्द्र-सूर्य-ग्रहनक्षत्र-ताराविमान-भेदेन पञ्चप्रकारका भवन्ति। वैमानिकाः कल्पोपन्नकल्पातीतभेदेन द्विविधाः, तत्र कल्पोपपन्नकाः सौधर्मादिभेदेन द्वादशविधा भवन्ति, कल्पातीतास्तु ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिकभेदेन द्विविधा भवन्ति। एतदाशयेनैव कथितम् 'जाव सव्वट्ठसिद्धा' इति ॥सू० ८॥

चार प्रकार के कहे गये है-भवनवासी देवपुरुष, वानव्यन्तर देवपुरुष, ज्योतिष्क देव पुरुष और वैमानिक देव पुरुष इनमें भवनवासी देवपुरुष असुर, नाग, सुपर्ण, विद्युत, अग्नि, द्वीप, उदधि दिशा, वायु और स्तनितकुमारदेवपुरुष ऐसे दस प्रकार के होते हैं। वानव्यन्तर देव पुरुष-पिशाच देवपुरुष १, भूत देवपुरुष २, यक्ष देवपुरुष ३, राक्षस देव पुरुष, ४, किंनर देवपुरुष. ५, किंपुरुष देवपुरुष ६, महोरग देवपुरुष ७, गन्धर्व देव पुरुष ८, इस प्रकार से आठ प्रकार के होते है। ज्योतिष्क देवपुरुष चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा विमान के भेद से पाँच प्रकार के होते हैं। वैमानिक देव पुरुष—कल्पोपपन्न और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते है। इनमें कल्पोपपन्न देवपुरुष सौधर्मादि देव पुरुष के भेद से बारह प्रकार के है। कल्पातीत देव पुरुष ग्रैवेयक और अनुत्तरोपपातिक के भेद से दो प्रकार के है। इसी आशय को लेकर सूत्रकार ने "जाव सव्वट्ठसिद्धा" सर्वार्थ सिद्ध देव पुरुष पर्यन्त ऐसा पाठ कहा है ॥सूत्र ८॥

અને આ દેવપુરુષ સંબંધી પ્રકરણ સર્વાર્થસિદ્ધ દેવપુરુષના પ્રકરણ સુધી કહેવું જોઈએ. જેમકે — દેવપુરુષ ચાર પ્રકારના કહ્યા છે, ભવનવાસી દેવપુરુષ વાનવ્યંતર દેવ પુરૂષ, જ્યોતિષ્ક દેવ પુરુષ, અને વૈમાનિક દેવપુરુષ, આમાં ભવનવાસી દેવપુરુષ, અસુર, નાગ, સુપર્ણ, વિદ્યુત, અગ્નિ, દ્વીપ, ઉદધિ, દિશા, વાયુ અને સ્તનિત કુમાર દેવપુરુષ આ રીતે દસ પ્રકારના હોય છે. વાનવ્યંતર દેવપુરુષ — પિશાચ દેવ પુરૂષ,[1] ભૂતદેવપુરૂષ,[2] યક્ષ-દેવપુરૂષ,[3] રાક્ષસ દેવપુરૂષ,[4] કિનર દેવ પુરૂષ,[5] કિંપુરૂષ દેવપુરૂષ,[6] મહોરગ દેવપુરૂષ[7] ગંધર્વ દેવપુરૂષ[8] આ પ્રમાણે આઠ પ્રકારના હોય છે. જ્યોતિષ્ક દેવપુરૂષ — ચંદ્ર, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર. અને તારા વિજ્ઞાનના ભેદથી પાંચ પ્રકારના હોય છે વૈમાનિક દેવપુરૂષ કલ્પોપપન્ન અને કલ્પાતીત એ ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે. તેમાં કલ્પોપપન્ન દેવપુરૂષ સૌધર્માદિ દેવ પુરૂષના ભેદથી બાર પ્રકારના હોય છે. તથા કલ્પાતીત દેવપુરૂષ — ગ્રૈવેયક અને અનુત્તરોપપાતિક ના ભેદથી બે પ્રકારના હોય છે આજ અભિપ્રાય ને લઈને સૂત્રકારે "जाव सव्वट्ठसिद्धा" સર્વાર્થ સિદ્ધ દેવપુરૂષ પર્યંત આ પ્રમાણેનો પાઠ કહેલ છે. ॥ સૂ ૮ ॥

देवपुरुषाणां संक्षेप विस्ताराभ्यां भेदः कथित सम्प्रतिपुरूषाणां स्थितिं प्रतिपादयितुमाह—'पुरिसस्स णं' इत्यादि।

मूलम्—'पुरिसस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं मणुस्साणं जावेव इत्थीणं ठिई सा चेव भाणियव्वा। देवपुरिसाण वि जाव सव्वट्ठसिद्धाणं ति ताव ठिई जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा। पुरिसे णं भंते! पुरिसे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं तिरिक्खजोणियपुरिसे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा? जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं, एवं चेव। संचिट्ठणा जहा इत्थीणं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसस्स संचिट्ठणा। मणुस्सपुरिसा णं भंते! कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, एवं सव्वत्थ जाव पुव्वविदेह-अवरविदेहअकम्मभूमिग-मणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं, देवाणं जच्चेव ठिइ सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाणं" ॥सू०१॥

छाया- पुरुषस्य खलु भदन्त! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि। तिर्यग्योनिकपुरुषाणां मनुष्याणां यैव स्त्रीणां स्थितिः सैव भणितव्या। देवपुरुषाणामपि यावत् सर्वार्थसिद्धानामिति॥ तावत् स्थितिर्यथा प्रज्ञापनायाः स्थितिपदे तथा-भणितव्या॥ पुरुषः खलु भदन्त! पुरुष इति कालतः कियच्चिरं भवति? गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेक।

तिर्यग्योनिकपुरुष खलु भदन्त । कालतः कियच्चिरं भवति? गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि, एवं तथैव, संस्थिति यैथा-स्त्रीणां यावत् खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषस्य संस्थितिः । मनुष्यपुरुषाः खलु भदन्त! कालतः कियच्चिरं भवन्ति ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि, धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटि । एवं सर्वत्र यावत् पूर्वविदेहापरविदेहाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां यथाऽकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां यावदन्तरद्वीपकानां देवानां यैव स्थिति सैव संस्थितिः यावत् सर्वार्थसिद्धकानाम् ॥सू०१॥

टीका—'पुरिसस्स ण भंते' पुरुषस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता- कथितेति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तं यावत स्थितिः पुरुषस्य प्रज्ञप्ता तत ऊर्ध्वं मरणभावादिति । 'उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि यावत् स्थितिः, एषा स्थितिश्चानुत्तरविमानापेक्षया ज्ञातव्या, तदन्यस्यैतावत्याः स्थितेरभावादिति । 'तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणुस्साणं जा चेव इत्थीणं ठिई सा चेव भाणियव्वा'

इस प्रकार सक्षेप और विस्तार से देवपुरुषों के भेद कहकर अब सूत्रकार पुरुषों की स्थिति का प्रतिपादन करते हैं –"पुरिसस्स णं भंते०" इत्यादि

टीकार्थ—'पुरिसस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता' हे भदन्त ! पुरुष की स्थिति कितने काल की कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं–"गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं" हे गौतम ! पुरुष की स्थिति जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से तेतीस सागरोपम की कही गई है । यह उत्कृष्ट स्थिति अनुत्तर विमानों की अपेक्षा से कही गई जाननी चाहिये । क्योंकि इनसे अतिरिक्त देवों को इतनी स्थिति नहीं है । "तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणुस्साणं जा चेव इत्थीणं ठिई

આ રીતે સક્ષેપ અને વિસ્તારથી દેવપુરુષોના ભેદો કહીને હવે સૂત્રકાર પુરુષોની સ્થિતિનું પ્રતિપાદન કરે છે. "पुरिसस्स णं भंते ! " ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ — "पुरिसस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ પુરૂષની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામી કહે છે કે — "गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं" હે ગૌતમ ! પુરુષની સ્થિતિ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી તેત્રીસ સાગરોપમની કહેવામાં આવી છે કેમકે — તેના શિવાય દેવોની આટલી સ્થિતિ નથી. 'तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणुस्साणं जा चेव इत्थीणं ठिई सा चेव भाणियव्वा" તિર્યગ્યોનિક પુરુષોની અને મનુષ્યોની

तिर्यग्योनिकपुरुषाणामौघिकानां जलचराणां स्थलचराणां खेचराणां तथा मनुष्याणां च स्थितिः तत्तत्स्त्रीणां या या स्थितिः कथिता सा सा चात्रापि ज्ञातव्या । तत्र मनुष्याणां स्थिति यथा मनुष्यपुरुषाणाम् औघिकानां सामान्यतः कर्मभूमिकानां मनुष्याणां विशेषतो हैमवतहैरण्यवतकानां हरिवर्षरम्यकस्य देवकुरूत्तरकुरुकाणामन्तरद्वीपकानां यैव स्व स्व स्थाने स्त्रीणां स्थितिः कथिता सैव पुरुषणामपि वक्तव्या, तथाहि—सामान्य तिर्यग्योनिकपुरुषाणां जघन्येन स्थितिरन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि जलचरपुरुषाणां जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्व कोटिः, चतुष्पदस्थलचरपुरुषाणां जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमानि, उरःपरिसर्पस्थलचरपुरुषाणां जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः एवं भुजपरिसर्पस्थलचरपुरुषाणामपि जघन्यतोऽन्तमुहूर्त्तमुत्कर्षत· पल्योपमासंख्येयभागम् सामान्यतो मनुष्यपुरुषाणां क्षेत्रमाश्रित्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमानि चारित्रधर्ममधिकृत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तम् । एतच्च बाह्यलिङ्गप्रव्रज्याप्रतिपत्तिमङ्गीकृत्य ज्ञातव्यम् । अन्यथा—चरणपरिणामस्यैकसामयिकस्यापि

सा चेव भाणियव्वा'' तिर्यग्योनिक पुरुषों की एवं मनुष्यों की स्थिति जो इनकी स्त्रियों की स्थिति कही गई है वही कहनी चाहिये । इस प्रकार सामान्यतिर्यग्योनिक पुरुषों की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है । जलचर पुरुषों की स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से एक कोटि पूर्व की है । चतुष्पदस्थलचर पुरुषों की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है। उरः परिसर्प स्थलचर पुरुषों की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति एक कोटि पूर्व की है । भुजपरिसर्प स्थलचर पुरुषों की एवं खेचर पुरुषों की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग की है । सामान्य से मनुष्य पुरुषों की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है । तथा—धर्म चरण—चारित्र धर्म—की अपेक्षा लेकर जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है । यह कथन बाह्यलिङ्ग वाली प्रव्रज्या को धारण करने की अपेक्षा से जानना चाहिये — नहीं

સ્થિતિ, તેઓની સ્ત્રિયોની જે સ્થિતિ કહેલ છે, એજ પ્રમાણુની છે તેમ સમજવું. આ રીતે સામાન્ય તિર્યંગ્યોનિક પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની કહી છે. જલચર પુરૂષોની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વ કોટિની છે. ચોપગાં સ્થલચર પુરૂષોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની છે ઉરપરિસર્પ સ્થલચર પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક પૂર્વકોટિની છે ભુજપરિસર્પ સ્થલચર પુરૂષોની અને ખેચર પુરૂષોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પલ્યોપમના અંસખ્યાતમાં ભાગની છે સામાન્ય રીતે મનુષ્ય પુરૂષોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની છે તથા— ધર્માચરણ ચારિત્રધર્મની અપેક્ષાથી જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે. આ કથન બાહ્યલીંગવાળી પ્રવ્રજ્યા

संभवादेकसमयमपि ब्रूयात् । अथवा देशचरणमधिकृत्यान्तर्मुहूर्तमिति वक्तव्यम् । देशचरणप्रतिपत्तेर्बहुलभङ्गतया जघन्यतोऽपि अन्तर्मुहूर्तसंभवात्, तत्र यद्यपि सर्वचरणसंभवेऽपि यद्देशचरणमधिकृत्येति कथितम् । तद्देशचरणपूर्वकं प्रायः सर्वचरणमिति ज्ञापनाय तदुक्तम्—

'सम्मत्तंमि उ लद्धे पलियपुहुत्तेण सावओ होइ ।
चरणोवसमखयाणं सागरोवमसंखंतरा होंति ॥
सम्यक्त्वे तु लब्धे पल्योपमपृथक्त्वे नैव श्रावको भवति ।
चरणोपशमक्षयाणां सागरोपमाणि संख्यातान्यन्तरं भवतीतिच्छाया

सम्यक्त्व प्राप्त्यनन्तरं पल्योपमपृथक्त्वे क्षपिते सति जीवः श्रावको भवति । अयं भावः—आयुर्वर्जानां

तो चारित्र परिणाम एक समय वाला भी होता है—अतः समय की जघन्य स्थिति चारित्र-धर्म की अपेक्षा कहनी चाहिये थी। अथवा चारित्र धर्म की अपेक्षा जो जघन्य स्थिति कही गई है वह देश चारित्र की अपेक्षा से कही गई है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि देश चारित्र भी चारित्रधर्म का एक अङ्ग है—अतः वह जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक आत्मा में रह सकता है। यद्यपि आत्मा में सर्वचरण— सकल—चारित्र—भी सभवित होता है—अतः यहां जो देश चारित्र की अपेक्षा की बात कही गई है वह इस बात को समझाने के लिये कही गई है कि सकल चारित्र प्रायः देश चारित्रपूर्वक होता है। तदुक्तम्—**सम्मत्तंमि उ लद्धे**" इत्यादि।

इसका अर्थ यह है कि सम्यक्त्व की प्राप्ति के अनन्तर पल्योपम पृथक्त्व अर्थात् दो पल्योपम से नौ पल्योपम तक का काल क्षपित होता है तब जीव को श्रावक पना आता

ધારણ કરવાની અપેક્ષાથી કહેલ છે. તેમ સમજવું નહિંતો ચારિત્ર પરિણામ એક સમયવાળું પણ હોય છે તેથી સમયની જઘન્ય સ્થિતિ ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી કહેવી જોઈતી હતી. અથવા ચારિત્રધર્મની અપેક્ષાએ જે કહેલ છે તે દેશચારિત્રની અપેક્ષાથી કહેલ છે, તેમ સમજવું કેમકે— દેશ ચારિત્ર પણ ચારિત્ર ધર્મનું એક અંગ છે. તેથી તે જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી આત્મામા રહી શકે છે. જો કે આત્મામાં સર્વ ચરણ — સકલ ચારિત્ર પણ સંભવે છે. તેથી ત્યાં જે દેશ ચારિત્રની અપેક્ષાની વાત કહેવામાં આવી છે, તે આ વાત સમજાવવા માટે કહેવામાં આવી છે કે સકલચારિત્ર પ્રાય દેશચારિત્ર પૂર્વક હોય છે. તદૂક્તમ્— "सम्मत्तंमि उ लद्धे" ઈત્યાદિ

આનો અર્થ એ છે કે — સમ્યકત્વની પ્રાપ્તિ પછી પલ્યોપમ પૃથકૃત્વ અર્થાત્ બે પલ્યોપમથી નવ પલ્યોપમ સુધીનો કાળ ક્ષપિત થઈજાય છે, ત્યારે જીવને શ્રાવકપણુ આવે છે

सप्तानामपि कर्मणां स्वकीयस्वकीयस्थितिप्रमाणमध्यात् प्रत्येकमेकैककोटिकोटिसागरोपममवशिष्टं स्यात् । तस्मादपि यदा पल्योपमपृथक्त्वं क्षपितं भवेत् तदा जीवस्य श्रावकत्वमायातीति । अथ च श्रावकत्वप्राप्त्यनन्तरं पल्योपमपृथक्त्वन्यूनैककोटिकोटिसागरोपमप्रमितश्रावकत्वप्राप्तिकालप्रमाणमध्याद् यदा संख्यातानि सागरोपमाणि यद् आद्यं जघन्यस्थितिविषयकं व्याख्यानं मनुष्यस्त्रीस्थितिविचारे कथितं तत्सर्वत्र पुरुषस्य जघन्यस्थितिविचारेऽपि विज्ञेयम् । जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तमिति । उत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः स्थितिः, वर्षाष्टकादूर्ध्वमुत्कर्षतोऽपि पूर्वकोटयायुष एव चरणप्रतिपत्तिसंभवादिति ॥ कर्म-भूमिकमनुष्याणां जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि, चरणप्रतिपत्तिमङ्गीकृत्य जघन्यतोऽन्त मुहूर्तमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः स्थितिर्भवति । भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां क्षेत्रं प्रतीत्य

है, तात्पर्य यह—कि आयुष्कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की अपनी अपनी स्थिति में से प्रत्येक कर्म के एक एक कोडाकोडी सागरोपम अवशिष्ट रहने पर उसमें से फिर जब पल्योपम पृथक्त्व क्षपित हो जाता है तब जीव श्रावक बनता है, तथा तदनन्तर श्रावकत्व के कालकी जो प्रमाण पल्योपम पृथक्त्व कम एक कोडाकोडी सागरोपमका है उसमें से जब संख्यात सागरोपम क्षपित हो जाता है तब जीव को सर्वविरति रूप चारित्र की प्राप्ति होती है । चारित्रधर्म की अपेक्षा उत्कृष्ट स्थिति मनुष्य पुरुषों की **देशोन** पूर्वकोटि प्रमाण है । क्योंकि चारित्र धर्म की प्रतिपत्ति उत्कृष्ट से एक पूर्वकोटि की आयु वाले के आठ वर्ष के बाद ही हो सकती है । तथा—कर्मभूमिक मनुष्यों की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है । तथा—चारित्र धर्म को धारण करने की अपेक्षा इनकी स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की जघन्य से है और उत्कृष्ट से देशोनपूर्वकोटि की है । भरत और ऐरवत कर्मभूमिक मनुष्य पुरुषों की जघन्य स्थिति क्षेत्र की अपेक्षा एक

કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે — આયુષ્કર્મને છોડીને બાકીના સાત કર્મોની પોતપોતાની સ્થિતિમાંથી દરેક કર્મના એક એક કોડાકોડી સાગરોપમ શેષ રહે ત્યારે તેમાંથી પાછા જ્યારે પલ્યોપમ પૃથક્ત્વ ક્ષપિત થઈ જાય ત્યારે જીવ શ્રાવક બને છે તથા તે પછી શ્રાવક-પણાનો કાળ કે જે પલ્યોપમ પૃથક્ત્વ કમ એક કોડાકોડિ સાગરોપમનો છે, તેમાંથી જ્યારે સંખ્યાત સાગરોપમ ક્ષપિત થઈ જાય છે. ત્યારે જીવને સર્વવિરતિ રૂપ ચારિત્રની પ્રાપ્તિ થાય છે. ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાએ ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ મનુષ્ય પુરૂષોની દેશોન પૂર્વ કોટી પ્રમાણુની છે. કેમકે — ચારિત્ર ધર્મની પ્રાપ્તિ ઉત્કૃષ્ટથી એક પૂર્વકોટિની આયુ-ષ્યવાળાને આઠ વર્ષ પછી જ થાય છે તથા કર્મભૂમિ જ મનુષ્યોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની છે. તથા ચારિત્રધર્મને ધારણ કરવાની અપેક્ષાથી-તેઓની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વ-કોટિની છે ભરત અને ઐરવત કર્મભૂમિ જ મનુષ્ય પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ક્ષેત્રની

जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेत त्रीणि पल्योपमानि, तानि च सुषमसुषमारके ज्ञातव्यानि, चारित्र-धर्ममधिकृत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटि., पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्य-पुरुषाणां क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण दोशोना पूर्वकोटिः, चारित्रधर्मं प्रतीत्य जघन्ये-नान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः। सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां जन्म प्रतीत्य जघ-न्येन पल्योपमासंख्येयभागन्यूनमेकं पल्योपमम् उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि, संहरणं प्रतीत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः पूर्वविदेहापरविदेहकस्याकर्मभूमौ संहृतस्य जघ-न्यत उत्कर्षतश्च एतावदायुः प्रमाणसंभवात्, हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्याणां जन्म-प्रतीत्य जघन्येन पल्योपमं पल्योपमस्य असंख्येयभागेन न्यूनम्, उत्कर्षतः परिपूर्णं पल्योपमम्

अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की है। ये तीन पल्योपम सुषम सुषमा काल के जानने चाहिये। तथा—चारित्र धर्म की अपेक्षा जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति देशोन पूर्वकोटि की है। पूर्वविदेह अपरविदेह कर्मभूमि मनुष्य पुरुषों की क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कर्ष से देशोन पूर्वकोटि की स्थिति है। चारित्र धर्म को लेकर जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि की है। अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुषों की सामान्य रूप से जन्म की अपेक्षा जघन्य स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन एक पल्योपम की है। और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम की है। संहरण की अपेक्षा—जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि की है। अकर्मभूमि में संहृत पूर्वविदेह अपरविदेह मनुष्य की जघन्य से तथा उत्कृष्ट से इतने ही काल को आयु का सभव है। हैमवत और ऐरण्यवत अकर्मभूमिक मनुष्यों की स्थिति जन्म की अपेक्षा जघन्य से पल्योपम के अस-

---

અપેક્ષાથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની છે આ ત્રણ પલ્યો-પમ સુષમ સુષમાકાળના સમજવા જોઈએ તથા ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દેશોન પૂર્વકોટિની છે પૂર્વવિદેહ અને અપર-વિદેહ કર્મભૂમિ જ મનુષ્ય પુરૂષોની જઘન્ય સ્થિતિ ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ અંતર્મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દેશોન પૂર્વકોટિની છે ચારિત્રધર્મને લઈને જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિની છે અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરૂષોની સામાન્ય પણાથી જન્મની અપેક્ષાથી જઘન્ય સ્થિતિ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી હીન એક પલ્યોપની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમની છે સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્ય સ્થિતિ એક અંત-ર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વકોટિનિ છે અકર્મભૂમિમાં સંહૃત પૂર્વવિદેહ અપરવિદેહના મનુષ્યની જઘન્ય થી તથા ઉત્કૃષ્ટથી એટલાજ કાળના આયુષ્યનો સંભવ છે હૈમવત અને ઐરણ્યવત ના અકર્મભૂમિજ મનુષ્યોની જન્મની અપેક્ષાએ જઘન્ય

संहरणमधिकृत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः कथमिति भावना पूर्ववत्, हरिवर्ष-रम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां जन्म प्रतीत्य जघन्येन द्वे पल्योपमे पल्योपमासंख्येयभाग-न्यूने, उत्कर्षतः परिपूर्णे द्वे पल्योपमे, संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्व-कोटिः। देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां जन्म प्रतीत्य जघन्येन पल्योपमासंख्येयभाग-न्यूनानि त्रीणि पल्योपमानि, उत्कर्षतः परिपूर्णानि त्रीणि पल्योपमानि, संहरणमधिकृत्य जघन्यतो-ऽन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः स्थितिर्भवतीति। अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां जन्म प्रतीत्य जघन्येन देशोनपल्योपमासंख्येयभागः, उत्कर्षेण परिपूर्णपल्योपमासंख्येयभागः। संहरणं

ख्यातवें भाग से हीन एक पल्योपम की है। और उत्कृष्ट से पूर्ण एक पल्योपम की है। तथा संहरण की अपेक्षा से जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति देशोन-पूर्वकोटि की है। हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुषों की जन्म की अपेक्षा जघन्य स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन दो पल्योपम की है और उत्कृष्ट-स्थिति पूरे दो पल्योपम की है। तथा-संहरण की अपेक्षा से इनकी जघन्य स्थिति एक-अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति देशोन पूर्वकोटि की है। देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुष्य पुरुषों की जघन्य स्थिति जन्म की अपेक्षा तो पल्योपम के असंख्यात वें भाग से न्यून तीन पल्योपम की है और उत्कृष्ट स्थिति पूरे तीन पल्योपम की है। तथा—संहरण की अपेक्षा जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से देशोनपूर्वकोटि की है। अन्तर-द्वीप के मनुष्य पुरुषों की जन्म की अपेक्षा जघन्य से देशोन पल्योपम के असंख्यातवें भाग रूप हैं—अर्थात् पल्योपम के देशोन असंख्यातवें भाग रूप है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्व

સ્થિતિ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી હીન એક પલ્યોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂરા એકપલ્યોપમની છે. તથા સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ દેશોન પૂર્વ કોટિની છે. હરિવર્ષ એને રમ્યકવર્ષના અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરૂષોની જન્મની અપેક્ષાએ જઘન્યસ્થિતિ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગથી હીન બે પલ્યોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પૂરા બે પલ્યોપમની છે તથા સંહરણની અપેક્ષાથી તેઓની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દેશોન પૂર્વકોટિની છે. દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય પુરૂષોની જઘન્ય સ્થિતિ જન્મની અપેક્ષાથી તો પલ્યો-પમના અસંખ્યાતમા ભાગથી ન્યૂન ત્રણ પલ્યોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પૂરા ત્રણ પલ્યો-પમ છે. તથા સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિની છે અંતરદ્વીપના મનુષ્ય પુરૂષોની જન્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી દેશોન પલ્યો-પમના અસંખ્યાતમા ભાગરૂપ છે. —અર્થાત્ પલ્યોપમના દેશોન અસંખ્યાતમા ભાગરૂપ

प्रतीत्य जघन्येनाऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटि' स्थितिरिति मनुष्यपुरुषप्रकरणम् ।। **'देवपुरिसाण त्रि जाव सव्वट्ठसिद्धाणं ति ताव ठिई जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा'** देवपुरुषाणामपि यावत् सर्वार्थसिद्धकानामिति तावत्—असुरकुमारदेवपुरुषादारभ्य सर्वार्थसिद्धदेवपुरुषपर्यन्तानां स्थितिः यथा प्रज्ञापनायां चतुर्थे स्थितिपदे कथिता तथाऽत्रापि देवपुरुषाणां स्थितिर्वक्तव्येति, तथाहि—देवपुरुषाणां सामान्यतो जघन्येन स्थितिर्दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि, विशेषचिन्तायाम्, असुरकुमारपुरुषाणां जघन्यतो दशवर्पसहस्राणि, उत्कर्षत' सातिरेकमेकं पल्योपमम् । नागकुमारादिस्तनितकुमारपर्यन्तानां नवाना भवनपतिदेवपुरुषाणां जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमे । वानव्यन्तरपुरुषाणां जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः पल्योपमम् । ज्योतिष्कदेवपुरुषाणां जघन्यतः पल्योपमस्याष्टमो भागः

कोटि रूप है । संहरण की अपेक्षा जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि की स्थिति है । इस प्रकार से यह मनुष्य प्रकरण समाप्त हुआ ।

"देवपुरिसाण त्रि जाव सव्वट्ठसिद्धाणं ति ताव ठिई" देव पुरुषो की भी यावत् तावत् असुरकुमार देवपुरुषों से लेकर सर्वार्थ सिद्ध देव पुरुषों तक की स्थिति का कथन **"जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा"** जैसा- प्रज्ञापना सूत्र के चतुर्थ स्थिति पद में किया गया है वैसा ही वह यहां पर भी कहलेना चाहिये—इस प्रकार देव पुरुषों की सामान्य रूप से जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है और उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है । विशेष रूप से जब देवों की स्थिति का विचार किया जाता है तो वह इस प्रकार से है—असुरकुमार देव पुरुषों की जघन्य से स्थिति दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट से स्थिति कुछ अधिक एक पल्योपम की है । नागकुमार से लेकर स्तनितकुमार पर्यन्त नौ ९, भवनपति देवपुरुषों की जघन्य से स्थिति दस हजार वर्षों की और उत्कृष्ट से कुछ कम दो पल्योपम की है । वानव्यन्तर पुरुषों की जघन्य से दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट से

છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વ કોટિરૂપ છે સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વ કોટિની સ્થિતિ છે આ રીતે આ મનુષ્ય પ્રકરણ સમાપ્ત થયું

"देव पुरिसाण वि जाव सव्वट्टसिद्धाणं ति ताव ठिई" દેવપુરૂષોની પણ યાવત્ તાવત્ અસુરકુમાર દેવપુરૂષોથી લઇએ સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનના દેવપુરૂષો પર્યંતના દેવપુરૂષોની સ્થિતિનું કથન "जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा" પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના ચોથા સ્થિતિપદમાં જે પ્રમાણે કહેલ છે એજ પ્રમાણેનું કથન અહિયાં પણ સમજી લેવું આ રીતે દેવપુરૂષની સામાન્યરૂપથી જઘન્ય સ્થિતિ દસહજાર વર્ષની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કંઇક વધારે એક પલ્યોપમની છે નાગકુમારથી લઈને સ્તનિતકુમાર પર્યંતના નવનિકાય ભવનપતિ દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની છે અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ કંઇક ઓછી બે પલ્યોપમની છે વાનવ્યંતર દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ દસહજાર વર્ષની અને ઉત્કૃષ્ટ

उत्कर्षतः परिपूर्ण पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकम्। सौधर्मकल्पदेवपुरुषाणां जघन्यतः पल्योपममुत्कर्षतो द्वे सागरोपमे, ईशानकल्पदेवपुरुषाणां जघन्यत. साधिक पल्योपमम् उत्कर्षतो द्वे सागरोपमे सातिरेके, सनत्कुमारकल्पदेवपुरुषाणां च जघन्यतो द्वे सागरोपमे, उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि, माहेन्द्रकल्पदेवपुरुषाणां जघन्यतः सातिरेके द्वे सागरोपमे. उत्कर्षतः सातिरेकाणि सप्तसागरोपमाणि। ब्रह्मलोकदेवपुरुषाणां जघन्यतः सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि। लान्तककल्पदेवाना जघन्यतो दशसागरोपमाणि उत्कर्षतश्चतुर्दश सागरोपमाणि। महाशुक्रकल्पदेवपुरषाणां जघन्यतश्चतुर्दशसागरोपमाणि उत्कर्षतः सप्तदश सागरोपमाणि। सहस्रारकल्पदेवपुरषाणां जघन्यतः सप्तदशसागरोपमाणि उत्कर्षतोऽष्टादश-

---

एक पल्योपम की है। ज्योतिष्क देवपुरुषों की जघन्य से स्थिति पल्योपम के अठवें भाग प्रमाण है और उत्कृष्ट से स्थिति एक लाख वर्ष अधिक एक पूरे पल्योपम की है। सौधर्म कल्प देवपुरुषों की स्थिति जघन्य से तो एक पल्योपम की है और उत्कृष्ट से दो सागरोपम की है। ईशानकल्प देवपुरुषों की स्थिति जघन्य से कुछ अधिक एक पल्योपम की है और उत्कृष्ट से कुछ अधिक दो सागरोपम की है। सनत्कुमार कल्प देव पुरुषो की स्थिति जघन्य से दो सागरोपम की और उत्कृष्ट से सात सागरोपम की होती है। माहेन्द्र कल्प के देव पुरुषों की स्थिति जघन्य से सातिरेक दो सागरोपम की है और उत्कृष्ट से सातिरेक सात सागरोपम की है। ब्रह्मलोक देवपुरुषों की स्थिति जघन्य से सात सागरोपम की और उत्कृष्ट से दस सागरोपम की है लान्तककल्पके देवपुरुषों की स्थिति जघन्य से दस सागरोपम की है और उत्कृष्ट से चौदह सागरोपम की है। महाशुककल्पके देवपुरुषों की जघन्य स्थिति चौदह सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति सत्रह सागरोपम की है। सहस्रारकल्प

સ્થિતિ એક પલ્યોપમની છે જ્યોતિષ્ક દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ પલ્યોપમના આઠમા ભાગ પ્રમાણુની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક લાખ વર્ષ અધિક પૂરા એક પલ્યોપમની છે. સૌધર્મકલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ એક પલ્યોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ બે સાગરોપમની છે. ઈશાન કલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ કંઈક વધારે એક પલ્યોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ કંઈક વધારે બે સાગરોપમની છે સનત્ કુમાર કલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્યસ્થિતિ બે સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી સાત સાગરોપમની હોય છે માહેન્દ્રકલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્યસ્થિતિ સાતિરેક બે સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી સાતિરેક સાત સાગરોપમની છે બ્રહ્મલોકના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ સાત સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દસ સાગરોપમની છે. લાન્તક કલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી ચૌદ સાગરોપમની છે. મહાશુક્રકલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્યસ્થિતિ ચૌદ સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ સત્તર સાગરોપમની છે. સહસ્રારકલ્પના દેવ–

सागरोपमाणि । आनतकल्पदेवपुरुषाणां जघन्यतोऽष्टादशसागरोपमाणि उत्कर्षतः एकोनविंशतिः सागरोपमाणि, प्राणतकल्पदेवपुरुषाणा जघन्यत एकोनविंशतिः सागारोपमाणि, उत्कर्षतो विंशतिः सागरोपमाणि । आरणकल्पदेवानां जघन्यतो विंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षत एकविंशतिः सागरोपमाणि । अच्युतकल्पदेवानां जघन्यत एकविंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षतो द्वाविंशतिः सागरोपमाणि । अधस्तनाधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्यतो द्वाविंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षत त्रयोविंशतिः सागरोपमाणि । अधस्तनमध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्यत त्रयोविंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षतश्चतुर्विंशतिः सागरोपमाणि । अधस्तनोपरितनग्रैवेयक देवपुरुषाणां जघन्यतश्चतुर्विंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षतः पञ्चविंशतिः सागरोपमाणि । मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्यतः पञ्चविंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षतः षड्विंशति. सागरो-

देव पुरुषों की जघन्य स्थिति सत्रह १७, सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति अठारह सागरोपम की है। आनत कल्प देव पुरुषों की जघन्य स्थिति अठारह सागरोपम की है। और उत्कृष्ट स्थिति उन्नीस सागरोपम की है। प्राणत कल्प देवपुरुषों की जघन्य स्थिति उन्नीस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति बीससागरोपम की है। आरण कल्पदेव पुरुषों की जघन्य स्थिति बीस सागरोपम की है, और उत्कृष्ट स्थिति इक्कीस सागरोपम की है। अच्युत कल्पदेव पुरुषों की जघन्य स्थिति इक्कीस सागरोपम की है. और उत्कृष्ट स्थिति बाईस सागरोपम की है। अधस्तनाधस्तन ग्रैवेयक देव पुरुषों की जघन्य स्थिति बाईस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति तेईस सागरोपम की है। अधस्तन मध्य ग्रैवेयक देवपुरुषों की जघन्य स्थिति तेईस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति चौबीस सागरोपम की है। अधस्तनोपरितन ग्रैवेयक पुरुषों की जघन्य स्थिति चौबीस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति पच्चीस सागरोपम की है।—मध्यमाधस्तन ग्रैवेयक देवपुरुषों की जघन्य स्थिति पच्चीस सागरो-

પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ૧૭ સત્તર સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૧૮ અઢાર સાગરોપમની છે, આનતકલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ૧૮ અઢાર સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૧૯ ઓગણીસ સાગરોપમની છે પ્રાણુત કલ્પના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ૧૯ ઓગણીસ સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ વીસ સાગરોપમની છે. આરણકલ્પના દેવ પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ૨૦ વીસ સાગરોપમની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એકવીસ સાગરોપમની છે અચ્યુત કલ્પના દેવપુરુષની જઘન્ય સ્થિતિ એકવીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ બાવીસ સાગરોપમની છે. અધસ્તનાધસ્તન ગ્રૈવેયકના દેવ પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ તેવીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ચોવીસ સાગરોપમની છે અધસ્તન ઉપરિતન ગ્રૈવેયક દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ચોવીસ સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પચીસ સાગરોપમની છે મધ્યમાધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ પચીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છવ્વીસ સાગરોપમની છે. મધ્યમ

पमाणि । मध्यममध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्यतः षड्विंशतिः सागरोपमाणि, उत्कर्षतः सप्तविंशतिः सागरोपमाणि। मध्यमोपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषाणा जघन्यतः सप्तविंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षतोऽष्टाविंशतिः सागरोपमाणि । उपरितनाधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्येनाष्टाविंशतिः सागरोपमाणि उत्कर्षत एकोनत्रिंशत् सागरोपमाणि । उपरितनमध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्येन एकोनत्रिंशत्सागरोपमाणि, उत्कर्षत त्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरितनोपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषाणां जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाणि । उत्कर्षतएकत्रिंशत्सागरोपमाणि विजयवैजयन्तजयन्तापराजितविमानदेपुरुषाणां जघन्येन एकत्रिंशत्सागरोपमाणि मध्यमतो द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि, उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । सर्वार्थसिद्धमहाविमानदेवपुरुषाणाम् जघन्योत्कृष्टतत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । एवं क्रमेण असुरकुमारादारभ्य सर्वार्थसिद्धपर्यन्तदेवपुरुषाणां स्थिति र्भवतीति ज्ञातव्यमिति ॥

पम की है और उत्कृष्ट स्थिति छब्बीस सागरोपम की है। मध्यममध्यम ग्रैवेयक देव पुरुषों की जघन्य स्थिति छब्बीस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति सत्ताईस सागरोपम की है। मध्यमोपरितन ग्रैवेयक देवपुरुषों की जघन्य स्थिति सत्ताईस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति अट्ठाईस सागरोपम की है। उपरितनाधस्तन ग्रैवेयक देवपुरुषों की जघन्य स्थिति अट्ठाईस सागरोपम की है। और उत्कृष्ट स्थिति उनतीस सागरोपम की है। उपरितन मध्यम ग्रैवेयक देवपुरुषों की जघन्य स्थिति उनत्तीस सागरोपम की है। और उत्कृष्ट स्थिति तीस सागरोपम की है। उपरितनोपरितन ग्रैवेयक देव पुरुषों की जघन्य स्थिति तीस सागरोपम की है और उत्कृष्ट स्थिति इकतीस सागरोपम की है। विजय, वैजयन्त जयन्त और अपराजित विमान गत देव पुरुषो की जघन्य स्थिति इकतीस सागरोपम की है और मध्यम ३२ सा सागरोपम की है। उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है। सर्वार्थसिद्ध महाविमाननिवासी देवपुरुषों की जघन्य एवं उत्कृष्ट दोनों

ગ્રૈવેયક દેવપુરુષની જઘન્ય સ્થિતિ છવ્વીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ સત્યાવીસ સાગરોપમની છે. મધ્યમોપરિતન ગ્રૈવેયક દેવપુરુષની જઘન્ય સ્થિતિ સત્યાવીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ અઠયાવીસ સાગરોપમની છે. ઉપરિતનાધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ અઠયાવીસ સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ઓગણત્રીસ સાગરોપમની છે. ઉપરિતન મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવ પુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ઓગણત્રીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રીસ સાગરોપમની છે ઉપરિતનોપરિતન ગ્રૈવેયક દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ ત્રીસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ એકત્રીસ સાગરોપમની છે વિજય, વૈજયંત, જયંત અને અપરાજિત વિમાનના દેવપુરુષોની જઘન્ય સ્થિતિ એકત્રીસ સાગરોપમની છે. અને મધ્યમ બત્રીસ સાગરોપમની છે તથા ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તેત્રીસ સાગરોપમની છે. સવાર્થ સિદ્ધ મહાવિમાનમાં રહેવાવાળા દેવપુરુષોની જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ

पुरुषाणां भवस्थितिमानं कथितम्, अधुना पुरुषः पुरुषत्वममुञ्चन् कियन्तं कालं निरन्तरं मवतिष्ठते ? इति निरूपणार्थमाह—'पुरिसे णं इत्यादि, 'पुरिसे णं भंते' पुरुषः खलु भदन्त ! 'पुरिसेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ' पुरुष इति—पुरुषरूपेण पुरुषभावस्यापरित्यागेनेत्यर्थः कालतः कियच्चिरं कियन्तं कालं यावद्भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, तावत्कालादूर्ध्वं मृत्वा स्त्र्यादि भावगमना दिति। 'उक्कोसेण सागरोवमपुहुत्तं सातिरेगं' उत्कर्षेण सागरोपमपृथक्त्वं सातिरेकम् द्विसागरोपमादारभ्य नवसागरोपमपर्यन्तं सामान्यतः स्तिर्यग् नरामरभवेषु एतावन्तं कालं पुरुषेष्वेव भावात् सातिरेकता च कतिपयमनुष्यभवैरेव ज्ञातव्या ततः परं पुरुषनामकर्मोदया-

---

प्रकार की स्थिति तेतीस सागरोपम की है। इस क्रम से देव पुरुषों की स्थिति संबन्धी वक्तव्यता असुरकुमार से लेकर सर्वार्थसिद्ध देवपुरुषों तक कहलेनी चाहिये।

पुरुषों की भवस्थिति का प्रमाण कहकर अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि पुरुष पुरुषत्व को कितने काल तक नहीं छोड़कर निरन्तर पुरुष होता है "पुरिसे णं भंते" इत्यादि। "पुरिसे णं भंते ! पुरिसेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ" हे भदन्त ! पुरुष अपने पुरुष भाव का कितने काल तक त्याग नहीं करता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमपुहुत्तं सातिरेगं" हे गौतम ! पुरुष अपने पुरुष-भाव का त्याग नहीं करे तो वह जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त तक नहीं करे और उत्कृष्ट से वह कुछ अधिक दो सागरोपम से लेकर ९ नौ सागरोपम तक नहीं करे, क्योंकि इतने काल तक वह निरन्तर तिर्यग् नर अमर इन भवों में पुरुषरूप से ही उत्पन्न होता रहता है, यहां सातिरेकता कुछ अधिकता कही गई है वह कितनेक मनुष्यभवोंकी अपेक्षा

બન્ને પ્રકારથી તેત્રીસ સાગરોપમની છે આ ક્રમ પ્રમાણે દેવ પુરુષોની સ્થિતિ સંબંધી વકતવ્યતા અસુર કુમારથી લઈ ને સર્વાર્થસિદ્ધ દેવ પુરુષો સુધી કહેવી જોઈએ.

પુરુષોની ભવસિદ્ધિનુ પ્રમાણ કહીને, હવે, સૂત્રકાર, એ બતાવે છે કે — પુરુષ, પુરુષ-પણાને કેટલા કાળ પર્યંત છોડયા વિના નિરંતર, પુરુષ બની રહે છે, "પુરિસે ણં ભંતે ! પુરિસેત્તિ કાલઓ કેવચ્ચિરં હોઈ" હે ભગવન્ પુરુષ પોતાના પુરુષપણાનો, કેટલા કાળ સુધી ત્યાગકરતા નથી ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામી કહે છે કે—"ગોયમા ! જહણ્ણેણ અંતો મુહુત્તં ઉક્કોસેણં સાગરોવમપુહુત્તં સાતિરેગં" હે ગૌતમ ! પુરુષ પોતાના પુરુષપણાનો ત્યાગ ન કરે તો તે જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી તે કંઈક વધારે બે સાગરોપમથી લઈને નવ સાગરોપમ સુધી ત્યાગ કરતા નથી, કેમકે— આટલા કાળ સુધી તે નિરંતર તિર્યંક્ નર અમર આ ભવોમાં પુરુષપણાથી જ ઉત્પન્ન થતા રહે છે અહિયાં સાતિરેકપણું કંઈક અધિક કહેલ છે તે કેટલાક મનુષ્ય ભવોની અપેક્ષાથી સમજી લેવું

भावात् नियमत एव स्त्र्यादि भावगमनादिति, एतावत्कालपर्यन्तं सामान्यतः पुरुषाणां पुरुषभावेनावस्थानं भवतीति । अथ तिर्यक् पुरुषाणामवस्थानं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह–'**तिरिक्खजोणिय**' इत्यादि, '**तिरिक्खजोणियपुरिसे णं भंते**' सामान्यतिर्यग्योनिकपुरुषः खलु भदन्त ! '**कालओ केवच्चिरं होइ**' पुरुषभावापरित्यागेन कालतः कियच्चिरं कियन्तं कालं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह -'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम सामान्यतिर्यग्योनिकपुरुषस्य '**जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं**' जघन्येनान्तर्मुहूर्तमात्रमेवावस्थानं भवति '**उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं**' उत्कर्षेण त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि । द्विपूर्वकोटित आरभ्य नव पूर्वकोटि पर्यन्ताधिकपल्योपमत्रयं यावत् सामान्यतस्तिर्यग्योनिकपुरुषाणामवस्थानं भवतीति भावः । '**एवं तं चेव**' एवं तदेव स्थानं यत् एतस्यैव स्त्रीप्रकरणे कथितम् '**संचिट्ठणा जहा इत्थीणं**' संस्थितिर्यथा तिर्यक्स्त्रीणाम् कियत्पर्यन्तं तत्राह–'**जाव**' इत्यादि, **जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसस्स संचिट्ठणा**' यावत् जलचरस्थलचरखेचरतिर्यग्योनिकपुरुषस्य संस्थितिः ।

से जानना चाहिये । इसके बाद पुरुष नामकर्मोदय का उसके अभाव हो जाता है । अतः नियम से स्त्र्यादि भावों में चला जाता है । इस प्रकार का यह सामान्य कथन है । विशेष कथन इस प्रकार से है–"**तिरिक्खजोणियपुरिसे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ**' हे भदन्त ! लगातार तिर्यञ्च पुरुष तिर्यञ्च पुरुष रूप से कितने काल तक बना रहता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं —"**गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं**" हे गौतम ! तिर्यक् पुरुष तिर्यग् पुरुष रूप में कम से कम तो एक अन्तर्मुहूर्त तक बना रहता है और अधिक से अधिक पूर्वकोटि-पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम तक बना रहता है यह तिर्यग् पुरुष का तिर्यक् पुरुष रूपसे निरन्तर होते रहने के कालका कथन सामान्य से है "**एवं तं चेव संचिट्ठणा जहा इत्थीणं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसस्स**" **संचिट्ठणा**, इस प्रकार से इसके स्त्री प्रकरण

જોઈએ તે પછી પુરુષનામકર્મોદયનો તેને અભાવ થઈ જાય છે તેથી તે નિયમથી સ્ત્રી વિગેરે ભવોમાં ચાલ્યા જાય છે આ રીતનું આ સામાન્ય કથન છે. વિશેષ કથન આ પ્રમાણે છે. "**तिरिक्खजोणियपुरिसे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ**" હે ભગવન્ તિર્યંચ પુરુષપણાથી લાગઠ કેટલો કાળ સુધી બન્યો રહે છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે — **गोयमा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं**" હે ગૌતમ ! તિર્યક્ પુરુષ તિર્યંચ પુરુષપણાથી ઓછામાં ઓછા એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી બન્યા રહે છે અને વધારેમાં વધારે પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમ સુધી બની રહે છે. આ કથન તિર્યક્ પુરુષનું તિર્યક પુરુષપણાથી નિરંતર બન્યા રહેવાના કાળનું સામાન્યરીતે કથન છે "**एवं तं चेव संचिट्ठणा जहा इत्थीणं जाव खहयरतिरिक्खजोणिय पुरिसस्स संचिट्ठणा**" આ રીતે આના આ પ્રકરણમાં જેવી રીતની

अयं भावः—तिर्यग्योनिकपुरुषाणामवस्थानं यथा तिर्यग्योनिकस्त्रीणां कथितं तथैव ज्ञातव्यम् तथाहि–तिर्यग्योनिक पुरुषस्तिर्यग्पुरुषत्वमपरित्यजन् जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तमात्रम् तदनन्तरं मृत्वा गत्यन्तरे वेदान्तरे वा संक्रमात् । उत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि—पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि, तत्र पूर्वकोटिपृथक्त्वं सप्तभवाः पूर्वकोटयायुषः पूर्वविदेहादौ, त्रीणि पल्योपमानि अष्टमे भवे देवकुरूत्तरकुरुषु । विशेषचिन्तायां तु जलचरपुरुषो जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् तदनन्तरम् तिर्यग्योन्यन्तरे—गत्यन्तरे वेदान्तरे वा संक्रमात् उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वं पूर्वकोटयायुः समन्वितस्य भूयो भूय-

---

में जैसी संस्थिति कही गई है वैसी संस्थिति यहां पर भी कह लेनी चाहिये, और यह संस्थिति प्रकरण जलचर स्थलचर खेचर तिर्यग्योनिक पुरुष के संस्थिति प्रकरणतक यहां कहना चाहिये, इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से है—तिर्यग्योनिक पुरुष यदि अपने तिर्यग्योनिक पुरुषत्व का परित्याग नहीं करता है तो कम से कम वह एक अन्तर्मुहूर्त्तकालतक नहीं करता है, इसके बाद वह मरकर दूसरी गति में दूसरे किसी वेद में चला जाता है, इस सम्बन्ध में जो उत्कृष्ट अवस्थान काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम का कहा गया है—सो जब यह मरकर पूर्वकोटि की आयु को लेकर पूर्वविदेह आदि में उत्पन्न हो जाता है तो इस प्रकार से लगातार इसके सात भव वहा धारणकर समाप्त हो जाते हैं—आठवें भव में यह देवकुरु या उत्तर कुरु में तिर्यग्योनिक पुरुष की पर्याय से उत्पन्न हो जाता है वहां उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की होती है, इस प्रकार तिर्यक् पुरुष की कायस्थिति का काल जो कहा गया है वह निष्पन्न हो जाता है विशेष की चिन्ता में जलचर पुरुष की कायस्थिति का काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि–पृथक्त्व है, जघन्य अवस्थान काल की समाप्ति के अनन्तर मरकर यह जीव तिर्यग्योन्यन्तर में वेदा-

---

સ્થિતિ કહેલ છે. એવી જ સ્થિતિ આ પ્રકરણમાં પણ ખેચરતિર્યંક્ પુરૂષોના સંબંધમાં પણ સમજી લેવી અનેઆ સંસ્થિતિ પ્રકરણ જલચર, સ્થલચર, ખેચર તિર્યંક્યોનિક પુરૂષ ના સંસ્થિતિપ્રકરણ સુધી અહીં સમજવી તેનો સ્પષ્ટાર્થ આ પ્રમાણે છે.—તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ જો પોતાના તિર્યગ્યોનિક પુરૂષપણાનો ત્યાગ કરતા નથી. તો ઓછામાં ઓછા તે એક અંતર્મુહૂર્ત કાળ સુધી ત્યાગ કરતા નથી. તે પછી તે મરીને બીજીગતિમાં બીજા કોઈ વેદમાં ચાલ્યા જાય છે. આ સંબંધમાં જે ઉત્કૃષ્ટ અવસ્થાન કાળ પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો કહેલ છે, તે જ્યારે તે મરીને પૂર્વકોટિના આયુષ્યને લઈને પૂર્વવિદેહ વિગેરેમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, તો એ રીતે લાગઠ તેના સાતભવ ત્યાં ધારણ કરીને પછી સમાપ્ત થઇ જાય છે. અને આઠમાં ભવમાં તે દેવકુરૂ અથવા ઉત્તરકુરૂમાં તિર્યગ્યોનિક પુરૂષના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. ત્યાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યોપમની હોય છે આ રીતે તિર્યગ્ પુરૂષની કાયસ્થિતિનો કાળ જે કહેવામાં આવેલ છે, તે મળી રહે છે. વિશેષની ચિંતામાં જલચર પુરૂષની કાયસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ કહેલ છે. જઘન્ય અવસ્થાન કાળની સમાપ્તિ પછી મરીને આ જીવ તિર્યગ્યોનિ શિવાયની યોનિ

स्तत्रैव द्व्यादिवारोत्पत्तिसंभवादिति । चतुष्पदस्थलचरपुरुषो जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि । तानि सामान्यतिर्यक् पुरुषस्येव भावनीयानि । उरः परिसर्पस्थलचरपुरुषो भुजपरिसर्पस्थलचरपुरुषश्च जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वम् । तस्य जलचरपुरुषस्येव भावनीयम् । खेचरपुरुषो जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तम् । अन्तर्मुहूर्तभावना तु पूर्ववदेव उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकः पल्योपमासंख्येयभागः, स च सप्तवारान् पूर्वकोटिस्थितिषु समुत्पद्याष्टमवारमन्तरद्वीपादिखेचरपुरुषेषु पल्योपमासंख्येयभागस्थितिषु उत्पद्यमानस्य ज्ञातव्यः, इति तिर्यग्योनिकपुरुषप्रकरणम् ॥

न्तर को प्राप्त कर लेता है, उत्कृष्ट से जो इसका कायस्थिति का काल कहा गया है—वह पूर्वकोटि की आयु को लेकर वहीं पर दो तीन आदि बार उत्पन्न होने की अपेक्षा से कहा गया है। चतुष्पद स्थलचर पुरुष का कायस्थिति का काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का हैं और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम का है इसकी भावना सामान्य तिर्यक् पुरुष के जैसी समझलेनी चाहिये उरःपरिसर्प स्थलचर तिर्यक् पुरुष का और भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यक् पुरुष का कायस्थिति काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का हैं और उत्कृष्ट से पूर्वकोटिपृथक्त्व हैं। भावना जलचर पुरुष के जैसी जान लेवें। खेचर पुरुष का कायस्थिति काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है भावना पहले के जैसी कर लेवें और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम के असंख्यातवें भाग रूप है ऐसा यह कायस्थिति का काल जो खेचर पुरुष सात बार तक पूर्वकोटि की स्थिति वाले खेचर पुरुषों में उत्पन्न होकर आठवें भव में पल्योपम के असंख्यातवें

અને અન્ય વેદને પ્રાપ્ત કરીલે છે ઉત્કૃષ્ટથી જે આની કાયસ્થિતિનો કાળ કહ્યો છે,-તે પૂર્વકોટિના આયુષ્યને લઈને ત્યાંજ બે ત્રણ આદિ વાર ઉત્પન્ન થવાની અપેક્ષાથી કહેલ છે. ચોપગા સ્થલચર પુરૂષની કાયસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો છે. આની સમજ સામાન્ય તિર્યંચપુરૂષની જેમ સમજી લેવી ઉર:પરિસર્પ સ્થલચર તિર્યક્પુરૂષનો અને ભુજપરિસર્પ સ્થલચર તિર્યક પુરુષનો કાયસ્થિતિ કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ છે તેની સમજણ જલચર પુરૂષની જેમ સમજી લેવી ખેચર પુરૂષની કાયસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. તેની સમજણ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે કરી લેવી અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગરૂપ છે આવી રીતનો આ કાયસ્થિતિનો કાળ જે ખેચર પુરૂષ સાતવાર સુધી પૂર્વકોટિની સ્થિતિવાળા ખેચર પુરૂષોમાં ઉત્પન્ન થઈને આઠમા ભવમાં

अथ मनुष्यपुरुषप्रकरणमाह–'मणुस्सपुरिसा णं भंते' इत्यादि, 'मणुस्सपुरिसा णं भंते ? मनुष्यपुरुषाः खलु भदन्त ! 'कालओ केवच्चिरं होंति' कालतः कियच्चिरं भवन्ति मनुष्यपुरुषास्तादृशपुरुषत्वमपरित्यजन्तः कियत्कालपर्यन्तमवतिष्ठन्ते इति प्रश्न., भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' क्षेत्र प्रतीत्य क्षेत्राश्रयणेन जघन्येनान्तमुहूर्तं यावदवतिष्ठन्ते. 'उक्कोसेणं तिन्नि पलियोवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं उत्कर्षेत त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि 'धम्मचरण पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' धर्मचरणं–चारित्रधर्मं प्रतीत्य, जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्. 'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः। 'एवं सव्वत्थ' एवं यथा सामान्यतो मनुष्यपुरुषाणामवस्थानं कथित तथैव सर्वत्र सर्वपुरुषाणामपि अवस्थानं ज्ञातव्यम् तत्राह–'जाव' इत्यादि, 'जाव पुव्व

भाग की स्थितीवाले अन्तर द्वीप आदि के खेचर पुरुषों में उत्पन्न होता है उस की अपेक्षा से जानना चाहिये। तिर्यग्योनि प्रकरण समाप्त,

"मणुस्स पुरिसा णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होंति" हे भदन्त ! मनुष्य पुरुषों की कायस्थिति का काल कितना है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं" हे गौतम ! मनुष्य पुरुषोंकी कायस्थिति का काल जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त का हैं और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम का है। "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं "चारित्र धर्म की अपेक्षा करके इसकी कायस्थिति काल जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का और 'उक्कोसेणं' उत्कृष्ट से "देसूणा पुव्वकोडी" देशोन पूर्वकोटि का है, "एवं सव्वत्थ" इस प्रकार से जैसा यह सामान्य रूप से मनुष्य पुरुषों का अवस्थान काल– कायस्थिति का काल कहा है वैसा ही सर्वत्र सब पुरुषों की भी कायस्थितिका काल जानना चाहिए

પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગની સ્થિતિવાળા અંતરદ્વીપ વિગેરેના ખેચર પુરૂષોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તે અપેક્ષાએ સમજવું

આ રીતે તિર્યગ્યોનિક પ્રકરણ સમાપ્ત

'मणुस्सपुरिसा णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होंति" હે ભગવન્ મનુષ્ય પુરૂષોની કાય સ્થિતિનો કાળ કેટલો કહેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે— "गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं" હે ગૌતમ મનુષ્ય પુરૂષોની કાયસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો છે "धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી તેઓની કાયસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો 'उक्कोसेणं' અને ઉત્કૃષ્ટથી "देसूणा पुव्वकोडी" દેશોન પૂર્વકોટિનો છે. "एवं सव्वत्थ" આ રીતે જેવી રીતે આ સામાન્ય પણાથી મનુષ્ય પુરૂષોનો અવસ્થાન કાળ—એટલે કે-કાયસ્થિતિનો કાળ કહ્યો છે એજ પ્રમાણે બધેજ પુરૂષોનો કાયસ્થિતિનો કાળ સમજી લેવો.

'विदेह अवरविदेह०' यावत् पूर्वविदेहापरविदेहपुरुषाणाम् अवस्थानं तावत्पर्यन्तमत्र वाच्यम्। यावत्पदेन भरतैरवतक्षेत्रयोर्ग्रहणं भवति। भरतैरवतपूर्वविदेहापरविदेहपुरुषाणां क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिं पृथक्त्वाभ्यधिकानि त्रीणि पल्योपमानि, धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिरिति। 'अकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं' अकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणामवस्थानं यथा अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीणां कथितं तथैव। 'जाव अंतरदीवगाणं' यावदन्तरद्वीपकानाम् अन्तरद्वीपकमनुष्यपुरुषपर्यन्तानामवस्थानं तत्तत् स्त्रीप्रकरणवदेव ज्ञातव्यम्। अत्र यावत्पदेन हैमवतैरण्यवत-हारवर्ष रम्यकवर्ष-देवकुरूत्तरकुरुपुरुषाणां ग्रहणं भवति। तथाहि-मनुष्यपुरुषाणामवस्थानं तथा वक्तव्यं

यावत् भरत, ऐरवत, पूर्वविदेह और अपर विदेह तक के पुरुषों की कायस्थिति का भी काल ऐसा ही जानना चाहिये, "अकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं", अकर्म भूमिक मनुष्य पुरुषों की कायस्थिति का काल जैसा अकर्म भूमिक मनुष्य स्त्रियों का कायस्थिति काल कहा गया है वैसा ही जानना चाहिए और अन्तर द्वीप रूप अकर्मभूमिक मनुष्य स्त्रियों की कायस्थिति का काल के जैसा ही काल यावत् अन्तर द्वीपज मनुष्यो की कायस्थिति का भी जानना चाहिये इस प्रकार यावत्पद से हैमवत हैरण्यवत-हरिवर्ष, रम्यकवर्ष-देवकुरु उत्तरकुरू, और अन्तरद्वीप अकर्म भूमिक मनुष्य पुरुषों की कायस्थिति का काल जैसा २ वहां२की मनुष्यस्त्रियों की कायस्थिति का काल कहा गया है वैसा २ ही जानना चाहिये, ऐसा इस कथन का निष्कर्षार्थ है स्त्रियों की स्थिति के जैसा ही अवस्थान भी अन्तरद्वीपज मनुष्यपुरुषों तक का जानना चाहिये इस कथन का

યાવત્—અર્થાત્ ભરત ઐરવત પૂર્વ વિદેહ અને અપર વિદેહ સુધીના પુરૂષોની કાયસ્થિતિનો કાળ પણ એજ પ્રમાણે સમજી લેવો.

"अकम्मभूमिकमणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीणं" અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરૂષોની કાયસ્થિતિનો કાળ જેમ અકર્મભૂમિક મનુષ્ય સ્ત્રિયોનો કાયસ્થિતિ કાળ કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણેનો સમજવો અને અંતરદ્વીપ રૂપ અકર્મ ભૂમિજ મનુષ્ય સ્ત્રિયોની કાયસ્થિતિના કાળ પ્રમાણેનોજ કાળ યાવત્ અંતરદ્વીપજ મનુષ્યોની કાયસ્થિતિનો કાળ પણ સમજી લેવો. આ રીતે યાવત્ પદથી હૈમવત, હૈરણ્યવત્—હરિવર્ષ, રમ્યક વર્ષ, દેવકુરૂ, ઉત્તરકુરૂ, અને અંતરદ્વીપ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષોની કાયસ્થિતિનો કાળ જે જે રીતે ત્યાં ત્યાંની મનુષ્ય સ્ત્રિયોની કાયસ્થિતિનો કાળ કહ્યો છે, એ એ રીતે સમજી લેવો. આ પ્રમાણેનો આ કથનનો ભાવાર્થ છે. સ્ત્રિયોની કાયસ્થિતિ પ્રમાણે જ અવસ્થાન પણ અંતરદ્વીપજ મનુષ્ય પુરૂષો સુધીનો સમજી લેવું.

यथा मनुष्यादिस्त्रीणां कथितम्, तथाहि—सामान्यतो मनुष्यपुरुषस्य क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् । तदनन्तरं मृत्वा गत्यन्तरे वेदान्तरे वा संक्रमात् । उत्कर्षत त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि तत्र सप्तभवाः पूर्वकोटयायुषो महाविदेहेषु अष्टमस्तु भवो देव कुर्वादिषु । धर्मचरणं प्रतीत्यैकसमयमात्रं द्वितीयसमये मरणसंभवात् । उत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटि', उत्कर्षेणापि पूर्वकोटयायुष एव वर्षाष्टकादनन्तरं चरणप्रतिपत्तिसंभवादिति । मनुष्यविशेषचिन्तायां सामान्यतः कर्मभूमिकमनुष्यपुरुषः कर्मभूमिरूप क्षेत्रमाश्रित्य जघ-

---

स्पष्टीकरण इस प्रकार है – भरत ऐरवत अन्तर द्वीप तक के मनुष्य पुरुषों का अवस्थान वैसा कहना चाहिये जैसा भरतादि मनुष्य स्त्रियों का कहा गया है । सो इस कथन के अनुसार सामान्य से मनुष्य पुरुष का अवस्थान क्षेत्र की अपेक्षा लेकर जघन्यसे तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का है—क्योंकि इसके बाद मरकर वह गत्यन्तर में या वेदान्तर में संक्रमित हो जाता है, और उत्कृष्ट से उसका अवस्थान काल पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम का है और इनमें उसके पूर्वकोटि आयु को लेकर सात भव तो महाविदेहों में हो जाते हैं और आठवों भव देव कुरु आदिकों में हो जाता है तथा—धर्मचरण—चारित्र धर्म—को लेकर इसका अवस्थान काल जघन्य से तो एक समय का है—क्योंकि-द्वितीय समय में मरण की संभावना है और उत्कृष्ट में अवस्थान काल इसका देशोन पूर्वकोटि रूप है. क्योंकि पूर्वकोटि की आयु वाले मनुष्य के ही आठ वर्ष के बाद चारित्र धर्म की प्राप्ति हो सकती है । मनुष्य विशेष विचारकी अपेक्षा में समान्य से कर्मभूमिक मनुष्य पुरुष कर्मभूमि रूप क्षेत्र को आश्रय करके

આ કથનનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે.—ભરત, એરવત, અંતરદ્વીપ સુધીના મનુષ્ય પુરુષોનુ અવસ્થાન એવી રીતે કહેવું જોઈએકે જેવી રીતે ભરત વિગેરે ક્ષેત્રોની મનુષ્ય સ્ત્રિયોનું અવસ્થાન કહેલ છે. તો આ કથન પ્રમાણે સામાન્ય રીતે મનુષ્ય પુરુષનું અવસ્થાન ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્તનું છે કેમકે—તે પછી તે મરીને બીજી ગતિમાં અથવા વેદાન્તરમાં સંક્રમિત થઈ જાય છે. અર્થાત્ પરિણમી જાય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી તેનો અવસ્થાન કાળ પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો છે અને તેમાં તેઓની પૂર્વકોટિના આયુષ્યને લઈને સાત ભવ તો મહાવિદેહોમાં થઈ જાય છે અને આઠમો ભવ દેવ કુરૂ વિગેરેમાં થઈ જાય છે. તથા ધર્મચરણ—ચારિત્ર ધર્મને લઈને તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી તો એક સમયનો છે કેમકે—બીજા સમયમાં મરણની સંભાવના છે અને ઉત્કૃષ્ટથી તેનો અવસ્થાન દેશોનપૂર્વકોટિ રૂપ છે. કેમકે—પૂર્વકોટિની આયુષ્ય વાળા મનુષ્યનેજ આઠ વર્ષ પછી ચારિત્ર ધર્મની પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે મનુષ્ય વિશેષના વિચારની અપેક્ષાથી સામાન્યથી કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષ, કર્મભૂમિરૂપ ક્ષેત્રનો આશ્રય લઈને જઘન્ય

न्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि, तत्र अन्तर्मुहूर्त्तं पूर्ववदेव, त्रीणि पल्योपमानि पूर्वकोटिपृथक्त्वाभ्यधिकानि सप्तवारान् पूर्वकोट्यायुःसमन्वितेषूत्पद्य अष्टमं वारमेकान्तसुषमायां भरतैरवतयो स्त्रिपल्योपमस्थितिषु समुत्पद्यमानस्य भवतीति ज्ञातव्यम्। धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनैकं समयं सर्वविरतिपरिणामस्यैकसामयिकस्यापि संभवात्, उत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिः समग्र चरणकालस्यापि एतावत एव भावादिति। भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्यापि भरतैरवतक्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमानि देशोनपूर्वकोटयभ्यधिकानि। तानि च पूर्वकोटयायु समन्वितस्य विदेहपुरुषस्य

जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम तक रह सकता है इतना अवस्थान काल इसका इस कारण से हो सकता है कि यह सातवार तो पूर्वकोटि की आयुवाले मनुष्य पुरुषों में उत्पन्न होकर आठवें भव में यह एकांत सुषमा काल में भरत या ऐरवत क्षेत्र के तीन पल्योपमकी उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य पुरुषों में उत्पन्न हो जाता है, चारित्र धर्म की प्रतिपत्ति की अपेक्षा लेकर इसका अवस्थान काल कम से कम एक समय का है—क्योंकि कम से कम एक समय तक भी सर्वविरति रूप चारित्र परिणाम इसके हो सकता है—और अधिक से अधिक इसके सर्वविरति रूप चारित्र परिणाम देशोन पूर्वकोटि तक हो सकता है—क्योंकि सर्वविरति का काल इतना ही है भरत एवं ऐरवत कर्मभूमिक मनुष्य पुरुष का भी अवस्थान काल भरत और ऐरवत क्षेत्र की अपेक्षा लेकर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम का है। इतना यह काल पूर्वकोटि आयु युक्त विदेह क्षेत्र का पुरुष जो भरतादिमें संहृत होकर

थी એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ અધિક ત્રણ પલ્યોપમ સુધી રહી શકે છે આટલો અવસ્થાન કાળ તેનો એ કારણે થઇ શકે છે કે—આ સાતવાર સુધી તો પૂર્વકોટિના આયુષ્ય વાળા મનુષ્ય પુરુષોમાં ઉત્પન્ન થઈને આઠમા ભવમાં આ એકાન્ત સુષમા કાળમાં ભરત અથવા ઐરવત ક્ષેત્રના ત્રણ પલ્યોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા મનુષ્ય પુરૂષોમાં ઉત્પન્ન થઇ જાય છે ચારિત્ર ધર્મની પ્રતિપત્તીની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ ઓછામાં ઓછો એક સમયનો છે. કેમકે ઓછામાં ઓછા એક સમય સુધી પણ સર્વવિરતિરૂપ ચારિત્ર પરિણામ તેને થઇ શકે છે. અને વધારેમાં વધારે સર્વવિરતિરૂપ ચારિત્ર પરિણામ દેશોન પૂર્વકોટિ સુધી તેને થઈ શકે છે કેમકે —સર્વ વિરતિનો કાળ એટલો જ છે. ભરત અને ઐરવત, કર્મભૂમિક મનુષ્ય પુરુષનો અવસ્થાન કાળપણ ભરત, ઐરવત ક્ષેત્રની અપેક્ષા જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો છે આટલો આ કાળ પૂર્વકોટિ આયુષ્ય વાળા વિદેહ ક્ષેત્રના પુરુષો જે ભરત વિગેરેમાં સંહરણ કરીને ફરી લાવવામા આવે

आनीतस्य भरतादि वासयोगाद् भारतीयोऽयमिति भरतादि प्रवृत्तव्यपदेशस्य भवायुःक्षये एकान्तसुषमाप्रारम्भे समुत्पन्नस्य ज्ञातव्यानि। धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनैकं समयम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिरिति। एतस्य द्वयस्यापि पूर्ववदेव भावना कर्तव्या। पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्य क्षेत्राश्रयणेन जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वमवस्थानं भवति, तच्च वारं वारं तत्रैव सप्तवारानुत्पत्तिमधिकृत्य भावनीयम्, यत स्तत ऊर्ध्वमवश्यं गत्यन्तरे योन्यन्तरे वा तस्य संक्रमो भवति। धर्मचरण प्रतीत्य जघन्येनैकं समयमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिरवस्थानम्। तथा सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्य तद्भावमपरित्यजतो जन्मप्रतीत्य जघन्येनैकं पल्योपमं पल्योपमासंख्येयभागहीनम। उत्कर्षत स्त्रीणि

पुनः लाया जाय, वह भरतादि में निवास किया इसलिये यह भारतीय है ऐसे व्यपदेश वाला होता है वह अपने भवसंबन्धी आयु के क्षय होने पर एकांत सुषमा कालके प्रारंभ में उत्पन्न हो जाता है उसकी अपेक्षा से जानना चाहिये। चारित्र धर्म की अपेक्षा लेकर इनका अवस्थान काल जघन्य से एक समय का है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि का है। इन जघन्य और उत्कृष्ट दोनों की भावना पहले जैसी ही कर लेनी चाहिये। पूर्वविदेह और अपर विदेह कर्मभूमिक मनुष्य पुरुष का क्षेत्र की अपेक्षा लेकर अवस्थान काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व है यह अवस्थान काल पुनः पुनः वही सातवार उत्पन्न होने के कारण जान लेना चाहिये क्योंकि यहा से निकलने के पश्चात् अवश्य गत्यन्तर अथवा योन्यन्तर में संक्रम हो जावेगा। चारित्रधर्म की अपेक्षा लेकर इनका अवस्थान काल जघन्य से एक समय का और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटिका है। तथा सामान्य से अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुष का जन्म की अपेक्षा लेकर अवस्थान काल जघन्य से पल्योपम

છે તેણે ભરતાદિમાં નિવાસ કર્યો માટે તે ભારતીય છે. એવા વ્યપદેશ વાળો હોય છે. તે પોતાના ભવ સંબંધી આયુષ્ય ક્ષય થાય ત્યારે એકાન્ત સુષમા કાળના પ્રારંભમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે તે અપેક્ષાથી સમજવું. ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક સમયનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિનો છે. આ જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ બન્નેની ભાવના પહેલાની જેમ કરી લેવી પૂર્વ વિદેહ અને અપર વિદેહ કર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરુષનો અવસ્થાન કાળ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ નો આ અવસ્થાન કાળ. ફરી ફરીને ત્યાંજ સાતવાર ઉત્પન્ન થવાના કારણથી સમજવાનો છે કેમકે ત્યાંથી નીકળીને પછી બીજી ગતિમાં અથવા બીજી યોનિમાં સંક્રમણ થઈ જાય છે ત્યાંથી અવશ્ય ગત્યન્તર થઈ જાય છે. ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક સમયનો અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિનો છે. તથા સામાન્ય રીતે અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરુષનો અવસ્થાન કાળ જન્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી પલ્યોપમના અસંખ્યા-

पल्योपमानि यावदवस्थानम् । संहरणं प्रतीत्य तु जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् तच्चान्तर्मुहूर्तायुःशेषस्या कर्मभूमिषु संहृतस्य भवतीति ज्ञातव्यम् । उत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमाणि देशोनया पूर्वकोटयाऽभ्यधिकानि । तानि च देशोनपूर्वकोटयायुःसमन्वितस्य उत्तरकुर्वादौ संहृतस्य तत्रैव मृत्वा समुत्पन्नस्य भवन्तीति ज्ञातव्यम्, पूर्वकोटया देशोनता च गर्भकालिकन्यूनत्ववशात् गर्भस्थितस्य संहरणप्रतिषेधादिति ॥ हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्य जन्माश्रयणेन जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागन्यूनं पल्योपमम् उत्कर्षतः परिपूर्णं पल्योपमं यावदवस्थानम् ।

के असंख्यातवें भाग से हीन एक पल्योपम तक का है, और उत्कृष्ट से तीन पल्योपम तक का है, संहरण की अपेक्षा लेकर इसका अवस्थानकाल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक का और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि से अधिक तीन पल्योपम तक का है यहां जो जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त का समय कहा गया है वह अन्तर्मुहूर्त्त आयु जिसकी शेष है और जिसका अकर्मभूमि में संहरण हो गया है ऐसे जीवकी अपेक्षा से कहा गया है. तथा उत्कृष्ट जो समय कहा गया है वह देशोन पूर्वकोटि की आयुवाला जीव जिसका उत्तर कुरु आदिमें संहरण हुआ है और वहां मरकर वहीं उत्पन्न हुआ है उसकी अपेक्षा से कहा गया है । पूर्वकोटि में जो देशोनता कही गई है वह गर्भकाल की न्यूनता को लेकर कही है क्योंकि गर्भकाल में संहरण होने का प्रतिषेध किया गया है अन्यथा देशोनता न कह कर पूरी पूर्व कोटि कही जाती, हैमवत और हैरण्यवत अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुष का अवस्थान काल जन्म की अपेक्षा से कम से कम पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन एक

તમા ભાગથીહીન એક પલ્યોપમનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ પલ્યોપમ સુધીનો છે. સંહરણની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધીનો અને ઉત્કૃષ્ટની દેશોનપૂર્વ કોટિથી વધારે ત્રણ પલ્યોપમનો છે અહિંયાં જઘન્યથી જે એક અંતર્મુહૂર્તનો સમય કહ્યો છે, તે જેનું આયુષ્ય અંતર્મુહૂર્ત બાકી હોય અને જેનુ સહરણ અકર્મભૂમિમા થયું હોય એવા જીવની અપેક્ષાથી કહેલ છે. તથા ઉત્કૃષ્ટ જે સમય કહ્યો છે તે દેશોન પૂર્વકોટિનો આયુષ્ય વાળા જીવ કે જેનું સંહરણ ઉત્તરકુરુ વિગેરેમાં થયું હોય અને ત્યાં જ ઉત્પન્ન થયા હોય તેઓની અપેક્ષાથી કહેલ છે.

પૂર્વકોટિમાં જે દેશોનપણું કહ્યુ છે. તે ગર્ભકાળની ન્યૂનતાને લઈને કહેલ છે. કેમકે ગર્ભકાળમાં સંહરણ થવાનો પ્રતિબંધ કહ્યો છે નહિતર દેશોન પણું ન કહીને પૂર્વપૂર્વકોટી કહેવામા આવત હૈમવત અને ઐરણ્યવત અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષનો અવસ્થાન કાળ જન્મની અપેક્ષાથી ઓછામાં ઓછા પલ્યોપમના અસખ્યાતમાં ભાગથી હીન એક પલ્યોપમનો

संहरणं प्रतीत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोनया पूर्वकोटचाऽभ्यधिकं पल्योपमं यावदव-स्थानं भवतीति। अत्र भावना प्रागेव स्वयं कर्त्तव्या। हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्य पुरुषस्य जन्मप्रतीत्य जघन्यतो द्वे पल्योपमे पल्योपमस्यासंख्येयभागन्यूने, उत्कर्षतः परिपूर्णे द्वे पल्योपमे जघन्यत उत्कर्षतश्च, तत्रैतावत आयुषः संभवात्। संहरणं प्रतीत्य जघन्यतोऽन्त-र्मुहूर्तन्यूनान्तर्मुहूर्तं पुरुषः संहरणासंभवात्। उत्कर्षतो देशोनया पूर्वकोटचऽभ्यधिके द्वे पल्यो-पमे, भावना पूर्ववत्। देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्य क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्यतः पल्योपमासंख्येयभागन्यूनानि त्रीणि पल्योपमानि। उत्कर्षतः परिपूर्णानि त्रीणि पल्योपमानि,

---

पल्योपम का है और उत्कृष्ट से परिपूर्ण एक पल्योपम का है, संहरण की अपेक्षा लेकर इसका अवस्थान काल जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि अधिक एक पल्योपम का है यहा भावना पहले जैसी करलेनी चाहिए। हरिवर्ष और रम्यक वर्ष रूप अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुष का अवस्थान काल जन्म की अपेक्षा लेकर जघन्य से तो पल्यो-पम के असंख्यातवें भाग से न्यून दो पल्योपम तक का है और उत्कृष्ट से पूरे दो पल्योपम का है। जघन्य और उत्कृष्ट से वहां इतने ही आयु का संभव है, संहरण की अपेक्षा इसका अवस्थान काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का है क्योंकि जिसकी आयु एक अन्तर्मुहूर्त से न्यून-कम-होती है ऐसे जीवका संहरण नहीं होता है, और उत्कृष्ट से इसका अवस्थान काल देशोन पूर्वकोटि अधिक दो पल्योपम तक का है। भावना पहले जैसी ही होगी। देवकुरु और उत्तरकुरु रूप अकर्म भूमिक मनुष्य पुरुष का अवस्थान काल क्षेत्र की अपेक्षा लेकर जघन्य से तो पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन तीन पल्योपम का

છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પુરા એક પલ્યોપમનો છે. સંહરણની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી તો એક અંતર્મુહૂર્ત છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિ અધિક એક પલ્યોપમનો છે અહિયાં તેની સમજણ પહેલા પ્રમાણે જ સમજી લેવી. હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષ રૂપ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષનો અવસ્થાન કાળ જન્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી તો પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી ન્યૂન બે પલ્યોપમ સુધીનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પુરા બે પલ્યોપમનો છે જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્યાં આટલાજ આયુષ્યનો સંભવ છે સંહરણની અપેક્ષાથી તેના અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. કેમકે-જેનુ આયુષ્ય એક અંતર્મુહૂર્તથી ન્યૂન ઓછું હોય છે એવા જીવનું સંહરણ થતું નથી. અને ઉત્કૃષ્ટથી તેનો અવસ્થાન કાળ દેશોનપૂર્વ કોટિ અધિક બે પલ્યોપમ સુધીનો છે. તેની સમજ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજવી. દેવકુરુ અને ઉત્તરકુરુ રૂપ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષનો અવસ્થાન કાળ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગથી હીન ઓછા ત્રણ પલ્યોપમનો છે

संहरणमधिकृत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि देशोनपूर्वकोटयाऽभ्यधिकानि । अन्तरद्वीपकमनुष्यपुरुषस्य जन्म प्रतीत्य देशोनं पल्योपमासंख्येयभागमुत्कर्षतः परिपूर्णं पल्योपमासंख्येयभागम् संहरणमधिकृत्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटयभ्यधिकपल्योपमासंख्येयभाग यावदवस्थानमिति । **'देवाणं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाणं'** देवाना तु या पूर्वं स्थिति कथिता सैव सस्थिति, कायस्थितिरपि वक्तव्येति । कियत्पर्यन्त मित्याह—यावत्सर्वार्थसिद्धकानाम्–सर्वार्थसिद्धदेवपुरुषपर्यन्तमित्यर्थः, अत्र यावत्पदेन–भवनपति-वानव्यन्तर–ज्योतिष्क–वैमानिक सौधर्मादितोऽपराजितविमानगतदेवपुरुषाणां ग्रहण भवतीति ।

ननु कायस्थितिस्त्वनेकभवभावाश्रिता सा कथमेकस्मिन् भवे भवतीति चेदत्रोच्यते देवपुरुपो

है और उत्कृष्ट से इसका अवस्थान काल पूरे तीन पल्योपम का है. संहरण की अपेक्षा इसका अवस्थान काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम का है अन्तर द्वीपज मनुष्य पुरुष का अवस्थान काल जन्म की अपेक्षा लेकर देश से न्यून पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक का है और उत्कृष्ट से इसका अवस्थान काल परिपूर्ण पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक का है। संहरण की अपेक्षा लेकर इसका अवस्थान काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटि अधिक पल्योपम के असंख्यातवें भाग का हैं। **"देवाणं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाणं"** भवनपति देवपुरुषों से लेकर सर्वार्थसिद्ध देवपुरुष पर्यन्त देवो की जो पहिले भवस्थिति कही गई हैं वही कायस्थिति है ऐसा जानना चाहिये,

शंका—कायस्थिति तो अनेक भवोके आश्रित होती है— फिर वह यहां एक भव में कैसे हो सकती है ?

અને ઉત્કૃષ્ટથી તેનો અવસ્થાન કાળ પૂરા ત્રણ પલ્યોપમનો છે. સંહરણની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન પૂર્વકોટિ અધિક ત્રણ પલ્યોપમનો છે અંતરદ્વીપજ મનુષ્ય પુરૂષનો અવસ્થાન કાળ જન્મની અપેક્ષાથી દેશથી ન્યૂન પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ સુધીનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી તેનો અવસ્થાન કાળ પૂરા પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ સુધીનો છે સંહરણની અપેક્ષાથી તેનો અવસ્થાન કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વ કોટિ અધિક પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગનો છે, **'देवाणं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाणं"** ભવનપતિદેવ પુરૂષોથી લઈને સર્વાર્થ સિદ્ધ દેવપુરુષ સુધી પહેલાં દેવોની જે ભવસ્થિતિ કહી છે એજ પ્રમાણે કાયસ્થિતિ પણ છે તેમ સમજવુ

શંકા—કાયસ્થિતિ તો અનેક ભવોના આશ્રિત હોય છે, તો પછી તે અહિયાં એકભવમાં કેવી રીતે થઈ શકે છે ?

देव पुरुषत्वापरित्यागेन कियन्तं कालं, यावन्निरन्तर भवतीत्येवात्र विवक्षितम, तत्र देवश्च्युत्वा आनन्तर्येण भूयो देवो न भवति अतः 'देवाणं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा भाणियव्वा' इत्यतिदेशः कृत इति ॥सू० ९॥

तदेव पुरुषाणां नैरन्तर्येणावस्थानं कथितं सम्प्रति तेषामन्तरमाह 'पुरिसस्स णं' इत्यादि

मूलम्— पुरिसस्स णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं वणस्सइ कालो। तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो। एवं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसाणं। मणुस्सपुरिसाणं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ? खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ उस्सप्पिणी ओस्सप्पिणीओ जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। कम्मभूमियाणं जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्को समओ सेसं जहित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं देवपुरिसाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो। भवणवासिदेवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो। आणयदेवपुरिसाणं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा ? जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो, एवं जाव गेवेज्जदेवपुरिसस्स वि। अणुत्तोववाइय देवपुरिसस्स जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं साइरेगाइं ॥१०॥

उत्तर—"देव पुरुष देवपुरुष रूप से निरन्तर कितने काल तक होता रहता है—यही बात तो कायस्थिति में विवक्षित है—सो देव च्यव कर फिर देव तो होता नहीं है, इसी लिए यहां अतिदेश से ऐसा कहा गया है कि "देवाणं जा ठिई सा चेव संचिट्ठणा भाणियव्वा" कि देवों की जो भवस्थिति है वही कायस्थिति है। सूत्र ॥९॥

ઉત્તર—દેવપુરુષ દેવપુરૂષ પણાથી સતત કેટલા કાળ સુધી થતા રહે છે ? એજ વાત કાયસ્થિતિમા વિવક્ષિત છે કેમકે—દેવ ચ્યવીને પાછા દેવ તો બનતા નથી. તેથીજ અહિંયાં અતિદેશથી તેમ કહેવામાં આવેલ છે કે—દેવાણં જા ઠિઈ સા ચેવ સંચિટ્ઠણા ભાણિયવ્વા" દેવોની જે ભવસ્થિતિ છે એજ કાયસ્થિતિ છે તેમ સમજવું. ॥સૂ. ૯॥

छाया पुरुषस्य खलु भदन्त! कियन्तं कालमन्तरं भवति? गौतम! जघन्येन एकं समय मुत्कर्षेण वनस्पतिकालः । तिर्यग्योनिकपुरुषाणां जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण वनस्पतिकालः । एवं यावत् खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषाणाम् । मनुष्यपुरुषाणां भदन्त ! कियन्त काल मन्तर भवति? गौतम! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तं मुत्कर्षेण वनस्पति-कालः । धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येन एकं समयम्, उत्कर्षेणानन्त कालम् अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यो यावदपार्द्धपुद्गलपरावर्तं देशोनम् । कर्मभूमिकानां यावद् विदेहो यावद् धर्मचरणे एकः समयः, शेष यथा स्त्रीणां यावदन्तरद्वीपकानाम् । देवपुरुषाणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तं मुत्कर्षेण वनस्पति कालः । भवनवासिदेवपुरुषाणां तावद् यावत् सहस्रारः, जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण वनस्पतिकाल । आनतदेवपुरुषाणां भदन्त ! कियन्तं कालमन्तर भवति ? गौतम ! जघन्येन वर्षपृथक्त्व मुत्कर्षेण वनस्पतिकालः । एवं यावद् ग्रैवेयकदेवपुरुषस्यापि । अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषस्य जघन्येन वर्षपृथक्त्वम् उत्कर्षेण संख्येयानि सागरोपमाणि सातिरेकाणि ॥सू०॥

टीका—'पुरिसस्स णं भंते' पुरुषस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालमन्तरं भवति–कालतोऽन्तरं कियच्चिरं–कियच्चिरकालिकं भवति पुरुषः पुरुषत्वात् परिभ्रष्टः सन् पुनः कियता कालेन पुरुषत्वमवाप्नोतीति प्रश्न, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ? 'जहन्नेण एक्कं समयं' जघन्येनैकं समयम् समयमात्र व्यवधानं भवतीत्यर्थ. ।

इस प्रकार पुरुषों का नैरन्तर्य रूप से अवस्थान कहकर अब सूत्रकार उनका अन्तर कहते हैं—"पुरिसस्स णं भंते ! इत्यादि । सूत्र ॥९॥

टीकार्थ— गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! एक पुरुष पुरुषत्व का परित्याग करके फिर वह पुरुषत्व को प्राप्त करे ऐसा अन्तर कितने काल का होता है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो" हे गौतम ! पुरुष अपने पुरुषत्व को परित्याग करके कम से कम फिर वह उसे एक समय के बाद प्राप्त

આ રીતે સતત રીતે પુરૂષોના અવસ્થાન કાળનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તેઓના અંતર કાળનું કથન કરે છે "पुरिसस्स णं भंते !" ઈત્યાદિ.

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું કે–હે ભગવન્ ! એક પુરુષને, પુરુષ પણાના ત્યાગ કરીને પાછા પુરૂષપણાને પ્રાપ્ત કરવામાં કેટલા કાળનું અંતર હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो" હે ગૌતમ ! પુરૂષ પોતાના પુરૂષપણાનો ત્યાગ કરીને ફરી પુરૂષ પણાને પ્રાપ્ત

तथाहि—यदा खलु कश्चित्पुरुषः उपशमश्रेणीं प्राप्त उपशान्ते पुरुषवेदे समयमेकं जीवित्वा तदनन्तरं म्रियते तदा असौ नियमतो देवपुरुषेषु समुत्पद्यते इति समयमेकमन्तरं पुरुषत्वस्य भवतीति। 'उक्कोसेणं वणस्सइ कालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालः वनस्पतिकालपर्यन्तं पुरुषत्वस्यान्तरं भवतीति। वनस्पति कालश्चेत्थं पठनीय स्तथाहि—'अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोगा असंखेज्जा पोग्गलपरायट्टा ते णं पुग्गलपरायट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो' अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः, क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः असंख्येयभागः, असंभागपरिमिताः पुद्गलपरावर्त्ता इतिभावः। उक्तक्रमेण सामान्यत' पुरुषत्व-

---

कर लेता है और उत्कृष्ट से जितना वनस्पति का काल कहा है उसके बाद वह उसे पुनः प्राप्त कर लेता है, इस कथन का तात्पर्य ऐसा है कि जब कोई पुरुष उपशम श्रेणि पर आरूढ होता है, तो पुरुष वेद के उपशान्त होजाने पर वह वहां कम से कम एक समय तक जीवित रहकर—अर्थात् उपशमश्रेणि में वर्तमान रहकर बादमें जब उसका वहां मरण हो जाता है तो नियम से यह देवगति में जाकर उत्पन्न होता है इस प्रकार उपशान्त हुए पुरुष वेद को पुनः पुनः प्राप्त करने में कम से कम एक समय का अन्तर होता है और उत्कृष्ट से जो अन्तर वनस्पति काल प्रमाण कहा गया है— उसका तात्पर्य ऐसा है कि इसमें "अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा असंखेज्जा पोग्गलपरायट्टा, ते णं पुग्गलपरायट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो" इसके काल से अनन्त उत्सर्पिणियां समाप्त हो जाती है, क्षेत्र की अपेक्षा अनन्त लोक समाप्त हो जाते हैं असंख्यात पुद्गल परावर्त्त हो जाते हैं और ये असंख्यात पुद्गल परावर्त आवलिका के असंख्यातवें भाग रूप

કરવામાં ઓછામાં ઓછા એક સમય પછી પ્રાપ્ત કરીલે છે અને વધારેમા વધારે વનસ્પતિનો જેટલો કાળ કહ્યો છે, તેટલા કાળ પછી તે તેને ફરી પ્રાપ્ત કરી લે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એવું છે કે—જ્યારે કોઈ પુરૂષ ઉપશમ શ્રેણી પર આરૂઢ થાય છે, તો પુરૂષ વેદનું ઉપશાંત થઈ જવાથી તે ત્યાં ઓછામાં ઓછા એક સમય સુધી જીવતો રહીને અર્થાત્ ઉપશમ શ્રેણીમાં વર્તમાન રહીને તે પછી તેનું ત્યાં મરણ થઈ જાય છે, તો નિયમની તે દેવગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે. આ રીતે ઉપશાંત થયેલ પુરૂષવેદને ફરીથી પ્રાપ્ત કરવામાં ઓછામાં ઓછું એક સમયનું અંતર હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળ પ્રમાણનું જે અંતર કહ્યું છે, તેનું તાત્પર્ય એ છે કે—તેમાં 'अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ, अणंता लोगा, असंखेज्जा पोग्गलपरायट्टा', ते णं पुग्गलपरायट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो" તેના કાળથી અનંત ઉત્સર્પિણિયો અને અનંત અપસર્પિણિયો સમાપ્ત થઈ જાય છે. અસંખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત થઈ જાય છે અને આ અસંખ્યાત પુદ્ગલપરાવર્ત આવલિકાના અસંખ્યાતમા ભાગ રૂપ હોય છે. આ રીતે સામાન્ય પણાથી પુરૂષત્વનું

स्यान्तरं प्रदर्श्य सम्प्रति—तिर्यक् पुरुषविषयकपुरुषस्यान्तरमाह—'तिरिक्खजोणिय' इत्यादि, '**तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं**' तिर्यग्योनिकपुरुषाणां पुरुषत्वस्यान्तरं जघन्येनान्तर्मुहूर्तमात्रं भवति एतावत् कालस्थितिकमनुष्यादिभवेन । व्यवधानात् '**उक्कोसेणं वणस्सइकालो**' उत्कर्षेण वनस्पतिकालोऽसंख्येयपुद्गलपरावर्तात्मकः । तावता कालेन मुक्तयभावे नियमत पुरुषत्वभावात् '**एवं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसाणं**' एवं सामान्यतः तिर्यग् पुरुषाणां यथा पुरुषत्वस्यान्तरं कथितं तेनैव रूपेण विशेषविचारे यावत्पदेन जलचरपुरुषाणां तथा खेचरतिर्यक्पुरुषाणामपि पुरुषत्वस्यान्तरं प्रत्येकं जघन्योत्कर्षाभ्यां कथितं तदेव सर्वमिहापि ज्ञातव्यमिति ॥ सम्प्रति मनुष्यपुरुषत्व विषयकान्तरप्रतिपादनार्थमाह—'**मणुस्स**' इत्यादि, '**मणु-**

होते हैं । इस प्रकार सामान्य रूप से पुरुषत्व का अन्तर प्रकट कर अब सूत्रकार विशेष रूपसे तिर्यक् पुरुष विषयक पुरुषत्व का अन्तर प्रकट करने के लिए अतिदेश द्वारा इस सम्बन्ध में कहते हैं—"**तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**" तिर्यग्योनिक पुरुषों के पुरुषत्व का अन्तर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का पड़ता है और उत्कृष्ट से वनस्पति के काल के प्रमाण अनन्त काल का पड़ता है और वनस्पति काल असंख्यात पुद्गल परावर्त रूप होता है । '**एवं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसाणं**' जैसे अन्तर कथन सामान्य से तिर्यक् पुरुषो के पुरुषत्व का कहा गया है उसी प्रकार विशेषरूप से जलचर स्थलचर, और खेचर इन पुरुषों के पुरुषत्व का भी अन्तर कह लेना चाहिए, इस तिर्यक् स्त्री प्रकरण में जो अन्तर जघन्य और उत्कृष्ट से कहा गया है वही सब यहा पर भी जानना चाहिये ।

अब सूत्रकार मनुष्यपुरुषत्व विषयक अन्तर समझाने के लिये कहते हैं- इस में गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है—"**मणुस्सपुरिसाणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ**" हे

અંતર બતાવીને હવે સૂત્રકાર વિશેષ પ્રકારથી તિર્યક્ પુરૂષ સંબંધી પુરૂષ પણાનું અંતર બતાવવા માટે આ સંબંધમાં અતિદેશ દ્વારા કહે છે—'**तिरिक्खजोणियपुरिसाणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो**'' તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ પણાનું અંતર જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિના કાળ પ્રમાણનું એટલે કે અનંત કાળનું અંતર પડે છે. આ વનસ્પતિના કાળ અસંખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત રૂપ હોય છે '**एवं जाव खहयर-तिरिक्खजोणियपुरिसाणं**'' જે પ્રમાણે સામાન્ય પણાથી તિર્યક્ પુરુષોનું અંતર કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે વિશેષ જલચર—સ્થલચર—અને ખેચર પુરૂષોના પુરૂષ પણાનું અંતર પણ સમજી લેવું અર્થાત્ તિર્યક્ સ્ત્રી પ્રકરણમાં જે અંતર જઘન્યથી અને ઉત્કૃષ્ટથી કહેવામાં આવ્યું છે, એજ સઘળું કથન અહિંયાં પણ સમજવું.

હવે સૂત્રકાર મનુષ્ય પણા સંબંધી અંતર સમજાવવા માટે કથન કરે છે—તેમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—"**मणुस्सपुरिसाणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ**"

स्सपुरिसाणं भंते' मनुष्यपुरुषाणां भदन्त ! 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालमन्तरं भवति मनुष्यपुरुषो मनुष्यपुरुषत्वात् परिभ्रष्टः सन् पुनः कियता कालेन मनुष्यपुरुषत्वमवाप्नोतीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'खेत्तं पडुच्च' क्षेत्रं प्रतीत्य—क्षेत्राश्रयणेन जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालपर्यन्तं क्षेत्राश्रयणेनोत्कर्षेणो मनुष्यपुरुषत्वस्यान्तर भवतीत्यर्थः । 'धम्मचरणं पडुच्च' धर्मचरणं चरणधर्मं प्रतीत्य—चरणधर्माश्रयणेन 'जहन्नेणं एक्कं समयं' जघन्येनैकं समयम् जघन्यतः समयैकमात्रस्यान्तरं भवतीत्यर्थ, यदा कश्चिन्मनुष्यपुरुष उपशमश्रेणिं गत उपशान्ते पुरुषवेदे समयमेकं जीवित्वा तदनन्तरं म्रियते तदाऽसौ नियमतो देवपुरुषेषु समुत्पद्यते इति भवति समयमेकमन्तरं मनुष्यपुरुषत्वस्येति भावः । 'उक्कोसेणं अणंतं कालं' उत्कर्षेणानन्तं कालम्, तदेवाह—'अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ' अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः

भदन्त । मनुष्य पुरुषों को मनुष्य पुरुषत्व से परित्यक्त हो जाने पर पुनः उसकी प्राप्ति करने में कितने काल का अन्तर होता है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमंतरं" क्षेत्र की अपेक्षा करके इन्हें मनुष्य पुरुषत्व प्राप्त करने में कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर पड़ता है और ज्यादा से ज्यादा वनस्पति काल प्रमाण अनन्त काल का अन्तर पड़ता है "धम्मचरण पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं" चारित्र धर्म की अपेक्षा करके इन्हें पुनः मनुष्य पुरुषत्वप्राप्त करने में कम से कम एक समय का और अधिक से अधिक अनन्तकालका अनन्तर पड़ता है । कोई मनुष्य पुरुष जब उपशम श्रेणि को प्राप्त होकर पुरुष वेद के उपशान्त होने से कम से कम एक समय तक वहां जीवित रहता है, और उसके बाद मरकर वह नियम से देव पुरुषों में उत्पन्न हो जाता है । तो इस अपेक्षा यहां जघन्य से अन्तर एक समय का आता है और उत्कृष्ट

હે ભદન્ત ! મનુષ્ય પુરૂષોને મનુષ્ય પુરૂષ પણાથી છૂટિ જવા પછી ફરીથી તે મનુષ્ય પુરૂષ પણાની પ્રાપ્તિ કરવાનાં કેટલા કાળનુ અંતર હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमंतर" ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી તેને મનુષ્ય પણાને પ્રાપ્ત કરવામાં ઓછામા ઓછા એક અંતર્મુહૂર્ત નું અંતર હોય છે અને વધારેમાં વધારે વનસ્પતિ કાલ પ્રમાણનું અનંત કાળનું અંતર પડે છે "धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेण अणत कालं" ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી તેમને ફરીથી મનુષ્ય પુરૂષ પણુ પ્રાપ્ત કરવામાં ઓછામા ઓછું એક સમયનું અને વધારેમાં વધારે અનંત કાળનુ અંતર પડે છે કોઈ મનુષ્ય પુરુષ જ્યારે ઉપશમ શ્રેણીને પ્રાપ્ત કરીને પુરૂષ વેદના ઉપશાંત થયા પછી ઓછામાં ઓછા એક સમય સુધી ત્યાં જીવતા રહે છે અને તે પછી મરીને તે નિયમથી દેવ પુરૂષોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. તો આ અપેક્ષાએ અહિયાં જઘન્ય થી એક સમયનું અંતર આવે છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંતકાળનું

'जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं' यावदपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं देशोनम्, यावत्पदेन- 'कालओ खेत्तओ अणंता लोगा' कालतः क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः, एतदन्तस्य ग्रहणं भवती ति सामान्यतो मनुष्यपुरुषत्वस्यान्तरमिति । 'कम्मभूमिगाणं जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्को समओ सेसं जहित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं' कर्मभूमिकानां मनुष्यपुरुषाणां यावद् विदेहो यावद् धर्मचरणे एकः समयः शेषं यथा स्त्रीणाम् यावदन्तरद्वीपकानाम्, प्रथमयावत्पदेन भरतैरवतपूर्वापरविदेहक्षेत्रपर्यन्तसकलकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां संग्रहः तथा-द्वितीययावत्पदेन अकर्मभूमिकानां हैमवतादन्तरद्वीपपर्यन्तानां संग्रहो भवति, तथाच कर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणामकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणां च सर्वेषां यथा मनुष्यस्त्रीणां कर्मभूमिका- कर्मभूमिकानामन्तरं कथितं तथैव अत्रापि ज्ञातव्यम् ।

तथाहि—सामान्यतो मनुष्यस्य क्षेत्रमाश्रित्य जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति, तच्च

से जो अन्तर अनन्त काल तक का होना कहा गया है वह इसमें "अणंताओ उस्सप्पिणी- ओसप्पिणीओ जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं" काल से अनन्त उत्सर्पिणियां अवस र्पिणियां हो जाती हैं यावत् क्षेत्र से—अनन्त लोग हो जाते हैं वह देशोन अर्ध पुद्गल परावर्त होता है" इस अभिप्राय से कहा गया है "कम्मभूमिगाणं जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्को समओ सेसं जहित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं" यहां प्रथम यावत्पद से भरत ऐरवत पूर्वविदेह अपरविदेह समस्त कर्मभूमिक पुरुषों का और द्वितीय यावत्पद से अकर्मभूमिक हैमवत हैरण्यवत वर्ष रम्यक वर्ष देवकुरू उत्तरकुरु मनुष्य पुरुषों का ग्रहण हुआ है इस प्रकार कर्मभूमिके मनुष्य पुरुषों के पुरुषत्व का अन्तर अपनी २ स्त्रियों के प्रकरण में जैसा२ अन्तर कहा गया है वैसा २ अन्तर है,

जैसे—सामान्य मनुष्य पुरुष का अन्तर क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त का होता

અંતર હોવાનું જે કહેવામાં આવ્યું છે, તે આમાં "अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं" કાળથી અનંત ઉત્સર્પિણીયો અને અવસર્પિણીયો થઇ જાય છે. યાવત્ ક્ષેત્રથી અનંત લોકો થઈ જાય છે. તે દેશોન અર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત થાય છે એ અભિપ્રાયથી કહ્યું છે. "कम्मभूमिगाणं जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्को समओ सेसं जहित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं" અહિયાં પહેલા યાવત્પદથી ભરત ઐરવત, પૂર્વ- વિદેહ, અપર વિદેહના સઘળા કર્મભૂમિજ પુરૂષો અને બીજા યાવત્પદથી અકર્મભૂમિ જ હૈમવત હૈમણ્યવત વર્ષ, રમ્યક વર્ષ, દેવકુરૂ, ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય પુરુષો ગ્રહણ કરાયા છે. આ રીતે કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષોના પુરુષપણાનું અને અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષોના પુરુષપણાનું અંતર પોતપોતાની સ્ત્રિયોના પ્રકરણમાં જે જે પ્રમાણેનું અંતર કહેવામાં આવેલ છે. તે તે પ્રકારથી સમજી લેવું જેમકે—સામાન્ય મનુષ્ય પુરુષનું અંતર ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્તનું હોય છે. તે

प्रागवत् । उत्कर्षतोऽनन्तं कालं वनस्पतिकालः । चारित्रधर्ममाश्रित्य जघन्यत एकं समयम्, यतश्चरणपरिणामात्परिभ्रष्टस्य समयानन्तरं कस्यचित् पुरुषस्य भूयोऽपि चारित्रप्रतिपत्तिः संभवति । उत्कर्षतो देशोनमपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं यावदन्तरं भवति । एवं विशेषचिन्तायां कर्मभूमिकभरतैरवतपूर्वविदेहापरविदेहमनुष्यपुरुषस्य जन्म चारित्रधर्म चेतिद्वयमपि आश्रित्य प्रत्येकं पूर्ववदेव क्रमशः जघन्योत्कृष्टाभ्यामेकं समयं देशोनापार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं यावदन्तरं भवति । सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्य जन्माश्रयणेन जघन्यतोऽन्तरमन्तर्मुहूर्ताभ्यधिकानि दशवर्षसहस्राणि यतः—अकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषत्वावस्थायां मृतस्य जघन्यस्थितिकदेवेषूत्पादो भवति, ततोऽपि च्युत्वा स कर्मभूमिषु स्त्रीत्वेन पुरुषत्वेन वोत्पद्यते,

है, कैसे होता है वह पूर्ववत् समझ लेना चाहिये । उत्कर्ष से अनन्त काल का वनस्पतिकाल पर्यन्त अन्तर होता है । चारित्र धर्मकी अपेक्षा जघन्य से एक समय का अन्तर होता है क्योंकि चारित्र परिणाम से भ्रष्ट होते हुए किसी पुरुषको एक समय के बाद फिर चारित्र प्राप्ति की सभावना होती है उत्कर्ष से एक देशन्यून अर्द्धपुद्गल परावर्त्त पर्यंत का अन्तर होता है । इसी प्रकार विशेषरूप से विचारणामें कर्मभूमिक भरत ऐरवत पूर्वविदेह मनुष्य पुरुष का अन्तर जन्म और चारित्र इन दोनों की अपेक्षा प्रत्येक का पहले के अनुसार क्रम से कम जघन्य और उत्कृष्ट को लेकर एक समय का तथा देशोन अपार्द्ध पुद्गलपरावर्त्त काल तक का होता है । सामान्य अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुष का जन्म की अपेक्षा जघन्य से अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दश हजार वर्ष का होता है, क्योंकि अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुष की अवस्थामें मरे हुए अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुष का जघन्य स्थितिक देवों में उत्पाद होवे वहां से फिर च्यवकर वह कर्मभूमियो में स्त्रीरूप से अथवा पुरुष रूप से उत्पन्न हो जाता है, वहां से फिर मरने पर किसी किसी को फिर भी अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुष रूप

કેવી રીતે થાય છે? તે પહેલા કહ્યા પ્રમાણે સમજી લેવું ઉત્કૃષ્ટથી અનંતકાળનું વનસ્પતિ કાળ પર્યન્તનું અંતર હોય છે કેમકે—ચારિત્ર પરિણામથી ભ્રષ્ટ થયેલા કોઈ પુરુષને એકસમય પછી ચારિત્ર પ્રાપ્તિ થવાની સંભાવના હોય છે ઉત્કૃષ્ટથી એકદેશથી ન્યૂન અર્દ્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત પર્યન્તનું અંતર હોય છે એજ પ્રમાણે વિશેષ પ્રકારની વિચારણામાં કર્મભૂમિક ભરત, ઐરવત, પૂર્વ વિદેહના મનુષ્ય પુરુષનુ અંતર જન્મ અને ચારિત્ર આ બન્નેની અપેક્ષાથી દરેકનું અંતર પહેલા કહ્યા પ્રમાણે ક્રમથી જઘન્યથી અને ઉત્કૃષ્ટથી એક સમયનું તથા દેશોન અપરાર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત કાળ સુધીનું છે સામાન્ય અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષનુ અંતર જન્મની અપેક્ષાએ જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્ત અધિક દસ હજાર વર્ષનુ હોય છે. કેમકે—અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષની અવસ્થામાં મરેલાં અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરુષની જઘન્ય સ્થિતિ વાળા દેવોમાં ઉત્પત્તિ થાય, અને પાછા ત્યાંથી ચ્યવીને તે કર્મભૂમિયોમાં સ્ત્રીપણાથી અથવા પુરુષ પણાથી ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. ત્યાંથી પાછા મરીને કોઈ કોઈની પાછી કર્મભૂમિક મનુષ્ય

ततोऽपि मृत्वा कस्यचिदपि अकर्मभूमिकत्वेन भूयोऽपि उत्पादाद् एतावत्कालमन्तरं भवति, देवभवाच्च्यवनानन्तरमकर्मभूमिष्वव्यवधानं मनुष्यत्वेन तिर्यक्सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियत्वेन वा उत्पादासंभवादपान्तराले कर्मभूमिकेषु जन्म गृहीत्वा ततो मृत्वा अकर्मभूमिकेषूत्पादस्य कथनं कृतमिति। उत्कर्षतो वनस्पतिकालमन्तरं भवति। संहरणापेक्षया जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तमन्तरम्, अकर्मभूमितः कर्मभूमिषु संहृत्यान्तर्मुहूर्त्तमात्रकालानन्तरं संहर्त्तु स्तथाविधबुद्धिवैपरीत्यादिभावेन भूयस्तत्रैवानयनसंभवाज्जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तकालं प्रतिपादितम्' उत्कर्षेण वनस्पतिकालं यावदन्तरं भवति, यत एतावत्कालादनन्तरमकर्मभूमिषूत्पत्तिवत् संहरणमपि नियमतः संभवतीति। एवं सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषवत् विशेषचिन्तायां हैमवतैरण्यवतहरिवर्षरम्यककवर्षदेवकुरूत्तरकुर्वन्तरद्वीपरूपेष्वकर्मभूमिषु जातानां मनुष्यपुरुषाणां जन्मतः संहरणतश्च, जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तरं सामान्याकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणामिव वक्तव्यमिति।

से उत्पत्ति हो जाती है, इस अपेक्षा से इतने काल का अन्तर कहा गया है क्योंकि देव भव से च्यव कर सीधा विना व्यवधान के कर्मभूमियों में मनुष्यपने से अथवा तिर्यक् संज्ञिपञ्चेन्द्रियपने से उत्पत्ति नहीं हो सकती है इसलिये बीच में एक भव कर्मभूमियों में जन्म ले करके फिर वहा से मरने पर अकर्मभूमियों में उत्पन्न होने का कहा है। उत्कर्ष से वनस्पति काल का अन्तर होता है सहरण की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर होता है क्योंकि किसी पुरुष का कोई देव विशेष संहरण करके कर्मभूमि में ले जावे फिर अंतर्मुहूर्त्त काल के बाद उसकी बुद्धि में परिवर्त्तन होने से फिर उसे अकर्मभूमिमें लाकर रख देवे उस अपेक्षा से जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त्त का कहा है। और उत्कर्ष से वनस्पति काल का अन्तर होता है क्योंकि इतने काल के बाद अकर्म भूमि में उत्पत्ति के जैसा संहरण भी नियम से होता है। इसी प्रकार सामान्य अकर्म भूमिक मनुष्य पुरुष के जैसे विशेष जो हैमवत ऐरण्यवत हरिवर्ष रम्यकवर्ष देवकुरु उत्तरकुरु अन्तर द्वीप इन अकर्म भूमियों के

પુરુષ પણાથી ઉત્પત્તિ થઈ જાય છે આ અપેક્ષાથી આટલા કાળનું અંતર કહ્યું છે કેમકે દેવભવથી ચ્યવીને સીધા વ્યવધાન વિના અકર્મભૂમિયોમાં મનુષ્ય પણાથી અથવા તિર્યક્ સંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય પણાથી ઉત્પત્તી થઈ શકતી નથી તેથી વચમાં એકભવ કર્મભૂમિયોમાં જન્મ લઈને તે પછી ત્યાંથી મર્યા બાદ અકર્મ ભૂમિયોમાં ઉત્પન્ન થવાનું કહ્યું છે. ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળનું અંતર હોય છે. કેમકે—કોઈ પુરુષને કોઈ દેવ વિશેષ સંહરણ કરીને કર્મભૂમિમા લઈ જવામાં આવે અને તે પછી અંતર્મુહૂર્ત કાળ પછી તેની બુદ્ધિમાં પરિવર્તન થવાથી પાછા તેને અકર્મભૂમિમાં લાવીને રાખી દેવામાં આવે તે અપેક્ષાથી જઘન્ય અંતર અંતર્મુહૂર્તનું કહ્યું છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળનું અંતર હોય છે કેમકે—આટલા કાળ પછી અકર્મ ભૂમિમાં ઉત્પત્તિની માફક સંહરણ પણ નિયમથી થાય છે. એજ પ્રમાણે એટલે કે સામાન્ય અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષની જેમ વિશેષ જેઓ હૈમવત, ઐરણ્યવત, હરિવર્ષ, રમ્યકવર્ષ, દેવકુરૂ,

सप्रभेदानां तिर्यङ्मनुष्यपुरुषाणामन्तरमभिधाय सम्प्रति देवपुरुषाणामन्तरप्रतिपादनार्थमाह —'देवपुरिसाणं' इत्यादि, 'देवपुरिसाणं' देवपुरुषाणाम्, जहन्नेणं अंतो मुहु' जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति. देवभवात् च्युत्वा गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपुरुषेषु समुत्पद्य पर्याप्ति समाप्त्यनन्तरं तथाविधाध्यवसायमरणेन भूयोऽपि कस्यापि देवत्वेन उत्पादसंभवादिति। 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालपर्यन्तमन्तरं भवतीति। 'भवणवासिदेवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो' भवनवासिदेव पुरुषाणां तावत्

मनुष्य पुरुषों का अन्तर जन्म की तथा संहरण का अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट से सामान्य अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुषों के समान जान लेना चाहिये।

इस प्रकार से सप्रभेद तिर्यञ्च पुरुषो का और मनुष्य पुरुषों का अन्तर कह कर अब सूत्रकार देव पुरुषो का अन्तर प्रतिपादन करते हैं — "देवपुरिसाणं" देव पुरुषों का अन्तर "जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो" देव पुरुषों को देवपुरुषत्व से छूटने पर पुनः उस देव पुरुषत्व की प्राप्ति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त के बाद होती है और उत्कृष्ट से वनस्पति काल–अनन्त काल–निकल जाने के बाद होती है, यहां जघन्य से जो अन्तर एक अन्तर्मुहूर्त्त का कहा गया है–सो उसका भाव ऐसा है कि कोई देव देवभव से च्युत हुआ और वह गर्भज मनुष्य पुरुषों में जाकर उत्पन्न हो गया बाद में पर्याप्ति समाप्ति के अनन्तर उसका मरण हो गया तो वह तथाविध अध्यवसाय वाले मरण से फिर भी किसी देव की पर्याय से उत्पन्न हो सकता है। "भवनवासि देवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो" भवन वासि देव पुरुषों से लेकर सहस्रार तक के देवपुरुषों का यहां यावत्पद से दश प्रकार के

ઉત્તરકુરૂ અંતરદ્વીપ આ અકર્મભૂમિયોના મનુષ્ય પુરૂષોનું અંતર જન્મ તથા સંહરણની અપેક્ષાથી જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ એમ બન્ને પ્રકારથી સામાન્ય અકર્મભૂમિજ મનુષ્ય પુરુષોની જેમ સમજી લેવું.

આ રીતે ભેદ પ્રભેદો સહિત તિર્યંચ પુરુષોનું અને મનુષ્ય પુરુષોનુ અંતર કહીને હવે સૂત્રકાર દેવ પુરૂષોના અંતરનું પ્રતિપાદન કરતા કહે છે—"देवपुरिसाणं" દેવ પુરૂષોનું અંતર "जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो" દેવપુરૂષોને દેવપુરૂષપણાથી છૂટયા પછી ફરીથી તે દેવપુરુષપણાની પ્રાપ્તિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત પછી થાય છે અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળ એટલેકે અનંતકાળ વીતી ગયા પછી થાય છે. અહીં જઘન્યથી જે એક અંતર્મુહૂર્તનુ અંતર કહ્યું છે, તો તેનો ભાવ એ છે કે—કોઈ દેવ દેવભવથી ચ્યુત થયા અને તે ગર્ભજ મનુષ્ય પુરૂષોમાં ઉત્પન્ન થયા તો તથાવિધ અધ્યવસાય વાળા મરણથી પાછા પણકોઈ દેવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ શકે છે— 'भवनवासि देवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो" ભવનવાસી દેવપુરૂષોથી લઈને સહસ્રાર

यावत्सहस्रारः , यावत्पदेन-दशविधभवनवासिदेवपुरुषानन्तरमष्टविधवानव्यन्तरपञ्चविध ज्योतिषिक-वैमानिककल्पोपपन्न सौधर्म-१ शान-२ सनत्कुमार-३ माहेन्द्र-४ ब्रह्मलोक-५ लान्तक-६ महाशुक्रदेवपुरुषाणां-७ ग्रहणं भवतीति भवनवासिदेवपुरुषादारभ्य सहस्रारदेवपुरुषपर्यन्तानामन्तरं सामान्यदेवपुरुषाणामिव ज्ञातव्यम्।

तदेवाह—'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तमुहूर्तमन्तरम् 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो', उत्कर्षेण वनस्पतिकालपर्यन्त मन्तरं भवति, 'आणयदेवपुरिसाणं भंते' आनतदेव पुरुषाणां भदन्त ! 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालमन्तरं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं वासपुहुत्तं'

भवनवासी देव पुरुषों के बाद आठ प्रकार के वानव्यन्तर पांच प्रकार के ज्योतिषी वैमानिक-कल्पोपपन्न जो सौधर्म १ ईशान २, सनत्कुमार ३, माहेन्द्र ४, ब्रह्मलोक ५, लान्तक ६, महाशुक्र ७, देवपुरुषों से लेकर सहस्रार आठवें देवलोक तक के देवपुरुषों का अन्तर सामान्य देवपुरुषों के समान जान लेना चाहिये यही बात सूत्रकार प्रकट करते है— "जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं" यहां जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर पड़ता है और "उक्कोसेणं वणस्सइकालो" उत्कृष्ट से अन्तर वनस्पति काल प्रमाण—अनन्त काल का पड़ता है। इस प्रकार असुरकुमार से लेकर सहस्रार कल्प तक के देवपुरुषों का अन्तर कह कर अब नववें आनतादि देवपुरुषों का अन्तर कहते हैं—"आणय देवपुरिसाणं भंते" इत्यादि।

"आणय देवपुरिसाणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" हे भदन्त ! आनत देव पुरुषों का आनत देवपुरुषत्व से छूट जाने पर पुनः उसकी प्राप्ति करने में कितने काल का अन्तर होता है, इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा" हे गौतम ! यहां अन्तर

સુધીના દેવપુરુષોનું ગ્રહણ અહિંયા યાવત્પદથી થયેલ છે યાવત્પદથી દશ પ્રકારના ભવનવાસિ દેવપુરૂષો પછી આઠ પ્રકારના વાનવ્યન્તર પાંચ પ્રકારના જ્યોતિષ્ક વૈમાનિક-કલ્પોપપન્નક કે જે સૌધર્મ ૧, ઈશાન ૨, સનત્કુમાર ૩, માહેન્દ્ર ૪, બ્રહ્મલોક ૫, લાન્તક ૬, મહાશુક્ર ૭, આટલા દેવ પુરુષો ગ્રહણ કરાયા છે. અર્થાત્ ભવનપતિ દેવ પુરુષોથી લઈને સહસ્રાર આઠમા દેવલોક સુધીના દેવ પુરૂષોનું અંતર સામાન્ય દેવ પુરુષોની જેમ સમજી લેવું એજ વાત સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—"जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं" અહિયાં જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર પડે છે. "उक्कोसेणं वणस्सइकालो" ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાલ પ્રમાણ એટલે કે—અનંતકાળનું અંતર પડે છે.

આ પ્રમાણે અસુરકુમારથી લઇને સહસ્રાર કલ્પ સુધીના દેવપુરૂષોનું અંતર કહીને હવે નવમા આનતાદિ દેવપુરૂષોનું અંતર સૂત્રકાર બતાવે છે "आणय देवपुरिसाणं भंते" ઈત્યાદિ.

"आणदेवपुरिसाणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" હે ભગવન્ આનત દેવ પુરુષોનું આનત દેવપુરૂષપણાથી છૂટયા પછી ફરીથી તેની પ્રાપ્તિ કરવામા કેટલા કાળનું અંતર હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે— "गोयमा !" હે ગૌતમ !

जघन्येन वर्षपृथक्त्वं द्विवर्षादारभ्य नववर्षपर्यन्तमन्तरं भवति, कथमित्याह – इह यो गर्भस्थः सर्वाभिः पर्याप्तिभिः पर्याप्तः स शुभाध्यवसायोपेतो मृतः सन् आनतकल्पादर्वाक् ये देवास्तपूत्पद्यन्ते, नत्वानतादिषु, यतस्तावन्मात्रकाले आनतादि योग्याध्यवसायविशुद्धिर्न भवेत्, य आनतादिभ्यश्च्युत्वा भूयोऽपि आनतादिषु उत्पत्स्यते स नियमाच्चारित्रमवाप्यैवोत्पत्स्यते न तु चारित्रमनवाप्य, चारित्रं चाष्टमे वर्षे प्राप्यते न तु तदर्वाक्, अतएवोक्तं जघन्यतो वर्षपृथक्त्वमिति । 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालं यावदन्तरं भवति इति । 'एवं जाव गेवेज्जदेवपुरिसस्स वि' एवम् आनतदेवपुरुषवदेव प्राणतारणाच्युतकल्पग्रैवेयकदेवपुरुषस्यापि प्रत्येकस्य जघन्येन वर्षपृथक्त्वम् उत्कर्षेण वनस्पति कालपर्यन्तमिति । 'अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसस्स' अनुत्तरोपपातिककल्पातीतदेव-

"जहन्नेणं" जघन्य से "वासपुहुत्तं" वर्ष पृथक्त्व दो वर्ष से नौवर्ष तक का हैं-यह कैसे ? सो कहते हैं—यहां जो गर्भस्थ कोई प्राणी सब पर्याप्तियों से होता हुआ शुभ अध्यवसाय से मर कर आनत कल्प से पूर्ववर्त्ती जो देव हैं उन में उत्पन्न होता है किन्तु आनत आदि देव लोकों में नहीं उत्पन्न होता है क्यों कि इतने मात्र काल में आनत कल्पादिके योग्य अध्यवसाय की विशुद्धि नहीं हो सकती है, तात्पर्य यह है कि जो जीव आनतादिकल्प से च्यवित होकर यदि फिर आनतादि कल्पों में उत्पन्न होगा वह नियम से चारित्र लेकर ही वहां उत्पन्न होगा किन्तु विना चारित्र लिये उत्पन्न नहीं हो सकता हैं । और चारित्र आठवे वर्ष में प्राप्त होता है इससे पहले नहीं, इसलिये जघन्य से वर्षपृथक्त्व का अन्तर कहा है। "उक्कोसेणं" उत्कृष्ट से "वणस्सइकालो" वनस्पतिकाल—अनन्तकाल—तक का है । 'एवं जाव गेवेज्जदेवपुरिसस्स वि" आनत देव पुरुष के जैसे ही प्राणत आरण अच्युत कल्प के और ग्रैवेयक के देव पुरष का भी अन्तर जानना चाहिये—जघन्य से वर्षपृथक्त्व और उत्कृष्ट से वनस्पति काल तक का 'अणु-

અહિંયા અંતર "जहण्णेणं" જઘન્યથી "वासपुहुत्तं" વર્ષ પૃથક્ત્વ—એટલે કે—બે વર્ષથી નવ વર્ષ સુધીનુ છે. આ કેવી રીતે ? તે બતાવતા કહે છે કે—અહિંયાં જે ગર્ભસ્થ કોઈ પ્રાણી બધી પર્યાપ્તિયોથી પર્યાપ્ત થઈને શુભ અધ્યવસાયથી મરીને આનતકલ્પથી પહેલાના જે દેવો છે. તેમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે પરંતુ આનત વિગેરે દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થતા નથી. કેમકે—એટલા જ કાળમાં આનતકલ્પ વિગેરેને યોગ્ય અધ્યવસાયની વિશુદ્ધિ થઈ શકતી નથી. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે—જે જીવો આનત વિગેરે કલ્પોમાંથી ચ્યવીને જો પાછા આનત વિગેરે કલ્પોમાં ઉત્પન્ન થશે તે નિયમથી ચારિત્ર લઈને જ ત્યાં ઉત્પન્ન થશે પરંતુ ચારિત્ર લીધા વિના ઉત્પન્ન થઈ શકતા નથી ચારિત્ર આઠમા વર્ષમાં પ્રાપ્ત થાય છે. તેનાથી પહેલાં પ્રાપ્ત થતું નથી. તેથી જઘન્યથી વર્ષ પૃથક્ત્વનું અંતર કહ્યું છે. "उक्कोसेणं" ઉત્કૃષ્ટથી "वणस्सइ कालो" વનસ્પતિકાળ એટલે કે—અનંતકાળ સુધીનું છે. "एवं जाव गेवेज्ज देवपुरिसस्स वि" આનતદેવ પુરૂષોની જેમજ પ્રાણત, આરણ, અચ્યુત, કલ્પના અને ગ્રૈવેયકના દેવ પુરૂષોનું અંતરપણ સમજી લેવું. તે જઘન્યથી વર્ષ પૃથક્ત્વ અને ઉત્કૃષ્ટથી

पुरुषस्य 'जहन्नेणं वासपुहुत्तं' जघन्येन वर्षपृथकत्वम् द्वितीयादारम्य नववर्षपर्यन्त मन्तरं भवति 'उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं साइरेगाइं' उत्कर्षेण संख्येयानि सागरोपमाणि, सातिरेकाणि यावदन्तरं भवति। तत्र संख्येयानि सागरोपमाणि तदन्यवैमानिकेषु संख्येयवारोत्पत्त्या विज्ञेयानि सातिरेकाणि मनुष्यभवैर्भवन्तीति। अत्र यद्यपि सामान्यतोऽनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषस्यान्तर कथितं तथापि अपराजितदेवपुरुष-पर्यन्तस्यैतदन्तरं ज्ञातव्यम्, सर्वार्थसिद्धे सकृदेवोत्पादेन तत्रान्तरासंभवात्, इति ॥सू०१०॥

तदेवं कथितं पुरुषाणामन्तरम् सम्प्रति—अल्पबहुत्व मुच्यते अल्पबहुत्वानि च पञ्च भवन्ति तद्यथा—प्रथमं सामान्याल्पबहुत्वम् द्वितीयं त्रिविधतिर्यग् विषयम् तृतीयं त्रिविधमनुष्यपुरुषविषयम्

त्तरोववाइयदेवपुरिसस्स जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं सातिरेगाइं" अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत देवपुरुष का जघन्य से अन्तर, वर्ष पृथक्त्व—दो वर्ष से लेकर नौ वर्ष—तक का और उत्कृष्ट से कुछ अधिक संख्यात सागरोपमका है अनुत्तारोप पातिक कल्पातीत देव पुरुषों से अतिरिक्त वैमानिक देवपुरुषों में संख्यात वार इसकी उत्पत्ति की अपेक्षा से यहां संख्यात सागरोपम कहे गये हैं तथा जो कुछ अधिकता इनमें कही गई है, वह मनुष्यभवों को लेकर कही गई है, इस प्रकार कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का यहां पर सामान्य से ही अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का अन्तर कहा गया है तब भी अपराजित देव पुरुष तक का ही अन्तर जानना चाहिये -क्यों कि सर्वार्थ सिद्ध में तो जीव की एक बार ही उत्पत्ति होती हैं इसलिए वह अन्तर कथन बनता नहीं है। इस प्रकार देव पुरुष का जघन्य और उत्कृष्ट से अन्तर समाप्त हुआ । सूत्र ॥१०॥

વનસ્પતિકાળ સુધીનું છે. "अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसस्स जहण्णेणं वासमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं सातिरेगाइं" અનુત્તરોપપાતિક કલ્પાતીત દેવપુરૂષનું અંતર જઘન્ય થી વર્ષ પૃથકૃત્વ—એટલે કે બે વર્ષ થી લઈને નવ વર્ષ સુધીનું અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઈક વધારે સંખ્યાત સાગરોપમોનું છે. અનુત્તરોપપાતિક કલ્પાતીત દેવ પુરૂષો શિવાયના વૈમાનિક દેવ પુરૂષોમાં સંખ્યાતવાર તેની ઉત્પત્તિની અપેક્ષાથી અહિંયાં સંખ્યાત સાગરોપમ કહ્યા છે. તથા તેમા જે કંઈક અધિક પણું કહ્યું છે. તે મનુષ્ય ભવોને લઈને કહેલ છે. આ રીતે કંઈક વધારે સંખ્યાત સાગરોપમોનું અંતર અહિયાં સ્પષ્ટ થઈ જાય છે, જો કે અહિયાં સામાન્ય પણાથી જ અનુત્તરોપપાતિક દેવ પુરૂષોનું અંતર કહેલ છે, તો પણ અપ-રાજીત દેવ પુરૂષો સુધીનું જ અતર સમજવું, કેમકે—સર્વાર્થસિદ્ધમાં તો જીવની ઉત્પત્તિ એકવાર જ થાય છે. તેથી તે અંતરનું કથન બનતું નથી. આ પ્રમાણે દેવપુરૂષના અંતરનું કથન જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી જે કર્યું તે સમાપ્ત થયું ॥સૂ૦ ૧૦॥

चतुर्थं देवपुरुषविषयम् पञ्चमं मिश्रपुरुषविषयम् तत्र प्रथमं तावदाह—'अप्पा बहुयाणि' इत्यादि ।

मूलम्—'अप्पा बहुयाणि जहेवित्थीणं जाव एएसि णं भंते ! देवपुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ! गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणियदेवपुरिसा भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा वाणमंतरदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा। एएसि णं, भंते? तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं, मणुस्सपुरिसाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं, देवपुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोहम्माणं जाव सव्वट्ठ सिद्धगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अंतरदीवगमणुस्सपुरिसा देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, हरिवासरम्मगवास अकम्म भूमिग मणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, हेमवय एरण्णवय वास अकम्मभूमिग मणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। भरहेरवयवास कम्म भूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा । पुव्वविदेहावरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, अनुत्तरोववाइयदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा, उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा, अच्चुयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा, जाव आणयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा महासुक्के-

कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा'॥सू० ११॥

छाया—अल्पबहुत्वानि यथैव स्त्रीणां यावत् एतेषां खलु भदन्त! देवपुरुषाणां भवनवासिनां वानव्यन्तराणां ज्योतिष्काणां वैमानिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका वैमानिकदेवपुरुषाः भवनवासिदेवपुरुषा असंख्येयगुणाः वानव्यन्तरदेवपुरुषा असंख्येयगुणाः, ज्योतिष्क देवपुरुषाः संख्येयगुणाः। एतेषां खलु भदन्त! तिर्यग् योनिकपुरुषाणां जलचराणां स्थलचराणां खेचराणां मनुष्यपुरुषाणां कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपकानां देवपुरुषाणां भवनवासिनां वानव्यन्तराणां ज्योतिष्काणां वैमानिकानां सौधर्माणां यावत् सर्वार्थसिद्धकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका अन्तरद्वीपकमनुष्यपुरुषाः, देवकुरूत्तर कुर्वकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषा द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः। हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषा द्वयेऽपि तुल्या संख्येयगुणाः। हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषा द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषा, द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः। पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाः द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः, अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषा असंख्येयगुणाः, उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः, मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः, अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः, अच्युतकल्पे देवपुरुषाः संख्येयगुणाः, यावदानत कल्पे देवपुरुषाः संख्येयगुणाः, सहस्रारे कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणा महाशुक्रे कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाः, यावन्माहेन्द्रे कल्पे देवपुरुषाः असंख्येयगुणाः, सनत्कुमारे कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाः ईशानकल्पे देवपुरुषा, असंख्येयगुणाः, सौधर्मे कल्पे देवपुरुषाः असंख्येयगुणाः, भवनवासिदेवपुरुषा असंख्येयगुणाः, खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषा असंख्येयगुणाः, स्थलचर तिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाः, जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषा असंख्येयगुणाः, वानव्यन्तरदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः, ज्योतिष्कदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः ॥११॥

टीका—'अप्पा बहुयाणि जहेवित्थीणं, पुरुषाणामल्पबहुत्वानि यथैव स्त्रीणाम्, सामान्यतः स्त्रीणां यथाऽल्पबहुत्वानि स्त्रीप्रकरणे कथितानि तेनैव रूपेण सामान्यतः पुरुषाणामपि अल्पबहुत्वानि वक्तव्यानि कियत्पर्यन्तं स्त्रीप्रकरणं वक्तव्यं तत्राह 'जाव' इत्यादि 'जाव एएसि णं भंते ! देवपुरिसाणं' यावत् एतेषां खलु भदन्त! देवपुरुषाणाम् अल्पबहुत्वानि पञ्च भवन्ति, तत्र प्रथम सामान्यतस्तिर्यङ्मनुष्यदेवपुरुषाणामल्पबहुत्वम् १ द्वितीय जलचरादि त्रिविधतिर्यक्पुरुषाणामल्पबहुत्वम् २, तृतीयं कर्मभूमकादि त्रिविधमनुष्यपुरुषाणामल्पबहुत्वम ३, चतुर्थं देवपुरुषाणामल्पबहुत्वम् ४, पञ्चमं तिर्यङ्मनुष्यदेवानां मिश्रमल्पबहुत्वम् ५ अत्र यावत्पदेन एतेषां पञ्चानामल्पबहुत्वानां मध्याच्चतुर्थ—देवपुरुषाल्पबहुत्वादर्वाक्तनानि आद्यानि त्रीणि अल्पबहुत्वानि संग्राह्याणि। तत्र प्रथममल्पबहुत्वं सामान्यतस्तिर्यङ्मनुष्यदेवपुरुषविषयकम् १ द्वितीयं तिर्यग्योनिकजल-

---

इस प्रकार से यहां तक पुरुषों का अन्तर कहा अब सूत्रकार इनका अल्पबहुत्व कहते हैं—'अप्पा बहुया' इत्यादि ।

टीकार्थ—'अप्पा बहुयाणि जहेवित्थीणं' समान्य स्त्री प्रकरणमें स्त्रियों के अल्पबहुत्व का कथन जिस प्रकार से किया गया है उसी प्रकारसे सामान्यत. पुरुषों का अल्पबहुत्व कहलना चाहिए। "जाव एएसि णं भंते देवपुरिसाणं" और यहां पर अल्पबहुत्वका प्रकरण यावत् देवपुरुषों के अल्पबहुत्वके प्रकरणसे पहिले पहिलेका ग्रहीत हुआ है, ऐसा जानना चाहिए

यह अल्पबहुत्व पांच प्रकार का होता है जिसमें पहिला तिर्यञ्च आदिके संबन्धमें पुरुषों का समान्य अल्पबहुत्व है १ दूसरा तीन प्रकार के तिर्यंचों का है २, तीसरा तीन प्रकार के मनुष्य पुरुषों के संबन्धमें है ३, चौथा देवपुरुषों के संबन्धमें है ४, और पांचवां अल्पबहुत्व तिर्यंच मनुष्य देव इस प्रकार से मिलित पुरुषों के संबन्धमें है ५। यहा यावत् पद से पांच प्रकार के अल्पबहुत्वों का सग्रह होता है, जैसे पहिला सामान्य तिर्यञ्च मनुष्य देवों क १,

---

આ રીતે અહીં પર્યન્ત પુરૂષોનું અંતર કહ્યું છે. હવે સૂત્રકાર તેઓના અલ્પ બહુપણાનું કથન કરે છે. "अप्पावहुयाणि" ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ—"अप्पा वहुयाणि जहेचित्थीणं" સામાન્ય સ્ત્રી પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે અલ્પ બહુપણાનું કથન કરવામા આવેલ છે, એજ પ્રમાણે સામાન્ય પુરુષોનુ અલ્પ બહુપણું કહી લેવુ "जाव एएसिणं भंते ! देवपुरिसाणं" અને અહિંયા આ અલ્પ બહુપણાનું પ્રકરણ યાવત્ દેવ પુરૂષોના અલ્પ બહુપણાના પ્રકરણથી પહેલાં પહેલાનું ગ્રહણ કરાયુ છે. તેમ સમજવુ આ અલ્પ બહુપણુ પાંચ પ્રકારનું હોય છે. જેમાં પહેલું તિર્યંચ વિગેરે પુરૂષોનું સામાન્ય અલ્પ બહુપણું છે. ૧ બીજું ત્રણ પ્રકારના તિર્યંચોના સંબંધમા છે. ૨ ત્રીજુ ત્રણ પ્રકારના મનુષ્ય પુરૂષોના સંબંધમા છે ૩ ચોથું દેવ પુરૂષોના સંબંધમાં છે. ૪, અને પાંચમું અલ્પ બહુપણું તિર્યંચ, મનુષ્ય, દેવ, આ રીતે મળેલા પુરૂષોના સંબંધમાં કહ્યું છે. ૫ અહિયાં યાવત્ પદથી પાંચ પ્રકારના અલ્પ બહુપણા માંથી પહેલાના ત્રણ અલ્પ બહુપણાનો સંગ્રહ થયો છે. જેમકે

चरस्थलचर-खेचरपुरुषविषयकम् २ तृतीयं कर्मभूमिकाकर्मभूमिकान्तरद्वीपकमनुष्यपुरुषविषयकम् ३, एतानि त्रीणि अल्पबहुत्वानि एतेषामेव स्त्रीविषयकाल्पबहुत्ववदेव व्याख्येयानि, भेदस्ताव देतावानेव यत्-तत्र '**एयासि णं भंते! तिरिक्खजोणित्थीणं**' इत्यादि कथितम् अत्र तु '**एएसिं णं भंते तिरिक्खजोणियपुरिसाणं**, इत्यादि वाच्यम् आलापकप्रकारः स्वयमूहनीयः तथाच सर्वस्तोकाः मनुष्यपुरुषाः, तदपेक्षया तिर्यग्योनिक पुरुषा असंख्येयगुणा अधिकाः, । तदपेक्षया देवपुरुषा असंख्येयगुणाअधिकाः ।१। तिर्यग्योनिकपुरुषेषु मध्ये सर्वस्तोकाः खेचरपुरुषाः तदपेक्षया स्थलचरपुरुषाः संख्येयगुणा अधिकाः । तदपेक्षया जलचरपुरुषाः सख्येयगुणा अधिकाः ।२॥ मनुष्यपुरुषेषु मध्ये सर्वस्तोकाः अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषस्तदपेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वकर्म-

---

दूसरा जलचरादि तीन प्रकार के जलचरों का, तीसरा कर्मभूमिक आदि तीन प्रकार के मनुष्यों का ३, ये तीनों अल्पबहुत्व इनकी स्त्रियों के प्रकरणमें जैसा पहले अल्पबहुत्व कहा है वैसा ही इन पुरुषों के अल्पबहुत्वमें भी जान लेना चाहिये। अन्तर इतना ही है कि स्त्री प्रकरणमें "**एयासि णं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं ...**" इत्यादि कहा है और यहां पर —"**एएसि णं भंते तिरिक्खजोणियपुरिसाणं**" इत्यादि कहना चाहिये, 'आलापकोंका प्रकार स्वयं समझ लेना चाहिये। यावत्पदसे गृहीत तीन अल्पबहुत्वों का अर्थ इस प्रकार हैं—

सबसे कम मनुष्य पुरुष हैं, इनकी अपेक्षा तिर्यग्योनिक पुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते हैं। तिर्यग्योनिक पुरुषों की अपेक्षा देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते हैं। यह पहला अल्पबहुत्व है १। तिर्यग्योनिक पुरुषों में सबसे कम खेचर पुरुष हैं, खेचर पुरुषों की अपेक्षा स्थलचर पुरुषों संख्यातगुणे अधिक होते हैं, स्थलचर पुरुष की अपेक्षा जलचर पुरष संख्यातगुणे अधिक होते है। १ यह दूसरा अल्पबहुत्व है। मनुष्य पुरुषों में सबसे कम अन्तरद्वीपके मनुष्य

પહેલાં સામાન્ય તિર્યંચ મનુષ્ય દેવોનું ૧ બીજું જલચર વિગેરે ત્રણ પ્રકારના જલચરોનું ૨ ત્રીજું કર્મભૂમિજ વિગેરે ત્રણ પ્રકારના મનુષ્યોનું ૩ આ ત્રણે અલ્પ બહુપણું તેઓની સ્ત્રિયોના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે આ પુરૂષોના અલ્પ બહુપણામાં પણ સમજી લેવુ. ફરક એટલોજ છે કે,—સ્ત્રી પ્રકરણમાં "**पयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं**" ઇત્યાદિ કહેલુ છે અને અહિંયા "**एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियपुरिसाणं**" ઇત્યાદિ કહેવું જોઈએ તેના આલાપકોનો પ્રકાર જ્ઞાતાથી સમજી લેવો યાવત્પદથી ગ્રહણ થયેલ અલ્પ બહુપણાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—સૌથી ઓછા મનુષ્ય પુરૂષ છે તેના કરતાં તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો કરતાં દેવપુરૂષ અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. આ રીતે આ પહેલુ અલ્પ બહુત્વ છે. ૧ તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોમાં સૌથી ઓછા ખેચર પુરૂષો છે ખેચર પુરૂષો કરતાં જલચર પુરૂષ સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે, આ બીજું અલ્પ બહુપણું કહ્યું છે. ૨ મનુષ્ય પુરૂષોમાં સૌથી ઓછા અંતરદ્વીપના મનુષ્ય પુરૂષ છે અંતર્દ્વીપના મનુષ્ય પુરૂષો કરતા દેવકુરૂ

भूमिकमनुष्या' सङ्ख्येयगुणा अधिका एतेषां द्वयानां परस्परं तुल्यतैव । एतदपेक्षया हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकपुरुषाः सङ्ख्येयगुणा अधिका स्तथा इमे द्वये परस्परं तुल्याः । एतदपेक्षया हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्याः संख्येयगुणा अधिकाः परस्परमिमे द्वये तुल्याः । भरतैरवतवर्षकर्मभूमिकमनुष्या. पूर्वापेक्षया संख्येयगुणा अधिका परस्परमिमे द्वये तुल्याः। पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाः पूर्वापेक्षया संख्येयगुणा अधिका भवन्ति तथा परस्परमेतेषां तुल्यता भवति ।३॥ एतत्पर्यन्तमल्पबहुत्वत्रयं यावत्पदेन संग्राह्यम । एतानि त्रीणि अल्पबहुत्वानि सन्ति' चतुर्थं देवपुरुष विषयकमल्पबहुत्वं सूत्रकार' स्वयमेव दर्शयति **'एएसि णं भंते देव पुरिसाणं'** इत्यादि ।

'एएसि णं भंते' एतेषां खलु भदन्त । **'देवपुरिसाणं'** देवपुरुषाणां—सामान्यतो देवपुरुषाणाम् **'भवणवासीणं'** भवनवासिनां भवनवासि देवानाम् **'वाणमंतराण'** वानव्यन्तराणाम्—

पुरुष हैं अन्तरद्वीप के मनुष्य पुरुषों की अपेक्षा देवकुरु और उत्तर कुरुके मनुष्य पुरुष परस्परमें दोनों समान होते हुए संख्यातगुणे अधिक हैं। इनकी अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यक वर्ष के मनुष्य पुरुष परस्पर में दोनों समान होते हुये संख्यातगुणे अधिक होते हैं, इनकी अपेक्षा हैमवत और हैरण्यवतक्षेत्रके मनुष्य पुरुष परस्पर में दोनों समान होते हुए असंख्यातगुणे अधिक होते हैं, इनकी अपेक्षा भरत और ऐरवत क्षेत्रके मनुष्य पुरुष परस्परमें समान होते हुऐ संख्यातगुणे अधिक होते हैं इनकी अपेक्षा पूर्वविदेह और अपर विदेहके मनुष्य पुरुष परस्परमें समान होते हुए संख्यातगुणे अधिक होते हैं । यह तीसरा अल्पबहुत्व है ३ । इस प्रकार मनुष्य पुरुष तक इन तीन अल्पबहुत्वों का यहां यावत्पदसे ग्रहण हुआ है। अब देवपुरुषों का अल्पबहुत्व सूत्रकार स्वय कहते हैं--**"एएसि णं भंते इत्यादि**

'एएसि णं भंते' हे भदन्त ! इन **'देवपुरिसाणं'** देवपुरुषों का अर्थात् सामान्य देवपुरुषों का, जिनमें **'भवणवासीणं'** भवनवासीदेवोंके **'वाणमंतराणं'** वानव्यन्तर देवोंके

અને ઉત્તર કુરૂના મનુષ્ય પુરૂષ અન્યોન્ય બન્ને સરખા છે અને સંખ્યાત ગણા વધારે છે. તેઓના કરતા હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષના મનુષ્ય પુરૂષો બન્ને પરસ્પરમાં સરખા છે. અને સંખ્યાત ગણા વધારે છે. તેના કરતાં હૈમવત અને હૈરણ્યવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય પુરૂષો પરસ્પરમાં બન્ને સમાન છે. અને સંખ્યાત ગણા વધારે છે તેના કરતા પૂર્વ વિદેહ અને અપર વિદેહના મનુષ્ય પુરૂષો પરસ્પરમાં સમાન છે, અને સંખ્યાત ગણા વધારે છે. આ ત્રીજું અલ્પ બહુપણું છે. ૩ આ પ્રમાણે મનુષ્ય પુરૂષ સુધી ત્રણ અલ્પ બહુપણાનુ ગ્રહણ અહિંયા યાવત્ પદથી થયેલ છે.

હવે ચોથા દેવપુરુષોનું અલ્પ બહુપણું સૂત્રકાર પોતેજ બતાવતા કહે છે કે—**"एएसि णं भंते !"** ઇત્યાદિ

"एएसि णं भंते ! હે ભગવન્ આ **"देवपुरिसाणं"** દેવ પુરૂષોનું અર્થાત્ સામાન્ય દેવ પુરૂષોનુ કે જેમા **"भवणवासीणं"** ભવનવાસી દેવામાં અને **"वाणमंतराणं"** વાનવ્ય-

वानव्यन्तरदेवानाम् 'जोइसियाणं' ज्योतिष्काणाम् ज्योतिष्कदेवानाम् **'वेमाणियाण य'** वैमानिकानां च **'कयरे कयरे हिंतो'** कतरे देवाः कतरेभ्यो देवेभ्यः **'अप्पावा'** अल्पा वा **'बहुया वा'** बहुका वा **'तुल्ला वा'** तुल्या वा **'विसेसाहिया वा'** विशेषाधिका वा देवेषु परस्परं कस्यापेक्षया कस्याल्पत्व बहुत्वं तुल्यत्वं विशेषाधिकत्वं वेति प्रश्नः, भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि **'गोयमा'** हे गौतम! **'सव्वत्थोवा' वेमाणियदेवपुरिसा'** सर्वस्तोकाः सर्वेभ्योऽल्पीयांसो वैमानिकदेवपुरुषा भवन्तीति। **'भवणवासी देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** वैमानिकदेवपुरुषा पेक्षया भवनवासिनो देवपुरुषाःअसंख्येय गुणा अधिका भवन्तीति। **'वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** वानव्यन्तर देवपुरुषा. भवनवासिदेवपुरुषापेक्षया असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति **'जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा'** वानव्यन्तरदेवपुरुषापेक्षया ज्योतिष्कदेवपुरुषाः संख्यातगुणा अधिका भवन्तीति।

अत्र देवप्रसङ्गवशात् केवल देवपुरुषाणामल्पबहुत्वं प्रदर्श्यते--देवेषु सर्वस्तोकाः अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषाः क्षेत्रपल्योपमासंख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्। अनुत्तरो-

---

'जोइसियाण' ज्योतिष्क देवो के और **'वेमाणियाणं'** वैमानिकदेवों के **'कयरे कयरे-हिंतो'** कौन देव किन देवों की अपेक्षा **'अप्पा वा बहुया या तुल्ला वा विसेसाहिया वा'** अल्प हैं कौन बहुत हैं कौन तुल्य है और कौन विशेषाधिक हैं। गौतम के इस प्रश्न के उत्तर में भगवान् कहते हैं—**'गोयमा!'** हे गौतम! **'सव्वत्थोवा वेमाणियदेवपुरिसा'** सबसे कम वैमानिक देवपुरुष हैं **'भवनवासी देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** वैमानिक देवपुरुषों की अपेक्षा भवनवासी देवपुरुष असंख्यात गुणे अधिक होते हैं। **'वाणमंतरदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** भवनवासी देवपुरुषों की अपेक्षा वानव्यन्तर देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते हैं। **'जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा'** वामव्यन्तरदेवपुरुषों की अपेक्षा ज्योतिष्क देव संख्यातगुणे अधिक होते है।

यहां देवों के प्रसंगवश से केवल देवपुरुषों का अल्पबहुत्व दिखलाया जाता है—

न्तर देवोमा **'जोइसियाणं'** ज्योतिष्क देवोमां अने **'वेमाणियाणं'** वैमानिक देवोमां **"कयरे कयरेहिंतो"** कया देवो कया देवो करतां **"अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा"** अल्प छे? कयादेव कयादेव करता वधारे छे? कयादेव कयादेवनी तुल्य छे? अने कयादेव कयादेवथी विशेषाधिक छे? गौतम स्वामीना आ प्रश्नना उत्तरमा प्रभु कहे छे—**"गोयमा!** हे गौतम! **"सव्वत्थोवा वेमाणियदेवपुरिसा'** सौथी ओछा वैमानिक देवपुरुष छे. **"भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** वैमानिक देव पुरुषो करतां भवनवासी देव पुरुष असंख्यात गणा वधारे होय छे. **"वाणमंतरदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** भवनवासी देव पुरुषो करता वानव्यन्तर देव पुरुष असंख्यात गणा वधारे होय छे **"जोइसियदेवपुरिसा-संखेज्जगुणा"** वानव्यन्तरदेव पुरुषो करता ज्योतिष्क देव पुरुष संख्यात गणा वधारे होय छे.

अहियां देवोना प्रसंगथी केवळ देव पुरुषोनुज अल्प बहुपणुं बतावयामां आवे छे.–

पपातिकदेवपुरुषेभ्य उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासंख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ननु कथमेतज्ज्ञायते यत् अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषापेक्षया उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषा संख्येयगुणा अधिकाः ? इति चेदत्रोच्यते–विमानबाहुल्यात्, तथाहि–अनुत्तरदेवानां पञ्चविमानानि, विमानशतं तु उपरितनग्रैवेयकप्रस्तटे प्रतिविमानं चासंख्येया देवाः यथायथा चाऽधोऽधोवर्तीनि विमानानि अधिकानि भवन्ति तथातथा तत्र देवा अपि प्रचुरतया लभ्यन्ते, ततो ज्ञायते यत्–अनुत्तरविमानवासिदेवपुरुषापेक्षया बृहत्तरक्षेत्रपल्योपमाऽसंख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वेन उपरितनग्रैवेयकप्रस्तटे देवपुरुषाः संख्येय गुणा अधिका इति । एवमुत्तरत्रापि भावना कर्त्तव्या । उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया मध्यमग्रैवे-

---

देवों में सबसे कम अनुत्तरोपपातिक देव होते हैं, क्योंकि वे क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवें भागवर्ती जितनी आकाशप्रदेशराशि होती हैं उतने प्रमाणवाले होते हैं । अनुत्तोपपातिक देव पुरुषों की अपेक्षा उपरितनग्रैवेयक देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते हैं, क्योंकि ये बृहत्तर क्षेत्रपल्योपम के असंख्यातवें भागवर्त्ती आकाशप्रदेशराशि प्रमाणवाले होते हैं ।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाय कि अनुत्तरोपपातिक देवों की अपेक्षा से उपरितन ग्रैवेयकदेव संख्यातगुणे अधिक होते हैं ?

उत्तर–यहां उपरितनग्रैवेयक प्रस्तट में विमान अधिक होते हैं जैसे अनुत्तर देवों के पाँच विमान होते हैं और उपरितनग्रैवेयक प्रस्तट में सौ १०० विमान होते हैं, प्रत्येक विमान में असंख्यात देव होते हैं, जैसे जैसे नीचे नीचे रहने वाले विमान अधिक होते है वैसे वैसे उनमें देव भी प्रचुर होते हैं इसलिये जाना जाता है कि अनुत्तर विमान देवपुरुषों की अपेक्षा बृहत्तर क्षेत्र पल्योपम के असख्यातवें भागवर्ती आकाश प्रदेश प्रमाण वाले होते हैं

દેવોમાં સૌથી ઓછા અનુત્તરોપપાતિક દેવ હોય છે કેમકે–તેઓ ક્ષેત્ર પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગવતી જેટલી આકાશ પ્રદેશરાશિ હોય છે એટલા પ્રદેશના હોય છે અનુત્તરોપપાતિક દેવપુરૂષો કરતા ઉપરિતન ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે—બૃહત્તરક્ષેત્ર પલ્યોપમના અસંખ્યાતમાં ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશરાશિ પ્રમાણ વાળા હોય છે.

પ્રશ્ન—એ કેવી રીતે જાણી શકાય કે અનુત્તરોપપાતિક દેવો કરતાં ઉપરિતન ગ્રૈવેયક દેવ સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે ?

ઉત્તર—અહિયા ઉપરિતન ગ્રૈવેયક પ્રસ્તટમાં વિમાનો વધારે હોય છે, જેમકે—અનુત્તર દેવોના પાંચ વિમાનો હોય છે અને ઉપરિતન ગ્રૈવેયક પ્રસ્તટમાં સો ૧૦૦ વિમાનો હોય છે, દરેક વિમાનોમાં અસંખ્યાત દેવો હોય છે. જેમ જેમ નીચે નીચે રહેવા વાળા વિમાનો વધારે હોય છે. તેમ તેમ તેમાં દેવો પણ અધિક હોય છે તેથી જાણી શકાય છે કે—અનુત્તર વિમાન દેવપુરૂષો કરતાં બૃહત્તર ક્ષેત્ર પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશ પ્રમાણ

कप्रस्तटदेवपुरुषाः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति । मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षयाऽपि अधस्तनग्रैवेयकप्रस्तटदेवपुरुषाः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति । अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया अच्युतकल्पदेवपुरुषा सख्येयगुणा अधिका भवन्ति, अच्युतकल्पदेवपुरुषापेक्षयापि आरणकल्पदेवपुरुषाः सख्यातगुणा अधिका भवन्तीति । यद्यपि आरणाच्युतकल्पौ समानश्रेणीकौ समविमानसख्यकौ च, तथापि कृष्णपाक्षिका स्तथास्वभावत्वात् आधिक्येन दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते । अतोऽच्युतकल्पदेवापेक्षया एते सख्यातगुणाधिका' प्रोक्ता' ।

उपरितनग्रैवेकदेव सख्यातगुणे अधिक होते है । अल्पबहुत्व के विषयमें इसी प्रकार भावना कर लेनी चाहिये ।

उपरितनग्रैवेयक देवपुरुषो की अपेक्षा मध्यमग्रैवेयक देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है । मध्यमग्रैवेयक देवपुरुषो की अपेक्षासे अधस्तनग्रैवेयक प्रस्तट देवपुरुष सख्यात गुणे अधिक होते है । अधस्तनग्रैवेयक देवपुरुषो की अपेक्षा अच्युतकल्प देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है, अच्युतकल्प देवपुरुषो की अपेक्षा आरणकल्प के देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है ।

शंका--आरण और अच्युतकल्प ये दोनो समश्रेणिवाले और समान विमान सख्यावाले होते है तथापि अच्युतकल्प की अपेक्षा आरणकल्प के देवपुरुषों में सख्यातगुणी अधिकता आप कैसे कहते है ?

उत्तर—यहाँ जो बात कही गई है, उसका कारण यह है कि कृष्णपाक्षिक जीव तथाविध स्वभाव से दक्षिणदिशा में अधिकता से उत्पन्न होते है । इसलिए अच्युतकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा से आरणकल्प के देवपुरुष अधिक कहे गये है,

વાળા હોવાથી ઉપરિતન દેવ સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે અલ્પ બહુપણાના સંબંધમા આ પ્રમાણેની ભાવના કરી લેવી જોઈએ.

ઉપરિતન ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષો કરતાં મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષ સંખ્યાતગણા વાધારે હોય છે. મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવપુરુષો કરતાં અધસ્તન ગ્રૈવેયક પ્રસ્તટના દેવપુરુષો સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે.

અધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષો કરતાં અચ્યુત કલ્પના દેવપુરુષો સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. અચ્યુતકલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં આરણકલ્પના દેવ પુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે

શંકા—આરણ અને અચ્યુતકલ્પ આ બન્ને કલ્પો સમશ્રેણી વાળા અને સરખી વિમાનોની સંખ્યાવાળા છે. તોપણ અચ્યુતકલ્પ કરતાં આરણ કલ્પના દેવ પુરુષોમાં સંખ્યાતગણું અધિકપણું આપ કેવી રીતે કહો છો ?

ઉત્તર—અહિયા જે વાત કહેવામાં આવી છે, તેનું કારણ એ છે કે—કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો તથાવિધ સ્વભાવથી દક્ષિણ દિશામા અધિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે તેથી અચ્યુતકલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં આ આરણ કલ્પના દેવપુરુષો વધારે કહ્યા છે તે કૃષ્ણ પાક્ષિક કોણ છે ? આ

के ते कृष्णपाक्षिकाः ? इति तत्स्वरूपं प्रदर्श्यन्ते जीवा द्विविधा भवन्ति शुक्लपाक्षिकाः कृष्णपाक्षिकाश्च, तत्र येषां किञ्चिदूनोऽपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तप्रमितः संसारो वर्तते, ते शुक्लपाक्षिकाः, तदितरे दीर्घससारिणः कृष्णपाक्षिकाः, तदुक्तम्—

'जेसिमवड्ढो पुग्गलपरियट्टो, सेसओ य संसारो ।
ते सुक्कपक्खिया खलु, अहिए पुण कण्हपक्खीया' ॥१॥
येषामपार्द्धः पुद्गलपरावर्तः शेपश्च ससारः ।
ते शुक्लपाक्षिकाः खलु अधिके पुनः कृष्णपाक्षिकाः ॥१॥

अत एवाल्पा एव शुक्लपाक्षिका अल्पससाराणां स्तोकानामेव सभवात् । वहव पुनः कृष्णपाक्षिकाः दीर्घससाराणा मनन्तानन्तानां सभवात् ।

अथ कथमिद मवगम्यते—यत् कृष्णपाक्षिकाः प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते ? इति, अत्रोच्यते—तथा स्वभावत्वात्, तेषां तथास्वभावत्व यथा—कृष्णपाक्षिकाः खलु दीर्घससार-

---

कौन वे कृष्णपाक्षिक है ? इसपर कृष्णपाक्षिक का स्वरूप दिखलाया जाता है—जीव दो प्रकार के होते है—एक शुक्लपाक्षिक और दूसरे कृष्णपाक्षिक, इनमें जिनका ससार किञ्चित् ऊन अपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तमात्र अवशिष्ट रहता है वे शुक्लपाक्षिक है और इनसे भिन्न जो दीर्घ ससारी जीव है वे कृष्णपाक्षिक होते हैं जैसे कहा भी है—जेसिमवड्ढो०" इत्यादि अर्थात् जिनके ससार अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त शेप रहता है वे शुक्लपक्षिक और इससे अधिक ससार शेष रहता है वे कृष्णपाक्षिक होते है। इसलिए अल्पससारी होने के कारण शुक्लपाक्षिक अल्पही होते हैं किन्तु कृष्णपाक्षिक अधिक होते हे क्योकि दीर्घससारी अनन्तानन्त होते है।

प्रश्न—यह वात कैसे जानी जावे कि कृष्णपाक्षिक प्रचुरत से दक्षिण दिशा में उत्पन्न होते है ?

સ બધમાં કૃષ્ણપાક્ષિકનું સ્વરૂપ બતાવવામાં આવે છે—જીવ બે પ્રકારના હોય છે એક શુકલપાક્ષિક અને બીજા કૃષ્ણ પાક્ષિક, તેમા જેઓનો—સંસાર કંઈક ન્યૂન અપાર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત માત્ર બાકી રહે તે શુકલ પાક્ષિક છે અને તેનાથી જુદા જે દીર્ઘ સંસારી જીવો હોય છે, તેઓ કૃષ્ણ પાક્ષિક હોય છે. જેમ કહ્યું છે કે-"जेसिमवड्ढो०" ઇત્યાદિ અર્થાત્ જેઓનો સંસાર અપાર્ધ પુદ્ગલ બાકી રહે છે, તેઓ શુકલ પાક્ષિક અને તેનાથી વધારે સંસાર બાકી રહે છે, તેઓ કૃષ્ણ પાક્ષિક કહેવાય છે. તેથી અલ્પ સંસારી હોવાના કારણે શુકલ પાક્ષિક થોડાજ હોય છે પરંતુ કૃષ્ણ પાક્ષિક વધારે હોય છે. કેમકે દીર્ઘ સંસારી અનંતાનંત હોય છે.

પ્રશ્ન—આ વાત કેવી રીતે જાણી શકાય કે—કૃષ્ણ પાક્ષિક દક્ષિણ દિશામા અધિક પણાથી ઉત્પન્ન થાય છે ?

भाज उच्यन्ते, दीर्घसंसारभाजश्च बहुपापोदयाद् भवन्ति, बहुपापोदयवन्तश्च क्रूरकर्माणो भवन्ति, क्रूरकर्माणश्च प्रायस्तथा स्वाभाव्यात् तद्भवसिद्धिका अपि दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते, तदुक्तम्—

'पायमिह कूरकम्मा, भवसिद्धीया वि दाहिणिल्लेसु ।
नेरइयतिरियमणुया, सुराइठाणेसु गच्छंति' ॥१॥

प्राय इह क्रूरकर्माणो भवसिद्धिका अपि दाक्षिणात्येषु ।
नैरयिकतिर्यङ्मनुजाः सुरादिस्थानेषु गच्छन्ति ॥१॥ इतिच्छाया

ततो दक्षिणस्यां दिशि प्राचुर्येण कृष्णपाक्षिकानां संभवाद् अच्युतकल्पदेवपुरुपापेक्षया आरणकल्पदेवपुरुषाः संख्येयगुणा अधिका इति ॥

आरणकल्पदेवपुरुषापेक्षया प्राणतकल्पदेवपुरुषा संख्येयगुणा अधिका भवन्ति । प्राणतकल्पदेवपुरुषापेक्षयाऽपि आनतकल्पदेवपुरुषा संख्येयगुणा अधिका भवन्तीति ।

अत्रेदमवसेयम्—यत् उत्तरदिग् देवलोकस्थितदेवपुरुषाऽपेक्षया दक्षिणदिग् देवलोकस्थित-

---

उत्तर उनका ऐसा ही स्वभाव होता है क्योंकि कृष्णपाक्षिक दीर्घसंसारी होते है, दीर्घसंसारी जीव बहुतपाप के उदय से हो सकते है' बहुत पाप के उदयवाले जीव क्रूरकर्मा होते है और क्रूरकर्मा जीव प्रायः तथाविध स्वभाव से तद्भवसिद्धिवाले भी वे दक्षिण दिशा में ही उत्पन्न होते है जैसे कहा भी है—**"पायमिहकूरकम्मा०"** इत्यादि अर्थ उपर आ चुका है।

दक्षिणदिशा में कृष्णपाक्षिक प्रचुर होने से अच्युतकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा आरणकल्प के देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते है। क्योंकि आरणकल्प दक्षिणदिशा का देवलोक है। आरणकल्प देवपुरुषो की अपेक्षा प्राणतकल्प के देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते है प्राणतकल्प के देवपुरुषों की अपेक्षा आनतकल्प के देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते है।

यहां ऐसा जानना चाहिए कि उत्तरदिशा के देवलोक में रहे हुए देवपुरुषो की

ઉત્તર- તેઓનો સ્વભાવજ એવો હોય છે, કેમકે--કૃષ્ણ પાક્ષિક દીર્ઘ સંસારી હોય છે. દીર્ઘ સંસારી જીવ ઘણા પાપના ઉદયથી થાય છે. ઘણા પાપના ઉદયવાળા જીવો ક્રૂર કર્મ કરવા વાળા હોય છે અને ક્રૂર કર્મ કરનારા જીવો પ્રાય તથાવિધ સ્વભાવથી તદ્ભવ સિદ્ધિ વાળા પણ દક્ષિણ દિશાભાજ ઉત્પન્ન થાય છે જેમ કહ્યું પણ છે કે—**"पायमिह कूरकम्मा०"** ઈત્યાદિ આનો અર્થ ઉપરના કથનમાં આવી જાય છે

દક્ષિણ દિશામા કૃષ્ણ પાક્ષિક જીવો ઘણા હોવાથી અચ્યુત કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં આરણ કલ્પના દેવપુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે—આરણકલ્પ દક્ષિણ દિશાનો દેવલોક છે. આરણકલ્પના દેવપુરૂષો કરતા પ્રાણતકલ્પના દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. પ્રાણતકલ્પના દેવપુરૂષો કરતા આનત કલ્પના દેવપુરુષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે

અહિયાં એમ સમજવુ જોઈએ કે--ઉત્તર દિશાના દેવલોકમા રહેલા દેવ પુરૂષો કરતાં

देवपुरुषा. सख्येयगुणा अधिका भवन्ति दक्षिणस्या दिशि कृष्णपाक्षिकानां प्राचुर्येण समुत्पत्ति-संभवात्, शुक्लपाक्षिकापेक्षया च कृष्णपाक्षिकाणां स्वभावतः प्राचुर्यादिति । एते सर्वेऽपि अनुत्तरविमानवास्यादयः पश्चानुपूर्व्या आनतकल्पवासिपर्यन्तदेवपुरुषाः **'आणयपाणय माई पल्लस्सा संखभागाउ'** इति वचनात् प्रत्येकं क्षेत्रपल्योपमासख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशि प्रमाणा ज्ञातव्याः केवलं सख्येयो भागोऽत्र विचित्र इति परस्पर यथोक्ते सख्येयगुणत्वे न कोऽपि विरोध इति ।

आनतकल्पदेवपुरुषापेक्षया सहस्रारकल्पवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, घनीकृतलोकस्यैकप्रादेशिक्याः श्रेणेरसख्येयतमे भागे यावन्त आकाशप्रदेशा भवन्ति तावत्प्रमाणत्वात् सहस्रारदेवपुरुषाणामिति, सहस्रारकल्पदेवपुरुषाऽपेक्षया महाशुक्रकल्पवासिदेवपुरुषा

अपेक्षा दक्षिणदिशा के देवलोक में रहने वाले देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है, क्योकि दक्षिणदिशामें कृष्णपाक्षिक प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते है, और शुक्लपाक्षिको की अपेक्षा कृष्णपाक्षिक स्वभावत' अधिक ही होते हैं । अनुत्तरविमानवासि देवो से लेकर पश्चानुपूर्वी से आनतकल्प वासिपर्यन्त के देवपुरुष **'आणयपाणयमाई पल्लस्सासंखभागाउ"** इस वचन से प्रत्येक कल्पवासी देव क्षेत्र पल्योपम के असख्यातभागवर्ती आकाशप्रदेशो की राशि के प्रमाण वाले जानने चाहिए। केवल भेद इतना ही है कि यहां जो सख्यातभाग है वह नानाप्रकार का होता है इसलिए परस्पर में कहे गये सख्यातगुणत्व में कोई विरोध नहीं आता है ।

आनतकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा सहस्रारकल्पवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है, क्योकि घनीकृतलोक के एक प्रदेशवाली श्रेणि के असंख्यातवे भागमे जितने आकाश-प्रदेश होते है उतने प्रमाण के सहस्रारकल्पके देवपुरुष होते है । सहस्रारकल्प के देवपुरुषो की

દક્ષિણ દિશાના દેવલોકમા રહેવા વાળા દેવ પુરૂષો સ ખ્યાત ગણા વધારે હોય છે, કેમકે— દક્ષિણ દિશામા કૃષ્ણ પાક્ષિક ઘણા પ્રમાણમાં ઉત્પન્ન થાય છે અને શુકલ પક્ષ વાળાઓ કરતા કૃષ્ણ પક્ષવાળા સ્વાભાવિક રીતેજ વધારે હોય છે અનુત્તર વિમાનમાં રહેવા વાળા દેવોથી લઈને પશ્ચાનુપૂર્વીથી આનતકલ્પમા રહેવા વાળા દેવો પર્યન્તના દેવપુરુષો **'आणयपाणयमाई पल्लस्सासंखभागाउ"** આ વચનથી દરેક કલ્પમા રહેવા વાળા દેવો ક્ષેત્ર પલ્યોપમના અસ ખ્યાત ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશોની રાશિના પ્રમાણવાળા હોય છે. તેમ સમજવું કેવળ ભેદ એટલોજ છે કે—અહિયા જે સ ખ્યાત ભાગ છે, તે અનેક પ્રકારનો હોય છે. તેથી પરસ્પરમા કહેલા સ ખ્યાત ગુણ પણામા કંઈપણ વિરોધ આવતો નથી.

આનતકલ્પના દેવપુરુષો કરતા સહસ્રાર કલ્પમા રહેવા વાળા દેવપુરુષો અસ ખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. કેમકે—ઘનીકૃતલોકની એક પ્રદેશ વાળી શ્રેણીના અસ ખ્યાતમા ભાગમા જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે, એટલા પ્રમાણવાળા સહસ્રાર કલ્પના દેવ પુરુષો હોય છે. સહસ્રારકલ્પના

असख्येयगुणा अधिका भवन्ति । बृहत्तरश्रेण्यसख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् महाशुक्रदेवपुरुषाणाम । कथमित्थ मितिचेदाह—विमानबाहुल्यात् । तथाहि षट्सहस्रविमानानि सहस्रारकल्पे, चत्वारिंशत्सहस्राणि महाशुक्रे, अन्यच्च—अधोविमानवासिनो देवा बहुबहुतरा, उपरितनोपरितनविमानवासिन' स्तोकस्तोकतरा स्ततः सहस्रारकल्पदेवपुरुषापेक्षया महाशुक्रकल्पवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका उपपद्यन्ते । महाशुक्रकल्पवासिदेवपुरुषापेक्षया लान्तककल्पदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, बृहत्तमश्रेण्यसख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् । लान्तकेभ्योऽपि ब्रह्मलोकवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणा, एषा-

---

अपेक्षा महशुक्रकल्प के देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है । क्योकि ये बृहत्तर श्रेणि के असख्यातभागवर्त्ती आकाशप्रदेश राशिप्रमाण के होते है । ये कैसे अधिक होते है ? उसमे कारण दिखालातेहै—सहस्रारकल्प की अपेक्षा महाशुक्रकल्प में विमान अधिक होते है, जैसे सहस्रारकल्प में तो विमान छहहजार है और महाशुक्रकल्प में चालीस हजार विमान होते है । दूसरी बात यह है कि—नीचे नीचे के विमानवासी देव बहु बहुतर होते है और ऊपर ऊपर के विमाननिवासी देव स्तोकस्तोकतर—थोडे-थोडे—होते है इस कारणसे सहस्रारकल्पके देव पुरुषो की अपेक्षा महाशुक्रकल्पवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है । महाशुक्रकल्पवासी देवपुरुषो की अपेक्षा लान्तककल्पवासी देव पुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है, क्योकि ये बृहत्तमश्रेणि के असंख्यातवे भागवर्ती आकाश प्रदेशराशि के प्रमाणवाले होते है । लान्तककल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा ब्रह्मलोकवासी देवपुरुष असख्यातगुणे अधिक होते है, क्योकि इनका भी प्रमाण 'भूयः' फिर पहले से अधिक उसी प्रकार

દેવ પુરૂષો કરતા મહાશુક્ર કલ્પના દેવ પુરૂષો અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે એ બહુત્તર શ્રેણીના અસખ્યાત ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશરાશિ પ્રમાણના હોય છે એ વધારે કેવી રીતે હોય છે ? તેમાં કારણ બતાવે છે કે—સહસ્રારકલ્પ કરતા મહાશુક્ર કલ્પમા વિમાનો વધારે હોય છે જેમકે—સહસ્રાર કલ્પમા તો છ હજાર વિમાનો છે, અને મહાશુક્ર કલ્પમાં ચાલીસ હજાર વિમાનો હોય છે બીજી વાત એ છે કે—નીચે નીચેના વિમાનોમા રહેવાવાળા દેવો બહુ બહુતર હોય છે. અને ઉપર ઉપરના વિમાનોમા રહેવા વાળા દેવો સ્તોક સ્તોકતર થોડા થોડા હોય છે તે કારણથી સહસ્રાર કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતા મહાશુક્ર કલ્પમા રહેવાવાળા દેવપુરૂષો અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. મહાશુક્રમા રહેવાવાળા દેવ પુરૂષો કરતા લાન્તક કલ્પમા રહેવા વાળા દેવ પુરૂષો અસખ્યાતગણા વધારે હોય છે કેમકે—આ બૃહત્તર શ્રેણીના અસખ્યાતમા ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશ રાશિ પ્રમાણ વાળા હોય છે લાન્તક કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતા બ્રહ્મલોકવાસી દેવપુરૂષો અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે—તેઓનું પ્રમાણ પણ "भूयः" ફરીથી પહેલાથી વધારે એજ પ્રમાણે એટલે કે (લાન્તક કલ્પમા રહેવા વાળા દેવ

मपि भूयो बृहत्तमश्रेण्यसख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् । ब्रह्मलोकवासिदेवपुरुषापेक्षया माहेन्द्रकल्पवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, भूयस्तरबृहत्तमाकाशश्रेण्यसख्येयभागगताकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् । माहेन्द्रकल्पवासिदेवपुरुषापेक्षया सनत्कुमारकल्पवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्ति । विमानबाहुल्यात,

तथाहि— सनत्कुमारकल्पे द्वादशशतसहस्राणि विमानानि, माहेन्द्रकल्पे तु अष्टौ शत सहस्राणि । अन्यच्च सनत्कुमारकल्पो दक्षिणदिग्विभागवर्त्ती, माहेन्द्रश्चोत्तरदिग्वर्त्ती, दक्षिणस्यां च दिशि कृष्णपाक्षिका बहव समुत्पद्यन्ते, अतो माहेन्द्रकल्पदेवपुरुषेभ्यः सनत्कुमारकल्पवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिकाः समुत्पद्यन्ते इति । एते च सर्वेऽपि सहस्रारकल्पवासि देवपुरुषत आरभ्य सनत्कुमारकल्पवासिदेवपुरुषपर्यन्ता. देवपुरुषाः प्रत्येकं स्वस्थाने

(लान्तककल्पवासी देवपुरुषो के जैसे) बृहत्तम श्रेणि के असख्यात भागवर्ती आकाश प्रदेशो की राशि जितना होता है। ब्रह्मलोकवासी देवपुरुषो की अपेक्षा माहेन्द्रकल्पवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है। क्योकि इनका प्रमाण-भूयस्तर—फिरफिर-पहले से अधिक बृहत्तम आकाशश्रेणिके असख्यातवर्त्ती आकाशप्रदेशराशि जितना होता है। माहेन्द्रकल्पवासी देवपुरुषो की अपेक्षा सनत्कुमारकल्पवासी देवपुरुष असख्यातगुणे अधिक होते है क्योकि यहां विमान बहुत होते है, जैसे—माहेन्द्रकल्प में तो आठलाख ही विमान होते है किन्तु सनत्कुमारकल्प में बारह लाख विमान होते है। दूसरा कारण यह भी है कि माहेन्द्रकल्प उत्तरदिशा का देवलोक है और यह सनत्कुमारकल्प दक्षिणदिशावर्त्ती देवलोक है इसकारणसे भी यहां कृष्णपाक्षिक जीव बहुत उत्पन्न होते है इसलिये माहेन्द्रकल्प के देवपुरुषों की अपेक्षा सनत्कुमारकल्पवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक कहे गये हैं ।

પુરૂષોની જેમ) બૃહત્તર શ્રેણીના અસખ્યાતમા ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશોની રાશિ જેટલું હોય છે. બ્રહ્મલોકમા રહેવા વાળા દેવ પુરૂષો કરતા માહેન્દ્ર કલ્પમા રહેવા વાળા દેવપુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે, કેમકે તેનું પ્રમાણ ભૂયસ્તર ફરી ફરી પહેલા કરતા વધારે બૃહત્તરમાં આકાશ શ્રેણીના અસખ્યાતવર્તી આકાશ પ્રદેશ રાશિ જેટલો હોય છે માહેન્દ્ર કલ્પમાં રહેવાવાળા દેવ પુરૂષો કરતા સનત્કુમાર કલ્પમાં રહેવા વાળા દેવ પુરૂષો અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે– તેમા વિમાનો વધારે હોય છે. જેમકે–– માહેન્દ્ર કલ્પમા તો આઠ લાખજ વિમાનો છે, પરંતુ સનત્કુમાર કલ્પમા બાર લાખ વિમાનો હોય છે બીજું કારણ એ છે કે—માહેન્દ્રકલ્પ ઉત્તરદિશાનો દેવલોક છે અને આ સનત્કુમાર કલ્પ દક્ષિણ દિશાવર્તી દેવલોક છે તેનુ કારણ પણ અહિયા કૃષ્ણપાક્ષિક જીવો ઘણા ઉત્પન્ન થાય છે તેથીજ માહેન્દ્રકલ્પમાં દેવપુરૂષો કરતા સનત્કુમાર કલ્પમા રહેનારા દેવપુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે કહેલા છે

विचार्यमाणा घनीकृतलोकैकश्रेण्यसङ्ख्येयभागगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणा द्रष्टव्याः, केवलं श्रेण्यसङ्ख्येयभागोऽसङ्ख्येयभेदभिन्नो भवति, तत इत्थमसङ्ख्येयगुणतयाऽभिधीयमानेऽल्पबहुत्वे न कश्चिद्विरोध इति। सनत्कुमारकल्पवासिदेवपुरुषापेक्षया ईशानकल्पवासिदेवपुरुषा असङ्ख्येयगुणा अधिका भवन्ति।

अङ्गुलमात्र क्षेत्रप्रदेशराशिसम्बन्धि द्वितीयं वर्गमूल तृतीयेन वर्गमूलेन गुण्यते, गुणिते च तस्मिन् यावत्परिमित' प्रदेशराशिर्जायते तावत्संख्याकासु घनीकृतलोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा भवन्ति तेषां यावत्परिमितो द्वात्रिंशत्तमो भाग स्तावत्प्रमाणत्वात्

ये सभी—सहस्रारकल्पवासी देवो से लेकर सनत्कुमारकल्प पर्यन्त के देवपुरुष प्रत्येक (एक-एक कल्प के देव) स्वस्थानमें विचार करने पर वे घनीकृत लोक का एक श्रेणि के असंख्यात भागवर्ती आकाश प्रदेश के प्रमाणवाले ही जानना चाहिये, भेद केवल इतना ही है कि श्रेणि का असंख्यातवां भाग असंख्यात प्रकार का होता है अतः वह असख्यात भाग सबके एक दूसरे की अपेक्षा अलग अलग समझना चाहिये। ऐसा समझने पर असंख्यात भाग कहे जानेवाले अल्पबहुत्व में कोई विरोध नहीं आता है।

सनत्कुमार -कल्पवामी देवपुरुषों की अपेक्षा ईशानकल्पवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है।

यहां अधिकता कैसे होती है सो कहते है—अङ्गुलमात्रक्षेत्र की प्रदेशराशि संवधी जो दूसरा वर्गमूल है वह तीसरे वर्गमूल से गुणा किया जावे, गुणने पर जितने प्रमाणकी (जितनी) प्रदेशराशि होती है उतनी संख्या की घनीकृतलोक की एक प्रादेशिकी श्रेणियो में जितने आकाशप्रदेश होते है उनका जितने प्रमाणका बत्तीसवां भाग हो उतने प्रमाणवाले ईशानकल्प

આ સઘળા સહસ્રાર કલ્પવાસી દેવોથી લઈને સનત્કુમાર કલ્પ પર્યન્તના દેવપુરુષો દરેક (એક એક કલ્પના દેવો) સ્વસ્થાનમા વિચાર કરતા તેઓ ઘનીકૃત લોકશ્રેણીના અસખ્યાત ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશના પ્રમાણ વાળા છે. તેમ સમજવુ તેમા ભેદ કેવળ એટલો જ છે કે—શ્રેણીનો અસખ્યાતમો ભાગ અસંખ્યાત પ્રકારનો હોય છે. તેથી તે અસંખ્યાતમો ભાગ બધાથી એક બીજા કરતા જુદો જુદો સમજવો જોઈએ તેમ સમજવાથી અસંખ્યાત ભાગથી કહેવામા આવનારા અલ્પબહુપણામા કોઈપણ વિરોધ આવતો નથી.

સનત્કુમાર કલ્પમાં રહેવા વાળા દેવપુરૂષો કરતાં ઈશાન કલ્પમા રહેવા વાળા દેવપુરુષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે.

અહિંયાં અધિકપણુ કેવી રીતે બને છે ? તે કહે છે કે—આગળમાત્ર ક્ષેત્ર પ્રદેશરાશિ સબંધી જે બીજો વર્ગમૂલ છે તે ત્રીજા વર્ગમૂલથી ગુણવામા આવે તેને ગુણવાથી જેટલા પ્રમાણની (જેટલી) પ્રદેશ રાશિ હોય છે, એટલી સંખ્યાની ઘનીકૃતલોકની એક પ્રદેશવાળી શ્રેણિયોમા જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે, તેનો બત્રીસમો ભાગ જેટલા પ્રમાણનો હોય એટલા પ્રમાણ વાળા

सनत्कुमारदेवपुरुषेभ्य ईशानकल्पदेवपुरुषा असख्येयगुणा इति कथितम् ।

ईशानकल्पवासिदेवपुरुषापेक्षया सौधर्मकल्पवासिदेवपुरुषा सख्येयगुणा अधिका भवन्ति, विमानबाहुल्यात् तथाहि - ईशानकल्पेऽष्टाविंशतिशतसहस्राणि विमानानि, सौधर्मकल्पे तु द्वात्रिंशच्छतसहस्राणि विमानानि भवन्ति ।

पुनश्च सौधर्मकल्पो दक्षिणदिग्वर्त्ती, ईशान कल्पश्चोत्तरदिग्वर्त्ती, ततश्च दक्षिणदिग्वर्त्ति देवलोके कृष्णपाक्षिका बहव उपपद्यन्तेऽत ईशानकल्पवासिदेवपुरुषेभ्य. सौधर्मकल्पवासिदेवपुरुषा' सख्येयगुणा अधिका' कथिता' ।

ननु युक्तिरियं पूर्वं माहेन्द्रसनत्कुमारकल्पयो'पि कथिता, परं तत्र माहेन्द्रकल्पापेक्षया सनत्कुमारकल्पे देवा असख्येयगुणा उक्ता:, इह तु सौधर्मकल्पे सख्येयगुणा स्तदेतत्क-

के देवपुरुष होते है अत' सनत्कुमारकल्प के देव पुरुषो की अपेक्षा ये असख्यातगुणे अधिक कहे गये है ।

ईशानकल्पवासी देवपुरुषो की अपेक्षा सौधर्मकल्पवासी देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते हैं क्योकि इस कल्प में ईशानकल्प की अपेक्षा विमान बहुत होते है जैसे—ईशानकल्प में अठाईस लाख ही विमान होते है किन्तु इस सौधर्मकल्प मे बत्तीस लाख विमान होते है इसी कारण से ईशानकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा सौधर्मकल्पमें देवपुरुष अधिक कहे गये है । दूसरी बात यह भी है कि सौधर्मकल्प दक्षिणदिग्वर्त्ती है, और कृष्णपाक्षिक जीव यहां अधिक उत्पन्न होते है , इस कारण भी ईशानकी अपेक्षा सौधर्म मे देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है ।

यहां कोई शङ्का करता है कि—यह युक्ति तो पहले माहेन्द्र और सनत्कुमार इन दो कल्पो में भी कही है किन्तु वहां माहेन्द्रकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा सनत्कुमारकल्पवासी

ઇશાન કલ્પના દેવપુરૂષો હોય છે તેથી સનત્કુમાર કલ્પના દેવપુરુષો કરતા આ અસંખ્યાત ગણા વધારે કહ્યા છે.

ઇશાન કલ્પમાં રહેવાવાળા દેવપુરુષો કરતાં સૌધર્મ કલ્પના દેવપુરુષો સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. કેમકે—આ કલ્પમાં ઇશાન કલ્પ કરતા વિમાનો વધારે હોય છે. જેમ ઇશાન કલ્પમાં અઠયાવીસ લાખ વિમાનો હોય છે, પરંતુ આ સૌધર્મકલ્પમાં બત્રીસ લાખ વિમાનો હોય છે આજ કારણથી ઇશાન કલ્પના દેવપુરુષો કરતા સૌધર્મ કલ્પના દેવપુરુષો વધારે કહ્યા છે બીજી વાત એ પણ છે કે--સૌધર્મકલ્પ દક્ષિણ દિશામાં છે, અને તેમા કૃષ્ણ પાક્ષિક જીવો વધારે ઉત્પન્ન થાય છે, એ કારણથી પણ ઇશાન કલ્પ કરતા સૌધર્મ કલ્પમા દેવપુરુષો અસંખ્યાતગણા વધારે હોય છે.

અહિંયાં કોઈ એવી શંકા કરે કે—આ યુક્તિ તો પહેલા માહેન્દ્ર અને સનત્કુમાર આ બે કલ્પોમા પણ કહેલ છે પરંતુ ત્યાં માહેન્દ્ર કલ્પના દેવ પુરુષોની અપેક્ષાથી સનત્કુમાર

थम् ? अत्रोच्यते — तथा वस्तुस्वाभाव्यात्, एतच्चावसीयते प्रज्ञापनादौ सर्वत्र तथा भणनात् ।

सौधर्मकल्पवासिदेवपुरुषाऽपेक्षया भवनवासिदेवपुरुषाः असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशिसबन्धि प्रथमवर्गमूलं द्वितीयेन वर्गमूलेन गुण्यते, गुणिते च तस्मिन् यावान् प्रदेशराशिरुपजायते तावत्सख्याकासु घनीकृतलोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा भवन्ति तेषां यावत्परिमितो द्वात्रिंशत्तमो भागो भवति तावत्प्रमाणत्वात्तेषामिति ।

भवनवासिदेवपुरुषापेक्षया व्यन्तरदेवपुरुषा असख्येयगुणाः, एकस्मिन् प्रतरे सख्येययोजन-कोटीकोटीप्रमाणैकप्रादेशिकश्रेणिमात्राणि यावन्ति खण्डानि भवन्ति तेषां यावान् द्वात्रिंशत्तमो भागो भवति तावत्प्रमाणत्वात्तेषामिति ·। व्यन्तरदेवपुरुपेभ्यो ज्योतिष्कदेवपुरुषाः सख्येय

देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक कहे है और यहां आकर सख्यातगुणे अधिक कहते है इसमें क्या कारण है ? उत्तर में कहते है कि तथाविध स्वभाव से ऐसा कहा है, तथा प्रज्ञापना आदि सूत्रो में सर्वत्र ऐसा ही कहा जाने से यह जाना गया है ।

सौधर्मकल्पवासी देवपुरुषो की अपेक्षा भवनवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है, क्योकि यहां अङ्गुलमात्र क्षेत्र की प्रदेशराशि संबधी प्रथम वर्गमूल दूसरे वर्गमूल से गुणाकिया जावे, गुणाकरने पर उसमें जितनी प्रदेशराशि होती है उतनी संख्या की घनीकृतलोक की एक प्रादेशिकी श्रेणियों में जितने आकाशप्रदेश होते है उनका जितना बत्तीसवा भाग हो उतने प्रमाण वाले ये भवनवासी देवपुरुष होते है इसलिये सौधर्मकल्प की अपेक्षा भवनवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक कहे है ।

भवनवासी देवपुरुषो की अपेक्षा व्यन्तर देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है, क्योकि एकप्रतर में संख्यात करोडाकरोड योजनप्रमाणवाली एकप्रादेशिकी श्रेणिमात्र जितने खण्ड होते है उनका जितने प्रमाण का बत्तीसवां भाग होता है उतने प्रमाण के ये व्यन्तर देवपुरुष होते है ।

કલ્પમાં રહેવા વાળા દેવપુરુષો અસંખ્યાત ગણા વધારે કહ્યા છે. અને અહિયાં સંખ્યાતગણા વધારે કહે છે. તેમાં શું કારણ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કહે છે કે—તથાવિધ સ્વભાવથી આ જાણી શકાય છે.

સૌધર્મ કલ્પના દેવો કરતાં ભવનવાસી દેવપુરુષો અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. કેમકે - અહિંયા આંગળમાત્ર ક્ષેત્રની પ્રદેશરાશિ સંબંધી પહેલુ વર્ગમૂળ બીજા વર્ગમૂળથી ગુણવામા આવે અને તેવી રીતે ગુણતા તેમાં જેટલી પ્રદેશરાશી હોય છે. એટલી સંખ્યાની ધનીકૃત લોકની એક પ્રાદેશિકી શ્રેણિયોમાં જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે. તેનો બત્રીસમો ભાગ જેટલો હેય એટલા પ્રમાણ વાળા આ ભવનવાસી દેવપુરુષો હોય છે તેથી સૌધર્મ કલ્પ કરતાં ભવનવાસી દેવ પુરુષો અસંખ્યાત ગણા વધારે કહેલા છે.

ભવનવાસી દેવપુરૂષો કરતાં વ્યતર દેવ પુરુષ અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે એક પ્રતરમાં સંખ્યાત કરોડાકરોડ યોજન પ્રમાણવાલી એક પ્રાદેશિક શ્રેણિમાત્રના જેટલા

गुणा अधिका भवन्ति । एकस्मिन् प्रतरे षट्पञ्चाशदधिकशतद्वया (२५६)ङ्गुलप्रमाणैकप्रादेशिका-श्रेणिमात्राणि खण्डानि यावन्ति भवन्ति तेषां यावान् द्वात्रिंशत्तमो भागो भवति तावत्प्रमाणत्वात्तेषामिति । इति केवलं देवपुरुषाणामल्पबहुत्वं समाप्तम् । साम्प्रतं प्रस्तुतप्रकरणमनुस्त्रियते, तत्र तिर्यग्योनिकपुरुषादिसर्वार्थसिद्धदेवपुरुषपर्यन्ताना सर्वेषां समिलितं पञ्चममल्पबहुत्वं सूत्रकार आह 'एएसि णं भंते' इत्यादि 'एएसि णं भंते' । तिरिक्खजोणियपुरिसाणं' तिर्यग्-योनिकपुरुषाणाम् 'जलयराणं थलयराणं खहयराणं' जलचराणा स्थलचराणा खेचराणा पुरुषाणाम् 'मणुस्सपुरिसाणं' मनुष्यपुरुषाणाम् 'कम्मभूमिगाणं अकम्मभूमिगाणं अंतरदीवगाणं' कर्मभू-

व्यन्तरदेवपुरुषो से ज्योतिष्क देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते है, क्योंकि ये एक प्रतर में दोसौ छप्पन (२५६) अंगुल प्रमाण की एकप्रादेशिकी श्रेणिमात्र-प्रमाण—के जितने खण्ड होते है, उनका जितने प्रमाण का बत्तीसवां भाग होता है उतने प्रमाणवाले होते है इसलिए ये व्यन्तरदेवपुरुषो की अपेक्षा ज्योतिष्क देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते हैं॥ यह केवल देव-पुरुषो का अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब प्रस्तुत चालु प्रकरण का समारभ किया जाता है, वहां तिर्यग्योनिक पुरुषो से लेकर सर्वार्थसिद्ध देवपुरुष पर्यन्त सबो का समिलित अल्पबहुत्व सूत्रकार कहते है— "एएसि णं' इत्यादि ।

"एएसि णं भंते तिरिक्खजोणियपुरिसाणं' हे भदन्त ! तिर्यग्योनिक पुरुष जो 'जलयराणं थलयराणं खहयराणं' जलचर स्थलचर और खेचर पुरुष, तथा 'मणुस्सपुरिसाण' मनुष्य पुरुष जो 'कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाणं' कर्मभूमिके अकर्मभूमिके और अन्तर

ખ ડ હોય છે. અને તેનો બત્રીસમો ભાગ જેટલા પ્રમાણનો હોય એટલા પ્રમાણના આ વ્યંતર દેવ પુરુષો હોય છે

વ્યંતર દેવ પુરુષો કરતાં જ્યોતિષ્ક દેવ પુરુષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. કેમકે તેઓ એક પ્રતરમાં ૨૫૬) બસો છપ્પન આગળ પ્રમાણવાળી એક પ્રાદેશિક શ્રેણીમાત્ર-- પ્રમાણના જેટલા ખંડો હોય છે તેનો બત્રીસમો ભાગ જેટલા પ્રમાણનો હોય, એટલા પ્રમાણ વાળા હોય છે. તેથી વ્યંતર દેવ પુરુષો કરતાં જ્યોતિષ્ક દેવપુરુષ સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે આ રીતે આ કેવળ દેવપુરુષોનું અલ્પ બહુપણુ સમાપ્ત થયુ.

હવે ચાલુ પ્રકરણનો આરંભ કરવામા આવે છે—ત્યાં તિર્યંગ્યોનિક પુરુષોથી લઈને સર્વાર્થસિદ્ધ દેવપુરુષ પર્યન્ત બધાનું એકી સાથે મળેલું અલ્પ બહુપણુ સૂત્રકાર કહે છે.-- "एएसि णं" ઇત્યાદિ.

"एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियपुरिसाणं" હે ભગવન્ તિર્યંગ્યોનિક પુરુષ કે જે "जलयराणं थलयराणं खहयराणं" જલચર સ્થલચર અને ખેચર પુરુષ, તથા "मणुस्सपुरिसाणं" મનુષ્ય પુરુષ કે જે "कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अतरदीवगाणं" કર્મભૂમિના અક-

मिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपकानाम् **'देवपुरिसाणं'** देवपुरुषाणाम् **'भवणवासिणं'** भवनवासिनाम् **'वाणमंतराणं'** वानव्यन्तराणाम् **'जोइसियाण'** ज्योतिष्काणाम् **'वेमाणियाणं'** वैमानिकानाम् **'सोहम्मियाणं'** सौधर्मकानाम् **'जाव सव्वट्ठसिद्धगाण य'** यावत्सर्वार्थसिद्धकानां च यावत्पदेन सौधर्मादि द्वादशकल्पोपपन्नदेवानां नवग्रैवेयकविजयादिसर्वार्थसिद्धपर्यन्तपञ्चानुत्तरदेवानां च संग्रहो भवति **'कयरे कयरेहिंतो'** कतरे कतरेभ्य **'अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?** अल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिकावेति प्रश्नः भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि **'गोयमा'** हे गौतम ? **'सव्वत्थोवा अंतरदीवगमणुस्सपुरिसा'** सर्वस्तोका अन्तरद्वीपकमनुष्यपुरुषाः क्षेत्रस्य स्तोकत्वात् तदपेक्षया **'देवकुरूत्तकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला**

द्विपके मनुष्य पुरुष, एवं **'देवपुरिसाणं'** देवपुरुष जो **'भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाण य'** भवनवासी असुर कुमारादि दश भवनवासी देव पुरुष, वानव्यन्तर— पिशाचादि आठ वानव्यन्तर देवपुरुष, ज्योतिष्क-चन्द्रसूर्यादिपांच ज्योतिष्क देवपुरुष वैमानिक-यावत्—सौधर्मादि बारह कल्पोपपन्न देवपुरुष, तथा उपरितनग्रैवेयकादि नौ ग्रैवेयकदेवपुरुष और विजयादि सर्वार्थसिद्ध पर्यन्त के पाच अनुत्तरविमानवासी कल्पातीत देवपुरुष इन तिर्यञ्च पुरुषादि सब प्रकार के जीवो में **'कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा'** कौन कौन जीव किन किन जीवों की अपेक्षा अल्प— थोडे– है बहुत है तुल्य–समान—है और विशेषाधिक है ? गौतम स्वामी के इस प्रश्नका भगवान् उत्तर देते है–**'गोयमा'** इत्यादि, हे गौतम ! इन तिर्यञ्च पुरुषो से लेकर सर्वार्थसिद्ध देवपुरुष पर्यन्तके जीवो में **'सव्वत्थोवा अंतरदीवगमणुस्सपुरिसा'** सबसे अल्प—थोडे अन्तरद्वीपके मनुष्य पुरुष होते है, क्योकि अन्य क्षेत्रो की अपेक्षा यह अन्तर द्वीप

भ'भूमिना અને અંતરદ્વીપના મનુષ્યરૂપ અને **"देवपुरिसाणं"** દેવ પુરુષ કે જે **"भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाण य"** ભવનવાસી અસુરકુમાર વિગેરે દસ ભવનવાસી દેવ પુરુષ. વાનવ્યંતર--પિશાચ વગેરે આઠ પ્રકારના વાનવ્યન્તર દેવ પુરુષ, જ્યોતિષ્ક ચંદ્ર, સૂર્ય વિગેરે પાંચ પ્રકારના જ્યોતિષ્ક દેવપુરુષ, વૈમાનિક—યાવત્ સૌધર્મ વિગેરે બાર કલ્પોપપન્નક દેવપુરુષ તથા ઉપરિતન ગ્રૈવેયક વિગેરે નવગ્રૈવેયક દેવપુરુષ અને વિજય, વૈજયન્ત વિગેરે સર્વાર્થ સિદ્ધ પર્યન્તના પાંચ અનુત્તર વિમાનવાસી કલ્પાતીત દેવપુરૂષ આ તિર્યંચ પુરુષ વિગરે બધા પ્રકારના જીવોમાં **"कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया-वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा"** કયા કયા જીવો કયા કયા જીવો કરતાં અલ્પ–થોડા છે ? કયા જીવો કયા જીવો કરતા વધારે છે ? અને કોણ કોની તુલ્ય—સરખા છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે ? ગૌતમસ્વામીના આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુ કહે છે કે—**"गोयमा"** ઈત્યાદિ. હે ગૌતમ ! આ તિર્યંન્ચ પુરુષોથી લઈ ને સર્વાર્થ સિદ્ધના દેવપુરુષો સુધીના જીવો માં **"सव्वत्थोवा अंतरदीवगमणुस्सपुरिसा"** સૌથી ઓછા અંતરદ્વીપના મનુષ્ય પુરૂષો

संखेज्जगुणा' अन्तरद्वीपकमनुष्यपुरुपापेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यपुरुपा सख्येयगुणा अधिका भवन्ति तथा द्वयानां परस्परं सख्येयगुणत्वेन तुल्यता च भवति क्षेत्रस्य वहुत्वेन समानत्वात्, 'हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' तदपेक्षया हरिवर्परम्यकवर्पाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुपा द्वयेऽपि तुल्याः सख्येयगुणा क्षेत्रस्याति वहुत्वात्, 'हेमवयएरण्णवयवासअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' हरिवर्परम्यकवर्पमनुष्यापेक्षया, हैमवतैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुपा सख्येयगुणा अधिकाः क्षेत्रस्य अल्पत्वेऽपि अल्पस्थितिकत्वेन प्राचुर्येण लभ्यमानत्वात । तथाऽतेपा द्वयानां क्षेत्रस्य समानत्वात परस्परं तुल्यता च ।

क्षेत्र छोटा होता है । 'देवकुरुत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' अन्तरद्वीपके मनुष्य पुरुपो की अपेक्षा देवकुरु और उत्तर कुरु इन दोनो क्षेत्रों के मनुष्य पुरुप दोनो क्षेत्रो की समानता से परस्पर समान होते हुए सख्यात गुणे अधिक होते है, क्योंकि अन्तरद्वीप की अपेक्षा ये दोनो क्षेत्र वडे हैं । 'हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' देवकुरु उत्तर कुरु के मनुष्य पुरुपोकी अपेक्षा हरिवर्प रम्यक वर्प इन दोनों अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुप परस्पर समान होते हुए संख्यातगुणे अधिक होते हैं, क्योंकि देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र की अपेक्षा ये दोनों क्षेत्र अधिक विस्तृत है, 'हेमवयहेरण्णवयवासअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' हरिवर्प रम्यकवर्प क्षेत्र के मनुष्य पुरुपों की अपेक्षा ये हैमवत हैरण्यवत वर्ष इन दोनों क्षेत्र के मनुष्य पुरुप परस्पर सख्यामे समान होते हुए संख्यात गुणे अधिक होते है, इन क्षेत्रो के छोटे होते हुए भी यहा यहा के मनुष्य पुरुप अल्पस्थिति वाले होने से

છે, કેમકે—બીજા ક્ષેત્ર કરતા આ અંતરદ્વીપ ક્ષેત્ર નાનું હોય છે "देव कुरुत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' અંતરદ્વીપના મનુષ્ય પુરુષો કરતા દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરુ આ બન્ને ક્ષેત્રોના મનુષ્ય પુરુષો બન્ને ક્ષેત્રોના સમાન પણાને લઈને પરસ્પર બન્ને સરખા હોય છે. અને સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે—અંતરદ્વીપ કરતાં આ બન્ને ક્ષેત્રો મોટા હોય છે. "हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' દેવકુરુ અને ઉત્તરકુરુના મનુષ્ય પુરુષો કરતા હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષ આ બેઉ અકર્મ ભૂમિના મનુષ્ય પુરુષ પરસ્પર સમાન હોય છે, અને સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. કેમકે—દેવકુરુ ઉત્તરકુરુ ક્ષેત્ર કરતાં આ બેઉ ક્ષેત્ર વધારે વિસ્તાર વાળા છે "हेमवय हेरण्णवयवास अकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષ ક્ષેત્રના મનુષ્ય પુરુષો કરતાં આ હૈમવત અને હૈરણ્યવત વર્ષ આ બન્ને ક્ષેત્રનામનુષ્ય પુરુષ અન્યો અન્ય સંખ્યામાં સરખા છે અને સંખ્યાતગણા વધારે છે. આ ક્ષેત્રો નાના હોવા છતાં પણ ત્યાના મનુષ્ય પુરુષ અલ્પ સ્થિતિ વાળા હોવાથી મનુષ્ય પુરુષ વધારે પ્રમાણમાં મળે છે "भर-

'**भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**' हैमवत हैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषापेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाः सख्येयगुणा -अधिका भवन्ति, अजितस्वामिकाले उत्कृष्टपदे इव स्वभावतः, एतात्र मनुष्यपुरुषाणामति प्राचुर्येण सभवात्, द्वयोः क्षेत्रयोस्तुल्यत्वाद् द्वयेऽपि परस्परं तुल्या'। '**पुव्वविदेहअवरविदेह-कम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**' भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यापेक्षया पूर्वविदे-हापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्या द्वयेऽपि तुल्या' सख्येयगुणा अधिका भवन्ति, क्षेत्रबाहुल्यात् अजि-तस्वामिकाले उत्कृष्टपदे इव स्वभावत एव मनुष्यपुरुषाणां प्रचुरतया सभवात्। '**अणुत्तरोववाइय-देवपुरिसा असंखेज्जगुणा**' पूर्वविदेहाऽपरविदेहमनुष्यपुरुषापेक्षया अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, क्षेत्रपल्योपमासख्येयभागवर्त्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्। 'उव-

---

मनुष्यपुरुष–प्रचुर बहुत मिलते है। '**भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**' हैमवत हैरण्यवत वर्ष अकर्म भूमि के मनुष्य के पुरुपो की अपेक्षा भरत ऐरवत इन दोनो क्षेत्रके मनुष्य पुरुष क्षेत्र की समानता से दोनो परस्पर समान होते हुए संख्यात गुणे अधिक होते है, क्योकि अजित स्वामी के समय में उत्कृष्टता के जैसे स्वभाव से ही यहां मनुष्य पुरुष अति प्रचुर मात्रा में होते है। '**पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्स पुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**' भरत ऐरवत इन दोनो क्षेत्रो के मनुष्य पुरुपो की अपेक्षा ये पूर्वविदेर अपरविदेह इन दोनो क्षेत्रो के मनुष्यपुरुष क्षेत्र की समानता से दोनो समान सख्यक होते हुए सख्यातगुणे अधिक होते है, क्योंकि भरत ऐरवत क्षेत्रो के जैसे यहां भी अजित स्वामी के समय की उत्कृष्टता के समान स्वभावसे ही यहां मनुष्य पुरुष प्रचुरमात्रामें होते है। '**अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा**' पूर्वविदेह अपरविदेह के मनुष्य पुरुषों की अपेक्षा अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष असख्यात गुणे अधिक होते है, क्योंकि ये क्षेत्र

हेरवयवासकम्मगभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" હૈમવત અને હૈરણ્ય વત વર્ષ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરુષો કરતાં ભરત અને ઐરવત આ બેઉ ક્ષેત્રોના મનુષ્ય પુરુષ ક્ષેત્રના સરખાપણાથી પરસ્પર બન્ને સરખા છે અને સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. કેમકે અજીતસ્વામીના સમયમાં ઉત્કૃષ્ટ પણાની માફક સ્વભાવથીજ અહિયા મનુષ્ય પુરુષ અત્યંત વધારે પ્રમાણમા હોય છે. "**पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**" ભરત અને ઐરવત આ બન્ને ક્ષેત્રોના મનુષ્ય પુરુષો કરતા આ પૂર્વ વિદેહ અપર વિદેહ આ બેઉ ક્ષેત્રોના મનુષ્ય પુરૂષ ક્ષેત્રના સરખા પણાથી સરખી સંખ્યા વાળા છે અને સંખ્યાતગણા વધારે છે. કેમકે –ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રની જેમ અહિં પણ અજીત સ્વામીના સમયના ઉત્કૃષ્ટ પણાની જેમ સ્વભાવથી જ અહિયાં મનુષ્ય પુરૂષ વધારે પ્રમાણમા હોય છે. "**अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा**" પૂર્વ વિદેહ અને અપર વિદેહના મનુષ્ય પુરુષ કરતા અનુત્તરોપપાતિક દેવ પુરુષ અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. કેમકે––તેઓ ક્ષેત્ર પલ્યો-

रिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषापेक्षया उपरितनग्रैवेयकप्रस्तटदेवपुरुषा' सख्यातगुणा अधिका भवन्ति । 'मज्झिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषेभ्यो मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाः सख्यातगुणा अधिका भवन्ति । एवम्—'हेट्ठिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषा संख्यातगुणा अधिका भवन्ति । 'अच्चुयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा' अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया अच्युतकल्पे देवपुरुषाः सख्यातगुणा अधिका भवन्ति । एवं कियत्पर्यन्त सख्यातगुणत्वम ' तत्राह—'जाव' इत्यादि, 'जाव आणयकप्पे देवपुरिसा सखेज्जगुणा' इति । यावत्पदेन अच्युतकल्पदेवपुरुषतोऽग्रे पश्चानुपूर्व्या—आनतकल्पदेवपुरुषपर्यन्त देवपुरुषा पूर्व—पूर्वापेक्षया अग्रेऽग्रेतना देवपुरुषा' संख्यातगुणा इति व्याख्येयम् , तथाहि—अच्युतकल्पदेवपुरुषापेक्षया आरण-

---

पल्योपम के असख्यातवें भागवर्त्ती आकाश प्रदेशों की राशि प्रमाण वाले होते हैं। 'उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' अनुत्तरोपपातिक देवपुरुषो की अपेक्षा उपरित ग्रैवेयक प्रस्तट के देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते हे । 'मज्झिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' उपरिकनग्रैवेयक देवपुरुषो की अपेक्षा मध्यमग्रैवेयक देवपुरुप सख्यात गुणे अधिक होते है । 'हेट्ठिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा, अच्चुयकप्पदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' जाव आणयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा' मध्यम ग्रैवेयक देवपुरुषोकी अपेक्षा अधस्तन ग्रैवेयक देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक होते है, अधस्तनग्रैवेयक देवपुरुषों की अपेक्षा अच्युत कल्पके देवपुरुष संख्यात गुणे अधिक होते है । यावत् आनतकल्प पर्यन्त के देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते हैं ।ऐसे सख्यात गुणात्व कहा तक कहना चाहिये ' इस पर कहते हैं—'जाव' इत्यादि, 'जाव आणयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा' यहा से अर्थात् अच्युत कल्प देव पुरुषो के आगे पश्चानुपूर्वीसे आनतकल्प देवपुरुषपर्यन्त पूर्वपूर्व की अपेक्षा आगे आगे के देव पुरुष

પમના અસખ્યાતમા ભાગવર્તી આકાશ પ્રદેશોની રાશિ પ્રમાણ વાળા હોય છે. "उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा" અનુત્તરોપપાતિક દેવપુરૂષો કરતા ઉપરિતન ગ્રૈવેયક પ્રસ્તટના દેવ પુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે, "मज्जिमगेवेज्जपुरिसा संखेज्जगुणा" ઉપરિતન ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષોકરતા મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવ પુરુષ સખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. એજ પ્રમાણે "हेट्ठिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा" 'अच्चुयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा' મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષો કરતો અધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષ સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે અધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો કરતાં અચ્યુત કલ્પના દેવ પુરૂષો સખ્યાત ગણા વધારે હોય છે આવુ સંખ્યાત ગુણુ પણુ કયા સુધી કહેવુ જોઈએ ? આ સંબધમા સૂત્રકાર કહે છે કે—'आणयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा" અચ્યુત કલ્પના દેવ પુરૂષોની આગળ પશ્ચાનુ પૂર્વિથી આનત કલ્પના દેવપુરૂષ પર્યન્ત પહેલા પહેલાની અપેક્ષાથી પછી પછીના દેવ પુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે, આ પ્રમાણેની વ્યાખ્યા કહેવી જોઈએ. જેમકે—અચ્યુત કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં

कल्पदेवपुरुषाः सख्यातगुणाः, आरणकल्पदेवपुरुषापेक्षया प्राणतकल्पदेवपुरुषाः सख्यातगुणाः, प्राणतकल्पदेवपुरुषापेक्षया आनतकल्पदेवपुरुषाः सख्यातगुणा इति। इतोऽग्रे पश्चानुपूर्व्या अष्टमसहस्रारकल्पदारभ्य द्वितीयेशानकल्पदेवपुरुषपर्यन्तदेवपुरुषा यथोत्तरम् असंख्यातगुणा व्याख्येयाः, तथाचाह सूत्रकारः—'**सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा**'इति। आनतकल्पदेवपुरुषेभ्यः सहस्रारे कल्पे देवपुरुषा असख्यातगुणाः, एभ्यो महाशुक्रे कल्पे देवपुरुषा असंख्यातगुणाः, एभ्यः '**जाव माहिंदे**' इति यावत् माहेन्द्रः, यावत्पदेन लान्तक–ब्रह्मलोक–कल्पयोर्ग्रहणं भवति, तथाहि महाशुक्रकल्पदेवपुरुषेभ्यो लान्तककल्पदेवपुरुषा असंख्यातगुणा' एभ्यो ब्रह्मलोककल्पदेवपुरुषा असं-

संख्यात गुणे अधिक होते है, ऐसी व्याख्या करलेनी चाहिए। जैसे—अच्युत कल्प की अपेक्षा आरणकल्प के देव पुरुष सख्यात गुणे अधिक होते है। आरणकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा प्राणतकल्प के देव पुरुष संख्यात गुणे अधिक होते है। प्राणतकल्प के देव पुरुषो की अपेक्षा आनतकल्य के देवपुरुष सख्यात गुणे अधिक होते है। इसके आगे पश्चानुपूर्वी से ही आठवे सहस्रारकल्प से लेकर दूसरे ईशान कल्पके देवपुरुष पर्यन्त सब पुरुष आगे आगे के असंख्यातगुणे अधिक होते है, ऐसा व्याख्यान कर लेना चाहिये यही सूत्रकार कहते है—'**सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा**' आनत कल्प के देव पुरुषो से सहस्रार कल्प के देव पुरुष असंख्यात गुणे अधिक होते है। सहस्रारकल्पके देव पुरुषों से महाशुक्र कल्प के देव पुरुष असंख्यात गुणे अधिक होते है। '**जाव माहिं दे०**' इति—यहाँ से आगे माहेन्द्र कल्प के देव पुरुषो पर्यन्त के देव पुरुष एक एक की अपेक्षा असंख्यात गुणे अधिक होते हैं जैसे—महाशुक्रकल्प के देव पुरुषों से लान्तककल्प के देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते है लान्तककल्प के देवपुरुषो से ब्रह्मलोक कल्प के देवपुरुष अस-

આરણ કલ્પના દેવ પુરુષો સખ્યાત ગણા વધારે હોય છે આરણ કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતા પ્રાણત કલ્પના દેવ પુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે પ્રાણત કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં આનત કલ્પના દેવ પુરુષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે તેનાથી આગળ પશ્ચાનુપૂર્વિથી જ આઠમા સહસ્રાર કલ્પથી લઈ ને બીજા ઈશાન કલ્પના દેવપુરૂષ પર્યન્ત બધાજ દેવપુરૂષો પછી પછીના સખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. તેમ સમજવું. સૂત્રકાર એજ કહે છે કે—'**सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा**" આનત કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં સહસ્રાર કલ્પના દેવ પુરુષ અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે "जाव माहिंदे" इति॥ આનાથી આગળ માહેન્દ્ર કલ્પના દેવ પુરૂષો સુધીના દેવ પુરૂષો એક એકની અપેક્ષાથી અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે, જેમકે—મહાશુક્ર કલ્પના દેવ પુરુષો કરતાં લાન્તક

ख्यातगुणा इति । ब्रह्मलोककल्पदेवपुरुपेभ्यो माहेन्द्रकल्पदेवपुरुपा असंख्यातगुणाः, **'सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** माहेन्द्रकल्पदेवपुरुपेभ्यः सनत्कुमारकल्पदेवपुरुषा असंख्यातगुणाः, **'ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** एभ्यः सनत्कुमारकल्पदेवपुरुपेभ्य ईशानकल्पदेवपुरुपा असंख्यातगुणा इति । अयं भावः सहस्रारकल्पादारभ्य ईशानकल्पपर्यन्तं देवपुरुपाः प्रत्येकं यथोत्तरं क्रमशः असंख्यातगुणाः सन्तीति । **'सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा'** ईशानकल्पदेवपुरुपेभ्यः सौधर्मकल्पे देवपुरुपाः संख्यातगुणा इति । अत्रेदमवधेयम्—

पश्चानुपूर्व्या अच्युतकल्पदेवपुरुपेभ्य आरभ्य आनतकल्पपर्यन्त देवपुरुपाः अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुपेभ्यो यथोत्तरं संख्यातगुणाः सन्ति । तथा एवमेव पश्चानुपूर्व्या सहस्रारकल्पदेवपुरुषत आरभ्य ईशानकल्पदेवपुरुपपर्यन्तं देवपुरुपा आनतकल्पदेवपुरुपेभ्यो यथोत्तरम् असंख्यातगुणा

ख्यातगुणे अधिक होते हैं । ब्रह्मलोकके देव पुरुप से माहेन्द्र कल्प के देव पुरप असंख्यात गुणे अधिक होते हैं । तथा—**'सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** माहेन्द्र कल्प के देव पुरुपो से सनत्कुमार कल्प के देव पुरुप असंख्यात गुणे अधिक होते हैं । **'ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** सनत्कुमार कल्प के देव पुरुपों से ईशान कल्प के देवपुरुप असंख्यात गुणे अधिक होते है । तात्पर्य यह है कि सहस्रार कल्प से लेकर ईशान कल्प पर्यन्त के देवपुरुप एक एक से आगे आगे के देव पुरुप क्रमशः असंख्यात गुणे अधिक होते है । **'सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा'** ईशान कल्प के देव पुरुपो से सौधर्म कल्प के देवपुरुप संख्यातगुणे अधिक होते है ।

यहाँ सारांश यह है—पश्चानुपूर्वी से—अच्युतकल्पके देवपुरुपो से लेकर आनतकल्पके देवपुरुपपर्यन्त अधस्तन ग्रैवेयकदेवपुरुपो से यथोत्तर—एकसे आगे दूसरे देवपुरुप संख्यतगुणे अधिक होते है, और इसी प्रकार पश्चानुपूर्वी से आनतकल्पके देवपुरुपोकी अपेक्षा सहस्रारकल्पसे लेकर ईशान-

કલ્પના દેવ પુરુષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે લાન્તક કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં બ્રહ્મલોક કલ્પના દેવ પુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે બ્રહ્મલોકના દેવ પુરૂષો કરતાં માહેન્દ્ર કલ્પના દેવ પુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. તથા **"सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** માહેન્દ્ર કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં સનત્કુમાર કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. **"ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** સનત્કુમાર કલ્પના દેવપુરૂષો કરતા ઈશાન કલ્પના દેવ પુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે આ કથનનુ તાત્પર્ય એ છે કે—સહસ્રાર કલ્પથી લઈને ઈશાન કલ્પ સુધીના દેવ પુરૂષો એક એકનાથી આગળ આગળના દેવ પુરૂષો ક્રમથી અસખ્યાત ગણા વધારે હોય છે **"सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा"** —ઈશાન કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં સૌધર્મ કલ્પના દેવ પુરૂષો સખ્યાત ગણા વધારે હોય છે.

આનો સારાંશ એ છે કે—પશ્ચાનુપૂર્વિથી—અચ્યુત કલ્પના દેવ પુરૂષોથી લઈને આનત કલ્પના દેવ પુરૂષો સુધી અધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવ પુરૂષો ક્રમથી એટલે કે એકનાથી બીજા દેવ પુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. અને એજ પ્રમાણે પશ્ચાનુપૂર્વીથી આનત કલ્પના દેવ

इति । तथा सौधर्मकल्पदेवपुरुषा ईशानकल्पदेवपुरुषेभ्यः संख्यातगुणा इति च ज्ञातव्यम् । ततः **'भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** सौधर्मकल्पदेवपुरुषेभ्यो भवनवासिदेवपुरुषा असंख्यातगुणाः । भावनाप्यित्थम् उपर्युपरिस्थितदेवपुरुषेभ्योऽधोऽधःस्था देवपुरुषा अधिका भवन्तीति । **'खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** तेभ्यो भवनवासिदेवपुरुषेभ्यः खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषा असंख्यातगुणाः, **'थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा'** खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषेभ्यः स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्यातगुणाः, **'जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषेभ्यो जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषा असंख्यातगुणा, **'वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा'** जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषेभ्यो वानव्यन्तरदेवपुरुषाः संख्यातगुणाः,

---

कल्पके देवपुरुषपर्यन्त यथोत्तर अर्थात् आगे आगे के कल्पवासी देवपुरुष असख्यातगुणे अधिक होते जाते हैं । और सौधर्मकल्पके देवपुरुष ईशानकल्पके देवपुरुषोकी अपेक्षा सख्यातगुणे अधिक होते है । यह अनुत्तरोपपातिकदेवोसेलेकरपश्चानुपूर्वीसे सौधर्मकल्पतकके देवो का अल्पबहुत्वा कहा गय है ।

'भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा' सौधर्मकल्पके देवपुरुषो की अपेक्षा भवनवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक होते हैं । भावना पूर्ववत् करलेनीचाहिये अर्थात् ऊपरऊपरके देवपुरुषोकी अपेक्षा नीचे नीचे के देवपुरुष क्रमशः अधिक अधिक ही होते है, **'खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** भवनवासी देवपुरुषोकी अपेक्षा खेचरतिर्यग्योनिक पुरुष असख्यातगुणे अधिक होते है । **'थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा'** खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषो की अपेक्षा स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है । **'जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषो की अपेक्षा जलचरतिर्यग्योनिकपुरुष असख्यातगुणे अधिक होते है । **'वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा'** जलचरतिर्यग्योनिक पुरुषो की

પુરૂષો કરતાં સહસ્રાર કલ્પથી લઈને ઈશાન કલ્પના દેવ પુરૂષો સુધી યથોત્તર અર્થાત્ આગળ આગળના કલ્પ વાસી દેવ પુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે અને સૌધર્મ કલ્પના દેવ પુરૂષો ઈશાન કલ્પના દેવ પુરુષો કરતાં સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે, આ અનુત્તરોપપાતિક દેવોથી લઈને પશ્ચાનુપૂર્વીથી સૌધર્મ કલ્પ સુધીના દેવોનું અલ્પબહુપણું કહ્યું છે

"भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा" સૌધર્મ કલ્પના દેવપુરુષો કરતા ભવનવાસી દેવ પુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે તેની ભાવના ઉપર કહ્યા મુજબ સમજી લેવી અર્થાત્ ઉપર ઉપરના દેવ પુરૂષો કરતાં નીચે નીચેના દેવ પુરૂષો ક્રમથી વધારે વધારેજ હોય છે, **"खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा"** ભવનવાસી દેવ પુરૂષો કરતાં ખેચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. **'थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा'** ખેચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોકરતા સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે **"जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा"** સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો કરતા જલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. **"वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा"** જલચર

'जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' वानव्यन्तरदेवपुरुषेभ्यो ज्योतिष्कदेवपुरुषाः चन्द्रसूर्यग्रह-नक्षत्रताराखपाः सख्यातगुणा अधिका भवन्तीति । अत्रेदं पञ्चममल्पबहुत्वस्य तत्त्वम् —यत् तिर्यङ्मनुष्यदेवपुरुषाणां सर्वेषां मध्ये सर्वेभ्योऽल्पा अन्तरद्वीपगतमनुष्यपुरुषाः सन्ति, तथा सर्वेभ्योऽधिका ज्योतिष्कदेवपुरुषा इति ॥सू० ११॥

॥ इति तिर्यङ्मनुष्यदेवपुरुषाणां सर्वेषां संमिलितमिदं पञ्चममत्पबहुत्वम् ॥

॥ अल्पबहुत्वं समाप्तम् ॥

मूलम्—'पुरिसवेयस्स णं भंते! कम्मस्स केवइयं कालं बंधट्ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अट्ठ संवच्छराणि, उक्कोसेणं दससागरोवम कोडाकोडीओ दसवाससयाइं अबाहा अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मणिसेओ। पुरिसवेदे णं भंते! किं पगारे पण्णत्ते गोयमा! वणदवग्गि जाल समाणे पण्णत्ते से त्तं पुरिसा'॥सू० १२॥

छाया—पुरुषवेदस्य खलु भदन्त! कर्मणः कियन्तं कालं बन्धस्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! जघन्येनाष्टौ संवत्सराणि उत्कर्षेण, दशसागरोपमकोटीकोट्यः, दशवर्षशतानि अबाधाः, अबाधोना कर्मस्थितिः कर्मनिषेकः॥ पुरुषवेदः खलु भदन्त! किं प्रकारकः प्रज्ञप्तः? गौतम! वनदवाग्निज्वालासमानः प्रज्ञप्तः, ते एते पुरुषाः ॥सू० १२॥

अपेक्षा वानव्यन्तर देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है 'जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा' वानव्यतरदेचपुरुषो की अपेक्षा ज्योतिष्कदेव पुरुष सख्यातगुणे अधिक होते है ।

यहां इस पञ्चम अल्पबहुत्व का सारांश यह है की–तिर्यञ्च मनुष्य और देवपुरुष, इन सवों में सबसे थोडे अन्तरद्वीप के मनुष्य पुरुष होते हैं और सबसे अधिक ज्योतिष्क देवपुरुष होते है ।

यह तिर्यञ्च मनुष्य देवपुरुषो का सबका समिलित पञ्चम अल्पबहुत्व समाप्त हुवा ॥सू०११॥

[अल्पबहुत्व समाप्त]

तिर्यग्योनिक पुरुषोकरतां वानव्यंतर देवपुरुष संख्यात गणा वधारे होय छे. "जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा" वानव्यंतर देव पुरुषो करतां ज्योतिष्क देव पुरुषो संख्यात गणा वधारे होय छे

अहिया आ पांचमा अल्प बहुपणानो सारांश ओ छे के—तिर्यंच मनुष्य अने देव पुरुष आ बधामा सहुथी ओछा अंतरद्वीपना मनुष्य पुरुषो होय छे अने सौथी वधारे ज्योतिष्क देव पुरुषो होय छे.

आ तिर्यंच, मनुष्य अने देव पुरुषोओ सघळानुं
संमिलित पांचमुं अल्प बहुपणुं
॥ समाप्त ॥

टीका—'पुरिसवेयस्स णं भंते' पुरुषवेदस्य खलु भदन्त ! 'कम्मस्स' कर्मणः 'केवइयं कालं' कियन्तं कलम् 'बंधठिई पन्नत्ता' बन्धस्थितिः प्रज्ञप्ता-कथितेति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि,'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं' जघन्येन 'अट्ठ संवच्छराइं' अष्टौ सवत्सराणि एतन्न्यूनस्य तन्निबन्धनविशिष्टाध्यवसायस्याभावतो जघन्यत्वेनासभवात् 'उक्कोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ' उत्कर्षेण दश सागरोपमकोटिकोटय., इह स्थितिः द्विधा भवति, कर्मरूपतावस्थानलक्षणा अनुभवयोग्या च तत्रेयं कर्मरूपताऽवस्थानलक्षणा द्रष्टव्या, अनुभवयोग्या तु कर्मस्थितिरबाधाहीना भवति, अतएवोक्तम्—'दसवाससयाइं अबाहा' दशवर्षशतानि

"पुरिसवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधट्ठिई पण्णत्ता, इत्यादि

टीकार्थ – "पुरिसवेदस्स णं भंते ! 'कम्मस' पुरुष वेदकर्मकी "केवइयं कालं" कितने कालकी "बंधट्ठिई पन्नत्ता" बन्धस्थिति कही गई है ? इस गौतम के प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठ संवच्छराइं" हे गौतम ! पुरुषवेद कर्म की बन्धस्थिति जघन्य से आठवर्ष की है–क्यो कि इससे कम पुरुषवेद के निबन्धन विशिष्ट अध्यवसाय के अभाव से इसके कम जघन्य स्थिति का सभव नहीं होता है। और "उक्कोसेणं दस सागरोवम कोडाकोडीओ" उत्कृष्ट से १० दस सागरोपम कोटा कोटि की कही गई है. यहां स्थिति दो प्रकार की होती है—(१) कर्मरूप से अवस्थान रहना और (२)—अनुभव योग्य होना. यह स्थिति कर्मरूप से अवस्थान रहने रूप कही गई है- तथा अनुभव होने योग्य रूप:जो कर्म स्थिति होती है वह अबाधा काल से हीन होती है. अर्थात् जोभी कर्म उदय में आता वह अपनी अबाधा काल के बाद ही आता है. अबाधा काल का हिसाब इस प्रकार से कहा गया है–"दसवाससयाइं' 'अबाहा' जिस कर्म की उत्कृष्टस्थिति जितने सागरोपम कोटाकोटि की होती है

"पुरिसवेदस्स ण भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधट्ठिई पण्णत्ता" ઇત્યાદિ

"पुरिसवेदस्सं णं भंते ! कम्मस्स" હે ભગવન્ પુરૂષવેદ કર્મની "केवइयं कालं" કેટલા કાળની "बंधट्ठिई पन्नत्ता" બંધ સ્થિતિ કહી છે ગૌતમ સ્વામીના આ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराइ" હે ગૌતમ ! પુરૂષ વેદકર્મની બંધ સ્થિતિ જઘન્યથી આઠ વર્ષની છે કેમકે –તેનાથી ઓછા પુરૂષ વેદના બંધ વાળા અધ્યવસાયના અભાવથી તેને ઓછી જઘન્ય સ્થિતિનો સંભવ હોતો નથી. અને "उक्कोसेणं दससागरोवमकोडाकोडीओ" ઉત્કૃષ્ટથી ૧૦ દસ સાગરોપમ કોટિ કોટિની કહી છે અહિયાં સ્થિતિ બે પ્રકારની હોય છે (૧) કર્મરૂપથી અવસ્થિત રહેવું અને (૨) અનુભવ યોગ્ય થવું આ સ્થિતિ કર્મ રૂપથી અવસ્થાન રહેવા રૂપ કહેલ છે તથા અનુભવ હોવાને યોગ્ય રૂપ વાળી જે કર્મસ્થિતિ હોય છે. તે અબાધા કાળથી હીન હોય છે અર્થાત્ જે કોઈ કર્મ ઉદયમા આવે છે, તે પોતાના અબાધા કાળથી હીન આવે છે. અબાધા કાળનો હિસાબ આ પ્રમાણે કહેલ છે.—"दसवाससयाइ अबाहा" જે કર્મની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ જેટલા સાગરોપમ કોટી

अवाधा, साच येषा कर्मणां यावत्यः सागरोपमकोटिकोटयः तेषां तावन्ति वर्षशतानि अवाधा, इह च पुरुषवेदस्याधिकृतस्य या उत्कृष्टा स्थितिः दशसागरोपमकोटिकोटयः, ततो दशवर्ष शतानि अवाधाः।

अयं भावः—पुरुषवेदकर्म उत्कृष्टस्थितिकं बद्धं सत् स्वरूपेण दशवर्षशतानि यावन्न जीवस्य स्वविपाकोदय मादर्शयति, तावत्कालमध्ये दलिकनिषेकस्याभावात्. तत उक्तम्—'**अवाहूणिया कम्मठिई**' अवाधोना कर्मस्थितिः अवाधाकालहीना कर्मस्थितिरनुभवयोग्येति । '**कम्मणिसेओ**' कर्मनिषेकः यतः अवाधोनः—अवाधाकालपरिहीनः कर्मनिषेकः कर्मदलिकरचनेति ॥ '**पुरिसवेदे णं भंते**' पुरुषवेद' खलु भदन्त ! '**किं पगारे पन्नत्ते**' किं प्रकारक. कीदृश—स्वरूपः' प्रज्ञप्तः कथित इति प्रश्नः ? भगवानाह— **गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**वणदवग्गिजालसमाणे पन्नत्ते**' वनदवाग्निज्वालासमानः प्रज्ञप्तः, वनदवाग्निज्वालासमानः यथाऽयं प्रारम्भे तीव्रदाहो भवति तथा पुरुषवेदोऽपि प्रारम्भे तीव्र मदनदाहो भवतीति भावः । '**से त्तं पुरिसा**' ते एते भेदप्रभेदाभ्यां पुरुषा निरूपिता इति पुरुषप्रकरणम् ॥सू० १२॥

उतने ही सौ वर्ष की वहां अवाधा पडती है. इस हिसाव से यहाँ पुरुषवेद कर्म में अवाधाकाल १००० दस सौ वर्ष का होता है अर्थात् १ हजार वर्ष का होता है उत्कृष्ट स्थिति के रूप में जव यह पुरुष वेद कर्म बद्ध होता है तो यह दस सौ वर्ष तक जीव को अपना विपाकोदय नहीं दिखाता है क्योकि इतने काल में दलिक निषेक का अभाव होता है । जव तक इसका अवाधाकाल समाप्त नहीं हो जाता है तव तक कर्म विपाक उदय में नही आता है । अवाधाकाल के वाद कर्म का उदय मे आना इसी का नाम कर्मनिषेक—कर्म दलिकों की रचना है । इसीलिए कहा है "**अवाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मणिसेओ**" अवाधाकाल से न्यून कर्म स्थिति कर्म निषेक है ।

"**पुरिसवेदे णं भंते ! किं पगारे पन्नात्ते**" हे भदन्त ! पुरुष वेद किस प्रकार के स्वरूप वाला कहा गया है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं "**गोयमा ! वणदवग्गिजालसमाणे पन्नत्ते**" हे गौतम ! जिस प्रकार वन की दवाग्नि की ज्वाला का स्वरूप होता है यह प्रारम्भ में तीव्रदाह

કોટીની હોય છે, એટલાજ સો વર્ષની ત્યાં અબાધા પડે છે. આ હિસાબથી અહિયા પુરૂષવેદ કર્મમાં અબાધા કાળ ૧૦૦૦ દસ સો વર્ષનો હોય છે. અર્થાત્ ૧ એક હજાર વર્ષનો હોય છે. ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિના રૂપમા જ્યારે આ પુરૂષ વેદ કર્મ બદ્ધ થાય છે તો આ દસસો વર્ષ સુધી જીવને પોતાનો વિપાકોદય દેખાડતો નથી કેમકે એટલા કાળમાં દલિક નિષેકનો અભાવ હોય છે. જ્યાં સુધી આનો અબાધાકાળ - સમાપ્ત થતો નથી ત્યા સુધી કર્મ વિપાકના ઉદયમાં આવવું. એનુંજ નામ કર્મ નિષેક અર્થાત્ કર્મ દલિકોની રચના છે. તેથીજ કહ્યુ છે કે—"**अवाहूणिया कम्मठिई, कम्मणिसेओ**" અબાધા કાળથી ન્યૂન કર્મસ્થિતિ કર્મ નિષેક છે.

"**पुरिसवेदे णं भंते ! किं पगारे पण्णत्ते**" હે ભગવન્ ! પુરૂષવેદ કેવા પ્રકારના સ્વરૂપ વાળો કહેલ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ! ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"**गोयमा ! वणदवग्गिजालसमाणे पन्नत्ते**" હે ગૌતમ ! જે પ્રમાણે વનના દવાગ્નિની જ્વાલાનું સ્વરૂપ હોય છે,

मूलम्---'से किं तं णपुंसगा? णपुंसगा तिविहा पन्नत्ता तं जहा-णेरइयणपुंसगा तिरिक्खजोणियणपुंसगा मणुस्सजोणियणपुंसगा। से किं तं नेरइयणपुंसगा? नेरइयणपुंसगा सत्तविहा पन्नत्ता तं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयणपुंसगा सक्करप्पभापुढविनेरइयणपुंसगा जाव अहे सत्तमपुढविनेरइयणपुंसगा से त्तं नेरइयणपुंसगा। से किं तं तिरिक्ख-जोणियणपुंसगा? तिरिक्खजोणियणपुंसगा पंचविहा पन्नत्ता तं जहा एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा, तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा पंचेंदियतिरिक्ख जोणियणपुंसगा। से किं तं एगिंदियतिरिक्खजोणि य णपुंसगा? एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा आउकाइयएगिं-दियतिरिक्खजोणियणपुंसगा, तेउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुं-सगा वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा, वणस्सइकाइय-एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा, से तं एगिंदियतिरिक्खजोणिय-णपुंसगा। से किं तं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा? बेइंदियतिरि-क्खजोणिय णपुंसगा अणेगविहा पन्नत्ता 'से त्तं बेइंदियतिरिक्ख जोणिय-णपुंसगा। एवं तेइंदिया वि चउरिंदिया वि। से किं तं पंचिंदियतिरिक्ख-

---

वाला होता है उसी प्रकार से पुरुष वेद का प्रारम्भ तीव्ररूप से होता है फिर शीघ्र शान्त हो जाता है 'सेत्तं पुरिसा' इस प्रकार से यह भेद प्रभेदो को लेकर पुरुषो का निरूपण किया गया है।

पुरुष प्रकरण समाप्त । सूत्र ॥१२॥

ते प्रारंभमा तीव्र दाह वाळो होय छे, एज प्रमाणे पुरुष वेद पण प्रारंभमां तीव्र होय छे अने पछी जल्दी शान्त थई जाय छे "से त्तं पुरिसा" आ प्रमाणे आ भेद प्रभेदोने लईने पुरुषोनुं निरूपण करवामां आव्युं छे. पुरुष प्रकरण समाप्त ॥सू० १२॥

जोणियणपुंसगा ? पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा पन्नत्ता तं जहा जलयरा थलयरा खहयरा। से किं तं जलयरा ! सोचेव पुव्वुत्त-भेदो आसालियवज्जिओ भाणियव्वो। से तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-णपुंसगा। से किं तं मणुस्सणपुंमगा ! मणुस्सणपुंसगा तिविहा पन्नत्ता, तं जहा कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा, भेदो जाव भाणि यव्वो, से त्तं मणुस्सणपुंसगा, ॥सू० १३॥

छाया अथ के ते नपुसकाः ? नपुंसका स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा नैरयिकनपुं-सकाः, तिर्यग्योनिकनपुंसकाः, मनुष्ययोनिकनपुंसकाः ।

अथ के ते नैरयिकनपुंसकाः ? नैरयिकनपुंसकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकाः, शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकाः यावदधः सप्तमीपृथिवीनैरयिकनपुंसकाः। ते एते नैरयिकनपुंसकाः। अथ के ते तिर्यग्योनिक-नपुंसकाः ? तिर्यग्योनिकनपुंसकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक-नपुंसकाः द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः, चतुरिन्द्रिय-तिर्यग्योनिकनपुंसकाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः। अथ के ते एकेन्द्रियतीर्यग्-योनिकनपुंसकाः ? एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—पृथिवी-कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः तेजस्कायि-कैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः वनस्पति-कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः। ते एते एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः॥

अथ के ते द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः ? द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः ते एते द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका। एवं त्रीन्द्रिया अपि चतुरिन्द्रिया अपि। अथ के ते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः ? पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—जलचराः स्थलचराः खेचराः। अथ के ते जलचराः। स एव पूर्वोक्तभेद-आसालिका वर्जितो भणितव्यः, ते एते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः। अथ के ते मनुष्यनपुसकाः ? मनुष्यनपुंसका स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—कर्मभूमिका अकर्मभूमिका अन्तरद्वीपका भेदो यावद् भणितव्यः ते एते मनुष्य नपुंसकाः ॥सू० १३॥

टीका—स्त्रीपुरुषभेदान् निरूप्य नपुंसकभेदान् निरूपयति—'से किं तं णपुंसगा' इत्यादि 'से किं तं णपुंसगा' हे भदन्त ? अथ के ते नपुंसकाः, नपुंसकजीवानां कियन्तो भेदा भवन्तीति

प्रश्नः, भगवानाह—'णपुंसगा तिविहा पन्नत्ता' नपुंसका स्त्रिविधाः–त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ता' कथिता इति, त्रैविध्यमेव दर्शयति—'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—'नेरइयनपुंसगा' नैरयिक-नपुंसका. 'तिरिक्खजोणियणपुंसगा' तिर्यग्योनिकनपुंसकाः, 'मणुस्सजोणियणपुंसगा' मनुष्य-योनिकनपुंसकाः, तथा च नारकतिर्यग्मनुष्यभेदेन नपुंसका त्रयो भवन्तीति भावः। तेषु त्रिविधनपुसकेषु नारकनपुंसकभेदान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह—'से किं तं नेरइयणपुंसगा' अथ के ते नैरयिकनपुंसका इति प्रश्नः, उत्तरयति 'णेरइयणपुंसगा सत्तविहा पन्नत्ता' नैरयिकनपुं-सका सप्तविधाः सप्तप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिता इति। सप्तविधभेदमेव दर्शयति—'तं जहा इत्यादि, 'तं जहा'–तद्यथा 'रयणप्पभापुढविनेरइयणपुंसगा' रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुं-सकाः, 'सक्करप्पभापुढविनेरइयणपुंसगा' शर्कराप्रभा पृथिवीनैरयिकनपुंसकाः, 'जाव अहे सत्तमपुढविनेरइयणपुंसगा' यावदधःसप्तमीपृथिवीनैरयिकनपुंसकाः, यावत्पदेन—वालुका-

---

पुरुषाधिकार का निरूपण करके अब सूत्रकार नपुसकाधिकार का कथन करते है—

'से किं तं णपुंसगा' इत्यादि ।

टीकार्थ—गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है–"से किं तं णपुंसगा" हे भदन्त नपुंसक कितने प्रकार के होते है? उत्तर में प्रभु कहते हैं—"णपुंसगा तिविहा पन्नत्ता" हे गौतम! नपुंसक तीन प्रकार के होते है—"तं जहा" जो इस प्रकार से है—"नेरयइयनपुंसगा तिरिक्खजोणियणपुंसगा, मणुस्सजोणियणपुंसगा' नैरयिकनपुंसक, तिर्यग्योनिक नपुंसक, और मनुष्य योनिक नपुंसक "से किं तं णेरइयणपुंसगा" हे भदन्त! नैरयिक—नपुंसक कितने प्रकार के होते है? "नेरइयणपुंसगा सत्तविहा पन्नत्ता" गौतम! नैरयिक नपुंसक सात प्रकार के होते है "तंजहा" जैसे—'रयणप्पभापुढविनेरइयनपुंसगा सक्करप्पभा-पुढवीनेरइयनपुंसगा जाव अहे सत्तमपुढविनेरइयनपुंसगा" रत्न प्रभा पृथिवी के नैर-यिक नपुंसक शर्कराप्रभा पृथिवी के नैरयिक नपुंसक यावत् अधःसप्तम पृथिवीं के नैरयिक

પુરૂષાધિકારનુ નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર નપુંસકાધિકારનુ કથન કરે છે—"से किं त णपुंसगा" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—"से किं तं णपुसगा" હે ભગવન્ નપુંસકો કેટલા પ્રકારના હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"णपुंसगा तिविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ નપુંસકો ત્રણ પ્રકારના હોય છે "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે. "नेरइयनपुंसगा, तिरिक्खजोणियणपुंसगा, मणुस्सजोणियणपुंसगा" નૈરયિક નપુંસક, તિર્યગ્યોનિક નપુંસક અને મનુષ્ય યોનિક નપુંસક 'से किं तं णेरइयणपुं-सगा" હે ભગવન્ નૈરયિક નપુંસકો કેટલા પ્રકારના હોય છે? "णेइरयणपुंसगा सत्तविहा पण्णत्ता" હે ગૌતમ! નૈરયિક નપુંસકો સાત પ્રકારના હોય છે. "तं जहा" તે સાત પ્રકારો આ પ્રમાણે છે. 'रयणप्पभापुढवीनेरइयनपुंसगा सक्करप्पभापुढवीनेरइयणपुंसगा जाव अहेसत्तमपुढवीनेरइयणपुंसगा" રત્ન પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસક, શર્કરા પ્રભા

प्रभापङ्कप्रभाधूमप्रभातमानारकपृथिवीनां सग्रहो भवति तथा च नारकपृथिवीनां सप्तविधत्वात् तदाश्रित्य नारकनपुंसका अपि सप्तप्रकारका भवन्तीति । 'से त्तं नेरइयणपुंसगा' ते एते— उपर्युक्ता नारकनपुंसका निरूपिता इति ॥

तिर्यग्योनिकनपुंसकान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह—'से किं तं तिरिक्खजोणियणपुंसगा' अथ के ते तिर्यग्योनिकनपुसका इति प्रश्नः, उत्तरयति 'तिरिक्खजोणियणपुंसगा पंचविहा पन्नत्ता' तिर्यग्योनिकनपुसकाः पञ्चविधा. पंचप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिता इति । पंचविधत्वं दर्शयति 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका' 'बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः, 'तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका., 'चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका', 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः, तथाचैकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपचेन्द्रियभेदात्

नपुंसक यहाँ यावत्पद से बालुका प्रभा, पङ्कप्रभा धूमप्रभा और तमा प्रभा इन पृथिवीयों के नैयिक नपुंसक गृहीत हुए है । "से त्तं नेरइयनपुंसगा" यह नारक नपुंसकों का निरूपण है । तिर्यग्योनिक नपुंसकों का निरूपण इस प्रकार से है—"से किं तं तिरिक्खजोणियनपुंसगा" गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है । हे भदन्त ! तिर्यग्योनिकनपुंसक कितने प्रकार के होते है ? उत्तर में प्रभु कहते है—हे गौतम "तिरिक्खजोणियणपुंसगा" तिर्यग्योनिक नपुंसक 'पंचविहा, पन्नत्ता' पांच प्रकार के होते है "तं जहा –'एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा बेइदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा' एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुसक, दो इन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुसक, "तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' तेइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक "चउरिंदितिरिक्खजोणियणपुंसगा" चौइन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसक और "पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा" पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसक, अब गौतमस्वामी

પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસક, યાવત્ અધઃ સપ્તમ પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસક અહિયાં યાવત્પદથી વાલુકા પ્રભા, પંક પ્રભા, ધૂમપ્રભા, અને તમ પ્રભા આ પૃથ્વીયોના નૈરયિક નપુસકો ગ્રહણ કરાયા છે "से त्तं नेरइयनपुंसगा" આ પ્રમાણે નારકીય નપુસકોનુ નિરૂપણ છે

હવે તિર્યગ્યોનિક નપુસકોનુ નિરૂપણ કરવામા આવે છે. "से किं तं तिरिक्खजोणियणपुंसगा" ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે--હે ભગવન્ તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'गोयमा ! હે ગૌતમ ! "तिरिक्खजोणियणपुंसगा" તિર્યગ્યોનિક નપુસક "पचविहा पण्णत्ता"-પાંચ પ્રકારના હોય છે "तं जहा" તે પાચ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે.- "एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा, बेइंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा" એક ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક, બે-ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક "ते इंदितिरिक्खजोणियणपुंसगा" ત્રણ ઇંદ્રિયો વાળાં તિર્યગ્યોનિક નપુસક "चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा" ચાર ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક અને "पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा" પાંચ ઇન્દ્રિય વાળા તિર્ય-

पंचप्रकारका स्तिर्यग्योनिकनपुंसका भवन्तीति भावः ॥ तत्र **'से किं तं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** अथ के ते एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका इति प्रश्नः, उत्तरयति— **'एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा 'पंचविहा पन्नत्ता'** एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः पंचविधाः पंचप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिता इति । तानेव पंचभेदान् दर्शयति **'तं जहा'** इत्यादि, **'तं जहा' 'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्ख जोणियणपुंसगा'** पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका', तथा **'आउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः, **'तेउक्काइयएगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा'** तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः **''वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः **'वणस्सइकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः, तथा च पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिभेदात् एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः पंचप्रकारका भवन्ति इति । **'से त्तं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुसगा'** ते एते पृथिवीकायिकादयः एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः भेदसहिता निरूपिता इति ॥ **'से किं**

एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक के विषय में प्रश्न करते है **" से किं तं एगिदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** हे भदन्त ! एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक कितने प्रकार के कहे गये है ? उत्तर में प्रभु कहते है —**"एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा पंचविहा पण्णत्ता"** "गौतम ! एकेन्द्रितिर्यग्योनिक नपुंसक पाँच प्रकार के होते है— **" तं जहा"** जैसे—**"पुंढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका"** पृथिवीकायिकएकेन्द्रिय तिर्यग्योनिनिकपुंसक **"आउ०- वाउ० वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा"** अप्कायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक, तैजस्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसक, वायुकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक और वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक ये पांचस्थावरकायिकनपुंसक है, **"से तं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा"** इस प्रकार से यह एकेन्द्रिय तिर्य-

---

ग्योनिक नपुंसक आमां जे એક ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક છે. તેના સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામી મહાવીર પ્રભુને પૂછે છે કે— **"से किं तं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा"** હે ભગવન્ ! એક ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો છે. તે કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—**"एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा पंचविहा पण्णत्ता"** હે ગૌતમ ! એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો પાચ પ્રકારના હોય છે. **"तं जहा"** તે પાંચ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે.—**"पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा"** પૃથ્વીકાયિક એક ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક **"आउ० तेउ० वाउ० वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा"** અપ્કાયિક એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસક, તૈજસકાયિક એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસક, વાયુકાયિક એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસક અને વનસ્પતિ કાયિક એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસક આ પાંચ સ્થાવર કાયિક નપુંસક છે. **"से किं तं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा"** આ પ્રમાણે આ એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોનું નિરૂપણ છે.

तं 'बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' अथ के ते द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः ? इति प्रश्नः, उत्तरयति –'वेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणेगविहा पन्नत्ता' द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनेकविधाः अनेकप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः 'पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा' इत्यादि प्रज्ञापनायां प्रथमपदोक्ताः सर्वेऽत्र ग्राह्याः 'से त्तं वेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' ते एते द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका निरूपिता इति । 'एवं तेइंदिया वि चउरिंदिया वि' एवम्–द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकवदेव तेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकास्तथा चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः अपि निरूपणीयाः, प्रथमप्रतिपत्तीयद्वीन्द्रियादिप्रकरण प्रज्ञापनातिदेशेन प्रोक्तमेवात्रानुसन्धेयमिति ।

चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकान् निरूप्य पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह–'से किं तं' इत्यादि, 'से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा' अथ के ते पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका ? इति प्रश्नः, उत्तरयति–'पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा-

---

ग्योनिक नपुंसको का कथन है, "से किं तं वेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा" हे भदन्त । दो इन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक कितने प्रकार के होते है ? हे गौतम ! "वेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणेगविहा पण्णत्ता' दो इन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक अनेक प्रकार के कहे गये है । जैसे–"पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा "इत्यादि प्रज्ञापनाके प्रथम पद में कहे गये सव यहाँ समझलेना चाहिये। 'से त्तं वेइंदियतिरिक्ख जोणिया' "इस प्रकार से दो इन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसको के सम्बन्ध का यह कथन समाप्त हुआ

"एवं तेइंदिया वि चउरिंदिया वि" द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसकों के जैसे ही ते इन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक और चौइन्द्रियतिर्यग् योनिक नपुंसक भी जानना चाहिये । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको का निरूपण कहते है–"से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुसगा" हे भदन्त ! पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक कितने प्रकार के होते है ? 'गोयमा' हे गौतम ! "पंचिंदिय-

---

"से किं त वेइदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा" હે ભગવન્ બે ઇંદ્રિયો વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કેટલા પ્રકારના હોય છે ? "गोयमा !" હે ગૌતમ ! 'वेइंदियतिरिक्खजोणिय–णपुंसगा अणेगविहा पण्णत्ता" બે ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અનેક પ્રકારના કહ્યા છે. જેમકે–"पुलाकिमि जाव समुद्दलिक्खा" ઇત્યાદિ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પહેલા પદમા કહેવામાં આવ્યા પ્રમાણે આ સંબંધમાં તમામ કથન અહિયાં સમજી લેવું. "से तं वेइंदियतिरिक्ख-जोणिया" આ પ્રમાણે બે ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોના સંબંધનું કથન સમાપ્ત થયું.

"एव तेइंदिया वि चउरिंदिया वि" બે ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોના કથન પ્રમાણે જ ત્રણ ઇંદ્રિયો વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અને ચાર ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોનું નિરૂપણ સમજી લેવું

હવે પાંચ ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.–"से किं तं पचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा" હે ભગવન્ પાંચ ઇંદ્રિયો વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે–

तिविहा पन्नत्ता' पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकास्त्रिविधाः—त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः कथिताः, भेदत्रयं दर्शयति 'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा 'जलयरा थलयरा खहयरा' जलचराः स्थलचरा खेचरा इति । 'से किं तं जलयरा' अथ के ते जलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः—इति प्रश्नः उत्तरयति "सो चेव पुव्वुत्तभेदो आसालियवज्जओ भाणियव्वो' स एव पूर्वोक्तभेदः प्रथमप्रतिपत्तिप्रोक्तो भेद आसालिकावर्जितो भणितव्यः स्थलचरभेदोक्तोरःपरिसर्पप्रकरणगताऽऽसालिकाभेदोऽत्र वक्तव्य इति भावः ।

अयं भावः—एकेन्द्रिया पृथिव्यादि पञ्चस्थावरकायिकाः, द्वीन्द्रियपुलाकृमिककुक्षिकृमिकादयः त्रीन्द्रिया औपयिकरोहिणिककुन्थुपिपीलिकादयः चतुरिन्द्रिया आन्धिकपत्रिकमक्षिका—मशकादयः, पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका जलचर-स्थलचर-खेचराः, एषां सर्वेषां भेदप्रभेदाः प्रज्ञापनायाः प्रथमे पदे, तदनुसारेण अस्यैव जीवाभिगमसूत्रस्य प्रथमप्रतिपत्तौ च विस्तरतः प्रोक्ता

तिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा पन्नत्ता "पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे है । "तंजहा" जैसे 'जलयरा, थलयरा, खहयरा' "जलचर, स्थलचर और खेचर जलचर नपुंसक, स्थलचर नपुंसक और खेचर नपुंसक " से किं तं जलयरा" हे भदन्त ! जलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक कितने प्रकार के है ? है गौतम ! "सो चेव पुव्वुत्तभेदो आसालियवज्जिओ भाणियव्वो" इस सम्बन्ध में आसालिका अर्थात् जो उरःपरिसर्प के भेदों में कहे हुए आसालिक के भेद को छोडकर वही पूर्वोक्त पहले प्रथम प्रतिपत्ति में कहे हुए सब भेद यहां कहलेना चाहिये । यहां पर ऐसा समझना चाहिये—एकेन्द्रिय प्रथिवी आदि पांच स्थावर कायिक, द्वीन्द्रिय—पुला कृमि कुक्षिकृमि आदि त्रीन्दिय—औपयिक रोहिणिक कुन्थु पीपीलिका आदि चतुरिन्द्रिय—आन्धिक पत्रिक मक्खी मच्छर आदि, पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जलचर स्थलचर खेचर, इन सबो के भेद प्रभेद प्रज्ञापना सूत्रके प्रथम पद में, और तदनुसार इसी जीवाभिगम

"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा पण्णत्ता" પાંચ ઇન્દ્રિયો વાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકો ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે. "तं जहा" તે આ પ્રમાણે છે.—'जलयरा, थलयरा, खहयरा," જલચર નપુંસક સ્થલચર નપુંસક અને ખેચર નપુંસક, "से किं तं जलयरा" હે ભગવન્ જલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક નપુસક કેટલા પ્રકારના હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा" ! હે ગૌતમ ! "सो चेव पुव्वुत्तभेदो आसालियवज्जिओ भाणियव्वो" આ સંબંધમાં આસાલિક નામના ભેદને છોડિને એજ પહેલાં કહેલ પહેલી પ્રતિપત્તિમાં કહેલા સઘળા ભેદો અહિયાં કહેવા જોઈએ. અહિયાં એવું સમજવું જોઈએ એકેન્દ્રિય પૃથ્વી વિગેરે પાંચ સ્થાવરકાય વાળા બે ઇન્દ્રિયો—પુલા, કૃમિ, કુક્ષિકૃમિ વિગેરે ત્રીન્દ્રિય—ઔપયિક, રોહિણિક, કુન્થુ, પિપીલિકા (કીડી) વગેરે ચતુરિંદ્રિય—આન્ધિક, પત્રિક, માખી, મચ્છર, વિગેરે પંચેન્દ્રિય તિર્યંગ્યોનિક જલચર, સ્થલચર, ખેચર આ બધાના ભેદો અને પ્રભેદો પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પહેલા પદમાં અને તદનુસાર આજ જીવાભિગમની

स्ते सर्वे भेदप्रभेदा अत्र वाच्याः, विशेष एतावानेव यत् तत्र उरःपरिसर्पेषु आसालिकरूपस्तद्भेदः कथितः सोऽत्र न वाच्यः, तस्य चक्रवर्त्यादिस्कन्धावारादिषु क्वचित्संमूर्छनसंभवात्, अन्तर्मुहूर्त्ताद्धामात्रायुष्कत्वाच्चात्र न विवक्षित इति। **'से त्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** ते एते पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति। अथ मनुष्य नपुंसकान् निरूपयितुं प्रश्नयन्नाह **'से किं तं मणुस्सणपुंसगा'** अथ के ते मनुष्यनपुंसकाः ? इति प्रश्नः, भगवानाह **'मणुस्सणपुंसगा तिविहा पन्नत्ता'** मनुष्यनपुंसका त्रिविधाः त्रिप्रकारकाः प्रज्ञप्ताः, **'तंजहा'** तद्यथा **'कम्मभूमिगा'** कर्मभूमिकाः कर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः **'अकम्मभूमिगा'** अकर्मभूमिका अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः, **'अंतरदीवगा'** अन्तरद्वीपकाः अन्तरद्वीपकमनुष्यनपुंसकाः। **'भेदो जाव भाणियव्वो'** भेदो यावद् भणितव्यः कर्मभूमिकमनुष्याणामकर्मभू-

---

की प्रथम प्रतिपत्ति में विस्तार से कहे गये है वे सब भेद प्रभेद यहां भी कहलेना चाहिये, भेद केवल इतना ही है कि वहा उरःपरिसर्प के भेदों मे आसालिक एक सर्प का भेद कहा है वह यहां नहीं कहना चाहिये। क्योकि वह चक्रवर्ती आदि के स्कन्धावार—फौजोका पडाव डेरा आदि में कहीं कहीं समूर्च्छित होता है और अन्तर्मुहूर्त्त काल मात्र इसकी आयु होती है इसलिये इसकी यहाँ विवक्षा नहीं है। **'से त्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा'** इस प्रकार से ये सब पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक है।

अब मनुष्य नपुसको का निरूपणकरते हैं—**'से किं तं मणुस्सणपुंसगा'** हे भदन्त ! मनुष्य नपुसक कितने प्रकार के कहे गये है ? गौतम **'मणुस्सणपुंसगा तिविहा पण्णत्ता'** मनुष्यनपुंसक तीन प्रकार के कहे गये है। **'तं जहा'** जैसे—**'कम्मभूमिगा'** कर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक **'अकम्मभूमिगा'** अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक

પહેલી પ્રતિપત્તિમા વિસ્તાર પૂર્વક કહેવામાં આવેલ છે. આ તમામ ભેદ પ્રભેદો અહિયા પણ કહેવા જોઈએ. આમાં ભેદ કેવળ એટલોજ છે કે—ત્યાં ઉરઃપરિસર્પના ભેદોમાં આસાલિક એ એક સર્પનો ભેદ કહેલ છે, તે ભેદ અહિયાં કહેવાનો નથી કેમકે—તે ચક્રવતી વિગેરેના સ્કન્ધાવાર—સૈન્યના પડાવ વિગેરેમાં ક્યાંક ક્યાંક સમૂચ્છિત હોય છે. અને અંતર્મુહૂર્ત કાલ માત્ર તેનું આયુષ્ય હોય છે. તેથી અહિયાં તેની વિવક્ષા કરવામાં આવી નથી, **"से त्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा"** આ પ્રમાણે આ બધા પાંચ ઇંદ્રિયો વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોના ભેદોનું નિરૂપણ કર્યું છે.

હવે મનુષ્ય નપુંસકોનુ નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.—**"से किं तं मणुस्सणपुंसगा"** હે ભગવન્ મનુષ્ય નપુંસક કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવ્યા છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે— **"गोयमा !"** હે ગૌતમ ! **"मणुस्सणपुंसगा तिविहा पण्णत्ता"** મનુષ્ય નપુંસક ત્રણ પ્રકારના કહ્યાં છે. **"तं जहा"** તે ત્રણ પ્રકારો આ પ્રમાણે છે **"कम्मभूमिगा"** કર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસક **"अकम्मभूमिगा"** અકર્મ ભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો **"अंत-**

मिकमनुष्यणामन्तरद्वीपकमनुष्याणां च यावन्तो भेदाः कथितास्ते सर्वेऽपि भेदोपभेदा इहापि वक्तव्या तथाहि कर्मभूमिकाः पञ्चभरतपञ्चैरवत पंचमहाविदेहभेदतः पंचदशविधाः । अकर्मभूमिकाः पञ्च-हैमवतपञ्चहैरण्यवतपञ्चहरिवर्षपञ्चरम्यकवर्षपञ्चदेवकुरुपञ्चोत्तरकुरुभेदत त्रिंशद्विधाः, षट्-पंचाशचान्तरद्वीपजा. । एते मनुष्यनपुंसका अत्र वाच्या इति । 'से त्तं मणुस्सणपुंसगा' ते एते मनुष्यनपुंसकाः भेदप्रभेदाभ्यां निरूपिता इति ॥सू० १३॥

नपुंसकानां भेदः कथितः सम्प्रति तेषां स्थितिप्रतिपादनार्थमाह 'नपुंसगस्स णं भंते' इत्यादि,

मूलम्—'णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइयणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, सव्वेसिं-ठिई जहा पण्णवणाए ठिइपए तहा भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवीनेरइया । तिरिक्खजोणियणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

'अंतर दीवगा' और अन्तर द्वीपज मनुष्य नपुंसक 'भेदो जाव भाणियव्वो' यहाँ पर कर्म-भूमि के मनुष्यो के अकर्म भूमिक मनुष्यो के और अन्तरद्वीपज मनुष्यो के जितने भेद और उप-भेद पहिले कहे गये है वे सब कह लेने चाहिये. जैसे—पाँच भरत, पाँच ऐरवत, पांच महाविदेह, इस प्रकार पन्द्रह प्रकार के कर्मभूमिक मनुष्य पाच हैमवत, पॉच हैरण्यवत पांच हरि वर्ष, पांच रम्यक वर्ष पाच देवकुरु, पांच उत्तर कुरु इस प्रकार तीस अकर्मभूमिक मनुष्य और छप्पन अन्तर द्वीपके मनुष्य ये सब मनुष्य नपुंसक यहां कहलेना चाहिये । इस प्रकार से भेद और उपभेदो को लेकर मनुष्य नपुंसको का यहां तक यह कथन समाप्त हुआ ॥सूत्र—१३॥

रदीवगा" અને અંતર દ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકો 'भेदो जाव भाणियव्वो" અહિયાં કર્મભૂમિના મનુષ્યોના અકર્મભૂમિના મનુષ્યોના અને અંતરદ્વીપના મનુષ્યોના જેટલા ભેદો અને ઉપ-ભેદો છે. કે જે પહેલા કહેવામાં આવેલા છે, તે તમામ ભેદો અને ઉપભેદો અહિયા પણ સમજી લેવા. જેમકે—પાંચ ભરત, પાચ ઐરવત પાચ મહાવિદેહ આ રીતે પંદર પ્રકારના કર્મભૂમિજ મનુષ્ય પાચ હૈમવત, પાચ હૈરણ્યવત, પાંચ હરિવર્ષ, પાચ રમ્યક વર્ષ, પાંચ દેવ-કુરૂ, પાંચ ઉત્તરકુરૂ, આ રીતે ત્રીસ અકર્મભૂમિના મનુષ્યો અને છપ્પન અંતરદ્વીપના મનુષ્યો આ બધા નપુંસક મનુષ્યોનું અહિયા કથન સમજી લેવું. આ પ્રમાણે ભેદ અને ઉપભેદો સહિત મનુષ્ય નપુંસકોનું અહિયાં કથન સમાપ્ત થયું. ॥સૂ० ૧૩॥

एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । पुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं, सव्वेसिं एगिंदियणपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा । बेइंदियतेइंदियचउरिंदियणपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं जलयरतिरिक्खचउप्पदथलयरउरपरिसप्पभूयपरिसप्पखहयर तिरिक्ख-जोणिय णपुंसगाणं सव्वेसिं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । मणुस्सणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी । कम्मभूमिगभरहेरवयपुव्वविदेहअवरविदेहमणुस्सणपुंसगस्स वितहेव । अकम्मभूमिग मणुस्सणपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं, साहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, एवं जाव अंतर दीवगा णं ॥१४॥

छाया—नपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । नैरयिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । सर्वेषां स्थिति र्यथा प्रज्ञापनायां स्थितिपदे तथा भणितव्या यावदधः सप्तमी-

पृथिवीनैरयिकाः । तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिः एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण द्वाविंशतिर्वर्षसहस्राणि । पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन अन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षेण द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि सर्वेषामेकेन्द्रियनपुंसकानां स्थिति र्भणितव्या । द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिय नपुंसकानां स्थिति र्भणितव्या । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः, एवं जलचरतिर्यक्चतुष्पदस्थलचरोरःपरिसर्पभुजपरिसर्पखेचरतिर्यग्योनिकानां सर्वेषां जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्वकोटिः । मनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! क्षेत्र प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण पूर्व कोटिः, धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । कर्मभूमिक भरतैरवतपूर्वविदेहापरविदेहमनुष्यनपुंसकस्यापि तथैव । अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जन्म प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेणापि अन्तर्मुहूर्तम् संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः । एवं यावदन्तरद्वीपकानाम् ॥सू० १४॥

टीका—'**नपुंसगस्स णं भंते !** नपुंसकस्य–सामान्यतो नपुंसकस्य खलु भदन्त ! '**केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता**' कियन्तं कालं स्थितिः—आयुष्यकालः प्रज्ञप्ता—कथिता इति नपुंसकस्य स्थितिविषयकः प्रश्नः, भगवानाह—'**गोयमा**' इत्यादि, **गोयमा**' हे गौतम ! '**जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं**' जघन्येनान्तर्मुहूर्तं स्थिति र्नपुंसकस्य, एतच्च तिर्यङ्मनुष्यापेक्षया ज्ञातव्यमिति, '**उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं**' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्नपुंसकस्य, एतत्

इस प्रकार से नपुंसकों का भेद कथन करके अब सूत्रकार उनकी स्थिति का कथन करते हैं—'**णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता**'–इत्यादि ।

टीकार्थ—गौतम ! ने प्रभु से ऐसा पूछा है–'**णपुंसगस्स णं भंते !**' हे भदन्त सामान्य नपुंसककी '**केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता**' कितने काल की स्थिति–आयुष्य काल कही गई है ? '**गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं**' हे गौतम ! नपुंसक की

આ પ્રમાણે નપુંસકોના ભેદોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તેઓની સ્થિતિનું કથન કરે છે—"**णपुंसगस्स णं भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता**" ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું કે—'**णपुंसगस्स णं भंते !**" હે ભગવન્ સામાન્ય નપુંસકની "**केवइकालं ठिई पण्णत्ता**" કેટલા કાળની સ્થિતિ—આયુષ્ય કાળ કહેલ છે. "**गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं**" હે ગૌતમ ! નપું-

सप्तमी पृथिवीनारकापेक्षया ज्ञातव्यम् । सप्तमपृथिवीनारकाणामुत्कर्षत एतावत्प्रमाणकस्थितेः सभवादिति, तदेवं सामान्यतो नपुंसकस्य स्थितिः कथिता, सम्प्रति—विशेपतो नपुंसकस्य स्थितिं कथयितुं प्रथमत, सामान्यतो विशेपतश्च नैरयिकनपुंसकविपयां स्थितिमाह—'**नेरइय-णपुंसगस्स णं भंते**' सामान्यतो नैरयिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! '**केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता**' कियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ता—कथितेति प्रश्न', भगवानाह—'**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा**' हे गौतम ! '**जहन्नेणं दसवाससहस्साइं**' सामान्यस्य नारकस्य जघन्येन दशवर्षसहस्राणि स्थितिः, '**उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं**' उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि स्थितिः । '**सव्वेसिं ठिई जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वा जाव अहेसत्तम पुढवी नेरइया**' सर्वेपां रत्नप्रभादिनारकाणां स्थितिर्यथा प्रज्ञापनायां चतुर्थे स्थितिपदे तथा वक्तव्या यावत्प्रमाणा यत्पृथिवी-

---

स्थिति जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है यह तिर्यंच और मनुष्यकी अपेक्षा से समझना चाहिये और उत्कृष्ट से ३३ तेतीस सागरोपम की कही गई है । यह उत्कृष्ट से ३३ तेतीस सागरोपम की स्थिति का कथन सप्तम पृथिवी के नारको की अपेक्षा से किया गया है. क्योंकि सप्तम पृथिवी के नारकोंकी उत्कृष्टस्थिति ३३ तेतीस सागरोपम की होती है। नपुंसक की स्थिति का यह कथन सामान्य रूप से किया है अब विशेप रूपसे नपुंसक की स्थिति को प्रकट करने के लिये प्रथमतः सामान्य और विशेपरूप से नैरयिक नपुंसकों की स्थिति प्रकट की जाती है— '**नेरइयणपुंसगस्स णं भंते!**' हे भदन्त! नैरयिक नपुंसक की '**केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता**' स्थिति सामान्य से कितने काल की कही गई है ? **गोयमा**' हे गौतम ! '**जहन्नेणं दसवाससहस्साइं**' सामान्य नारक की जघन्य से–स्थिति दस हजार वर्ष की कही गई है और '**उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं**' उत्कृष्ट से ३३ तेतीस सागरोपम की कही गई है '**सव्वेसिं ठिई भाणियव्वा जाव अहे सत्तमपुढवी नेरइया**' यहां समस्त रत्नप्रभा आदि नारकों की स्थिति जिनकी जितनी है

सकોની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની કહી છે, આ તિર્યંચ અને મનુષ્યોની અપેક્ષાથી સમજવું. અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની સ્થિતિનું કથન સાતમી પૃથ્વીના નારકોની અપેક્ષાથી કરેલ છે. કેમકે—સાતમી પૃથ્વીના નારકોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની થાય છે આ કથન નપુંસકોની સ્થિતિનું સામાન્ય પણાથી કહ્યું છે. હવે વિશેષ પણાથી નપુંસકની સ્થિતિ પ્રગટ કરવા માટે પહેલા સામાન્ય રીતે અને પછી વિશેષ પણાથી નૈરયિક નપુંસકોની સ્થિતિ પ્રગટ કરવામાં આવે છે "**णेरइयणपुंसगस्स णं भंते !**" હે ભગવન્ નૈરયિક નપુંસકોની "**केवइयं काल ठिई पण्णत्ता**" સામાન્ય પણાથી કેટલાક કાળની સ્થિતિ કહેવામાં આવી છે ? "**गोयमा !**" હે ગૌતમ ! "**जहण्णेणं दसवाससहस्साइ**" સામાન્ય નારકની સ્થિતિ જઘન્યથી દસ હજાર વર્ષની કહેવામાં આવી છે "**उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ**" ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેત્રીસ સાગરોપમની કહી છે. "**सव्वेसिं ठिई भाणियव्वा जाव अहे सत्तम पुढवीनेरइया**" અહિયાં રત્નપ્રભા વિગેરે સઘળી પૃથ્વીયોના નારકોની સ્થિતિ જેની જેટલી

नारकाणां स्थितिर्भवति स तत्प्रमाणा सर्वपृथिवी नारकाणां स्थितिर्यथा प्रज्ञापनायां चतुर्थे स्थिति-पदे कथिता तथा भणितव्या, कियत्पर्यन्तं तत्राह—यावदधः सप्तमी पृथिवी नैरयिकाः रत्नप्रभापृथिवी नारकत आरम्य तमतमा सप्तमीपृथिवीनारकपर्यन्तनारकाणां यावती येषां स्थितिर्भवति साऽत्र स्थितिर्भणितव्या, तथाहि—रत्नप्रभा पृथिवीनारकस्य जघन्येन स्थितिर्दशवर्ष सहस्राणि, उत्कर्षेणैकं सागरोपमम् १, शर्कराप्रभापृथिवी नारकस्य स्थितिर्जघन्यत एक सागरोपममुत्कर्षतस्त्रीणि सागरोपमाणि २, बालुकाप्रभापृथिवी नैरयिकस्य जघन्येन स्थितिस्त्रीणि सागरोपमाणि, उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि ३, पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकस्य जघन्येन सप्तसागरोपमाणि स्थितिः, उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि ४, धूमप्रभापृथिवी नारकनपुंसकस्य जघन्येन दश सागरोपमाणि स्थितिरुत्कर्षतः सप्तदश सागरोपमाणि ५, तमःप्रभापृथिवीनारक नपुंसकस्य जघन्येन सप्तदश सागरोपमाणि स्थितिरुत्कर्षतो द्वाविंशति सागरोपमाणि ६, अधः

वह यहाँ कहनी चाहिये और इस प्रकार इस स्थिति का कथन सातवीं तमतमा पृथिवी के नैरयिको की स्थिति पर्यन्त करना चाहिये, क्रम से नारको की स्थिति इस प्रकार है—रत्नप्रभा पृथिवी के नारको की जघन्य स्थिति १० दस हजार वर्ष की है और उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है, शर्कराप्रभा पृथिवी के नैरयिको की स्थिति जघन्य से १ एक, सागरोपम की और उत्कृष्ट से तीन सागरोपम की है २, बालुकाप्रभा पृथिवी के नैरयिको की स्थिति जघन्य से तीन सागरोपम की है और उत्कृष्ट से सात सागरोपम की है ३, पङ्कप्रभा पृथिवी के नारक की स्थिति जघन्य से सात सागरोपम की है और उत्कृष्ट से दश सागरोपम की है ४, धूमप्रभा पृथिवी के नारक की स्थिति जघन्य से दश सागरोपम की है और उत्कृष्ट से १७ सत्रह सागरोपम की है ५ तम. प्रभा पृथिवी के नैरयिकों की स्थिति जघन्य से १७ सत्रह सागरोपम की है और उत्कृष्ट से २२, बाईस सागरोपम की है ६, तथा सातवीं जो तमतमा पृथिवी है उसके

હોય, તેની તેટલી અહિંયા કહેવી જોઈએ અને આ પ્રમાણે આ સ્થિતિનું સાતમી તમતમા પૃથ્વીના નૈરયિકોની સ્થિતિના કથન પર્યન્ત કહેવુ જોઈએ

ક્રમથી નારકોની સ્થિતિ આ પ્રમાણે છે.—રત્ન પ્રભા પૃથ્વીના નારકોની જઘન્ય સ્થિતિ ૧૦ દસ હજાર વર્ષની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક સાગરોપમની છે ૧ શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકોની જઘન્ય સ્થિતિ એક સાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩ ત્રણ સાગરોની છે ૨ વાલુકા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકોની સ્થિતિ જઘન્યથી ત્રણ સાગરોપમની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી સાત સાગરોપમની છે, ૩ પંકપ્રભા પૃથ્વીના નારકોની સ્થિતિ જઘન્યથી સાત સાગરોપમની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી દસ સાગરોપમની છે ૪ ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નારકોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ સાગરોપમની છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી ૧૭ સત્તર સાગરોપમની છે, ૫ તમ પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકોની સ્થિતિ જઘન્યથી ૧૭ સત્તર સાગરોપમની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ૨૨ બાવીસ સાગરોપમની છે ૬, તથા સાતમી કે જે તમતમા પૃથ્વી છે, તેના નારકોની

सप्ततमतमा पृथिवीनारकनपुंसकस्य जघन्येन द्वाविंशति सागरोपमाणि स्थितिरुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्भवतीति ७, 'तिरिक्खजोणिय णपुंसगस्स णं भंते' तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?' कियत्कं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? भगवानाह—'गोयमा' हे गौतम ! 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी' सामान्यतस्तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य स्थितिर्जघन्येन अन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटि, 'एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगस्स' एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसकस्य 'कालंठिई पन्नत्ता' कियन्तं कालंस्थिति प्रज्ञप्ता इति प्रश्न', उत्तरमाह—'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं' उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं' सामान्यत' एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य 'केवइय कालं 'ठिई पण्णत्ता' कियन्तं कालं स्थिति पज्ञप्ता ? जधन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो द्वाविंशति वर्ष सहस्राणि 'पुढवीकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगस्स णं भंते' पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसकस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता' कियन्तं कालं

नरक की स्थिति जघन्य से २२, वाईस सागरोपम की है और उत्कृष्ट से ३३, तैंत्तीस सागरोपम की है ७, 'तिरिक्ख जोणिय नपुंसगस्स णं भंते' हे भगवन् ! तिर्यग्योनिक नपुंसककी 'केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' कितने काल की स्थिति कही गई है ? उत्तर मे प्रभु कहते हैं—हे गौतम जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी' सामान्य से तिर्यग्योनिक नपुंसक की स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटि की है. 'एगिंदीय तिरिक्खजोणिय पुंसगस्स णं' एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसकी कितने कालकी है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं- 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं सामान्य से एकेन्द्रियतिर्यग् नपुसक की स्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से २२, वाईस हजार वर्ष की है 'पुढवी काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगस्स णं भंते केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' हे भगवन् पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर में प्रभु कहते है 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं' विशेष चिन्ता में पृथिवी

સ્થિતિ જઘન્યથી ૨૨ બાવીસ સાગરોપમની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેંત્રીસ સાગરોપમની છે. ૭ 'तिरिक्खजोणिय नपुसगस्स ण भंते !" હે ભગવન્ તિર્યગ્યોનિક નપુંસકની 'केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" કેટલા કાળની સ્થિતિ કહી છે ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा !" હે ગૌતમ ! "जहण्णेणं अतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी" સમાન્યપણાથી તિર્યગ્યોનિક નપુંસકની સ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક પૂર્વકોટિની છે. 'एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुसगस्स ण" એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહેવામા આવી છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'जहण्णेणं अंतो मुहुत्त, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं" સામાન્ય પણાથી એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોની સ્થિતિ જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૨૨ બાવીસ હજાર વર્ષની છે.

स्थितिः प्रज्ञप्ता ? हे गौतम ! विशेष चिन्तायां पृथिवीकायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसकस्य जघन्येन स्थितिरन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण द्वाविंशति वर्ष सहस्राणि, एवम् **'सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा'** सर्वेषां शेषामप्तेजो वायुवनस्पत्येकेन्द्रियनपुंसकानां यस्य यावती स्थितिर्भवति तस्य तावती स्थितिर्भणितव्या—कथयितव्या, तथाहि—अप्कायिकैकेन्द्रिय-तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः सप्तसहस्रवर्षाणि तैजस्कायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य— जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिन्दिवानि, वायुकायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुसकस्य जघन्येन स्थितिरन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि, वनस्पति कायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । **'बेइन्दिय तेइंदिय चउरिंदिय णपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा'** द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रियनपुंसकानां स्थितिर्यावती यस्य भवति तावती स्थितिस्तस्या भणितव्या—कथ-

---

कायिक एकेन्द्रिय जीव तिर्यग्योनिक नपुंसक की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति बाइस हजार वर्ष की है, **'सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा'** बाकी के जो एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक तेज वायु और वनस्पति नपुंसक है उन सबकी जिसकी जितनी स्थिति है वह यहां कहनी चाहिये, जैसे—अप्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसककी जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्टस्थिति सात हजार वर्ष की है । तेजस्कायिक की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट स्थिति तीन रात दिन की है वायुकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्ष की है । वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय नपुंसक की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्टस्थिति १० दस हजार वर्ष की है. **'बेइंदियतेइंदिय चउरिंदिय णपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा** बेइंद्रिय तेइन्द्रिय चतुरिन्द्रियो की जिसकी जितनी स्थिति हो वह यहाँ कहनी चाहिये

"पुढवी काइय एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगस्स ण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ પૃથ્વી કાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોની સ્થિતિ કેટલાક કાળની કહેવામા આવી છે ? **'जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं'** વિશેષ પ્રકારથી વિચારતાં પૃથ્વીકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક જીવોની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ બાવીસ હજાર વર્ષની છે **"सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा"** બાકીના જે એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, અને વનસ્પતિ કાયિક નપુંસકો છે ને સઘળાની એટલે કે-જેની જેટલી સ્થિતિ હોય તેની તેટલી અહિંયાં સમજીલેવી જેમકે—અપ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ સાત હજાર વર્ષની છે તેજસ્કાયિકની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ત્રણ રાતદિવસની છે વાયુકાયિક એકઇંદ્રિયવાળા, તિર્યગ્યોનિક નપુંસકની જઘન્યસ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ત્રણહજાર વર્ષની છે વનસ્પતિકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા નપુંસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ૧૦ દસહજાર વર્ષની છે **"बेइंदियतेइंदियचउरिंदियणपुंसगाणं ठिई भाणियव्वा"** બે ઇંદ્રિયવાળા, ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા ચારઇંદ્રિયવાળા, જીવોની જેની જેટલીસ્થિતિ હોય તેની તેટલી સ્થિતિ અહિયાં કહેવી જોઈએ. જેમકે—બેઇન્દ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોની

यितव्या, तथाहि—द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण द्वादशवर्षाणि त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसकस्य स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिदिवानि । चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः षण्मासा. ॥

'**पंचिदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्स णं भंते**' पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! '**केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता**' कियन्त काल स्थिति. प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्न , भगवानाह '**गोयमा**' इत्यादि, '**गोयमा** हे गौतम ! '**जहन्नेण अंतो मुहुत्तं**' सामान्यत. पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य स्थितिर्जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् '**उक्कोसेणं पुव्वकोडी**' उत्कर्षेण पूर्वकोटिः जघन्योत्कर्षाभ्यामन्तर्मुहूर्त्तपूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवतीति भाव. । '**एवं जलयरतिरिक्ख च उप्पयथलयर उरपरि सप्प भुयपरिसप्प खहयर तिरिक्खजोणिय णपुंसगाण सव्वेसिं एवं जल-**

जैसे-द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति बारह वर्ष की है. तेइन्द्रिय तिर्यग्नपुंसक की जघन्य स्थिति ४९, उनचास दिनरात की है. चौइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहुर्त्त की है और उत्कृष्टस्थिति ६, छह मास की है.

'**पंचिदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगस्स णं भंते !**' हे भदन्त ! जो पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक है—उसकी स्थिति कितने कालकी है ? उत्तर में प्रभु कहते है—'**गोयमा**' हे गौतम ! '**जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं**' सामान्यतः पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और '**उक्कोसेणं पुव्वकोडी**' उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटि की है. '**एवं जलयरतिरिक्ख चउप्पय थलयर उरपरिसप्प भुयपरिसप्प खहयर तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं सव्वेसिं**' पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक जलचर स्थलचर और खेचर के भेद में तीन प्रकार के होते हैं । इनमें जलचर तिर्यग्योनिक नपुंसक की चतुष्पद स्थलचर उरपरिसर्प भुजपरिसर्प तिर्यग्योनिक

જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ બારવર્ષની છે. ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૪૯ ઓગણ પચાસ દિવસરાતની છે. ચાર ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અંત-ર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૬ છ મહિનાની છે.

"**पंचिदियतिरिक्खजोणिणपुंसगस्स णं भंते**" હે ભગવન્ જે પાચ ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુસકો છે, તેઓની સ્થિતિ કેટલા કાળની કહી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—**गोयमा!** ॥ હે ગૌતમ ! **जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं** ॥ સામાન્યત પાચઇંન્દ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને "**उक्कोसेणं पुव्वकोडी** ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ એક પૂર્વકોટિનીછે, "**एवं जलयरतिरिक्खचउप्पायथलयरउरपरिसप्प भुयपरिसप्प खहयरतिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं सव्वेसिं**" પાંચઇન્દ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસક જલચર, સ્થલચર અને ખેચરના ભેદથી ત્રણ પ્રકારના હોય છે. તેમા જલચર તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોની ચારપગા સ્થલચર ઉરપરિસર્પ ભુજપરિસર્પ તિર્યંગ્યોનિક નપુસકો અને ખેચર તિર્ય-

चरतिर्यग् चतुष्पद स्थलचरोरःपरिसर्प भुजपरिसर्प खेचरतिर्यग्योनिकनपुंसकानां सर्वेषाम् 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्त'जघन्येनान्तर्मुहूर्त स्थितिर्भवति 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्वकोटिः स्थितिर्भवति ॥ तिर्यग्योनिकानां यथाक्रमं स्थितिं प्रदर्श्य मनुष्यस्य स्थिति दर्शयितुं प्रश्नयन्नाह 'मणुस्स णपुंसगस्स णं भंते' मनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त! 'केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता' कियन्तं कालं स्थिति. प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्न., भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'खेत्तं पडुच्च' क्षेत्रं प्रतीत्य आश्रित्य 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडी' उत्कर्षेण पूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवतीति । सामान्यतो मनुष्यनपुंसकस्यापि स्थिति र्जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षत. पूर्वकोटिप्रमाणा भवति, क्षेत्रं प्रतीत्येति कथितं तत्कर्मभूमिक मनुष्यनपुंसकमपेक्ष्य कथितम् । 'धम्मचरणं' पडुच्च धर्मचरणं प्रतीत्य वाह्यवेषपरिकरप्रयुक्त-

---

नपुंसकको और खेचर तिर्यग्योनिक नपुंसक की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्टस्थिति एक पूर्वकोटि की है.

अब सूत्रकार मनुष्य नपुसक की स्थिति प्रकट करत है–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा प्रश्न किया है–"मणुस्स णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! मनुष्य नपुंसक की स्थिति कितने काल की होती है ? उत्तर में प्रभु कहते है–"गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी" हे गौतम ! क्षेत्र की अपेक्षा लेकर मनुष्य नपुंसक की जघन्यस्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और "उक्कोसेणं" उत्कृष्टस्थिति १ एक पूर्व कोटिकी है । सामान्य से यही स्थिति मनुष्य नपुंसक की है । यहां जो क्षेत्र की अपेक्षा लेकर मनुष्य नपुंसक की स्थिति कही गई है वह कर्म भूमिक मनुष्य नपुंसक की कही गई है–तथा—"धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" चारित्र धर्म की अपेक्षा लेकर कर्मभूमिक मनुष्य नपुसक की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की

યોનિ નપુંસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે. અને ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ એક પૂર્વકોટિની છે

હવે સૂત્રકાર મનુષ્ય નપુંસકોની સ્થિતિ પ્રગટ કરતા કહે છે—તેમા ગૌતમસ્વામી પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછે છે કે—"मणुस्स णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભગવન્ મનુષ્ય નપુંસકોની સ્થિતિ કેટલાકાળની હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी" હે ગૌતમ ! ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી મનુષ્ય નપુંસકની જઘન્ય સ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને 'उक्कोसेणं' ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ ૧ એક પૂર્વકોટિની છે સામાન્યપણાથી આજ સ્થિતિ મનુષ્ય નપુંસકોની સ્થિતિ કહેવામાં આવી છે, તે કર્મભૂમિવાળા મનુષ્ય નપુંસકોની છે તથા "धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી કર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોની જઘન્યસ્થિતિ એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દેશોન એક પૂર્વકોટિની છે. અહિયા આઠ વર્ષમા સંયમ પ્રાપ્ત કર્યા પછી જીવતાસુધી સંયમ પાળવો એજ દેશોનપણું છે. "कम्मभूमिग भरहेरवयविदेहावरविदेह णपुंसगस्स वि तहेव" ભારત અને ઐરવતક્ષેત્ર ૩૫ કર્મભૂ-

प्रव्रज्याप्राप्तिमधिकृत्य **'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं'** जघन्येनान्तमुहूर्तम् ततः परं मरणादिभावात् **'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी'** उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिप्रमाणा स्थितिर्भवति वर्षाष्टकादूर्ध्वं संयमप्राप्तेरनन्तरमाजन्मसंयमपरिपालनादेशोनत्वमिति । कम्मभूमिग भरहेरवयपुव्वविदेहअवरविदेहमणुस्सणपुंसगस्स वि तहेव' कर्मभूमिकभरतैरवतपूर्व विदेहापरविदेह मनुष्यनपुंसकस्यापि तथैव, यथा सामान्यतो मनुष्य नपुंसकवदेव । तथाहि— कर्मभूमिक भरतैरवतविदेहापरविदेहमनुष्यनपुंसकस्य क्षेत्रापेक्षया जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिरेवेति, धर्मचरणापेक्षया जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटिरिति ॥ **'अकम्मभूमिगमणुस्स णपुंसगस्स णं भंते'** अकर्मभूमिक मनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त ! **'केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता'** कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्न, भगवानाह— **'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जम्मणं पडुच्च'** जन्म प्रतीत्य—जन्मापेक्षया **'जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, **'उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं'** उत्कर्षेणापि अन्त-

---

है और उत्कृष्ट स्थिति देशोन एक पूर्व कोटिकी है। यहां आठ वर्ष में संयम प्राप्ति के अनन्तर जीवन पर्यन्त संयम पालना यही देशोनता है। **"कम्मभूमिग भरहेरवयपुव्वविदेहावरविदेहमणुस्सणपुंसगस्स वि तहेव"** भरत और ऐरवत क्षेत्र रूप कर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की भी स्थिति क्षेत्र की अपेक्षा एवं चारित्र धर्म की अपेक्षा जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की और उत्कृष्ट से जैसी ऊपर मे कही गई है वैसी है। तथा पूर्वविदेह और पश्चिम विदेह के मनुष्य नपुंसक की जघन्य स्थिति क्षेत्र की अपेक्षा एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्व कोटिकी है। तथा चारित्र धर्म की अपेक्षा लेकर इन कर्म भूमिक क्षेत्र के नपुंसक की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्टस्थिति देशोन पूर्व कोटिकी है।—**"अकम्मभूमिग मणुस्सणपुंसगस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"** गौतम ने पुनः इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की स्थिति कितने कालकी कही गई है? उत्तर में प्रभु कहते हैं–**"गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वि अंतो मुहुत्तं"** हे गौतम ! जन्म की अपेक्षा लेकर अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की जघन्य स्थिति एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट स्थिति भी एक अन्तर्मुहूर्त्त की है। अकर्म-

---

भिना मनुष्य नपुंसकनी स्थिति पण क्षेत्रनी अपेक्षाथी अने चारित्र धर्मनी अपेक्षाओ जघन्यथी ओक अंतर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्टथी पूर्वोक्त कथन प्रमाणेनी समजवी तथा पूर्वविदेह अने पश्चिम विदेहना मनुष्य नपुंसकोनी जघन्यस्थिति क्षेत्रनी अपेक्षाथी ओक अंतर्मुहूर्तनी छे अने उत्कृष्टस्थिति ओक पूर्वकोटिनी छे तथा चारित्रधर्मनी अपेक्षाथी आ कर्मभूमि क्षेत्रना नपुंसकोनी जघन्यस्थिति ओक अंतर्मुहूर्तनी छे, अने उत्कृष्ट स्थिति देशोन पूर्वकोटिनी छे. **"अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता"** गौतमस्वामीओ फरीथी आ सूत्र द्वारा प्रभुने ओवु पूछ्युं छे के—हे भगवन् अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकोनी स्थिति केटलाकाळनी कहेवामां आवी छे? आ प्रश्नना उत्तरमा प्रभु कहे छे के—**'गोयमा!** जम्माणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं" हे गौतम ! जन्मनी अपेक्षाथी अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकोनी जघन्य स्थिति ओक अंतर्मुहूर्तनी छे. अने उत्कृष्ट

मुहूर्तम् । अकर्मभूमौ हि मनुष्या नपुंसका' समूर्च्छिमा एव भवन्ति न गर्भव्युत्क्रान्तिकाः, युगलधर्मिणां नपुंसकत्वाभावात् । समूर्च्छिमाश्च जघन्यत उत्कर्षतो वाऽन्तर्मुहूर्तायुष एव म्रियन्ते, जघन्यान्तर्मुहूर्तापेक्षया, उत्कृष्टमन्तर्मुहूर्त्तं बृहत्तरं भवतीति विशेषः **'साहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं'** सहरणं प्रतीत्य कर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकः सहरणेनाऽकर्मभूमौ नीतस्तमाश्रित्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् **'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी'** उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः स्थितिर्भवतीति सहरणादूर्ध्वमामरणान्तं तत्रावस्थानसभवात् ॥ **'एवं जाव अंतरदीवगाणं'** एवं सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकवदेव हैववत हैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकस्य, हरिवर्षक-

---

भूमि में मनुष्य नपुंसक समूर्च्छिम ही होते है गर्भज नहीं होते है । जो अकर्मभूमिक मनुष्य गर्भज होते है वे नपुंसक नहीं हुआ करते है क्योंकि युगलधर्मियो में नपुंसकता का अभाव होता है संमूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक जघन्य और उत्कृष्ट से एक अन्तर्मुहूर्त्त की ही आयु वाले होते है । तदनन्तर मरण धर्म को प्राप्त कर लेते है यहां जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त में यह विशेष है कि जघन्य के अन्तर्मुहूर्त्त काल से उत्कृष्ट का जो अन्तर्मुहूर्त्त काल है वह बृहत्तर होता है । **"संहरणं पडुच्च जहन्नेनं अंतोमुहुत्तं,'** सहरण की अपेक्षा अर्थात्—कर्मभूक मनुष्य नपुंसक सहरण से अकर्मभूमि में ले जाया गया हो उसकी अपेक्षा अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति वाले होते है और **'उक्कोसेणं देसूणा पुव्व-कोडी'** उत्कृष्ट से देशोन एक पूर्व कोटि की स्थिति वाले होते है । **"एवं जाव अंतरदीव-गाणं"** सामान्य से जैसी स्थिति अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की कही है वैसी ही स्थिति जन्म और संहरण की अपेक्षा हैमवत, हैरण्यवत हरिवर्ष रम्यकवर्ष, देवकुरू एवं उत्तरकुरु इन

स्थिति पણ એક અંતર્મુહૂર્તની છે અકર્મભૂમિમાં મનુષ્ય નપુંસકો સંમૂર્ચ્છિમ જ હોય છે તેઓ નપુંસક હોતા નથી કેમ કે—યુગલધર્મીયોમાં નપુસકપણાનો અભાવ હોય છે. સંમૂ-ર્ચ્છિમ મનુષ્ય નપુંસક જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટથી એક અંતર્મુહૂર્તની આયુષ્યવાળા જ હોય છે. તે પછી મરણધર્મને પ્રાપ્ત કરીલે છે અહિયાં જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ અન્તર્મુહૂર્તમાં એ વિશેષ પણું છે કે—જઘન્યના અંતમુહૂર્ત કાળથી ઉત્કૃષ્ટનો જે અંતર્મુહૂર્તકાળ છે, તે વધારે મોટો એટલે કે બ્રહત્તર હોય છે **"संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं"** સહરણની અપેક્ષાથી અર્થાત્ કર્મ-ભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો સહરણથી અકર્મભૂમિમા લઈ જવામાં આવેલ હોય તે અપેક્ષાથી અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની સ્થિતિવાળા હોય છે અને **"उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी"** ઉત્કૃષ્ટથી દેશોન એક પૂર્વકોટિની સ્થિતિવાળા હોય છે. **"एवं जावअंतरदीवगाणं"** સામાન્યપણાથી અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોની જે પ્રમાણેની સ્થિતિ કહેલી છે, એજ પ્રમાણેની સ્થિતિ જન્મ અને સહરણની અપેક્ષાથી હૈમવત હૈરણ્યવત

[illegible] अन्तर्द्वीपक-
[illegible] ॥सू० १७॥

[illegible] प्रश्नयन्नाह — 'णपुंस
[illegible]

मूलम्—णपुंसए णं भंते ! णपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं तरुकालओ। णेरइयणपुंसएणं भंते ! णेरइयणपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं पुढवीए ठिई भाणियव्वा। तिरिक्खजोणियणपुंसए णं भंते ! तिरिक्खजोणियणपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो, एवं एगिंदियणपुंसगस्स णं. वणस्सइकाइयस्स वि एवमेव। सेसाणं जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा। बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियणपुंसगाण य जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसएणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं। एवं जलयरतिरिक्खचउप्पयथलयरउरपरिसप्पभुयपरिसप्पमहोरगाण वि॥ मणुस्सणपुंसगस्स णं भंते ! मणुस्सणपुंसएत्ति

[illegible] जघन्य और उत्कृ
[illegible]

[illegible] कायस्थिति का
[illegible] नपुंसकत्व रूप से कितने काल तक

[illegible] नपुंसकोनी तथा
[illegible] प्रकारथी
[illegible]

[illegible] कायस्थितिनुं कथन
[illegible]

कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं कम्मभूमिगभरहेरवयपुव्वविदेहावर-विदेहेसु वि भाणियव्वं। अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसएणं भंते ! अकम्म-भूमिगमणुस्सणपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होई गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तं साहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं सव्वेसिं जाव अंतरदीव-गाणं' ॥सू० १५॥

छाया—नपुसकः खलु भदन्त ! नपुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण तरुकालः नैरयिकनपुंसकः खलु भदन्त ! नैरयिकनपुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरो-पमाणि ! एवं पृथिव्याः स्थितिर्भणितव्या ! तिर्यग्योनिकनपुंसकः खलु भदन्त ! तिर्यग्योनि-कनपुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः, एवमेकेन्द्रियनपुंसकस्य खलु वनस्पतिकायिकस्यापि एवमेव। शेषाणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्क-र्षेणासंख्येयं कालम् असंख्यात उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः, क्षेत्रत असंख्येया लोकाः द्वीन्द्रि-यत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियनपुंसकानां च जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण संख्येयं कालम्। पञ्चेन्द्रि-यतिर्यग्योनिकनपुंसकः खलु भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वम्। एवं जलचरतिर्यक्चतुष्पद-स्थलचरोरःपरिसर्पभुजपरिसर्पमहोरगाणामपि। मनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त ! मनुष्यन-पुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वम्। धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनैक समयमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिः, एव कर्मभूमिकभरतैरवतपूर्वविदेहापरविदेहेषु अपि भणितव्यम्। अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकः खलु भदन्त ! अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवति गौतम ! जन्मप्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण मुहूर्त्तपृथक्त्वम्। संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटि एवं सर्वेषां यावदन्तरद्वीपकानाम् ॥१५॥

टीका—'णपुंसएणं भन्ते नपुंसकः खलु भदन्त ! 'णपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ नपुंसय इति नपुंसकभावस्यपरित्यागेन कालत.कियच्चिरं भवतीति कित्कालं पर्यन्तं नपुंसको नपुंसकरूपेणैव भवतीति प्रश्नः भगवानाह-**गोयमा** इत्यादि, **गोयमा** हे गौतम ! जह-

---

टीकार्थ—गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"**णपुंसएणं भंते !**" हे भदन्त ! नपुंसक यदि अपने नपुंसक भाव का परित्याग नहीं करता है तो वह कब तक नहीं करता है ? कितने काल तक वह नपुंसक अवस्था में रह सकता है ? यह पहिले प्रकट कर दिया गया है कि भवस्थिति और कायस्थिति के भेद से स्थिति दो प्रकार की होती है। कोई भी जन्म पाकर उसमें जघन्य और उत्कृष्ट से जीव जितने काल तक जीवित रहता है वह भवस्थिति है तथा बीच में किसी दूसरी जाति में जन्म न धारण करके किसी एक ही जाति मे-पर्याय में-लगातार जन्म धारण करते रहना यह कायस्थिति है। इसी स्थिति को लेकर यहां गौतम ने प्रभु से ऐसा प्रश्न किया है कि हे भदन्त ! नपुंसक यदि लगातार नपुंसक अवस्था वाला ही होता रहे तो वह कब तक नपुसक अवस्था वाला होता रहता है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु गौतम से कहते है "**गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तरुकालो**" हे गौतम ! नपुंसक की कायस्थिति जघन्य से एक समय की है और उत्कृष्ट से वनस्पति काल

ટીકાર્થ—ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યુ છે કે—'**नपुसणणं भंते**' હે ભગવન્ નપુંસક જો પોતાના નપુંસકભાવનો પરિત્યાગ ન કરે તો તે કયા સુધી ત્યાગ નથી કરતા ? તે કેટલાકાળ સુધી નપુંસક અવસ્થામાં રહી શકે છે ? એ વાત પહેલા પ્રકટ કરા દીધેલ છે—કે ભવસ્થિતિ અને કાયસ્થિતિના ભેદથી સ્થિતિ બે પ્રકારની હોય છે કોઈપણ જન્મ પામીને તેમાં જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટપણાથી જીવ જેટલા કાળસુધી જીવતા રહે છે તે ભવસ્થિતિ છે તથા વચમાં કોઈ બીજી જાતમાં જન્મધારણ કર્યા વિના કોઈ એક જ જાતિમા અર્થાત્ પર્યાયમાં લાગઠ જન્મ ધારણ કરતાં રહેવું એ કાયસ્થિતિ છે આ સ્થિતિને લઈને અહિયાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવો પ્રશ્ન કર્યો છે કે—હે ભગવન્ નપુંસકો જો લાગઠ નપુંસક અવસ્થાવાળા જ થતા રહે તો તે ક્યાં સુધી નપુંસક અવસ્થાવાળા થતા રહે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે- **गोयमा ! जहण्णेणंएक्कं समय उक्कोसेणं तरुकालो**' હે ગૌતમ ! નપુંસકોની કાયસ્થિતિ જઘન્યથી એક સમયની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળ પ્રમાણ—અનંતકાળની છે આ કથનનુ તાત્પર્ય એ છે કે—કોઈ જીવ ઉપશમ શ્રેણીપર આરૂઢ થાય અને ત્યાં તેણે નપુંસકવેદનો ઉપશમ કરી દીધો અને પછી તે ત્યાથી પતિત થાય

न्नेणं एक्कं समयं जघन्येनैकं समयम् तत्रैकं समयता उपशमश्रेणीसमाप्तौ सत्यामवेदकत्वे सति उपशम श्रेणीत. प्रतिपततो नपुंसक वेदोदयसमयानन्तरं कस्य चिन्मरणात् तथा मृतस्यावश्य देवोत्पादे पुंवेदोदय सद्भावात् इति । **उक्कोसेणं तरुकालो** तरुकालो वनस्पतिकालः, तत्र वनस्पति कालः, आवलिकाऽसंख्येय भागगतसमयराशिप्रमाणासख्येय पुद्गल परावर्त प्रमाणः । सामान्यतो नैरयिकनपुंसकस्य कायस्थिति दर्शयितुमाह-- **णेरइय०** इत्यादि, **णेरइय णपुंसएणंभन्ते** नैरयिकनपुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह **गोयमा** इत्यादि, **गोयमा** हे गौतम ! **जहन्नेणं दस वाससहस्साइं** जघन्येन दशवर्ष सहस्त्राणि नैरयिकनपुसको नैरयिकनपुसकरूपेण भवतीति । **उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरो वमाइं** उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । **एवं पुढवीए ठिई भाणियव्वा** एवं पृथिव्याः स्थितिर्भणितव्या.

प्रमाण अनन्त काल की है । तात्पर्य यह है कि कोई जीव उपशम श्रेणीपर आरूढ हुआ—वहां उसने नपुंसक वेद का उपशम कर दिया और फिर वह वहां से पतित हुआ तब उसको नपुसक वेद का उदय हो गया और यह उदय उसको कम से कम एक समय तक रहा—बाद में इसका मरण हो गया तो वह इस स्थिति में मर कर देव गति में देव रूप से उत्पन्न हो गया—वह उत्पन्न होने पर इसके पुरुष वेद का उदय हो गया । यहां जो उत्कृष्ट से वनस्पति काल प्रमाण इसका काल कहा गया है वह आवलिका के असख्यातवे भाग में जितनी समयो की राशि होती है तत्प्रमाण असख्यात पुद्गल परावर्त रूप है । इसमे अनन्त उत्सर्पिणी अनंत-अवसर्पिणियां समाप्त हो जाती है । अब सूत्रकार सामान्य से नैरयिक नपुसक की कायस्थिति का कथन करते है—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है **'णेरईय णपुंसएणं भंते !'** हे भदन्त ! नैरयिक नपुंसक की कायस्थिति कितने काल की है ? उत्तर में प्रभु कहते है—**गोयमा ? जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं"** हे गौतम ! नैरयिक नपुंसककी

ત્યારે તેને નપુંસકવેદનો ઉદય થઈ ગયો અને તે ઉદય તેને ઓછામા ઓછો એક સમયસુધી રહે અને પછી તેનું મરણુ થઈ જાય તો તે આ સ્થિતિમાં મરીને દેવગતિમાં દેવ પણાથી ઉત્પન્ન થઈ જાય તે ત્યાં ઉત્પન્નથયા પછી તેને પુરૂષ વેદનો ઉદય થઈ જાય. અહિયાં જે ઉત્કૃષ્ટપણાથી વનસ્પતિકાળ પ્રમાણુ તેનો કાળ કહ્યો છે, તે આવલિકાના અસંખ્યાતમા ભાગમાં સમયોની જેટલી રાશી હોય એટલા પ્રમાણુ અસંખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત રૂપ છે. તેમાં અનંતઉત્સપિણી અને અનંતઅવસપિણીયો સમાપ્ત થઈ જાય છે

હવે સૂત્રકાર સામાન્યપણાથી નૈરયિક નપુંસકોની કાયસ્થિતિનું કથન કરે છે. -આમાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—"**णेरइय नपुंसपणं भंते !**" હે ભગવન્! નૈરયિક નપુંસકોની કાય સ્થિતિ કેટલાકાળની છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"**गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं**" હે ગૌતમ ! નૈરયિક નપુંસકોની કાયસ્થિતિ જઘન્યથી તો દસ હજાર વર્ષની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી તેત્રીસ-

अत्र पुढवीए पृथिव्याः, इति जातावेकवचनम्, तेन पृथिवीनामिति रत्नप्रभादि पृथिवी स्थितनैरयिकाणां पूर्वस्थिति सूत्रे स्थितिः भवस्थितिरुक्ता साऽत्र भणितव्या–कथयितव्या। अयंभाव.—रत्नप्रभादितमतमापर्यन्तसप्तपृथिवीस्थनैरयिकाणां यावती यस्यां पृथिव्यां सामान्यतो विशेषतः, जघन्यत उत्कृष्टतश्च भवस्थितिरुक्ता तावती कायस्थितिरत्र वाच्या, नैरयिकाणा भवस्थितेर्व्यतिरिक्ताया अन्यस्या कायस्थितेरसंभवादिति । तथाहि—रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक नपुंसकाना स्थिति जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षत एकं सागरोपमम् ।१। एवम्–शर्कराप्रभाया जघन्यत एकं सागरोपममुत्कर्षतस्त्रीणि सागरोपमाणि २ । वालुकाप्रभायां जघन्यतस्त्रीणि सागरोपमाणि, उत्कर्षतः सप्त सागरोपमाणि ३, पङ्कप्रभायां जघन्यत

कायस्थिति जघन्य से तो दस हजार वर्ष की है और उत्कृट से तैतीस सागरोपम की है, यहां जो भवस्थिति है वही कायस्थिति के रूप में प्रकट की गई है. क्योंकि नारक जीवो में और देवो में कायस्थिति नहीं होती है। जो वहा भवस्थिति है वही कायस्थिति रूप होती है इसका कारण यही है कि नारक मरकर नारक नही होता है और देव मरकर देव नहीं होता है. एवं पुढवीए ठिई भाणियव्वा" इसी प्रकार पृथिवीकी स्थिति कहनी चाहिये। 'पुढवीए' यहा जाति में एकवचन है जिससे ऐसा जानना चाहिये कि पृथिवियों की अर्थात रत्नप्रभादि तमतमा पर्यन्त सातो पृथियो के नैरयिको की जिसकी जितनी भवस्थिति कही है वही यहा कायस्थिति कह देनी चाहिये, क्योकि नैरयिको के भवस्थिति के अतिरिक्त दूसरी कोई कायस्थिति नहीं होती है, उनकी जो भवस्थिति है वही कायस्थिति होती है। वह स्थिति इस प्रकार है—रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिक- नपुंसकोकी स्थिति जघन्य से दस हजार वर्षो की उत्कृष्ट से एक सागरोपकी है, इसी प्रकार शर्करा पृथिवी में जघन्य से एक सागरोपमकी और उत्कृष्ट से तीन सागरोपम की २, वालुका प्रभा पृथिवी में जघन्य से तीन सागरोपम की और उत्कृष्ट से सात सागरोपम की

સાગરોપમની છે અહિયાં જે ભવસ્થિતિ એજ કાયસ્થિતિના રૂપમા પ્રગટકરવામા આવી છે. કેમ કે—નારક જીવોમાં અને દેવોમાં કાયસ્થિતિ હોતી નથી ત્યા જે ભવસ્થિતિ છે, એજ-કાયસ્થિતિ રૂપ હોય છે. એનું કારણ એજ છે કે—નારકો મરીને નારક થતા નથી. અને દેવ-મરીને દેવથતા નથી. "एवं पुढवीए ठिई भाणियव्वा" એજ પ્રમાણે પૃથ્વીકાયિકોની સ્થિતિ કહેવી જોઈએ "पुढवीए" અહિયા જાતિમા એક વચનનો પ્રયોગ કર્યો છે તેથી પૃથ્વીયોની તેમ સમજવું જોઈએ અર્થાત્ રત્નપ્રભા વિગેરે તમતમા પર્યન્ત સાતે પૃથ્વીઓના નૈરયિકોની એટલેકે જેની જેટલીભવસ્થિતિ કહીહોય એજ અહિયા કાયસ્થિતિમા કહેવુ જોઈએ કેમકે–નૈરયિકોને ભવસ્થિતિ વિના બીજી કોઈ કાયસ્થિતિ હોતી નથી. તેઓને જે ભવસ્થિતિ છે, એજ કાયસ્થિતિ હોય છે તે સ્થિતિ આ પ્રમાણે છે. રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોની સ્થિતિ જઘન્યથી દસ હજાર વર્ષોની છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ એક સાગરોપમની છે. ૧ એજ પ્રમાણે શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીમાં જઘન્યથી એક સાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી ત્રણ સાગરોપમની છે. એજ પ્રમાણે વાલુકાપ્રભા પૃથ્વીમાં જઘન્યથી ત્રણ સાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૭ સાત સાગરોપમની છે, ૩ પંચપ્રભા પૃથ્વીમાં જઘન્યથી સાત સાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી દસ સાગરો-

सप्त सागरोपमाणि उत्कर्षतो दश ४, धूमप्रभायां जघन्यतो दशसागरोपमाणि, उत्कर्षत. सप्तदश ५, तमःप्रभापृथिव्यां जघन्यतः सप्तदशसागरोपमाणि उत्कर्षतो द्वाविंशतिः ६, अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसकानां स्थितिर्जघन्यतो द्वाविंशतिः सागरोपमाणि, उत्कर्षत-स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि इति ॥ स्थितिं दर्शयति–'तिरिक्खजोणिय णपुंसएणं भंते' तिर्यग्-योनिकनपुंसकः खलु भदन्त ! 'तिरिक्खजोणिय णपुंसगत्ति कालओ केवच्चिरं होइ' तिर्यग् योनिकनपुंसक इति कालतः कियच्चिरं भवति इति प्रश्न., भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ? 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् 'उक्कोसेणं वणस्सई कालो

३, पंकप्रभा पृथिवी में जघन्यसे सात सागरोपम की उत्कृष्ट से दस सागरोपम की ४, धूमप्रभा पृथिवी में जघन्य से दस सागरोपम की उत्कृष्ट से सत्रह सागरोपमकी, तमःप्रभा पृथिवी में जघन्य से सत्रह सागरोपम की और उत्कृष्ट से बाईस सागरोपमक ६, और अधः सप्तमो तमतमा पृथिवी के नैरयिको की स्थिति जघन्य से बाईस सागरोपम की उत्कृष्ट से तैतीस सागरो-पम की है। इस प्रकार सब पृथिवियो की स्थिति यहां कहनी चाहिये।

अब सूत्रकार सामान्यत. तिर्यग्योनिक की कायस्थिति का कालमान प्रकट करते है–इसमें गौतमने 'तिरिक्खजोणिय णपुंसए णं भंते ! तिरिय जोणिय णपुंसगत्ति कालओ केवचिरं होई" इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा प्रश्न किया है–हे भदन्त ! तिर्यग्यो-निक नपुंसक यह तिर्यग्योनिक नपुंसक है- इस रूप से कितने कालतक होता रहता है ? अर्थात् तिर्यग्योनिक नपुसक की कायस्थिति का कालमान कितना है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है—'गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो" हे गौतम ! तिर्यग्योनिक नपुसक यदि तिर्यग्योनिक नपुंसक रूप से बराबर होता रहता है तो वह कम से कम एक समय तक होता है और उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल प्रमाण अनन्तकाल

પમની છે ૪ ધૂમ પ્રભા પૃથ્વીમાં જઘન્યથી દસસાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી સત્તરસાગરો પમની છે ૫ તમ પ્રભા પૃથ્વીમાં જઘન્યથી સત્તર સાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૨૨ બાવીસ સાગરોપમની છે. ૬ અને અધઃ સપ્તમી તમતમા પૃથ્વીના નૈરયિકોની જઘન્યસ્થિતિ ૨૨ બાવીસ સાગરોપમની અને ઉત્કૃષ્ટથી ૩૩ તેંત્રીસ સાગરોપમની સ્થિતિ છે આ પ્રમાણે સઘળી પૃથ્વી-ઓની સ્થિતિ અહિયાં કહેવી જોઈએ

હવે સૂત્રકાર સામાન્યપણાથી તિર્યગ્યોનિકની કાય સ્થિતિનો કાલ માન બતાવે છે. ગૌતમ સ્વામીએ તિરિક્ખ જોણિય નપુંસયણં ભંતે ! તિરિય જોણિય ણપુસગત્તિ કાલઓ કેવચ્ચિર હોઈ" આ સૂત્રદ્વારા પ્રભુને એવો પ્રશ્ન પૂછયો છે કે--હે ભગવન્ તિર્યગ્યોનિક નપુંસક આ તિર્યગ્યોનિક નપુંસકની કાય સ્થિતિનો કાળમાન કેટલો છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે કે–"ગોયમા ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो" હે ગૌતમ ! તિર્યગ્યોનિક નપુંસક જો તિર્યગ્યોનિક નપુંસકપણાથી થતા રહે તો તે ઓછામા ઓછા એક સમય સુધી થાય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી—વનસ્પતિકાળ પ્રમાણુ એટલે કે અનંતકાળ સુધી થતા રહે છે. આ

उत्कर्षेण वनस्पतिकालः आवलिकाऽसंख्येयभागगतसमयराशिप्रमाण संख्येय पुद्गल परावर्त प्रमाणा. इति ॥ 'एवं एगिंदियणपुंसगस्स णं' एवम्, एवमेव सामान्यतिर्यग्योनिकनपुंसकवदेव तियग् योनिकमृतस्य सामान्यै केन्द्रियनपुसकस्यापि जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो वनस्पतिकाल प्रमितं कालमानं ज्ञातव्यम् । तत्र विशेष चिन्तायाम् 'वणस्सइ काइयस्स वि एवमेव' वनस्पति कायिकस्यापि एवमेव सामान्यतिर्यग् योनिकनपुसक तुल्यमेव कायस्थितिमान विज्ञेयम जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो वनस्पति काल इति 'सेसाणं' शेषाणामेकेन्द्रियाणा पृथिवीकायिकाप्कायिक-तेजस्कायिकवायुकायिकानां कायस्थिति 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्त' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं' उत्कर्षेणासख्येय कालम् 'असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ कालओ' असख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्य, कालत., खेत्तओ असंखेज्जा लोया' क्षेत्रतोऽसख्याता लोका. ।

पर्यन्त होता रहता है यह वनस्पति काल आवलिका के असख्यातवें भाग में जितने समयो की राशि होती है तत्प्रमाण होता है. इसमे असख्यात पुद्गल परावर्त्त हो जाते है। 'एवं एगिंदियणपुंसगस्स णं'' इसी प्रकार से तिर्यग्योनिक नपुसको में एकेन्द्रिय नपुसक जीव की भी कायस्थिति का कालमान कहा है—जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल प्रमाण अर्थात अनंतकाल का है इसमें अनत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल समाप्त हो जाता है। 'वणस्सइ कायस्स वि एवमेव'' विशेष की अपेक्षा वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियनपुंसक की भी कायस्थिति का कालमान सामान्यत एकेन्द्रिय की कायस्थिति के कालमान जैसा ही है अर्थात अनन्तकाल का है "सेसाणं" शेष—पृथिवीकायिक अपकायिक तेज कायिक और वायुकायिक इनकी कायस्थिति 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं 'असंखेज्जं कालं'' जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से असख्यात काल की है. असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ सप्पिणीओ कालओ खेत्तओ असंखेज्जा लोगा'' इसमें कालकी अपेक्षा असख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी समाप्त हो जाते है तथा क्षेत्र की अपेक्षा असख्यात लोक समाप्त हो

વનસ્પતિકાળ આવલિકાના અસંખ્યાતમા ભાગમા જેટલા સમયોની રાશિ હોય છે, એટલા પ્રમાણની હોય છે આમા અસખ્યાત પુદ્ગલ પરાવર્ત થઈ જાય છે **एवं एगिंदिय णपुंसगस्स णं''** આજ પ્રમાણે તિર્યગ્યોનિક નપુસકોમા એક ઇન્દ્રિયવાળા નપુસક જીવોની કાયસ્થિતિનો કાળમાન છે એટલે કે જઘન્યથી અન્તર્મુહૂર્તનો અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિકાળ પ્રમાણ અર્થાત્ અનંત કાળનો છે. આમા અનત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીકાળ સમાપ્ત થઈ જાય છે. **"वणस्सइकायस्स वि एवमेव"** વિશેષની અપેક્ષાથી વનસ્પતિકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા નપુંસકોની કાયસ્થિતિના કાળમાન પણ સામાન્યતઃ એક ઇન્દ્રિયવાળાની કાયસ્થિતિના કાલમાન પ્રમાણે જ છે અર્થાત અનતકાળનો કાળમાન છે **''सेसाणं''** શેષ પૃથ્વી કાયિક અપકાયિક, તેજ કાયિક અને વાયુકાયિકોની કાય સ્થિતિ **"जहण्णेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं'** જઘન્યથી એક અન્તર્મુહૂર્તની અને ઉત્કૃષ્ટથી અસખ્યાતકાળની છે, **''असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ, असंखेज्जा लोगा''** આમા કાળની અપેક્ષાથી અસખ્યાત ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી સમાપ્ત થઈ જાય છે. તથા ક્ષેત્રની અપેક્ષા અસખ્યાતલોક

'बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णपुंसगाण य' द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियनपुंसकानाञ्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं संखेज्जं कालं' उत्कर्षेण सख्येयं कालम्, स च संख्येय. कालः, संख्येयानि वर्षसहस्राणीति सख्येय सहस्रवर्षपरिमित. प्ररिपत्तव्य इति ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसएणं भंते' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकः खलु भदन्त पंचिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होई' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक इति कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह—गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम ? जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं' उत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वम् तच्च पूर्वकोटिपृथक्त्वं निरन्तरं सप्तभवान् पूर्वकोट्यायुष्कान् नपुंसकत्वेनानुभवत. पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य ज्ञातव्यम् । ततः परमवश्यं वेदान्तरे विलक्षणभवान्तरे सक्रमणं भव-

---

जाते है । 'बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णपुंसगाण य जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जंकालं'' दोइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौइन्द्रिय नपुंसको की कायस्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की है और उत्कृष्ट से सख्यात काल की है । यह सख्यात काल संख्याते हजारों वर्षों का होता है । पंचिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसए णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसएत्ति कालओ केवचिरं होइ'' गौतम ने इस सूत्र द्वारा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक जीव की कायस्थिति कितने काल की है ? ऐसा पूछा है—इसके उत्तर में प्रभु ने ऐसा कहा है—''गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं'' हे गौतम ! पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक जीव की कायस्थिति जघन्य से तो एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से पूर्वकोटिपृथक्त्व की है—दो पूर्व कोटि से लेकर नौ पूर्व कोटि तक की है । यह पूर्व कोटि पृथक्त्व पूर्व कोटि आयुष्य के सात भव नपुंसकपन के अनुभव करने वाले तिर्यग्योनिक नपुंसक की अपेक्षा से समझना चाहिये क्योकि तदनन्तर उसका अवश्य दूसरे वेद—स्त्रीवेद अथवा

સમાપ્ત થઇ જાય છે ''बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णपुंसगाय जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्ज कालं'' બે ઇંદ્રિયવાળા, ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા ચાર ઇંદ્રિયવાળા નપુંસકોની કાયસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી અસખ્યાતકાળના છે આ અસખ્યાતકાળ સંખ્યાત હજારો વર્ષનો હોય છે ' पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसएणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय नपुंसपत्ति कालओ केवच्चिरं होइ'' ગૌતમસ્વામીએ આ સૂત્રદ્વારા પાંચ ઇદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસક જીવોની કાયસ્થિતિ કેટલાકાળની છે ? આ પ્રમાણેનો પ્રશ્ન પૂછ્યો છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે—''गोयमा ! जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्त'' હે ગૌતમ ! પાંચ ઇદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસકજીવોના કાયસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વની છે એટલે કે બે પૂર્વકોટિથી લઇને નવપૂર્વકોટિ સુધીની છે આ પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વ પૂર્વકોટિ આયુષ્યના સાત ભવ નપુંસકપણાનો અનુભવ કરવાવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસકની અપેક્ષાથી સમજવુ જોઇએ. કેમકે—તે પછી તેનું સંક્રમણ બીજા વેદમા એટલેકે સ્ત્રીવેદ અથવા પુરૂષવેદમા અથવા કોઈ જુદા જ પ્રકારના ભવમા અવશ્ય થઈ જાય છે

तीति। 'एवं जलयरतिरिक्ख चउप्पयथलयर उरपरिसप्प महोगाणवि' एवम् पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकवदेव जलचरतिर्यक् चतुष्पदस्थलचरोरःपरिसर्प भुजपरिसर्प महोरगाणामपि जघन्येनान्तर्मुहूर्तप्रमाणा उत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाणा कायस्थितिर्भवतीति ज्ञातव्यम् 'मणुस्स णपुंसगस्स णं 'भंते' मनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त मणुस्सणपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ'मनुष्यनपुंसक इति कालत. कियच्चिर भवति ? इति प्रश्नः, भगवानाह—गोयमा' इत्यादि, गोयमा' हे गौतम ! 'खत्तं'पडुच्च जहन्नेणं अन्तो मुहुत्तं' क्षेत्रं प्रतीत्य क्षेत्राश्रयणेन जघन्येनान्तमुहूर्त्तम् 'उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं' उत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वं द्विपूर्वकोटित आरभ्य नव पूर्वकोटिपर्यन्तमित्यर्थ. 'धम्मचरणं पडुच्च' धर्मचरण प्रतीत्य आश्रित्य तु जहन्नेणं एक्कं समयं

पुरुष वेद मे अथवा किसी विलक्षण भव मे सक्रमण हो जाता है । "एवं जलयरतिरिक्ख चउप्पदथलयरउरपरिसप्पभुयपरिसप्प महोरगाणवि" पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक जीव की तरह ही जलचर तिर्यक् चतुष्पदस्थलचर उरःपरिसर्पभुज परिसर्प, और महोरग, इन नपुंसकों की भी कायस्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त की है और उत्कृष्ट से पूर्व कोटि पृथक्त्व की है। "मणुस्स णपुंसगस्स णं भंते ! मणुस्स णपुंसएत्ति कालओ केवचिरं होइ" हे भदन्त ! मनुष्य नपुसक लगातार मनुष्य नपुंसक अवस्था में कितने काल तक रहता है—अर्थात् मनुष्य नपुसक की कायस्थिति का कालमान कितने काल का है ? उत्तर मे प्रभु कहते है—"गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं" हे गौतम ! क्षेत्र की अपेक्षा करके मनुष्य नपुंसक की कायस्थिति का कालमान कम से कम तो एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और—"उक्कोसेणं पुव्वकोडि पुहुत्तं" उत्कृष्ट से पूर्वकोटि पृथक्त्व का है—दो पूर्व कोटि से लेकर नौ पूर्व कोटि तक का है "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्क समयं उक्कोसेणंदेसूणा पुव्वकोडी"

"एवं जलयर तिरिक्ख चउप्पयथलयर उरपरिसप्प भुयारिसप्प महोरगाणवि" પાંચ ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકજીવની જેમ જ જલચર તિર્યગ્યોનિકો, સ્થલચર—ઉર.પરિસર્પ ભુજપરિસર્પ, અને મહોરગ આ નપુંસકોની કાયસ્થિતિપણ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વની છે. "मणुस्सणपुंसगस्स णं भंते ! मणुस्स णपुंसएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ" હે ભગવન્ મનુષ્ય નપુંસક લાગઠ મનુષ્ય નપુંસકપણામાં કેટલાકાળ સુધી રહે છે? અર્થાત્ મનુષ્ય નપુંસકની કાયસ્થિતિ નો કાળમાન કેટલાકાળનો હોય છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त" હે ગૌતમ ! ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી મનુષ્ય નપુંસકોની કાયસ્થિતિનો કાળમાન ઓછામાં ઓછો એક અંતર્મુહૂર્તનો છે, અને "उक्कोसेणं पुव्वकोडी पुहुत्त" ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિ પૃથક્ત્વનો છે, એટલે કે બે પૂર્વકોટિથી લઇને નવપૂર્વકોટિ સુધીનો છે "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी" તથા ચારિત્રધર્મની અપેક્ષાથી મનુષ્ય નપુંસકની કાયસ્થિતિનુ પ્રમાણ જઘન્યથી એક સમયનુ છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી કંઇક ઓછું પૂર્વકોટિ

जघन्येनैकं समयम् उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी' उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटि' उभयत्र भावना प्राग्वत् 'एवं कम्मभूमिगभरहेरवयपुव्वविदेह अवरविदेहेसु वि भाणियव्वं' एवं सामान्यतो मनुष्य नपुंसकवदेव भरतैरवतपूर्वापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकेष्वपि क्षेत्राश्रयणेन जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त-मुत्कर्षेण पूर्वकोटिपृथक्त्वं धर्मरचण प्रतीत्य तु जघन्येन एकं समयम् उत्कषेण देशोना पूर्वकोटि परिमिता कायस्थिति रिति ॥

'अकम्मभूमिग मणुस्स नपुंसएणं भंते' अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकः खलु भदन्त ? अकम्म-भूमिग मणुस्सणपुंसएत्तिकालओ केवच्चिरं होइ' अकर्म भूमिक मनुष्य नपुसक इति कालतः कियच्चिरं भवतीति प्रश्नः, भगवानाह 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! जम्मणं पडुच्च

तथा–चारित्र धर्म की अपेक्षा लेकर मनुष्य नपुंसक की कायस्थिति का प्रमाण जघन्य से एक समय का है और उत्कृष्ट से कुछ कम पूर्व कोटि का है दोनो स्थान भावना पूर्ववत् समझ लेनी चाहिये। "एवं कम्मभूमिगभरहेरवयपुव्वविदेहअवरविदेहेसु विभाणियव्वं" सामान्य मनुष्य नपुंसक की जैसी ही कर्मभूमि के कर्मभूमि के भरत क्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र, पूर्व-विदेह और पश्चिम विदेह के–जो मनुष्य नपुंसक है–उनकी भी कायस्थिति है। अर्थात् इन सब कर्म भूमिगत मनुष्य नपुंसको की कायस्थिति क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट पूर्व कोटि पृथक्त्व की है। तथा–चारित्र धर्म की अपेक्षा से जघन्य एक समय की है और उत्कृष्ट देशोन पूर्वकोटि की है।

अकम्मभूमिग मणुस्स णपुंसए णं भंते ! अकम्मभूमिग मणुस्स णपुंसएत्ति काल ओ केवचिरं होइ" हे भदन्त ! अकर्म भूमिक मनुष्य नपुंसक लगातार अकर्मभूमिक नपुंसक कितने काल तक होता है ?–अर्थात् अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की कायस्थिति कितने काल की है ? उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

છે. બન્ને સ્થાનોની ભાવના-સમજણ પહેલાં કહ્યા પ્રમાણોની સમજી લેવી. "एवं कम्मभूमिग भरहेरवयपुव्वविदेह अवरविदेहेसु वि भाणियव्वं" સામાન્ય નપુંસકની જેમજ કર્મભૂમિના એટલે કે ભરતક્ષેત્ર, ઐરવતક્ષેત્ર, પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમવિદેહના જે મનુષ્ય નપુંસકો છે, તેઓની પણ કાયસ્થિતિ પણ સમજવી. અર્થાત્ આ ઉપર કહેલ તમામ કર્મભૂમિમાં રહેવાવાળા મનુષ્ય નપુંસકોની કાયસ્થિતિ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી પૂર્વકોટિપૃથક્ત્વની છે તથા ચારિત્રધર્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક સમયની અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વકોટિની છે.

"अकम्मभूमिग मणुस्स णपुंसए णं भंते ! अकम्मभूमिगग मणुस्स णपुंसगत्ति कालओ केवच्चिरं होई" હે ભગવન્ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસક લાગઠ અકર્મભૂમિના નપુંસકપણાથી કેટલાકાળ સુધી રહે છે ? અર્થાત્ અકર્મભૂમિક મનુષ્ય નપુસકની કાયસ્થિતિ કેટલાકાળની હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—'गोयमा ! जम्मणं पडुच्च

जन्म प्रतीत्य—जन्माश्रित्य **जहन्नेणं अन्तो मुहुत्तं** जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् एतावत्कालेऽपि असकृदुत्पादात् **'उक्कोसेणं अन्तो मुहुत्तपुहुत्तं'** उत्कर्षेणान्तर्मुहूर्त्तपृथक्त्वम् द्व्यन्तर्मुहूर्तादारभ्य नवान्तर्मुहूर्तपर्यन्तम्, तदनन्तरं तत्र तथारूपेण उत्पादा भावादिति। **'साहरणं पडुच्च'** संहरणं प्रतीत्य **'जहन्नेणं अन्तो मुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् ततःपरं मरणादि भावात्। **'उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी'** उत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटिरिति **'एवं सव्वेसिं जाव अन्तरदीवगाणं'** एवं सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकवदेव हैमवतहैरण्यवतहरिवर्षरम्यकवर्षदेवकुरूत्तरकुर्वन्तर द्वीपक-

---

उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त पुहुत्तं" हे गौतम! जन्म की अपेक्षा लेकर इनकी कायस्थिति का काल मान कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त्त पृथक्त्व दो अन्तर्मुहूर्त्त से लेकर नौ अन्तर्मुहूर्त्त तक का है। जघन्य से जो यहाँ कालमान कहा गया है वह "इतने भी काल में वह बार बार उत्पन्न हो जाता है" इस अपेक्षा से कहा गया है। तथा—उत्कृष्ट काल जो अन्तर्मुहूर्त्त पृथक्त्व रूप कहा गया—है वह "इतने काल के वाद फिर उस रूप से वह वहाँ उत्पन्न नहीं होता है" इस बात को लेकर कहा गया है। **"साहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पूव्वकोडी"** संहरण की अपेक्षा लेकर, इनकी कायस्थिति का काल जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है क्योंकि उसके वाद उसकी मृत्यु आदि हो जाता है और उत्कृष्ट से देशोन कुछ कम पूर्व कोटि का है। **"एवं सव्वेसिं जाव अन्तर दीवगाणं"** सामान्य अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की जैसी कायस्थिति है वैसी ही सबो की है अर्थात् हैमवत मनुष्य नपुंसक की, हैरण्यवत मनुष्य नपुंसक की, हरिवर्ष मनुष्य नपुंसक की, रम्यक वर्ष मनुष्य नपुंसक की, देवकुरू मनुष्य नपुंसक की, उत्तर कुरू मनुष्य-नपुंसक की और अन्तरद्वीपज मनुष्य नपुंसक की कायस्थित्ति जाननी चाहिये। अर्थात् इन क्षेत्रो के मनुष्य नपुंसको की कायस्थिति जन्म की अपेक्षा लेकर जघन्य से एक अन्त-

---

जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त पुहुत्त" હે ગૌતમ! જન્મની અપેક્ષાથી તેઓની કાયસ્થિતિનો કાળમાન ઓછામાં ઓછો એક અંતર્મુહૂર્તનો છે અને ઉત્કૃષ્ટથી અંતર્મુહૂર્ત પૃથક્ત્વ-એટલે કે બે અંતર્મુહૂર્તથી લઈને નવ અંતર્મુહૂર્ત સુધીનો છે અહિયાં જઘન્યથી જે કાળમાન કહ્યો છે, તે "એટલા પણ કાળમાં તે બરાબર ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.' એ અપેક્ષાથી કહેલ છે. તથા ઉત્કૃષ્ટકાળ જે અંતર્મુહૂર્ત પૃથક્ત્વરૂપ કહેલ છે, તે આટલાકાળ પછી પાછા એ રૂપથી તે ત્યાં ઉત્પન્ન થતા નથી. આ વાતને લઈને કહેલ છે **"साहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी"** સંહરણની અપેક્ષાથી તેઓની કાયસ્થિતિનો કાળ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનો છે કેમ કે—તે પછી તેનુ મરણવિગેરે થઈ જાય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનએટલે કે કંઈક ઓછા પૂર્વકોટિનું છે **'एवं सव्वेसिं जाव अंतर द्दीवगाणं"** સામાન્ય અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોના જેવી કાયસ્થિતિ છે, એજ પ્રમાણેના બધાની જ એટલે કે—હૈમવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકની, રમ્યક વર્ષ ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકોની, દેવકુરૂક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકોની ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય નપુંસકોની અને અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકોની કાયસ્થિતિ

मनुष्यनपुसकानां कायस्थितिरपि जन्म प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण मुहूर्त्त पृथक्त्वम् सहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण देशोना पूर्वकोटि रिति समाप्ता कायस्थिरिति ॥सू० १५।

मूलम्—णपुंसगस्सणंभंते ! केवइयंकालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं । णेरइयणपुंसगस्सणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं तरुकालो रयणप्पभापुढवीनेरइयणपुंसगस्सजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तरुकालो, एवं सव्वेसिंजावअहेसत्तमा । तिरिक्खजोणियणपुंसगस्सजहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्सजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासयभहियाइं पुढवी आउ तेउवाऊणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । वणस्सइकाइयाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जावअसंखेज्जालोया, सेसाणं बेइंदियाणं जावखहयराणंजहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो । मणुस्सणपुंसगस्सखेत्त पडुच्चजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो धम्मचरणं पडुच्चजहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं जावअवड्ढपोग्गलपरियट्टंदेसूणं एवं कम्मभूमिगस्सवि भरहेरवयस्सपुव्वविदेहअवरविदेहकस्सवि । अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगस्स णं भंते केवइयं कालं अंतरं होई ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो, संहरणं पडुच्चजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो एवं जावअंतरदीवगत्ति ॥सू. १६ ॥

मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त्त पृथक्त्व की है। तथा सहरण की अपेक्षा उनकी कायस्थिति जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त की है और उत्कृष्ट से देशोन पूर्व कोटि की है। कायस्थिति का कथन समाप्त हुआ। सूत्र ॥१५॥

इस प्रकार नपुंसको की कायस्थिति का कथन करके अव सूत्रकार इनके अतर का कथन करते है—

જન્મની અપેક્ષાથી અંતર્મુહૂર્ત પૃથક્ત્વની છે. તથા સંહરણની અપેક્ષાથી તેઓની કાયસ્થિતિ જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તની છે અને ઉત્કૃષ્ટથી દેશોનપૂર્વકોટિની છે

કાયસ્થિતિનું કથન સમાપ્ત ॥સૂ૦૧૩॥

આ પ્રમાણે નંપુંસકોની કાયસ્થિતિનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તેઓના અંતરનું કથન કરે છે—

छाया—नपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् , उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्व सातिरेकम्। नैरयिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, उत्कर्षेणतरुकालः । रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकस्यजघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेणतरुकालः एवं सर्वेषां यावदधः सप्तमी। तिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकम् । एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् उत्कर्षेण द्वे सागरोपमसहस्रे संख्येयवर्षाभ्यधिके । पृथिव्यप्तेजोवायूनां जघन्येनान्तर्मुहूर्तम्, उत्कर्षेण वनस्पतिकालः । वनस्पतिकायिकानां जघन्येनान्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षेणासंख्येयं कालं यावदसंख्येया लोकाः शेषाणां द्वीन्द्रियादिनां यावत् खेचराणां जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः । मनुष्यनपुंसकस्य क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः, धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेणानन्तं कालं यावदपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं देशोनम् । एवं कर्मभूमिकस्यापि भरतैरवतस्य पूर्वविदेहापरविदेहकस्यापि । अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त ! कियन्तं कालमन्तरं भवति ? गौतम ! जन्मप्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, उत्कर्षेणवनस्पतिकालः । संहरणं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः, एवं यावदन्तरद्वीपकः ॥ सू० १८ ॥

"णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ" इत्यादि ।

टीकार्थ - हे भदन्त ! नपुंसक अवस्थाको प्राप्त जीव नपुंसक अवस्था से छूटकर फिर कितने काल बाद नपुंसकवेद वाला होता है ? उत्तर में प्रभु कहते है—**"गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं"** हे गौतम ! नपुंसक जीव को नपुसक वेद से छूटने पर पुन: नपुसक होने में अन्तर कम से कम एक अन्तमुहूर्त्त का है और अधिक से अधिक कुछ अधिक सागरोपम शत पृथक्त्व का है । क्योकि पुरुष नपुंसकआदिका काल इतना ही सभवित है । इस विषय में इस प्रकार कहा है—

"पुरिसणपुंसा संचिट्ठणंतरे सागर पुहुत्तं"

इसका अर्थ ऐसा है—निरन्तर रूप से रहने का नाम सचिट्ठणा है इसका दूसरा नाम कायस्थिति भी है । पुरुष और नपुंसक की क्रम से अर्थात् पुरुष की संचिट्ठणा निरन्तर से एक स्थान में रहना एवं नपुंसक का अन्तर उत्कृष्ट से सागरोपम शत पृथक्त्व का होता है।

"णपुंसगस्सणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होई" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ નપુંસક થયેલો જીવ નપુંસક અવસ્થાથી છૂટીને તે પછી કેટલાકાળ પછી નપુંસક વેદ વાળો થાય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે "ગોયમા ! જહણ્ણેણં અંતોમુહુત્તં ઉક્કોસેણં સાગરોવમસમ્પુહુત્ત સાતિરેગં' હે ગૌતમ ! નપુંસક જીવને નપુંસક વેદથી છૂટયા પછી ફરીથી પાછા નપુંસક થવામાં કમથી કમ એક

टीका— णपुंसगस्स णं भंते'' नपुंसकस्य खलु भदन्त !·**'केवइयं कालं अंतरं होइ'** कियन्तं कालमन्तरं भवति नपुंसको भूत्वा नपुंसकात्, च्युतः सन् पुनः कियता कालेन नपुंसको भवतीत्यर्थः इति प्रश्नः भगवानाह **'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति एतावता पुरुषादिकालेन नपुसकत्वस्य व्यवधानादिति। **'उक्कोसेणं सागरोवमसय पुहुत्तं सातिरेगं'** उत्कर्षतः सागरोपमशतपृथक्त्वम् सातिरेकम् पुरुषादि कालस्यैतावत एव समभवात् ।

''णेरइय णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ'' हे भदन्त ! नैरयिक नपुंसक का कितने काल का अन्तर होता है ? उत्तर में प्रभु कहते है— **''गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तरुकालो''** हे गौतम ! नैरयिक नपुंसक का अन्तर जघन्य से एक अन्तर मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से तरुकाल प्रमाण—अनन्त काल का है। जघन्य से जो एक अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर यहां प्रकट किया गया है उसका तात्पर्य ऐसा है कि नैरयिक नपुंसक सप्तम नरक पृथिवी से निकल कर तन्दुलमत्स्य आदि के भवो में एक अन्तर्मुहूर्त्त तक जन्म धारण करके फिर सप्तम पृथिवी का नैरयिक नपुंसक हो जाता है। तथा—वनस्पति—काल प्रमाण अनन्त काल का उत्कृष्ट अन्तर यहां कहा गया—है उसका तात्पर्य ऐसा है कि नैरयिक नपुंसक, नरक भव से निकल कर परम्परा से निगोदादि के भवो में आकर अनन्त काल तक वहाँ रहता है और फिर वह वहाँ से मरकर पुनः नैरयिक नपुंसक हो जाता है। यह अन्तर कथनसामान्य से नैरचिकनपुंसक का है **''रयणप्पभापुढवी नेरइयनपुंसगस्स''** विशेष की चिन्ताने

અંતરમુહૂર્તનું અંતર હોય છે. અને વધારેમાં વધારે કંઇક વધારે સાગરોપમ શત પૃથક્ત્વનું છે. કેમકે—પુરૂષ નપુંસક વિગેરેનો કાળ એટલોજ સંભવે છે. આ સબંધમાં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે. **''पुरिसणपुंसा संचिट्ठणतरे सागरपुहुत्तं''** આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે. —નિરંતર પણાથી રહેવાનું નામ સંચિટ્ઠણા છે, આનું બીજું નામ કાયસ્થિતિ પણ છે. પુરૂષ અને નપુંસકની કાય સ્થિતિ ક્રમથી અર્થાત્ પુરૂષની સંચિટ્ઠણા નિરંતરથી એક સ્થાનમાં રહેવું અને નપુંસકનું અંતર ઉત્કૃષ્ટથી સાગરોપમ શત પૃથક્ત્વનું હોય છે,

''णेरइय णपुंसगस्स ण भंते ! केवईय कालं अतरंहोई'' હે ભગવન્ નૈરયિક નપુંસકોને કેટલા કાળનું અંતર હોય છે ? આ પ્રશ્નાના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—**''गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तरुकाले''** હે ગૌતમ ! નૈરયિક નપુંસકોનું અંતર જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનુ છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી તરૂકાળ પ્રમાણ એટલે કે—અનંતકાળનું છે. અહિયાં જે જઘન્યથી એક અંતરમુહૂર્તનું અંતર કહ્યું છે, તેનું તાત્પર્ય એવું છે કે—નૈરયિક નપુસક સાતમી નરક પૃથ્વીથી નીકળીને તંદૂલ મત્સ્ય વિગેરેના ભવોમાં એક અંતર્મુહૂર્ત સુધી જન્મ ધારણ કરીને તે પછી સાતમી

पुरिसणपुंसगा संचिट्ठणं तरं सागर पुहुत्तं' इति वचनात् पुरुषनपुंसका. संचिट्ठणान्तरं सागर पृथक्त्वम् पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् सागरोपमशतपृथक्त्वमिति पुरुषस्य नपुंसकस्य च यथाक्रममिति पुरुषस्य सचिट्ठणा सातत्येनावस्थानं नपुंसकस्यान्तरं च उत्कर्षेण सागरोपम-शतपृथक्त्वमिति 'णेरइय णपुंसगस्स णं भंते' नैरयिकनपुंसकस्य खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं अंतरं होइ' कियन्तं कालमन्तरं भवति नारकनपुंसकस्येति प्रश्न भगवानाह—'गोयमा'

रत्नप्रभापृथिवी के नैरयिकनपुंसक की स्थिति कितने काल की होती है ? इसके उत्तर में भगवान कहते हैं—हे गौतम ! 'जहन्नेण अंतोमुहुत्तं' जघन्य से अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति होती है और "उक्कोसेणं तरुकालो" उत्कर्ष से तरुकाल अर्थात् वनस्पति काल की होती है अर्थात् अनन्त काल की स्थिति होती है। "एवं सव्वेसिं जाव अहे सत्तमा" इसी प्रकार शर्करा प्रभा के नैरयिक नपुंसक से लेकर सातवीं पृथिवी के नैरयिक नपुंसकों का भी अन्तर है। अर्थात् जघन्य से अन्तर एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से अन्तर तरुकाल प्रमाण अनन्तकाल का है "तिरिक्खजोणिय णपुंसगस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं" तिर्यग्योनिकनपुंसक का अन्तर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से अन्तर सातिरेक कुछ अधिक सागरोपमशत पृथक्त्व का है। यहाँ सातिरेक—कुछ अधिक जो कहा है, वह कितने नपुंसक भवों को लेकर समझना चाहिये क्योंकि उतने काल के बाद नपुंसक नाम कर्म के उदय का अभाव हो जाने से स्त्री भाव अथवा पुरुष भाव को प्राप्त हो जाता है। "एगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं" एकेन्द्रियतिर्यग्नपुंसक का

પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસક થઇ જાય છે. તથા વનસ્પતિ કાળ પ્રમાણુ અનંતકાળનુ ઉત્કૃષ્ટ અંતર અહિયા કહ્યું છે. તેનુ તાત્પર્ય એવું છે કે—નૈરયિક નપુંસક નરક ભવથી નીકળીને પરંપરાથી નિગોદ વિગેરેના ભવોમાં આવીને અનંતકાળ સુધી ત્યા રહે છે. અને તે પછી તે ત્યાથી મરીને ફરીથી નૈરયિક નપુંસક બની જાય છે. આ અંતર કથન સામાન્યપણાથી નૈરયિક નપુંસકોનું કહેલ છે, रयणप्पभा पुढवीनेरइय-नपुंसगस्य" વિશેષ પ્રકારના કથનમાં રત્ન પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોની સ્થિતિ કેટલાકાળની હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં ભગવન્ કહે છે કે—હે ગૌતમ ! "जहण्णेण अंतोमुहुत्त" જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્તની સ્થિતિ હોય છે. અને 'उक्कोसेणं तरुकालो" ઉત્કૃષ્ટથી તરૂકાળ અર્થાત્ વનસ્પતિ કાળની હોય છે. એટલે કે અનંતકાળની સ્થિતિ હોય છે. "एव सव्वेसिंजाव अहेसत्तमा" એજ પ્રમાણે શર્કરા પ્રભાના નૈરયિક નપુંસકોથી લઈને સાતમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોનું અંતર પણ હોય છે. અર્થાત જઘન્યથી એક મુહૂર્તનું અંતર હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી તરૂકાળ પ્રમાણુ એટલે કે અનંત કાળનુ અંતર છે. "तिरक्खजोणिय णपुंगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवमसयं

इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम 'जहन्नेणं अंतो-मुहुत्तं जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् सामान्यतोनारकनपुंसकस्यान्तरं भवति, सप्तमनरकपृथिवीतः उद्वृत्य तन्दुलमत्स्यादि भवेदन्तर्मुहूर्त्तं स्थित्वा पुनरपि सप्तमनरकपृथिव्या गमनश्रवणादिति उक्कोसेणं तरुकालो' उत्कर्षेण तरुकालो वनस्पतिकाल इत्यर्थः नरकभवादुद्वृत्य परम्परया निगोदेषु गतस्य तत्रानन्तरं कालं यावदवस्थानादिति 'रयणप्पभा पुढवीनेरइयणपुंसगस्स विशेषचिन्तायां रत्नप्रभापृथिवीनैरयिक नपुंसकस्य कियन्तं कालमन्तरं

अन्तर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से सख्यातवर्ष अधिक दो हजार सागरोपम का है. इसका कारण यह है कि एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक जीव मरकर त्रस कायो में उत्पन्न होजावे, वहां उसके फिर एकेन्द्रि- योनिय की प्राप्ति में व्यवधान करने वाला त्रसकाय का स्थिति काल उत्कर्ष से भी संख्यात वर्ष अधिक दो हजार सागरोपम का ही होता है। यह एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक का अन्तर कथन सामान्य से है—विशेष से अन्तर कथन इस प्रकार है—"पुढवी आउ तेउ वाउणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो" पृथिवी कायिकनपुंसक का अप्कायिक नपुंसक का तैजस कायिक नपुंसक का और वायुकायिक का अन्तर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त का है और उत्कृष्ट से वनस्पति काल प्रमाण का है. "वणस्सइ काइयाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं" वनस्पति कायिक नपुंसक का अन्तर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और "उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव असंखेज्जलोया" उत्कृष्ट से असख्यात काल का यावत् असंख्यात लोक का है. यह असख्यातकाल कालकी अपेक्षा असख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी रूप होता है और क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात लोक प्रमाण होता है. उत्सर्पिणी अवसर्पिणी का असख्यातपना इस प्रकार से जानना चाहिये जैसे असख्यातलोकाकाश के प्रदेशों में से प्रति-समय एक एक प्रदेश का अपहार करने पर जब समस्त प्रदेशो के समाप्त होने में जितनी उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अवसर्पिणियाँ व्यतीत हों उतनी उत्सर्पिणी अवसर्पिणिया

मुहुत्तं साइरेग" તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોનુ અંતર જઘન્યથી એક અતર્મુહૂર્તનુ છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી સાતિરેક એટલે કે કંઇક વધારે અંતર કહ્યુ છે, તે કેટલાક નપુંસક ભવોને લઈ ને સમજવુ જોઈએ, કેમકે—એટલા કાળ પછી નપુ સક નામ કર્મના ઉદયનો અભાવ થઈ જવાથી સ્ત્રી ભાવ અથવા પુરૂષ ભાવ ને પ્રાપ્ત થઈ જાય છે. "एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं" એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યંગ નપુંસકોનું અંતર જઘન્યથી એક અતમુહૂર્તનુ હોય છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી સ ખ્યાત વર્ષ અધિક બે હજાર સાગરોપમનુ છે. તેનું કારણ એ છે કે—એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુ સક જીવ મરીને ત્રસકાય પણામાં ઉત્પન્ન થઈ જાય ત્યાં પાછા તેને એક ઇંદ્રિય જીવોની યોનિ પ્રાપ્ત કરવામા વ્યવધાન કરવા વાળા ત્રસ કાયનો સ્થિતિ કાળ ઉત્કૃષ્ટથી પણ સંખ્યાત વર્ષ અધિક બે હજાર સાગરોપમનો જ હોય છે. આ એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુ સકોનું અંતર સામાન્યથી કહ્યુ છે. વિશેષ પ્રકારથી અંતરનુ કથન આ પ્રમાણે છે.

भवति ' भगवानाह– जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं जघन्येन अंतोर्मुहुत्तम् उक्कोसेणं तरुकालो उत्कर्षेण तरुकाल वनस्पतिकालपरिमितमन्तरं भवति । एवं सव्वेसिंजाव अहेसत्तमा एवं सर्वेषां यावदध सप्तमी रत्नप्रभापृथिवीनारकनपुंसकवदेव सर्वेषां शर्कराप्रभादित आरभ्याध: सप्तमी नारकनपुंसकपर्यन्तानामन्तरं वक्तव्यम् । 'तिरिक्ख जोणिय णपुंसगस्स' तिर्यग्योनिक नपुंसकस्य 'जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति 'उक्कोसेणं सागरोवमसय पुहुत्तंसाइरेगं' उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकमन्तरं भवति सातिरेकत्वं च तदुपरि कतिपयवर्षपुगल भाविवेदितव्यम् तत परं नपुंसकनामकर्मोदयाभावतो नियमतः स्त्रीपुरुषभावगमनात्

असंख्यात कहलाती है क्योंकि वनस्पति के भव से निकलकर जब अन्यभवो में जीव घूमता है वहां उसका पूर्वोक्त असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकाल तक अवस्थान होता है, उसके बाद संसारी जीव के नियम से फिर वनस्पति काय में उत्पत्ति होती है । "सेसाणं बेइंदियादीणं जाव खहयराणं" इसी तरह शेष–द्वीन्द्रियनपुंसकों का यावत् तेइन्द्रियनपुंसको का चौइन्द्रिय नपुंसकोंका पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जलचर नपुंसको का स्थलचर नपुंसकोका, खेचर नपुंसको का अन्तर "जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो" जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है और उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल का प्रमाण है. "मणुस्स णपुंसगस्स" सामान्य से मनुष्यनपुंसक का अन्तर "खेत्तं पडुच्च" क्षेत्र की अपेक्षा लेकर "जहन्नेणं" जघन्य से तो "अंतो मुहुत्तं एक अन्तर्मुहूर्त्त का है तथा "उक्कोसेणं वणस्सईकालो" उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल तक का है "धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं" चरित्र धर्म की अपेक्षा लेकर मनुष्य नपुंसक का अन्तर जघन्य से एक समय का और उत्कृष्ट से अनन्तकाल का है. "जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं" इस अनन्तकाल में अनन्त उत्सर्पिणी काल और अनन्त अवसर्पिणी काल समाप्त हो जाता है । तथा क्षेत्र की अपेक्षा अनन्त लोक समाप्त हो जाते हैं ।

"पुढवी आउ तेउवाउणं जहण्णेण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालोग" पृथ्वीकायिक नपुंसकोनु अप्कायिक नपुंसकोनुं तेजस्कायिक नपुंसकोनुं अने वायु कायिक नपुंसकोनुं अंतर जघन्यथी એક अंतर्मुहूर्तनुं छे. अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाળ प्रमाणनुं अंतर छे "वणस्सइकाइयाण जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं" वनस्पति कायिक नपुंसकोनुं अंतर जघन्यथी એક अंतरमुहूर्त नु छे, अने 'उक्कोसेण असंखेज्जं कालं जाव असंखेज्जलोया" उत्कृष्टथी असंख्यात काળनुं अंतर यावत् असंख्यात लोकनुं छे असंख्यात काળनी अपेक्षाथी असंख्यात उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीओ रूप होय छे अने क्षेत्रनी अपेक्षाथी असंख्यात लोक प्रमाण होय छे. उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीनुं असंख्यात पणुं आ प्रमाणेनुं समजवुं जेमके—असंख्यात लोक ना प्रदेशोमांथी प्रतिसमय એક એક प्रदेशना अपहार करवाथी बहार कहाडवाथी ज्यारे सघળા प्रदेशोना समाप्त थवामां जेटली उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीयो वीती जाय

'एगिंदियतिरिक्ख जोणिय णपुंसगस्स' विशेषचिन्तायां सामान्यत एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य नपुंसकत्वस्यान्तरंतु **'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं** जघन्येनान्तर्मुहूर्तकालो भवति अन्तर्मुहूर्तप्रमितिद्वीन्द्रियादि कालेन व्यवधानात् । **उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं'** उत्कर्षेण द्वे सागरोपमसहस्रे भवतः एकेन्द्रियतिर्यग् योनिकनपुंसकस्य नपुंसकत्वस्यान्तर, मुत्कर्षतः सख्येयवर्षाभ्याधिके द्वे सागरोपमसहस्र भवतः एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकजीवो भूत्वा त्रसकायेषूत्पन्नोभवेत् तत्र तस्य पुनरेकेन्द्रियत्वव्यवधायकस्य त्रसकायस्थितिकालस्योत्कर्षतोऽपि संख्येयवर्षाधिकद्विसहस्र सागरोपम प्रमितस्यैव संभवात् इति ॥ विशेषत एकेन्द्रियनपुंसकानां

और देशोन कुछ कम अपार्ध पुद्गलपरावर्त काल भी समाप्त हो जाता है **एव कम्मभूमिगस्स वि"** इसी तरह कर्म भूमिक नपुंसक का भी अन्तर क्षेत्र की अपेक्षा लेकर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है क्यो कि सर्वजघन्य लब्धिपातका काल एक समय का ही होता है । और उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल रूप है. तथा—चारित्र धर्म की अपेक्षा लेकर मनुष्य नपुंसक का अन्तर जघन्य से एक समय का औद उत्कृष्ट से अनन्तकाल का है. यावत् देशोन अपार्ध पुद्गल परावर्त काल

એટલી ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીયો અસંખ્યાત કહેવાય છે કેમકે—વનસ્પતિના ભવથી નીકળીને જીવ જ્યારે બીજા ભવોમાં ફરે છે, ત્યા પૂર્વોક્ત અસંખ્યાત ઉત્સર્પિણી અને અપસર્પિણીકાળ સુધી તેનું અવસ્થાન હોય છે તે પછી સંસારી જીવની ઉત્પત્તી નિયમથી વનસ્પતિકાયમાં થાય છે. **"सेसाणं बेइंदियादीणं जावखहयराण"** આ જ પ્રમાણે શેષ— બે ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકોનું યાવત્, ત્રણ ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકોનું, ચાર ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકોનું પાંચ ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક જલચર નપુસકોનું, સ્થલચર નપુંસકોનુ અને ખેચર નપુંસકોનું અંતર **"जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्स कालो"** જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું છે, અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાલ પ્રમાણનું છે. **"मणुस्सणपुंसगस्स"** સામાન્યપણાથી મનુષ્ય નપુંસકનું અંતર **'खेत्तं पडुच्च"** ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી **"जहण्णेणं"** જઘન્યથી તો **"अंतो मुहुत्तं"** એક અંતર્મુહૂર્તનું છે, તથા **"उक्कोसेणं वणस्सइ कालो"** ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળ સુધીનું અંતર છે **"धम्मचरणंपडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणं तं कालं"** ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી મનુષ્ય નપુસકોનુ અંતર જઘન્યથી તો એક સમયનુ અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંત કાળનું છે **'जाव अवड्ढ पोग्गालपरियट्टं देसूणं"** દેશોન અર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત આ અનંતકાળમાં અનંત ઉત્સર્પિણી કાળ અને અનંત અવસર્પિણી કાળ સમાપ્ત થઈ જાય છે. તથા ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી અનતલોક સમાપ્ત થઈ જાય છે અને દેશાન એટલે કે—કંઈક ઓછો અપાર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત કાળ સમાપ્ત થઈ જાય છે એટલે અર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત સમાપ્ત થઈ જાય છે.

'पुढवीआउतेउवाऊणं' पृथिव्यप्तेजोवायुकायिकनपुसकाना नपुंसकत्वान्तरम जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम् 'उक्कोसेण उत्कर्षेण तु वनस्पतिकालः ॥ 'वणस्सइकालो' वणस्सई काइयाणं' वनस्पतिकायिकनपुसकानाम् नपुंसकत्वस्यान्तरंतु 'जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहूर्तं भवति उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव असंखेज्जालोया' उत्कर्षेणासख्येयं कालं यावदसख्याता लोका।, सचासख्येयः कालः असख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः क्षेत्रतोऽसख्येयाः लोका इति । उत्सर्पिण्यवसर्पिणीनामसख्येयत्वं यथा— असख्येयलोकाकाशप्रदेशानां प्रतिसमयमेकैकप्रदेशापहारेण समस्तप्रदेशापहारेण समस्तप्रदेशापहारे यावत्य उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यो व्यतीता भवन्ति तावत्य उत्सर्पिण्यवसर्पिण्योऽसंख्येयाः प्रोच्यन्ते । वनस्पतिभवात्प्रच्युतस्यान्यभवेपूत्कर्षत एतावत्काल पर्यन्तभवस्थान सभवात् तत्पश्चात् ससारिजीवस्य नियमतो भूयो वनस्पतिकायिक समुत्पत्तिर्भवेदिति 'सेसाणं बेइंदिया दीणं जाव खहयराणं' शेषाणां कथितैकेन्द्रियचतुरिन्द्रिय पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजलचरस्थलचरखेचराणाम् 'जहन्नेण अंतोमुहुत्तं जघन्येनांन्तर्मुहूर्तम् उक्कोसेणं वणस्सईकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालः द्वीन्द्रियनपुंसकत आरभ्य खेचर नपुसक पर्यन्ताना नपुंसकत्वान्तरमुत्कर्षतो वनस्पतिकालपरिमितं भवतीति ॥ 'मणुस्स णपुंसगस्स' सामान्यतो मनुष्यनपुंसकस्य नपुंसकत्वस्यान्तरतु 'खेत्तं पडुच्च' क्षेत्रं प्रतीत्याश्रित्य जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येनान्तर्मुहुर्तमात्रं भवति तथा—'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालं यावद् अन्तरं भवति । 'धम्मचरणंपडुच्च' धर्मचरणं प्रतीत्य तु 'जहन्नेणंएक्कंसमयं' जघन्येन एक समयम् 'उक्कोसेणंअणंतंकालं' उत्कर्षेण अनन्त कालम् 'जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टंदेसूणं' यावदपार्द्धपुद्गलपरिवर्त्त देशोनम् । यावत्पदग्राह्यघटितोऽयमर्थः—अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः क्षेत्रतोऽनन्ता लोका अपार्द्धपुद्गलपरावर्तो देशोन इति । एतावत्कालपर्यन्तस्योत्कर्षतोऽन्तरं भवतीति । 'एवं कम्मभूमिगस्सवि' एवमेव सामान्यतः कर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकस्यापि क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालः, धर्मचरण प्रतीत्य जघन्येनैकसमयम् , लब्धिपातस्य सर्वजघन्यस्यैकसामयिकत्वात्, उत्कर्षेणानन्त कालं यावदपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तं देशोनम् 'भरहेरवयस्सविपुव्वविदेहअवरविदेहगस्सवि' एवं भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यनपुसकस्यापि पूर्वविदेहापरविदेह-

---

तक का है "भरहेरवयस्स" भरत और ऐरावत क्षेत्र के मनुष्य के मनुष्यनपुसकका भी अन्तर सामान्य मनुष्यनपुंसक के जैसा ही है "पुव्वविदेह अवर विदेहस्स वि" जिस प्रकार सामान्य कर्मभूमिक मनुष्यनपुसक का अन्तर कहा है उसी प्रकार पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह के मनुष्यनपुसक का भी अन्तर क्षेत्र और चरित्र धर्म को भी आश्रित करके

एव कम्मभूमिगस्स वि" એજ પ્રમાણે કર્મભૂમિના નપુંસકોનુ અંતર પણ ક્ષેત્રની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનુ છે કેમકે—બધીજ જઘન્ય લબ્ધિપાતનો કાળ એક સમય નો છે. અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળરૂપ છે તથા ચારિત્ર ધર્મની અપેક્ષાથી મનુષ્ય નપુંસકોનુ અંતર જઘન્યથી એક સમયનુ અને ઉત્કૃષ્ટથી અનંત કાળનુ છે યાવત્ દેશોન

कमनुष्यनपुंसकस्यापि प्रत्येकं सामान्यतो मनुष्यनपुंसकवदेवान्तरं जघन्योत्कर्षाभ्यां क्षेत्रधर्माश्रयणेन च ज्ञातव्यमिति ॥ अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगस्स णं भंते अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकस्य खलु भदन्त ! **'केवइयंकालअंतरंहोइ'** कियन्तं कालमन्तरं भवति नपुंसकत्वस्येति प्रश्नः, भगवानाह– **'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'जम्मणं पडुच्च'** जन्मप्रतीत्य–आश्रित्य **'जहन्नेणं-अंतो मुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तम्, जन्मापेक्षयाजघन्येनान्तर्मुहूर्तमात्रमन्तरम्, एतावतैव गत्यन्तरादिकालेन व्यवधानभावात्, **'उक्कोसेणंवणस्सइकालो'** उत्कर्षेण वनस्पतिकालंयावदन्तरं भवतीति । **'संहरणंपडुच्च'** सहरणं प्रतीत्य **'जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं'** जघन्येनान्तर्मुहूर्तमन्तरं भवति तच्चैवं भवति–कोऽपि कर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकः केनापि अकर्मभूमौ सहृतः सचाकर्मभूमौ स्थितिमत्वादकर्मभूमिक इति कथ्यते, ततः कियत्कालानन्तरं तथाविधबुद्धिपरावर्तनभावतः पुनरपि कर्मभूमौ सहृतः तत्र चान्तर्मुहूर्तं स्थापयित्वा पुनरपि, अकर्मभूमावानीत इत्येवं रूपेण सहरणापेक्षया अन्त-

---

जघन्य एवं उत्कृष्ट रूप से जानना चाहिए, **अकम्मभूमिगमणुस्सण पुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ"** हे भदन्त ! अकर्मभूमिक मनुष्यनपुंसक का अन्तर कितने काल का होता है ? **"गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो"** हे गौतम ! जन्म की अपेक्षा लेकर जघन्य से अन्तर एक अन्तर्मुहूर्त्त का है क्योंकि इसके गत्यन्तरादिको लेकर इतने ही काल का व्यवधान पडता है और उत्कृष्ट से अन्तर वनस्पतिकाल तक है **"संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं"** संहरण की अपेक्षा लेकर अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक का अन्तर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त का है यह ऐसे है—कोई कर्मभूमिक मनुष्यनपुंसक किसी के द्वारा अकर्मभूमि में हरण कर ले जाया गया हो वहाँ ठहरने के कारण वह वहां अकर्मभूमिक कहलाया अब कुछ काल के वाद तथाविध बुद्धि के परावर्तन भाव से वह कर्मभूमि में वापिस ले आया गया यहां यह एक अन्तर्मुहूर्त्त काल तक रहा वाद में पुनः उसका अकर्मभूमि में अपहरण

અપાર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત કાળ સુધીનું છે. દેશ ઉણો અર્ધ પુદ્ગલ પરાવર્ત **'भरहेर वयस्स"** ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકોનું અંતર પણ સામાન્ય નપુંસકોના કથન પ્રમાણે જ છે. **"पुव्वविदेह अवरविदेहस्स वि"** જે પ્રમાણે સામાન્ય કર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોનું અંતર કહ્યું છે, એજ પ્રમાણે પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહના મનુષ્ય નપુંસકોનું અંતર પણ ક્ષેત્ર અને ચારિત્ર ધર્મનો આશ્રય કરીને જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ પણાથી સમજવું. **"अकम्मभूमिगमणुस्स णपुंसगस्स णं भंते ! केवईयं कालं अन्तरंहोइ"** હે ભગવન્ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોનું અંતર કેટલા કાળનું હોય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે— **"गोयमा ! जम्म णं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्स कालो"** હે ગૌતમ ! જન્મની અપેક્ષા જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્તનું અંતર છે કેમકે– તેમની ગત્યંતર વિગેરેને લઈને એટલા જ કાળનું વ્યવસાન પડે છે અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળનું અંતર

मुहूर्तकालमन्तरं भवतीति ॥ 'उक्कोसेणं वणस्सइकालो' उत्कर्षेण वनस्पतिकालः । 'एवं जाव अंतरदीवगत्ति' एवं यावदन्तरद्वीपक इति । यथा सामान्यतोऽकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकस्यान्तरं कथितं तथैव यावत्पदेन हैमवतहैरण्यवतहरिवर्षरम्यकदेवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकानां तथा अन्तरद्वीपकमनुष्यनपुंसकाना च जन्मापेक्षया संहरणापेक्षया च जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण वनस्पतिकालपरिमितमन्तरं ज्ञातव्यमिति ॥सू० १६॥

हो गया—इस अपेक्षा से यहा अन्तरमुहूर्त्त का काल जघन्य से कहा गया है तथा- उक्कोसेणं वणस्सइ कालो" उत्कृष्ट से अन्तर वनस्पति काल तक का कहा गया है "एवं जाव अंतरदीवगत्ति उसी प्रकार का अन्तर यावत् अन्तर द्वीपज मनुष्य नपुसक भी जानना चाहिए। जैसा अन्तर सामान्यतः अकर्मभूमिक मनुय नपुंसक का कहा है उसी तरह अन्तर हैमवत क्षेत्र के मनुष्य नपुसक का हैरण्यवत क्षेत्र के मनुष्य नपुसक का हरिवर्ष क्षेत्रके मनुष्य नपुसक का रम्यक वर्ष क्षेत्र के मनुष्य नपुंसक का देवकुरु के मनुष्यनपुंसक का और उत्तर कुरु क मनुष्यनपुसक का और अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुसक के भी जन्म की अपेक्षा लेकर जघन्य से एक अन्तर्मुहूर्त्त तक का और उत्कृष्ट से वनस्पतिकाल तक का जानना चाहिए।१३

થાય છે, 'संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्त" સંહરણની અપેક્ષાથી અકર્મ ભૂમિના મનુષ્ય નપુસકોનું અંતર જઘન્યથી એક અ તર્મુહૂર્તનું છે, તે આ પ્રમાણે છે કે —કોઈ કર્મ ભૂમિના મનુષ્ય નપુંસક કોઈના દ્વારા અકર્મભૂમિમા હરણ કરીને લઈ જવામા આવેલ હોય અને ત્યા રહેવાના કારણે તે ત્યા અકર્મભૂમિક કહેવાયા છે તે પછી કંઈ કાળ પછી તથા વિધ —તે પ્રકારની બુદ્ધિના પરાવર્તન—ફેરફારના ભાવથી તે કર્મભૂમિમા પાછા લાવવામાં આવ્યા હોય અને ત્યા તે એક અંતર્મુહૂર્ત કાળ સુધી રહેલ હોય અને તે પછી ફરીથી તેનું અપહરણ અકર્મભૂમિમાં થયુ હોય આ અપેક્ષાથી અહિયાં અ તર્મુહૂર્તનો કાળ જઘન્યથી કહ્યો છે. તથા "उक्कोसेण वणस्सइः कालो" ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળ સુધીનુ અંતર કહ્યું છે. "एवं जाव अन्तरदीव गत्ति" એજપ્રમાણેનુ અંતર યાવત્ અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકોનુ પણ સમજવુ. જેવુ અ તર સામાન્યપણાથી અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોથી કહ્યુ છે. એજ પ્રમાણેનું અ તર હૈમવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકોનું હૈરણ્યવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુસકોનુ હરિ ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુ સકોનું, રમ્યક વર્ષ ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકોનુ દેવકુરૂના મનુષ્ય નપુંસકોનું અને ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય નપુંસકોનુ અને અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુ સકોનુ પણ જન્મની અપેક્ષાથી જઘન્યથી એક અંતર્મુહૂર્ત સુધીનું અને ઉત્કૃષ્ટથી વનસ્પતિ કાળ સુધીનું સમજી લેવુ. ॥ સૂ૦ ૧૪॥

सामान्यतो विशेषतश्च नपुंसकानामन्तरं निरूप्य सम्प्रति–सामस्त्येन नारकतिर्यङ्मनुष्यनपुंसकानामल्पबहुत्वमाह––'एएसिणं' इत्यादि,

मूलम्––'एएसिणं भंते ! णेरइयणपुंसगाणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं मणुस्सणपुंसगाणयकयरेकयरेहिंतो जावविसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवामणुस्सणपुंसगाणयकयरेकयरेहिंतोजावविसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सणपुंसगा णेरइयणपुंसगाअसंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणियणपुंसगाअणंतगुणा। एएसिणं भंते ! रयणप्पभापुढवीणेरइयणपुंसगाणं जावअहेसत्तमपुढविणेरइयणपुंसगाणयकयरेकयरेहिंतोजावसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थो वा अहेसत्तमपुढविणेरइयणपुंसगा छट्ठपुढविणेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा जावदोच्चपुढविणेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा। इमीसेरयणप्पभाएपुढवीएणेरइयणपुंसगाअसंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पुढविक्काइयजाववणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं बेइंदियतेइंदियचउरिंदियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगाणंजलयराणं थलयराणं खहयराणयकयरेकयरेहिंतोजावविसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थो वा खहयरतिरिक्खजोणियणपुंसगा थलयरतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा जलयरतिरिक्खजोणियणपुंसगासंखेज्जगुणा चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाविसेसाहिया तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया तेउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया, आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया, वाउक्का इयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया वणस्सइयकाइयं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा अणंतगुणा.॥ एएसि णं भंते ! मणुस्सणपुंसगाणं कम्मभूमिगणपुंसगाणं अकम्मभूमिगणपुंसगाणं अंतरदीवगणपुंसगाणय कयरे कयरेहिंतोअप्पावा बहुया तुल्लावा

विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाअंतरदीवगअकम्मभूमिकमणुस्स-णपुंसगा देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दोविसं खेज्जगुणा, एवं जावपुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दोविसंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! णेरइयणपुंसगाणं रयणप्पभापुढवीने-रइयणपुंसगाणं जावअहेसत्तमापुढवीणेरइयणपुंसगाणं तिरिक्खजोणि यणपुंसगाणं एगेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पुढविक्काइय एगिंदि यतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जाव वणस्सइक्काइयएगेंदियतिरिक्खजोणियण पुंसगाणं, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्सणपुंसगाणं कम्मभूमिगाणं अकम्मभूमिगाणं अंतरदीवगाणयकयरेकयरेहिंतोअप्पावाबहुयावा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थो वा अहेसत्तमपुढवीणेरइयणपुंसगा छट्ठपुढवीणेरइयणपुंसगाअसंखेज्जगुणा जावदोच्चपुढवीणेरइयणपुंसगाअ-संखेज्जगुणा अंतरदीवगमणुस्सणपुंसगाअसंखेज्जगुणा देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दोविसंखेज्जगुणा जावपुव्वविदेहअवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दोविसंखेज्जगुणा. रयणप्पभापुढवीणेरइणपसगा असंखेज्जगुणा, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्ज गुणा, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणपसगा संखेज्जगुणा, जलयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा. चउरिंदियतिरिक्खजो-णियणपुंसगा विसेसाहिया, तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया, बेइंदितिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया। तेउक्काइय एगिंदियतिरि-क्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा, पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजो-णियणपुंसगा विसेसाहिया आउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियपुंसगा-विसेसाहिया, वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया, वणस्सइक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा' ॥सू. १७॥

छाया--एतेषां खलु भदन्त! नैरयिकनपुंसकानां तिर्यग्योनिकनपुंसकानां मनुष्य नपुंसकानां च कतरे कतरेभ्योविशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका मनुष्यनपुंसकाः नैरयिक

नपुंसका असंख्येयगुणाः तिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाः। एतेषां खलु भदन्त ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानां यावदधः सप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसकानां च कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः अधः सप्तम पृथिवीनैरयिकनपुंसकाः षष्ठपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः यावद् द्वितीयपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः एतेषां खलु भदन्त ! तिर्यग्योनिकनपुंसकानां पृथिवीकायिकयावद्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिनपुंसकानां द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां जलचराणां स्थलचराणां खेचराणा च कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः खेचरतिर्यग्योनिकनपुसकाः स्थलचरतिर्यग्योनिकनपुंसकाः' संयेख्यगुणाः, जलचरतिर्यग्योनिकनपुंसकाः सख्येयगुणाः, चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसका विशेषधिकाः द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका. विशेषाधिकाः । तेजस्का कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसविशेषाधिकाः वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्यो निकनपुंसका अनन्तगुणाः । एतेषां खलु भदन्त ! मनुष्यनपुंसकानां कर्मभूमिकनपुंसकानाम् अकर्मभूमिकनपुंसकानामन्तरद्वीपकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः, देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकाद्वयेऽपि संख्येयगुणाः, एवं यावत्पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाद्वयेऽपि संख्येयगुणाः ॥ एतेषां खलु भदन्त ! नैरयिकनपुंसकानांरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानां यावदधःसप्तम पृथिवीनैरयिकनपुंसकानां तिर्यग्योनिकनपुंसकानामेकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकानां पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां यावद्वनस्पतिकायिकनपुंसकानां द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकानां जलचराणां स्थलचराणां खेचराणां मनुष्यनपुंसकानां कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपकानां च कतरेकतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम! सर्वस्तोका अधः सप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसकाः, षष्ठपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणायां वद्द्वितोयपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंखयेयगुणाः, अ तरद्वीपकमनुष्यनपुंसका असंखयेयगुणाः, देवकुरूत्तरकुर्वकर्म भूमिकमनुष्यनपुंसका द्वयेऽपि संखयेयगुणाः,यावत्‌विपूर्वदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाद्वयेऽपि संख्येयगुणाः,। रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकाअसंख्येयगुणाः, खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाअअसख्येयगुणाःस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यगयोनिकनपुंसका असखयेयगुणाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिकनपुंसकाः संखयेयगुणाः, जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः, चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, त्रीन्द्रियतियग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका विशेषाधिकाः, तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यगयोनिकनपुसका असंख्येयगुणाः. पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका विशेषाधिकाः, वनस्पतिकायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाः ॥ सू० १७॥

इस प्रकार सामान्य और विशेष से नपुसको का अन्तर निरूपण कर अब सूत्रकार नारक तिर्यञ्च और मनुष्य नपुंसको का अल्प बहुत्व कहते है –

આ પ્રમાણે સામાન્ય અને વિશેષ પ્રકારથી નપુ સકોના અ તરનું નિરૂપણુ કરીને હવે સૂત્રકાર નારક, તિર્ય ચ અને મનુષ્ય નપુ સકોના અલ્પ બહુપણુ કહે છે.

टीका 'एते सिणं भंते' एतेषाम्—अग्रे वक्ष्यमाणानां खलु भदन्त ! 'णेरइयणपुंसगाणं' नैरयिक नपुंसकानाम्—'तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' तिर्यग्योनिकनपुंसकानाम, 'मणुस्सणपुंसगाणय' मनुष्यनपुंसकानां च सामान्यानां नारकतिर्यङ्मनुष्यनपुंसकानाम् 'कयरे कयरे हिंतो' कतरे कतरेभ्यः 'जाव विसेसाहियावा' यावद्विशेषाधिका वा यावत्पदेन—अल्पा वा बहुका वा तुल्या वेत्येषां सग्रहो भवति, तथा च—हे भदन्त ! सामान्यतो नारकतिर्यङ्मनुष्यनपुंसकेषु मध्ये कस्यापेक्षया कस्याल्पत्वं बहुत्व, बहुत्वं तुल्यत्वं विशेषाधिकत्वं वा भवतीत्यल्पबहुत्वविषयकः प्रथमः प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोका—सर्वापेक्षया न्यूनाः 'मणुस्सणपुंसगा' मनुष्यनपुंसका भवन्तीति । श्रेण्यसख्येयभागवर्त्तिप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति । 'णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' मनुष्यनपुंसकापेक्षया नैरयिकनपुंसकापेक्षया असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशौ तद्गतप्रमाणवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशिर्भवति तावत्प्रमाणसु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणीषु

एएसिणं भंते ! णेरइयणपुंसगाणं तिरिक्ख जोणिय णपुंसगाणं इत्यादि सूत्र-१४

टीकार्थ—गौतम ने इस सूत्र द्वारा ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! इन नैरयिकनपुंसको के तिर्यग्योनिकनपुंसकों के और मनुष्यनपुंसको के बीच में "कयरे कयरे हिंतो" कौन किन से "जाव विसेसाहिया" यावत् अल्प है बहुत है, तुल्य है अथवा विशेषाधिक है ? अर्थात्-हे भदन्त सामान्य रूप से नारक तिर्यञ्ज और मनुष्यनपुंसकों में से कौन किसकी अपेक्षा अल्प है ? कौन किसकी अपेक्षा बहुत है ? कौन किनकी अपेक्षा बराबर है ! और कौन किनकी अपेक्षा विशेषाधिक है ? उत्तर में प्रभु कहते है—"गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसगा" हे गौतम ! सब से कम मनुष्यनपुंसक है क्योकि इनका प्रमाण आकाश श्रेणी के असख्यातवे भाग में जितनी प्रदेशराशि है उतना कहा गया है "णेरइयणपुंसगा' असंखेज्जगुणा" मनुष्य नपुंसको की अपेक्षा नैरयिक नपुसको का प्रमाण असख्यातगुना अधिक है क्योकि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेशराशि जो प्रथम वर्गमूल होता है उस प्रथम वर्गमूल को द्वितीयवर्गमूल से गुणित करने पर अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेशराशि में जितनी प्रदेश राशि निष्पन्न होती है उतने प्रमाणवाली घनीकृत लोक की एक प्रदेशवाली श्रेणियो में जितने आकाश प्रदेशों की सख्या हो—उतने नैरयिक

"एएसिं णं भंते ! णेरइयणपुंसगाणं तिरिक्ख जो णियणपुंसगाण" इत्यादि

टीकार्थ—गौतम स्वामीએ આ સૂત્ર દ્વારા પ્રભુને એવુ પૂછ્યુ છે કે - હે ભગવન્ આ નૈરયિક નપુંસકોમા, તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા અને મનુષ્ય નપુસકોમાં "कयरे कयरे हिंतो" કોણ કોનાથી "जाव विसेसाहिया" યાવત્ અલ્પ છે, કોણ કોનાથી વધારે છે, કોણ કોના બરોબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે ? અર્થાત્ હે ભગવન્ સામાન્ય પણાથી નારક તિર્યગ્ય અને મનુષ્ય નપુંસકોમા કોણ કોનાથી અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે છે ? અને કોણ કોની બરોબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિય છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરપાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थो वा मणुस्स णपुंसगा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા મનુષ્ય નપુસકો છે. કેમકે—તેઓનું પ્રમાણ આકાશ શ્રેણીના અસંખ્યાત ભાગમાં

यावन्तो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणकत्वात्, नारकनपुंसकानामिति। **'तिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा'** तिर्यग्योनिकनपुंसकाः मनुष्यनपुंसकापेक्षया अनन्तगुणा अधिका भवन्ति निगोदजीवानामनन्तानन्तत्वादिति ॥ सामान्यतो नपुंसकाल्पबहुत्वं प्रदर्श्य सम्प्रति—केवलनैरयिकनपुंसकविषयक द्वितीयमल्पबहुत्वं प्रदर्शयितुमाह—**'एएसिणं'** इत्यादि, **'एएसिणं भंते'** एतेषां खलु भदन्त ! **रयणप्पभापुढवी णेरइय णपुंसगाणं'** रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानाम्, **'जाव अहे सत्तमपुढवीणेरइय णपुंसगाणय'** यावदधः सप्तमतमतमापृथिवी नैरयिकनपुंसकानां च अत्र यावत्प-

---

नपुंसक है। **"तिरिक्ख जोणियणपुंसगा अणंत गुणा"** नैरयिक नपुसको की अपेक्षा तिर्यग्योनिक नपुंसक अनन्त गुनाअधिक है। क्योकि तिर्यग्योगिकनपुंसको में निगोदजीव भी आजाते है— और निगोद जीव अनन्त होते है। इस तरह सामान्यरूप से नपुंसको का अल्प बहुत्व प्रकट करके अब सूत्रकार केवल नैरयिक नपुंसको का द्वितीय अल्प बहुत्व प्रकट करते है—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—**"एएसिणं भंते। रयणप्पभा पुढवी णेरइया णपुंसगाणं जाव अहे सत्तमपुढवी नेरइय णपुंसगा ण य"** हे भदन्त! इन रत्न प्रभा पृथिवीके नैरयिक

જેટલી પ્રદેશરાશિ છે, **"णेरइयणपुंसगा असंखेज्ज गुणा"** મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં નૈરયિક નપુંસકોનું પ્રમાણ અસંખ્યાતપણુ વધારે છે. કેમકે—આંગળ માત્ર ક્ષેત્ર પ્રદેશરાશિ કે જે પહેલું વર્ગ મૂલ થાય છે એ પહેલા વર્ગ મૂળને બીજા વર્ગ મૂળથી ગુણવાથી આંગળ માત્ર ક્ષેત્ર પ્રદેશરાશિમા જેટલી પ્રદેશ રાશિ થાય છે, એટલા પ્રમાણ વાળી ઘની કૃતલોકની એક પ્રદેશ વાળી શ્રેણીમાં જેટલા આકાશ પ્રદેશોની સંખ્યા હોય એટલા નૈરયિક નપુંસકો છે. **"तिरिक्ख जोणिय पुसगा अणंतगुणा"** નૈરયિક નપુંસકો કરતાં તિર્યગ્યોનિક નપુસકો અનંત ગણા છે. કેમકે—તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં નિગોદ જીવો પણ આવી જાય છે અને નિગોદ જીવો અનંત હોય છે. આ પ્રમાણે સામાન્યપણાથી નપુંસકોનું અલ્પ બહુ પણુપ્રગટ કરીને હવે સૂત્રકાર કેવળ નૈરયિક નપુંસકોનુ બીજું અલ્પ બહુ પણુ પ્રગટ કરે છે આમા ગૌતમસ્વામી એ પ્રભુને એવુ પૂછ્યું છે કે—**"एएसिं णं भंते ! रयणप्पभापुढवी णेरनया णपुस-**

टेन शर्कराप्रभावालुकाप्रभापङ्कप्रभाधूमप्रभातमःप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानां सग्रहो भवति 'कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा' कतरे नारकाः कतरेभ्यो नारकेभ्यो यावदल्पा वा वहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वेति द्वितीयाल्पवहुत्वविपयको द्वितीयः प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोका सर्वेभ्यो नारकेभ्योऽल्पाः, 'अहेसत्तमपुढवीणेरइय णपुंसगा' अधःसप्तमतमतमापृथिवी नारकनपुंसकाः, अभ्यन्तरश्रेण्यसख्येयभागवर्तितम प्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति । 'छट्ठपुढवीणेरइय णपुंसगा असंखेज्जगुणा' तमतमापृथिवीनारकनपुसकेभ्यः तम प्रभाख्यषष्ठपृथिवीनैरयिकनपुंसका असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, 'जाव दोच्चपुढवीणेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' यावद् द्वितीयपृथिवीनैरयिकनपुंसका असख्येयगुणा अधिका भवन्ति ।

नपुंसकों से लेकर यावत् शर्करा प्रभा वालुका प्रभा पंक प्रभा धूम प्रभा तमा प्रभा और तमतमा अधः सप्तम पृथिवी के नैरयिकों के बीच में "कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया" कौन नैरयिकनपुंसक किन नैरयिकनपुंकों से यावत् अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक है ? इस प्रकार का यह द्वितीय अल्प बहुत्व विषयक प्रश्न है । इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—"गोयमा ! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवी णेरइय णपुंसगा" हे गौतम ! सबसे कम अध सप्तम पृथिवी के नैरयिक नपुंसक हैं क्योंकि उनका प्रमाण अभ्यन्तर श्रेणी के असख्यातवें भाग में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतना कहा गया है '-छट्ठ पुढवी णेरइय णपुंसगा असंखेज्ज गुणा सातवीं पृथिवी के नैरयिक नपुंसकों की अपेक्षा जो छठवीं तमा नाम की पृथिवी है उसके नैरयिक नपुसक असख्यातगुणे अधिक है । "जाव दोच्च पुढवीणेरइय णपुंसगा असंखे-

---

गाणं जाव अहे सत्तम पुढवी नेरइय नपुंसगाणय" હે ભગવન્ આ રત્ન પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોથી લઈને યાવત્ શર્કરા પ્રભા, વાલુકા પ્રભા, પંક પ્રભા, ધૂમ પ્રભા તમ પ્રભા અને તમસ્તમ પ્રભા-એટલે કે અધ—સપ્તમી પૃથ્વીના નૈરયિકોમાં "कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसा हिया" કયા નૈરયિક નપુંસકો કકતા યાવત્ અલ્પ, વધારે, તુલ્ય અને વિશેષાધિક છે ? આ રીતનો આ અલ્પ બહુપણાના સંબંધમાં બીજો પ્રશ્ન છે. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थों वा अहे सत्तम पुढवी णेरइयण पुंसगा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા અધ, સપ્તમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો છે. કેમકે—આમનું પ્રમાણ આભ્યન્તર શ્રેણીના અસખ્યાતમા ભાગમા જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે, એટલું કહ્યું છે 'छट्ठ पुढवीनेरइय णपुंसगा असंखेज्जगुणा" સાતમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં જે છઠ્ઠા તમા નામની પૃથ્વી છે, તેના નૈરયિક નપુસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. "जाव दोच्च पुढवी णेरइयण पुंसगा असंखेज्ज गुणा 'છઠ્ઠી પૃથ્વી નૈરયિક યાવત્ બીજી પૃથ્વીના

अयं भावः— सप्तमपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया षष्ठपृथिवीनारकनपुंसका असख्यातगुणा अधिका भवन्ति षष्ठपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया पञ्चमपृथिवीनारकनपुंसका असख्येयगुणा अधिका भवन्ति । पञ्चमपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया चतुर्थपृथिवीनारकनपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति । चतुर्थपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया तृतीयपृथिवीनारकनपुंसका असख्यातगुणा अधिका भवन्ति । तृतीयपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया द्वितीयपृथिवीनारकनपुंसका असख्यातगुणा अधिका भवन्ति । सर्वेषामपि एतेषां नारकनपुंसकाना पश्चानुपूर्व्या पूर्वपूर्वनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसख्येयभागापेक्षया पश्चानुपूर्व्याऽग्रेऽग्रे असख्येयगुणा सख्येयगुणश्रेण्यसख्येयभागवर्त्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाण-

---

ज्जगुणा" छट्ठी पृथिवी की अपेक्षा यावत् द्वितीय पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा छठी पृथिवी के नैरयिक नपुंसक असख्यात गुणे अधिक है छठी पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा पांचवीं पृथिवी के नैरयिक नपुंसक असख्यातगुणें अधिक है । पांचवीं पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा चतुर्थ पृथिवी के नैरयिकनपुसक असख्यात गुणे अधिक है । चतुर्थ पृथिवी के नैरयिक नपुंसको को अपेक्षा तृतीय पृथिवी के नैरयिक नपुंसक असख्यात गुणे अधिक है । तृतीय पृथिवी के नैरयिको की अपेक्षा द्वितीय पृथिवी के नैरयिक असंख्यात गुणे अधिक है । इस तरह इन सब नैरयिक नपुंसको का प्रमाण पश्चानु पूर्वी से पूर्व पूर्व नैरयिको के परिमाण का हेतुभूत जो श्रेणिका असख्यात वां भाग है । उस असख्यातवे भाग की पश्चानुपूर्वी से आगे आगे की असख्यात २ गुणित जो श्रेणि है उस श्रेणिका जो असख्यातवां भाग है उस असख्यातवे भाग में रहे हुए आकाश प्रदेशो की राशि के बराबर है । इस प्रकार से यह नैरयिक नपुंसकों का प्रमाण सप्तम पृथिवी के नैरयिको की अपेक्षा छठवीं पृथिवी के नैरयिक नपुंसकों का असख्यात गुणाअधिक निकल आता है । इस की अपेक्षा पांचवीं आदि पृथिवियों के नैरयिक नपुंसको का असख्यात गुणा २ अधिक निकल आता है इसी प्रकार पूर्वानु पूर्वी से द्वितीय पृथिवी के नैरयिको से लेकर आगे २ की पृथिवियो के नैरयिको का प्रमाण

નૈરયિક નપુસકો કરતાં છટ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં પાંચમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં ચોથી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. ચોથી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં ત્રીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસખ્યાત ગણા વધારે છે. ત્રીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતા બીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસખ્યાત ગણા વધારે છે આ પ્રમાણે આ સઘળા નૈરયિકોના પરિમાણના હેતુ રૂપ જે શ્રેણીનો અસંખ્યાતમો ભાગ છે, એ અસંખ્યાતમા ભાગની પશ્ચાનુ પૂર્વીથી પછી પછીની અસખ્યાત અસખ્યાત અસખ્યાત ગણી જે શ્રેણીયો છે તે શ્રેણીનો જે અંખ્યાતમો ભાગ છે, તે અસંખ્યાતમા ભાગમાં રહેલા આકાશ પ્રદેશોની રાશીની બરાબર છે, આ પ્રમાણે આનૈરયિક નપુંસકોનું પ્રમાણ સાતમી પૃથ્વીના નૈરયિકો કરતાં છઠ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુસકોનુ અસંખ્યાત ગણું વધારે

त्वादिति। 'इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए' एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः, 'णेरइय णपुंसगा' नैरयिकनपुंसकाः 'असंखेज्जगुणा' असख्यातगुणाः, द्वितीयशर्करापृथिवीनारकनपुसकापेक्षया एकस्यां रत्नप्रभाख्यप्रथमपृथिव्यां वर्तमाना ये नारकनपुंसकास्ते असख्यातगुणा अधिकाः, अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशौ तद्गतप्रथमवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गुणिते यावान्प्रदेशराशिस्तावत्प्रमाणासु घनीकृतलोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणीषु यावत्, आकाशप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वादिति।

अयं भावः—प्रतिपृथिवीं च पश्चानुपूर्व्या पूर्वोत्तरदक्षिणदिग्भाविनो नारकनपुंसकाः सर्वस्तोकाः, तदपेक्षया दक्षिणदिग्भाविनोऽसख्येयगुणाः यतः पश्चानुपूर्व्या पूर्वपूर्वपृथिवीगतदक्षिणदिग्भाविभ्योऽपि अग्रेऽग्रेतनपृथिव्या पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो नैरयिका असख्येयगुणा भवन्ति।

असंख्यात २ गुणा हीन होता है। ऐसा जान लेना चाहिये। "इमी से रयणप्पभाए पुढवीए" तथा इस रत्नप्रभा पृथिवी के "णेरइय णपुंसगा" नैरयिक नपुंसक द्वितीय शर्करा पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा "असंखेज्जगुणा" असंख्यात गुणे अधिक है। क्यों कि इनका प्रमाण, अङ्गुल मात्र क्षेत्र में जितनी प्रदेश राशि में उसमें रहे हुए प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्ग मूल से गुणित करने पर जितनी प्रदेशराशि आती है। उतने प्रमाण की एक प्रदेशवाली श्रेणियों में जितने आकाश प्रदेश होते है। उतने प्रमाण के रत्न प्रभा पृथिवी के नैरयिक होते हे। इस प्रकार से यह द्वितीय अल्प बहुत्व है। प्रत्येक पृथिवी में पूर्व दिशा में उत्तर दिशा मे, और पश्चिम दिशा में जो नारक नपुंसक है वे सब से कम है। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में जो नारक नपुसक हे वे असंख्यातगुणे अधिक हे। पूर्व पूर्व की पृथिवियों की दक्षिण दिशा के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा पश्चानुपूर्वी से आगे आगे की पृथियो में पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में रहे हुए नैरयिक नपुंसक असख्यात गुणे अधिक है। प्रज्ञापना

નીકળી આવે છે તેના કરતાં પાચમી વિગેરે પૃથ્વીયોના નૈરયિક નપુંસકોનું પ્રમાણ અસંખ્યાત ગણુ પૂર્વાનુપૂર્વિથી બીજી પૃથ્વીના નૈરયિકોથી લઈને પછી પછીના પૃથ્વીયોના નૈરયિકોનું પ્રમાણ અસંખ્યાત પણ હીન-ઓછું હોય છે. તેમ સમજવું. "इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए" તથા આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના "णेरइयण पुंसगा" નૈરયિક નપુંસકો બીજી શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતા "असंखेज्जगुणा" અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે કેમકે—તેનું પ્રમાણુ આંગળ માત્ર ક્ષેત્રમા જેટલી પ્રદેશ રાશિમા રહેલા પહેલા વર્ગ મૂળને બીજા વર્ગમૂળથી ગુણવાથી જેટલી પ્રદેશ રાશિ આવે છે, એટલા પ્રમાણુની એક પ્રદેશ વાળી શ્રેણીયોમા જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે, એટલા પ્રમાણુના રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો હોય છે આ પ્રમાણે આ બીજા અલ્પ બહુપણાનું કથન છે. દરેક પૃથ્વીમાં પૂર્વદિશામા ઉત્તર દિશામાં અને પશ્ચિમ દિશામા જે નારક નપુંસકો છે, તેઓ સૌથી ઓછા છે. તેના કરતાં દક્ષિણુ દિશામાં જે નારક નપુંસકો છે. તેઓ અસંખ્યાત નપુંસકો કરતાં પશ્ચાનુ

तदुक्तम् प्रज्ञापनायाम्—दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा, अहेसत्तमपुढवीनेरइयापुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। दाहिणे हिंतो आहेसत्तमपुढवीणेरइएहिंतो छट्ठाए तमाएपुढवीमेणेरइयापुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणंअसखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहितो तमापुढवीणेरइएहिंतो पंचमाए पुढवीए णेरइयापुरत्थिम पच्चत्थिमउत्तरेणं असखेज्जगुणा, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढवीणेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए णेरइयापुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेज्ज गुणा, दाहिणेणंअसखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभा पुढवीनेरइएहितो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असखेज्जगुणा, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहितो वालुयप्पभा पुढवीनेरइए हिंतोदुइयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असखेज्जगुणा, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहितो सक्करप्पभापुढवीणेरइएहितो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीएणेइ इया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असखेज्जगुणा, दाहिणेणं असखेज्जगुणा' इति ॥

सूत्र में ऐसा ही कहा है —"**दिसाणुणाएणं**" इत्यादि पाठ टीका में संगृही है वहां देखलेना चाहिए, उसका अर्थ इस प्रकार है —'दिशा के अनुपात से अर्थात् दिशा की अपेक्षा को लेकर अध सप्तम पृथिवी के नैरयिक पूर्व पश्चिम और उत्तर दिशा में सबसे कम है। पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नैरयिको की अपेक्षा क्षणि में असंख्यात गुणे अधिक है ॥१॥

अध. सप्तम पृथिवी की दक्षिण दिशा के नैरयिको की अपेक्षा छठी पृथिवी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नैरयिक असंख्यात गुणे है, उनकी अपेक्षा वहां दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणे है ॥२॥ तमा पृथिवी के दक्षिणात्य नैरयिको की अपेक्षा पांचवीं धूम प्रभा के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नैरयिक असंख्यात गुणे होते है, और उनकी अपेक्षा दक्षिण में असख्यात गुणे होते है।३। पांचवी धूम प्रभा के दक्षिणात्य नैरयिको की अपेक्षा चौथी पंक प्रभा पृथिवी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नैरयिक असख्यात गुणे होते है। उनकी अपेक्षा वहां दक्षिण दिशा

પૂર્વથી આગળ આગળની પૃથ્વીયોમા પૂર્વ, ઉત્તર, અને પશ્ચિમ દિશામા રહેલા નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે પ્રજ્ઞાપના સૂત્રમા એજ પ્રમાણે કહ્યું છે "**दिसाणुवाएणं**" ઇત્યાદિ પાઠ ટીકામા સંગ્રહ કરેલો છે. તો તે પાઠ ત્યાંથી જોઇ લેવો. તેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-દિશાના અનુપાતથી અર્થાત્ દિશાની અપેક્ષાથી અધ સપ્તમી પૃથ્વીના નૈરયિક પૂર્વ પશ્ચિમ અને ઉત્તર દિશામા સૌથી ઓછા છે. પૂર્વ. પશ્ચિમ અને ઉત્તર દિશાના નૈરયિકો કરતાં દક્ષિણ દિશામાં અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. ॥૧॥

અધઃ સપ્તમી પૃથ્વીની દક્ષિણ દિશાના નૈરયિકોની અપેક્ષા છઠ્ઠી પૃથ્વીના પૂર્વ, પશ્ચિમ, ઉત્તર દિશાના નૈરયિકો અસખ્યાત ગણા છે. તેના કરતાં ત્યાં દક્ષિણ દિશામા અસંખ્યાત ગણા છે ॥૧॥

અધ સપ્તમી પૃથ્વીના દક્ષિણ દિશાના નૈરયિકોની અપેક્ષા 'છઠ્ઠી મૃથ્વીના પૂર્વ, પશ્ચિમ, ઉત્તરદિશાના નૈરયિકો અસંખ્યાત ગણા છે. તેના કરતાં ત્યા દક્ષિણ દિશામા અસંખ્યાત ગણા છે. ॥૨॥

छाया —दिगानुपातेन सर्वस्तोका अधःसप्तमपृथिवीनैरयिका' पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरं, दक्षिणे असंख्येयगुणाः । दाक्षिणात्येभ्यः अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्यः षष्ठयां तमायां पृथिव्यां नैरयिकाः पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरं असंख्येयगुणाः, दक्षिणे असंख्येयगुणाः । दाक्षिणात्येभ्यस्तमापृथिवीनैरयिकेभ्यः पञ्चम्यां पृथिव्यां नैरयिकाः पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरं असंख्येयगुणा, दक्षिणे असंख्येयगुणा' । दाक्षिणात्येभ्यो धूमप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यश्चतुर्थ्यां पङ्कप्रभाया पृथिव्या नैरयिका' पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरे असंख्येयगुणाः, दक्षिणे असंख्येयगुणाः । दाक्षिणात्येभ्यः पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यस्तृतीयायां वालुकाप्रभायां पृथिव्या नैरयिकाः पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरं असंख्येयगुणा', दक्षिणे असंख्येयगुणा' । दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यो द्वितीयाया शर्कराप्रभायां पृथिव्या नैरयिकाः पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरे असंख्येयगुणा', दक्षिणे असंख्येयगुणाः । दाक्षिणात्येभ्य' शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्य' अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः पौरस्त्यपाश्चात्योत्तरे असंख्येयगुणा', दक्षिणे असंख्येयगुणाः इति ।

में असंख्यात गुणे होते हे ।४। चौथी पंक प्रभा पृथिवी के दक्षिणात्य नैरयिको की अपेक्षा तीसरी वालु का प्रभा पृथिवी के नैरयिक पूर्व पश्चिम उत्तर में असंख्यात गुणे हे उनकी अपेक्षा वहां दक्षिण में असंख्यात गुणे हैं ।५। तीसरी वालु का प्रभा पृथिवी के दक्षिणात्य नैरयिकों की अपेक्षा दूसरी शर्करा प्रभा पृथिवी के नैरयिक पूर्व पश्चिम उत्तर 'में असंख्यात गुणे है, वहां उनकी अपेक्षा दक्षिण में असंख्यात गुणे हैं ।६। दूसरी शर्करा प्रभा पृथिवी के दाक्षिणात्य नैरयिको की अपेक्षा इस रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिक पूर्व पश्चिम उत्तर में असंख्यात गुणे हैं, उनसे भी वहां दक्षिण में नैरयिक असंख्यात गुणे अधिक हैं, उन से भी वहा दक्षिण में नैर-

---

તમા પૃથ્વીના દક્ષિણાત્ય નૈરયિકો કરતાં પાંચમી ધૂમ પ્રભાના પૂર્વ પશ્ચિમ ઉત્તર દિશાના નૈરયિકો અસખ્યાત ગણા હોય છે. અને તેના તેના કરતા દક્ષિણમાં અસખ્યાત ગણા હોય છે, ॥૩॥

પાંચમી ધૂમ પ્રભાના દક્ષિણ દિશાના નૈરયિકો કરતા ચોથી પંક પ્રભા પૃથ્વીના પૂર્વ પશ્ચિમ ઉત્તર દિશાના નૈરયિકો અસંખ્યાત ગણા હોય છે તેના કરતાં ત્યા દક્ષિણ દિશાના નૈરયિકો અસંખ્યાત ગણા હોય છે. ચોથી પંક પ્રભા પૃથ્વીના દક્ષિમ દિશાના નૈરયિકો કરતા ત્રીજી વાલુકા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો પૂર્વ પશ્ચિમ અને ઉત્તરમા અસંખ્યાત ગણા હોય છે. તેના કરતાં ત્યાં દક્ષિણમાં અસંખ્યાત ગણા છે. ॥૫॥ ત્રીજી વાલુકા પ્રભા પૃથ્વીના દક્ષિણ દિશાના નૈરયિકો કરતાં બીજી શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો પૂર્વ, પશ્ચિમ ઉત્તરમા અસંખ્યાત ગણા હોય છે. અને ત્યાં તેના કરતાં દક્ષિણમાં અસંખ્યાત ગણા છે. ॥૬॥ બીજી શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકો પૂર્વ પશ્ચિમ, ઉત્તરમાં અસંખ્યાત ગણા છે. તેનાથી પણ ત્યાં દક્ષિણ દિશામાં અસંખ્યાત ગણા વધારે નૈરયિકો છે. ॥૭॥

अथ तृतीयं तिर्यग्योनिकनपुंसकविषयकमल्पबहुत्वं दर्शयति---'एएसिण भंते' एतेषां खलु भदन्त ! 'तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं' तिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् । 'एगिंदियतिरिक्ख-जोणियणपुंसगाणं' एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् । 'पुढवीकाइयजावचणस्सइकाइयएगिं-दियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' पृथिवीकायिकयावत्, अत्र यावत्पदेन अप्कायिकतेजस्कायिक-वायुकायिकतिर्यग्योनिकनपुंसकानां वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग् योनिकनपुंसकानाम् । 'बेइं दिय-तेइंदियचउरिंदियपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियति-र्यग्योनिकनपुंसकानाम्, 'जलयराणं' जलचरतिर्यग्योनिकनपुसकानाम् 'थलयराणं' स्थलचरति-र्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'खहयराणय' खेचरतिर्यग्योनिकनपुसकानां च 'कयरेकयरेहिंतोजाव-विसेसाहियावा' कतरे कतरेभ्यो यावदल्पा वा बहुका वा तुल्यावा विशेषाधिका वा भवन्तीति

यिक ।७। तृतीय अल्पबहुत्व इस प्रकार से है---"एते सिणं भंते ! तिरिक्ख जोणिय णपुं-सगाणं" हे भदन्त ! इन तिर्यग्योनिक नपुंसको के, "एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंस-गाणं" एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसकों के, "पुढवी जाव" पृथिवी कायिक नपुंसको के--- यावत्--अप्कायिक नपुंसकों के, तैजस कायिक नपुंसको के, वायु कायिक नपुंसको के "वण-स्सइकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं" वनस्पतिकायिक नपुंसको के "बेइंदिय तेइंदिय--चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगाणं" दोइन्द्रिय नपुंसको के, तेइ-न्द्रिय नपुंसकों के, चौइन्द्रिय नपुंसको के, पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसको के, "जलयराणं" जलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसको के "थलयराणं" स्थलचर तिर्यग्योनिक नपुंसको के "खहयराणय" खेचर तिर्यग्योनिक नपुंसको के बीच में "कयरे कयरे हिंतो" कौन किन से अप्पा वा अल्प है ? कौन किनसे "बहुका वा" अधिक है ? कौन किनसे "तुल्ला वा" बराबर है ? और कौन किनसे "विसेसाहिया वा" विशेषाधिक है ? उत्तर में प्रभु कहते है---

હવે ત્રીજા પ્રકારના અલ્પ બહુપણાનું કથન કરવામાં આવે છે.

"एएसिं णं भंते ! तिरिक्खजोणिय णपुंसगा णं" હે ભગવન્ આ તિર્યગ્યોનિક નપુંસ-સકોમા "एगेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा ण" એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસકો મા "पुढवी जीव" પૃથ્વાકાયિક નપુંસકોમા યાવત્ અપકાયિક નપુસકોમાં તૈજસ્કાયિક નપું-સકોમા વાયુકાયિક નપુસકોમાં "वणस्सइ काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा णं" વનસ્પતિ કાયિકોમાં "बेइंदिय ते इंदिय-चउरिंदिय-पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिय ण पुंसगा णं" બેઇંદ્રિય વાળા નપુંસકોમાં, ત્રણ ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકોમાં, પાંચ ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા· "जलयराणं" જલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુ-સકોમાં "थलयराणं" સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક નપુસકોમાં "खहयराणय" ખેચર તિર્યગ્યો નિક નપુંસકોમાં "कयरे कयरे हिंतो !" કોણ કોનાથી "अप्पा वा" અલ્પ છે ? કોણ કોના થી "बहुका वा" વધારે છે ? કોણ કોનાથી "तुल्ला वा" તુલ્ય-સમાન છે ? અને કોણ

प्रश्नः, भगवानाह —'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोकाः 'खहयरतिरिक्खजोणियणपुंसगा' खेचरतिर्यग्योनिकनपुंसकाः, प्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणीगतनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति । खेचरतिर्यग्योनिकनपुंसकापेक्षया 'थलयरतिरिक्खजोणियणपुंसगासंखेज्जगुणा' स्थलचरतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाधिकाः बृहत्तरप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणीगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति । जलयरतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा' स्थलचरनपुंसकापेक्षया जलचरतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाधिकाः बृहत्तमप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणीगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् 'चउरिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया' जलचरनपुंसकापेक्षया चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, असंख्येयोज

"गोयमा ! सव्वत्थो वा खहयर तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा" हे गौतम ! सब से कम खेचर तिर्यग्योनिक नपुंसक है । क्योंकि इनका प्रमाण, प्रतर के असंख्यात भाग वर्ती जो असंख्यात श्रेणियाँ है उन श्रेणियो में जो आकाश प्रदेश राशि है उसके बराबर है । इन खेचर तिर्यग्योनिक नपुंसको की अपेक्षा जो "थलयर तिरिक्ख जोणिय णपुंसगासंखेज्ज गुणा" स्थलचर तिर्यग्योनिक नपुंसक है वे संख्यात गुणें अधिक है । क्योंकि इनका प्रमाण बृहत्तर जो प्रतर है—उस प्रतर के असंख्यातवे भागवर्ती जो असंख्यात श्रेणिया है उन श्रेणियो में जो आकाश प्रदेश राशि है उसके बराबर है । स्थलचर नपुंसको की अपेक्षा "जलयर तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा संखेज्ज गुणा" जो जलचर तिर्यग्योनिक नपुंसक है वे संख्यात गुणे अधिक है । क्योंकि इनका प्रमाण बृहत्तमजो प्रतर है उस प्रतर के असंख्यातवे भागवर्ती जो असंख्यात श्रेणियां है उन श्रेणियो की आकाश प्रदेश राशि के बराबर है । "चउरिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा वि सेसाहिया" जलचर नपुंसको की अपेक्षा चौइन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है । क्योंकि इनका प्रमाण असंख्यात योजन कोटा कोटि प्रमाण आकाश

કોનાથી "विसेसाहिया वा" વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थो वा खहयर तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા ખેચર તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કેમકે—તેનું પ્રમાણ પ્રતરના અસંખ્યાત શ્રેણીયો છે, તે શ્રેણિયોમા જે આકાશ પ્રદેશ રાશિ છે, તેની બરોબર છે આ ખેચર તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતા "थलचर तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा संखेज्जगुणा" સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. કેમકે—તેનુ પ્રમાણ જે બૃહત્તર પ્રતર છે, તે પ્રતરના અસંખ્યાત ભાગવર્તી જે અસંખ્યાત શ્રેણિયો છે, તે શ્રેણિયોમા જે આકાશ પ્રદેશરાશી છે, તેની બરોબર છે સ્થલચર નપુંસકો કરતા "जलचरतिरिक्ख जोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा" જે જલચર તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે. કેમ કે—તેનું પ્રમાણ જે બૃહત્તર પ્રતર છે, તે પ્રતરના અસંખ્યાતમા ભાગવર્તી જે અસંખ્યાત શ્રેણિયો છે, તે શ્રેણિયોના આકાશ પ્રદેશ રાશીની બરાબર છે. "चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" જલચર નપુંસકો કરતા ચાર઼ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે.

जनकोटिकोटिप्रमाणाकाशप्रदेशराशिप्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वादिति **'ते इंदियतिरिक्ख जोणियणपुंसगा विसेसाहिया'** चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकापेक्षया त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्ति प्रभूततर श्रेणीगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति **'बेइंदियतिरिक्ख जोणिय णपुंसगा विसेसाहिया** त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकापेक्षया द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्ति प्रभूततम श्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति **'ते उक्काइयएगिंदियतिरिक्खा असंखेज्जगुणा'** द्वीन्द्रियनपुंसकापेक्षया तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्नपुंसका असख्येयगुणा अधिका भवन्ति सूक्ष्मवादरभेदभिन्नानां तेजस्कायिकनपुंसकानामसख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वादिति ॥ **'पुढवीकाइयएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया'** तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्नपुंसकापेक्षया पृथिवीकायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनि

की जो प्रदेश राशि है। उस प्रदेश राशि प्रमाण जो घनीकृत लोक की एक प्रदेश वाली श्रेणियां है उन श्रेणियो में जितने आकाश के प्रदेश है उतने है **"तेइंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा विसेसाहिया"** चौइन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसको की अपेक्षा तेइन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है। क्योकि इनका प्रमाण प्रभूततर श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि के बराबर है। **"बेइंदियतिरिक्ख जोणिय णपुंसगा विसेसाहिया"** तेइन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसको की अपेक्षा जो दो इन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक है वे विशेषाधिक है क्योकि इनका प्रमाण प्रभूततम श्रेणिगत आकाश की प्रदेश राशि के बराबर है। तेउक्काइय एगिदिय तिरिक्खा असंखेज्जगुणा" द्वीन्द्रिय नपुंसको की अपेक्षा तेजस्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक असंख्यात गुणे अधिक है। क्योकि—सूक्ष्म और बादर तेजस्कायिक नपुसको का प्रमाण असंख्यात लोकाकाश प्रदेशो के बराबर कहा गया है। **"पुढवीकाइयएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया"** तैजस्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुसको की अपेक्षा पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक

કેમકે—તેનું પ્રમાણ અસંખ્યાત યોજન કોટાકોટિ પ્રમાણ આકાશની જે પ્રદેશરાશિ છે તે પ્રદેશ પ્રદેશ રાશિ પ્રમાણ ઘનીકૃત લોકની એક પ્રદેશવાળી જે શ્રેણિઓ છે, તે શ્રેણિઓમાં જેટલાઆકાશના પ્રદેશો છે, એટલા છે **"तेइंदियतिरिक्ख जोणिय णपुंसगाविसेसाहिया"** ચાર ઇંદ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુસકોકરતા ત્રણ ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસકો વિશેષાધિક છે કેમકે—તેનું પ્રમાણ પ્રભૂતતર શ્રેણિમાં રહેલ આકાશ પ્રદેશ રાશિની બરાબર છે **'बेइंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा विसेसाहिया'** ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુસકો કરતા બે ઇંદ્રિય વાળા જે તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકો છે, તેઓ વિશેષાધિક છે. કેમકે તેઓનું પ્રમાણ પ્રભૂતતમ શ્રેણિમાં રહેલ આકાશની પ્રદેશ રાશિની બરોબર છે. **"तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खा असंखेज्जगुणा"** બે ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકો કરતાં તેજસ્કાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. કેમકે—સૂક્ષ્મ અને બાદર તેજસ્કાયિ-

कनपुंसका 'विसेसाहिया' विशेषाधिका भवन्ति प्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वादिति । 'एवं आऊवाऊ' एवम्-एवमेव पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकवदेव अप्कायिका वायुकायिकाः, यथोत्तरं विशेषाधिका भवन्ति तथाहि--पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकापेक्षया अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्ति प्रभूततरासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् । अप्कायिकनपुसकापेक्षया वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, प्रभूततमासंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् । 'वणस्सइकाइय एगिंदियतिरिक्ख जोणिय णपुंसगा अणंतगुणा' वायुकायिकनपुंसकापेक्षया वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका अनन्तगुणा अधिका भवन्ति अनन्तलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति तृतीयमल्पबहुत्वम् ।

नपुंसक "विसेसाहिया" विशेषाधिक है। क्योंकि इनका प्रमाण प्रभूत असंख्यात लोकाकाश के प्रदेशों के बराबर है। "एवं आऊवाऊ एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा अणंतगुणा" पृथिवी कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुसक विशेषाधिक है। क्योकि इनका प्रमाण प्रभूततर असंख्यात लोकाकाश के प्रदेशो के बराबर कहा गया है। अप्कायिक नपुसको की अपेक्षा वायुकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है। क्योंकि इनका प्रमाण प्रभूततम असंख्यात लोकाकाश के प्रदेशों की राशि के बराबर है "वणस्सइकाइय एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगा अणंतगुणा" वायुकायिक नपुसको की अपेक्षा वनस्पति कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक अनन्त गुणे अधिक है। क्योंकि इनका प्रमाण अनन्त लोकाकाश के प्रदेशों के बराबर कहा गया है। इस प्रकार से यह तिर्यग्योनिक नपुंसको का तृतीय अल्पबहुत्व है।

કેનું પ્રમાણ અસંખ્યાત લોકાકાશના પ્રદેશોની બરાબર કહેવામાં આવેલ છે 'पुढवीकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया' તેજસ્કાયિક એક ઈંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતા પૃથ્વી કાયિક એક ઈંદ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસક "विसेसाहिया" વિશેષાધિક છે કેમકે તેનું પ્રમાણ પ્રભૂત અસંખ્યાત લોકાકાશના પ્રદેશોની બરાબર છે. "एवं आऊ वाऊ एगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगा अणंतगुणा" પૃથ્વી કાયિક એક ઈંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસક વિશેષાધિક છે. કેમકે તેઓનું પ્રમાણ પ્રભૂતર અસંખ્યાત લોકાકાશના પ્રદેશોની બરાબર છે અપકાયિક નપુંસકો કરતા વાયુકાયિક એક ઈંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે. કેમકે—તેઓનું પ્રમાણ પ્રભૂતતમ અસંખ્યાત લોકાકાશના પ્રદેશોની રાશિની બરાબર છે "वणस्सइय काइय एगिंदियतिरिक्ख जोणिय णपुंसगाअणंतगुणा" વાયુકાયિક નપુંસકોના કરતા વનસ્પતિકાયિક એક ઈંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અનંતગણા વધારે છે. કેમકે— તેઓનું પ્રમાણ અનંતલોકાકાશના પ્રદેશોની બરાબર છે આ પ્રમાણે આ તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોનું ત્રીજું અલ્પ બહુપણું કહેલ છે

सम्प्रति–मनुष्यनपुंसकविषयकं चतुर्थमल्पवहुत्वमाह—**'एएसि णं'** इत्यादि, **एएसिणं भंते'** एतेषां खलु भदन्त ! **'मणुस्सणपुंसगाणं'** मनुष्यनपुंसकानाम् **'कम्मभूमिग णपुंसगाणं'** कर्मभूमिकनपुंसकानाम् **'अकम्मभूमिगणपुंसगाणं'** अकर्मभूमिकनपुंसकानाम् **'अंतरदीवगाणय'** अन्तरद्वीपकानां च **'कयरे कयरेहिंतो** कतरे कतरेभ्यः अप्पावा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा अल्पावा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिकावेति प्रश्न', भगवानाह–**'गोयमा'** इत्यादि **'गोयमा'** हे गौतम ! **सव्वत्थोवा** सर्वस्तोका', अन्तरदीवग अकम्मभूमिग मणुस्सनपुंसगा अन्तर द्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः, एते च सम्मूर्च्छनजा ज्ञातव्याः, गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यनपुंसकानामन्तरद्वीपेऽसंभवात् गर्भव्युत्क्रान्तिकनपुंसका यदि तत्र भवेयुस्तदा ते कर्मभूमिजा संहृता एव लभ्यन्ते न तु तत्रोत्पत्तिमन्त इति देवउत्तरकुरू अकम्मभूमिगा दोवितुल्ला सखेज्जगुणा अन्तर द्वीपकमनुष्यनपुंसकापेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वेकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति

मनुष्य नपुंसक विषयक चतुर्थ अल्प बहुत्व इस प्रकार से है—**"एएसिणं भंते ! मणुस्सणपुंसगाणं कम्मभूमिगणपुंसगाणं अकम्मभूमिगणपुंसगाणं अंतर दीवगाणय कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहियावा"** इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! मनुष्य नपुंसको के, कर्म्मभूमिक मनुष्य नपुंससको के,अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसको के, और अन्तरद्वीपज मनुष्य नपुंसकों के बीचमें कौन मनुष्य नपुंसक किन मनुष्यनपुंसको से अल्प है ? कौन किनसे अधिक है ? कौन किनके बराबर है ? और कौन किनसे विशेषाधिक है ? उत्तरमें प्रभु कहते है—**"गोयमा ! अंतर दीवग अकम्म भूमिग मणुस्स णपुंसगा"** हे गौतम ! अन्तर द्वीपज जो मनुष्य नपुंसक है–वे **"सव्वत्थोवा"** सबसे कम है– ये अन्तरद्वीपज मनुष्य नपुंसक संमूर्च्छन जन्मवाले होते है. क्योकि गर्भजमनुष्य नपुंसको की अन्तरद्वीपमें सभावना नहीं है. अन्तरद्वीपमें जो गर्भज-मनुष्य नपुंसक हो तो वे कर्मभूमि से सहरण करके

હવે મનુષ્ય નપુંસકોના સંબંધમાં ચોથું અલ્પ બહુ પણું કહેવામાં આવે છે **"एएसिणं भंते मणुस्स णपुंसगाणं कम्मभूमिगणपुंसगाणं अकम्मभूमिग णपुंसगाणं अंतर दीवगाणयकयरेकयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा"** આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે—હે ભગવન્ મનુષ્ય નપુંસકોમાં, અકર્મ ભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોમાં અને અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકોમાં કયા મનુષ્ય નપુંસકો કયા મનુષ્ય નપુંસકોથી અલ્પ–ઓછા છે? કોણ કોનાથી વધારે છે? કોણકોની બરોબર છે? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે– **"गोयमा ! अंतर दीवग अकम्मभूमिगमणुस्स णपुंसगा सव्वत्थोवा"** હે ગૌતમ ! અંતરદ્વીપના જે મનુષ્ય નપુંસકો છે, તેઓ સૌથી ઓછા છે આ અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકો સંમૂચ્છિમ જન્મવાળા હોય છે કેમકે–ગર્ભજ મનુષ્ય નપુંસકોની અંતરદ્વીપમાં સંભાવના નથી. અંતરદ્વીપમાં જે ગર્ભજ મનુષ્ય

देवकुरूत्तरकुरुगतगर्भजमनुष्याणामन्तरद्वीपजगर्भजमनुष्येभ्य' सख्येयगुणत्वात् तथा गर्भजमनुष्याणा मुच्चाराद्याश्रयणेन संमूर्च्छिममनुष्याणामुत्पादात् सख्येयगुणत्वं बोध्यम् स्वस्थाने तु देवकुरूत्तर कुरुवासित्वयानामपि स्वस्थाने परस्परं तुल्यतैवेति **'एवं णाव पुव्वविदेह अवर विदेह कम्मभूमिग मणुस्स णपुंसगादोवि तुल्ला संखेज्जगुणा** एवं यावत् पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुं-सका द्वयेऽपि संख्येयगुणा । यावत्पदेन देवकुरूत्तरकुरूमनुष्यनपुंसकापेक्षया हरिवर्षरम्यकवर्षा-कर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणाः स्वस्थाने तु हरिवर्षरम्यकवर्षनपुंसका द्वयेऽपि परस्परं तेभ्योऽपि हैमवत हैरण्यवतवर्षाकर्मभूमिकमनुष्याः संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परंद्वयेऽपितुल्याः, तेभ्यो भरतैरवतवर्ष कर्मभूमिकमनुष्यनपुंकाः सख्येयगुणाः, स्वस्थानेद्वयेऽपि परस्परं तुल्याः तेभ्य

लाये हुए होते है किन्तु वहा के जनमे हुए नहीं हो सकते । **"देव कुरूत्तर कुरु अकम्मभूमिगादोवि तुल्ला संखेज्ज गुणा"** देव कुरु और उत्तर कुरु रूप अकर्मभूमिज मनुष्य नपुंसक अन्तरद्वीपज मनुष्य नपुंसकोकी अपेक्षा सख्यात गुणे अधिक है । क्योंकि अकर्मभूमिगत मनुष्य अन्तर द्वीपजगर्भज मनुष्यो से सख्यात गुणे अधिक है । गर्भज मनुष्यों के उन उच्चार प्रस्रवण आदि मलके सम्बन्ध से वहां समूर्च्छित मनुष्यो का उत्पाद होनेसे वे असख्यात गुणे देव कुरु के और उत्तर कुरू के मनुष्य नपुंसक परस्पर आपस में तुल्य है **"एवं जाव पुव्व विदेहावर विदेह कम्मभूमिक मणुस्स णपुंसगा दोवि तुल्ला संखेज्ज गुणा"** देव कुरु उत्तर कुरु अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक की अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के मनुष्य नपुसक सख्यात गुणे अधिक हैं पर ये स्वस्थान में समान ही हे— इनकी अपेक्षा भी हैमवत क्षेत्र के और हैरण्यवत क्षेत्र के जो मनुष्य नपुंसक है वे सख्यात गुणे अधिक हैं—पर इनमें भी आपसमें तुल्यता है—इनकी अपेक्षा भरत ऐरावत क्षेत्र के मनुष्य नपुंसक सख्येय गुणे अधिक है और परस्पर में तुल्य इनकी अपेक्षा पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह के जो कर्म भूमिक मनुष्य नपुंसक

નપુંસકો હોય તો તેઓ કર્મભૂમિમાંથી સંહરણકરીને લાવવામાં આવેલા હોય છે. પરંતુ ત્યાંના જન્મેલા હોતા નથી **"देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा"** દેવ કુરૂ અને ઉત્તર કુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકો કરતા સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે કેમકે અકર્મ ભૂમિમાં રહેલા મનુષ્યો અંતરદ્વીપના ગર્ભજ મનુષ્યો કરતાં સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. ગર્ભજ મનુષ્યોના ઉચ્ચાર, પ્રસ્રવણ વિગેરે મલના સંબંધથી ત્યા સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યોનો ઉત્પાદ થવાથી તેઓ અસંખ્યાત ગણા છે દેવ-કુરૂ અને ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય નપુંસકો પરસ્પરમા સમાન છે **'एवं जाव पुव्वविदेहावर विदेह कम्मभूमणुस्सण णपुंसगा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा"** દેવકુરૂ ઉત્તરકુરૂ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો કરતા હરિવર્ષ રમ્યક વર્ષના મનુષ્ય નપુંસકો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે પરંતુ તેઓ સંસ્થાનમા સરખા જ હોય છે. તેના કરતાં પણ હેમવત ક્ષેત્રના અને હૈરણ્યવત ક્ષેત્રના

तेभ्यः पूर्वविदेहापर विदेह कर्मभूमिक मनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणाः स्वस्थाने तु द्वयेऽपि परस्परं तुल्यता एवेति चतुर्थमल्पबहुत्वमिति ॥

सम्प्रति–पञ्चमं नारकतिर्यङ्मनुष्यविषयमल्पबहुत्वमाह --'**एएसिणं**' इत्यादि '**एएसिणं भंते**' एतेषां खलु भदन्त ! '**णेरइयणपुंसगाणं** नैरयिकनपुंसकानाम् '**रयणप्पभा पुढवीणेरइयणपुंसगा णं**' रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानाम् । '**जाव अहे सत्तम पुढविनेरइय णपुंसगाणं**' यावदधःसप्तमपृथिवी नैरयिकनपुंसकानाम् '**तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं**' तिर्यगयोनिकनपुंसकानाम् '**एगिंदियतिरिक्ख जोणियाणं**' एकेन्द्रियतिर्यगूयोनिकनपुंसकानाम् '**पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' पृथिवीकायिकैकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुसकानाम् '**जाव वणस्सइक्काइयएगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' यावद्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यगूयोकनपुंसका-

---

है वे संख्यात गुणें अधिक है. परन्तु स्वस्थान में ये दोनो तुल्य है. इस प्रकार से यह मनुष्य नपुंसक विषयका चतुर्थ अल्प बहुत्व है।

अब नारक और तिर्यञ्च और मनुष्यो के सम्बन्ध को लेकर पांचवा अल्पबहुत्व प्रदर्शित करते है—"**एएसिणं भंते! णेरइयणपुंसगाणं**" इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! इन नैरयिक नपुंसको के—"**रयणप्पभाणेरइयणपुंसगाणं**" रत्न प्रभानैरयिक नपुंसको के "**जाव अहे सत्तम पुढविनेरइयणपुंसगाणं**" रत्न प्रभा यावत् अधः सप्तम पृथिवी के नैरयिक नपुंसकों के "**तिरिक्ख जोणियणपुंसगाणं**" तियग्योनिक नपुंसको के "**पुढवीकाइय-एगिंदियतिरिक्खजोणियाणं**" पृथिवीकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के "**जाव ववस्सइयएगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगाण**" यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के–यावत् पदसे अप्कायिक एकेन्द्रिय तियग्योनिक नपुंसकों के तेजस्कायिक एकेन्द्रिय

જે મનુષ્ય નપુંસકો છે તેઓ સંખ્યાત ગણા વધારે છે. પરંતુ તેમાં પણ પરસ્પરમાં સમાન પણું છે તેના કરતાં ભરત ઐરવક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકો સંખ્યાત ગણા વધારે છે. અને પરસ્પરતુલ્ય છે તેના કરતાં પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહના જે કર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો છે. તેઓ સંખ્યાત ગણા વધારે છે પરંતુ સ્વસ્થાનમા આ બેઉ સરખા છે. આ પ્રમાણે આ મનુષ્ય નપુંસક સંબંધમાં ચોથુ અલ્પ બહુ પણું છે.

હવે નારક, તિર્યંચ અને મનુષ્યોનો સંબંધ લઇને પાંચમા અલ્પ બહુપણાનું કથન કરે છે "**पपसिण भंते ! णेरइय णपुंसगाणं**" આ સૂત્રથી ગૌતમસ્વામી પ્રભુને એવું પૂછે છે કે–હે ભગવન્ આ નૈરયિક નપુંસકોમા "**रयणप्पभा णेरइयणपुंसगाणं**" રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં '**जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइय णपुंसगाणं**' યાવત્ અધઃ સપ્તમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં "**पुढवीकाइय पगिंदियतिरिक्ख जोणियाणं**" પૃથ્વીકાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા "**जाव वणस्सइकाइय पगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं**"

नाम् अत्र यावत्पदेन अप्कायिक तेजस्कायिक वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां संग्रहो भवति 'बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् जलयराणं जलचरनपुंसकानाम् 'थलयराणं' स्थलचरनपुंसकानाम् 'खहयराणं खेचरनपुंसकानाम् "मणुस्सणपुंसगाणं मनुष्यनपुंसकानाम् कम्मभूमिगाणं कर्मभूमिक मनुष्यनपुंसकानाथ 'अकम्मभूमिगाणं अकर्मभूमिक मनुष्यनपुंसकानाम् अंतर दीवगाणय अन्तरद्वीपकामनुष्यनपुंसकानां च एतेषां मध्ये कयरे कयरे हिंतो कतरे कतरेभ्य अप्पावा अल्पावा बहुयावा बहुका वा तुल्या वा तुल्या वा 'विसेसाहियावा विशेषाधिका वा भवतीति प्रश्नः भगवानाह गोयमा इत्यादि गोयमा हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोका'—सर्वेभ्योऽल्पियांस' 'अहेसत्तमपुढवीणेरइयणपुंसगा' अध' सप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसका'—सप्तमतमतमापृथिवीनैरयिकनपुंसका भवन्ति सप्तमनारकनपुंसकापेक्षया, छट्ठपुढवीणेरइय णपुंसगा असंखेज्जगुणा षष्ठ पृथिवीनारक नपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति जाव दोच्च

तिर्यग्योनिक नपुंसकों के, वायुकायिक एकेन्द्रि तिर्यग्योनिक नपुंसकों के तथा "बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगाणं" दोइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के तेइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के चौइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के और पंचन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के "जलयराणं" जलचर नपुंसको के "थलचराणं" स्थलचर नपुंसको के "खहयराणं" "खेचरनपुंसको के मणुस्स णपुंसगाणं" मनुष्यनपुंसकों के "कम्मभूमिगाणं" कर्म भूमिक मनुष्य नपुंसको के "अंतरदीव गाणय" अन्तर द्वीपक मनुष्य नपुंनसको के बीच में "कयरे कयरेहिंतो अप्पावा, बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहियावा" कौन मनुष्यनपुंसक किन मनुष्यनपुंसको से अल्प है ? कौन किनसे बहुत है ? कौन किनसे तुल्य है ? और कौन किनसे विशेषाधिक हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु गौतम से कहते है—"गोयमा ! सव्वत्थोवा अहे सत्तम पुढवीनेरइयणपुंसगा" हे गौतम ! सबसे कम अध'सप्तम पृथिवी के नैरयिक नपुंसक

યાવત્ વનસ્પતિકાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં યાવત્ પદથી અપકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા તેજસ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં વાયુકાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં "बेइंदिय तेइंदिय-चउरिंदिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय णपुंसगाणं" બે ઇંદ્રિય વાળા, ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા ચાર ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં અને પાંચ ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં "जलयराणं" જલચર નપુંસકોમા "थलयराणं" સ્થલચર નપુંસકોમા "खहयराण" ખેચર નપુંસકોમાં "मणुस्सणपुंसगाण" મનુષ્ય નપુંસકોમા 'कम्मभूमिगाणं" કર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોમા "अंतरदीवगाणं" અને અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકોમાં 'कयरे कयरे हिंतोअप्पा वा बहुया वा तुल्लावा विसेसाहिया वा" કયા મનુષ્ય નપુંસક કયા મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે ? કોણ કોની બરાબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષ અધિક છે ? ગૌતમ સ્વામીના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"गोयमा !

पुढवीणेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' यावद् द्वितीयशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसका असख्येयगुणा भवन्ति, यावत्पदसग्राह्यस्यायमर्थ: षष्ठपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया पञ्चमपृथिवीनारकनपुंसका: असख्येयगुणा अधिका भवन्ति, तदपेक्षया चतुर्थपृथिवीनारकनपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति, तदपेक्षया तृतीयपृथिवीनारकनपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति, तदपेक्षया च द्वितीयशर्करापृथिवीनारकनपुंसका असख्येयगुणा अधिका भवन्तीति । द्वितीयनारकपृथिवीनैरयिकनपुंसकापेक्षया 'अंतरदीवगमणुस्सणपुंसगाअसंखेज्जगुणा' अन्तरद्वीपकमनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति, गर्भजानामुच्चारादिसमुत्पन्नसमूर्च्छिममनुष्यापेक्षया तेषामसख्येयगुणत्वं बोध्यम् तत्र तेषामसख्येयगुणत्वेन समूर्छनसभवात्, अन्तरद्वीपजमनुष्यनपुसका-

---

है । "छट्ठपुढवी णेरइयणंपुसगाअसंखेज्जगुणा" सप्तमनारक के नपुंसको की अपेक्षा छठीतमा पृथिवी के जो नैरयिक नपुसंक है वे असंख्यात गुणे अधिक है. " जाव दोच्च पुढवी णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" यावत् द्वितीय पृथिवी के नैरयिक नपुंसक असख्यात गुणे अधिक है । यावत्पद से यहां यह अर्थ सगृहीत करके प्रकट किया गया है— छठवीं पृथवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा पंचम पृथिवी के जो नैरिक नपुंसक हैं वे असख्यात गुणे अधिक है. पंचम पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा चतुर्थ पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा तृतीय पृथिवी के नैरयिक नपुंसक असख्यातगुणे अधिक है तृतीय पृथिवी के नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा द्वितीय पृथिवी के जो नैरयिकनपुंसक है वे असख्यात गुणो अधिक हैं । तथा द्वितीय पृथिवी के नारको की अपेक्षा जो " अंतर द्वीवग मणुस्स णपुंसगा असंखेज्जगुणा " अन्तर द्वीपज मनुष्यनपुंसक है वे असंख्यातगुणो अधिक है । ये गर्भज मनुष्यो के उच्चार प्रस्रवण-मलमूत्र आदि शरीर के मलो में उत्पन्न होने के कारण समूर्च्छिम मनुष्य असख्यात गुणे अधिक होते है. क्योंकि वहां इतने समूर्च्छित होते है अन्तर द्वीपज मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा

सव्वत्थो वा अहे सत्तम पुढवी नेरइयणपुंसगा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા અધ. સપ્તમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુસકો છે "छट्ठपुढवी णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" સાતમા નરકના નપુંસકો કરતાં છઠ્ઠી તમા નામની પૃથ્વીના જે નૈરયિક નપુંસકો છે તે અસખ્યાત ગણા વધારે છે "जाव दोच्च पुढवी णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" યાવત્ બીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. અર્થાત્ અહિયાં યાવત્ પદ થી આ નીચે પ્રમાણે નો અર્થ સંગ્રહ કરીને બતાવેલ છે—છઠ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં પાચમી પૃથ્વીના જે નૈરયિક નપુસકો છે, તેઓ અસંખ્યાત ગણા વધારે છે પાંચમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં ચોથી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. ચોથી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતા ત્રીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. ત્રીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુસકો કરતા બીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતા જે "अंतरदीवगमणुस्स णपुं-

पेक्षया 'देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दोवितुल्लासंखेज्जगुणा' देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणा अधिका भवन्ति स्वस्थाने तु द्वयेऽपि एते परस्परं तुल्या भवन्ति । 'जावपुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगादोवि तुल्लासंखेज्जगुणा' यावत् पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुसका द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः, अयंभावः देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकापेक्षया हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति तथा स्वस्थाने द्वयेऽपि परस्परं तुल्याः एतदपेक्षया हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणाधिकाः स्वस्थाने द्वयेऽपि परस्परं तुल्या भवन्ति एतदपेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यनपुसकाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति, स्वस्थाने द्वयेऽपि परस्परं तुल्या भवन्ति, एतदपेक्षयाऽपि पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका सख्येयगुणाधिकाः, स्वस्थाने परस्पर तुल्याश्च भवन्तीति । पूर्वविदेहापरविदेहाऽकर्मभूमिकमनुष्यनपुसकापेक्षया 'रयणप्पभापुढवीणेरइ-

"देव कुरूत्तरकुरू अकर्मभूमिगमणुस्स णपुंसगा दोवि तुल्ला संखेज्ज गुणा" देवकुरू और उत्तर के जो मनुष्य नपुंसक है वे सख्यात गुणितो अधिक है परन्तु ये दोनो स्वस्थान में तुल्य है । "जाव पुव्वविदेहअवरविदेह कम्म भूमिगमणुस्स णपुंसगा दोवि संखेज्ज गुणा" 'यावत्' यावत्पद से देवकुरू और उत्तर कुरूके मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के जो मनुष्यनपुंसक है वे सख्यात गुणित है । पर ये दोनो परस्पर मे तुल्य है । इनकी अपेक्षा हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र के जो मनुष्यनपुसक है वे सख्यात गुणितो हैं-पर ये दोनों आपस में तुल्य है । इनकी अपेक्षा भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र के जो मनुष्यनपुंसक हैं वे संख्यात गुणित अधिक है-और स्वस्थान में तुल्य है । तथा इनकी अपेक्षा जो पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह के कर्म भूमिक मनुष्यनपुंसक है वे सख्यात गणित है । पर ये भी स्वस्थान मे तुल्य है

सगा असंखेज्जगुणा" અંતર દ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકો છે, તેઓ અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. આ ગર્ભજ મનુષ્યોના ઉચ્ચાર, પ્રસવણ-મળમૂત્ર વિગેરે શરીરના મળથી ઉત્પન્ન થવાના કારણે સંમૂર્છિમ મનુષ્ય અસંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. કેમકે—ત્યાં એટલા સંમૂર્છિત હોય છે. અંતરદ્વીપ જ મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં **'देवकुरूत्तर कुरु अकर्मभूमिग मणुस्सणपुंसगा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा"** દેવકુરૂ અને ઉત્તર કુરૂ આજે મનુષ્ય નપુંસક છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે પરંતુ આ બન્ને સ્વસ્થાનમાં તુલ્ય છે. **"जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमिग मणुस्स णपुंसगा संखेज्जगुणा"** અહિયાં યાવત્પદથી દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય નપુંસકોના અપેક્ષાથી હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષના જે મનુષ્ય નપુંસકો છે, તેઓ સંખ્યાત ગણા વધારે છે. પરંતુ આ બન્ને પરસ્પરમાં સરખા છે તેના કરતાં ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવત ક્ષેત્રના જે મનુષ્ય નપુંસકો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે અને સ્વસ્થનમાં તુલ્ય છે. તથા તેના કરતાં પૂર્વ વિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહના કર્મભૂમિજ જે મનુષ્ય નપુંસકો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા છે. પરંતુ તેઓ પણ સ્વસ્થાનમાં તુલ્ય છે કર્મભૂમિ જ પૂર્વવિદેહ અને

यणपुंसगा असंखेज्जगुणा' रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसका असख्येयगुणा अधिका भवन्ति । रत्नप्रभानपुंसकापेक्षयाऽपि **'खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असख्येयगुणाधिका भवन्ति, खेचरनपुंसकापेक्षयाऽपि **'थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा'** स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति स्थलचरनपुंसकापेक्षयाऽपि **'जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा'** जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः सख्येयगुणाधिका भवन्तीति जलचरनपुंसकापेक्षया **'चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया'** चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भनन्तीति चतुरिन्द्रियनपुंसकापेक्षयापि—**'तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसा-**

कर्मभूमिक पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह के मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा "**रयणप्पभापुढवीणेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" रत्नप्रभा पृथिवी के जो नैरयिक नपुंसक है वे असंख्यात गुणें अधिक है। इनकी अपेक्षा "**खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग् योनिक नपुंसक असंख्यात गुणें अधिक है। इन खेचरनपुंसको की अपेक्षा "**थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा**" स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग् योनिकनपुंसक संख्यात गुणे अधिक है। इन स्थलचरनपुंसको की अपेक्षा—"**जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा**" जलचर पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक संख्यात गुणे अधिक हैं। इन जलचर नपुंसको की अपेक्षा "**चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया**" चौइन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक विशेषाधिक है. चौइन्द्रियनपुंसकोकी अपेक्षा "**तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया**" तेइंन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है. चौइन्द्रियनपुंसको

પશ્ચિમ વિદેહ ના મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં "**रयणप्पभापुढवी णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" રત્ન પ્રભા પૃથ્વીના જે નૈરયિક નપુંસકો છે. તેઓ અસંખ્યાતગણા વધારે છે. તેના કરતાં "**खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" ખેચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. આ ખેચર નપુંસકો કરતા "**थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा**" સ્થલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો સંખ્યાતગણા વધારે છે. આ સ્થલચર નપુંસકો કરતાં "**जलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा**" જલચર પચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો સંખ્યાતગણા વધારે છે. આ જલચર નપુંસકો કરતાં "**चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया**" ચાર ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે—ચાર ઇંદ્રિયવાળા નપુંસકો કરતા "**तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया**" ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે. ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતાં "**बेइंदियतिरिक्ख जोणियणपुसगा विसेसाहिया**" બે ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે બે ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતાં "**तेउक्का**

हिया' त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति त्रीन्द्रियनपुंसकापेक्षयाऽपि—'बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति। द्वीन्द्रियनपुंसकापेक्षयापि 'तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा' तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्यातगुणा अधिका भवन्तीति। तेजस्कायिकापेक्षयापि—'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति पृथिवीकायिकैकेन्द्रियनपुंसकापेक्षयापि 'आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति अप्कायिकनपुंसकापेक्षयाऽपि 'वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति वायुकायिकनपुंसकापेक्षयाऽपि 'वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा' वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणा अधिका भवन्तीति पञ्चममल्पबहुत्वम्। समाप्तं नपुंसकानामल्पबहुत्वप्रकरणम् ॥सू० १७॥

की अपेक्षा "तेइंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" तेइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक हैं। तेइन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकों की अपेक्षा 'बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" दोइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है। द्वीन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसको की अपेक्षा "तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा" तैजसकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक असंख्यातगुणे अधिक है। तेजस्कायिक नपुंसकों की अपेक्षा "पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है। पृथिवीकायिक नपुंसको की अपेक्षा 'आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" अप्कायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक विशेषाधिक है। अप्कायिक नपुंसकों की अपेक्षा 'वाउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" वायुकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसक विशेषाधिक है। वायुकायिक नपुंसकों की अपेक्षा 'वणस्सइकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणंपुसगा अणंतणा" वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुसक अनन्तगुणे अधिक है ? इस प्रकार से पांचवां नैरयिक तिर्यञ्च मनुष्य सम्बन्धी अल्प बहुत्व है। नपुसकों का अल्प बहुत्व–प्रकरण समाप्त हुआ। सूत्र १७॥

इय एगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगा असंखेज्जगुणा" तैजसकायिक એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. તેજસ્કાયિક નપુંસકો કરતાં 'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" પૃથ્વીકાયિક એકઇન્દ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિકો વિશેષાધિક છે પૃથ્વીકાયિક નપુંસકો કરતા 'आउक्काइयतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" અપ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે. અપ્કાયિક નપુંસકો કરતા "वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया" વાયુકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે વાયુકાયિક નપુંસકો કરતાં "वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा" વનસ્પતિ-

सम्प्रति—नपुंसकवेदकर्मणो वन्धस्थितिं नपुंसकवेदस्य प्रकारञ्च दर्शयितुमाह—'णपुंसग-वेदस्स णं भंते' इत्यादि,

मूलम्—'णपुंसगवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोन्नि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगा । उक्कोसेणं वीसं सागरोवम-कोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साइं अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मणिसेगो । णपुंसगवदेणं भंते ! किं पगारे पन्नत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाहसमाणे पन्नत्ते समणाउसो ! सेत्तं णपुंसगा' ॥ सू० १८॥

छाया—नपुसकवेदकस्य खलु भदन्त ! कर्मणः कियन्तं कालं वन्धस्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सागरोपमस्य द्वौ सप्तभागौ पल्योपमस्य असंख्येयभागेनोनकौ उत्कर्षेण विंशतिसागरोवमस्य कोटिकोटयः, द्वे च वर्षसहस्रे अवाधा, अवाधोना कर्मस्थितिः कर्म-निषेकः । नपुंसकवेदः खलु भदन्त ! किंप्रकारकः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! महानगरदाहसमानः प्रज्ञप्तः श्रमणायुष्मन् ! ते एते नपुंसकाः ॥सू० १८॥

अब सूत्रकार नपुंसक वेद कर्म की बन्धस्थिति और नपुंसक वेद का प्रकार प्रकट करते—"**णपुंसगवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधठिई पन्नत्ता**—इत्यादि।

टीकार्थ—यहां गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है— "**नपुंसकवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स**" हे भदन्त ! नसपुंक वेद कर्म की "**केवइयं कालं बंधठिई पन्नत्ता**" वन्धस्थिति कितने काल की कही गयी है ? उत्तर में प्रभु कहते है—"**गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोन्नि सत्तभागा-पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगा**" हे गौतम ! नपुंसक वेद कर्म की वन्धस्थिति जघन्य से सागरोपम के सात भागों में से पल्योपम के असंख्यातवें भाग से दो सातिया भाग प्रमाण

કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા નપુંસકો અનંતગુણા વધારે છે આ પ્રમાણે આ પાચમું નૈરયિક, તિર્યંચ અને મનુષ્ય સંબંધી અલ્પ બહુપણું કહ્યું છે. આ રીતે આ નપુંસકોનું અલ્પ બહુ-પણાનું પ્રકરણ સમાપ્ત થયું ॥સૂ૦૧૭॥

હવે સૂત્રકાર નપુંસક વેદકર્મની બંધસ્થિતિ અને નપુંસક વેદનો પ્રકાર પ્રગટ કરે છે.— "**णपुंसगवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं वंधठिई पण्णत्ता**" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—અહિયાં ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવુ પૂછ્યું છે કે—"**नपुंसकवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स**" હે ભગવન્ નપુંસક વેદ કર્મની **केवइयं कालं वंधठिई पण्णत्ता**" બંધસ્થિતિ કેટલા-કાળની કહેવામાં આવી છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે—"**गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोन्नि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगा**" હે ગૌતમ! નપુંસક વેદકર્મની બંધસ્થિતિ જઘન્યથી સાગરોપમના સાતભાગોમાંથી પલ્યોપમના અસં-

टीका—"**णपुंसगवेदस्स णं भंते**" नपुंसकवेदस्य खलु भदन्त ! '**कम्मस्स**' कर्मणः **केवइयं कालं बंधठिई पन्नत्ताः**' कियन्तं कालं बन्धस्थितिः प्रज्ञप्ता कथितेति प्रश्नः भगवानाह—'**गोयमा**' इत्यादि '**गोयमा**' हे गौतम ! '**जहन्नेणं**' जघन्येन "**सागरोवमस्स**' सागरोपमस्य '**दोन्नि सत्तभागा**' द्वौ सप्तभागौ "**पलिओवमस्स**' पल्योपमस्य '**असंखेज्जइभागेण ऊणगा**' असख्येयनभागेनोनका हीना इत्यर्थः, सागरोपमस्य सप्तभागाः करणीयाः तेपु द्वौ भागौ तौ च पल्योपमस्यासख्येन भागेन हीनौ तथा "**उक्कोसेणं**" उत्कर्षेण "**वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ**" विंशतिः सागरोपम काटिकोटयः "**दोन्नि य वाससहस्साइं अवाधा**' द्वे च वर्षसहस्रे अवाधा द्विसहस्रवर्षप्रमितोऽत्रवाधाकालः "**अवाहूणिया कम्मट्ठिई**" अवाधोना—अवाधाकालेन हीना कर्मस्थितिः '**कम्मणिसेको**' कर्मनिषेकः कर्मदलिकरचनेति ॥

हैं. तथा—"**उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ**" उत्कृष्ट से २० वीस सागरोपम कोटा कोटि की है। "**दोन्निय वाससहस्साइं अवाधा**" इसमें दो हजार वर्ष की अवाधा है '**अवाहूणिया कम्मट्ठिइ**" अवाधा काल से हीन कर्म स्थिति "**कम्मणिसेगो**" कर्म निषेक कर्म दलिको की रचना है. "**णपुंसगवेए णं भंते ! किं पगारे पन्नत्ते**" हे भदन्त ! नपुंसक वेद कैसा कहा गया है ? "**गोयमा ! महाणगरदाहसमाणे पन्नत्ते**" नपुंसक वेद महानगर के दाह के समान कहा गया है। क्यो कि समस्त भी अवस्थाओं में मदन दाह अर्थात् काम विकार महानगर को जलाने के जैसा ही होता है। इस वेद के उदय में स्त्री और पुरुष दोनो की अभिलाषा होती है. अत इसे महानगर के जलाने वाले दाहके जैसे दाहवाला कहा गया है। "**समणाउसो**" हे श्रमण ! आयुष्मन् ! "**सेत्तं णपुंसगा**" इस प्रकार भेद और प्रभेदों को लेकर नपुंसकों का निरूपण किया गया है. नपुंसक प्रकरण समाप्त हुआ। सूत्र—१८

ખ્યાતમાં ભાગથી બે સાતિયાભાગ પ્રમાણની છે. તથા "**उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ**" ઉત્કૃષ્ટથી ૨૦ વીસ સાગરોપમ કોડા કોડીની છે. '**दोन्निय वाससहस्साई अवाधा**" આમાં બે હજાર વર્ષનો અબાધા કાળ છે "**अवाहूणिया कम्मट्ठिई**" અબાધા કાળથી હીન કર્મ સ્થિતિ "**कम्मणिसेगो**" કર્મ નિષેક-કર્મ દલિકોની રચના છે. "**णपुसगवेएणं भंते ! किं पगारे पण्णत्ते**" હે ભગવન્ નપુંસકવેદ કેવા પ્રકારના કહેલ છે? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે—"**गोयमा ! महाणगरदाहसमाणे पण्णत्ते**" નપુંસક વેદ મહાનગરના દાહ પ્રમાણેનો કહેલ છે. કેમકે—સઘળા એવી અવસ્થાઓમા મદન દાહ અર્થાત્ કામવિકાર મહાનગરને બાળવા જેવોજ હોય છે. આ વેદના ઉદયમાં સ્ત્રી અને પુરૂષ બન્નેની અભિલાષા થાય છે. તેથી તેને મહાનગરને બાળવાનાદાહ જેવો જે દાહ તેના જેવા દાહવાળો કહેલ છે "**समणा उसो**" હે શ્રમણ આયુષ્મન્ "**से तं णपुंसगा**" આ રીતે ભેદ અને પ્રભેદોને લઇને નપુંસકોનું નિરૂપણ કરવામા આવેલ છે. આ રીતે આ નપુંસક પ્રકરણ સમાપ્ત ॥સૂ૦ ૧૮॥

'णपुंसगवेए णं भंते' नपुंसकवेदः खलु भदन्त ! **'किं पगारे पन्नत्ते'** किं प्रकार.—कीदृशः प्रज्ञप्तः—कथित इति प्रश्नः भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि **"गोयमा'** हे गौतम ! **'महाणगरदाहसमाणे पन्नत्ते'** महानगरदाहसमानः; सर्वास्वपि अवस्थासु मदनदाहो महानगरदाहसमान एव स्त्रीपुरुषोभयाभिलाषविषयः प्रज्ञप्तः—कथितः **'समणाउसो'** श्रमणायुष्मन् ! हे श्रमण ! हे आयुष्मन् । **"सेत्तं णपुंसगा'** ते एते उपरि प्रदर्शिता भेदप्रभेदाभ्या नपुसका निरूपिता इति नपुंसकप्रकरणम् ॥सू० १८॥

सम्प्रति—सकलस्त्रीपुरुषनपुंसकविषये नव अल्पबहुत्वानि वक्तव्यानि तथाहि—प्रथमं सामान्यतः स्त्रीपुरुषनपुंसकविषयकमल्पबहुत्वम् ॥१॥ समान्यतस्तिर्यग्योनिकस्त्रीपुरुषनपुंसकविषयकं द्वितीयम् ।२। एवं सामान्यतो मनुष्यस्त्रीपुरुषनपुंसकविषयकं तृतीयम् ॥३। सामान्यतो देव स्त्रीपुरुषनारकनपुंसकविषयकं चतुर्थम् ॥४। सामान्यतस्तिर्यग्मनुष्यस्त्रीपुरुपनपुंसक—देवस्त्री पुरुषनारकनपुंसक—विषयकं संमिश्रं पञ्चमम् ॥५। विशेषतस्तिर्यग्योनिकस्त्रीपुरुषनपुंसकविषयकं षष्ठम् ।६। विशेषतो मनुष्यस्त्रीपुरुषनपुसकविषयकं सप्तमम् ।७। विशेषतो देवस्त्रीपुरुषनारकनपुंसकविषयकमष्टमम् ८। विशेषतस्तिर्यग्मनुष्यस्त्रीपुरुषनपुंसक—देवस्त्रीपुरुष—नारकनपुंसकविषयकं समिश्रं नवमम् ।९। तत्र पञ्चाल्पबहुत्वानि सामान्यतिर्यगादि सम्बन्धीनि ।५। चत्वारि च विशेषति-

---

अब सूत्रकार नौ अल्प बहुत्व के सम्बन्ध में वक्तव्यता प्रकट करते है—इनमें सामान्य से स्त्री पुरुष नपुंसक के विषय में प्रथम अल्प बहुत्व है १। सामान्य से तिर्यग्योनिक स्त्री, पुरुष और नपुंसक के विषय में द्वितीय अल्प बहुत्व है। २। इसी प्रकार सामान्य से मनुष्य स्त्री, पुरुष और नपुंसक विषयक तृतीय अल्प बहुत्व है ३। सामान्य से देव स्त्री पुरुष और नारक नपुंसक विषयक चतुर्थ अल्प बहुत्व है ४। सामान्य से समस्त से मिला हुआ पच्चम अल्प बहुत्व है ५। इसके आगे विशेष की अपेक्षा से तिर्यग्योनिक स्त्री पुरुष नपुंसकों का छठा अल्प-बहुत्व है ६। विशेष से मनुष्य स्त्री पुरुष नपुंसकों का सातवा अल्प बहुत्व है ७। विशेष से देव स्त्री पुरुष नारक नपुंसकों का आठवा अल्प बहुत्व है ८। तिर्यञ्च मनुष्य स्त्री पुरुष नपुंसक और देव स्त्री पुरुष नारक नपुंसक, इन सबविजातीयव्यक्तियो का समिश्र नौवा अल्प बहुत्व है ९। इस

હવે સૂત્રકાર નવ અલ્પ બહુપણાના સબધમા કથન પ્રગટ કરે છે—તેમા સામાન્ય પણાથી સ્ત્રી. પુરૂષ અને નપુસકોના સબધમાં પહેલું અલ્પ બહુપણું છે ૧ સામાન્ય પણાથી તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રી, પુરૂષ અને નપુંસકોના સંબધમાં બીજુ અલ્પ બહુ પણુ છે ૨ એજ પ્રમાણે સામાન્યપણાથી મનુષ્ય સ્ત્રી, પુરૂષ, અને નપુસકના સંબંધમા ત્રીજું અલ્પ બહુપણું છે૩. સામાન્યપણાથી દેવ સ્ત્રી, પુરૂષ અને નારક નપુંસકોના સંબંધમા ચોથું અલ્પ બહુ પણું છે.૪ સામાન્ય પ્રકારથી સઘળાથી મળેલું પાંચમું અલ્પ બહુપણુ છે ૫ પછી વિશેષની અપેક્ષાની તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રી, પુરૂષ અને નપુસકોનું છઠ્ઠું અલ્પ બહુપણુ છે ૬ વિશેષ પ્રકારથી મનુષ્ય સ્ત્રી, પુરૂષ નપુંસકોનુ સાતમુ અલ્પ બહુપણું છે. વિશેષથી દેવ સ્ત્રી, પુરૂષ, નારક નપુંસકોનું આઠમું અલ્પ બહુપણુ છે.૮

भेदाः इति सर्वसंख्यया नव अल्पबहुत्वानि तत्र तावत् प्रथमं पञ्चसामान्याल्पबहुत्वानि प्रदर्श्यन्ते "एएसि णं" इत्यादि.

मूलम्—'एएसि णं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं णपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुरिसा, इत्थीओ संखेज्जगुणा, णपुंसगा अणंतगुणा ॥१॥ एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणिय इत्थीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणियपुरिसा तिरिक्ख इत्थीओ असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा ॥२॥ एएसि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सणपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा, मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणा मणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा ॥३॥ एएसि णं भंते ! देवित्थीणं देवपुरिसाणं णेरइयणपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइयणपुंसगा देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, देवित्थीओ संखेज्जगुणाओ ॥४॥ एएसि णं भंते !

प्रकार से ये सामान्य से पांच और विशेष से चार ऐसे ये नौ अल्प बहुत्व हैं। इनमें से सूत्रकार प्रथम पांच सामान्य अल्पबहुत्वों को कहते हैं

'एएसि णं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं नपुंसगाण य' इत्यादि ॥ सू. १८ ॥

તિર્યંચ મનુષ્ય દેવ સ્ત્રી પુરૂષ અને દેવ સ્ત્રી પુરૂષ નપુંસક આ સઘળી વિજાતીય વ્યક્તિઓનું ભિન્નભિન્ન અલ્પ બહુપણું છે. આ પ્રમાણે આ સામાન્ય પ્રકારથી પાંચ અને વિશેષ પ્રકારથી ચાર એ રીતે આ નવ અલ્પ બહુપણું છે. આમાંથી સૂત્રકાર પહેલાના પાંચ સામાન્ય અલ્પ બહુપણાનું કથન કરે છે.-- "एएसि णं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं णपुंसगाण य" ઈત્યાદિ

तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सणपुंसगाणं देवित्थीणं देवपुरिसाणं णेरइयणपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणा । मणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा, णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणा, देवपुरिसा असंखेज्जगुणा देवित्थियाओ संखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा' ॥सू० १९॥

छाया—एतेषां खलु भदन्त ! स्त्रीणां पुरुषाणां नपुंसकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पुरुषाः, स्त्रियः संख्येयगुणाः, नपुंसका अनन्तगुणाः ॥१॥ एतेषां खलु भदन्त ! तिर्यग्योनिकस्त्रीणां तिर्यग्योनिनिकपुरुषाणां तिर्यग्योनिकनपुंसकानां च कतरेकतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिकपुरुषाः, तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽसंख्येयगुणाः, तिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाः ॥२॥ एतेषां खलु भदन्त ! मनुष्यस्त्रीणां मनुष्यपुरुषाणां मनुष्यनपुंसकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा, तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका मनुष्यपुरुषाः, मनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणाः, मनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाः ॥ ३ ॥ एतेषां खलु भदन्त ! देवस्त्रीणां देवपुरुषाणां नैरयिकनपुंसकानां च कतरे कतरेभ्यः अल्पा वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः नैरयिकनपुंसकाः, देवपुरुषा असंख्येयगुणाः देवस्त्रियः संख्येयगुणाः ॥४॥ एतेषां खलु भदन्त ! तिर्यग्योनिकस्त्रीणां तिर्यग्योनिकपुरुषाणां तिर्यग्योनिकनपुंसकानां मनुष्यस्त्रीणां मनुष्यपुरुषाणां मनुष्यनपुंसकानां देवस्त्रीणां देवपुरुषाणां नैरयिकनपुंसकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका मनुष्यपुरुषाः, मनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणाः, मनुष्यनपुसका असंख्येयगुणाः, नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः, तिर्यग्योनिकपुरुषा असंख्येयगुणाः, तिर्यग्योनिकस्त्रिय संख्येयगुणाः, देवपुरुषा असंख्येयगुणाः, देवस्त्रियः संख्येयगुणाः तिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाः ॥सू० १९॥

टीका—"एएसि णं भंते' एतेषा वक्ष्यमाणानां प्राणिनां मध्ये स्त्रीणां सामान्यत. स्त्रीणाम् "पुरिसाणं' पुरुषाणाम्, सामान्यतः पुरुषजातीयानाम् 'णपुंसगाण य' नपुसकानां च नपुसकजाती

यानाम 'कयरे कयरेहिंतो' कतरे कतरेभ्य. एतेषां मध्ये केषामपेक्षया के इत्यर्थः । 'अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' अल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिकावेति सामान्येन स्त्रीपुरुषनपुंसकानामल्पबहुत्वादिविषयक प्रथम. प्रश्नः, भगवानाह---'गोयमा' इत्यादि "गोयमा" हे गौतम! "सव्वत्थोवा पुरिसा' सर्वस्तोकाः पुरुषाः पुरुषाः सर्वेभ्य. स्त्रीनपुंसकेभ्योऽल्पा भवन्तीति । 'इत्थीओ संखेज्जगुणा' पुरुषापेक्षया स्त्रियः सख्यातगुणा अधिका भवन्तीति 'णपुंसगा अणंतगुणा' स्त्र्यपेक्षयाऽपि नपुंसका अनन्तगुणा अधिका भवन्तीति वनस्पतिमपेक्ष्य नपुंसकानामनन्तगुणत्वमिति प्रथममल्पबहुत्वम् ।१।

टीकार्थ—गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! इन सामान्य से 'इत्थीणं' स्त्रियो के'पुरिसाणं' सामान्य पुरुष जातियो के 'णपुंसगाण य' एवं सामान्य से नपुसकों के बीच में 'कयरे कयरेहितो' कौन किन से 'अप्पा वा' अल्प है ? कौन किन से 'बहुया वा' अधिक हैं ? कौन किन के 'तुल्ला वा' बराबर है और कौन किन से 'विसेसाहिया वा' विशेषाधिक है ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु गौतम से कहते है–'गोयमा' हे गौतम ,सव्वत्थोवा पुरिसा' सबसे कम पुरुष है–अर्थात् स्त्रियो और नपुसको की अपेक्षा पुरुष बहुत थोडे है । इनकी अपेक्षा– 'इत्थीओ संखेज्जगुणा' पुरुषो की अपेक्षा स्त्रिया सख्यात गुणित अधिक है 'णपुंसगा अणंत गुणा' स्त्रियों की अपेक्षा नपुसक अनन्त गुणित अधिक है । वनस्पति की अपेक्षा से इनका अनन्तगुणत्व कहा गया है. यह प्रथम अल्प बहुत्व है ।

द्वितीय अल्पबहुत्व इस प्रकार से है–इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है —'एएसि णं

ટીકાર્થ—ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે—હે ભગવન્ સામાન્યપણાથી "इत्थीणं" સ્ત્રીયોમા "पुरिसाणं" સામાન્ય પુરૂષ જાતિયોમાં "णपुसगाण य" અને સામાન્ય થી નપુસકોમા "कयरे कयरेहिंतो" કોણ કોનાથી "अप्पा वा" અલ્પ છે? કોણ કોનાથી "बहुया वा" વધારે છે? કોણ કોની "तुल्ला वा" તુલ્ય છે? અને કોણ કોનાથી "विसेसा-हिया वा" વિશેષાધિક છે ?

ગૌતમ સ્વામીના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ કહે છે—"गोयमा" હે ગૌતમ "सव्वत्थोवा पुरिसा" સૌથી ઓછા પુરૂષો છે અર્થાત્ સ્ત્રિયો અને નપુસકો કરતા પુરૂષો ઘણા ઓછા છે. "इत्थीओ संखेज्जगुणा" પુરુષો કરતા સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે, "णपुंसगा अणंतगुणा" સ્ત્રિયો કરતા નપુંસકો અનતગણા વધારે છે વનસ્પતિની અપેક્ષાથી તેમનુ અનતગણાપણું કહ્યું છે આ રીતે આ પહેલું અલ્પ બહુપણુ કહ્યુ છે. ૧

બીજુ અલ્પ બહુપણું આ પ્રમાણે છે—આમા ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુ ને એવું પૂછ્યું છે કે— 'एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिपुंक्खजोणिय ण-

अथ द्वितीयमल्पबहुत्वमाह—'एएसि' णं इत्यादि 'एएसि णं भंते' एतेषां खलु भदन्त ! 'तिरिक्खजोणित्थीणं' तिर्यग्योनिकस्त्रीणाम् 'तिरिक्खजोणियपुरिसाणं' तिर्यग्योनिक पुरुषाणाम् 'तिरिक्खजोणियणपुंसगाण य' तिर्यग्योनिकनपुंसकानां च 'कयरे कयरेहिंतो' कतरे कतरेभ्यः केषामपेक्षया के इत्यर्थः 'अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया' अल्पावा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वेति द्वितीयाल्प बहुत्व विषयकः प्रश्नः भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणियपुरिसा' तिर्यग्योनिकस्त्रीपुरुषनपुंसकेषु सर्व स्तोकाः तिर्यग्योनिकपुरुषा भवन्तीति । 'तिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणा' तिर्यग्योनिक पुरुषापेक्षा तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽसख्येयगुणाधिका भवन्तीति "तिरिक्खजोणियणपुंसगा' अणंतगुणा' तिर्यग्योनिकनपुंसका स्तिर्यग्योनिकस्त्र्यपेक्षया अनन्तगुणाधिका भवन्ति वनस्पतिम-पेक्ष्य एषामनन्तगुणत्वमिति द्वितीयमल्पबहुत्वम्।२। अथ तृतीयमल्पबहुत्वमाह–"एएसि णं' इत्यादि 'एएसि णं भंते' एतेषा खलु भदन्त ! 'मणुस्सित्थीणं' मनुष्यस्त्रीणाम् 'मणुस्स पुरिसाणं'

भंते ? तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाण य' हे भदन्त ! इन तिर्यग्योनिक स्त्रियो के तिर्यग्योनिक पुरुषो के और तिर्यग्योनिक नपुंसकोके बीच में 'कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा' बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' कौन किन से अल्प है ? कौन किन से अधिक है ? कौन किनके बराबर है कौन किनसे विशेषाधिक है ? इस प्रश्न के उत्तरमें प्रभु कहते—"गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणि-यपुरिसा" हे गौतम ! सबसे कम तिर्यग्योनिक पुरुष है ',तिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणा' तिर्यग्योनिक स्त्रियां तिर्यग्योनिक पुरुषो की अपेक्षा असंख्यात गुणी अधिक है । "तिरिक्खजो-णियणपुंसगा अणंतगुणा" तिर्यग्योनिक स्त्रियो की अपेक्षा तिर्यग्योनिक नपुंसक वनस्पति जीवो की अनन्तानन्तता की अपेक्षा अनन्त गुणे अधिक हैं । इस प्रकार से यह द्वितीय अल्प बहुत्व

सगाण य" હે ભગવન્ આ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોમાં તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોમાં, અને તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં "कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा" કોણ કોનાથી અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે છે ? કોણ કોની બરોબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે. ગૌતમ સ્વામીના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ કહે છે કે —"गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणियपुरिसा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા તિર્યગ્યોનિક પુરૂષ છે "तिरिक्खजोणित्थीओ असंखेज्जगुणा" તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો કરતાં અસંખ્યાત ગણી વધારે છે "तिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा" તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો કરતાં તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વનસ્પતિ જીવોની અનંતાનંતતાની અપેક્ષાએ અનંતગણા વધારે છે આ રીતે આ બીજું અલ્પ બહુપણું આ કહ્યું છે ૨

ત્રીજું અલ્પ બહુપણું આ પ્રમાણે છે. "एएसि ण भंते ! मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्स णपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पावा, बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा" ગૌતમ સ્વામીએ

मनुष्यपुरुषाणाम 'मणुस्सणपुंसगाण य' मनुष्यनपुंसकानां च 'कयरे कयरेहिंतो' कतरे कतरेभ्य कस्यापेक्षया के इत्यर्थ अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' अल्पा वा बहुका वा तुल्यावा विशेषाधिका वेति प्रश्न. भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोकाः 'मणुस्सपुरिसा' मनुष्यपुरुषाः मनुष्यस्त्रिपुरुषनपुंसकेषु स्तोका भवन्तीति 'मणुस्सित्थीओ संखेज्ज गुणा' मनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषापेक्षया सख्येयगुणाधिका भवन्तीति। 'मणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा' मनुष्यस्त्र्यपेक्षया मनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाधिका भवन्ति श्रेण्यसख्येयभागगतप्रदेश राशि प्रमाणत्वादिति तृतीयमल्पबहुत्वम् ॥३॥

अथ चतुर्थमल्पबहुत्वमाह्—'एएसि णं' इत्यादि, 'एएसि णं भंते' एतेषां खलु भदन्त 'देवित्थीण' देवस्त्रीणां देवीनामित्यर्थः 'देवपुरिसाणं' देवपुरुषाणां पुजातीयकदेवानाम् -'णेरइयणपुंसगाण य' नैरयिकनपुंसकाना च 'कयरे कयरेहिंतो' कतरे कतरेभ्यः कस्यापेक्षया के इत्यर्थ 'अप्पा वा' अल्पा वा 'वहुया वा' बहुका वा 'तुल्ला वा' तुल्या वा 'विसेसाहिया

कहा गया है। तृतीय अल्प बहुत्व इस प्रकार से है—"एएसि णं भंते! मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सणपुंसगाण य कयरेकयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा" गौतम ने ऐसा पूछा है कि हे भदन्त! इन मनुष्य स्त्रियों के मनुष्य पुरुषों के और मनुष्य नपुंसकों के बीच कौन किनसे अल्प है? कौन किनसे वहुतहै? कौन किनके बराबर है और कौन किन से विशेषाधिक है? उत्तर में प्रभु ने कहा है—'गोयमा? सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा' हे गौतम! सबसे कम मनुष्य-पुरुष है—'मणुस्सित्थीओ संखेज्ज गुणा' मनुष्य स्त्रियाँ मनुष्य पुरुषों की अपेक्षा सख्यात गुणी अधिक हैं। 'मणुस्स णपुंसगा असंखेज्जगुणा' मनुष्य स्त्रिया की अपेक्षा मनुष्य नपुंसक असख्यात गुणे अधिक हैं—यह संमूर्छिम मनुष्यों की अपेक्षा से कहा गया है। ऐसा यह तृतीय अल्प बहुत्व है।

चतुर्थ अल्प बहुत्व इस प्रकार से है 'एएसि णं भंते! देवित्थीणं देवपुरिसाणं, णेरइयणपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? इसमें गौतम

वा' विशेषाधिका वा इत्यल्पबहुत्वविषयकः प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोकाः 'णेरइयणपुंसगा' नैरयिकनपुंसकाः सर्वेभ्यो देवस्त्री-पुरुषेभ्यो नैरयिकनपुंसका अल्पा भवन्ति । अंगुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशौ स्वप्रथमवर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि भवति तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणीषु यावन्तो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वादिति । 'देवपुरिसा असंखेज्जगुणा' नारकनपुंसकापेक्षया देवपुरुषा असख्यातगुणा अधिका भवन्ति, असख्येययोजनकोटिकोटी प्रमाणायां सूचौ यावन्तो नभः प्रदेशास्तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणीषु यावन्त आकाशप्रदेशास्तावत्प्रमा-णत्वादिति । 'देवित्थीओ संखेज्जगुणाओ' देवपुरुषापेक्षया देवस्त्रियः सख्येयगुणाधिका भवन्ति द्वात्रिंशद्‌गुणाधिकत्वादिति चतुर्थमल्पबहुत्वमिति ॥

ने प्रभु से ऐसा पूछा है—हे भदन्त ! इन देवस्त्रियों के, देव पुरुषो के और नैरयिक नपुं-सको के बीच में कौन किनसे अल्प है ? कौन किनसे बहुत है ? कौन किनके बराबरहैं ? और कौन किन से विशेषाधिक है इसके उत्तर में प्रभु ने ऐसा कहा है गोयमा ! हे 'गौतम' ! 'सव्वत्थोवा' सबसे कम 'णेरइयणपुंसगा' नैरयिकनपुंसक है। क्योंकि इनका प्रमाण अङ्गुलमात्र क्षेत्र में जितनी प्रदेश राशि है उसको उसीके प्रथमवर्गमूल से गुणित करने पर जितने प्रदेश राशि आती है उतनी घनीकृत लोककी एक प्रदेश वाली श्रेणियो में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतना है । "देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" नारक.नपुंसको की अपेक्षा देवपुरुष असख्यात गुणे अधिक हैं । क्योकि इनका प्रमाण असख्यात योजन कोटाकोटि प्रमाण सूचि में जितने आकाश प्रदेश होते है इतनी घनीकृतलोककी एक प्रदेश वाली श्रेणियो में जितने आकाश प्रदेश हैं उतना कहा गया है. "देवित्थीओ संखेज्जगुणाओ" देवस्त्रियाँ देवपुरुषो की अपेक्षा संख्यात गुणी अधिक हैं । क्योकि देवियो का प्रमाण देवों से बत्तीस गुणा अधिक कहा गया है । इस

સ્વામીએ આ સંબંધમાં એવો પ્રશ્ન કર્યો છે કે—હે ભગવન્ આ દેવીયોમાં, દેવપુરૂષોમાં અને નૈરયિક નપુંસકોમાં કોણ કોનાથી અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે છે ? કોણ કોની બરાબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુએ ગૌતમ સ્વામીને એવું કહ્યું કે "गोयमा" હે ગૌતમ ! "सव्वत्थोवा" સૌથી ઓછા "णेरइयणपुंसगा" નૈરયિક નપુંસકો છે. કેમકે—તેઓનું પ્રમાણ આંગળ માત્રમા જેટલી પ્રદેશ રાશિયો છે, તેને તેનાજ પહેલા વર્ગમૂળથી ગુણતા જેટલી પ્રદેશ રાશી આવે છે, એટલી ઘનીકૃત લોકની એક પ્રદેશવાળી શ્રેણિયોમાં જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે. એટલા છે. "देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" નારક નપુંસકો કરતા દેવપુરુષો અસંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. કેમકે—તેનુ પ્રમાણુ અસંખ્યાત યોજન કોટાકોટિ પ્રમાણ સોઈમાં જેટલા આકાશ પ્રદેશો હોય છે, જેટલી ઘનીકૃત લોકની એક પ્રદેશવાળી શ્રેણિયોમાં જેટલો આકાશ પ્રદેશ છે, એટલું કહેલ છે, "देवि-त्थीओ संखेज्जगुणाओ" દેવસ્ત્રિયો—દેવીયો દેવ પુરૂષો કરતાં સખ્યાત ગણી વધારે છે. કેમકે —દેવિયોનુ પ્રમાણ દેવોથી બત્રીસ ગણું વધારે કહેલ છે. આ રીતે આ ચોથું અલ્પ બહુ-

सम्प्रति–सामान्यतः सकलसमिश्रपञ्चममल्पबहुत्वमाह–'एएसि णं' इत्यादि, 'एएसि ण भंते' एतेषां खलु भदन्त ! तिरिक्खजोणित्थीणं' तिर्यग्योनिकस्त्रीणाम् 'तिरिक्खजोणिय-पुरिसाणं' तिर्यग्योनिकपुरुषाणाम् 'तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' तिर्यग्योनिकनपुसकानाम् 'मणुस्सित्थीणं' मनुष्यस्त्रीणाम् 'मणुस्सपुरिसाणं' मनुष्यपुरुषाणाम् 'मणुस्सणपुंसगाणं' मनुष्यनपुंसकानाम् 'देवित्थीणं' देवस्त्रीणाम् 'देवपुरिसाणं' देवपुरुषाणाम् 'णेरइय-णपुंसगाण य' नैरयिकनपुंसकानां च 'कयरे कयरेहिंतो' कतर कतरेभ्यः 'अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' अल्पा वा, बहुका वा, तुल्या वा, विशेषाधिका वेति पञ्चमाल्पबहुत्वविषयकः पञ्चमः प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा' सर्वस्तोका मनुष्यपुरुषा 'मणुस्सित्थीओ 'संखेज्ज

प्रकार से यह चतुर्थअल्प बहुत्व है. सामान्य की अपेक्षा सब से समिश्र पंचम अल्प बहुत्व इस प्रकार से है—"एएसि णं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्ख-जोणियणपुंसगाणं" गौतम ने इसमें ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! इन तिर्यग्योनिकस्त्रियो के, तिर्यग्योनिक पुरुषो के, तिर्यग्योनिकनपुंसकोके, "मणुस्सित्थीणं" मनुष्यस्त्रियोके, "मणुस्स पुरिसाणं" मनुष्य पुरुषो के "मणुस्सणपुंसगाणं" मनुष्यनपुसको के 'देवित्थीणं" देवस्त्रियों के, "देवपुरिसाणं" देव पुरुषो के एव "णेरइयणपुंसगाण य" नैरयिकनपुंसको के बीच में "कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा" कौन किनसे अल्प है ? कौन किन से बहुत है ? कौन किनके बराबर है ? और कौन किनसे विशेषाधिक है ? ऐसा यह प्रश्न पञ्चम अल्प बहुत्व को लेकर गौतम ने किया है. इसके उत्तर में प्रभु गौतम से कहते है—"गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा" हे गौतम ! सब से कम मनुष्य पुरुष हैं। "मणुस्सित्थियाओ संखेज्जगुणा" मनुष्य पुरुषो की अपेक्षा मनुष्य स्त्रियां सख्यात गुणी अधिक

પણુ કહેલ છે. સામાન્યની અપેક્ષાથી બધાથી મળેલું પાચમુ અલ્પ બહુપણુ આ પ્રમાણે છે. —"एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं, तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं" ગૌતમ સ્વામીએ આ સૂત્ર દ્વારા એવુ પૂછ્યુ છે કે—આ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોમાં તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોમાં અને તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો મા "मणुस्सित्थीणं" મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં "मणुस्सपुरिसाणं" મનુષ્ય પુરૂષોમાં "मणुस्सणपुंसगाणं" મનુષ્ય નપુંસકોમાં "देवीत्थीणं" દેવોની સ્ત્રિયોમા "देवपुरिसाणं" દેવ પુરૂષોમા અને "णेरइय णपुंसगाण य" નૈરયિક નપુંસકોમાં 'कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा" કોણુ કોનાથી અલ્પ–ઓછા છે ? કોણુ કોનાથી વધારે છે ? કોણુ કોની તુલ્ય છે ? કોણુ કોનાથી વિશેષાધિક છે. આ પ્રમાણે આ પાંચમા અલ્પ બહુપણાના સંબંધમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછયો છે તેના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે. કે—"गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા મનુષ્ય પુરૂષ છે.

गुणा' मनुष्यपुरुषापेक्षया मनुष्यस्त्रियः सङ्ख्येयगुणाधिका भवन्ति । **'मणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** मनुष्यनपुंसकाः मनुष्यस्त्र्यपेक्षयाऽपि असङ्ख्येयगुणाधिका भवन्ति सम्मूर्च्छिममनुष्यापेक्षया **'णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** मनुष्यनपुंसकापेक्षया नैरयिकनपुंसका असङ्ख्येयगुणाधिका भवन्ति । असंख्येयश्रेण्याकाशप्रदेशराशि प्रमाणत्वादिति । **'तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** नैरयिकनपुंसकापेक्षया तिर्यग्योनिकपुरुषा असङ्ख्येयगुणाधिका भवन्ति प्रतरासंख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणीगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति **'तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** तिर्यग्योनिकपुरुषापेक्षया तिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाधिका भवन्ति त्रिगुणाधिकत्वादिति । **'देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** तिर्यग्योनिकस्त्र्यपेक्षया देवपुरुषा असङ्ख्येय गुणा अधिका भवन्ति, प्रभूततरप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणीगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति ॥

है **"मणुस्सणपुंसगा असंखेज्ज गुणा"** मनुष्यनपुंसक मनुष्य स्त्रियो की अपेक्षा असंख्यात गुणा अधिक हैं । यह कथन सम्मूर्च्छिम मनुष्यो की अपेक्षा से है । क्योकि सम्मूर्च्छिम मनुष्य नियम से नपुंसक ही होते है । **"णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** सम्मूर्च्छिममनुष्यनपुंसको की अपेक्षा नैरयिक नपुंसक असख्यात गुणे अधिक है. क्योकि इनका प्रमाण असख्यात श्रेणीके आकाश प्रदेशो की राशिके बराबर कहा गया है. **"तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** नैरयिक नपुंसको की अपेक्षा तिर्यग्योनिक पुरुष असंख्यात गुणे अधिक है । क्योकि इनका प्रमाण प्रतर के असख्यातवे भाग में रहने वाली जो असख्यात श्रेणियां है उन श्रेणियो में जो आकाश प्रदेशराशि है उसके बराबर कहा गया है । **"तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ** तिर्यग्योनिक पुरुषो की अपेक्षा तिर्यग्योनिक स्त्रियाँ सख्यातगुणी अधिक है । क्योकि इनका प्रमाण पुरुषो की अपेक्षा तिगुना कहा गया है. **"देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** तिर्यग्योनिकस्त्रियों की अपेक्षा देवपुरुष असख्यात गुणे अधिक है । क्योकि इनका प्रमाण प्रभूततरज्जु

'मणुस्सित्थीओ असंखेज्जगुणा" મનુષ્ય પુરુષો કરતા મનુષ્યસ્ત્રિયો સંખ્યાત ગણી વધારે છે. **',मणुस्स णपुंसगा असंखेज्जगुणा"** મનુષ્ય નપુંસકો મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતાં અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. આ કથન સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્યોની અપેક્ષાથી કહેલ છે. કેમકે--સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્ય નિયમથી નપુંસકોજ હોય છે **'णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** સંમૂર્ચ્છિમ મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. કેમકે--તેમનું પ્રમાણ અસંખ્યાત શ્રેણીના આકાશ પ્રદેશોની રાશિની બરોબર કહેલ છે. **'तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा'** નૈરયિક નપુંસકો કરતાં તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. કેમકે—તેઓનું પ્રમાણ પ્રતરના અસંખ્યાતમા ભાગમા રહેવાવાળી જે અસંખ્યાત શ્રેણિયો છે, એ શ્રેણિયોમા જે આકાશ પ્રદેશરાશિ છે. તેની બરોબર કહેલ છે. **"तिरिक्ख जोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ"** તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો કરતાં તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે, કેમકે--તેમનું પ્રમાણ પુરુષો કરતાં ત્રણગણુ કહેવામા આવેલ છે. **"देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો

'देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' देवपुरुषापेक्षया देवस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति, द्वात्रिंशद्गुणत्वादिति 'तिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा' देव्यपेक्षया तिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणा अधिका भवन्ति, निगोदजीवानामनन्तत्वादिति पञ्चममल्पबहुत्वमिति ॥सू० १९॥

पूर्वं सामान्यविषयकाणि पञ्चाल्पबहुत्वानि प्ररूपितानि, साम्प्रतं विशेषमधिकृत्य शेषाणि चत्वारि अल्पबहुत्वानि प्रदर्शयन् विशेषस्तिर्यग्योनिकविषयकं षष्ठमल्पबहुत्वमाह—'एयासि णं भंते ! तिरिक्ख०' इत्यादि, ।

मूलम्—'एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं चउरिंदियदिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा !

प्रतर का असंख्यातवां भाग है, उस असंख्यातवे भाग में रही हुइ जो असंख्यात श्रेणियां है, उन श्रेणियों में स्थित आकाश प्रदेश राशि के बराबर कहा गया है। "देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" देवस्त्रियाँ देवपुरुषो की अपेक्षा संख्यात गुणी अधिक है. क्योकि इनका प्रमाण देवपुरुषो की अपेक्षा ३२ बत्तीस गुणा अधिक कहा गया है. "तिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा" देवस्त्रियो की अपेक्षा तिर्यग्योनिक नपुसक अनन्तगुने अधिक है—यह अधिकता का कथन निगोदजीवो के अनन्तानन्त होने से कहा गया है—इस प्रकार से यह पंचम अल्पबहुत्व का कथन है ।५। ॥सू०१९॥

કરતા દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. કેમકે—તેમનુ પ્રમાણુ પ્રભૂતતર પ્રતરના અસંખ્યાત મા ભાગનું છે, તે અસંખ્યાતમા ભાગમા રહેલી જે અસખ્યાત શ્રેણિયો છે તે શ્રેણિયોમાં રહેલ આકાશ પ્રદેશ રાશિની બરાબર કહેલ છે "देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ" દેવોની સ્ત્રિયો દેવપુરૂષો કરતા અસખ્યાત ગણી વધારે છે. કેમકે—તેનું પ્રમાણુ દેવ પુરૂષો કરતાં ૩૨ બત્રીસ ગણું વધારે કહેલ છે. "तिरिक्खजोणियणपुंसगा" દેવ સ્ત્રિયો કરતા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અનંત ગણા વધારે છે આ અધિકપણાનું કથન નરકનિગોદ જીવો અનંતાનત હોવાથી કહેલ છે આ રીતે પાચમુ અલ્પ બહુપણું કહેવામાં આવેલ છે ॥સૂ૦ ૧૯॥

सव्वत्थोवा खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा, खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ. थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा, थलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा, जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा. थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा, संखेज्जगुणा, जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा. चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया, तेइंदिय०णपुंसगा, विसेसाहिया, बेइंदिय० णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा, पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया, आउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसा-हिया, वाउकाइयएगितिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगा अणंतगुणा' ॥सू० २०॥

छाया—एतासां खलु भदन्त ! तिर्यग्योनिकस्त्रीणां जलचरीणां स्थलचरीणां खेचरीणां तिर्यग्योनिकपुरुषाणां जलचराणां स्थलचराणां खेचराणां तिर्यग्योनिकनपुंसकानां-मेकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां यावद्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसकानां चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां जलचराणां स्थलचराणां खेचराणां च कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः, स्थलचरपञ्चेन्द्रिय-तिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाः, स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः, जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाः, जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः, खेचर पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणाः, स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः, जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः, चतुरिन्द्रियतिर्यग् योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, द्वीन्द्रिय-

तिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येय गुणाः, पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः, वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाः ॥सू० २०॥

अथ विशेषतस्तिर्यगादिसम्बन्धिषष्ठमल्पबहुत्वमाह—'**एयासिए णं भंते**' इत्यादि ।

टीका—'**एयासि णं भंते**' एतासां खलु भदन्त ! '**तिरिक्खजोणित्थीणं**' तिर्यग् योनिकस्त्रीणाम् '**जलयरीणं**' जलचरीणाम्—जलचरस्त्रीणाम् '**थलयरीणं**' स्थलचरीणां स्थलचरस्त्रीणाम् '**खहयरीणं**' खेचरीणा खेचरस्त्रीणाम् '**तिरिक्खजोणियपुरिसाणं**' तिर्यग्योनिकपुरुषाणाम् '**जलयराणं**' जलचराणां जलचरपुरुषाणाम् '**थलयराणं**' स्थलचरपुरुषाणाम् '**खहयराणं**' खेचराणा खेचरपुरुषाणाम् '**तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' तिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् '**एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् '**पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्ख जोणिसगाणं**' पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् । तथा—'**जाव वणस्सइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' यावद्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् । अत्र याव-

---

अब विशेष से तिर्यंचादि सम्बन्धी छठा अल्पबहुत्व कहते है—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—"**एयासि णं भंते ? तिरिक्खजोणित्थीणं**" हे भदन्त ! इन तिर्यग्योनिकस्त्रियों के "**जलयरीणं**" जलचरस्त्रियोके, "**थलयरीणं**" स्थलचरस्त्रियोके, '**खहयरीणं**" खेचरस्त्रियों के "**तिरिक्खजोणियपुरिसाणं**' तिर्यग्योनिक पुरुषो के "**जलयराणं** जलचर पुरुषो के '**थलयराणं**' स्थलचर पुरुषो के '**खहयराणं**' खेचर पुरुषों के **तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं** तिर्यग्योनिकनपुंसको के "**एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं** एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के, "**पुढवीकाइ एगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसकों के तथा—'**जावव णस्सइकाइयतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**' यावत् अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको के—वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुं-

---

હવે વિશેષ પ્રકારથી તિર્યંચ વિગેરેના સંબંધમાં છઠ્ઠા અલ્પ બહુપણાનું કથન કરવામાં આવે છે.—આમાં ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછ્યું છે કે— "**एयासि णं भंते ! तिरिक्ख जोणित्थीणं**" હે ભગવન્ આ તિર્યંગ્યોનિક સ્ત્રિયોમાં "**जलयरीणं**" જલચર સ્ત્રિયોમાં "**थलयरीणं**" સ્થલચર સ્ત્રિયોમાં "**खहयरीण**" ખેચર સ્ત્રિયોમા "**तिरिक्ख जोणिय पुरिसाण**" તિર્યંગ્યોનિક પુરૂષોમા "**जलयराणं**" જલચર પુરૂષોમા '**थलयराणं**" સ્થલચર પુરૂષોમા "**खहयराणं**" ખેચર પુરૂષોમા '**तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं**" તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોમા "**एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं**" એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોમા તથા--"**जाव वणस्सइकाइय तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं**" યાવત્ અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક, વાયુકાયિક, એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોમા—વનસ્પતિકાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યંગ્યોનિક નપુંસકોમા—'**बेइंदिय**

पदेन अप्कायिकतेजस्कायिकवायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां ग्रहणं भवति । 'बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'जलयराणं' गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचराणाम् 'थलयराणं' गर्भजस्थलचराणाम् 'खहयराणं' गर्भजखेचराणाम् 'कयरे कयरेहिंतो' कतरे कतरेभ्यः 'जाव विसेसाहिया' यावद्विशेषाधिकाः, अत्र यावत्पदेन अल्पा वा बहुका वा, तुल्या वेत्येतेषां ग्रहणं भवतीति षष्ठाल्पबहुत्वविषयकः प्रश्नः, भगवानाह–'गोयमा ! इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोकाः सर्वेभ्योऽल्पीयांसः 'खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा' खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषा भवन्तीति, 'खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषापेक्षया खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः सख्येयगुणा अधिका भवन्ति त्रिगुणत्वात् । 'थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपुरिसा-

---

सकों के, "बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' दो इन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसको के "तेइंदियतिरिक्खजोणयणपुंसगाणं" ते इन्द्रियतिर्यग्यनिकनपुंसकों के "चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" चौइन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकों के, 'पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकों के, "जलयराणं' गर्भजजलचरोके, "थलयराणं' गर्भजस्थलचरो के एवं 'खहयराणं' गर्भजखेचरो के बीच में "कयरेकयरेहिंतो जाव विसेसाहिया' कौन किनसे अल्प है कौन किनसे बहुत है ? कौन किनके बराबर है ? और कौन किनसे विशेषाधिक है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा ? सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणियपुरिसा'. हे गौतम ? सब से कम खेचर तिर्यग्योनिक पुरुष है 'खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' खेचर तिर्यग्योनिक पुरुषों की अपेक्षा खेचर तिर्यग्योनिकस्त्रियाँ संख्यात गुणी अधिक है क्योकि पुरुषो की अपेक्षा तिगुनी होती है । 'थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा' खेचरस्त्रियो की

तिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं" બે ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં "तेइंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसगाणं" ત્રણ ઇન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમાં "चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" ચાર ઇન્દ્રિયો વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસકોમાં "पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" પાચ ઇંદ્રિયોવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા "जलयराणं" ગર્ભજ જલચરોમાં थलयराणं" ગર્ભજ સ્થલચરોમાં અને "खहयराणं" ગર્ભજ ખેચરોમાં "कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ' કોણકે।નાથી અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે છે ? કોણ કોની બરોબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે કે– "गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा" હે "ગૌતમ ! સૌથી ઓછા ખેચર તિર્યગ્યોનિક પુરુષ છે. 'खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" ખેચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો કરતા ખેચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાત ગણી વધારે છે. કેમકે–પુરૂષો કરતાં સ્ત્રિયોનું પ્રમાણ ત્રણગણું વધારે છે "थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा" ખેચર

'संखेज्जगुणा' खेचरस्त्र्यपेक्षया स्थलचलपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति। 'थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' स्थलचरपुरुषापेक्षया स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति त्रिगुणितत्वादिति। 'जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा' स्थलचरस्त्र्यपेक्षया जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषा. सख्येयगुणा अधिका भवन्ति। 'जलयरतिरिक्खजोणियत्थियाओ संखेज्जगुणाओ' जलचरपुरुषापेक्षया जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः सख्यातगुणा अधिका भवन्ति। पुरुषापेक्षया त्रिगुणाधिकत्वात् इति। 'खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा' जलचरस्त्र्यपेक्षया खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असख्येयगुणाधिका भवन्ति। 'थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा' खेचरनपुंसकापेक्षया स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः सख्येयगुणाअधिका भवन्ति। 'जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा' स्थलचरनपुंसकापेक्षया जलचरपञ्चे-

---

अपेक्षा स्थलचर पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक पुरुष सख्यातगुणे अधिक है। 'थलचरपंचिंदियतिरिक्ख जोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' स्थलचर पुरुषो की अपेक्षा स्थलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक स्त्रियाँ संख्यात गुणी अधिक है। क्योकि पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियाँ तिगुनी होती है। "जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा' स्थलचर स्त्रियों की अपेक्षा जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषसंख्यातगुणे अधिक है "जलचरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' जलचर पुरुषो की अपेक्षा जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियाँ संख्यात गुणी है। क्योकि पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों का प्रमाण तिगुना कहा गया है। 'खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा' जलचरस्त्रियो की अपेक्षा खेचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक असख्यात गुणे अधिक हैं। "थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखिज्जगुणा' खेचर पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक की अपेक्षा स्थलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक सख्यातगुणे अधिक होते है। "जलयरपंचि-

---

સ્ત્રિયો કરતા સ્થલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક પુરુષો સંખ્યાતગણા વધારે છે. "थलचर पंचि दियतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" સ્થલચર પુરૂષો કરતાં સ્થલચર પાંચ ઈંદ્રિયો વાળી સ્ત્રિયો સંખ્યાત ગણી વધારે છે કેમકે—પુરૂષો કરતાં સ્ત્રિયો ત્રણ ગણી હોય છે. 'जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा" સ્થલર સ્ત્રિયો કરતાં જલચર તિર્યગ્યોનિક પુરુષો સંખ્યાત ગણા વધારે છે "जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेजगुणाओ" જલચર પુરૂષો કરતાં જલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાત ગણી છે કેમકે-પુરૂષો કરતા સ્ત્રિયોનું પ્રમાણ ત્રણ-ગણું કહેવામાં આવેલ છે, "खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा" જલચર સ્ત્રિયો કરતાં ખેચર પાંચ ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. "थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा" ખેચર પાંચ ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતાં સ્થલચર પાચ ઇંન્દ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે "जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा" સ્થલચર નપુ-

न्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति, **'चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया'** जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकापेक्षया चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका विशेषाधिका भवन्तीति । **'तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया'** चतुरिन्द्रियनपुंसकापेक्षया त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति । **'बेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया'** त्रीन्द्रियनपुंसकापेक्षया द्वीन्द्रियनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति । **'तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** द्वीन्द्रियनपुंसकापेक्षया तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति । **'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया'** तेजस्कायिकनपुंसकापेक्षया पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका विशेषाधिका भवन्तीति । **'आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियपुंणसगा विसेसाहिया'** पृथिवीकायिकनपुंसकापेक्षया अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्ति इति । **'वाउक्काइय एगिंदिय-**

दियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा' स्थलचर नपुंसको की अपेक्षा जलचर पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक संख्यातगुणे अधिक होते हैं। **"चउरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया"** जलचर नपुंसकों की अपेक्षा चौइन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक हैं। **"तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया"** चौइन्द्रियनपुंसको की अपेक्षा तेइन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक हैं। **'बेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया"** तेइन्द्रियनपुंसको की अपेक्षा द्वीन्द्रियनपुंसक विशेषाधिक हैं। **"तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** द्वीन्द्रिय नपुंसको की अपेक्षा तेजस्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक असंख्यात गुणे अधिक हैं। **"पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया"** पृथिवीकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक तेजस्कायिकनपुंसको की अपेक्षा विशेषाधिक है। **"आउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया"** पृथिवीकायिक नपुंसको की अपेक्षा अप्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है। **"वाउक्काइएगिंदियतिरिक्खजोणियण-**

સકો કરતા જલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો સંખ્યાત ગણા વધારે હોય છે. **"चउरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया"** જલચર નપુંસકો કરતાં ચાર ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે, **"तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया"** ચાર ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુસકો કરતા ત્રણ ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકો વિશેષાધિક છે **"बेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया"** ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા નપુસકો કરતા બેઇંદ્રિય વાળા નપુસકો વિશેષાધિક છે. **'तेउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** બે ઇંદ્રિય વાળા નપુંસકો કરતા તેજસ્કાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. **"पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया"** પૃથ્વીકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો તેજસ્કાયિક નપુસકો કરતા વિશેષાધિક છે **"आउक्काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया"** પૃથ્વીકાયિક નપુંસકો કરતા અપ્કાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષા-

तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसा हिया' अप्कायिकनपुंसकापेक्षया वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिक-नपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति। 'वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा' वायुकायिकनपुंसकापेक्षया वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाधिका भवन्तीति। षष्ठमल्पबहुत्वम् ॥सू० २०॥

संप्रति विशेषतः सप्तमाष्टमाल्पबहुत्वमाह—'एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं' इत्यादि.

मूलम्—'एयासि णं भंते ! मणुसित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं मणुस्सपुरिसाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाणं मणुस्सणपुंसगाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! अंतरदीविया मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य एतेणं दुन्निय तुल्ला वि सव्वत्थोवा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य एतेणं दोन्नि वि तुल्ला संखेज्जगुणा; हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य एतेणं दोन्नि वि तुल्ला संखेज्जगुणा, हेमवयहेरण्णवयअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्स पुरिसा य एतेणं दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। पुव्वविदेहावरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सि—

पुंसगा विसेसाहिया" वायुकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक अप्कायिक नपुंसको की अपेक्षा विशेषाधिक है। "वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा" वायुकायिक नपुंसको की अपेक्षा वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक अनन्त गुणे है ॥सूत्र२०॥

धिક છે "વાઉક્કાઇયએગિંદિયતિરિક્ખજોણિયણપુંસગા વિસેસાહિયા" વાયુકાયિક એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અપ્કાયના નપુંસકો કરતાં વિશેષાધિક છે 'वणस्सइकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा" વાયુકાયના નપુંસકો કરતાં વનસ્પતિ કાયના એક ઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અનન્તગણા છે. ॥સૂ૦ ૨૦॥

त्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। अंतरदीवगमणुस्सणपुंसगा असं-खेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखे-ज्जगुणा, तहेव जाव पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा ७॥ एयासि णं भंते! देवित्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीणं देवपुरिसाणं भवणवासीणं जाव-वेमाणियाणं सोहम्मगाणं जाव गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाणं णेरइय-णपुंसगाणं, रयणप्पभापुढवीणेरइयणपुंसगाणं जाव अहेसत्तमपुढवीणेरइ-याण य कयरेकयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा, उवरिमगेवे-ज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा, तं चेव जाव आणाए कप्पे देवपुरिसा संखे-ज्जगुणा। अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा, सह-स्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा। महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा पंचमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा, लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा, माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, दोच्चाए पुढवीए णेरइया असं-खेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवि-त्थियाओ संखेज्जगुणाओ, सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवत्थियाओ संखेज्जगुणाओ, भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा। भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, इमीसे

टीका—सम्प्रति—विशेषतो मनुष्यस्त्रीनपुंसकविषयकं सप्तममल्पबहुत्वमाह—"एयासि णं भंते, इत्यादि "एयासि णं भंते' एतासां खलु भदन्त ! 'मणुस्सित्थीणं' विशेषतो मनुष्यस्त्रिणाम् "कम्मभूमियाणं' कर्मभूमिकानाम् "अकम्मभूमियाणं' अकर्मभूमिकानाम् "अंतरदीवियाणं' अन्तरद्वीपिकानाम् तथा "मणुस्सपुरिसाणं' मनुष्यपुरुषाणाम् "कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं' अंतरदीवगाण य' कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपकानाम् तथा, 'मणुस्स णपुंसगाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाण य' मनुष्यनपुंसकानां कर्मभूमिकानामकर्मभूमिकानामन्तरद्वीपकाना च 'कयरे कयरेहिंतो, कतरे कतरेभ्य. 'अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा, अल्पा वा बहुका वा तुल्यावा विशेषाधिका वेति सप्तमाल्पबहुत्वविषयकः

अब सूत्रकार विशेष को लेकर सातवा जो अल्पबहुत्व है उन्हे प्रकट करते है

'एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं' ---इत्यादि ।

टीकार्थ— "एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं" इत्यादि रूप से यह गौतम ने सातवें अल्पबहुत्व को लेकर प्रश्न किया है—इसमें ऐसा पूछा है—"एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाणं' हे भदन्त ! इन मनुष्यस्त्रियो के—कर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो के, अकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो के एवं अन्तरद्वीपज मनुष्यस्त्रियो के "मणुस्सपुरिसाणं कम्मभूमियाणं, अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाण य" मनुष्य पुरुष जो कर्मभूमिकमनुष्य पुरुषों के, अकर्मभूमिक मनुष्य पुरुषों के और अन्तर द्वीपजमनुष्य पुरुषो के तथा—"मणुस्सणपुंसगाणं' कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाण य" मनुष्यनपुंसको के, कर्मभूमिजमनुष्य नपुंसको के, अकर्मभूमिज मनुष्य नपुंसको के एवं अन्तरद्वीपज मनुष्य नपुंसको के बीच में—"कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा" कौन किन से अल्प है ? कौन किन से बहुत है ? कौन किन के बराबर है ? और कौन किन

હવે સૂત્રકાર વિશેષની અપેક્ષાથી સાતમા અલ્પ બહુપણાનું કથન કરે છે,—"एयासिं णं भंते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं" ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ વિષયમાં "एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं' ઈત્યાદિ પ્રકારથી ગૌતમસ્વામી એ સાતમા અલ્પ બહુપણાને ઉદ્દેશીને પ્રશ્ન પૂછ્યો છે તેમાં એવુ પૂછ્યું છે કે—"एयासि णं भंते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाणं" હે ભગવન્ આ મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં—કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં અને અંતરદ્વીપની મનુષ્ય સ્ત્રિયોમાં "मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाण य" મનુષ્ય પુરુષ કે જે કર્મભૂમિના મનુષ્યો હોય છે તેઓમાં, અકર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષોમા, અને અંતરદ્વીપના મનુષ્ય પુરુષોમાં તથા "मणुस्स णपुंसगाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवगाण य" મનુષ્ય નપુંસકોમા અને અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકોમા "कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' કોણ કોનાથી અલ્પ છે કોણ કોનાથી વધારે છે કોણ કોની બરોબરછે અનેકોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે. । પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે

प्रश्नः भगवानाह 'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम! ''अंतरदीवगा मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य' अन्तरद्वीपका मनुष्यस्त्रियः मनुष्यपुरुषाश्च 'एएसि णं दुन्नि य तुल्ला वि सव्वत्थोवा' एते खलु द्वयेऽपि तुल्याः सर्वस्तोकाः भवन्ति तथा एते द्वयेऽपि स्वस्थाने परस्परं तुल्या भवन्ति अन्तरद्वीपकस्त्रीपुरुषाणा युगलधर्मोपेतत्वा दित्यर्थः 'देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य' देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च ''एए णं दोन्नि वि तुल्ला सखेज्जगुणा' एते खलु द्वयेऽपि तुल्याः सख्येयगुणा. अन्तरद्वीपकमनुष्यस्त्रीपुरुषापेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकस्त्रीपुरुषाः संख्यातगुणा भवन्ति स्वस्थाने एते द्वयेऽपि परस्परं तुल्याश्च भवन्ति। एतदपेक्षया 'हरिवासरम्मगवास अकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य' हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च ''एएणं दोन्नि वि तुल्ला संखेज्जगुणा' एते खलु द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणा देवकुरूत्तरकुरुस्त्रीपुरुषापेक्षया हरिवर्षरम्यकवर्षकस्त्रीपुरुषाः संख्येयगुणा अधिका भवन्ति तथा हरिवर्षकरम्यकवर्षकस्त्रीपुरुषास्तु परस्परं तुल्या एव भवन्तीत्यर्थः।

से विशेषाधिक है ? उत्तर में प्रभु ने कहा है - ''गोयमा! अंतरदीवगा मणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य'' हे गौतम! अन्तरद्वीपजमनुष्यस्त्रियां और अन्तर द्वीपज मनुष्य पुरुष ''एएणं दुन्नि य'' ये दो ''तुल्ला वि सव्वत्थोवा'' परस्पर मे समान है और सबसे कम है। क्यो कि अन्तरद्वीपज स्त्री–पुरुष युगलिक धर्मोपेत होते है। ''देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य एएणं दोन्नि वि तुल्ला संखेज्जगुणा'' देवकुरु एवं उत्तरकुरु रूप अकर्मभूमि की मनुष्य स्त्रिया और मनुष्य पुरुष ये दोनो परस्पर मे समान है परन्तु अन्तर द्वीपज मनुष्य–स्त्रियों और पुरुषो की अपेक्षा सख्यात गुणे अधिक है। ''हरिवासरम्मगवास अकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य'' हरिवर्ष और रम्यक वर्ष रूप अकर्मभूमिकी मनुष्यस्त्रियां और मनुष्य पुरुष ''एतेणं दोन्नि वि तुल्ला संखेज्जगुणा'' ये दोनो स्वस्थान में तो तुल्य है परन्तु देवकुरु एव उत्तरकुरु की मनुष्य स्त्रियों

'गोयमा! 'अंतरदीवगा मणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य' હે ગૌતમ! અંતરદ્વીપની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને અંતરદ્વીપના મનુષ્ય પુરૂષો ''एएणं दुन्निय'' આ બન્ને 'तुल्ला वि सव्वत्थोवा' પરસ્પર સમાન છે અને સૌથી ઓછા છે. કેમકે—અંતરદ્વીપના સ્ત્રી પુરુષો યુગલિક ધર્મ વાળા હોય છે ''देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य एएणं दोन्नि वि तुल्ला संखेज्जगुणा'' દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષ આ બન્ને પરસ્પરમા સરખા છે પરંતુ અંતરદ્વીપની મનુષ્યસ્ત્રિયો અને પુરુષો કરતાં સંખ્યાતગણા વધારે છે ''हरिवासरम्मगवास अकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसाय'' હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો

'हेमवय हेरण्णवय अकम्मभूमिगमणुस्सस्थिओ मणुस्सपुरिसा य' हैमवत हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च 'दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' द्वयेऽपि तुल्याः सख्येयगुणा. हरिवर्षरम्यकवर्षस्त्रीपुरुषापेक्षया हैमवतहैरण्यवतस्त्रीपुरुषाः सख्यातगुणाधिका भवन्ति तथा—स्वस्थाने एते परस्परं तुल्याश्च भवन्तीति ।- 'भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वितुल्ला संखेज्जगुणा' हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यस्त्री पुरुषापेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषा द्वयेऽपि तुल्याः सख्येयगुणा अधिका भवन्ति ॥ 'भरहेरवयकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा' कर्मभूमिकमनुष्यपुरुषापेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रिय. द्वयोऽपि परस्परं तुल्याः सत्यः सख्येयगुणा अधिका भवन्ति तत्र मनुष्यापेक्षया स्त्रीणां सप्तविंशतिगुणाधिकत्वादिति । "पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" भरतैरवतमनुष्यस्त्र्यपेक्षया पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाः

और मनुष्य पुरुषो से सख्यातगुणे अधिक है। "हेमवयहेरण्णवय अकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ मनुस्सपुरिसा य" हैमवत और हैरण्यवत रूप अकर्मभूमिकी मनुष्य स्त्रियां और मनुष्य पुरुष "दो वि तुल्ला" दोनो आपस में तुल्य होते हुए हरिवर्ष रम्यकवर्ष के स्त्री पुरुषो की अपेक्षा "संखेज्जगुणा" सख्यात गुणे अधिक है। "भरहेरवयकम्मभूमिग मणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र रूप कर्मभूमि के मनुष्य पुरुष हैमवत और हैरण्यवत रूप अकर्मभूमि के मनुष्यस्त्रियाँ एवं मनुष्य पुरुषो से संख्यात गुणे अधिक है। परन्तु ये दोनो भी परस्पर में समान है। "भरहेरवयकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" भरत और ऐरवत क्षेत्र के मनुष्य पुरुषो की अपेक्षा यहा के मनुष्य स्त्रियां परस्पर में समान होती हुई सख्यात गुणी अधिक है। क्योकि यहां स्त्रियां पुरुषो की अपेक्षा सत्ताईस गुणी अधिक होती है। "पुव्वविदेह—अवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" पूर्वविदेह और अपरविदेह रूप कर्मभूमि

"एयणं दोन्नि तुल्ला संखेज्जगुणा" આ બન્ને સ્વસ્થાનમાંતો તુલ્ય છે, પરંતુ દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષોથી સંખ્યાતગણા વધારે છે. 'हेमवय हेरण्णवय अकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य" હૈમવત અને હૈરણ્યવત રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો 'दो वि तुल्ला' બન્ને પરસ્પરમા સરખા છે અને હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષના સ્ત્રિપુરૂષો કરતાં "संखेज्जगुणा" સંખ્યાતગણા વધારે છે. "भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવતક્ષેત્ર રૂપ કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષો હૈમવત અને હૈરણ્યવંત રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો કરતાં સંખ્યાતગણા વધારે છે પરંતુ આ બન્ને પણ પરસ્પરમા સરખા છે. "भरहेरवयकम्मभूमिग मणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય પુરૂષો કરતાં ત્યાની મનુષ્ય સ્ત્રિયો પરસ્પરમા સમાન છે અને સંખ્યાતગણી વધારે છે કેમકે—અહિયા પુરૂષોકરતાં સ્ત્રિયો સત્યાવીસગણી વધારે છે "पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमिग मणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा" પૂર્વ વિદેહ અને અપરવિદેહ રૂપ કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષો

-द्वयेऽपि परस्परं तुल्या· संख्येयगुणाधिका भवन्तीति "**पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणाओ**" पूर्वापरविदेहमनुष्यपुरुषापेक्षया पुर्वविदेहापरविदेह कर्मभूमिक मनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि परस्परं तुल्याः सत्यः सख्येयगुणाधिका भवन्ति सप्तविंशतिगुणत्वात् । '**अंतरदीवगमणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" पूर्वविदेहापरविदेहमनुष्यस्त्र्यपेक्षया अन्तरद्वीपकमनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाधिका भवन्ति श्रेण्यसंख्येयभागताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वादिति । "**देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**" अन्तरद्वीपक मनुष्यनपुसकापेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः द्वयेऽपि परस्परं तुल्याः सन्त' संख्येयगुणाधिका भवन्तीति '**तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला सखेज्जगुणा**' तथैव यावत् पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका द्वयेऽपि

के मनुष्य पुरुष परस्पर मे समान होते हुए भरत क्षेत्र एवं ऐरवत क्षेत्र की मनुष्यस्त्रियो से सख्यात गुणे अधिक है । तथा—"**पुव्वविदेह-अवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणाओ**" पूर्वविदेह और पश्चिम विदेह के मनुष्य पुरुषो की अपेक्षा वहां की मनुष्य स्त्रिया परस्पर में समान होती हुई सख्यात गुणी अधिक हैं । क्योकि यहां स्त्रियां सत्ताईस गुणी—अधिक है । "**अंतरदीवगमणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" पूर्वविदेह और पश्चिम विदेह की मनुष्यस्त्रियो की अपेक्षा अन्तरद्वीप के मनुष्य नपुंसक असख्यात गुणे अधिक हैं क्योकि ये श्रेणियो के असख्यातभागवर्त्ती आकाश राशि प्रमाणवाले होते है । "**देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**" देवकुरु और उत्तरकुरु रूप अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक परस्पर में समान होते हुए अन्तरद्वीपज मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा सख्यात गुणें अधिक है । "**तहेव जाव पुव्वविदेहअवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**" इसी प्रकार यावत् देवकुरु और

પરસ્પરમાં સમાન છે, અને ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવતક્ષેત્રના મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતાં સંખ્યાતગણા વધારે છે તથા—"**पुव्वविदेह अवरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणाओ**' પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહના મનુષ્ય પુરૂષો કરતાં ત્યાંની મનુષ્ય સ્ત્રિયો પરસ્પરમાં સરખી છે, અને સંખ્યાતગણી વધારે છે કેમકે—અહિયાં સ્ત્રિયો સત્યાવીસગણી વધારે છે "**अंतरदीवगमणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा**" પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમવિદેહની મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતાં અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે, કેમકે—તેઓ શ્રેણિયોના અસંખ્યાતભાગવતી આકાશ પ્રદેશ રાશિ પ્રમાણ વાળા હોય છે '**देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्सणपुंसगा" दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**" દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો પરસ્પરમાં સરખા હોતાથકા અંતરદ્વીપના મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં સંખ્યાતગણા વધારે છે. '**तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा**" આજ પ્રમાણે યાવત્ દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂના મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં

तुल्याः संख्येयगुणाधिका भवन्ति अत्र यावत्पदेन देवकुरूत्तरकुरुमनुष्यनपुंसकापेक्षया हरिवर्ष-रम्यकवर्षाऽकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका द्वयेऽपि परस्परं तुल्याः सन्तः संख्येयगुणाधिका भवन्ति एतदपेक्षया हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः द्वयेऽपि परस्परं तुल्याः सन्तः संख्येय-गुणाधिका भवन्ति एतदपेक्षयाऽपि भरतैवतकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका द्वयेऽपि परस्परं तुल्याः सन्तः सख्येयगुणाधिका भवन्ति एतत्पर्यन्तं पूर्वप्रकरणस्य संग्रहो भवति तथा भरतैरवतकर्मभूमिक मनुष्यनपुंस-कापेक्षया पूर्वविदेहापरविदेह कर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः द्वयेऽपि परस्परं तुल्याः सन्तः संख्येयगुणा-धिका भवन्तीति । सप्तममल्पबहुत्वम् ॥७॥

अथाष्टम विशेषतो देवस्त्रीपुरुषनारकनपुंसकविषयकमल्पबहुत्वमाह **"एयासि णं भंते'** इत्यादि **"एयासि णं भंते ! देवित्थीणं"** एतासां खलु भदन्त ! देवस्त्रीणाम् **'भवणवासिणीणं'** भवनवासिनीनाम् **"वाणमंतरीणं"** वानव्यन्तरीणाम् **"जोइसिणीणं"** ज्योतिष्कीनाम् **'वेमाणि-**

उत्तर कुरु मनुष्य नपुंसको की अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के मनुष्य नपुंसक दोनों समान रूप से संख्यात गुणें अधिक है। इसी प्रकार हरिवर्ष और रम्यकवर्ष के मनुष्य नपुंसकों की अपेक्षा हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र के मनुष्य नपुंसक दोनों समान पने से संख्यात गुणे अधिक हैं। हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र के मनुष्य नपुंसको की अपेक्षा भरत क्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र के मनुष्य नपुंसक परस्पर में समान होते हुए सख्यात गुणे अधिक है—इनकी अपेक्षा पूर्वविदेह और पश्चिमविदेह रूप कर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक परस्पर में समान होते हुए संख्यात गुणे अधिक हैं। यह सातवां अल्प बहुत्व है।

अब विशेष को लेकर देव स्त्री पुरुष नारक नपुंसक विषयक आठवें अल्प बहुत्व का कथन करते हैं–इसमें गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है–**"एयासि णं भंते! देवित्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीणं'** हे भदन्त ! इन देव स्त्रीयोके–भवनवासी देव-स्त्रियोंके वानव्यन्तर देवस्त्रियो के ज्योतिष्क देवस्त्रियों के वैमानिक देवस्त्रियों के एवं **"देवपुरि**

હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષના મનુષ્ય નપુંસકો બન્ને સમાનતાવાળા હોતાથકા સંખ્યાતગણા વધારે છે આજ પ્રમાણે હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષના મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં હૈમવત અને હૈરણ્યવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકો બન્ને સમાન હોતાથકા સંખ્યાતગણા વધારે છે હૈમવત અને હૈરણ્યવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકો કરતા ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવતક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકો પરસ્પરમા સરખા હોતા થકા સંખ્યાતગણા વધારે છે તેના કરતાં પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમવિદેહ રૂપ કર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુસકો પરસ્પરમાં સરખા હોતા થકા સંખ્યાતગણા વધારે છે આ રીતે આ સાતમું અલ્પ બહુ પણું છે ॥૭॥

હવે વિશેષને લઇને દેવોની સ્ત્રિયો, પુરૂષો, અને નારક નપુંસકોના સંબંધમા આ આઠમાં અલ્પ બહુપણાનુ કથન કરવામાં આવે છે—આમા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવું પૂછયું છે કે -**"एयासि णं भंते ! देवित्थीणं भवणवासिणीणं, वाणमंतरीणं, जोइसिणीणं वेमाणिणीणं"** હે ભગવન્ આ દેવસ્ત્રિયોમા, ભવનવાસિ દેવસ્ત્રિયોમા વાનવ્યન્તર દેવસ્ત્રિયોમાં, જ્યોતિષ્ક

णीणं'' वैमानिकीनाम् ''देवपुरिसाणं' देवपुरुषाणाम् ''भवणवासिणं'' भवनवासिनाम् 'जाव-वेमाणियाणं'' यावद्वैमानिकानाम् अत्र यावत्पदेन वानव्यन्तराणां ज्योतिष्कानां सग्रहो भवति 'सोधम्मकाणं'' सौधर्मकानाम् ''जाव गेवेज्जकाणं'' यावद्ग्रैवेयकानाम् ईशानादारभ्य ग्रैवेयकदेव पर्यन्ताना देवानाम् तथा हि ईशानदेवानां सनत्कुमारदेवानां माहेन्द्राणां ब्रह्मदेवानां लान्तकाना महाशुक्राणां सहस्राराणामानताना प्राणतानाम् आरणानाम् अच्युतानां ग्रैवेयकानाम् तथा ''अणुत्तरोववाइयाणं' अनुत्तरोपपातिकानाम् ''णेरइयणपुंसगाणं'' नैरयिकनपुंसकानाम् ''रयणप्पभापुढवीणेरइयणपुंसगाणं'' रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानाम् ''जाव अहेसत्तम-णेरइयणपुंसगाणं' यावत् शर्कराप्रभा–वालुकप्रभा–पङ्कप्रभा–धूमप्रभा–तमःप्रभा–अधःसप्तमतमस्त-माापृथिवीनैरयिकनपुंसकानाम् ''कयरे कयरे हिंतो'' कतरे कतरेभ्यः 'अप्पा वा' अल्पावा ''बहु-या वा'' बहुका वा ''तुल्लावा' तुल्या वा 'विसेसाहिया वा' विशेषाधिका वा भवन्तीति

साणं' देवपुरुषो के 'भवणवासिणं' भवनसासिदेवो के 'जाव वेमाणियाणं' यावत् वैमानिको के यावत् पदग्राह्य–वानव्यन्तरों के ज्योतिष्को के ''सोहम्मगाणं' सौधर्मको के ''जाव गेवेज्जगाणं'' यावत् ग्रैवेयको के ईशानकल्प से लेकर ग्रैवेयक पर्यन्त के देवो के जैसे––ईशान सनत्कुमार, माहेन्द्र ब्रह्मलोक, लान्तक, महाशुक्र सहस्रार आनत प्राणत, आरण अच्युत और ग्रैवेयक देवो के तथा ''अणुत्तरोववाइयाणं' अणुत्तरोपपातिको के 'णेरइयणपुंसगाणं' नैरयिक नपुंसकों के–'रयणप्पभापुढवी नेरइयनपुंसगाणं' रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसको के 'जाव अहेसत्तमणेरइयणपुंसगाणं' यावत् यावत्पदग्राह्य–शर्कराप्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसको के पङ्कप्रभा पृथिवी के नैरयिक नपुंसको के धूमप्रभा पृथिवी के नैरयिक नपुसको के. तम' प्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसको के–तथा–अध' सप्तम पृथिवी के नैरयिको के बीच में ''कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा' कौन किनसे अल्प है ? कौन किनसे बहुत हैं ? कौन किन के बराबर है ? और कौन किनसे विशेषा-

---

દેવસ્ત્રિયોમા, વૈમાનિક દેવસ્ત્રિયોમાં – ''एवं देवपुरिसाणं'' અને દેવપુરૂષોમાં ''भवणवासिणं'' ભવનપાસિદેવોમાં ''जाव वेमाणियाणं' યાવત્ વૈમાનિકોમાં ''सोहम्मगाणं'' સૌધર્મકોમા ''जाव गेवेज्जगाणं'' યાવત્ ગ્રૈવેયકોમાં ઇશાનકલ્પથી લઇને ગ્રૈવેયક પર્યન્તના દેવોમા જેમકે–ઇશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મલોક, લાન્તક મહાશુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણત, આરણ, અચ્યુત, અને ગ્રૈવેયક દેવોમા તથા–'अणुत्तरोववाइयाणं'' અનુત્તરોપપાતિકોમા 'णेरइयणपुंसगाणं'' નૈરયિક નપુસકોમાં 'रयणप्पभापुढवी नेरइयनपुंसगाणं'' રત્નપ્રભા પૃથ્વીનાં નૈરયિકનપુંસકોમો ''जाव अहेसत्तमणेरइयणपुंसगाणं'' યાવત્ પદથી શર્કરાપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં, વાલુકાપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુસકોમા, પંકપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં, ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિકનપુસકોમા, તમઃપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં તથા અધ સપ્તમી પૃથ્વી ના નૈરયિક નપુસકોમા ''कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा'' કોણ કોનાથી અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે છે ? કોણકોની બરાબર છે? અને કોણકોનાથી

प्रश्नः भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गौतम ! 'सव्वत्थोवा' सर्वस्तोकाः सर्वेभ्योऽल्पीयांसः "अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा' अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषाः; अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषाः सर्वेभ्योऽल्पा भवन्तीत्यर्थः । "उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषापेक्षया उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'तं चेव जाव आणते कल्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा' तदेव यावदानते कल्पे मध्यमग्रैवेयकादारभ्य पश्चानुपूर्व्या आनतकल्पपर्यन्तकाः देवपुरुषाः यथोत्तरं सख्येयगुणाधिका भवन्ति,

अयं भावः—उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति अधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषापेक्षया अच्युतकल्पदेवपुरुषाः सख्येयगुणाधिकाभवन्ति अच्युतापेक्षया आरणदेवपुरुषाः सख्यातगुणाधिका भवन्ति आरणदेवपुरुषापेक्षया प्राणतदेवपुरुषाः सख्यातगुणाधिका भवन्ति. प्राणतकल्पदेवपुरुषापेक्षया आनतकल्पदेवपुरुषाः सख्यातगुणाधिका भवन्तीति ॥

धिक है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते है—'गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा' हे गौतम ! सबसे कम अनुत्तरोपपातिक देवपुरुष है । 'उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' अनुत्तरोपपातिक देवपुरुषो की अपेक्षा उपरितन ग्रैवेयक देवपुरुष सख्यात गुणे अधिक है । "तं चेव जाव आणए कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा' इसी प्रकार मध्यम ग्रैवेयक से लेकर पश्चानुपूर्वी से आनत कल्पपर्यन्त के देवपुरुष आगे आगे सख्यातगुणे होते हैं—जैसे उपरितन ग्रैवेयक देवपुरुषोकी अपेक्षा मध्यम ग्रैवयक देवपुरुप सख्यात गुणे अधिक है मध्यम ग्रैवेयक देवपुरुषों की अपेक्षा अधस्तन ग्रैवेयक देव पुरुष सख्यात गुणे अधिक है । अधस्तन ग्रैवेयक देव पुरुषों की अपेक्षा अच्युत कल्प के देव पुरुष सख्यात गुणे अधिक है अच्युतकल्प के देवपुरुषों की अपेक्षा आरण कल्प के देवपुरुष सख्यात गुणे अधिक है । आरण कल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा प्राणत कल्प के देवपुरुष सख्यात गुणे अधिक है । प्राणतकल्प देव पुरुषो की अपेक्षा आनतकल्प के देव पुरुष सख्यात गुणे अधिक है । अब असंख्यात गुणवालो

વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—"गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा" હે ગૌતમ ! સૌથી ઓછા અનુત્તરોપપાતિકદેવ પુરૂષો છે "उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा" અનુત્તરોપપાતિક દેવપુરૂષો કરતાં ઉપરના ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે "तं चेव जाव आणए कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा" એજ પ્રમાણે મધ્યમ ગ્રૈવેયકથી લઈને પશ્ચાનુપૂર્વીથી આનતકલ્પ સુધીના દેવપુરૂષો પછી પછીના સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે. જેમકે—ઉપરિતન ગ્રૈવેયકદેવપુરૂષો કરતાં મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે હોય છે મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો કરત અધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે. અધસ્તન ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો કરતાં અચ્યુતકલ્પના દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે અચ્યુતકલ્પના દેવપુરૂષો કરતા આરણકલ્પના દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે આરણકલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં પ્રાણતકલ્પના દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે. પ્રાણતકલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં આનતકલ્પના દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે

अथाग्रे यथोत्तरमसंख्यातगुणाः प्रदर्श्यन्ते "अहेसत्तमाए पुढवीए' अध.सप्तम्यां पृथिव्यां तमस्तमाभिधानायाम् "णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः, आनतकल्पदेवपुरुषापेक्षया सप्तमनारकनपुंसका असख्येयगुणाधिका भवन्तीति। सप्तमनारकनपुंसकापेक्षया 'छट्ठिए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' षष्ठ्यां तमायां नारकपृथिव्यां ये नैरयिकनपुंसकाः सन्ति ते असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति। 'सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" षष्ठपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया सहस्रारकल्पे ये देवपुरुषाः सन्ति ते असख्येयगुणाधिका भवन्तीति 'महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा' सहस्रारकल्पदेवापेक्षया महाशुक्रे कल्पे देवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्तीति ',पंचमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' महाशुक्रकल्पदेवापेक्षया पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्यां ये नैरयिकनपुंसका ते असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति 'लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा' पञ्चमपृथिवीनारकनपुंसका

को कहते है–अहेसत्तमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' आनतकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा अधःसप्तमी तमतमा नामकी पृथिवी में नैरयिक नपुंसक असंख्यात गुणे अधिक है। "छट्ठीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असखेज्जगुणा" सातवीं पृथिवी के नैरयिकनपुंसकों की अपेक्षा छट्ठी पृथिवी में नैरयिकनपुंसक असंख्यात गुणे अधिक हैं। "सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असखेज्जगुणा" छठवी पृथिवी के नैरयिकनपुंसको की अपेक्षा सहस्रार कल्प में जो देवपुरुष है वे असख्यात गुणे अधिक है "महासुक्के कप्पे देवा असखेज्जगुणा' सहस्रार कल्पके देवपुरुषो की अपेक्षा महाशुक्रकल्पमें जो देवपुरुष है वे असख्यात गुणे अधिक है "पंचमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' महाशुक्रकल्पके देवो की अपेक्षा पांचमी धूमप्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसक असख्यात गुणे अधिक है। "लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा' पाचवीं पृथिवी के नैरयिकनपुंसको की अपेक्षा लान्तक कल्प

હવે અસખ્યાત ગુણવાળા દેવોનું કથન કરવામા આવે છે--'अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" આનતકલ્પના દેવપુરૂષો કરતા અધઃસપ્તમી તમઃસ્તમા નામની પૃથ્વીમાં નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે "छट्ठीए पुढवीए णेरइयनपुंसगा असंखेज्जगुणा" સાતમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં છઠ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસખ્યાતગણા વધારે છે "सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" છઠ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતા સહસ્રારકલ્પના દેવપુરૂષો અસખ્યાતગણા વધારે છે "महासुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा" સહસ્રારકલ્પના દેવપુરૂષોકરતા મહાશુક્લ કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે "पंचमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" મહાશુક્ર કલ્પના દેવપુરૂષોકરતાં પાચમી ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. "लंतए कप्पे देवा असखेज्जगुणा". પાચમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં લાન્તક કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. "चउत्थीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" લાન્તક કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં

पेक्षया लान्तककल्पदेवपुरुषा असख्येयगुणाधिका भवन्तीति **"चउत्थीए पुढवीए णेरइयण पुंसगा असंखेज्जगुणा'** लान्तककल्पदेवापेक्षया चतुर्थपृथिवीपङ्कप्रभानैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति । **"बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** चतुर्थपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया ब्रह्मलोके कल्पे ये देवपुरुषा स्ते असख्येयगुणाधिका भवन्तीति । **'तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** ब्रह्मलोकदेवापेक्षया तृतीयस्यां वालुकाप्रभाया पृथिव्यां ये नारकनपुंसका सन्ति ते असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति ।**"माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** तृतीयपृथिवीनारक-नपुंसकापेक्षया माहेन्द्रकल्पे ये देवपुरुषाः सन्ती ते असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति **'सणंकुमार-कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** माहेन्द्रकल्पदेवपुरुषापेक्षया सनत्कुमारकल्पे ये देवपुरुषा भवन्ति ते असख्यातगुणा अधिका भवन्तीति । **"दोच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखे-ज्जगुणा'** सनत्कुमारदेवापेक्षया द्वितीयस्यां शर्करापृथिव्यां ये नारकनपुंसकाः सन्ति ते असंख्या-तगुणा अधिका भवन्तीति **"ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** द्वितीयपृथिवी नारकापेक्षया

के देवपुरुष असख्यात गुणे अधिक है । **'चउत्थीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** लान्तक कल्प के देवपुरुषों की अपेक्षा चतुर्थी पंकप्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसक असख्यात गुणे अधिक हैं **"बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** चतुर्थ पृथिवी के नैरयिकनपुंसको की अपेक्षा ब्रह्मलोक कल्प के देवपुरुष असंख्यात गुणे अधिक है । **"तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** ब्रह्मलोक कल्पके देवपुरुषो की अपेक्षा तृतीय वालुका प्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसक असख्यात गुणे अधिक है **"माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** तृतीय पृथिवी के नारक नपुंसको की अपेक्षा माहेन्द्र कल्पके देवपुरुष असंख्यात गुणे अधिक हैं **'सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** माहेन्द्रकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा सनत्कुमारकल्पके देवपुरुप असंख्यात गुणे अधिक हैं । **"दोच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** सनत्कुमार कल्पके देवपुरुषों की अपेक्षा द्वितीय शर्कराप्रभा पृथिवी में जो नैरयिक नपुंसक है वे असख्यात गुणे अधिक है । **'ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** द्वितीय पृथिवीके नैरयिकनपुंसकोकी

ચોથી પંકપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે **'बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** ચોથી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં બ્રહ્મલોક કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે **"तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** બ્રહ્મલોક કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં ત્રીજી વાલુકાપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે **'माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** ત્રીજી પૃથ્વીના નારક નપુંસકો કરતાં માહેન્દ્રકલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. **"सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** માહેન્દ્રકલ્પના દેવ-પુરૂષો કરતાં સનત્કુમાર કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે **"दोच्चाए पुढवीए णेरइय णपुंसगा असंखेज्जगुणा"** સનત્કુમાર કલ્પના દેવપુરૂષો કરતા બીજી શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. **"ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** બીજી

ईशानकल्पे ये देवपुरुषा स्ते असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति एते सर्वे यथोत्तरमसंख्यातगुणा इति। **'ईसाणे कप्पे देवत्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** ईशानकल्पदेवपुरुषापेक्षया ईशानकल्पदेवस्त्रियः सख्यातगुणा अधिका भवन्ति द्वात्रिंशद्‌गुणत्वात् **'सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा** ईशानदेव्यपेक्षया सौधर्मकल्पदेवपुरुषाः संख्यातगुणा अधिका भवन्ति द्वात्रिंशत्गुणत्वात् **'सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** सौधर्मदेवपुरुषापेक्षया सौधर्मकल्पदेवस्त्रियः संख्येयगुणा भवन्ति द्वात्रिंशद्‌गुणत्वात् **''भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** सौधर्मकल्पदेव्यपेक्षया भवनवासिदेवपुरुषा असंख्यातगुणाधिका भवन्तीति । **'भवणवासिदेवत्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** भवन वासिदेवस्त्रिय' संख्येयगुणाधिका भवन्ति द्वात्रिंयद्‌गुणत्वात् **''इमीसे रयणप्पभा पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा'** भवनवासिदेव्यपेक्षया एतस्यां रत्नप्रभापृथिव्यां नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति **''वानमंतरदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** रत्नप्रभापृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया वान

अपेक्षा ईशान कल्प मे जो देवपुरुष है वे असख्यात गुणे अधिक है यहां पर्यन्त असख्यातगुणे कहे है। **'ईसाणे कप्पे देवित्थयाओ सखेज्जगुणाओ'** ईशानकल्प के देव पुरुषो की अपेक्षा ईशान कल्प में देवस्त्रियां सख्यात गुणी अधिक है। क्योकि देवों की अपेक्षा देवस्त्रियों का प्रमाण बत्तीस गुना अधिक कहा गया है। **''सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा'** इशानकल्प की देवस्त्रियों की अपेक्षा सौधर्मकल्प के देवपुरुष सख्यातगुणे अधिक हैं। **''सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ''** सौधर्मकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा सौधर्म कल्प में देव स्त्रियां सख्यात गुणी अधिक है **'भवणवासि देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** सौधर्मकल्पकी देवियो की अपेक्षा भवनवासि देवपुरुष असख्यात गुणे अधिक है। **'भवनवासि वेवित्थियाओ संखज्जगुणाओ'** भवनवासी देवों की अपेक्षा भवनवासि देवस्त्रियां संख्यात गुणी अधिक है। **इमीसे रयणप्पभापुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा''** भवनवासि देवियो की अपेक्षा इस रत्नप्रभा पृथिवीके जो नैरयिकनपुंसक है वे असख्यात गुणे अधिक है **''वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'**

પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં ઇશાન કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે આ કથન પર્યન્ત અસંખ્યાતગણાનુ કથનકર્યું છે. **"ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ"** ઇશાનકલ્પના દેવપુરૂષો કરતા ઇશાનકલ્પની દેવસ્ત્રિયો-દેવીયો સખ્યાતગણી વધારે છે કેમકે—દેવોકરતા દેવીયોનું પ્રમાણ બત્રીસ ગણું વધારે કહેલ છે **"सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा"** ઇશાન કલ્પની દેવીયો કરતાં સૌધર્મ કલ્પના દેવપુરૂષો સખ્યાતગણા વધારે છે **सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** સૌધર્મ કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં સૌધર્મકલ્પની દેવસ્ત્રિયો-દેવીયો સખ્યાતગણી વધારે છે **'भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** સૌધર્મ કલ્પની દેવિયો કરતાં ભવનવાસી દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. **"भवणवासि देवित्थियाओ संखेज्ज गुणाओ"** ભવનવાસી દેવોકરતાં ભવનવાસી દેવોની સ્ત્રિયો—દેવીઓ સખ્યાતગણી વધારે છે.

व्यन्तरदेवपुरुषा असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति "वानमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणा' वानव्यन्तरदेवपुरुषापेक्षया वानव्यन्तरदेवस्त्रियः संख्येयगुणाधिका भवन्तीति 'जोइसिदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' वानव्यन्तरदेव्यपेक्षया ज्योतिष्कदेवपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्तीति। 'जोइसियदेवत्थिओ संखेज्जगुणाओ' ज्योतिष्कदेवपुरुषापेक्षया ज्योतिष्कदेवस्त्रियः संख्येयगुणाधिका भवन्ति देवापेक्षया देवीनां द्वात्रिंशद्गुणाधिकत्वादित्यष्टममल्पबहुत्वम् ॥सू० २१॥

संप्रतिविशेषतस्तिर्यङ्मनुष्यस्त्रीपुरुषनपुंसक–देवस्त्रीपुरुष–नारकनपुंसकविषयकं समिश्रं नवममल्पबहुत्वमाह —"एयासि णं भंते ! इत्यादि,

मूलम्—'एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं आउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पंचिंदियतिरि-

---

प्रथम नारक पृथिवी के नैरयिकनपुंसको की अपेक्षा वानव्यन्तरदेवपुरुष असख्यात गुणे अधिक है। "वाणमंतर देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' वानव्यन्तर देवपुरुषो की अपेक्षा वानव्यन्तर देवस्त्रियाँ सख्यातगुणी अधिक है। ',जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा' वानव्यन्तर देवियो की अपेक्षा ज्योतिष्क देवपुरुष सख्यात गुणे अधिक है। "जोइसियदेवित्थियाओ संखेज्ज गुणाओ' ज्योतिष्क देवपुरुषो की अपेक्षा'ज्योतिष्क देवस्त्रियो संख्यात गुणी अधिक है। क्योकि देवों की अपेक्षा देवियो का प्रमाण बत्तीस गुना अधिक कहा गया है। क्योकि ज्योतिष्क देव पुरुषो की अपेक्षा ज्योतिष्क देवियां बत्तीस गुणी अधिक होती है। सूत्र-॥२१॥

"इमीसे रयणप्पभापुढवीए. णेरइया असंखेज्जगुणा" ભવનવાસિ દેવિયો કરતાં આ રત્ન પ્રભા પૃથ્વીના જે નૈરયિક નપુંસકો છે, તે ઓ અસખ્યાતગણા વધારે છે. "वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा,, પહેલી નારક પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતા વાનવ્યન્તર દેવ પુરૂષો અસખ્યાતગણા વધારે છે "वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" વાનવ્યન્તર દેવપુરૂષો કરતા વાનવ્યન્તર દેવસ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે "जोइसियदेवपुरिसा संखेज्ज-गुणा" વાનવ્યન્તર દેવિયો કરતા જ્યોતિષ્ક દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે "जोइसि-यदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" જ્યોતિષ્ક દેવ પુરૂષો કરતા જ્યોતિષ્ક દેવોની સ્ત્રિયો— દેવીયો સંખ્યાતગણી વધારે છે. કેમકે—દેવો કરતા દેવીયોનું પ્રમાણ બત્રીસગણું વધારે કહ્યું છે. એટલે કે—જ્યોતિષ્ક દેવપુરૂષો કરતા જ્યોતિષ્ક દેવિયો બત્રીસગણી વધારે છે. ॥સૂ. ૨૨॥

क्खजोणियणपुंसगाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवीयाणं मणुस्सपुरिसाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवयाणं मणुस्सणपुंसगाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवयाणं देवित्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीणं देवपुरिसाणं भवणवासिणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोधम्मगाणं जाव गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाणं णेरइयणपुंसगाणं रयणप्पभापुढवीणेरइयणपुंसगाणं जाव अहेसत्तमपुढवीणेइयणपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतोअप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! 'अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसा य,एए णं दो वि तुल्ला. सव्वत्थोवा-देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य, एए णं दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा एवं हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य एते णं दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, एवं हेमवयहेरण्णवयअकम्मभूमिगमनुस्सित्थीओ मनुस्सपुरिसा य एए णं दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्स पुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा भरहेरवयकम्मभूमिगमनुस्सित्थीओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा, पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमिगमनुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा अनुत्तरोववाइयदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा अहेसत्तमाए पुढवीए णेरइणपुंसगा असंखेज्जगुणा छट्ठीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा पंचमाए पुढवीए णेरइणपुंसगा

असंखेज्जगुणा लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पुढवीए णेरइणपुंसगा असंखेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, सणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, दोच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्स णपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्स णपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा एवं जाव विदेहत्ति ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ भवनवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा, भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ इमीसे रयणप्पभापुढवीए णेरइणपुंसगा असंखेज्जगुणा. खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा थलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा जलयरतिरिक्यजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा, जोइसियदेवित्थियाओ संखेज्जगणाओ, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा, थलयर०णपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर०णपुंसगा, संखेज्जगुणा चउरिंदियणपुंसगा विसेसाहिया तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया बेइंदियणपुंमगा विसेसाहिया तेउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंमगा असंखेज्जगुणा पुढवी काइयएगिंदिय-

न्द्रे कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाः सनत्कुमारे कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाः, द्वितीयस्यां पृथिव्यां नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाः देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका द्वयेऽपि तुल्याः संख्येयगुणाः, एवं यावद्विदेहइति ईशाने कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाः, ईशाने कल्पे देवस्त्रियः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवपुरुषा संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवस्त्रियः संख्येयगुणाः, भवनवासिदेवपुरुषा असंख्येयगुणाः, भवनवासिदेवस्त्रियः संख्येयगुणाः एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिक-नपुंसका असंख्येयगुणाः खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषा संख्येयगुणाः खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाः स्थलचरतिर्ग्योनिकस्त्रियः संख्येय-गुणाः जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाः जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाः वानव्यन्तरदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः, वानव्यन्तरदेवस्त्रियः संख्येयगुणाः ज्योतिष्कदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः ज्योतिष्कदेवस्त्रियः संख्येयगुणाः खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणा स्थलचरपञ्चेन्द्रितिर्यग्योनिकनपुंसका संख्येयगुणा जलचरपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः चतुरिन्द्रियनपुसकाः विशेषाधिकाः त्रीन्द्रियनपुंसकाः विशेषाधिकाः द्वीन्द्रिनपुंसकाः विशेषाधिकाः तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणाः, पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः विशेषाधिकाः अप्कायिकैके-न्द्रितिर्यग्योनिकनपुंसकाः विशेषाधिकाः वायुकायिकैन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः विशेषा-धिकाः वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनन्तगुणाः ॥सू० २२॥

टीका –'एयासि णं भंते !' एतासां खलु भदन्त ! 'तिरिक्खजोणित्थीणं' तिर्यग्यो निकस्त्रीणाम्, तथा—'जलयरीणं' जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणाम्, तथा 'थलयरीणं' स्थलचरीणा स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणाम्, तथा--'खहयरीणं' खेचरीणाम् खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रीणाम्, तथा—'तिरिक्खजोणियपुरिसाणं' तिर्यग्योनिकपुरुषाणाम्. 'जलयराणं' जलचरपुरुषाणाम् 'थलयराणं'

अब सूत्रकार विशेष को लेकर तिर्यञ्चस्त्री पुरुषनपुंसक, मनुष्यस्त्री पुरुषनपुंसक देवस्त्री पुरुष और नारक नपुंसक इन सबो का समिलित नौवां अल्पबहुत्व कहते है—

'एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं थलयरीणं—इत्यादि ।

टीकार्थ—हे भदन्त ! इन तिर्यग्योनिक स्त्रियो के-जलचरतिर्यग्योनिक स्त्रियों के, "थल-यरीणं" स्थलचर तिर्यग्योनिकस्त्रियो के, तथा—"खहयरीणं" खेचर तिर्यग्योनिक स्त्रियो के तथा—

હવે સૂત્રકાર વિશષને લઈને તિર્યંચ સ્ત્રી, પુરૂષ અને નપુંસક મનુષ્ય સ્ત્રી, પુરૂષ નપુંસક, દેવ, સ્ત્રી પુરૂષ અને નારક નપુંસક આ બધાનુ સંમિલિત નવમું અલ્પ બહુપણું કહે છે.—"एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण जलयरोणं थलयरीण" ઈત્યાદિ.

ટીકાર્થ—હે ભગવન્ આ તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોમા જલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોમાં, 'थलयरीणं" સ્થલચરતિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયોમાં, તથા "खहयरीणं" ખેચર તિર્યગ્યોનિકસ્ત્રિયો

स्थलचरपुरुषाणाम्. 'खहयराणं' खेचरपुरुषाणाम् 'तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' तिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं' एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम्. 'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम्. 'आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुसगाणं' अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् 'जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' यावद्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् । अत्र यावत्पदेन तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां ग्रहणं भवति । तथा 'बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसकानाम् तथा—'तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं' त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाम्, तथा—'चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंलगाणं' चतुरिन्द्रितिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् तथा—'पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं'

"तिरिक्खजोणियपुरिसाणं" तिर्यग्योनिक पुरुषो के "जलयराण" जलचर पुरुषो के, "थलयराणं" स्थलचर पुरुषो के, "खहयराणं" खेचर पुरुषो के "तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" तिर्यग्योनिक नपुंसको के—"एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुसगाणं" एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसको के–अर्थात्—"पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुसको के तथा - "आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" अप्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसको के, "जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" यावत्—तेजस्कायिकएकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुसकों के, वायुकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसकों के वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसको के, तथा—"बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" दो इन्द्रिय वाले तिर्यग्योनिकनपुंसको के, तथा —"तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" तेइन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुसकों के तथा— "चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंलगाणं" चौइन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसको के, तथा—"पचिं-

---

મા તથા "तिरिक्खजोणियपुरिसाणं" તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોમા 'जलयराणं" જલચર પુરૂષોમાં "थलयराणं" સ્થલચર પુરૂષોમા "खहयराणं' ખેચર પુરૂષોમા "तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" તિર્યગ્યોનિક નપુ સકોમા "एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" એક ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુ સકોમા "पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" પૃથ્વીકાયિક એક ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુ સકોમા તથા "आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" અપ્કાયિક એક ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા ' 'जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" યાવત્ તેજસ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુ સકોમાં, વાયુકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા, વનસ્પતિકાય વાળા એકઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા તથા "बेइंदियतिरिक्खजोणियपुंसगाणं" બે ઇન્દ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુ સકોમા તથા "तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" ત્રણ ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુ-નપુંસકોમા તથા– "चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" ચારઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકોમા તથા –"पंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" પાચ ઇન્દ્રિયોવાળા તિર્યગ્યોનિક

पञ्चेन्द्रितिर्यग्योनिकनपुंसकानाम् **'जलयराणं'** जलचराणाम्. **'थलयराणं'** स्थलचराणाम् **'खह-यराणं'** खेचराणाम् **'मणुस्सित्थीणं'** मनुष्यस्त्रीणाम् **'कम्मभूमियाणं'** कर्मभूमिकानाम् कर्मभूमि-समुत्पन्नस्त्रीणाम् एवमग्रेऽपि । **'अकम्मभूमियाणं'** अकर्मभूमिकस्त्रीणाम **'अंतरदीवियाणं'** अन्त-रद्वीपकमनुष्यस्त्रीणाम् । **'मणुस्सपुरिसाणं'** मनुष्यपुरुषाणाम् **'कम्मभूमियाणं'** कर्मभूमिकानां मनुष्यपुरुषाणाम्. **'अकम्मभूमियाणं'** अकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाणाम् **'अंतरदीवयाणं'** अन्तर-द्वीपकमनुष्यपुरुषाणाम् । तथा—**'मणुस्सणपुंसगाणं'** मनुष्यनपुंसकानाम् **'कम्मभूमियाणं'** कर्म-भूमिकमनुष्यनपुंसकानाम् **'अकम्मभूमियाणं'** अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकानाम् **'अंतरदीवगाणं'** अन्तरद्वीपकमनुष्यनपुंसकानाम् तथा—**'देवित्थीणं'** देवस्त्रीणाम् **'भवणवासिणीणं'** भवनवासि-नीदेवीनाम् **'वाणमंतरीणीणं'** वानव्यन्तरीणाम् **'जोइसिणीणं'** ज्योतिष्कीनां देवीनाम् **'वेमाणिणीणं'** वैमानिकीनां देवीनाम् **'देवपुरीसाणं'** देवपुरुषाणाम्. **'भवणवासिणं'** भवनवासिनां देवपुरुषाणाम्

दियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं" पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसको के—**"जलयराणं, थल-यराणं"**, जलचरो के स्थलचरो के, खेचरो के **"मणुस्सित्थीणं"** मनुष्यस्त्रियो के अर्थात्—**"कम्मभूमियाणं"** कर्मभूमि में उत्पन्न हुई मनुष्य स्त्रियों के, **"अकम्मभूमियाणं"** अकर्मभूमि-में उत्पन्न हुई मनुष्य स्त्रियो के, **"अंतरदीवियाणं"** अन्तर द्वीप में उत्पन्न हुई मनुष्यस्त्रियो के, **"मणुस्सपुरिसाणं"** मनुष्यपुरुषो अर्थात्—**"कम्मभूमियाणं"** कर्मभूमि में उत्पन्न हुए मनुष्य-पुरुषो के **"अकम्मभूमियाणं"** अकर्मभूमि में उत्पन्न हुए मनुष्य पुरुषो के **"अंतरदीवयाणं"** अन्तरद्वीप में उत्पन्न हुए मनुष्य पुरुषों के, तथा **"मणुस्सणपुंसगाणं"** मनुष्य नपुंसकों के अर्थात् **"कम्मभूमियाणं"** कर्मभूमिक मनुष्यनपुंसकों के, **"अकम्मभूमियाणं"** अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसको के **"अंतरदीवगाणं"** अन्तर द्वीपकमनुष्यनपुंसको के तथा—**"देवित्थीणं"** देवस्त्रियो के अर्थात् **"भवणवासिणीणं"** भवनवासि देवस्त्रियो के, **"वाणमंतरीणं"** वानव्यन्तर देवस्त्रियो के, **"जोइ-सिणीणं"** ज्योतिष्क देवस्त्रियो के, **"वेमाणिणीणं"** वैमानिक देवस्त्रियों के **"देवपुरिसाणं"**

નપુંસકોમા, **"जलयराणं थलयराणं"** જલચરોમા, સ્થલચરોમા, ખેચરોમાં **"मणुस्सित्थीणं"** મનુષ્યસ્ત્રિયોમા અર્થાત્ **"कम्मभूमियाणं"** કર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયેલી મનુષ્ય સ્ત્રિયોમા **"अक म्मभूमियाणं"** અકર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયેલી મનુષ્ય સ્ત્રિયોમા **"अंतरदीवियाणं"** અંતરદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયેલી મનુષ્યસ્ત્રિયોમા **"मणुस्सपुरिसाणं"** મનુષ્ય પુરૂષોમા અર્થાત્ **'कम्मभूमियाणं'** કર્મભૂમિમાં ઉત્પન્ન થયો મનુષ્ય પુરૂષોમાં **"अकम्मभूमियाणं"** અકર્મભૂમિમા ઉત્પન્નથયેલા મનુષ્ય પુરૂષોમા **"अतरदीवगाणं"** અંતરદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયેલા મનુષ્ય પુરૂષોમાં તથા **"देवित्थीणं"** દેવસ્ત્રિયોમા અર્થાત્ **"भवणवासीणं"** ભવનવાસિ દેવોમા—એટલે કે ભવનવાસિ દેવસ્ત્રિયોમા **"वाणमंतरीणं"** વ્યન્તર દેવસ્ત્રિયોમા **"जोइसिणीणं"** જ્યોતિષ્ક દેવ સ્ત્રિયોમા **"वेमाणिणीणं"** વૈમાનિક દેવસ્ત્રિયોમા **"देवपुरिसाणं"** દેવ પુરૂષોમાં

'वेमाणियाणं' वैमानिकाना देवपुरुषाणाम् । 'सोहम्मगाणं' सौधर्मकानाम् 'जाव गेवेज्जगाणं' यावद्ग्रैवेयकानाम् यावत्पदेन ईशानसनत्कुमारमाहेन्द्रलान्तकमहाशुक्रसहस्राराऽऽनतप्राणतारणाच्युतपर्यन्तानां देवानाम्, तथा—'अणुत्तरोववाइयाणं' अनुत्तरोपपातिकानाम्, 'णेरइयणपुंसगाणं' नैरयिकनपुंसकानाम् 'रयणप्पभापुढवीणेरइयणपुंसगाणं जाव अहेसत्तमपुढवीणेरइयणपुंसगाण य' रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानां यावदधःसप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसकानां च. अत्र यावत्पदेन शर्कराप्रभावालुकाप्रभापङ्कप्रभाधूमप्रभातमःप्रभापृथिवीनैरयिकनपुंसकानां सङ्ग्रहो भवतीति ज्ञेयम् 'कयरे कयरे हिंतो' कतरे कतरेभ्यः 'अप्पा वा' अल्पावा 'बहुया वा' बहुका वा 'तुल्ला वा' तुल्या वा 'विसेसाहिया वा' विशेषाधिका वेति प्रश्नः, भगवनाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे

देवपुरुषों के अर्थात् "भवणवासिणं" भवनवासिदेवो के भवनवासि देवपुरुषो के "वेमाणियाणं" वैमानिक देव पुरुषों के, "सोहम्मगाणं" सौधर्मक देवपुरुषों के "जाव गेवेज्जगाणं" यावत् ईशान्, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत इनकल्पों के देवपुरुषो के तथा ग्रैवेयक देवपुरुषो के, तथा—"अणुत्तरोववाइयाणं" अनुत्तरोपपातिक देव पुरुषो के, तथा—"णेरइयणपुंसगाणं" नैरयिकनपुंसकों के अर्थात् "रयणप्पभा पुढवीणेरइयणपुंसगाणं" रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसको के—यावत्—शर्करा प्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसको के, वालुका प्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुसको के, पङ्कप्रभा पृथिवी के नैरयिक नपुंसको के, धूमप्रभा पृथ्वी के नैरयिक नपुसकों के तमःप्रभा पृथिवी के नैरयिकनपुंसको के और अधः सप्तम पृथिवी के नैरयिक नपुंसको के बीच में "कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा" कौन किन से अल्प है ? कौन किनसे बहुल है कौन किनके बराबर हैं ? और कौन किन से विशेषाधिक है ? उत्तर मे प्रभु कहते है—'गोयमा !

અર્થાત્ 'भवणवासिणं" ભવનવાસિ દેવામાં-ભવનવાસિ દેવ પુરૂષોમા "वेमाणियाणं" વૈમાનિક દેવપુરૂષોમા "सोहम्मकाणं" સૌધર્મકલ્પના દેવપુરૂષોમાં 'जाव गेवेज्जाणं" યાવતૂ ઈશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મ, લાન્તક, મહાશુદ્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણુતિ, આરણુ અચ્યુત આ કલ્પોના દેવપુરૂષોમાં તથાગ્રૈવેયક દેવપુરૂષોમાં તથા "अणुत्तरोववाइयाण" અનુત્તરોપપાતિક દેવપુરૂષોમા તથા "णेरइयणपुंसगाणं" નૈરયિક નપુંસકોમા અર્થાત્ "रयणप्पभापुढवीणेरइयण ंसगाणं" રત્નપ્રભા પૃથ્વીનાં નૈરયિક નપુંસકોમા, યાવત્ શર્કરા પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં વાલુકાપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં, પંકપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમા, ધૂમપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમા, તમ:પ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમા અને અધ સપ્તમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકોમાં" कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा" કોણુ કોનાથી અલ્પ ઓછા છે ? કોણુ કોનાથી વધારે છે ? કોણુ કોની બરોબર છે ? અને કોણુ કોનાથી વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમસ્વામીને કહે છે કે—'गोयमा ! अंतरदीवगअकम्मभू-

गौतम ! 'अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य' अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च 'एए णं दो वि तुल्ला सव्वत्थोवा' एते खलु स्त्रिय' पुरुषाश्च द्वयेऽपि तुल्याः सर्वस्तोकाः, हे गौतम ! सर्वस्तोकाः, सर्वेऽभ्योऽल्पाः अन्तरद्वीपकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च भवन्ति तथा एते द्वयेऽपि स्वस्थाने परस्परं तुल्याश्च युगलधर्मोपेतत्वादिति । अन्तरद्वीपकमनुष्यस्त्रीपुरुषापेक्षया 'देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य' देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च 'संखेज्जगुणा' सख्येयगुणाधिका भवन्ति, तथा—'एए णं दो वि तुल्ला' स्वस्थाने एते खलु द्वयेऽपि परस्पर तुल्या भवन्तीति । 'एवं हरिवासरम्मगवास०' एवम्—पूर्ववदेव देवकुर्वादिमनुष्यस्त्रीपुरुषापेक्षया हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च संख्येयगुणाधिका भवन्ति । तथा इमे परस्परं तुल्याश्च भवन्तीति । 'एवं हेमवयहेरण्णवय अकम्मभूमिग मणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य संखेज्जगुणा' हरिवर्षरम्यकवर्षस्त्रीपुरुषापेक्षया हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च संख्येयगुणाधिका भवन्ति तथा, स्वस्थाने हैमवतहै-

---

अंतरदीवगअकम्मभूमिगणुसित्थीओ मणुस्सपुरिसा य" हे गौतम ! अन्तरद्वीपक मनुष्य स्त्रियां और अन्तर द्वीपक मनुष्य पुरुष "एए णं दो वि तुल्ला सव्वत्थोवा" सबसे कम है और ये दोनों स्वस्थान में बराबर हैं। क्यो कि इनका युगलिक धर्म है । अन्तर भूमिक मनुष्य स्त्री और पुरुषो की अपेक्षा "देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य संखेज्जगुणा एतेणं दो वि तुल्ला" देवकुरु और उत्तर कुरु रूप अकर्म भूमि की मनुष्य स्त्रियां और मनुष्य पुरुष संख्यात गुणे अधिक है । तथा—ये दोनों परस्पर में तुल्य हैं। "एवं हरिवासरम्मगवास०" इसी प्रकार देवकुरु उत्तरकुरु मनुष्य स्त्री और मनुष्य पुरुषो की अपेक्षा हरिवर्ष और रम्यक वर्ष रूप अकर्मभूमि की मनुष्य स्त्रियां और मनुष्य पुरुष संख्यात गुणे अधिक है और स्वस्थान में ये आपस में बराबर है । "एवं हेमवयहेरण्णवय०" इसी प्रकार हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की मनुष्य स्त्रियो एवं पुरुषो की अपेक्षा हैमवत और हैरण्यवत रूप अकर्मभूमि

मिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसाय" હે ગૌતમ ! અંતરદ્વીપની મનુષ્યસ્ત્રિયો અને અંતર દ્વીપના મનુષ્યપુરૂષો "एए णं दो वि तुल्ला सव्वत्थोवा" એ બન્ને સ્વસ્થાનમાં બરાબર છે કેમકે--તેઓ યુગલિક ધર્મવાળા છે અને અંતરદ્વીપની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને પુરૂષો કરતા સૌથી ઓછા છે "देवकुरूत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसा य संखेज्जगुणा एते णं दो वि तुल्ला" દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્યસ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે કહ્યા છે અને પરસ્પર એ બન્ને સરખા છે. "एवं हरिवासरम्मगवास०" એજ પ્રમાણે દેવકુરૂ અને ઉત્તર કુરૂ મનુષ્યસ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો કરતાં હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો સંખ્યાત ગણા વધારે છે. અને સ્વસ્થાનમા તેઓ પરસ્પરમાં તુલ્ય છે. "एवं हेमवयहेरण्णवय०" એજ પ્રમાણે હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષની મનુષ્યસ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો કરતાં હૈમવત અને

रण्यवतक्षेत्रस्था इमे परस्परं तुल्याश्च भवन्तीति । **'भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा'** हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रीपुरुषापेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषा द्वयेऽपि सख्येयगुणाधिका भवन्ति । **भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणाओ'** भरतैर वतमनुष्यपुरुषा पेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योऽपि सख्येयगुणाधिका भवन्तीति । तथा स्वस्थाने परस्परं तुल्याश्च भवन्ति । **'पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा'** भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यस्त्र्यपेक्षया पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति तथा—स्वस्थाने इमे द्वयेऽपि परस्परं तुल्या भवन्तीति **'पुव्वविदेहावरविदेहकम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा'** पूर्वविदेहापरविदेहमनुष्यपुरुषापेक्षया पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यस्त्रियः द्वय्योऽपि सख्येयगुणाधिकाः

की मनुष्य स्त्रिया और मनुष्य पुरुष सख्यातगुणे अधिक है तथा स्वस्थान में ये आपस में तुल्य है **"भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** भरत क्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र रूप कर्मभूमि के मनुष्य पुरुष हैमवत और हैरण्यवतरूप अकर्मभूमि की मनुष्य स्त्रियां एवं मनुष्य पुरुषो की अपेक्षा संख्यात गुणे अधिक हैं । और स्वस्थान में ये आपस में समान है **"भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** भरत और ऐरवत क्षेत्र के मनुश्य पुरुषो की अपेक्षा यहां की मनुष्य स्त्रियां सख्यात गुणी अधिक हैं तथा स्वस्थान में ये परस्पर में तुल्य है **"पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** भरत और ऐरवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियों की अपेक्षा पूर्व विदेह और अपर विदेह रूप कर्म भूमि के मनुष्य पुरुषसख्यात गुणें अधिक हैं । तथा ये स्वस्थान में परस्पर में तुल्य है **",पुव्वविदेहावरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सित्थियाओ दो- वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** पूर्वविदेह और अपरविदेह रूप कर्मभूमिक पुरुषों की अपेक्षा

હૈરણ્યવત રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્યસ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો સખ્યાતગણા વધારે છે. તથા સ્વસ્થાનમાં—પરસ્પરમાં તુલ્ય છે. **"भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવતક્ષેત્ર રૂપ કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષો હૈમવત અને હૈરણ્યવત રૂપ અકર્મભૂમિની મનુષ્યસ્ત્રિયો અને મનુષ્ય પુરૂષો કરતાં સંખ્યાતગણા વધારે અને સ્વસ્થાનમા તેઓ પરસ્પરમાં તુલ્ય છે **"भरहेरवयकम्मभूमिगमणुस्सित्थीओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રના મનુષ્ય પુરૂષોકરતાં ત્યાંની મનુષ્ય સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે. તથા સ્વસ્થાનમાં એ પરસ્પર તુલ્ય છે. **"पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमिगमणुस्सपुरिसा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** ભરત અને ઐરવત ક્ષેત્રની મનુષ્યાસ્ત્રયો કરતા પૂર્વવિદેહ અને અપરવિદેહ રૂપ કર્મભૂમિના મનુષ્ય પુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે. તથા તેઓ સ્વસ્થાનમાં પરસ્પર તુલ્ય છે **"पुव्वविदेहावरविभूदेहकम्ममिगमणुस्सित्थियाओ दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** પૂર્વવિદેહ અને અપર વિદેહ રૂપ

सप्तविंशतिगुणत्वात्, स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याश्च भवन्तीति । **'अणुत्तरोववाइयदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** पूर्वविदेहापरविदेहमनुष्यस्त्र्यपेक्षया अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषा असंख्येयगुणाधिका भवन्ति अत्रत उपरितनग्रैवेयकादारम्य पश्चानुपूर्व्याऽग्रेतना आनतकल्पपर्यन्ता देवपुरुषा यथोत्तरं संख्यातगुणाः, तथाहि—**'उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा'** अनुत्तरोपपातिकदेवापेक्षया उपरितनग्रैवेयकदेवपुरुषाः सख्येयगुणाधिकास्तेभ्यो **'जाव आणतकप्पे देवपुरिसा । संखेज्जगुणा'** मध्यमग्रैवेयकदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः, तेभ्योऽधस्तनग्रैवेयकदेवपुरुषा' संख्येयगुणा, तेभ्योऽच्युतकल्पदेवपुरुपाः सख्येयगुणाः, तेभ्य आरणकल्पदेवपुरुषाः सख्येयगुणाः, तेभ्य' प्राणतकल्पदेवपुरुषाः सख्येयगुणाः,

---

पूर्वविदेह और पश्चिम विदेह रूप कर्मभूमि की मनुष्यस्त्रियां संख्यात गुणी अधिक है क्योकि ये यहां के मनुष्यो की अपेक्षा २७ सताईस गुणी अधिक होती है. यथा स्वस्थान में ये परस्पर में तुल्य है **"अनुत्तरोववाइदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** पूर्वविदेह और पश्चिम विदेह की मनुष्य स्त्रियो की अपेक्षा अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष असख्यात गुणे अधिक हैं। **"उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा"** उपरितन ग्रैवेयक को लेकर पश्चानुपूर्वी से आनत कल्पके देव पुरुष सख्यात गुणे हैं, जैसे—अनुत्तरोपपातिक देव पुरुषो की अपेक्षा उपरितन ग्रैवेयक के जो देव पुरुष है वे सख्यात गुणे अधिक है। **"जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा"** यावत् आनत कल्प में जो देव पुरुष है वे सख्यात गुणे अधिक हैं। **भाव इसका ऐसा** है—अनुत्तरोपपतिक देवो की अपेक्षा उपरितन ग्रैवेयक देव पुरुष सख्यात गुणे अधिक है। इनकी अपेक्षा मध्यम ग्रैवेयक के देव पुरुष सख्यात गुणे अधिक है. इनकी अपेक्षा अधस्तन ग्रैवेयक के जो देवपुरुष है वे सख्यात गुणे अधिक है। इनकी अपेक्षा अच्युतकल्प के जो देवपुरुष है वे सख्यात गुणे अधिक है। इनकी

કર્મભૂમિના પુરૂષો કરતા પૂર્વ વિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહ રૂપ કર્મભૂમિની મનુષ્ય સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે. કેમકે તેઓ ત્યાંના મનુષ્યો કરતા ૨૭ સત્યાવીસગણી વધારે હોય છે તથા સ્વસ્થાનમાં તેઓ પરસ્પર તુલ્ય છે "अणुत्तरोववायदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा" પૂર્વવિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહની મનુષ્ય સ્ત્રિયો કરતા અનુત્તરોપપાતિક દેવપુરૂષ અસંખ્યાત ગણા વધારે "उवरिमगेवेज्जदेवपुरिसा संखेज्जगुणा" ઉપરિતન ગ્રૈવેયકને લઈને પશ્ચાનુપૂર્વીથી આનતકલ્પપર્યન્તના દેવ પુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે. જેમકે—અનુત્તરોપપાતિક દેવ પુરૂષો કરતાંઉપરિતન ગ્રૈવેયકના જે દેવપુરૂષો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે. "जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा" યાવત્ આનત કલ્પમા જે દેવપુરૂષો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે. આ કથનનો ભાવ એવો છે કે—અનુત્તરોપાતિક દેવો કરતા ઉપરિતન ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે તેના કરતા મધ્યમ ગ્રૈવેયક દેવપુરૂષો સંખ્યાતગણા વધારે છે. તેના કરતાં અધસ્તન ગ્રૈવેયકના જે દેવ પુરૂષો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે. તેના કરતાં અચ્યુત

तेभ्य आनतकल्पदेवपुरुषा सङ्ख्येयगुणाधिका भवन्तीति । अथाग्रे—असंख्याता प्रदर्श्यन्ते—'अहे-सत्तमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा संखेज्जगुणा' आनतकल्पदेवपुरुषापेक्षया अधःसप्तम्यां पृथिव्यां नैरयिकनपुंसका असंख्यातगुणाधिका भवन्तीति । 'छट्ठीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्ज-गुणा' सप्तमपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया षष्ठ्यां तमःप्रभापृथिव्यानारकनपुंसका असंख्यातगुणा अधिका भवन्तीति । 'सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा' तमापृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया सहस्रार-देवकल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्ज-गुणा' सहस्रारकल्पदेवपुरुषापेक्षया महाशुक्रकल्पदेवपुरुषा असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'पंच-मीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' महाशुक्रकल्पदेवपुरुषापेक्षया पञ्चम्यां पृथिव्यां

अपेक्षा आरणकल्प के जो देव पुरुष हैं वे संख्यात गुणे अधिक हैं । इनकी अपेक्षा प्राणत-कल्प के जो देव पुरुष हैं वे सख्यात गुणे अधिक हैं और इनकी अपेक्षा जो आनत कल्प के देव पुरुष हैं वे संख्यात गुणे अधिक हैं । यहासे आगे असख्यात गुणें कहते हैं—'अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" आनत कल्प के देवपुरुषों की अपेक्षा अध सप्तमी पृथिवी में जो नैरयिक नपुंसक हैं वे असंख्यात गुणे अधिक हैं । "छट्ठीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" छठी पृथिवी के जो नैरयिक नपुसक हैं वे सप्तमनारकनपुंसकों की अपेक्षा असंख्यात गुणे अधिक हैं "सहस्सारे कप्पे--देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" सहस्रारकल्प में जो देव पुरुष हैं वे छठवीं पृथिवी के नैरयिक-नपुंसकों की अपेक्षा असंख्यातगुणे अधिक हैं । "महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" महाशुक्र कल्प में जो देव पुरुष हैं वे सहस्रारकल्प के देव पुरुषों की अपेक्षा असख्यातगुणे अधिक हैं । "पंचमीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" पाँचवीं पृथिवी में जो नैरयिक

કલ્પના જે દેવપુરુષો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે તેના કરતાં આરણ કલ્પના જે દેવ. પુરૂષો છે. તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે. તેના કરતાં પ્રાણત કલ્પના જે દેવ પુરૂષો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે. અને તેના કરતાં આનતકલ્પના દેવપુરૂષો છે, તેઓ સંખ્યાતગણા વધારે છે અહિંથી આગળ અસંખ્યાતગણાનું કથન કરે છે "अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइ-यणपुंसगा असंखेज्जगुणा" આનત કલ્પના દેવપુરૂષો કરતા અધઃ સપ્તમી પૃથ્વીમા જે નૈરયિક નપુંસકો છે. તેઓ અસંખ્યાતગણા વધારે છે. छट्ठीए, पुढवीए णेरइय-णपुंसगा असंखेज्ज-गुणा" છટ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો સાતમી પૃથ્વીના નારક નપુંસકો કરતાં અસંખ્યાત ગણા વધારે છે. "सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" સહસ્રાર કલ્પના દેવ પુરૂષો છટ્ઠી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં અસંખ્યાત ગણા વધારે "महासुक्के कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" મહાશુક્ર કલ્પમાં જે દેવ પુરૂષો છે તેઓ સહસ્રાર કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં અસંખ્યાતગણા વધારે છે "पंचमीए पुढवीए णेरइयण-पुंसगा असंखेज्जगुणा" પાંચમી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો મહાશુક્ર કલ્પના દેવપુરૂષો

नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति । **'लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** पञ्चमपृथिवीनारकनपुंसकापेक्षया लान्तककल्पे देवपुरुषा असख्येगुणाधिका भवन्तीति । **'चउत्थीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** लान्तकदेवपुरुषापेक्षया चतुर्थ्यां पृथिव्या नारकनपुंसका असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति । **'बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** चतुर्थ पृथिवीनारकनपुंसकपेक्षया ब्रह्मलोके कल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणा अधिका भवन्ति इति । **'तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** ब्रह्मलोकदेवपुरुषापेक्षया तृतीयस्यां पृथिव्यां नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणा अधिका भवन्तीति । **'माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** तृतीयपृथिवीनैरयिकनपुंसकापेक्षया माहेन्द्रे कल्पे देवपुरुषा असख्येयगुणा अधिका भवन्ति । **'सणंकुमारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** माहेन्द्रकल्पदेवपुरुषापेक्षया सनत्कुमारकल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति । **'दोच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** सनत्कुमारक-

---

नपुंसक है वे महाशुक्रकल्प के देव पुरुषो की अपेक्षा असंख्यातगुणे अधिक है **"लंतए कप्पे-देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** लान्तक कल्प में जो देव पुरुष है वे पाँचवीं पृथिवी के नारक नपुंसकों की अपेक्षा असख्यातगुणे अधिक है। **"चउत्थीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** लान्तक कल्पके देवपुरुषों की अपेक्षा चतुर्थी पृथिवी के जो नारक हैं वे असख्यातगुणे अधिक हैं। **"बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** ब्रह्मलोक कल्प में जो देव पुरुष हैं वे चतुर्थी पृथिवी के नारकों की अपेक्षा असख्यातगुणे अधिक है। **' तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** ब्रह्मलोककल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा तृतीय पृथिवी में जो नैरयिक नपुंसक हैं वे असंख्यातगुणे अधिक हैं। **"माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** तृतीय पृथिवी के नारको की अपेक्षा माहेन्द्रकल्प के देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक है **"सणंकुमारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** माहेन्द्रकल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा सनत्कुमार कल्प में जो देव पुरुष हैं वे असख्यातगुणे अधिक है । **"दोच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्ज-**

કરતાં અસંખ્યાતગણુા વધારે છે **"लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** લાન્તક કલ્પના દેવ પુરૂષો પાચમી પૃથ્વીના નારક નપુંસકો કરતાં અસંખ્યાતગણુા વધારે છે. **"चउत्थीए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** લાન્તક કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં ચોથી પૃથ્વીના નારકો અસંખ્યાતગણુા વધારે છે. **"बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** બ્રહ્મલોક કલ્પમાં જે દેવપુરૂષો છે, તેઓ ચોથી પૃથ્વીના નૈરયિકો કરતા અસંખ્યાતગણુા વધારે છે. **"तच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** બ્રહ્મલોક કલ્પના દેવપુરૂષો કરતા ત્રીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસખ્યાતગણુા વધારે છે. **"माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** ત્રીજી પૃથ્વીના નારકો કરતા માહેન્દ્ર કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણુા વધારે છે. **"सणंकुमारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** માહેન્દ્ર કલ્પના દેવ પુરૂષો કરતાં સનત્કુમાર કલ્પના દેવપુરૂષો અસંખ્યાતગણુા વધારે છે **"दोच्चाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा**

ल्पदेवपुरुषापेक्षया द्वितीयस्यां पृथिव्यां नारकनपुंसकाः असख्येयगुणाधिका भवन्तीति । **'अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा'** द्वितीयनारकनपुंसकापेक्षया अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका असख्येयगुणाधिका भवन्तीति । अतोऽग्रे विदेहपर्यन्तं सख्याताः प्रदर्श्यन्ते—**'देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा'** अन्तरद्वीपकाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकापेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसका सख्येयगुणाधिका भवन्ति तथा इमे स्वस्थाने परस्परं तुल्याश्च भवन्ति। **'एवं जाव विदेहत्ति'** एवं यावद्विदेह इति, अयं भावः—अन्तरद्वीपकमनुष्यनपुंसकापेक्षया देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति । तथा—इमे द्वयेऽपि स्वस्थाने परस्परं तुल्या एव भवन्ति, एवं हरिवर्षरम्यकवर्षकाकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः देवकुरूत्तरकुरुमनुष्यनपुंसकापेक्षया सख्येयगुणाधिका भवन्ति,

---

गुणा" सनत्कुमार कल्प के देवो की अपेक्षा द्वितीय पृथिवी में जो नैरयिकनपुंसक है वे असख्यातगुणे अधिक है **"अंतरदीवगअकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** द्वितीय पृथिवी नैरयिक नपुंसकों की अपेक्षा अन्तर द्वीपक अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुणे अधिक हैं ।

अब देवकुरूत्तरकुरु से लेकर विदेह पर्यन्त के संख्यातगुणे का कथन करते है—**"देवकुरु उत्तरकुरुअकम्मभूमिगमणुस्सणपुंसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** अन्तर द्वीपक अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसकों की अपेक्षा देवकुरूत्तरकुरु रूप अकर्मभूमि के मनुष्यनपुंसक सख्यातगुणे अधिक हैं । तथा ये स्वस्थान में परस्पर तुल्य है **"एवं जाव विदेहत्ति"** इसी प्रकार विदेह तक जानना चाहिए—इसका भाव ऐसा है —देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्यनपुंसक अन्तर द्वीपक मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा सख्यातगुणे अधिक हैं, तथा—ये दोनो स्वस्थान में परस्पर में तुल्य है । इसी प्रकार हरिवर्षक और रम्यक वर्षक अकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसक देवकूर्वादि मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा संख्यातगुणे अधिक है । तथा ये दोनों आपस में स्वस्थान की

असंखेज्जगुणा" સનત્કુમાર કલ્પના દેવો કરતાં બીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો અસંખ્યાત ગણા વધારે છે **'अतरदीवगअकम्मभूमिग मणुस्सणपुंसगा असंखेज्जगुणा"** બીજી પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં અંતરદ્વીપ જ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે.

હવે દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂથી લઈને મહાવિદેહપર્યન્તના સંખ્યાતગણાનું કથન કરવામાં આવે છે.—**"देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिगमणुस्सणपुसगा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा"** અંતરદ્વીપના અકર્મભૂમિના મનુષ્યનપુંસકો કરતા દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ રૂપ અકર્મભૂમિના મનુષ્ય નપુંસકો સંખ્યાતગણા વધારે છે તથા તેઓ સ્વસ્થાનમાં પરસ્પરતુલ્ય છે. **'एवं जाव विदेहत्ति"** એજ પ્રકારથી વિદેહ પર્યન્તનુ કથન સમજવું આ કથનના ભાવ એવો છે કે—દેવકુરૂઅને ઉત્તરકુરૂના મનુષ્યનપુંસકો અંતરદ્વીપના મનુષ્યાનપુંસકો કરતાં સંખ્યાતગણા વધારે છે ને તે બન્ને સ્વસ્થાનમા પરસ્પર તુલ્ય છે એજ પ્રમાણે હરિવર્ષ અને રમ્યકવર્ષ અકર્મભૂમિના મનુષ્યનપુંસકો, દેવકુરૂ વિગેરે મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં

तथा इमे द्वयेऽपि स्वस्थाने परस्परं तुल्याश्च भवन्तीति। तथा—हरिवर्षरम्यकवर्षमनुष्यनपुंसकापेक्षया हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति, स्वस्थाने इमे द्वयेऽपि परस्परं तुल्याश्च भवन्ति। तथा—हैमवतहैरण्यवतमनुष्यनपुंसकापेक्षया भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति स्वस्थाने इमे द्वयेऽपि परस्परं तुल्याश्च भवन्ति। तथा—भरतैरवतकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकापेक्षया पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति तथा स्वस्थाने इमे परस्परं तुल्याश्च भवन्तीति॥ **'ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा'** पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमिकमनुष्यनपुंसकापेक्षया ईशानकल्पे देवपुरुषा असंख्येयगुणाधिका भवन्तीति। **'ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** ईशानकल्पदेवपुरुषापेक्षया ईशानकल्पे देवस्त्रियः संख्येयगुणाधिका भवन्ति। **'सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा'** ईशानकल्पदेवस्त्र्यपेक्षया सौधर्मकल्पे देवपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्तीति। **'सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ'** सौधर्मकल्पदेवपुरुषापेक्षया सौधर्मकल्पे देवस्त्रियः सख्यातगुणा-

---

अपेक्षा तुल्य है हैमवत एवं हैरण्यवत अकर्मभूमिक मनुष्य नपुंसक हरिवर्ष और रम्यक वर्ष के मनुष्य नपुंसको की अपेक्षा संख्यातगुणे अधिक है एवं स्वस्थान में ये आपस में तुल्य है। भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र के जो मनुष्य नपुंसक हैं वे हैमवत और हैरण्यवत मनुष्य नपुंसको की अपेक्षा संख्यातगुणे अधिक है और स्वस्थान में ये आपस में तुल्य है भरतक्षेत्र एवं ऐरवत क्षेत्र के मनुष्य नपुंसको की अपेक्षा पूर्वविदेह और अपरविदेह के जो मनुष्य नपुंसक है वे संख्यातगुणे अधिक है। तथा स्वस्थान में ये दोनों परस्पर तुल्य है **"ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा"** ईशान कल्प में जो देवपुरुष है वे पूर्वविदेह और पश्चिमविदेह के मनुष्यनपुंसको की अपेक्षा असंख्यातगुणे अधिक है। **"ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ"** ईशान कल्प में जो देवस्त्रियाँ है वे ईशान कल्प के देवपुरुषों की अपेक्षा संख्यातगुणी अधिक है। **"सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा"** सौधर्मकल्प में जो देव पुरुष है वे ईशान कल्प की

સંખ્યાતગણુા વધારે છે તથા તે બેઉ પરસ્પરમાં તુલ્ય છે. હૈમવત અને હૈરણ્યવત અકર્મભૂમિના મનુષ્યનપુંસકો હરિવર્ષ, અને રમ્યકવર્ષના મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં સંખ્યાતગણુા વધારે છે. અને સ્વસ્થાનમાં તેઓ પરસ્પરમાં તુલ્ય છે ભરતક્ષેત્ર અને ઐરવતક્ષેત્રના મનુષ્ય નપુંસકો કરતા પૂર્વવિદેહ અને અપરવિદેહના જે મનુષ્ય નપુસકો છે, તેઓ સંખ્યાતગણુા વધારે છે તથા સ્વસ્થાનમા આ બન્ને તુલ્ય છે. 'ईसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा" ઇશાન કલ્પના દેવપુરૂષો, પૂર્વ વિદેહ અને પશ્ચિમ વિદેહના મનુષ્ય નપુંસકો કરતાં અસંખ્યાતપણુા વધારે છે. "ईसाणे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" ઇશાનકલ્પની દેવસ્ત્રિયો ઇશાન કલ્પના દેવપુરૂષો કરતાં સખ્યાતગણી વધારે છે. "सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा" સૌધર્મ કલ્પમાં જે દેવપુરૂષો છે તેઓ ઇશાનકલ્પની દેવસ્ત્રિયો કરતાં સંખ્યાતગણુા વધારે છે "सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ" સૌધર્મ કલ્પમાં જે દેવ-

धिका भवन्तीति । 'भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा' सौधर्मकल्पदेवस्त्र्यपेक्षया भवनवासिदेवपुरुषा असख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' भवनवासिदेवपुरुषापेक्षया भवनवासिदेवस्त्रियः सख्यातगुणाधिका भवन्ति । 'इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा' भवनवासिदेवस्त्र्यपेक्षया एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नारकनपुंसका असख्यातगुणाधिका भवन्तीति, 'खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा' रत्नप्रभानारकनपुंसकापेक्षया खेचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति । 'खहयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ' खेचरतियग्योनिकपुरुषापेक्षया खेचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः सख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा' खेचरतिर्यग्योनिकस्त्र्यपेक्षया स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'थलयरतिरिक्खजो-

---

देवस्त्रियों की अपेक्षा संख्यातगुणे अधिक है । सोहम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" सौधर्म कल्प में जो देवस्त्रियाँ है वे सौधर्म कल्प के देवपुरुषो की अपेक्षा संख्यातगुणी अधिक है । "भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा" सौधर्मकल्प की देवस्त्रियो की अपेक्षा भवनवासी देवपुरुष असंख्यातगुणे अधिक है । "भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" भवनवासी देवस्त्रियाँ भवनवासी देवपुरुषो की अपेक्षा सख्यातगुणी अधिक हैं । "इमीसे रयणप्पभाए-पुढवीए णेरइयपुंसगा असंखेज्जगुणा" भवनवासि देवस्त्रियो की अपेक्षा इस रत्नप्रभा पृथिवी में जो नारकनपुंसक है वे असंख्यातगुणे अधिक है । "खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा" रत्नप्रभा पृथिवी के नैरयिक नपुंसकों की अपेक्षा खेचरतिर्यग्योनिक पुरुष संख्यातगुणे अधिक हैं। "खहयरतिरिक्खजोणियत्थियाओ संखेज्जगुणाओ" खेचरतिर्यग्योनिक पुरुषो की अपेक्षा खेचरतिर्यग्योनिक स्त्रियाँ सख्यातगुणी अधिक हैं । 'थलचरतिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा" खेचरतिर्यग्योनिक स्त्रियो की अपेक्षा स्थलचरतिर्यग्योनिक पुरुष सख्यातगुणे अधिक है । "थलचरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" स्थलचर तिर्यग्योनिक

સ્ત્રિયો છે, તેઓ સૌધર્મ કલ્પના દેવપુરૂષો કરતા સંખ્યાતગણી વધારે છે. "भवणवासिदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा" સૌધર્મકલ્પની દેવસ્ત્રિયો કરતા ભવનવાસિદેવ પુરૂષો અસંખ્યાતગણાવધારે છે. "भवणवासिदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ" ભવનવાસી દેવસ્ત્રિયો ભવનવાસિ દેવ પુરૂષો કરતા સંખ્યાતગણી વધારે છે. "इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयणपुंसगा असंखेज्जगुणा" ભવનવાસી દેવસ્ત્રિયો કરતા આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીમા જે નારકનપુંસકો છે, તેઓ અસંખ્યાનગણા વધારે છે "खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा" રત્નપ્રભા પૃથ્વીના નૈરયિક નપુંસકો કરતાં ખેચરતિર્યગ્યોનિક પુરૂષ સંખ્યાતગણા વધારે છે. "खहयरतिरिक्खजोणियत्थियाओ संखेज्जगुणाओ" ખેચરતિર્યગ્યોનિક પુરૂષોકરતાં ખેચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે "थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा" ખેચરતિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો કરતા સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક

णित्थीओ संखेज्जगुणाओ' स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषापेक्षणा स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा' स्थलचरस्त्र्यपेक्षया जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति । तथा–'जलयरतिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ' जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषापेक्षया जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' जलचरस्त्र्यपेक्षया वानव्यन्तरदेवपुरुषाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति । तथा–'वाणमंतरदेवित्थीओ संखेज्जगुणाओ' वानव्यन्तरदेवपुरुषापेक्षया वानव्यन्तरदेवस्त्रियः संख्यातगुणाधिका भवन्तीति । 'जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' वानव्यन्तरदेव्यपेक्षया ज्योतिष्कदेवपुरुषाः संख्येयगुणाधिका भवन्ति तथा–'जोइसियदेवित्थीओ संखेज्जगुणा' ज्योतिष्कदेवपुरुषापेक्षया ज्योतिष्कदेवस्त्रियः संख्यातगुणाधिका भवन्ति । 'खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा' ज्योतिष्कदेव्यपेक्षया खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'थलयरणपुंसगा संखेज्जगुणा' खेचरनपुसकापेक्षया स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः सख्येयगुणाधिका भवन्ति । 'जलयरणपुंसगा संखे-

---

पुरुषो की अपेक्षा स्थलचर तिर्यग्योनिक स्त्रियाँ संख्यातगुणीं अधिक है। "जलचर तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा' स्थलचरस्त्रियो की अपेक्षा जलचर तिर्यग्योनिक पुरुष सख्यात गुणे अधिक है। 'जलचरतिरिक्खजोणिणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' जलचरतिर्यग्योनिक पुरुषो की अपेक्षा जलचर तिर्यग्योनिक स्त्रियाँ संख्यातगुणी अधिक है। 'वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' जलचरस्त्रियो की अपेक्षा वानव्यन्तर देवपुरुष संख्यातगुणे अधिक है। 'वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ' वानव्यन्तर देवो की अपेक्षा वानव्यन्तर देवस्त्रियाँ सख्यातगुणी अधिक है। 'जोइसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा' वानव्यन्तर देवियो की अपेक्षा ज्योतिष्क देव पुरुष सख्यातगुणे अधिक है। "जोइसियदेवित्थियाओ संखेज्जगुणा" ज्योतिषिक देवस्त्रियाँ ज्योतिपिक देवपुरुषों की अपेक्षा सख्यातगुणी अधिक है। "खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा संखेज्जगुणा" ज्योतिष्क देवियो की अपेक्षा खेचर तिर्यग्योनिकनपुंसकसंख्यातगुणें अधिक है। "थलयरणपुंसगा

પુરૂષો સંખ્યાતગણુ વધારે છે. થલયરતિરિક્ખજોણિત્થિયાઓ સંખેજ્જગુણાઓ" સ્થલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોકરતાં સ્થલચર તિર્યગ્યોનિકસ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે "જલયર-તિરિક્ખજોણિયપુરિસા સંખેજ્જગુણા" સ્થલચરસ્ત્રિયો કરતા જલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો સંખ્યાતગણુ વધારે છે "જલયરતિરિક્ખજોણિણિ ત્થિયાઓ સંખેજ્જગુણાઓ" જલચર તિર્યગ્યોનિક પુરૂષો કરતાં જલચર તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે "વાણમંતરદેવિત્થિયાઓ સંખેજ્જગુણાઓ" વાનવ્યન્તર દેવ પુરૂષો કરતા વાનવ્યન્તર દેવોનાસ્ત્રિયો સંખ્યાતગણી વધારે છે "જોઇસિયદેવપુરિસા સંખેજ્જગુણા" વાનવ્યન્તર દેવીયોકરતાં જ્યોતિષ્ક દેવ પુરૂષો સંખ્યાતગણુ વધારે છે "જોઇસિયદેવિત્થિયાઓ સંખેજ્જગુણા" જ્યોતિષ્ક દેવસ્ત્રિયો જ્યોતિષ્કદેવ પુરૂષો કરતા સંખ્યાતગણી વધારે છે 'ખહયરપંચિંદિયતિરિક્ખજોણિય-પુરિસા સંખેજ્જગુણા" જ્યોતિષ્ક દેવસ્ત્રિયો કરતા ખેચરતિર્યગ્યોનિક નપુંસકપુરૂષો સંખ્યાત

ज्जगुणा' स्थलचरनपुंसकापेक्षया जलचरनपुंसका संख्येयगुणाधिका भवन्तीति । 'चउरिंदियणपुंसगा विसेसाहिया' जलचरनपुंसकापेक्षया चतुरिन्द्रियनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति । 'तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया' चतुरिन्द्रियनपुंसकापेक्षया त्रीन्द्रियनपुंसका विशेषाधिका भवन्ति । तथा-'बेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया' त्रीन्द्रियनपुंसकापेक्षया द्वीन्द्रियनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति । 'तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा' द्वीन्द्रियनपुंसकापेक्षया तेजस्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणा भवन्तीति । 'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' तेजस्कायिकनपुंसकापेक्षया पृथिवीकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्ति । तथा-'आउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' पृथिवीकायिकनपुंसकापेक्षया अप्कायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका भवन्तीति । तथा—'वाउक्काइयएगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा

संखेज्जगुणा" खेचरनपुंसकों की अपेक्षा स्थलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक संख्यातगुणे अधिक हैं। "जलयरणपुंसगा संखेज्जगुणा" स्थलचरनपुंसकों की अपेक्षा जलचर नपुंसक संख्यात गुणे अधिक हैं। "चउरिंदियणपुंसगा विसेसाहिया" जलचर नपुंसकों की अपेक्षा चौइन्द्रियनपुंसक विशेषाधिक हैं। "तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया" चौइन्द्रिय नपुंसकों की अपेक्षा तेइन्द्रियनपुंसक विशेषाधिक हैं। "बेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया" तेइन्द्रिय नपुंसकों की अपेक्षा द्वीन्द्रियनपुंसक विशेषाधिक हैं। "तेउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा" द्वीन्द्रियनपुंसकों की अपेक्षा तेजस्कायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक असंख्यात गुणे अधिक हैं। 'पुढवीकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" तेजस्कायिकनपुंसकों की अपेक्षा पृथिवीकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक हैं। "आउक्काइय एगिंदिय

ગણા વધારે છે "थलयरनपुंसगा संखेज्जगुणा" ખેચર નપુંસકો કરતા સ્થલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકનપુંસકો સંખ્યાતગણા વધારે છે "जलयरणपुंसगा संखेज्जगुणा" સ્થલચર નપુંસકો કરતા જલચર નપુંસકો સંખ્યાતગણા વધારે છે 'चउरिंदियणपुंसगा विसेसाहिया' જલચર નપુંસકો કરતા ચૌઇંદ્રિયવાળા નપુંસકો વિશેષાધિક છે "तेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया' ચાર ઇંદ્રિયવાળા નપુંસકો કરતાં ત્રણઇંદ્રિયવાળા નપુંસકો વિશેષાધિક છે 'बेइंदियणपुंसगा विसेसाहिया" ત્રણઇંદ્રિયવાળા નપુંસકો કરતા બેઇંદ્રિય વાળા નપુંસકો વિશેષાધિક છે. 'तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा असंखेज्जगुणा' બેઇન્દ્રિયવાળા નપુંસકોકરતા તેજસ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળાતિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અસંખ્યાતગણા વધારે છે. 'पुढवीकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" તેજસ્કાયિક નપુંસકો કરતા પૃથ્વીકાયિક એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે. "आउक्काइयएगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" પૃથ્વીકાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતાં અપ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક છે. 'वाउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया' અપ્કાયિક એક ઇંદ્રિયવાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો કરતા વાયુકાયિક એકેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો વિશેષાધિક

विसेसाहिया' अप्कायिकनपुंसकापेक्षया वायुकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका विशेषाधिका भवन्ति इति । तथा–'वणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा' वायुकायिकनपुंसकापेक्षया वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुसका अनन्तगुणाधिका भवन्तीति निगोदजीवानामनन्तानन्तत्वादिति, नवममल्पबहुत्वम् ॥सू० २२॥

॥ इत्यल्पबहुत्वप्रकरणं समाप्तम् ॥

सम्प्रति- -स्त्रीपुरुषनपुंसकानां भवस्थितिमानं कायस्थितिमान च क्रमेण अभिधातुमाह– 'इत्थी णं भंते' इत्यादि ।

मूलम्—'इत्थी णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! एगेणं आएसेणं जहा पुव्विं भणियं० एवं पुरिसस्स वि णपुंसगस्स वि संचिट्ठणा पुणरवि तिण्हंपि जहा पुव्विं भणिया, अंतरं तिण्हं पि जहा पुव्विं भणियं तहा नेयव्वं' ॥सू० २३॥

छाया—स्त्रीणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! एकेन आदेशेन यथा पूर्वं भणितम्० । एवं पुरुषस्यापि नपुंकसकस्यापि संचिट्ठणा (कायस्थितिः) पुनरपि त्रयाणामपि यथा पूर्वं भणिता । अन्तरं त्रयाणामपि यथा पूर्वं भणितं तथा नेतव्यम् ॥०सू०२३

टीका—'इत्थी णं भंते' स्त्रीणां खलु भदन्त ! 'केवइयं कालं' कियन्तं काल किय-

---

तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुसको की अपेक्षा अप्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसक विशेषाधिक है । "वाउक्काइयएगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसगा विसेसाहिया" अप्कायिक नपुंसको की अपेक्षा वायुकायिक एकेन्द्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसक विशेषाधिक हैं तथा –"वणस्सइकाइएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा अणंतगुणा" वायुकायिक नपुंसको की अपेक्षा वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियतिर्यग्योनिक नपुंसक अनन्त गुणे अधिक है । क्योंकि निगोद जीव अनन्त होते है । सूत्र ॥२२॥

"नौवां अल्पवहुत्व समाप्त" "अल्पवहुत्व प्रकरण समाप्त"

अव सूत्रकार स्त्री, पुरुप और नपुंसक इनकी भवस्थिति और कायस्थिति का प्रमाण कमशः कहते है –'इत्थी णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता' इत्यादि

છે. તથા "वणस्सकाइयणगिंदियतिरिक्खजोणियणपुसगा अणतगुणा" વાયુકાયિક નપુંસકો કરતાં વનસ્પતિ કાયિક એકઇંદ્રિય વાળા તિર્યગ્યોનિક નપુંસકો અનંતગણા વધારે છે. કેમકે— નિગોદ જીવો અનંત હોય છે ।।સૂ૦૨૨।।

નવમા અલ્પ બહુ પણાનું કથન સમાપ્ત

અલ્પ બહુપણાનું પ્રકરણ સમાપ્ત

હવે સૂત્રકાર સ્ત્રી પુરૂષ, અને નપુંસકોની ભવસ્થિતિ અને કાયસ્થિતિનું પ્રમાણ ક્રમશઃ કહે છે—"इत्थी णं भंते ! केवइय कालं ठिई पन्नत्ता" ઈત્યાદિ

स्कालपर्यन्तम् **'ठिई पन्नत्ता'** स्थितिः—आयुष्यकालरूपा प्रज्ञप्ता—कथिता इति प्रश्नः, 'भगवानाह—**'गोयमा'** इत्यादि, **'गोयमा'** हे गौतम ! **'एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भणियं'** एकेनादेशेन यथा पूर्वं भणितम्। स्त्रीणा स्थितिः कियत्कालं भवतीति, स्त्रीप्रकरणे एव कथिता अतस्तत एव इहापि विज्ञेया। ननु यदि पूर्वमेव कथिता तदाऽत्र पुनःसूत्रोच्चारणे पुनरुक्तिः कथं नेति चेन्न, पूर्वं स्त्र्यादीनामधिकारे पृथक्पृथग्रूपेण स्वस्वाधिकारे स्थित्यादिकं प्रतिपादितमिह तु समुदायरूपेण प्रतिपादनात्। **'एवं पुरिसस्स वि णपुंसगस्स वि'** एव पुरुषस्यापि नपुंसकस्यापि यथा स्त्रीणां स्थिति' स्त्रीप्रकरणे कथिता तथा पुरुषनपुंसकयोरपि स्थिति' तत्तत्प्रकरणे कथिता ततो ज्ञातव्येति। **'संचिट्ठणा पुणरवि'** कायस्थितिः पुनरपि **'तिण्हंपि'** त्रयाणा स्त्रीपुरुषनपुंसकानामपि **'जहा पुव्विं भणिया'** यथा—येन प्रकारेण पूर्वम् स्त्र्यादितत्तत्प्र-

---

टीकार्थ—इसमें गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है—**"इत्थी णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"** हे भदन्त ! स्त्रियो की आयु कितने काल की कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते है—**"गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भणियं"** हे गौतम ! एक आदेश से जिस प्रकार से पहिले—स्त्री प्रकरण में स्थिति कही गई है। यहाँ पर भी वही स्थिति कहलेनी चाहिये। यदि स्त्री प्रकरण में यह बात कह दी गई है तो फिर से यहाँ इसे सूत्र रूप से उद्भावित करने में पुनरुक्ति दोषकी आपत्ति क्यो नहीं मानी जावेगी ? सो ऐसी आशङ्का ठीक नहीं है, क्योकि स्त्रीप्रकरण में तो स्त्र्यादिकोकी पृथक २ रूप से स्थिति आदिका प्रतिपादन किया गया है. परन्तु यहां समुदायरूप से स्थिति आदि का प्रतिपादन हुआ है अतः पुनरुक्ति दोष की आपत्ति नहीं आती है. इसी प्रकारसे एवं **"पुरिसस्स वि णपुंसगस्स वि"** पुरुष और नपुंसककी भी स्थिति उन २ के पहिले कहे गये प्रकरण से जान लेनी चाहिये **"संचिट्ठणा"** कायस्थिति भी इन तीनो की स्त्री—पुरुष और नपुंसक की—**"जहा पुव्विं भणिया"** जैसी कायस्थिति पहिले उन उनके प्रकरण में कह दी गईहै वैसी ही यहाँ पर भी कह लेनी चाहिए, **"अंतरंपि"** स्त्री, पुरुष और

ટીકાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા ગૌતમસ્વામીએ પ્રભુને એવુ પૂછ્યુ છે કે—**"इत्थी णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता"** હે ભગવન્ સ્ત્રિયોનુ આયુષ્ય કેટલાકાળનુ કહ્યુ છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુ ગૌતમ સ્વામીને કહે છે—**"गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भणियं"** હે ગૌતમ ! એક આદેશથી જે પ્રમાણે પહેલાં સ્ત્રી પ્રકરણમા સ્થિતિનું કથન કર્યું છે. એજ પ્રમાણેની સ્થિતિનુ કથન અહિયાં પણ સમજવુ

શંકા— જો સ્ત્રી પ્રકરણમા આ વાત કહેવામા આવી ગઈ છે, તો પછી અહિયા સૂત્રરૂપે કહેવામાં પુનરૂક્તિ દોષ કેમ નહી મનાય ?

ઉત્તર—આ પ્રમાણેની શંકા કરવી ઠીક નથી કેમ કે—સ્ત્રી પ્રકરણમાં તો સ્ત્રી વિગેરેની જૂદી જૂદી સ્થિતિ વિગેરેનું કથન કરવામાં આવેલ છે. પરંતુ અહિયા સમુદાયરૂપથી સ્થિતિ વિગેરેનું પ્રતિપાદન થયુ છે તેથી પુનરૂક્તિ દોષાપત્તિનો સંભવ નથી **"एवं पुरिसस्स वि णपुंसगस्स वि"** પુરૂષ અને નપુંસકોની સ્થિતિ પણ તેના તેના સંબંધમાં પહેલાં કહેવામાં આવેલ પ્રકરણમાથી સમજી લેવી **'संचिट्ठणा'** આ ત્રણેની કાયસ્થિતિ પણ એટલેકે સ્ત્રી, પુરૂષ અને નપુંસકોની કાયસ્થિતિ **"जहा पुव्विं भणिया"** જે પ્રમાણે તે તે પ્રકરણમા પહેલા

करणे भणिता—कथिता तथैवात्रापि ज्ञातव्या । **'अंतरंपि'** स्त्रीत्वपुरुषत्वनपुंसकत्वानामन्तरमपि **'तिण्हंपि'** त्रयाणां स्त्रीपुरुषनपुंसकानामपि 'जहा पुव्विं भणियं' यथा पूर्वं स्त्रीपुरुषनपुंसकप्रकरणे अन्तरं भणितं—कथितम् **'तहा'** तथैव इहापि **'णेयव्वं'** नेतव्य ज्ञातव्यमिति । अल्पबहुत्वमपि पूर्ववदेवज्ञातव्यम् तथाहि—

'एयासि णं भंते ? इत्थीणं पुरिसाणं णपुंसगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा, सव्वत्थोवा पुरिसा इत्थीओ संखेज्जगुणाओ णपुंसगा अणंतगुणा'

छाया—एतासां खलु भदन्त ! स्त्रीणां पुरुषाणां नपुंसकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? सर्वस्तोकाः पुरुषाः स्त्र्यादितो हीनसख्यत्वात् पुरुषापेक्षया स्त्रियः सख्येयगुणाधिकाः, स्त्र्यपेक्षया नपुंसका अनन्तगुणा', एकेन्द्रियाणामनन्तसख्योपेत—त्वादिति ॥सू० २३॥

नपुसक इन तीनो का अंतर भी **"जहा पुव्विं भणियं तहा णेयव्वं"** जैसा पहिले इनके प्रकरण में कह दिया गया है वैसा ही यहाँ पर भी वह जान लेना चाहिए. तथा—अल्प बहुत्व भी पहले के जैसा ही इनका जानना चाहिए. जैसे—**"एयासि णं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं णपुंगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा सव्वत्थोवा पुरिसा इत्थीओ संखेज्जगुणाओ, णपुंसगा अणंतगुणाओ"** गौतम ने इस प्रकरण द्वारा जब ऐसा पूछा—हे भदन्त ! इन स्त्री. पुरुष और नपुंसको के बीच में कौन किनसे अल्प है ? कौन किनसे अधिक है ? और कौन किनके बराबर हैं । और कौन किनसे विशेषाधिक है ? तब प्रभुने गौतम से ऐसा कहा है—हे गौतम ! इनमें सबसे कम तो पुरुष है और पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियाँ सख्यात गुणी अधिक है. और स्त्रियो की अपेक्षा नपुसक अनन्त गुणें अधिक

કહેલ છે, એજ પ્રમાણે તે અહિયા પણ સમજી લેવી "अंतरं पि" સ્ત્રી પુરૂષ અને નપુંસકોનું અંતરપણ "जहा पुव्विं भणियं तहा णेयव्वं" જે પ્રમાણે પહેલા તેમના પ્રકરણમા કહેવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે અહિયાં પણ સમજી લેવું જેમકે—**'एयासि णं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं णपुंसगाणं य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, वहुया वा तुल्ला वा, विसेसाहिया वा, सव्वत्थोवा पुरिसा इत्थीओ संखेज्जगुणाओ णपुंसगा अणतगुणाओ"** ગૌતમ સ્વામીએ આ પ્રકરણ દ્વારા જ્યારે એવું પૂછ્યું કે—હે ભગવન્ આ સ્ત્રી, પુરૂષ અને નપુંસકોમાં કોણ કોનાથી અલ્પ છે ? કોણ કોનાથી વધારે છે ? કોણ કોની બરોબર છે ? અને કોણ કોનાથી વિશેષાધિક છે ? આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુએ ગૌતમસ્વામી ને કહ્યું કે—હે ગૌતમ ! આમાં સૌથી ઓછા તો પુરૂષો છે અને પુરૂષોકરતાં સ્ત્રિયો સખ્યાતગણી વધારે છે અને સ્ત્રિયો કરતાં નપુંસકો અંતરગણા વધારે છે કેમકે—એક ઇંદ્રિયવાળા જીવો નપુસકોજ હોય છે. અને તેઓ સંખ્યામા વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનન્તાનન્ત કહ્યા છે. ॥સૂ૦૨૩॥

मूलम्—तिरिक्खजोणित्थीओ तिरिक्खजोणियपुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरूवाहियाओ मणुस्सित्थीओ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसइगुणाओ सत्तावीसइरूवाहियाओ देवित्थीओ देवपुरिसेहिंतो बत्तीसइगुणाओ बत्तीसइरूवाहियाओ । से त्तं तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पन्नत्ता
गाहा—तिविहेसु होइ भेओ, ठिई य संचिट्ठणंतरप्पबहुत्तं ।
वेयाण य बंधठिई, वेओ तह किं पगारो उ ॥१॥
सेत्तं तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पन्नत्ता' ॥सू. २४॥

बीइया पडिपत्तीसमत्ता

छाया—तिर्यग्योनिकस्त्रियः तिर्यग्योनिकपुरुषेभ्यस्त्रिगुणा स्त्रिरूपाधिकाः । मनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषेभ्यः सप्तविंशतिगुणाः सप्तविंशतिरूपाधिकाः । देवस्त्रियो देवपुरुषेभ्यो द्वात्रिंशद्गुणा द्वात्रिंशद्रूपाधिकाः । ते एते त्रिविधाः संसारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ताः ॥ गाथा—
स्त्रिविधेषु भवति भेदः, स्थितिश्च संचिट्ठणाऽन्तरमल्पबहुत्वम् ।
वेदानां च बन्धस्थितिर्वेदस्तथा किं प्रकारस्तु ॥१॥
ते एते त्रिविधाः संसारसमापन्नकाः जीवाः प्रज्ञप्ताः ॥सू०२४॥
॥ द्वितीया प्रतिपत्तिः समाप्ता ॥

टीका—पुरुषेभ्यः स्त्रियः सख्येयगुणा इति कथितम् तत्र का' स्त्रिय' स्वजातिपुरुषापेक्षया कतिगुणा इति प्रश्नावकाशमाश्रित्य तन्निरूपणार्थमाह—'तिरिक्खजोणित्थीओ' इत्यादि, 'तिरिक्खजोणित्थीओ तिरिक्खजोणियपुरिसेहिंतो' तिर्यग्योनिकस्त्रिय' तिर्यग्योनिकपुरु-

---

है । क्योकि एकेन्द्रियजीव नपुंसक ही होते है और वे सख्या में वनस्पति की अपेक्षा अनन्तानन्त कहे गये है । सूत्र—२३॥

यहाँ पहले सूत्र में कहा है कि पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियाँ सख्यात गुणी अधिक है—सो कौन स्त्रियाँ किन स्वजातीय पुरुषो से कितने गुणी अधिक है ? इस प्रश्न के अवकाश में कहते है—"तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणियपुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरूवाहि-

---

પહેલાના સૂત્રમા એમ કહેવામા આવેલ છે કે—પુરુષો કરતા સ્ત્રિયો સખ્યાતગણી વધારે છે તો કઈ સ્ત્રિયો કયા સ્વજાતીય પુરુષો થી કેટલાગણી વધારે છે ? આ પ્રશ્નના સંદર્ભમા કહેવામા આવે છે કે—"तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणियपुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरूवाहियाओ" આમા જે તિર્યગ્યોનિક સ્ત્રિયો છે, તેઓ તિર્યગ્યોનિક પુરૂષોકરતા ત્રણ ગણી વધારે છે એટલે કે—તેઓ ત્રિરૂપાધિક છે "मणुस्सित्थियाओ सत्तावीसइगुणाओ" મનુષ્ય યોનિક જે સ્ત્રિયો છે તેઓ મનુષ્ય પુરૂષો કરતા સત્યાવીસગણી વધારે છે. અર્થાત્ સત્તાવીસરૂપાધિક છે. "देवित्थियाओ देवपुरिसेहिंतो बत्तीसइगुणाओ" દેવસ્ત્રિયો દેવ પુરૂષો

षेभ्यः, **'तिगुणा उ तिरूवाहियाओ'** त्रिगुणास्तु त्रिरूपाधिकाः, **'मणुस्सित्थीओ'** मनुष्यस्त्रिय **'मणुस्सपुरिसेहिंतो'** मनुष्यपुरुषेभ्य., **'सत्तावीसइगुणाओ'** सप्तविंशतिः गुणाः **'सत्तावीसइरूवाहियाओ'** सप्तविंशतिरूपाधिकाश्च भवन्तीति । **'देवित्थीओ देवपुरिसेहिंतो'** देवस्त्रियो देवपुरुषेभ्य **'बत्तीसइगुणाओ बत्तीसईरूवाहियाओ'** द्वात्रिंशद्गुणा द्वात्रिंशद्रूपाधिकाः, उक्तमन्यत्रापि—

'तिगुणा तिरूवाहिया तिरियाणं इत्थिया मुणेयव्वा ।
सत्तावीसगुणा पुण मणुयाण तदहिया चेव ॥१॥
बत्तीसगुणा बत्तीसरूवअहिया उ होंति देवाणं ।
देवीओ पण्णत्ता जिणेहिं जियरागदोसेहिं' ॥२॥

छाया—'त्रिगुणा स्त्रिरूपाधिका स्तिरश्चां स्त्रियो ज्ञातव्या' ।
सप्तविंशतिर्गुणाः पुनर्मनुजाना तदधिकाश्चैव ॥१॥
द्वात्रिंशद्गुणा द्वात्रिंशद्रूपाधिकास्तु भवन्ति देवानाम् । देव्यः प्रज्ञप्ता जिनैर्जितरागद्वेषैः ॥२॥

याओ" इनमें जो तिर्यग्योनिक स्त्रियाँ है वे तिर्यग्योनिक पुरुषो की अपेक्षा तिगुनी है—इसी का भाव है—कि वे त्रिरूपाधिक है । **'मणुस्सित्थियाओ सत्तावीसइगुणाओ"** मनुष्ययोनिक स्त्रियाँ है वे मनुष्य पुरुषो की अपेक्षा सत्ताईस गुनी अधिक है अर्थात् सत्ताईसरूपाधिक है । **"देवित्थियाओ देवपुरिसेहिंतो बत्तीसइगुणाओ"** देव स्त्रियाँ देवपुरुषो की अपेक्षा बत्तीस गुनी अधिक है—बत्तीस रूपाधिक है । **ऐसा ही अन्यत्र कहा है—**

"तिगुणा तिरूवाहिया तिरियाणं इत्थिया मुणेव्वा ।
सत्तावीसगुणा पुण मणुयाणं तदहिया चेव ॥१॥
बत्तीसगुणा बत्तीसरूवअहिया उ होंति देवाणं ॥
देवीओ पण्णत्ता जिणेहिं जियरागदोसेहिं ॥२॥

अब प्रतिपत्ति का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते है—**"से त्तं तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता"** इस प्रकार से ससार समापन्नक जीव तीन प्रकार के कहे गये है इस अधिकृत प्रतिपत्ति के अर्थाधिकार की संग्रह गाथा जो इस प्रकार से कही गई है—**"तिविहेसु"** इत्यादि

કરતા બત્રીસગણી વધારે છે. એટલે કે બત્રીસરૂપાધિક છે એજ પ્રમાણે બીજેપણ કહ્યુ છે કે-

"तिगुणा तिरूवाहिया तिरियाणं इत्थिया मुणेयव्वा ।
सत्तावीसगुणा पुण मणुयाणं तदहिया चेव ॥१॥
बत्तीसगुणा बत्तीसरूवअहिया उ होंति देवाणं ॥
देवीओ पण्णत्ता जिणेहिं, जियरागदोसेहिं ॥२॥

આ બીજી પ્રતિપત્તિનો ઉપસંહારકરતા સૂત્રકાર કહે છે કે—**"से त्तं तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता"** આ પ્રમાણે સ સાર સમાપન્નક જીવ ત્રણ પ્રકારથી કહેવામાં આવ્યા છે આ અધિકૃત પ્રતિપત્તિના અર્થાધિકારની સંગ્રહગાથા આ પ્રમાણે કહી છે.— **"तिविहेसु"** ઇત્યાદિ

આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે —આ ત્રણે વેદોને નિરૂપણ કરવા વાળી પ્રતિપત્તિમાં સ્રી, પુરૂષ, અને નપુંસક એ પ્રમાણે ત્રણ વેદોનું કથન કરવામા આવેલ છે પહેલો અધિકાર

सम्प्रति— प्रतिपत्तिमुपसहरन्नाह—'से त्तं' इत्यादि, 'से त्तं तिविहा संसारसमावन्नगा-जीवा पन्नत्ता' ते एते त्रिविधा त्रिप्रकारका ससारसमापन्नकाः जीवाः प्रज्ञप्ता—कथिता इति। सम्प्रति—अधिकृतप्रतिपत्त्यर्थाधिकारसग्रहगाथामाह—'तिविहेसु' इत्यादि, 'तिविहेसु' त्रिविधेपु वक्तव्येपु स्त्रीपुरुपनपुसकवेदेपु 'होइ' भवति 'भेयो' भेदनामाक प्रथमोऽधिकारो भवतीति। 'ठिईय' स्थितिश्च तदनन्तरं द्वितीयोऽधिकारः स्थितेः। तदनन्तरम् 'संचिट्ठणा' सातत्येनाव-स्थानम्, तदनन्तरम् 'अंतरं' अन्तरं विरहकालकथनम्, तदनन्तरम् 'अप्पबहुं' अल्पबहुत्वम्, तदनन्तरम—'वेयाण य' वेदानाञ्च 'बंधठिई' बन्धस्थिति। तदनन्तरम् 'वेओ तहा किं पगारो उ' वेदस्तथा किं प्रकारस्तु। वेद किं प्रकारको भवतीति कथनमिति॥ 'से त्तं' ते एते 'तिविहा' त्रिविधा त्रिप्रकारकाः 'संसारसमावन्नगा' ससारसमापन्नकाः ससारे वर्तमाना इत्यर्थः 'जीवा' जीवा—प्राणा 'पन्नत्ता' प्रज्ञप्ताः कथिता इति ॥२४॥

इति श्री—विश्वविख्यातजगद्वल्लभ—प्रसिद्धवाचक—पञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक—प्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक—वादिमानमर्दक शाहुच्छत्रपति कोल्लापुरराज-प्रदत्त जैनशास्त्राचार्य—जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलाल—व्रति विर-चितजीवाभिगमसूत्रस्य प्रमेयद्योतिकाख्यायां व्याख्यायां त्रिविधानाम-द्वितीया प्रतिपत्तिः समाप्ता ॥२॥

इसका अर्थ इस प्रकार से है—इस वेदत्रैविध्य निरूपक प्रतिपत्ति में स्त्री, पुरुष और नपुंसक ऐसे तीन वेद कहे गये है. इन तीन वेदो में भेद नामका प्रथम अधिकार है. अर्थात् इन तीनो वेदो के तीन २ भेद कहे गये है. बाद में इनकी वेदो की स्थिति के सम्बन्ध में द्वितीय अधिकार है. इसके बाद सचिट्ठणा—इन वेदो की कायस्थिति का काल कहा गया है फिर अन्तर—विरह काल इनका कहा गया है, फिर इनके सम्बन्ध में अल्प बहुत्व कहा गया है। इन वेदो की बन्धस्थिति कितनी क्या है यह समझाया गया है। तथा इनका प्रकार कैसा होता है यह भी प्रकट किया गया है इस प्रकार से संसार का समापन्न संसार में वर्तमान तीन प्रकार के जीवो के सम्बन्ध में यह द्वितीय प्रतिपत्ति कही गई है। ॥सूत्र॥२४॥

जैनशास्त्राचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराजविरचित 'जीवाभिगम' सूत्र की प्रमेयद्योतिका व्याख्या में त्रिविधानामक दूसरी प्रतिपत्ति समाप्त ॥२॥

આ ત્રણ વેદોમા ત્રણ ત્રણ ભેદો કહ્યા છે તે પછી આ વેદોની સ્થિતિના સબંધમા બીજો અધિકાર કહ્યો છે તે પછી સચિટ્ઠણા—આ વેદોની કાયસ્થિતિ નો કાળ કહ્યો છે. તે પછી અંતર—વિરહકાળ કહ્યો છે તે પછી તેના સબંધમા અલ્પ બહુપણાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે આ વેદોની બન્ધ સ્થિતિ કેટલી અને કઇ કઇ છે ? તો સમજાવવામાં આવ્યું છે તથા તેનો પ્રકાર કેવો હોય છે ? એ પણ પ્રકટ કરવામા આવેલ છે આ રીતે સંસાર સમા-પન્ન-સંસારમાં રહેલા ત્રણ પ્રકારના જીવોના સંબંધમાં આ બીજી પ્રતિપત્તિ કહેવામા આવેલ છે. ॥સૂ૦૨૪॥

જૈન શાસ્ત્રાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ વિરચિત જીવાભિગમ' સૂત્રની પ્રમેયદ્યોતિકા નામની વ્યાખ્યામાં ત્રિવિધા નામની બીજીપ્રતિપત્તિ સમાપ્ત ॥૨॥